कुर्आन का पैग़ाम

तफ़्सीर फ़ारूक़ी

कुर्आन मजीद की आसान हिन्दी तफ़्सीर या व्याख्या

भाग–3

सन्देश
मुफ़क्किरे इस्लाम ह़ज़रत मौलाना सय्यद
अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी नदवी (अ़ली मियाँ रह़०)

अनुवाद एवं व्याख्या
मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी
(अध्यक्ष, जमओ़ीयत पयामे अम्न, लखनऊ)

जमओ़ीयत पयामे अम्न,
नदवा रोड, डालीगंज, लखनऊ–20 (यू०पी०) इण्डिया

नाम-	तफ़सीर फ़ारूक़ी (क़ुर्आन मजीद की आसान हिन्दी तफ़सीर या व्याख्या)
अनुवाद और व्याख्या-	मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी (आचार्य)
कम्पोज़ीटर-	इरफ़ान अहमद
संस्करण-	तीसरा संस्करण
पुस्तक संख्या-	3000
वर्ष-	2016
हदिया (मूल्य)-	500
प्रकाशक-	जमअ़ीयत पयामे अम्न

Name	**Tafseer Farooqui** **(Quran Majeed ki Asan Hindi Tafseer)**
Writer	**Mufti Mohd-Sarwar Farooqui Nadwi** (Acharya)
S. No.	**3000**
Publisher:	**Jamiat Payam-e-Amn** **Nadwa Road, Daliganj, Lucknow (U.P.) India-20**
Website.	**www.islamicjpamn.com**
Mobile–	**0091– 9919042879, 9984490150**

मिलने के पते

1. मजलिसे तहक़ीक़ात व नशरियात, नद्वतुल उ़लमा, पोस्ट बाक्स नं० 119 (लखनऊ) **(0522–2741529)**
2. न्यू सिलूवर बुक एजेन्सी, **14,** मुहम्मद अ़ली रोड, भिन्डी बाज़ार, मुम्बई **(0522–2741539)**
3. अल् फ़ुरक़ान बुक डिपो, नज़ीराबाद-**31** (लखनऊ) **(9936635816)**
4. सुब्हानिया बुक डिपो, नया मुहल्ला, जबलपुर, मध्य प्रदेश **(9424708020)**
5. सत्य फ़ाउन्डेशन **182** ग्रीन लैण्ड कैम्पस, पोखरपुर, कानपुर **(9935044343)**
6. मकतबः शबाब जदीद, नदवा रोड, लखनऊ **(9198621671)**

إنا نحن نزلنا الذكر وإنا له لحافظون

इस (तफ़्सीर फ़ारुक़ी भाग-3) में पारा नं० (6) सूरः अल् माइदा आयत नं (77) से पारा नं० (12) सूरः हूद आयत नं० (17) तक की पूरी तफ़्सीर है।



पवित्र क़ुर्आन को पाक साफ़ (वुज़ू करके) शुद्ध होकर आदर के साथ अ़मल की नियत से ध्यानपूर्वक पढ़ें और सही उच्चारण का भी ख़्याल रखें।

क़ुर्आन के व्याख्या की शुरुआ़त पेज नं० 25 से 583 तक है। उस से पहले विषय सूची और उ़लमा के संक्षिप्त लेख और प्राक्कथन है।

इस तफ़्सीर के भाग-एक में विश्व प्रसिद्ध उ़लमा के संक्षिप्त सन्देश जैसे-हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह०) व मौलाना सय्यद मुहम्मद राबेअ़ हसनी नदवी, मौलाना अबुल् क़ासिम नोअ़मानी क़ासमी, मौलाना मुहम्मद सालिम क़ासमी देवबन्दी, मौलाना सय्यद अरशद मदनी, मौलाना मुहम्मद सईदी मज़ाहिरी, मौलाना सईदुर्रहमान आज़मी नदवी, मौलाना ख़ालिद सैफ़ुल्लाह रह़मानी, मौलाना वाज़ेह रशीद नदवी, मौलाना फ़ुज़ैलुर्रहमान हिलाल उ़स्मानी, मौलाना ज़करिया नदवी, मौलाना शम्सुल हक़ नदवी, मुफ़्ती अ़तीक़ अहमद क़ासमी, मौलाना ख़ालिद साहब ग़ाज़ीपुरी, मौलाना अब्दुल क़ादिर मज़ाहिरी, मौलाना अ़ब्दुल्लाह हसनी नदवी (रह०) मौलाना नियाज़ अहमद नदवी, मौलाना मुहीबउल्लाह क़ासमी मद्दज़िल्लहुल् आ़ली आदि की तस्दीक़ मौजूद है और प्राक्कथन में क़ुर्आन का संक्षिप्त परिचय भी दिया गया है। इन सब का मुकम्मल लेख भाग-एक के अन्त में दिया गया।

दो शब्द

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम

यह अनुवाद एवं व्याख्या इस्लामी जगत के प्रख्यात विद्वान एवं दाअ़ी-ए-इस्लाम मुफ़स्सिरे क़ुर्आन 'ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साह़ब' जो हिन्दी और अ़रबी दोनों भाषाओं का ज्ञान रखते हैं। इनकी दीनी शिक्षा क़ारी, आ़लिम, फ़ाज़िल व मुफ़्ती की है और संस्कृत से आचार्य हैं। जिनके क़लम से लगभग 200 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, जिसमें उर्दू भाषा में लफ़्ज़ी (शाब्दिक) तर्जुमः और हिन्दी में तीस्वें पारः की तफ़्सीर और यह सात भागों में 'तफ़्सीर फ़ारूक़ी' क़ाबिले ज़िक्र है, जिसे हर तबक़े के लोगों ने इस की आसान भाषा की वजह से पसन्द किया, जो घरों और मस्जिदों में पढ़ी जाती है। जिसके कई एडीशन प्रकाशित करने का शर्फ़ ह़ासिल हो चुका है। इस के तर्जुमः व तफ़्सीर की मुख्य विशेषता इस तरह़ हैः-

तर्जुमः की विशेषता-

इस के तजुर्मे में 'मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साह़ब' का वह मक़्बूल तर्जुमः है जिसके 2016 तक बीस एडीशन से ज़्यादा छप चुके हैं, इसकी भाषा बहुत सरल है जिसको मुस्लिम हो या ग़ैर मुस्लिम, कम पढ़ा हो या ज़्यादा हर वर्ग आसानी से समझ लेता है।

तफ़्सीर की विशेषता-

(1) यह तफ़्सीर मुस्लिम हो या व ग़ैर दोनों को सामने रखते हुए आ़म बोलचाल की भाषा में लिखी गई है, ताकि कम पढ़े लिखे लोग भी इस से फ़ायदा उठा सकें।

(2) तफ़्सीर में ह़दीस और मोअ़तबर (अथैन्टिक) उलूमा की तफ़्सीरों से ही फ़ायदा उठाया गया है।

(3) इस में रोज़ (प्रतिदिन) पढ़ने के ह़िसाब से लगभग दस-दस आयतों का तर्जुमः फिर अलग-अलग आयतों की तफ़्सीर बयान की गई है।

(4) इस में पहले पूरी सूरः का खुलासा (संक्षेप) और उसके विषय, फिर लगभग दस-दस आयतों का तर्जुमः उसके बाद हर आयत की अलग-अलग तफ़्सीर, जिसमें सबसे पहले उस आयत का शाने नुज़ूल (नाज़िल होने के वक़्त की ह़ालत) फिर उस आयत से सम्बन्धित ह़दीस, और मोअ़तबर उ़लूमा की तफ़्सीर की रौशनी में तफ़्सीर, फिर मसायल, एह़काम, और साइंसी तह़क़ीक़ के साथ ग़ैर मुस्लिमों की तरफ़ से होने वाले सवालों का बेहतर तरीक़े से जवाब और उस से मुतअ़ल्लिक़ फ़ज़ायल जो सह़ी ह़दीसों से साबित है ज़िक्र किया गया है।

नोट- इस तरह यह एक मुफीद तोहफ़ा तमाम इन्सानों की रहनुमाई के लिए पेश किया जाता है जिस पर चन्द मशहूर उ़ल्मा जैसे- ह़ज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली ह़सनी नदवी (रह०) व मौलाना सय्यद मुह़म्मद राबेअ़ हसनी नदवी, मौलाना अबुल् क़ासिम नोअ़मानी क़ासमी, मौलाना मुह़म्मद सालिम क़ासमी देवबन्दी, मौलाना सय्यद अरशद मदनी, मौलाना मुह़म्मद सई़दी मज़ाहिरी, मौलाना सईदुर्रहमान आज़ुमी नदवी, मौलाना ख़ालिद सैफ़ुल्लाह रह़मानी, मौलाना वाज़ेह रशीद नदवी, मौलाना फ़ुज़ैलुर्रह़मान हिलाल उ़स्मानी, मौलाना ज़करिया नदवी, मौलाना शम्सुल हक़ नदवी, मुफ़्ती अ़तीक़ अह़मद क़ासमी, मौलाना ख़ालिद साह़ब ग़ाज़ीपुरी, मौलाना अब्दुल क़ादिर मज़ाहिरी, मौलाना अ़ब्दुल्लाह ह़सनी नदवी (रह़०) मौलाना नियाज़ अहमद नदवी, मौलाना मुहीबउल्लाह क़ासमी मद्दज़िल्लहुलू आ़ली आदि की तस्दीक़ के प्रमाणित सन्देश संक्षेप में मौजूद हैं।

20 नवम्बर 2016

प्रकाशक

विषय सूची

सूरः अल् माइदा की व्याख्या
(आयत नं० 77 से आख़िर तक)

भाग-6
सूर-अनआ़म की व्याख्या

भाग-7
सूर अअ़राफ़ की व्याख्या

भाग-8
सूरः अन्फ़ाल की व्याख्या

भाग-9
सूरः तौबः की व्याख्या

भाग-10
सूर-ए-यूनुस की व्याख्या

भाग-11
सूर-ए-हूद की व्याख्या

सन्देश

विश्व इस्लामी जगत के प्रख्यात विद्वान तथा प्रसिद्ध श्रेष्ठ विचारक (मुफ़क्किरे इस्लाम) हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह०) के शुभ क़लम से-

अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल् आलमीन, वस्सलातु वस्सलामु अ़ला सय्यिदिल्मुर्सलीन, मुहम्मदिन व अ़ला आलिही व अस्हाबिही अज्मअ़ीन

मुसलमानों के ज़िन्दगी की तमाम अ़िबादतों में नमाज़ ही वह अहम और बुनियादी रूकून है जिसे दिन में पाँच बार फ़र्ज़ (अनिवार्य) किया गया है। अल्लाह का बन्दा जब अपने पालनहार के सामने बन्दगी के लिए खड़ा होता है तो सबसे पहले उस ज़ात की तअ़रीफ़ और बेशुमार नेअ़मतों का शुक्रिया अदा करता है जो उसके पालनहार ने उस पर किये हैं, यह वह परवरदिगार है जो केवल मुसलमानों का पालने वाला ही नहीं बल्कि तमाम मख़्लूक़ को ज़िन्दगी और रिज़्क़ देने वाला और सबसे ज़्यादा उन पर रहम करने वाला है। उसी ने तमाम मख़्लूक़ को अपनी क़ुदरत से पैदा किया और उसी का हुक्म सब पर जारी होता है।

इस दुनिया की हर चीज़ उसी की मुहताज है,वह एक है उसका कोई साझीदार नहीं,वही सीधी राह दिखाता है। कोई मुसलमान जब भी नमाज़ के लिए खड़ा होता है तो वह सूरः फ़ातिहा को बार-बार पढ़ता और सुनता है कि इसमें पूरे क़ुर्आन मजीद के पैग़ाम की रुह और खुलासा है। इस सूरः के अन्दर तमाम इन्सानी तब्क़ात की ज़रूरतों और ख़्वाहिशों के इख़्तिलाफ़ के बावजूद हर गिरोह और शख़्स की तस्कीन (तसल्ली) का सामान मौजूद है। इस मुख़्तसर सूरः में ज़िन्दगी का पैग़ाम है, उम्मीद और ख़ुशख़बरी है उस इन्सान के लिए जिसको हर तरफ़ से धुत्कारा जाता है, हर तरफ़ से तक्लीफ़ों और आ़ज़्माइशों के तूफ़ान में जो घिरा हुआ है। माल, कुव्वत, मन्सब और सेहत इसका साथ छोड़ देते हैं। महबूबतरीन औलाद भी काम नहीं आती। ऐसा कमज़ोर व मुहताज इन्सान सूरः फ़ातिहा पढ़ कर अपने दिली एहसासात व जज़्बात की तर्जुमानी करता है, वह उस रब से मदद माँगता है जो तमाम मख़्लूक़ का पालनहार है। जो रोज़े जज़ा का मालिक है। वही अ़िबादत का हक़्दार है, वही सीधी राह दिखाता है।

जहाँ तक मुसलमानों का तअ़ल्लुक़ है उनके बच्चों और नई नस्ल के लिए और दीनी मर्क़ज़ों के लिए और मदारिस और फ़ायदे उठाने वालों के लिए, क़दीम अर्सा से उर्दू में इस्लाम के मबादी व तअ़लीमात से वाक़िफ़ कराने के लिए बहुत सी किताबें और रिसाले लिखे गये, जिनसे बहुत फ़ायदा पहुँचा। जब तक फ़ारसी का रिवाज था 'माला बुद्दमिन्हु' जैसी किताबें लिखी गईं फिर 'तअ़लीमुल् इस्लाम' के नाम से

कई मुस्तनद उ़ल्मा ने बहुत सी कुतुब व रसायल लिखे जो इब्तिदाई मदारिस में और कम पढ़े लिखे ह़ल्क़ों में रायज और मक़्बूल हैं, और उनसे हज़ारों बल्कि लाखों बच्चों और कम इस्तेअ़दाद के लोगों ने फ़ायदा उठाया, और दीन का इल्म मालूम करने और उन पर चलने का तरीक़ा सिखाया, और मुस्लिम दाअ़ीयाने इस्लाम की कोशिश और ख़ुद फ़ित़्रते सलीम के तक़ाज़ा और हिदायते रब्बानी से हिन्दुस्तान की ग़ैर मुस्लिम आबादी और हमारे हमवतन पड़ोसियों में से हर इलाक़े में बहुत सी जगह सैकड़ों की तअ़दाद में और बहुत सी जगह हज़ारों की तअ़दाद, और बाज़ जगह गाँव के गाँव और इलाक़े में अपने इरादा व अख़्तियार और अपने क़द्रो इन्साफ़ से दीने इस्लाम को क़ुबूल किया।

वक़्त की एक अहम ज़रूरत थी जिसको अ़ज़ीज़ुल क़द्र 'मोलवी मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी' ने अन्जाम दिया और वक़्त की एक ज़रूरत और दीन की तफ़्हीम व तब्लीग़ व तर्बियत का एक मुतालबा और तक़ाज़ा पूरा किया। इससे पहले बहुत से किताबचे इनके क़लम से हिन्दी में आ चुके हैं जिनसे हमारे ग़ैर मुस्लिम भाईयों को ख़ासतौर से इस्लाम के बारे में मुफ़ीद मालूमात ह़ासिल हुई।

इस बात की बड़ी ज़रूरत है कि आसान हिन्दी ज़बान में ऐसी किताबें बकस्रत तैयार की जाएँ, ताकि इस मुल्क में सदियों से रहने वाले शहरी एक दूसरे के मज़हब,अक़ायद,तहज़ीब व तारीख़ से वाक़िफ़ हों, जिससे ग़लतफ़हमियाँ दूर हों और प्रेम व मुह़ब्बत और भाईचारगी में इज़ाफ़ा हो।

इस में मुसन्निफ़ ने पहले क़ुर्आन मजीद का तआ़र्रुफ़ इख़्तिसार से कराया है और बताया है कि क़ुर्आन ही एक ऐसी मह़फ़ूज़तरीन किताब है जो हर प्रकार की तहरीफ़ व तब्दीली से पाक है। जिसे अल्लाह तआ़ला ने इस क़ुर्आन की ह़िफ़ाज़त का ख़ुद वादा अपने ज़िम्मे लिया है। मुसन्निफ़ ने इन्सानी ज़िन्दग़ी से उसका तअ़ल्लुक़, फिर सूरः के तआ़र्रुफ़ के साथ उसके मफ़्हूम और उसकी तशरीह़ की है, उम्मीद है कि यह मुफ़ीद होगा। अल्लाह पाक अ़ज़ीज़ेग्रामी की इस कोशिश को क़ुबूल फ़रमाए।

ابوالحسن علی ندوی

अबुल ह़सन अ़ली नदवी

18 जमादिल् अव्वल 1419 हि०

नोटः- अल्ह़म्दुलिल्लाह क़ुर्आन मजीद के काम को मैंने ह़ज़रत मौलाना के मश्वरह से **1996** ई० में ही शुरु कर दिया था और आप की ज़िन्दग़ी में सूरः फ़ातिह़ा और तीस्वें पारे की तफ़्सीर छप चुकी थी। ऊपर की तह़रीर ह़ज़रत मौलाना ने उसी के मुक़द्दमे में यह दुआ़इया कलिमात तह़रीर फ़रमाये थे, जिसे शुरु में पेश कर दिया गया है और बाक़ी उ़लमा की तहरीरें आख़ीर में शामिल की गई हैं।

प्रख़्यात विश्व विद्वानों का इस तफ़्सीर पर संक्षिप्त लेख

तमाम तअ़रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं और दुरुद व सलाम की बारिश हो मोह़सिने आ़ज़म सय्यदना मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह (सल्ल०) पर, जिन्होंने क़ुर्आन मजीद की तअ़लीम दी और अल्लाह की रह़मतें नाज़िल हों तमाम सह़ाब-ए-किराम व आज तक के रावियों और उम्मत के उ़ल्मा-ए-किराम पर जिन्होंने क़ुर्आन करीम की तअ़लीम को अगली नस्ल तक मुन्तक़िल किया।

अल्लाह तआ़ला की मुझ पर बेशुमार नेअ़मतें हैं जिन में सब से बड़ी नेअ़मत यह है कि उस ने क़ुर्आन मजीद के समझने, सीखने, पढ़ने और लिखने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई।

अल्ह़म्दु लिल्लाह "ह़ज़रत मौलाना सय्यद अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी नदवी" (रह़०) के मशवरे से मैंने 1996 ई० में ही क़ुर्आन मजीद का काम शुरु कर दिया था और लगभग 18 साल से इस काम में मुसल्सल मश्ग़ूल हूँ।

इस में सबसे पहले सूरः फ़ातिह़ा की तफ़्सीर प्रकाशित की गई, फिर तीस्वें पारे के अलग-अलग सूरतों की तफ़्सीर, फिर तीस्वें पारे की मुकम्मल तफ़्सीर, फिर पूरे क़ुर्आन मजीद का हिन्दी अनुवाद "क़ुर्आन का पैग़ाम" नाम से प्रकाशित हुआ, उसके बाद जैसे-जैसे तफ़्सीर का काम होता रहा, एक-एक भाग "तफ़्सीर फ़ारुक़ी" के नाम से प्रकाशित किया जाता रहा, जिस पर विश्व प्रसिद्ध क़ुर्आनी उलूम के माहिरीन से मुफ़ीद मश्वरे लिये जाते रहे और नाचीज़ की दरख़्वास्त पर वह अपने सन्देश से ह़िम्मत अफ़्ज़ाई भी फ़रमाते रहे।

अब जबकि अल्हम्दु लिल्लाह किसी ह़द तक तफ़्सीर का काम पाँच भागों में आने वाला है, इसलिए हम अपने असातिज़ा व मुह़सिनों के पैग़ामात को भाग पाँच में मुकम्मल तौर से, जो अलग-अलग भागों पर अलग-अलग तारीख़ों में लिखे गये थे, उसे भी शामिल कर रहे हैं, जिस से मुतालअ़ करने वालों को रहनुमाई भी होगी और हमारे सभी मुह़सिनों को उसका अ़ज्र भी मिलेगा।

चूंकि पैग़ामात की सूची लम्बी है इसलिए शुरु में केवल "ह़ज़रत मौलाना सय्यद अबुल ह़सन अली ह़सनी नदवी" (रह़०) के सन्देश को पूरा शामिल करने के बाद हर एक के सन्देश से कुछ पंक्ति दर्ज की गई है। उस के बाद सभी बुजुर्गों के सन्देश आख़ीर में मुकम्मल तौर से दिये गये हैं जिस से मुतालअ़ करने वाले मुस्तफ़ीद हो सकते हैं।

यहाँ केवल नाम और उनके सन्देश की एक पंक्ति दर्ज की जाती है, जिससे इस की अहमियत का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है। जैसे-

(1) इस्लामी जगत के प्रख़्यात विद्वान एवं श्रेष्ठ विचारक ह़ज़रत मौलाना सय्यद मुह़म्मद राबेअ़ ह़सनी नदवी मद्‌दज़िल्लहुल्‌आ़ली के क़लम से-

'नाज़िम,' दारुल् उलूम, नदवतुल उलमा, लखनऊ, व 'अध्यक्ष,' मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड (इण्डिया)

"हमारे अज़ीज़ 'मौलवी मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साह़ब' जो एक फ़ाज़िल शख़्स और अ़रबी व हिन्दी दोनों से अच्छी वाक़्फ़ियत रखने वाले हैं, मेरे सामने इस वक़्त इन्हीं का हिन्दी तर्जुमः व तफ़्सीर क़ुर्आन है जिसको इन्होंने बड़ी मेह़नत व क़ाबिलियत से तैयार किया है।

उम्मीद है कि सारे मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम भाई जो हिन्दी ज़बान ही के ज़रिये ज़्यादा बेहतर समझ सकते हैं, इस तर्जुमे व तफ़्सीर से सही फ़ायदा उठाएँगे।" मुसलमान ह़ज़रात तो अ़मल करने के लिए और

उसकी रहनुमाई में अपनी ज़िन्दगी संवारने के लिए और ग़ैर मुस्लिम भाई इस्लाम और क़ुर्आन की सही ह़क़ीक़त और तालीमात से वाक़िफ़यत ह़ासिल करने के लिए। मेरी दुआ है कि यह तफ़्सीर मुफ़ीद और कामियाब साबित हो।

(2) इस्लामी जगत के प्रख्यात विद्वान ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती अबुल् क़ासिम नोअ़मानी क़ासमी मद्दज़िल्लहुलआली के क़लम से-

मुहतमिम, दारुल उलूम देवबन्द

मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारुक़ी नदवी के हिन्दी तर्जुमे पर मुल्क के मुतअ़द्दिद अकाबिर अहले इ़ल्म ने गहरी नज़र से तर्जुमः को देखकर अपनी पसन्दीदग़ी का इज़्हार भी किया है, इसलिए उम्मीद है कि यह तर्जुमः न सिर्फ़ हिन्दीदाँ मुसलमानों के लिए; बल्कि उन बिरादराने वतन के लिए भी "क़ुर्आन के पैग़ाम" को समझने में मदद देगा, जो संजीदा और इन्साफ़ पसन्द हैं और क़ुर्आन पाक के पैग़ाम को समझना चाहते हैं। अल्लाह तआ़ला इन की ख़िद्मत को क़ुबूल फ़रमाए और मज़ीद दीनी ख़िद्मत की तौफ़ीक़ बख़्शे।

(3) इस्लामी जगत के प्रख्यात विद्वान ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद सालिम क़ासमी मद्दज़िल्लहुल् आ़ली के क़लम से-

मोहतमिम, "दारुल् उलूम वक़्फ़", देवबन्द व उपाध्यक्ष मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड इण्डिया

"पेशे नज़र तफ़्सीर "क़ुर्आन का पैग़ाम, "तफ़्सीर फ़ारूक़ी" बज़बान हिन्दी और इस तफ़्सीर के ज़रिये दअ़वत "मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी" ने इ़ल्मी ज़ौक़-ए-सलीम, वक़ीअ़ दीनी सलाह़ियत, वसीअ़ मुतअ़ला और उ़लूमे क़ुर्आनी से इस्तिफ़ादह की राह अ़वाम व ख़वास के लिए खोल दी है।

उम्मीद है कि यह तफ़्सीर मुवल्लिफ़ीन, मुसन्निफ़ीन, मुह़क़्क़िक़ीन, मुक़र्रिरीन और मुदर्रिसीन के लिए एक क़ीमती इ़ल्मी तोह़फ़ा साबित होगी"।

(4) प्रख्यात विद्वान ह़ज़रत मौलाना सय्यद अरशद मद्नी मद्दज़िल्लहुल् आ़ली के क़लम से-

उस्ताज़ ह़दीस, दारुल उ़लूम, देवबन्द व अध्यक्ष- जमअ़ीयतुल् उ़लम-ए-हिन्द (भारत)

"अब जबकि हिन्दी भाषा हमारे मुल्क की सरकारी भाषा है और उम्मत का एक बहुत बड़ा तब्क़ा उर्दू से दूर है। इस बात की सख़्त ज़रुरत है कि इस्लामी उ़लूम को हिन्दी भाषा में भी किया जाए।

यह बात क़ाबिले क़द्र है कि "मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारुक़ी नदवी साह़ब" ने इस ज़रुरत को मह़सूस किया और ह़ज़रत थानवी (रह़०) के तर्जुमे को सामने रखते हुए हिन्दी भाषा में क़ुर्आन शरीफ़ का तर्जुमः व तफ़्सीर किया है, अगरचे यह फ़क़ीर अपनी मस्रूफ़ियत की वजह से इसको एक-एक शब्द नहीं देख सका, लेकिन ह़ज़रत थानवी (रह़०) के तर्जुमे को सामने रखना इस तर्जुमे व तफ़्सीर की सिक़ाहत (प्रमाण) के लिए काफ़ी है"।

(5) प्रख्यात विद्वान हज़रत मौलाना मुहम्मद सईदी मज़ाहिरी मद्दज़िल्लहुलु आली के क़लम से-

नाज़िम व मुतवल्ली मदरसा मज़ाहिरुलु ज़ूलूम (वक़्फ़) सहारनपुर (यू०पी०) इण्डिया

"मुझे यह मालूम होकर खुशी हुई कि दारुलु उलूम नद्वतुलु ज़ुलमा, लखनऊ के एक आ़लिमे दीन "जनाब मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारुक़ी नदवी" ग़ैर मुस्लिमों में दअ़वत व तब्लीग़ के लिए कोशाँ और फ़िक्रमन्द हैं, इस सिलुसिले में उन्होंने मुख़्तलिफ़ किताबें और किताबुचे भी मुरत्तब व शाया किये हैं।

इसी तरह़ उन्होंने क़ुर्आन करीम के दअ़वती उस्लूब को मद्देनज़र रखते हुए हिन्दी ज़बान में "तफ़्सीर फ़ारुक़ी" के नाम से बाबरकत सिलुसिला शुरु किया है, जिस का भाग एक मेरे पास बग़र्ज़ तक़्रीज़ पहुँची है। अल्लाह तआ़ला मौलाना मोह़रत की इस कोशिश व काविश को शर्फ़ क़ुबूल और मक़ामे क़ुबूलियत अ़ता फ़रमाए"।

(6) प्रख्यात विद्वान तथा श्रेष्ठ साहित्यकार ह़ज़रत मौलाना सअ़ीदुर्रह़मान आज़मी नदवी मद्दज़िल्लहुलुआली के क़लम से-

मुहतमिम- दारुलु उलूम नद्वतुल ज़ुल्मा, लखनऊ व चान्सलर- इन्टीग्रल यूनिवर्सिटी, लखनऊ

"हमारे इस मुल्क में हिन्दी ज़बान में क़ुर्आन करीम के तर्जुमे मुख़्तलिफ़ इदारों और शख़्सियात की तरफ़ से शाए (प्रकाशित) हो कर मक़्बूल हो चुके हैं।

"लेकिन अभी तक किसी ऐसे आ़लिमे दीन की तरफ़ से जिसको हिन्दी ज़बान पर पूरी तरह़ उबूर ह़ासिल हो और वह अ़रबी ज़बान की रुह़ को समझ कर हिन्दी ज़बान में मुन्तक़िल करने की भरपूर सलाह़ियत (योग्यता) रखता हो, कोई काम न हो सका था"।

हमें इस बात का एतिराफ़ करने में निहायत ख़ुशी हो रही है कि हमारे ह़लक़-ए-नद्वतुलु ज़ुलमा की तरफ़ से यहाँ के आ़लिमे दीन 'मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी' जो अ़रबी, उर्दू, हिन्दी के माहिर मायानाज़ अदीब (साहित्यकार) आ़लिम और सहाफ़ी (पत्रकार) क़ुर्आन करीम का हिन्दी ज़बान में एक निहायत ही क़ाबिले उसूक और अ़रबी ज़बान की रुह़ से क़रीब तर हिन्दी तर्जुमः व तफ़्सीर पेश कर रहे हैं।

(7) प्रख्यात इस्लामी विश्व विद्वान ह़ज़रत मौलाना ख़ालिद सैफ़ुल्लाह रह़मानी मद्दज़िल्लहुल आ़ली के क़लम से-

नाज़िम अलु मअ़हदुलु आ़ली इस्लामी हैदराबाद व जनरल सेक्रेट्री इस्लामिक फ़िक़ः अकेडमी, इण्डिया व सेक्रेट्री आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड

क़ुर्आन को एक पैग़ाम की शक्ल में, दअ़वती उस्लूब और आसान अन्दाज़ में पेश करने की ज़रुरत थी, चुनाँचे मुह़िब्बी फ़िल्लाह जनाब 'मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारुक़ी नदवी' (सदर जमअ़ीयत पयामे अम्न, लखनऊ) ने इसी अन्दाज़ में क़ुर्आन पाक के तर्जुमे व तश्रीह़ की कामियाब कोशिश की है।

इस तफ़्सीर में सब से पहले "सूरः का तआ़र्रुफ़" के उ़न्वान (शीर्षक) से हर रुकूअ़ का ख़ुलासा पेश किया है, फिर आयतों के तर्जुमे और हर आयत के मुतअ़ल्लिक़ तफ़्सीर, अस्बाबे नुज़ूल, फ़ज़ीलत, ज़रुरी मसायल और आयत के पैग़ाम को बयान किया गया है। तफ़्सीर के दौरान ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद शफ़ीअ़ साह़ब (रह़०) की "मआ़रिफ़ुलु क़ुर्आन" के अ़लावा अस्लाफ़ की मुतअ़द्दिद कुतुब तफ़्सीर से इस्तिफ़ादा

हैं। एक ख़ास बात इस तफ़्सीर की यह है कि हर आयतों के अलग-अलग नम्बर डाल कर आयतों की तशरीह़ की गई है, ताकि लोग थोड़ा-थोड़ा वक़्त निकाल कर आसानी के साथ फ़ायदा उठा सकें और तल्बा व तालिबात भी अलग-अलग सबक़ के तौर पर इसे पढ़ सकें।

(8) ह़ज़रत मौलाना सय्यद वाज़ेह़ रशीद ह़सनी नदवी मद्द्दज़िल्लहुलूआ़ली के क़लम से-

(शिक्षा महासचिव (मुअतमद तअ़लीम) दारुलू उलूम, नदवतुलू उलमा, लखनऊ)

'मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी साह़ब' जो आ़लिमे दीन होने के साथ-साथ हिन्दी के भी सनद याफ़्ता आ़लिम हैं। मौलाना सरवर साह़ब बहुत सी हिन्दी किताबों के मुसन्निफ़ हैं, और इससे पहले बहुत सी किताबों के तर्जुमे भी कर चुके हैं और अब तफ़्सीर का काम भी पूरा कर चुके हैं। अल्लाह तआ़ला इस कोशिश को क़बूल फ़रमाए और इसको क़ुर्आन फ़हमी का ज़रिया बनाए और हिदायत के मिलने का उनवान बनाए।

(9) ह़ज़रत मौलाना अब्दुलू क़ादिर साह़ब नदवी मज़ाहिरी गुजराती के क़लम से-

नायब मुहतमिम दारुल उलूम नदवतुल उ़लमा, लखनऊ

हमारे अ़ज़ीज़े गिरामी 'मुफ़्ती मौलवी मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साह़ब' ने जो नदवा से सनद याफ़्ता होने के साथ हिन्दी से भी वाक़िफ़ हैं, वाक़िफ़ ही नहीं बल्कि मुसलूसल इस तरह के कामों में लगे रहने की वज़ह से अ़वाम में समझी जाने वाली हिन्दी जो हिन्दुस्तानी ज़बान है उससे भी वाक़िफ़ हैं इन्होंने इस काम को अपने ज़िम्मे लिया है और एक हद तक उसको पाये तक्मील तक पहुँचा कर इस के चार ह़िस्से शाए भी किया और अब पूरे क़ुर्आन की तफ़्सीर शाया करने जा रहे हैं जिस पर वह मुबारकबाद के मुस्तह़िक़ हैं।

(10) मुफ़स्सिरे क़ुर्आन ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती फ़ुज़ैलुर्रह़मान हिलाल उ़स्मानी मद्द्दज़िल्लहुलू आ़ली के क़लम से-

रुक्न तासीसी (फ़ाउन्ड मेम्बर) आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड व सदर-दारुस्सलाम इस्लामी मर्कज़, मलियर कोटला पंजाब, अलू हिन्द

यह नाचीज़ "मोह़तरम मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारुक़ी साह़ब" को इस अ़ज़ीम ख़िद्मत पर दिली मुबारकबाद पेश करते हुए उम्मीद रखता हूँ कि इन्शाअल्लाह इन की इस ख़िद्मत से हिन्दी जानने वाले तब्क़े को ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा पहुँचेगा।

अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है कि मौलाना की यह ख़िद्मते शर्फ़ क़ुबूलियत ह़ासिल करे।

(11) ह़ज़रत मौलाना सय्यद अब्दुल्लाह ह़सनी नदवी (रह़०) के क़लम से-

भूतपूर्व सहसम्पादक 'अर्राइद' व उस्तादे ह़दीस, दारूल उलूम नदवतुल उलूमा (लखनऊ)

"हिन्दी में तर्जुमें की बहुत कमी थी, अगर तर्जुमें कुछ हुए भी तो उन में क़ुर्आनी तर्जुमें के आदाब का पूरा लिहाज अक्सर तर्जुमे करने वालों ने नहीं रखा, ज़रूरत थी कि कोई अच्छा हिन्दीदाँ जो अ़रबी से भी वाक़िफ़ हो इस काम को अन्जाम देता।

बड़ी खुशी की बात है कि 'दारुल उलूम नदवतुल उलमा' के फ़ाज़िल "मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी

साहब नदवी" ने मौलाना फ़तेह़ मुह़म्मद ख़ाँ साह़ब जालन्धरी के तर्जुमे को सामने रखते हुए हिन्दी में तर्जुमानी की कोशिश की है। अल्लाह तआला इस तर्जुमानी व तफ़्सीर को क़बूल फ़रमाये और तमाम गुमराह लोगों के लिए इसको हिदायत का ज़रिया बनाए"।

(12) ह़ज़रत मौलाना शम्सुल ह़क़ साह़ब नदवी मद्‌दज़िल्लहुलूआली

(प्रधान सम्पादक, तअ़मीर-ए-ह़यात व उस्ताज़ दारुल उ़लूम, नद्‌वतुल उ़लमा, लखनऊ)

हमें निहायत ख़ुशी व मसर्रत है कि नद्‌वतुल उ़ल्मा जिसकी बुनियाद ही इस पर पड़ी थी कि ह़ालात के रुख़ और माह़ौल को सामने रखकर काम किया जाए और उसके फ़ाज़िलों को वक़्त की ज़बान में बात करने का सलीक़ा सिखाया जाए ताकि वह दीन की ख़िद्‌मत का ह़क़ अदा कर सकें। इसके एक फ़ाज़िल मौलाना मुह़म्मद सरवर फ़ारुक़ी नदवी ने अच्छी आसान हिन्दी ज़बान में क़ुर्आन करीम का तर्जुमः कर दिया है जो हमारी नई नस्ल के लिए ज़रुरी है और बिरादराने वतन तक, जिसकी रौशनी पहुँचाने का भी ज़रिया है। हमारी दुआ़ है कि अल्लाह तआ़ला इससे ज़्यादा फ़ायदा पहुँचाए।

(13) ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद ज़करिया नदवी मद्‌दज़िल्लहुलू आ़ली के क़लम से-

(उस्ताज़ ह़दीस व अ़मीद क़ुल्लियतुश्शरीआ़, दारुल उलूम नदवतुल उलमा, लखनऊ)

अल्लाह ने मोह़तरम "मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारुक़ी" को हिन्दी से वाक़्फ़ियत को इनके लिए इतना मुफ़ीद बना दिया है जिस का अन्दाज़ा करना इनकी किताबों और हिन्दी तर्जुमः क़ुर्आन पाक और हिन्दी "तफ़्सीर फ़ारूक़ी" को पढ़े बग़ैर मुश्किल है। क़ुर्आन मजीद की तफ़्सीर व तर्जुमः का काम ख़ासतौर से हिन्दी में बहुत मुश्किल है। हिन्दी पढ़ने वालों के मज़हब ज़ौक़ व मिज़ाज को सामने रखते हुए यह काम करना जितना ज़रूरी है उतना ही मुश्किल है लेकिन बस तौफ़ीक़ की ज़रूरत है जिस ने मौलाना से इतना बड़ा काम ले लिया है। इसके बहुत अच्छे नतीजे सुनने में आए हैं। अल्लाह तआ़ला मुफ़्ती साह़ब की उ़म्र और काम में बरकत अ़ता फ़रमाये और इनकी मेह़नत और कोशिशों को मज़ीद बार आवर करे।

(14) ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती अ़तीक़ अह़मद क़ासमी मद्‌दज़िल्लहुलू आ़ली के क़लम से-

(उस्ताज़ फ़िक़्ः-दारुल उलूम नदवतुल उ़लमा, लखनऊ व नाज़िम मअ़हदुश्शरीआ़, लखनऊ)

हिन्दी ज़बान में इस्लामियात पर काम करने वालों में एक मोअ़तबर नाम जनाब "मौलाना मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी" का है, जो दारुल उलूम नद्‌वतुलू उ़लमा के होनहार फ़ाज़िल और हिन्दी ज़बान में बहुत सी किताबों के मुसन्निफ़ हैं, मुतवाज़ेअ़, मिलनसार और धुन के पक्के हैं, इन्होंने क़ुर्आन करीम का हिन्दी तर्जुमः किया है जिस के मुतअ़द्दिद एडीशन शाया कर चुके हैं।

अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है कि मौलाना मौसूफ़ की यह दीनी ख़िद्‌मात अल्लाह की बारगाह में मक़्बूलियत ह़ासिल करें और बन्दगाने ख़ुदा को इन से ज़्यादा से ज़्यादा नफ़ा पहुँचे।

(15) ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद ख़ालिद साह़ब ग़ाज़ीपुरी नदवी मद्‌दज़िल्लहुलू आ़ली के क़लम से-

उस्ताज़, ह़दीस, दारुल उलूम नदवतुल उ़लमा, लखनऊ व सदर जमअ़ीयतुल मआ़रिफ़, लखनऊ

अल्लाह का लाख-लाख एह़सान व करम है कि इस अहम ज़रुरत को पूरा करने के लिए हमारे फ़ाज़िल 'मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारुक़ी नदवी' ने एक मुकम्मल तफ़्सीर बज़बान हिन्दी में बड़ी मेह़नत व लगन से तैयार

की है और हिन्दुस्तानी माहौल को सामने रखते हुए सलफ़-ए-सालिहीन के तरीक़े को पेशे नज़र रखते हुए हिन्दुस्तानी लोगों की ख़िद्मत में एक नादिर व नायाब क़ुर्आनी तोह़फ़ा पेश किया है।

(16) ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती नियाज़ अहमद साह़ब नदवी मद्दज़िल्लहुल् आली-

(उस्ताज़ ह़दीस व फ़िक़ः व वकील क़ुल्लियतुश्शरीआ अर्थात सदर मुफ़्ती दारुल उलूम नद्वतुल उलमा, लखनऊ)

'मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारुक़ी साह़ब' जो उलूम-ए-शरीआ में माहिर, नदवे के होनहार फ़ाज़िल जिन की क़ुर्आनी उलूम पर अच्छी निगाह है। यह हिन्दू मज़हबी किताबों से भी वाक़िफ़्यत रखते हैं और हिन्दू भाईयों के दर्मियान ख़ासतौर से हिन्दी ज़बान को ज़रिया बना कर दअ्वत का काम कर रहे हैं। इससे पहले इनका हिन्दी तर्जुमः क़ुर्आन का पैग़ाम नाम से कई एडीशन छप चुके हैं जो इनके मक़्बूलियत की दलील है।

चूँकि मैं इन्हें लगभग पन्द्रह बीस साल से दअ्वत के कामों में मशग़ूल देख रहा हूँ जो एक अच्छी फ़िक्र के हामिल हैं और अल्लाह तआला इनके इसी जज़्बे की वजह से इन से बहुत से काम ले रहा है, जिसमें मदारिस, मकातिब और नौजवानों की तर्बियत भी शामिल है।

उम्मीद है कि हिन्दी जानने वालों के लिए यह तफ़ासीर मराज़ेअ़ की हैसियत रखेगी। अल्लाह तआला इस्तिफ़ादे की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

(17) ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहीबुल्लाह क़ासमी मद्दज़िल्लहुल् आली के क़लम से-

(मुबल्लिग़ मदरसः रह़मानिया, दरभंगा, बिहार)

हमें इस बात का एतिराफ़ करने में ख़ुशी हो रही है कि "मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साह़ब" एक आ़लिमी इदारे दारुल् उलूम नद्वतुल् उ़ल्मा से फ़ारिग़ होने के साथ संस्कृत और हिन्दी ज़बान से वाक़िफ़ हैं। जो बराबर तमाम इन्सानों को जहन्नम से निकाल कर जन्नत में ले जाने का काम करते हैं, जिसके लिए उन्होंने बड़ी तअ़दाद में इस्लामी लिट्रेचर तैयार किया है, जो एक सह़ाफ़ी और जमअ़ीयत पयामे अम्न के सदर हैं।

जनाब मौलाना 'मुफ़्ती सरवर फ़ारुक़ी नदवी' ने ख़ासतौर से इस मुल्क के हिन्दी तब्क़े वालों की तरफ़ से शुक्रिया के मुस्तह़िक़ हैं, जिन्होंने इन्सानी हिदायत का एक बड़ा तोह़फ़ा तैयार किया है।

(17) मोहतरम जनाब अन्सार अह़मद सिद्दीक़ी साह़ब के क़लम से-

अध्यक्ष हिन्दी विभाग इस्लामिया डिग्री कालेज, इन्दौर, एम०पी०

हमारे लिए बड़े गर्व एवं प्रसन्नता की बात है कि हमारे प्रिय मित्र जनाब 'मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी' साह़ब ने हिन्दी भाषा में क़ुर्आन का अनुवाद और व्याख्या करने का बहुत महान प्रयास किया है। अल्लाह तआ़ला इन के इस प्रयास को सफ़ल बनाये यह हमारी दिली दुआ़ है और मुझे आशा ही नहीं बल्कि विश्वास है कि हिन्दी जगत में सभी लोग इससे लाभ उठाएँगे।

नोट- अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है कि वह हमारे और हमारी नस्ल और पूरी उम्मत के लिए क़ुर्आन मजीद की तिलावत, ख़िद्मत और इशाअ़त को ज़िन्दग़ी का मक़्सद बना दे, ज़िन्दग़ी गुज़ारे तो बस क़ुर्आन और शारेअ़ क़ुर्आन के साये में और मौत आए तो इसी ख़िद्मत को अन्जाम देते हुए।

दुआ़ओं का तालिब

10 मुह़र्रम 1436 हिज्री

04-11-2014

मुह़म्मद सरवर फ़ारुक़ी नदवी

दारुल् उ़लूम नद्वतुल् उ़ल्मा, लखनऊ

izkDdFku

अल्लाह तआ़ला ने इन्सानों की रहनुमाई के लिए, ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर अपना क़लाम नाज़िल किया जिसे कुर्आन के रुप मे जाना जाता है। इसके विभिन्न अनुवाद व व्याख्याएँ हुयीं जिसमें इस कुर्आन के पैग़ाम की विशेषता संक्षेप में इस तरह़ हैः-

“कुर्आन का पैग़ाम” (अनुवाद) की ख़ुसूसियत

1- क़ुर्आन के अनुवाद में आसान से आसान शब्दों का प्रयोग किया गया है ताकि मुस्लिम और गैर मुस्लिम दोनों, एक साथ समझ सकें, अगर कहीं वह शब्द, जो मुसलमानों के यहाँ बहुत प्रयोग होते हैं लेकिन हिन्दू भाई जानते भी नहीं। जैसे रह़मत, मग्फ़िरत आदि तो ऐसे शब्दों की हिन्दी, कोष्ठक में कर दी गई है।

2- इसमें यह भी ध्यान रखा गया है कि जो क़ुर्आन के शब्द है और उनके स्थान पर दूसरे शब्द भी हैं जैसे- ज़ालिम= अत्याचारी, करीब=समीप, अ़ज़ाब=यातना आदि, तो इस अनुवाद में वही शब्द प्रयोग किये गये हैं जो क़ुर्आनी होने के साथ समाज में भी बोले जाते हों।

3- अनुवाद में यह भी कोशिश की गई है कि अनुवाद मूल अ़रबी से ज़्यादा से ज़्यादा क़रीब हो, कहीं-कहीं ज़रुरत के अनुसार कोष्ठक में व्याख्या कर दी गई है और उन शब्दों से भी बचने की कोशिश की गई है जो हमारे ज़माने से पहले उचित थे, मगर आज वही शब्द दूसरे अर्थों में प्रयोग होने लगे हैं।

4- अनुवाद में विशेष रूप से मूल अ़रबी क़ुर्आन, फिर अब तक जितने भी अनुवाद हिन्दी, उर्दू, अ़रबी, इंग्लिश में हुए हैं, सबसे फ़ायदा उठाया गया है।

“तफ़्सीर फ़ारुक़ी” की ख़ुसूसियात

यह तफ़्सीर ख़ासतौर पर आ़म मुस्लिम व ग़ैर मुस्लिम लोगों के लिए तैयार की गई है। इसलिए ऐसे शब्द जो अ़वाम की समझ से बाहर हों नहीं लिखे गये और कोशिश इस तरह़ की गई है कि दर्स के तौर पर रोज़ाना एक-एक सबक़ पढ़ा जा सके। तफ़्सीर व तशरीह़ में मोअ़तबर उ़लम-ए-मोह़क़्क़ीन और सलफ़ व सालिह़ीन की तफ़्सीरों से ही फ़ायदा उठाया गया है ।

1- यह सूरः अल् माइदा आयत नं० (77) से सूरः हूद आयत नं० (17) तक की तफ़्सीर है।

2- यह तफ़्सीर मुस्लिम व ग़ैर मुस्लिम दोनों को सामने रखते हुए आम भाषा में लिखी गई है ताकि कम पढ़े लिखे लोग भी फ़ायदा उठा सकें।

3- तफ़्सीर में ह़दीस और मोअ़तबर (Authentic) उलमा की तफ़्सीरों से फ़ायदा उठाया गया है।

4- इस में रोज़ (प्रतिदिन) पढ़ने के ह़िसाब से लगभग दस-दस आयतों का तर्जुमः फिर हर आयत की अलग-अलग तफ़्सीर बयान की गई है।

5- इस में सबसे पहले पूरी सूरः का खुलासा (संक्षेप) और उसके विषय, फिर लगभग दस-दस आयतों

का तर्जुमः उसके बाद हर आयत की अलग-अलग तफ़्सीर जिसमें सबसे पहले उसी आयत का शाने नुज़ूल (नाज़िल होने के वक़्त की ह़ालत) फिर उसी आयत से सम्बन्धित ह़दीस और मोअ़तबर उ़लमा की तफ़्सीर की रौशनी में तफ़्सीर, फिर मसायल, एह़काम और उसी आयत से सम्बन्धित नई साइंसी तह़क़ीक़ और ग़ैर मुस्लिमों की तरफ़ से होने वाले सवालों का बेहतर तरीक़े से जवाब के साथ उस से मुतअ़ल्लिक़ फ़ज़ायल जो सह़ी ह़दीसों से साबित है ज़िक्र किया गया है।

6- इसमें अक्सर आयतों का शाने नुज़ूल ज़िक्र किया गया है ताकि ग़ैर मुस्लिम भाईयों के लिए क़ुर्आन के समझने में आसानी हो, लेकिन शाने नुज़ूल ज़िक्र करने का यह मतलब नहीं कि वह आयत केवल उसी समय या उन्हीं लोगों के लिए है बल्कि जब भी कहीं उस तरह़ के ह़ालात हों तो वह आयत रहनुमाई करेगी। इसलिए कि क़ुर्आन क़ियामत तक हर ज़माने के तमाम इन्सानों के लिए है। किसी भी आयत के शाने नुज़ूल (क़ुर्आन के अवतरित होने का कारण) से यह न समझा जाए कि यह तो केवल उसी ज़माने के लिए है और अब हम से यह बात नहीं कही जा रही है।

इसी तरह़ अल्लाह पाक अपनी शान के मुताबिक़ उन सभी ह़ज़रात को जिन्होंने किसी भी तरह़ का तआ़उन किया हो, अज्र अ़ज़ीम अ़ता फ़रमाए और क़ुर्आन के ख़ादिमों में ह़िस्सा अ़ता फ़रमा कर क़ुर्आन की शिक्षानुसार अ़मल करने और सारी इन्सानी बिरादरी तक क़ुर्आन का पैग़ाम पहुँचाने की मुझे और मेरी नस्ल व पूरी उम्मत को तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए। आमीन

मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी
दारुल् उलूम नद्वतुल उ़लमा, लखनऊ
4 रबीउस्सानी 1437
15 जनवरी 2017 ई०

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ

कुर्आन की व्याख्या अगले पेज से शुरू हो रही है

पवित्र कुर्आन को पाक साफ़ (वुज़ू करके) शुद्ध होकर आदर के साथ अ़मल की नियत से ध्यानपूर्वक पढ़ें और सही उच्चारण का भी ख़्याल रखें।

(भाग-5)

सूर-ए-माइदा (सूरः नं. 5)

आयत नं० 77 से आख़िर तक

आयत नं० 77 से 82 तक

قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ غَيْرَ الْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعُوْٓا اَهْوَآءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوْا مِنْ قَبْلُ وَ اَضَلُّوْا كَثِيْرًا
وَّضَلُّوْا عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ۝ لُعِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْۢ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى لِسَانِ دَاوٗدَ وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا
يَعْتَدُوْنَ ۝ كَانُوْا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُّنْكَرٍ فَعَلُوْهُ ؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ۝ تَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ
لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ لَهُمْ اَنْفُسُهُمْ اَنْ سَخِطَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَفِي الْعَذَابِ هُمْ خٰلِدُوْنَ ۝ وَلَوْ كَانُوْا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالنَّبِيِّ وَمَآ اُنْزِلَ
اِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوْهُمْ اَوْلِيَآءَ وَلٰكِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝ لَتَجِدَنَّ اَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الْيَهُوْدَ وَالَّذِيْنَ
اَشْرَكُوْا ۚ وَلَتَجِدَنَّ اَقْرَبَهُمْ مَّوَدَّةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّا نَصٰرٰى ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّ مِنْهُمْ قِسِّيْسِيْنَ وَرُهْبَانًا
وَّاَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ۝

अनुवाद-

(77) कह दीजिए, "ऐ अह्ले-किताब! अपने दीन में नाहक़ ह़द से आगे न बढ़ो, और उन लोगों की इच्छाओं के पीछे न चलो जो इससे पहले ख़ुद भटके, और बहुतों को भटकाया; और सीधे रास्ते से भटक गये।" (78) बनी इस्राईल से जिन लोगों ने इन्कार किया, उन पर दाऊद और मरयम के बेटे ईसा की ज़बान से लानत की गयी, क्योंकि वह नाफ़रमानी करते थे और ह़द से आगे बढ़ जाते थे; (79) जो बुरा काम वे करते थे, उससे वे एक-दूसरे को रोकते न थे, यह बहुत ही बुरा था, जो वे कर रहे थे; (80) तुम उनमें से बहुतों को देखोगे कि काफ़िरों (इन्कारियों) से दोस्ती रखते हैं, उन्होंने जो कुछ अपने आगे भेजा है बहुत ही बुरा है अल्लाह का उन पर ग़ज़ब हुआ, और वे हमेशा अ़ज़ाब में रहेंगे; (81) और अगर वे अल्लाह और नबी पर और उस चीज़ पर ईमान लाते, जो उनकी ओर नाज़िल हुई, तो वे उनको दोस्त न बनाते, लेकिन उनमें अक्सर लोग नाफ़रमान हैं। (82) तुम ईमान वालों का दुश्मन तमाम लोगों से बढ़कर यहूदियों और मुशिरकों (बहुदेववादियों) को पाओगे; और ईमान वालों के लिए दोस्ती में सबसे क़रीब उन लोगों को पाओगे, जो कहते हैं "हम नसारा हैं।" यह इस वजह से कि उनमें आ़लिम (धर्म ज्ञाता) भी हैं और अल्लाह वाले (संन्यासी) भी, और इस वजह से कि वे तकब्बुर (घमंड) नहीं करते।

आयत नं० 77 से 82 तक की व्याख्या

77 قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ غَيْرَ الْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعُوْٓا اَهْوَآءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوْا مِنْ قَبْلُ
وَاَضَلُّوْا كَثِيْرًا وَّضَلُّوْا عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ۝

ऐ अहले किताब! ह़द से आगे न बढ़ो और जिन की तअ़ज़ीम (सम्मान) का तुम्हें हुक्म दिया गया है उन के बारे में इतना गुलू (बढ़ा-चढ़ा कर बात) न करो कि उन्हें नुबूव्वत की जगह से हटा कर उलूहियत के दर्जे तक पहुँचा दो, जैसा कि तुम ने मसीह़ (अ़लै०) के साथ किया और अपने उन गुमराह उ़लमा को पीछे न चलो जो खुद गुमराह हुए और दूसरों को भी ह़क़ की राह से भट्का दिया।

यह आयत दलील है कि दीन में ज़्यादती जायज़ नहीं है, जैसा कि बहुत से लोग तहारत (पाकी) में करते हैं और शरीअ़त में जो कुछ साबित है उस से आगे बढ़ जाना तक़्वा समझते हैं और जैसा कि बहुत से लोग सालिह़ीन और उन की क़ब्रों के सिलसिले में आगे बढ़ते हैं और बुतों की तरह़ उन की तअ़ज़ीम (सम्मान) करते हैं।

'इमाम अह़मद', 'नसई' और 'इब्ने माजा' वग़ैरहुम ने इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत की है कि नबी करीम (सल्ल०) ने फ़रमाया, "तुम लोग दीन में ग़ुलू (ज़्यादती) करने से बचो, इसलिए कि तुम से पहले के लोग दीन में ग़ुलू करने की वजह से हलाक हो गये।"

इमाम बुख़ारी ने ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) से रिवायत की है कि नबी करीम (सल्ल०) ने फ़रमाया, "मेरी तअ़रीफ़ में ह़द से आगे न बढ़ो, जैसा कि नसारा ने इब्ने मरयम के साथ किया, मैं तो अल्लाह का एक बन्दा हूँ, इसलिए मुझे अल्लाह का बन्दा और उस का रसूल कहो।" **(बुख़ारी)**

78-80 لُعِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ بَنِي إِسْرَاءِيلَ عَلَىٰ لِسَانِ دَاوُدَ وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۚ ذَٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا يَعْتَدُونَ ۝
كَانُوا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُنْكَرٍ فَعَلُوهُ ۚ لَبِئْسَ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ۝ تَرَىٰ كَثِيرًا مِنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِينَ
كَفَرُوا ۚ لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ لَهُمْ أَنْفُسُهُمْ أَنْ سَخِطَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَفِي الْعَذَابِ هُمْ خَالِدُونَ ۝

इन आयात में ख़बर दी गई है कि अल्लाह तआ़ला ने 'बनी इस्राईल' के काफ़िरों पर ह़ज़रत दाऊद और ईसा (अ़लै०) की ज़बानी लअ़नत भेज दी थी और इस की वजह यह बताई कि उन्होंने अल्लाह की नाफ़रमानी की और ह़द से आगे बढ़ गये, अम्बिया को क़त्ल किया और बहुत सी चीज़ों को अपने लिए ह़लाल समझा और एक बड़ा गुनाह यह भी किया कि उन्होंने एक दूसरे को गुनाह से रोकना छोड़ दिया। इस पर अल्लाह ने फ़रमाया कि उन के करतूत बड़े ही बुरे थे।

'बनी इस्राईल' पर लअ़नत–

इन आयतों से मालूम हुआ कि 'बनी इस्राईल' के काफ़िरों पर लअ़नत भेजनी जायज़ है और यह कि 'नहि अनिल् मुन्कर' यानी बुरे आ़माल से लोगों को रोकना वाजिब है, इसीलिए 'ह़ाकिम' ने कहा कि 'नहि अनिल् मुन्कर' न करना बड़ा गुनाह है। (यानी भलाई का हुक्म देना और बुराई से रोकना) इस्लाम का अहम शरई फ़रीज़ा है। इसीलिए इसे छोड़ देने वाला गुनाह करने वालों में शरीक और अल्लाह के ग़ज़ब का ह़क़्दार होता है, जैसा कि उन यहूदियों के साथ हुआ जिन्होंने हफ़्ते के दिन के बारे में फ़रमाने इलाही का लिहाज़ नहीं रखा, तो अल्लाह ने उन लोगों की भी सूरत मस्ख़ (खराब) कर दी, जो इस अ़मल में शरीक नहीं थे। इसलिए कि उन्होंने उन को नहीं रोका, चुनाँचे सभी की शक्लें 'बन्दरों' और 'सुअरों' जैसी हो गईं।

'बनी इस्राईल' के उ़लमा–

'इमाम अह़मद' 'अबूदाऊद' तिर्मिज़ी और 'इब्ने माजा' वग़ैरहुम ने इस आयत की तफ़्सीर में



दाऊद (अ़लै०)

- **अस्दूद, बैत दजिन, अबू ग़ोश, बैतुल् मुक़द्दस, रमल्ला**

'अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद' (रज़ि०) से रिवायत नक़ल की है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "बनी इस्राईल ने जब गुनाह किया तो उन के उ़लमा ने मना किया, लेकिन वह न माने और वह उ़लमा उन की इस ह़रकत के बावजूद उन की मजलिसों में शरीक होते रहे, उन के साथ खाते-पीते रहे तो अल्लाह ने उन के दिलों में इख़्तिलाफ़ पैदा कर दिया और 'ह़ज़रत दाऊद' व 'ह़ज़रत ईसा' (अ़लै०) की ज़बानी उन पर लअ़नत भेज दी। यह सब इस वजह से हुआ कि उन्होंने अल्लाह की नाफ़रमानी की और ह़द से आगे बढ़ गये।"

(अह़मद, अबूदाऊद, तिर्मिज़ी)

ह़ज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि०) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्ल०) ने फ़रमाया, "उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है, तुम लोग भलाई का हुक्म दोगे और बुराई से रोकेगे, वरना क़रीब है कि अल्लाह तुम पर अपनी ओर से कोई अ़ज़ाब भेज दे। फिर तुम लोग अल्लाह से दुआ़ करोगे तो वह क़ुबूल नहीं करेगा।" **(अह़मद व तिर्मिज़ी)**

81 وَلَوْ كَانُوا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالنَّبِيِّ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوهُمْ أَوْلِيَاءَ وَلَٰكِنَّ كَثِيرًا مِّنْهُمْ فَاسِقُونَ۝

यह आयत यहूदे मदीना के बारे में है कि वह मक्का के मुश्रिकीन और मदीना के मुनाफ़िक़ीन के साथ दोस्ती गाँठते हैं और उन की मदद करते हैं, इसीलिए अल्लाह ने उन के इस ह़रकत का अन्जाम यह बताया कि अल्लाह उन से नाराज़ हो गया और क़ियामत के दिन वह हमेशा के अ़ज़ाब में होंगे।

इस के बाद अल्लाह ने उन के इस बुरे अ़मल पर और सख़्ती करते हुए फ़रमाया कि अगर वह अपने ईमान में सच्चे होते तो काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों को अपना दोस्त न बनाते।

82 لَتَجِدَنَّ أَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِّلَّذِينَ آمَنُوا الْيَهُودَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا ۖ وَلَتَجِدَنَّ أَقْرَبَهُم مَّوَدَّةً لِّلَّذِينَ
آمَنُوا الَّذِينَ قَالُوا إِنَّا نَصَارَىٰ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّ مِنْهُمْ قِسِّيسِينَ وَرُهْبَانًا وَأَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ۝

यहूद की साज़िशें-

अल्लाह तआ़ला ने 'नबी करीम (सल्ल०)' को ख़बर दी है कि यहूद और मुश्रिकीन दूसरे लोगों

की बनिस्बत मुसलमानों की दुश्मनी में ज़्यादा सख़्त हैं। यहूद ने उन से इसलिए दुश्मनी की कि मुसलमान 'ह़ज़रत ईसा (अ़लै०)' और 'ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०)' दोनों पर ईमान ले आएँ। इन्होंने बहुत से अम्बिया को क़त्ल किया और कई बार 'नबी करीम (सल्ल०)' को भी क़त्ल करने की साज़िश की, लेकिन हर बार अल्लाह ने उन की साज़िश को नाकाम कर दिया और अपने रसूल (सल्ल०) की ह़िफ़ाज़त फ़रमाई और मुश्रिकीन ने इसलिए दुश्मनी की कि मुसलमानों ने अल्लाह की वह़दानियत (एकेश्वरवाद) का इक़रार किया और अम्बिया-ए-किराम की नुबूव्वतों पर ईमान ले आये, जबकि वह कुफ़्र व शिर्क के घटाटोप अँधेरों में भटकते रहे।

'मसीह़ (अ़लै०)' के मानने वालों में से जो लोग अपने आप को 'नसारा' कहते हैं और इन्जील के मुताबिक़ अपनी ज़िन्दगी गुज़ारते हैं वह अपने दिलों में 'इस्लाम' और 'मुसलमानों' के लिए नर्म गोशा रखते हैं। इस की वजह यह है कि उन के दिलों में नर्मी होती है और यहूद की बनिस्बत उन के दिलों में ह़सद कम होती है।

'ईसाइयों' में नर्मी होती है-

'ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर' लिखते हैं, दीन मसीह़ पर क़ायम रहने की वजह से उन के दिलों में नर्मी और हमदर्दी का जज़्बा पैदा होता है। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने सूरः ह़दीद आयत नं० (27) में फ़रमाया है وَجَعَلْنَا فِي قُلُوبِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ رَأْفَةً وَرَحْمَةً

कि "हम ने मसीह़ के मानने वालों के दिलों में हमदर्दी और रह़मत का जज़्बा रखा है।"

इन्जील में है कि "जो तुम्हारे दाएँ गाल पर थप्पड़ मारे तुम उस के सामने अपना बायाँ गाल पेश कर दो।" इस की वजह यह है कि जंग करना दीन मसीह़ की शरीअ़त में नहीं था।

इस के ख़िलाफ़ मज़हब यहूद में है कि-

"जो तुम्हारे दीन का मुख़ालिफ़ हो उसे नुक़्सान पहुँचाने की हर मुम्किन कोशिश करो।"

'इब्ने मर्दविया' ने 'ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०)' से रिवायत की है कि जब भी कोई यहूदी किसी मुसलमान को तन्हाई में पाता तो उसे क़त्ल करने की कोशिश करता था।

यहूद व नसारा में अन्तर-

'नसारा' मुसलमानों से ज़्यादा क़रीब इसलिए भी हैं कि उन के अन्दर इ़ल्म और ज़ुहद (संघर्ष) पाई जाती है और जिस आदमी के अन्दर यह दोनों चीज़ें पाई जाएँगी उस में बुग्ज़ व ह़सद कम होगी। इसी की तरफ़ आयत के आख़िर में इशारा है कि नसारा उ़लमा यहूदियों की तरह घमण्ड नहीं करते हैं।

'नसारा' की सिफ़त यह भी है कि जब वह अल्लाह का कलाम सुनते हैं तो उन की आँखों से आँसू जारी हो जाते हैं, इसलिए कि उस में नबी करीम (सल्ल०) की बशारत मौजूद है और दुआ़ करते हैं कि ऐ अल्लाह! हमें उन लोगों में लिख दे जो इस के सही़ होने की शहादत देते हैं और इस पर ईमान लाते हैं।

‘नसारा’ भी दुश्मनी रखते हैं–

इन आयात में ‘ईसाईयों’ की नर्मी का जो ज़िक्र है वह इस बात की दलील नहीं कि वह मुसलमानों से दुश्मनी नहीं रखते। इसीलिए कुर्आन ने اَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً के कलिमात इस्तेमाल किये हैं कि ‘नसारा’ भी दुश्मन हैं, लेकिन ‘यहूद मुश्रिकीन’ दुश्मनी में बढ़े-चढ़े हैं। मुसलमानों और ईसाईयों के दर्मियान जो जंगे हुईं उस की वजह एक दुश्मनी की भी थी और यहूदियों की साजिशों की वजह से भी ऐसा हुआ। यह बात ज़ेहन में रहनी चाहिए कि कभी-कभी दिलों में नर्म गोशा होने के बावजूद ज़ाती या क़ौमी फ़ायदे के लिए भाईयों, रिश्तेदारों, क़बीलों और क़ौमों में जंगे हो जाया करती हैं।

तमाम मुफ़स्सिरीन इस पर मुत्तफ़िक़ (सहमत) हैं कि इस सूरत की आयत नं० (82) और सातवें पारे में इस सूरत की आयात नं० 83, 84, 85 ‘नज्जाशी’ और उस के साथियों का ईमान और उन की सिफ़ात बयान करने के लिए नाज़िल हुई थीं।

‘इब्ने अबी हातिम’ ने ‘सईद बिन मुसय्यिब’ ‘अबू बक्र बिन अ़ब्दुर्रहमान’ और ‘उरवह बिन ज़ुबैर’ से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने ‘अ़म्र बिन उमय्या ज़ुमरी’ को एक ख़त देकर नज्जाशी के पास भेजा और नज्जाशी ने ख़त पढ़ कर ‘जाफ़र बिन अबी तालिब’ और उन के साथ मौजूद दूसरे मुहाजिरीन को बुला भेजा और अपने उ़लमा को बुला लिया।

‘नज्जाशी’ का ईमान–

‘हज़रत जाफ़र (रज़ि०)’ ने “सूरः मरयम” की तिलावत की तो नज्जाशी और उस के तमाम साथी कुर्आन पर ईमान ले आये और उन की आँखों से आँसू जारी हो गये। उन्हीं लोगों की हालत और ईमानी कैफ़ियत बयान करने के लिए मदनी ज़िन्दगी में यह आयतें नाज़िल हुई थीं।

‘मुहम्मद बिन इस्हाक़’ ने ‘उम्मुल् मोमिनीन उम्मे सल्मा’ रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से एक लम्बी रिवायत नक़्ल की है, जिस में उन्होंने मुसलमानों के ‘हब्शा’ की तरफ़ हिजरत का वाक़िआ बयान किया है और यह कि कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने ‘अ़ब्दुल्लाह बिन अबी रबीअ़’ और ‘अ़म्र बिन आ़स’ को बहुत से तोहफ़े देकर हब्शा रवाना किया, जिन्होंने वहाँ जाकर ‘हब्शा’ के पादरियों को मुसलमानों के ख़िलाफ़ बहुत ज़्यादा बहकाया कि किसी तरह मुसलमान मुहाजिरीन कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के हवाले कर दिये जाएँ, लेकिन जब ‘जाफ़र बिन अबी तालिब’ ने इस्लाम की तशरीह (व्याख्या) की और ‘नबी करीम (सल्ल०)’ की सिफ़ात (गुण) बयान कीं और ‘मसीह बिन मरयम’ के बारे में ‘इस्लाम’ का सही अ़क़ीदा पेश किया तो ‘नज्जाशी’ बहुत ज़्यादा प्रभावित हुआ और ‘इस्लाम’ क़ुबूल कर किया।

“बुख़ारी व मुस्लिम, की रिवायत है कि जब ‘नबी करीम (सल्ल०)’ को नज्जाशी के इन्तिक़ाल की ख़बर पहुँची तो आप ने सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से फ़रमाया कि हब्शा में तुम्हारे भाई ‘नज्जाशी’ का इन्तिक़ाल हो गया है उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ो, चुनाँचे तमाम सहाबा के साथ आप ने शहर से बाहर जाकर उस की नमाज़े जनाज़ा अदा की”। **(बुख़ारी व मुस्लिम)**

खण्ड-7
आयत नं० 83 से 93 तक

*

وَإِذَا سَمِعُوا مَا أُنْزِلَ إِلَى الرَّسُولِ تَرَىٰ أَعْيُنَهُمْ تَفِيضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوا مِنَ الْحَقِّ ۖ يَقُولُونَ رَبَّنَا آمَنَّا فَاكْتُبْنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ ۝
وَمَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا جَاءَنَا مِنَ الْحَقِّ وَنَطْمَعُ أَنْ يُدْخِلَنَا رَبُّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصَّالِحِينَ ۝ فَأَثَابَهُمُ اللَّهُ بِمَا قَالُوا جَنَّاتٍ تَجْرِي
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَذَٰلِكَ جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا لَا تُحَرِّمُوا طَيِّبَاتِ مَا أَحَلَّ اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ۝ وَكُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ حَلَالًا طَيِّبًا ۚ
وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي أَنْتُمْ بِهِ مُؤْمِنُونَ ۝ لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللَّهُ بِاللَّغْوِ فِي أَيْمَانِكُمْ وَلَٰكِنْ يُؤَاخِذُكُمْ بِمَا عَقَّدْتُمُ الْأَيْمَانَ ۖ فَكَفَّارَتُهُ
إِطْعَامُ عَشَرَةِ مَسَاكِينَ مِنْ أَوْسَطِ مَا تُطْعِمُونَ أَهْلِيكُمْ أَوْ كِسْوَتُهُمْ أَوْ تَحْرِيرُ رَقَبَةٍ ۖ فَمَنْ لَمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ ۚ ذَٰلِكَ كَفَّارَةُ
أَيْمَانِكُمْ إِذَا حَلَفْتُمْ ۚ وَاحْفَظُوا أَيْمَانَكُمْ ۚ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا الْخَمْرُ
وَالْمَيْسِرُ وَالْأَنْصَابُ وَالْأَزْلَامُ رِجْسٌ مِنْ عَمَلِ الشَّيْطَانِ فَاجْتَنِبُوهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝ إِنَّمَا يُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَنْ يُوقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ
وَالْبَغْضَاءَ فِي الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ وَعَنِ الصَّلَاةِ ۖ فَهَلْ أَنْتُمْ مُنْتَهُونَ ۝ وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ
وَاحْذَرُوا ۚ فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوا أَنَّمَا عَلَىٰ رَسُولِنَا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ۝ لَيْسَ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جُنَاحٌ فِيمَا
طَعِمُوا إِذَا مَا اتَّقَوْا وَآمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ثُمَّ اتَّقَوْا وَآمَنُوا ثُمَّ اتَّقَوْا وَأَحْسَنُوا ۗ وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ۝

अनुवाद-

(83) और जब वे इस (किताब) को सुनते हैं जो रसूल पर नाज़िल हुआ, तो तुम देखते हो कि उनकी आँखें आँसुओं से छलकने लगती हैं, इसलिए कि उन्होंने हक़ बात पहचान ली, और वे कहते हैं, ''ऐ रब! हम ईमान लाए, तो हम को गवाही देने वालों में लिख ले; (84) और हमें क्या हुआ कि अल्लाह पर और हक़ बात पर, जो हमारे पास आयी, ईमान न लाएँ; और हम उम्मीद रखते हैं कि हमारा रब हमें अच्छे लोगों के साथ (जन्नत में) दाख़िल करेगा-'' (85) तो अल्लाह ने उनके इस कहने की वजह से उन्हें ऐसे बाग़ अता फरमाए, जिनके नीचे नहरें बहती हैं, जिनमें वे हमेशा रहेंगे, और यही भले लोगों का बदला है। (86) और जिन्होंने इन्कार किया और 'हमारी' आयतों को झुठलाया, वे जहन्नमी हैं। (87) ऐ ईमान वालो! जो अच्छी पाक चीज़ें अल्लाह ने तुम्हारे लिए ह़लाल की हैं, उन्हें ह़राम न कर लो और ह़द से आगे न बढ़ो, अल्लाह नहीं पसंद करता ह़द (सीमा) से बढ़ने वालों को। (88) और जो कुछ अल्लाह ने ह़लाल और पाक रोज़ी तुम्हें दी है, उसे खाओ और अल्लाह से डरते रहो, जिस पर तुम ईमान लाए हो। (89) अल्लाह नहीं पकड़ करेगा तुम्हारी बे इरादा क़समों पर जो यूँ ही ज़बान से निकल जाती हैं, लेकिन जो तुमने पक्की क़समें खाई हों, उन पर 'वह' तुम्हें पकड़ेगा, तो उसका कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित या बदला) दस मोहताजों को औसत दर्जे का खाना खिलाना है जो तुम अपने बाल बच्चों को खिलाते हो, या फिर उन्हें कपड़े पहनाना, या एक ग़ुलाम आज़ाद करना होगा, और जिसको यह न मिले, वह तीन रोज़े रखे; यह तुम्हारी क़समों का कफ़्फ़ारा है जबकि तुम क़सम खा बैठो, तुम अपनी क़समों की हिफ़ाज़त किया करो, इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतें

खोल-खोल कर बयान करता है, ताकि तुम शुक्र करो। (90) ऐ ईमान वालो! शराब और जुआँ, और देवस्थान (बुत), और पाँसे गन्दे शैतानी काम हैं, तो तुम इनसे बचते रहो, ताकि तुम कामियाब हो; (91) शैतान तो यही चाहता है कि शराब और जुएँ के ज़रिये तुम्हारे बीच आपस में दुश्मनी और बुग्ज़ (ईर्ष्या) पैदा कर दे और तुम्हें अल्लाह की याद से और नमाज़ से रोक दे, तो क्या तुम बाज़ न आओगे? (92) और अल्लाह की फ़रमाँबरदारी और रसूल की पैरवी करते रहो और डरते रहो, फिर अगर तुमने मुँह मोड़ा तो जान लो 'हमारे' रसूल के ज़िम्मे तो केवल पैग़ाम को खोल कर पहुँचा देना है। (93) जो लोग ईमान लाए और अच्छे अ़मल किये, उन पर उन चीज़ों का कोई गुनाह नहीं, जो वे खा चुके; जबकि उन्होंने परहेज़ किया और ईमान पर क़ायम रहे, और अच्छे काम किये फिर परहेज़ किया और ईमान लाए; फिर परहेज़ किया और अच्छे से अच्छा काम किया, और अल्लाह भले काम करने वालों को पसंद करता है।

आयत नं० 83 से 93 तक की व्याख्या

83-86 *وَإِذَا سَمِعُوا مَا أُنزِلَ إِلَى الرَّسُولِ تَرَىٰ أَعْيُنَهُمْ تَفِيضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوا مِنَ الْحَقِّ ۖ يَقُولُونَ رَبَّنَا آمَنَّا
فَاكْتُبْنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ ﴿٨٣﴾ وَمَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا جَاءَنَا مِنَ الْحَقِّ وَنَطْمَعُ أَن يُدْخِلَنَا رَبُّنَا مَعَ
الْقَوْمِ الصَّالِحِينَ ﴿٨٤﴾ فَأَثَابَهُمُ اللَّهُ بِمَا قَالُوا جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَذَٰلِكَ جَزَاءُ
الْمُحْسِنِينَ ﴿٨٥﴾ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ﴿٨٦﴾

ह़ब्शा के नसारा का वाक़िआ़

जब ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने इस्लाम की दअ़वत देना शुरु की तो अहले मक्का दुश्मनी पर उतर आये और रसूलुल्लाह (सल्ल०) को तरह़-तरह़ से सताते और जो लोग इस्लाम क़ुबूल कर लेते उन्हें बहुत ज़्यादा दुख देते मारते और पीटते थे। इस वजह से बहुत से सह़ाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम अज्मअ़ीन (जिन में मर्द व औ़रत सभी थे) 'ह़ब्शा' के लिए हिजरत कर गये। ह़ब्शा उस वक़्त पड़ोसी मुल्क था जहाँ ईमान के साथ रहने का इम्कान था।

जब यह ह़ज़रात वहाँ पहुँच गये तो अहले मक्का ने वहाँ भी पीछा किया और 'ह़ब्शा' के बादशाह के पास शिकायत लेकर गये, लेकिन उस ने उन लोगों की बात न मानी और सह़ाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम को अम्न व अमान के साथ ठिकाना दिया। जिस में रसूलुल्लाह (सल्ल०) के चचाज़ाद भाई जाफ़र बिन अबी तालिब भी थे। जब यह ह़ज़रात रसूल-ए-करीम (सल्ल०) की ख़िद्मत में वापस हुए तो नज्जाशी ने अपने कुछ लोगों को ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की ख़िद्मत में भेजा जिस में कुछ उ़लमा भी थे।

नज्जाशी ने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की ख़िद्मत में यह लिखा था कि-

"या रसूलल्लाह! मैं गवाही देता हूँ कि आप अल्लाह तआ़ला के सच्चे रसूल हैं और मैंने आप के चचा के बेटे के हाथ पर आप से बैअ़त कर ली और मैंने अल्लाह तआ़ला की इताअ़त क़ुबूल

कर ली। मैं आप की ख़िद्मत में अपने बेटे को भेज रहा हूँ और अगर आप का हुक्म हो तो मैं ख़ुद आपकी ख़िद्मत में हाज़िर हो जाऊँ। वस्सलामु अ़लैक या रसूलल्लाह!"

बाज़ मुफ़स्सिरीन की राय है कि नज्जाशी ने अपने कुछ उ़लमा को नबी करीम (सल्ल०) के पास भेजा उन्हें जब ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने क़ुर्आन पढ़ कर सुनाया तो क़ुर्आन मजीद सुनकर यह लोग रोने लगे और कहने लगे कि हम ईमान ले आये और यह जो कुछ हम ने सुना है बिल्कुल उसी जैसा है, जो ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) पर नाज़िल हुआ था।

इस पर अल्लाह तआ़ला ने आयते करीमा وَلَتَجِدَنَّ أَقْرَبَهُمْ مَوَدَّةً لِّلَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ قَالُوا إِنَّا نَصَارَىٰ नाज़िल फ़रमाई। इस से मालूम हुआ कि यह आयत नज्जाशी के भेजे हुए लोगों के बारे में नाज़िल हुई।

(मुआ़लिमुत्तन्ज़ील भाग 2, पेज 56-57)

जिन नसारा ने क़ुर्आन मजीद सुना और ह़क़ के पहचानने की वजह से उन की आँखो से आँसू जारी हो गये उन्होंने तुरन्त अपने ईमान का एलान कर दिया और खुले दिल से कहने लगे-

وَمَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا جَاءَنَا مِنَ الْحَقِّ وَنَطْمَعُ أَن يُدْخِلَنَا رَبُّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصَّالِحِينَ

"हमें क्या हुआ कि हम अल्लाह पर ईमान न लाएँ और उस पर ईमान न लाएँ जो हमारे पास ह़क़ आया और हम उम्मीद करते हैं कि हमारा रब हमें सालिह़ीन के साथ दाख़िल फ़रमा देगा" (यानी मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह (सल्ल०) की उम्मत में शामिल फ़रमा दे और उन को जो इनुआ़मात मिले हमें भी उन में शरीक फ़रमा दे।)

'मुआ़लिमुत्तन्ज़ील' में लिखा है कि जब उन्होंने अपने मोमिन होने का एलान कर दिया तो यहूदियों ने उनको शर्म दिलाई और उन से कहा कि तुम क्यों ईमान लाए? उस पर उन्होंने वह जवाब दिया जो ऊपर ज़िक्र हुआ और ह़क़ीक़त में जब दिल में ईमान की लहर दौड़ जाती है और ईमान दिल में रच बस जाता है तो दुनिया की कोई ताक़त ईमान के ख़िलाफ़ उभार नहीं सकती और किसी जाहिल का कमेन्ट ईमान से वापस नहीं कर सकता। आख़िर में अल्लाह तआ़ला ने अहले ईमान का इन्आ़म और काफ़िरों की सज़ा बयान फ़रमाई। इर्शाद है-

فَأَثَابَهُمُ اللَّهُ بِمَا قَالُوا جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا

(सो अल्लाह तआ़ला ने उन के क़ौल की वजह से उन को ऐसे बाग़ीचे अ़ता फ़रमाएगा जिन के नीचे नहरे जारी होंगी जिन में वह हमेशा रहेंगे।)

وَذَٰلِكَ جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ ۝

(और यह बदला है अच्छे काम करने वालों का)

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ

(और जिन्होंने कुफ़्र किया और हमारी आयात को झुठलाया वह दोज़ख़ वाले हैं।)

87-88 يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُحَرِّمُوا طَيِّبَاتِ مَا أَحَلَّ اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ

الْمُعْتَدِيْنَ۝ وَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ۪ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ۝

पाकीज़ा चीज़ो को ह़राम क़रार न देना

इन आयात में अल्लाह तआ़ला ने पहले तो यह इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह ने जो चीज़ें ह़लाल क़रार दी हैं तुम उन को ह़राम क़रार न दो। ह़लाल को ह़राम क़रार देने का एक तरीक़ा तो यह है कि अ़क़ीदे के अनुसार ह़लाल को ह़राम क़रार दे दिया जाए। अगर कोई शख़्स ह़लाल को ह़राम क़रार देगा तो इस्लाम से निकल जाएगा।

● दूसरी सूरत यह है कि अ़क़ीदा से तो किसी ह़लाल को ह़राम क़रार न दे, लेकिन ह़लाल के साथ मामला ऐसा करे जो ह़राम के साथ किया जाता है यानी बिना किसी उ़ज़्र (कारण) के किसी ह़लाल चीज़ को इस्तेमाल न करे, यह भी मना है।

● तीसरी सूरत यह है कि क़सम खाकर या नज़र मानकर किसी ह़लाल चीज़ को ह़राम क़रार दे दे। जैसे- यूँ कहे कि अल्लाह की क़सम फ़लाँ चीज़ न खाऊँगा या यूँ कहे कि फ़लाँ चीज़ मैं अपने ऊपर ह़राम करता हूँ।

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) एक मर्तबः ख़ुत्बः दे रहे थे। एक शख़्स को देखा कि वह खड़ा हुआ और दर्याफ़्त फ़रमाया कि यह कौन है? ह़ाज़िरीन ने बताया कि यह अबू इस्राईल है उस ने नज़र मानी है कि खड़ा ही रहेगा बैठेगा नहीं, और साए में न जाएगा और यह कि बोलेगा नहीं और रोज़ः रहेगा। आप ने फ़रमाया कि इस से कहो कि बात करे, और साए में जाए और बैठ जाए और रोज़ः पूरे करे। **(बुख़ारी भाग 2, पेज नं० 991)**

पाकीज़ा चीज़ें-

तमाम पाकीज़ा चीज़ें इन्सान के लिए ह़लाल हैं, सिवाय यह कि जिन की ह़ुरमत शरीअ़त ने साफ़ बयान कर दी हो।

एक बार कुछ सह़ाबा (रज़ि०) ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) की अ़िबादत को कम समझते हुए नींद छोड़ने और शादी न करने का फ़ैसला किया।

ह़ज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "उन लोगों की क्या ह़ालत है जिन्होंने ऐसी-ऐसी बातें की हैं, लेकिन मैं तो नमाज़ पढ़ता हूँ और सोता भी हूँ, मैं रोज़ः भी रखता हूँ, छोड़ भी देता हूँ और शादी भी करता हूँ। जो मेरी सुन्नत से मुँह मोड़े वह हम में से नहीं है।" **(बुख़ारी व मुस्लिम)**

ह़ज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया गुनाह की नज़र मानना दुरुस्त नहीं और इस का कफ़्फ़ारा वही है जो क़सम का कफ़्फ़ारा है। **(अबूदाऊद भाग 2, पेज नं० 111)**

कुछ लोग नज़र या क़सम के ज़रिये तो किसी ह़लाल को ह़राम नहीं करते, लेकिन राहिबों (सन्यासियों) के तरीक़े पर ह़लाल चीज़ों के छोड़ने का एहतिमाम करते हैं और उस को सवाब समझते

हैं। इस्लाम में रहबानियत (सन्यास) नहीं है और इस में सवाब समझना बिद्अ़त है, अगर किसी को कोई चीज़ नुक़्सानदे हो और वह हलाल समझते हुए उस से परहेज़ करे तो यह जायज़ है।

दूसरा हुक्म यह फ़रमाया कि हुदूद से आगे न बढ़ो और साथ ही यह भी फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला हद से बढ़ने वालों को पसन्द नहीं फ़रमाते। हद से बढ़ने को सूरः बक़रः में भी मना है और सूरः तलाक़ में इर्शाद है وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ؕ

(और जो अल्लाह के हुदूद से आगे बढ़ गया तो उस ने अपनी जान पर ज़ुल्म किया।) अल्लाह तआ़ला के हुदूद से आगे बढ़ने की कई सूरतें हैं। जिन की कुछ तफ़्सील लिखी जाती हैं।

हुदूद से बढ़ जाने की मिसालें

हुदूद से बढ़ने की बहुत सी सूरते हैं उन में से चन्द ज़िक्र की जाती हैं।

हलाल को हराम कर लेना–

(1) अल्लाह ने जिस चीज़ को हलाल किया है उसको अपने ऊपर हराम कर लेना। जैसे– कुछ लोग कुछ फलों के बारे में तय कर लेते हैं कि हम यह नहीं खाएँगे या किसी और तरह से हराम कर लेते हैं।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने एक बार शहद पीने के बारे में फ़रमा दिया था कि अब हरगिज़ नहीं पियूँगा। इस के बारे में अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई।

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَاۤ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكَ (ऐ नबी! तुम उस चीज़ को क्यों हराम करते हो जिसे अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल किया है।)

ऐसी बहुत सी रस्में आज लोगों में मौजूद हैं जिन में अ़मल से ही नहीं बल्कि एतिक़ाद से भी बहुत सी हलाल चीज़ों को हराम समझ रखा हैं। जैसे–

ज़ीक़ाअ़दा के महीने (जिसे औ़रतें ख़ालिक़ का महीना कहती हैं) और मुहर्रम व सफ़र में शरीअ़त में शादी करना हलाल और दुरुस्त है, लेकिन अल्लाह की इस हद से लोग आगे निकलते हैं और इन महीनों में शादी करने से बचते हैं। बहुत सी क़ौमों में बेवा औ़रत के दूसरे निकाह को ग़लत समझा जाता है और उसे हराम के क़रीब बना रखा है यह भी हद से आगे बढ़ जाना है।

जिस तरह हलाल को हराम कर लेना मना है उसी तरह हराम को हलाल कर लेना मना है। हराम व हलाल मुक़र्रर करने का अख़्तियार अल्लाह ही को है। सूरः नह्ल में इर्शाद है–

وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَا تَصِفُ اَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هٰذَا حَلٰلٌ وَّ هٰذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ

(और जिन चीज़ों के बारे में तुम्हारा ज़बानी झूठा दावा है उन की निस्बत यूँ मत कह दिया करो कि फ़लाँ चीज़ हलाल है और फ़लाँ हराम है, जिस का हासिल यह होगा कि अल्लाह पर झूठी तोहमत लगा दो।)

इसी में अल्लाह की ओर से जिस में कुछ छूट है उस से बचना भी दाख़िल है। जैसे– शरई सफ़र में क़स्र नमाज़ (कम नमाज़ यानी चार फ़र्ज़ वाली दो रकअ़त पढ़ना) करना है जिस पर अ़मल करना ज़रूरी है।

जिस में सवाब न हो उस में सवाब समझना।

हद से आगे बढ़ने का दूसरा तरीक़ा यह है कि जो चीज़ अल्लाह से क़रीब करने का ज़रिया न हो उसे क़रीबी का ज़रिया समझ लेना। जैसे- न बोलने का रोज़ः रख लेना, धूप में खड़ा रहना।

ग़ैर ज़रूरी को ज़रूरी का दर्जा दे देना-

एक तरीक़ा हद से आगे बढ़ने का यह है कि जो चीज़ शरीअ़त में ज़रूरी नहीं है उसे फ़र्ज़ का दर्जा दे दे और जो इसे न करे उस पर लअ़न-तअ़न करे। जैसे- शबे-बरात का हल्वा और ईदुल् फ़ित्र की सेवइयाँ कि शरअ़न इन दोनों की कोई अहमियत नहीं है, न इन का कोई सुबूत है, मगर लोग इसे ज़रूरी समझते हैं और जो न पकाये उसे बुरा भला कहा जाता है। जब कि शरीअ़त में इन की कोई अस्ल नहीं तो इन का एहतिमाम करना बिद्अ़त है।

मुस्तहब को ज़रूरी समझना-

एक तरीक़ा हद से आगे बढ़ने का यह है कि किसी आ़म चीज़ को किसी ख़ास वक़्त के साथ ख़ास कर ले। जैसे- नमाज़ फ़ज्र और नमाज़ अ़स्र के बाद इमाम से मुसाफ़ा करना और उसे वाजिब का दर्जा देना।

किसी अ़मल का सवाब ख़ुद बना लेना-

हद से आगे बढ़ जाने का एक तरीक़ा यह है कि किसी अ़मल की वह फ़ज़ीलत बना ली जाए जो क़ुर्आन व हदीस से साबित नहीं। जैसे- दुआ़ गन्जुल अ़र्श और अ़हद नामा वग़ैरह की फ़ज़ीलत गढ़ लिया है।

किसी अ़मल का तरीक़ा ख़ुद कर लेना-

एक तरीक़ा हद से आगे बढ़ जाने का यह है कि किसी अ़मल का कोई ख़ास तरीक़ा तर्तीब कर लिया जाए। जैसे- मुख़्तलिफ़ रकआ़त में मुख़्तलिफ़ सूरतें पढ़ने को ज़रूरी समझ लेना (जो हदीस से साबित न हो।) फिर उस को ज़रूरी समझना या सूरतों की तअ़दाद मुक़र्रर कर लेना। जैसे- तहज्जुद की नमाज़ के लिए मशहूर है कि पहली रकअ़त में 12 मर्तबः क़ुल हुवल्लाहु पढ़ी जाए और फिर हर रकअ़त में एक-एक बार घटाता जाए। यह लोगो ने ख़ुद बना लिया है, महीनों और दिनों की नमाज़ में और उनकी ख़ास-ख़ास फ़ज़ीलतें और उन की मख़्सूस तर्तीबें लोगों ने बनाई हैं यह भी हद से आगे बढ़ जाना है।

जगह की पाबन्दी लगा लेना-

किसी सवाब के काम को किसी ख़ास जगह के साथ मख़्सूस कर लेना (जो शरीअ़त से साबित न हो) यह भी हद से बढ़ जाना है। जैसे- कुछ जगह का तरीक़ा है कि क़ब्र पर ग़ल्ला या रोटी बाँटते हैं

या क़ब्र पर क़ुर्आन पढ़वाते हैं सवाब हर जगह से पहुँच सकता है, फिर इस में अपनी तरफ़ से क़ब्र पर होने को तय कर लेना अल्लाह के हुदूद से आगे बढ़ना है।

कुछ चीज़ों के बारे में तय कर लेना कि फ़लाँ न खाएगा-

एक सूरत ह़द से आगे बढ़ जाने की यह है कि कुछ खाने की चीज़ों के बारे में अपनी ओर से यह तय कर लिया जाए कि फ़लाँ शख़्स खा सकता है और फ़लाँ शख़्स नहीं खा सकता। जैसे- मुश्रिकीने मक्का किया करते थे। सूरः अनूआ़म में ऐसे लोगों के बारे में फ़रमाया हैः-

وَقَالُوا مَا فِي بُطُونِ هَٰذِهِ الْأَنْعَامِ خَالِصَةٌ لِّذُكُورِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلَىٰ أَزْوَاجِنَا ۖ وَإِن يَكُن مَّيْتَةً فَهُمْ فِيهِ شُرَكَاءُ ۚ سَيَجْزِيهِمْ وَصْفَهُمْ ۚ إِنَّهُ حَكِيمٌ عَلِيمٌ

और वह (यह भी) कहते हैं कि यह जो उन जानवरों के पेट में है ख़ालिस हमारे मर्दों के लिए है और हमारी औ़रतों पर ह़राम है और अगर वह मुर्दा है तो उस में वह सब (मर्द व औ़रत) साझी हैं। अल्लाह उन को जल्द ग़लत बयानी की सज़ा देगा बिलाशुब्हा वह ह़िक्मत वाला इ़ल्म वाला है।)

इसी क़िस्म से आजकल फ़ातिह़ा व नियाज़ वाले लोगों ने बना रखा है। जैसे- ह़ज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा के ईसाले सवाब के लिए बीबी जी की सह़नक के नाम से कुछ रस्म की जाती है उस रस्म में जो खाना पकता है उस में यह बना रखा है कि उस खाने को मर्द और लड़के नहीं खा सकते सिर्फ़ लड़कियाँ खाएँगी और उस के साथ-साथ यह भी फ़र्ज़ कर रखा है कि उस खाने के लिए कोरे बर्तन हों, जगह लीपी पोती हुई हो, यह सब ख़ुराफ़ात अपनी ईजादात हैं।

किसी गुनाह पर मख़्सूस अ़ज़ाब ख़ुद से बना लेना-

एक सूरत ह़द से आगे बढ़ने की यह है कि अपनी तरफ़ से किसी गुनाह का मख़्सूस अ़ज़ाब तय कर लिया जाए, जैसा कि बहुत से लोग बयान करते हैं।

यह भी ह़द से बढ़ जाने की है कि किसी चीज़ के मुतअ़ल्लिक़ यह तय कर लिया जाए कि उस का ह़िसाब न होगा, ह़ालांकि ह़दीस में उस का सुबूत न हो। जैसे- मशहूर है कि रमज़ानुल् मुबारक के आख़िरी जुमअ़ को नया कपड़ा या नया जूता पहन लिया जाए तो वह बेह़िसाब हो जाता है। इसीलिए कुछ लोग बहुत से जोड़े उस रोज़ पहन लेते हैं यह सब ग़लत और बक्वास है।

यह कुछ तरीक़े ह़द से आगे बढ़ जाने के लिख दिये गये हैं, ग़ौर करने से और भी निकल सकते हैं, अल्लाह की ह़ुदूद से आगे बढ़ना ज़बरदस्त जुर्म है। क़ुर्आन मजीद में इस से जगह-जगह मना फ़रमाया गया है। इर्शाद हैः-

تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ فَلَا تَقْرَبُوهَا (यह अल्लाह की ह़ुदूद हैं इन से निकलने के क़रीब भी मत जाना।

(सूरः बक़रः)

और फ़रमाया تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ فَلَا تَعْتَدُوهَا ۚ وَمَن يَتَعَدَّ حُدُودَ اللَّهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ

यह अल्लाह की हुदूद हैं, सो उन से आगे मत निकलना और जो अल्लाह की हुदूद से बाहर निकल जाए सो ऐसे लोग ज़ुल्म करने वाले हैं। (सूरः बक़रः)

और फ़रमाया وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَتَعَدَّ حُدُوْدَهٗ يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيْهَا ۪ وَلَهٗ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ (सूरः निसा)

(और जो शख़्स अल्लाह और उस के रसूल की फ़रमाँबरदारी न करे और उस की हुदूद से आगे बढ़ जाए अल्लाह उसको आग में दाख़िल फ़रमाएगा जिस में वह हमेशा-हमेश रहेगा और उस के लिए ज़लील करने वाली सज़ा है।)

तीसरा हुक्म यह फ़रमाया कि जो कुछ ह़लाल व तय्यिब माल अल्लाह ने तुम को अ़ता फ़रमाया उस में से खाओ और अल्लाह से डरो जिस पर तुम ईमान रखते हो। मालूम हुआ कि ह़लाल और पाकीज़ा चीज़ों का खाना दीनदारी के ख़िलाफ़ नहीं है। हाँ! परहेज़गारी इस में है कि अल्लाह तआ़ला के हुक्मों की ख़िलाफ़वर्ज़ी न की जाए। अगर कोई चीज़ ह़लाल व पाकीज़ा हो लेकिन दूसरे की मिल्कियत में हो तो जब तक उस से ह़लाल पैसों के ज़रिये ख़रीद न ले या वह बतौर तोह़फ़ा न दे दे या नफ़्स की ख़ुशी से इस्तेमाल करने की इजाज़त न दे दे उस वक़्त तक उस का खाना इस्तेमाल करना ह़लाल नहीं होगा। आख़िर में तक़्वे का हुक्म दिया और फ़रमाया وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ

(और अल्लाह से डरो जिस पर तुम ईमान रखते हो।)

इस में ऐसी सब चीज़ें आ गईं जिन में ज़ुल्म या ख़यानत करके कोई चीज़ खा ली जाए या इस्तेमाल कर ली जाए, इन तमाम चीज़ों से बचने की ताकीद की गई है।

89 لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا عَقَّدْتُّمُ الْاَيْمَانَ ۚ فَكَفَّارَتُهٗٓ اِطْعَامُ عَشَرَةِ
مَسٰكِيْنَ مِنْ اَوْسَطِ مَا تُطْعِمُوْنَ اَهْلِيْكُمْ اَوْ كِسْوَتُهُمْ اَوْ تَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ ۭ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ ۭ ذٰلِكَ كَفَّارَةُ
اَيْمَانِكُمْ اِذَا حَلَفْتُمْ ۭ وَاحْفَظُوْٓا اَيْمَانَكُمْ ۭ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝

क़सम तोड़ने का कफ़्फ़ारा

ऊपर की आयत में यह इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने जो चीज़ें ह़लाल क़रार दी हैं उनको ह़राम क़रार न दो, चूंकि ह़लाल व ह़राम करने का तरीक़ा एक यह भी है कि किसी ह़लाल चीज़ के खाने या इस्तेमाल न करने की क़सम खा ली जाए।

इसलिए क़सम पूरी तरह़ सोच समझ कर खानी चाहिए और क़सम खाने के बाद उस में नुक़्सान का पहलू हो तो क़सम तोड़कर कफ़्फ़ारा अदा कर दिया जाए।

नबी करीम (सल्ल०) ने फ़रमाया, "हम (उम्मते मुह़म्मद) इस दुनिया में सब से आख़िर में आये हैं लेकिन क़ियामत के दिन सब से पहले आएँगे।"

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "अल्लाह की क़सम! तुम में से कोई अगर ऐसी क़सम पूरा करने पर इस्रार करे जिस से उस के अह़ल व अ़याल को नुक़्सान होता हो तो वह अल्लाह की नज़र में ज़्यादा गुनाहगार है बजाय इस के कि वह ऐसी क़सम तोड़ दे और अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ उस का कफ़्फ़ारा

अदा करे।" **(सही बुख़ारी, बाब 1, ह़दीस 6624-6625)**

क़सम की क़िस्में-

क़सम की कई क़िस्में हैं।

(1) यमीन लग़्व- (बक्वास क़सम)

(2) यमीन ग़मूस- (झूठी क़सम)

(3) यमीन मुन्अ़क्किदा- (ताकीदी क़सम)

यमीन लग़्व-

(अ़रबी में क़सम को यमीन कहते हैं।) 'यमीन लग़्व' की तफ़्सीर करते हुए "ह़ज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा" ने फ़रमाया कि जो शख़्स क़सम की नियत किये बग़ैर बात करते हुए لَاوَاللّٰهِ يَا بَلٰى وَاللّٰهِ कह दे तो यमीन लग़्व है। **(रवाहुल् बुख़ारी)**

(अहले अ़रब की यह आ़दत थी और अब भी है कि वह अपने मुहावरात में बातें करते-करते इस तरह़ के अल्फ़ाज़ बोल जाते थे) और कुछ अहले इल्म ने फ़रमाया कि कोई शख़्स किसी पिछले वाक़िये को अपने नज़्दीक सच्चा जान कर क़सम खाए हालांकि ह़क़ीक़त में वह ग़लत हो तो यह 'यमीन लग़्व' है। बहरहाल 'यमीन लग़्व' की यह भी तफ़्सीर है कि इस पर पकड़ नहीं है। जैसा कि आयते करीमा में है और इस में कोई कफ़्फ़ारा नहीं है।

"ह़ज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा" फ़रमाती हैं कि 'लग़्व क़समों' से मुराद ऐसी क़समें हैं जो इन्सान बेतवज्जोही में कह देता है जैसे **'ला वल्लाहि बला वल्लाहि'**। आप रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं मेरे वालिद (अबूबक्र रज़ि०) कभी क़सम नहीं तोड़ते थे, यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला ने कफ़्फ़ारा की आयत नाज़िल फ़रमाई उस वक़्त कहने लगे कि जब क़सम खा लूँ, फिर उस के ख़िलाफ़ को अच्छा समझूँ तो अल्लाह की तरफ़ से छूट को मन्ज़ूर कर के वह काम कर लेता हूँ जिसे अच्छा समझता हूँ। **(बुख़ारी)**

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि०) से रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जिस ने अल्लाह के अ़लावा किसी और की क़सम खाई, उस ने शिर्क किया।" **(तिर्मिज़ी)**

"ह़ज़रत उ़क़्बा बिन आ़मिर (रज़ि०)" से रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "मन्नत का कफ़्फ़ारा ही क़सम का कफ़्फ़ारा है।" **(मुस्लिम)**

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि०) से रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "अगर लोगों के दावे की बिना पर फ़ैसले कर दिये जाएँ तो वह लोगों के ख़ून और माल की माँगे कर दें, मगर मुद्दआ अ़लैहि (जिस पर दावा किया गया है) पर क़सम है (यानी क़सम से वह इस मुताल्बे से निजात ह़ासिल करेगा)।" **(बुख़ारी व मुस्लिम)**

इब्ने उ़मर (रज़ि०) से रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, दलील मुहय्या करना मुद्दई (जिसने दावा किया हो) की ज़िम्मेदारी है और मुद्दआ़ अ़लैहि क़सम खाएगा (इन्कार के लिए)। **(तिर्मिज़ी)**

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि बड़े गुनाह यह हैं।

(1) अल्लाह के साथ शिर्क करना (2) माँ-बाप को तक्लीफ़ पहुँचाना (3) किसी जान को क़त्ल करना (4) यमीन ग़मूस यानी किसी ख़िलाफ़ वाक़िये बात पर झूठी क़सम खाना। **(रवाहुलू बुख़ारी भाग 2 पेज नं० 987)**

यमीन गमूस-

क़सम की दूसरी क़िस्म यमीन ग़मूस है यानी किसी पिछले वाक़िये पर जानते-बूझते हुए झूठी क़सम खा लेना। जैसे कोई काम नहीं किया और क़सम खाकर कहता है कि अल्लाह की क़सम मैंने यह काम किया है या कोई काम किया है फिर जानते-बूझते क़सम खाकर कहता है कि अल्लाह की क़सम मैंने यह काम नहीं किया, यह यमीन ग़मूस है इस का गुनाह बहुत बड़ा है।

लफ़्ज़ ग़मूस ग़म्स से बना है जिस के माने हैं दाख़िल कर देना, चूंकि झूठी क़सम यहाँ इस दुनिया में गुनाह में दाख़िल कर देती है फिर आख़िरत में पहुँचकर दोज़ख़ में दाख़िल कर देने का ज़रिया बनेगी इसलिए इस का नाम यमीन ग़मूस है।

यमीन मुन्अ़क्क़िदह (ताक़ीदी क़सम)-

क़सम की तीसरी क़िस्म यमीन मुन्अक़्क़िदह है। जिस का मतलब यह है कि किसी आने वाले ज़माने में किसी काम के करने या न करने की क़सम खा ले। जैसे-यूँ कहे कि अल्लाह की क़सम फ़लाँ काम ज़रूर करुँगा या फ़लाँ चीज़ ज़रूर खाऊँगा या यूँ कहे कि अल्लाह की क़सम फ़लाँ काम नहीं करुँगा या फ़लाँ चीज़ नहीं खाऊँगा या फ़लाँ से बात नहीं करुँगा। इस क़सम का हुक्म यह है कि इस की ख़िलाफ़वर्ज़ी हो जाए तो कफ़्फ़ारा देना फ़र्ज़ हो जाता है।

कफ़्फ़ारा-

इसकी तफ़्सील यह है कि दस मिस्कीनों को खाना खिलाएँ या दस मिस्कीनों को कपड़ा पहना दें या एक गुलाम आज़ाद करा दें। अगर इन में से किसी चीज़ की भी ताक़त न हो तो तीन दिन के रोज़े रख लिये जाएँ (गुलाम तो आजकल है नहीं क्योंकि मुसलमानों ने जिहाद शरई छोड़ दिया जिस के ज़रिये गुलाम और बांदियाँ हासिल होते थे।) लिहाज़ा अब इसी पर अ़मल हो सकता है कि दस मिस्कीनों को खाना खिला दे या कपड़े पहना दे। अगर इन में से किसी की इस्तिआ़त न हो तो तीन दिन के रोज़े लगातार रख ले।

कफ़्फ़ारा क़सम के मसायल

मस्ला- यमीन मुन्अ़क्क़िदह की ख़िलाफ़वर्ज़ी जिसे हमारे माहौल में क़सम का तोड़ना कहते हैं उस का कफ़्फ़ारा क़सम तोड़ने से पहले अदा कर देना मोअ़तबर नहीं। यानी अगर पहले कफ़्फ़ारा अदा कर

दिया तो वह नफ़्ली सद्क़: हो जाएगा कफ़्फ़ारा में नहीं लगेगा।

मस्ला– अगर दस मिस्कीनों को खाना खिलाने की सूरत अख़्तियार करे तो सुबह़ शाम पेट भर के खाना खिला दे। उन दस मिस्कीनों में न कोई बच्चा हो और ऐसा कोई शख़्स हो जिस का पहले से पेट भरा हुआ हो।

मस्ला– अगर खाना खिलाने के बदले माल देना चाहे तो यह भी जायज़ है। जिस की सूरत यह है कि हर मिस्कीन को सद्क़-ए-फ़ित्र के बराबर एक सेर साढ़े बारह छटाक गेहूँ या उस के दो गुने जौ या उन दोनों में से किसी एक की क़ीमत दे दे।

मस्ला– दस ही मिस्कीनों को देना लाज़िम है। अगर एक ही मिस्कीन को दस मिस्कीनों का ग़ल्ला दे दिया तो उस से पूरी अदाएगी न होगी नौ मिस्कीनों को फिर देना होगा।

मस्ला– अगर कपड़ा देने की सूरत अख़्तियार करे तो हर मिस्कीन को इतना कपड़ा दे जिस से सतर ढ़क जाए और उस में नमाज़ अदा हो सके और अगर औ़रत को कपड़ा दे तो इतना बड़ा कपड़ा दे जिस से उस का बदन (शरीर) ढ़क जाए जिस में वह नमाज़ पढ़ सके।

मस्ला– मिस्कीनों को जो खाना खिलाये तो घटिया खाना न खिलाये अपने अहल व अ़याल को जो खाना खिलाता हो उसके दर्मियानी हैसियत का खाना हो क्योंकि आयते करीमा में مِنْ اَوْسَطِ مَا تُطْعِمُوْنَ اَهْلِيْكُمْ की तफ़्सील मौजूद है।

मस्ला– अगर खाना देने या कपड़ा पहनाने की माली इस्तिआ़त न हो तो लगातार तीन रोज़े रखे। ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) की क़िरत में قراءت فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ مُتَتَابِعَاتٍ है जो ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़०) को पहुँची, इसीलिए उन्होंने मुतताबिआ़त (लगातार) रोज़े रखना क़रार दिया।

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि०) का भी यही मज़हब है कि क़सम के कफ़्फ़ारा की अदाएगी के लिए तीन दिन लगातार रोज़े रखना ज़रूरी हैं। **(बशर्ते कि कफ़्फ़ारा बिल् सियाम मुतअ़य्यन हो जाये)**

नोट– किसी भी गुनाह की क़सम खाना गुनाह है। अगर किसी गुनाह की क़सम खा ले जैसे यूँ कहे कि नमाज़ न पढूँगा या यूँ कह दे कि अल्लाह की क़सम! माँ बाप या भाई बहन या किसी भी अ़ज़ीज़ क़रीब से बेतअ़ल्लुक़ रहूँगा, उन से बोलचाल न रखूँगा या क़तअ़ रह़मी करूँगा तो ऐसी क़सम का तोड़ देना वाजिब है, क़सम तोड़ दे और कफ़्फ़ारा दे दे।

आख़िर में फ़रमाया وَاحْفَظُوْٓا اَيْمَانَكُمْ कि अपनी क़समों की ह़िफ़ाज़त करो।

साह़िबे रूहुल् मआ़नी (भाग 7, पेज नं० 10 में) इसकी तफ़्सीर करते हुए लिखते हैं-

اى راعوها لكى تؤدوا الكفارة عنها اذا حنثتم واحفظوا انفسكم من الحنث فيها यानी अपनी क़समों का ख़याल रखो ऐसा न हो कि क़सम टूट जाए और कफ़्फ़ारा अदा करने में गफ़्लत कर जाओ या यह मतलब है कि क़सम खा लो तो उसे पूरी ही कर दो। (जब अल्लाह का नाम लेकर किसी क़ौल या अ़मल के करने या न करने की क़सम खाई है तो अब उसे पूरा ही कर दो। लेकिन यह उसी सूरत में है कि जब गुनाह

की क़सम न खाई हो जैसा कि अह़ादीस में इसकी तफ़्सील है।)

तम्बीह- ग़ैरुल्लाह की क़सम खाना ह़राम है इर्शाद फ़रमाया रसूलल्लाह (सल्ल०) ने कि "مَنْ حَلَفَ بغیر اللہ فقد اشرک" "यानी जिस ने अल्लाह के सिवा किसी चीज़ की क़सम खाई तो उस ने शिर्क किया। **(तिर्मिज़ी)**

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि अपने बापों की और अपनी माँओं की क़सम न खाओ और अल्लाह की क़सम (भी) जब ही खाओ जबकि तुम सच्चे हो। **(मिश्कात पेज नं० 296)**

90-92 يَآيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْاَنْصَابُ وَالْاَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝ اِنَّمَا يُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ فِي الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَعَنِ الصَّلٰوةِ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ ۝ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاحْذَرُوْا ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝

शराब, जुआ और बुत

इन आयात में शराब, बुत और जुआ खेलने के तीरों को गन्दी चीज़ें बताया है और यह भी फ़रमाया कि यह चीज़ें शैतान के कामों में से हैं। अ़रब के लोग बुत पूजा करते थे और बुतों के पुजारियों के पास तीर रख देते थे, उन तीरों के ज़रिये जुआ खेलते थे जिस की तफ़्सील सूरः माइदा की आयत नं० (3) में गुज़र चुकी हैं सूरः बक़रः में फ़रमायाः-

يَسْئَلُوْنَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ ۗ قُلْ فِيْهِمَآ اِثْمٌ كَبِيْرٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ ۡ وَاِثْمُهُمَآ اَكْبَرُ مِنْ نَّفْعِهِمَا ۗ

(और आप से सवाल करते हैं शराब और जुए के बारे में! आप फ़रमा दीजिए! कि उन में बड़ा गुनाह है और लोगों के लिए मुनाफ़ा हैं और उन का गुनाह उन के मनाफ़े से ज़्यादा बड़ा है।) इस से मालूम हुआ कि शराब और जुए में कुछ नफ़ा भी है, मगर उन का जो गुनाह है वह उन के नफ़े से ज़्यादा बड़ा है और यह भी मालूम हुआ कि किसी चीज़ के जायज़ होने के लिए यही काफ़ी नहीं कि वह नफ़ाबख़्श हो। बहुत से लोग जुए, शराब और सूद वग़ैरह के सिर्फ़ नफ़े को देखते हैं और शरीअ़ते इस्लामिया में जो उन की हुरमत बयान की गई है उसकी तरफ़ ध्यान नहीं करते और नफ़े को देखकर ह़लाल क़रार दे देने की सोचने लगते हैं, यह ग़ैरों का तरीक़ा है।

इस से मालूम हुआ कि कि शैतानी कामों को ह़लाल करने की कोशिश बड़ी ज़लील है। इस तरह़ वह ह़लाल नहीं हो जाएँगे, ह़राम ही रहेंगे।

एक ह़दीस में रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "मेरी उम्मत में से ज़रूर कुछ ऐसे लोग पैदा होंगे जो ज़िना, रेशम, शराब और मौसीक़ी के आलात को ह़ालाल समझेंगे और पहाड़ के दामन में कुछ लोग ऐसे रहते होंगे कि शाम को उन का चरवाहा उन के जानवर लेकर उन के पास आएगा और अपनी ह़ाजत के बारे में सवाल करेगा, लेकिन वह उस से कहेंगे कि कल हमारे पास आना, चुनांचे रात को अल्लाह

तआला उन पर पहाड़ गिरा कर उन्हें तबाह व बर्बाद कर देगा और उन में से कुछ लोगों को, जो तबाह होने से बच जाएँगे बन्दर और ख़िन्ज़ीर बना देगा और वह क़ियामत तक इसी ह़ाल में रहेंगे।

(सह़ीह़ बुख़ारी, अल् अशरबा, बाब 6, ह़दीस 5590)

ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) कहते हैं कि मैंने दुआ़ की कि या अल्लाह शराब के बारे में हमारे लिए साफ़ बयान फ़रमा दें तो सूरः बक़रः की यह आयत नाज़िल हुई।

"आप (सल्ल०) से जुआ़ और शराब के बारे में दर्याफ़्त करते हैं। आप कह दीजिए कि इसमें बड़ा गुनाह और लोगों के लिए मुनाफ़ा (भी) है और उस का गुनाह उस के नफ़ा से बड़ा है।

(सूरः बक़र, आयत नं० 219)

चुनाँचे ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) को बुलाकर यह आयत पढ़ी गई। आप ने फ़िर दुआ़ की, या अल्लाह शराब के बारे में हमारे लिए साफ़-साफ़ बयान नाज़िल फ़रमा तो सूरः निसा की यह आयत नाज़िल हुई। "ऐ अहले ईमान! नशे की ह़ालत में नमाज़ के क़रीब भी न जाओ।" **(सूरः अन् निसा, आयत नं० 43)**

ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) को बुलाकर यह आयत पढ़ी गई। आप ने फिर यह दुआ़ की, या अल्लाह! हमारे लिए शराब के बारे में साफ़-साफ़ बयान फ़रमा दीजिए तो सूरः माइदा की यह आयात नाज़िल हुईं। चुनांचे ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) को बुलाकर यह आयत पढ़ी गई तो उन्होंने कहा हम बाज़ आये हम बाज़ आये। **(तिर्मिज़ी)**

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि०) से रिवायत है कि सय्यदना उ़मर (रज़ि०) मेम्बर पर खड़े होकर फ़रमा रहे थे, लोगों शराब ह़राम हुई। शराब पाँच चीज़ों से तैयार होती है, अंगूर, खजूर, शहद, गेहूँ और जौ से और जिस शराब से अ़क़्ल में फ़ुतूर आये, वह ख़म्र (शराब) है। **(बुख़ारी)**

ह़ज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि हर नशा ह़राम है जिस चीज़ की कसीर मिक़्दार नशा करती है, उस की थोड़ी सी मिक़्दार भी ह़राम होती है। **(तिर्मिज़ी)**

ह़ज़रत अनस (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि आप (सल्ल०) के पास एक शख़्स लाया गया जिस ने शराब पी हुई थी, आप (सल्ल०) ने दो टहनियों से उसे लगभग चालीस मर्तबः मारा। **(मुस्लिम)**

शराब की ह़ुरमत-

एक साह़ब ने अपने एक मिलने वाले के बारे में फ़रमाया कि वह धड़ल्ले से शराब पीता है और कहता है कि बताओ क़ुर्आन में शराब को कहाँ ह़राम फ़रमाया है। इस से मालूम हुआ कि दुनिया में ऐसे लोग भी हैं कि जिन चीज़ों की मुमानिअ़त साफ़ क़ुर्आन मजीद में नहीं है बल्कि अह़ादीस शरीफ़ा में आई है या जिस चीज़ की मुमानिअ़त फ़रमाते हुए शब्द ह़राम इस्तेमाल नहीं फ़रमाया उसे जायज़ क़रार देते हैं, यह उन लोगों की जिहालत और गुमराही है।

ऐसे ही क़ुर्आन के मानने वाले हैं तो क़ुर्आन ही से साबित कर दें कि क़ुर्आन ने जिस चीज़ की मुमानिअ़त के लिए शब्द ह़राम इस्तेमाल किया है बस वही ह़राम है। क़ुर्आन मजीद में बहुत सी चीज़ों से मना फ़रमाया गया है, लेकिन उन के साथ लफ़्ज़ ह़राम इस्तेमाल नहीं फ़रमाया और रसूलुल्लाह

(सल्ल०) की फ़रमाँबरदारी और आप के इत्तिबअ़ (अनुसरण) का हुक्म दिया है और आप की सिफ़तें बयान करते हुए सूरः अअ़राफ़ में يُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبٰتِ وَ يُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبٰٓئِثَ फ़रमाया है। मालूम हुआ कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) का किसी चीज़ को ह़राम क़रार देना ऐसा ही है जिसे अल्लाह तआ़ला ने ह़राम क़रार दिया हो।

सात तरह़ से शराब और जुए की हुरमत–

सूरः माइदा में शराब और जुए को "रिज्स" यानी गन्दी चीज़ बताया है और फिर सूरः अअ़राफ़ में وَ يُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبٰٓئِثَ ख़बायस फ़रमाया है। इस शब्द के होते हुए भी कोई शख़्स शराब और जुए को ह़राम न समझे तो उस के बेदीन होने में क्या शक है। ऐसा शख़्स बेदीन और काफ़िर है फिर यह भी समझना चाहिए कि यदि क़ुर्आन मजीद में शराब के लिए लफ़्ज़ ह़राम इस्तेमाल नहीं फ़रमाया, लेकिन उस की हुरमत बता दी और सात बातें ज़िक्र फ़रमाई, जिन के ज़िक्र से साफ़ हुरमत का एलान बार-बार फ़रमा दिया।

(1) पहली बात तो यह फ़रमाई कि शराब और जुआ "रिज्स" यानी गन्दी चीज़ें हैं।
(2) फिर यह फ़रमाया مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ कि यह शैतानी कामों में से हैं।
(3) फिर फ़रमाया فَاجْتَنِبُوْهُ कि इस से बचो।
(4) फिर फ़रमाया لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ताकि कामियाब हो जाओ। मालूम हुआ कि जुआ और शराब नाकामी का ज़रिया है, जो दुनिया और आख़िरत में होगा।
(5) फिर फ़रमाया اِنَّمَا يُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ فِي الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ शैतान चाहता है कि शराब और जुए के ज़रिये तुम्हारे अन्दर दुश्मनी और बुग्ज़ डाल दे।
(6) फ़रमाया وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَعَنِ الصَّلٰوةِ कि शैतान शराब और जुए के ज़रिये तुम्हें अल्लाह की याद और नमाज़ से रोकना चाहता है।
(7) आख़िर में फ़रमाया فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ क्या तुम बाज़ आने वाले हो?

ग़ौर कर लें कि कितने तरीक़े से शराब और जुए से मना फ़रमाया है। ऐसे साफ़ वाज़ेह़ बयान होते हुए जो शख़्स शराब और जुए को ह़लाल कहेगा उस की बद्‌बख़्ती और बेदीनी में क्या शक है? अल्लाह तआ़ला ने शराब की हुरमत तर्तीब से नाज़िल फ़रमाई। सूरः बक़रः में फ़रमायाः–

قُلْ فِيْهِمَآ اِثْمٌ كَبِيْرٌ وَّ مَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَاِثْمُهُمَآ اَكْبَرُ مِنْ نَّفْعِهِمَا

इसको सुन कर कुछ सहाबा (रज़ि०) ने शराब पीना छोड़ दिया और कुछ पीते रहे। यहाँ तक कि एक दिन ऐसा हुआ कि नमाज़ मग़्रिब में एक मुहाजिर सहाबी ने इमामत करते हुए क़िरत में ग़ल्ती कर दी इस पर यह आयते करीमा يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْرَبُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْتُمْ سُكٰرٰى حَتّٰى تَعْلَمُوْا مَا تَقُوْلُوْنَ *(सूरः निसा आयत 43)* नाज़िल हो गई।

इस के बाद ऐसे अन्दाज़ से शराब पीते थे कि नमाज़ का वक़्त आने तक होश में आ जाएँ उसके

बाद सख़्ती से शराब पीने की मुमानिअत फ़रमा दी और फ़रमाया-

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ .... فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ

जब यह आयत नाज़िल हुई तो सहाबा (रज़ि०) ने कहा "اِنْتَهَيْنَا رَبَّنَا"

(ऐ मुहम्मद! हमारे रब! हम बाज़ आ गये।) (दुर्रे मन्सूर पेज नं० 214 भाग 2, मुस्नद अहमद)

फिर फ़रमाया وَ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ اَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَ احْذَرُوْا

(और अल्लाह की इताअ़त करो और रसूल की इताअ़त करो और डरते रहो) यानी अल्लाह और रसूल की मुख़ालिफ़त न करो।

فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ

(सो अगर तुम मुँह फेरोगे तो जान लो कि हमारे रसूल के ज़िम्मे साफ़ तौर पर पहुँचा देना है।) अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने ख़ूब अच्छी तरह खोल कर बयान फ़रमा दिया कि अल्लाह तआ़ला की बात पहुँचा दो, फिर भी अगर कोई ख़िलाफ़वर्ज़ी करेगा तो अपना अन्जाम देख लेगा।

इस तरह जुए और शराब की मुमानिअ़त फ़रमाने के बाद, इस आख़िरी आयत में फिर तम्बीह फ़रमाई कि अल्लाह तआ़ला और उस के रसूल (सल्ल०) की मुख़ालिफ़त से डरो। जो लोग क़ुर्आन ही में मुमानिअ़त और हुरमत देखना चाहते हैं और रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ह़दीस को हुज्जत नहीं समझते उन को तम्बीह फ़रमा दी कि अल्लाह तआ़ला की इताअ़त के साथ रसूलुल्लाह (सल्ल०) की इताअ़त ज़रूरी है और दोनों की मुख़ालिफ़त से बचना ज़रूरी है।

शराब पीने पिलाने वाले पर लअ़नत

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने शराब के बारे में जो कुछ इर्शाद फ़रमाया उस में से कुछ ह़दीसों का तर्जुमः लिखा जाता है।

"ह़ज़रत इब्ने उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि हर नशा लाने वाली चीज़ ख़म्र यानी शराब है और हर नशा लाने वाली चीज़ ह़राम है और जो शख़्स दुनिया में शराब पियेगा और इस ह़ाल में मर गया कि शराब पीता रहा और तौबः न की तो आख़िरत में शराब नहीं पियेगा। (जन्नत की शराब से मह़रूम रहेगा अगर जन्नत का दाख़िला नसीब हो गया।)

(मुस्लिम भाग 3, पेज नं० 168)

ह़ज़रत जाबिर (रज़ि०) ने बयान फ़रमाया कि एक शख़्स यमन से आया, उस ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से दर्याफ़्त किया कि हमारे इलाक़े में एक शराब है जो ज्वार से बनाई जाती है लोग उसे पीते हैं, आप ने दर्याफ़्त फ़रमाया क्या वह नशा लाती है? सवाल करने वाले ने अ़र्ज़ किया हाँ, वह नशा लाती है! आप ने फ़रमाया "كل مسكر حرام" कि नशा लाने वाली चीज़ ह़राम है।

फिर फ़रमाया कि बिलाशुब्हा अल्लाह तआ़ला ने अपने ज़िम्मे वादा फ़रमा लिया है कि जो शख़्स नशा लाने वाली चीज़ पियेगा, अल्लाह उसे "طِيْنَةَ الْخَبَال" से पिलायेगा। सहाबा (रज़ि०) ने अ़र्ज़ किया या

रसूलल्लाह "طِينَةُ الْخَبَال" क्या चीज़ है? आप ने फ़रमाया कि दोज़ख़ियों के जिस्मों का निचोड़ है। (मुस्लिम पेज नं० 62 भाग नं० 2)

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया अल्लाह तआ़ला ने लअ़नत की शराब पर और उसके पीने वाले और उस के पिलाने वाले और उस के बेचने वाले और उस के ख़रीदने वाले और शराब बनाने वाले और बनवाने वाले पर और जो शराब को किसी के पास ले जाए उस पर और जिस के पास ले जाए उस पर भी। (अबूदाऊद, भाग 2, पेज नं० 161)

जो लोग अपनी दुकानों में शराब बेचते हैं अपने होटलों में शराब पिलाते हैं और ऐसी दुकानों पर नौकरी करते हैं वह अपने बारे में ग़ौर कर लें कि रोज़ाना कितनी लअ़नतों के मुस्तहि़क़ होते हैं, शराब का बनाने वाला तो लअ़नत का ह़क़्दार है, उस का बेचने वाला, पीने वाला, पिलाने वाला और उस का उठा कर ले जाने वाला और जिस की तरफ़ शराब ले जाई जाए उन सब पर अल्लाह की लअ़नत है।

हज़रत जाबिर (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जो शख़्स अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है वह ऐसे दस्तरख़्वान पर न बैठे जिस पर शराब का दौर चल रहा हो। (रवाहुल् बैहक़ी)

जो लोग काफ़िरों के मेल-मिलाप से शराब पी लेते हैं ग़ौर करें कि उन का ईमान बाक़ी है या नहीं? एक ह़दीस में इर्शाद है اَلْخَمْرُ جُمَّاعُ الْاِثْمِ कि शराब तमाम गुनाहों को जमा किये हुए हैं। (मिश्कातुल् मसाबीह़ 444)

शराब हर बुराई की कुंजी है-

एक सह़ाबी (रज़ि०) ने बयान फ़रमाया कि मुझे मेरे दोस्त सय्यदुल् अम्बिया (सल्ल०) ने वसीयत फ़रमाई कि किसी भी चीज़ को अल्लाह के साथ शरीक न करना चाहे तुम्हारे टुकड़े कर दिये जाएँ और तुम्हें जला दिया जाए और जानबूझकर नमाज़ न छोड़ना क्योंकि जिस ने जानबूझकर नमाज़ छोड़ दी वह अल्लाह के ज़िम्मे से बरी हो गया और शराब मत पीना क्योंकि वह हर बुराई की कुंजी है। (मिश्कातुल् मसाबीह़ भाग 1 पेज नं० 51)

शराब न छोड़ने वाले से क़िताल-

एक सह़ाबी (रज़ि०) ने बयान किया कि मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (सल्ल०) हम ठंडी सरज़मीन में रहते हैं और सख़्त मेह़नत करते हैं और सूरते ह़ाल यह है कि हम गेहूँ की शराब बना लेते हैं जिसे इस्तेमाल करके हम मेह़नत के कामों पर अपने शहरों की ठंडक पर क़ुव्वत ह़ासिल करते हैं। आप ने सवाल किया, क्या वह नशा लाती है? मैंने अ़र्ज़ किया हाँ, वह नशा लाती है! आप (सल्ल०) ने फ़रमाया उस से परहेज़ करो। मैंने अ़र्ज़ किया कि लोग उसे छोड़ने वाले नहीं आप (सल्ल०) ने फ़रमाया अगर उसे न छोड़ें तो तुम उन से क़िताल करो यानी जंग करो। (अबूदाऊद फ़िल् किताबुल् अशरिबा)

शराब छोड़ने पर इनआ़म-

हज़रत अबू उमामा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि बिलाशुब्हा

अल्लाह तआ़ला ने मुझे जहानों के लिए रह़मत बनाकर भेजा है और जहानों के लिए हिदायत बना कर भेजा है और मेरे रब ने मुझे हुक्म दिया है कि गाने बजाने के सामान को बुतों और सलीब को (जिस की नसारा अ़िबादत करते हैं) और जाहिलियत के कामों को मिटा दूँ और मेरे रब ने क़सम खाई है कि “जो भी शख़्स मेरे डर से शराब को छोड़ देगा मैं उसे ज़रूर मुक़द्दस ह़ौज़ो से पिलाऊँगा।”

(रवाहु अह़मद कमा फ़िलू मिश्कात पेज नं० 318)

शराबी की जन्नत से मह़रूमी-

ह़ज़रत अबू उमामा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि माँ-बाप को तक्लीफ़ देने वाला, जुआ खेलने वाला, एह़सान जताने वाला और जो शख़्स शराब पिया करता है यह लोग जन्नत में दाख़िल न होंगे। **(रवाहु दारमी पेज नं० 31 भाग नं० 2)**

शराब, ख़िन्ज़ीर और बुतों की ख़रीद व फ़रोख़्त-

ह़ज़रत जाबिर (रज़ि०) ने बयान फ़रमाया कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को फ़तेह़ मक्का के मौक़े पर यह फ़रमाते हुए सुना कि बेशक अल्लाह तआ़ला और उस के रसूल ने शराब और मुरदार ख़िन्ज़ीर और बुतों के बेचने को ह़राम क़रार दिया है। **(बुख़ारी भाग 1, पेज नं० 298)**

93 لَيْسَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جُنَاحٌ فِيْمَا طَعِمُوْٓا اِذَا مَا اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاَحْسَنُوْا ۗ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ

सह़ाबा (रज़ि०) ने शराब बहा दी

ह़ज़रत अनस (रज़ि०) ने बयान फ़रमाया कि मैं अबू तल्ह़ा (रज़ि०) के घर में ह़ाज़िरीन को शराब पिला रहा था। {यह ह़ज़रत अनस (रज़ि०) के सौतेले बाप थे} उसी ज़माने में यह हुक्म नाज़िल हो गया कि शराब ह़राम है। बाहर से आने वाली एक आवाज़ सुनी कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) की तरफ़ से कोई शख़्स एलान कर रहा है, अबू तल्ह़ा (रज़ि०) ने कहा कि बाहर निकलो देखो यह क्या आवाज़ है? मैं बाहर निकला तो मैंने वापस आकर बताया कि यह पुकारने वाला यूँ पुकार रहा है कि ख़बरदार शराब ह़राम कर दी गई है, यह सुनकर अबू तल्ह़ा (रज़ि०) ने कहा जाओ यह जितनी शराब है सब को गिरा दो। चुनांचे शराब फेंक दी गई जो मदीना की गलियों में बह रही थी।

कुछ सह़ाबा को यह ख़याल हुआ कि हम में से बहुत से लोग क़त्ल हो चुके हैं जिन के पेटों में शराब थी। (यानी जो लोग अब तक शराब पीते रहे और दुनिया में मौजूद नहीं उन का क्या होगा वह तो अपने पेटों में शराब लेकर चले गये।) इस पर अल्लाह तआ़ला ने यह आयते करीमा
لَيْسَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جُنَاحٌ فِيْمَا طَعِمُوْٓا नाज़िल फ़रमाई।

तफ़्सीर दुर्रे मन्सूर में इस वाक़िये को ह़ज़रत अनस (रज़ि०) की ज़बानी यूँ बयान किया है कि मैं

अबू तल्हा और अबू उबैदा बिन अल् जर्राह और मआज़ बिन जबल और सुहेल बिन बैज़ा और अबू दोजाना रज़ियल्लाहु अन्हुम को शराब पिला रहा था, मेरे हाथ में प्याला था जिसे मैं भर-भर कर एक दूसरे को दे रहा था। इसी हाल में हम ने आवाज़ सुनी कि कोई शख़्स पुकार कर आवाज़ दे रहा है "الا ان الخمر قد حرمت" (ख़बरदार! शराब हराम कर दी गई है) आवाज़ का सुनना था कि न कोई अन्दर आने पाया था और न बाहर निकलने वाला था कि हम ने शराब को गिरा दिया और मटके तोड़ दिये। जिस की वजह से मदीना की गली कूचों में शराब (पानी की तरह) बहने लगी।

(दुर्रे मन्सूर पेज नं० 221, भाग 2 व रवाहु मुस्लिम भाग 2, पेज नं० 163)

हज़रत अनस (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि हज़रत अबू तल्हा (रज़ि०) के घर में लोगों को शराब पिला रहा था, वह फ़सीह़ (एक क़िस्म की शराब) थी। आप (सल्ल०) ने हुक्म दिया और एक मनादी ने एलान किया कि शराब हराम कर दी गई है। वह कहते हैं कि अबू तल्हा ने मुझे कहा कि उसे बाहर बहा दो, मैं निकला और उसे बहा दिया।

मदीना की सड़कों पर शराब फैल गई। कुछ लोगों ने कहा कि कुछ सहाबा (रज़ि०) शहीद हुए और उन के पेट में शराब थी तो अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमा दीं। **(बुख़ारी)**

शराब की हुरमत नाज़िल होने से पहले-

जब शराब की हुरमत नाज़िल हो गई तो उन को अपने भाइयों की फ़िक्र हुई जो शराब पीते थे और इसी हाल में वफ़ात पा गये। इस के बारे में अल्लाह तआ़ला ने आयत لَيْسَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ आख़िर तक नाज़िल फ़रमाई।

जिस में यह बताया कि जो लोग अहले ईमान थे और अच्छे आ़माल करते थे वह हुरमत का क़ानून नाज़िल होने से पहले वफ़ात पा गये। उन्होंने उस ज़माने में जो शराब पी थी उस का कोई गुनाह नहीं। रसूलुल्लाह (सल्ल०) जब तक तशरीफ़ फ़रमा थे हुक्मों में नस्ख़ (तब्दीली) होने का इम्कान रहता था शराब हलाल थी फिर हराम क़रार दे दी गई। इसके अ़लावा और भी कुछ दूसरे हुक्मों में नस्ख़(तब्दीली) हुई।

फ़रमाया لَيْسَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جُنَاحٌ فِيْمَا طَعِمُوْٓا اِذَا مَا اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ (उन लोगों पर इस बारे में कोई गुनाह नहीं कि उन्होंने खाया पिया जबकि वह तक़्वा अख़्तियार करते हों। यानी शराब के अ़लावा दूसरी हराम चीज़ों से बचते हों, शराब पीने पर तो पकड़ इसलिए नहीं कि वह उस वक़्त हराम नहीं थी और जब दूसरी हराम चीज़ों से बचते रहे तो ज़ाहिर है कि दुनिया से बेगुनाह चले गये और उन्होंने न सिर्फ़ हराम चीज़ों से परहेज़ किया बल्कि दूसरे अच्छे आ़माल भी अन्जाम देते रहे ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا (फिर तक़्वा अख़्तियार किये रहे और ईमान पर बाक़ी रहे।)

यानी इसके बाद जब भी किसी चीज़ की हुरमत नाज़िल हुई ईमान पर रहे और हराम चीज़ से बचे। ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا (फिर तक़्वा अख़्तियार किया और अच्छे काम करते रहे।)

यानी जब हुरमत आ गई तो उसकी ख़िलाफ़वर्ज़ी न की और जिन नेक कामों में लगे हुए थे उन

के अन्जाम देने में लगे रहे।)

इस में तक़्वे का ज़िक्र तीन बार है। पहली बार जो तक़्वा है उस का तअ़ल्लुक़ तमाम ह़राम चीज़ों के बचने से है। फिर दूसरी बार किसी ह़लाल चीज़ की हुरमत नाज़िल होने के बाद उस से परहेज़ करने से मुतअ़ल्लिक़ है। फिर तीसरी बार पिछली ह़ालत पर जमने के साथ तमाम ह़राम चीज़ों से परहेज़ करने से सम्बन्धित इशारा है कि जब कभी भी कोई चीज़ ह़राम हुई उस से परहेज़ करते रहे।

ह़ज़रात सह़ाबा (रज़ि०) ने अपने मरे हुए भाईयों के बारे में सवाल किया था, लेकिन आयत के उ़मूम में ज़िन्दों के बारे में भी हुक्म बता दिया कि हुरमत का क़ानून आने से पहले न शराब पीने में कोई गिरफ़्त थी और न आइन्दा किसी अ़मल पर गिरफ़्त होगी जो हुरमत का क़ानून आने से पहले कर लिया जाए। आख़िर में फ़रमाया وَ اللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ (अल्लाह अच्छे काम करने वालों को दोस्त रखता है।)

शराब और जुआ-

शराब और जुए के बारे में फ़रमाया कि शैतान इस के ज़रिये तुम्हारे दर्मियान ईर्ष्या-द्वेष और दुश्मनी डालना चाहता है और ज़िक्र व नमाज़ से रोकना चाहता है।

बुग्ज़ और दुश्मनी तो ज़ाहिर है जो शख़्स जुए में हार जाता है ह़ालांकि अपनी ख़ुशी से हारता है तो जल्द से जल्द जीतने वाले से बदला लेने की फ़िक्र करता है और शराब पीकर जब आदमी बद्‌मस्त हो जाता है तो औल फ़ौल बकता है दूसरों को भी बुरा कहता और गाली-गलौज करता है और कभी किसी को मार भी देता है, जिस से जुड़े दिल टूटते हैं और दुश्मनियाँ पैदा होती हैं।

अल्लाह की याद और नमाज़ से ग़ाफ़िल होना तो यह ऐसी ज़ाहिर बात है जो नज़रों के सामने है। जब किसी ने शराब पी ली तो नशे में बद्‌मस्त हो गया। अब नमाज़ और अल्लाह के ज़िक्र का मौक़ा कहाँ रहा, जिन को शराब की आ़दत हो जाती है वह तो इसी धुन में रहते हैं कि नशा कम हो तो और पियें फिर कम हो तो फिर पियें। जब कोई शख़्स जुआ खेलने लग जाता है तो घंटों गुज़र जाते हैं जीतने की फ़िक्र में लगा रहता है, अल्लाह के ज़िक्र का और नमाज़ का तो कोई मौक़ा ही नहीं रहता।

यहाँ तक कि जो लोग बग़ैर हार-जीत के शतरंज खेलते रहते हैं वह भी घंटो खेलते रहते हैं उन्हें ज़रा भी अल्लाह के ज़िक्र की तरफ़ तवज्जोह नहीं होती। नमाज़ का पूरा वक़्त शुरु से आख़िर तक गुज़र जाता है लेकिन नमाज़ और ज़िक्रुल्लाह की तरफ़ ज़रा भी ध्यान नहीं होता। नमाज़ भी अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र है, लेकिन इसको अ़लैह़िदा ज़िक्र फ़रमाया क्योंकि आ़म ज़िक्र से इस की अहमियत ज़्यादा है जिस की वजह यह है कि वह फ़र्ज़ है और आ़म तौर पर ज़िक्र में मश्ग़ूल रहना मुस्तह़ब है यानी इस आ़म ज़िक्र के भी बड़े-बड़े अज्र हैं।

जुए की तमाम सूरतें ह़राम हैं-

इस आयत में शराब और जुआ दोनों को ह़राम क़रार दिया गया है और दोनों को नापाक बताया है और सूरः बक़रः में फ़रमाया وَاِثْمُهُمَآ اَكْبَرُ مِنْ نَّفْعِهِمَا कि इन दोनों का गुनाह उन के नफ़े से बड़ा है।

जुए के लिए सूरः बक़रः में और यहाँ सूरः माइदा में शब्द اَلْمَيْسِرُ इस्तेमाल फ़रमाया है। अ़रबी में इस का दूसरा नाम क़िमार है।

हर वह मामला जो नफ़े और नुक़्सान के दर्मियान छुपा हो शरीअ़त में उसे 'क़िमार' (जुआ़) कहा जाता है। जैसे- दो आदमी आपस में बाज़ी लगाएँ कि हम दोनों दौड़ते हैं और एक दूसरे से कहें कि तू आगे बढ़ गया तो मैं एक हज़ार रुपये दूँगा और अगर मैं बढ़ गया तो तुम को मुझे एक हज़ार रुपये देना होंगे। या जैसे बन्द डिब्बे हैं वह फ़ी डिब्बा एक रुपये के हिसाब से बिकेंगे, लेकिन किसी डिब्बे में पन्द्रह सौ रुपये की चीज़ निकलेगी और किसी डिब्बे में दस रु० का माल निकलेगा तो इन डिब्बों की ख़रीद व फ़रोख़्त क़िमार (जुआ़) में दाख़िल है और हर वह मामला जो नफ़ा और नुक़्सान के दर्मियान हो वह मामला जुआ ही की सूरत है।

अख़बारी मामले के ज़रिये भी क़िमार यानी जुआ का सिलसिला जारी है बतौर इश्तिहारी (एडवर्टाइज़) अख़बारों में कई तरह़ का एडवर्टाइज़ का इश्तिहार दिया जाता है कि जो शख़्स इस को ह़ल करके भेजे और उस के साथ इतनी फ़ीस जैसे पचास रुपये भेजे तो जिन लोगों के ह़ल सही होंगे उन लोगों में से जिस का क़ुरअ़ अन्दाज़ी (पर्ची उठाने) में नाम निकल आएगा उसे इनआ़म के तौर से मुक़र्रर रक़म या कोई भारी क़ीमत की चीज़ मिल जाएगी। यह सरासर जुआ और ह़राम है क्योंकि जो शख़्स फ़ीस के नाम से कुछ पैसे भेजता है वह इस नामालूम नफ़ा के ख़याल से भेजता है कि या तो रुपये गये या हज़ारों मिल गये।

फ़ीस के नाम से रुपये भेजना और अगर उस रुपये पर कुछ ज़्यादा मिल जाए तो उस का लेना ह़राम है और हर तरह़ की लाटरी जिस में कुछ देकर ज़्यादा मिलने की उम्मीद पर माल जमा किया जाता है फिर उस पर माल मिले या न मिले यह सब ह़राम है। घुड़दौड़ के ज़रिये भी जुआ खेला जाता है जिस का घोड़ा आगे निकल गया उसे हारने वाले की जमा की हुई रक़म मिल जाती है यह तरीक़ा ह़राम है और जो इस तरीक़े से रक़म ह़ासिल की वह भी ह़राम है।

पतंगबाज़ी और कबूतरबाज़ी के ज़रिये भी जुआ खेला जाता है। यह दोनों काम ख़ुद अपनी जगह मना हैं फिर उन पर हार जीत के तौर पर जो रक़म लगाते हैं वह अलग गुनाह है और साफ़-साफ़ ह़राम है क्योंकि किमार यानी जुआ है। सट्टे का कारोबार भी सरासर क़िमार है और ह़राम है। इन्शोरेन्स यानी बीमा पालिसी की वह सब सूरतें ह़राम हैं जिन में रक़में जमा की जाती हैं और ह़ादसा हो जाने पर जमा की हुई रक़म से ज़्यादा माल मिल जाता है। ज़िन्दगी का बीमा हो या गाड़ियों का या दुकानों का उन में अपनी जमा की हुई रक़म से जो माल ज़्यादा मिले वह सब ह़राम है।

क़िमार के जितने भी तरीक़े हैं (घुड़दौड़ वग़ैरह) सब की आमदनी ह़राम है। हर मोमिन को अल्लाह तआ़ला के अह़काम की पैरवी करना ज़रूरी है। दुनिया चन्द रोज़ की है, इसलिए ह़राम से बचना चाहिए।

आयत नं० 94 से 105 तक

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَيَبْلُوَنَّكُمُ اللّٰهُ بِشَيْءٍ مِّنَ الصَّيْدِ تَنَالُهٗۤ اَيْدِيْكُمْ وَرِمَاحُكُمْ لِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّخَافُهٗ بِالْغَيْبِ ۚ فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ
ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ وَاَنْتُمْ حُرُمٌ ۚ وَمَنْ قَتَلَهٗ مِنْكُمْ مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ
يَحْكُمُ بِهٖ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ هَدْيًاۢ بٰلِغَ الْكَعْبَةِ اَوْ كَفَّارَةٌ طَعَامُ مَسٰكِيْنَ اَوْ عَدْلُ ذٰلِكَ صِيَامًا لِّيَذُوْقَ وَبَالَ اَمْرِهٖ ۗ عَفَا اللّٰهُ عَمَّا سَلَفَ ۚ
وَمَنْ عَادَ فَيَنْتَقِمُ اللّٰهُ مِنْهُ ۚ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ۝ اُحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ وَطَعَامُهٗ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِلسَّيَّارَةِ ۚ وَحُرِّمَ عَلَيْكُمْ
صَيْدُ الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ حُرُمًا ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْۤ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝ جَعَلَ اللّٰهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ قِيٰمًا لِّلنَّاسِ وَالشَّهْرَ
الْحَرَامَ وَالْهَدْيَ وَالْقَلَآئِدَ ۚ ذٰلِكَ لِتَعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَاَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝ اِعْلَمُوْۤا
اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ وَاَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ مَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَمَا تَكْتُمُوْنَ ۝ قُلْ لَّا يَسْتَوِي
الْخَبِيْثُ وَالطَّيِّبُ وَلَوْ اَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِيْثِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ يٰۤاُولِي الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَسْـَٔلُوْا عَنْ اَشْيَآءَ
اِنْ تُبْدَ لَكُمْ تَسُؤْكُمْ ۚ وَاِنْ تَسْـَٔلُوْا عَنْهَا حِيْنَ يُنَزَّلُ الْقُرْاٰنُ تُبْدَ لَكُمْ ۗ عَفَا اللّٰهُ عَنْهَا ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ۝ قَدْ سَاَلَهَا قَوْمٌ مِّنْ
قَبْلِكُمْ ثُمَّ اَصْبَحُوْا بِهَا كٰفِرِيْنَ ۝ مَا جَعَلَ اللّٰهُ مِنْۢ بَحِيْرَةٍ وَّلَا سَآئِبَةٍ وَّلَا وَصِيْلَةٍ وَّلَا حَامٍ ۙ وَّلٰكِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ۚ وَاَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ۝ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا اِلٰى مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَاِلَى الرَّسُوْلِ قَالُوْا حَسْبُنَا مَا وَجَدْنَا
عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ۚ اَوَلَوْ كَانَ اٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ شَيْـًٔا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ ۚ لَا يَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا
اهْتَدَيْتُمْ ۚ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝

अनुवाद-

(94) ऐ ईमान वालो! अल्लाह उस शिकार के ज़रिये तुम्हारी ज़रूर आज़माइश करेगा जहाँ तक तुम्हारे हाथ और नेज़े पहुँचें, ताकि अल्लाह यह जान ले कि 'उससे' बिन देखे कौन डरता है? तो जो उसके बाद ज़्यादती करे, उसके लिए दुःख देने वाला अ़ज़ाब होगा। (95) ऐ ईमान वालो! एह़राम की ह़ालत में तुम शिकार न करो और तुममें जो कोई जान-बूझ कर उसे मारे- तो उसने जो (जानवर) मारा हो- चौपायों में से उसी जैसा एक (जानवर) जिसका फ़ैसला तुम्हारे दो इन्साफ़ वाले आदमी तय कर दें, कअ़बः पहुँचा कर क़ुर्बान किया जाए, या कफ़्फ़ारे के रूप में मोहताजों को खाना खिलाया जाए, या उसके बराबर रोज़े रखे जाएँ, ताकि वह अपने किये का मज़ा चख ले, जो पहले हो चुका उसे अल्लाह ने माफ़ कर दिया; लेकिन किसी ने फिर किया तो उससे अल्लाह बदला लेगा, अल्लाह ग़ालिब (प्रभुत्वशाली), बदला लेने वाला है। (96) तुम्हारे लिए समुद्र का शिकार और उसका खाना ह़लाल है कि तुम उससे फ़ायदा उठाओ और मुसाफ़िर भी, और ह़राम है तुम पर खुश्की (थलीय) के शिकार जबकि तुम एह़राम की ह़ालत में हो; और अल्लाह से डरते रहो, जिसके पास तुम इकट्ठा किये जाओगे। (97) अल्लाह ने इ़ज़्ज़त वाले घर, कअ़बः को लोगों के लिए क़ायम रहने का ज़रिया बनाया और इ़ज़्ज़त वाले महीने को, और क़ुर्बानी को और उन जानवरों को जिनके गले में पट्टे बंधे हों; यह इसलिए कि तुम जान लो कि अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, और यह कि अल्लाह हर चीज़ का इ़ल्म रखता है। (98) जान लो! कि अल्लाह सख़्त सज़ा देने वाला

है और यह कि अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला है। (99) रसूल के ज़िम्मे तो केवल (संदेश) पहुँचा देना है, और जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो और जो कुछ छिपाते हो, अल्लाह को सब मालूम है। (100) कह दीजिए, ''बुरी चीज़ और अच्छी चीज़ बराबर नहीं होती, चाहे बुरी चीज़ों की ज़्यादती तुम्हें कितनी ही अच्छी क्यों न लगे?'' तो अक़्ल वालो! अल्लाह से डरते रहो, ताकि तुम कामियाब हो सको। (101) ऐ ईमान वालो! ऐसी चीज़ों के बारे में सवाल न करो कि अगर (उनकी हक़ीक़त) तुम पर ज़ाहिर कर दी जाए तो तुम्हें बुरी लगे; और अगर क़ुर्आन के नाज़िल होने के वक़्त ऐसी बातें पूछोगे, तो तुम पर ज़ाहिर कर दी जाएँगी, अल्लाह ने ऐसी बातों को माफ़ कर दिया है। और अल्लाह बख़्शने वाला 'ह़लीम' (सहनशील) है; (102) तुमसे पहले कुछ लोग इस तरह के सवाल कर चुके हैं, फिर वे उससे इन्कार करने वाले हो गये। (103) अल्लाह ने न कोई बहीरा ठहराया है, और न 'साइबा' और न 'वसीलः' और न 'ह़ाम', लेकिन काफ़िर अल्लाह पर झूठ का आरोप लगाते हैं, और उनमें अक्सर लोग अक़्ल नहीं रखते; (104) और जब उनसे कहा जाता है, ''उस चीज़ की ओर आओ, जो अल्लाह ने नाज़िल की है और रसूल की ओर,'' तो वे कहते हैं, ''हमारे लिए तो वही काफ़ी है, जिस पर हमने अपने बाप-दादा को पाया है,'' क्या अगर उनके बाप-दादा न कुछ जानते रहे हों और न सीधी राह पर रहे हों? (105) ऐ ईमान वालो! अपनी जानों की हिफ़ाज़त करो, जब तुम हिदायत पर हो, तो कोई गुमराह करने वाला तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता; तुम सब को अल्लाह की ओर लौट कर जाना है फिर 'वह' तुम्हें बता देगा, जो कुछ तुम करते रहे होगे।

आयत नं० 94 से 105 तक की व्याख्या

94 يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ لَيَبۡلُوَنَّكُمُ ٱللَّهُ بِشَيۡءٖ مِّنَ ٱلصَّيۡدِ تَنَالُهُۥٓ أَيۡدِيكُمۡ وَرِمَاحُكُمۡ لِيَعۡلَمَ ٱللَّهُ مَن يَخَافُهُۥ بِٱلۡغَيۡبِۚ
فَمَنِ ٱعۡتَدَىٰ بَعۡدَ ذَٰلِكَ فَلَهُۥ عَذَابٌ أَلِيمٞ

ह़ालते एह़राम में शिकार

ह़ज या उ़मरह का अगर कोई शख़्स एह़राम बाँध ले तो एह़राम के वक़्त बहुत से काम मना हो जाते हैं। इन में ख़ुश्की (जो समन्दरी न हो) का शिकार करना भी है।

यह आयत और इस से अगली आयत उस वक़्त नाज़िल हुई जबकि मुसलमान ह़ुदैबिया में एह़राम की ह़ालत में थे। अचानक छोटे-बड़े जंगली जानवर उन के घरों में घुस आये। यह उसी तरह़ की आज़्माइश थी जैसा कि अस्ह़ाबे-सब्त से मछलियों के शिकार के सिल्सिले में हुआ था।

(देखें सूरः अअ़राफ़-163)

रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया कि मह़रम न तो किसी शिकारी की मदद करे और न ही उस शिकार का गोश्त खाये जो मह़रम के लिए शिकार किया गया हो। **(बुख़ारी)**

एक मर्तबः अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रात सह़ाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम को इस तरह़ आज़्माया कि एह़राम की ह़ालत में थे और शिकारी जानवर ख़ूब बढ़-चढ़ कर आ रहे थे। यह ऐसी

आज़्माइश थी जैसे बनी इस्राईल को आज़्माया गया था उन के लिए सनीचर के दिन मछलियों का शिकार करना मना था, लेकिन सनीचर के दिन मछलियाँ ख़ूब उभर-उभर कर पानी के ऊपर आ जाती थीं और दूसरे दिनों में ऐसा नहीं होता था।

जिस का ज़िक्र सूरः अअ़राफ़ की आयत وَسْئَلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِىْ كَانَتْ حَاضِرَةَ الْبَحْرِ ۘ में फ़रमाया है।

तफ़्सीर दुर्रे मन्सूर भाग नं० 2, पेज नं० 327 में इब्ने अबी हातिम से नक़्ल किया है कि इस आयत में हुदैबिया वाले उ़मरह के बारे में नाज़िल हुई। वह़शी जानवर और परिन्दे उन के ठहरने की जगहों में चले आ रहे थे। इस से पहले ऐसे मन्ज़र उन्होंने कभी नहीं देखे थे उन को हाथों से पकड़ना और नेज़ों से मारना बहुत ही ज़्यादा आसान था, मगर अल्लाह तआ़ला ने मना फ़रमाया था कि एह़राम की ह़ालत में शिकार न करना। जो शिकार करने से परहेज़ करेगा वह इम्तिह़ान में कामियाब होगा और यह बात मालूम हो जाएगी कि बिना देखे अल्लाह तआ़ला से कौन डरता है।

(और जो शख़्स शिकार कर लेगा वह गुनाह का इरतिकाब करेगा और आज़्माइश में नाकाम होगा।)

95-96 يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ وَاَنْتُمْ حُرُمٌ ؕ وَمَنْ قَتَلَهٗ مِنْكُمْ مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ يَحْكُمُ بِهٖ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ هَدْيًاۢ بٰلِغَ الْكَعْبَةِ اَوْ كَفَّارَةٌ طَعَامُ مَسٰكِيْنَ اَوْ عَدْلُ ذٰلِكَ صِيَامًا لِّيَذُوْقَ وَبَالَ اَمْرِهٖ ؕ عَفَا اللّٰهُ عَمَّا سَلَفَ ؕ وَمَنْ عَادَ فَيَنْتَقِمُ اللّٰهُ مِنْهُ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ۝ اُحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ وَطَعَامُهٗ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِلسَّيَّارَةِ ۚ وَحُرِّمَ عَلَيْكُمْ صَيْدُ الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ حُرُمًا ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْۤ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝

एह़राम में शिकार करने की सज़ा

जैसा कि ऊपर ज़िक्र किया गया एह़राम की ह़ालत में (ह़ज का एह़राम हो या उ़मरह का) ख़ुश्की का कोई जानवर शिकार करे (चाहे उस जानवर का गोश्त खाया जाता हो या न खाया जाता हो) तो उसकी सज़ा इस आयत में ज़िक्र फ़रमाई गई है। याद रहे शिकार उन जानवरों का जो वह़शी हों, इन्सानों से मानूस न हों उन से दूर भागते हों। जैसे-

शेर, गीदड़, हिरन, ख़रगोश, नील गाय, कबूतर, फ़ाख़्ता वग़ैरह और जो जानवर इन्सानों से मानूस होते हैं और उन के पास रहते हैं। जैसे-

गाय, ऊँट, भेड़, बकरी मुर्गी यह शिकार में दाख़िल नहीं हैं और जो वह़शी जानवर हों उन में से कुछ जानवरों का मारना एह़राम की ह़ालत में भी जायज़ है।

यह अह़ादीस में है उन में कव्वा, चील, भेड़िया, साँप, बिच्छू, काटने वाला कुत्ता और चूहा शामिल हैं। यानी मुह़रिम (एह़राम की पाबन्दी वाला) को इन का क़त्ल करना जायज़ है और जो जानवर मुह़रिम (एह़राम की पाबन्दी वाला) पर ह़मला कर दें उस का क़त्ल करना भी जायज़ है, यदि उन जानवरों में से न हो जिन के क़त्ल की इजाज़त है।

एह़राम में शिकार करने की जो सज़ा ज़िक्र की गई है उस का ख़ुलासा यह है कि जो जानवर क़त्ल

करेगा उस का बदला वाजिब होगा और इस बदला की अदाएगी या तो इस तरह़ कर दे कि जानवर ख़रीद कर बतौर हदी (जानवर) कअ़बः शरीफ़ की तरफ़ यानी हुदूदे ह़रम में भेज दे जैसे वहाँ ज़ब्ह़ कर दिया जाए और अगर हदी न भेजे तो उसकी क़ीमत मिस्कीनों को दे दे या उस के बदले रोज़े रख ले।

فَمِثْلُ مَاقَتَلَ مِنَ النَّعَمِ (यानी जो जानवर क़त्ल किया है उस जानवर की तरह बतौर जज़ा के वाजिब होगा।) इस के बारे में ह़ज़रत शाफ़ई (रह़०) ने फ़रमाया है कि जिस्म में इतना बड़ा जानवर हो जितना बड़ा जानवर उस ने क़त्ल किया है। जैसे- सत्तर मुर्ग़ क़त्ल किया हो तो उस के बदले में उसी जैसा ऊँट ज़ब्ह़ किया जाए और जिस जानवर की तरह़ उसका दूसरा जिस्म जैसे हो उस की क़ीमत लगा दी जाए।

ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़०) के नज़्दीक़ जिस्म में उसकी तरह़ का एतिबार नहीं यानी मिस्ल सूरी (यानी जिस्मानियत वाली बराबरी) मुराद नहीं है उन के नज़्दीक इब्तिदा व इन्तिहा संज्ञा के ही है। मिस्ल का मतलब यह है कि मक़्तूल जानवर की क़ीमत लगा दी जाए फिर उस क़ीमत से जानवर ख़रीद कर बतौर हदी हुदूदे ह़रम में ज़ब्ह़ कर दिया जाए।

जिस मुह़रिम ने शिकार किया उसे अख़्तियार है कि क़ीमत के बदले हदी (क़ुर्बानी) का जानवर हुदूदे ह़रम में ज़ब्ह़ कर दे या किसी दूसरे शख़्स से ज़ब्ह़ करा दे और अगर हदी (क़ुर्बानी) का जानवर ज़ब्ह़ कराने के बजाय उस क़ीमत को मिस्कीनों पर सद्क़ा करना चाहे तो यह भी हो सकता है। जिस की सूरत यह है कि हर मिस्कीन को बक़द्र सद्क़-ए-फ़ित्र ग़ल्ला या उसकी क़ीमत सद्क़ः कर दे और अगर ग़ल्ला या उसकी क़ीमत देना न चाहे तो बहिसाब हर मिस्कीन को आधा साअ़ गेहूँ के ह़िसाब से दे या रोज़े रख ले। अगर फ़ी मिस्कीन बक़द्र सद्क़-ए-फ़ित्र ह़िसाब कर के देने के बाद इतने पैसे बच गये जिस से एक सद्क़-ए-फ़ित्र के बराबर ग़ल्ला नहीं ख़रीदा जा सकता तो अख़्तियार है कि यह पैसे एक मिस्कीन को दे दे या उस के बदले एक रोज़ः रख ले।

जिस जानवर को क़त्ल किया है उसकी क़ीमत कौन तय करे इस के बारे में इर्शाद है-
يَحْكُمُ بِهٖ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ यानी मुसलमानों में से दो इन्साफ़ वाले आदमी उसकी क़ीमत का अन्दाज़ा लगाएँ।

शिकार के चन्द मसायल-

मस्ला- अगर जानवर की क़ीमत इतनी ज़्यादा है कि बड़ा जानवर ख़रीदा जा सकता है तो ऊँट और गाय हुदूदे ह़रम में ज़ब्ह़ कर दे, बकरी ज़ब्ह़ करे या गाय या ऊँट उन में क़ुर्बानी के जानवर के शरायत और क़ुर्बानी के जानवरों की उम्रों का लिहाज़ रखे।

मस्ला- अगर मक़्तूल जानवर की क़ीमत के बराबर हदी का जानवर तय किया और जानवर ख़रीदने के बाद कुछ क़ीमत बच गई तो इस बक़िया क़ीमत के बारे में अख़्तियार है कि चाहे दूसरा जानवर ख़रीद कर हुदूदे ह़रम में ज़ब्ह़ कर दे या उस का ग़ल्ला ख़रीद कर दे दे या ग़ल्ला के ह़िसाब से हर एक को आधा साअ़ गेहूँ या एक रोज़ः रख ले।

मस्ला- मिस्कीनों को ग़ल्ला देने और रोज़ः रखने में ह़रम की क़ैद नहीं है, अल्बत्ता हदी का

जानवर हुदूदे हरम ही में ज़ब्ह करना ज़रूरी है, ज़ब्ह करके फुक़रा-ए-हरम में सद्क़ा कर दे।

मस्ला– मुहरिम को जिन जानवरों का शिकार करना हराम है अगर उस ने उन में से किसी जानवर को क़त्ल कर दिया तो वह जानवर मय्यित यानी मुरदार के हुक्म में होगा और किसी को भी उस का खाना हलाल न होगा।

मस्ला– मुहरिम को जिस जानवर का क़त्ल करना हराम है उसको ज़ख़्मी करना या पर उखाड़ना या टांग तोड़ देना भी हराम है। अगर उन में से कोई सूरत पेश आ जाए तो अन्दाज़ा कराया जाए और उस जानवर की जितनी क़ीमत हो फिर उस क़ीमत के बारे में उन्हें तीन क़ौलों में से कोई सूरत अख़्तियार कर ली जाए जो क़त्ल की सज़ा में ज़िक्र हुई।

मस्ला– ऊपर ज़िक्र किये गये जानवरों का अंडा तोड़ना मना है, अगर मुहरिम ने किसी जानवर का अंडा तोड़ दिया तो उस पर उस की क़ीमत वाजिब हो गई, अगर अंडे में से मरा हुआ बच्चा निकल आया तो उसकी क़ीमत वाजिब होगी।

मस्ला– अगर दो मुहरिमों ने मिलकर शिकार किया तो दोनों पर जज़ा वाजिब होगी।

मस्ला– अगर किसी ने हामिला हिरनी के पेट में मार दिया और उस में से ज़िन्दा बच्चा निकला और वह भी मर गई तो दोनों की क़ीमत वाजिब होगी।

मस्ला– अगर किसी ग़ैर मुहरिम ने शिकार किया फिर एहराम बाँध लिया तो उस पर वाजिब है कि शिकार को छोड़ दे अगर न छोड़ा और उस के हाथ में मर गया तो उसकी क़ीमत वाजिब होगी।

मस्ला– मच्छर के क़त्ल करने से कुछ वाजिब नहीं होता।

मस्ला– एहराम में च्यूटी का मारना जायज़ है जो तक्लीफ़ देती हो और जो तक्लीफ़ न दे उसे मारना जायज़ नहीं, लेकिन अगर मार दे तो कुछ वाजिब नहीं होगा।

मस्ला– अगर किसी मुहरिम ने जूँ मार दी तो कुछ सद्क़ा कर दे।

मस्ला– अगर कोई मुहरिम टिड्डी मार दे तो थोड़ा बहुत सद्क़ा कर दे। हज़रत उमर (रज़ि०) से पूछा गया तो फ़रमाया एक खजूर टिड्डी के लिए बहुत है।

मस्ला– अगर भूले से या ग़ल्ती से शिकार को क़त्ल कर दे तो उस पर जज़ा है। जम्हूर का यही मज़्हब है।

हज़रत अबू बक्र हिसास अहकामुल् क़ुर्आन में लिखते हैं कि हज़रत उमर और हज़रत उस्मान-ए-ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हुमा और इब्राहीम नख़ई और फ़ुक़्हा का यही मज़्हब है और क़ुर्आन करीम में जो शब्द "متعمداً" आया है यह उन हज़रात के नज़्दीक ख़ता व भूल से बचने के लिए नहीं बल्कि यह शब्द इसलिए बढ़ाया गया है कि ومن عاد فينتقم الله منه जो आगे आ रहा है वह इस पर बैठ सके क्योंकि ख़ता व निस्यान पर पकड़ नहीं होती। इस की दलील में फ़रमाते हैं।

لانه قد ثبت ان جنايات الاحرام لا يختلف فيها المعذور وغير المعذور فى باب
وجوب الفدية الاترى انّ الله تعالىٰ قد عذّر المريض ومن به أذى من رأسه ولم

يخلهما من ايجاب الكفارة

मस्ला– शिकार की तरफ़ इशारा करना या शिकारी को बताना कि वह शिकार जा रहा है, मुह़रिम के लिए यह भी ह़राम है, अगर मुह़रिम ने शिकारी की तरफ़ इशारा कर दिया और शिकारी ने उसे क़त्ल कर दिया तो बताने वाले पर भी जज़ा वाजिब होगी।

मस्ला– अगर किसी ग़ैर मुह़रिम ने शिकार किया और मुह़रिम को उस का गोश्त पेश कर दिया तो उस का खाना जायज़ है बशर्ते कि मुह़रिम ने शिकारी को न इशारे से बताया हो न ज़बान से।

मस्ला– अगर ऐसे मुह़रिम ने शिकार किया जो क़िरान का एह़राम बांधे हुआ था तो उस पर दूसरी जज़ा वाजिब होगी क्योंकि इस के दो एह़राम हैं।

मस्ला– मुह़रिम के शिकार को बेचना ख़रीदना ह़राम है। अगर किसी मुह़रिम ने ऐसा कर लिया तो बैअ़ बातिल होगी।

मस्ला– मुह़रिम के लिए ह़रम और ग़ैर ह़रम दोनों में शिकार करना ह़राम है।

मस्ला– ह़रम का शिकार मुह़रिम और ग़ैर मुह़रिम दोनों के लिए ह़राम है। अलबत्ता उस के क़त्ल कर देने से मुह़रिम पर और ग़ैर मुह़रिम पर एक ही जज़ा वाजिब होगी।

मक्का मुकर्रमा के चारों तरफ़ सरज़मीने ह़रम है जिस की दूरियाँ मुख़्तलिफ़ हैं। जद्दा की तरफ़ लगभग १५ किलोमीटर है और अ़रफ़ात की तरफ़ लगभग 14 किलोमीटर है। मिना और मुज़्दलिफ़ा दोनों ह़रम में दाख़िल हैं और तन्ई़म जो मदीना मुनव्वरह के रास्ते में आता है यह ह़रम से अलग है। पुरानी किताबो में लिखा है कि तन्ई़म मक्का मुकर्रमा से तीन मील है, लेकिन अब मक्का मुअ़ज़्ज़माँ की आबादी तन्ई़म बल्कि उस से बहुत आगे तक हो चुकी है।

ह़रम शरीफ़ की घास और दरख़्त काटने के मसायल–

मक्का मुअ़ज़्ज़माँ के ह़रम की घास काटना और ऐसे दरख़्त को काटना जो किसी की मम्लूक नहीं जिसे लोग बोते नहीं यह भी मना है।

अगर कोई शख़्स मुह़रिम या ग़ैर मुह़रिम यहाँ शिकार करे तो उसकी जज़ा देना वाजिब है। इसी तरह़ अगर घास काट दी या ग़ैर मम्लूक दरख़्त काट लिया तो उसकी क़ीमत का सद्क़ः करना वाजिब होगा। अगर कोई दरख़्त ह़ुदूदे ह़रम में किसी शख़्स की मिल्कियत में ऊग आया तो उस के काटने पर उसकी क़ीमत ह़ुरमते ह़रम की वजह से वाजिब होगी जिस का सद्क़ः करना लाज़िम होगा और उसकी क़ीमत बतौर ज़मान उस के मालिक को देनी होगी और अगर ह़रम के किसी ऐसे दरख़्त को काट दिया जिसे लोग उगाते हैं तो इस सूरत में सिर्फ़ मालिक को क़ीमत देना वाजिब होगा।

मस्ला– अगर दो ग़ैर मुह़रिमों ने मिलकर ह़रम का शिकार किया तो उतनी ही जज़ा वाजिब होगी।

एह़राम में समुद्र का शिकार करने की इजाज़त-

आख़िर में फ़रमाया أُحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ وَطَعَامُهُ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِلسَّيَّارَةِ मतलब यह है कि तुम्हारे लिए समुद्र का शिकार करना और उस का खाना ह़लाल है इस में मुह़रिम और ग़ैर मुह़रिम दोनों बराबर हैं। पहले से दरियाई शिकार करके सफ़र में साथ ले गये या सफ़र में दरियाई शिकार कर लें यह मुसाफ़िरों के लिए दुरुस्त है। मुह़रिम हों या ग़ैर मुह़रिम और ख़ुश्की का शिकार मुह़रिम के लिए ह़राम क़रार दिया गया चाहे किसी क़िस्म के एह़राम में हो। **(एह़राम उ़मरा हो या ह़ज)**

وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ यानी तमाम अह़काम की पाबन्दी करो, अल्लाह से डरो उस के हुक्मों की मुख़ालिफ़त न करो, उसकी तरफ़ सब को जमा होना है।

97 جَعَلَ اللَّهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ قِيَامًا لِّلنَّاسِ وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَالْهَدْيَ وَالْقَلَائِدَ ۚ ذَٰلِكَ لِتَعْلَمُوا أَنَّ
اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَأَنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ

कअ़बः शरीफ़ लोगों के क़ायम रहने का सबब है

कअ़बः जिस में अक्षर क, अ़, ब हैं। अ़रबी ज़बान में ऊपर को उठे हुए चौकोर घर को कहते हैं।



कअ़बः शरीफ़ नीचे के हि़स्से में है और कअ़बः शरीफ़ दूर से उठा हुआ मालूम होता है। जब कअ़बः शरीफ़ बनाया गया था उस वक़्त उस के चारो तरफ़ मस्जिदे ह़राम बनी हुई थी, इसलिए दूर से उठा हुआ और ज़मीन से उभरा हुआ नज़र आता था। इस ऊँचाई की वजह से इस का नाम 'कअ़बः' रखा गया।

लफ़्ज़ الْكَعْبَةَ के बाद الْبَيْتَ الْحَرَامَ भी फ़रमाया यानी बहुत मोह़तरम घर। अल्लाह तआ़ला ने इस को मोह़तरम क़रार दिया, इसकी हुरमत हमेशा से है इस का तवाफ़ भी किया जाता है।

मक्का के चारों तरफ़ जो ह़रम है वह भी इसी कअ़बः की वजह से मोह़तरम है और इसी एह़तिराम की वजह से ह़रम में शिकार करना और उसकी घास और दरख़्त काटना मना है। ह़रम में क़त्ल व क़िताल भी मना है, क़त्ल व क़िताल की मुमानिअ़त का अ़क़ीदा ज़माने जाहिलियत में भी था।

तफ़्सीर दुर्रे मन्सूर में है कि ज़माने जाहिलियत में कोई शख़्स जुर्म करके ह़रम में पनाह ले लेता

था तो उसे क़त्ल नहीं करते थे।

इस में इर्शाद फ़रमाया कि कअ़बः जो मोह़तरम घर है अल्लाह तआ़ला ने उसे लोगों के क़ायम रहने और अम्न व अमान का ज़रिया बनाया है जो बहुत से लोगों की रोज़ी का ज़रिया बना हुआ है ज़मीन के दूर-दराज़ जगहों से लोग ह़ज व उ़मरह की अदाएगी के लिए मक्का मुअ़ज़्ज़माँ आते हैं, शहर मक्का में रहते हैं, 'मिना' में क़याम करते हैं, 'अ़रफ़ात, मुज़्दलिफ़ा' में वक़ूफ़ (क़याम) करते हैं, उन सब के आने और रहने और ज़रूरत की चीज़ें ख़रीदने की वजह से अहले अ़रब और ख़ास कर अहले मक्का की मआ़ीशत (फ़ाइनेन्शली पोज़ीशन) बनी रहती है और इस ख़रीदारी का असर पूरी दुनिया की फ़ैक्ट्रियों और कम्पनियों पर पड़ते हैं। अहले मक्का के लिए तो कअ़बतुल्लाह क़ियाम का ज़रिया ही है। बाज़ एतिबार से पूरी दुनिया के बाक़ी रहने का ज़रिया है, समन्दरी जहाज़ों से लोगों की आमद हवाई जहाज़ों की उड़ान करोड़ों रुपये के किराये और बसों और कारों के सफ़र उन सब के ज़रिये अ़रब व अ़जम में माली आमदनी से पूरे आ़लम को इस का माली फ़ायदा पहुँचता है।

सूरः क़सस में फ़रमाया أَوَلَمْ نُمَكِّن لَّهُمْ حَرَمًا آمِنًا يُجْبَىٰ إِلَيْهِ ثَمَرَاتُ كُلِّ شَيْءٍ رِّزْقًا مِّن لَّدُنَّا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ (क्या हम ने उन को अम्न व अमान वाले घर में जगह नहीं दी जहाँ हर क़िस्म के फल खिंचे चले आते हैं जो हमारे पास बतौर रिज़्क़ उनको मिलते हैं, लेकिन उन में से बहुत से लोग नहीं जानते।) फिर चूंकि ह़ज एक अ़ज़ीम अ़िबादत है जो अल्लाह के ज़िक्र से भरपूर है और अल्लाह का ज़िक्र ही इस दुनिया की रुह़ है, इसलिए भी कअ़बः शरीफ़ सारी दुनिया की बक़ा का ज़रिया है।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि क़ियामत क़ायम नहीं होगी जब तक दुनिया में एक बार भी अल्लाह-अल्लाह कहा जाता रहेगा। **(मुस्लिम भाग 1, पेज नं० 84)**

जब दुनिया में कोई भी ईमान वाला न रहेगा तो कअ़बः शरीफ़ का ह़ज भी ख़त्म हो जाएगा। कअ़बः शरीफ़ का ह़ज ख़त्म हो जाना भी दुनिया की बर्बादी का ज़रिया है।

कुछ ह़ज़रात ने قِيَامًا का तर्जुमः "أَمْنًا" से भी किया। बेशक ह़रमे मक्का पुराने ज़माने से अम्न की जगह है। सूरः बक़रः में फ़रमाया وَإِذْ جَعَلْنَا الْبَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَأَمْنًا (और जब हम ने 'कअ़बः' को लोगों के जमा होने और अम्न की जगह बनाया।) और सूरः अ़न्कबूत में फ़रमायाः-

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا آمِنًا وَيُتَخَطَّفُ النَّاسُ مِنْ حَوْلِهِمْ (क्या उन्हें मालूम नहीं कि हम ने ह़रम को अम्न की जगह बना दिया और उन के इर्द-गिर्द लोगों को उचक लिया जाता है।) बेशक अ़िबादात और मालियात और अम्न व अमान यह सब इन्सानों के क़याम और बक़ा का ज़रिया हैं।

हदी (क़ुर्बानी) के जानवर-

'हदी' (क़ुर्बानी) का वह जानवर है जो बतौर क़ुर्बानी कअ़बः की तरफ़ भेजा जाए। हदी वाजिब भी होती है और मुस्तह़ब भी और 'जिनायात' का दम जो वाजिब हैं ह़रम ही में उन को ज़ब्ह़ किया जाता है। 'दम तमत्तोअ़' (ह़ज की क़िस्म) और दम क़िरान (ह़ज की क़िस्म) भी ह़रम ही के अन्दर ज़ब्ह़ करना

ज़रूरी है और शिकार के बदले जो जानवर ज़ब्ह किया जाए उस के बारे में भी "هَدْيًا بَالِغَ الْكَعْبَةِ" फ़रमाया, हदी के जानवरों का हुदूदे ह़रम में ज़ब्ह करना ज़रूरी है। आजकल तो हदी के जानवर मिना में ही मिल जाते हैं।

पहले हदी के जानवर लोग अपने मुल्क से साथ लाया करते थे। रसूलुल्लाह (सल्ल०) उ़मरह हुदैबिया के मौके़ पर और ह़ज्जतुल् विदाअ़ के मौके़ पर हदी के जानवर साथ ले गये थे और आ़मतौर से हदी के जानवर साथ लाने का दस्तूर था।

अल्क़लायद–

साहि़बे रूहुल् मआ़नी ने भाग 7 पेज नं० 36 में लिखा है कि "अल् क़लायद" से ज़वातुल् क़लायद मुराद हैं। ऊँटों के गलों में क़लायद यानी पट्टे डाल दिया करते थे। हदी के ज़िक्र के बाद ऊँटों का ज़िक्र किया क्योंकि उन के ज़ब्ह़ करने में सवाब ज़्यादा है।

खुलासा यह है कि कअ़बः शरीफ़ और उस से सम्बन्धित चीज़ें जिन में शहर ह़राम और हदी के छोटे बड़े जानवर भी हैं उन को लोगों के क़याम और बक़ा का ज़रिया बनाया। अहले अ़रब शहर ह़राम में अम्न व अमान से रहते थे, बेतकल्लुफ़ ह़ज भी करते थे और दूसरी दुनियावी चीज़ों के लिए भी निकलते थे और क़बीलों में आपस में दुश्मनी होती मगर एक दूसरे पर ह़मला नहीं करते थे और हदी के जानवरों का गोश्त भी खाते थे, फिर उन जानवरों की ख़रीद व फ़रोख़्त भी होती थी और अब तक यह सिल्सिला जारी है। इन सब वजह से कअ़बः और शहर ह़राम और हदी के जानवर लोगों के क़याम यानी बक़ा का ज़रिया हैं।

قال الجصاص فی احکام القران ص ۴۸۲ ج۲ وھذا الذی ذکرہ اللہ تعالیٰ من قوام الناس بمناسک الحج والحرام والاشھر الحرُم والھدیُ القلائد معلوم مشاھد فلانریٰ شیْئًا من امر الدین والدنیا تعلق بہ من صلاح المعاش والمعاد بعد الا یمان ماتعلق بالحج الا تری الیٰ کثرۃ منافع الحاج فی المواسم التی یرودن علیھا من سائر البلدان التی یجتازون بمنیٰ وبمکۃ الیٰ ان یرجعوا الیٰ اھالیھم وانتفاع الناس بھم وکثرۃ معایشھم وتجارتھم معھم (الیٰ اخرما قال)

फिर फ़रमाया ذٰلِكَ لِتَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ وَاَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمٌ (और यह इसलिए कि तुम जान लो कि बिलाशुब्हा अल्लाह तआ़ला जानता है जो आसमानों में है और जो ज़मीन में है और बेशक अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है।)

इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने अपने इ़ल्म के बारे में ख़बर दी है कि उस का इ़ल्म हर चीज़ को मुह़ीत (घेरे हुए) है। उस ने दीन व दुनिया के मुनाफ़े ह़ज में रख दिये यह तद्बीर ऐसी अ़जीब है

जिस में उम्मत के लिए शुरु से लेकर आख़िर तक यानी क़ियामत के दिन तक सब की सलाह़ का इन्तिज़ाम है। अगर अल्लाह तआ़ला आ़लिमुल ग़ैब न होता और तमाम चीज़ें उन के वजूद से पहले न जानता तो ऐसी तद्बीरें नहीं हो सकती थीं जिस में बन्दों के दीन व दुनिया की कामियाबी हो।

98 اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ وَاَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

(बिलाशुब्हा तुम जान लो कि अल्लाह सख़्त अ़ज़ाब वाला है, और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।)

इस में तम्बीह है कि अह़कामे इलाही की ख़िलाफ़वर्ज़ी न करो और अगर कहीं ख़िलाफ़वर्ज़ी हो जाए तो जल्दी से तौबः करो अल्लाह की रह़मत से नाउम्मीद न हो वह ग़फ़ूरुर्रह़ीम है।

99 مَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَمَا تَكْتُمُوْنَ ۝

रसूल के ज़िम्मे नहीं है मगर पहुँचाना और अल्लाह तआ़ला जानता है जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छिपाते हो।) इस में इस पर तम्बीह है कि तमाम अह़काम की पाबन्दी करो, रसूलुल्लाह (सल्ल०) के ज़िम्मे सिर्फ़ पहुँचा देना है आगे अ़मल करना तुम्हारा काम है।

हर तरह़ के आ़माल ज़ाहिर और बातिन को सही़ तरीक़े पर अन्जाम दो। अल्लाह तआ़ला तुम्हारे तमाम इरादों से और तमाम छुपे और खुले आ़माल से बाख़बर है, वही ह़िसाब लेगा और बदला देगा।

100 قُلْ لَّا يَسْتَوِى الْخَبِيْثُ وَالطَّيِّبُ وَلَوْ اَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِيْثِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ يٰٓاُولِي الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝

ख़बीस और तय्यिब

लुबाबुन्नुक़ूल पेज नं० 98 में इस आयत का सबबे नुज़ूल यह बयान किया है कि जब नबी करीम (सल्ल०) ने शराब की ह़ुरमत बयान फ़रमाई तो एक देहात का रहने वाला आदमी खड़ा हुआ और कहा कि मैं शराब की तिजारत करता था उसके ज़रिये मैंने माल ह़ासिल किया, अगर यह माल अल्लाह तआ़ला की इताअ़त में ख़र्च करूँ तो क्या यह माल मुझे नफ़ा देगा?

नबी अकरम (सल्ल०) ने जवाब में इर्शाद फ़रमाया اِنَّ اللّٰهَ لايقبل الا الطيب (कि बिलाशुब्हा अल्लाह तआ़ला क़ुबूल नहीं फ़रमाता, मगर पाकीज़ा माल को।) इस पर अल्लाह तआ़ला ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) की तस्दीक़ फ़रमाते हुए आयत قُلْ لَّا يَسْتَوِى الْخَبِيْثُ وَالطَّيِّبُ नाज़िल फ़रमाई।

इस पर यह सवाल होता है कि शराब की ह़ुरमत से जो माल पहले कमाया हुआ था वह तो ह़लाल होना चाहिए उसको ख़बीस क्यों फ़रमाया?

इस सवाल का यह जवाब हो सकता है कि शराब के नफ़े से बिल्कुल ही अलग हो जाएँ और दिलों में इस से किसी क़िस्म का लगाव न रहे। आयत का सबबे नुज़ूल जो कुछ भी हो, बहरहाल इस में एक अहम बात बता दी गई कि ख़बीस और तय्यिब बराबर नहीं।

ख़बीस बुरी चीज़ को और तय्यिब अच्छी चीज़ को कहते हैं। कुछ ह़ज़रात ने ख़बीस का तर्जुमः नापाक और तय्यिब का तर्जुमः पाक किया है। आयत का मतलब आ़म है जो अच्छे-बुरे आ़माल, अच्छे बुरे माल और अच्छे-बुरे लोगों को शामिल है।

कुछ ह़ज़रात ने फ़रमाया कि ख़बीस से ह़राम माल और तय्यिब से ह़लाल माल मुराद है और कुछ ह़ज़रात ने ख़बीस से काफ़िर और तय्यिब से मोमिन मुराद लिया है। इन बातों में कोई टकराव नहीं, क़ुर्आन के यह शब्द आ़म हैं। माल कमाने में भी ह़लाल का ध्यान रखा जाए और अल्लाह की राह में ख़र्च करे और मोमिन को काफ़िर पर तरजीह़ दे, अल्बत्ता ज़ुल्म किसी पर न करे।

ह़राम माल से सद्क़ः-

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि जो बन्दा ह़राम माल कमाएगा फिर उस में से सद्क़ः करेगा तो क़ुबूल न किया जाएगा और उस में से ख़र्च करेगा तो उस में बरकत न होगी और अपने पीछे छोड़ जाएगा तो यह उस के लिए दोज़ख़ में जाने का ज़रिया होगा। बेशक अल्लाह बुराई को बुराई से नहीं हटाता (यानी माल ख़बीस कमाकर उस में से सद्क़ा कर दे तो उस सद्क़े से ह़राम माल पाक न होगा और ह़राम कमाने का गुनाह माफ़ नहीं होगा।) **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 242)**

وَلَوْ أَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِيثِ में यह इर्शाद फ़रमा दिया कि किसी चीज़ का ज़्यादा होना इस बात की दलील नहीं कि वह अच्छी भी हो। दुनिया में काफ़िर ज़्यादा हैं इस कस्रत की वजह से वह अल्लाह के नज़्दीक अच्छे नहीं होंगे। जो लोग इस्लाम के दावेदार हैं उन में भी अक्सर वह हैं जो बड़े-बड़े गुनाहों में मुब्तिला हैं, कुछ लोग उन की कस्रत देखकर गुनाहों की राह अख़्तियार करते हैं। जब उन से कहा जाता है कि गुनाह छोड़ों तो कह देते हैं कि लाखों आदमी गुनाह कर रहे हैं यह भी अल्लाह के बन्दे हैं, यह जाहिलाना जवाब है अल्लाह के बन्दे तो हैं मगर गुनाहगार बन्दे हैं। हमें परहेज़गार बन्दों की राह अख़्तियार करनी चाहिए गुनाहगार बन्दों के पीछे नहीं।

एलेक्शन की क़बाह़त-

आयते करीमा से एलेक्शन की क़बाह़त भी मालूम हो गई चूंकि एलेक्शन की बुनियाद अक्सरियत पर रखी गई है इसलिए एलेक्शन में वह आदमी जीत जाता है जिस को वोट ज़्यादा मिल जाएँ बल्कि जिस के ह़क़ में वोटों की गिनती ज़्यादा हो जाए वह जीतता है, चाहे किसी तरह़ भी हो। धांधली भी की जाती है वोट ख़रीदे भी जाते हैं मुख़ालिफ़ के वोटों के बक्स भी ग़ायब किये जाते हैं।

इन सब बातों के अक्सरियत पर कामियाबी की बुनियाद रखना यह मुस्तक़िल वबाल है और दीन पर न खुद चलना है न दूसरों को चलने देना है, ऐसे लोगों की राय का शरीअ़त में कुछ वज़न नहीं। दुनिया में जब से जम्हूरियत (Democracy) का सिलूसिला चला है बहुत से लोग जिन्हें इ़ल्म का गुमान भी है वह भी जम्हूरियत (Democracy) के लिए अपनी कोशिशें कर रहे हैं और कहते हैं कि हमारी

कोशिशों से फ़लाँ मुल्क में जम्हूरियत (Democracy) आ गई यानी उन्होंनें दीन का बहुत बड़ा काम कर दिया। यह लोग जम्हूरियत के दीनी नुक़्सानात जानते हुए उसके लिए कोशिशें करते हैं फिर जम्हूरियत के उसूल पर जो भी कोई बुरे से बुरा इन्सान (नेता) मुन्तख़ब हो जाए उसे मुबारकबाद देते हैं। किसी ह़ल्क़े में सौ वोट हों और इक्कियावन वोट किसी बेदीन को मिल जाएँ (जो उसी जैसे बेदीनों से मिलते हैं) तो फ़ासिक़ फ़ाजिर एलेक्शन जीत लेता है और कामियाब समझा जाता है। हालाँकि मुसलमानों के किसी मुल्क के छोटे बड़े ओहदे के लिए किसी भी फ़ासिक़ फ़ाजिर की राय पर एतिमाद करना दुरुस्त नहीं जो लोग अक्सरियत के फ़ैसले पर ईमान लाते हैं (और अक्सरियत का बेदीन फ़ासिक़ फ़ाजिर होना मालूम है) वह وَلَوْ أَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِيثِ पर बार-बार ध्यान करें।

फिर फ़रमाया فَاتَّقُوا اللّٰهَ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ कि (ऐ अ़क़्ल वालो! अल्लाह से डरो ताकि तुम कामियाब हो जाओ।) **(साहिबे रुहुल् मआनी लिखते हैं भाग 7 पेज नं० 37)**

"ان مدار الاعتبار هو الخيرية و الرداءة لا الكثره و القلة" ج ٢

यानी ख़बीस से बचने में अल्लाह तआ़ला से डरो। यानी ज़्यादा हो और तय्यिब को पसन्द करो यानी कम हो क्योंकि अच्छा या बुरा होना अच्छाई और बुराई अख़्तियार करने पर है कमी या ज़्यादती पर नहीं।

101 يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَسْأَلُوا عَنْ أَشْيَاءَ إِنْ تُبْدَ لَكُمْ تَسُؤْكُمْ ۖ وَإِنْ تَسْأَلُوا عَنْهَا حِينَ يُنَزَّلُ
الْقُرْآنُ تُبْدَ لَكُمْ ۚ عَفَا اللّٰهُ عَنْهَا ۗ وَاللّٰهُ غَفُورٌ حَلِيمٌ ۝

बेज़रुरत सवाल करने की मुमानिअ़त

मुफ़स्सिर इब्ने कसीर ने भाग 2 पेज नं० 105 में बह़वाला इब्ने जरीर ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत नक़्ल की है कि (एक दिन) रसूलुल्लाह (सल्ल०) बाहर तशरीफ़ लाए उस वक़्त गुस्से की ह़ालत में थे, चेहरा सुर्ख़ हो रहा था, आप मेम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा हो गये। एक शख़्स ने सवाल किया कि मेरा ठिकाना कहाँ है? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया दोज़ख़ में है। फिर एक और आदमी खड़ा हुआ उस ने कहा मेरा बाप कौन है? आप ने फ़रमाया तेरा बाप हुज़ैफ़ा है।

यह मन्ज़र देखकर ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) खड़े हुए और (आप का गुस्सा ठंडा करने और आपको राज़ी करने के लिए) यह पढ़ने लगे:-

"رضينا بالله ربًا وبالا سلام دينًا وبمحمد صلى الله عليه نبيًا وبا لقران امامًا" (हम राज़ी हैं अल्लाह के रब होने पर और इस्लाम के दीन मानने पर और मुह़म्मद (सल्ल०) के नबी मानने पर।)

इस के बाद अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! हम लोग जाहिलियत और शिर्क में थे, नये-नये मुसलमान हुए हैं। अल्लाह तआ़ला को मालूम है कि हमारे बाप कौन हैं। यह सुनकर आप (सल्ल०) का गुस्सा ठहर गया और आयत يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَسْأَلُوا عَنْ أَشْيَاءَ إِنْ تُبْدَ لَكُمْ تَسُؤْكُمْ नाज़िल हुई।"

सह़ीह़ बुख़ारी भाग 2, पेज नं० 665 में है, ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) से रिवायत है कि लोग

आप से मज़ाक़ में पूछते, कोई कहता कि मेरा बाप कौन है? और कोई कहता कि मेरी ऊँटनी कहाँ है? उन के बारे में अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई। **(बुख़ारी)**

हज क्या हर साल होता है?

हज़रत अ़ली (रज़ि०) से रिवायत है कि जब यह आयत وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ (लोगों के लिए हज फ़र्ज़ किया गया) उतरी तो एक शख़्स ने पूछा,

"ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०)! क्या हर साल? आप ख़ामोश रहे।" उस ने (दोबारा) पूछा क्या हर साल? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया नहीं। और अगर मैं हाँ कहता तो तुम्हारे ऊपर वाजिब हो जाता और तुम पूरा न कर सकते तो अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई।" **(तिर्मिज़ी)**

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "तुम्हें जिन चीज़ों के बारे में नहीं बताया गया, उन के बारे में मुझ से सवाल न करो, क्योंकि तुम से पहले उम्मतों की हलाकत का सबब उन का कसरते सवाल और अपने अम्बिया से इख़्तिलाफ़ था।" **(मुस्लिम)**

मुफ़स्सिर इब्ने कसीर ने हज़रत अ़ली (रज़ि०) से यह रिवायत भी नक़्ल की है कि जब आयत وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ إِلَيْهِ سَبِيلًا नाज़िल हुई तो कुछ सहाबा (रज़ि०) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या हर साल हज फ़र्ज़ है आप ने ख़ामोशी अख़्तियार फ़रमाई, हाज़िरीन ने दोबारा सवाल किया तो फ़रमाया नहीं! (हर साल फ़र्ज़ नहीं है) और अगर मैं हाँ कह देता तो हर साल हज करना वाजिब हो जाता और अगर हर साल वाजिब हो जाता तो उसकी ताक़त न रखते। इस पर अल्लाह तआ़ला ने आयते शरीफ़ा يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَسْأَلُوا नाज़िल फ़रमाई।

बिला ज़रुरत सवाल–

अल्लाह तआ़ला ने आयते करीमा में मुसलमानों को इस बात की हिदायत फ़रमाई कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) से ऐसी चीज़ों के बारे में सवाल न किया करो जिन की ज़रूरत नहीं है और जिन के ज़ाहिर करने से सवाल करने वाले को नागवारी हो और जवाब अच्छा न लगे। एक आदमी ने पूछ लिया कि मेरा ठिकाना कहाँ है आप ने जवाब दे दिया दोज़ख़ में है, बात मालूम करने की ज़रूरत न थी फिर जो जवाब मिला तो उससे उसे तक्लीफ़ हुई तो हज़रात सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम मसायल व अहकाम तो दर्याफ़्त किया ही करते थे और सवाल करने का हुक्म भी है। जैसा कि सूरः नहल और सूरः अम्बिया में इर्शाद है فَسْئَلُوا أَهْلَ الذِّكْرِ إِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ (सो सवाल करो अहले इल्म से अगर तुम नहीं जानते।) मालूम हुआ कि इस आयत में जिन चीज़ों के बारे में सवाल करने से मना किया गया है वह ऐसी चीज़ें हैं जिन की ज़रूरत न हो।

साहिबे रुहुल् मआ़नी पेज नं० 39, भाग 7 में लिखते हैं–

यानी इस आयत में जिन चीज़ों के बारे में सवाल करने से मना किया गया है उन से वह हुक्म

मुराद हैं जिन की ताक़त नहीं और वह पोशीदा (भेद की) चीज़ें मुराद हैं जिन के ज़ाहिर करने में कुछ लोगों की रुस्वाई हो सकती है यानी अल्लाह तआ़ला के हुक्म को मान लेना और नुक्ता चीनी में न पड़ना उस के छोड़ने की वजह से हुक्म में शिद्दत आ जाती है।

फिर फ़रमाया وَاِنْ تَسْـَٔلُوْا عَنْهَا حِيْنَ يُنَزَّلُ الْقُرْاٰنُ تُبْدَ لَكُمْ

यानी नुज़ूले क़ुर्आन के वक़्त सवाल करोगे तो तुम्हारे सवालों का जवाब वह्य के ज़रिए दे दिया जाएगा) और सवाल का जवाब मिलेगा, तो ज़रूरी नहीं कि सवाल करने वाले की मर्ज़ी के मुताबिक़ हो, लिहाज़ा सवाल न करना ही सही है।

आयते करीमा में उन चीज़ों के बारे में सवाल करने से मना किया गया है जिन के जानने की ज़रूरत नहीं थी। जैसे-अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ैफ़ा (रज़ि०) ने पूछ लिया मेरा बाप कौन है? इस सवाल की ज़रूरत न थी क्योंकि वह ह़स्ब क़ायदा शरअ़िया الولد للفراش (वलदुल्फ़िराश) हुज़ैफ़ा ही से नसब (वंश) साबित था। फिर अगर हुज़ैफ़ा के नुत्फ़े के अ़लावा किसी दूसरे के नुत्फ़े से पैदा हुए होते और आप (सल्ल०) उसको ज़ाहिर फ़रमा देते तो कितनी रुस्वाई होती।

इसी तरह़ वह जो एक सह़ाबी ने दर्याफ़्त कर लिया "क्या हर साल ह़ज फ़र्ज़ है?" इसकी कोई ज़रूरत न थी अगर रसूल (सल्ल०) फ़रमा देते कि हाँ! हर साल फ़र्ज़ है तो सारी उम्मत कितनी तक्लीफ़ में मुब्तिला हो जाती।

फिर फ़रमाया عَفَا اللّٰهُ عَنْهَا इस की एक तफ़्सीर तो यह होगी कि अब तक जो तुम ने मुनासिब सवाल किये हैं यह सवाल करना अल्लाह ने माफ़ कर दिया और कुछ ह़ज़रात ने इसकी यह तफ़्सीर की है कि जो अह़काम तुम्हें नहीं दिये गये वह माफ़ हैं, यानी जो हुक्म नहीं दिये गये उन के बारे में सवाल न करो। हो सकता है कि उन के बारे में हुक्म नाज़िल हो जाए और जब तक किसी चीज़ के बारे में हाँ या नहीं में कोई हुक्म न हो उस के बारे में तुम्हें अख़्तियार है उसे करो या न करो, सवाल करके और कुरेद कर अपने ऊपर कोई चीज़ वाजिब क्यों कराते हो?

एक ह़दीस में है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि बिलाशुब्हा अल्लाह तआ़ला ने कुछ फ़रायज़ मुक़र्रर फ़रमाये हैं तुम उन्हें ज़ाया न करो और जो कुछ हुदूद मुक़र्रर फ़रमाये हैं तुम उन से आगे न बढ़ो और जिन चीज़ों को ह़राम क़रार दिया है तुम उन को न करो और तुम पर मेहरबानी फ़रमाते हुए बहुत सी चीज़ों में ख़ामोशी अख़्तियार फ़रमाई और यह ख़ामोशी भूलने की वजह से नहीं है, लिहाज़ा तुम उन के बारे में सवाल न करो। **(रवाहु दार क़ुत्नी कमा क़ाल अलू नव्वी फ़ी अरबअ़ीना वक़ाल ह़दीसुन ह़सनुन)**

102 قَدْ سَاَلَهَا قَوْمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ثُمَّ اَصْبَحُوْا بِهَا كٰفِرِيْنَ۝

पिछली क़ौमों ने सवालात किये फिर उस के इन्कारी हो गये

फिर फ़रमाया قَدْ سَاَلَهَا قَوْمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ثُمَّ اَصْبَحُوْا بِهَا كٰفِرِيْنَ कि तुम से पहले लोगों ने सवालात

किये थे फिर उन के मुन्किर हो गये यानी जब उन सवालात का जवाब दे दिया गया तो जवाबों पर सन्तुष्ट न हुए और जो हुक्म मिला उस पर अ़मल न किया। यहूद व नसारा की ऐसी ही आ़दत थी कि सवाल पूछते थे, लेकिन अ़मल नहीं करते थे।

हज़रत ईसा (अ़लै०) के हवारियों (मानने वालों) का यह सवाल करना कि आसमान से माइदा (दस्तरख़ाना) नाज़िल हो, यह तो मशहूर ही है। माइदा नाज़िल हुआ तो उन लोगों से कहा गया था कि जो खा सकते हो खा लो। उसे बचा कर न रखना लेकिन वह लोग न माने और गुनाहगार हुए। इसी तरह क़ौमे समूद ने पहाड़ से ऊँटनी निकालने का सवाल किया फिर जब ऊँटनी निकल आई तब भी ईमान न लाए और ऊँटनी को काट डाला।

जो ज़रूरत पेश आ गई हो उस के बारे में सवाल करना दुरुस्त है और बिला ज़रूरत सवाल करने में वक़्त बर्बाद करना भी है और भी, रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया-

(तिर्मिज़ी)

यानी इन्सान के इस्लाम की एक ख़ूबी यह है कि बेकार चीज़ को छोड़ दे। लोगों को देखा जाता है कि फ़रायज़ व वाजिबात तक नहीं जानते नमाज़ तक पूरी याद नहीं, लेकिन इधर-उधर के सवालात करते रहते हैं। इस तरह की बहुत सी अहादीस हैं जिन से मालूम होता है कि सवाल करना मना है कि सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम मस्जिद में जमा होते और नये-नये मसायल के बारे में आपस में मुज़ाकिरह करते थे और यही ताबअ़ीन हज़रत का मअ़मूल रहा और उन के बाद फ़ुक़्हा ने अपना लिया और आज तक हो रहा है।

103 مَا جَعَلَ اللّٰهُ مِنْ بَحِيْرَةٍ وَّلَا سَآئِبَةٍ وَّلَا وَصِيْلَةٍ وَّلَا حَامٍ ۙ وَّلٰكِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ۭ وَاَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ۝

कुछ जानवरों को हराम क़रार देना-

दुनिया में जो गुमराहियाँ फैलीं उन में सब से बड़ी गुमराही शिर्क है और शिर्क की बहुत सी क़िस्में हैं, जिन में से कुछ क़िस्में ऐसी हैं कि उन में जानवरों को शिर्क का ज़रिया बनाया गया। जैसा कि सूरः निसा (118-119) में गुज़रा है कि शैतान ने अल्लाह तआ़ला से कहा था-

لَاَتَّخِذَنَّ مِنْ عِبَادِكَ نَصِيْبًا مَّفْرُوْضًا ۝ وَّلَاُضِلَّنَّهُمْ وَلَاُمَنِّيَنَّهُمْ وَلَاٰمُرَنَّهُمْ فَلَيُبَتِّكُنَّ
اٰذَانَ الْاَنْعَامِ وَلَاٰمُرَنَّهُمْ فَلَيُغَيِّرُنَّ خَلْقَ اللّٰهِ ۭ

अनुवाद- "मैं तेरे बन्दों से एक मुक़र्रर (निश्चित) हिस्सा ले कर रहूँगा और मैं उन्हें गुमराह करके रहूँगा और उनको तमन्नाओं में उलझाऊँगा और उन्हें हुक्म दूँगा, तो वे चौपायों के कान फाड़ेंगे और उन्हें हुक्म दूँगा तो वे अल्लाह की बनावट में तब्दीली (परिवर्तन) करेंगे।

शैतान ने अपनी कोशिशें जारी रखीं और बहुत से लोगों को अपनी तरफ़ लगा लिया। शिर्क व कुफ़्र

में डाल दिया और मुश्रिकों ने बुतों के नाम पर जानवरों के कान भी काटे और कई तरीक़े से जानवरों को शिर्क का ज़रिया बनाया। जिस तरह़ बुतों के नाम गढ़ लेते थे, उसी तरह़ जानवरों के नाम भी मुक़र्रर कर लेते थे।

इस आयत में इस तरह़ के चार नामों का ज़िक्र फ़रमाया गया है। (1) बह़ीरा (2) सायबा (3) वसीला (4) ह़ाम। (**साह़िबे रुहुलू मआ़नी भाग 7, पेज नं० 42**)

बह़ीरा– 'बह़ीरा' की कई तफ़्सीरें लिखी गई हैं उन में से एक क़ौल यह नक़्ल किया है कि अहले जाहिलियत यह करते थे कि जब किसी ऊँटनी से पाँच मर्तबः बच्चे पैदा हो जाते और पाँचवीं बार मुज़क्कर (नर) होता तो उस के कान को चीर देते और फिर उसे ज़ब्ह़ न करते और न उस पर सवारी करते। फिर उसे न पानी से रोका जाता और न किसी जगह चरने से मना किया जाता था।

और ह़ज़रत क़तादा ताबई से नक़्ल किया है कि जब किसी ऊँटनी के पाँच बच्चे हो जाते तो पाँचवे बच्चे को देखते, अगर नर होता तो ज़ब्ह़ कर के खा जाते और मादा होता तो कान चीर कर छोड़ देते वह इधर-उधर चरता फिरता था और उस से सवारी वग़ैरह का कोई काम नहीं लेते थे।

सायबा– 'सायबा' के बारे में मुख़्तलिफ़ बातें लिखी गयी हैं, मुह़म्मद बिन इस्ह़ाक़ से नक़्ल किया गया है कि सायबा वह ऊँटनी होती थी जिस के दस बच्चे पैदा हो जाते तो उसे छोड़ देते थे न उस पर सवारी करते, न उस के बाल काटते और न उस का दूध दुहते थे। हाँ, अगर कोई मेहमान उस का दूध लेता तो इसकी इजाज़त थी।

और एक क़ौल यह नक़्ल किया है कि सायबा वह जानवर था जिसे बुतों के नाम पर छोड़ देते थे और बुतख़ानों में जो पुजारी रहते थे उन के ह़वाले कर देते थे और उस का गोश्त सिर्फ़ मुसाफ़िर और उन्हीं की तरह़ के लोग खाते थे।

यह तफ़्सीर ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास और ह़ज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से है।

वसीला– 'वसीला' के बारे में भी कई बातें नक़्ल की हैं। 'ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा' से नक़्ल किया गया है कि **'वसीला'** उस बकरी को कहते थे जिस के सात बार बच्चे पैदा हो जाएँ। सातवें नम्बर पर अगर बकरी पैदा होती तो उस से औ़रतें ज़रा भी फ़ायदा नहीं उठा सकती थीं। हाँ, अगर वह मर जाती तो मर्द और औ़रत सब उसे खा सकते थे और अगर सातवीं बार के ह़मल से एक बकरा और एक बकरी (नर-मादा) पैदा हो जाते तो कहते थे कि "वसलत अख़ाहा" (कि अपने भाई के साथ जुड़वाँ पैदा हुई थी।) फिर उन दोनों को छोड़ देते थे और उस से सिर्फ़ मर्द फ़ायदा उठाते थे, औ़रतें फ़ायदा नहीं उठाती थीं। अगर यह मादा मर जाती तो औ़रत-मर्द सब फ़ायदा उठाते थे।

'मुह़म्मद बिन इस्ह़ाक़' का क़ौल है कि "वसीला" वह बकरी थी जिस के पेट से लगातार दस मादा पैदा हो जाएँ। फिर जब नर और मादा दोनों एक ही ह़मल से पैदा हो जाते तो कहते थे कि यह अपने भाई के साथ जुड़वाँ पैदा हुई, लिहाज़ा इसे ज़ब्ह़ नहीं करते थे।

ह़ाम- इस की तफ़्सीर में इख़्तिलाफ़ है। यह ह़मा, यह़मा से बना है। जिस के माने बचाने और मह़फ़ूज़ रखने के है। क़ुर्आन के अनुसार जिस सांड के बेटे का बेटा ऊँटनी को ह़ामिला कर देता था, उस ऊँट को ह़ामी कहते थे उस पर सवारी नहीं की जाती थी, आज़ाद छोड़ दिया जाता था और कहते थे कि उसने अपनी कमर की ह़िफ़ाज़त कर ली, उसे पानी से या चारागाह से हटाया नहीं जाता था।

और एक क़ौल यह है कि जिस सांड की पुश्त से इस बार ह़ामिला होकर ऊँटनी बच्चे जन लेती थी उसे ह़ामी कहते थे और कहते थे कि उस ने अपनी कमर की ह़िफ़ाज़त कर ली अब उस पर न बोझ लादा जाएगा और न किसी पानी और घास की जगह से हटाया जाएगा। यह सब ह़राम और ह़लाल अहले जाहिलियत की अपनी ख़ुद गढ़ी हुई थी और उस के हुक्म व मसायल सब उन लोगों ने ख़ुद तराश रखे थे। अल्लाह तआ़ला के दीन और शरीअ़त से इन बातों का कुछ भी तअ़ल्लुक़ न था, लेकिन वह यूँ कहते थे कि अल्लाह तआ़ला के हुक्म से हम यूँ करते हैं, शिर्क भी करते थे और फिर अल्लाह की तरफ़ उसकी निस्बत भी करते थे।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि अल्लाह ने उन जानवरों के बारे में यह हुक्म नाज़िल नहीं फ़रमाए बल्कि उन लोगों ने ख़ुद गढ़े और अल्लाह पाक पर आरोप रख दिया कि अल्लाह तआ़ला ने हमें हुक्म दिया है।

وَلٰكِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ

लेकिन जिन लोगों ने कुफ़्र किया वह अल्लाह पर झूठ बाँधते हैं।

ह़लाल व ह़राम का अख़्तियार सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही को है। किसी मख़्लूक़ के लिए यह जायज़ नहीं कि अपने तरीक़े से किसी चीज़ को ह़लाल या ह़राम क़रार दे दे। अव्वल तो जानवरों को ख़ुद ह़राम क़रार दे देना बहुत बड़ा गुनाह है, फिर इस ह़राम को अल्लाह तआ़ला की तरफ़ करना जबकि उस ने उन के ह़राम होने की कोई बात नहीं फ़रमाई यह गुनाह दर गुनाह है।

शैतान का यह तरीक़ा रहा है कि लोगों से शिर्क करवाता है और फिर अपने मानने वालों को यह समझाता है कि यह सब अल्लाह तआ़ला का बताया हुआ तरीक़ा है।

उ़मर बिन लुह़ई ने 'सवायब' का सिलसिला जारी कर दिया था और अ़रब के लोग इसी की राह को अख़्तियार किये हुए थे और इस तरीक़े को अल्लाह तआ़ला की तरफ़ जोड़ते थे कि अल्लाह तआ़ला ने हमें यह बताया है। आयत में इस को रद्द फ़रमा कर कहा وَاَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ कि उन में से अक्सर लोग समझ नहीं रखते।

104 وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا اِلٰى مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَاِلَى الرَّسُوْلِ قَالُوْا حَسْبُنَا مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوْ كَانَ اٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ شَيْـًٔا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ ۝

जो मुश्रिकीन शिर्किया आ़माल में फंसे थे, उन से जब कहा जाता कि तुम लोग अपने बाप दादों की गढ़ी बातों को छोड़ दो जिन्होंने अल्लाह के बारे में नासमझी से काम लिया था, अल्लाह और उस

के रसूल जो कहते हैं उस पर अ़मल करो तो वह फ़ौरन बोल उठते कि हम तो अपने बाप दादों ही की राह पर चलेंगे। इस का जवाब अल्लाह ने यह दिया कि क्या बाप दादों की पैरवी उन के लिए काफ़ी होगी, चाहे वह बाप दादे के ह़क़ को जानते और पहचानते न हों।

105 يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ عَلَيْكُمْ أَنفُسَكُمْ ۖ لَا يَضُرُّكُم مَّن ضَلَّ إِذَا ٱهْتَدَيْتُمْ ۚ إِلَى ٱللَّهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

बिद्अ़त की ख़तरनाकियों को बयान करने के बाद मुनासिब था कि अहले ईमान को नसीह़त की जाती कि वह क़ुर्आन व सुन्नत की पैरवी में लगे रहें, और उन्हें इत्मिनान भी दिलाया जाता कि आदमी अगर हिदायत की राह पर है और अम्र बिल् मअ़रूफ़ और नहि अनिल् मुन्कर (यानी अच्छाई का हुक्म और बुराई से रोकना) का फ़रीज़ा अदा कर रहा है, तो दूसरों की गुमराही का वबाल उस के सर नहीं आएगा, इसलिए कि क़ियामत के दिन कोई किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा और हर शख़्स को उसके अपने किये का बदला मिलेगा, दूसरों का गुनाह उस के सर नहीं डाला जाएगा। इस आयते करीमा में इसी को बयान किया गया है लेकिन इस का यह हरगिज़ मतलब नहीं है कि मुसलमान पर अम्र बिल् मअ़रूफ़ और नहि अनिल् मुन्कर वाजिब नहीं है।

अस्ह़ाबे सुनन ने रिवायत की है कि ह़ज़रत अबू बक्र (रज़ि०) ने ह़म्द व सना के बाद कहाः ऐ लोगो! तुम यह आयत पढ़ते हो और इस का ग़लत मतलब समझते हो, मैंने तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) को कहते सुना है कि जब लोग बुराई को देखेंगे और उसे नहीं बदलेंगे, तो क़रीब है कि अल्लाह का अ़ज़ाब उन सब को आ दबोचेगा।

ह़ज़रत अबू सअ़ल्बा की एक और रिवायत से (जिसे तिर्मिज़ी ने रिवायत की है) साबित होता है कि इस आयत से मुराद वह मुसलमान हैं जो आख़िरी ज़माने में आएँगे, कि जब हर शख़्स अपनी इच्छा का पुजारी होगा, दुनिया को दीन पर तर्जीह़ (प्राथमिकता) देगा और हर आदमी अपनी राय पर ख़ुश होगा। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उस ज़माने के मुसलमानों को नसीह़त की है कि जब ऐसा ज़माना आ जाए तो आ़म लोगों को छोड़कर अपनी फ़िक्र में लग जाओ। इस आयत के शुरु में है कि अबू सअ़ल्बा ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से इस ह़दीस के बारे में पूछा तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि हाँ, भलाई का हुक्म दो और बुराई से रोको, यहाँ तक कि वह ज़माना आ जाए जिस का ज़िक्र ऊपर गुज़र चुका।

आयत नं० 106 से 115 तक

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ حِيْنَ الْوَصِيَّةِ اثْنٰنِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ اَوْ اٰخَرٰنِ مِنْ غَيْرِكُمْ اِنْ اَنْتُمْ ضَرَبْتُمْ
فِي الْاَرْضِ فَاَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةُ الْمَوْتِ ؕ تَحْبِسُوْنَهُمَا مِنْۢ بَعْدِ الصَّلٰوةِ فَيُقْسِمٰنِ بِاللّٰهِ اِنِ ارْتَبْتُمْ لَا نَشْتَرِيْ بِهٖ ثَمَنًا وَّلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۙ وَلَا
نَكْتُمُ شَهَادَةَ ۙ اللّٰهِ اِنَّاۤ اِذًا لَّمِنَ الْاٰثِمِيْنَ ۝ فَاِنْ عُثِرَ عَلٰۤى اَنَّهُمَا اسْتَحَقَّاۤ اِثْمًا فَاٰخَرٰنِ يَقُوْمٰنِ مَقَامَهُمَا مِنَ الَّذِيْنَ اسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْاَوْلَيٰنِ
فَيُقْسِمٰنِ بِاللّٰهِ لَشَهَادَتُنَاۤ اَحَقُّ مِنْ شَهَادَتِهِمَا وَمَا اعْتَدَيْنَاۤ ۖ اِنَّاۤ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ ذٰلِكَ اَدْنٰۤى اَنْ يَّاْتُوْا بِالشَّهَادَةِ عَلٰى وَجْهِهَاۤ اَوْ يَخَافُوْۤا
اَنْ تُرَدَّ اَيْمَانٌۢ بَعْدَ اَيْمَانِهِمْ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاسْمَعُوْا ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝ يَوْمَ يَجْمَعُ اللّٰهُ الرُّسُلَ فَيَقُوْلُ مَاذَاۤ
اُجِبْتُمْ ؕ قَالُوْا لَا عِلْمَ لَنَا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ۝ اِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ اذْكُرْ نِعْمَتِيْ عَلَيْكَ وَعَلٰى وَالِدَتِكَ ۘ اِذْ اَيَّدْتُّكَ
بِرُوْحِ الْقُدُسِ ۫ تُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا ۚ وَاِذْ عَلَّمْتُكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ۚ وَاِذْ تَخْلُقُ مِنَ الطِّيْنِ كَهَيْـَٔةِ
الطَّيْرِ بِاِذْنِيْ فَتَنْفُخُ فِيْهَا فَتَكُوْنُ طَيْرًاۢ بِاِذْنِيْ وَتُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ بِاِذْنِيْ ۚ وَاِذْ تُخْرِجُ الْمَوْتٰى بِاِذْنِيْ ۚ وَاِذْ كَفَفْتُ بَنِيْۤ
اِسْرَآءِيْلَ عَنْكَ اِذْ جِئْتَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ وَاِذْ اَوْحَيْتُ اِلَى الْحَوَارِيّٖنَ اَنْ اٰمِنُوْا
بِيْ وَبِرَسُوْلِيْ ۚ قَالُوْۤا اٰمَنَّا وَاشْهَدْ بِاَنَّنَا مُسْلِمُوْنَ ۝ اِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيْعُ رَبُّكَ اَنْ يُّنَزِّلَ عَلَيْنَا مَآئِدَةً
مِّنَ السَّمَآءِ ؕ قَالَ اتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ قَالُوْا نُرِيْدُ اَنْ نَّاْكُلَ مِنْهَا وَتَطْمَئِنَّ قُلُوْبُنَا وَنَعْلَمَ اَنْ قَدْ صَدَقْتَنَا وَنَكُوْنَ عَلَيْهَا
مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ۝ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَاۤ اَنْزِلْ عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ تَكُوْنُ لَنَا عِيْدًا لِّاَوَّلِنَا وَاٰخِرِنَا وَاٰيَةً
مِّنْكَ ۚ وَارْزُقْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۝ قَالَ اللّٰهُ اِنِّيْ مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ ۚ فَمَنْ يَّكْفُرْ بَعْدُ مِنْكُمْ فَاِنِّيْۤ اُعَذِّبُهٗ عَذَابًا لَّاۤ اُعَذِّبُهٗۤ
اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ۝

अनुवाद-

(106) ऐ ईमान वालो! जब तुममें से किसी की मौत का वक़्त आ जाए तो वसीयत के वक़्त इन्साफ़ करने वाले दो व्यक्ति गवाह हों, या अगर तुम सफ़र कर रहे हो और मौत आ जाए तो किसी दूसरे (मज़हब) में के (दो व्यक्तियों को) गवाह (कर लो,) अगर तुमको उन गवाहों के बारे में कुछ शक हो तो नमाज़ के बाद उन दोनों को रोक लो, फिर वे दोनों अल्लाह की क़समें खाएँ कि ''हम इसके बदले में कोई क़ीमत क़ुबूल करने वाले नहीं; चाहे कोई नातेदार ही क्यों न हो? और न हम अल्लाह की गवाही छिपाएंगे, अगर ऐसा करेंगे तो गुनहगार होंगे;'' (107) फिर अगर मालूम हो जाए कि इन दोनों ने ह़क़ मार कर अपने को गुनाह में डाल लिया है, तो उनकी जगह दूसरे दो व्यक्ति उन लोगों में से खड़े हो जाएँ, जिनका ह़क़ पिछले दोनों ने मारना चाहा था, फिर वे दोनों अल्लाह की क़सम खाएँ कि 'हम दोनों की गवाही ज़्यादा सच्ची है और हमने कोई ज़्यादती नहीं की, हमने ऐसा किया हो तो हम ज़ालिमों में से होंगे;'' (108) इसमें इसकी ज़्यादा उम्मीद है कि यह लोग सह़ी-सह़ी गवाही दें, या इस बात से डरें कि क़समें उनकी क़समों के बाद रद्द कर दी जाएँगी, और अल्लाह से डरो और (सुनो!) अल्लाह नाफ़रमान लोगों को हिदायत नहीं देता। (109) जिस दिन अल्लाह रसूलों को इकट्ठा करेगा, फिर कहेगा, ''आप लोगों को क्या जवाब मिला था?'' वे कहेंगे, ''हमें कुछ नहीं मालूम, बेशक 'तू' ही छिपी बातों को जानता है।'' (110) जब अल्लाह कहेगा, ''ऐ मरयम के बेटे, ईसा! 'मेरी'

उन नेअ़मतों को याद कीजिए जो 'मैने' आप पर और आप की माँ पर की थीं, जब 'मैंने' रूहुल-क़ुदुस (जिब्राईल) से आपकी मदद की; आप झूले में भी लोगों से बात करते थे और बड़ी उम्र को पहुँच कर भी; और (याद करो)! जबकि मैंने' आपको किताब और हिक्मत और तौरात और इन्जील की तालीम दी थी; और जब आप मेरे हुक्म से मिट्टी का परिन्दा बनाकर उसमें फूँक मार देते थे; तो वह 'मेरे' हुक्म से उड़ने लगता था; और आप मेरे हुक्म से पैदाइशी अन्धे और सफ़ेद दाग़ वालों को अच्छा कर देते थे, और जबकि आप 'मेरे' हुक्म से मुर्दों को ज़िन्दा निकाल कर खड़ा कर देते थे; और जबकि 'मैंने' आप में से बनी-इस्राईल को रोके रखा, जबकि आप उनके पास खुली निशानियाँ लेकर पहुँचे थे; तो उनमें से जो इन्कार करने वाले थे उन्होंने कहा, ''यह तो बस खुला हुआ जादू है। (111) और जब 'मैंने' 'ह़वारियों' (साथियों) की ओर हुक्म भेजा कि मुझ पर और 'मेरे' रसूल पर ईमान लाओ,'' वे कहने लगे, ''हम ईमान लाए और तुम गवाह रहना कि हम फ़रमाँबरदार (मुस्लिम) हैं। (112) (याद करो) जब ह़वारियों ने कहा, ''मरयम के बेटे ईसा! क्या तुम्हारा रब आसमान से खाने से भरा दस्तरख़्वान (थाल) उतार सकता है? उन्होंने कहा, "अल्लाह से डरो, अगर तुम ईमान वाले हो;" (113) वे बोले, ''हम चाहते हैं कि उसमें से खाएं और हमारे दिल को इत्मिनान (सन्तुष्टि) हो, और हम जान लें कि तुमने हमसे सच कहा है और हम उस पर गवाह रहें।'' (114) मरयम के बेटे ईसा ने कहा, ''ऐ हमारे रब! हम पर आसमान से खाने से भरा दस्तरख़्वान उतार, जो हमारे लिए और हमारे अगलों और हमारे पिछलों के लिए खुशी का ज़रिया बने और तेरी ओर से एक निशानी हो, और हमें रिज़्क़ (आहार) दे, तू सबसे अच्छा रिज़्क़ देने वाला है,'' (115) अल्लाह ने कहा, 'मैं' तुम पर ज़रूर उसको उतारुँगा, फिर इसके बाद तुममें से जो कोई इन्कार करेगा तो 'मैं' ज़रूर उसे ऐसी सज़ा दूँगा जैसी कि पूरी दुनियाँ में किसी को न दूँगा।''

आयत नं० 106 से 115 तक की व्याख्या

106-108

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ حِيْنَ الْوَصِيَّةِ اثْنٰنِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ اَوْ اٰخَرٰنِ مِنْ غَيْرِكُمْ
اِنْ اَنْتُمْ ضَرَبْتُمْ فِي الْاَرْضِ فَاَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةُ الْمَوْتِ ۭ تَحْبِسُوْنَهُمَا مِنْۢ بَعْدِ الصَّلٰوةِ فَيُقْسِمٰنِ بِاللّٰهِ اِنِ ارْتَبْتُمْ لَا نَشْتَرِيْ
بِهٖ ثَمَنًا وَّلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۙ وَلَا نَكْتُمُ شَهَادَةَ اللّٰهِ اِنَّآ اِذًا لَّمِنَ الْاٰثِمِيْنَ ۝ فَاِنْ عُثِرَ عَلٰٓي اَنَّهُمَا اسْتَحَقَّآ اِثْمًا فَاٰخَرٰنِ يَقُوْمٰنِ
مَقَامَهُمَا مِنَ الَّذِيْنَ اسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْاَوْلَيٰنِ فَيُقْسِمٰنِ بِاللّٰهِ لَشَهَادَتُنَآ اَحَقُّ مِنْ شَهَادَتِهِمَا وَمَا اعْتَدَيْنَآ ڮ اِنَّآ اِذًا لَّمِنَ
الظّٰلِمِيْنَ ۝ ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَنْ يَّاْتُوْا بِالشَّهَادَةِ عَلٰي وَجْهِهَآ اَوْ يَخَافُوْٓا اَنْ تُرَدَّ اَيْمَانٌۢ بَعْدَ اَيْمَانِهِمْ ۭ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاسْمَعُوْا ۭ
وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝

इस आयते करीमा में वसीयत का एक अहम हुक्म बयान किया गया है। औ़फ़ी ने इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत की है कि यह हुक्म मन्सूख़ (निरस्त) है, लेकिन अक्सर की राय है कि यह आयत हुक्म वाली आयतों में से है। आयत का मतलब यह है कि ऐ मुसलमानो! जब तुम सफ़र की

हालत में हो और तुम्हारी वफ़ात (मौत) के आसार मालूम होने लगें और तुम्हारे पास माल हो, तो अल्लाह का हुक्म यह है कि मुसलमानों या ग़ैर मुस्लिमों में से दो सच्चे इन्साफ़ वाले शख़्स को उस पर गवाह बना दो। अगर उन दोनों गवाहों के बारे में मय्यित के वारिसों को शुब्हा हो जाए कि शायद उन्होंने ख़यानत की है और मय्यित का कुछ माल छुपा लिया है, तो उन्हें अस्र की नमाज़ के बाद हलफ़ (क़सम) उठाने के लिए रोक लिया जाए, फिर वह अल्लाह की क़सम खाएँ और कहें कि हम माल की वजह से अल्लाह की झूठी क़सम नहीं खाएँगे, चाहे जिस के लिए हम क़सम खा रहे हों वह रिश्तेदार ही क्यों न हो और जिस गवाही का अल्लाह ने हुक्म दिया है उसे छुपा कर हम गुनाहगार नहीं होंगे और अगर उन दोनों के क़सम खा लेने के बाद पता चल जाए कि उन्होंने ख़यानत की है तो मय्यित के रिश्तेदारों में से दो क़रीबी रिश्तेदार आगे बढ़ेंगे और हलफ़ उठाएँगे कि हम दोनों की गवाही इन से ज़्यादा क़ाबिले क़ुबूल है कि इन्होंने ख़यानत की है और झूठ से काम लिया है और यह कि हम ने जो उन पर ख़यानत की तोहमत(ओरोप) धरी है तो उस में हम ने उन पर ज़्यादती नहीं की है। अगर हम ने ज़्यादती की हो तो ज़ालिमों में से हों और अल्लाह की नाराज़गी और उसके अ़ज़ाब के हक़्दार हों।

'हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०)' फ़रमाते हैं 'बनू सहम' का एक आदमी 'तमीमदारी' अदी के साथ सफ़र पर निकला और यह 'सहमी' ऐसी जगह मर गया जहाँ कोई मुसलमान न था। 'तमीमदारी' और 'अ़दी' उसका तर्का (छोड़ा हुआ माल) लेकर आये तो सहमी के वरसा ने उस में एक प्याला ग़ायब पाया जो कि चाँदी का था और उस पर सोने का पानी चढ़ा था।

"रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने 'तमीम' और 'अ़दी' से क़सम खाने को कहा और वह क़सम खा गये (कि प्याला उन के पास नहीं है।) फिर वह प्याला मक्का के बाज़ार में मिल गया और उन्होंने कहा कि हम ने तमीमदारी और अ़दी से ख़रीदा हैं। अब सहमी के वरसा में के दो शख़्स खड़े हुए और अल्लाह की क़सम खाकर गवाही दी कि यह प्याला हमारे ही आदमी का है और यह कि हमारी गवाही उन दोनों से सच्ची है। यह आयत इसी सिलसिले में नाज़िल हुई तो आप (सल्ल०) ने यह प्याला सहमी के वरसा को दिलवा दिया।" **(बुख़ारी)**

इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने इस तरह हलफ़ (क़सम) लेने की हक़ीक़त व मस्लहत बयान की कि इस का फ़ायदा यह होगा कि गवाहान आख़िरत के अ़ज़ाब से डरते हुए हक़ीक़त में बिना किसी तब्दीली लाए हुए गवाही देंगे और ख़यानत का शुब्हा होने की सूरत में दो क़रीबी रिश्तेदारों से हलफ़ लेने की हिक्मत यह है कि सफ़र की हालत के गवाहान डरेंगे कि अगर हम ने झूठ बयानी की तो हमारी क़सम रद्द कर दी जाएगी और क़रीबी रिश्तेदार क़सम खाएँगे और हमारा झूठ लोगों के सामने ज़ाहिर हो जाएगा।

इन आयात से मालूम हुआ कि हर हालत में गवाही ठीक-ठीक और सच्ची देनी चाहिए। नीचे लिखी हदीस से इस की अहमियत और साफ़ हो जाती है।

सय्यदना अबू बक्र (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "क्या मैं तुम्हें बड़े-बड़े गुनाहों की ख़बर न दूँ। सहाबा (रज़ि०) ने कहा या रसूलल्लाह (सल्ल०)! ज़रूर बतलाइये। आप (सल्ल०) ने

फ़रमाया, अल्लाह के साथ शिर्क करना और वालिदैन को सताना। उस वक़्त आप (सल्ल०) तकिया लगाये हुए थे, फिर सीधे बैठ गये और फ़रमाया ख़बरदार झूठा क़ौल और झूठी शहादत। आप यह कलिमात दोहराते ही रहे, मैंने समझा कि आप चुप ही न होंगे।" **(बुख़ारी)**

"हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि०) से रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "किसी मुसलमान के लिए जो किसी चीज़ के बारे में वसीयत करना चाहता है यह जायज़ नहीं है कि रातें ऐसी गुज़र जाएँ कि उस की वसीयत लिखी हुई तैयार न हो।" **(बुख़ारी)**

ग़ैर मुस्लिमों को सिर्फ़ उसी सूरत में गवाह बनाया जा सकता है जब कि मुसलमान गवाह मौजूद न हों। अगर किसी सुबूत की बिना पर उन गवाहों के बारे में शक हो जाए तो उन से बेहतर गवाहों की शहादत की बिना पर पहले गवाहों की गवाही रद्द हो जाएगी।

109 يَوْمَ يَجْمَعُ اللّٰهُ الرُّسُلَ فَيَقُوْلُ مَاذَآ اُجِبْتُمْ ۭ قَالُوْا لَا عِلْمَ لَنَا ۭ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ۝

इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने अपने मोमिन बन्दों को क़ियामत की भयानकता से डराया है उस दिन और तो और अम्बिया-ए-किराम का ह़ाल यह होगा कि जब अल्लाह तआ़ला उन से पूछेगा कि उन के क़ौमों की तरफ़ से उन्हें क्या जवाब मिला, तो घबराहट का यह आ़लम होगा कि उन का जवाब जानते हुए भी इस का इ़ल्म अल्लाह के ह़वाले कर देंगे और जब अम्बिया व रसूलों का यह ह़ाल होगा, तो दूसरों का क्या ह़ाल होगा और दूसरे कब जुर्रत करेंगे कि वह अल्लाह से बात करें।

उ़लमा ने लिखा है कि مَاذَآ اُجِبْتُمْ यानी तुम्हें क्या जवाब दिया गया।" अल्लाह ने यह नहीं कहा कि "उन क़ौमों ने तुम्हें क्या जवाब दिया" इस में इस तरफ़ इशारा है कि उस दिन अल्लाह तआ़ला बहुत ग़ज़बनाक होगा।

सह़ी बुख़ारी की रिवायत है कि मेरा रब उस दिन इतना ग़ज़बनाक होगा कि न इस से पहले कभी इतना हुआ था और न इसके बाद। **(बुख़ारी)**

110 اِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ اذْكُرْ نِعْمَتِيْ عَلَيْكَ وَعَلٰى وَالِدَتِكَ ۘ اِذْ اَيَّدْتُّكَ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ۣ تُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا ۚ وَاِذْ عَلَّمْتُكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ۚ وَاِذْ تَخْلُقُ مِنَ الطِّيْنِ كَهَيْــــَٔـةِ الطَّيْرِ بِاِذْنِيْ فَتَنْفُخُ فِيْهَا فَتَكُوْنُ طَيْرًۢا بِاِذْنِيْ وَتُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ بِاِذْنِيْ ۚ وَاِذْ تُخْرِجُ الْمَوْتٰى بِاِذْنِيْ ۚ وَاِذْ كَفَفْتُ بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ عَنْكَ اِذْ جِئْتَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝

क़ियामत के मैदान में जब तमाम इन्सान अल्लाह के आगे सर झुकाए होंगे उस वक़्त अल्लाह तआ़ला ईसा बिन मरयम से ख़ासतौर से बात करेगा, इसलिए कि दुनिया की दो बड़ी उम्मतें उन के सिलसिले में गुमराही में मुब्तिला हुईं, यहूदियों ने कहा कि ईसा जादूगर और अल्लाह के बेटे मानते थे और नसरानियों ने दावा किया कि वह अल्लाह और अल्लाह के बेटे मानते थे। अल्लाह तआ़ला उन से मुख़ातब होगा और ह़श्र के मैदान में लोग सुनेंगे, ताकि मुजरिम यहूद व नसारा की ह़स्रत व नदामत में इज़ाफ़ा हो और उन्हें अपने घमण्ड व सरकशी और ज़लालत व गुमराही का यक़ीन हो जाए।

हज़रत ईसा (अ़लै०) की माँ मरयम बिन्त इमरान पर अल्लाह का एहसान यह था कि उस ने उन्हें पाकीज़ा बनाया और सारे जहान की औ़रतों में से उन्हें चुन लिया।

हाफ़िज़ इब्ने कसीर (रह०) लिखते हैं, आयत का मतलब यह है कि मैंने तुम्हें बचपन और जवानी दोनों हालतों में अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाला नबी बनाया, मैंने तुम्हें बचपन में जब माँ की गोद में थे बोलना सिखाया, तो तुम ने अपनी माँ की हर ऐ़ब से बरी होने की गवाही दी और मेरे लिए अ़िबादत किया और लोगों को ख़बर दी कि मैंने तुम्हें रसूल बनाया है और लोगों को मेरी अ़िबादत की दअ़वत दी।

"كتاب" से मुराद ख़त व किताबत और ज़ाहिरी इल्म है जो लिखा जाता है और حكمة से मुराद अच्छी समझ और वह ख़ास इल्म है जो लिखा नहीं जाता।

अल्लाह तआ़ला ने हज़रत ईसा (अ़लै०) को चार मोअ़जिज़े दिये थे जिन का ज़िक्र यहाँ आया है और हर मोअ़जिज़े के ज़िक्र के साथ بِاِذْنِىْ का कलिमा आया है, यानी हज़रत ईसा (अ़लै०) के हाथ पर इस मोअ़जिज़े का ज़ुहूर अल्लाह के हुक्म और उस की क़ुद्रत से होता था, इस में हज़रत ईसा (अ़लै०) की ज़ाती क़ुद्रत का कोई दख़्ल नहीं था और यह दलील है इस बात की कि अम्बिया और ग़ैर अम्बिया किसी के अख़्तियार में कुछ नहीं है।

यहूदियों ने मोअ़जिज़ात देखने के बावजूद कहा कि यह तो खुला जादू है। हज़रत ईसा (अ़लै०) को क़त्ल करना चाहा और सूली पर चढ़ाना चाहा, तो अल्लाह ने उन की साज़िश को नाकाम बना दिया और उन्हें अपनी तरफ़ उठा लिया और हर क़िस्म की नजासत से पाक कर दिया।

111 وَاِذْ اَوْحَيْتُ اِلَى الْحَوَارِيّٖنَ اَنْ اٰمِنُوْا بِىْ وَبِرَسُوْلِىْ ۚ قَالُوْٓا اٰمَنَّا وَاشْهَدْ بِاَنَّنَا مُسْلِمُوْنَ ﴿۱۱۱﴾

यहाँ वह्य से मुराद इल्हाम है और इस में भी अल्लाह तआ़ला ने हज़रत ईसा (अ़लै०) पर अपने एक एहसान का ज़िक्र किया है कि अल्लाह ने उन्हें अन्सार व मदद्गार अ़ता किया था और लोगों में उन्हें महबूब व मक़्बूल बनाया था।

112 اِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيْعُ رَبُّكَ اَنْ يُّنَزِّلَ عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ ۗ قَالَ اتَّقُوا اللّٰهَ
اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۱۱۲﴾

आइन्दा आने वाली चार आयतों में "माइदा" का क़िस्सा बयान किया गया है और इसी माइदा की तरफ़ निस्बत करते हुए इस सूरत का नाम "माइदा" है। नुज़ूले माइदा भी अल्लाह तआ़ला का हज़रत ईसा (अ़लै०) पर एक एहसान था, कि यह चीज़ उन की नुबूव्वत व सदाक़त पर एक क़तई दलील थी। कुछ उ़लमा ने लिखा है कि यह वाक़िआ़ इन्जील में ज़िक्र नहीं है और नसारा ने मुसलमानों के ज़रिये इसे जाना था।

वाक़िआ़ यह था कि हज़रत ईसा (अ़लै०) के हवारियों (मानने वालों) ने अपने इब्तिदा-ए-इस्लाम के ज़माने में उन से मुताल्बा किया कि अल्लाह उन के लिए आसमान से मुख़्तलिफ़ क़िस्मों के खानों का एक दस्तरख़्वान उतारे, ताकि वह उसे खाएँ और उन के दिल को और इत्मिनान और यक़ीन हासिल हो।

हवारियों ने हज़रत ईसा (अलै०) को उन के नाम से पुकारा और उन की निस्बत उन की माँ की तरफ़ की, ताकि किसी को यह शुब्हा न हो कि वह लोग हज़रत ईसा के मुख़ालिफ़ थे। अल्लाह तआला ने हवारियों का यह क़ौल नक़्ल किया है कि-

"हम ईमान लाए और आप (ईसा) गवाह रहें कि हम लोग मुसलमान हैं।"

"अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा (अलै०) के साथ उन का यह कलाम भी नक़्ल किया कि-

"क्या तुम्हारा रब हमारे लिए आसमान से दस्तरख़्वान उतार सकता है?" उलमा ने उन की इन बातों को उन के इब्तिदा-ए-इस्लाम के ज़माने के लिए लिया है, जब इस्लाम ने पूरे तौर पर उन के दिलों में घर नहीं किया था और अल्लाह तआला के मक़ाम को अभी पूरे तौर पर नहीं समझा था और यह भी मुम्किन है कि बाज़ उन हवारियों ने यह बात कही हो जिन का इल्म व समझ आम लोगों जैसा रहा हो और इत्मिनान व यक़ीन हासिल करने के लिए यह बात कही हो।

113-115

قَالُوْا نُرِيْدُ اَنْ نَّاْكُلَ مِنْهَا وَتَطْمَىِٕنَّ قُلُوْبُنَا وَنَعْلَمَ اَنْ قَدْ صَدَقْتَنَا وَنَكُوْنَ عَلَيْهَا مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ۞ قَالَ
عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَآ اَنْزِلْ عَلَيْنَا مَآىِٕدَةً مِّنَ السَّمَآءِ تَكُوْنُ لَنَا عِيْدًا لِّاَوَّلِنَا وَاٰخِرِنَا وَاٰيَةً مِّنْكَ ۚ
وَارْزُقْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۞ قَالَ اللّٰهُ اِنِّيْ مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ ۚ فَمَنْ يَّكْفُرْ بَعْدُ مِنْكُمْ فَاِنِّيْٓ اُعَذِّبُهٗ عَذَابًا لَّآ
اُعَذِّبُهٗٓ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ۞

हवारियों ने माइदा के माँग की वजह यह बताई है कि हम इस में से खाएँ और हमारे दिलों को मज़ीद इत्मिनान व यक़ीन हासिल हो और हमें मालूम हो जाए कि आप नुबूव्वत में सच्चे हैं कि अल्लाह हमें जन्नत में नेअमतें देगा और बनी इस्राईल के जो लोग मौजूद नहीं हैं, हम उन के सामने माइदा के नाज़िल होने की गवाही दें ताकि उन के ईमान में भी इज़ाफ़ा (बढ़ौतरी) हो और उन में से जो लोग अब तक ईमान नहीं लाए हैं वह ईमान ले आएँ।

आस्मानी दस्तरख़्वान-

जब हज़रत ईसा (अलै०) को मालूम हो गया कि उन का मक़्सद सही है और अपने सवाल पर जमे हैं, तो उन्होंने भी अल्लाह से इस के लिए दुआ करने का मज़बूत इरादा कर लिया और दिल से दुआ की कि ऐ अल्लाह! हमारे लिए आसमान से एक दस्तरख़्वान उतार दे जिस में उस जन्नत की नेअमतें हों जिस का तूने हम से वादा किया है और वह दिन हमारे लिए और हमारे बाद में आने वाली नस्लों के लिए ईद का दिन हो और तेरी क़ुद्रत, सच्चा वादा और तेरी तरफ़ से मेरी नुबूव्वत की तस्दीक़ की निशानी हो। ऐ अल्लाह! हम ने तुझ से सवाल किया है उसे पूरा कर दे।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि मैं तुम्हारी दुआ क़ुबूल करते हुए उसे तुम्हारे लिए उतारूँगा, लेकिन इस के बाद अगर उन में से किसी ने कुफ़्र (इन्कार) किया तो उसे मैं तमाम जहान वालों से बढ़कर अज़ाब दूँगा।

अहले इल्म का इख़्तिलाफ़ रहा है कि आसमान से "माइदा" नाज़िल हुआ था या नहीं। हसन बसरी और 'मुजाहिद' की राय है कि माइदा नाज़िल नहीं हुआ था। हसन कहा करते थे कि जब अल्लाह ने فَمَنْ يَّكْفُرْ بَعْدُ مِنْكُمْ कहा, तो उन लोगों ने कहा कि फिर हमें इस की ज़रूरत नहीं है, माइदा नाज़िल नहीं हुआ। 'मुजाहिद' कहते हैं कि वह एक मिसाल थी जिसे अल्लाह ने इसलिए बयान किया था ताकि अम्बिया-ए-किराम से उन की क़ौमें निशानियों का मुताल्बा न करें।

हाफ़िज़ इब्ने कसीर (रह०) कहते हैं कि इस राय को मज़बूती इस से भी मिलती है कि नसारा उसे नहीं जानते और उन की किताबों में इस का ज़िक्र नहीं आता। अगर ऐसा हुआ होता तो उन लोगों ने उसे बयान किया होता और उन की किताबों में मौजूद होता। लेकिन जम्हूर (अक्सर) उ़लमा की राय यह है कि "माइदा" नाज़िल हुआ था।

इसलिए कि अल्लाह तआला ने إِنِّي مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ कहा है, अल्लाह का वादा ज़रूर पूरा होता है।

अ़म्मार बिन यासिर (रज़ि०) से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "आसमान से माइदा नाज़िल हुआ जिस में रोटी और गोश्त था और उन्हें हुक्म दिया गया कि न वह ख़यानत करें और न कल के लिए जमा करें, लेकिन उन्होंने ख़यानत की और जमा करके कल के लिए रख छोड़ा, तो बन्दरों और सुअरों की शक्ल में बदल दिये गये।" **(तिर्मिज़ी)**

इब्ने अबी हातिम ने इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से एक रिवायत नक़्ल की है कि जब हज़रत ईसा बिन मरयम ने दुआ़ की तो फ़रिश्ते आसमान से माइदा लेकर नाज़िल हुए।

इब्ने जरीर ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बिन आ़स रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत की है कि क़ियामत के दिन सब से सख़्त अ़ज़ाब तीन क़िस्म के लोगों को होगा उसमें मुनाफ़िक़ीन, अस्हाबे माइदा और आले फ़िरऔन होंगे। हाफ़िज़ इब्ने कसीर ने इसी राय को तर्जीह दी है कि आसमान से माइदा नाज़िल हुआ था।

आयत नं० 116 से 120 तक

وَإِذْ قَالَ اللَّهُ يَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ أَأَنتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُونِي وَأُمِّيَ إِلَٰهَيْنِ مِن دُونِ اللَّهِ ۖ قَالَ سُبْحَانَكَ مَا يَكُونُ لِي أَنْ أَقُولَ مَا
لَيْسَ لِي بِحَقٍّ ۚ إِن كُنتُ قُلْتُهُ فَقَدْ عَلِمْتَهُ ۚ تَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِي وَلَا أَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِكَ ۚ إِنَّكَ أَنتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ۝ مَا قُلْتُ لَهُمْ إِلَّا مَا
أَمَرْتَنِي بِهِ أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ ۚ وَكُنتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَّا دُمْتُ فِيهِمْ ۖ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنتَ أَنتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ ۚ وَأَنتَ عَلَىٰ كُلِّ
شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝ إِن تُعَذِّبْهُمْ فَإِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۖ وَإِن تَغْفِرْ لَهُمْ فَإِنَّكَ أَنتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ قَالَ اللَّهُ هَٰذَا يَوْمُ يَنفَعُ الصَّادِقِينَ صِدْقُهُمْ ۚ
لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ رَّضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ لِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَمَا فِيهِنَّ ۚ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

अनुवाद-

(116) और जब अल्लाह कहेगा, ''ऐ मरयम के बेटे ईसा! क्या आपने लोगों से कहा था कि 'अल्लाह के अ़लावा दो और मअ़बूद, (उपास्य) मुझे और मेरी माँ को बना लो?'' वह कहेंगे, 'तू' पाक (महिमावान) है! मुझ से यह नहीं हो सकता कि मैं वह बात कहूँ, जिसका मुझे कोई ह़क़ नहीं; अगर मैंने ऐसा कहा होता तो तुझे मालूम ही होता, 'तू' जानता है, जो कुछ मेरे मन में है, और मैं नहीं जानता जो कुछ तेरे मन में है, बेशक 'तू' छिपी बातों का खूब जानने वाला है; (117) मैंने उनसे इसके सिवा कुछ नहीं कहा, जिसका तूने मुझे हुक्म दिया था, वह यह कि अल्लाह की अ़िबादत करें, जो मेरा भी रब है और तुम्हारा भी; और जब तक मैं उनमें रहा उनकी ख़बर रखता था, फिर जब 'तूने' मुझे उठा लिया, तो 'तू' ही उनका निगहबान (निरीक्षक) था, और 'तू' हर चीज़ पर गवाह (साक्षी) है। (118) अगर 'तू' उनको अ़ज़ाब दे, तो वे तेरे बन्दे हैं, और अगर 'तू' उन्हें माफ़ कर दे, तो बेशक 'तू' ग़ालिब (प्रभुत्वशाली), ह़िकमत वाला है।'' (119) (उस दिन) अल्लाह कहेगा, 'आज वह दिन है कि सच्चों को उनकी सच्चाई का फ़ायदा मिलेगा, उनके लिए ऐसे बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, उनमें वे हमेशा रहेंगे, अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वे उससे राज़ी हुए; यही सबसे बड़ी कामियाबी है।'' (120) आसमानों और ज़मीन में और जो कुछ उनके बीच है, सब पर अल्लाह ही की बादशाही है और 'वह' हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।

आयत नं० 116 से 120 तक की व्याख्या

116 وَإِذْ قَالَ اللَّهُ يَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ أَأَنتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُونِي وَأُمِّيَ إِلَٰهَيْنِ مِن دُونِ اللَّهِ ۖ قَالَ سُبْحَانَكَ
مَا يَكُونُ لِي أَنْ أَقُولَ مَا لَيْسَ لِي بِحَقٍّ ۚ إِن كُنتُ قُلْتُهُ فَقَدْ عَلِمْتَهُ ۚ تَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِي وَلَا أَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِكَ ۚ
إِنَّكَ أَنتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ۝

यहाँ भी अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) को जो कहा गया है वह क़ियामत के दिन उन नसारा के सामने होगा जिन्होंने ह़ज़रत ईसा और उन की माँ मरयम को अल्लाह के बजाय इनको मअ़बूद बना लिया था और इस से उन की मलामत करना होगा और यह इस वजह से होगा कि दूसरी

क़ौमों का जुर्म इस हद तक था कि उन्होंने नबियों पर नुक्ताचीनी (Comment) किया, लेकिन नसारा समुदाय ने तो अल्लाह की ताक़त और उस की बड़ाई पर नुक्ताचीनी और उसे ऐसी सिफ़ात (गुणों) के साथ जोड़ दिया जो किसी तरह़ उस के लायक़ नहीं थी।

हज़रत ईसा (अ़लै०) को अल्लाह का बेटा और उन की माँ को उस की बीवी ठहराया। इसीलिए क़ियामत के दिन तमाम नबियों के सामने अल्लाह तआ़ला हज़रत ईसा (अ़लै०) पर अपने एक-एक इनआ़म का ज़िक्र करके उन के बन्दे होने का एहसास दिलाएगा। उस के बाद उन से अल्लाह तआ़ला तमाम क़ियामत के दिन लोगों के सामने सवाल करेगा ताकि वह ख़ुद अपनी ज़बान से अपनी बन्दगी और इस बात का एलान करें कि उन्होंने अपनी उम्मत को अल्लाह की बन्दगी का हुक्म दिया था, ताकि उन की अ़िबादत करने वालों का झूठ साबित हो और उन के ख़िलाफ़ दलील क़ायम हो जाए और अल्लाह तआ़ला ने यह बयान का तरीक़ा इसलिए अपनाया, ताकि नसारा को तम्बीह की जाए और उन्हें बताया जाए कि उन का अ़क़ीदा (Faith) कितना ग़लत और उन का मज़हब कितना बेबुनियाद है।



हज़रत ईसा (अ़लै०) ने अपनी बात का इशारा अल्लाह की तरफ़ कर दिया कि अल्लाह ख़ूब जानता है उन्होंने यह बात नहीं कही थी। इस तरह़ साबित हो गया कि हज़रत ईसा (अ़लै०) का क़ौल नहीं है।

इस के बाद हज़रत ईसा (अ़लै०) ने अपने पिछले क़ौल की वजह बयान करते हुए कहा कि ऐ अल्लाह! मेरे दिल में जो कुछ है तू उसे जानता है, इसलिए अगर मैंने कोई बात ऐसी कही होगी तो तुझे ज़रूर उस की ख़बर होगी और तेरे इ़ल्म के ख़ज़ाने में क्या कुछ छुपा हुआ है उसे मैं नहीं जानता तू ही ग़ैब (छुपी बात) की तमाम बातों का जानने वाला है।

इस के बाद हज़रत ईसा (अ़लै०) अल्लाह तआ़ला से कहेंगे कि मैंने तो उन से वही बात कही थी जिस की तब्लीग़ का तूने मुझे हुक्म दिया था, कि ऐ लोगो! तुम सब अल्लाह की अ़िबादत करो जो मेरा और तुम सब का रब है। आयत के इस हिस्से में हज़रत ईसा (अ़लै०) और उन की माँ की अ़िबादत करवाने का इन्कार और हज़रत ईसा (अ़लै०) की ज़बानी इस बात का इक़रार है कि उन्होंने लोगों को

अपनी और अपनी माँ की अ़िबादत का हुक्म नहीं दिया था और इस बात का भी एतिराफ़ व एलान है कि ग़ैब की बातें अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता। इस में अम्बिया और ग़ैर अम्बिया सभी बराबर हैं, अम्बिया को भी ग़ैब की वही बातें मालूम हुई थीं जो बज़रिये वह्य उन्हें बताई जाती थीं।

117 مَا قُلْتُ لَهُمْ إِلَّا مَا أَمَرْتَنِي بِهِ أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ ۚ وَكُنتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَّا دُمْتُ فِيهِمْ ۖ فَلَمَّا
تَوَفَّيْتَنِي كُنتَ أَنتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ ۚ وَأَنتَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ

क़ुर्आन करीम में **"वफ़ात"** का लफ़्ज़ तीन मानों में इस्तेमाल हुआ है। एक मौत के माने में हैं, जैसा कि अल्लाह ने फ़रमाया اللَّهُ يَتَوَفَّى الْأَنفُسَ حِينَ مَوْتِهَا *(अल् ज़ुमर-42)* नींद के माने में हैं, जैसा कि अल्लाह ने फ़रमाया وَهُوَ الَّذِي يَتَوَفَّاكُم بِاللَّيْلِ **(सूरः अल् अन्आम-60)** और दूसरे उठा लेने के माने हैं, जैसा कि इस आयते करीमा में आया है और आले इमरान की आयत (55) إِذْ قَالَ اللَّهُ يَا عِيسَىٰ إِنِّي مُتَوَفِّيكَ وَرَافِعُكَ إِلَيَّ में आया है।

मालूम हुआ कि यहाँ **"वफ़ात"** के माने **"रफ़अ़"** के हैं यानी "जब तूने मुझे आसमान पर उठा लिया" मौत के माने में नहीं है, इसलिए कि (जैसा कि सूरः आले इमरान में बयान किया जा चुका है।)

सह़ीह़ ह़दीस से यही साबित है कि ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) की मौत नहीं हुई, बल्कि वह आसमान पर उसी ह़ाल में मौजूद हैं जिस ह़ाल में दुनिया में थे। यहाँ तक कि आख़िरी ज़माने में दोबारा ज़मीन पर उतरेंगे।

इस आयत से यह भी मालूम हुआ कि अम्बिया-ए-किराम जब अपनी दुनियावी उ़मर पूरी करके इन्तिक़ाल कर जाते हैं, तो उन्हें अपनी उम्मतों के ह़ालात का पता नहीं होता।

इमाम बुख़ारी ने अपनी किताब "الصحيح" के कई पाठों में इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत की है कि नबी करीम (सल्ल०) ने ख़ुत्बः दिया और फ़रमाया कि क़ियामत के दिन मेरी उम्मत के कुछ लोग लाए जाएँगे, जिन्हें बाएँ तरफ़ ले जाया जाएगा, तो मैं कहूँगाः ऐ रब! यह लोग तो मेरे मानने वाले हैं तो आप से कहा जाएगा, आप नहीं जानते कि इन्होंने आप के बाद दीन में कैसी-कैसी नई बातें पैदा कर ली थीं तो मैं अल्लाह के नेक बन्दे (ईसा) की तरह़ कहूँगा-
وَكُنتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَّا دُمْتُ فِيهِمْ ۖ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنتَ أَنتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ तो उन से फिर कहा जाएगा कि यह लोग आप के दुनिया से रुख़सत हो जाने के बाद हर वक़्त पीछे जाते रहे।

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "क़ियामत के दिन मेरी उम्मत के कुछ लोग ह़ाज़िर किये जाएँगे जिन्हें फ़रिश्ते बाएँ तरफ़ ले चलेंगे। मैं कहूँगा ऐ रब! यह तो मेरे साथी हैं। जवाब मिलेगा, आप नहीं जानते हैं कि आप के बाद इन लोगों ने क्या-क्या नई-नई बातें (बिद्अ़तें) बना ली थीं। उस वक़्त मैं वही कहूँगा जो कि अल्लाह के नेक बन्दे ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) ने कहा, जब तक मैं उन लोगों में रहा उन का ह़ाल देखता रहा। फिर जब तूने मुझे (दुनिया से) उठा लिया तो तू ही उन पर मुह़ाफ़िज़ (निगेहबान) था। जवाब मिलेगा कि जब से तुम उन लोगों से जुदा हुए,

यह लोग बराबर एड़ियों के बल इस्लाम से फिरते गये। (बुख़ारी)

118 إِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَإِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۚ وَإِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَإِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

यह आयत दलालत करती है कि अल्लाह तआ़ला जो चाहता है करता है, उस की मर्ज़ी में कोई दख़ल अन्दाज़ी नहीं कर सकता, वह अपने बन्दों के बारे में जो चाहे फ़ैसला करे, उस पर एतिराज़ का किसी को कोई ह़क़ नहीं। अगर वह अ़ज़ाब दे तो वह उस के बन्दे हैं और अगर माफ़ कर दे, तो यह किसी बेबसी की वजह से नहीं है, इसलिए कि वह सवाब व अ़ज़ाब दोनों पर क़ादिर (प्रभुत्व) है और उस का कोई काम ह़िक्मत से ख़ाली नहीं और न उस का कोई काम ग़लत क़रार दिया जा सकता है। इसीलिए अल्लाह ने सूरः अम्बिया आयत नं० (23) में फ़रमाया لَا يُسْأَلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْأَلُونَ कि "अल्लाह से उस के कामों के बारे में नहीं पूछा जाएगा और बन्दों से उन के करतूतों के बारे में पूछा जाएगा।

इस आयत में नसारा से ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) के बरी (अलग होने) का एलान भी है, जिन्होंने अल्लाह और रसूल के बारे में झूठ बयानी से काम लिया और बन्दों को अल्लाह का शरीक और उस की बीवी और बेटा ठहराया।

'ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर' (रह़०) लिखते हैं कि इस आयत की बड़ी शान और इस के बारे में एक अ़जीब ख़बर है। 'इमाम अह़मद' ने अबू ज़र (रज़ि०) से रिवायत की है कि "नबी करीम (सल्ल०) ने एक रात नमाज़ पढ़ी तो एक आयत को सुबह़ तक दोहराते रहे إِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَإِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۚ وَإِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَإِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ जब सुबह़ हो गई तो मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! आप इसी आयत को पढ़ते रहे, यहाँ तक कि सुबह़ हो गई।"

आप इसी के साथ रुकूअ़ करते रहे और इसी के साथ सज्दः करते रहे तो आप ने फ़रमाया कि मैंने अपने रब से अपनी उम्मत के लिए शफ़ाअ़त (सिफ़ारिश) माँगी है और उस ने मुझे वह चीज़ दे दी है और इन्शाअल्लाह वह हर उस आदमी को ह़ासिल होगी जो किसी को अल्लाह का शरीक नहीं बनाएगा।" **(अह़मद)**

इस ह़दीस को 'नसई' ने रिवायत की है-

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "क़ियामत के दिन तुम्हें जमा किया जाएगा और कुछ लोगों को बाएँ जानिब (दोज़ख़ की तरफ़) ले जाया जाएगा, मैं उस वक़्त वही कहूँगा जो अल्लाह के नेक बन्दे ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) ने कहा था............" **(सह़ीह़ बुख़ारी, अलू तफ़्सीर, बाब 15, ह़दीस 4626)**

एक और ह़दीस 'इमाम मुस्लिम' ने अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बिन आ़स रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत की है कि "नबी करीम (सल्ल०) ने ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) के बारे में अल्लाह के इस क़ौल की तिलावत की।"

"रब्बना इन्नहुन्ना अज़्लल्ना कसीरम् मिनन्नासि फ़मन तबिअ़नि फ़इन्नहु मिन्नी"

और 'ह़ज़रत ईसा' (अ़लै०) के इस क़ौल की भी तिलावत की إِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَإِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۚ وَإِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَإِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

फिर हाथ उठाया और कहा, ऐ अल्लाह! मेरी उम्मत, मेरी उम्मत, और रोने लगे तो अल्लाह ने फ़रमाया, ऐ जिब्रईल! मुहम्मद के पास जाओ (और तेरा रब ज़्यादा जानने वाला है) और पूछो कि आप क्यों रो रहे हैं? 'हज़रत जिब्रईल' (अलै०) आये और उन से पूछा, तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने जो कहा था वह बताया, (हालाँकि जिब्रईल ज़्यादा जानते थे) तो अल्लाह ने कहा, ऐ जिब्रईल! तुम मुहम्मद के पास जाओ और उन से कहो कि "हम आप की उम्मत के बारे में खुश कर देंगे और आप को तक्लीफ़ नहीं पहुँचाएँगे।"

119 قَالَ اللّٰهُ هٰذَا يَوْمُ يَنْفَعُ الصّٰدِقِيْنَ صِدْقُهُمْ ۚ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۚ
رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ۚ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿۱۱۹﴾

यह अल्लाह तआ़ला का 'हज़रत ईसा' (अलै०) को जवाब है। जब उन्होंने नसारा से अपनी बराअत का इज़्हार कर दिया तो अल्लाह तआ़ला ने उन के सदाक़त (सच्चाई) की गवाही दी और उन्हें सिद्दीक़ीन (सच्चे लोगों) में शुमार किया और कहा कि क़ियामत का वह दिन होगा जब सच्चों को उन की सच्चाई काम आएगी और उन्हें ऐसी जन्नतें मिलेंगी जिन के नीचे नहरें जारी होंगी, जिन में वह हमेशा रहेंगे और अल्लाह उन से राज़ी होगा और वह अल्लाह से राज़ी होंगे और यही बहुत बड़ी कामियाबी होगी।

120 لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا فِيْهِنَّ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۲۰﴾

इस आयते करीमा में 'नसारा' की झूठ बयानी और 'हज़रत ईसा' (अलै०) और उन की माँ के बारे में उन के ग़लत अक़ीदे पर तम्बीह की गई है कि अल्लाह के सिवा कोई मालिक नहीं, इसलिए उस का कोई शरीक कैसे हो सकता है। वह हर चीज़ पर क़ादिर (सामर्थ्यवान) है और हर चीज़ उस की मिल्कियत और उस के क़ब्ज़े में है, न उस के समान कोई है और न उस का कोई सेक्रेट्री है, न उस के सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य)।

(भाग-6)

सूर-ए-अन्आ़म

(सूरः नं. 6)

सूरः अन्आम का संक्षिप्त परिचय

इस सूरः में बीस रुकूआत हैं, जिस में तौहीद की तअ़लीम है।

● **पहले रुकूअ़** में सूरः की शुरुआत अल्लाह तआ़ला के हम्द व सना से फ़रमाई गई है, फिर तौहीद और अल्लाह की बेशुमार निशानियों की दलील लाई गई है जो दुनिया में चारों तरफ़ फैली हुई है, मगर कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन की हालत यह है कि वह हर दलील ख़ुदावन्दी से इन्कार ही करते हैं जिस पर उन्हें वओ़द सुनाई गई कि क्या उन को मालूम नहीं कि उन से पहले कितनी क़ौमों को इसी इन्कार व झुठलाने की वजह से तबाह किया जा चुका है। फिर कुफ़्फ़ार की हठधर्मी को बतलाया गया है कि अगर रसूल की तस्दीक़ में आसमान से एक काग़ज़ पर लिखा हुआ ख़त भी नाज़िल हो जाए और यह उस को अपने हाथों से छू लें तब भी यही कह देंगे कि यह तो खुला हुआ जादू है। फिर कुफ़्फ़ार के उस एतिराज़ का जवाब दिया गया है कि कोई फ़रिश्ता रसूल बनकर क्यों नहीं आया। यहाँ बतलाया गया कि यह कुफ़्फ़ार सरासर हठधर्म हैं, उन के झुठलाने की कोई वजह नहीं जिस को यह भुगतेंगे।

● **दूसरे रुकूअ़** में उन कुफ़्फ़ार को जो हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) से मज़ाक़ करते थे, बुरे अन्जाम से डराया गया है और बतलाया गया है कि इन सरकशों को तुरन्त सज़ा न मिलने से मुतमइन न हो जाना चाहिए कि उन के आ़माल का हिसाब और उस पर सज़ा न होगी।

क़ियामत के रोज़ यह सब बदला के लिए जमा होंगे और उन के आ़माल को पूछा जाएगा और उन पर सज़ा होगी। फिर शिर्क की मज़म्मत (निन्दा) और हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को कहा गया है कि आप इन मुश्रिकीन से साफ़ कह दीजिए कि क्या मैं आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले और सब को रिज़्क़ देने वाले के सिवा किसी और को मअ़बूद बना लूँ, हरगिज़ नहीं, बल्कि आप कह दीजिए कि मैं पहला शख़्स हूँ जिस ने अल्लाह के सामने गर्दन झुकाई है और अल्लाह की फ़रमाँबरदारी अपनाई है। अगर मैं उस की नाफ़रमानी करूँ तो मुझे डर है एक बड़े दिन के अ़ज़ाब का, इसलिए मैं तौहीद की कोई नाफ़रमानी नहीं कर सकता। फिर यह भी स्पष्ट कर दिया गया कि अगर अल्लाह तआ़ला किसी को कोई तक्लीफ़ पहुँचा दे तो उस का दूर करने वाला कोई नहीं सिवाय अल्लाह के। इसी तरह अगर अल्लाह तआ़ला किसी को कोई नफ़ा पहुँचाए तो कोई उस को रोक नहीं सकता बस जबकि नफ़ा और नुक़्सान दोनों उसी के अख़्तियार में है तो अ़िबादत भी उसी की होनी चाहिए तो ऐ नबी (सल्ल०)! आप अल्लाह को एक मअ़बूद (उपास्य) होने का एलान कर दीजिए जो सत्य के मानने वाले हैं वह ईमान ले आएँगे और जिन्होंने अपने को ज़ाया कर रखा है वह ईमान न लाएँगे।

● **तीसरे रुकूअ़** में मैदाने हश्र का नक़्शा पेश किया गया है जबकि तमाम मख़्लूक़ (श्रृष्टियों) को जमा किया जाएगा और मुश्रिकीन से पूछा जाएगा कि अब तुम्हारे वह मअ़बूदाने बातिला (झूठे उपास्य) कहाँ हैं? अ़दालत इलाही में कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन की हाज़िरी और सवाल व जवाब की कैफ़ियत बयान

की गई है कि किस तरह़ यह मुश्रिकीन मुजरिमाना ह़ैसियत से नादिम व शर्मिन्दा खड़े होंगे और उन के ह़क़ में यही फ़ैसला होगा कि अब अपने इन्कार और झुठलाने की वजह से जहन्नम के अ़ज़ाब का मज़ा चखो।

● **चौथे रुकूअ़** में दुनियावी ज़िन्दगी की ह़क़ीक़त बताई गई है और तअ़लीम दी गई, कि जो दुनिया में ग़र्क़ होकर आख़िरत से ग़ाफ़िल हो गया वह सख़्त घाटे और नुक़्सान में रहा। फिर कुफ़्फ़ार के झुठलाने से जो रसूलुल्लाह (सल्ल०) को रंज व सद्मा होता था उस पर आप (सल्ल०) की दिलजोई फ़रमाई गई और बतलाया गया कि यह झुठलाना अम्बिया की कोई नई बात नहीं, आप से पहले भी बहुत से रसूलों को झुठलाया जा चुका है जिस पर उन्होंने सब्र ही किया बस आप भी सब्र कीजिए और उन इन्कारियों के ईमान की फ़िक्र में ज़्यादा न पड़िए। बात तो वही मानते हैं जो सुनते हैं और यह इन्कारी तो मुर्दा के समान हैं तो फिर यह कैसे सुनेंगे।

कुफ़्फ़ार के माँगे हुए निशानात के बारे में बतलाया गया कि यह निशानियों को देखकर भी न मानेंगे और जादू कहकर उन को टाल देंगे और अस्ल बात यह है कि हिदायत व गुमराही सब अल्लाह तआ़ला के क़ब्ज़े में है। अल्लाह जिस को चाहता है सीधा रास्ता दिखा देता है और जिस को चाहता है गुमराही में पड़ा रहने देता है। फिर नबी करीम (सल्ल०) को ख़िताब फ़रमाया गया कि आप उन लोगों से जो अल्लाह का साझीदार बताते हैं, पूछिए कि अगर तुम पर अल्लाह का अ़ज़ाब आ जाए या क़ियामत ही आ जाए तो उस वक़्त अल्लाह के सिवा किस को पुकारोगे? ऐसे सख़्त वक़्त में तो मुश्रिकीन भी अल्लाह को ही पुकारने लगते थे और जिन को शरीक ठहराते थे सब को भूल जाते थे। बस जब मुसीबत के वक़्त अल्लाह को पुकारते हो तो दूसरे वक़्त में भी उसी को पुकारना चाहिए।

● **पाँचवें रुकूअ़** में बताया गया है कि हमेशा से यही हुआ कि उम्मतों और क़ौमों में अम्बिया व रसूल आये मगर लोगों ने उन को झुठलाया, उन का मज़ाक़ उड़ाया तो तंगदस्ती व बीमारी वग़ैरह में उन को पकड़ा गया कि अगर वह इस पर भी माफ़ी माँग लेते तो दरगुज़र किया जाता, मगर उन के दिल तो सख़्त हो चुके थे इसलिए उन्होंने ऐसा न किया तो फिर इस तरीक़े को छोड़कर दूसरा तरीक़ा अख़्तियार किया गया और वह यह कि उन पर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिये यानी ख़ूब नेअ़मतें दीं यहाँ तक कि जब वह इन पर इतरा गये और जुर्मों में ह़द से गुज़र गये तो अचानक उन की गिरिफ़्त की और ज़ालिमों की जड़ काट दी गई।

फिर बतलाया गया है कि अल्लाह की गिरिफ़्त और क़ब्ज़े से कोई बाहर नहीं और मिसाल के तौर पर समझाया गया है कि अगर अल्लाह किसी के सुनने की कुव्वत और देखने की कुव्वत छीन ले तो अल्लाह के सिवा कौन ऐसा है कि जो यह वापस ला सके। फिर अम्बिया-ए-किराम का तरीक़ा बतलाया गया कि अम्बिया व रसूल इसी वास्ते भेजे जाते हैं कि अच्छे लोगों को ख़ुशख़बरी सुनाएँ और बुरों को डराने वाले हों। अब जो उन की बातों पर ईमान ले आये और अपनी ह़ालत दुरुस्त कर ले तो आख़िरत में उन के लिए कोई मुश्किल न होगी और जो अल्लाह और उस के रसूल की बातें झुठलाये तो उन को

उन की नाफ़रमानी की वजह से अ़ज़ाब दिया जाएगा। फिर ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को रिसालत (Prophethood) की ह़क़ीक़त साफ़-साफ़ बयान कर देने को कहा गया ताकि कुफ़्फ़ार मुन्किरीन के एतिराज़ात व सवालात का ख़ात्मा हो जाए और हुज्जत (दलील) पूरी हो जाए।

● **छठे रुकूअ़** में बताया गया है कि क़ियामत के दिन मुन्किरीन (इन्कारियों) के कोई काम न आएगा, न उन का कोई मददगार होगा न सिफ़ारिशी। फिर कुफ़्फ़ारे मक्का और कुरैश के सरदार रसूलुल्लाह (सल्ल०) से यह मुताल्बा (Demand) करते हैं कि आप की बातें सुनने को तैयार हैं बशर्ते कि आप अपने यहाँ से कम हैसियत और ग़रीब मुसलमानों को हटा दें और वह हमारे साथ न बैठें क्योंकि उन के साथ बैठने में हमारी तौहीन (बेइ़ज़्ज़ती) है। इस पर अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से रसूलुल्लाह (सल्ल०) को कहा गया कि आप हरगिज़ इस बात को मन्ज़ूर न करें और उन मुख़्लिस कमज़ोर मुसलमानों को हरगिज़ अपनी बैठक से अ़लैह़िदा न करें, बल्कि उन मुख़्लिस मुसलमानों के एह़तिराम में आप उन के लिए सलामती की दुआ़ फ़रमाएँ और उन को ख़ुशख़बरी सुनाएँ कि अल्लाह तआ़ला ने तुम पर मेहरबानी करना अपने ज़िम्मे ले लिया है। अगर ग़ल्ती से तुम से कोई गुनाह हो जाए और फिर उस के बाद तौबः कर लो तो अल्लाह तआ़ला उसे माफ़ फ़रमा देंगे और तुम पर रह़म करेंगे।

● **सातवें रुकूअ़** में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को कहा गया है कि आप कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन से साफ़ कह दीजिए कि मैं तुम्हारी पैरवी हरगिज़ न करूँगा। फिर कुफ़्फ़ार ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से कहते हैं कि हमारे न मानने पर तुम जो अ़ज़ाब की धमकियाँ देते हो तो वह क्यों नहीं होता? इस का जवाब रसूलुल्लाह (सल्ल०) को फ़रमाया गया कि तुम जिस चीज़ की जल्दी मचाते हो वह मेरे क़ब्ज़े में नहीं है क्योंकि हर हुक्म का अख़्तियार सिर्फ़ अल्लाह ही को है। अगर वह चीज़ जिस की तुम जल्दी मचाते हो मेरे क़ब्ज़े में होती तो मैं ज़रूर उस को ले आया होता और अब तक मेरे और तुम्हारे दर्मियान कभी का फ़ैसला हो चुका होता।

यहाँ बताया गया है कि यह उन की कट हुज्जती है और अल्लाह तआ़ला उन ज़ालिमों की ह़ालत से ख़ूब वाक़िफ़ है क्योंकि अल्लाह तआ़ला आ़लिमुल् ग़ैब (परोक्ष का ज्ञान रखने वाला) है उस को ज़र्रह-ज़र्रह (कण-कण) का इ़ल्म है, सब को मर कर फिर उसी की तरफ़ जाना है उस वक़्त वह सब को जतलाएगा जो कुछ दुनिया में वह करते थे।

● **आठवें रुकूअ़** में अल्लाह की क़ुद्रत का बयान है कि अल्लाह तआ़ला सब पर ग़ालिब और अपने बन्दों पर पूरी तरह़ क़ादिर है इसलिए उस के हुक्मों को तोड़कर बचना मुश्किल है। फिर बतलाया गया है कि हर मुसीबत और रंज से बचाने वाला और काम आने वाला अल्लाह ही की ज़ात है और वही मुसीबतों से निजात देता है। फिर अल्लाह इस पर भी क़ादिर है कि जिस तरह़ चाहे ऊपर से नीचे तक अपने बन्दों पर अ़ज़ाब भेज दे या लोगों के दर्मियान आपस में इख़्तिलाफ़ और आपसी जंग का अ़ज़ाब भेज दे। फिर ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से कहा गया है कि आप उन लोगों से जो अल्लाह तआ़ला की आयात के सम्बन्ध में इधर-उधर की बातें करते हैं और उन में कमी ढूंढ़ते हैं उन से अलग

हो जाइए। जिन्होंने अपना दीन खेल-तमाशा बना रखा है और जिन को दुनियावी ज़िन्दग़ी ने धोखे में डाल रखा है। बहरहाल मौक़ा के मुताबिक़ उन को इस क़ुर्आन से नसीहत करते रहिए जो न मानेंगे वह दर्दनाक सज़ा में गिरफ़्तार होंगे।

● **नवें रुकूअ़** में पहले शिर्क की बुराई बताई गई है कि अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य की पूजा अ़क्ल के ख़िलाफ़ है। फिर क़ियामत का ज़िक्र फ़रमाया गया है कि उस रोज़ अल्लाह ही की हुकूमत होगी यानी किसी की ज़ाहिरी हुकूमत भी न होगी और वह आ़लिमुल ग़ैब वल् शहादह है। बस जबकि वह अपने इ़ल्म की वजह से हर चीज़ को जानता है और पूरी क़ुद्रत भी रखता है तो उस की बात में शक व इन्कार की क्या गुन्जाइश है।

आगे हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) का वाक़िआ़ ज़िक्र फ़रमाया गया है कि हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने किस तरह अपने बाप 'आज़र' को बुत परस्ती पर टोका और कहा कि आप बुतों को मअ़बूद बनाते हैं यह ग़लत बात है और मैं आप को और आप की क़ौम को खुली हुई ग़ल्ती में देख रहा हूँ।

फिर हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) की उन दलीलों का बयान है जो उन्होंने सितारों की पूजा करने वाले के मुक़ाबिले में पेश की थीं और बताया था कि पालनहार सिर्फ़ एक ही है और यह सितारे और पूरी क़ायनात उसी की मख़्लूक़ है। उन्होंने तो यह कहा और उन की क़ौम ने उन से हुज्जत शुरु कर दी और अपने मअ़बूदों से हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) को डराया जिस पर हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने साफ़ कह दिया कि मैं तुम्हारे बुतों से बिल्कुल नहीं डरता क्योंकि वह मुझे कोई नुक़्सान नहीं पहुँचा सकते मैं तो सिर्फ़ अपने रब से डरता हूँ क्योंकि मेरा अल्लाह क़ादिर और अ़लीम भी है, बस तुम्हारे मअ़बूद डरने की चीज़ नहीं और उन से डरना बेवक़ूफ़ी है।

● **दस्वें रुकूअ़** में हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) की रिसालत के ज़िक्र के साथ दूसरे अम्बिया व रसूलों का ज़िक्र फ़रमाया जिन की दअ़वत वही थी जो क़ुर्आन करीम की दअ़वत है। यानी तौहीद आख़िरत पर ईमान और नेक काम की तर्ग़ीब। फिर कहा गया कि जब ऐसा है तो क्या वजह है कि क़ुर्आन की मुख़ालिफ़त की जा रही है और लोग रसूलुल्लाह (सल्ल०) को झुठला रहे हैं।

● **ग्यारहवें रुकूअ़** में इस का ज़िक्र हुआ कि यह मुन्किरीन (इन्कारी) अल्लाह की नाक़द्री कर रहे हैं। अल्लाह ने तो अपनी रहमत की बिना पर हिदायत भेजी और लोग इस का इन्कार कर रहे हैं। हालाँकि हक़ीक़त यह है कि क़ुर्आन वह किताब है जिस को अल्लाह तआ़ला ने नाज़िल किया है और निहायत बा बरकत है और अपने से पहले किताबों की तस्दीक़ (पुष्टि) करने वाली है।

और ऐ नबी (सल्ल०)! आप इस के ज़रिये से मक्का वालों और इर्द-गिर्द के लोगों को डराइये। जो लोग आख़िरत का यक़ीन रखते हैं ऐसे लोग इस पर ईमान ले आएँगे और जो न मानें तो यह उन की हठधर्मी है।

फिर ज़ालिमों और काफ़िरों की जो मौत के वक़्त हालत होगी उस को बयान फ़रमाया गया है कि ज़िन्दग़ी में तो यह अल्लाह की आयात से घमण्ड करते रहे, लेकिन मौत के वक़्त जो उन की बेकसी

बेचारगी और ज़िल्लत व शर्मिन्दगी और ग़म की हालत होगी वह देखने से तअ़ल्लुक़ रखती है। फिर इस के बाद मैदाने हश्र में उन को सज़ा दी जाएगी जिस से यह उस वक़्त सख़्त परेशान और शर्मिन्दा होंगे।

● **बारहवें रुकूअ़** में अल्लाह तआ़ला ने तौहीद के सुबूत में क़ायनात में फैली हुई अपनी निशानियों की एक झलक दिखाई है और अपनी क़ुद्रत के नमूने ज़ाहिर फ़रमाये हैं कि जिन को सिवाय अल्लाह के कोई और नहीं कर सकता। जैसे- बारिश बरसाना, ज़मीन से दाना को उगाना, फिर उस को बढ़ाना, हक़ीर नुत्फ़े (वीर्य) से इन्सान का पैदा करना, दिन को निकालना रात के बाद और रात को लाना दिन के बाद चाँद, सूरज, सितारे उन को पैदा करना और उन को एक निज़ाम (System) के मातहेत (Under) ठहराना। फिर तरह़-तरह़ के मेवे और फल पैदा करना।

इन तमाम बातों से अल्लाह की क़ुद्रत व हिक्मत का अन्दाज़ा करो और देखो कि क्या यह बातें अल्लाह के सिवा किसी और में हैं। जब नहीं तो अल्लाह का शरीक किसी को कैसे ठहराया जा सकता है और किस को अल्लाह का शरीक बनाया जा सकता है। इन दलायल तौहीद के बाद मुश्रिकीन की बद्अ़क़्ली और कमसमझी को बयान किया जाता है कि उन्होंने एक जिहालत तो यह कि अल्लाह को छोड़कर दूसरों को मअ़बूद बनाया। फिर दूसरी जिहालत यह कि अल्लाह का शरीक जिन्नों को बनाया, ह़ालाँकि अल्लाह ने इन सब को पैदा किया और फिर अपनी जिहालत से अल्लाह के लिए बेटे और बेटियाँ भी अपनी तरफ़ से गढ़ ली, ह़ालाँकि वह पाक है इन बातों से।

● **तेरहवें रुकूअ़** में अल्लाह के ख़ालिक़ और मौजूद होने को बयान किया गया और बतलाया गया है कि अल्लाह तआ़ला बीवी और औलाद से पाक है और अल्लाह तो बड़ा आ़लीशान है और उस ने हर चीज़ को पैदा किया, वह हर चीज़ को जानता है और तुम को उस के नज़र न आने से इस का शुब्हा न होना चाहिए कि वह ग़ायब है और हमारे कामों की उसे क्या ख़बर है तो अल्लाह तआ़ला हर चीज़ को देखता है और वह बड़ा बारीक ख़बर रखने वाला है। फिर शिर्क की बुराई के साथ शिर्क से बचने की तअ़लीम दी गई, फिर अहले इस्लाम को तअ़लीम दी गई कि मुश्रिकीन के मअ़बूदों को बिलावजह बुरा न कहो वरना कुफ़्फ़ार मुश्रिकीन जवाब में अपनी नासमझी से अल्लाह को बुरा कहेंगे और अल्लाह तआ़ला की शान में गुस्ताख़ी करेंगे।

● **चौदहवें रुकूअ़** में हठधर्म मुन्किरीन की सोच और उन के सरकशी की ह़ालत बताई गई है कि यह उस वक़्त भी ईमान न लाएँगे जब कि उन की आँखों के सामने आसमान से फ़रिश्ते उतरें या मुर्दा क़ब्र से ज़िन्दा होकर उठ खड़े हों और उन से बातें करने लगें या तमाम ग़ैबी चीज़ों को उन की आँखों के सामने लाकर जमा कर दें। फिर भी यह ईमान लाने में तरह़-तरह़ के ह़ीले बहाने कर देंगे। उस के बाद क़ुर्आन की ह़क़्क़ानियत बयान करते हुए कहा गया है कि यह अल्लाह की नाज़िल की हुई किताब है जिसमें कोई शुब्हा नहीं। इसलिए क़ुर्आन ही की फ़रमाँबरदारी करनी चाहिए किसी के ख़्वाहिश की पैरवी न की जाए। फिर बताया गया है कि इस क़ुर्आन में ह़लाल ह़राम से सम्बन्धित हुक्म हैं उन की पाबन्दी ज़रूरी है। यह काफ़िर इन्कारी बिला जाने-बूझे केवल अपनी इच्छानुसार लोगों को गुमराह करते

हैं और अल्लाह तआ़ला उन ह़द से बढ़ जाने वालों से ख़ूब वाक़िफ़ है और उन को सज़ा देगा। फिर अहले इस्लाम को हिदायत की गई है कि गुनाह चाहे ज़ाहिरी हों या अन्दुरूनी यानी चाहे शरीर के अंगों से तअ़ल्लुक़ रखते हों, चाहे दिल से सब को छोड़ दो क्योंकि जो लोग गुनाह कमाते हैं उन को उन के गुनाहों की सज़ा दी जाएगी।

● **पन्द्रहवें रुकूअ़** में मोमिन और काफ़िर में अन्तर बतलाया गया है कि मोमिन की मिसाल ज़िन्दा जैसी है और काफ़िर की मिसाल मुर्दा जैसी है। मोमिन के पास एक नूर और रौशनी है जो कि वह अपने साथ लिए होता है और काफ़िर अंधेरों में होता है। इस तरह़ समझाया गया है कि मोमिन हर तरह़ काफ़िर से बेहतर है फिर भी काफ़िर कुफ़्र को इस्लाम से बेहतर जानते हैं और उन को अपने आ़माल अपनी नज़रों में अच्छे मालूम होते हैं जो सरासर सरकशी है। फिर बतलाया गया है कि कुफ़्फ़ार के ऐसे ख़िलाफ़-ए-अ़क़्ल उन की ग़लतबयानी से यही नतीजा निकला कि हिदायत व गुमराही अल्लाह तआ़ला के क़ब्ज़े में है जिस को अल्लाह तआ़ला चाहता है हिदायत से नवाज़ता है और उस के सीने को इस्लाम के लिए खोल देता है और जिस को चाहता है वह गुमराही में पड़ा रहता है और उस के सीने को तंग कर देता है। यह ईमान न लाने का अन्जाम है कि नापाकी और ग़न्दग़ी को उन लोगों पर मुसल्लत कर दिया जाता है फिर कुफ़्फ़ार को जहन्नम के अ़ज़ाब की चेतावनी सुनाई गई कि जिस में यह हमेशा पड़े रहेंगे।

● **सोलहवें रुकूअ़** में बताया गया कि क़ियामत के दिन कुफ़्फ़ार जिन्न व इन्सान से सवाल किया जाएगा कि क्या तुम्हारी हिदायत के लिए रास्ता दिखाने वाले रसूल तुम्हारे पास नहीं आये थे और इस दिन के आने से क्या तुम्हें डराया नहीं गया था। वह इक़्रार करेंगे कि ज़रूर आये थे और यह इक़्रार करके ख़ुद अपने ऊपर गवाही देंगे कि वाक़ई वह काफ़िर थे, इस के बाद बतलाया गया है कि अल्लाह तआ़ला की यह आ़दत है कि वह किसी बस्ती को उन के रहने वालों के ज़ुल्म और गुनाहों की वजह से तबाह नहीं करते यानी अ़ज़ाब से पहले उन को पूरी तरह़ तम्बीह की जाती है, फिर न मानने पर बस्ती पर तबाही आती है। इस के बाद अल्लाह की क़ुद्रत का ज़िक्र फ़रमाया गया कि वह अल्लाह आज भी इस पर उसी तरह़ क़ादिर है जिस तरह़ पहले था कि बस्तियों को उन के गुनाहों की वजह से तबाह व बर्बाद कर दे और अब तक जो सज़ा नहीं दी गई तो उस की वजह यह है कि आप का रब बेनियाज़ (निस्पृह) रह़मत वाला है।

वह अगर चाहे तो आज तुम सब को ख़त्म कर दे और तुम्हारा उत्तराधिकारी जिस को चाहे बना कर तुम्हारी जगह आबाद कर दे। उस के बाद फिर मुश्रिकीन को बक्वास और उन के शैतानी कारनामों का ज़िक्र फ़रमा कर बतलाया गया कि उन के ज़िद और हठधर्मी की वजह से अल्लाह को हिदायत करना मन्ज़ूर नहीं वरना अल्लाह अगर चाहता तो वह ऐसा न कर सकते वह अल्लाह से ज़्यादा ताक़तवर नहीं। इसलिए रसूल (सल्ल०) से कहा गया कि आप उन की फ़िक्र में न पड़ें और जो झूठ यह गढ़ते हैं और ग़लत बताते हैं उन्हें कहने दीजिए। अल्लाह तआ़ला उन को उन के ग़लत बयानी की सज़ा देगा।

● **सत्रहवें रुकूअ़** में अल्लाह तआ़ला ने अपने बहुत से इनआ़मात का ज़िक्र फ़रमाया है। जैसे- खाने के लिए बाग़ात और फल पैदा किये, जानवर और चौपाए मवेशी पैदा किये जिन से सवारी का काम लिया जाता है और उन का गोश्त भी खाया जाता है। फिर चन्द ह़लाल जानवरों के ज़िक्र में कुछ को मुश्रिकीन ने अपने मुश्रिकाना रस्मों की बिना पर ह़राम बना रखा था और उस का अल्लाह का हुक्म बतलाते थे जो बहुत बड़ा ज़ुल्म है।

● **अट्ठारहवें रुकूअ़** में जो चीज़ें वाक़ई अल्लाह तआ़ला ने ह़राम की हैं उन को बतलाया गया जैसे- मरा हुआ, बहता हुआ ख़ून, सुअर का गोश्त या जो जानवर ग़ैरुल्लाह के नाम पर छोड़ दिया गया हो। फिर मजबूरी में जब कोई चीज़ जान बचाने के लिए न हो तो ज़रुरत के अनुसार उन चीज़ों में से खाकर जान बचा सकता है। इस ह़ालत में ज़रूरत के अनुसार उन के खाने में गुनाह न होगा। फिर मुश्रिकीन से मुतअ़ल्लिक़ बतलाया गया है कि यह कहेंगे कि अगर अल्लाह चाहता तो न हम शिर्क करते, न हमारे बाप दादा शिर्क करते और न हम कोई ह़राम काम करते। बस जब अल्लाह ही की यह मर्ज़ी है तो हम क्या कर सकते हैं। मुश्किरीन की इस बात को रद्द फ़रमाया गया है कि यह भी उन की हठधर्मी है और उन की मुह़ब्बत सह़ी नहीं यह केवल अट्कल की बातें हैं और मुसलमानों को उन के ग़लत ख़यालात से बचने का हुक्म दिया गया।

● **उन्नीसवें रुकूअ़** में बतलाया गया है कि 9 बातें ऐसी हैं जो ह़राम और सख़्त गुनाह हैं और जिन को अल्लाह तआ़ला ने ह़राम फ़रमाया है। (1) अल्लाह के साथ शिर्क (2) वालिदैन से बुरा बर्ताव (3) औलाद का क़त्ल (4) बेहयाई के काम जैसे ज़िना वग़ैरह (5) नाह़क़ क़त्ल (6) यतीम के माल में बिला शरई इजाज़त के तसर्रुफ़ करना। (7) नाप तौल में कमी-बेशी करना। (8) अ़द्ल व इन्साफ़ न करना। (9) वादा ख़िलाफ़ी करना

इस तरह़ आख़ीर में सह़ी रास्ते पर चलने का हुक्म दिया गया है।

● **बीसवें रुकूअ़** यानी आख़िरी रुकूअ़ में बतलाया गया है कि क़ुर्आन करीम बड़ी ख़ैर वाली किताब है। इसलिए इस के मानने का हुक्म दिया गया और बतला दिया गया कि नुज़ूले क़ुर्आन के बाद अब कोई यह नहीं कह सकता कि हमारी हिदायत के लिए कोई किताब और रसूल नहीं आये, लिहाज़ा क़ुर्आन नाज़िल हो गया। इस की हिदायत लोगों को अख़्तियार कर लेनी चाहिए वरना क़ियामत में सख़्त अ़ज़ाब होगा। फिर बतलाया गया कि ईमान और तौबः उसी वक़्त तक मक़्बूल है जब तक कि अल्लाह की बड़ी निशानी नहीं आती यानी सूरज पश्चिम से नहीं निकलता, जहाँ ऐसा हुआ फिर न किसी काफ़िर का ईमान लाना कुबूल होगा न किसी मुस्लिम की तौबः कुबूल होगी इसीलिए ईमान लाने और तौबः करने में देर लगाने और टाल मटोल करने को मना फ़रमाया गया और सीधे रास्ते पर चलने और दीने ह़क़ जो ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) का तरीक़ा बताया गया है उस को अपनाने की हिदायत की गई और फिर अख़ीर में शिर्क की बुराई बयान फ़रमाते हुए अल्लाह तआ़ला का ख़ालिक़ और राज़िक़ होना बतला कर यह जतलाया गया कि अल्लाह ने इन्सान को ज़मीन में अपना ख़लीफ़ा (प्रतिनिधित्व या Representative)

बनाकर भेजा है और उन की आज़माइश के लिए बहुत सी नेअ़मतें दीं ताकि यह देखे कि कौन उस का शुक्रगुज़ार बन्दा है और कौन नहीं। कौन उस अल्लाह की फ़रमाँबरदारी करता है और कौन नाफ़रमानी। नाफ़रमानों के लिए अपनी सिफ़त **'सरीउ़ल अ़िक़ाब'** जल्द सज़ा देने वाला बतला कर डराया और फ़रमाँबरदारों को अपनी सिफ़त गफ़ूरुर्रहीम बतला कर ख़ुशख़बरी दी कि वह बड़ी मग़्फ़िरत करने वाला और बड़ी मेहरबानी करने वाला है और इसी पर सूरः को ख़त्म फ़रमाया गया।

आयत नं० 1 से 11 तक

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمٰتِ وَ النُّوْرَ ؕ ثُمَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ یَعْدِلُوْنَ ۝ هُوَ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ مِّنْ طِیْنٍ ثُمَّ
قَضٰۤى اَجَلًا ؕ وَ اَجَلٌ مُّسَمًّى عِنْدَهٗ ثُمَّ اَنْتُمْ تَمْتَرُوْنَ ۝ وَ هُوَ اللّٰهُ فِی السَّمٰوٰتِ وَ فِی الْاَرْضِ ؕ یَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَ جَهْرَكُمْ وَ یَعْلَمُ مَا تَكْسِبُوْنَ
وَ مَا تَاْتِیْهِمْ مِّنْ اٰیَةٍ مِّنْ اٰیٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِیْنَ ۝ فَقَدْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ؕ فَسَوْفَ یَاْتِیْهِمْ اَنْۢبٰٓؤُا
مَا كَانُوْا بِهٖ یَسْتَهْزِءُوْنَ ۝ اَلَمْ یَرَوْا كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ مَّكَّنّٰهُمْ فِی الْاَرْضِ مَا لَمْ نُمَكِّنْ لَّكُمْ وَ اَرْسَلْنَا السَّمَآءَ عَلَیْهِمْ
مِّدْرَارًا ۪ وَّ جَعَلْنَا الْاَنْهٰرَ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِیْنَ ۝ وَ لَوْ نَزَّلْنَا عَلَیْكَ كِتٰبًا
فِیْ قِرْطَاسٍ فَلَمَسُوْهُ بِاَیْدِیْهِمْ لَقَالَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْۤا اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِیْنٌ ۝ وَ قَالُوْا لَوْ لَاۤ اُنْزِلَ عَلَیْهِ مَلَكٌ ؕ وَ لَوْ اَنْزَلْنَا مَلَكًا
لَّقُضِیَ الْاَمْرُ ثُمَّ لَا یُنْظَرُوْنَ ۝ وَ لَوْ جَعَلْنٰهُ مَلَكًا لَّجَعَلْنٰهُ رَجُلًا وَّ لَلَبَسْنَا عَلَیْهِمْ مَّا یَلْبِسُوْنَ ۝ وَ لَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِیْنَ
سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ یَسْتَهْزِءُوْنَ ۝ قُلْ سِیْرُوْا فِی الْاَرْضِ ثُمَّ انْظُرُوْا كَیْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِیْنَ ۝

अनुवाद-

(1) हर तरह की तअ़रीफ़ अल्लाह ही के लिए हैं, जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, और अन्धेरा और रोशनी बनायी; फिर भी काफ़िर दूसरों को अपने रब के बराबर ठहराते हैं; (2) 'वही है' जिसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर (मरने का) एक वक़्त निश्चित कर दिया और उसके यहाँ एक मुद्दत और है; फिर भी तुम सन्देह करते हो! (3) और 'वही' अल्लाह आसमानों और ज़मीन में है, (जो) तुम्हारी छिपी और खुली सब बातों को जानता है, और जो कुछ तुम करते हो, (वह सब) उसके इल्म में है। (4) और अल्लाह की निशानियों में से कोई निशानी भी ऐसी नहीं है जो उनके पास न आई हो, मगर ये उससे मुंह फेर लेते हैं; (5) जब उनके पास हक़ आया, तो उसको भी झुठला दिया, तो उन चीज़ों का जिनका यह मज़ाक़ उड़ाते हैं, बहुत जल्द अंजाम मालूम हो जाएगा। (6) क्या उन्होंने नहीं देखा! कि 'हमने' उनसे पहले कितने गिरोहों (उम्मतों) को हलाक (विनष्ट) कर दिया, जिनके पैर धरती पर ऐसे जमा दिये थे कि तुम्हारे पैर भी ऐसे नहीं जमाए और उन पर आसमान से लगातार बारिश बरसायी और नहरें बना दीं, जो उनके नीचे बह रही थीं; फिर 'हमने' उन्हें उनके गुनाहों की वजह से हलाक कर दिया और उनके बाद दूसरे गिरोहों को उठाया। (7) और अगर 'हम' आप के ऊपर काग़ज़ में लिखी-लिखाई किताब भी उतार देते और यह उसे अपने हाथों से छू भी लेते, तब भी, जिन्होंने इन्कार किया, वे यही कहते, ''यह तो बस एक खुला जादू है।'' (8) और कहते हैं, ''इस (नबी) पर फ़रिश्ता क्यों नहीं उतारा गया?'' हालाँकि अगर 'हम' फ़रिश्ता उतारते तो फ़ैसला हो चुका होता, फिर उन्हें मोहलत न दी जाती। (9) और अगर 'हम' उस (नबी) को फ़रिश्ता बनाते, तो उसे आदमी ही (के रूप का) बनाते, इस तरह 'हम' उन्हें उसी सन्देह में डाल देते, जिस तरह सन्देह में वे पड़े हुए हैं। (10) और आप से पहले कितने ही रसूलों का मज़ाक़ उड़ाया जा चुका है, तो जिन लोगों ने उनका मज़ाक़ उड़ाया था, उन्हें उसी ने आ घेरा जिस बात पर वे हँसी उड़ाते थे। (11) कह दीजिए, ''धरती में चल फिर कर देखो कि झुठलाने वालों का कैसा अंजाम हुआ!'

आयत नं० 1 से 11 तक की व्याख्या

1 اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمٰتِ وَالنُّوْرَ ۬ؕ ثُمَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ ①

अल्लाह तआ़ला ने इस सूरः की शुरुआ़त अल्ह़म्दु से की, ताकि हर काफ़िर व मुस्लिम को यह मालूम हो जाए कि हर क़िस्म की तअ़रीफ़ें सिर्फ़ अल्लाह ही के लिए हैं और उन लोगों पर हुज्जत क़ायम हो जाए जो अल्लाह के साथ ग़ैरों को शरीक बनाते हैं। सूरः अल् फ़ातिह़ा की तफ़्सीर में इस पर तफ़्सील (Detail) से बह़स हो चुकी है। अल्लाह तआ़ला ने अपनी तअ़रीफ़ बयान करते हुए फ़रमाया कि आसमानों और ज़मीन का अकेले वही पैदा करने वाला है, इसलिए सिर्फ़ वही तमाम तअ़रीफ़ों का ह़क़्दार है, इसलिए कि जिस ज़ात ने ज़मीन व आसमान जैसी चीज़ों को पैदा किया है, ह़क़ीक़त में सिर्फ़ वही ह़म्द, सना और तअ़रीफ़ का ह़क़्दार है।

अल्लाह तआ़ला ने तारीकी (अंधेरा) और नूर (रोशनी) को बनाया। उ़लमा ने अंधेरे और उजाले के माने बयान करने में इख़्तिलाफ़ (मतभेद) किया है। इस का सब से बेहतर मतलब है "ज़ुल्मत" (अंधकार) में हर वह चीज़ दाख़िल है जिस को अन्धकार कहा जाता हो और "नूर" (प्रकाश) में हर वह चीज़ दाख़िल है जिस पर नूर (प्रकाश) का होना साबित होता हो तो जिस ने यह चीज़ें पैदा की हैं वही तमाम तअ़रीफ़ों का ह़क़्दार है।

अल्लाह का आसमान और ज़मीन का सृष्टा होना एक स्पष्ट वास्तविकता है जो दलील की मुह़ताज नहीं। यहूदी और ईसाई तो उस पर आस्था रखते ही थे, अ़रब के बहुदेववादियों को भी इस से इन्कार नहीं था और जहाँ तक आसमानी किताबों का सम्बन्ध है, तौरात सबसे प्राचीन ग्रंथ है जिसकी शुरुआ़त ही इस ह़क़ीक़त के एलान से होती है।

'आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की'। **(उत्पत्ति 1:1)**

यहाँ ज़ुरतुश्तों (पारसियों अथवा Zoraster) के इस विचार का खण्डन होता है कि प्रकाश और अंधकार के अलग-अलग ख़ुदा हैं उन्होंने अपने इस विचार के अनुसार एक का नाम 'यज़दां' और दूसरे का नाम 'अह्रमन' रखा है। यज़दां रौशनी और ख़ैर (भलाई) का ख़ुदा है तो 'अह्रमन' अंधकार और बुराई का। इस धारणा ने उन्हें आग का पुजारी बना दिया।

दो ख़ुदाओं के इस अ़क़ीदे का मतलब इस बात का मान लेना है कि इस ब्रहम्माण्ड पर दो प्रतिद्धन्दी शक्तियों की वर्चस्वता एवं सत्ता है, लेकिन अगर ऐसा होता तो क़ायनात (ब्रहम्माण्ड) की यह व्यवस्था पूरे ताल मेल के साथ किस तरह् चल सकती थी? यह क़ायनात दो विरोधी शक्तियों का युद्ध स्थल बन कर रह जाती। यह एक दलील ही इस धारणा को असत्य एवं ग़लत ठहराने के लिए काफ़ी है।

अर्थात जब यह एक वास्तविकता है कि यह पूरी क़ायनात अल्लाह ही ने पैदा की है तो फिर किसी और के ख़ुदा होने या देवी देवता होने का सवाल ही नहीं पैदा होता है?

दोबारा उठाए जाने के बारे में मनुष्य संदेह में पड़ा हुआ है। जिस हस्ती ने मिट्टी से मनुष्य की रचना की हो वह उसे दोबारा मिट्टी से उठा कर खड़ा क्यों नहीं कर सकती? और जिसने मौत की घड़ी निश्चित की कि कोई व्यक्ति उसको टाल नहीं सकता तो वह क़ियामत की घड़ी को किस तरह़ टाल सकेगा? जिस तरह़ वह निश्चित समय पर मरने के लिए मजबूर होता है उसी तरह़ वह निश्चित समय पर दोबारा उठ खड़े होने के लिए भी बेबस होगा।

2 هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ طِيْنٍ ثُمَّ قَضٰى اَجَلًا ؕ وَاَجَلٌ مُّسَمًّى عِنْدَهٗ ثُمَّ اَنْتُمْ تَمْتَرُوْنَ۝

उ़लमा-ए-तफ़्सीर ने लिखा है कि यहाँ **"सुम्मा"** का लफ़्ज़ इस के लिए आया है कि इन तमाम दलायल के बावजूद जो अल्लाह तआ़ला के ख़ालिक़ व मालिक होने पर दलालत करती हैं। शिर्क करना अ़क़्ली तौर पर भी ग़लत है, लेकिन उन मुश्रिकों का ह़ाल यह है कि इन दलायल के बावजूद जो अल्लाह के साथ ग़ैरों को शरीक बनाते हैं।

शिर्क के बाद दोबारा उठाए जाने को रद्द किया जा रहा है। यानी आसमान व ज़मीन की पैदाइश मौत के बाद उठाए जाने पर क़ादिर होने की बड़ी दलील है, लेकिन चूंकि इख़्तिलाफ़ (मतभेद) इन्सानों का दोबारा ज़िन्दा किया जाना है, इसलिए यहाँ इन्सान की पैदाइश मिट्टी से बताई गई है। इस एतिबार से तमाम इन्सान ह़ज़रत आदम (अ़लै०) की औलाद हैं, या इस एतिबार से वह नुत्फ़ा जिस से इन्सान वजूद में आता है, वह मिट्टी से बना होता है। आयत में पहले **"अज्ल"** से मुराद मौत और दूसरे **"अज्ल"** से क़ियामत का दिन माना गया है और **"इ़न्दह"** का मतलब यह है कि क़ियामत के दिन का इ़ल्म सिर्फ़ अल्लाह को ही है।

3 وَهُوَ اللّٰهُ فِي السَّمٰوٰتِ وَفِي الْاَرْضِ ؕ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَجَهْرَكُمْ وَيَعْلَمُ مَا تَكْسِبُوْنَ۝

आसमानों और ज़मीन में सिर्फ़ वही अल्लाह अ़िबादत के लायक़ है। वह दिलों में खट्कने वाली बातों और आ़ज़ा (अंगों) के तमाम कामों की ख़बर रखता है। इन्सान जो भी ख़ैर व शर करता है, वह उन सब को जानता है। सूरः ज़ुख़्रुफ़ की आयत وَهُوَ الَّذِيْ فِي السَّمَآءِ اِلٰهٌ وَّفِي الْاَرْضِ اِلٰهٌ ؕ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْعَلِيْمُ में भी इसी को बयान किया गया है।

'जहमिया' ने इस आयत से दलील लिया है कि अल्लाह तआ़ला हर जगह मौजूद है, लेकिन अक्सर मुफ़स्सिरीन ने इस बात को रद्द किया है और कहा है कि अल्लाह तआ़ला अ़र्श पर इस कैफ़ियत के साथ मुस्तवा (विराजमान) है, जो उस की अ़ज़्मत व जलाल के लायक़ है। अल्बत्ता उस का इ़ल्म हर चीज़ को मुह़ीत (घेरे हुए) है, वह अपने इ़ल्म के ज़रिये हर चीज़ से वाक़िफ़ है।

4 وَمَا تَاْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ۝

कुफ़्फ़ारे मक्का के बारे में कहा जा रहा है कि जब भी कोई निशानी अल्लाह की तरफ़ से आई, जैसा कि ऊपर कुछ निशानियों का ज़िक्र आया, तो उन्होंने उन से नसीह़त ह़ासिल करने और फ़ायदा उठाने के बजाय एराज़ व इन्कार से काम लिया।

5 فَقَدْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ؕ فَسَوْفَ یَاْتِیْهِمْ اَنْۢبٰٓؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ یَسْتَهْزِءُوْنَ۝

"हक़्" से मुराद या तो कुर्आने करीम है या नबी करीम (सल्ल०) की मुबारक ज़ात। इस आयत में कुफ़्फ़ारे मक्का के लिए वअ़ीद (चेतावनी) है कि अगर वह **"हक़्"** को झुठलाते हैं तो जान लें कि इस झुठलाने का अन्जाम वह पाकर रहेंगे, चुनांचे मैदाने बद्र में वह लोग काट दिये जाएँगे।

6 اَلَمْ یَرَوْا كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ مَّكَّنّٰهُمْ فِی الْاَرْضِ مَا لَمْ نُمَكِّنْ لَّكُمْ وَ اَرْسَلْنَا السَّمَآءَ عَلَیْهِمْ مِّدْرَارًا ۪
وَّ جَعَلْنَا الْاَنْهٰرَ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِیْنَ۝

कुफ़्फ़ारे मक्का को फिर नसीह़त की जा रही है और उन्हें धमकी दी जा रही है कि क्या उन लोगों ने उन क़ौमों का ह़ाल नहीं जाना जो उन से पहले गुज़र चुकी हैं कि जब वह अल्लाह के साथ सरकशी पर आमादा हो गईं तो उस ने किस तरह़ उन्हें हलाक कर दिया, जबकि वह क़ौमें कुफ़्फ़ारे मक्का से शान व शौकत, कुव्वत व सल्तनत में कहीं ज़्यादा बढ़ कर थीं। अल्लाह तआ़ला ने उन की रस्सी ढ़ीली कर दी, उन पर नेअ़मतों की बारिश की, माल व दौलत, आल व औलाद और दुनियावी एतिबार से बड़ा मक़ाम अ़ता किया। बारिश की कसरत हो गई और उन के लिए नहरें जारी कर दीं और जब इन नेअ़मतों का शुक्र अदा करने के बजाय गुनाहों में आगे बढ़ते गये तो अल्लाह ने उन के गुनाहों की वजह से उन्हें पकड़ लिया और हलाक कर दिया और दूसरी क़ौम को मौक़ा दिया। मक़्सद यह है कि जब इन क़ौमों का यह ह़ाल हुआ तो अल्लाह कुफ़्फ़ारे मक्का को भी हलाक कर सकता है।

7 وَ لَوْ نَزَّلْنَا عَلَیْكَ كِتٰبًا فِیْ قِرْطَاسٍ فَلَمَسُوْهُ بِاَیْدِیْهِمْ لَقَالَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْۤا اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِیْنٌ۝

इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने कुफ़्फ़ारे मक्का की शिद्दत को एक मह़सूस मिसाल के ज़रिये वाज़ेह़ किया है, कुफ़्र में उन की सख़्ती का ह़ाल यह है कि अगर अल्लाह अपने रसूल को काग़ज़ पर लिखी हुई एक किताब नाज़िल कर दे, जिसे वह अपने हाथों से छू कर जान ले कि यह काग़ज़ पर लिखी हुई किताब है, तो भी घमण्ड में आकर यही कहेंगे कि यह तो खुला हुआ जादू है। ऐसा कैसे हो सकता है कि अल्लाह तआ़ला आसमान से लिखी हुई किताब उतार दे।

ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर लिखते हैं कि मह़सूस दलायल को देख लेने के बावजूद उन का यह घमण्ड वैसा ही है, जैसा कि अल्लाह ने उन के बारे में सूरः ह़िज्र आयत नं० 14/15 में फ़रमाया है-

وَ لَوْ فَتَحْنَا عَلَیْهِمْ بَابًا مِّنَ السَّمَآءِ فَظَلُّوْا فِیْهِ یَعْرُجُوْنَ۝ لَقَالُوْۤا اِنَّمَا سُكِّرَتْ اَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَّسْحُوْرُوْنَ۝

कि "अगर हम पर आसमान का कोई दरवाज़ा खोल दें और यह उस पर चढ़ने भी लग जाएँ, तब भी कहेंगे कि हमारी आँखें ख़राब हो गईं है बल्कि हम पर जादू कर दिया गया है।" और सूरः तूर आयत नं० (44) में फ़रमाया وَ اِنْ یَّرَوْا كِسْفًا مِّنَ السَّمَآءِ سَاقِطًا یَّقُوْلُوْا سَحَابٌ مَّرْكُوْمٌ "और अगर वह आसमान से गिरता हुआ कपड़ा भी देख लें तो कहेंगे तह-ब-तह बादल हैं। "यानी उन के हठधर्मी का ह़ाल यह है कि खुली निशानियाँ देख लेने के बावजूद उन की अपनी कोई मनमानी बात गढ़ लेंगे, लेकिन उन्हें अल्लाह

की तरफ़ से हिदायत के दलायल मान कर अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान नहीं लाएँगे।

8 وَقَالُوا لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ مَلَكٌ ۖ وَلَوْ أَنْزَلْنَا مَلَكًا لَقُضِيَ الْأَمْرُ ثُمَّ لَا يُنْظَرُونَ ۝

इस में काफ़िरों के एक नये क़िस्म के घमण्ड और सरकशी को बयान किया गया है। उन्होंने कहा कि अगर मुहम्मद (सल्ल०) नबी हैं तो अल्लाह ने एक फ़रिश्ता क्यों न आसमान से उतार दिया जिसे हम देखते और जो हमें बताता कि यह नबी हैं ताकि हम उस पर ईमान ले आते? अल्लाह तआ़ला ने इस का जवाब दिया और फ़रिश्ता न भेजने की वजह बयान की कि यह तो अपनी मौत तलाश करने और अपने हाथ से अपनी क़ब्र खोदने की तरह़ है, क्योंकि फ़रिश्ते का उस की अस्ल शक्ल में उतर आना सब से खुली व आख़िरी निशानी होगी और अगर उस के बाद भी ईमान न लाए तो उन्हें अल्लाह के अ़ज़ाब से कोई नहीं बचा सकता। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने सूरः ह़िज्र आयत नं० (8) में फ़रमाया है- مَا نُنَزِّلُ الْمَلَائِكَةَ إِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوا إِذًا مُنْظَرِينَ कि “हम फ़रिश्तों को ह़क़ के साथ ही उतारते हैं और उस वक़्त वह मोहलत दिये गये नहीं होते” और सूरः फ़ुर्क़ान आयत नं० (22) में फ़रमाया हैः-

يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلَائِكَةَ لَا بُشْرَىٰ يَوْمَئِذٍ لِلْمُجْرِمِينَ “वह लोग जिस दिन फ़रिश्तों को देख लेंगे, उस दिन उन मुजरिमों को कोई ख़ुशी न होगी।”

9 وَلَوْ جَعَلْنَاهُ مَلَكًا لَجَعَلْنَاهُ رَجُلًا وَلَلَبَسْنَا عَلَيْهِمْ مَا يَلْبِسُونَ ۝

इसमें काफ़िरों के सवाल का दूसरा जवाब है कि अगर काफ़िरों की राय के मुताबिक़ हम नबी (सल्ल०) के साथ फ़रिश्ता भेजते तो उसे इन्सान की सूरत अख़्तियार करनी पड़ती, इसलिए कि इन्सान फ़रिश्ते को उस की अस्ली शक्ल में नहीं देख सकता और आदमी की शक्ल में भेजने की सूरत में काफ़िर कहते हैं कि यह फ़रिश्ते नहीं है यह तो आदमी हैं और दोबारा इसी शुब्हा में पड़ जाते जिस में पहले से थे और इस से कहते कि तुम तो आदमी हो, फ़रिश्ते नहीं और वह अपने फ़रिश्ता होने पर क़ुर्आन या किसी और मोअ़जिज़ा (Miracle) से साबित करता तो उसे दोबारा झुठला देते, जैसा कि उन्होंने नबी करीम (सल्ल०) को झुठला दिया।

10 وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِينَ سَخِرُوا مِنْهُمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝

नबी करीम (सल्ल०) को तसल्ली दी जा रही है कि अगर आप की क़ौम आप का मज़ाक़ उड़ाती है तो कोई तअ़ज्जुब की बात नहीं, आप से पहले नबियों के साथ उन की क़ौमों ने ऐसा बर्ताव किया तो दुनिया में ज़लील व रुस्वा कर दिये गये और आख़िरत में दर्दनाक अ़ज़ाब उन का इन्तिज़ार कर रहा है।

इस आयत में आप (सल्ल०) और मोमिनों के लिए दुनिया में नुस्रत व फ़तेह़याबी (कामियाबी) का वादा और आख़िरत में अच्छे अन्जाम की ख़ुशख़बरी भी है कि ज़िल्लत व रुस्वाई और क़त्ल व हलाकत कुफ़्फ़ारे मक्का की क़िस्मत बन गई और नबी करीम (सल्ल०) और मुसलमानों को इ़ज़्ज़त व ग़ल्बा (प्रभुत्व) नसीब हुआ।

11 قُلْ سِيْرُوْا فِي الْأَرْضِ ثُمَّ انْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ۝

अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) से कहा कि अगर कुफ़्फ़ारे मक्का कुर्आन में बयान की गई क़ौमों के वाक़िआ़त में शुब्हा करते हैं तो आप उन से कह दीजिए कि ज़मीन में घूम कर अम्बिया को झुठलाने वाली क़ौमों का ह़ाल मालूम कर लो कि किस तरह़ अल्लाह ने उन्हें हलाक कर दिया। पिछली आयत में नबी करीम (सल्ल०) को जो तसल्ली दी गई है, उस को यहाँ मुकम्मल किया गया है और इस बात की ताकीद की गई है कि उन काफ़िरों का अन्जाम भी पहलों जैसा होगा। चुनाँचे अल्लाह तआ़ला का यह वादा मैदाने बद्र में पूरा हुआ।

आयत नं० 12 से 26 तक

قُلْ لِّمَنْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ قُلْ لِّلّٰهِ ؕ كَتَبَ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ؕ لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ؕ اَلَّذِيْنَ خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ
فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَلَهٗ مَا سَكَنَ فِي الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ؕ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝ قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَتَّخِذُ وَلِيًّا فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ
يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ ؕ قُلْ اِنِّيْۤ اُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَسْلَمَ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ قُلْ اِنِّيْۤ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ
عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝ مَنْ يُّصْرَفْ عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمَهٗ ؕ وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ ۝ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗۤ اِلَّا
هُوَ ؕ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ ؕ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ۝ قُلْ اَيُّ شَيْءٍ اَكْبَرُ شَهَادَةً ؕ
قُلِ اللّٰهُ ۙ شَهِيْدٌۢ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ۟ وَاُوْحِيَ اِلَيَّ هٰذَا الْقُرْاٰنُ لِاُنْذِرَكُمْ بِهٖ وَمَنْۢ بَلَغَ ؕ اَئِنَّكُمْ لَتَشْهَدُوْنَ اَنَّ مَعَ اللّٰهِ اٰلِهَةً اُخْرٰى ؕ
قُلْ لَّاۤ اَشْهَدُ ۚ قُلْ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّاِنَّنِيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ۝ اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ ۘ اَلَّذِيْنَ
خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ
جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْۤا اَيْنَ شُرَكَآؤُكُمُ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ۝ ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتْنَتُهُمْ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْا وَاللّٰهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِيْنَ ۝
اُنْظُرْ كَيْفَ كَذَبُوْا عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ ۚ وَجَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْۤ
اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ؕ وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ؕ حَتّٰۤى اِذَا جَآءُوْكَ يُجَادِلُوْنَكَ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اِنْ هٰذَاۤ اِلَّاۤ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ وَهُمْ
يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَيَنْئَوْنَ عَنْهُ ۚ وَاِنْ يُّهْلِكُوْنَ اِلَّاۤ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۝

अनुवाद-

(12) कह दीजिए, ''आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है किसका है?'' (फिर) कह दीजिए, ''अल्लाह ही का है, उसी ने अपने ऊपर रहमत को लाज़िम कर लिया है, 'वही' तुम सब को क़ियामत के दिन जिसमें कुछ भी शक नहीं, ज़रूर जमा करेगा।'' जिन लोगों ने अपने आप को नुक़सान में डाल रखा है, तो वे ईमान नहीं लाते। (13) और 'उसी' का है जो कुछ रात में ठहरता है और दिन में, और 'वह' सब कुछ सुनता, जानता है। (14) कह दीजिए, ''क्या मैं आसमानों और ज़मीन को पैदा करने वाले अल्लाह के सिवा किसी और को वली (संरक्षक) बना लूँ? और 'वही' खिलाता है और खुद नहीं खाता।'' कह दीजिए, ''मुझे'' हुक्म हुआ है कि सबसे पहले मैं उसके आगे झुक जाऊँ (यानी इस्लाम लाऊँ), और यह कि तुम मुश्रिकों (अल्लाह के साथ साझीदारों) में हरगिज़ शामिल न होना।'' (15) कह दीजिए, ''अगर मैं अपने 'रब' की नाफ़रमानी करूँ, तो (उस हालत में) मुझे एक बड़े दिन के अ़ज़ाब का डर है।'' (16) जिस व्यक्ति से उस दिन अ़ज़ाब टाल दिया गया, उस पर अल्लाह ने मेहरबानी फ़रमायी, और यह खुली हुई कामियाबी है। (17) और अगर अल्लाह तुम्हें कोई तकलीफ़ पहुँचाए, तो उसके सिवा कोई दूर करने वाला नहीं; और अगर 'वह' तुम्हें कोई भलाई पहुँचाए तो उसे हर चीज़ पर क़ुदरत (सामर्थ्य) है। (18) और उसे अपने बन्दों पर पूरा अधिकार है, और 'वह' हिक़मत वाला, ख़बर रखने वाला है। (19) कह दीजिए, ''किस चीज़ की गवाही सबसे बड़ी है?'' कह दीजिए, ''मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह गवाह है, और यह क़ुर्आन मेरी ओर उतारा गया है, ताकि मैं इसके ज़रिये तुम्हें सचेत कर दूँ; और जिस व्यक्ति को यह पहुँचे वह भी ऐसा ही करे; क्या तुम हक़ीक़त

में गवाही देते हो कि अल्लाह के साथ कोई दूसरा भी मअ़बूद है?'' कह दीजिए,''मैं तो इसकी गवाही नहीं देता। कह दीजिए, 'वह' तो केवल अकेला ही मअ़बूद है, और जिसको तुम लोग साझी ठहराते हो, उससे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं।'' (20) जिन लोगों को 'हमने' किताब दी है, वे उसे इस तरह पहचानते हैं, जिस तरह अपने बेटों को पहचानते हैं; जिन्होंने अपने आप को घाटे में डाला है, वे ईमान नहीं लाते। (21) और उस व्यक्ति से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा? जो अल्लाह पर झूठ गढ़े या उसकी आयतों को झुठलाए, बेशक ज़ालिम लोग कभी कामियाब नहीं हो सकते। (22) और जिस दिन 'हम' सब लोगों को जमा करेंगे, फिर मुश्रिकों से पूछेंगे, कि वे तुम्हारे साझीदार कहाँ हैं जिनका तुम दावा किया करते थे?'' (23) फिर उनका कोई फ़ित्ना (बहाना) बाक़ी न रहेगा, सिवाय इसके, कि वे कहेंगे, ''अल्लाह की क़सम! हमारे रब हम मुश्रिक (बहुदेववादी) नहीं थे।'' (24) देखो! कैसा वे अपने बारे में झूठ बोले, और वह सब गुम हो कर रह गया, जो कुछ वे गढ़ा करते थे; (25) और उनमें कुछ ऐसे हैं जो तुम्हारी ओर कान लगाए रखते हैं, और 'हमने' तो उनके दिलों पर पर्दे डाल रखे हैं, कि वे उसको समझ न सकें, और उनके कानों में बोझ पैदा कर दिया, और वे चाहे हर तरह की निशानियाँ देख लें, मानेंगे नहीं; यहाँ तक कि जब वे तुम्हारे पास आकर तुमसे झगड़ते हैं, तो जो काफ़िर हैं, कहते हैं, ''यह तो बस पहले के लोगों की कहानियाँ हैं।'' (26) और वे उससे रोकते हैं और ख़ुद भी उससे दूर रहते हैं, और वे तो बस अपने आप को ही हलाक करते हैं, और उन्हें एहसास भी नहीं।

आयत नं० 12 से 26 तक की व्याख्या

12 قُلْ لِّمَنْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ قُلْ لِّلّٰهِ ۭ كَتَبَ عَلٰي نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۭ لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ۭ
اَلَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝

नबी करीम (सल्ल०) को हुक्म दिया गया कि आप काफ़िरों से पूछिए कि आसमानों और ज़मीन का मालिक कौन है। फिर अल्लाह ने आप (सल्ल०) को हुक्म दिया कि आप ख़ुद ही जवाब दे दीजिए कि अल्लाह के अ़लावा और कौन हो सकता है और यह जवाब काफ़िरों को भी मालूम है, इस में किसी का इख़्तिलाफ़ नहीं है।

दुनिया में अल्लाह तआ़ला अपने दुश्मनों और बाग़ियों को भी रिज़्क़ देता है। फिर जिस तरह़ अल्लाह तआ़ला ने इन्सानियत में कमज़ोर लोगों जैसे- औ़रतों, यतीमों, ग़ुलाम, ग़रीब, मिस्कीनों के हुक़ूक़ (अधिकारों) की हिफ़ाज़त की, वह अल्लाह तआ़ला की रह़मत का सुबूत है।

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) फ़रमाते हैं, "मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को यह फ़रमाते हुए सुना कि अल्लाह तआ़ला ने रह़मत के सौ ह़िस्से बनाये हैं उस में से निन्नान्वें अपने पास रखे और ज़मीन पर एक ह़िस्सा भेजा। इसी एक ह़िस्से से मख़्लूक़ एक दूसरे पर रह़म करती है।" **(बुख़ारी)**

यह शब्द भी रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ज़बानी अदा किया गया है, यानी आप यह भी कह दीजिए कि अल्लाह अपने बन्दों पर रह़म करता है, तौबः व इस्तिग़्फ़ार को क़ुबूल करता है और सज़ा देने में जल्दी नहीं करता और अ़ज़ाब व ग़ज़ब के जो अह़काम क़ुर्आन में बयान हुए हैं, उन का तअ़ल्लुक़ बन्दों

के आमाल से है और इसी रहमत की वजह से अल्लाह ने इन्सानों को अच्छी फ़ितरत दिया, अपनी पहचान की तरफ़ उन की रहनुमाई की, अम्बिया भेजे और किताबें नाज़िल कीं। सहीहैन की रिवायत है, “अल्लाह ने फ़रमाया कि बेशक मेरी रहमत मेरे ग़ज़ब पर ग़ालिब है।” **(बुख़ारी, मुस्लिम)**

अल्लाह तआला ने अपनी रहमत बयान करने के बाद आयत के इस हिस्से में नबी करीम (सल्ल०) की ज़बानी यह ख़बर दी कि रहमते इलाही का तक़ाज़ा है कि अल्लाह उन्हें दुनिया में मोहलत दे वह उन्हें बिलकुल ख़त्म नहीं करेगा, लेकिन क़ियामत के दिन उन सब को इकट्ठा करेगा और उन के करतूतों पर उन की पकड़ करेगा।

यह शब्द अल्लाह तआला की ज़बानी है और इस में काफ़िरों की बदतरीन हालत को बयान किया गया है, कि जिन लोगों ने अपनी पूंजी ज़ाया कर दी और जिन्होंने अक्ल खो दी और रसूलुल्लाह (सल्ल०) से वह्य (क़ुर्आन) से फ़ायदा नहीं उठाया, ऐसे लोग क़ियामत पर ईमान नहीं लाएँगे और न उस दिन के बुरे अन्जाम से वह डरेंगे।

हदीस में है, “अल्लाह तआला ने रहमत के सौ हिस्से किये हैं और उन में से निन्यान्वें हिस्से अपने पास रख लिये हैं और ज़मीन पर सिर्फ़ एक हिस्सा उतारा है और उस एक हिस्से की बदौलत मख़्लूक़ एक दूसरे पर रहम करती है यहाँ तक कि घोड़ी अपने सींग अपने बच्चे को नहीं लगने देती कि कहीं उसे तक्लीफ़ न पहुँचे।” **(सहीह बुख़ारी, अल् अदब, बाब 19, हदीस 6000)**

एक दूसरी रिवायत में रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, “ जब अल्लाह तआला ने क़ायनात (संसार) को बना लिया तो अल्लाह ने अपनी किताब में, जो उस के पास उस के अर्श पर मौजूद है, लिख लिया, “बेशक मेरी रहमत मेरे ग़ज़ब पर ग़ालिब (प्रभावी) आ गई है।” **(सहीह बुख़ारी, बदउल्ख़ल्क़, बाब 1, हदीस 3194)**

13 وَلَهٗ مَا سَكَنَ فِي الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ؕ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝

पिछली आयत में बताया गया है कि आसमानों और ज़मीन का मालिक सिर्फ़ अल्लाह है और इस आयत में बताया गया है कि रात व दिन में जो कुछ पाया जाता है उस का मालिक सिर्फ़ अल्लाह है और मालूम है कि आसमान व ज़मीन के अलावा कोई मकान नहीं और रात व दिन के अलावा कोई ज़माना नहीं। इसलिए मालूम हुआ कि मकान और उस की तमाम चीज़ें और ज़माने और उस में होने वाले तमाम हादसे का मालिक सिर्फ़ अल्लाह है। वह सब कुछ सुनता और जानता है उस से कुछ भी छुपा हुआ नहीं है।

14-16 قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَتَّخِذُ وَلِيًّا فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ ؕ قُلْ اِنِّيْۤ اُمِرْتُ اَنْ
اَكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَسْلَمَ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ قُلْ اِنِّيْۤ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ
عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝ مَنْ يُّصْرَفْ عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمَهٗ ؕ وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ ۝

मुशिरकीने मक्का ने नबी करीम (सल्ल०) को बुतों की अिबादत करने को कहा तो अल्लाह ने उन से कहा कि उन से कह दीजिए कि क्या मैं अल्लाह के अलावा किसी और को अपना मअबूद बना लूँ

जो आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है और जो तमाम मख़्लूक़ात को रोज़ी देने वाला है और वह उन का मुहताज नहीं है।

आप कह दीजिए कि मुझे यह हुक्म दिया गया है कि मैं पहला वह शख़्स बनूँ जो अल्लाह के सामने मुख़्लिसाना (निःस्वार्थतापूर्वक) अपना सर झुका दे, ताकि दूसरों के लिए ख़ैर का नमूना बनूँ और मुझ से यह भी कहा गया है कि तुम मुश्रिकों में से न हो और आप यह भी कह दीजिए कि अगर मैंने अपने रब की नाफ़रमानी की तो क़ियामत के दिन का अ़ज़ाब मुझे ख़ौफ़ज़दा कर रहा है, इस से जो आदमी उस दिन बचा लिया जाएगा यानी अल्लाह ने उस पर रहम कर दिया तो यही सब से बड़ी कामियाबी है।

सूरः आले इमरान आयत नं० (185) में अल्लाह ने फ़रमाया فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَأُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ कि "जो जहन्नम की आग से दूर कर दिया गया और जन्नत में दाख़िल कर दिया गया तो वह कामियाब हो गया।"

17 وَإِنْ يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ ۖ وَإِنْ يَمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

यह एक दूसरी दलील है कि अल्लाह के अ़लावा कोई मअ़बूद नहीं, इसलिए कि नफ़ा और नुक़्सान का मालिक सिर्फ़ वही है। वह अपनी मख़्लूक़ात में जिस तरह़ चाहता है करता है, न कोई उस के फ़ैसले को चैलेंज कर सकता है और न ही कोई उसे रद्द कर सकता है।

'सह़ीह़ बुख़ारी' में है कि नबी करीम (सल्ल०) कहा करते थे, "ऐ अल्लाह! तू जिसे दे उसे कोई मना नहीं कर सकता और तू जिसे मना कर दे उसे कोई दे नहीं सकता और किसी साह़िबे ह़ैसियत को उस की ह़ैसियत तेरे मुक़ाबिले में नफ़ा नहीं पहुँचा सकती।"

18 وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ

आसमानों और ज़मीन में तमाम मख़्लूक़ात की गर्दनें उसी के लिए झुकी हुई हैं, वह हर चीज़ पर ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) है। तमाम मख़्लूक़ात उस की अ़ज़्मत, जलाल और क़हर का इक़्रार करती और उस के फ़ैसले के सामने बेबस है।

19 قُلْ أَيُّ شَيْءٍ أَكْبَرُ شَهَادَةً ۖ قُلِ اللَّهُ ۖ شَهِيدٌ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۚ وَأُوحِيَ إِلَيَّ هَٰذَا الْقُرْآنُ لِأُنْذِرَكُمْ بِهِ وَمَنْ بَلَغَ ۚ
أَئِنَّكُمْ لَتَشْهَدُونَ أَنَّ مَعَ اللَّهِ آلِهَةً أُخْرَىٰ ۚ قُلْ لَا أَشْهَدُ ۚ قُلْ إِنَّمَا هُوَ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ وَإِنَّنِي بَرِيءٌ مِمَّا تُشْرِكُونَ

मुश्रिकीने मक्का ने नबी करीम (सल्ल०) से कहा कि किसी ऐसे आदमी को लाओ जो तुम्हारे नुबूव्वत की शहादत दे, इसलिए कि अहले किताब ने तो उस की शहादत देने से इन्कार कर दिया है तो अल्लाह तआ़ला ने आप (सल्ल०) को हुक्म दिया कि आप उन काफ़िरों से कहिए कि अल्लाह से बढ़कर कौन गवाह हो सकता है, इसलिए कि अल्लाह की ख़बर में झूठ का सन्देह नहीं हो सकता और यह क़ुर्आन मेरे नुबूव्वत की तस्दीक़ करता है, जिस की तरह़ का तुम लोग बना कर लाने से बेबस हो और यह क़ुर्आन इसलिए नाज़िल किया गया है ताकि ऐ अहले मक्का! मैं तुम्हें और तमाम इन्सानों को डराऊँ।

इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) को हुक्म दिया कि आप मुश्रिकीन के शिर्क का इन्कार करें और कहें कि तुम लोग तो अल्लाह के साथ दूसरे मअ़बूदों के होने की गवाही देते हो, लेकिन मैं उन का इन्कार करता हूँ। इस के बाद अल्लाह ने आप (सल्ल०) को हुक्म दिया कि वह सिर्फ़ अल्लाह की वह्दानियत (एकेश्वरवाद) का एलान करें और झूठे मअ़बूदों से अलग होने का इज़्हार करें।

20 الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ أَبْنَاءَهُمُ ۘ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ

पिछली आयतों में नबी करीम (सल्ल०) की नुबूव्वत की तस्दीक़ और मुश्रिकीने मक्का की रद्द में जो बात कही गई है उस की तफ़्सील यह है कि तुम लोग जो कहते हो कि अहले किताब ने मेरे नबी की नुबूव्वत की गवाही नहीं दी है, तो यह उन अहले किताब की झूठ बयानी और बद्क़िस्मती है कि सब कुछ जानते हुए इन्कार कर रहे हैं, वह तो मेरे नबी (सल्ल०) को इसी तरह़ पहचानते हैं जिस तरह़ वह अपनी औलाद को पहचानते हैं, इसलिए कि तमाम नबियों ने मुह़म्मद (सल्ल०) की सिफ़ात, उन का मुल्क, उन का दारुल् हिजरत (हिजरत करने की जगह) और उन की उम्मत के औसाफ़ (गुण) बयान किये हैं। इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने इस के बाद फ़रमाया कि इन तमाम निशानियों के बावजूद नबी करीम (सल्ल०) की नुबूव्वत पर जानबूझ कर वही लोग ईमान नहीं लाएँगे जिन की क़िस्मत में नुक़्सान व ख़सारा लिख दिया गया है और उन का ईमान न लाना इस बात की दलील नहीं है कि मुह़म्मद (सल्ल०) नबी नहीं हैं।

21 وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ ۗ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ

मुश्रिकीने मक्का और अहले किताब के बारे में कहा जा रहा है कि उन से बड़ा ज़ालिम कौन हो सकता है। मुश्रिकीन का अपने बुतों के बारे में एतिक़ाद (विश्वास) था कि यह अल्लाह के नज़्दीक हमारे सिफ़ारशी हैं, इसलिए उन की अ़िबादत की और अहले किताब ने क़ुर्आन करीम और नबी करीम (सल्ल०) का इन्कार किया तो यह सभी लोग तौह़ीद और इस्लाम के ख़िलाफ़ अपने हठधर्मी की वजह से बड़े ज़ालिम हैं और ज़ालिम कभी कामियाब नहीं हो सकता।

22 وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا أَيْنَ شُرَكَاؤُكُمُ الَّذِينَ كُنتُمْ تَزْعُمُونَ

अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन मुश्रिक व काफ़िर इन्सानों, जिन्नों और शैतानों को जमा करेगा और उन से उन बुतों और ग़ैरुल्लाह के बारे में पूछेगा जिन्हें वह अल्लाह के साथ शरीक बनाते थे कि कहाँ गये वह जिन्हें तुम अल्लाह का शरीक समझते थे और इस सवाल का मक़्सद मुश्रिकीन को ज़लील व रुस्वा करना होगा।

23 ثُمَّ لَمْ تَكُن فِتْنَتُهُمْ إِلَّا أَن قَالُوا وَاللَّهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِينَ

पहले अल्लाह तआ़ला ने मुश्रिकीन के ह़ालात और उन के शिर्क में फँस जाने का ज़िक्र किया और अब यह ख़बर दी जा रही है कि जब वह क़ियामत के दिन मुश्किल ह़ालात को अपनी आँखों के सामने

देखेंगे तो शिर्क से अपने बरी होने का एलान कर देंगे और अपने इस झूठ पर क़सम भी खा जाएँगे। इस तरह़ यहाँ फ़ित्ना **“फ़ित्नह”** से मुराद कुफ़्र है। एक दूसरा क़ौल यह है कि **“फ़ित्नह”** से मुराद उन का जवाब है, यानी क़ियामत के रोज़ मुश्रिकीन का जवाब शिर्क का इन्कार और उस से बरी होने का इज़्हार होगा और दोनों ही क़ौल के मुताबिक़ उन का उ़ज़्र एक दूसरा गुनाह होगा जो उन के मुश्रिक होने की मज़ीद तस्दीक़ कर रहा होगा।

24 انْظُرْ كَيْفَ كَذَبُوا عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ ۚ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝

अल्लाह तआ़ला कहेगा कि किस तरह़ यह लोग आ़लिमुल् ग़ैब (परोक्ष ज्ञान रखने वाले) के सामने अपने मुश्रिक होने का इन्कार करके अपने आप को झुठला रहे हैं और किस तरह़ शरीक ठहराने वालों के बारे में उन की उम्मीदें ख़ाक में मिल गईं, न वह सिफ़ारशी बन सके और न ही उन की मदद कर सके।

25 وَمِنْهُمْ مَنْ يَسْتَمِعُ إِلَيْكَ ۖ وَجَعَلْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا ۚ وَإِنْ يَرَوْا كُلَّ آيَةٍ
لَا يُؤْمِنُوا بِهَا ۚ حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوكَ يُجَادِلُونَكَ يَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝

यह मुश्रिक जब नबी करीम (सल्ल०) कुर्आने करीम की तिलावत करते तो वह बज़ाहिर सुनते, लेकिन उस से कोई फ़ायदा नहीं होता था, इसलिए कि वह इस में ग़ौर व फ़िक्र से काम नहीं लेते थे और न उन की नियत हिदायत ह़ासिल करने की होती थी। इसलिए अल्लाह तआ़ला ने उन के दिलों पर पर्दा डाल दिया था और उन के कानों में डाट डाल दी थी ताकि ख़ैर की बातों को सुनें ही नहीं।

इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि जो कुछ उन के बारे में कहा गया है, वह कुर्आन ही के साथ ख़ास नहीं है बल्कि तमाम निशानियाँ देख लेने के बाद भी वह ईमान न लाएँगे और यही कहेंगे कि यह सब जादूगरी है, इसलिए कि उन के अन्दर न समझ है और न इन्साफ़ करने की ताक़त और अल्लाह की निशानियाँ और ह़क़ को झुठलाने में तो इतने आगे हैं कि वह बातिल (असत्य) का हर सहारा लेकर आप से बह़स करते हैं और कहते हैं कि यह पहले के लोगों की अट्कल पच्चू की बातें हैं।

26 وَهُمْ يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَيَنْأَوْنَ عَنْهُ ۖ وَإِنْ يُهْلِكُونَ إِلَّا أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ۝

मुश्रिकीने मक्का कुर्आन करीम को सिर्फ़ झुठलाने पर ही बस नहीं करते हैं, बल्कि लोगों को इस को पढ़ने और सुनने से भी रोकते हैं कि कहीं इस से प्रभावित न हो जाएँ और ख़ुद भी नफ़रत का इज़्हार करते हुए इस से दूर रहते हैं और इस से नबी करीम (सल्ल०) और मुसलमानों को कुछ नुक़्सान नहीं पहुँचा सकेंगे। इसलिए कि अल्लाह अपने नूर को मुकम्मल और अपने दीन को ग़ालिब करके रहेगा जैसा कि उस का वादा है। यह लोग ख़ुद अपने आप को हलाकत के दहाने पर ले जा रहे हैं, लेकिन उन्हें इस का एह़सास नहीं हो रहा है।

आयत नं 27 से 37 तक

وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلَى النَّارِ فَقَالُوْا يٰلَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبَ بِاٰيٰتِ رَبِّنَا وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ۝ بَلْ بَدَا لَهُمْ مَّا كَانُوْا يُخْفُوْنَ
مِنْ قَبْلُ ؕ وَلَوْ رُدُّوْا لَعَادُوْا لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ۝ وَقَالُوْٓا اِنْ هِىَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ۝ وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا
عَلٰى رَبِّهِمْ ؕ قَالَ اَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ؕ قَالُوْا بَلٰى وَرَبِّنَا ؕ قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ۝ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِلِقَآءِ اللّٰهِ ؕ حَتّٰٓى اِذَا
جَآءَتْهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً قَالُوْا يٰحَسْرَتَنَا عَلٰى مَا فَرَّطْنَا فِيْهَا ۙ وَهُمْ يَحْمِلُوْنَ اَوْزَارَهُمْ عَلٰى ظُهُوْرِهِمْ ؕ اَلَا سَآءَ مَا يَزِرُوْنَ۝ وَمَا الْحَيٰوةُ
الدُّنْيَآ اِلَّا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ؕ وَلَلدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ۝ قَدْ نَعْلَمُ اِنَّهٗ لَيَحْزُنُكَ الَّذِىْ يَقُوْلُوْنَ فَاِنَّهُمْ لَا
يُكَذِّبُوْنَكَ وَلٰكِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ۝ وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ فَصَبَرُوْا عَلٰى مَا كُذِّبُوْا وَاُوْذُوْا حَتّٰٓى اَتٰىهُمْ نَصْرُنَا ۚ
وَلَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ۚ وَلَقَدْ جَآءَكَ مِنْ نَّبَاِى الْمُرْسَلِيْنَ۝ وَاِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكَ اِعْرَاضُهُمْ فَاِنِ اسْتَطَعْتَ اَنْ تَبْتَغِىَ نَفَقًا فِى الْاَرْضِ
اَوْ سُلَّمًا فِى السَّمَآءِ فَتَاْتِيَهُمْ بِاٰيَةٍ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَمَعَهُمْ عَلَى الْهُدٰى فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ۝ اِنَّمَا يَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ يَسْمَعُوْنَ ؔ
وَالْمَوْتٰى يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ ثُمَّ اِلَيْهِ يُرْجَعُوْنَ۝ وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ قَادِرٌ عَلٰٓى اَنْ يُّنَزِّلَ اٰيَةً وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ
لَا يَعْلَمُوْنَ۝

अनुवाद-

(27) और अगर तुम उस वक़्त देख सकते, जब यह आग के पास खड़े किये जाएँगे और कहेंगे, ''क्या ही अच्छा होता! कि हम फिर लौटा दिये जाएँ, ताकि अपने रब की आयतों को न झुठलाएँ, और मानने वालों में हो जाएँ।'' (28) हाँ! बल्कि यह जो कुछ पहले छिपाया करते थे, वह उनके सामने आ गया, और अगर यह (दुनिया में) लौटा भी दिये जाएँ, तो फिर वही कुछ करने लगेंगे, जिससे उनको मना किया गया था, बेशक यह झूठे हैं। (29) और कहते हैं, ''जो कुछ है बस यही हमारी दुनिया की ज़िन्दगी है और हम फिर ज़िन्दा नहीं किये जाएँगे।'' (30) और अगर तुम देख सकते! जब यह अपने रब के सामने खड़े किये जाएँगे, 'वह' (अल्लाह) कहेगा, ''क्या यह (दोबारा ज़िन्दा होना) हक़ नहीं?'' तो वे कहेंगे, ''क्यों नहीं, हमारे रब की क़सम!'' 'वह' कहेगा, ''अच्छा तो उस इन्कार के बदले अ़ज़ाब का मज़ा चखो।'' (31) वे घाटे में पड़े, जिन लोगों ने अल्लाह से मिलने को झुठलाया, यहाँ तक कि जब अचानक उन पर वह घड़ी आ जाएगी, तो वे कहेंगे, ''हाय! अफ़सोस, उस कोताही पर जो इस (क़ियामत) के बारे में हमसे हुई'' और हाल यह होगा कि अपने बोझ अपनी पीठों पर उठाए हुए होंगे, देखो! कितना बुरा बोझ है जो यह उठाए हुए हैं। (32) और दुनिया की ज़िन्दगी एक खेल और तमाशों के अ़लावा कुछ भी नहीं है, और आख़िरत का घर उनके लिए बहुत अच्छा है, जो डर रखते हैं; तो क्या तुम अक़्ल से काम नहीं लेते! (33) 'हमें' मालूम है, जो कुछ वे कहते हैं उससे आप को दुःख पहुँचता है; तो यह हक़ीक़त में आप को नहीं झुठलाते, बल्कि, वे ज़ालिम अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हैं; (34) और आप से पहले भी बहुत-से रसूल झुठलाए जा चुके हैं, तो वे अपने झुठलाए जाने और तकलीफ़ दिये जाने पर सब्र करते रहे, यहाँ तक कि उनके पास हमारी मदद पहुँच गयी, और कोई नहीं, जो अल्लाह की बातों को बदल सके, और आप के पास तो कुछ रसूलों की भी ख़बरें पहुँच चुकी हैं; (35) और अगर उनका मुँह मोड़ना तुम पर बोझ होता है, तो अगर तुमसे हो सके! तो ज़मीन में कोई

सुरंग या आसमानों में कोई सीढ़ी ढूँढ़ निकालो, और उनके पास कोई निशानी ले आओ; और अगर अल्लाह चाहता तो तुम सबको सीधे रास्ते पर इकट्ठा कर देता, इसलिए तुम जाहिलों में (या नादान) न होना। (36) बात यह है, कि क़ुबूल वही करते हैं जो सुनते भी हैं; रहे मुर्दे, तो अल्लाह उन्हें (क़ियामत के दिन) उठा खड़ा करेगा, फिर उसी की ओर पलटेंगे; (37) और वे कहते हैं, ''उस (नबी) पर उसके रब की ओर से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गई?'' कह दीजिए, ''अल्लाह तो इस पर क़ादिर है कि कोई निशानी उतारे, लेकिन उनमें से अक्सर लोग नहीं जानते।''

आयत नं० 27 से 37 तक की व्याख्या

27 وَلَوْ تَرٰى اِذْ وُقِفُوْا عَلَى النَّارِ فَقَالُوْا يٰلَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبَ بِاٰيٰتِ رَبِّنَا وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝

मुशिरकीने मक्का अपने आप को किस तरह हलाक कर रहे हैं उस की कैफ़ियत बयान की जा रही है। वह दुनिया में तो क़ुर्आन करीम को झुठलाया करते हैं, लेकिन आख़िरत में उन्हें अपने इस काम पर शर्मिन्दग़ी और अफ़्सोस होगा और तमन्ना करेंगे कि काश हम दोबारा दुनिया की तरफ़ लौटा दिये जाते तो क़ुर्आन को न झुठलाते बल्कि उस पर ईमान ले आते।

28 بَلْ بَدَا لَهُمْ مَّا كَانُوْا يُخْفُوْنَ مِنْ قَبْلُ ۭ وَلَوْ رُدُّوْا لَعَادُوْا لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝

उन की यह तमन्ना सच्चे दिल और ख़ुलूस पर नहीं होगी, बल्कि उन के दिलों में छुपा हुआ कुफ़्र व शिर्क ज़ाहिर हो जाएगा और उन्हें यक़ीन हो जाएगा कि वह अपने शिर्क की वजह से हलाक होकर रहेंगे। इसीलिए परेशानी के आ़लम में अपनी झूठी तमन्ना का इज़्हार करेंगे, लेकिन अल्लाह जानता है कि अगर वह दोबारा दुनिया की तरफ़ लौटा दिये जाएँ और आख़िरत के अ़ज़ाब का मन्ज़र उन की आँखों के सामने जो है ख़त्म हो जाए तो वह फिर अपने कुफ़्र व शिर्क की तरफ़ लौट जाएँगे। इसलिए कि हर हा़ल में झूठ बोलना उन की फ़ित्रत में दाख़िल है।

29 وَقَالُوْٓا اِنْ هِىَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ ۝

यानी अगर फ़र्ज़ कर लिया जाए कि वह लोग मौत के बाद और क़ियामत के मन्ज़र देख लेने के बाद दोबारा दुनिया में भेज दिये जाएँ तो अल्लाह जानता है कि वह अपने गुनाहों की वजह से यही कहेंगे कि इस दुनियावी ज़िन्दग़ी के बाद अब कोई दूसरी ज़िन्दग़ी नहीं है और मौत के बाद हम दोबारा ज़िन्दा नहीं किये जाएँगे।

30 وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ۭ قَالَ اَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ۭ قَالُوْا بَلٰى وَرَبِّنَا ۭ قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ۝

नबी करीम (सल्ल०) को ख़िताब करके कहा जा रहा है कि जब उन मुशिरकीन की उन के रब के सामने पेशी होगी तो आप के सामने एक अजीब मन्ज़र होगा, जब अल्लाह उन से बतौर सज़ा पूछेगा कि अब बताओ मौत के बाद उठाया जाना हक़ है कि नहीं? तो वह रब की क़सम खाकर कहेंगे हाँ, यह तो बिल्कुल बरहक़ है।

31 قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِلِقَاءِ اللَّهِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَتْهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً قَالُوا يَا حَسْرَتَنَا عَلَىٰ مَا فَرَّطْنَا فِيهَا وَهُمْ يَحْمِلُونَ
أَوْزَارَهُمْ عَلَىٰ ظُهُورِهِمْ ۚ أَلَا سَاءَ مَا يَزِرُونَ ۝

इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने उन लोगों के ख़सारे का ह़ाल बयान किया है जो अल्लाह के हुज़ूर जवाबदेह होने और मौत के बाद उठाये जाने का इन्कार करते हैं, कि इस से बढ़कर ख़सारा और घाटे की बात क्या हो सकती है और वह इसी ह़ाल में रहेंगे यहाँ तक कि जब अचानक मौत उन्हें आ दबोचेगी तो बुलन्द आवाज़ से अपनी ह़सरत व नदामत का एलान करेंगे कि अफ़्सोस हम दुनियावी ज़िन्दग़ी में कम समझी से काम लेते रहे और आज ह़क़ीक़ी ख़सारे का मुँह देखना पड़ रहा है और इस पर यह कि वह अपने गुनाहों को अपनी पुश्त (पीठ) पर ढ़ो रहे होंगे।

उ़लूम-ए-तफ़्सीर ने लिखा है कि बहुत मुम्किन है कि अल्लाह तआ़ला उन के गुनाहों को एक बुरे इन्सान की सूरत दे दें, जिसे काफ़िर मैदाने ह़श्र में अपनी पीठ पर ढ़ोये फिरेगा। जैसा कि बाज़ रिवायतों में आया है और यह भी हो सकता है कि एक मिसाल हो, जिस के ज़रिये क़ियामत के दिन काफ़िरों और मुश्रिकों का ह़ाल बयान करना मक़्सूद हो।

32 وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا لَعِبٌ وَلَهْوٌ ۖ وَلَلدَّارُ الْآخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ يَتَّقُونَ ۗ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝

इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने दुनिया की बे-क़ीमती और आख़िरत की कामियाबी के लिए कोशिश करने का हुक्म दिया है कि ऐ अल्लाह के बन्दों! दुनिया की ज़िन्दग़ी खेल-तमाशा से ज़्यादा कुछ भी नहीं, इसलिए इस की लज़्ज़तों के पीछे न पड़ो और अपनी आख़िरत को कामियाब बनाने की कोशिश में लगे रहो, इसलिए कि अस्ल कामियाबी आख़िरत की कामियाबी है।

ह़दीस में है, "रसुलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जो शख़्स अल्लाह से मिलना पसन्द करता है तो अल्लाह भी उस से मिलना पसन्द करता है और जो कोई अल्लाह से मिलना नापसन्द करता है तो अल्लाह भी उस से मिलना नापसन्द करता है।" **(सह़ीह़ बुख़ारी, अल् रिफ़ाक़, बाब 41, ह़दीस 6508)**

33 قَدْ نَعْلَمُ إِنَّهُ لَيَحْزُنُكَ الَّذِي يَقُولُونَ ۖ فَإِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُونَكَ وَلَٰكِنَّ الظَّالِمِينَ بِآيَاتِ اللَّهِ يَجْحَدُونَ ۝

अहले मक्का जब नबी करीम (सल्ल०) को झुठलाते और कुफ़्र व हठधर्मी में ह़द से आगे बढ़ जाते तो आप को बहुत ज़्यादा तक्लीफ़ होती और ग़म में मुब्तिला हो जाते। अल्लाह तआ़ला ने आप का यह ह़ाल देखकर इस आयत में तसल्ली दी है और अल्लाह के नज़्दीक आप का जो मक़ाम है उसे बताया है कि अहले कुफ़्र जो कुछ आप के साथ बुरा मामला कर रहे हैं, तो ह़क़ीक़त में वह अल्लाह के साथ बुरा मामला कर रहे हैं और वह उन से सख़्त बदला लेकर रहेगा।

34 وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّن قَبْلِكَ فَصَبَرُوا عَلَىٰ مَا كُذِّبُوا وَأُوذُوا حَتَّىٰ أَتَاهُمْ نَصْرُنَا ۚ وَلَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِ اللَّهِ ۚ
وَلَقَدْ جَاءَكَ مِن نَّبَإِ الْمُرْسَلِينَ ۝

नबी करीम (सल्ल०) को इसमें तसल्ली दी जा रही है कि जब मुसीबत आ़म होती है तो उस का बर्दाश्त करना आसान होता है। आप को नसीह़त की गई है कि जिस तरह़ पिछले रसूलों ने अपनी क़ौमों

की तरफ़ से दी गई तक्लीफ़ों पर सब्र किया, आप भी सब्र कीजिए। इस में अल्लाह की तरफ़ से मदद व कामियाबी का वादा है।

35 وَاِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكَ اِعْرَاضُهُمْ فَاِنِ اسْتَطَعْتَ اَنْ تَبْتَغِيَ نَفَقًا فِى الْاَرْضِ اَوْ سُلَّمًا فِى السَّمَآءِ فَتَاْتِيَهُمْ بِاٰيَةٍ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَمَعَهُمْ عَلَى الْهُدٰى فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ۝

इस आयत में भी आप (सल्ल०) को एक तीसरे तरीक़े से तसल्ली दी जा रही है कि अगर काफ़िरों का ईमान न लाना आप पर भारी पड़ रहा है तो आप ज़मीन के किसी सुरंग से या सीढ़ी लगाकर आसमान से उन के लिए कोई ऐसी निशानी ले आइए जो उन्हें ईमान लाने पर मजबूर कर दे, लेकिन आप ऐसा नहीं कर सकते, इसलिए कि अल्लाह ने आप को ऐसी क़ुद्रत नहीं दी है, क्योंकि अगर ऐसा मुम्किन होता तो फिर ईमान लाना ज़रूरी हो जाता, लेकिन ऐसा ईमान उन के लिए फ़ायदा देने वाला न होता।

इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि अगर वह चाहता तो तमाम इन्सानों को हिदायत की राह पर जमा देता, लेकिन मेहरबानी के इज़्हार की वजह से ऐसा नहीं किया। इसलिए ऐ नबी! (सल्ल०) आप उन के ईमान की तमन्ना या उन की मांग पूरी करने की ख़्वाहिश करके उन नादानों में से न बन जाइये जिन्हें अल्लाह की मर्ज़ी या उस की हिक्मत व मस्लहत का पता नहीं।

36 اِنَّمَا يَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ يَسْمَعُوْنَ ؕ وَالْمَوْتٰى يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ ثُمَّ اِلَيْهِ يُرْجَعُوْنَ۝

आयत नं० २५ में अल्लाह तआ़ला ने मुश्रिकीन की यह सिफ़त बताई थी कि उन के दिलों पर पर्दा पड़ा है, इसलिए क़ुर्आन करीम सुनते भी हैं तो इस से उन्हें कोई फ़ायदा नहीं पहुँचता। इसी बात को अल्लाह तआ़ला ने इस आयत में दूसरे अन्दाज़ में बयान किया है कि यह मुश्रिकीन मुर्दों की तरह़ हैं, इन से ईमान की उम्मीद कैसे की जा सकती है?

ईमान तो वह लोग लाएँगे जो ज़िन्दा होंगे और जो अल्लाह और रसूल की बातें ग़ौर से सुनेंगे और उन से नसीह़त ह़ासिल करेंगे, उन्हें हैवानों की ज़िन्दग़ी तो मिली है, लेकिन उन के दिली अ़क़ायद गन्दे हो चुके हैं। इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि यह कुफ़्फ़ार चूंकि न सुनते हैं और न जवाब देते हैं इसलिए मुर्दा हैं। उन्हें अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन दोबारा उठाएगा और उस के सामने पेश किये जाएँगे, उस वक़्त वह उन के आ़माल का बदला चुकाएगा।

37 وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ قَادِرٌ عَلٰۤى اَنْ يُّنَزِّلَ اٰيَةً وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ۝

इस में मुश्रिकीने मक्का की एक और हठधर्मी बयान की जा रही है कि अल्लाह तआ़ला की इतनी खुली निशानियाँ देख लेने के बावजूद, जिन्हें देखकर पहाड़ भी झुक जाएँ, वह कहते हैं कि अल्लाह तआ़ला कोई निशानी क्यों नहीं भेज देता? अल्लाह ने नबी करीम (सल्ल०) से फ़रमाया कि अल्लाह बेशक ऐसी निशानी उतारने पर क़ादिर (सक्षम) है, लेकिन ऐसा मुताल्बा (Demand) करना जिहालत व नादानी है क्योंकि उस के बाद बन्दे का अख़्तियार ख़त्म हो जाता है और ऐसी निशानी के इन्कार का नतीजा यह होता है कि वह क़ौम फिर हलाक कर दी जाती है।

आयत नं० 38 से 51 तक

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا طٰٓئِرٍ يَّطِيْرُ بِجَنَاحَيْهِ اِلَّآ اُمَمٌ اَمْثَالُكُمْ ۭ مَا فَرَّطْنَا فِي الْكِتٰبِ مِنْ شَيْءٍ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ يُحْشَرُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا
صُمٌّ وَّبُكْمٌ فِي الظُّلُمٰتِ ۭ مَنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يُضْلِلْهُ ۭ وَمَنْ يَّشَاْ يَجْعَلْهُ عَلٰي صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ قُلْ اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ اَوْ اَتَتْكُمُ
السَّاعَةُ اَغَيْرَ اللّٰهِ تَدْعُوْنَ ۚ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ بَلْ اِيَّاهُ تَدْعُوْنَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُوْنَ اِلَيْهِ اِنْ شَاۗءَ وَتَنْسَوْنَ مَا تُشْرِكُوْنَ ۝
وَلَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰٓى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَاَخَذْنٰهُمْ بِالْبَاْسَاۗءِ وَالضَّرَّاۗءِ لَعَلَّهُمْ يَتَضَرَّعُوْنَ ۝ فَلَوْلَآ اِذْ جَاۗءَهُمْ بَاْسُنَا تَضَرَّعُوْا وَلٰكِنْ
قَسَتْ قُلُوْبُهُمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ اَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ ۭ حَتّٰٓي اِذَا فَرِحُوْا بِمَآ اُوْتُوْٓا
اَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً فَاِذَا هُمْ مُّبْلِسُوْنَ ۝ فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۭ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَخَذَ اللّٰهُ سَمْعَكُمْ
وَاَبْصَارَكُمْ وَخَتَمَ عَلٰي قُلُوْبِكُمْ مَّنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِهٖ ۭ اُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ هُمْ يَصْدِفُوْنَ ۝ قُلْ اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ
عَذَابُ اللّٰهِ بَغْتَةً اَوْ جَهْرَةً هَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۚ فَمَنْ اٰمَنَ
وَاَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا يَمَسُّهُمُ الْعَذَابُ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ۝ قُلْ لَّآ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ
خَزَاۗىِٕنُ اللّٰهِ وَلَآ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَآ اَقُوْلُ لَكُمْ اِنِّىْ مَلَكٌ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ ۭ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۭ اَفَلَا
تَتَفَكَّرُوْنَ ۝ وَاَنْذِرْ بِهِ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنْ يُّحْشَرُوْٓا اِلٰى رَبِّهِمْ لَيْسَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ۝

अनुवाद-

(38) धरती पर चलने वाला, या दो परों से उड़ने वाला, कोई परिन्दा हो; यह सब तुम्हारी ही तरह के गिरोह हैं; 'हमने' किताब में कोई भी चीज़ नहीं छोड़ी है; फिर (जान लो कि) वे अपने रब की ओर इकट्ठा किये जाएँगे। (39) और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया; वे बहरे और गूँगे हैं, अन्धेरों में पड़े हुए हैं; अल्लाह जिसे चाहे भटका दे और जिसे चाहे सीधी राह पर लगा दे। (40) कह दीजिए, ''क्या तुमने यह भी सोचा कि अगर तुम पर अल्लाह का अ़ज़ाब आ जाए, या वह घड़ी तुम्हारे सामने आ जाए, तो क्या तुम अल्लाह के सिवा किसी और को पुकारोगे? अगर तुम सच्चे हो (तो बताओ), (41) (नहीं) बल्कि तुम 'उसी' को पुकारते हो, तो जिस (दुःख) के लिए तुम 'उसे' पुकारते हो, 'वह' अगर चाहता है तो उसको दूर कर देता है, और जिनको तुम शरीक बनाते हो, (उस वक़्त) उन्हें भूल जाते हो।'' (42) और 'हमने' तुमसे पहले कितनी उम्मतों(समुदायों) की ओर रसूल भेजे, फिर 'हमने' उन्हें तंगियों और मुसीबतों में डाला, ताकि वे अजिज़ी (विनम्रता) करें; (43) जब 'हमारी' ओर से उन पर सख़्ती आयी तो फिर क्यों नहीं आजिज़ी (विनम्रता) करते? लेकिन उनके दिल तो कठोर हो गये थे और जो कुछ वे करते थे, शैतान ने उसे उनके लिए मुज़य्यन (मनमोहक़) बना दिया था; (44) फिर जब उसे उन्होंने भुला दिया जो उन्हें नसीह़त की गयी थी, तो 'हमने' उन पर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिये; यहाँ तक कि जो कुछ उन्हें मिला था, जब वे उसमें मग्न हो गये तो अचानक 'हमने' उन्हें पकड़ लिया, तो वे उस वक़्त नाउम्मीद हो कर रह गये; (45) इस तरह ज़ालिम लोगों की जड़ काट दी गयी, और तमाम तअ़रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं, जो सारे संसार का रब है। (46) कह दीजिए, ''क्या तुमने यह भी सोचा, कि अगर अल्लाह तुम्हारे सुनने की, देखने की ताक़त

छीन ले और तुम्हारे दिलों पर मुहर लगा दे, तो अल्लाह के सिवा मअ़बूद (उपास्य) कौन है, जो तुम्हें यह लाकर दे?'' देखो! किस तरह 'हम' तरह-तरह की निशानियाँ बयान करते हैं, फिर भी यह लोग मुँह फेरे रहते हैं। (47) कह दीजिए, ''क्या तुमने यह भी सोचा! कि तुम पर अचानक बेख़बरी में या ख़बर आने के बाद अल्लाह का अ़ज़ाब आ जाए, तो क्या ज़ालिम लोगों के अ़लावा कोई और भी हलाक होगा?'' (48) और हमने रसूलों को खुशख़बरी सुनाने वाला और सचेत करने वाला बना कर भेजा'' तो जो व्यक्ति ईमान लाए और सुधर जाए, तो ऐसे लोगों के लिए न कुछ ख़ौफ़ होगा और न वे ग़मगीन होंगे। (49) और जिन्होंने 'हमारी' आयतों को झुठलाया, उन्हें तो अ़ज़ाब होकर ही रहेगा, क्योंकि वे नाफ़रमानी किया करते थे। (50) कह दीजिए,''मैं तुमसे यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं, और न मैं ग़ैब (परोक्ष) का इल्म रखता हूँ; और न मैं तुमसे यह कहता हूँ कि 'मैं कोई फ़रिश्ता हूँ, मैं तो बस उसी के हुक्म पर चलता हूँ जो मेरी ओर वह्य की जाती है,'' कह दीजिए, ''क्या अन्धा और आँखों वाला दोनों बराबर होते हैं? तो फिर तुम सोच-विचार क्यों नहीं करते?'' (51) और उनको इस (क़ुर्आन) के ज़रिये सचेत कर दीजिए! जिन्हें इस बात का डर है कि उनको अपने रब के पास इस हाल में इकट्ठा किया जाएगा, कि 'उसके' सिवा न तो उनका कोई हमदर्द होगा और न कोई सिफ़ारिशी,'' ताकि वे परहेज़गार बनें।

आयत नं० 38 से 51 तक की व्याख्या

38 وَمَا مِن دَآبَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا طَائِرٍ يَطِيرُ بِجَنَاحَيْهِ إِلَّا أُمَمٌ أَمْثَالُكُم ۚ مَّا فَرَّطْنَا فِي الْكِتَابِ مِن شَيْءٍ ۚ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يُحْشَرُونَ

इस आयत में यह बयान करना है कि अल्लाह तआ़ला का इ़ल्म हर चीज़ का इ़ल्म रखने वाला है, वह हर चीज़ पर क़ादिर है और उन की निगरानी, हिफ़ाज़त और रोज़ी तमाम मख़्लूक़ात के लिए आ़म है और यह इस बात की दलील है कि वह हर निशानी नाज़िल करने पर क़ादिर है।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि तमाम चौपाये जो ज़मीन पर चलते हैं और तमाम चिड़ियाँ जो अपने दो परों के ज़रिये उड़ती हैं सब अल्लाह की मख़्लूक़ात की अलग-अलग क़िस्में हैं, उन के तमाम हालात से अल्लाह तआ़ला वाक़िफ़ है, वह किसी भी चीज़ से ग़ाफ़िल नहीं है, वह सब की देख-रेख है और सब को रोज़ी देता है। लौहे महफ़ूज़ में हर छोटी बड़ी चीज़ का इ़ल्म महफ़ूज़ है, अल्लाह के पास सब का इ़ल्म है। वह उन में से किसी एक की रोज़ी और निगरानी से भी ग़ाफ़िल नहीं है और क़ियामत के दिन सभी अल्लाह के पास जमा होंगे और सब के साथ इन्साफ़ होगा। यहाँ तक कि सहीह अहादीस के मुताबिक़ बे-सींग वाली बक़री का हक़ सींग वाली बकरी से लिया जाएगा।

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "क़ियामत के दिन तुम से हक़दारों के हुक़ूक़ अदा करवाए जाएँगे यहाँ तक कि सींग वाली बक़री से बग़ैर सींग वाली बक़री का बदला दिलाया जाएगा।" **(मुस्लिम)**

39 وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا صُمٌّ وَبُكْمٌ فِي الظُّلُمَاتِ ۗ مَن يَشَإِ اللَّهُ يُضْلِلْهُ وَمَن يَشَأْ يَجْعَلْهُ عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ

जो लोग अल्लाह तआ़ला की आयतों को झुठलाते हैं, उनकी मिसाल जिहालत और फ़िक्र व नज़र

में उस बहरे और गूंगे आदमी की सी है जिसे अंधेरियों में भटकते रहने के लिए छोड़ दिया जाए, ऐसा आदमी कभी भी सीधी राह नहीं पा सकता और अंधेरियों से कभी भी नहीं निकल सकता। अल्लाह तआ़ला ने क़ुर्आने करीम में अहले कुफ़्र के लिए यह तश्बीह बहुत सी आयतों में बयान की है ताकि मालूम हो जाए कि वह जिहालत में पूरे तौर पर डूबे हुए हैं और समझने के तमाम रास्ते उन के लिए पूरे तौर पर बन्द हैं। इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि वह अपनी मख़्लूक़ात के बारे में जैसा चाहता है फ़ैसला करता है, जिसे चाहता है हिदायत देता है और जिसे चाहता है कुफ़्र में भटकता छोड़ देता है।

40-41 قُلْ أَرَءَيْتَكُمْ إِنْ أَتَىٰكُمْ عَذَابُ ٱللَّهِ أَوْ أَتَتْكُمُ ٱلسَّاعَةُ أَغَيْرَ ٱللَّهِ تَدْعُونَ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ۝ بَلْ إِيَّاهُ
تَدْعُونَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُونَ إِلَيْهِ إِن شَآءَ وَتَنسَوْنَ مَا تُشْرِكُونَ ۝

यानी अगर अल्लाह का अ़ज़ाब तुम्हें आ घेरे या क़ियामत आ जाए तो इस अ़ज़ाब को टालने के लिए तुम अपने मअ़बूदों को नहीं बल्कि अल्लाह को पुकारोगे और उन झूठे मअ़बूदों को भूल जाओगे, इसलिए कि तुम्हें मालूम है कि अल्लाह ही अगर चाहेगा तो इस अ़ज़ाब को टाल देगा।

42-43 وَلَقَدْ أَرْسَلْنَآ إِلَىٰٓ أُمَمٍ مِّن قَبْلِكَ فَأَخَذْنَٰهُم بِٱلْبَأْسَآءِ وَٱلضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ يَتَضَرَّعُونَ ۝ فَلَوْلَآ إِذْ جَآءَهُم
بَأْسُنَا تَضَرَّعُوا۟ وَلَٰكِن قَسَتْ قُلُوبُهُمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ ٱلشَّيْطَٰنُ مَا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ۝

नबी करीम (सल्ल०) की तसल्ली के लिए कहा जा रहा है कि पहली उम्मतों के पास भी हम ने अम्बिया (नबी) भेजे, जिन को उन्होंने झुठलाया तो हम ने उन को सख़्ती, क़हत साली, मर्ज़ और जान व माल के नुक़्सान में मुब्तिला किया, ताकि शायद वह इन आज़्माइशों के बाद अल्लाह की तरफ़ पलटें, लेकिन उन के दिल की सख़्ती का ह़ाल यह था कि वे अल्लाह के सामने नहीं पलटें और अपने गुनाहों से तौबः नहीं की, बल्कि शैतान ने उन के शिर्किया आ़माल को उन के लिए और ख़ूबसूरत बना दिया।

44-45 فَلَمَّا نَسُوا۟ مَا ذُكِّرُوا۟ بِهِۦ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ أَبْوَٰبَ كُلِّ شَىْءٍ حَتَّىٰٓ إِذَا فَرِحُوا۟ بِمَآ أُوتُوٓا۟ أَخَذْنَٰهُم بَغْتَةً فَإِذَا هُم
مُّبْلِسُونَ ۝ فَقُطِعَ دَابِرُ ٱلْقَوْمِ ٱلَّذِينَ ظَلَمُوا۟ ۚ وَٱلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ ٱلْعَٰلَمِينَ ۝

इन क़ौमों ने जब तक्लीफ़ व मुसीबत वाली आज़्माइशों से इ़बरत ह़ासिल नहीं की तो फिर अल्लाह तआ़ला ने दुनियावी नेअ़मतों से उन्हें मालामाल कर दिया और यह सब कुछ अल्लाह की तरफ़ से ढ़ील और एक ख़तरनाक आज़्माइश थी, यहाँ तक कि जब वह अपने शिर्किया आ़माल के साथ इन नेअ़मतों में डूब गये और ख़ुशी में मग्न हो गये तो अल्लाह तआ़ला ने उन्हें अचानक पकड़ लिया और उन का वजूद ही ख़त्म कर दिया और जो कुछ उन के साथ हुआ उस पर अल्लाह का शुक्र ही अदा करना चाहिए, क्योंकि काफ़िरों और अल्लाह के सरकश (बद्‌माश) बन्दों के बुरे अक़ीदे व आ़माल से ज़मीन वालों का निजात पाना एक बड़ी नेअ़मत है।

इमाम अह़मद ने उ़क़्बा बिन आ़मिर (रज़ि०) से नबी करीम (सल्ल०) की यह ह़दीस रिवायत की है कि जब तुम देखो कि अल्लाह तआ़ला अपने किसी बन्दे को उस के गुनाहों के बावजूद उस की ख़्वाहिश

के मुताबिक़ दुनियावी नेअ़मतें दे रहा है, तो समझ लो कि उस की रस्सी ढ़ीली की गई है फिर आप (सल्ल०) ने यही आयत पढ़ी।

46 قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَخَذَ اللَّهُ سَمْعَكُمْ وَأَبْصَارَكُمْ وَخَتَمَ عَلَىٰ قُلُوبِكُم مَّنْ إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُم بِهِ ۗ انظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ ثُمَّ هُمْ يَصْدِفُونَ ۝

मुश्रिकीने मक्का को नये अन्दाज़ में तम्बीह की जा रही है और उन के मुश्रिकाना आ़माल के फ़साद को बयान किया जा रहा है कि ऐ मेरे रसूल! (सल्ल०) आप उन से कह दीजिए कि अगर तुम्हारे कान और तुम्हारी आँख ले ले और तुम्हारे दिलों पर मुहर लगा दे तो क्या अल्लाह के सिवा कोई और है जो उन्हें दोबारा लौटा दे? आयत में ज़िक्र किये गये तीनों इन्सानी शरीर के अंग को अफ़ज़ल बताया हैं, जब वह बेकार हो जाते हैं तो जिस्म इन्सानी का निज़ाम बिगड़ जाता है, इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने उन्हीं तीनों का ज़िक्र किया। इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि आप देख लीजिए कि किस तरह़ निशानियों को मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ में बयान करते हैं, लेकिन यह मुश्रिकीन उन्हें देखने के बावजूद ए़राज़ करते हैं और ह़सद व हठधर्मी और किब्र व ग़ुरूर की वजह से उन में ग़ौर नहीं करते।

यहाँ **"आयात"** से मुराद क़ुर्आनी दलायल या वह दलायल जो शुरु सूरत से लेकर यहाँ तक बयान किये गये हैं या वह अ़क़्ली दलायल जो आसमानों और ज़मीन के बनाने वाले और उस के अकेले होने पर दलालत करती है।

47 قُلْ أَرَأَيْتَكُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُ اللَّهِ بَغْتَةً أَوْ جَهْرَةً هَلْ يُهْلَكُ إِلَّا الْقَوْمُ الظَّالِمُونَ ۝

بَغْتَةً से मुराद वह अ़ज़ाब है जो अचानक और किसी पिछले इत्तिलअ़ (Information) के बग़ैर आये और جَهْرَةً से मुराद वह जो किसी पिछले इशारा और इत्तिला के बाद आये या इन दोनों से मुराद रात और दिन है। इसलिए कि काफ़िर क़ौमों को हलाक करने वाला अ़ज़ाब या तो रात को अचानक या फिर दिन में खुलेआम आता है और قَوْمُ الظَّالِمُونَ में अ़ज़ाब आने की वजह का इस तरफ़ इशारा है कि उन की हलाकत का ज़रिया उन का ज़ुल्म है।

48-49 وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ ۖ فَمَنْ آمَنَ وَأَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا يَمَسُّهُمُ الْعَذَابُ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ۝

अम्बिया व रसूलों की ज़िम्मेदारी यह है कि वह अल्लाह की तरफ़ लोगों को बुलाएँ, जन्नत की ख़ुशख़बरी दें और जहन्नम से डराएँ। उन की ज़िम्मेदारी यह नहीं है कि काफ़िरों की ख़्वाहिश और उन की मर्ज़ी के मुताबिक़ अल्लाह से निशानियाँ भेजने की दुआ़ करते रहें तो जो शख़्स अम्बिया व रसूलों की पैरवी करते हुए ईमान लाएगा और नेक अ़मल करेगा उस का ठिकाना जन्नत होगा, न उन्हें पिछले किये हुए का कोई ग़म होगा और न आइन्दा का कोई ख़ौफ़ और जो अल्लाह की आयतों को झुठलाएगा उस का ठिकाना जहन्नम होगा और यह अल्लाह से सरकशी करने का अन्जाम होगा।

50 قُلْ لَّآ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَآئِنُ اللّٰهِ وَلَآ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَآ اَقُوْلُ لَكُمْ اِنِّيْ مَلَكٌ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ ؕ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ؕ اَفَلَا تَتَفَكَّرُوْنَ ۝

अल्लाह तआला ने कहा कि मुश्रिकीने मक्का आप से कभी निशानियाँ माँगते हैं, कभी कोई और सवाल करते हैं तो आप उन से कह दीजिए कि अल्लाह ने रोज़ी के ख़ज़ाने मेरे हवाले नहीं कर दिये हैं, कि मैं उस में से तुम्हारी ख़्वाहिश के मुताबिक़ तुम्हें देता रहूँ और पहाड़ को सोने में बदलता रहूँ और न मैं ग़ैब (परोक्ष) जानता हूँ कि क़ियामत या नुज़ूले अज़ाब वग़ैरह का वक़्त बता दूँ और न मैं फ़रिश्ता हूँ कि करतबों का मुज़ाहिरा करता रहूँ, मैं तो सिर्फ़ उस वह्य की पैरवी करता हूँ जो अल्लाह की तरफ़ से मुझ पर नाज़िल होती है।

इस के बाद अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि नाबीना (अन्धा) और बीना (आँख वाला) यानी गुमराह और हिदायत वाला बराबर नहीं हो सकते। इसलिए ऐ मुश्रिकीने मक्का! तुम लोग अल्लाह की निशानियों में ग़ौर करके हिदायत की राह क्यों नहीं अपना लेते?!

शब्द **"वह्य"** जिस तरह़ क़ुर्आने करीम के लिए है, उसी तरह़ नबी करीम (सल्ल०) की ह़दीसों के लिए है। अल्लाह तआला ने सूरः नज्म की आयात (3/4) में फ़रमायाः-

وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى ۝ اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْيٌ يُّوْحٰى ۝

कि "मेरे रसूल अपनी ख़्वाहिश के मुताबिक़ नहीं बोलते, बल्कि वही कुछ कहते हैं जो वह्य के ज़रिये उन पर नाज़िल होता है" और सूरः अनआम आयत नं० (50) में फ़रमाया हैः-

اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ

कि "मैं तो सिर्फ़ वह्य की इत्तिबअ़ करता हूँ" और सूरः नह़ल की आयत नं० (44) में फ़रमाया हैः- لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ اِلَيْهِمْ "ताकि आप लोगों के सामने उस वह्य को बयान कर दें जो आप पर नाज़िल होती है।" और सह़ीह़ ह़दीस में रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया है "اُوتيتُ القُرآنَ وَ مِثْلَه مَعَه" यानी "मुझे क़ुर्आन करीम और उसी की तरह़ (यानी ह़दीस) दी गई है।

51 وَاَنْذِرْ بِهِ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنْ يُّحْشَرُوْٓا اِلٰى رَبِّهِمْ لَيْسَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ۝

पिछली आयतों में अल्लाह तआला ने ख़बर दी थी कि मुश्रिकीन बहरे, गूंगे और अन्धे आदमी की तरह़ हैं बल्कि मुर्दे हैं। यही वजह है कि उन्होंने स्पष्ट निशानियों से कोई नसीह़त ह़ासिल नहीं की। अब अल्लाह तआला ने अपने नबी (सल्ल०) को हुक्म दिया कि आप उन लोगों को बताइये जो अल्लाह की वह्य से प्रभावित होते हैं।

आयत नं० 52 से 62 तक

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيدُونَ وَجْهَهٗ ؕ مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّمَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ
مِّنْ شَيْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُونَ مِنَ الظّٰلِمِينَ ۝ وَكَذٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لِّيَقُولُوٓا أَهٰٓؤُلَآءِ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنْۢ بَيْنِنَا ؕ أَلَيْسَ
اللّٰهُ بِأَعْلَمَ بِالشّٰكِرِينَ ۝ وَإِذَا جَآءَكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاٰيٰتِنَا فَقُلْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۙ أَنَّهٗ مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ
سُوٓءًۢا بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَأَصْلَحَ فَأَنَّهٗ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلِتَسْتَبِينَ سَبِيلُ الْمُجْرِمِينَ ۝ قُلْ إِنِّي نُهِيتُ
أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللّٰهِ ؕ قُلْ لَّآ أَتَّبِعُ أَهْوَآءَكُمْ ۙ قَدْ ضَلَلْتُ إِذًا وَّمَآ أَنَا مِنَ الْمُهْتَدِينَ ۝ قُلْ إِنِّي عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ
رَّبِّي وَكَذَّبْتُمْ بِهٖ ؕ مَا عِنْدِي مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهٖ ؕ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلّٰهِ ؕ يَقُصُّ الْحَقَّ وَهُوَ خَيْرُ الْفٰصِلِينَ ۝ قُلْ لَّوْ أَنَّ عِنْدِي مَا
تَسْتَعْجِلُونَ بِهٖ لَقُضِيَ الْأَمْرُ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ أَعْلَمُ بِالظّٰلِمِينَ ۝ وَعِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَآ إِلَّا هُوَ ؕ وَيَعْلَمُ
مَا فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ وَمَا تَسْقُطُ مِنْ وَّرَقَةٍ إِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِي ظُلُمٰتِ الْأَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَّلَا يَابِسٍ إِلَّا فِي كِتٰبٍ
مُّبِينٍ ۝ وَهُوَ الَّذِي يَتَوَفّٰىكُمْ بِالَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُمْ بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيهِ لِيُقْضٰٓى أَجَلٌ مُّسَمًّى ۚ ثُمَّ إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ
ثُمَّ يُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً ؕ حَتّٰٓى إِذَا جَآءَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا
وَهُمْ لَا يُفَرِّطُونَ ۝ ثُمَّ رُدُّوٓا إِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ ؕ أَلَا لَهُ الْحُكْمُ وَهُوَ أَسْرَعُ الْحٰسِبِينَ ۝

अनुवाद-

(52) और जो लोग अपने 'रब' को राज़ी करने के लिए सुबह और शाम पुकारते रहते हैं, ऐसे लोगों
को (अपने से) दूर न करना, उनके हिसाब की तुम पर कोई ज़िम्मेदारी नहीं, और न तुम्हारे हिसाब की उन
पर कोई ज़िम्मेदारी है, कि 'तुम उन्हें दूर कर दो तो ज़ालिमों में से हो जाओगे, (53) और इसी तरह 'हमने'
कुछ लोगों को दूसरे के ज़रिये आज़माइश में डाला, ताकि वे कहें, ''क्या यह वही लोग हैं, जिन पर अल्लाह
ने हममें से इनआ़म किया?''-क्या अल्लाह शुक्र करने वालों को नहीं जानता?! (54) और जब आप के पास
ऐसे लोग आएँ, जो हमारी आयतों पर ईमान रखते हैं, तो कह दीजिए, ''सलाम हो तुम पर! तुम्हारे रब ने
रह़मत को अपने ऊपर ज़रूरी कर लिया है कि तुममें से जो कोई नासमझी से कोई बुराई कर बैठे, फिर
उसके बाद तौबः कर ले और अपनी इस्लाह़ (सुधार) कर ले, तो वह बख़्शने वाला, मेहरबान है; (55) और
इसी तरह 'हम' अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान करते हैं और इस लिए कि गुनहगारों का रास्ता ज़ाहिर
हो जाए। (56) कह दीजिए, ''तुम लोग अल्लाह के सिवा जिन्हें पुकारते हो उनकी इबादत करने से मुझे रोका
गया है, कह दीजिए ''मैं तुम्हारी इच्छाओं की पैरवी नहीं करूँगा, क्योंकि तब तो मैं भी गुमराह हो जाऊँगा
और तब तो मैं हिदायत पाने वाले लोगों में न रहूँगा।'' (57) कह दीजिए, ''मैं अपने 'रब' की ओर से
खुली हुई दलील पर क़ायम हूँ, और तुमने उसे झुठला दिया है; और जिस चीज़ के लिए तुम जल्दी मचा रहे
हो, वह मेरे पास तो है नहीं, हुक्म तो अल्लाह ही का है, 'वही' सच्ची बात बयान करता है, और 'वही' सब
से अच्छा फ़ैसला करने वाला है।'' (58) कह दीजिए, ''जिस चीज़ की तुम्हें जल्दी पड़ी हुई है, अगर कहीं
वह चीज़ मेरे पास होती, तो मेरे और तुम्हारे बीच अब तक फ़ैसला हो चुका होता; और अल्लाह ज़ालिमों
को खूब जानता है।''(59) और 'उसी' के पास ग़ैब (परोक्ष) की कुन्जियां हैं, जिन्हें 'उसके' सिवा कोई नहीं

जानता; जल और थल में जो कुछ है, उसे 'वह' जानता है, और जो पत्ता भी गिरता है, उसे 'वह' ज़रूर जानता है; और ज़मीन के अन्धेरों में कोई दाना हो, और कोई हरी, या सूखी चीज़ हो, मगर वह सब रौशन किताब में मौजूद है; (60) और 'वही' है जो रात को तुम्हें मौत देता है; और जो कुछ तुम दिन में करते हो, उसकी ख़बर रखता है; फिर 'वह' तुम्हें दिन में इसलिए उठा देता है, ताकि तय की हुई मुद्दत पूरी हो जाए। फिर 'उसी' की ओर तुम्हें लौटना है, फिर 'वह' तुम्हें बता देगा, जो कुछ तुम करते रहे हो; (61) और 'वह' अपने बन्दों पर पूरा क़ाबू रखने वाला है; और 'वह' तुम पर निगरानी करने वाले को मुक़र्रर किये रखता है, यहाँ तक कि तुममें से जब किसी की मौत आती है तो हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) उसे कब्ज़े में कर लेते हैं, और वे किसी तरह की कोताही नहीं करते। (62) फिर लोग अपने मालिक अल्लाह के पास बुलाए जाएँगे, जान लो! हुक्म 'उसी' का है और 'वह' बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है।

आयत नं० 52 से 62 तक की व्याख्या

52 وَلَا تَطْرُدِ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ ؕ مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّمَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِّنْ شَيْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُوْنَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝

इमाम मुस्लिम ने सअ़द बिन अबी वक़ास (रज़ि०) से और इमाम अहमद ने अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) से इस आयते करीमा के शाने नुज़ूल के बारे में रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) की मजलिस में कुछ ज़ईफ़ और कमज़ोर क़िस्म के सहाबा मौजूद थे।

रिवायतों में सअ़द बिन अबी वक़ास, अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद, बिलाल, सुहेब, अ़म्मार और ख़ब्बाब रज़ियल्लाहु अ़न्हुम वग़ैरहुम के नाम आये हैं।

वहाँ से क़ुरैश के कुछ लोगों का गुज़र हुआ तो उन्होंने कहा कि ऐ मुहम्मद! क्या तुम ने अपनी क़ौम के बदले उन्हीं को अपना लिया है, क्या अल्लाह ने हमें छोड़ कर उन पर एहसान किया है कि हम उन के ताबेअ़ (अनुयाई) बन जाएँ? अगर तुम उन्हें अपनी मजलिस से निकाल दो तो शायद हम तुम्हारी इत्तिबअ़ (पैरवी) करें, तो यह आयत नाज़िल हुई। अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) को ग़रीब और कमज़ोर मुसलमानों को अपनी मजलिस से इस लालच में भगाने से मना किया कि क़ुरैश के बड़े लोग आप की मजलिस में आएँ और आप की बातें सुनकर मुतअ़स्सिर (प्रभावित) हों और ईमान लाएँ।

शुरु में अम्बिया का साथ हमेशा क़ौम के कमज़ोर, मज़लूम और फ़क़ीर लोग ही देते रहे हैं और यह वह लोग हैं कि जिन के साथ ऊँची सोसाइटी के लोग बैठना भी पसन्द नहीं करते। अम्बिया को ऐसे तअ़ने मिलते ही रहे हैं, जैसे हज़रत नूह (अ़लै०) को भी यही तअ़ना दिया गया।

तुम्हारी इत्तिबअ़ (मानने वाले) वाले देखने में ज़लील मालूम होते हैं। **(सूरः हूद-27)**

कुछ क़ुरैश ने भी आप से तन्हाई में कहा कि तुम्हारे उन गुलामों के साथ बैठने में शर्म आती है, लिहाज़ा जब हम आप के पास आएँ तो उन्हें उठा दिया कीजिए तब यह आयत नाज़िल हुई।

हज़रत सअ़द बिन अबी वक़ास (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि हम छः आदमी आप (सल्ल०) के पास

बैठे थे। मुश्रिकीन ने आप (सल्ल०) से कहा, "इन लोगों को अपनी मजलिस से निकाल दीजिए ताकि यह हम से आगे न बढें। वह कुछ आदमी यह थे, मैं खुद अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊद (रज़ि०) हज़ील का एक आदमी और दो आदमी जिन का नाम नहीं लेता, रसूलुल्लाह (सल्ल०) के दिल में जो अल्लाह ने चाहा ख़याल आया। आप यह बात सोच ही रहे थे कि अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमा दी। **(मुस्लिम)**

सअ़ीद बिन मुसय्यिब वग़ैरह ने "सुबह़ व शाम" से फ़र्ज़ नमाज़ें मुराद ली हैं। आयत के आख़िर में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि अगर आप ने उन कमज़ोर सह़ाबा को अपनी मजलिस से भगा दिया तो ज़ालिमों में से हो जाएँगे।

53 وَكَذٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لِّيَقُولُوٓا أَهٰٓؤُلَآءِ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنْ بَيْنِنَا ۗ أَلَيْسَ اللّٰهُ بِأَعْلَمَ بِالشّٰكِرِينَ ۝

इस आयते करीमा की तफ़्सीर बयान करते हुए ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर (रह़०) ने लिखा है कि शुरु में रसूलुल्लाह (सल्ल०) पर अक्सर ईमान लाने वाले कमज़ोर मर्द, औ़रतें, ग़ुलाम और लौंडियाँ थीं। कु़रैश के बड़ों में से बहुत कम लोगों ने इस्लाम क़ुबूल किया, जैसा कि क़ौमे नूह़ ने ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) से कहा था وَمَا نَرٰىكَ اتَّبَعَكَ إِلَّا الَّذِينَ هُمْ أَرَاذِلُنَا بَادِيَ الرَّأْيِ कि "हम देख रहे हैं कि तुम्हारी इत्तिबअ़ (पैरवी) सिर्फ़ कमतर लोग करते हैं।" **(सूरः हूद)**

जैसा कि हिरक्ल ने अबू सुफ़्यान से पूछा था कि मुह़म्मद की इत्तिबअ़ बड़े लोग करते हैं या कमज़ोर लोग? ह़ज़रत अबू सुफ़्यान ने कहा कि कमज़ोर लोग, तो हिरक्ल ने कहा कि रसूलों की इत्तिबअ़ ऐसे ही लोग करते हैं। मुश्रिकीने मक्का उन कमज़ोर मुसलमानों का मज़ाक़ उड़ाया करते थे, उन्हें अ़ज़ाब देते थे और कहा करते थे कि क्या अल्लाह ने हमें छोड़ कर उन पर एह़सान किया है? तो अल्लाह ने उस के जवाब में यहाँ फ़रमाया कि क्या अल्लाह शुक्र करने वालों को ज़्यादा नहीं जानता? बेशक अल्लाह उन के अक़्वाल व अफ़आ़ल (कथनी और करनी) और दिलों की छुपी बातों को भी जानता है, इसलिए उन्हें तौफ़ीक़ देता है, सह़ी रास्ते की तरफ़ उन की रहनुमाई करता है, अंधेरों से निकाल कर ईमान और इस्लाम की रौशनी में पहुँचा देता है।

इमाम मुस्लिम ने ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत की है कि "अल्लाह तुम्हारी सूरतों और तुम्हारे रंगो को नहीं देखता, बल्कि वह तुम्हारे दिलों और आ़माल को देखता है।" **(मुस्लिम)**

54 وَإِذَا جَآءَكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاٰيٰتِنَا فَقُلْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۙ أَنَّهُ مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ
سُوٓءًا بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ مِنْ بَعْدِهِ وَأَصْلَحَ فَأَنَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

बहुत से मुफ़स्सिरीन का ख़याल है कि इस आयते करीमा में उन्हीं मोमिनीन का ज़िक्र है जिन्हें भगा देने की बात बड़े दर्जे के क़ुरैश ने की थी, तो अल्लाह तआ़ला ने उन्हें यह मक़ाम अ़ता फ़रमाया कि नबी करीम (सल्ल०) को हुक्म दिया कि उन्हें सलाम करने में पहल करें या उन्हें अल्लाह की तरफ़ से सलाम पहुँचा दें और उन्हें रह़मते इलाही की बशारत दे दें।

ऐ मुह़म्मद (सल्ल०) सिर्फ़ यही नहीं कि उन्हें अपने यहाँ से न उठाइये, बल्कि उन की इ़ज़्ज़त और

एह़तिराम करें।

क़ुरैश उनको जो इस्लाम लाते पिछली ग़ल्तियों और गुनाहों पर तअ़ने देते थे, जबकि अल्लाह तआ़ला तो बड़े रह़ीम हैं (फ़रमाया) जो तौबः करे और सुधार कर ले तो उस के सब गुनाह माफ़ हो जाएँगे।

ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआ़ला ने मख़्लूक़ पैदा करने से पहले एक किताब लिखी (जिस में यह लिखा कि) मेरी रह़मत मेरे ग़ज़ब से आगे निकल गई और यह बात उस के पास अ़र्श में लिखी हुई है।" **(बुख़ारी)**

इमाम अह़मद और शेख़ैन ने ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जब अल्लाह तआ़ला ने मख़्लूक़ात के बारे में फ़ैसला किया तो अपनी किताब में लिख दिया (जो उस के पास अ़र्श पर मौजूद है) कि मेरी रह़मत मेरे ग़ज़ब पर ग़ालिब है।"

इस के बाद वाली आयत में अल्लाह ने फ़रमाया कि जिस तरह़ हम ने पिछली आयतों में बहुत से दलायल बयान कर दिये हैं, उसी तरह़ हमेशा अपनी आयतें उन लोगों के लिए तफ़्सील से बयान करते हैं जो बयान के मुह़ताज होते हैं ताकि मालूम हो जाए कि मुजरिम लोग कौन सी राह अख़्तियार करते हैं।

55 وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلِتَسْتَبِيْنَ سَبِيْلُ الْمُجْرِمِيْنَ۝

अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी (सल्ल०) से फ़रमाया, आप कह दीजिए कि अल्लाह के अ़लावा जिन की तुम अ़िबादत करते हो, मैं उन की अ़िबादत नहीं कर सकता और इस बारे में उन की उम्मीद को ख़त्म कर देने के लिए फ़रमाया। आप कह दीजिए कि मैं तुम्हारी ख़्वाहिश के मुताबिक़ बुतों की पूजा नहीं कर सकता और न ग़रीब व कमज़ोर मुसलमानों को अपने पास से भगा सकता हूँ।

मुफ़स्सिर बैज़ावी (रह़०) ने लिखा है कि इस आयत में मुश्रिकीन के गुमराही की वजह उन के अपने इच्छा की पैरवी है और यह बताया गया है कि वह लोग जिस पर क़ायम हैं वह अल्लाह की हिदायत नहीं बल्कि इच्छा भक्ति है और ह़क़ के तलाश करने वाले को बाप-दादों की पैरवी को छोड़ कर दलील व हुज्जत से साबित चीज़ों पर अ़मल करना चाहिए।

56-57 قُلْ اِنِّیْ نُهِیْتُ اَنْ اَعْبُدَ الَّذِیْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قُلْ لَّاۤ اَتَّبِعُ اَهْوَآءَكُمْ ۙ قَدْ ضَلَلْتُ اِذًا وَّمَاۤ اَنَا مِنَ
الْمُهْتَدِیْنَ۝ قُلْ اِنِّیْ عَلٰی بَیِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّیْ وَكَذَّبْتُمْ بِهٖ ؕ مَا عِنْدِیْ مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ
یَقُصُّ الْحَقَّ وَهُوَ خَیْرُ الْفٰصِلِیْنَ۝

फ़र्ज़ कीजिए अगर पैग़म्बर किसी मामले में वह़्य इलाही को छोड़कर अ़वाम के इच्छा की पैरवी करने लगें तो अल्लाह ने जिन्हें रहनुमा बना कर भेजा था वही बहक गये, फिर हिदायत का बीज दुनिया में कहाँ रह सकता है। ऐ नबी (सल्ल०)! आप उन मुश्रिकीन से कह दीजिए कि मेरे पास अल्लाह की सिर्फ़ साफ़ शहादत और स्पष्ट दलायल पहुँच चुके जिन के क़ुबूल करने से मैं हट नहीं सकता। तुम इस को झुठलाते हो तो उस का अन्जाम सोच लो और ऐ मुश्रिकीन! तुम जो अ़ज़ाबे इलाही की जल्दी मचा रहे हो और कहते हो कि अगर यह ह़क़ है जिस को हम झुठला रहे हैं तो आसमान से हम पर पत्थरों की बारिश

बरसा दीजिए या हम पर और कोई सख़्त अ़ज़ाब भेज दीजिए तो जवाब में सुन लो कि यह सब अल्लाह के क़ब्ज़े में है वह जिस पर चाहे जब चाहे और जिस क़िस्म का चाहे अ़ज़ाब भेजे या न भेजे वैसे ही तौबः की तौफ़ीक़ दे, किसी का ज़ोर और हुक्म उस के सिवा नहीं चलता। वह दलायल के साथ ह़क़ को बयान कर देता है फिर जो न मानें उन के बारे में बेहतरीन फ़ैसला करने वाला भी वही है। अगर यह फ़ैसला करना और सज़ा देना मेरे अख़्तियार में होता और यह नुज़ूले अ़ज़ाब में जल्दी चाहने वाले मुझ से अ़ज़ाब का मुताल्बा करते तो अब तक कभी का झगड़ा ख़त्म हो चुका होता। यह तो अल्लाह ही के इ़ल्म, ह़िक्मत और क़ुद्रत की वजह से है कि बेशुमार मसलिह़त और हुक्म की रिआ़यत करते हुए और पूरी तरह़ जानने और क़ुद्रत रखने क बावजूद अ़ज़ाब नाज़िल नहीं करता। इस आयात की तफ़्सीर में यही बयान फ़रमाया गया है।

ख़ुलासा यह है कि यहाँ अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल का दर्जा बता दिया कि उन का काम किसी की बिला वजह रिआ़यत या ख़ुशामद करना नहीं, न वह किसी को ईमान लाने पर मजबूर कर सकते हैं और न वह किसी के ईमान न लाने पर सज़ा दे सकते हैं। सज़ा और अ़ज़ाब का मामला तो अल्लाह ही के हाथ में है उन का काम तो केवल यह है कि अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से वह्य के ज़रिये उन के पास जो हुक्म आये वह उस के बन्दों तक समझ कर और अ़मल के ज़रिये अच्छी तरह़ समझा दें कि सब कुछ अल्लाह के अख़्तियार और क़ब्ज़े में है।

58 قُلْ لَّوْ اَنَّ عِنْدِیْ مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ لَقُضِیَ الْاَمْرُ بَیْنِیْ وَ بَیْنَكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِالظّٰلِمِیْنَ۝

यहाँ जो रसूलुल्लाह (सल्ल०) से यह एलान कराया गया कि अगर मेरे पास वह चीज़ होती जिस की तुम जल्दी कर रहे हो यानी अ़ज़ाब लाना, तो मेरे और तुम्हारे दर्मियान क़िस्सा तय हो चुका होता। इस में इस राज़ को इशारे से ज़ाहिर कर दिया गया कि अगर अ़ज़ाब भेजने का अख़्तियार सिवाय अल्लाह तआ़ला के किसी और के हाथ में होता तो दुनिया कब की तहस-नहस हो गई होती। इन्सान का इ़ल्म व सब्र दोनों मह़दूद (सीमित) हैं, अगर उस के अख़्तियार में नाफ़रमानी की सज़ा देनी हो तो वह सज़ा देने में देर नहीं लगाएगा।

इन्सानों के अन्दर अल्लाह के रसूलों में अल्लाह का दिया हुआ इ़ल्म, ह़िल्म और सब्र सबसे ज़्यादा होता है। जब रसूल ही से फ़रमा दिया कि कह दीजिए अगर मेरे हाथ में अ़ज़ाब होता तो काम कभी का ख़त्म हो चुका होता तो किसी और का तो ज़िक्र ही क्या, अल्लाह तआ़ला का इ़ल्म तो तमाम ह़ालात का पूरा अह़ाता (घेरा) किये हुए है फिर उस की सिफ़त (गुण) ह़कीम है। वह हर काम का मौक़ा मह़ल और उस के ह़िसाब से वक़्त और उस की मस्लह़तों का पूरा-पूरा इ़ल्म रखता है। वह बहुत बर्दाश्त करने वाला है ख़ताकार को ढ़ील दे सकता है उस के साथ ही वह मुजरिम की पूरी-पूरी ह़ालत अच्छी तरह़ जानता है, जब वह मुनासिब समझेगा अ़ज़ाब भेज देगा।

अब आगे अल्लाह के इ़ल्म और क़ुद्रत का ज़िक्र है ताकि साबित हो अ़ज़ाब में देरी की क्या वजह है।

59 وَعِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَآ اِلَّا هُوَ ۚ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۚ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۚ وَمَا تَسْقُطُ
وَّرَقَةٍ اِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِيْ ظُلُمٰتِ الْاَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَّلَا يَابِسٍ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿۵۹﴾

पिछली आयात में बतलाया गया था कि जज़ा और सज़ा का मामला अल्लाह तआ़ला ही के क़ब्ज़े कुद्रत में है और अ़ज़ाब नाज़िल करने का अख़्तियार सिवाय अल्लाह तआ़ला के किसी और के हाथ में नहीं। अल्लाह तआ़ला का इ़ल्म तमाम ह़ालात का पूरा अह़ाता (घेरे) किये हुए है वह मुजरिम की ह़ालत पूरी तरह़ जानता है और जुर्म की क़िस्म भी उस को मालूम है, इसलिए यह फ़ैसला करना कि मुजरिमों पर कब और किस तरह़ अ़ज़ाब भेजे उसी का ह़क़ है, जो कि पूरा इ़ल्म और पूरी क़ुद्रत रखता है। इसलिए इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने अपने इ़ल्म को बयान फ़रमाया जिस से यह ज़ाहिर करना मक़्सद है कि ज़ालिमों के खुले और छुपे ह़ालात और उन के सज़ा का मुनासिब वक़्त अल्लाह तआ़ला ही को मालूम है, वही जब मुनासिब समझेगा सज़ा देगा। चूंकि इन्सानी अ़क़्ल, फ़िक्र व ज़ेहन बहरह़ाल सीमित हैं, इसलिए बहुत सी चीज़ें उस की आँख से ओझल उस के इ़ल्म से बाहर हैं जो इस के लिए ग़ैब हैं, मगर अल्लाह तआ़ला सब कुछ जानता है, सारे ग़ैब के ख़ज़ाने उसी के पास हैं और उस के खोलने की कुंजियाँ भी उसी के क़ब्ज़े में हैं।

अल्लाह तआ़ला के असीमित इ़ल्म ग़ैब (परोक्ष ज्ञान) की बड़े अच्छे शब्दों में वज़ाह़त (स्पष्टता) कर दी गई है। यानी अ़ज़ाब वग़ैरह के फ़ैसले और उस के लिए वक़्त को तय करने का इ़ल्म तो सिर्फ़ अल्लाह ही के पास है। **(तफ़्सील के लिए देखें सूरः लुक़्मान-34)**

ह़ज़रत सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "ग़ैब की कुन्जियाँ पाँच हैं जिन्हें अल्लाह ही जानता है (यानी) क़ियामत कब आएगी? वही बारिश बरसाता है और वही जानता है कि अरह़ाम (माँ के पेट) में क्या कुछ बदलाव होता रहता है। कोई नहीं जानता कि वह कल क्या करेगा और न ही यह जानता है कि वह किस जगह मरेगा। अल्लाह ही इन बातों को जानने वाला और बाख़बर है। **(बुख़ारी)**

किताबे मुबीन से मुराद लौहे़ मह़फ़ूज़ है। ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बिन आ़स (रज़ि०) कहते हैं कि मैंने आप (सल्ल०) को कहते हुए सुना, "अल्लाह तआ़ला ने मख़्लूक़ात की तक़्दीरें आसमान व ज़मीन को पैदा करने से पचास हज़ार साल पहले लिख ली थीं जबकि उस का अ़र्श पानी पर था।" **(मुस्लिम)**

पर्दा-ए-ग़ैब में जो कुछ है वही उस का मालिक और जानने वाला है और अल्लाह तआ़ला का इ़ल्म ऐसा है कि क़ायनात की हर चीज़ और हर मख़्लूक़ चाहे छोटी हो या बड़ी, ज़मीन में हो या आसमान में, ख़ुश्की में हो या तरी में सब का इ़ल्म उसी को है। यहाँ तक कि जो पत्ता पेड़ से गिरता है उस की ह़रकत व जुम्बिश से वाक़िफ़ है और जो दाना ज़मीन के अन्दर अन्धकार के पर्दे में छुपा हुआ है उस को भी वह ख़ूब जानता है और ख़ुश्क व तर अच्छी बुरी, ज़िन्दा, मुर्दा, आसमानी, ज़मीनी, बह़री व बर्री कोई चीज़ ऐसी नहीं जिस की कैफ़ियत मिक़्दार, हैबत, सूरत और तमाम ह़ालात लौहे़ मह़फ़ूज़ में मौजूद

न हों और अल्लाह के इ़ल्म में न हों यानी आसमानी और ज़मीनी क़ायनात। ज़मीन के नीचे की मख़्लूक़ात और फ़िज़ा से अल्लाह तआ़ला पूरे तौर पर वाक़िफ़ है यहाँ तक कि पहाड़ों की चोटियों पर अन्धेरी रात में एक चींटी (Ant) की चाल और ह़रकत सब उस की नज़र में है और क़ायनात की हर छोटी से छोटी चीज़ की तफ़्सील उस के इ़ल्म में है तो यहाँ अल्लाह तआ़ला अपने इ़ल्म की क़ुद्रत व वुस्अ़त बतलाकर अपनी बड़ाई और तौह़ीद की तरफ़ इन्सानी दिमाग़ों का ध्यान कराना चाहते हैं, जो इन तमाम सूरतों का अस्ल विषय है।

यहाँ आयत में مَفَاتِحُ الْغَيْبِ फ़रमाया है। जिन उ़लमा ने مَفَاتِحُ को **मफ़्तह** की जमा बतलाया है उन्होंने مَفَاتِحُ الْغَيْبِ का तर्जुमः ग़ैब के ख़ज़ानों से किया है और जिन्होंने **मिफ़्तह** की जमा (बहुवचन) क़रार दिया है उन्होंने इस का तर्जुमः ग़ैब की कुन्जियाँ किया है। मतलब यह है कि ग़ैब के ख़ज़ाने और उन की कुन्जियाँ सिर्फ़ अल्लाह के हाथ में हैं। वही उन में से जिस ख़ज़ाने को जिस वक़्त और जितना चाहे किसी पर खोल सकता है। किसी ग़ैर को यह क़ुद्रत नहीं कि अपने फ़न वग़ैरह के ज़रिये से ग़ैबी इलाह़ तक पहुँच सके या जितने ग़ैब अल्लाह तआ़ला ने रखे हैं अपने से उन में इज़ाफ़ा कर ले।

ख़ुलासा यह है कि इस आयत में अल्लाह तआ़ला के इ़ल्म का सही तसव्वुर करने के लिए कुछ उसूल बयान कर दिये और अल्लाह तआ़ला की सिफ़त इ़ल्म की ख़ुसूसियत को ज़ाहिर फ़रमाया गया है कि वही हर ग़ैब व शहादत और दुनिया के ज़र्रह-ज़र्रह का यक़ीनी इ़ल्म रखता है और क़ायनात का कोई ज़र्रह और उस का कोई ह़ाल किसी वक़्त भी उस के इ़ल्म से बाहर नहीं और यह सिफ़त सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला के साथ मख़्सूस है, इसलिए जज़ा व सज़ा का पूरा अख़्तियार उसी को है।

60-62 وَهُوَ الَّذِي يَتَوَفّٰىكُمْ بِالَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُمْ بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيهِ لِيُقْضٰى اَجَلٌ مُّسَمًّى ۚ ثُمَّ
اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ يُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً ۭ
حَتّٰٓى اِذَا جَآءَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفَرِّطُوْنَ ۝ ثُمَّ رُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ ۭ اَلَا لَهُ
الْحُكْمُ وَهُوَ اَسْرَعُ الْحٰسِبِيْنَ ۝

इन आयात की तफ़्सीर में बतलाया गया है कि तुम जो रातों को सोते हो तो यह नींद नहीं बल्कि एक तरह़ की मौत होती है कि नींद की ह़ालत में तुम्हारे ह़वास ज़ाहिरी और बाज़ ह़वासे अन्दुरुनी ख़त्म हो जाते हैं। इस तरह़ रात को सोते वक़्त ज़ाहिरी एह़सास व शुऊर बाक़ी नहीं रहता और आदमी अपने आस-पास बल्कि अपने जिस्म के ह़ालात तक से भी ग़ाफ़िल हो जाता है यानी उस वक़्त यह क़ुव्वतें उस से ले ली जाती हैं।

नींद की ह़ालत-

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) से रिवायत है कि हर इन्सान के साथ एक फ़रिश्ता होता है, जब इन्सान सोता है तो फ़रिश्ता उस की रुह़ यानी रुह़ तमीज़ ले लेता है। अब अगर अल्लाह ने उस के

ज़िन्दगी की रुह़ क़ब्ज़ करने का हुक्म दे दिया तो मौत आ जाती है वर्ना फ़रिश्ता रुह़ तमीज़ को वापस कर देता है। इसी लिए ह़दीस में रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने सोकर उठने के बाद की दुआ़ यह बताई है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَحْیَانَا بَعْدَ مَا اَمَاتَنَا وَاِلَیْهِ النُّشُوْرُ

"शुक्र है अल्लाह का जिस ने मुझे ज़िन्दा किया बाद मार देने के और उसी की तरफ़ उठना है।"

और एक ह़दीस में नींद को मौत का भाई फ़रमाया है, इन्सान के सोचने की बात है कि रात को जब सो जाता है तो उस के काम करने की ताक़तें कहाँ चली जाती हैं। उस के बस में न सोचना रहता है न काम करना, यहाँ तक कि उसे अपने दिन भर के कामों का भी रात को सोते वक़्त कुछ होश नहीं रहता। फिर इन्सान को यह भी अख़्तियार नहीं कि सोने के बाद अपने आप उठ खड़ा हो, अल्लाह ही उसे उठाता है और मौत आने तक उसी तरह़ रात को सुलाता और दिन को उठाता रहेगा। मौत के बाद जिसे एक लम्बी नींद समझना चाहिए वह एक दिन फिर उठाएगा और जो कुछ उस ने किया होगा वह सब उस के सामने होगा।

यहाँ इन्सानी ज़िन्दगी का अ़जीब नक़्शा खींचा गया है। इन्सान की उ़म्र एक सीमित वक़्त के अन्दर घिरी हुई है। उस में वह दिन को काम करता है रात को थक कर सो जाता है और दिन भर जो काम किये थे उस का उस को कुछ होश नहीं रहता और एक वक़्त ऐसा आएगा कि वह बिलूकुल सो जाएगा और लम्बी नींद के बाद एक दिन उठेगा और ज़िन्दगी के किये हुए सारे काम उस के सामने आ जाएँगे और उस का नतीजा भुगतना होगा तो इस से यह बताना मक़्सूद है कि मौत भी नींद ही की तरह़ है, मगर एक लम्बी नींद है।

इन्सान अपनी उ़म्र कुछ सोकर और कुछ जागकर बसर कर देता है उसे सोचना चाहिए कि इस में न सोना उस के बस का है और न जागना। अल्लाह ही उसे सुलाता है और फिर वही उसे जगाता है और फिर हर रोज़ उसे उस के काम याद दिलाता है जिस से यह नतीजा निकलता है कि अल्लाह हर तरह़ अपने बन्दों पर ग़ालिब है और उन के कामों की निगरानी के लिए फ़रिश्ते रोज़ाना उस के पास भेजता है।

एक वक़्त ऐसा आएगा कि इन आ़माल की निगरानी करने वाला फ़रिश्तों के बदले मौत के फ़रिश्ते आ जाएँगे और अपना काम पूरे तौर पर बग़ैर किसी रिआ़यत के अन्जाम देंगे और इन्सान क़ियामत तक के लिए सो जाएगा। जब इस नींद की मुद्दत ख़त्म हो जाएगी तो फिर अल्लाह तआ़ला इन्सान को जगाएगा और वह अपने वास्तविक मालिक के सामने जाकर खड़ा होगा। उस वक़्त उसे पूरा-पूरा पता चल जाएगा कि उस की क़िस्मत का फ़ैसला केवल अल्लाह तआ़ला ही के हाथ में है और अल्लाह के यहाँ उस दिन इन्सान के दुनिया की सारी ज़िन्दगी का कारनामा उस के हाथ में दे दिया जाएगा और सारी उ़म्र की भलाई बुराई को एक तख़्ती में साफ़ कर दिया जाएगा और बावजूद बेशुमार मख़्लूक़ात (श्रृष्टियों) के एक का ह़िसाब दूसरे के ह़िसाब से रुकावट न होगा। जिस तरह़ वह तमाम दुनिया की

मख़्लूक़ात को एक वक़्त में रिज़्क़ देने पर क़ादिर है उसी तरह़ क़ियामत के दिन तमाम आ़लम की मख़्लूक़ात का एक वक़्त में ह़िसाब करने पर क़ादिर होगा। इन आयात में यही मज़मून बयान फ़रमाया गया है। इर्शाद होता है:-

"और वह अल्लाह तआ़ला ऐसा है कि रात में सोने के वक़्त तुम्हारी रुह़ को एक तरह़ से क़ब्ज़ कर लेता है और जो कुछ तुम दिन में करते हो उस को जानता है। फिर इस सोने के बाद तुम को दिन में उठाता है ताकि इसी सोने और जागने से दुनिया की ज़िन्दगी मुकम्मल कर दी जाएगी। फिर इस के ख़त्म होने पर उसी अल्लाह की ओर मर कर तुम को जाना है फिर कुछ क़ियामत से पहले और पूरा-पूरा क़ियामत में तुम को बतला देगा जो कुछ तुम दुनिया में किया करते थे और उसी के ह़िसाब से सज़ा व जज़ा जारी करेगा और वही अल्लाह अपनी क़ुद्रत से अपने बन्दों के ऊपर ग़ालिब व बरतर (प्रभुत्वशाली) है।

और ऐ बन्दों! अल्लाह तुम पर तुम्हारे आ़माल व जान की निगरानी रखने वाले फ़रिश्ते भेजता है कि ज़िन्दगी भर तुम्हारे आ़माल को लिखते रहें और तुम्हारी जान की निगेहबानी करें यहाँ तक कि जब तुम में से किसी को मौत आ पहुँचती है तो उस वक़्त उस की रुह़ हमारे दूसरे भेजे हुए फ़रिश्ते जो इस काम के लिए मुक़र्रर (Fixed) हैं क़ब्ज़ कर लेते हैं और वह हमारे हुक्मों को पूरा करने में ज़रा सी कोताही नहीं करते बल्कि जिस वक़्त और जिस तरह़ रुह़ के क़ब्ज़ करने का हुक्म होता है उसी तरह़ करते हैं, फिर मरने के बाद आख़िरत में सब बन्दे अपने मालिके ह़क़ीक़ी के पास लाए जाएँगे।

ख़ूब सुन लो! उस वक़्त फ़ैसला अल्लाह ही का फ़ैसला होगा और कोई दख़्ल न दे सकेगा और वह बहुत जल्द ह़िसाब ले लेगा और ह़िसाब लेकर जज़ा और सज़ा देगा।"

इन आयात में अल्लाह तआ़ला ने अपनी क़ुद्रत को ज़ाहिर फ़रमाकर बतलाया हैं कि ऐ इन्सानो! यह तुम्हारा सुलाना और जगाना मौत का नमूना है और क़ियामत ह़श्र व नश्र, ह़िसाब व किताब ह़क़ होने की दलील है।

यहाँ इन आयात में तीन क़िस्म के फ़रिश्तों का ज़िक्र फ़रमाया गया है। किरामन कातिबीन जो लोगों के आ़माल नामे (कर्म पत्र) और डायरियाँ तैयार करते रहते हैं। दूसरे मुह़ाफ़िज़ फ़रिश्ते जो अल्लाह के हुक्मों के मुताबिक़ इन्सानों की ह़िफ़ाज़त करते हैं और तीसरे रुह़ क़ब्ज़ करने वाले फ़रिश्ते जिन के अफ़्सर मलिकुल् मौत ह़ज़रत इज़्राईल (अ़लै०) हैं।

नबी करीम (सल्ल०) ने अल्लाह तआ़ला के बारे में फ़रमाया, "अल्लाह तआ़ला ने अच्छे और बुरे काम सब लिख दिये फिर उन की वज़ाह़त फ़रमाई, जो शख़्स एक अच्छा काम करने का इरादा करे लेकिन उसे करे नहीं, तो उस के ह़क़ में अल्लाह एक नेकी लिखेगा और अगर कोई शख़्स एक अच्छा काम करने का इरादा करे और उसे करे भी तो अल्लाह उस के लिए दस से लेकर सात सौ गुना बल्कि इस से भी ज़्यादा सवाब लिखेगा और अगर कोई शख़्स एक बुरा काम करने का इरादा करे लेकिन उसे करे नहीं, तो अल्लाह उस के ह़क़ में एक नेकी का सवाब लिखेगा, लेकिन अगर कोई शख़्स एक बुरे काम करने

का इरादा करे और उसे करे भी तो अल्लाह उस के ह़क़ में सिर्फ़ एक बुराई लिखेगा।"

(सह़ीह़ बुख़ारी, अल् रिफ़ाक़, बाब 31, ह़दीस 6491)

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) कहते हैं कि नबी करीम (सल्ल०) ने फ़रमाया, "रात और दिन के फ़रिश्ते बारी-बारी आते हैं और वह फ़ज्र और अ़स्र की नमाज़ में इकट्ठे हो जाते हैं, रात वाले फ़रिश्ते जब सुबह़ को अल्लाह के दरबार में ह़ाज़िर होते हैं तो वह उन से पूछता है, ह़ालांकि वह ख़ूब जानता है "तुम मेरे बन्दों को किस ह़ालत में छोड़ कर आये हो?" फ़रिश्ते जवाब देते हैं, "ऐ अल्लाह! हम उन्हें ऐसे ह़ाल में छोड़कर आये हैं कि वह नमाज़ पढ़ रहे थे और जब हम उन के पास गये थे तो भी नमाज़ पढ़ रहे थे।" **(सह़ीह़ बुख़ारी, बाब 6, ह़दीस नं० 3223)**

आयत नं० 63 से 73 तक

قُلْ مَنْ يُنَجِّيكُمْ مِنْ ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُونَهُ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً ۚ لَئِنْ أَنْجَانَا مِنْ هَٰذِهِ لَنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ ۝ قُلِ اللَّهُ
يُنَجِّيكُمْ مِنْهَا وَمِنْ كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ أَنْتُمْ تُشْرِكُونَ ۝ قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلَىٰ أَنْ يَبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِنْ فَوْقِكُمْ أَوْ مِنْ تَحْتِ أَرْجُلِكُمْ
أَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَيُذِيقَ بَعْضَكُمْ بَأْسَ بَعْضٍ ۗ انْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُونَ ۝ وَكَذَّبَ بِهِ قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقُّ ۚ
قُلْ لَسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيلٍ ۝ لِكُلِّ نَبَإٍ مُسْتَقَرٌّ ۚ وَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝ وَإِذَا رَأَيْتَ الَّذِينَ يَخُوضُونَ فِي آيَاتِنَا فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتَّىٰ
يَخُوضُوا فِي حَدِيثٍ غَيْرِهِ ۚ وَإِمَّا يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطَانُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرَىٰ مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝ وَمَا عَلَى الَّذِينَ يَتَّقُونَ مِنْ
حِسَابِهِمْ مِنْ شَيْءٍ وَلَٰكِنْ ذِكْرَىٰ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ۝ وَذَرِ الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَهُمْ لَعِبًا وَلَهْوًا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۚ
وَذَكِّرْ بِهِ أَنْ تُبْسَلَ نَفْسٌ بِمَا كَسَبَتْ ۖ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيٌّ وَلَا شَفِيعٌ ۚ وَإِنْ تَعْدِلْ كُلَّ عَدْلٍ لَا يُؤْخَذْ مِنْهَا ۗ أُولَٰئِكَ
الَّذِينَ أُبْسِلُوا بِمَا كَسَبُوا ۖ لَهُمْ شَرَابٌ مِنْ حَمِيمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ۝ قُلْ أَنَدْعُو مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا
وَنُرَدُّ عَلَىٰ أَعْقَابِنَا بَعْدَ إِذْ هَدَانَا اللَّهُ كَالَّذِي اسْتَهْوَتْهُ الشَّيَاطِينُ فِي الْأَرْضِ حَيْرَانَ لَهُ أَصْحَابٌ يَدْعُونَهُ إِلَى الْهُدَى ائْتِنَا ۗ
قُلْ إِنَّ هُدَى اللَّهِ هُوَ الْهُدَىٰ ۖ وَأُمِرْنَا لِنُسْلِمَ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ وَأَنْ أَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَاتَّقُوهُ ۚ وَهُوَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ۝
وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۖ وَيَوْمَ يَقُولُ كُنْ فَيَكُونُ ۚ قَوْلُهُ الْحَقُّ ۚ وَلَهُ الْمُلْكُ يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ ۚ عَالِمُ
الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ۝

अनुवाद–

(63) कह दीजिए, ''कौन है? जो ख़ुश्की और तरी (जल, थल) के अन्धेरों से तुम्हें छुटकारा देता है, 'जिसे' तुम गिड़गिड़ाते हुए और चुपके-चुपके पुकारने लगते हो कि हमें अगर इससे बचा लिया तो हम उसके ज़रूर शुक्रगुज़ार हो जाएँगे।'' (64) कह दीजिए, ''अल्लाह तुम्हें इस (तंगी) से, और हर बेचैनी से नजात देता है? फिर भी तुम उसका साझीदार ठहराने लगते हो!'' (65) कह दीजिए, ''वह'' इसकी क़ुदरत रखता है कि तुम पर, तुम्हारे ऊपर से या तुम्हारे पैरों के नीचे से, कोई अज़ाब भेज दे; या तुम्हें टोलियों में बाँट कर आपस में भिड़ा दे और एक को दूसरे से लड़ाई का मज़ा चखाए।'' देखो! 'हम' कैसे आयतों को तरह-तरह से बयान करते हैं, ताकि ये समझें; (66) और इस (क़ुर्आन) को आप की क़ौम ने झुठला दिया, हालाँकि वह हक़ है, कह दीजिए, ''मैं तुम पर कोई निगराँ (संरक्षक) नहीं हूँ, (67) हर ख़बर के लिए एक वक़्त मुक़र्रर है, और जल्द ही तुम्हें मालूम हो जाएगा।'' (68) और जब आप ऐसे लोगों को देखें जो हमारी आयतों पर नुक़्ता-चीनी करने में लगे हैं, तो उनसे मुँह फेर लें यहाँ तक कि वे दूसरी बातों में लग जाएँ; और अगर शैतान आप को भुला दे, तो याद आने पर उन ज़ालिमों के पास न बैठें (69) और उनके हिसाब के बारे में तो उन लोगों पर कुछ भी ज़िम्मेदारी नहीं, जो डर रखते हैं; और अगर है तो बस नसीहत ताकि वे डरें। (70) और जिन लोगों ने अपने दीन को खेल और तमाशा बना रखा है, और दुनिया की ज़िन्दगी ने उन्हें धोखे में डाल रखा है, छोड़ो उन लोगों को; हाँ, इसके ज़रिये से नसीहत करते रहिए, ताकि कोई अपने आमाल की वजह से हलाकत में न डाला जाए; अल्लाह के सिवा न तो कोई उसका दोस्त होगा, और न कोई सिफ़ारिश करने वाला;

और अगर वह छुटकारा पाने के लिए बदले में कोई चीज़ भी देना चाहे तो भी, वह उससे न लिया जाएगा; यही लोग हैं, जो अपने आ़माल के वबाल में तबाही में पड़ गये, उनके पीने के लिए खौलता हुआ पानी है और दुःख देने वाला अ़ज़ाब भी, इसलिए कि वे इन्कार करते थे। (71) कह दीजिए, ''क्या हम अल्लाह को छोड़ कर उसे पुकारने लग जाएँ जो हमें न फ़ायदा पहुँचा सकें, और न नुक़्सान; और हम उल्टे पाँव फिर जाएँ बाद इसके कि अल्लाह ने हमें राह दिखा दिया हो, उस व्यक्ति की तरह़ जिसे शैतानों ने ज़मीन में भटका दिया हो, और वह हैरान होकर रह गया हो; उसके कुछ साथी हों जो सीधी राह की ओर बुला रहे हों, कि 'हमारे पास चले आओ,'' कह दीजिए, ''रास्ता तो वही है जो अल्लाह ने बताया है, और हमें तो यह हुक्म मिला है कि हम अल्लाह रब्बुलआ़लमीन के फ़रमांबरदार हों। (72) और यह कि नमाज़ क़ायम करो और उसका डर रखो, और 'वही' तो है, जिसके पास तुम इकट्ठे किये जाओगे; (73) और 'वही' तो है जिसने आसमानों और ज़मीन को ह़क़ के साथ पैदा किया और जिस दिन वह किसी चीज़ को कहता है 'हो जा,' तो उसी वक़्त वह हो जाती है; उसका इर्शाद ह़क़ है; और जिस दिन 'सूर' (नरसिंघा) फूँका जाएगा, (उस दिन) उसी की बादशाहत होगी, 'वही' छिपे और ज़ाहिर का जानने वाला है, और 'वही' ह़िकमत वाला, ख़बर रखने वाला है।

आयत नं० 63 से 73 तक की व्याख्या

63-64 قُلْ مَنْ يُنَجِّيكُمْ مِنْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُونَهُ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً ۚ لَئِنْ أَنْجٰنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُونَنَّ
مِنَ الشّٰكِرِينَ ۝ قُلِ اللّٰهُ يُنَجِّيكُمْ مِنْهَا وَمِنْ كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ أَنْتُمْ تُشْرِكُونَ ۝

मुश्रिकीने अ़रब तिजारत वग़ैरह के सिल्सिले में ज़मीनी या समुद्री सफ़र किया करते थे। अपने इन सफ़रों में जब कभी वह जंगलों की अँधेरियों में राह भूल जाते या समुद्र में तूफ़ान आ जाता या किसी और सख़्त मुसीबत में गिरफ़्तार हो जाते और मौत के दरवाज़े पर अपने आप को पहुँचा हुआ ख़याल करते तो उस वक़्त तमाम बुतों और देवी देवताओं को भूल जाते और सब से मुँह फेर कर उसी ऊपर वाले से दुआ़ फ़रियाद करते और कभी एलानिया तौर पर अपनी ज़िल्लत व आ़जिज़ी का एतिराफ़ करते कि इस मुसीबत से तो सिवाय अल्लाह के कोई नहीं बचा सकता और कभी दिल में इस का इक़रार करते कि अगर अल्लाह ने इस मुसीबत से हमें निजात दे दी तो हम ह़क़ को अपना कर हमेशा अल्लाह का शुक्र किया करेंगे यानी उस को अपना उपास्य समझेंगे।

उस के सिवा किसी को उस का शरीक न समझेंगे तो इस ह़ाल को अल्लाह तआ़ला याद दिला कर फ़रमाते हैं कि ऐसी ह़ालत में और इसी तरह़ हर बेक़रारी के वक़्त वही वास्तविक उपास्य निजात देता है और फिर जब तुम को मुसीबत से निजात मिल जाती है और आराम ह़ासिल हो जाता है तो तुम फिर शिर्क में मुब्तिला हो जाते हो और बुतों की पूजा-पाठ में लग जाते हो और जो वादा किया था उस को भूल जाते हो। इन आयात में यही बात बयान फ़रमाई गई है।

मक़्सद यहाँ यह बतलाना है कि ऐसे ह़ालात के वक़्त इन्सान फ़ित्रती तौर (प्राकृतिक रूप) पर अपने

असली मअ़बूदे ह़क़ीक़ी की तरफ़ ध्यान करता है तो ऐसी बेबसी और बेकसी के वक़्त में जब अपने बस का कुछ नहीं रहता और अपने बेबसी का पूरा एह़सास होता है तो एक ज़बरदस्त ताक़त व क़ुद्रत वाले का ध्यान आता है, लेकिन जब इन्सान इस मुसीबत से निजात पा जाता है तो फिर अपनी ह़ालत को भूल जाता है और फिर बग़ावत व नाफ़रमानी शुरु कर देता है।

इन आयात में बतलाया गया है कि इन्सान को हर मुसीबत व तक्लीफ़ से निजात देने पर अल्लाह ही को पूरी क़ुद्रत है और हर क़िस्म की मुसीबत, तक्लीफ़ और परेशानी को दूर करना सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही के क़ुदरत में है और बड़े से बड़ा मुश्रिक भी जो सारी उ़मर बुतों और देवताओं को पूजने वाला हो वह भी जब किसी बड़ी मुसीबत में गिरफ़्तार होता है और जबकि उसे हर तरफ़ से मायूसी हो जाती है तो फिर वह भी अल्लाह ही को पुकारने लगता है और उसी की तरफ़ मुतवज्जेह हो जाता है और मुसीबत के टलने के बाद फिर शिर्क में गिरफ़्तार हो जाता है।

मुश्रिकीने अ़रब का यह तरीक़ा क़ुर्आन पाक में कई जगह बयान फ़रमाया गया है कि सख़्त मुसीबत में वह भी अल्लाह ही की तरफ़ ध्यान करते थे। मुश्रिकीन के इस वाक़िये से अहले इस्लाम को भी नसीह़त ह़ासिल करना चाहिए और मोमिन का काम यह है कि अपने तमाम ह़ालात और तक्लीफ़ व परेशानियों को दूर करने के लिए ज़ाहिरी सामान और तद्बीरों से ज़्यादा दिल से अल्लाह तआ़ला की तरफ़ रुजूअ़ हो। ज़ाहिरी चीज़ें दवा, इलाज और दूसरी चीज़ें बेकार नहीं, उन को भी अख़्तियार करे मगर अस्ल कारसाज़ अल्लाह तआ़ला को समझे, वरना अल्लाह तआ़ला से ग़ाफ़िल होकर सिर्फ़ दुनियावी अस्बाब के पीछे अगर पड़ जाता है तो अन्जामकार में तद्बीरे उल्टी हो जाती है। मर्ज़ के इलाज की नई-नई तद्बीरें की जाती हैं, मगर नतीजे में मर्ज़ रोज़-बरोज़ बढ़ता जाता हैं। चीज़ों की महंगाई कम करने के लिए हज़ारों ज़ाहिरी अस्बाब और तद्बीर (योजनाएँ) की जाती है, लेकिन अन्जामकार महंगाई रोज़ बरोज़ बढ़ती जाती है। चोरी, डकैती, अग़्वा, रिश्वत, चोरबाज़ारी को रोकने के लिए कितनी तद्बीरें हुकूमत इस्तेमाल करती है, मगर हर रोज़ इन जरायम में इज़ाफ़ा (बढ़ोत्तरी) ही होता जाता है।

अल्लाह से ग़ाफ़िल होकर जितना हम अपनी योजनाओं पर भरोसा करते जाते हैं उतना ही हमारे मसायल (Problems) में इज़ाफ़ा हो रहा है।

क़ुर्आन पाक की यह आयत बतलाती हैं कि मसायल से बचने का केवल एक ही तरीक़ा है वह यही कि उसी की तरफ़ दिल से रुजूअ़ किया जाए और ज़हिरी चीज़ों को भी उसी की अ़ता की हुई नेअ़मत के तौर पर इस्तेमाल किया जाए, इस के सिवा सलामती की कोई सूरत नहीं।

65-67 قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلٰٓى اَنْ يَّبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّنْ فَوْقِكُمْ اَوْ مِنْ تَحْتِ اَرْجُلِكُمْ اَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَّيُذِيْقَ
بَعْضَكُمْ بَاْسَ بَعْضٍ ۭ اُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُوْنَ ۞ وَكَذَّبَ بِهٖ قَوْمُكَ وَهُوَ
الْحَقُّ ۭ قُلْ لَّسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ۞ لِكُلِّ نَبَاٍ مُّسْتَقَرٌّ ۡ وَّسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۞

इन आयात में अल्लाह तआ़ला अपनी क़ुद्रते कामिला के दूसरे रुख़ को ज़ाहिर फ़रमाते हैं और

अपनी कुद्रत पर दूसरी दलील क़ायम फ़रमाते हैं और बतलाया जाता है कि तुम को अल्लाह की तरफ़ से मोहलत मिल जाने या उस के दरगुज़र कर देने से बेफ़िक्र न हो जाना चाहिए। जिस तरह़ वह मअ़बूदे ह़क़ीक़ी मुसीबतों से निजात दे सकता है उसी तरह़ उसे यह भी कुद्रत है कि किसी क़िस्म का अ़ज़ाब मुसल्लत करके हलाक कर दे।

फिर अ़ज़ाब की तीन क़िस्में बयान फ़रमाईं। एक जो ऊपर से आये, दूसरे जो पांव के नीचे से आये, तीसरे यह कि तुम को आपस में गिरोह-गिरोह करके सब को आपस में भड़का दे यानी आपस की फूट, जंग व जिदाल, आपसी ख़ूँरेज़ी, फ़िर्क़ा बन्दी और पार्टी बाज़ी में गिरफ़्तार कर दे और एक को दूसरे के हाथ से क़त्ल, क़ैद या ज़िल्लत के अ़ज़ाब में मुब्तिला कर दे। फिर तम्बीह फ़रमाया गया कि देखो अल्लाह तआ़ला किस तरह़ साफ़ तौर से बार-बार बयान करते हैं ताकि तुम अल्लाह की आयात और उस के दलायल पर ग़ौर करो और बात को समझो।

मगर मुश्रिकीने मक्का इन ख़ौफ़ और अ़ज़ाब की बातों को सुनकर बजाय तस्दीक़ और नसीह़त ह़ासिल करने के उन को झुठलाते और ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से अ़ज़ाब का मुतअ़य्यन वक़्त (निर्धारित समय) पूछते और अ़ज़ाब आने का वादा माँगते कि अगर फ़लाँ रोज़ अ़ज़ाब आया तो हम तुम्हारी बात मान लेंगे और इस्लाम कुबूल कर लेंगे क्योंकि वह समझते थे कि यह सब (मआ़ज़ल्लाह) झूठी धमकियाँ हैं अ़ज़ाब वग़ैरह कुछ नहीं आता। इस के जवाब में अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को मुख़ातब होकर फ़रमाया कि ऐ नबी (सल्ल०) आप की क़ौम इस ह़क़ व सदाक़त (सत्यता) का इन्कार करती है और अ़ज़ाब का मज़ाक़ उड़ाते हुए पूछती है कि वह अ़ज़ाब कब आएगा तो आप जवाब में उन से कह दीजिए कि मेरा यह मन्सब (AIM) नहीं कि तुम्हारे झुठलाने पर ख़ुद अ़ज़ाब नाज़िल कर दूँ या उस के वक़्त की तफ़्सील बतलाँऊ। मैं तुम पर कोई दारोग़ा बन कर नहीं आया हूँ और न अ़ज़ाब के आने की ख़िद्मत पर मुतअ़य्यन हूँ। मेरा काम सिर्फ़ बाख़बर और तम्बीह करना है। आगे हर चीज़ के किये का इ़ल्म अल्लाह को मालूम है, जब वक़्त आ जाएगा तो तुम ख़ुद जान लोगे कि मैं जिस चीज़ से डराता था वह कहाँ तक सच है। अब तुम्हें अख़्तियार है मानों या न मानों बहरह़ाल जो वादे कुर्आन करीम में किये गये हैं वह पूरे होकर रहेंगे। अलबत्ता हर चीज़ का वक़्त तय है, जब वह वक़्त आ जाएगा तो होकर रहेगा और उस का नतीजा तुम्हारे सामने आ जाएगा।

इस आयत में अ़ज़ाब की तीन क़िस्मों का ज़िक्र है।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) की दुआ़-

ह़ज़रत सअ़द (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया, “मैंने अल्लाह तआ़ला से तीन दुआ़एँ कीं, दो कुबूल हुईं और एक से मना कर दिया गया। मैंने अपने रब से दुआ़ की कि क़त्ल आ़म के ज़रिये मेरी उम्मत हलाक न हो, अल्लाह ने उसे कुबूल किया और मैंने दुआ़ की कि मेरी उम्मत ग़र्क़ (पानी में डूबने) के ज़रिये हलाक न की जाए, अल्लाह ने उसे कुबूल फ़रमाया और मैंने दुआ़ की कि

आपस में उन की लड़ाई न हो, अल्लाह तआ़ला ने तीसरी से मुझ को रोक दिया।" **(मुस्लिम)**

एक عَذَابًا مِّن فَوْقِكُمْ यानी अ़ज़ाब जो ऊपर से आये।

दूसरे مِن تَحْتِ أَرْجُلِكُمْ यानी अ़ज़ाब जो पैर के नीचे ज़मीन से आये।

और तीसरे أَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا यानी तुम को गिरोह-गिरोह करके आपस में एक दूसरे से भिड़ा दे।

और ऐसे अ़ज़ाब आने की मिसालें पिछली उम्मतों में गुज़र चुकी हैं। जैसे- अस्ह़ाबे फ़ील ने जब मक्का मुकर्रमा पर चढ़ाई की तो परिन्दों के ज़रिये उन पर ऐसी कंकरियाँ ऊपर से बरसाई गईं कि जिस से भूसा कर दिया गया। इसी तरह़ नीचे से आने वाले अ़ज़ाब की भी मुख़्तलिफ़ सूरतें पिछली क़ौमों में गुज़र चुकी हैं। जैसे-

ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) की क़ौम पर जहाँ ऊपर का अ़ज़ाब आसमानी बारिश के साथ आया और नीचे का अ़ज़ाब भी ज़मीन से पानी उबलने की सूरत में आया। यह ऊपर और नीचे के दोनों अ़ज़ाबों में गिरफ़्तार हुए थे। क़ौमे फ़िरऔ़न ज़मीनी अ़ज़ाब यानी समुद्र के पानी में ग़र्क़ करके हलाक की गई। क़ारून भी ज़मीनी अ़ज़ाब में गिरफ़्तार हुआ और वह पूरे अपने ख़ज़ानों के ज़मीन के अन्दर धँस गया। एक तफ़्सीर तो ऊपर और नीचे के अ़ज़ाबों की यह हुई।

और ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) ने फ़रमाया कि ऊपर के अ़ज़ाब से मुराद यह है कि ज़ालिम बादशाह और बेरह़म हुक्काम मुसल्लत हो जाएँ और नीचे के अ़ज़ाब से मुराद यह है कि अपने नौकर गुलाम ख़िद्मतगार, मातह़त मुलाज़िम बेवफ़ा, ग़द्दार, कामचोर, ख़ायन जमा हो जाएँ।

तीसरी क़िस्म अ़ज़ाब की जो ज़िक्र की गई है यानी तुम्हारी मुख़्तलिफ़ पार्टियाँ बनकर आपस में भिड़ जाएँ और आपस में एक दूसरे के लिए अ़ज़ाब बन जाएँ।

अह़ादीस में हैं कि नबी करीम (सल्ल०) के दुआ़ की वजह से इस उम्मते मुस्लिमा को उन दो क़िस्मों के आ़म अ़ज़ाब से जो पिछली कुछ क़ौमों की तरह़ इस उम्मत को ख़त्म कर दे अल्लाह तआ़ला ने नाज़िल न फ़रमाने का वादा फ़रमा लिया। हाँ, कुछ वाक़िआ़त पेश आएँ तो उस का इन्कार नहीं तो रसूले करीम (सल्ल०) की दुआ़ की बरकत से उम्मते मुस्लिमा पर इस क़िस्म के तो अ़ज़ाब न आएँगे जैसे पिछली उम्मतों पर आसमान या ज़मीन से आये जिस से उन की पूरी क़ौम तबाह व बर्बाद हो गई, लेकिन अह़ादीस से साबित है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) को इस दुआ़ से कि मेरी उम्मत आपस के जंग व जिदाल से तबाह न हो, रोक दिया गया। इस से मालूम हुआ कि तीसरी क़िस्म का अ़ज़ाब जिसे अन्दुरूनी और दाख़िली अ़ज़ाब कहना चाहिए इस उम्मत पर भी आ सकता है और वह आपस की फूट, जंग व जिदाल आपसी ख़ूँ-रेज़ी पार्टी बन्दी और आपस का झगड़ा है।

इसीलिए नबी करीम (सल्ल०) ने उम्मत को फ़िर्क़ों और पार्टियों की गिरोह बन्दियों में बँट कर आपसी जंग व जिदाल से मना करने में ताकीदी अह़काम दिये और इस से डराया कि तुम पर अगर अल्लाह तआ़ला का अ़ज़ाब इस दुनिया में आएगा तो आपस ही की जंग व जिदाल के ज़रिये आएगा। चुनांचे ह़दीस में है कि जब यह आयत नाज़िल हुई तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने मुसलमानों को ख़िताब करके

फ़रमाया "तुम मेरे बाद फिर काफ़िरों जैसे न बन जाना कि एक दूसरे की गर्दनें मारने लगो"।

हज्जतुल् विदाअ़ के ख़ुत्बे में जो 9 ज़िल् हिज्जा 10 हि० जुमअ़ के दिन मैदाने अ़रफ़ात में रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया और जिस में दीन व दुनिया का अहम हुक्म देकर ताकीद की, कि तुम में जो यहाँ ह़ाज़िर हैं वह दूसरों तक इन बातों को पहुँचा दें।

इस ख़ुत्बे में दूसरी हिदायात यह भी फ़रमाई कि "लोगों! तमाम मुसलमान भाई हैं मेरे बाद तुम लोग काफ़िर न बन जाना कि एक दूसरे की गर्दनें मारने लगो।" और एक रिवायत में इस तरह़ है कि "आपस में तुम्हारी जान और तुम्हारा माल और तुम्हारी इ़ज़्ज़त एक दूसरे के लिए क़ियामत तक उतनी ही एह़तिराम के लायक़ हैं जितना आज का दिन आज का महीना और यह मुह़तरम (सम्मानित) ज़मीन।

मगर अफ़्सोस सद् अफ़्सोस कि इस उम्मते मुस्लिमा को क़ुर्आन व ह़दीस ने जितना ताकीद और सख़्ती के साथ आपस के इख़्तिलाफ़ और गिरोह बन्दी से रोका उतना ही यह अ़ज़ाब उम्मते मुस्लिमा पर छाता जा रहा है। आज यह नस्ली, भाषाई, वतनी क़ौमियतों में बँट गईं और फिर हर गिरोह व जमाअ़त अपने अन्दर भी इख़्तिलाफ़ व इन्तिशार का शिकार होकर मुख़्तलिफ़ गिरोहों में बँट गई और अपनी इच्छा भक्ति का शिकार हो गई और एक दूसरे के ख़िलाफ़ जंग व जिदाल, लअ़न-तअ़न और बाज़ अवक़ात क़त्ल व क़िताल तक में मुब्तिला होकर اَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَّيُذِيْقَ بَعْضَكُمْ بَاْسَ بَعْضٍ अ़ज़ाब को अपने ऊपर मुसल्लत कर लिया।

इसमें कुफ़्फ़ारे मक्का को डराया गया है कि अल्लाह तआ़ला को यह भी क़ुद्रत ह़ासिल है कि जब किसी शख़्स जमाअ़त या क़ौम को उस की सरकशी व नाफ़रमानी की सज़ा में मुब्तिला करना चाहता है तो अ़ज़ाब नाज़िल करता है। आख़ीर में मुशिरकीने अ़रब या क़ुरैशे मक्का जो इन्कारे ह़क़ और रसूलुल्लाह (सल्ल०) की मुख़ालिफ़त पर जमे हुए थे और बतौर मज़ाक़ के रसूलुल्लाह (सल्ल०) से अ़ज़ाब का वक़्त पूछते थे उन के बारे में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को हिदायत फ़रमाई गई है कि ऐ नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! आप उन से फ़रमा दें कि मैं इस अ़ज़ाब दिलाने की ख़िद्मत पर नियुक्त नहीं किया गया बल्कि हर बात का अल्लाह के इ़ल्म में एक वक़्त मुक़र्रर है, वह अपने वक़्त पर होकर रहेगी और इस का नतीजा तुम्हारे सामने भी आ जाएगा। अब कुफ़्फ़ारे मक्का और मुशिरकीने अ़रब न सिर्फ़ ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से इख़्तिलाफ़ रखते बल्कि ह़क़ को झुठलाया करते। इस के अ़लावा भी क़ुर्आन पाक और अरकाने इस्लाम के साथ मज़ाक़ किया करते और अपनी मजालिस में इस्लाम का मज़ाक़ उड़ाते। इसलिए आगे मुसलमानों को ऐसे जलूसों में शिरकत से मना किया जाता।

68-70 وَاِذَا رَاَيْتَ الَّذِيْنَ يَخُوْضُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖ ۭ وَاِمَّا
يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَمَا عَلَى الَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ مِنْ حِسَابِهِمْ
مِّنْ شَيْءٍ وَّلٰكِنْ ذِكْرٰى لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ۝ وَذَرِ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَعِبًا وَّلَهْوًا وَّغَرَّتْهُمُ
الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَذَكِّرْ بِهٖٓ اَنْ تُبْسَلَ نَفْسٌۢ بِمَا كَسَبَتْ ڰ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ ۚ

وَاِنْ تَعْدِلْ كُلَّ عَدْلٍ لَّا يُؤْخَذْ مِنْهَا ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اُبْسِلُوْا بِمَا كَسَبُوْا ۚ لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ
وَّعَذَابٌ اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ۟

पिछली आयात में यह बतलाया गया था कि अल्लाह वह है जो इन्सान को हर वक़्त आफ़त व मुसीबत से बचाने वाला है और जिस तरह़ वह अपनी क़ुद्रत व ह़िक्मत से इन्सान को मसायल से निजात दे सकता है, उसी तरह़ वह इस पर भी क़ादिर है कि कुफ़्र व शिर्क और ह़क़ को झुठलाने, नाफ़रमानी व सरकशी करने की वजह से बतौर सज़ा के कोई अ़ज़ाब आसमान या ज़मीन से ज़ाहिर कर दे।

कुफ़्फ़ारे मक्का इन तमाम वादों और वई़दों (चेतावनियों) को झुठलाया करते और बतौर मज़ाक़ मुताल्बा करते कि अगर हम पर अ़ज़ाब नाज़िल हो सकता है तो नाज़िल करके दिखलाया जाए, जिस पर उन्हें जवाब दिया गया कि जो वादे व वई़द क़ुर्आन पाक में बयान किये गये हैं वह तुम मानो या न मानो बहरह़ाल वह पूरे होकर रहेंगे। अल्बत्ता हर चीज़ का वक़्त इ़ल्म इलाही में मुक़र्रर है जब वक़्त आ जाएगा तो वह चीज़ होकर रहेगी और उस का नतीजा तुम्हारे सामने भी आ जाएगा।

मुश्रिकीने मक्का का रवैया न सिर्फ़ झुठलाने और ह़क़ से एराज़ करने का था, बल्कि वह अपनी मजलिसों और मह़फ़िलों में क़ुर्आन, इस्लाम और अरकाने इस्लाम का मज़ाक़ उड़ाते। एक बेवक़ूफ़ मुश्रिक ने कोई बात कही तो उस पर दस बीस ने उस के साथ क़हक़हा लगाया, इस से मुसलमानों को जो अगर उन की मजालिस में जा बैठते तो बड़ा रंज (दुख) होता था और तबीअ़त में बोझ मालूम होता था, इसलिए हुक्म आया कि तुम वहाँ न बैठो और ऐसी मजालिस से उठ खड़े हुआ करो क्योंकि उस वक़्त मना करने की तो क़ुव्वत न थी।

इसलिए हिदायत दी गई कि ऐसी मजलिसों से अलग हो जाओ यहाँ तक कि वह इस मज़ाक़ को छोड़कर दूसरी बातों में लग जाएँ और अगर कोई भूले से बैठ गया तो याद आ जाने पर फ़ौरन उठ खड़ा हो।

अब जबकि मुसलमानों को काफ़िरों के जल्सों में शरीक होने और उन के साथ बैठने की मुमानिअ़त हो गई तो नसीह़त की क्या सूरत हो सकती थी। इसलिए मुसलमानों को फ़िक्र हुई कि अगर हम उन के जल्सों में शरीक न हुए तो दअ़वत किस तरह़ देंगे और बुत परस्ती और कुफ़्र व शिर्क की मुमानिअ़त न करने पर भी हम से मुवाख़िज़ा (पकड़) होगा। कुछ सह़ाबा ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से यह भी अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! अगर उन की मजलिस में जाने की मुमानिअ़त रही तो हम मस्जिदे ह़राम में नमाज़ और तवाफ़ से भी मह़रूम हो जाएँगे क्योंकि कुफ़्फ़ारे मक्का तो हमेशा वहाँ बैठे ही रहते हैं और उन का काम ही बुरी बात करना है। इस पर आयत नाज़िल हुई और हुक्म हुआ कि जो लोग अल्लाह से डरते हैं और अल्लाह की आयत पर नुक्ताचीनी (criticism) को बुरा जानते हैं और ऐसी मजालिस की शिरकत से बचते हैं वह अगर अपने काम से मस्जिदे ह़राम में जाएँ या कोई दीनी या दुनियावी ज़रूरत ऐसी मजलिस में जाने की हो तो ऐसे लोगों पर उन मुश्रिकीन के तअ़न और मज़ाक़ के ह़िसाब से कोई

मुवाख़िज़ा नहीं। यानी मुसलमानों से उन के बुरे आमाल का कोई मुवाख़िज़ा (पकड़) नहीं, लेकिन मुसलमानों के ज़िम्मे बक़द्रे ज़रूरत नसीहत करना और उन को समझाना लाज़िम है शायद वह नसीहत करने से सही रास्ते पर आ जाएँ और इन बातों से बाज़ आ जाएँ।

अब यहाँ तक तो अल्लाह तआला ने मुसलमानों को काफ़िरों की ख़ास उस मजलिस से किनाराकशी का हुक्म दिया जहाँ अल्लाह की आयतों पर तअ़न और मज़ाक़ किया जाता। आगे ऐसे लोगों की आम बैठक और साथ छोड़ देने का हुक्म है कि ग़ैरते ईमानी का तक़ाज़ा यह है कि ऐसे लोगों का साथ बिल्कुल छोड़ दे कि जिन्होंने अपने दीन को खेल-तमाशा बना लिया और दुनिया के नशे में मस्त होकर यह समझ बैठे कि जो कुछ है वह यही दुनिया है। ऐसे बेअ़क़्ल लोगों से कि जिन्हें अपने अन्जाम और मरने के बाद की फ़िक्र न हो, रात-दिन बस दुनिया के हासिल करने में लगे हैं चाहे हराम तरीक़े से हो या हलाल से और इस दुनिया तल्बी में न ज़ुल्म की परवाह होती हो न इस बात का ध्यान हो कि आख़िर कब तक यहाँ रहूँगा। सो जिस को दूसरे आलम का ख़याल ही नहीं तो वहाँ के सामान का क्या ज़िक्र।

झुठलाने वालों का अन्जाम-

फिर ऐसे लोगों का अन्जाम जो झुठलाने और मज़ाक़ करने में पड़े हुए हैं। बतलाया गया है कि जब वह अपने करतूतों में पकड़े जाएँगे तो न उन को कोई हिमायती मिलेगा जो मदद करके अ़ज़ाबे इलाही से छुड़ा ले, न कोई सिफ़ारिश करने वाला होगा, जिसकी सिफ़ारिश से काम निकल सके और न किसी क़िस्म का फ़िद्या और बदला क़ुबूल किया जाएगा। अगर बिल् फ़र्ज़ एक मुजरिम दुनिया भर की चीज़ों को बदले में देकर छूटना चाहे तो न छूट सकेगा।

चूंकि दुनिया में इन्सान इस तरह करता है कि अगर कभी कोई ग़ल्ती या ज़ुल्म कर बैठा और उस की सज़ा उस के सामने आ गई तो सज़ा से बचने के लिए तीन क़िस्म के ज़रीये अख़्तियार करता है-

कभी अपने जत्थे और जमाअ़त का ज़ोर उस के ख़िलाफ़ इस्तेमाल करके अपने ज़ुल्म की धमकी से बचने की कोशिश करता है।

या फिर बड़े लोगों की सिफ़ारिश से काम लेता है।

या फिर यह कोशिश करता है कि अपने आप को सज़ा से बचाने के लिए कुछ माल ख़र्च करे।

अल्लाह तआला ने यहाँ बतला दिया कि अल्लाह के बाग़ी और मुजरिम के लिए सज़ा से बचाने वाला न कोई दोस्त अ़ज़ीज़ हो सकता है, न किसी की सिफ़ारिश चल सकती है और न कोई माल क़ुबूल किया जा सकता है।

ख़ुलासा यह है कि अ़ज़ाबे इलाही से बचने की कोई सूरत मुम्किन न होगी और अपने करतूतों की बदौलत तबाही में पड़ेंगे और यह वह लोग हैं जो अपने बुरे कर्मों की सज़ा में पकड़े जाएँगे उन को पीने के लिए जहन्नम का खौलता हुआ गर्म पानी मिलेगा जिस के बारे में दूसरी जगह क़ुर्आन पाक में आया है कि वह उन की अतड़ियों के टुकड़े कर देगा और इस हमीम के अ़लावा और भी दर्दनाक क़िस्म के

अ़ज़ाब होंगे उन के कुफ़्र और शिर्क की वजह से। इन आयात में यही फ़रमाया गया है।

इन आयात में जहाँ मुन्किरीन को तम्बीह व वअ़ीद है वहाँ अहले इस्लाम के लिए भी नसीह़त है कि दीन को खेल तमाशा बनाना और दुनिया पर रीझे रहना और आख़िरत से ग़ाफ़िल और बेफ़िक्र रहना यह ख़ास कुफ़्फ़ार की आ़दत हैं। मुसलमान को तो हर मामले में आख़िरत को सामने रखना चाहिए।

इन आयात में अहले इस्लाम को एक उसूली तअ़लीम यह दी गई है कि बुरे लोगों की मजालिस से परहेज़ करें और जिस काम का करना ख़ुद गुनाह है उस के करने वालों की मजलिस में शरीक रहना भी गुनाह है उस से बचना चाहिए।

क़ुर्आन व ह़दीस की बेशुमार आयतों के अ़लावा तजुर्बः इस का गवाह है कि इन्सान को तमाम बुराईयों और जरायम में मुब्तिला करने वाली चीज़ उस की बुरी सोसाईटी और बुरा माह़ौल है जिस में फँसने के बाद इन्सान पहले तो बुराईयों में मुब्तिला हो जाता है फिर जब आ़दत पड़ जाती है तो उस बुराई का एह़सास भी ख़त्म हो जाता है, बल्कि बुराई को भलाई और भलाई को बुराई समझने लगता है। जैसा कि ह़दीस में रसूल (सल्ल०) का इर्शाद है कि-

जब कोई शख़्स पहली बार गुनाह में मुब्तिला होता है तो उस के दिल पर एक काला नुक़्ता लग जाता है। जैसे- सफ़ेद कपड़े में एक काला नुक़्ता हर शख़्स को नागवार होता है उस से दिल में नागवारी पैदा होती है, लेकिन जब एक के बाद दूसरा और तीसरा गुनाह करता चला जाता है और पिछले गुनाह से तौबः नहीं करता तो एक के बाद दूसरे काले नुक़्ते लगते चले जाते हैं यहाँ तक कि दिल की नूरानी बिल्कुल काली हो जाती है और उस का नतीजा यह होता है कि उस को बुरे भले की तमीज़ नहीं रहती।

क़ुर्आन करीम में इसी को लफ़्ज़ राना से तअ़बीर फ़रमाया है

كَلَّا بَلْ ۜ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ *(सूरः मुतफ़्फ़िफ़ीन, 14)* यानी उन के दिलों में उन के आ़माले बद् की वजह से ज़ंग लग गया है कि अब सलाह़ियत ही ख़त्म हो गई और ग़ौर किया जाए तो मालूम होता है कि इन्सान को इस ह़ालत पर पहुँचाने वाली चीज़ अक्सर उस का ग़लत माह़ौल और उस की बुरी सोह़बत ही है नऊज़ू बिल्लाह। इसीलिए बच्चों की तर्बियत करने वालों का फ़र्ज़ है कि बच्चों को ऐसे माह़ौल से और सोसाईटी से बचाने में पूरी कोशिश करें।"

71-73

قُلْ اَنَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَنُرَدُّ عَلٰٓى اَعْقَابِنَا بَعْدَ اِذْ هَدٰىنَا اللّٰهُ كَالَّذِى اسْتَهْوَتْهُ الشَّيٰطِيْنُ فِى الْاَرْضِ حَيْرَانَ ۖ لَهٗٓ اَصْحٰبٌ يَّدْعُوْنَهٗٓ اِلَى الْهُدَى ائْتِنَا ۗ قُلْ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ۗ وَاُمِرْنَا لِنُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ وَاَنْ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّقُوْهُ ۗ وَهُوَ الَّذِىٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۗ وَيَوْمَ يَقُوْلُ كُنْ فَيَكُوْنُ ۚ قَوْلُهُ الْحَقُّ ۗ وَلَهُ الْمُلْكُ يَوْمَ يُنْفَخُ فِى الصُّوْرِ ۗ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۗ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ۝

इन आयात में शिर्क का ग़लत होना और तौह़ीद का ह़क़ होना बयान फ़रमाया गया है। कुछ रिवायात में यह भी है कि मुश्रिकीने मक्का ने मुसलमानों से इस्लाम छोड़ने की दरख़्वास्त भी की थी।

इस आयत में इस का जवाब भी है और बतलाया गया है कि मुसलमान की शान यह है कि गुमराहों को नसीहत करके सीधी राह पर लाएँ और जो अल्लाह से भाग कर ग़ैरुल्लाह की चौखट पर सर रखे हुए हैं उन को अल्लाह के सामने झुकवाने की फ़िक्र करे। मुसलमान से यह उम्मीद रखना बिल्कुल फ़ुज़ूल है कि वह अल्लाह के सिवा किसी ऐसी हस्ती के आगे सर झुकाएगा जिस के क़ब्ज़े में न नफ़ा है न नुक़सान या बुरों की सोहबत में रहकर तौहीद और ईमान की साफ़ सड़क छोड़ देगा और शिर्क की भूल-भुलैया की तरफ़ उल्टे पांव फिरेगा।

अगर मआ़ज़ल्लाह मुसलमान ऐसा करे तो उस की मिसाल उस मुसाफ़िर की सी होगी जो अपनी राह जानने वाले साथी के साथ जंगल में सफ़र कर रहा था कि ख़बीस जिन्नात ने उसे बहका कर रास्ते से अलग कर दिया। वह चारों तरफ़ भटकता फिरता है और उस के साथी उसे आवाज़ें दे रहे हैं कि इधर आओ रास्ता इस तरफ़ है, मगर वह हैरान होकर न कुछ समझता है न इधर आता है।

इसी तरह़ समझ लो कि आख़िरत के मुसाफ़िर के लिए सीधी राह इस्लाम व तौह़ीद की है और जिन के साथ यह सफ़र तय होता है वह पैग़म्बर और उन के मानने वाले हैं जब यह बद् बख़्त शैतानों के पंजे में फँस के भटकता फिरता है तो उस के हादी (रास्ता दिखाने वाले) और साथी हमदर्दी में राहे ह़क़ (सीधी राह) की तरफ़ बुला रहे हैं, मगर यह न सुनता है न समझता है न इधर आता है। तो ऐ मुश्रिकीन! क्या तुम्हारी यह ग़र्ज़ है कि हम अहले इस्लाम अपनी ऐसी मिसालें बना लें।

जिन मुश्रिकीन ने मुसलमानों से इस्लाम छोड़ने को कहा था कि उन को जवाब देने के लिए अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों को यह सिखाया, जिस का मतलब यह हुआ कि अहले इस्लाम मुश्रिकीन से साफ़ कह दें कि तुम हम से यह उम्मीद मत रखो कि हम इस्लाम छोड़कर तौह़ीद से फिर कर और रसूल (सल्ल०) की पैरवी से मुँह मोड़ कर शैतान की बतलाई हुई राहों पर चलेंगे। चूंकि क़ानून हिदायत में दो बातें होनी ज़रूरी हैं।

एतिक़ाद (आस्था) की दुरुस्तग़ी और आ़माल की बेहतरी। इसलिए हुक्म होता है कि ऐ नबी (सल्ल०)! आप कह दीजिए कि हम को अल्लाह की तरफ़ से हुक्म हो गया है कि उसी परवरदिग़ार और मालिक के सामने सर झुकाएँ जो तमाम आ़लम का पैदा करने वाला और बाक़ी रखने वाला है। उस की तौह़ीद को मानें और उस के तमाम हुक्मों पर ईमान लाकर अ़मल करें। ख़ासतौर से नमाज़ को तो पाबन्दी अवक़ात व शरायत के साथ ख़ुशूअ़ व ख़ूज़ूअ़ से अदा करें और हर क़ौल व फ़ेअ़ल, ह़रकत व सुकून, ख़्वाब व बेदारी में उस के हुक्मों पर चलें और मना की गई बातों से परहेज़ करें? इसलिए कि क़ियामत के दिन उसी के पास सब को जाना और ह़िसाब-किताब के बाद जज़ा व सज़ा भुगतनी है। उसी ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और उन की पैदाइश में कोई नुक़्स नहीं छोड़ा फिर जब यह सब कुछ फ़ना हो जाएगा तो दोबारा वह हुक्म देगा तो फ़ौरन तमाम दुनिया फिर पैदा हो जाएगी उस का हुक्म पूरा होगा किसी को सरकशी की ताक़त न होगी। वही इस लायक़ है कि हम उस के फ़रमाँबरदार हों। उस के सामने बन्दग़ी अख़्तियार करें और उस से डरते रहें। इसी का हम को हुक्म हुआ है जिस से

हम किसी हाल में मुँह नहीं मोड़ सकते। इन आयात में यही बयान फ़रमाया गया है।

हज़रत इब्ने उमर (रज़ि०) से रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, सूर एक क़िरन (नरसंघा या बिगुल) है जिस में फूँका जाएगा। **(तिर्मिज़ी)**

सूर को इस्राफ़ील (अ़लै०) अपने मुँह में लिए अल्लाह के हुक्म का इन्तिज़ार कर रहे हैं, जिस दिन उन्हें हुक्म मिलेगा वह इस में फूँक मारेंगे।

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि सूर दो बार फूँका जाएगा और इन दोनों में चालीस का फ़ासला होगा। लोगों ने पूछा चालीस दिन का? कहने लगे कि मैं नहीं कह सकता। लोगों ने कहा कि चालीस माह का? कहने लगे कि मैं नहीं कह सकता। फिर लोगों ने पूछा कि चालीस बरस का? कहने लगे कि मैं नहीं कह सकता।

इस के बाद हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) ने कहा कि अल्लाह आसमान से बारिश बरसाएगा तो लोग ज़मीन से इस तरह उग आएँगे जैसे हरियाली उग आती है। देखो आदमी के जिस्म में हर चीज़ गल सड़ जाती है सिवाय जिस्म की नोंक के। यह उस मक़ाम की हड्डी है जहाँ जानवर की दुम होती है। क़ियामत के दिन उसी हड्डी से मख़्लूक़ को पैदा किया जाएगा। **(बुख़ारी)**

आयत नं० 74 से 90 तक

وَإِذْ قَالَ إِبْرٰهِيمُ لِأَبِيهِ آزَرَ أَتَتَّخِذُ أَصْنَامًا آلِهَةً ۚ إِنِّي أَرٰىكَ وَقَوْمَكَ فِي ضَلٰلٍ مُّبِينٍ ۝ وَكَذٰلِكَ نُرِي إِبْرٰهِيمَ مَلَكُوتَ
السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَلِيَكُونَ مِنَ الْمُوقِنِينَ ۝ فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ الَّيْلُ رَأٰ كَوْكَبًا ۚ قَالَ هٰذَا رَبِّي ۚ فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَا أُحِبُّ الْأٰفِلِينَ ۝
فَلَمَّا رَأَى الْقَمَرَ بَازِغًا قَالَ هٰذَا رَبِّي ۚ فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَئِن لَّمْ يَهْدِنِي رَبِّي لَأَكُونَنَّ مِنَ الْقَوْمِ الضَّالِّينَ ۝ فَلَمَّا
رَأَى الشَّمْسَ بَازِغَةً قَالَ هٰذَا رَبِّي هٰذَا أَكْبَرُ ۚ فَلَمَّا أَفَلَتْ قَالَ يٰقَوْمِ إِنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا تُشْرِكُونَ ۝ إِنِّي وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي
فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ حَنِيفًا ۖ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝ وَحَاجَّهُ قَوْمُهُ ۚ قَالَ أَتُحَاجُّونِّي فِي اللَّهِ وَقَدْ هَدٰىنِ ۚ وَلَا أَخَافُ
مَا تُشْرِكُونَ بِهِ إِلَّا أَن يَشَاءَ رَبِّي شَيْئًا ۗ وَسِعَ رَبِّي كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۗ أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ۝ وَكَيْفَ أَخَافُ مَا أَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُونَ
أَنَّكُمْ أَشْرَكْتُم بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا ۚ فَأَيُّ الْفَرِيقَيْنِ أَحَقُّ بِالْأَمْنِ ۖ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ الَّذِينَ آمَنُوا
وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمٰنَهُم بِظُلْمٍ أُولٰئِكَ لَهُمُ الْأَمْنُ وَهُم مُّهْتَدُونَ ۝ وَتِلْكَ حُجَّتُنَا آتَيْنٰهَا إِبْرٰهِيمَ عَلٰى قَوْمِهِ ۚ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّن
نَّشَاءُ ۗ إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ۝ وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحٰقَ وَيَعْقُوبَ ۚ كُلًّا هَدَيْنَا ۚ وَنُوحًا هَدَيْنَا مِن قَبْلُ ۖ وَمِن ذُرِّيَّتِهِ دَاوُودَ وَسُلَيْمٰنَ وَأَيُّوبَ وَيُوسُفَ
وَمُوسٰى وَهٰرُونَ ۚ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝ وَزَكَرِيَّا وَيَحْيٰى وَعِيسٰى وَإِلْيَاسَ ۖ كُلٌّ مِّنَ الصّٰلِحِينَ ۝ وَإِسْمٰعِيلَ وَالْيَسَعَ وَيُونُسَ وَلُوطًا ۚ
وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى الْعٰلَمِينَ ۝ وَمِنْ آبَائِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَإِخْوٰنِهِمْ ۖ وَاجْتَبَيْنٰهُمْ وَهَدَيْنٰهُمْ إِلٰى صِرٰطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۝ ذٰلِكَ هُدَى اللَّهِ
يَهْدِي بِهِ مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۚ وَلَوْ أَشْرَكُوا لَحَبِطَ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ أُولٰئِكَ الَّذِينَ آتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ۚ فَإِن
يَكْفُرْ بِهَا هٰؤُلَاءِ فَقَدْ وَكَّلْنَا بِهَا قَوْمًا لَّيْسُوا بِهَا بِكٰفِرِينَ ۝ أُولٰئِكَ الَّذِينَ هَدَى اللَّهُ ۖ فَبِهُدٰىهُمُ اقْتَدِهْ ۗ قُل لَّا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا ۖ إِنْ هُوَ إِلَّا
ذِكْرٰى لِلْعٰلَمِينَ ۝

अनुवाद-

(74) और (याद करो,) जब इब्राहीम ने अपने बाप 'आज़र' से कहा, ''क्या मूर्तियों को मअ़बूद बनाते हो?, मैं तो तुम्हें और तुम्हारी क़ौम को खुली गुमराही में पड़ा देख रहा हूँ,'' (75) और इस तरह 'हम' इब्राहीम को आसमानों और ज़मीन के अ़जाइबात (विचित्र चीज़ें) दिखाने लगे, ताकि वह ख़ूब यक़ीन करने वालों में हो जाएँ; (76) जब रात ने उनको ढांप लिया, तो (उन्होंने) एक सितारा देखा; कहने लगे, ''यह मेरा रब है!'' जब वह ग़ायब हो गया तो कहने लगे, ''मुझे ग़ायब हो जाने वाले पसंद नहीं। (77) फिर जब उन्होंने चाँद को चमकता हुआ देखा तो कहा, यह मेरा रब है,'' फिर जब वह भी छिप गया तो कहा, ''अगर मेरा रब मुझे राह न दिखाता तो मैं उन लोगों में हो जाता जो भटक रहे हैं।'' (78) फिर जब सूरज को देखा चमकता हुआ, तो कहने लगे, ''मेरा रब यह है! यह बहुत बड़ा है, ''फिर जब वह भी डूब गया, तो कहने लगे, 'ऐ मेरी क़ौम के लोगो! जिन चीज़ों को तुम साझीदार बनाते हो मैं उनसे बेज़ार (विरक्त) हूँ, (79) मैंने सबसे यक्सू (एकाग्र) होकर अपना चेहरा उसकी ओर कर लिया है, जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, और मैं साझी ठहराने वालों में से नहीं।'' (80) और उनकी क़ौम उनसे झगड़ने लगी, तो उन्होंने कहा, ''क्या तुम मुझसे अल्लाह के बारे में झगड़ते हो? जबकि उसने मुझको सीधा रास्ता दिखा दिया; मैं उनसे नहीं डरता, और जिन चीज़ों को तुम उसका साझीदार ठहराते हो, बल्कि मेरा रब जो कुछ चाहता है वह पूरा हो कर

रहता है, और हर चीज़ पर मेरे रब के इल्म का अहाता (ज्ञान परिधि) है, फिर क्या तुम याद नहीं करते;
(81) और मैं तुम्हारे ठहराए हुए साझीदार से कैसे डरूँ! जबकि तुम इस बात से नहीं डरते कि तुमने अल्लाह
का साझीदार उस चीज़ को बनाया है, जिसकी उसने कोई सनद (प्रमाण) नाज़िल नहीं की? अब दोनों फ़रीक़ों
में से कौन सा फ़रीक़ अम्न का हक़दार है? अगर तुम जानते हो (तो बाताओ)।'' (82) जो लोग ईमान लाए
और अपने ईमान में किसी ज़ुल्म की मिलावट नहीं की, उनके लिए अम्न है और वही हिदायत पाने वाले हैं।
(83) और यह हमारी वह दलील है जिसे 'हमने' इब्राहीम को उनकी अपनी क़ौम के मुक़ाबले में दिया था;
हम जिसे चाहते हैं दर्जे में ऊँचा कर देते हैं, बेशक तुम्हारा रब हिकमत वाला, इल्म वाला है। (84) और
'हमने' उन्हें (इब्राहीम को) इस्हाक़ और याक़ूब दिये, हर एक को राह दिखाई; और नूह को 'हमने' इससे
पहले राह दिखाई थी और उसकी औलाद में दाऊद, और सुलेमान, और अय्यूब, यूसुफ़, और मूसा, और
हारून को भी; और इसी तरह 'हम' नेक लोगों को बदला दिया करते हैं। (85) और ज़करिया और यह्या
और ईसा और इल्यास को भी (राह दिखायी), यह सब नेक लोग थे। (86) और इस्माईल, अल्-यसअ़,
और यूनुस और लूत को भी, और इन सबको तमाम दुनिया के लोगों पर फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) दी थी। (87)
और उनके बाप-दादा और औलाद, और उनके भाइयों में से कितने लोगों को (राह दिखाई) और 'हमने' उन्हें
चुन लिया था और उन्हें सीधे राह की ओर चलाया था। (88) यह अल्लाह की हिदायत है, जिसके ज़रिये
'वह' अपने बन्दों में से जिसको चाहता है राह दिखाता है, और अगर उन लोगों ने कहीं अल्लाह का साझीदार
ठहराया होता! तो उनका सब किया धरा बरबाद हो जाता। (89) ये ऐसे लोग थे जिनको 'हमने' किताब और
हुक्म (शरीअ़त), और नुबूवत दी थी; फिर अगर ये लोग इसे मानने से इन्कार करें, तो 'हमने' इन पर ऐसे
लोगों को मुक़र्रर कर दिये हैं कि वे उनसे कभी इन्कार करने वाले नहीं। (90) ये ऐसे लोग हैं जिन्हें अल्लाह
ने राह दिखाई थी, तो तुम उन्हीं की पैरवी करो; कह दीजिए,''मैं तुमसे इसका कोई बदला नहीं माँगता, यह
(क़ुर्आन) तो सारी दुनिया के लोगों के लिए एक नसीहत है।''

आयत नं० 74 से 90 तक की व्याख्या

74-79

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ آزَرَ أَتَتَّخِذُ أَصْنَامًا آلِهَةً ۚ إِنِّي أَرَاكَ وَقَوْمَكَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ۝ وَكَذَٰلِكَ نُرِي إِبْرَاهِيمَ
مَلَكُوتَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلِيَكُونَ مِنَ الْمُوقِنِينَ ۝ فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ اللَّيْلُ رَأَىٰ كَوْكَبًا ۖ قَالَ هَٰذَا رَبِّي ۖ فَلَمَّا أَفَلَ
قَالَ لَا أُحِبُّ الْآفِلِينَ ۝ فَلَمَّا رَأَى الْقَمَرَ بَازِغًا قَالَ هَٰذَا رَبِّي ۖ فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَئِنْ لَمْ يَهْدِنِي رَبِّي لَأَكُونَنَّ
مِنَ الْقَوْمِ الضَّالِّينَ ۝ فَلَمَّا رَأَى الشَّمْسَ بَازِغَةً قَالَ هَٰذَا رَبِّي هَٰذَا أَكْبَرُ ۖ فَلَمَّا أَفَلَتْ قَالَ يَا قَوْمِ إِنِّي بَرِيءٌ مِمَّا
تُشْرِكُونَ ۝ إِنِّي وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ حَنِيفًا ۖ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝

हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) के ज़माने में तूफ़ाने नूह (अ़लै०) के बाद हज़रत नूह (अ़लै०) की औलाद फैली तो हज़रत ईसा (अ़लै०) से लगभग ढ़ाई हज़ार साल पहले और रसूलुल्लाह (सल्ल०) से कई हज़ार साल पहले ईराक़ में एक शहर बाबुल की बुनियाद पड़ी। हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) इसी शहर बाबुल या

उस के क़रीब में पैदा हुए थे और आप का सिल्सिला-ए-नसब (वंश) 9 पुश्तों में ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) से मिलना बयान किया जाता है। इस शहर के खंडरात अब तक बग़दाद से 40 मील के फ़ासले पर दूर तक टीलों में दबे हुए मालूम होते हैं।

ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) के ज़माने में 'बाबुल' और 'नैनवा' का ह़ाकिम 'नमरूद' था, जो बड़ा सरकश ज़ालिम और घमण्डी था। यह लोग ज़्यादहतर मूर्ति पूजक थे, चुनांचे ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) के वालिद भी बुत बनाकर बेचा करते थे और वह लोग चाँद, सूरज और सितारों को भी पूजते थे। सोने चाँदी के ख़याली देवताओं की शक्ल बना रखे थे और यह सब लोग बुतपरस्त थे। ऐसे ज़माने में अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) को पैदा फ़रमाया।

ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) की मूर्ति पूजा-

अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) को शुरु ही से ह़क़ की हिदायत अ़ता फ़रमाई थी और वह यह यक़ीन रखते थे कि बुत न सुन सकते हैं, न देख सकते हैं, न किसी की पुकार का जवाब दे सकते हैं और न नफ़ा व नुक़्सान का उन से कोई वास्ता है। वह सुबह़ व शाम आँख से देखते थे कि इन बेजान मूर्तियों को मेरा बाप अपने हाथों से बनाता और गढ़ता रहता है और जिस तरह़ उस का जी चाहता है नाक, कान, आँखें और जिस्म तराश लेता और फिर ख़रीदने वालों के हाथ बेच देता है।



क्या यह ईश्वर या देवता हो सकते हैं? हरगिज़ नहीं। ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) अगरचे बचपन से तौह़ीद के फैलाने वाले थे, लेकिन बेअ़सत (रसूल बनाये जाने) के बाद सब से पहले उन्होंने इस तरफ़ तवज्जोह फ़रमाई और तौह़ीद के सिल्सिले में बातचीत की। जब वालिद (पिता) ने अपने बाप दादा के दीन की बात की तो आप ने जवाब में अपने बाप से कहा जैसा कि इन आयात में बतलाया जाता है कि इस से ज़्यादा गुमराही क्या होगी कि "इन्सान" अपने हाथ से तराशे हुए पत्थरों को ख़ुदाई का दर्जा देकर उन

ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०)
लगभग 1800 ईसा पूर्व

के सामने सर झुकाये, उन की अिबादत करने लगे और उन्हीं से मुरादे माँगने लगे।

फिर अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) के बारे में बतलाया कि हम ने हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) की नज़र में उन के वालिद और क़ौम की बुत परस्ती कमतर कर के दिखाई थी और उन पर यह ज़ाहिर कर दिया कि बुत किसी तरह़ भी अिबादत के लायक़ नहीं।

हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) और उनके क़ौम की बातचीत-

एक रात जब ख़ूब अंधेरा हो गया तो हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने उस सितारे को देखकर जिस की उन के वालिद (पिता) और क़ौम के लोग पूजा किया करते थे कहने लगे कि तुम्हारे ख़याल में मेरा और तुम्हारा रब और मअ़बूद यह सितारा है। यही अिबादत के लायक़ है! लेकिन उस की रौशनी और चमक-दमक थोड़ी देर की है। चुनाँचे थोड़ी देर बाद जब वह सितारा डूब गया तो हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने फ़रमाया देखा सितारा डूब गया और डूब जाने वाली चीज़ों को मैं मअ़बूद (उपास्य) बनाना पसन्द नहीं करता लेकिन इस रौशन दलील ने उन के दिलों में हिदायत न पैदा की और वह अपने अ़क़ीदे से न फिरे तो हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने अपने दलील को ज़ोरदार बनाने के लिए फ़रमाया कि अच्छा देखो! चाँद तुलूअ़ (उदय) हो गया और तुम्हारे ख़याल में यह मेरा और सारी क़ौम का रब है और यही पूजा के लायक़ है, लेकिन यह भी डूबता है, इस में भी मअ़बूद (उपास्य) होने की क़ाबिलियत नहीं। तुम जो इस को रब समझते हो देखो यह ग़ायब हो गया और ग़ायब हो जाने वाला कहीं मअ़बूद हो सकता है तुम को अल्लाह तआ़ला ने गुमराही में छोड़ रखा है।

अगर अल्लाह मुझे भी हिदायत पर साबित और क़ायम न रखे तो मैं भी गुमराह हो जाऊँ। जब यह दलील भी उस क़ौम के ह़क़ में फ़ायदेमन्द न हुई, तो जब सुबह़ हुई और सूरज निकला तो हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने फ़रमाया कि हाँ, तुम्हारे अ़क़ीदे (Faith) में यह सब से बड़ा ख़ुदा हो सकता है, मगर यह अ़क़ीदा भी ग़लत है, यह तो ग़ायब हो जाने वाली चीज़ है। इस को उपास्य का क्या ह़क़ हो सकता है। चुनांचे जब सूरज भी डूब गया तो फ़रमाया ऐ क़ौम वालो! मैं अल्लाह को छोड़ कर दूसरों की पूजा से अलग हूँ, इन में से कोई भी पालनहार नहीं हो सकता क्योंकि सब कह रहे हैं कि हम मजबूर हैं, ह़ाकिम नहीं मह़कूम (प्रजा) हैं। एक हस्ती है जो इन सब को बनाने वाली है और जिस के हुक्म के आगे सब झुके हुए हैं, इसलिए मैं तो सिर्फ़ उसी का हूँ। मेरी राह शिर्क करने वालों की राह नहीं है, मैंने अपनी अिबादत और अिबादत का मर्कज़ (केन्द्र) अल्लाह को क़रार दे लिया है जो पूरी दुनिया का पालनहार है। मैं किसी तरह़ शिर्क करने वालों के गिरोह में शामिल नहीं हो सकता।

ख़ुलासा यह है कि हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने ह़क़ीक़त को बतला दिया कि मेरा और तुम्हारा पालने वाला रब इन तमाम मख़्लूक़ात (श्रृष्टियों) में से कोई नहीं हो सकता। न ख़ुद तराशा हुआ बुत, न सितारा, न चाँद, न सूरज कि जो ख़ुद अपने वजूद में दूसरे के मुह़ताज हैं और हर वक़्त और हर ह़ाल में डूबने और निकलने में घिरे हुए हैं जिन के ह़ालात बदलते रहते हों वह अपनी ह़रकात में किसी दूसरी ताक़त

के ताबेअ़ (Under) हों। यह इस बात की दलील हैं कि यह सब फ़ानी हैं और सब के सब किसी ख़ास निज़ाम (System) में जकड़े हुए हैं और किसी बड़ी हस्ती के हुक्म में हैं कि ज़र्रह बराबर उस के हुक्म के ख़िलाफ़ नहीं हो सकते।

यहाँ इन आयात में एक बात क़ाबिले ज़िक्र यह है कि अहले सुन्नत वल् जमाअ़त का अ़क़ीदा है कि अम्बिया (अ़लै०) नुबूव्वत से सरफ़राज़ फ़रमाये जाने के बाद तो "मअ़सूम" होते ही हैं, मगर नुबूव्वत से पहले भी वह मोमिन कामिल होते हैं। चुनाँचे अल्लाह तआ़ला ने हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) को शुरु ही से हक़ की बसीरत और हिदायत अ़ता फ़रमाई थी और उ़लम-ए-तफ़्सीर का इस बारे में इत्तिफ़ाक़ है कि हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने कभी सितारा परस्ती नहीं की और नुबूव्वत से पहले की भी आप की तमाम ज़िन्दगी शिर्क से बिल्कुल पाक थी।

तमाम उ़लमा का मस्लक यह है कि हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) का यह कहना "यह मेरा रब है" قول هٰذَا رَبِّي उन का अपना विचार न था, बल्कि अपनी क़ौम से मुनाज़िरह व बहस के लिए था कि अपनी क़ौम पर बुत परस्ती और सितारा परस्ती का ग़लत होना स्पष्ट कर दें।

"मआ़ज़ल्लाह यह बात न थी कि हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) किसी शक और शुब्हा में पड़े हुए थे कि चाँद और सूरज की चमक, दमक को देखकर उन को धोका लगा हो और यह शुब्हा हुआ हो कि शायद यह मेरा रब हो और इस सूरज को डूबते देखा तब यह शुब्हा दूर हुआ।

हज़रात अम्बिया-ए-किराम को अल्लाह तआ़ला की ज़ात व सिफ़ात में कभी धोका नहीं होता। हज़रात अम्बिया-ए-किराम पैदाइश से ही बुलन्द दर्जे के वली होते हैं। हज़रात अम्बिया नुबूव्वत और बेअ़सत से पहले अगरचे नबी और रसूल नहीं होते मगर आ़ला दर्जे के वली ज़रूर होते हैं। हज़रात अम्बिया को किसी वक़्त सिफ़ाते ख़ुदावन्दी में किसी क़िस्म का धोका नहीं होता और न किसी क़िस्म का शक और शुब्हा पेश आता है और अम्बिया-ए-किराम में हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) का तो ख़ास दर्जा है। वह तो अम्बिया के नाम से मशहूर हैं। अल्लाह तआ़ला ने उन के बारे में सूरः अम्बिया में इर्शाद फ़रमाया-

وَلَقَدْ اٰتَيْنَآ اِبْرٰهِيْمَ رُشْدَهٗ مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا بِهٖ عٰلِمِيْنَ

(और तहक़ीक़ हम ने इब्राहीम को शुरु ही से उन की शान के मुताबिक़ ख़ास हिदायत अ़ता की थी और हम उन की योग्यता और फ़ितरत को पहले ही से ख़ूब जानते थे।)

हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) शुरु ही से नेकी और हिदायत को फैलाने वाले थे और बचपन ही से सूरज व चाँद को अल्लाह तआ़ला की मख़्लूक़ समझते थे। क़ौम चूंकि सितारा परस्ती में मुब्तिला थी, इसलिए उन के ग़लत अ़क़ीदे को रद्द करने के लिए फ़रमाया कि अगर थोड़ी देर के लिए तुम्हारे गुमान के मुताबिक़ यह तस्लीम कर लिया जाए कि यह सितारा मेरा रब है तो फिर थोड़ी देर उस के डूबने का इन्तिज़ार करो, तुम को ख़ुद ही मालूम हो जाएगा कि यह सितारे मअ़बूद (उपास्य) नहीं, इसलिए कि वह सब हुक्म ख़ुदावन्दी के तहत (Under) हैं। वह इस के ख़िलाफ़ हरकत नहीं कर सकते, कभी तुलूअ़ (निकलता) होता है और कभी ग़ुरूब (डूबता) एक हाल पर ठहरता नहीं। उन की रौशनी और उन की हरकत और सिम्त

(दिशा) अपने अख़्तियार में नहीं। अल्लाह तआला ने जिस सितारे को जितनी रौशनी अ़ता कर दी है उतनी ही उन में रौशनी है। अपनी ज़ात में वह कुछ करने के मालिक नहीं तो उसकी अ़िबादत कैसे हो सकती हैं। ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने उन के मअ़बूदों से अपनी बेज़ारी और अलगाव बयान फ़रमाई।

यह कि ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) का यह तमाम कलाम शुरु से आख़िर तक बतौर बह़स और मुनाज़िरा था। जैसा कि बाद की आयतें इस बात पर दलालत करती हैं कि यह तमाम कलाम सितारा परस्तों के साथ मुनाज़िरा (Debate) था, ह़ज़रत ख़लीलुल्लाह की ज़ाती फ़िक्र न थी।

ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) के बाप आज़र अपनी क़ौम की तरह़ मुश्रिक और गुमराह ही रहे, चुनाँचे दूसरे मुश्रिकों की तरह़ वह भी जहन्नमी होंगे जैसा कि ह़दीस में है।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "ह़श्र के दिन इब्राहीम (अ़लै०) अपने बाप आज़र से मिलेंगे जिस का चेहरा काला और गर्द गुबार में छिपा हुआ होगा। ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) उन से कहेंगे, क्या मैंने आप को यह नहीं कहा थाः मेरी नाफ़रमानी न करें? तो आज़र कहेगा, आज मैं तेरी नाफ़रमानी नहीं करुँगा। ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) अपने रब से अ़र्ज़ करेंगे, ऐ रब! तूने मुझ से वादा फ़रमाया था कि तू मुझे ह़श्र के दिन रुस्वा नहीं करेगा तो इस से ज़्यादा और क्या ज़िल्लत और रुस्वाई होगी कि मेरा बाप ज़लील व रुस्वा हो, वह तेरी रह़मत से मह़रूम है। इस पर अल्लाह तआला फ़रमाएगा, मैंने काफ़िरों पर जन्नत ह़राम कर दी है। फिर फ़रमाएगा, ऐ इब्राहीम! अपने पैर के नीचे तो देख, इब्राहीम (अ़लै०) देखेंगे कि नजासत (लैट्रीन) से लिथड़ा हुआ एक बिच्छू है जिसे टांगों से पकड़ा जाएगा और जहन्नम में फेंक दिया जाएगा।" **(सह़ीह़ बुख़ारी, अह़ादीसुल् अम्बिया, बाब 8, ह़दीस 3350)**

"आज़र" ही इब्राहीम (अ़लै०) के ह़क़ीक़ी वालिद थे और उन लोगों का ख़याल दुरुस्त नहीं जो कहते हैं कि आज़र चचा थे। अ़रबी ज़बान में चचा के लिए शब्द **अ़म्म** प्रयोग होता है, इसलिए क़ुर्आन के ज़ाहिर से मालूम होता है कि ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) के वालिद ही हैं।

जब ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने क़ौम के सामने तौह़ीदे इलाही (एकेश्वरवाद) और शिर्क की जो रौशन दलील पेश की तो क़ौम बजाय क़ायल होने के ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) से लड़ने झगड़ने और डराने धमकाने पर उतर आई और फिर इस का जवाब ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) की क़ौम को दोबारा अगली आयत में ज़ाहिर किया गया है।

80-82 وَحَآجَّهُ قَوْمُهُ ۚ قَالَ أَتُحَآجُّوٓنِّى فِى ٱللَّهِ وَقَدْ هَدَىٰنِ ۚ وَلَآ أَخَافُ مَا تُشْرِكُونَ بِهِۦٓ إِلَّآ أَن يَشَآءَ رَبِّى
شَيْـًٔا ۗ وَسِعَ رَبِّى كُلَّ شَىْءٍ عِلْمًا ۗ أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ۝ وَكَيْفَ أَخَافُ مَآ أَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُونَ أَنَّكُمْ
أَشْرَكْتُم بِٱللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِۦ عَلَيْكُمْ سُلْطَـٰنًا ۚ فَأَىُّ ٱلْفَرِيقَيْنِ أَحَقُّ بِٱلْأَمْنِ ۖ إِن كُنتُمْ
تَعْلَمُونَ ۝ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَلَمْ يَلْبِسُوٓا۟ إِيمَـٰنَهُم بِظُلْمٍ أُو۟لَـٰٓئِكَ لَهُمُ ٱلْأَمْنُ وَهُم مُّهْتَدُونَ ۝

ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने क़ौम की हुज्जत के जवाब में जो इर्शाद फ़रमाया वह इन आयात में ज़िक्र फ़रमाया गया है और बतलाया गया है कि ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने फ़रमाया, क्या तुम अल्लाह

के बारे में मुझ से झगड़ा करते हो और अपने बुतों से मुझ को डराते हो और मुझे गुमराह करना चाहते हो, हालाँकि अल्लाह तआ़ला ने मुझ को सही राह दिखा दी है। मेरी हिदायत के सामान पैदा फ़रमा दिये और मेरी अ़क्ल को रौशन कर दिया तो झगड़ा करने की गुन्जाइश किस तरह़ मुम्किन है? रहा उन बुतों और देवताओं के नुक़्सान का ख़ौफ़ तो मुझे तुम्हारे इन बुतों के बारे में कोई परवाह नहीं। इन से मुझे कोई ख़ौफ़ नहीं, यह मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। इन को नुक़्सान की ताक़त ही नहीं। हाँ, जो कुछ मेरा रब चाहेगा वही होगा।

अगर अल्लाह ही को मेरा नुक़्सान मक़्सूद होगा तो होकर रहेगा मगर तुम्हारे मअ़बूदों का कोई दख़्ल नहीं। मेरे परवरदिगार के इ़ल्म में सब कुछ समा सकता है, उस का इ़ल्म हर चीज़ को मुहीत (घेरे हुए) है। अगर उस की मस्लहत मुझे नुक़्सान पहुँचाने में है तो मुझे चूँ-चरा का हक़ नहीं, मगर मैं इन धमकियों से किसी तरह़ डर नहीं सकता। तुम को अल्लाह की नाफ़रमानी करने और उस के साथ बुतों को शरीक ठहराने में भी कोई ख़ौफ़ नहीं आता जिस के लिए तुम्हारे पास एक दलील भी नहीं और मुझ से यह उम्मीद रखते हो कि मैं एक अल्लाह का मानने वाला तुम्हारे बुतों से डर जाऊँगा। मैं पूरी क़ुद्रत रखने वाले का मानने वाला हूँ, तुम मजबूर बेअख़्तियार बेताक़त बातिल मअ़बूदों की अ़िबादत करते हो।

अब तुम ही बताओ कि हम दोनों गिराहों में से कौन मुफ़्सिद (फ़सादी) है और कौन अम्न पसन्द। अगर तुम को अ़क्ल से कुछ हिस्सा मिला है तो तुम खुद फ़ैसला करो और बताओ, अगर तुम नहीं बता सकते तो सुनो मैं बताता हूँ जिन लोगों ने अल्लाह को एक जाना उस के मअ़बूद पर ईमान लाया और उस ईमान व यक़ीन में शिर्क व कुफ़्र को शामिल न किया यही राहे रास्त पर हैं और आख़िरत का अम्न व निजात उन्हीं के लिए ख़ास है। इन आयतों की तफ़्सीर में यही मज़्मून बयान फ़रमाया गया है।

यहाँ आख़िरी आयत में اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يَلْبِسُوْٓا اِيْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ اُولٰٓئِكَ لَهُمُ الْاَمْنُ وَهُمْ مُّهْتَدُوْنَ

(जो लोग ईमान रखते हैं और अपने ईमान को शिर्क के साथ मिलावट नहीं करते ऐसे ही के लिए अम्न है क़ियामत में और वही दुनिया में राह पर चल रहे हैं।)

इस आयत से मालूम हुआ कि क़ियामत में अम्न और दुनिया में हिदायत का वादा या बशारत दो शर्तों के साथ फ़रमाया गया है।

एक तो اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا फ़रमाया यानी जो लोग ईमान रखते हैं। दूसरे وَلَمْ يَلْبِسُوْٓا اِيْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ फ़रमाया। यानी जिन्होंने अपने ईमान के साथ जुल्म का पेवन्द नहीं लग गया। सहीह़ ह़दीस में है कि नबी करीम (सल्ल०) ने यहाँ ज़ुल्म की तफ़्सीर शिर्क से फ़रमाई है तो ह़ासिल यह होगा कि अम्न और हिदायत देने वाले वही लोग हो सकते हैं जो ईमान व यक़ीन लाएँ।

इस तरह़ कि इस में शिर्क की मिलावट बिल्कुल न हो। अगर अल्लाह पर ईमान रखने के बावजूद शिर्क को न छोड़ा तो वह न ईमान शरई है न उस के ज़रिये अम्न व हिदायत नसीब हो सकती है।

शिर्क यही है कि अल्लाह तआ़ला की ज़ात, उस की सिफ़ात, उस के कमालात, उस की अ़िबादत

और उस के हुदूद व अ़ज़्मत में किसी और को शरीक बना लिया, चाहे वह फ़रिश्ते हों या अम्बिया या औलिया या कोई और।

इस आख़िरी आयत से मालूम हुआ कि शिर्क सिर्फ़ यही नहीं कि खुले तौर पर मुश्रिक और बुत परस्त हो जाए बल्कि वह आदमी मुश्रिक है जो किसी बुत की पूजा-पाठ नहीं करता और कलिमा पढ़ता है, मगर किसी फ़रिश्ते या रसूल या इमाम या वलीअल्लाह को अल्लाह की बाज़ सिफ़ात में शरीक ठहराए। सूरः यूसुफ़ में इर्शाद फ़रमाया وَمَا يُؤْمِنُ اَكْثَرُهُمْ بِاللّٰهِ اِلَّا وَهُمْ مُّشْرِكُوْنَ और उन में से अक्सर लोग अल्लाह पर ईमान भी लाते हैं और फिर शिर्क भी किये जाते हैं।

इस आयत के तहत ह़ज़रत शब्बीर अह़मद उ़स्मानी (रह़०) ने लिखा है। "ज़बान से सब कहते हैं कि ख़ालिक़ और मालिक अल्लाह तआ़ला है, मगर इस के बावजूद कोई बुतों को ख़ुदाई का ह़िस्सेदार बना रहा है किसी ने उस के लिए बेटे और बेटियाँ बना ली हैं, किसी ने बाबाओं को ख़ुदाई के अख़्तियारात दे दिये हैं। बहुत से लोग तअ़ज़िया परस्ती, क़ब्र परस्ती, पीर परस्ती करके तौह़ीद के साफ़ चश्मे को ख़राब कर रहे हैं। दिखावा से तो कितने लोग हैं जो पाक होंगे, ईमान का ज़बानी दावा करके बहुत कम हैं जो अ़क़ीदा या अ़मल के दर्जे में शिर्क में न फंसे हों।"

इस से साफ़ ज़ाहिर हुआ कि बावजूद दावा ईमान के शिर्क में एक मुसलमान भी गिरफ़्तार हो सकता है और शिर्क वह जुर्म अ़ज़ीम है जिस के बारे में अल्लाह तआ़ला ने तय फ़रमा दिया है कि अगर उस से दुनिया में सच्ची तौबः न कर ली गई तो यह जुर्म हरगिज़ क़ाबिले माफ़ी न होगा और उस को ज़रूर भुगतना होगा। सूरः निसा पाँचवें पारे में इर्शाद है-

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَ يَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدِ افْتَرٰٓى اِثْمًا عَظِيْمًا ۝

बेशक अल्लाह तआ़ला इस बात को न बख़्शेंगे कि उन के साथ किसी को शरीक क़रार दिया जाए, उस के सिवा और जितने गुनाह हैं वह बख़्श देंगे और जो शख़्स अल्लाह तआ़ला के साथ शरीक ठहराता है वह बड़े जुर्म का करने वाला होगा और सूरः माइदा में इर्शाद है-

اِنَّهٗ مَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَاْوٰىهُ النَّارُ ۚ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ۝

बेशक जो शख़्स अल्लाह के साथ शिर्क करेगा उस पर अल्लाह तआ़ला जन्नत को ह़राम कर देगा और उस का ठिकाना दोज़ख़ है और ऐसे ज़ालिमों का कोई मदद्गार न होगा।

83-90

وَتِلْكَ حُجَّتُنَآ اٰتَيْنٰهَآ اِبْرٰهِيْمَ عَلٰى قَوْمِهٖ ۚ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ۚ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ۝ وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ
وَيَعْقُوْبَ ۚ كُلًّا هَدَيْنَا ۚ وَنُوْحًا هَدَيْنَا مِنْ قَبْلُ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهٖ دَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ وَاَيُّوْبَ وَيُوْسُفَ وَمُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ۚ
وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ۝ وَزَكَرِيَّا وَيَحْيٰى وَعِيْسٰى وَاِلْيَاسَ ۚ كُلٌّ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ وَاِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَيُوْنُسَ
وَلُوْطًا ۚ وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَمِنْ اٰبَآئِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَاِخْوَانِهِمْ ۚ وَاجْتَبَيْنٰهُمْ وَهَدَيْنٰهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ
مُّسْتَقِيْمٍ ۝ ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِيْ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۚ وَلَوْ اَشْرَكُوْا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ۚ فَاِنْ يَّكْفُرْ بِهَا هٰٓؤُلَآءِ فَقَدْ وَكَّلْنَا بِهَا قَوْمًا لَّيْسُوْا بِهَا

بِكٰفِرِيْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ فَبِهُدٰىهُمُ اقْتَدِهْ ؕ قُلْ لَّآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٰى لِلْعٰلَمِيْنَ ۝

अब हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) के बारे में बतलाया जाता है कि उन की क़ौम के मुक़ाबिले में अल्लाह तआ़ला ने ऐसी दलीलें दी थीं कि जिस से हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) को सरबुलन्दी हुई और हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने क़ौम के मुक़ाबिले में जो दलीलें दीं, वह अल्लाह तआ़ला ही की तअ़लीम थी, किसी इन्सान की तअ़लीम का असर न था। और इस तरह़ अल्लाह तआ़ला जिस को चाहते हैं अपना फ़ज़्ल व इनआ़म फ़रमाते हैं और इल्म व हिक्मत अ़ता करते हैं। इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) की नस्ल में से कुछ अम्बिया का ज़िक्र किया और हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) के पूर्वज हज़रत नूह़ (अ़लै०) का भी ज़िक्र किया ताकि यह मालूम हो कि यह ख़ुदा परस्ती और तौह़ीद कुछ ख़ास अम्बिया (अ़लै०) ही का दिया हुआ नहीं। उन से पहले उन के पूर्वज हज़रत नूह़ (अ़लै०) भी मुवह्ह़िद (एकेश्वरवादी) थे, मुश्रिक न थे और फिर हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) के बाद भी उन की नस्ल में ऐसे लोग पैदा हुए कि जिन की बुज़ुर्गी अ़रब व अ़जम में मशहूर थी वह सब मुवह्ह़िद (एकेश्वरवादी) थे मुश्रिक न थे।

इन सब की राह हिदायत की थी और यह सब अल्लाह तआ़ला के हिदायत याफ़्ता थे। फिर बतलाया गया कि यह तौह़ीद और ख़ुदा परस्ती न सिर्फ़ उन पैग़म्बरों को बल्कि उन हज़रात के कुछ बाप दादाओं को और कुछ औलाद और कुछ भाईयों को भी तरीक़े हिदायत दी और उन को नेक बनाया और राहे रास्त की तरफ़ उन को हिदायत की तो मक़्सद इन सब के ज़िक्र से तौह़ीद व रिसालत की ताईद (समर्थन) है और यह बताना है कि जिस को राहे हिदायत चाहिए वह इन हज़रात की पैरवी और इन की तरह़ तौह़ीद का क़ायल हो और ख़ुदा परस्ती अख़्तियार करे, शिर्क से बचे और उस से नफ़रत करे और इन अम्बिया का ज़िक्र ख़ुसूसियत से अहले अ़रब के लिए ज़्यादा मुनासिब था कि वह लोग अपने को हज़रत इब्राहीम (अ़लै०)



हज़रत नूह़ (अ़लै०)

- दक्षिणी इराक़ में क़ौम-ए-नूह़ का इलाक़ा जहाँ आज कूफ़ा आबाद है।
- कोहे जूदी (तुर्की)

की तरफ़ मन्सूब करते थे बस इस ज़िक्र में मुश्रिकीने अ़रब को तम्बीह थी कि ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) और उन के मानने वाले तो सब मुवह्हिद (एकेश्वरवादी) थे और शिर्क को बुरा समझते थे, फिर तुम उन के कैसे नामलेवा हो कि उन के तरीक़े के ख़िलाफ़ तरीक़ा अख़्तियार करते हो।

मतलब यह हुआ कि शिर्क व बुत परस्ती को छोड़कर ख़ास तौहीद क़ुबूल करो, जिसका तअ़ल्लुक़ इस्लाम के क़ुबूल करने और आख़िरी पैग़म्बर (सल्ल०) पर ईमान लाने और आप की दअ़वत यानी दीने ह़क़ क़ुबूल करने में है। फिर तमाम इन्सानों को सुनाने के लिए यह बतलाया गया है कि शिर्क इन्सान के तमाम आ़माल को बर्बाद कर देता है और इस मामले में और किसी की तो ह़क़ीक़त क्या है। अगर नबियों से भी मआ़ज़ल्लाह शिर्क की ग़ल्ती हो जाए तो उन का भी सारा किया धरा अकारत हो जाए। फिर बतौर भविष्यवाणी के यह फ़रमाया कि अगर मक्का के काफ़िर या दूसरे मुश्रिकीन इस किताब, इस शरीअ़त और ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की नुबूव्वत से इन्कार करें तो अल्लाह का दीन उन पर मौक़ूफ़ (आधारित) नहीं। अल्लाह पाक एक गिरोह ऐसे लोगों का पैदा कर देगा जो इस राह की ह़िफ़ाज़त और पैरवी अपने ज़िम्मे ले लेगा और इन्कार की जगह सच्चाई को दिल व जान से क़ुबूल करेगा।

चुनांचे अन्सार और मुहाजिरीन का गिरोह पैदा हुआ जिन्होंने इस दीने ह़क़ की ह़िफ़ाज़त अपने ज़िम्मे ली और इस की पूरी-पूरी पैरवी करके दिखाया। फिर बतूलाया गया कि तमाम अम्बिया (अ़लै०) अक़ायद और उसूले दीन में एक थे, सब का बुनियाद एक है, हर नबी को उसी पर चलने का हुक्म है चुनाँचे रसूलुल्लाह (सल्ल०) भी उसी रास्ते पर चल रहे हैं। अख़ीर में रसूलुल्लाह (सल्ल०) को यह एलान फ़रमा देने का इर्शाद हुआ कि ऐ लोगो! मैं तुम से किसी तरह़ के बदले का तालिब नहीं। अगर तुम नहीं मानते तो मेरा तो कोई नफ़ा ख़त्म नहीं होता मेरा अज्र तो ख़ुदा के यहाँ साबित है। हाँ, तुम नसीह़त से हट के ख़ुद अपना नुक़्सान करोगे, सारे जहान में एक नहीं तो दूसरा नसीह़त क़ुबूल करेगा, जो इन्कार करेगा उसे अपनी मह़रूमी और बद्बख़्ती का मातम करना चाहिए। इन आयात की तफ़्सीर में यही मज़मून है।

इन आयात में ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) के इनूआ़मात बयान फ़रमा कर एक तो उस क़ानूने क़ुद्रत की तरफ़ इशारा किया गया है, कि जो शख़्स अल्लाह की राह में अपनी मह़बूब चीज़ों को क़ुर्बान करता है अल्लाह तआ़ला उस को दुनिया में भी इस से बेहतर चीज़ अ़ता फ़रमा देते हैं।

ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने अल्लाह की राह में अपने बाप, बिरादरी, घर-बार वतन क़ौम सब को छोड़ दिया था तो अल्लाह तआ़ला ने आख़िरत के दर्जात का वादा फ़रमाया और दुनिया में भी उन को ख़ास इ़ज़्ज़त अ़ता फ़रमाई कि क़ियामत तक आने वाली नस्लें चाहे वह यहूदी हों या नसारा या अहले इस्लाम, सब ही उन के क़ायल और उन की तअ़ज़ीम करते हैं और फिर यह इ़ज़्ज़त अ़ता फ़रमाई कि ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) के बाद क़ियामत तक जितने अम्बिया व रसूल मब्अूस फ़रमाए वह सब आप ही की नस्ल और औलाद में से हैं।

एक शाख़ जो ह़ज़रत इस्ह़ाक़ (अ़लै०) से चली उनकी नस्ल (वंश) से तमाम अम्बिया बनी इस्राईल

हज़ारों की तअ़दाद में हुए और दूसरी शाख़ जो हज़रत इस्माईल (अ़लै०) से चली उस में हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) पैदा हुए, तो इन आयात में हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) और आप के दादाओं में हज़रत नूह़ (अ़लै०) को मिलाकर अट्ठारह पैग़म्बरों का ज़िक्र फ़रमाया गया। इन 18 पैग़म्बरों के अ़लावा जिन का ज़िक्र क़ुर्आन करीम में दूसरे मौक़ो पर आया है वह सात (7) हैं-

हज़रत आदम (अ़लै०), हज़रत इद्रीस (अ़लै०), हज़रत शुऐब (अ़लै०), हज़रत सालेह़ (अ़लै०), हज़रत हूद (अ़लै०), हज़रत ज़ुल् किफ़्ल (अ़लै०) और हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०)। यह सब कुल २५ अम्बिया-ए-किराम हुए जिन का ज़िक्र नाम और नुबूव्वत की तस्रीह़ के साथ क़ुर्आन करीम में मौजूद है।



हज़रत इस्ह़ाक़ (अ़लै०)

इन आयात में जो पेशीनगोई फ़रमाई गई-

فَاِنْ يَّكْفُرْ بِهَا هٰٓؤُلَآءِ فَقَدْ وَكَّلْنَا بِهَا قَوْمًا بِرِيْنَ

सो अगर यह नुबूव्वत का इन्कार करें तो हम ने उस के लिए बहुत लोग मुक़र्रर कर दिये हैं जो इस के इन्कारी नहीं हैं। इस आयत के बारे में बाज़ मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि यह आयत सिर्फ़ सहाब-ए-किराम मुहाजिरीन व अन्सार के बारे में नाज़िल हुई है। इस सूरत में मतलब यह होगा कि अगर यह क़ुरैश और मक्का के रहने वाले कुफ़्फ़ार आप (सल्ल०) की बात को नहीं मानते और तमाम पिछले नबियों की हिदायत पेश कर देने के बावजूद इन्कार ही पर तुले हुए हैं और आप (सल्ल०) की नुबूव्वत का इन्कार करते हैं तो ऐ नबी (सल्ल०)! आप इस का रंज व फ़िक्र न कीजिए इस्लाम तो फैल कर रहेगा।

हम ने मुहाजिरीन और अन्सार का गिरोह ईमान लाने के लिए मुक़र्रर कर रखा है और बाज़ लोगों के नज़्दीक आयत का मतलब आ़म है, सहाबा-ए-किराम (रज़ि०) के लिए ख़ास नहीं। इस ह़ालत में मतलब यह होगा कि अगर दुनिया भर के कुफ़्फ़ार चाहे इस ज़माने के हों या आइन्दा पैदा होने वाले अल्लाह की किताब और आप (सल्ल०) की नुबूव्वत को न मानें तो परवाह नहीं। हम ने इस पर ईमान

लाने के लिए अहले ईमान को तैयार कर रखा है वह ईमान लाएँगे। इस तरह़ यह आयत ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के ज़माने के मुहाजिरीन व अन्सार और क़ियामत तक आने वाले मुसलमान सब के लिए फ़ख़्र की बात है।

ख़ुलासा यह है कि तमाम अम्बिया-ए-किराम ह़ज़रत आदम (अ़लै०) से लेकर रसूलुल्लाह (सल्ल०) तक उसूले दीन यानी तौह़ीद, रिसालत व आख़िरत में मुत्तफ़िक़ (सहमत) रहे हैं जो किसी पैग़म्बर की शरीअ़त में तब्दील नहीं हुए बाक़ी कुछ बातें जिन में कोई तब्दीली नहीं की गई और जब ह़ालात बदलने की वजह से कोई दूसरा हुक्म दिया गया या पहला हुक्म मन्सूख़ (निरस्त) किया गया तो इस की तअ़मील की गई। यही वजह है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) का अ़मल यह था कि जब तक आप को किसी मामले में बज़रिये वह्य कोई ख़ास हिदायत न आती आप छोटे-मोटे मामलात में भी पिछले अम्बिया (अ़लै०) के तरीक़े पर चलते थे।

अख़ीर में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को भी उसी एलान का हुक्म दिया गया जिस का एलान तमाम पिछले अम्बिया भी करते चले आये हैं कि इस तब्लीग़े दीन और तअ़लीमे क़ुर्आन पर किसी क़िस्म का मुआ़वज़ा (बदला) नहीं चाहता और इस पर दुनिया वालों से कोई उज्रत और फ़ीस नहीं लेता। यह तो तमाम दुनिया जहान के लोगों के लिए नसीह़त व ख़ैर ख़्वाही का पैग़ाम है। इसी सिल्सिले में आगे नुबूव्वत के इन्कारियों के कुछ क़ौल ज़िक्र फ़रमा कर उन को रद्द किया गया है।

आयत नं० 91 से 99 तक

وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖٓ اِذْ قَالُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى بَشَرٍ مِّنْ شَيْءٍ ؕ قُلْ مَنْ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ الَّذِيْ جَآءَ بِهٖ مُوْسٰى نُوْرًا وَّهُدًى لِّلنَّاسِ
تَجْعَلُوْنَهٗ قَرَاطِيْسَ تُبْدُوْنَهَا وَتُخْفُوْنَ كَثِيْرًا ۚ وَعُلِّمْتُمْ مَّا لَمْ تَعْلَمُوْٓا اَنْتُمْ وَلَآ اٰبَآؤُكُمْ ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِيْ خَوْضِهِمْ يَلْعَبُوْنَ ۝ وَهٰذَا كِتٰبٌ
اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ مُّصَدِّقُ الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَلِتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا ؕ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَهُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ
يُحَافِظُوْنَ ۝ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ قَالَ اُوْحِيَ اِلَيَّ وَلَمْ يُوْحَ اِلَيْهِ شَيْءٌ وَّمَنْ قَالَ سَاُنْزِلُ مِثْلَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ ؕ وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ
الظّٰلِمُوْنَ فِيْ غَمَرٰتِ الْمَوْتِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَاسِطُوْٓا اَيْدِيْهِمْ ۚ اَخْرِجُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ؕ اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ غَيْرَ
الْحَقِّ وَكُنْتُمْ عَنْ اٰيٰتِهٖ تَسْتَكْبِرُوْنَ ۝ وَلَقَدْ جِئْتُمُوْنَا فُرَادٰى كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّتَرَكْتُمْ مَّا خَوَّلْنٰكُمْ وَرَآءَ ظُهُوْرِكُمْ ۚ وَمَا نَرٰى
مَعَكُمْ شُفَعَآءَكُمُ الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ اَنَّهُمْ فِيْكُمْ شُرَكٰٓؤُا ؕ لَقَدْ تَّقَطَّعَ بَيْنَكُمْ وَضَلَّ عَنْكُمْ مَّا كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ۝ اِنَّ اللّٰهَ فَالِقُ الْحَبِّ وَالنَّوٰى ؕ يُخْرِجُ
الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ الْمَيِّتِ مِنَ الْحَيِّ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ۝ فَالِقُ الْاِصْبَاحِ ۚ وَجَعَلَ الَّيْلَ سَكَنًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ؕ
ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ۝ وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ النُّجُوْمَ لِتَهْتَدُوْا بِهَا فِيْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝ وَهُوَ
الَّذِيْٓ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَّمُسْتَوْدَعٌ ؕ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّفْقَهُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَخْرَجْنَا
بِهٖ نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ فَاَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُّخْرِجُ مِنْهُ حَبًّا مُّتَرَاكِبًا ۚ وَمِنَ النَّخْلِ مِنْ طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ وَّجَنّٰتٍ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّالزَّيْتُوْنَ
وَالرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ؕ اُنْظُرُوْٓا اِلٰى ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَيَنْعِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكُمْ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝

अनुवाद-

(91) और उन लोगों ने अल्लाह की क़द्र जैसी करनी चाहिए थी न की, जबकि उन्होंने कहा, ''अल्लाह ने किसी इन्सान पर कुछ भी नाज़िल नहीं किया।'' कह दीजिए, ''फिर वह किताब किसने नाज़िल की थी जो किताब मूसा लोगों के लिए नूर और हिदायत लेकर आए थे, और जिसे तुम ने अलग-अलग पन्नों पर लिख रखा है, उनको तो दिखाते हो, लेकिन बहुत-सा छिपा ले जाते हो; और तुम्हें वह इल्म दिया गया है जिसे न तुम जानते थे, और न तुम्हारे बाप-दादा।'' कह दीजिए, ''अल्लाह ही ने,'' (इस किताब को नाज़िल किया) फिर उन्हें छोड़ दीजिए कि वे अपनी बेहूदा बकवास में खेलते रहें। (92) और यह किताब, जिसे 'हमने' नाज़िल किया है, बरकत वाली है जो अपने से पहले की तस्दीक़ करती है, और इसलिए कि आप उम्मुल क़ुरा (केन्द्रीय बस्ती, मक्का) और उसके आस-पास के लोगों को आगाह कर दें; और जो लोग आख़िरत पर ईमान रखते हैं, वे उस (किताब) पर भी ईमान रखते हैं, और वे अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त (रक्षा) करते हैं। (93) और उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा! जो अल्लाह पर झूठ गढ़े, और यह कहे ''मुझ पर वह्य (प्रकाशना) आती है,'' जबकि उस पर कोई वह्य न आई हो, और जो यह कहे, ''जिस तरह की किताब अल्लाह ने नाज़िल की है, उस तरह की तो मैं भी बना लेता हूँ,'' और अगर तुम उन ज़ालिम लोगों को उस वक़्त देखो! जब वह मौत की सख़्तियों में हों; और फ़रिश्ते हाथ बढ़ा रहे हों कि निकालो अपनी जानें! आज तुमको ज़िल्लत वाला अज़ाब दिया जाएगा, इसलिए कि तुम अल्लाह पर झूठ बोला करते थे और उसकी आयतों के मुक़ाबले में अकड़ते थे। (94) और तुम उसी तरह एक-एक करके 'हमारे' पास आ गये हो, जिस तरह 'हमने' तुम

को पहली बार पैदा किया था; और जो कुछ 'हमने' तुमको दे रखा था उसे अपने पीछे छोड़ आए, और 'हम' तुम्हारे साथ, तुम्हारे उन सिफ़ारिशियों को भी नहीं देख रहे, जिनके बारे में तुम दावे से कहते थे, ''वे तुम्हारे मामले में (अल्लाह के) शरीक हैं,'' तुम्हारे आपसी सम्बन्ध टूट चुके हैं, और जो दावे तुम किया करते थे वे सब जाते रहे। (95) बेशक अल्लाह ही दाने और गुठली को फाड़ (कर) उगाता है, 'वही' जानदार को बेजान से निकालता है; और वही बेजान से जानदार को निकालने वाला है 'यही' तो अल्लाह है, फिर तुम कहाँ बहके जा रहे हो? (96) 'वही' सुबह की रोशनी फाड़ निकालता है, और 'उसी' ने रात को आराम के लिए बनाया, और सूरज और चाँद को हिसाब (का ज़रिया बनाया) यह बड़े ताक़त वाले, जानने वाले का ठहराया हुआ अन्दाज़ा है; (97) और 'वही' तो है जिसने तुम्हारे लिए तारे बनाए, ताकि तुम उनके ज़रिये ख़ुश्की (थल) और समुद्र के अंधेरों में राह पा सको; जो लोग जानना चाहें उनके लिए हमने निशानियाँ खोल-खोल कर बयान कर दी हैं; (98) और 'वही' तो है जिसने तुम्हें अकेली जान से पैदा किया, फिर एक ठहरने की जगह है, और एक (अल्लाह के) सुपुर्द होने की; उन लोगों के लिए जो समझें, 'हमने' निशानियाँ खोल-खोल कर बयान कर दीं हैं; (99) और 'वही' तो है जिसने आसमान से पानी बरसाया, फिर 'हमने' उसके ज़रिये हर तरह की हरियाली (वनस्पति) उगाई; फिर उससे हमने हरी-भरी कोंपलें निकालीं, और तने बढ़ाए जिससे 'हम' नीचे ऊपर चढ़े हुए दाने निकालते हैं, और ख़ज़ूर के गाभे से झुके हुए गुच्छे भी, और अंगूर, ज़ैतून और अनार के बाग़ लगाए, जो एक-दूसरे से मेल खाते हैं, और नहीं भी, यह चीज़ें जब फलती हैं, तो उनके फलों पर और उनके पकने पर नज़र करो! इनमें उन लोगों के लिए जो ईमान लाते हैं, बड़ी निशानियाँ हैं।

आयत नं० 91 से 99 तक की व्याख्या

91-92 وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖٓ إِذْ قَالُوْا مَآ أَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى بَشَرٍ مِّنْ شَيْءٍ ؕ قُلْ مَنْ أَنْزَلَ الْكِتٰبَ الَّذِىْ جَآءَ
بِهٖ مُوْسٰى نُوْرًا وَّهُدًى لِّلنَّاسِ تَجْعَلُوْنَهٗ قَرَاطِيْسَ تُبْدُوْنَهَا وَتُخْفُوْنَ كَثِيْرًا ۚ وَعُلِّمْتُمْ مَّا لَمْ تَعْلَمُوْٓا أَنْتُمْ
وَلَآ اٰبَآؤُكُمْ ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِىْ خَوْضِهِمْ يَلْعَبُوْنَ ۞ وَهٰذَا كِتٰبٌ أَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ مُّصَدِّقُ الَّذِىْ بَيْنَ يَدَيْهِ
وَلِتُنْذِرَ أُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا ؕ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَهُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ۞

पिछली आयत إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٰى لِلْعٰلَمِيْنَ में था कि यह क़ुर्आन जो अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर नाज़िल फ़रमाया है तमाम जहान वालों के लिए नसीह़त है। अब इन आयात में उन मुन्करीन का रद्द किया गया है जो अपनी जिहालत से पैग़म्बर ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की दुश्मनी के जोश में अल्लाह तआ़ला की उस सिफ़त (गुण) का ही इन्कार करने लगे कि अल्लाह तआ़ला किसी इन्सान पर अपना कलाम (ईशवाणी) नहीं उतार सकता।

इस में ऐसी तअ़लीम है जो तुम न जानते थे, तुम्हारे बाप-दादा भी न जानते थे। फिर उस का बताने वाला अल्लाह के अ़लावा और कौन हो सकता है? ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि०) से रिवायत है कि अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम ने कहा, "ऐ रसूलुल्लाह (सल्ल०)! उन (यहूदियों) से तौरात मँगवाइये" जब तौरात आ गई तो एक यहूदी ने रज्म (पत्थर के ज़रिये मार-मार कर ख़त्म कर डालना) की आयत पर

हाथ रख दिया और इस से पहले और बाद वाली आयात पढ़ने लगा।

"हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम ने कहा, ज़रा अपना हाथ तो उठा, जब उस ने हाथ उठाया तो रज्म की आयत (पंक्ति) उस के हाथ के नीचे से निकली।" **(बुख़ारी)**

हालाँकि मुश्रिकीने अ़रब भी यहूद अहले किताब से सुनकर नबियों को जानते थे। फिर ख़ास कर हज़रत मूसा (अ़लै०) से ख़ूब वाक़िफ़ थे। यहूद तो हसद की वजह से क़ुर्आन का इन्कार करते थे और मुश्रिकीन को सिखाते थे कि अल्लाह ने अपनी कोई किताब किसी पर नाज़िल नहीं की, चुनाँचे इन आयात में उन इन्कार करने वालों का जवाब दो तरह़ से दिया है, एक तह़क़ीक़ी जवाब एक इल्ज़ामी जवाब।

तह़क़ीक़ी जवाब तो यह दिया कि तुम अल्लाह को मानते हो, लेकिन उस के इ़ल्म व क़ुद्रत और ह़िक्मत से वाक़िफ़ नहीं हो। इसलिए तुम ने उस को पूरी तरह़ न पहचाना और उस की क़द्र न की जैसी उस की क़द्र करनी चाहिए थी। उस ने इन्सान के लिए अपनी ह़िक्मत से तरीक़ा ही यह रखा है कि उस की हिदायत के लिए, रसूल उस की किताब लाएँ और उसे लोगों को समझाएँ। बस जिस ने किताबे इलाही के नाज़िल होने का इन्कार किया तो उस ने अल्लाह तआ़ला की एक अ़ज़ीम (बड़ी) नेअ़मत की नाक़द्री और नाशुक्री की। नुज़ूले वह्य और नुज़ूले कुतुब का इन्कार अल्लाह की सिफ़त-ए-इ़ल्म और सिफ़त-ए-कलाम का इन्कार है और उस को अल्लाह की नाक़द्री इसलिए फ़रमाया कि जो शख़्स अम्बिया-ए-किराम पर नुज़ूले किताब का क़ायल नहीं वह अल्लाह तआ़ला का क़द्र करने वाला नहीं और उस को अल्लाह तआ़ला की सही़ मअ़रिफ़त (पहचान) नसीब नहीं। अल्लाह की सही़ मअ़रिफ़त अल्लाह के नाज़िल किये हुए किताब ही से हो सकती है।

दूसरा जवाब अहले किताब यहूद को यह दिया गया कि जो नफ़्सानी ख़्वाहिश की वजह से नुज़ूले क़ुर्आन पर तअ़ज्जुब किया करते थे कि अल्लाह का कलाम कभी इस तरह़ नाज़िल नहीं हो सकता। उन यहूद के पढ़े लिखे और बाख़बर समझे जाने की वजह से मुश्रिकीन भी उन की बातों की सनद (सार्टीफ़िकट) पकड़ते थे। उ़ल्मा-ए-अहले किताब को इल्ज़ामी जवाब दिया गया कि अल्लाह ने अपना कलाम किसी बशर (इन्सान) पर नाज़िल नहीं किया तो बतलाओ हज़रत मूसा (अ़लै०) पर तौरात किस ने उतारी थी जिस को वह बनी इस्राईल के पास लेकर आये उन्हें तो तुम भी मानते हो।

दूसरे वह हिदायत नामा होने की वजह से मानने के लायक़ भी थी, तीसरे हर वक़्त वह तुम्हारे इस्तेमाल में भी रहती थी तुम्हारे लिए इन्कार की गुन्जाइश तो नहीं रही। चौथे तुम्हारे लिए वह एक बहुत बड़ी क़ीमती दौलत है जिस की बदौलत आज तुम आ़लिम बने बैठे हो और लोगों से हदिये (तोहफ़े) वसूल करते हो इसलिए भी तुम्हारे लिए इन्कार की गुन्जाइश नहीं। यह दूसरी बात है कि लोगों को धोका देने के लिए तुम ने अपनी इच्छा की बिना पर इस किताब को दो क़िस्म में तक़्सीम किया कि शरारत की वजह से अस्ल अह़काम छुपाते हो। उ़ल्मा-ए-यहूद ने तौरात के अलग-अलग पेज कर रखे थे, जिन पेजों में उन की ख़्वाहिश के ख़िलाफ़ कोई हुक्म न होता, उन को हुक्म देते और जिन में हज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की सिफ़ात व बशारत वग़ैरह थीं उन को छुपाते थे तो यहूद से पूछा गया कि तौरात जो सरापा नूर और

हिदायत थी यह किस ने नाज़िल की थी? जवाब इस का ज़ाहिर है कि अल्लाह तआला ही ने नाज़िल की थी, तो मतलब यह हुआ कि जिस तरह़ तौरात अल्लाह तआला ने ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) पर नाज़िल की थी उसी तरह़ यह कुर्आन भी ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर अल्लाह तआला का नाज़िल किया हुआ है और ऐसा नूर हिदायत सिवाय ख़ुदा के और किस ख़ज़ाने से आ सकता है। आगे ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को ख़िताब करके फ़रमाया गया कि अगर यह मुन्किरीन ऐसी साफ़ और खुली चीज़ को भी नहीं मानते तो ऐ नबी (सल्ल०)! आप तब्लीग़ करके अलग हो जाइये और इन इन्कारियों को छोड़ दीजिए कि यह अपनी ख़ुराफ़ात में मश्गूल रहें। अगर अल्लाह ने कोई चीज़ नहीं उतारी तो यह मुबारक किताब कहाँ से आई जिस का नाम कुर्आन है और जो तमाम पिछली किताबों के मज़ामीन (Topics) की तस्दीक़ करने वाली है। अगर यह आसमानी किताब नहीं तो बतलाओ कौन सी किताब हो सकती है जिस की तरह़ का जिन्न व इन्स बनाने पर क़ादिर न हों।

अख़ीर में फ़रमाया गया कि जिसे आख़िरत की ज़िन्दगी पर यक़ीन और मौत के बाद का ख़याल होगा उसी को हिदायत और तरीक़े निजात की तलाश होगी। वही पैग़ामे इलाही क़ुबूल करेगा और नमाज़ की ह़िफ़ाज़त करेगा।

وَالَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ يُؤْمِنُونَ यानी जो लोग आख़िरत पर ईमान रखते हैं वह कुर्आन पर भी ईमान लाते हैं। इस में यहूद व मुश्रिकीन की इस बीमारी पर तम्बीह की गई है कि आख़िरत से बेफ़िक्री का मर्ज़ यही है कि वह कुफ़्र व शिर्क पर इस्रार कर रहे हैं वरना जिस शख़्स को आख़िरत और ह़िसाब के दिन पर ईमान होगा उस को ज़रूर ख़ौफ़े ख़ुदा पैदा होगा और वह ह़क़ बात को कुबूल करने में रस्म व रिवाज की परवाह न करेगा।

93-94 وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ قَالَ أُوحِيَ إِلَيَّ وَلَمْ يُوحَ إِلَيْهِ شَيْءٌ وَمَن قَالَ سَأُنزِلُ مِثْلَ مَا أَنزَلَ
اللَّهُ ۗ وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الظَّالِمُونَ فِي غَمَرَاتِ الْمَوْتِ وَالْمَلَائِكَةُ بَاسِطُو أَيْدِيهِمْ أَخْرِجُوا أَنفُسَكُمُ ۖ الْيَوْمَ تُجْزَوْنَ
عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنتُمْ تَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنتُمْ عَنْ آيَاتِهِ تَسْتَكْبِرُونَ ۝ وَلَقَدْ جِئْتُمُونَا فُرَادَىٰ
كَمَا خَلَقْنَاكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَتَرَكْتُم مَّا خَوَّلْنَاكُمْ وَرَاءَ ظُهُورِكُمْ ۖ وَمَا نَرَىٰ مَعَكُمْ شُفَعَاءَكُمُ الَّذِينَ زَعَمْتُمْ أَنَّهُمْ
فِيكُمْ شُرَكَاءُ ۚ لَقَد تَّقَطَّعَ بَيْنَكُمْ وَضَلَّ عَنكُم مَّا كُنتُمْ تَزْعُمُونَ ۝

इन आयात में मुन्किरीने नुबूव्वत के दूसरी क़िस्म का ज़िक्र फ़रमाकर उन की मज़म्मत (निन्दा) बयान की गई है। इन में एक तो वह थे जो ख़ुद अपने लिए नुबूव्वत के दावेदार थे। जैसे "मुसैलिमा कज़्ज़ाब" कि वह कुछ तुक बन्दी सी किया करता था और दावा करता था कि मुझ पर वह़्य आती है।

इसी तरह़ यमन में अस्वद उन्सी ने भी वह़्य और अपनी नुबूव्वत का दावा किया। यह वह थे जो कुर्आन की तरह़ किताब लिखने का दावा करते थे। बाज़ मुश्रिकीन जैसे नज़र बिन ह़ारिस कुर्आन करीम की आयतों को सुन कर कह दिया करता था لَوْ نَشَاءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هَٰذَا यानी अगर हम चाहें तो हम भी कुर्आन जैसा कलाम कह सकते हैं और कुर्आन जैसी किताब लिख सकते हैं। यह कुर्आन को आसमानी

किताब **मुनज़्ज़ल मिनल्लाह** नहीं समझते थे बल्कि इस को ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की लिखी हुई किताब कहते थे और मुश्रिक 'नज़र बिन ह़ारिस' भी यह कहता था कि अगर मुझ पर कोई अ़ज़ाब नाज़िल होने लगे तो 'लात' और 'उ़ज़्ज़ा' मेरी सिफ़ारिश कर देंगे।

इस तरह़ इन तमाम मुख़ालिफ़ीन के जवाब में यह आयात नाज़िल हुईं और इन सब मुन्किरीन के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया गया कि उस से बड़ा ज़ालिम कोई नहीं हो सकता जिस ने अल्लाह पर बोहतान तराशी (आरोप) किया हो कि अल्लाह ने नुबूव्वत अ़ता न फ़रमाई और उस ने नबी होने का दावा किया या यह कहा कि मेरे पास वह्य आती है ह़ालांकि उसके पास वह्य नहीं आती।

यह कि इस क़िस्म के तमाम लोग बड़े ही ज़ालिम हैं और ज़ुल्म में एक दूसरे से बढ़-चढ़ कर हैं जिस ने नुबूव्वत और नुज़ूले वह्य और नुज़ूले किताब का इन्कार किया वह बिलाशुब्हा ज़ालिम है और उस से बढ़कर ज़ालिम वह है जो नुबूव्वत और वह्य का अपने लिए दावेदार हो और उस से बढ़कर ज़ालिम वह है जो अपने कलाम को कलामे ख़ुदावन्दी की तरह़ समझता हो और इस तरह़ से वह उपास्य होने का दावा करता है, यह सब ज़ालिम हैं।

फिर इस के बाद इन ज़ालिमों की ह़ालत बयान की जाती है कि इन की मौत के वक़्त अ़जीब ह़ालत होगी जब कि यह मौत की सख़्तियों में गिरफ़्तार होंगे और मौत के फ़रिश्ते हाथ बढ़ाकर कहेंगे कि आख़िरत के ह़ालात देखकर अब कहाँ हटते हो, लाओ अपनी रुह़ ख़बीस को निकालो। अब तुम को ज़िल्लत का अ़ज़ाब तुम्हारी उस नाह़क़ बहस और अल्लाह के आयतों से इन्कार करने पर होगा और यह भी कहा जाएगा कि तुम्हारी रुह़ को जिस्म के साथ दुनिया में पाबन्द किया था तुम ने उस के ख़िलाफ़ किया।

माल व जाह की मुह़ब्बत और जिस्म की लज़्ज़त में उस को ख़र्च किया तुम जैसे ख़ाली गये थे वैसे ही कोरे आये और जो कुछ माल व जाह जमा किया था सब पीछे छोड़ आये और यह भी कहा जाएगा कि अब तुम्हारे वह मअ़बूद दिखाई नहीं देते जिन की सिफ़ारिश का तुम्हें बड़ा भरोसा था और जिन को तुम समझते थे कि आड़े वक़्त में हमारा हाथ बटाएँगे और मुसीबत में साथ होंगे वह कहाँ चले गये और जो लम्बे चौड़े दावे तुम किया करते थे सब ग़ायब हो गये।

यहाँ आयत में وَتَرَكْتُمْ مَّا خَوَّلْنٰكُمْ फ़रमाया। خَوَّلْنَا जिस के माने में नौकर चाकर ख़ादिम और आराम का सामान होते हैं। इस आयत में बतलाया गया है कि सब साज़ो व सामान जिस के नशे में आज दुनिया में इन्सान मस्त और ग़ाफ़िल है रखा रह जाएगा और यह वैसे ही ख़ाली हाथ जाएगा जैसा कि आया था। हाँ, इस की मुह़ब्बत की वजह से जान बड़ी मुश्किल से निकलेगी और मौत के वक़्त डरावनी शक्ल के फ़रिश्ते आएँगे और उन की जान ज़बरदस्ती निकाल कर अल्लाह के पास ले जाएँगे, तो अ़क़्लमन्द आदमी वह है जो दुनिया को देखकर यहाँ के ठहराव को बिलकुल वक़्ती समझे, आख़िरत का यक़ीन कर ले और मौत की सख़्ती और क़ियामत के अ़जाब से बचने के लिए जो कुछ हो सके यहीं कर ले। इधर आँख बन्द होते ही उधर की चीज़ें नज़र आने लगेंगी।

मरने के बाद जिन मामलात से वास्ता पड़ना है उन की फ़िक्र होनी चाहिए कि यह थोड़े दिन की

ज़िन्दगी इस तरह़ बसर कर ले कि मरने के बाद राह़त मिले। क़ुर्आन पाक ने बार-बार और साफ़-साफ़ यही बतलाया है कि मरने के बाद राह़त है तो मेरी बात मानो। मेरे हुक्मों को मानो, जिस तरह़ मैं कहूँ उस तरह़ ज़िन्दगी बसर करो।

ह़ज़रत अनस (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि नबी करीम (सल्ल०) ने फ़रमाया, "लोग मुर्दे को क़ब्र में दफ़्न कर के जब वापस आते हैं तो उन के क़दमों की चाप सुनता है फिर दो फ़रिश्ते आते हैं और उस मुर्दे को बिठाकर उस से पूछते हैं, इस शख़्स मुह़म्मद (सल्ल०) के बारे में तुम दुनिया में क्या कहते थे? वह जवाब देगा, मैं शहादत देता हूँ कि यह अल्लाह के बन्दे और उस के रसूल हैं। फिर उससे कहा जाएगा ज़रा जहन्नम में अपनी जगह तो देखो जिसे बदलकर अल्लाह ने तुम्हारा ठिकाना जन्नत में बना दिया है।

फिर नबी करीम (सल्ल०) ने फ़रमाया, "वह (मरने वाला) दोनों जगहें देखेगा, लेकिन जो काफ़िर और मुनाफ़िक़ होगा वह फ़रिश्तों से कहेगा, मैं इस शख़्स के बारे में कुछ नहीं जानता, बस लोग जो कहते थे वही मैंने कह दिया उसे जवाब दिया जाएगा, यह तुम्हें पता था और न तुम ने (क़ुर्आन से) हिदायत ली थी। फिर उसे चेहरे पर इतनी ज़ोर से हथौड़े से मार लगाई जाएगी कि वह चीख उठेगा जिसे इन्सानों और जिन्नों के सिवा बाक़ी सब मख़्लूक़ सुनेंगी।" **(सह़ीह़ बुख़ारी, अल् जनायज़, बाब 67, ह़दीस 1338)**

95-97 إِنَّ اللَّهَ فَالِقُ الْحَبِّ وَالنَّوَىٰ ۖ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ الْمَيِّتِ مِنَ الْحَيِّ ۚ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ ۖ فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ ۝
فَالِقُ الْإِصْبَاحِ وَجَعَلَ اللَّيْلَ سَكَنًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ۚ ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ۝ وَهُوَ الَّذِي
جَعَلَ لَكُمُ النُّجُومَ لِتَهْتَدُوا بِهَا فِي ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۗ قَدْ فَصَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝

इस पूरे रुकूअ़ में अल्लाह तआ़ला ने तौह़ीद के सुबूत में क़ायनात में फैली हुई अपनी क़ुद्रत की एक झलक दिखाई है। इतनी बड़ी क़ायनात और इस निज़ाम में किसी का कोई दख़्ल नहीं तो फिर दूसरे को किस अ़क़्ल से ख़ुदा बनाया जा रहा है? साथ ही इन्सानों को यह बताया जा रहा है कि अल्लाह के इन इनआ़मात व एह़सानात के बाद कितनी बड़ी बेक़द्री की बात है कि ऐसे ख़ुदा का इन्कार किया जाए और उस के अह़काम से ग़फ़लत बरती जाए।

सितारे आसमान की ज़ीनत और शैतान की संगबारी के लिए भी हैं।

देखिए (अल् साफ़्फ़ात-6) और (अल् मुल्क-5)

ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि फ़रमाने रसूल (सल्ल०) है, "अल्लाह ने आसमान से बरकत (बारिश) नाज़िल फ़रमाई, कुछ लोग उस की वजह से काफ़िर हो गये। वह कहते हैं कि फ़लाँ सितारे (की वजह से बारिश हुई।) **(मुस्लिम)**

वही धूप और गर्मी की शिद्दत जिस से इन्सान पनाह माँगते हैं और साये ढूँढ़ते हैं, फलों में शहद जैसा रस घोल देती है। क्या यह नसीह़त का मक़ाम नहीं है कि एक दिन पहले फल ऐसे कच्चा होता है कि मुँह में रखने को जी नहीं चाहता और दूसरे ही दिन पक कर ऐसा रसीला बन जाता है कि देखकर

इन्सान की राल टपकने लगे।

ज़ैतून मुबारक दरख़्त का मुबारक फल है। **(देखें सूरः अल् अनआम-141)**

इन आयात में अल्लाह तआला की क़ुद्रत को देखने के लिए पहली दलील यह दी गई है कि अल्लाह तआला दाना और गुठ्ली को फाड़कर उन से पौधा और सब्ज़ा उगाने वाले हैं। घास फूस या गुठ्ली से पैदा होते हैं। इन को ज़मीन में दबाया और पानी दिया तो दो शाखें फूट कर निकलती हैं। एक ज़मीन के अन्दर जड़ें बन कर फैलती हैं एक हवा में बाहर आकर पत्ते फल फूल निकालती है। फिर बावजूद यह कि एक ही तुख़्म, एक ही ज़मीन, एक ही हवा एक ही रौशनी गर्मी-सर्दी फिर इस में मुख़्तलिफ़ (विभिन्न) क़िस्म के पत्तों की और फूल की और फिर सब की तासीर, रंग बू, मज़ा अलग यह सब उसी के क़ुद्रत की दलील नहीं तो और क्या हैं?

● दूसरी दलील जानदार को बेजान से और बेजान को जानदार से निकालना बयान फ़रमाया यानी एक को दूसरी से निकालता है। जैसे- आदमी को नुत्फ़ा से, नुत्फ़े को आदमी से, जानवरों से अण्डे को, अण्डे से जानवरों को निकालना यह उसी की क़ुद्रते कामिला पर दलालत करता है।

● तीसरी दलील यह फ़रमाई कि वह रात के अन्धेरे को चीर कर दिन की रौशनी निकालने वाला है यानी रात ख़त्म हो जाती है और सुबह सादिक़ नमूदार हो जाती है तो रात के अन्धेरे में से सुबह सादिक़ का उजाला निकालना यह उसी के क़ुद्रत की दलील है।

● चौथी दलील यह फ़रमाई कि उसी ने रात को आराम व सुकून की चीज़ बनाया कि दिन का थकान रात के सोने से जाता रहता है। इन्सान हैवान चरिन्द-परिन्द सब को रात में आराम व सुकून हासिल होता है। यानी जिस तरह दिन का उजाला एक नेअमत है कि उस के ज़रिये इन्सान दिन में अपने कारोबार करता है उसी तरह रात की तारीकी भी अल्लाह की एक बड़ी नेअमत और क़ुद्रत की निशानी है कि रात में दिन भर का थका मांदा इन्सान आराम करके फिर इस क़ाबिल हो जाता है कि अगले दिन फिर चुस्ती और फुर्ती से काम कर सके।

● पाँचवी दलील यह फ़रमाई कि चाँद और सूरज की रफ़्तार को हिसाब से एक ख़ास अन्दाज़े पर रखा ताकि दिन, माह, साल व मौसम सब मज़्बूत और अपने-अपने वक़्त मुक़र्ररः पर होते रहें। उन के क़ानून रफ़्तार में ज़र्रह बराबर इधर-उधर तब्दीली नहीं होती। सर्दियों और गर्मियो में अपने-अपने उसूल पर चलते रहते हैं, दिन व रात इसी मर्तबः पर घटते-बढ़ते रहते हैं। यह ख़ुदा-ए-अ़ज़ीज़ व अ़लीम का मुक़र्रर किया हुआ क़ानून है कि कोई उस की ख़िलाफ़वर्ज़ी नहीं कर सकता। यह हैरत अंगेज़ निज़ाम (Perfect system) सूरज व चाँद का निकलना और डूबना जिस में कभी एक मिनट व सेकेण्ड का फ़र्क़ न आये यह उसी ज़ाते पाक की क़ुद्रत का करिश्मा है जो अ़ज़ीज़ यानी हर चीज़ पर ग़ालिब (प्रभावी) और ताक़त रखने वाला है और हर चीज़ और हर काम का जानने वाला भी है।

● छठी दलील यह फ़रमाई कि उसी ने सितारों को मुसाफ़िरों की रहनुमाई का ज़रिया बनाया ताकि तारीकी रात में भूले भटके मुसाफ़िर सितारों को देखकर अपने सफ़र का रुख़ मालूम कर सकें।

अ़रब में सितारों के ह़िसाब से जंगल और समुद्र में रास्ते तय करने का दस्तूर व तरीक़ा रायज था। आजकल भी जंगलों के अन्दर ख़ुश्की का सफ़र और समुद्री सफ़र कुतुबनुमा के ज़रिये तय होता है। रात की तारीकी के वक़्त दिशा का पता लगाना आसान नहीं, उस वक़्त इन्सान उन सितारों के ज़रिये अपना रास्ता तय कर सकता है।

यहाँ इन आयात में यह छः दलीलें तौह़ीद की बयान फ़रमाईं और अल्लाह तआ़ला ने अपनी अ़ज़ीम क़ुद्रत के चन्द नमूने ज़िक्र फ़रमाए जिन में ग़ौर व फ़िक्र करने से हर अच्छा इन्सान अपने मालिक को पहचाने बग़ैर नहीं रह सकता कि यह अ़ज़ीमुश्शान कारनामे सारी क़ायनात में सिवाय एक अकेली ज़ात ख़ुदावन्द तआ़ला के किसी और की नहीं। इन से अल्लाह तआ़ला की क़ुद्रत का इज़्हार है।

अख़ीर में यह भी बतला दिया कि अल्लाह तआ़ला ने यह दलील ख़ूब खोल-खोल कर बयान कर दी हैं और इसे पहचानेंगे वही, जो भले बुरे की कुछ ख़बर रखते हों क्योंकि ग़ौर ऐसे ही लोग किया करते हैं।

सितारों की पैदाइश के सम्बन्ध में क़तादह (रह़०) ने अपनी तफ़्सीर में अल्लाह तआ़ला का यह इर्शाद नक़्ल किया है, "और हम ने आसमान को चिराग़ों से आरास्ता किया है।" **(सूरः मुल्कः 67)**

ताबई ह़ज़रत क़तादह (रह़०) फ़रमाते हैं, "इन सितारों की पैदाइश के तीन मक़ासिद हैं:- 1-आसमाने दुनिया की ज़ीनत व सुन्दरता 2- मीज़ाईल जैसा कि उन से शयातीन को मार भगाया जाए। 3- अ़लामात के तौर पर कि मुसाफ़िर उन से अपनी मन्ज़िल मालूम कर सकें।

चुनाँचे जो कोई भी इस के अ़लावा इस आयत की कोई और तश्रीह़ की तलाश के लिए कोशिश करता है तो वह ग़लती पर है और अपनी कोशिशें बेकार करता है और ऐसी चीज़ की खोज में अपने आप को मुश्किल में डालता है जो उस के सीमित इ़ल्म से बाहर हैं। **(सह़ीह़ बुख़ारी, बदउल् ख़ल्क़, बाब 3)**

98-99

وَهُوَ الَّذِيٓ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَّمُسْتَوْدَعٌ ۭ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّفْقَهُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِيٓ
اَنْزَلَ مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ فَاَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُّخْرِجُ مِنْهُ حَبًّا مُّتَرَاكِبًا ۚ وَمِنَ النَّخْلِ مِنْ
طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ وَّجَنّٰتٍ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۭ اُنْظُرُوْٓا اِلٰى ثَمَرِهٖٓ اِذَآ
اَثْمَرَ وَيَنْعِهٖ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكُمْ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝

सातवीं दलील इन आयात में यह फ़रमाई जा रही है कि उसी ने एक नफ़्स यानी ह़ज़रत आदम (अ़लै०) से तुम सब को पैदा किया और पैदा करने वाला माद्दा जारी किया यानी एक ही चीज़ से बेशुमार और मुख़्तलिफ़ शक्लों के लोगों को पैदा करना क़ुद्रत और ह़िक्मत की दलील है जिस पर सिवाय अल्लाह के कोई और क़ादिर नहीं है।

फिर आठवीं दलील यह फ़रमाई कि जिस तरह़ अल्लाह ने अपनी क़ुद्रत से एक नफ़्स से यानी ह़ज़रत आदम (अ़लै०) से मुख़्तलिफ़ क़िस्म के इन्सान पैदा किये, इसी तरह़ उस अल्लाह ने आसमान यानी बादल से एक क़िस्म का पानी बरसाया फिर उस पानी से मुख़्तलिफ़ क़िस्म के पेड़-पौधे उगाए जिस में तरह़-तरह़ के बेशुमार फल पैदा कियें। मुख़्तलिफ़ क़िस्म के अनाज जिन में तह-ब-तह बालियाँ होती

हैं और ज़मीन की तरफ़ लटके और झुके हुए फलों के गुच्छे।

अंगूरों वग़ैरह के बाग़ात और ज़ैतून व अनार वग़ैरह के दरख़्त पैदा होते हैं। फिर उन में कुछ फ़ल सूरत व शक्ल, रंग व मज़े में एक दूसरे जैसे मिलते-जुलते होते हैं और बाज़ मुख़्तलिफ़ होते हैं। फिर कुछ फल तासीर और ख़ासियत में एक दूसरे के समान होते हैं और कुछ मुख़्तलिफ़ होते हैं तो इस से भी अल्लाह तआ़ला की क़ुद्रत का पता चलता है कि माद्दह एक है और ख़ासियत मुख़्तलिफ़।

फिर फलों पर ग़ौर किया जाए कि किस तरह़ बढ़ता है। उस का रंग व मज़ा बदलता जाता है, शुरु में क्या ह़ालत होती है बाद में जब पक जाता है तो कैसा रंग व ज़ायक़ा हो जाता है। यह सब क़ुद्रत की निशानियाँ हैं उस की बेमिसाल कारीगरी और पैदाइश में फिर किस तरह़ कोई उस की रुबूबियत और उलूहियत में शरीक हो सकता है।

ह़ासिल मतलब इन दलीलों का और पिछली आयात में जो दलीलें दी गई थीं कि जिस परवरदिग़ार की रह़मत का यह ह़ाल हो कि उस ने तुम्हारी ज़िन्दग़ी के लिए हर तरह़ का सरोसामान मुहैया कर दिया हो।

आख़िर यह कैसे मुम्किन था कि तुम्हारे जिस्म की हिदायत व परवरिश के लिए तो सब कुछ कर देता मगर तुम्हारी रुह़ की हिदायत और परवरिश के लिए कुछ भी न करता चुनाँचे वह्य की सूरत में जो कुछ ज़ाहिर होता है वह रुह़ ही की तो परवरिश का सामान है। अगर कोई कहे कि ऐसा होना ज़रूरी नहीं तो यक़ीनन उस ने अल्लाह की बनाई हुई चीज़ों और कामों को जानने और समझने की कोशिश नहीं की और उसे उस दर्जा से अल्लाह को गिरा देना चाहा जिस हस्ती की तमाम क़ायनात गवाही दे रही है। वह जो ज़मीन को मौत से और ज़िन्दग़ी से बदल देता है क्या तुम्हारी रुह़ की मौत को ज़िन्दग़ी से नहीं बदल सकता? जो सितारों की रौशन अ़लामतों से जंगलों और समुद्रों में तुम्हारी रहनुमाई करता है क्या वह तुम्हारी रुह़ को भटकती हुई छोड़ देगा कि उस की रहनुमाई के लिए कोई रौशनी न हो? तुम इस बात पर तो कभी तअ़ज्जुब नहीं करते कि खेत लहलहा रहे हैं और आसमान से रह़मत बरस रही है फिर इस पर क्यों तअ़ज्जुब करते हो कि इन्सान की रूह़ानी परवरिश के लिये सामाने ज़िन्दग़ी मुहय्या है और अल्लाह तआ़ला की वह्य नाज़िल हो रही है। इस में मुश्रिकीन और मुन्किरीन को इस बात का भी जवाब दिया गया है जो उन्होंने कहा था।

مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى بَشَرٍ مِّنْ شَيْءٍ अल्लाह ने किसी इन्सान पर कोई चीज़ नाज़िल नहीं की। क़ुर्आन करीम का यह आ़म तरीक़ा है कि तौह़ीद के लिए दलील देता है कि अगर एक परवरदिग़ार की हस्ती मौजूद नहीं तो फिर वह कौन है जिस ने यह पूरा सिस्टम क़ायम कर रखा है? और जिन्होंने अल्लाह को छोड़कर ग़ैरुल्लाह को मअ़बूद बना रखा है उन में से कौन है जिसे इस कारख़ाने रुबूबियत के बनाने या चलाने में कुछ दख़ल हो? तो साबित हुआ कि अल्लाह ही की एक हस्ती है जो मअ़बूद (उपास्य) होने के लायक़ है।

आयत नं० 100 से 110 तक

وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ وَخَرَقُوْا لَهٗ بَنِيْنَ وَبَنٰتٍۭ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَصِفُوْنَ ۝ بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ اَنّٰى يَكُوْنُ
لَهٗ وَلَدٌ وَّلَمْ تَكُنْ لَّهٗ صَاحِبَةٌ ۚ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ فَاعْبُدُوْهُ ۚ وَهُوَ
عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ۝ لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ الْاَبْصَارَ ۚ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ۝ قَدْ جَآءَكُمْ بَصَآئِرُ مِنْ رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنْ اَبْصَرَ فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ
عَمِيَ فَعَلَيْهَا ۚ وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ ۝ وَكَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ وَلِيَقُوْلُوْا دَرَسْتَ وَلِنُبَيِّنَهٗ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝ اِتَّبِعْ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ
رَّبِّكَ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ وَاَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَآ اَشْرَكُوْا ۚ وَمَا جَعَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ۚ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ۝ وَلَا
تَسُبُّوا الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَسُبُّوا اللّٰهَ عَدْوًاۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ كَذٰلِكَ زَيَّنَّا لِكُلِّ اُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ۚ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ مَّرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا
يَعْمَلُوْنَ ۝ وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَآءَتْهُمْ اٰيَةٌ لَّيُؤْمِنُنَّ بِهَا ۚ قُلْ اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ وَمَا يُشْعِرُكُمْ ۙ اَنَّهَآ اِذَا جَآءَتْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝
وَنُقَلِّبُ اَفْـِٕدَتَهُمْ وَاَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوْا بِهٖٓ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّنَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ۝

अनुवाद-

(100) और उन लोगों ने जिन्नों को अल्लाह का साझी ठहरा रखा है, हालाँकि उनको 'उसी' ने पैदा
किया; और बे समझे-बूझे 'उसके' लिए बेटे और बेटियाँ गढ़ लीं, 'वह' इन बातों से, जो वे उसके बारे में
बयान करते हैं, पाक है, और उसकी शान उनसे ऊँची है। (101) (वही) आसमान और ज़मीन को पैदा करने
वाला है, 'उसके' कोई औलाद कैसे हो सकती है, जबकि उसके पत्नी ही नहीं,! और 'उसी' ने हर चीज़ को
पैदा किया है और 'वही' हर चीज़ का जानने वाला है; (102) 'वही' अल्लाह, तुम्हारा रब है; उसके सिवा
कोई मअ़बूद (उयास्य) नहीं; हर चीज़ का पैदा करने वाला है; तो तुम उसी की इबादत करो, और 'वही' हर
चीज़ का निगराँ (संरक्षक) है; (103) निगाहें उसे नहीं पा सकतीं, और 'वह' निगाहों को पा लेता है, और
'वह' बड़ा बारीक (गूढ़) ख़बर रखने वाला है। (104) (ऐ मुहम्मद) आप के रब की ओर से (आँख खोल
देने वाले) प्रमाण (दलीलें) आ चुके हैं; तो जिसने देखा, उसने अपना भला ही किया; और जो अन्धा बना रहा,
उसने अपने हक़ में बुरा किया; और मैं तुम्हारा निगहबान नहीं हूँ। (105) और इसी तरह 'हम' अपनी आयतें
फेर-फेर कर बयान करते हैं, ताकि काफ़िर यह न कहें, ''तुम'' (यह बातें अह्ले किताब से) सीखे हुए हो,''
और ताकि समझने वाले लोगों के लिए बयान कर दें। (106) और जो हुक्म आप के 'रब' की ओर से आप
के पास आता है, उसी की पैरवी कीजिए; 'उसके' सिवा कोई मअ़बूद नहीं, और मुशिरकों पर ध्यान न दीजिए;
(107) और अगर अल्लाह चाहता, तो यह लोग शिर्क न करते; और 'हमने' आपको उन पर निगहबान
(संरक्षक) मुक़र्रर नहीं किया और न आप उनके कोई ज़िम्मेदार ही हैं; (108) और जिन लोगों को यह मुश्रिक
अल्लाह के सिवा पुकारते हैं, उनको बुरा न कहना! यह भी कहीं अल्लाह को बेअदबी से बिना समझे-बूझे
बुरा न कह बैठें; इस तरह 'हमने' हर फ़िर्क़े (गिरोह) के आ़माल (उनकी नज़रों में) अच्छे कर दिखाए हैं,
फिर उनको अपने रब की ओर लौट कर जाना है, तब 'वह' उनको बताएगा कि वे क्या-क्या किया करते
थे? (109) और यह लोग तो अल्लाह की सख़्त-सख़्त क़समें खाते हैं कि अगर उनके पास कोई निशानी
आ जाए, तो उस पर वे ज़रूर ईमान लाएँ; कह दीजिए, ''निशानियाँ तो अल्लाह ही के पास हैं।'' और तुम्हें

क्या पता! जब वे आ जाएँगी; तब भी वे ईमान नहीं लाएँगे; (110) और 'हम' उनके दिलों को और उनकी निगाहों को फेर देंगे, जिस तरह वे पहली बार ईमान नहीं लाए थे; और 'हम' उन्हें छोड़ देंगे कि वे अपनी सरकशी में भटकते रहें।

आयत नं० 100 से 110 तक की व्याख्या

100-103

وَجَعَلُوا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ وَخَرَقُوا لَهُ بَنِيْنَ وَبَنٰتٍۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ سُبْحٰنَهُ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَصِفُوْنَ ۝
بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَنّٰى يَكُوْنُ لَهُ وَلَدٌ وَّلَمْ تَكُنْ لَّهُ صَاحِبَةٌ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيْمٌ ۝ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ فَاعْبُدُوْهُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ۝ لَا تُدْرِكُهُ
الْاَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ الْاَبْصَارَ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ۝

जिन लोगों ने अल्लाह के लिए बेटा या बेटी साबित करने की हिम्मत की, उन को जवाब दिया जा रहा है कि अल्लाह तआ़ला ने आसमानों और ज़मीन को बिना किसी पदार्थ के पैदा किया है, वह किसी चीज़ का असर क़ुबूल नहीं करता। और इसलिए भी उस का कोई बेटा नहीं हो सकता कि अल्लाह तआ़ला ने हर चीज़ को पैदा किया है और उन्हीं में से वह भी है जिसे लोग अल्लाह का बेटा बताते हैं, और मख़्लूक़ ख़ालिक़ का बेटा नहीं हो सकता और इसलिए भी उस का कोई बेटा नहीं हो सकता कि अल्लाह तआ़ला का इ़ल्म तमाम मअ़लूमात को घेरे हुए है, कोई चीज़ उस से छुपी नहीं। अगर उस का बेटा होता तो वह भी उस की सिफ़ात (गुणों) के साथ होता, वह भी हर चीज़ का इ़ल्म रखता जो उपास्य न होता।

अल्लाह वह है जो तमाम मख़्लूक़ात का रब है, उस के अ़लावा कोई उपास्य नहीं, उसी ने हर चीज़ को पैदा किया। इसीलिए उस ने बन्दों को हुक्म दिया कि वह सिर्फ़ उसी की इ़बादत करें वही सब का निगराँ, मालिक है।

इस आयते करीमा का एक अर्थ उ़लमा-ए-तफ़्सीर ने यह बयान किया है कि पिछली आयत के आख़िरी हिस्से में जो बात बयान की गई है कि अल्लाह तआ़ला सब की निगरानी कर रहा है, इस को बतौर ताकीद बयान किया गया है, कि वह तमाम चीज़ों को देख रहा है, कोई चीज़ उस से छुपी हुई नहीं है और मक़्सूद बन्दों को ख़ौफ़ दिलाना है कि अल्लाह तआ़ला को ज़ाहिरी निगाहें नहीं देख रही हैं, लेकिन वह सब कुछ देख रहा है। इसलिए उस की पकड़ से बच कर रहना चाहिए और दूसरा अर्थ यह है कि अल्लाह तआ़ला को दुनिया वालों की आँखें नहीं देख सकतीं, तो फिर यह कैसे मुम्किन है कि किसी दुनियावी वजूद रखने वाले को उस का बेटा क़रार दिया जाए?!

आयत से यह भी साबित हुआ कि दुनिया में अल्लाह तआ़ला को कोई नहीं देख सकता। ह़दीस से भी यह साबित है। बुख़ारी व मुस्लिम ने ह़ज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत है कि जो तुम्हें यह कहे कि मुह़म्मद (सल्ल०) ने अपने रब को देखा था, तो वह झूठा है। इस के बाद उन्होंने यही आयत पढ़ी, लेकिन यह बात रसूलुल्लाह (सल्ल०) से तवातुर (पूरे सुबूत) के साथ साबित है कि "मोमिनीन

अल्लाह तआ़ला को क़ियामत के मैदान और जन्नत में देखेंगे।"

बुख़ारी व मुस्लिम ने जरीर अ़ब्दुल्लाह (रज़ि०) से रिवायत की है कि हम लोग नबी करीम (सल्ल०) के पास बैठे थे, कि आप ने चौदहवीं रात के चाँद की तरफ़ देखकर कहा कि तुम लोग अपने रब को इसी तरह़ देखोगे जिस तरह़ इस चाँद को देख रहे हो।

यहाँ मुश्रिकीन के आ़माल की को रद्द किया जा रहा है चूंकि मुश्रिकीन ने बुतों की पूजा जिन्नों के हुक्म से की, इसलिए उन्होंने एक तरह़ से जिन्नों की अ़िबादत की, जबकि अल्लाह के अ़लावा कोई पैदा करने वाला नहीं है तो अ़िबादत का ह़क़्दार भी वही होगा। इस आयत में उन लोगों की गुमराही बयान की गई है जो अल्लाह के बारे में साझीदार बनाते थे कि किसी को अल्लाह का बेटा या बेटी बताते थे। जैसा कि यहूद ह़ज़रत उ़ज़ैर (अ़लै०) को और ईसाई ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) को अल्लाह का बेटा समझते थे और मुश्रिकीने अ़रब फ़रिश्तों के बारे में यही यक़ीन (आस्था) रखते थे कि वह अल्लाह की बेटियाँ हैं, अल्लाह तो इन तमाम चीज़ों से पाक है।

बसीरत का मतलब–

यहाँ 'बसीरत' से मुराद वह दलायल और निशानियाँ हैं जिन्हें अल्लाह ने क़ुर्आन करीम में और रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने ह़दीस में बयान फ़रमाया है, जो शख़्स इन दलायल से फ़ायदा उठाते हुए ह़क़ का एतिराफ़ (accept) कर लेगा और उस पर ईमान ले आएगा तो उस का फ़ायदा उसी को पहुँचेगा और जो अपनी आँखों पर पट्टी बाँध लेगा और ह़क़ को क़ुबूल नहीं करेगा, तो उस का अन्जामे बद् से उसी को नुक़्सान पहुँचेगा। इस के बाद रसूलुल्लाह (सल्ल०) से कहलवाया गया कि "मैं तुम्हारा निगराँ और संरक्षक नहीं कि तुम्हें गुमराही से बचा लूँ, मैं तो सिर्फ़ डराने वाला हूँ। तुम्हारे आ़माल को अल्लाह तआ़ला रिकार्ड कर रहा है और तुम्हें उस का बदला देगा।"

अल्लाह तआ़ला ने क़ुर्आन करीम में अपनी आयतों और दलायल को मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ में बयान किया है। इस बारे में मुश्रिकीन एतिराज़ करते थे कि क़ुर्आन एक ही बात को बार-बार क्यों बयान करता है? इस के जवाब में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि वह अपनी आयतों को मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ में इसलिए बयान करता है ताकि मुख़ालिफ़ीन पर पूरे तौर से हुज्जत क़ायम हो जाए फिर मुश्रिकीन और कुफ़्फ़ार यह न कहें कि ऐ मुह़म्मद! तूने यह सब कुछ अहले किताब से सीखा है।

इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) जब अहले मक्का को क़ुर्आन पढ़कर सुनाते, तो वह कहते कि तुम ने यह सब 'यसार और ख़ैर' दो रूमी गुलामों से सीखा है और दावा करते हो कि यह अल्लाह का कलाम है। अल्लाह तआ़ला अपनी आयतों को मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ में इसलिए भी बयान करता है ताकि ह़क़ के तलबगारों के लिए इस क़ुर्आन को खोल-खोल कर बयान कर दे ताकि वह ह़क़ की पैरवी करें और बातिल से बचें।

नबी करीम (सल्ल०) के दिल की मज़बूती और उन की तक्लीफ़ को दूर करने के लिए उन्हें हुक्म

दिया जा रहा है कि आप अपनी राह पर साबित क़दमी के साथ चलते रहिए और मुश्रिकीन की बातों का ख़याल न कीजिए।

मुश्रिक व काफ़िर को गुमराह करने की ह़िक्मत अल्लाह ही जानता है, अगर वह चाहता तो तमाम इन्सान को हिदायत की राह पर इकट्ठा कर देता, लेकिन वह अपनी ह़िक्मत से जिसे चाहता है हिदायत देता है और जिसे चाहता है गुमराह कर देता है। अल्लाह से उस के कामों के बारे में नहीं पूछा जाएगा, अल्बत्ता बन्दों से उन के आ़माल का ह़िसाब लिया जाएगा और नबी करीम (सल्ल०) की ज़िम्मेदारी नहीं थी कि वह इन्सानों के आ़माल का रिकार्ड रखते और न ही वह उन की रोज़ी और दूसरे कामों के ज़िम्मेदार थे, उन का काम तो अल्लाह का पैग़ाम उस के बन्दों तक पहुँचा देना था, सो उन्होंने पूरा कर दिया।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है, "इब्ने आदम मुझे झुठलाता है ह़ालांकि उसे यह ह़क़ नहीं पहुँचता और वह मुझे गाली देता है, ह़ालांकि उसे यह ह़क़ भी नहीं पहुँचता। इब्ने आदम का मुझे झुठलाना यह है कि वह दावा करता है, मैं उसे दोबारह ज़िन्दा (पैदा) करने पर क़ादिर नहीं हूँ जैसा कि मैंने उसे इस से पहले पैदा किया था और उस का मुझे गाली देना यह है, वह कहता है कि मेरी औलाद है ह़ालांकि मैं इन बातों से पाक हूँ कि मेरी कोई बीवी या औलाद हो।"

(सह़ीह़ बुख़ारी, अल् तफ़्सीर, बाब 8, ह़दीसः 4482)

104-107

قَدْ جَآءَكُم بَصَآئِرُ مِن رَّبِّكُمْ ۖ فَمَنْ أَبْصَرَ فَلِنَفْسِهِۦ ۖ وَمَنْ عَمِىَ فَعَلَيْهَا ۚ وَمَآ أَنَا۠ عَلَيْكُم بِحَفِيظٍ ۝
وَكَذَٰلِكَ نُصَرِّفُ ٱلْءَايَٰتِ وَلِيَقُولُوا۟ دَرَسْتَ وَلِنُبَيِّنَهُۥ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝ ٱتَّبِعْ مَآ أُوحِىَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ ۖ
لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ وَأَعْرِضْ عَنِ ٱلْمُشْرِكِينَ ۝ وَلَوْ شَآءَ ٱللَّهُ مَآ أَشْرَكُوا۟ ۗ وَمَا جَعَلْنَٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظًا ۖ
وَمَآ أَنتَ عَلَيْهِم بِوَكِيلٍ ۝

ऊपर जो ज़िक्र हुआ कोई इस के बाद भी अन्धा रहे और इसी कुफ़्र व शिर्क के अन्धेरों में पड़ा रहे अ़क़्ल से काम न ले तो उस का वबाल उसी को भुगतना होगा, और जो कोई रौशनी में आएगा तो अपने फ़ायदे के लिए। तो यह एलान तमाम इन्सानों के लिए किया गया है कि अल्लाह ने अपनी निशानियाँ और आयतें तुम्हारे पास भेज दी हैं और वह तुम्हारे पास आ चुकी हैं, अब यह तुम्हारा काम है कि इन से फ़ायदा उठाओ। इन के मानने न मानने से अल्लाह तआ़ला का कोई न फ़ायदा होगा और न कोई नुक़्सान, इन के मानने से तुम्हारा ही फ़ायदा है और इन के न मानने से तुम्हारा ही नुक़्सान है।

इस के बाद ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से कहा गया कि आप यह कह दें कि मेरा काम तब्लीग़ है, मानना न मानना तुम्हारा काम है मैं तुम्हारा मुह़ाफ़िज़ (संरक्षक) नहीं हूँ कि तुम्हें हिदायत करना मेरे ज़िम्मे हो। इस के बाद रसूलुल्लाह (सल्ल०) से इर्शाद फ़रमाया गया कि हम अपनी आयतों को मुख़्तलिफ़ पहलुओं और अजीब ग़रीब अन्दाज़ से इसलिए समझाते हैं कि आप लोगों को यह बातें पहुँचा दें और उन में ज़िद्दी तो यह कहेंगे कि ऐसे मज़ामीन (विषय) एक उम्मी (अनपढ़) से कैसे बन जाएँगें, ज़रूर मुख़्तलिफ़ वक़्तों

में किसी से सीखते रहे होंगे फिर पढ़-पढ़ा कर हमारे सामने पेश कर दिया, लेकिन समझदार और इन्साफ़ पसन्द लोगों पर हक़ खुल जाने के बाद शैतानी शक व सन्देह ख़त्म हो जाएँगे। इसी तरह इन्कारियों का एक शुब्हा कुर्आन मजीद के थोड़ा-थोड़ा नाज़िल होने पर यह था कि एक बार में यह तमाम किताब आसमान से क्यों नाज़िल न हुई यह जो टुकड़े-टुकड़े होकर नाज़िल होता है, इस से मालूम होता है मुहम्मद (सल्ल०) किसी से सीख कर बयान करते हैं।

इन्कारियों के इस शुब्हे को ख़त्म करने के लिए रसूलुल्लाह (सल्ल०) का इर्शाद है, कि ऐ नबी (सल्ल०)! आप इन काफ़िरों व मुश्रिकों की बेहूदगियों की परवाह न करें। आप अल्लाह पर भरोसा करके उस के हुक्म पर चलते हुए वह्य इलाही पर अ़मल करते रहें और मुश्रिकीन के जिहालत की तरफ़ ख़याल न फ़रमाएँ। उन के खुराफ़ात की तरफ़ तवज्जोह न करें और उन के कुफ़्र पर रंज न करें, बेशक वह चाहता तो ज़मीन पर एक मुश्रिक को बाक़ी न छोड़ता लेकिन शुरु से इन्सानी फ़ित्रत का निज़ाम ही उस ने ऐसा रखा है कि आदमी कोशिश करे तो ज़रूर हिदायत कुबूल कर सकता है, कुबूल करने में बिल्कुल मजबूर न किया जाए।

अल्लाह तआ़ला ने अ़क़्ल दी, क़ुद्रत और अख़्तियार दिया और हक़ व बातिल का अन्तर समझा दिया, अब जिस का जी चाहे समझ से काम ले। आप न देखिए कि कौन मानता है कौन नहीं मानता। आप ख़ुद उस तरीक़े पर चलते रहिए जिस तरीक़े पर चलने के लिए आप के पास आप के रब की तरफ़ से वह्य नाज़िल हुई है जिस में बड़ी चीज़ यह एतिक़ाद (आस्था) है कि अल्लाह के सिवा कोई अ़िबादत (उपास्य) के लायक़ नहीं। इस वह्य में तब्लीग़ व दअ़वत का हुक्म भी दाख़िल है, इस पर क़ायम रह कर मुश्रिकीन पर अफ़्सोस न कीजिए कि उन्होंने क्यों दीने हक़ कुबूल न किया। आप का फ़र्ज़ बस तब्लीग़ और अल्लाह के हुक्मों का पालन है, उन के आ़माल के ज़िम्मेदार और जवाबदेह आप नहीं हैं।

इन आयात पर ग़ौर करने से यह ज़ाहिर है कि जो कुछ यहाँ रसूलुल्लाह (सल्ल०) से कहा गया है वही आप की उम्मत के लिए हुक्म है। हम को अल्लाह तआ़ला ने अपने फ़ज़्ल से आप का उम्मती बनाया है तो हमें उसी के मुताबिक़ अपना अ़मल करना चाहिए जो बातें यहाँ साफ़-साफ़ ज़ाहिर होती हैं वह यह हैं:-

1- हमारा काम यह है कि कुर्आन मजीद में जो हुक्म दिया गया हैं उन की हम पूरी पैरवी करें और उन के अनुसार चलें जिन में पहली बात यह है कि अल्लाह तआ़ला ही को हम अपना रब समझें, वही हमें पालता है वही हमारी हिफ़ाज़त करता है और ज़रुरत की सब चीज़ें वही हमें देता है। उस के सिवा किसी में न कुछ देने की ताक़त है और न छीनने की।

2- दुनिया में ऐसे लोग भी ज़रूर रहेंगे जो कुर्आन मजीद को कोई अहमियत न देंगे, उन के साथ क्या बर्ताव होना चाहिए। आयत से समझ में आता है कि जब तुम उन को कुर्आन पहुँचा दो और कुर्आनी हुक्मों पर अ़मल करके दिखा दो तो फिर वह अपने अ़क़ीदे और आ़माल के ख़ुद ज़िम्मेदार हैं तुम्हारा काम यह नहीं है कि तुम उन को ज़बरदस्ती मुसलमान बनाओ।

3- अहले कुफ़्र व शिर्क की बेहूदगियों से किनाराकशी ज़रुरी है।

4- रसूलुल्लाह (सल्ल०) का फ़र्ज़ तब्लीग़-ए-क़ुर्आन था और बहैसियत आप का उम्मती होने के, इस फ़र्ज़ के अदाएगी का भार अब हमारे (यानी उम्मत के) ऊपर है।

108-110 وَلَا تَسُبُّوا الَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ فَيَسُبُّوا اللَّهَ عَدْوًا بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ كَذَٰلِكَ زَيَّنَّا لِكُلِّ أُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ثُمَّ
إِلَىٰ رَبِّهِم مَّرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُم بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِن جَاءَتْهُمْ آيَةٌ لَّيُؤْمِنُنَّ
بِهَا ۚ قُلْ إِنَّمَا الْآيَاتُ عِندَ اللَّهِ ۖ وَمَا يُشْعِرُكُمْ أَنَّهَا إِذَا جَاءَتْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ وَنُقَلِّبُ أَفْئِدَتَهُمْ وَأَبْصَارَهُمْ
كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوا بِهِ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَنَذَرُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ۝

मुश्रिकीन के देवी देवताओं को बुरा भला कहने से मुसलमानों को मना फ़रमा कर तब्लीग़-ए-दीन की सरहद क़ायम की गई हैं। जिस का ह़ासिल यह है कि ह़क़ की तब्लीग़ और बातिल की पहचान तो की जाएगी, मगर बातिल मज़ाहिब के रहनुमाओं और बातिल मअ़बूदों (उपास्यों) को तक्लीफ़ और बुरे शब्दों से याद न किया जाए कि इस का नतीजा यह होगा कि वह जवाब में अल्लाह तआ़ला और दीने ह़क़ की शान में गुस्ताख़ी करेंगे।

इस सूरत में अपने बेअदबी का सबब खुद मुसलमान बनेंगे, लिहाज़ा इस से हमेशा बचना चाहिए। किसी मज़हब की ग़ल्तियाँ ज़ाहिर करना या उस की कमज़ोरी से मुतवज्जेह करना दूसरी चीज़ है, लेकिन किसी क़ौम के पेशवाओं (गुरुओं) और मअ़बूदों (पूज्यों) के लिए तौहीन के अल्फ़ाज़ निकालना क़ुर्आन पाक ने किसी वक़्त भी जायज़ नहीं रखा। यह बिल्कुल इसी तरह़ है जैसा कि-

रसूलुल्लाह (सल्ल०) का इर्शाद है कि "जो अपने वालिदैन को गालियाँ दे वह बड़ा मल्ऊन (लअ़नत वाला) है।" इस पर अ़र्ज़ किया गया या रसूलल्लाह! कोई अपने माँ बाप को गालियाँ देता है? आपने फ़रमाया, "किसी ने किसी को गाली दी, फिर जवाब में उस ने उस के माँ बाप को गालियाँ दीं तो यानी उसी पहले शख़्स ने अपने माँ-बाप को गालियाँ दीं।"

अब सोचने की बात है कि क़ुर्आन व ह़दीस तो ग़ैर मुस्लिम के रहनुाओं को बुरा भला कहने की इजाज़त नहीं देता और कुछ इस्लाम के दावेदार हैं कि उल्मा-ए-ह़क़ को और इस से बढ़कर खुल्फ़ा अज़्वाजे मुतह्हरात और अक्सर सह़ाबा-ए-किराम (रज़ि०) को बुरा भला कहना अपना दीन बना रखा है।

इन्ना लिल्लाहि वइन्ना इलैहि राजिऊन।

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है:- وَلَا تَنَابَزُوا بِالْأَلْقَابِ

(और एक दूसरे को बुरे नामों से न पुकारो। **(सूरः अल् हुजरात-11)**

यहाँ तक कि कुफ़्फ़ार और मुश्रिकीन को भी गाली देने (बुरे नामों से पुकारने) से मना फ़रमाया। ख़ुद अल्लाह तआ़ला ने ईसाइयों को नसारा और यहूद को ﴿الَّذِينَ هَادُوا﴾ कहकर पुकारा है जो कि बेहतरीन नाम है।

अब यहाँ किसी को ख़याल हो सकता था कि ऐसी गुस्ताख़ी करने वालों को तुरन्त सज़ा क्यों नहीं

मिल जाती तो इस का जवाब अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि यह दुनिया इम्तिहान ह़ाल है, इस का निज़ाम अल्लाह तआ़ला ने ऐसा रखा है और ऐसे अस्बाब जमा कर दिये हैं कि यहाँ हर क़ौम अपने तरीक़े पर रहती है और उन को अपने आ़माल पसन्द हैं। इन्सानी दिमाग़ को ऐसा नहीं बनाया गया कि वह सिर्फ़ सच्चाई और ह़क़ को क़ुबूल करने पर मजबूर हों और ग़ल्ती की तरफ़ जाने की गुन्जाइश ही न रखे। हाँ, अल्लाह के यहाँ जाकर जब तमाम चीज़ें सामने आ जाएँगी तब पता चल जाएगा कि जो काम दुनिया में करते थे वह कैसे थे।

फिर मुश्रिकीने मक्का की एक ख़ास ह़ालत को बयान किया गया है कि अगर उन्हें कोई मोअ़जिज़ह (Miracle) दिखाया जाए तो वह ईमान ले आएँगे। क़ुरैश के साथ एक बार इस्लामी दअ़वत के सिलसिले में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की बातचीत हुई तो कहने लगे कि आप जिस तरह़ पिछले अम्बिया के मोअ़जिज़े बयान करते हैं, अगर आप नबी हैं तो ख़ुद भी तो कुछ करके दिखलाइए? आप ने उन से पूछा तुम क्या मोअ़जिज़ह देखना चाहते हो तो वह कहने लगे कि सफ़ा पहाड़ को सोने का बना दीजिए। आप (सल्ल०) ने उन से ईमान लाने का वादा लिया तो क़समें खाकर इत्मिनान दिलाने लगे आप दुआ़ के लिए तैयार हो गये, लेकिन जिब्रईल (अ़लै०) पैग़ामे इलाही लेकर आये कि आप चाहें तो ऐसा हो जाएगा, मगर फिर भी अगर यह लोग ईमान न लाएँगे तो फिर इन सब पर अ़ज़ाब नाज़िल होगा। अब आप चाहें इस बात को अख़्तियार करें या रहने दें जिस का जी चाहे ईमान क़ुबूल करे वरना ख़ुद अपना ही नुक़्सान करेगा।

आप ने फिर इसी बात को अख़्तियार किया, बाज़ मुसलमानों को भी ख़याल हुआ कि अच्छा होता कि अगर इन की यह ह़ुज्जत भी पूरी कर दी जाती तो इस पर इर्शाद फ़रमाया गया कि तुम्हें क्या ख़बर है? यह सरकश ज़िद्दी लोग फ़रमाईशी निशानी भी देखकर ईमान नहीं लाएँगे फिर सुन्नतुल्लाह के मुताबिक़ अ़ज़ाब के ह़क़्दार होंगे कि फ़ौरन तबाह कर दिये जाएँ। फिर कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन का ह़ाल बयान किया गया है कि बावजूद ह़क़ के मालूम हो जाने के यह हठधर्मी की वजह से ईमान नहीं लाएँगे। उन के इस इन्कार और कुफ़्र की वजह से उन के दिल और उन की निगाहें फेर दी गई हैं और उन को उन की सरकशियों में भटकने के लिए छोड़ दिया गया।

पहली आयत وَلَا تَسُبُّوا الَّذِينَ के तहेत बाज़ मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि बुरा भला और गालियाँ देना और चीज़ है और मअ़बूदाने बातिला के ऐबों और उन की गल्तियों को इसलिए बयान करना कि यह बेह़क़ीक़त और ह़क़ीर चीज़ें हैं, क़ाबिले अ़िबादत नहीं यह दूसरी चीज़ है। मुनाज़िरह व मुबाह़िसा (Debates) में तह़क़ीक़ के लिए किसी चीज़ के औसाफ़ (गुण) और नुक्स को बयान करना अलग है और गालियाँ देना दूसरी चीज़ है। क़ुर्आन करीम ने मुश्रिकों के मअ़बूदों (उपास्यों) को बुरा कहने से मना किया जिस से मुसलमानों को अच्छे अख़्लाक़ की तअ़लीम देना है।

[kM&8
आयत नं० 111 से 121 तक

*

وَلَوْ أَنَّنَا نَزَّلْنَا إِلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةَ وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْتٰى وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ كُلَّ شَيْءٍ قُبُلًا مَّا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْٓا إِلَّآ أَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ وَلٰكِنَّ
أَكْثَرَهُمْ يَجْهَلُوْنَ ۝ وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيٰطِيْنَ الْإِنْسِ وَالْجِنِّ يُوْحِيْ بَعْضُهُمْ إِلٰى بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُوْرًا ۚ وَلَوْ
شَآءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ ۝ وَلِتَصْغٰٓى إِلَيْهِ أَفْـِٕدَةُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ وَلِيَرْضَوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوْا مَا هُمْ مُّقْتَرِفُوْنَ ۝
أَفَغَيْرَ اللّٰهِ أَبْتَغِيْ حَكَمًا وَّهُوَ الَّذِيْٓ أَنْزَلَ إِلَيْكُمُ الْكِتٰبَ مُفَصَّلًا ۗ وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْلَمُوْنَ أَنَّهٗ مُنَزَّلٌ مِّنْ
رَّبِّكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ۝ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَّعَدْلًا ۗ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝
وَإِنْ تُطِعْ أَكْثَرَ مَنْ فِي الْأَرْضِ يُضِلُّوْكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۗ إِنْ يَّتَّبِعُوْنَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُوْنَ ۝ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ
أَعْلَمُ مَنْ يَّضِلُّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۚ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ۝ فَكُلُوْا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ إِنْ كُنْتُمْ بِاٰيٰتِهٖ مُؤْمِنِيْنَ ۝ وَمَا لَكُمْ أَلَّا
تَأْكُلُوْا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ وَقَدْ فَصَّلَ لَكُمْ مَّا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ إِلَّا مَا اضْطُرِرْتُمْ إِلَيْهِ ۗ وَإِنَّ كَثِيْرًا لَّيُضِلُّوْنَ بِأَهْوَآئِهِمْ بِغَيْرِ
عِلْمٍ ۗ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِالْمُعْتَدِيْنَ ۝ وَذَرُوْا ظَاهِرَ الْإِثْمِ وَبَاطِنَهٗ ۗ إِنَّ الَّذِيْنَ يَكْسِبُوْنَ الْإِثْمَ سَيُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوْا يَقْتَرِفُوْنَ ۝
وَلَا تَأْكُلُوْا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ وَإِنَّهٗ لَفِسْقٌ ۗ وَإِنَّ الشَّيٰطِيْنَ لَيُوْحُوْنَ إِلٰٓى أَوْلِيٰٓئِهِمْ لِيُجَادِلُوْكُمْ ۚ وَإِنْ أَطَعْتُمُوْهُمْ إِنَّكُمْ لَمُشْرِكُوْنَ ۝

अनुवाद–

(111) और अगर 'हम' उनकी ओर फ़रिश्ते भी उतार देते, और मुर्दे भी उनसे बातें करने लगते, और
'हम' हर चीज़ उनके सामने लाकर इकट्ठा कर देते, तो भी वे ईमान न लाते; सिवाय इसके कि अल्लाह
ही की मर्ज़ी हो, लेकिन उनमें अक्सर लोग समझ नहीं रखते; (112) और इसी तरह 'हमने' इन्सानों और
जिन्नों में से शैतानों को हर नबी का दुश्मन बनाया, जो चिकनी-चुपड़ी बात एक-दूसरे के मन में डाल कर
धोखा देते थे और अगर तुम्हारा रब चाहता तो वह ऐसा काम न करते, तो अब उनको छोड़ दो, जो कुछ
वे गढ़ते हैं। (113) और ताकि जो लोग आख़िरत को नहीं मानते, उनके दिल उसकी ओर झुकें, और ताकि
वह उसे पसंद कर लें, और ताकि जो कमाई उन्हें करनी है कर लें। (114) क्या मैं अल्लाह के सिवा किसी
और को फ़ैसला करने वाला बनाऊँ हांलाकि 'वही' है जिसने तुम्हारी ओर किताब नाज़िल की है, जिसमें (हर
तरह की) बातें खोल-खोल कर बता दी गई हैं; और जिन लोगों को 'हमने' किताब दी थी, वह भी जानते
हैं कि यह तुम्हारे 'रब' की ओर से हक़ के साथ नाज़िल हुई है, तो तुम हरगिज़ शक में न पड़ना। (115)
और तुम्हारे 'रब' की बात बिल्कुल सच्ची और इन्साफ़ की है, कोई 'उसके' कलाम को बदल नहीं सकता,
और 'वह' सुनता, जानता है। (116) और ज़मीन में अक्सर लोग ऐसे हैं कि अगर तुम उनके कहने पर
चलो, तो वह तुमको अल्लाह के रास्ते से भटका दें; वे तो केवल अटकल ही के पीछे चलते हैं और बस अटकलें
ही लगाते रहते हैं। (117) आप का 'रब' उन्हें अच्छी तरह जानता है जो उसके रास्ते से भटकता है और
वह उन्हें भी जानता है जो सीधी राह पर हैं। (118) तो जिस चीज़ पर अल्लाह का नाम लिया गया हो, उसको

खाओ; अगर तुम उसकी आयतों को मानते हो। (119) और क्या बात है! कि तुम उसमें से न खाओ, जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो; और जो चीज़ें अल्लाह ने तुम पर ह़राम की हैं, वह पूरी तरह तुम से बयान कर दी हैं; यह और बात है कि उसके लिए कभी तुम्हें मजबूर होना पड़े; और बहुत से लोग तो बिना इल्म के, मनमाने तरीक़े पर (लोगों को) बहकाते रहते हैं, बेशक तुम्हारा 'रब' ह़द से बाहर जाने वालों को खूब जानता है। (120) और छोड़ दो खुले गुनाह और छिपे गुनाह को भी, बेशक गुनाह करने वालों को उसका बदला दिया जाएगा, जिस कमाई में वे लगे रहे। (121) और उसे न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम न लिया गया हो, और उसमें से खाना गुनाह है; और शैतान तो अपने दोस्तों के दिलों में यह बात डालता है, कि तुमसे झगड़ें; और अगर तुम लोगों ने उसकी बात मान ली तो बेशक तुम भी मुशिरक हो जाओगे।

आयत नं० 111 से 121 तक की व्याख्या

*

111-113 وَلَوْ أَنَّنَا نَزَّلْنَآ إِلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةَ وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْتٰى وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ كُلَّ شَيْءٍ قُبُلًا مَّا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْٓا
إِلَّآ أَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ يَجْهَلُوْنَ ۝ وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيٰطِيْنَ الْإِنْسِ
وَالْجِنِّ يُوْحِيْ بَعْضُهُمْ إِلٰى بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُوْرًا ۚ وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ ۝
وَلِتَصْغٰٓى إِلَيْهِ أَفْـِٕدَةُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ وَلِيَرْضَوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوْا مَا هُمْ مُّقْتَرِفُوْنَ ۝

इन आयात में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को तसल्ली दी गई है कि आप इन हठधर्मियों के फ़ालतू सवालात और फ़रमाइशी मोअ़जिज़ात से तंग दिल और ग़मज़दह न हों। यह बात कुछ आप के ज़माने के साथ ख़ास नहीं बल्कि हर नबी के ज़माने में इस क़िस्म के लोग होते रहे हैं जो उन से दुश्मनी करते थे और इस क़िस्म के बिलावजह सवालात उन से किया करते थे।

दुश्मनाने दीन हर उम्मत में हुए हैं और अपने-अपने नबियों के साथ दुश्मनी करते रहे हैं, यह कोई नई बात आप ही के साथ नहीं। चूंकि अल्लाह तआ़ला की ह़िक्मत है कि इस दुनिया के निज़ाम को जब तक क़ायम रखना मन्ज़ूर है अच्छाई और बुराई की ताक़तों में से कोई ताक़त भी बिल्कुल मजबूर और ख़त्म न होगी, इसलिए नेकी व बदी हिदायत व गुमराही की जंग हमेशा से है।

जिस तरह़ अब यह मुशिरकीन आप को बेहूदा फ़रमाईशों से परेशान करते और तरह़-तरह़ की बातों से लोगों को राहे रास्त से डगमगाना चाहते हैं उसी तरह़ हर पैग़म्बर के मुक़ाबिल शैतानी क़ुव्वतें काम करती रही हैं कि पैग़म्बरों को उन के पाक मक़्सद में कामियाब न होने दें। इसी के लिए शयातीन जिन्न व इन्स आपस में मदद करते और एक दूसरे को चिकनी चुपड़ी बातें सिखाते हैं और उन की यह वक़्ती आज़ादी उसी ह़िक्मत और निज़ाम के मातहे़त है जो दुनिया में अल्लाह तआ़ला ने रखी हैं। इसलिए आप उन दुश्मनाने दीन के फ़ित्ना से ज़्यादा फ़िक्र व ग़म में न पड़ें। उन को और उन के झूठ को अल्लाह के सुपुर्द कर दीजिए।

इन आयात से मालूम हुआ कि बातिल (नाह़क़) हमेशा से ह़क़ का दुश्मन रहा है और ह़क़ की

मुख़ालिफ़त हमेशा से बातिल परस्तों ने की है। इस से यह भी मालूम हुआ कि बुरी बातें झूठ के साथ कहना और इस तरह़ बहकाना शैतानों का काम है।

114-117

أَفَغَيْرَ اللَّهِ أَبْتَغِي حَكَمًا وَهُوَ الَّذِي أَنزَلَ إِلَيْكُمُ الْكِتَابَ مُفَصَّلًا ۚ وَالَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ
الْكِتَابَ يَعْلَمُونَ أَنَّهُ مُنَزَّلٌ مِّن رَّبِّكَ بِالْحَقِّ ۖ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ۝ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ
رَبِّكَ صِدْقًا وَعَدْلًا ۚ لَّا مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِهِ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ وَإِن تُطِعْ أَكْثَرَ
مَن فِي الْأَرْضِ يُضِلُّوكَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ ۚ إِن يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ۝
إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ مَن يَضِلُّ عَن سَبِيلِهِ ۖ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ۝

पिछली आयात में बतलाया गया था कि दुनिया के अन्दर इन्सान को ग़लत रास्ते पर डालने वाले बहुत से हैं जो अपनी चिकनी-चुपड़ी बातों से लोगों को अपने फंदे में फँसाये रहते हैं और यह फँसने वाले वही लोग होते हैं जो आख़िरत की ज़िन्दगी पर यक़ीन नहीं रखते। यही शैतानों के बहकावे में आते हैं, ऐसे लोगों से अल्लाह के नबियों को हमेशा दुःख पहुँचता रहा है। पिछले अम्बिया की तरह़ आख़िरी नबी (सल्ल०) को भी ऐसे इन्सानों से साबिक़ा पड़ा जिस पर ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को तसल्ली दी गई है कि अच्छे लोगों के साथ बुरे लोगों की दुश्मनी का सिल्सिला तो पहले से चला आ रहा है। आप उन की बातों की तरफ़ ख़याल न कीजिए कि उन की यह सब बातें शैतानी चालें हैं।

जब मुश्रिकीन क़ुर्आनी दलायल के मुक़ाबिले में लाजवाब हो गये और अपने उपास्यों का किसी तरह़ बचाव न कर सके तो मजबूर होकर बोल उठे कि अच्छा कोई तीसरा और पंच मुक़र्रर कर लिया जाए वह इस मुक़द्दमें में जो फ़ैसला करेगा हम मान लेंगे। मुश्रिकीन की इस बात का जवाब इन आयात में दिया जा रहा है और आप की नुबूव्वत पर एक दूसरी दलील पेश की जा रही है।

चुनाँचे अल्लाह तआ़ला नबी करीम (सल्ल०) को जवाब में फ़रमाते हैं कि ऐ नबी (सल्ल०)! आप उन मुश्रिकीन से कह दीजिए कि क्या मैं अल्लाह को छोड़ कर किसी और को पंच मुक़र्रर करूँ कि जिस ने मुझ पर वह किताब नाज़िल की है कि जिस में अच्छे बुरे, नेक व बद, अच्छाई के तमाम ह़ालात खोल-खोल कर बयान कर दिये गये हैं।

फिर क़ुर्आन पाक के कमालात की तरफ़ इशारा किया गया है कि क़ुर्आन पाक सच्चाई व अ़द्ल के एतिबार से मुकम्मल (Perfect) है। जिस तरह़ दूसरी आसमानी किताबों में लोगों ने तह़रीफ़ (रद्दोबदल) कर लिया वैसे क़ुर्आन पाक की तब्दीली कोई नहीं कर सकेगा, बल्कि यह हमेशा मह़फ़ूज़ रहेगा। इस के बाद बतलाया गया कि दुनिया में हमेशा समझदार आदमी थोड़े रहे हैं अक्सरियत उन ही लोगों की होती है जो केवल ख़याली बेउसूली और अट्कल पच्चू बातों की पैरवी करने वाले हों तो अगर दुनिया के अक्सर लोगों के कहने पर चलोगे और इसी अक्सरियत (Majority) का कहना मानने लगोगे और बे उसूल बातों पर चलना शुरु कर दोगे तो अल्लाह की बताई हुई सीधी राह से ज़रूर बहक जाओगे।

यहाँ आयत में ख़िताब (सम्बोधन) अगरचे रसूलुल्लाह (सल्ल०) को किया गया है, मगर सुनाना आप

की उम्मत को है। आख़ीर में फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला को ख़ूब मालूम है कि कौन गुमराह है और कौन राहे रास्त पर है। ग़लत हमेशा ही ग़लत रहेगा इसलिए इन नादानों के कहने सुनने की परवाह न की जाए बल्कि जिस बात का हुक्म अल्लाह तआ़ला दें उस का मानना इन्सान का काम है। इन आयात में यही मज़मून बयान फ़रमाया गया है।

यहाँ जो फ़रमाया وَاِنْ تُطِعْ اَكْثَرَ مَنْ فِى الْاَرْضِ يُضِلُّوْكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

(और दुनिया में ज़्यादा लोग ऐसे हैं कि अगर उन का कहना मानने लगें तो वह आप को अल्लाह की राह से बेराह कर दें।) इस से दुनिया की अक्सरियत का गुमराह और अक़ल्लियत (Minority) का हिदायत याफ़्ता होना मालूम हुआ। चुनाँचे यह देखा जाता है और तारीख़ से ज़ाहिर है। इस जगह अगरचे ख़िताब रसूलुल्लाह (सल्ल०) से किया गया है मगर नसीह़त सारी उम्मत को देना है और नसीह़त भी ऐसी कि जो क़ियामत तक हर ज़माने और हर ह़ाल में एक मुस्तक़िल ज़िन्दगी का तरीक़ा बन कर रहेगा यानी इस में मुसलमानों को कामियाब ज़िन्दगी बसर करने का ढंग बतलाया गया है कि जिस को मज़बूती से पकड़ लेने से वह कभी राहे रास्त से भटक नहीं सकते और कभी ज़िल्लत व गुमराही में मुब्तिला नहीं हो सकते और इसी से यह नतीजा भी मालूम हुआ कि अगर इस ह़िक्मत को छोड़ दिया तो फिर कहीं के न रहेंगे और तरह़-तरह़ की गुमराही के शिकार होंगे और यह बतलाया गया है कि अहले इस्लाम को सबीलिल्लाह यानी अल्लाह के रास्ते से ज़रा भी इधर-उधर नहीं हटना चाहिए।

दुनिया का मुसाफ़िर-

अब 'सबीलिल्लाह' की ह़क़ीक़त को इस तरह़ समझिए कि इन्सान दुनिया में मुसाफ़िर है। दुनिया में आने का मतलब यह है कि इन्सान अपने घर और वतन से निकल पड़ा, अब उसे मन्ज़िल ब-मन्ज़िल रास्ता तय करके यह सफ़र ख़त्म करना है, इस सफ़र का ख़ात्मा मौत है। मर जाने के माने यह हैं कि दुनिया का सफ़र ख़त्म हुआ और इन्सान अपने वतन में पहुँच गया। इस तरह़ पैदाइश से लेकर मौत तक एक ख़ासा लम्बा चौड़ा मैदान उसे तय करना है इस मैदान का नाम मैदाने दुनिया है। मौत के बाद जिस वतन में दाख़िल होगा उस का नाम 'आख़िरत' है। पहले उसे क़ब्र, क़ियामत, ह़श्र, ह़िसाब-किताब, पुल सिरात के मरह़लों (Stages) से गुज़रना है फिर यह अपने घर पहुँच जाएगा जो या जन्नत होगा या दोज़ख़। जन्नत आराम व राह़त का मक़ाम है और दोज़ख़ अ़ज़ाब की जगह है।

अब इन्सान को अगर सीधा जन्नत में पहुँचना है तो उस के लिए इस दुनिया में एक सीधा रास्ता मुक़र्रर (Fixed) है। यह रास्ता अल्लाह ने तय किया है और उस के बताने के लिए उस ने सब से आख़िर में रसूलुल्लाह (सल्ल०) को क़ुर्आन मजीद देकर दुनिया में भेजा है। इस रास्ते से भटकने के माने यह हैं कि इन्सान सीधी सड़क छोड़ कर अन्धेरे जंगल में उतर गया। ख़बर नहीं किस झाड़ झंकार में फँस कर या कौन सी दलदल में धँस कर मर जाए और मौत के आगे के मरह़लों में इस पर क्या गुज़रे और आख़ीर में दोज़ख़ में उस की जान पर क्या बने और इस सीधे रास्ते पर चलने से जिस को सिराते

मुस्तक़ीम कहा जाता है उस पर चलने से दुनिया में गढ़ो, दलदलों में फँस कर हलाक होने से बचेगा, मौत आसान होगी।

जन्नत में बना बनाया आराम का घर रहने के लिए तैयार मिलेगा, यह रास्ते केवल क़ुर्आन मजीद के मुताबिक़ चलने से मिल सकते है। इसलिए इस आयत में रसूलुल्लाह (सल्ल०) को और आप के ज़रिये तमाम इन्सानों को और ख़ासतौर से उम्मते मुस्लिमा को हिदायत की गई है कि दुनिया में शैतान बहुत हैं उन का कहना न मानो और क़ुर्आन मजीद को मज़बूती से पकड़े रहो।

118-121

فَكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ إِن كُنتُم بِآيَاتِهِ مُؤْمِنِينَ ﴿١١٨﴾ وَمَا لَكُمْ أَلَّا تَأْكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ
اللَّهِ عَلَيْهِ وَقَدْ فَصَّلَ لَكُم مَّا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ إِلَّا مَا اضْطُرِرْتُمْ إِلَيْهِ ۗ وَإِنَّ كَثِيرًا لَّيُضِلُّونَ بِأَهْوَائِهِم
بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِالْمُعْتَدِينَ ﴿١١٩﴾ وَذَرُوا ظَاهِرَ الْإِثْمِ وَبَاطِنَهُ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَكْسِبُونَ
الْإِثْمَ سَيُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوا يَقْتَرِفُونَ ﴿١٢٠﴾ وَلَا تَأْكُلُوا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَإِنَّهُ لَفِسْقٌ ۗ وَإِنَّ
الشَّيَاطِينَ لَيُوحُونَ إِلَىٰ أَوْلِيَائِهِمْ لِيُجَادِلُوكُمْ ۖ وَإِنْ أَطَعْتُمُوهُمْ إِنَّكُمْ لَمُشْرِكُونَ ﴿١٢١﴾

ह़लाल ज़बीह़ा खाने का हुक्म

दुर्रे मन्सूर भाग 3 पेज नं० 41 में इन आयात का नाज़िल होने की वजह बयान करते हुए लिखा है कि यहूदी नबी अकरम (सल्ल०) की ख़िद्‌मत में हाज़िर हुए और उन्होंने बतौर एतिराज़ यूँ कहा कि जिस जानवर को हम क़त्ल कर दें (यानी ज़ब्ह़ कर दें) उसे तो आप खा लेते हैं और जिस जानवर को अल्लाह तआ़ला क़त्ल कर दे (यानी उसे मौत दे दे और वह बग़ैर ज़ब्ह़ के मर जाए) आप उस को नहीं खाते।

एक रिवायत यूँ भी है जिसे इब्ने कसीर ने भाग 2 पेज नं० 169 में नक़्ल किया गया है कि फ़ारस के लोगों ने क़ुरैशे मक्का को आदमी भेज कर यह समझाया कि तुम मुह़म्मद (सल्ल०) से यूँ बह़स करो कि आप अपने हाथ में छुरी लेकर जिस जानवर को ज़ब्ह़ करते हैं वह तो आप के नज़्दीक ह़लाल है और जिस को अल्लाह तआ़ला सोने की छुरी से ज़ब्ह़ करते हैं वह आप के नज़्दीक ह़राम है।

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि कुछ लोग रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास आये और कहने लगे, क्या जिस चीज़ को हम खुद मारें (ज़ब्ह़ करें) उसे तू खा ले और जिसे अल्लाह मारे यानी मर जाए उसे न खाएँ? उस वक़्त यह आयत नाज़िल हुई। **(तिर्मिज़ी)**

ज़बीह़ा (ज़ब्ह़ किया हुआ) व ग़ैर ज़बीह़ा (बिना ज़ब्ह़ किया हुआ)–

पहली रिवायत से मालूम हुआ कि यह एतिराज़ यहूद ने किया था और दूसरी रिवायत से मालूम हुआ कि अहले फ़ारस के समझाने के लिए क़ुरैशे मक्का ने किया था। मुफ़स्सिर इब्ने कसीर कहते हैं कि यहूदियों से इस एतिराज़ का होना मुश्किल है क्योंकि वह खुद मरे हुए यानी ग़ैर ज़बीह़ा को नहीं खाते थे।

एतिराज़ करने वाले जाहिलों ने सिर्फ़ मौत को देख लिया और ज़बीह़ा और ग़ैर ज़बीह़ा के दर्मियान

जो फ़र्क़ है उस को नहीं देखा लिहाज़ा एतिराज़ कर बैठे। पहली बात तो यह है कि अल्लाह ने हर जानवर के खाने की इजाज़त नहीं दी। क़ुर्आन मजीद में इर्शाद फ़रमाया कि पाकीज़ा जानवर ह़लाल हैं और ख़बीस जानवर ह़राम हैं।

सूरः अअ़राफ़ *(आयत नं० 157)* में इर्शाद है يُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبٰتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبٰٓئِثَ कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) पाकीज़ा चीज़ों को ह़लाल और ख़बीस चीज़ों को ह़राम क़रार देते हैं और बहीमतुल् अन्आ़म के खाने की इजाज़त दे दी, सिवाय उन जानवरों के जिन को बता दिया-

أُحِلَّتْ لَكُمْ بَهِيْمَةُ الْاَنْعَامِ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ *(सूरः माइदा-1)*

और मज़ीद तफ़्सीर का बयान रसूलुल्लाह (सल्ल०) की तरफ़ सुर्पुद फ़रमा दिया। आप ने ह़लाल और ह़राम जानवरों की तफ़्सीर बता दी, लेकिन जिन जानवरों को ह़लाल क़रार दिया है उन के ह़लाल होने की शर्त यह है कि उन को ज़ब्ह़ कर दिया जाए।

ज़ब्ह़ का मतलब यह है कि गले की रगें काट दी जाएँ जिन से जानवर सांस लेता है और खाता पीता है और जिन से होकर ख़ून गुज़रता है। ज़ब्ह़ करने से भी किसी जानवर का खाना उस वक़्त ह़लाल होगा जबकि ज़ब्ह़ के वक़्त **'बिस्मिल्लाह'** पढ़ी गई हो। (यानी अल्लाह का नाम लिया गया हो) ज़ब्ह़ करने वाला जो अल्लाह का नाम लेकर ज़ब्ह़ करे मुसलमान या किताबी यानी यहूदी या नसरानी हो। इन के अ़लावा और किसी का ज़बीह़ा ह़लाल नहीं। ज़ब्ह़ करने का फ़ायदा यह है कि जानवर के अन्दर जो ख़ून है वह रगें कटने से निकल जाता है ख़ून का खाना-पीना ह़राम है। जब ख़ून निकल गया तो अब गोश्त बिना ख़ून के रह गया लिहाज़ा ज़बीह़ा का खाना ह़लाल हो गया।

एतिराज़ करने वाले ने इस फ़र्क़ को देखा नहीं और इस बात को समझा नहीं कि ज़ब्ह़ करने में क्या ह़िक्मत है और ज़ब्ह़ करने से जानवर क्यों ह़लाल होता है और अपनी मौत मर जाने से क्यों ह़राम होता है यह ख़ून निकलने वाली बात उस की समझ में न आई जो ज़बीह़ा और ग़ैर ज़बीह़ा में फ़र्क़ करने वाली चीज़ है।

अगर कोई मुस्लिम या किताबी किसी जानवर को लाठी मार-मार कर हलाक कर दे अगरचे बिस्मिल्लाह पढ़ ले तो वह जानवर ह़लाल न होगा क्योंकि लाठियों से मारने से ख़ून नहीं निकला जो गले की रगों से निकल जाता है ऐसे जानवर का नाम "मौक़ूज़ह" है जिस का ज़िक्र सूरः माइदा के शुरु में गुज़र चुका।

जब लोगों ने एतिराज़ किया तो अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई और मुसलमानों को फ़रमाया कि जिस ह़लाल जानवर पर अल्लाह का नाम लिया गया यानी अल्लाह का नाम लेकर ज़ब्ह़ किया गया उसे खाओ और जिस जानवर पर ज़ब्ह़ करते वक़्त अल्लाह का नाम नहीं लिया गया उसे मत खाओ दुश्मनों की बातों में न आओ और उन के एतिराज़ को कोई वज़न न दो। अल्लाह ने तुम्हें ह़लाल ह़राम की तफ़्सील बता दी, अल्लाह के ह़लाल किये हुए जानवर को न खाना और दुश्मनों की बातों में आ जाना अहले ईमान की शान के ख़िलाफ़ है।

इसी को फ़रमाया وَاِنْ اَطَعْتُمُوْهُمْ اِنَّكُمْ لَمُشْرِكُوْنَ
और अगर तुम उन की इताअ़त करोगे तो शिर्क करने वाले हो जाओगे।
यानी अल्लाह की बात मानने के बजाय दूसरों की बात मान कर मुश्रिकों के साथ हो जाओगे।
जिन जानवर को अल्लाह का नाम लेकर मुस्लिम या किताबी ने ज़ब्ह़ किया हो बशर्ते कि वह जानवर ह़लाल हो उस के खाने की इजाज़त दे दी और जो जानवर मरा हुआ हो (यानी अपनी मौत मर गया हो जिसे अल्लाह का नाम लिये बग़ैर ज़ब्ह़ किया गया हो) उस के खाने को ह़राम क़रार दे दिया गया और उसे फ़िस्क़ बताया। हाँ, ह़ालते मजबूरी में غير باغ ولا عادٍ के साथ शर्त के साथ मुर्दार खाने की इजाज़त दे दी।

وَاِنَّ كَثِيْرًا لَّيُضِلُّوْنَ بِاَهْوَآئِهِمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ और बिलाशुब्हा बहुत से लोग बग़ैर इल्म के अपनी ख़्वाहिशात के ज़रिये गुमराह करते हैं यानी जो भी बात उन के ख़याल में आ जाती है उस के ज़रिये लोगों को बहकाते और गुमराह करते हैं अल्लाह के हुक्म के पाबन्द नहीं होते, उस के हुक्म की ख़िलाफ़वर्ज़ी करते हुए ह़द से आगे बढ़ जाते हैं।

اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِالْمُعْتَدِيْنَ (बेशक तेरा रब ह़द से निकलने वालों को ख़ूब जानता है) वह उन को सज़ा देगा।

गुनाहों से बचने का हुक्म-

وَذَرُوْا ظَاهِرَ الْاِثْمِ وَبَاطِنَهٗ (और छोड़ दो ज़ाहिरी गुनाह और बातिनी गुनाह) इस में ज़ाहिरी और अन्दुरूनी दोनों तरह़ के गुनाह छोड़ने का हुक्म फ़रमाया है। जो गुनाह ज़ाहिरी तौर पर एलानिया हो रहे हैं वह भी छोड़ दो और जो छुप कर हो रहे हों उसे भी छोड़ दो, अल्लाह तआ़ला हर गुनाह को जानता है और वह गुनाहों की सज़ा देने पर पूरी तरह़ क़ादिर है गुनहगार यह न समझें कि तन्हाई में जो गुनाह कर लिया अल्लाह तआ़ला को उसकी क्या ख़बर।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْسِبُوْنَ الْاِثْمَ سَيُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوْا يَقْتَرِفُوْنَ बिलाशुब्हा जो लोग गुनाह करते हैं उन्हें जल्द ही उन के आ़माल का बदला दे दिया जाएगा।

وَاِنَّ الشَّيٰطِيْنَ لَيُوْحُوْنَ اِلٰٓى اَوْلِيٰٓـئِهِمْ لِيُجَادِلُوْكُمْ "और बिलाशुब्हा शयातीन अपने दोस्तों की तरफ़ वस्वसे डालते हैं ताकि वह तुम से झगड़ा करें।" अहले फ़ारस (फ़ारस के लोग) मुश्रिक थे और क़ुरैशे मक्का भी मुश्रिक थे उन्होंने मुश्रिकीने मक्का को यह बात समझाई कि तुम मुह़म्मद (सल्ल०) पर यह एतिराज़ करो और यहूदियों ने आपस में एक दूसरे को समझाया कि तुम यह एतिराज़ लेकर जाओ और मुसलमानों से झगड़ा करो। अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों को बता दिया कि तुम इन बातों में न आओ। अगर तुम ने उन का कहा माना तो तुम मुश्रिक हो जाओगे और मुश्रिकों वाला काम कर लोगे। यानी अल्लाह के हुक्म की ख़िलाफ़वर्ज़ी और दूसरों की इताअ़त करके शिर्क करने वालो में बन जाओगे क्योंकि अल्लाह तआ़ला के हुक्म को छोड़ कर दूसरों के हुक्म को मानना और उन को ह़लाल व ह़राम का मसीह़ा समझना

मुश्रिकों का काम है।

(فـــی مــعــالـم التنزیل قال الزجاج فیه دلیل علی من احل شیئًا مما حرم اللّٰه او حرم ما احل اللّٰه فهو مشرک)

हदीस में है, हज़रत अ़दी बिन ह़ातिम (रज़ि०) रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास आये और उन के गले में सोने की सलीब थी। आप (सल्ल०) ने उन से फ़रमाया, “ऐ अ़दी! इस बुत को फेंक दो और मैंने आप को सूरः तौबः की यह आयत तिलावत करते हुए सुना (जिस में है) (यहूद व नसारा ने) आप अह़बार व रुहबान को अल्लाह के सिवा अपना रब बना लिया।” **(सूरः अल् तौबः-31)**

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, “वह यक़ीनन उन की अ़िबादत नहीं करते थे लेकिन उन के उ़ल्मा जिस चीज़ को ह़लाल क़रार देते यह उन को ह़लाल समझते और जिस चीज़ को ह़राम कह देते उसे ह़राम समझते थे।” **(तफ़्सीर अल् तबरीः 147/10 जामेअ़ अल् तिर्मिज़ी, अल् तफ़्सीर, ह़दीसः 3095)**

❖

आयत नं० 122 से 135 तक

أَوَمَن كَانَ مَيْتًا فَأَحْيَيْنَاهُ وَجَعَلْنَا لَهُ نُورًا يَمْشِي بِهِ فِي النَّاسِ كَمَن مَّثَلُهُ فِي الظُّلُمَاتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِّنْهَا ۚ كَذَٰلِكَ زُيِّنَ
لِلْكَافِرِينَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ أَكَابِرَ مُجْرِمِيهَا لِيَمْكُرُوا فِيهَا ۖ وَمَا يَمْكُرُونَ إِلَّا بِأَنفُسِهِمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ۝
وَإِذَا جَاءَتْهُمْ آيَةٌ قَالُوا لَن نُّؤْمِنَ حَتَّىٰ نُؤْتَىٰ مِثْلَ مَا أُوتِيَ رُسُلُ اللَّهِ ۘ اللَّهُ أَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهُ ۗ سَيُصِيبُ الَّذِينَ أَجْرَمُوا
صَغَارٌ عِندَ اللَّهِ وَعَذَابٌ شَدِيدٌ بِمَا كَانُوا يَمْكُرُونَ ۝ فَمَن يُرِدِ اللَّهُ أَن يَهْدِيَهُ يَشْرَحْ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ ۖ وَمَن يُرِدْ أَن يُضِلَّهُ
يَجْعَلْ صَدْرَهُ ضَيِّقًا حَرَجًا كَأَنَّمَا يَصَّعَّدُ فِي السَّمَاءِ ۚ كَذَٰلِكَ يَجْعَلُ اللَّهُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ وَهَٰذَا صِرَاطُ رَبِّكَ مُسْتَقِيمًا ۗ
قَدْ فَصَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَذَّكَّرُونَ ۝ لَهُمْ دَارُ السَّلَامِ عِندَ رَبِّهِمْ ۖ وَهُوَ وَلِيُّهُم بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا يَا مَعْشَرَ
الْجِنِّ قَدِ اسْتَكْثَرْتُم مِّنَ الْإِنسِ ۖ وَقَالَ أَوْلِيَاؤُهُم مِّنَ الْإِنسِ رَبَّنَا اسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَبَلَغْنَا أَجَلَنَا الَّذِي أَجَّلْتَ
لَنَا ۚ قَالَ النَّارُ مَثْوَاكُمْ خَالِدِينَ فِيهَا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۗ إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ۝ وَكَذَٰلِكَ نُوَلِّي بَعْضَ الظَّالِمِينَ بَعْضًا بِمَا كَانُوا
يَكْسِبُونَ ۝ يَا مَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ أَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنكُمْ يَقُصُّونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِي وَيُنذِرُونَكُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا ۚ قَالُوا شَهِدْنَا
عَلَىٰ أَنفُسِنَا ۖ وَغَرَّتْهُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا وَشَهِدُوا عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ أَنَّهُمْ كَانُوا كَافِرِينَ ۝ ذَٰلِكَ أَن لَّمْ يَكُن رَّبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرَىٰ بِظُلْمٍ
وَأَهْلُهَا غَافِلُونَ ۝ وَلِكُلٍّ دَرَجَاتٌ مِّمَّا عَمِلُوا ۚ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُونَ ۝ وَرَبُّكَ الْغَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ ۚ إِن يَشَأْ يُذْهِبْكُمْ
وَيَسْتَخْلِفْ مِن بَعْدِكُم مَّا يَشَاءُ كَمَا أَنشَأَكُم مِّن ذُرِّيَّةِ قَوْمٍ آخَرِينَ ۝ إِنَّ مَا تُوعَدُونَ لَآتٍ ۖ وَمَا أَنتُم بِمُعْجِزِينَ ۝ قُلْ يَا قَوْمِ
اعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنِّي عَامِلٌ ۖ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ مَن تَكُونُ لَهُ عَاقِبَةُ الدَّارِ ۗ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ۝

अनुवाद-

(122) क्या वह व्यकित जो पहले मुर्दा था, फिर 'हमने' उसमें जान डाली, और उसके लिए रोशनी कर दी, जिसको लिए हुए वह लोगों के बीच चलता-फिरता है; कहीं उस व्यक्ति की तरह हो सकता है जो अन्धेरों में पड़ा हुआ हो, वहाँ से निकल नहीं सकता? इसी तरह काफ़िरों को जो भी वह कर रहे हैं भला दिखाई देता है; (123) और इसी तरह 'हमने' हर बस्ती में उसके बड़े-बड़े अपराधियों को लगा दिया है ताकि वह चालें (षड़यंत्र) चलें; और जो चालें वे चलते हैं, अपनी ही जानों के लिए चलते हैं, और (जबकि) उन्हें इसका भी एहसास नहीं होता; (124) और जब उनके पास कोई आयत आती है, तो कहते हैं, ''हम हरगिज़ नहीं मानेंगे, जब तक कि वैसी ही चीज़ हमें न दी जाए जो अल्लाह के रसूलों को दी गईं,'' अल्लाह खूब जानता है, जिस पर अपना पैग़ाम भेजता है; जो लोग गुनाहगार हैं, उनको अल्लाह के यहाँ ज़िल्लत होगी और बड़ा अज़ाब होगा, इसलिए कि चालें चलते थे। (125) तो जिस व्यक्ति को अल्लाह सीधी राह दिखाना चाहता है, उसका सीना इस्लाम के लिए खोल देता है; और जिसे गुमराह करना चाहता है, उसके सीने को तंग (संकुचित) कर देता है, और (इस्लाम के ख़्याल से) दम घुटने लगता है, मानो (उनकी रूह) आसमान पर चढ़ रहा हो, इस तरह अल्लाह उन लोगों को गंदगी में डाले रखता है, जो ईमान नहीं लाते। (126) और यह तुम्हारे 'रब' का सीधा रास्ता है, 'हमने' निशानियाँ ध्यान देने वालों के लिए, खोल-खोल कर बयान कर दी हैं। (127) उनके लिए उनके 'रब' के पास सलामती का घर है, और 'वही' उनका वली (संरक्षक) है, उन कामों की वजह से

जो वे करते हैं। (128) और जिस दिन 'वह' सबको जमा करेगा, (और कहेगा), ''ऐ जिन्नों के गिरोह! तुम ने तो इन्सानों से खूब फ़ायदा उठाया,'' और इन्सानों में से जो उनके साथी होंगे, वे कहेंगे, ''ऐ हमारे रब! हम आपस में एक- दूसरे से फ़ायदा उठाते रहे और इस वक़्त को पहुँच गये जो 'आप' ने हमारे लिए निश्चित किया था।'' 'वह' कहेगा, ''आग (जहन्नम) तुम्हारा ठिकाना है,'' उसमें तुम्हें हमेशा रहना है,'' मगर अल्लाह जितना चाहे, बेशक तुम्हारा रब हिकमत वाला, जानने वाला है; (129) और इसी तरह 'हम' ज़ालिमों को, एक-दूसरे (को जहन्नम) का साथी बना देंगे, उस कमाई की वजह से जो वे करते थे; (130) ''ऐ जिन्नों और इन्सानों के गिरोह! क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल नहीं आए थे, जो तुम्हें 'मेरी' आयतें सुनाते और इस दिन के पेश आने से तुम्हें डराते?'' वे कहेंगे, ''क्यों नहीं!! (रसूल तो आए थे) हम खुद ही अपने ख़िलाफ़ गवाह हैं।'' इन लोगों को दुनियावी ज़िन्दगी ने धोखे में डाल रखा था, मगर अब वे खुद अपने ही ख़िलाफ़ गवाही देने लगे कि वे इन्कार करने वाले थे; (131) यह जान लो कि तुम्हारा 'रब' ऐसा नहीं कि बस्तियों को ज़ुल्म से हलाक कर दे और वहाँ के रहने वालों को ख़बर न हो। (132) और सभी के दर्जे उनके आमाल के हिसाब से हैं, और जो काम यह लोग करते हैं, उससे तुम्हारा 'रब' बेख़बर नहीं; (133) और आप का 'रब' बेनियाज़ (निस्पृह) रहमत वाला है, अगर 'वह' चाहे तो तुम्हें ख़त्म कर दे और तुम्हारे बाद जिन लोगों को चाहे ले आए, जिस तरह उसने तुम्हें भी दूसरे लोगों की नस्ल से पैदा किया है; (134) बेशक जिस चीज़ का तुमसे वादा किया जाता है, उसे ज़रूर आना है; और तुम में उसे मात देने (हराने) की कुदरत नहीं है; (135) कह दीजिए, ''ऐ मेरी क़ौम के लोगो! तुम अपनी जगह काम करते रहो, मैं अपनी जगह काम कर रहा हूँ; बहुत जल्द तुमको मालूम हो जाएगा कि आख़िरत (जन्नत) में किसका घर होगा,'' बेशक ज़ालिम लोग कामियाब होने वाले नहीं!

आयत नं० 122 से 135 तक की व्याख्या

122-123

أَوَمَنْ كَانَ مَيْتًا فَأَحْيَيْنَاهُ وَجَعَلْنَا لَهُ نُورًا يَمْشِي بِهِ فِي النَّاسِ كَمَنْ مَثَلُهُ فِي الظُّلُمَاتِ
لَيْسَ بِخَارِجٍ مِنْهَا ۚ كَذَٰلِكَ زُيِّنَ لِلْكَافِرِينَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢٢﴾ وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ
أَكَابِرَ مُجْرِمِيهَا لِيَمْكُرُوا فِيهَا ۖ وَمَا يَمْكُرُونَ إِلَّا بِأَنْفُسِهِمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿١٢٣﴾

मोमिन और काफ़िर

अल्लामा बग़वी (रह०) मुआलिमुत्तन्ज़ील भाग 2 पेज नं० 128 में लिखते हैं कि यह आयत दो ख़ास आदमियों के बारे में नाज़िल हुई। फिर उन दो आदमियों में हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) से नक़्ल किया गया है कि جَعَلْنَا لَهُ نُورًا से हज़रत हम्ज़ह बिन अब्दुल मुत्तलिब {रसूलुल्लाह (सल्ल०) के चचा} मुराद हैं और مَثَلُهُ فِي الظُّلُمَاتِ से अबू जेहल मुराद हैं। वाक़िआ यह पेश आया था कि अबू जेहल ने एक बार रसूलुल्लाह (सल्ल०) पर घोड़े की लीद फेंक दी थी। हज़रत हम्ज़ह (रज़ि०) को इस का पता चला, जो शिकार करके हाथ में कमान लिए हुए आ रहे थे और अभी तक इस्लाम कुबूल नहीं किया था। अबू जेहल

की हरकत का इल्म हुआ तो गुस्से में आ गये और अबू जेहल के पास आकर उस के सर पर कमान मारी वह कहने लगा कि तुम देखते नहीं हो कि यह कैसा दीन लेकर आये हमें बेवकूफ़ बनाते हैं और हमारे मअ़बूदों को बुरा कहते हैं और हमारे बाप दादों के मुख़ालिफ़ हैं। इस पर हज़रत हम्ज़ह (रज़ि०) ने फ़रमाया कि तुम से बढ़ कर बेवकूफ़ कौन होगा कि तुम अल्लाह को छोड़ कर बुतों की अ़िबादत करते हो। फिर उन्होंने उसी वक़्त यह कलिमा اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ पढ़कर इस्लाम कुबूल कर लिया।

इस पर आयते करीमा اَوَمَنْ كَانَ مَيْتًا فَاَحْيَيْنٰهُ नाज़िल हुई। नुज़ूल की वजह भी हो मगर आयत हर काफ़िर और हर मोमिन के लिए है।

जो लोग पहले काफ़िर थे वह कुफ़्र की वजह से मुर्दा थे। जिस ने इस्लाम कुबूल कर लिया वह ज़िन्दों में शुमार हो गया और उसे नूरे ईमान मिल गया। वह इसी नूरे ईमान को लेकर लोगों में फिरता है और यह नूरे ईमान उसे ख़ैर का रास्ता बताता है और आ़माल की तरफ़ मुतवज्जेह करता है।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया जो मुर्दा था उसे हम ने ज़िन्दा कर दिया, ईमान का नूर दे दिया वह उस जैसा कहाँ हो सकता है जो अन्धेरों में है, बराबर उन्हीं में घिरा हुआ है वहाँ से निकलने वाला नहीं।

फिर फ़रमाया كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْكٰفِرِيْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ जिस तरह अहले ईमान के लिए ईमान को सुन्दर बना दिया गया है उसी तरह काफ़िरों के लिए उन के आ़माल कुफ़्रिया सज़ा कर दिये गये हैं जिस की वजह से ईमान नहीं लाते और वह अपनी बुरी हरकतों को अच्छा समझ रहे हैं।

हर बस्ती में वहाँ के बड़े लोग मुजरिम होते हैं-

इस के बाद फ़रमाया وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا فِيْ كُلِّ قَرْيَةٍ اَكٰبِرَ مُجْرِمِيْهَا (और इस तरह हम ने बस्ती में वहाँ के बड़ों को मुजरिम बना दिया।)

मतलब यह है कि जैसे अहले मक्का में दुनियावी एतिबार से बड़े लोग मुजरिम बने हुए हैं उसी तरह हम ने हर बस्ती में आप से पहले ऐसे लोग मुक़र्रर किये जो इन लोगों के सरदार थे और गुनाहों में पेश-पेश थे।

لِيَمْكُرُوْا فِيْهَا ताकि यह लोग मक्र करें यानी अल्लाह की हिदायत न फैलने दें और उस के ख़िलाफ़ शरारतें करें।

وَمَا يَمْكُرُوْنَ اِلَّا بِاَنْفُسِهِمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ और उन के मक्र (योजनाएँ) उन की जानों ही के साथ है और उन्हें इस का शुऊर नहीं है। इस्लाम के ख़िलाफ़ शरारतें करते हैं और यह नहीं जानते कि उस का वबाल उन्हीं पर पड़ता है।

साहिबे मुआ़लिमुत्तन्ज़ील इस لِيَمْكُرُوْا فِيْهَا के बारे में लिखते हैं कि अहले मक्का ने मक्का के चारों ओर हर रास्ते पर चार-चार आदमी बैठा दिये थे ताकि वह लोगों को सय्यदना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (सल्ल०) पर ईमान लाने से रोकते रहें। जो शख़्स बाहर से आता और मक्का में दाख़िल होना चाहता था उस से

यह लोग कहते थे कि देखना इस शख़्स से बच कर रहना क्योंकि यह जादूगर झूठा है।

हक़ीक़त में हर बस्ती और हर इलाक़े के रईस और चौधरी और अहले माल ही लोगों को हिदायत पर नहीं आने देते, न खुद हिदायत क़ुबूल करते हैं न अपने अ़वाम को हक़ क़ुबूल करने देते हैं। जैसा कि पूरी दुनिया में देखा जाता है।

124 وَإِذَا جَآءَتْهُمْ ءَايَةٌ قَالُوا لَن نُّؤْمِنَ حَتَّىٰ نُؤْتَىٰ مِثْلَ مَآ أُوتِىَ رُسُلُ ٱللَّهِ ٱللَّهُ أَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهُۥ
سَيُصِيبُ ٱلَّذِينَ أَجْرَمُوا صَغَارٌ عِندَ ٱللَّهِ وَعَذَابٌ شَدِيدٌۢ بِمَا كَانُوا يَمْكُرُونَ ﴿١٢٤﴾

वलीद बिन मुग़ीरा की जिहालत

मुआ़लिमुत्तन्ज़ील भाग 2 पेज नं० 128 में इस आयत का सबबे नुज़ूल यूँ लिखा है कि वलीद बिन मुग़ीरा ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से कहा कि अगर नुबूव्वत वाक़ई कोई चीज़ है तो मैं तुम से ज़्यादा इस का हक़्दार हूँ क्योंकि मेरी उम्र भी तुम से ज़्यादा है और मेरा माल भी ज़्यादा है और दूसरा सबबे नुज़ूल यह नक़्ल किया है कि अबू जेहल ने कहा कि बनू अ़ब्द मनाफ़ ने शराफ़त के सिलसिले में हम से मुक़ाबला बाज़ी की यहाँ तक कि हम घुड़दौड़ के घोड़े बन कर रह गये अब वह कह रहे हैं कि हम में एक नबी है जिस की तरफ़ वह्य की जाती है। अल्लाह की क़सम हम इस नुबूव्वत का दावा करने वाले पर ईमान न लाएँगे जब तक कि हमारे पास भी उसी तरह़ वह्य न आ जाए जैसी उस के पास आती है।

इस पर अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई जिस में वलीद बिन मुग़ीरा का भी जवाब हो गया और अबू जेहल का भी। जिस का मतलब यह है कि रिसालत व नुबूव्वत देना यह अल्लाह तआ़ला के अख़्तियार में है वह जिसे चाहता है उसे देता है और उसे मालूम है कि रिसालत और नुबूव्वत का ह़क़्दार कौन है और इस ओ़हदे (पद) को कौन संभाल सकता है यह कहना कि मैं रिसालत का ह़क़्दार हूँ अल्लाह तआ़ला पर एतिराज़ करना है उन्हें अल्लाह के यहाँ ज़िल्लत का सामना करना होगा।

125 فَمَن يُرِدِ ٱللَّهُ أَن يَهْدِيَهُۥ يَشْرَحْ صَدْرَهُۥ لِلْإِسْلَامِ ۖ وَمَن يُرِدْ أَن يُضِلَّهُۥ يَجْعَلْ صَدْرَهُۥ ضَيِّقًا حَرَجًا
كَأَنَّمَا يَصَّعَّدُ فِى ٱلسَّمَآءِ ۚ كَذَٰلِكَ يَجْعَلُ ٱللَّهُ ٱلرِّجْسَ عَلَى ٱلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٢٥﴾

साह़िबे हिदायत और गुमराह

इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने यह बताया है कि अल्लाह तआ़ला जिस शख़्स को हिदायत देना चाहे उस का सीना इस्लाम के लिए खोल देता है, उस के दिल में इस्लाम की तरफ़ से कोई शक व शुब्हा बाक़ी नहीं रहता और सच्चे दिल से पूरे इख़्लास के साथ क़ुबूल कर लेता है।

और अल्लाह तआ़ला जिसे गुमराही में बाक़ी रखना चाहे उस के सीने को तंग कर देता है और इस्लाम की दअ़वत सुनकर उस का सीना तंग हो जाता है और इस्लाम क़ुबूल करने की बात सामने आती है तो यह उसे ऐसा मुश्किल मालूम होता है कि जैसे वह बड़ी मुसीबत के साथ आसमान पर चढ़ रहा हो।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने यह आयत तिलावत फ़रमाई, फिर इर्शाद फ़रमाया कि जब नूर सीने में दाख़िल हो जाता है तो सीना खुल जाता है। अर्ज़ किया गया या रसूलल्लाह! क्या ऐसी कोई निशानी है जिस के ज़रिये उसको पहचान लिया जाए। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया हाँ, उस की निशानी यह है कि दारुल् मुरूर (गुज़रने की जगह यानी दुनिया) से दूर रहे और दारुल् खुलूद (हमेशा रहने की जगह) की तरफ़ ध्यान करे और मौत से पहले उस की तैयारी कर ले। **(रवाहुलु बैहक़ी फ़ी शुअबुल् ईमान कमा फ़िल् मिश्कात पेज नं० 446)**

सीने की तंगी का मतलब बताते हुए हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) ने फ़रमाया कि जब अल्लाह का ज़िक्र किया जाए तो दिल में तंगी होने लगे और घबराहट महसूस हो और अगर बुतों या ग़ैरुल्लाह की अिबादत का ज़िक्र आये तो दिल में खुशी की कैफ़ियत तारी हो। **(मुआलिमुल तन्ज़ील)**

मालूम हुआ कि मोमिन को अपने ईमान पर खुश रहना चाहिए। ईमान और ईमानियत की वजह से दिल में खुशी की लहरें दौड़ती रहें।

फिर फ़रमाया كَذَٰلِكَ يَجْعَلُ اللَّهُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ अल्लाह ऐसे ही अज़ाब भेज देता है उन लोगों पर, जो ईमान नहीं लाते।

उलूम-ए-तफ़्सीर इस के कई माने किये हैं। 'रूहुल् मआनी' में पहले तो अज़ाब और ख़ालिदन का तर्जुमः किया है। फिर हज़रत मुजाहिद ताबई से नक़्ल किया है कि जिस में कोई भलाई न हो वह रिज्स है। फिर अल्लामा 'राग़िब अस्फ़हानी' से नक़्ल किया है कि 'अर्रिज्स' यानी घिनौनी चीज़। यहाँ यह सब माने मुराद हो सकते हैं।

मतलब यह है कि जिस तरह अल्लाह पाक गुमराह शख़्स का सीना तंग कर देता है उसी तरह उन लोगों पर 'रिज्स' डाल देता है जिन्हें ईमान लाना नहीं होता।

इस मतलब को हदीस में इस तरह बयान किया गया है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला जिस के साथ भलाई करना चाहता है उसे दीन {क़ुर्आन और रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सुन्नत} का फ़हम अता कर देता है..............." **(सहीह बुख़ारी, अलू इल्म, बाब 13, हदीस, 71)**

126-129

وَهَٰذَا صِرَاطُ رَبِّكَ مُسْتَقِيمًا ۗ قَدْ فَصَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَذَّكَّرُونَ ۝ لَهُمْ دَارُ السَّلَامِ عِندَ رَبِّهِمْ
وَهُوَ وَلِيُّهُم بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ۚ يَا مَعْشَرَ الْجِنِّ قَدِ اسْتَكْثَرْتُم مِّنَ
الْإِنسِ ۖ وَقَالَ أَوْلِيَاؤُهُم مِّنَ الْإِنسِ رَبَّنَا اسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَبَلَغْنَا أَجَلَنَا الَّذِي
أَجَّلْتَ لَنَا ۚ قَالَ النَّارُ مَثْوَاكُمْ خَالِدِينَ فِيهَا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۗ إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ۝ وَكَذَٰلِكَ
نُوَلِّي بَعْضَ الظَّالِمِينَ بَعْضًا بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝

अल्लाह तआला का रास्ता

तेरे रब का रास्ता है जो सीधा रास्ता है, इस में कोई टेढ़ापन नहीं है। उस की दअवत भी स्पष्ट

है, जो लोग नसीहत हासिल करने वाले हैं उन के लिए स्पष्ट तौर पर आयात बयान कर दें। फिर सीधे रास्ते पर चलने वालों के लिये दो इनआम ज़िक्र फरमाए। पहला यह कि उन के लिए उन के रब के पास दारुस्सलाम है।

अहले ईमान के लिए वादा-

दारुस्सलाम के माने होते हैं "सलामती का घर" और इस से जन्नत मुराद है। जन्नत में हर तरह की तक्लीफों से सलामती होगी। न जिस्मानी कोई तक्लीफ होगी न रूहानी। न आपस में बुग्ज़ होगा न कीना, न हसद होगा न दुश्मनी और न नेअमतों के खत्म होने और छिनने का अन्देशा होगा। जब जन्नत में दाखिल होंगे तो फरमाया जाएगा ادْخُلُوهَا بِسَلَامٍ آمِنِينَ कि दाखिल हो जाओ जन्नत में सलामती के साथ अम्न व अमान की हालत में। अहले जन्नत को अल्लाह की तरफ से सलाम आएगा, जिस का ज़िक्र करते हुए सूरः यासीन *(आयत नं० 58)* में फरमाया سَلَامٌ قَوْلًا مِّن رَّبٍّ رَّحِيمٍ यानी जन्नत दारुस्सलाम है वहाँ सलामती ही सलामती है।

अहले ईमान का वली-

दूसरे इनआम का ज़िक्र करते हुए इर्शाद फरमाया وَهُوَ وَلِيُّهُم بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ यानी अल्लाह उन का वली है उन के अमल की वजह से, जो वह करते थे।

साहिबे मुआलिमुत्तन्ज़ील भाग 7 पेज नं० 130 पर लिखते हैं يتولاهم فى الدنيا بالتوفيق وفى الأخرة بالجزاء यानी अल्लाह तआला दुनिया में उन का वली यानी दोस्त और मददगार है जिस ने ईमान की तौफीक दे दी और आखिरत में भी उन का दोस्त होगा वह उन्हें ईमान का बदला देगा।

जिन्नातों और इन्सानों से सवाल-

कियामत के दिन जो सवालात होंगे उन में से एक सवाल का ज़िक्र फरमाया وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا कि जिस दिन अल्लाह तआला उन सब को यानी जिन्नात और इन्सानों को कियामत के दिन इकट्ठा फरमाएगा और जिन्नात से अल्लाह तआला कहेगा يَا مَعْشَرَ الْجِنِّ قَدِ اسْتَكْثَرْتُم مِّنَ الْإِنسِ कि ऐ जिन्नात के गिरोह! तुम ने बड़ी संख्या में इन्सानों को अपने गिरिफ्त में कर लिया। जिन्नात से शयातीन मुराद हैं।

जब इब्लीस मरदूद हुआ था उस ने कहा था لَأَتَّخِذَنَّ مِنْ عِبَادِكَ نَصِيبًا مَّفْرُوضًا *(सूरः निसा नं० 118)* (कि मैं तेरे बन्दों में से अपना हिस्सा मुकर्ररह ले कर रहूँगा) और यह भी कहा था।

(कि मैं उन के लिए आपकी सीधी राह पर बैठूँगा। फिर उन के पास उन के सामने से और पीछे से और उन के दाएँ और उन के बाएँ से आऊँगा और आप उन में से अक्सर को शुक्रगुज़ार न पाएँगे।

इब्लीस ने जो कहा था वह बराबर अपनी कोशिश में लगा हुआ है। उस की ज़ुर्रियत भी उसकी कोशिशों की मददगार है और इन्सानों के गफ्लत की वजह से शयातीन अपनी मेहनत में कामियाब हैं उन्होंने अक्सर इन्सानों को अपना बना लिया और सिराते मुस्तकीम से हटा कर गुमराह कर दिया

शयातीन जिन्न से अल्लाह तआला फ़रमाएँगे कि इन्सानों में से बड़ी तअदाद को तुम ने अपना बना लिया और उन को सिराते मुस्तक़ीम से हटा दिया।

साहिबे रूहुल् मआनी फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला का यह ख़िताब तो बतौर डाँट डपट उन से होगा।

इन्सानों का जवाब और जुर्म का इक़रार-

وَقَالَ اَوْلِيٰٓـُٔهُمْ مِّنَ الْاِنْسِ رَبَّنَا اسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَّبَلَغْنَآ اَجَلَنَا الَّذِيْٓ اَجَّلْتَ لَنَا (और शयातीन के दोस्त जो इन्सानों में से थे जिन्होंने उन की पैरवी की थी, यूँ कहेंगे कि ऐ हमारे रब! हम में बाज़ से बाज़ ने फ़ायदा उठाया) यानी इन्सान ने जिन्नात से और जिन्नात ने इन्सानों से फ़ायदा उठाया।

साहिबे रूहुल् मआनी ने हज़रत हसन और इब्ने जुरैज वग़ैरह से नक़्ल किया है कि इन्सानों का जिन्नात से नफ़ा हासिल करना यूँ था कि जब उन में से कोई शख़्स सफ़र पर जाता और जिन्नात का ख़ौफ़ होता तो जिस मन्ज़िल पर उतरना होता तो यूँ कहते कि اعوذ بسيد هٰذا الوادى

(कि मैं इस वादी के सरदार की पनाह लेता हूँ।)

अल्लाह की पनाह लेने के बजाय शयातीन की पनाह लेते थे और शयातीन का इन्सानों से नफ़ा हासिल करना यह था कि जब यह लोग اعوذ بسيد هٰذا الوادى कहते थे-

तो जिन्नात खुश होते और कहते थे कि देखो इन्होंने हम को पनाह देने पर क़ादिर समझा और जो पनाह अल्लाह से माँगनी चाहिए थी हम से माँगी। इन्सानों का गिरोह आपस में एक दूसरे से नफ़ा हासिल करने और इक़रार करने के बाद यूँ कहेगा कि وَبَلَغْنَآ اَجَلَنَا الَّذِيْٓ اَجَّلْتَ لَنَا

(और हम पहुँच गये उस मुक़र्रर मीआद (निर्धारित समय) को जो हमारे लिए आप ने मुक़र्रर फ़रमाई थी।)

उस मुक़र्रर मीआद से बाज़ हज़रात ने मौत और बाज़ ने क़ियामत का दिन मुराद लिया है इन्सानों का गिरोह यह बात बतौर इक़रारे जुर्म कहेगा कि हम ने ऐसा क्यों किया! अफ़्सोस भी है कि ऐसा न करते तो अच्छा होता।

قَالَ النَّارُ مَثْوٰىكُمْ अल्लाह तआला का इर्शाद होगा कि दोज़ख़ तुम्हारे ठहरने की जगह है अल्लाह तआला ने पहले ही इब्लीस को ख़िताब करके बता दिया था।

لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ اَجْمَعِيْنَ *(सूरः साद-85)*

(कि मैं ज़रूर दोज़ख़ को भर दूँगा तुझ से और उन तमाम लोगों से जो तेरी पैरवी करेंगे।)

यह एलान उसी वक़्त फ़रमा दिया था जब इब्लीस ने घमण्ड किया और उस ने बनी आदम को बहकाने की क़सम खाकर अपना मज़बूत इरादा ज़ाहिर किया, अल्लाह तआला ने उस के दावे पर उसे और उस के मानने वालों को दोज़ख़ में भेजने का फ़ैसला फ़रमाया।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ (यह लोग दोज़ख़ में हमेशा रहेंगे) اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ (मगर यह कि जो अल्लाह चाहे) यानी वह चाहे तो दोज़ख़ से निकाल सकता है मगर काफ़िरों को नहीं निकालेगा जैसा कि दूसरी आयत में

خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا فरमाया।

إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ (बेशक तेरा रब ह़िक्मत वाला जानने वाला है।)

इस तरह़ हम बाज़ ज़ालिमों को बाज़ का वली बनाते हैं उन के आ़माल की वजह से जो वह करते थे।

نُوَلِّي بَعْضَ الظَّالِمِينَ

نُوَلِّي का तर्जुमः जो अभी लिखा गया ह़ज़रत क़तादा से नक़्ल किया है और साह़िबे मुआ़लिमुत्तन्ज़ील ने उन से नक़्ल किया है **نَجْعَلُ بَعْضَهُمْ اَوْلِيَآءَ بَعْضٍ** कि हम ज़ालिमों को आपस में एक दूसरे का दोस्त बताते हैं यह माने भी सही हैं दुनिया में हर वक़्त इस का मुज़ाहिरा है और इसी दोस्ती की वजह से आपस में मिलकर इस्लाम और अहले इस्लाम की दुश्मनी में एक दूसरे की मदद करते रहते हैं।

और बाज़ ह़ज़रात ने نُوَلِّي का तर्जुमः यह किया है कि ज़ालिमों को एक दूसरे से क़रीब कर देंगे। यानी क़ियामत के दिन एक ही क़िस्म के लोगों की जमाअ़तें बना दी जाएँगी। फिर यह जमाअ़तें दोज़ख़ में चली जाएँगी। जैसा कि सूरः साफ़्फ़ात *(आयत नं० 22-23)* में फ़रमाया–

اُحْشُرُوا الَّذِينَ ظَلَمُوا وَاَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوا يَعْبُدُونَ ۝ مِنْ دُونِ اللّٰهِ فَاهْدُوهُمْ اِلٰى صِرَاطِ الْجَحِيمِ ۝

ज़ालिमों को और उन के साथियों को और उन मअ़बूदों को जिन की वह अल्लाह को छोड़ कर अ़िबादत करते थे जमा करो फिर उनको दोज़ख़ का रास्ता दिखाओ और सूरः ज़ुमर *(आयत नं० 71)* में फ़रमाया وَسِيقَ الَّذِينَ كَفَرُوا اِلٰى جَهَنَّمَ زُمَرًا

(और जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन्हें गिरोह-गिरोह बनाकर दोज़ख़ की तरफ़ हांका जाएगा।)

आयत का एक और माने भी बाज़ मुफ़स्सिरीन ने लिया है। जैसे– साह़िबे मुआ़लिमुत्तन्ज़ील ने लिखा है **ای نسلّط بعض الظالمين عَلىٰ بعض** कि हम बाज़ ज़ालिमों को बाज़ दूसरे ज़ालिमों पर मुसल्लत कर देते हैं और एक ज़ालिम को दूसरे ज़ालिम के हाथ से सज़ा दिलवा देते हैं।

130-135

يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّونَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِي وَيُنْذِرُونَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ
هٰذَا ۚ قَالُوا شَهِدْنَا عَلٰى اَنْفُسِنَا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَشَهِدُوا عَلٰى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوا
كٰفِرِينَ ۝ ذٰلِكَ اَنْ لَّمْ يَكُنْ رَّبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا غٰفِلُونَ ۝ وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا
عَمِلُوا ۚ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُونَ ۝ وَرَبُّكَ الْغَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ ۚ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ
مِنْ بَعْدِكُمْ مَّا يَشَآءُ كَمَآ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ ذُرِّيَّةِ قَوْمٍ اٰخَرِينَ ۝ اِنَّ مَا تُوعَدُونَ لَاٰتٍ ۙ وَّمَآ اَنْتُمْ
بِمُعْجِزِينَ ۝ قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّي عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۙ مَنْ تَكُونُ لَهٗ عَاقِبَةُ
الدَّارِ ۚ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُونَ ۝

इन आयात में इन्सानों और जिन्नातों से क़ियामत के दिन सवाल होगा। दोनों जमाअ़तों के मुजरिम काफ़िर जो मैदाने ह़श्र में मौजूद होंगे उन से अल्लाह तआ़ला फ़रमाएँगे कि ऐ जिन्नात और ऐ इन्सानो!

क्या तुम्हारे पास तुम में से पैग़म्बर नहीं आये जो तुम्हें मेरे हुक्मों को बताते और तुम्हें आज के दिन की हाज़िरी से और आ़माल के नतीजे सामने आने से बाख़बर करते और डराते कि देखो एक दिन ऐसा आने वाला है तो तुम उस के लिए फ़िक्रमन्द हो जाओ और ईमान लाओ।

जिन्नों के बारे में कु़र्आन व सुन्नत में जो मामलात हैं वह इस तरह़ हैं।

(1) जिन्न भी इन्सान की तरह़ अख़्तियार रखने वाली मख़्लूक़ है, उन से भी ह़िसाब व किताब होगा और वह भी जन्नत में या जहन्नम में जाएँगे। **(सूरः अअ़राफ़-35, 36)**

(2) जिन्नों की तख़्लीक़ इन्सान से पहले हुई। इब्लीस जिन्नों ही की नस्ल से है। **(सूरः कहफ़-50)**

शैतान इन्सानों में से भी हो सकते हैं और जिन्नों में से भी। **(सूरः अल् अनआ़म-112)**

जिन्नों में भी इन्सानों की तरह़ कुछ नेक हैं और कुछ बुरे। **(सूरः अल् जिन्न-11)**

(i) अल्लाह तआ़ला ने अशरफ़ुल् मख़्लूक़ात (श्रेष्ठ) इन्सान ही को बनाया है, चुनाँचे आदम की तख़्लीक़ के बाद से नुबूव्वत का सिल्सिला आदम की औलाद ही में चल रहा है। **(सूरः इस्रा-70)**

(ii) जिन्न इन्सान को देख सकते हैं, मगर इन्सान उन्हें नहीं देख सकते। **(सूरः अअ़राफ़-27)**

जिन्न आसमानों की ख़बरें ले आया करते थे मगर अब उनके पास यह आज़ादी नहीं रही। **(अल् जिन्न-9)**

इस बिना पर उन्हें इन्सान से अफ़ज़ल (Superior) नहीं समझा जा सकता क्योंकि बाज़ ख़ुसूसियात में कभी-कभी जानवर भी इन्सान से अफ़ज़ल हो सकते हैं। जैसे- बहुत से जानवर इन्सानों से ज़्यादा तेज़ देखते हैं मगर इस के बावजूद वह इन्सानों से अफ़ज़ल नहीं हो सकते।

(iii) जिन्नों को इन्सानों पर किसी क़िस्म का कोई इक़्तिदार (Control) नहीं दिया गया बस वह वस्वसे डालकर गुमराह कर सकते हैं।

पहली बात तो मुजरिमीन इक़रारे जुर्म से इन्कार करेंगे और अपने कुफ़्र व शिर्क का इन्कार कर बैठेंगे। जैसा कि दूसरी आयत में उन का क़ौल وَاللّٰهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِيْنَ ज़िक्र फ़रमाया गया है। फिर बाद में अपने हाथ पैरों की गवाही से और अपने नबियों की गवाही से मजबूर होकर इक़रार कर लेंगे जिस का ज़िक्र ऊपर किया गया।

قَالُوْا شَهِدْنَا عَلٰٓى اَنْفُسِنَا वह कहेंगे कि अपनी जानों के मुक़ाबिले में हम गवाही दे रहे हैं कि वाक़ई हम मुजरिम और काफ़िर थे। बीच में उन लोगों की गुमराही और कुफ़्र व शिर्क पर जमने की वजह भी ज़िक्र फ़रमा दी गई।

وَغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا यानी दुनिया वाली ज़िन्दगी ने उन्हें धोके में डाल रखा था। दुनियावी ज़िन्दगी को उन्होंने अस्ल समझा और उस के नफ़े और लज़्ज़त ही के पीछे पड़े रहे। ईमान की दअ़वत देने वालों और आख़िरत के दिन की याद दहानी कराने वालों की बातों पर ध्यान न दिया।

ذٰلِكَ اَنْ لَّمْ يَكُنْ رَّبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى यानी यह रसूलों का भेजना इस वजह से है कि तेरा रब बस्तियों को यानी उन के रहने वालों को उन के ज़ुल्म की वजह से इस तरह़ हलाक नहीं फ़रमाता कि वह लोग

अपने ज़ुल्म के अन्जाम से बेख़बर हों बल्कि अल्लाह तआ़ला पैग़म्बर भेजता है जो लोगों को ईमान की दअ़वत देते हैं। तौहीद अख़्तियार करने वालों का अच्छा अन्जाम और मुश्रिकों व काफ़िरों का बुरा अन्जाम बताते हैं।

अम्बिया-ए-किराम (अ़लै०) के ज़रिये सब कुछ बता देने के बाद जब लोग बाज़ नहीं आते तो अल्लाह की तरफ़ से उन लोगों की हलाकत का फ़ैसला हो जाता है, हलाकत की वजह भी बता दिया कि हर गुनाह ज़ुल्म है और कुफ़्र भी सब से बड़ा ज़ुल्म है।

आ़माल के एतिबार से लोगों के दर्जात भिन्न होते हैं। फिर फ़रमाया وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا (और हर एक के लिए अपने-अपने आ़माल के एतिबार से मुख़्तलिफ़ दर्जात हैं।) सवाब वालों के भी मुख़्तलिफ़ दर्जात हैं और अ़ज़ाब वालों के भी और जिस ने जो कुछ किया अपने-अपने अ़मल के एतिबार से जज़ा और सज़ा पाएगा।

وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ (और तेरा रब उन कामों से ग़ाफ़िल नहीं हैं जो वह करते हैं) इस में यह बात बता दी कि हिसाब लेने वाला और बदला देने वाला अल्लाह तआ़ला है। उस के इ़ल्म से किसी का कोई अ़मल बाहर नहीं। कोई यह न समझे कि मेरे सारे आ़माल का बदला कैसे मिलेगा, किसे ख़बर है कि मैंने क्या किया? ख़ूब समझ लें कि जिसे बदला देना है उसे सब कुछ मालूम है।

अल्लाह तआ़ला ग़नी, रह़मत वाला है। फिर फ़रमाया وَرَبُّكَ الْغَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ (तेरा रब ग़नी, बेनियाज़, रह़मत वाला है) उसे किसी चीज़ की और किसी के अ़मल की ज़रुरत नहीं। हाँ! सारी मख़्लूक़ उस की मुह़ताज हैं वह अपनी मख़्लूक़ पर रह़म करता है उस ने मख़्लूक़ को वजूद (Existence) बख़्शा फिर रिज़्क़ भी देता और ह़ाजतें (Needs) भी पूरी फ़रमाता है, दुनिया में तो सब ही पर उस की रह़मत है मगर आख़िरत में परहेज़गारों के लिए ही ख़ास है।

अल्लाह चाहे तो दूसरे लोगों को ले आये-

اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ مِنْۢ بَعْدِكُمْ مَّا يَشَآءُ

(अगर परवरदिगार चाहे तो तुम्हें ख़त्म कर दे और तुम्हारे बाद दूसरों को अपनी ज़मीन पर आबाद फ़रमा दे।)

كَمَآ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ ذُرِّيَّةِ قَوْمٍ اٰخَرِيْنَ

(जैसा कि उस ने तुम्हें एक दूसरी क़ौम की नस्ल से पैदा फ़रमा दिया।)

आज वह तुम्हारे दादा परदादा कहाँ हैं जिन की नस्ल से तुम हो। जिस तरह़ पुरानी एक नस्ल के बाद दूसरी नस्ल लाने पर अल्लाह तआ़ला क़ादिर है उसी तरह़ वह यह भी कर सकता है कि वह सब को ख़त्म कर के फिर उस की जगह दूसरों को आबाद कर दे, तो वह बेनियाज़ (उसको किसी की ज़रुरत नहीं) है तुम तो बेनियाज़ नहीं, तुम अपनी ज़िन्दगी में उस के मुह़ताज (Dependent) हो और जरुरत पूरी करने के लिए तुम्हें उस की रह़मत की ज़रुरत है।

दुनिया में भी तुम उस के मुह़ताज हो और मौत के बाद भी, लिहाज़ा अपनी ज़रुरत से ईमान क़ुबूल करो और आ़माले सालिह़ा अख़्तियार करो।

क़ियामत–

إِنَّ مَا تُوعَدُونَ لَآتٍ

"बिलाशुब्हा जिस का तुम से वादा किया जा रहा है वह ज़रुर आने वाली चीज़ है।"

यानी क़ियामत और ह़िसाब व किताब, अ़ज़ाब व सवाब और जन्नत व दोज़ख़ की जो ख़बरें तुम्हें दी जा रही हैं और तुम्हें जो यह बताया जा रहा है कि मोमिनीन का यह बदला है और काफ़िरों की यह सज़ा है यह सब कुछ होने वाला है।

وَمَا أَنتُم بِمُعْجِزِينَ

(और तुम अल्लाह तआ़ला को आ़जिज़ नहीं कर सकते) और मौत से और क़ियामत के दिन पेश आने वाले ह़ालात से जान छुड़ा कर कहीं जा नहीं सकते। सूरः मरयम *(आयत नं० 94-95)* में फ़रमाया

لَقَدْ أَحْصَاهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ۝ وَكُلُّهُمْ آتِيهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَرْدًا

(अल्लाह तआ़ला ने सब को ख़ूब अच्छी तरह़ गिन रखा है और सब उस के पास एक-एक होकर ह़ाज़िर होंगे।)

बहुत से जाहिल क़ियामत का इन्कार करते हुए कह देते हैं कि हज़ारों साल हो गये अब तक तो क़ियामत आई नहीं यह बात सही नहीं है ख़ालिक़ व मालिक का वादा सच्चा है उस के इ़ल्म में उस का वक़्त मुक़र्रर है वह अपने वक़्त मुक़र्ररह पर आएगी। किसी चीज़ के वजूद में आने में देर लगना इस बात की दलील नहीं है कि उस का वजूद न होगा।

फिर फ़रमाया قُلْ يَا قَوْمِ اعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنِّي عَامِلٌ

(आप फ़रमा दीजिए कि ऐ मेरी क़ौम! तुम अपनी जगह अ़मल करते रहो मैं भी अपने तौर पर अ़मल करता हूँ।)

मैं तुम्हें बता रहा हूँ कि कुफ़्र व शिर्क का अन्जाम बुरा है इस वक़्त तुम नहीं मानते।

فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ مَن تَكُونُ لَهُ عَاقِبَةُ الدَّارِ

(सो जल्द ही तुम जान लोगे कि इस आ़लम में अन्जामकार किस के लिए फ़ायदेमन्द हुआ।)

जब आँखें पथरा जाएँगी उस वक़्त आँखे खुलेंगी कि नफ़ा वाला हम अपने को समझ रहे थे लेकिन अब पता चला कि नफ़ा वाले ईमान और नेक अ़मल वाले थे लेकिन वहाँ समझ में आना बेफ़ायदा होगा। इसी दुनिया में समझ लें और ईमान ले आएँ तो नफ़ा वाले हो जाएँगे।

ज़ालिम कामियाब नहीं होते–

إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ (बिलाशुब्हा बात यह है कि जुल्म करने वाले कामियाब नहीं होते।)

इस में बता दिया कि कुफ़्र व शिर्क वाले समझते हैं कि हम बड़े फ़ायदे में हैं, लेकिन वह ह़क़ीक़त

में नुक़्सान और घाटे में पड़ रहे हैं क़ियामत के दिन हक़ीक़त का पता चलेगा।

जिन्नात में से रसूल-

اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ इस से ज़ाहिर होता है कि जिन्नात में भी रसूल उन्हीं में से आते रहे हैं क्योंकि यह ख़िताब इन्सानों और जिन्नों दोनों जमाअ़तों को फ़रमाया है।

मुफ़स्सिरीन ने इस बारे में उ़ल्मा के मुख़्तलिफ़ क़ौल नक़्ल किये हैं। मुफ़स्सिर इब्ने कसीर ने भाग 2 पेज नं० 177 बह़वाला इब्ने जरीर और ज़िहाक़ से नक़्ल किया है कि जिन्नात में भी रसूल गुज़रे हैं और लिखा है उन की दलील यही आयते करीमा है।

जैसा कि सूरः रह़मान में फ़रमाया है يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ इस में مِنْهُمَا ज़मीर (इशारा) बह़रैन की तरफ़ है। ह़ालांकि मरजान (मोती) सिर्फ़ समुद्र से निकलते हैं। इस एतिबार से مِنْهُمَا के माने مِنْ جملتهما हुआ और رُسُلٌ مِّنْكُمْ से भी यह माने लिए जा सकते हैं।

'मुफ़स्सिर इब्ने कसीर' ने बाज़ उ़लमा से नक़्ल किया है कि जिन्नात में रसूल नहीं आये और इस क़ौल की 'मुजाहिद' और 'इब्ने जरीर' वग़ैरह और रुहुलू मआ़नी में बाज़ ह़ज़रात का यह क़ौल नक़्ल किया है कि رُسُلٌ مِّنْكُمْ में जो शब्द رُسُلٌ आया है यह लफ़्ज़ आ़म है यानी ह़क़ीक़ी रसूलों को और रसूलों के रसूलों को शामिल है।

मतलब यह है कि जो ह़ज़रात अल्लाह के रसूल थे, वह अपने तौर पर दीने ह़क़ को पहचानने के लिए जिन लोगों को उम्मतों के पास भेजा करते थे उनको भी रसूल फ़रमाया यानी जिन्नात की तरफ़ जिन्नात में से ह़ज़रात अम्बिया-ए-किराम (अ़लै०) जो दाअ़ी भेजा करते थे उन पर यह लफ़्ज़ रसूल होने के एतिबार से सादिक़ आता है, रसूल तो बनी आदम (आदम की औलाद) ही में से थे लेकिन रसूलों के भेजे हुए जिन्नात में से भी होते थे।

यह तो मालूम है कि बनी आदम से पहले इस दुनिया में जिन्नात रहते और बसते थे और यह भी मालूम है कि यह क़ौम भी हुक्म ख़ुदावन्दी को मानती है। जब इस क़ौम को भी हुक्म है तो तब्लीग़-ए-अह़काम के लिए अल्लाह तआ़ला उन के पास रसूल न भेजे हों, समझ में नहीं आता बल्कि وَاِنْ مِّنْ اُمَّةٍ اِلَّا خَلَا فِيْهَا نَذِيْرٌ *(सूरः फ़ातिर, 24)*

सब के लिए है कि बनी आदम से पहले जिन्नात में उन्हीं में से रसूल आते रहे होंगे।

बनी आदम के ज़मीन पर आबाद हो जाने के बाद जिन्नात को उन्हीं अम्बिया व रुसुल के ताबेअ़ फ़रमा दिया हो जो बनी आदम में से आते रहे तो यह मुम्किन तो है लेकिन सुबूत के लिए कोई दलील नहीं।

बहरह़ाल जो भी सूरत हो इस बात को सभी मानते हैं कि ह़ज़रत ख़ातिमुन्नबीय्यीन मुह़म्मद (सल्ल०) हैं और रहती दुनिया तक जिस तरह़ इन्सानों की तरफ़ मब्अ़ूस (भेजे गये) हैं उसी तरह जिन्नातों की तरफ़ भी मब्अ़ूस हैं।

सूरः अह़काफ़ के आख़िरी रुकूअ़ में ह़ज़रत ख़ातिमुन्नबीय्यीन (सल्ल०) की ख़िद्मत में जिन्नात की

ह़ाज़िरी का ज़िक्र फिर उन का अपनी क़ौम की तरफ़ जाना और उनको इस्लाम की दअ़वत देना أَجِيبُوا دَاعِيَ اللَّهِ وَآمِنُوا بِهِ मौजूद है।

सूरः रह़मान में जिन्नात से बार-बार ख़िताब होना और ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का जिन्नात को सूरः रह़मान सुनाना और उन की दअ़वत पर उन के रहने की जगह तशरीफ़ ले जाकर तअ़लीम देना और तब्लीग़ करना (जिस का अह़ादीस शरीफ़ में ज़िक्र है।) इस से यह बात वाज़ेह़ है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) जिन्नातों की तरफ़ भी मब्अूस (भेजे गये) हैं, जिन ह़ज़रात ने यह फ़रमाया है कि बनी आदम के दुनिया में आबाद हो जाने के बाद जिन्नात की हिदायत के लिए भी वही रसूल भेजे थे जो बनी आदम की तरफ़ भेजे गये उन के इस क़ौल की इस से ताईद होती है कि जब जिन्नात की जमाअ़त रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में ह़ाज़िरी देकर वापस हुई तो उन्होंने अपनी क़ौम से जो बातें कीं उन में यह भी था।

يَٰقَوْمَنَآ إِنَّا سَمِعْنَا كِتَٰبًا أُنزِلَ مِنۢ بَعْدِ مُوسَىٰ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ يَهْدِىٓ إِلَى ٱلْحَقِّ وَإِلَىٰ طَرِيقٍ مُّسْتَقِيمٍ

(सूरः अह़क़ाफ़-30)

“उन का अपनी क़ौम से यह कहना कि हम ने ऐसी किताब सुनी जो मूसा के बाद नाज़िल हुई जो इस किताब की तस्दीक़ करने वाली है जो उस के सामने है।”

इस से मालूम हुआ कि जिन्नात तौरात शरीफ़ पर अ़मल करते थे। अगर ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) के ज़माने में खुद उन में से कोई रसूल होता तो वह उसी की बात मानते और उस का ज़िक्र करते।

आयत नं० 136 से 144 तक

وَجَعَلُوا لِلّٰهِ مِمَّا ذَرَاَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْاَنْعَامِ نَصِيْبًا فَقَالُوْا هٰذَا لِلّٰهِ بِزَعْمِهِمْ وَهٰذَا لِشُرَكَآئِنَا ۚ فَمَا كَانَ لِشُرَكَآئِهِمْ فَلَا يَصِلُ اِلَى
اللّٰهِ ۚ وَمَا كَانَ لِلّٰهِ فَهُوَ يَصِلُ اِلٰى شُرَكَآئِهِمْ ۗ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ۝ وَكَذٰلِكَ زَيَّنَ لِكَثِيْرٍ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ قَتْلَ اَوْلَادِهِمْ شُرَكَآؤُهُمْ لِيُرْدُوْهُمْ
وَلِيَلْبِسُوْا عَلَيْهِمْ دِيْنَهُمْ ۚ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ ۝ وَقَالُوْا هٰذِهٖٓ اَنْعَامٌ وَّحَرْثٌ حِجْرٌ ۖ لَّا يَطْعَمُهَآ اِلَّا مَنْ
نَّشَآءُ بِزَعْمِهِمْ وَاَنْعَامٌ حُرِّمَتْ ظُهُوْرُهَا وَاَنْعَامٌ لَّا يَذْكُرُوْنَ اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا افْتِرَآءً عَلَيْهِ ۚ سَيَجْزِيْهِمْ بِمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝
وَقَالُوْا مَا فِيْ بُطُوْنِ هٰذِهِ الْاَنْعَامِ خَالِصَةٌ لِّذُكُوْرِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلٰٓى اَزْوَاجِنَا ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مَّيْتَةً فَهُمْ فِيْهِ شُرَكَآءُ ۚ سَيَجْزِيْهِمْ
وَصْفَهُمْ ۚ اِنَّهٗ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ۝ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ قَتَلُوْٓا اَوْلَادَهُمْ سَفَهًا بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّحَرَّمُوْا مَا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ افْتِرَآءً عَلَى اللّٰهِ ۚ قَدْ
ضَلُّوْا وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَ جَنّٰتٍ مَّعْرُوْشٰتٍ وَّغَيْرَ مَعْرُوْشٰتٍ وَّالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ مُخْتَلِفًا اُكُلُهٗ وَالزَّيْتُوْنَ
وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۚ كُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَاٰتُوْا حَقَّهٗ يَوْمَ حَصَادِهٖ ۖ وَلَا تُسْرِفُوْا ۚ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ۝
وَمِنَ الْاَنْعَامِ حَمُوْلَةً وَّفَرْشًا ۚ كُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ۚ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝ ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ۚ مِنَ
الضَّاْنِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْمَعْزِ اثْنَيْنِ ۗ قُلْ ءٰٓالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ۗ نَبِّئُوْنِيْ بِعِلْمٍ اِنْ
كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ وَمِنَ الْاِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَيْنِ ۗ قُلْ ءٰٓالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ
الْاُنْثَيَيْنِ ۖ اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ وَصّٰىكُمُ اللّٰهُ بِهٰذَا ۚ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا لِّيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَا
يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝

अनुवाद-

(136) और अल्लाह ही की पैदा की हुई खेती और चौपायों में से अल्लाह का भी एक हिस्सा मुक़र्रर कर लेते हैं, और अपने ख़याल से कहते हैं, ''यह तो अल्लाह का है और यह हमारे ठहराए हुए साझीदारों का है,'' फिर जो उनके साझीदारों का (हिस्सा) है, वह अल्लाह को नहीं पहुँचता; और जो अल्लाह का है, वह उनके साझीदारों को पहुँच जाता है, कितना बुरा है! जो वे फ़ैसला करते हैं; (137) इसी तरह बहुत-से मुश्रिकों को उनके साझीदारों ने उनकी औलादों को जान से मार डालना अच्छा कर दिखाया, ताकि उन्हें हलाकत में डाल दें और उनके लिए उनके दीन में संदेह पैदा कर दें, और अगर अल्लाह चाहता तो वे ऐसा न करते; तो उनको छोड़ दीजिए कि वह जानें! और उनका झूठ। (138) और वे कहते हैं, ''यह चौपाए और खेती मना है, इसे तो केवल वही खा सकता है; जिसे हम चाहें।'' ऐसा वे खुद अपने ख़याल से कहते हैं और कुछ चौपाए ऐसे हैं, जिनके पीठ पर चढ़ना ह़राम कर लिया है, और कुछ जानवर ऐसे हैं जिन पर अल्लाह का नाम नहीं लेते; यह सब उन्होंने अल्लाह पर झूठ गढ़ा है, जल्द ही वह उनके झूठ गढ़ने का बदला देगा; (139) और वे कहते हैं, ''जो कुछ इन जानवरों के पेट में है वह ख़ास हमारे मर्दों के लिए है और वह हमारी औ़रतों के लिए ह़राम है। लेकिन अगर वह मुर्दा हो तो वे सब उसमें शरीक हैं।'' बहुत जल्द ही 'वह' उन्हें उनके ऐसा कहने का बदला देगा, बेशक 'वह' बड़ा ह़िकमत वाला, ख़ूब जानने वाला है। (140) वे लोग घाटे में रहे जिन्होंने जानबूझ कर अपनी औलाद को क़त्ल किया, और अल्लाह पर झूठ गढ़ कर, उसकी दी हुई

रोज़ी को हराम ठहराया, हक़ीक़त में वे भटक गये, और वे सीधी राह पाने वाले नहीं। (141) और 'वही' है जिसने बाग़ पैदा किये (उसमें से), कुछ सहारे से चढ़ाए जाते हैं और कुछ नहीं चढ़ाए जाते और खजूर और खेती भी, जिनकी पैदावार तरह-तरह की होती है, और ज़ैतून और अनार, जो एक- दूसरे से मिलते जुलते हैं और नहीं भी; जब यह फलें तो उनका फल खाओ, और जब उनको काटो तो अल्लाह का हक़ भी अदा करो जो उसकी कटाई के दिन (वाजिब) होता है; और हद से आगे न बढ़ो, क्योंकि 'वह' हद से आगे बढ़ने वालों को पसंद नहीं करता। (142) और चौपायों में से कुछ बोझ उठाने वाले और कुछ धरती से लगे हुए जानवर पैदा किये, अल्लाह ने जो कुछ तुम्हें दिया है उसमें से खाओ और शैतान के क़दमों पर न चलो, वही तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है। (143) आठ नर-मादा पैदा किये- दो भेड़ की जाति से और दो बकरी की जाति से- कह दीजिए, ''क्या 'उसने' दोनों नर हराम किये हैं या दोनों मादा या उसको जो इन दोनों मादा के पेट में लिपट रहा हो? अगर सच्चे हो तो मुझे इल्म (ज्ञान) के आधार पर बताओ," (144) और दो ऊँटों की (जाति से) और दो गायों की (जाति से) कह दीजिए, ''क्या उसने दोनों नर हराम किये हैं या दोनों मादा को, या उसको, जो इन दोनों मादा के पेट में हो? या तुम मौजूद थे जब अल्लाह ने तुम्हें इसका हुक्म दिया था? फिर उस व्यक्ति से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा! जो लोगों को बहकाने के लिए, बिना इल्म के अल्लाह पर झूठ गढ़े? बेशक अल्लाह ज़ालिमों को राह नहीं दिखाता"।

आयत नं० 136 से 144 तक की व्याख्या

136 وَجَعَلُوا لِلّٰهِ مِمَّا ذَرَاَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْاَنْعَامِ نَصِيْبًا فَقَالُوْا هٰذَا لِلّٰهِ بِزَعْمِهِمْ وَهٰذَا لِشُرَكَآئِنَا ۚ فَمَا كَانَ
لِشُرَكَآئِهِمْ فَلَا يَصِلُ اِلَى اللّٰهِ ۚ وَمَا كَانَ لِلّٰهِ فَهُوَ يَصِلُ اِلٰى شُرَكَآئِهِمْ ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ۝

मुश्रिकीन का शिर्क

मुश्रिकीन जो तरह़-तरह़ से शिर्क करते हैं उसकी एक सूरत यह थी कि यह लोग अपने शरीक यानी अपने बातिल मअ़बूदों के नाम पर कुछ माल नामज़द (निश्चित) कर देते थे और बहुत सा माल उन पर भेंट के तौर पर चढ़ा देते, उन के नामों पर जानवरों के कान काट देते और उन के नाम से बहुत से जानवरों को आज़ाद छोड़ देते थे। मुश्रिकीन में अब भी ऐसे तरीक़े रायज हैं।

इस आयत में मालियाती सिल्सिले के एक शिर्क का ज़िक्र फ़रमाया और वह यह कि अल्लाह तआ़ला ने खेतियाँ और मवेशी पैदा फ़रमाए और यह सब उसी की मिल्कियत है। मुश्रिकीन कुछ ह़िस्सा अपने झूठे मअ़बूदों के लिए मुक़र्रर कर लेते थे और कहाँ ख़र्च करना है यह भी तय कर लेते थे।

अब होता यह था कि जो ह़िस्सा अल्लाह के लिए मुक़र्रर करते थे उस में से कुछ ह़िस्सा अगर मअ़बूदाने बातिल के ह़िस्से में मिल जाता तो उसे तो मिला ही रहने देते थे और अगर मअ़बूदाने बातिल वाले ह़िस्से में से कुछ ह़िस्सा इस ह़िस्से में मिल जाता जो अल्लाह के लिए मुक़र्रर किया था तो उसे अलग कर लेते थे। पहली गुमराही तो यह कि अल्लाह के अ़लावा दूसरे मअ़बूद बना लिये फिर दूसरी गुमराही

यह कि अल्लाह तआ़ला की पैदा की हुई चीज़ों में बहुत सा माल बातिल मअ़बूदों के लिए नामज़द कर दिया। फिर तीसरी गुमराही यह कि अपने बुतों और बातिल मअ़बूदों को ख़ालिक़ व मालिक के मुक़ाबिले में फ़ज़ीलत दे दी कि अल्लाह तआ़ला का हिस्सा अगर उन के हिस्से में मिल जाए तो मिला ही रहे और उन के लिए जो हिस्सा मुक़र्रर कर लिया था उस में से अगर अल्लाह तआ़ला के हिस्से में से कुछ मिल जाता तो तुरन्त अलग कर लेते थे।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ कि यह लोग बुरा फ़ैसला करते हैं।

137-140

وَكَذٰلِكَ زَيَّنَ لِكَثِيْرٍ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ قَتْلَ اَوْلَادِهِمْ شُرَكَآؤُهُمْ لِيُرْدُوْهُمْ وَلِيَلْبِسُوْا عَلَيْهِمْ دِيْنَهُمْ ۗ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا فَعَلُوْهُ
فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ ۝ وَقَالُوْا هٰذِهٖٓ اَنْعَامٌ وَّحَرْثٌ حِجْرٌ ۖ لَّا يَطْعَمُهَآ اِلَّا مَنْ نَّشَآءُ بِزَعْمِهِمْ وَاَنْعَامٌ حُرِّمَتْ
ظُهُوْرُهَا وَاَنْعَامٌ لَّا يَذْكُرُوْنَ اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا افْتِرَآءً عَلَيْهِ ۗ سَيَجْزِيْهِمْ بِمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝ وَقَالُوْا مَا فِيْ
بُطُوْنِ هٰذِهِ الْاَنْعَامِ خَالِصَةٌ لِّذُكُوْرِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلٰٓى اَزْوَاجِنَا ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مَّيْتَةً فَهُمْ فِيْهِ شُرَكَآءُ ۗ سَيَجْزِيْهِمْ
وَصْفَهُمْ ۗ اِنَّهٗ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ۝ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ قَتَلُوْٓا اَوْلَادَهُمْ سَفَهًاۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّحَرَّمُوْا مَا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ
افْتِرَآءً عَلَى اللّٰهِ ۗ قَدْ ضَلُّوْا وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ۝

मुश्रिकीन का अपनी औलाद को क़त्ल करना

इस दुनिया में रह़मतुल्लिल्आलमीन (सल्ल०) के तशरीफ़ लाने से पहले पूरी दुनिया जिहालत, ज़लालत, कुफ़्र व शिर्क से भरी हुई थी। अ़रब के लोग मुश्रिक और जाहिल भी थे, उन में जिहालत और जाहिलियत दोनों पूरी तरह़ थी तरह़-तरह़ की शिर्किया रस्में निकाल रखी थीं।

अव्वल तो यह कि बहुत से मुश्रिकीन को उन के शयातीन ने इस पर आमादा कर दिया था कि अपनी औलाद को क़त्ल करें और उन के इस अ़मल को उन की नज़र में सजाकर और बेहतर बना कर पेश किया। अहले अ़रब बेटियों को ज़िन्दा दफ़्न कर देते थे और रिज़्क़ की तंगी के डर से भी औलाद को क़त्ल कर देते थे, जैसा कि दो रुकूअ़ के बाद यह मज़मून आ रहा है।

शयातीन ने उन की नज़रों में औलाद को क़त्ल करने को ऐसा कर दिया था कि इस अ़मल में ज़रा भी झिझक महसूस नहीं करते थे और ज़रा सी भी मुहब्बत उन के दिल में नहीं आती थी जो औलाद को क़त्ल करने से रोक सके। शयातीन ने उन को इस काम पर डाला ताकि उन को बर्बाद करे इस में सब से बड़ी बर्बादी यह है कि आख़िरत के अ़ज़ाब के ह़क़्दार हुए और एक तरह से दुनियावी बर्बादी भी है क्योंकि जब औलाद ज़िन्दा न छोड़ी जाएगी तो आइन्दा नस्लें भी न चलेंगी। ज़ाहिर के एतिबार से इस में नस्ल इन्सानी की बर्बादी भी है।

لِيُرْدُوْهُمْ (ताकि उन्हें बर्बाद करें) के साथ وَلِيَلْبِسُوْا عَلَيْهِمْ دِيْنَهُمْ भी फ़रमायाः-

(ताकि वह उन पर उन के दीन को मिला दें।)

मुआलिमुत्तन्ज़ील भाग 2, पेज नं० 124 में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से इसकी तफ़्सीर करते हुए नक़्ल किया है कि-

ليدخلوا عليهم الشک فی دينهم و كانوا علیٰ دين اسماعيل عليه السلام فرجعوا عنه بلبس الشياطين ۔

मतलब यह है कि उन को शयातीन ने उन के दीन के बारे में शक में डाल दिया यह लोग हज़रत इस्माईल (अ़लै०) के दीन पर थे, शयातीन के बहकाने की वजह से इस दीन को छोड़ बैठे। इस के बाद मुशिरकीने अ़रब की एक और मुशिरकाना ह़रकत का ज़िक्र फ़रमाया और वह यह कि उन्होंने मवेशियों और खेतियों के बारे में पाबन्दियाँ लगा रखीं थीं, वह अक़ीदा रखते थे कि फ़लाँ-फ़लाँ मवेशी और फ़लाँ खेती का इस्तेमाल हर शख़्स के लिये जायज़ नहीं, वह कहते थे कि उन को सिर्फ़ वही लोग खा सकते हैं जिन को हम चाहें।

अपने ख़याल के अनुसार उन्होंने ह़राम ह़लाल के कुछ क़ानून बना रखे थे। अल्लाह तआ़ला ने जो चीज़ सब के लिए ह़लाल फ़रमाई उसको बाज़ के लिए ह़राम क़रार देना ज़ुल्म और ज़्यादती है और अल्लाह तआ़ला के क़ानून में दख़ल देना है इसलिए उस की बुराई बयान फ़रमाई। मुशिरकीने अ़रब कुछ जानवरों को सवारी के लिए इस्तेमाल करना ह़राम क़रार दे रखा था जिस की कुछ तफ़्सीर इस आयते करीमा مَا جَعَلَ اللّٰهُ مِنْ بَحِيْرَةٍ وَّلَا سَآئِبَةٍ وَّلَا وَصِيْلَةٍ *(सूरः माइदा-103)* में गुज़र चुकी है। यह लोग उन जानवरों को बुतों के नाम पर छोड़ देते थे और उन पर सवार होने और उस पर सामान ढ़ोने को ह़राम समझते थे इसी को وَاَنْعَامٌ حُرِّمَتْ ظُهُوْرُهَا में बयान फ़रमाया।

وَاَنْعَامٌ لَّا يَذْكُرُوْنَ اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا افْتِرَآءً عَلَيْهِ ؕ फिर उन की सज़ा के बारे में इर्शाद फ़रमाया-

سَيَجْزِيْهِمْ بِمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ

(अल्लाह तआ़ला उन को अ़नक़रीब सज़ा देगा इस वजह से कि वह अल्लाह तआ़ला पर झूठ बाँधते हैं।)

मुशिरकीने अ़रब ने जो ह़राम ह़लाल के क़ानून बना रखे थे उन में यह भी था कि बाज़ जानवरों के पेटों में जो ह़मल होता था उस के बारे में कहते थे कि यह केवल हमारे मर्दों के लिए है और हमारी औ़रतों पर ह़राम है। यह उस सूरत में है कि जब बच्चा ज़िन्दा पैदा हो जाएगा और अगर बच्चा मुर्दा पैदा हो जाता है तो कहते कि इसको मर्द व औ़रत सब खा सकते हैं।

यानी दोनों लोगों को इस के खाने की इजाज़त है। इस ह़लाल और ह़राम के क़ानून को भी उन्होंने खुद ही बना रखा था जिसे इस आयत وَقَالُوْا مَا فِيْ بُطُوْنِ هٰذِهِ الْاَنْعَامِ خَالِصَةٌ لِّذُكُوْرِنَا में बयान फ़रमाया। उन के इन बातिल ख़यालात को रद्द करते हुए इर्शाद फ़रमाया سَيَجْزِيْهِمْ وَصْفَهُمْ ؕ اِنَّهٗ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ (वह उन्हें जल्द ही इस बात की सज़ा देगा जो वह बयान करते हैं बेशक वह हिक्मत वाला, इ़ल्म वाला है।)

आख़िर में फ़रमाया قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ قَتَلُوْٓا اَوْلَادَهُمْ سَفَهًا بِغَيْرِ عِلْمٍ

(बेशक ख़सारे में पड़ गये जिन्होंने अपनी औलाद को बेवकूफ़ी से बग़ैर इ़ल्म के क़त्ल किया)

وَحَرَّمُوا مَا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ افْتِرَآءً عَلَى اللّٰهِ

(और उन्हें अल्लाह ने जो रिज़्क़ अ़ता फ़रमाया अल्लाह पर बोहतान बाँधते हुए उसे ह़राम क़रार दिया।)

قَدْ ضَلُّوا وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ (बेशक यह लोग गुमराह हुए और हिदायत पर चलने वाले नहीं है।)

ऊपर जो मुश्रिकीन का ज़िक्र हुआ, अब आख़िर में उन की गुमराही और आख़िरत की सज़ा का ज़िक्र फ़रमा दिया कि यह लोग बिल्कुल ख़सारे में पड़ गये, दुनिया में गुमराह हुए और आख़िरत के अ़ज़ाब के ह़क़्दार हुए उन का कोई ह़क़ नहीं था कि अपनी औलाद को क़त्ल करें। यानी यह बाप थे लेकिन अल्लाह तआ़ला सब का ख़ालिक़ व मालिक है क़त्ल करने वाले और मक़्तूल बच्चे सब उसी की मिल्कियत हैं, क़ातिलीन ने अल्लाह की मख़्लूक़ को जानबूझकर क़त्ल करने का पाप अपने ज़िम्मे लिया।

इन्होंने अल्लाह के दिये हुए रिज़्क़ को ह़राम क़रार दिया और इस ह़राम होने को अल्लाह तआ़ला की तरफ़ कर दिया। यह सब आख़िरत के अ़ज़ाब में मुब्तिला होने की बातें हैं।

बन्दों को किसी चीज़ के ह़राम या ह़लाल क़रार देने का अख़्तियार नहीं जो लोग ऐसा करते हैं वह ख़ुदाई अख़्तियारात को अपने लिए इस्तेमाल करना चाहते हैं इसलिए उसे मुश्रिकाना कामों में शुमार फ़रमाया। क़ानूने ख़ुदावन्दी के ख़िलाफ़ जो लोग क़ानून पास करते हैं यानी अल्लाह की ह़राम की हुई चीज़ों को ह़लाल और ह़लाल की हुई चीज़ों को ह़राम वह भी मुजरिम हैं।

अहले बिद्अ़त-

मुश्रिकीन ने जो यह कहा था कि फ़लाँ चीज़ मर्दों के लिए ह़लाल है और औ़रतों के लिए ह़राम है। इस तरह़ का रस्म व रिवाज आज भी बहुत से अहले बिद्अ़त में पाया जाता है। उसी तरह़ की यह पाबन्दी है जो मुश्रिकीने अ़रब ने जानवरों के बारे में कर रखी थी, जो चीज़ अल्लाह तआ़ला ने सब के लिए ह़लाल की उस को बाज़ के लिए ह़राम क़रार देना अल्लाह तआ़ला के क़ानून की सख़्त ख़िलाफ़वर्ज़ी है।

141-142

وَهُوَ الَّذِيٓ اَنْشَاَ جَنّٰتٍ مَّعْرُوْشٰتٍ وَّغَيْرَ مَعْرُوْشٰتٍ وَّالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ مُخْتَلِفًا اُكُلُهٗ
وَالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۭ كُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَاٰتُوْا حَقَّهٗ
يَوْمَ حَصَادِهٖ ڮ وَلَا تُسْرِفُوْا ۭ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ۝ وَمِنَ الْاَنْعَامِ حَمُوْلَةً وَّفَرْشًا ۭ
كُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ۭ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝

अल्लाह तआ़ला के इन्आ़मात

इन आयात में अल्लाह तआ़ला ने अपने उन इन्आ़मात को बयान फ़रमाया जो अपनी मख़्लूक़ पर फलों और खेतियों के ज़रिये फ़रमाये हैं।

पहले तो यह फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने दो तरह़ के बाग़ पैदा फ़रमाये। कुछ बाग़ ऐसे हैं जो

"मअ़रुशात" हैं यानी उन की बेलें जो छप्परों पर चढ़ाई जाती हैं जैसे अंगूरों की और बाज़ सब्ज़ियों की बेलें और बहुत से बाग़ ऐसे हैं जिन की शाखें ऊपर नहीं चढ़ाई जातीं। इस दूसरी क़िस्म में कुछ दरख़्त ऐसे होते हैं जिन का तना होता है उस की बेल ही नहीं होती। जैसे- ज़ैतून, अनार, इन्जीर, खजूर, आम और जैसे-गेहूँ वग़ैरह जो अपने मुख़्तसर से तने पर खड़े रहते हैं

और कुछ चीज़ें ऐसी हैं जिन की बेलें तो होती हैं लेकिन उन्हें छप्परों पर चढ़ाया नहीं जाता। जैसे- कद्दू, ख़रबूज़ा वग़ैरह। अल्लाह तआ़ला ने किसी दरख़्त को तने वाला बनाया और किसी को बेल वाला इन सब में अल्लाह तआ़ला की हिक्मतें हैं।

وَاٰتُوْا حَقَّهٗ يَوْمَ حَصَادِهٖ ۖ وَلَا تُسْرِفُوْا

इब्ने जरीर ने अबू अल् आ़लिया से नक़्ल किया है कि लोग ज़कात के अ़लावा कुछ दिया करते और फिर बेज़ा ख़र्च किया करते थे, तो यह आयत नाज़िल हुई।

इब्ने जुरैज (रह०) से नक़्ल किया गया है कि यह आयत साबित बिन क़ैस बिन शमास के बारे में नाज़िल हुई, वह खजूरें शाम तक लोगों को खिलाते रहे, यहाँ तक कि कुछ बाक़ी न छोड़ा।

जो सब्ज़ियाँ बेल वाली हैं आ़मतौर से वह भारी-भारी होती हैं। जैसे तरबूज़, ख़रबूज़ा।

खेती के बारे में फ़रमाया-

وَالزَّرْعَ مُخْتَلِفًا اُكُلُهٗ कि अल्लाह तआ़ला ने खेती पैदा फ़रमाई जिस में तरह़-तरह़ के खाने की चीज़ें होती हैं। एक ही हवा पानी और एक ही ज़मीन से निकलने वाले ग़ल्लों में कई क़िस्में होती हैं फिर उन के फ़ायदे ख़ुसूसियात और ज़ायक़े भी मुख़्तलिफ़ हैं। साहिबे मुआ़लिमुत्तन्ज़ील भाग 2, पेज नं० 135 पर लिखते हैं। ثمره وطعمه منها الحلو وا لحامض والجيد والردی

यानी खेतियों के फल मुख़्तलिफ़ (विभिन्न) हैं कोई मीठा, कोई खट्टा कोई बढ़िया, कोई रद्दी। फिर फ़रमाया وَالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ यानी अल्लाह तआ़ला ने ज़ैतून और अनार पैदा फ़रमाये उन में से एक जिन्स के फल देखने में दूसरे की तरह़ होते हैं लेकिन मज़े में एक जैसे नहीं होते। रंग एक मगर मज़ा अलग होता है।

इस के बाद फ़रमाया-

كُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖۤ اِذَاۤ اَثْمَرَ कि इस के फलों में से खाओ जब वह फल लाए وَاٰتُوْا حَقَّهٗ يَوْمَ حَصَادِهٖ ۖ और कटाई के दिन उस का ह़क़ अदा करो।

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि इस ह़क़ से पैदावार की ज़कात मुराद है। जो बाज़ सूरतों में उ़श्र यानी 1/10 और बाज़ सूरतों में 1/20 वाजिब होती है और बाज़ ह़ज़रात ने फ़रमाया कि चूंकि यह आयते करीमा मक्की है और ज़कात मदीना में फ़र्ज़ हुई, इसलिए इस से ज़कात के अ़लावा मुह़ताजों पर ख़र्च करना है।

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ही से यह भी रिवायत है कि शुरु में खेती काटने के वक़्त

ग़ैर मुतअ़य्यन (अनिश्चित) मिक़्दार में ग़रीबों को देना वाजिब था, फिर यह ज़कात की फ़र्ज़ियत से मन्सूख़ (रद्द) हो गया।

और बाज़ हज़रात ने फ़रमाया कि यह आयत मदनी है (अगरचे सूरः मक्किया है।) इस सूरत में पैदावार की ज़कात मुराद लेना दुरुस्त है। **(रुहुल् मआ़नी)**

पैदावार की ज़कात के मसायल सूरः बक़रः की आयत नं० *(267)*
"يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَنفِقُوا مِن طَيِّبَاتِ مَا كَسَبْتُمْ وَمِمَّا أَخْرَجْنَا لَكُم مِّنَ الْأَرْضِ" की तफ़्सीर में देख लें।

फिर फ़रमाया وَلَا تُسْرِفُوا (और हद से आगे मत बढ़ो।)

बेशक हद से आगे बढ़ने वालों को अल्लाह पसन्द नहीं फ़रमाता। अ़रबी में 'इस्राफ़' हद से आगे बढ़ने को कहते हैं।

आ़मतौर से इस शब्द का अनुवाद फ़ुज़ूल ख़र्ची से किया जाता है और चूंकि इस में भी हद से आगे बढ़ जाना है इसलिए यह माने भी सही है।

फ़ुज़ूलख़र्ची के अ़लावा जिन आ़माल में हद से आगे बढ़ा जाए उन सब के बारे में शब्द इस्राफ़ इस्तेमाल होता है। अगर सारा ही माल फ़ुक़रा को दे दे और तंगदस्ती की ताब न हो तो यह भी इस्राफ़ में शुमार होता है।

'साहिबे रूहुल् मआ़नी' ने भाग 8 पेज नं० 38 पर 'हज़रत इब्ने जुरैज' से नक़्ल किया है कि यह आयत 'हज़रत साबित बिन क़ैस बिन शमास' (रज़ि०) के बारे में नाज़िल हुई उन्होंने एक दिन खजूरों के बाग़ के फल तोड़े और कहने लगे कि आज जो भी शख़्स आएगा उसे ज़रूर दे दूँगा, लोग आते रहे और यह देते रहे यहाँ तक कि शाम के वक़्त उन के पास कुछ भी न बचा। इस पर अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई।

'हज़रत अबू मुस्लिम' ने फ़रमाया कि आयत का मतलब यह है कि कटाई से पहले पैदावार में से मत खाओ क्योंकि इस से फ़ुक़रा के हक़ में कमी आएगी।

'हज़रत इब्ने शिहाब ज़ुहरी' ने आयत का मतलब यह बताया है कि पैदावार को गुनाहों में ख़र्च न करो। फिर उस इनुआम को ज़िक्र फ़रमाया जो इन्सानों पर मवेशियों के ज़रिये फ़रमाया। पहले तो यूँ फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने कुछ जानवर ऐसे पैदा फ़रमाये जो 'हमूला' हैं अर्थात सामान ढ़ोने का काम करते हैं और उन के क़द भी बड़े हैं।

और दूसरी क़िस्म के जानवर वह हैं जिन के क़द छोटे हैं यानी वह ज़मीन पर बिछे हुए हैं उन पर बोझ नहीं लादा जा सकता। जैसे- कि भेड़ बकरी और दुम्बा, इन छोटे क़िस्म के जानवरों पर सामान तो नहीं लादा जा सकता लेकिन उन के दूसरे फ़ायदे हैं उन का दूध पिया जा सकता है, गोश्त खाया जा सकता है और बड़े जानवरों की अपेक्षा उन का गोश्त बेहतर होता है और उन के बालों से ओढ़ने पहनने और बिछाने के कपड़े तैयार किये जाते हैं। फिर फ़रमाया-

كُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ (अल्लाह ने जो रिज़्क़ दिया है उसे खाओ) अर्थात अल्लाह के क़ानून में दख़ल

न दो। जो अल्लाह की शरीअ़त में ह़लाल है उसे ह़लाल रहने दो और जो ह़राम है उसे ह़राम रहने दो और अपने बाप दादों की तरह़ وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ {शैतान का इत्तिबअ़ (अनुसरण) न करो} जानवरों और खेतों के सिल्सिले में जो उन्होंने शिर्किया रस्में निकाल रखी थी उन्हें अख़्तियार मत करो। إِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۱۴۲﴾ बेशक शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है।

143-144

ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ۚ مِنَ الضَّاْنِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْمَعْزِ اثْنَيْنِ ؕ قُلْ ءٰٓالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ؕ نَبِّـُٔوْنِيْ بِعِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۱۴۳﴾ وَمِنَ الْاِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَيْنِ ؕ قُلْ ءٰٓالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ؕ اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ وَصّٰىكُمُ اللّٰهُ بِهٰذَا ۚ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا لِّيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۴۴﴾

जानवरों की आठ क़िस्में

अल्लाह तआ़ला ने उन जानवरों की आठ क़िस्में पैदा फ़रमाईं, जिन्हें तुम इस्तेमाल करते हो जिन का दूध पीते हो गोश्त खाते हो। उन में से दो क़िस्में भेड़ की पैदा फ़रमाईं यानी नर और मादा और दो क़िस्में बकरी की पैदा फ़रमाईं यानी नर और मादा और दो क़िस्में ऊँट की पैदा फ़रमाईं यानी नर और मादा और दो क़िस्में गाय की पैदा फ़रमाईं यानी नर और मादा।

अब उन जानवरों को ह़लाल व हराम तुम ने अपने पास से कर लिया तुम ने कोई शर्त और क़ैद लगा कर नरों को ह़राम क़रार दे दिया। कभी उन के जोड़ों यानी मादा जानवरों को ह़राम क़रार दे दिया। फिर अपनी इस ह़रकत को अल्लाह तआ़ला की तरफ़ जोड़ते हो और कहते हो कि यह ह़लाल और ह़राम अल्लाह की तरफ़ से हैं। बताओ अल्लाह ने उन के नरों को ह़राम क़रार दिया है या उन के मादों को या उस चीज़ को जिस पर मादों के रह़म मिले होते हैं यानी नर और मादा दोनों इस ह़राम की निस्बत तुम ने अल्लाह की तरफ़ कैसे की? अगर तुम सच्चे हो तो इसकी दलील लाओ क्या तुम उस वक़्त मौजूद थे, जब अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे बयान के मुताबिक़ उन को ह़राम क़रार दिया और तुम से फ़रमाया कि यह चीज़ें ह़राम हैं?

ज़ाहिर है कि न अल्लाह ने उन को ह़राम क़रार दिया और न तुम्हारे पास इस की दलील है और न अल्लाह तआ़ला ने तुम को बताया कि यह चीज़ तुम पर ह़राम है। तुम ने ख़ुद ही शर्तें और क़ैदें लगाकर बाज़ जानवरों को बाज़ सूरतों में बाज़ लोगों के लिए ह़राम क़रार दिया और साथ ही उसको अल्लाह की तरफ़ जोड़ दिया या उस से बढ़कर कौन ज़ालिम होगा जो अल्लाह पर झूठ बोले?

यह झूठा शख़्स बग़ैर इ़ल्म के लोगों को गुमराह करता है जो खुला हुआ ज़ुल्म है। अल्लाह तआ़ला ज़ुल्म करने वालों को हिदायत नहीं देता। यानी अल्लाह तआ़ला ऐसे लोगों को आख़िरत में जन्नत की राह नहीं दिखाएगा क्योंकि दुनिया में कुफ़्र अख़्तियार करके दोज़ख़ के ह़क़दार हो गये।

नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, "एक चरवाहा बकरियाँ चरा रहा था कि भेड़िया एक बकरी ले भागा। जब चरवाहे ने भेड़िये का पीछा किया तो भेड़िया उस की तरफ़ मुतवज्जेह होकर बोला, (क़ियामत के क़रीब) दरिन्दों से उन बकरियों की हिफ़ाज़त कौन करेगा जब कि उस दिन मेरे सिवा कोई चरवाहा न होगा? और {नबी (सल्ल०) ने भी यह फ़रमाया} एक शख़्स एक बैल पर सामान लादकर हांक कर ले जा रहा था। बैल ने उस की तरफ़ मुड़ कर देखा और कहा, मुझे इस (बार बिरादरी) के लिए पैदा नहीं किया गया, मुझे तो खेती बाड़ी के लिए पैदा किया गया है।" लोग (इस बात पर हैरत से) बोले **सुब्हानल्लाह** (जानवर भी बातें करते हैं) नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, "इस पर मैं ईमान लाया और अबू बक्र व उ़मर भी इस पर ईमान लाए।" **(सहीह़ बुख़ारी, फ़ज़ायले अस्ह़ाबिन्नबीय्यीन, बाब 5, ह़दीस 3663)**

मुस्नद अह़मद में ह़ज़रत अबू सईद ख़ुद्री (रज़ि०) बयान करते हैं, "अ़हदे नबवी में भी मदीने के क़रीब में एक भेड़िये ने एक चरवाहे से बातचीत की।" **(मुस्नद अह़मद 83,84/3)**

आयत नं० 145 से 150 तक

قُلْ لَّآ اَجِدُ فِیْ مَآ اُوْحِیَ اِلَیَّ مُحَرَّمًا عَلٰی طَاعِمٍ یَّطْعَمُهٗۤ اِلَّاۤ اَنْ یَّكُوْنَ مَیْتَةً اَوْ دَمًا مَّسْفُوْحًا اَوْ لَحْمَ خِنْزِیْرٍ فَاِنَّهٗ رِجْسٌ اَوْ فِسْقًا
اُهِلَّ لِغَیْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَیْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ رَبَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ۝ وَعَلَی الَّذِیْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِیْ ظُفُرٍ ۚ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ
حَرَّمْنَا عَلَیْهِمْ شُحُوْمَهُمَاۤ اِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُوْرُهُمَاۤ اَوِ الْحَوَایَاۤ اَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ؕ ذٰلِكَ جَزَیْنٰهُمْ بِبَغْیِهِمْ ۖ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ۝ فَاِنْ كَذَّبُوْكَ
فَقُلْ رَّبُّكُمْ ذُوْ رَحْمَةٍ وَّاسِعَةٍ ۚ وَلَا یُرَدُّ بَاْسُهٗ عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِیْنَ ۝ سَیَقُوْلُ الَّذِیْنَ اَشْرَكُوْا لَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَاۤ اَشْرَكْنَا
وَلَاۤ اٰبَآؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ شَیْءٍ ؕ كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ حَتّٰی ذَاقُوْا بَاْسَنَا ؕ قُلْ هَلْ عِنْدَكُمْ مِّنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوْهُ لَنَا ؕ
اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ اَنْتُمْ اِلَّا تَخْرُصُوْنَ ۝ قُلْ فَلِلّٰهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ ۚ فَلَوْ شَآءَ لَهَدٰىكُمْ اَجْمَعِیْنَ ۝ قُلْ هَلُمَّ شُهَدَآءَكُمُ
الَّذِیْنَ یَشْهَدُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ هٰذَا ۚ فَاِنْ شَهِدُوْا فَلَا تَشْهَدْ مَعَهُمْ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَ الَّذِیْنَ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَا وَالَّذِیْنَ لَا یُؤْمِنُوْنَ
بِالْاٰخِرَةِ وَهُمْ بِرَبِّهِمْ یَعْدِلُوْنَ ۝

अनुवाद-

(145) कह दीजिए, ''जो हुक्म मुझ पर नाज़िल हुआ है, मैं उनमें कोई चीज़ नहीं पाता कि किसी खाने वाले पर उसका कोई खाना ह़राम किया गया हो, सिवाय इसके कि वह मुर्दार हो, या बहता हुआ खून हो, या सुअ़र का गोश्त हो, कि यह सब नापाक हैं; या कोई गुनाह की चीज़ हो या उस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम लिया गया हो; और अगर कोई मजबूर हो जाए, लेकिन न तो नाफ़रमानी करे और न ह़द से बाहर निकल जाए, तो तुम्हारा रब माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।'' (146) और यहूदियों पर 'हमने' सब नाखून वाले जानवर ह़राम कर दिये थे, और गायों और बकरियों में से उनकी चरबी ह़राम कर दी थी, सिवाय उस (चर्बी) के जो उनकी पीठ पर लगी हो, या ओझड़ी में हो या हड्डी में मिली हो; यह सज़ा 'हमने' उनको उनकी शरारत की वजह से दी थी, और 'हम' तो सच कहने वाले हैं। (147) और अगर यह लोग आप को झुठलाएँ तो कह दीजिए कि तुम्हारा रब वसीअ़(व्यापक) रह़मत वाला है, मगर उसका अ़ज़ाब गुनहगार लोगों से नहीं टलेगा।'' (148) मुश्रिक (बहुदेववादी) कहेंगे, ''अगर अल्लाह चाहता तो न हम साझीदार ठहराते और न हमारे बाप-दादा ही; और न हम किसी चीज़ को ह़राम ठहराते,'' ऐसे ही उनसे पहले के लोगों ने झुठलाया था, यहाँ तक कि हमारे अ़ज़ाब का मज़ा चख रहे हैं; कह दीजिए, ''क्या तुम्हारे पास कोई इल्म (सनद) है कि उसे हमारे सामने पेश करो?''तुम लोग गुमान पर चलते हो और अटकल से काम लेते हो; (149) कह दीजिए, ''पूरी हुज्जत (तर्क) तो अल्लाह ही की है, अगर 'वह' चाहता तो तुम सब को सीधा रास्ता दिखा देता।'' (150) कह दीजिए, ''अपने उन गवाहों को लाओ, जो इसकी गवाही दें कि अल्लाह ने इसे ह़राम किया है।'' फिर अगर वे गवाही दें तो तुम उनके साथ गवाही न देना, और उन लोगों की इच्छाओं के पीछे न चलना जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और जो आख़िरत को नहीं मानते और (वे दूसरों को) अपने रब के बराबर ठहराते हैं।

आयत नं० 145 से 150 तक की व्याख्या

145-147

قُلْ لَّآ اَجِدُ فِيْ مَآ اُوْحِيَ اِلَيَّ مُحَرَّمًا عَلٰى طَاعِمٍ يَّطْعَمُهٗٓ اِلَّآ اَنْ يَّكُوْنَ مَيْتَةً اَوْ دَمًا مَّسْفُوْحًا اَوْ
لَحْمَ خِنْزِيْرٍ فَاِنَّهٗ رِجْسٌ اَوْ فِسْقًا اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ رَبَّكَ غَفُوْرٌ
رَّحِيْمٌ ۝ وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِيْ ظُفُرٍ ۚ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ شُحُوْمَهُمَآ
اِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُوْرُهُمَآ اَوِ الْحَوَايَآ اَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ۗ ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ بِبَغْيِهِمْ ۖ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ۝
فَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ رَّبُّكُمْ ذُوْ رَحْمَةٍ وَّاسِعَةٍ ۚ وَلَا يُرَدُّ بَاْسُهٗ عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ ۝

ह़राम चीज़ों का बयान

मुश्रिकीने अ़रब ने जानवरों के खाने-पीने और इस्तेमाल करने में जो अपनी तरफ़ से ह़राम व हलाल का मामला कर लिया था जिस का ऊपर की आयत में ज़िक्र हो चुका है, उस का इन्कार करते हुए इर्शाद फ़रमाया कि मेरे रब ने मेरी तरफ़ जो वह्य भेजी है मैं उस में सिर्फ़ इन चीज़ों को ह़राम पाता हूँ।

1- मुरदार (जो जानवर अपनी मौत से मर जाए।)

2- दम-ए-मस्फ़ूहा यानी बहने वाला ख़ून (यह बात इसलिए कही कि ज़ब्ह़ शरई के बाद जो ख़ून गोश्त में लगा रह जाता है उस का खाना जायज़ है। तिल्ली और जिगर का खाना जायज़ है, यह दोनों जबकि ख़ून ही हैं लेकिन जमे होने की वजह से बहता हुआ ख़ून नहीं रहे।)

3- खिन्ज़ीर का गोश्त, इस के बारे में فَاِنَّهٗ رِجْسٌ फ़रमाया कि वह पूरा का पूरा नापाक है, उस का गोश्त चर्बी हड्डी बाल कोई चीज़ भी पाक नहीं है। क्योंकि यह नजिसुल्ऐ़न (पूरा का पूरा नापाक) है। इसलिए ज़ब्ह़ कर देने से भी उस की कोई चीज़ पाक न होगी। जैसे- दूसरे जानवरों के कि अगर वह बिला ज़ब्ह़ के मर जाएँ तब भी उन के बाल और हड्डी पाक हैं।

4- वह जानवर जिस पर ज़ब्ह़ करते वक़्त ग़ैरुल्लाह का नाम लिया जाए। चार चीज़ों की ह़ुरमत बयान फ़रमा कर सख़्त मजबूरी की ह़ालत में ज़रा सा खा लेने की इजाज़त दे दी जिस से दो चार लुक़्मे खाकर वक़्ती तौर पर जान बच जाए और वहाँ से उठ कर ह़लाल खाने की जगह तक पहुँच सके।

इन चीज़ों की व्याख्या सूरः बक़रः اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ *(आयत नं० 173)* और सूरः माइदा की حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ *(आयत नं० 3)* में गुज़र चुकी है।

इस आयत में यह बताया गया है कि किसी चीज़ के ह़राम व ह़लाल का फ़ैसला सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही की तरफ़ से हो सकता है और वह्य सिर्फ़ अम्बिया-ए-किराम (अ़लै०) पर ही आई थी। ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) आख़िरी नबी थे, इसलिए उस वक़्त तक जो अल्लाह की वह्य आई थी उस के मुताबिक़ सिर्फ़ यह चीज़ें ह़राम थीं, बाद में दूसरी चीज़ों के ह़राम होने के बारे में भी नाज़िल हुई जो सूरः माइदा

में ज़िक्र हुई हैं।

हराम और हलाल का उसूल सूरः अअ्राफ़ *(आयत नं० 157)* में يُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبٰتِ وَ يُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبٰٓئِثَ फ़रमा कर बयान फ़रमा दिया है। इसलिए कोई शख़्स इस आयत से यह दलील नहीं ले सकता कि इन चीज़ों के अलावा बाक़ी सब हलाल हैं क्योंकि यह उस वक़्त की बात है, मगर क़ुर्आन मजीद तो बराबर नाज़िल हो रहा था और इस आयत के बाद भी बहुत से अहकाम नाज़िल हुए।

यहूदियों पर हराम चीज़ें-

यहाँ बाज़ उन चीज़ों का ज़िक्र है जो यहूदियों पर हराम कर दी गई थीं मगर उम्मते मुहम्मदिया के लिए हलाल हैं। उन हराम चीज़ों में पहले तो वह जानवर थे जो नाख़ून वाले हैं। नाख़ून वाले जानवरों से वह जानवर मुराद हैं जिन का पंजा या खुर फटा हुआ न हो। जैसे- ऊँट और शुतुरमुर्ग, मुरग़ाबी और बत्तख़।

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) हज़रत सईद (रज़ि०) बिन जुबैर, हज़रत क़तादा (रह०) और हज़रत मुजाहिद ने इसकी यही तफ़्सीर फ़रमाई है। ऊँट के बारे में गुज़र चुका है कि मिल्लते इब्राहीमिया में यह हलाल था, फिर हज़रत इस्राईल यानी हज़रत याक़ूब (अलै०) ने इसको अपने नफ़्स पर हराम क़रार दे दिया था। फिर रिवायती तौर पर उन की औलाद में ऊँट की हुरमत चली आई।

फिर शरीअ़ते मूसा में भी बनी इस्राईल पर ऊँट का गोश्त और दूध हराम रहा।

قال النسفی فی المدارک فلما نزلت التورٰة علی موسیٰ حرم علیهم فیها لحوم الابل والبانها لتحریم اسرائیل ذالک علی نفسه (راجع تفسری قوله تعالیٰ كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حِلًّا لِّبَنِىٓ اِسْرَآءِيْلَ الآية)

फिर फ़रमाया وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ شُحُوْمَهُمَآ اِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُوْرُهُمَآ اَوِ الْحَوَايَآ اَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ गायों और बकरियों का गोश्त तो यहूदियों के लिए हलाल था, अल्बत्ता उन की चर्बियाँ हलाल न थीं सिर्फ़ वह चर्बी हलाल थी जो उन की पीठ पर हो या उन की आंतो में लगी हुई हो या जो हड्डी के साथ मिली हुई हो।

फिर फ़रमाया جَزَيْنٰهُمْ بِبَغْيِهِمْ कि हम ने उनको यह सज़ा उनके ज़ुल्म व ज़्यादती की वजह से दी। وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ और बिलाशुब्हा हम सच्चे हैं।

यह मज़मून सूरः निसा *(आयत नं० 160)* में भी गुज़र चुका है। वहाँ इर्शाद है-

فَبِظُلْمٍ مِّنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ طَيِّبٰتٍ اُحِلَّتْ لَهُمْ

(सो हम ने यहूदियों के ज़ुल्म की वजह से उन पर हराम कर दीं पाकीज़ा चीज़ें, जो उन के लिए हलाल थीं।)

इस से मालूम हुआ कि अल्लाह तआ़ला की बग़ावत करना और गुनाह करके अपनी जानों पर ज़ुल्म करना पाकीज़ा चीज़ों से महरूमी का ज़रिया है। यहूदियों पर तो शरअ़ी तौर पर पाकीज़ा चीज़ें हराम कर दी थीं, लेकिन ख़ातिमुन्नबीय्यीन (सल्ल०) पर नुबूव्वत ख़त्म हो जाने की वजह से अब शरअ़ी तौर पर

कोई हलाल चीज़ हराम नहीं हो सकती।

فَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقُلْ رَّبُّكُمْ ذُو رَحْمَةٍ وَّاسِعَةٍ ۚ

यानी अगर वह आप को झुठलाएँ बहाना बनाएँ कि अगर आप सच्चे हैं और हम मुजरिम हैं तो हम पर अल्लाह का अ़ज़ाब क्यों नहीं आता, तो आप उन को जवाब दे दें कि तुम्हारा रब वसीअ़ रह़मत वाला है और अपनी हिक्मत के मुताबिक़ जब चाहता है अ़ज़ाब भेजता है, उस की तरफ़ से सज़ा देने में ढ़ील दिया जाना इस बात की दलील नहीं कि तुम्हारी पकड़ न होगी। जब उस का अ़ज़ाब आता है तो वह टाला नहीं जा सकता, मुजरिमीन जब अ़ज़ाब में गिरफ़्तार होते हैं तो उन का कोई मदद्गार नहीं होता।

148-150

سَيَقُولُ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَشْرَكْنَا وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِن شَيْءٍ ۚ كَذَٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ
حَتَّىٰ ذَاقُوا بَأْسَنَا ۗ قُلْ هَلْ عِندَكُم مِّنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوهُ لَنَا ۖ إِن تَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ أَنتُمْ إِلَّا تَخْرُصُونَ ۝ قُلْ فَلِلَّهِ
الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ ۖ فَلَوْ شَاءَ لَهَدَاكُمْ أَجْمَعِينَ ۝ قُلْ هَلُمَّ شُهَدَاءَكُمُ الَّذِينَ يَشْهَدُونَ أَنَّ اللَّهَ حَرَّمَ هَٰذَا ۖ فَإِن شَهِدُوا
فَلَا تَشْهَدْ مَعَهُمْ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَهُم بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ ۝

इन्सान गुनाह भी करता है और उसके साथ हुज्जत बाज़ी भी और वह चाहता है कि अपनी राय और अपनी तबीअ़त के मुताबिक़ काम भी करता रहूँ, और जो शख़्स गुनाहगारी पर तम्बीह करे जवाब देकर उस का मुँह भी बन्द कर दूँ और इस के लिए तरह़-तरह़ की दलीलें लाता हैं और हुज्जते करता है। मुश्रिकीन को जब बताया गया कि तुम ख़ालिक़ व मालिक के साथ शिर्क करते हो, ह़ालांकि वही ख़ालिक व मालिक और राज़िक़ है और तुम अपनी तरफ़ से अल्लाह तआ़ला की मख़्लूक़ में ह़राम व ह़लाल की रस्में जारी करते हो और ह़लाल चीज़ों को ह़राम क़रार देते हो तो इस के जवाब में मुश्रिकीन ने यह हुज्जत निकाली कि जो कुछ होता है वह सब अल्लाह तआ़ला की मर्ज़ी से होता है। हम ने और बाप दादों ने जो शिर्क किया और जो ह़लाल चीज़ों को ह़राम क़रार दिया यह सब अल्लाह तआ़ला की मर्ज़ी और इरादे से हुआ, अगर वह हमारे इस अ़क़ीदे व अ़मल से नाराज़ होता तो हमें क्यों करने देता।

उन की दलील का ख़ुलासा यह है कि अगर अल्लाह तआ़ला हमारे इन अ़क़ीदों और आ़माल से नाराज़ है तो हमें इन कामों को करने ही न देता उस के जवाब में फ़रमाया।

كَذَٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ حَتَّىٰ ذَاقُوا بَأْسَنَا ۗ जिस का मतलब यह है कि जिस तरह़ उन लोगों ने हुज्जत निकाली और रसूलों को झुठलाया, यहाँ तक कि हमारा अ़ज़ाब चख लिया उसी तरह़ यह लोग भी झुठला रहे हैं इन को भी अ़ज़ाब का इन्तिज़ार करना चाहिए।

उन लोगों ने जो अपने अ़मल और अ़क़ीदे के बारे में दलील दी है कि अल्लाह राज़ी न होता तो हमें शिर्क पर क्यों क़ायम रहने देता उस के जवाब में फ़रमायाः-

قُلْ هَلْ عِنْدَكُمْ مِّنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوْهُ لَنَا ؕ

(आप फ़रमा दीजिए क्या तुम्हारे पास कोई इल्म है जिसे तुम हमारे लिए ज़ाहिर करो।)

मतलब यह है कि तुम्हारे पास कोई इल्म नहीं है जिस पर तुम्हारे हुज्जत की बुनियाद हो। اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ तुम सिर्फ़ गुमान के पीछे चलते हो وَاِنْ اَنْتُمْ اِلَّا تَخْرُصُوْنَ और इस के सिवा कोई बात नहीं कि तुम अट्कल से बात करते हो।

यह जो तुम ने दलील दी है कि अल्लाह राज़ी न होता तो हमें शिर्क पर क्यों क़ायम रहने देता और हम अपनी तरफ़ से चीज़ों को क्यों हराम क़रार दे देते। यह दलील जाहिलाना है यह तुम्हारा एक ख़याल है। अल्लाह तआला ने इन्सानों को दुनिया में इम्तिहान के लिए भेजा है और इम्तिहान उसी सूरत में हो सकता है जबकि अमल करने वालों को हुक्म पहुँचा दिये जाएँ उनको अमल करने का अख़्तियार भी हो और न करने का भी। अगर इन्सान को मजबूर कर दिया जाता कि फ़लाँ अमल ज़रूर करें और अमल करने या न करने का अख़्तियार न होता बल्कि अमल करने पर मजबूर होता तो इम्तिहान कैसे होता?

अल्लाह तआला की हिक्मत का तक़ाज़ा हुआ कि उस ने अक़्ल और होश दे दिया, अमल करने की कुव्वत दे दी और करने या न करने का अख़्तियार भी दे दिया। अब जो शख़्स शिर्क करता है और अपने पास से हलाल व हराम करता है वह अपने अख़्तियार करने की वजह से पकड़ा जाएगा। अल्लाह तो राज़ी उन आमाल से है जिन के बारे में अपनी किताबों और रसूलों के ज़रिये साफ़-साफ़ बता दिया हो कि यह अक़ायद और आमाल मेरी रज़ा के हैं। जो अक़ायद ग़लत हैं और जो काम मना हैं उन से राज़ी नहीं है।

हुज्जतुल् बालिग़ा–

قُلْ فَلِلّٰهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ ۚ

(आप फ़रमा दीजिए! कि अल्लाह ही के लिए हुज्जतुल् बालिग़ा है।) यानी अल्लाह ही की हुज्जत पूरी है और तुम्हारी कट् हुज्जती ग़लत है।

فَلَوْ شَآءَ لَهَدٰىكُمْ اَجْمَعِيْنَ (अगर वह चाहता तो तुम सब को हिदायत पर ले आता) चूंकि हक़ (सत्य) और बातिल (असत्य) दोनों के वजूद में आने और आपस में एक दूसरे के मुक़ाबिले चलने में अल्लाह तआला की बड़ी हिक्मतें हैं, इसलिए उस ने माँगी हुई हिदायत से सब को नहीं नवाज़ा, अल्बत्ता हक़ की राह बताने वाली हिदायत सब के लिए आम है।

قُلْ هَلُمَّ شُهَدَآءَكُمُ الَّذِيْنَ يَشْهَدُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ هٰذَا ۚ

(आप फ़रमा दीजिए कि अपने गवाहों को ले आओ जिन का तुम इत्तिबअ़ (पैरवी) करते हो और जिन की बातों पर चलते हो और उन से कहो कि इस बात की गवाही दें कि यह चीज़ें जो तुम ने हराम क़रार दे रखी हैं उन को अल्लाह तआला ने हराम क़रार दिया है, लेकिन वह गवाही नहीं दे सकते।)

فَإِنْ شَهِدُوا فَلَا تَشْهَدْ مَعَهُمْ सो बिल् फ़र्ज़ अगर यह लोग गवाही दें तो आप उन के साथ गवाही न दीजिए। यानी उन की तस्दीक़ न कीजिए क्योंकि उन की गवाही केवल झूठ होगी।

وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَهُمْ بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ

(आप उन लोगों के ख़्वाहिश का इत्तिबअ़ न करें जिन्होंने हमारी आयात को झुठलाया और जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते और अपने रब के साथ बराबर दूसरों को ठहराते हैं।)

इस में अपनी ख़्वाहिशों का इत्तिबअ़ करने वालों का यानी काफ़िरों और मुश्रिकों के इत्तिबअ़ (अनुसरण) से मना फ़रमाया।

आयत नं० 151 से 165 तक

قُلْ تَعَالَوْا أَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ أَلَّا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ مِنْ إِمْلَاقٍ نَحْنُ نَرْزُقُكُمْ
وَإِيَّاهُمْ وَلَا تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ ذَٰلِكُمْ وَصَّاكُمْ بِهِ لَعَلَّكُمْ
تَعْقِلُونَ ۝ وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ حَتَّىٰ يَبْلُغَ أَشُدَّهُ وَأَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيزَانَ بِالْقِسْطِ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا
إِلَّا وُسْعَهَا وَإِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ وَبِعَهْدِ اللَّهِ أَوْفُوا ذَٰلِكُمْ وَصَّاكُمْ بِهِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۝ وَأَنَّ هَٰذَا
صِرَاطِي مُسْتَقِيمًا فَاتَّبِعُوهُ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيلِهِ ذَٰلِكُمْ وَصَّاكُمْ بِهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ۝ ثُمَّ آتَيْنَا مُوسَى
الْكِتَابَ تَمَامًا عَلَى الَّذِي أَحْسَنَ وَتَفْصِيلًا لِكُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً لَعَلَّهُمْ بِلِقَاءِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ ۝ وَهَٰذَا كِتَابٌ أَنْزَلْنَاهُ مُبَارَكٌ
فَاتَّبِعُوهُ وَاتَّقُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝ أَنْ تَقُولُوا إِنَّمَا أُنْزِلَ الْكِتَابُ عَلَىٰ طَائِفَتَيْنِ مِنْ قَبْلِنَا وَإِنْ كُنَّا عَنْ دِرَاسَتِهِمْ لَغَافِلِينَ ۝
أَوْ تَقُولُوا لَوْ أَنَّا أُنْزِلَ عَلَيْنَا الْكِتَابُ لَكُنَّا أَهْدَىٰ مِنْهُمْ فَقَدْ جَاءَكُمْ بَيِّنَةٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ
كَذَّبَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَصَدَفَ عَنْهَا سَنَجْزِي الَّذِينَ يَصْدِفُونَ عَنْ آيَاتِنَا سُوءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا يَصْدِفُونَ ۝ هَلْ يَنْظُرُونَ
إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمُ الْمَلَائِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ رَبُّكَ أَوْ يَأْتِيَ بَعْضُ آيَاتِ رَبِّكَ يَوْمَ يَأْتِي بَعْضُ آيَاتِ رَبِّكَ لَا يَنْفَعُ نَفْسًا إِيمَانُهَا لَمْ تَكُنْ
آمَنَتْ مِنْ قَبْلُ أَوْ كَسَبَتْ فِي إِيمَانِهَا خَيْرًا قُلِ انْتَظِرُوا إِنَّا مُنْتَظِرُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ فَرَّقُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا شِيَعًا لَسْتَ
مِنْهُمْ فِي شَيْءٍ إِنَّمَا أَمْرُهُمْ إِلَى اللَّهِ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ۝ مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ عَشْرُ أَمْثَالِهَا وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ
فَلَا يُجْزَىٰ إِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝ قُلْ إِنَّنِي هَدَانِي رَبِّي إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ دِينًا قِيَمًا مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا وَمَا
كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝ قُلْ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ لَا شَرِيكَ لَهُ وَبِذَٰلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَا أَوَّلُ
الْمُسْلِمِينَ ۝ قُلْ أَغَيْرَ اللَّهِ أَبْغِي رَبًّا وَهُوَ رَبُّ كُلِّ شَيْءٍ وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ إِلَّا عَلَيْهَا وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ
ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ مَرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ۝ وَهُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلَائِفَ الْأَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَاتٍ لِيَبْلُوَكُمْ
فِي مَا آتَاكُمْ إِنَّ رَبَّكَ سَرِيعُ الْعِقَابِ وَإِنَّهُ لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

अनुवाद-

(151) कह दीजिए, "आओ, हम तुम्हें वह बातें पढ़ कर सुनाएँ जो चीज़ तुम्हारे रब ने तुम पर ह़राम
कर दी हैं यह कि किसी चीज़ को अल्लाह का साझीदार न बनाना और माँ-बाप से (अच्छा) सुलूक करते
रहना, और भुखमरी के डर से अपनी औलाद को क़त्ल न करना क्योंकि तुमको और उनको 'हम' ही रोज़ी
देते हैं, और बेह़याई के कामों के पास भी न जाना चाहे वह खुली हुई हों या छिपी हुई हो, और किसी जानदार
को जिसके क़त्ल को अल्लाह ने ह़राम कर दिया हो, क़त्ल न करना, मगर ह़क़ के लिए जिसे शरीअ़त हुक्म
दे; इन बातों की 'वह' तुम्हें ताकीद करता है, ताकि तुम समझो; (152) और यतीम के माल के पास भी
न जाना! मगर ऐसे तरीक़े से जो बेहतर हो, यहाँ तक कि वह जवानी को पहुँच जाए; और नाप और तौल
इन्साफ़ के साथ पूरा-पूरा किया करो; 'हम' किसी को तकलीफ़ नहीं देते मगर उसकी ताक़त के मुताबिक़;
और जब बात कहो तो इन्साफ़ की कहो चाहे मामला अपने नातेदार का ही क्यों न हो; और अल्लाह के अ़हद

(प्रतिज्ञा) को पूरा करो; यह बातें हैं, (जिसकी उसने) तुम्हें ताकीद की, ताकि तुम ध्यान रखो; (153) और यह कि मेरा सीधा रास्ता यही है, तो तुम इसी पर चलो और दूसरे रास्तों पर न चलो कि वे तुम्हें 'उसकी' राह से हटा कर इधर-उधर कर देंगे; यह वही बात है जिसकी उसने तुम्हें ताकीद की! ताकि तुम परहेज़गार बनो"।(154) फिर 'हमने' मूसा को किताब दी थी, ताकि उन लोगों पर जो भले हैं नेअ्मत पूरी कर दें, और हर चीज़ का बयान और हिदायत और रह़मत है, ताकि वे लोग अपने रब से मिलने पर ईमान लाएँ। (155) और यह किताब 'हमने' ही उतारी है, जो बरकत वाली है; तो तुम उसकी पैरवी करो और डरो, ताकि तुम पर मेहरबानी की जाए; (156) कि ऐसा न हो! कि तुम कहने लगो, "किताब तो केवल हमसे पहले दो गिरोहों पर उतारी गयी थी, और हम उनके पढ़ने-पढ़ाने से ग़ाफ़िल थे,"(157) या यह कहने लगो, "अगर हम पर किताब उतारी गयी होती! तो हम उन लोगों से बढ़ कर सीधी राह पर होते!" तो अब तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से दलील और रह़मत आ गई है; तो उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा! जो अल्लाह की आयतों को झुठलाए और उनसे (लोगों को) फेरे? जो लोग हमारी आयतों से रोकते हैं, उन्हें 'हम' इस रोकने की वजह से जल्द ही बुरी सज़ा देंगे।(158) क्या यह लोग इसी का इन्तिज़ार कर रहे हैं कि इनके पास फ़रिश्ते आ जाएँ या खुद तुम्हारा रब आ जाए, या तुम्हारे रब की कोई निशानी आ जाए? जिस दिन तुम्हारे रब की कोई निशानी आ जाएगी, फिर किसी व्यक्ति को उसका ईमान कुछ फ़ायदा न पहुँचाएगा जो व्यक्ति पहले ईमान न लाया हो या जिसने अपने ईमान में कोई भलाई न कमाई हो, कह दीजिए, "तुम भी इन्तिज़ार करो, हम भी इन्तिज़ार करते हैं।" (159) जिन लोगों ने अपने धर्म के टुकड़े-टुकड़े कर दिये और खुद गिरोहों में बँट गये, आपका उनसे कोई सम्बन्ध नहीं; उनका मामला तो बस अल्लाह के हवाले है, फिर 'वह' उन्हें बता देगा जो कुछ वे किया करते थे। (160) जो कोई नेकी के साथ आएगा उसे उसका दस गुना बदला मिलेगा, और जो बुराई के साथ आएगा उसे वैसी ही सज़ा मिलेगी, और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा। (161) कह दीजिए,"मेरे 'रब' ने मुझे सीधा रास्ता दिखा दिया, बिल्कुल ठीक धर्म इब्राहीम की मिल्लत का, जो सबसे कट कर एक (अल्लाह) का हो गया था और वह मुश्रिकों में से न था।" (162) कह दीजिए, "मेरी नमाज़ और मेरी क़ुर्बानी, मेरा जीना और मरना सब अल्लाह के लिए है, जो सारी दुनिया का रब है; (163) जिसका कोई साझीदार नहीं, और मुझे तो इसी का हुक्म मिला है, और मैं सबसे पहला मुस्लिम (आज्ञाकारी) हूँ"। (164) कह दीजिए, "क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई और रब ढूँढू, जबकि हर चीज़ का रब 'वही' है" और यह कि हर एक व्यक्ति जो कुछ (बुराई) कमाता है, उसका फल वही भोगेगा; और कोई व्यक्ति किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा, फिर तुम लोगों को अपने रब की ओर लौट कर जाना है, उस समय 'वह' तुम्हें बता देगा, जिसमें तुम्हारा आपस में इख़्तिलाफ़ था। (165) और 'वही' तो है जिसने ज़मीन में तुमको अपना ख़लीफ़ा (उत्तराधिकारी) बनाया और एक-दूसरे पर दर्जे बुलन्द किये ताकि जो कुछ उसने तुमको दिया है उसमें 'वह' तुम्हारा इम्तिहान ले, बेशक तुम्हारा रब जल्द ही सज़ा देने वाला और 'वह' बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला है।

आयत नं० 151 से 165 तक की व्याख्या

151-153 قُلْ تَعَالَوْا اَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ اَلَّا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْـًٔا وَّبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ۚ وَلَا تَقْتُلُوْٓا

اَوْلَادَكُمْ مِّنْ اِمْلَاقٍ ؕ نَحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَاِيَّاهُمْ ۚ وَلَا تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ ۚ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِیْ
حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝ وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۚ
وَ اَوْفُوا الْكَيْلَ وَ الْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ ۚ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ۚ وَاِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوْا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۚ وَبِعَهْدِ اللّٰهِ
اَوْفُوْا ؕ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ۝ وَاَنَّ هٰذَا صِرَاطِیْ مُسْتَقِيْمًا فَاتَّبِعُوْهُ ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ
فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۝

दस ज़रूरी अह़काम

मुआ़लिमुत्तन्ज़ील भाग 2 पेज नं० 140 में लिखा है कि मुश्रिकीन ने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से सवाल किया था कि अल्लाह तआ़ला ने क्या-क्या चीज़ें ह़राम की हैं वह बताइए। इस के जवाब में अल्लाह ने यह आयात नाज़िल फ़रमाईं قُلْ تَعَالَوْا اَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ اَلَّا تُشْرِكُوْا

इन आयात में दस चीज़ों का ज़िक्र फ़रमाया गया है जिन में बाज़ के करने का हुक्म हैं और बाज़ के न करने का हुक्म हैं। जिन चीज़ों को करने का हुक्म है, चूंकि उन के मुक़ाबिल चीज़ें ह़राम हैं इसलिए यूँ फ़रमाया कि आओ मैं तुम्हें वह चीज़ें पढ़ कर सुनाऊँ जो तुम्हारे रब ने तुम पर ह़राम की हैं।

(1) यह कि अपने रब के साथ किसी भी चीज़ को शरीक न ठहराओ।

(2) यह कि वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक करो।

(3) अपनी औलाद को तंगदस्ती के डर से क़त्ल न करो।

अ़रब के बेरह़म जाहिल अपनी औलाद को दो वजह से क़त्ल कर देते थे। एक तो इसलिए कि यह बच्चे कहाँ से खाएँगे? उन को साथ में खिलाने से तंगदस्ती आ जाएगी, वह यह नहीं समझते थे कि रोज़ी देने वाला अल्लाह तआ़ला है, वह ख़ालिक़ भी और राज़िक भी, उसी ने पैदा किया तो रिज़्क़ भी देगा उसी को फ़रमाया نَحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَاِيَّاهُمْ ۚ कि हम तुम्हें रिज़्क़ देंगे और उन्हें भी।

औलाद को क़त्ल करने की दूसरी वजह यह थी कि अ़रब के बाज़ इलाक़ों और बाज़ ख़ानदानों में जिस के यहाँ लड़की पैदा हो जाती तो वह शर्म की वजह से लोगों के सामने नहीं आता था, छुपा-छुपा फिरता था। जैसा कि सूरः नह़ल *(आयत नं० 59)* में फ़रमाया

يَتَوَارٰى مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوْٓءِ مَا بُشِّرَ بِهٖ ؕ

जब बच्ची पैदा होती तो उस वक़्त उसे ज़िन्दा दफ़्न कर देते थे। इसी को सूरः तक्वीर *(आयत नं० 8-9)* में फ़रमाया وَاِذَا الْمَوْءٗدَةُ سُئِلَتْ ۝ بِاَیِّ ذَنْۢبٍ قُتِلَتْ ۝

(और जबकि ज़िन्दा दफ़्न की हुई बच्ची के बारे में पूछा जाएगा कि किस गुनाह की वजह से क़त्ल की गई।)

बेह़याई के कामों से बचो–

(4) बेह़याई के कामों के क़रीब न जाओ। जो ज़ाहिर हैं और जो छुपे हुए हैं इस में हर तरह़ की बेह़याई

के कामों को मना किया गया। जैसे- ज़िना और उस से सम्बन्धित चीज़ें, लोगों के सामने नंगे होना या नहाना, इन चीज़ों की मुमानिअत क़ुर्आन से साबित हो गई।

"सुनन तिर्मिज़ी में है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि चार चीज़ें हज़राते अम्बिया (अ़लै०) के तरीक़े ज़िन्दगी वाली हैं। एक हया, दूसरे इत्र लगाना, तीसरे मिस्वाक करना, चौथे निकाह़ करना।" **(तिर्मिज़ी)**

सुनन अबूदाऊद में है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने एक शख़्स को देखा कि खुले मैदान में गुस्ल कर रहा है। आप मेम्बर पर तशरीफ़ ले गये और अल्लाह तआ़ला की ह़म्द व सना के बाद फ़रमाया कि बिलाशुब्हा अल्लाह तआ़ला शर्म व ह़या वाला है, छुपा हुआ है, शर्म व ह़या करने को पसन्द फ़रमाता है सो तुम में से जब कोई शख़्स गुस्ल करे तो पर्दा करे। **(अबूदाऊद)**

ह़ज़रत इब्ने उ़मर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि नबी करीम (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि बिलाशुब्हा ह़या व ईमान दोनों साथ-साथ हैं सो जब उन में से एक उठाया जाता है तो दूसरा भी उठा लिया जाता है। **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 432)**

क़त्ल न करना-

(5) किसी जान को क़त्ल न करो जिस का ख़ून करना अल्लाह ने ह़राम क़रार दिया है। हाँ, अगर अल्लाह के हुक्म के अनुसार शरायत के साथ क़त्ल किया जाए तो इस की इजाज़त है। जैसे-

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) की रिवायत में है कि अगर तीन कामों में से कोई एक काम कर ले तो उसे क़त्ल किया जाएगा। (1) शादीशुदा होने के बावजूद ज़िना कर ले (तो उसे संगसार कर दिया जाएगा) (2) जो किसी को (जानबूझकर) क़त्ल कर दे (जिस का क़त्ल करना जायज़ न हो) उसे क़िसास में क़त्ल कर दिया जाएगा (3) जो शख़्स दीन इस्लाम को (अपनाने के बाद) छोड़ दे और मुसलमानो की जमाअ़त से अ़लैहि़दा हो जाए (मगर कोई इस्लाम न लाए तो केवल इस्लाम न लाने की वजह से क़त्ल नहीं किया जाएगा।) **(मुस्लिम भाग 2, पेज नं० 59)**

आज कल क़त्ल की गर्म बाज़ारी है लोग दुनिया के ह़क़ीर नफ़ा के लिए एक दूसरे को क़त्ल कर देते हैं क़त्ल मुस्लिम का, वबाल बहुत ज़्यादा है। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया है कि "आसमान ज़मीन वाले सब मिलकर अगर किसी मोमिन के क़त्ल में शरीक हो जाएँ तो अल्लाह तआ़ला उन को औंधे मुँह दोज़ख़ में डाल देगा।" **(मिश्कात पेज नं० 300)**

इसी तरह़ किसी काफ़िर को भी जिन्हें ज़िम्मी कहा जाता है और जिन काफ़िरों से जान की ह़िफ़ाज़त का मुआ़हिदा हो जाए उनको भी क़त्ल करना ह़राम है।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) का इर्शाद है कि जो शख़्स मेरी उम्मत पर तलवार लेकर निकला जो नेक और बद् को मारता चला और उन के क़त्ल से परहेज़ नहीं करता और जो मुआ़हिदे वाले का अ़हद पूरा नहीं करता तो ऐसा शख़्स मुझ में से नहीं और न मैं उस से हूँ। **(मुस्लिम कमा फ़िल् मिश्कात भाग 2, पेज नं० 319)**

ذٰلِكُمْ وَصّٰكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ

कि यह वह चीज़े हैं जिन का तुम्हें अल्लाह तआला ने ताकीदी हुक्म दिया है ताकि समझो और अक़्ल से काम लो।)

यतीम के माल के क़रीब न जाओ-

(6) यतीम के माल के क़रीब न जाओ सिवाय उस सूरत कि जो अच्छी हो। यानी जिस में यतीम की ख़ैर ख़्वाही और भलाई हो। यतीम के माल को जानबूझकर न उड़ाओ और ज़ुल्मन न खाओ जिस का ज़िक्र सूरः बक़रः (रुकूअ़ नम्बर 26) और सूरः निसा (रुकूअ़ नम्बर 1) में हो चुका है।

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "मुसलमानों के तमाम घरों में सब से अच्छा घर वह है जहाँ यतीम हो जिस के साथ अच्छा सुलूक किया जाता हो और सब से बुरा घर वह है जहाँ यतीम हो मगर उस से बुरा सुलूक होता हो।"

सहल बिन सअ़द (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "मैं और यतीम की परवरिश करने वाला, जन्नत में ऐसे होंगे और आप (सल्ल०) ने अपनी शहादत और दर्मियानी उंगली को जोड़ कर दिखाया।" **(बुख़ारी)**

नाप तौल में इन्साफ़-

(7) इन्साफ़ के साथ नाप तौल को पूरा करो। बहुत से लोगों का यह तरीक़ा रहा है कि अपने लिए नाप-तौल करें तो नाप-तौल पूरी कर के लें और दूसरों को नाप-तौल कर दें तो कम नापें और कम तौलें। इसी को फ़रमाया

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِيْنَ ۙ الَّذِيْنَ اِذَا اكْتَالُوْا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُوْنَ ۖ وَاِذَا كَالُوْهُمْ اَوْ وَّزَنُوْهُمْ يُخْسِرُوْنَ

(हलाकत है कमी करने वालों के लिए जो लोगों से नाप कर लेते हैं तो पूरा लेते हैं और जब लोगों को नाप या तौल कर देते हैं तो कम कर देते हैं।)

اَلَا يَظُنُّ اُولٰٓئِكَ اَنَّهُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ ۙ لِيَوْمٍ عَظِيْمٍ ۙ يَّوْمَ يَقُوْمُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ *(सूरः मुतफ़्फ़िफ़ीन-4,5,6)*

(क्या यह लोग यह यक़ीन नहीं रखते कि उठाए जाएँगे बड़े दिन के लिए जिस में लोग रब्बुल् आलमीन के हुज़ूर हाज़िर होंगे) कम नापने और कम तौलने का रिवाज हज़रत शुऐब (अ़लै०) की क़ौम में था, उन्होंने उन्हें बहुत समझाया मगर न माने और उल्टा हज़रत शुऐब (अ़लै०) पर एतिराज़ करने लगे और कट हुज्जती पर उतर आये तो इसकी वजह से अ़ज़ाब में मुब्तिला हुए और एक चीख़ के ज़रिये सब हलाक हो गए। जैसा कि सूरः हूद में मौजूद है।

नाप-तौल में कमी करने का वबाल-

(8) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने नाप-तौल करने वालों से इर्शाद फ़रमाया कि बिलाशुब्हा तुम लोग ऐसी दो चीज़ों में मुब्तिला किये जाओगे जिन के बारे

में तुम से पहली उम्मतें हलाक हो चुकी हैं। **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज 1250, तिर्मिज़ी)**

मतलब यह है कि नाप और तौल में कमी न करो। इस ह़रकते बद् की वजह से पिछली उम्मतों पर अ़ज़ाब आ चुका है।

'मुवत्ता इमाम मालिक' में है कि ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया कि जिस क़ौम में ख़यानत का रिवाज हो जाए अल्लाह उन के दिलों में रोअ़ब डाल देगा और जिस क़ौम में ज़िनाकारी फैल जाएगी उन में मौत ज़्यादा होगी और जो लोग नाप-तौल में कमी करेंगे उन का रिज़्क़ काट दिया जाएगा और जो लोग जानबूझकर ग़लत फ़ैसला करेंगे उन में क़त्ल व ख़ून आ़म हो जाएगा और जो लोग अ़हद की ख़िलाफ़वर्ज़ी करेंगे उन पर दुश्मन मुसल्लत कर दिये जाएँगे। **(मुवत्ता, इमाम मालिक)**

साथ में यह भी फ़रमाया لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا कि हम किसी जान को उस की ताक़त से ज़्यादा अ़मल करने का ह़क़ नहीं देते, लिहाज़ा इन अह़काम के बजा लाने में कोई दुश्वारी नहीं है।

नोट- जिस तरह़ नापतौल में कमी करना ह़राम है उसी तरह़ वक़्त कम देना तन्ख़्वाह पूरी लेना या काम किये बग़ैर पूरी तन्ख़्वाह लेना या रिश्वत न देने की वजह से किसी काम को न करना जिस की मुलाज़िमत की है, यह सब ह़राम है और जिन चीज़ों की मुलाज़िमत करना ह़राम है उन की तन्ख़्वाह भी ह़राम है, अगरचे ड्यूटी पूरी देता हो।

इन्साफ़ की बात-

जब तुम बात कहो तो इन्साफ़ की बात कहो और यह देखे बिना कि हमारे इन्साफ़ की बात किस के मुख़ालिफ़ पड़ेगी, गवाही देना हो तो ह़क़ की गवाही दे। इन्साफ़ करना हो तो ह़क़ के अनुसार फ़ैसला करे चाहे क़रीबी रिश्तेदार ही क्यों न हो और उस के मुख़ालिफ़ सच्ची गवाही देनी पड़े और उस के ख़िलाफ़ ह़क़ का फ़ैसला करना पड़े तो कर डाले। यह सूरः निसा की *(आयत नं० 135)*
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ بِالْقِسْطِ شُهَدَآءَ لِلّٰهِ وَلَوْ عَلٰۤى اَنْفُسِكُمْ की तफ़्सीर में गुज़र चुका है।

अल्लाह के वादे को पूरा करो-

(9) अल्लाह तआ़ला के अ़हद (प्रतिज्ञा) को पूरा करो, यह सूरः बक़रः के तीसरे रुकूअ़ और सूरः माइदा के पहले रुकूअ़ की तफ़्सीर में गुज़र चुका है। जो बन्दे अल्लाह तआ़ला पर ईमान लाए हैं उन का अल्लाह तआ़ला से वादा है कि वह उस के हुक्मों को मानेंगे और जिन चीज़ों से मना किया है उस से रुक जाएँगे, लिहाज़ा हर मोमिन बन्दा अपने अ़हद पर क़ायम रहे और اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ का जो अ़हद लिया था वह तो सारे ही इन्सानों से लिया गया था और सब ही ने अल्लाह तआ़ला की रुबूबियत का इक़रार किया था। फिर इस इक़रार को अल्लाह तआ़ला के पैग़म्बरों ने याद दिला दिया, लिहाज़ा हर इन्सान पर लाज़िम है कि इस वादे को पूरा करे।

इसी तरह़ अपने अ़क़ीदे और अ़मल से अल्लाह तआ़ला की रुबूबियत का इक़रार किया था। फिर इस इक़रार को अल्लाह तआ़ला के पैग़म्बरों ने याद दिलाया, लिहाज़ा हर इन्सान पर लाज़िम है कि इस

अ़हद को पूरा करे और अपने अ़क़ीदे और अ़मल से अल्लाह तआ़ला की रुबूबियत का इक़रार करे और उस दीन को क़ुबूल करे जो अल्लाह तआ़ला ने भेजा है।

इन चीज़ों को बयान फ़रमा कर इर्शाद फ़रमाया ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ

(यह वह चीज़ें हैं जिन का अल्लाह तआ़ला ने तुम को ताकीदी हुक्म दिया है ताकि तुम नसीह़त ह़ासिल करो।)

सिराते मुस्तक़ीम का इत्तिबअ़ करो-

(10) बेशक यह मेरा सीधा रास्ता है सो तुम इस की इत्तिबअ़ (पैरवी) करो और दूसरे रास्तों का इत्तिबअ़ (पैरवी) न करो क्योंकि यह रास्ते तुम्हें अल्लाह के रास्ते से हटा देंगे। अल्लाह तआ़ला ने क़ुर्आन नाज़िल फ़रमाया और ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को क़ुर्आन का पहुँचाने वाला और मुअ़ल्लिम (सिखाने वाला) बनाया और आप की इताअ़त (अनुसरण) फ़र्ज़ की। अल्लाह तआ़ला की इताअ़त और रसूलुल्लाह (सल्ल०) की इताअ़त (अनुसरण) यह सीधा रास्ता है जो सह़ाब-ए-किराम और ताबिअ़ीन से लेकर हम तक पहुँचा है। जो लोग दीने इस्लाम के मानने वाले नहीं, जैसे- यहूद व नसारा और जो लोग दीन इस्लाम के दावे करते हैं, लेकिन बाज़ लोग अपनी इच्छा के मुताबिक़ दीन बनाते हैं ऐसे लोग रसूलुल्लाह (सल्ल०) के रास्ते पर नहीं हैं।

इन लोगों के रास्ते पर जो शख़्स चलेगा वह सिराते मुस्तक़ीम से हट जाएगा। यानी रसूलुल्लाह (सल्ल०) की राह पर न रहेगा, आख़िरत में उसी की निजात है जो ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के रास्ते पर होगा।

सिराते मुस्तक़ीम के अ़लावा सब रास्ते गुमराही के हैं-

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने बयान फ़रमाया कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने एक लाइन खींची और फ़रमाया कि यह अल्लाह का रास्ता है और उस के दाएँ बाएँ ख़ुतूत (लाइनें) खींची और फ़रमाया कि यह मुख़्तलिफ़ (अनेक) रास्ते हैं इन में हर रास्ते पर शैतान है जो उस की तरफ़ बुलाता है। फिर आप ने यह आयत तिलावत फ़रमाई।

وَاَنَّ هٰذَا صِرَاطِىْ مُسْتَقِيْمًا فَاتَّبِعُوْهُ **(अह़मद व नसई, दारमी कमा फ़िल् मिश्कात पेज नं० 30)**

फिर इर्शाद फ़रमाया ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ

कि यह वह चीज़े हैं जिन का तुम्हें अल्लाह तआ़ला ने ताकीदी हुक्म दिया है कि तुम तक़्वा अख़्तियार करो तक़्वा अख़्तियार करने में हर बात आ गई और हुक्मों की पाबन्दी की जाए और जिन चीज़ों से मना फ़रमाया गया है उन से बचा जाए। बुरे आ़माल और अ़क़ीदे, कुफ़्र, शिर्क सब से बचना तक़्वा के मफ़्हूम में दाख़िल है।

नोट- ऊपर की आयत में दस बातों का हुक्म दिया गया है। यह दस बातें बहुत अहम हैं जिन में अल्लाह के ह़क़ और बन्दों के ह़क़ सब की रिआ़यत करने का हुक्म दिया गया है और आख़िर में

सिराते मुस्तक़ीम से हटने की मुमानिअ़त फ़रमाई गई है। ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) ने फ़रमाया कि जो शख़्स रसूलुल्लाह (सल्ल०) की वसीयत को देखना चाहे जिस पर आप की मुहर है तो यह आयात पढ़े قُلْ تَعَالَوْا أَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ से लेकर لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ तक।

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि सूरः अनूआम में यह आयात मुह़कमात (हुक्म वाली) हैं जो उम्मुल् किताब हैं। इस के बाद उन्होंने यह आयतें तिलावत कीं। **(इब्ने कसीर भाग 2, पेज 187)**

154-157

ثُمَّ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ تَمَامًا عَلَى الَّذِي أَحْسَنَ وَتَفْصِيلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً لَّعَلَّهُم
بِلِقَاءِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ ۝ وَهَٰذَا كِتَابٌ أَنزَلْنَاهُ مُبَارَكٌ فَاتَّبِعُوهُ وَاتَّقُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝ أَن
تَقُولُوا إِنَّمَا أُنزِلَ الْكِتَابُ عَلَىٰ طَائِفَتَيْنِ مِن قَبْلِنَا وَإِن كُنَّا عَن دِرَاسَتِهِمْ لَغَافِلِينَ ۝ أَوْ
تَقُولُوا لَوْ أَنَّا أُنزِلَ عَلَيْنَا الْكِتَابُ لَكُنَّا أَهْدَىٰ مِنْهُمْ ۚ فَقَدْ جَاءَكُم بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ
وَهُدًى وَرَحْمَةٌ ۚ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن كَذَّبَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَصَدَفَ عَنْهَا ۗ سَنَجْزِي الَّذِينَ
يَصْدِفُونَ عَنْ آيَاتِنَا سُوءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا يَصْدِفُونَ ۝

तौरात शरीफ़

मतलब यह है कि इन बातों के बाद यह बात जान लो कि हम ने ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) को किताब अ़ता की थी और उस में उन लोगों के लिए नेअ़मत की चीज़ें थीं। जो नेक हैं वह इस किताब पर अच्छी तरह़ अ़मल करते हैं और यह किताब ऐसी थी जिस पर हर चीज़ तफ़्सील से बयान की गई थी जो ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) की शरीअ़त से मुतअ़ल्लिक़ थी, और वह किताब हिदायत भी थी और रह़मत भी। उस किताब से तौरात शरीफ़ मुराद है जो ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) पर नाज़िल की गई ताकि बनी इस्राईल इस किताब पर ईमान लाएँ और आख़िरत की तस्दीक़ करें।

क़ुर्आन–

इस के बाद क़ुर्आन मजीद के बारे में फ़रमाया कि हम ने यह किताब नाज़िल की, जो मुबारक है यानी दीन व दुनिया के एतिबार से इस में ख़ैर ही ख़ैर है, लिहाज़ा तुम इस की इत्तिबअ़ (पैरवी) करो और तक़्वा अख़्तियार करो ताकि तुम पर रह़म किया जाए।

अहले अ़रब का जवाब–

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि हम ने जो यह किताब नाज़िल की है उस की वजह यह है कि तुम यूँ न कहने लगो कि हम से पहले दो क़ौमों पर किताब नाज़िल हुई थी (यानी यहूद व नसारा पर) और हम उन के पढ़ने पढ़ाने से ग़ाफ़िल थे। वह हमारी ज़बान में न थी लिहाज़ा हम इस से फ़ायदा नहीं उठा सकते। अल्लाह तआ़ला ने क़ुर्आन मजीद नाज़िल फ़रमा कर इस उ़ज़्र को ख़त्म कर दिया और यह भी मुम्किन था कि तुम यूँ कहते कि हमें किताब नहीं दी गई। अगर हम पर किताब नाज़िल होती तो हम

ख़ूब अच्छी तरह़ अ़मल करते और हम से पहले जिन लोगों को किताब दी गई अ़मल करने में उन से बढ़ चढ़ कर साबित होते और उन के मुक़ाबिले में ज़्यादा हिदायत याफ़्ता होते।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया فَقَدْ جَآءَكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ

"कि तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से वाज़ेह़ दलील आ चुकी है यानी क़ुर्आन करीम। यह हिदायत भी है और रह़मत भी।" अब इस पर अ़मल करना और हिदायत पर चलना तुम्हारा काम है।

इस के बाद फ़रमाया-

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَصَدَفَ عَنْهَا

"कि उस से बढ़ कर कौन ज़ालिम होगा जो अल्लाह की आयात को झुठलाए, और जो शख़्स इस पर अ़मल करना चाहे उसको अ़मल से रोके और बाज़ रखे।"

अल्लाह की किताब नाज़िल होने के बाद उस पर अ़मल करने के बजाय झुठलाना खुद भी अ़मल न करना और दूसरों को रोकना यह खुद को हलाकत और अ़ज़ाब में डालने का ज़रिया है।

سَنَجْزِى الَّذِيْنَ يَصْدِفُوْنَ عَنْ اٰيٰتِنَا سُوْٓءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يَصْدِفُوْنَ

जो लोग हमारी आयात से रोकते हैं हम उन के इस अ़मल की वजह से उन्हें बुरा अ़ज़ाब देंगे।

अल्लाह तआ़ला ने अहले अ़रब की इस कट् हुज्जती को ख़त्म फ़रमा दिया कि हम से पहले जिन को किताब दी गई थी हम उन की ज़बान को नहीं जानते थे। अब जब अहले अ़रब की ज़बान में किताब नाज़िल हो गई तो यह उ़ज़्र (बहाना) ख़त्म हो गया।



मूसा (अ़लै०)
- **मिस्र ता मद्यन और मद्यन ता मिस्र**
- **अ़बूर, बह़ीरा, तिया, तूर, मवाब**

इसी तरह़ यह बात कि हम पर किताब नाज़िल होती तो हम ऐसा-ऐसा करते और यूँ अ़मल कर के जौहर दिखाते और खूब बढ़-चढ़ कर हिदायत में आगे बढ़ते। इस बारे में भी उन पर हुज्जत पूरी हो गई शायद कोई शख़्स यह सवाल पेश करे कि क़ुर्आन तो अ़रबी ज़बान में नाज़िल हुआ जो क़ौमें अ़रबी ज़बान नहीं जानतीं उन की हुज्जत का क्या जवाब है? उस का जवाब यह है कि अहले अ़रब की ज़बान में नाज़िल फ़रमाना यह उन के साथ खुसूसी इन्आ़म है। अगर अल्लाह

तआला किसी और ज़बान में नाज़िल फ़रमा देता और सारे इन्सानों को उस के इत्तिबअ़ (अनुसरण) का हुक्म देता जिन में अहले अ़रब भी थे तो यह भी सही होता, सारी मख़्लूक़ उसके हाथ है वह किसी का पाबन्द नहीं। उस ने अ़रबी में क़ुर्आन मजीद नाज़िल फ़रमाया और ख़ातिमुन्नबीय्यीन (सल्ल०) को अ़रब में मब्ऊस फ़रमाया और सारे आ़लम के इन्सानों को अपने आख़िरी रसूल और आख़िरी किताब पर ईमान लाने का हुक्म दिया।

क़ुर्आन मजीद को **हुदल्लिन्नास** (सब लोगों के लिए हिदायत) फ़रमाया और सय्यदुल मुरसलीन (सल्ल०) के बारे में फ़रमाया-

"وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا كَآفَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا" (और हम ने आप को नहीं भेजा मगर तमाम इन्सानों के लिए डराने वाला बना कर।)

इसलिए कि तुम यूँ कहने लगते कि अगर अल्लाह तआ़ला अ़रबी के अ़लावा किसी दूसरी ज़बान में अपनी आख़िरी किताब नाज़िल फ़रमाता और अ़रबों को हुक्म देता कि तुम इस का इत्तिबअ़ (अनुसरण) करो तो इस पर भी किसी को एतिराज़ करने की गुन्जाइश न थी। जब अल्लाह तआ़ला ने सारे इन्सानों को क़ुर्आन के इत्तिबअ़ (अनुसरण) का हुक्म दे दिया तो सब पर लाज़िम है कि उस के हुक्मों को सीखें।

क़ुर्आन मजीद को पढ़ें और पढ़ाएँ पूरी दुनिया में बहुत सी ज़बानें हैं, जिस-जिस ने इस्लाम क़ुबूल कर लिया वह सब पढ़ते-पढ़ाते हैं और उस से फ़ायदा उठाते हैं, बल्कि क़ुर्आन मजीद की तफ़्सीरें ज़्यादातर ग़ैर अ़रब ने ही लिखी हैं।

158 هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ يَاْتِيَ رَبُّكَ اَوْ يَاْتِيَ بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ ۗ يَوْمَ يَاْتِيْ بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ
لَا يَنْفَعُ نَفْسًا اِيْمَانُهَا لَمْ تَكُنْ اٰمَنَتْ مِنْ قَبْلُ اَوْ كَسَبَتْ فِيْٓ اِيْمَانِهَا خَيْرًا ۗ قُلِ انْتَظِرُوْٓا اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ۝

पश्चिम से सूरज का तुलूअ़ (उदय) होना

पहली आयत में इर्शाद फ़रमाया कि तुम्हारे पास जो हुज्जत आ चुकी है क़ुर्आन नाज़िल हो चुका है, वह हिदायत और रह़मत है। इस आयत में यह फ़रमाया कि ह़क़ (Divine Truth) मालूम होने के बाद और हिदायत (Divine guidance) सामने आ जाने के बाद अब किसी इन्तिज़ार की ज़रूरत नहीं, ह़क़ क़ुबूल करो और हिदायत पर आओ। अब भी ह़क़ क़ुबूल नहीं करते तो किस चीज़ के इन्तिज़ार में हो (उन का ढंग ऐसा है) जैसे इसी इन्तिज़ार में हैं कि फ़रिश्ते उन के पास आ जाएँ या अल्लाह तआ़ला ही उन के पास पहुँच जाए, या अल्लाह तआ़ला की किसी बड़ी निशानी के इन्तिज़ार में हैं, लेकिन जिस दिन उस की एक निशानी ज़ाहिर हो जाएगी तो किसी काफ़िर को उस वक़्त उस का ईमान लाना फ़ायदेमन्द न होगा और जो कोई साह़िबे ईमान बद्आ़मालियों में मुब्तिला हो जिस ने अपने ईमान में कोई अ़मल ख़ैर न किया हो तो उस की तौबः क़ुबूल न होगी।

वजह इस की यह है कि अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक ईमान बिल् ग़ैब मोअ़तबर है। जब आँखो से

देख लिया तो उस के बाद ईमान मोअ़तबर न होगा। जब क़ियामत होगी तो उस वक़्त सब मोमिन हो जाएँगे मगर उस वक़्त ईमान लाना कुछ फ़ायदा न देगा। पश्चिम से सूरज निकलना बहुत बड़ी निशानी है, उस वक़्त जो शख़्स ईमान लाएगा उसका ईमान क़ुबूल न होगा। जो शख़्स गुनाहों में मुब्तिला हो और मौत के फ़रिश्ते नज़र आने लगें तो उस वक़्त की तौबः क़ुबूल नहीं। इस से पहले जो तौबः की जाए वह मक़्बूल होगी पश्चिम से सूरज निकल आने के बाद जिस तरह़ किसी का ईमान क़ुबूल नहीं उसी तरह़ तौबः क़ुबूल नहीं होगी।

ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमायाः-

"जब तक सूरज पश्चिम से न तुलूअ़ (उदय) हो, क़ियामत क़ायम न होगी। फिर जब लोग सूरज को पश्चिम से निकलता हुआ देख लेंगे तो सब के सब ईमान ले आएँगे, मगर उस वक़्त का ईमान लाना कुछ फ़ायदा न देगा।" **(बुख़ारी)**

फिर आप (सल्ल०) ने यह आयत पढ़ीः-

सह़ीह़ बुख़ारी भाग 2 पेज नं० 667 में ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, "क़ियामत क़ायम न होगी जब तक कि पश्चिम से सूरज न निकल आये। सो जब सूरज (पश्चिम से) निकलेगा और लोग उसे देख लेंगे तो सब ईमान ले आएँगे और उस वक़्त किसी शख़्स का ईमान लाना फ़ायदा न देगा।" इस के बाद आप ने यह आयत तिलावत फ़रमाई।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "क़ियामत उस वक़्त तक बरपा नहीं होगी जब तक सूरज पश्चिम से न निकल जाए और जब लोग उसे देखेंगे तो उस वक़्त जो भी ज़मीन पर मौजूद होगा ईमान ले आएगा, लेकिन उस वक़्त किसी शख़्स का ईमान लाना अगर वह पहले से ईमान न लाया होगा, उसे कोई फ़ायदा नहीं पहुँचाएगा।" **(सह़ीह़ बुख़ारी, अल् तफ़्सीर, बाब 10, ह़दीस 4635)**

एक दूसरी रिवायत में रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जब यह तीन निशानियाँ ज़ाहिर होंगी तो उस वक़्त किसी शख़्स का ईमान लाना, अगर वह पहले से ईमान नहीं लाया होगा, उसे कोई फ़ायदा नहीं पहुँचाएगा। 1- सूरज का पश्चिम से तुलूअ़ (उदय) होना। 2- दज्जाल की आमद 3- (دَابَّةُ الْاَرْض) "एक ज़मीनी जानवर" का निकलना।"

(सह़ीह़ मुस्लिम, अल् ईमान, बाबु बयानुज़्ज़मानिल्लज़ी ला युक़्बलू फ़ीही अल् ईमान, ह़दीस 158)

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "कोई नबी ऐसा मब्अ़ूस नहीं हुआ कि जिस ने अपनी उम्मत को झूठे काने (दज्जाल) से न डराया हो। ख़बरदार! वह काना होगा और तुम्हारा रब काना नहीं और उस की दोनों आँखों के दर्मियान काफ़िर लिखा हुआ होगा।" **(सह़ीह़ बुख़ारी, अल् फ़ितन, बाब 26, ह़दीसः 7131)**

ह़ज़रत सफ़्वान बिन ईसाल (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, "बिलाशुब्हा अल्लाह तआ़ला ने पश्चिम की तरफ़ एक दरवाज़ा बनाया है जो इतना चौड़ा है कि उन दोनों के दर्मियान 'सत्तर साल' तक चल सकते हैं यह दरवाज़ा तौबः का दरवाज़ा है। जब तक उस ओर से सूरज नहीं निकलेगा उस वक़्त तक बन्द नहीं किया जाएगा।" (और उस वक़्त तक तौबः क़ुबूल होती

रहेगी) अल्लाह तआ़ला ने يَوْمَ يَأْتِي بَعْضُ آيَاتِ رَبِّكَ لَا يَنفَعُ نَفْسًا إِيمَانُهَا لَمْ تَكُنْ آمَنَتْ में इसी को बयान फ़रमाया है। **(तिर्मिज़ी व इब्ने माजा)**

हज़रत मुआ़विया (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "हिजरत ख़त्म न होगी जब तक तौबः ख़त्म न होगी जब तक पश्चिम से सूरज न निकलेगा।" **(अबूदाऊद, दारमी)**

पश्चिम से सूरज–

पश्चिम से सूरज का निकलना क़ियामत के क़रीब होगा। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि ज़ाहिर होने के एतिबार से सब से पहली निशानी पश्चिम से सूरज का निकलना और दाब्बतुल् अर्ज़ (एक क़िस्म का जानवर) का ज़ाहिर होना है जो चाश्त के वक़्त लोगों पर ज़ाहिर होगा उन दोनों में से भी ज़ाहिर होगी दूसरी निशानी इस के बाद क़रीब ही ज़माने में ज़ाहिर हो जाएगी। **(मुस्लिम भाग 2)**

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि तीन चीज़ें ऐसी हैं कि जब वह ज़ाहिर होंगी तो किसी शख़्स को उस का ईमान लाना फ़ायदा न देगा यानी जो इस से पहले ईमान न लाया हो और जिस ने अपने ईमान में किसी ख़ैर का काम न किया होगा (1) पश्चिम से सूरज का निकलना (2) दज्जाल का ज़ाहिर होना (3) दाब्बतुल् अर्ज़ का निकलना। **(मुस्लिम भाग 1)**

दाब्बतुल् अर्ज़ के बारे में इन्शाअल्लाह सूरः नम्ल की आयत नं० (82) وَإِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ أَخْرَجْنَا لَهُمْ دَابَّةً مِّنَ الْأَرْضِ में फ़रमाया और फिर قُلِ انتَظِرُوا إِنَّا مُنتَظِرُونَ इस में यह है कि हक़ के आ जाने के बाद ईमान नहीं लाते तो कब ईमान लाएँगे? जब पश्चिम की तरफ़ से सूरज निकलने वाली निशानी ज़ाहिर होगी क्या उस वक़्त ईमान लाएँगे? लेकिन उस वक़्त ईमान लाना मक़्बूल न होगा लिहाज़ा इस से पहले अभी आ जाएगा कि कुफ़्र की वजह से अहले कुफ़्र जहन्नम के अ़ज़ाब में गिरफ़्तार होंगे और मोमिन जन्नत में जाएँगे।

नोट– साइंस पर ईमान रखने वाले कुछ लोग पश्चिम से सूरज निकलने को मुहाल (असम्भव) समझते हैं, यह उनके जिहालत की बातें हैं। अल्लाह तआ़ला हर चीज़ का ख़ालिक़ व मालिक है सूरज को भी उसी ने पैदा किया और उसी ने इस को मुसख़्ख़र फ़रमाया और उसी ने सूरज का मक़ाम मुक़र्रर फ़रमाया है कि वह इस तरफ़ से निकले और उस तरफ़ से छुप जाए उसे यह भी क़ुद्रत है कि सूरज को डूबने वाली जिहालत पर पहुँचा कर वापस इसी ओर ले आये जिधर से वह गया है इस हक़ीक़त को *(सूरः बक़रः-258)* فَإِنَّ اللَّهَ يَأْتِي بِالشَّمْسِ مِنَ الْمَشْرِقِ में बयान फ़रमाया गया है।

अल्लाह तआ़ला ही इस को पूरब से निकालता है और पश्चिम में छुपा देता है, बल्कि दोनों दिशओं का नाम मश्रिक़ व मग़्रिब इसी निकलने व डूबने की वजह से रखा गया है। अगर अल्लाह तआ़ला सूरज का निज़ाम ऐसा मुक़र्रर फ़रमाते कि जिस ओर डूबता उस के दूसरी ओर से निकला करता तो तुलूअ़ (उदय) होने वाले को पूरब और उस के दूसरी ओर को पश्चिम कहा जाता।

159 اِنَّ الَّذِیْنَ فَرَّقُوْا دِیْنَهُمْ وَكَانُوْا شِیَعًا لَّسْتَ مِنْهُمْ فِیْ شَیْءٍ ؕ اِنَّمَاۤ اَمْرُهُمْ اِلَی اللّٰهِ ثُمَّ یُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا یَفْعَلُوْنَ ۝

इन्सान में सब से बड़ी बीमारी तो यह है कि वह अपने ख़ालिक़ व मालिक को न माने या माने लेकिन उस के साथ शिर्क करे और नबियों के ज़रिये भेजी गई किताब और उस के दीन को झुठलाए।

और दूसरी गुमराही यह है कि वह अल्लाह को भी माने उस के भेजे हुए दीन को मानने का दावेदार भी हो, लेकिन अल्लाह के दीन में अपनी तरफ़ से ऐसी बातें दाख़िल कर दे जो अल्लाह तआ़ला के दीन में नहीं हैं, शैतान की यह बहुत बड़ी चालाकी है।

बहुत से लोग जो यूँ कहते हैं कि हम ने अल्लाह के दीन को क़ुबूल किया जो उस ने अपने रसूलों और किताबों के ज़रिये भेजा है, उन में बाज़ लोगों पर शैतान अपना यह दाँव चलाता है और उनको ऐसी सोच और वहम पर डाल देता है जिन की वजह से वह अल्लाह के भेजे हुए दीन से बाहर हो जाते हैं, वह अपने ख़याल में दीन के अन्दर होते हैं लेकिन ह़क़ीक़त में दीन से बाहर होते हैं। वह समझते हैं कि हम अल्लाह के मक़्बूल बन्दे हैं लेकिन वह अल्लाह की नज़र में मरदूद होते हैं।

यहूद व नसारा की गुमराही मशहूर ही है, यहूदियों का दावा था और अब भी है कि हम अल्लाह के क़रीबी बन्दे हैं, लेकिन अल्लाह के दीन को छोड़ कर जिस की बुनियाद ही तौह़ीद पर है मुश्रिक हो गये और ह़ज़रत उ़ज़ैर (अ़लै०) को अल्लाह का बेटा बना दिया और ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) पर ईमान न लाए और उन के क़त्ल करने पर तुल गये। फिर ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर ईमान न लाए और नसारा भी दीने ह़क़ से हट गये और उन्होंने अपने दीन में शरीक ठहरा लिया। उन्हीं में से किसी ने ह़ज़रत मसीह़ बिन मरयम के बारे में यह अ़क़ीदा बना लिया कि इब्ने मरयम (मरयम के बेटे) अल्लाह की ज़ात का नाम है और बाज़ लोगों ने उन्हें अल्लाह का बेटा बता दिया और बाज़ लोगों ने यूँ कहा मअ़बूद तीन-तीन हैं यानी अल्लाह के साथ ह़ज़रत ईसा और उन की वालिदा भी मअ़बूद हैं। फिर बाज़ यहूद ने उन्हें अ़क़ीदा-ए-कुफ़्र पर डाल दिया या अब वह इस बात पर अ़क़ीदा रखते हैं कि ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) का क़त्ल हमारे गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो गया, उन के नज़्दीक इतवार के दिन चर्च में जाने से बाज़ गुनाह पोप के सामने बयान कर देने से माफ़ हो जाते हैं और बाज़ यूँ ही आ़मतौर पर माफ़ हो जाते हैं।

यह आयत आ़म है मगर बाज़ मुफ़स्सिरीन ने इस से यहूद व नसारा मुराद लिए हैं।

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूल (सल्ल०) ने फ़रमायाः-

"यहूद व नसारा इक्हत्तर या बहत्तर फ़िर्क़ों में तक़्सीम हो गये। मेरी उम्मत तिहत्तर फ़िर्क़ों में तक़्सीम हो जाएगी। उन में से सिर्फ़ एक फ़िर्क़ा जन्नती होगा बाक़ी सब जहन्नमी होंगे"।

सह़ाबा (रज़ि०) ने पूछा कि वह निजात पाने वाला फ़िर्क़ा कौन सा होगा? फ़रमाया कि जो इस राह पर चलेगा जिस पर मैं और मेरे सह़ाबा (रज़ि०) हैं। **(तिर्मिज़ी)**

ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है और उस का फ़रमाना ह़क़ है, कि जब मेरा बन्दा नेकी का इरादा करे तो (ऐ फ़रिश्तों!) उस की एक

नेकी लिख लो। फिर अगर वह कर चुके तो उस की दस नेकियाँ लिख लो। अगर वह बुराई का इरादा करे तो कुछ न कहो, अगर कर चुके तो एक ही बुराई लिखो और अगर न करे तो उस के लिए भी एक नेकी लिखो। फिर आप (सल्ल०) ने यही आयत तिलावत फ़रमाई। **(बुख़ारी)**

मुश्रिकीने अ़रब ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) के दीन पर होने के दावेदार थे सब को मालूम है उन का दीन तौह़ीद ख़ालिस था। उन्होंने बड़ी-बड़ी तक्लीफ़ें उठाईं आग में डाले जाने तक को मन्ज़ूर किया मगर तौह़ीद की दअ़वत न छोड़ी। लेकिन उन के दीन के मानने वालों ने (जिन में मुश्रिकीने अ़रब भी थे) बुत परस्ती शुरु कर दी और कअबः शरीफ़ में बुत रख दिए। जब उन के सामने तौह़ीद की दअ़वत रखी गई तो उन को अचम्भा मालूम हुआ और कहने लगे-

أجعل الآلهة إلها واحدا إن هذا لشيء عجاب *(सूरः साद्-5)*

और जब उन को बुत परस्ती से मना किया गया और बताया गया कि यह शिर्क है और अल्लाह तआ़ला की नाराज़गी का ज़रिया है तो कहने लगे कि ما نعبدهم إلا ليقربونا إلى الله زلفى *(सूरः ज़ुमर-3)*

हम तो उन की अ़िबादत सिर्फ़ इसलिए करते हैं कि यह हमें अल्लाह तआ़ला से नज़्दीक करते हैं।

कभी कहते थे هؤلاء شفعاؤنا عند الله

हम ने जो यह मअ़बूद बना रखे हैं यह अल्लाह के यहाँ हमारी सिफ़ारिश कर देंगे।

जो लोग अल्लाह तआ़ला को मानते हैं यानी उन के वजूद का यक़ीन रखते हैं उन में से बहुत से लोगों ने अल्लाह के भेजे हुए दीन को नहीं माना और जिन्होंने माना उन्होंने अल्लाह के दीन में अल्लाह के नाराज़गी की बातों को शामिल कर दिया और ह़क़ीक़ी दीन में तब्दीली की सूरतें निकाल दीं और बहुत सी जमाअ़तों में बट गये।

नबी (सल्ल०) ने इस आयत की तिलावत की और फ़रमाया, "यह वह लोग हैं जिन्होंने दीन में नई-नई बातें (बिद्अ़ात) ईजाद कर लीं थीं और जो ख़्वाहिशात का इत्तिबअ़ किया करते थे, अल्लाह तआ़ला उन की तौबः क़ुबूल नहीं फ़रमाएगा।" **(तफ़्सीर क़ुर्तुबीः 150/7)**

जामेअ़ अल् तिर्मिज़ी, ह़दीस नं० 2640 सुनन इब्ने माजा ह़दीस नं० 3993 और सुनन अबी दाऊद ह़दीस नं० 4597 में रिवायत है, नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, "यहूद व नसारा इक्हत्तर (71) या (72) बहत्तर फ़िर्क़ों में बट गये थे और यह उम्मत तिहत्तर (73) फ़िर्क़ों में बट जाएगी और सब जहन्नम में जाएँगे सिवाय एक (फ़िर्क़े) के और यह जन्नती फ़िर्क़ा वह है जो मेरे और मेरे सह़ाबा के रास्ते पर चलने वाला होगा।" **(तिर्मिज़ी)**

गुमराह फ़िर्क़ों का ज़िक्र-

शैतान इस फ़िक्र में लगा रहता है कि इन्सानों को कैसे गुमराही पर लगाँऊ। पहले तो ईमान क़ुबूल करने नहीं देता, दूसरे जो लोग मोमिन हैं उन के दिलों में ईमान की तरफ़ से शक डालता है।

फिर जो लोग ईमान पर जमे रहें और शक व शुब्हात से मुतास्सिर न हों तो उन को ऐसी-ऐसी

बातें सुझा देता है जो ईमान के ख़िलाफ़ होती हैं। पहली उम्मतों के साथ जो उस ने ह़रकतें कीं, इस उम्मत के साथ उस का वही अ़मल है। अहले ईमान के दिलों में ऐसी चीज़ डालता है जो गुमराही की चीज़ें हैं और उन चीज़ों के अख़्तियार करने से ईमान जाता रहता है जितने इन्कारी इस उम्मत में थे या हैं ईमान का नाम लेते हुए भी कुफ़्र अख़्तियार किये हुए हैं और चूंकि यह लोग अपने आप को सह़ी राह पर समझते हैं इसलिए तौबः भी नहीं करते, जो लोग अपने इमाम या पीर के अन्दर अल्लाह तआ़ला का अंश मानते हैं और जो लोग क़ुर्आन की तब्दीली के क़ायल हैं और जो लोग ह़ज़रत अ़ली (रज़ि०) को ख़ुदा जैसा बताते रहे और जो लोग ख़ातिमुन्नबीय्यीन (सल्ल०) पर नुबूव्वत ख़त्म होने का इन्कार करते हैं और जो लोग रसूलुल्लाह (सल्ल०) के क़ौल व अ़मल को हुज्जत नहीं मानते और जो लोग बुरे अ़क़ीदे के क़ायल हैं यह सब लोग सय्यदना मुह़म्मद (सल्ल०) के दीन से अलग हैं, इस्लाम से बाहर हैं और ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) उन से बेज़ार हैं।

फिर अगर कोई शख़्स ऐसे एतिक़ादी बिद्अ़त में मुब्तिला न हो जो इस्लाम से निकाल कर कुफ़्र में दाख़िल कर दे तो शैतान उसे बिद्अ़त में मुब्तिला करने की कोशिश करता है। अहले बिद्अ़त ने तरह़-तरह़ की बिद्अ़तें निकाल रखी हैं और उन बिद्आ़त की वजह से बहुत से फ़िर्क़े बने हुए हैं जो लोग बिद्अ़त के आ़माल में मुब्तिला हैं उन को भी तौबः की तौफ़ीक़ नहीं होती क्योंकि आ़माले बिद्अ़त को सवाब समझ कर करते हैं और जिस अ़मल को नेकी समझते हैं उस से तौबः क्यों करने लगे।

जो लोग बिद्अ़तें निकालते हैं वह क़ुर्आन ह़दीस की तरफ़ ध्यान नहीं करते जो अपनी समझ में आता है और जो अपना नफ़्स चाहता है उसे दीन में दाख़िल कर लेते हैं उन्हें लाख समझाओ कि यह अ़मल क़ुर्आन व ह़दीस से साबित नहीं, लेकिन बराबर उसी में लगे रहते हैं, सुन्नतों पर चलने से उन के दिल ख़ुश नहीं होते बिद्अ़तें उन के अन्दर रच बस जाती हैं, इन बिद्अ़तों की वजह से बहुत से फ़िर्क़े वजूद में आ जाते हैं।

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि मेरी उम्मत पर ज़रूर ऐसा ज़माना आएगा जैसा बनी इस्राईल पर आया था (यानी पूरी तरह़ उन के मुताबिक़ अ़मल करेंगे।) जैसा कि एक जूता दूसरे जूता के मुताबिक़ बना होता है यहाँ तक कि अगर बनी इस्राईल में से किसी ने अपनी माँ से एलानिया ज़िना किया था तो मेरी उम्मत में भी ऐसे लोग होंगे जो ऐसा करेंगे।

(फिर फ़रमाया) कि बनी इस्राईल के 72 फ़िर्क़े हो गये थे और मेरी उम्मत 73 फ़िर्क़ों में बट जाएगी, यह सब फ़िर्क़े दोज़ख़ में होंगे सिवाय एक मिल्लत के। सह़ाबा (रज़ि०) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! वह मिल्लत कौन सी है जो जन्नत वाली है? आप ने फ़रमाया "مَا اَنَا عَلَيْهِ وَاَصْحَابِىْ" (कि जिस मिल्लत और दीन पर मैं और मेरे सह़ाबा हैं वह जन्नत वाली है।) **(तिर्मिज़ी)**

अब सारे फ़िर्क़े ग़ौर करें कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) और सह़ाबा किस दीन पर थे? और जो लोग इस तरीक़े से हटे हुए हैं वह अपना अन्जाम सोच लें और ख़ासतौर पर वह लोग ग़ौर करें जो ह़ज़रात

सह़ाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम को मुसलमान ही नहीं मानते और जो लोग उन में कीड़े निकालते हैं और उन की बशरी कमज़ोरियों को तारीख़ की किताबों से निकाल कर उछालते हैं (जबकि वह तारीख़ी रिवायात बेसनद होती हैं।)

إِنَّمَآ أَمْرُهُمْ إِلَى اللَّهِ ثُمَّ يُنَبِّئُهُم بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ

(उन का मामला बस अल्लाह ही के ह़वाले है वह उन्हें जता देगा जो काम वह करते थे।)

160 مَن جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ عَشْرُ أَمْثَالِهَا ۖ وَمَن جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَىٰٓ إِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝

दस नेकियों का सवाब

इस आयत में नेकियों का बदला और बुराईयों की सज़ा का क़ानून बताया गया है। अल्लाह तआ़ला रह़ीम है उस ने अपने बन्दों पर यह करम फ़रमाया कि एक नेकी करने पर उस जैसी कम से कम दस नेकियाँ करने का सवाब देने का वादा फ़रमाया और अपनी किताब में इस का एलान फ़रमा दिया और जो शख़्स कोई गुनाह कर ले तो उस में इज़ाफ़ा नहीं है, बल्कि एक गुनाह पर एक ही गुनाह की सज़ा मिलेगी।

फिर यह कोई ज़रूरी नहीं कि गुनाह पर सज़ा मिल ही जाए तौबः इस्तिग़फ़ार से भी गुनाह माफ़ होते हैं और नेकियों से भी माफ़ होते रहते हैं और नेकी का जो दस गुना सवाब बताया गया है यह कम से कम है। अल्लाह चाहे तो इस से भी ज़्यादा सवाब दे सकता है।

सूरः बक़रः (रुकूअ़ नं० 36) में अल्लाह की राह में ख़र्च करने वालों का सवाब बताते हुए इर्शाद फ़रमाया कि उन की ऐसी मिसाल है जैसे एक दाना हो उस दाने से सात बालीं निकालीं और हर बाली में सौ दाने हों। फिर अख़ीर में وَاللَّهُ يُضَٰعِفُ لِمَن يَشَآءُ फ़रमा दिया-

कि अल्लाह तआ़ला जिस के लिए चाहता है बढ़ा देता है।

इस से मालूम हुआ कि सात सौ पर भी काफ़ी नहीं, इस से ज़्यादा अल्लाह तआ़ला जिस के लिए चाहता है बढ़ा देता है। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, "जिस ने अल्लाह की राह में ख़र्चा भेज दिया और वह अपने घर ही में रहा तो उसे हर दिरहम के बदले सात लाख दिरहम का सवाब होगा।" फिर आयते करीमा وَاللَّهُ يُضَٰعِفُ لِمَن يَشَآءُ तिलावत फ़रमाई। **(इब्ने माजा)**

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़याज़ रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि बिलाशुब्हा अल्लाह तआ़ला ने नेकियों और बुराईयों (के क़ानून) को लिख दिया है सो जो शख़्स किसी नेकी का इरादा करे फिर उसे न करे तो अल्लाह तआ़ला उस के लिए अपने पास से एक पूरी नेकी लिख देता है और अगर इरादा करने के बाद उस नेकी को भी कर ले तो अल्लाह तआ़ला अपने पास से उस जैसी दस नेकियाँ सात सौ गुना तक (बल्कि) इस से भी ज़्यादा बढ़ा कर लिख देता है और अगर कोई शख़्स किसी बुराई का इरादा करता है फिर वह (अल्लाह के डर से उसे छोड़ देता है) और

अपने इरादे पर अ़मल नहीं करता तो अल्लाह तआ़ला उस के लिए एक नेकी लिख देता है और अगर बुराई का इरादा करने के बाद उस पर अ़मल भी कर लिया तो अल्लाह तआ़ला उस के लिए एक गुनाह लिख देता है। **(बुख़ारी व मुस्लिम)**

दूसरी रिवायत में है कि जब गुनाह का इरादा करके छोड़ देता है और गुनाह को नहीं करता तो अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं اِنَّمَا تَرَكَهُ مِنْ جَرَّاءِىْ यानी उस के लिए गुनाह छोड़ने की वजह से नेकी लिखी गई क्योंकि उस ने गुनाह मेरी वजह से छोड़ा है। **(मुस्लिम भाग 1, पेज नं० 78)**

161-163 قُلْ اِنَّنِىْ هَدٰىنِىْ رَبِّىْٓ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۚ دِيْنًا قِيَمًا مِّلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ۚ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ قُلْ اِنَّ صَلَاتِىْ وَنُسُكِىْ وَمَحْيَاىَ وَمَمَاتِىْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ لَا شَرِيْكَ لَهٗ ۚ وَبِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُسْلِمِيْنَ ۝

मरना जीना सब अल्लाह ही के लिए

अल्लाह तआ़ला ने नबी अकरम (सल्ल०) से ख़िताब फ़रमाया कि आप अपने बारे में उन लोगों को बता दें कि मेरे रब ने मुझे हिदायत दी है और सीधा रास्ता बता कर उसी पर चला दिया है। यह सीधा रास्ता 'मज़बूत दीन' है और इसी मिल्लत पर ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) थे वह तमाम दीनों से कट कर तौह़ीद (एकेश्वरवाद) को अख़्तियार किये हुए थे और तौह़ीद ही की दअ़वत देते थे। (इस में मुश्रिकीन पर कमेन्ट है क्योंकि वह भी मिल्लते इब्राहीम के दावेदार थे, लेकिन शिर्क में डूबे हुए थे। ह़ालाँकि इब्राहीम (अ़लै०) मुवह्ह़िद (एकेश्वरवादी) थे मुश्रिक नहीं थे।)

इस के बाद उस हिदायत की तफ़्सील बयान फ़रमाई जिस से अल्लाह तआ़ला ने ख़ातिमुन्नबीय्यीन (सल्ल०) को नवाज़ा है और फ़रमाया-

قُلْ اِنَّ صَلَاتِىْ وَنُسُكِىْ وَمَحْيَاىَ وَمَمَاتِىْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ لَا شَرِيْكَ لَهٗ ۚ

कि आप यह भी फ़रमा दीजिए कि "बिलाशुब्हा मेरी नमाज़ और मेरी तमाम अ़िबादतें, मेरा मरना व जीना सब अल्लाह ही के लिए है जो रब्बुल् आ़लमीन है उस का कोई शरीक नहीं।"

इस में दो बातें बताई गईं। पहली यह कि हर काम अल्लाह की रज़ा के लिए होना चाहिए। दूसरे यह कि मोमिन की ज़िन्दगी भी क़ीमती और मौत भी क़ीमती है। अल्लाह ही के लिए जिये और अल्लाह ही के लिए मरे, पूरी ज़िन्दगी अल्लाह के हुक्मों की पाबन्दी में गुज़ारे और फ़रायज़ व वाजिबात के अ़लावा भी उन्हीं कामों में लगाए जिन से अल्लाह का क़रीबी होता है और जब मरने लगे तो ईमान ही पर मरे उसकी यह मौत क़ीमती हो जाएगी क्योंकि मौत ही आख़िरत की नेअ़मतों के दर्मियान रुकावट है। जब मोमिन बन्दा मौत के पुल से पार हो जाए तो उस के लिए ख़ैर ही ख़ैर है। अगर आम ईमान वाली ज़िन्दगी गुज़ारते हुए किसी जिहाद शरई में शरीक हो कर दीन के दुश्मनों के हाथों शहीद हो गया तो शहादत की वजह से उस की मौत और ज़्यादा क़ीमती हो जाएगी।

हर मोमिन अपनी मौत और ज़िन्दगी को क़ीमती समझे, अपने मक़ाम को पहचाने और क़ीमती ज़िन्दगी को बर्बाद न करे। मोमिन अपना सब कुछ जान व माल, ज़िन्दगी और मौत अल्लाह ही को राज़ी करने के लिए ख़र्च करे क्योंकि (अल्लाह रब्बुलू आलमीन इसका परवरदिग़ार है। उस का हक़ है कि थोड़ी सी ज़िन्दगी उस की राह में ख़र्च हो जाए।)

وَ بِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُسْلِمِيْنَ

(और मुझे इसी का हुक्म हुआ है और मैं सब से पहला फ़रमाँबरदार हूँ।)

यह अव्वलियत (प्राथमिकता) इस उम्मत के एतिबार से है। यानी मौजूदा आख़िरी उम्मत का सब से पहला मुस्लिम हूँ और अल्लाह तआला का फ़रमाँबरदार हूँ।

दूसरे हज़रात अम्बिया (अलै०) भी अपनी-अपनी उम्मतों में सब से पहले मुस्लिम और फ़रमाँबरदार थे। وهــذا شان كل نبى بالنسبة الى أمته *(रुहुलू मआनी)*

इस में इस तरफ़ भी इशारा है कि मैं सिर्फ़ दअवत देने वाला ही नहीं अमल करने वाला भी हूँ।

हज़रत मूसा (अलै०) ने अल्लाह से यूँ अर्ज़ किया था سُبْحٰنَكَ تُبْتُ اِلَيْكَ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُسْلِمِيْنَ और वजह उसकी यह है कि हर नबी ईमान लाने और अपनी लाई हुई शरीअत पर अमल करने का पाबन्द होता था और उम्मत से पहले ख़ुद उसके लिए ईमान और आमाल में उसे प्राथमिकता हासिल होती थी। कुर्बानी की दुआ में भी शब्द اِنَّ صَلَاتِىْ से लेकर الْمُسْلِمِيْنَ तक आये हैं लेकिन इस में اَوَّلُ الْمُسْلِمِيْنَ नहीं बल्कि مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ है। चूंकि उम्मत को दुआ की तअलीम देना था और कुर्बानी के वक़्त पढ़वाना था इसलिए اَوَّلُ الْمُسْلِمِيْنَ के बजाय ख़ुद भी **वअना मिनलू मुस्लिमीन** पढ़ा। **(अबूदाऊद, भाग 2, पेज नं० 30)**

164 قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِىْ رَبًّا وَّهُوَ رَبُّ كُلِّ شَىْءٍ ؕ وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ اِلَّا عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۚ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ۝

अल्लाह के सिवा कोई रब नहीं

यहाँ फिर मुश्रिकीन से कहा जा रहा है न सिर्फ़ मुश्रिकीन बल्कि वह तमाम लोग इस के मुख़ातब हैं जो विश्वास और अमल में अल्लाह को छोड़ कर दूसरों को रब बनाते हैं और उन के साथ ऐसा मामला करते हैं जो पालनहार के साथ होना चाहिए। इर्शाद फ़रमायाः-

قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِىْ رَبًّا وَّهُوَ رَبُّ كُلِّ شَىْءٍ ؕ

"आप फ़रमा दीजिए क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई दूसरा रब तलाश करूँ हालाँकि वह हर चीज़ का रब है।"

मतलब यह है कि मैं तो ऐसा नहीं कर सकता और कर ही कैसे सकता हूँ, जबकि अल्लाह सब का रब है। अपनी बेवकूफ़ी से तुम जिन चीज़ों को रब बनाये हुए हो अल्लाह तआला उन का भी रब है। अपनी जैसी मख़्लूक़ को बल्कि अपने से भी कमतर चीज़ों को मअबूद बनाना बेवकूफ़ी है। मैं तुम्हारी

बेवकूफ़ी का कैसे साथ दे सकता हूँ? फिर फ़रमायाः-

وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ إِلَّا عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ

यानी जो शख़्स कोई ग़लत अ़क़ीदा रखेगा या कोई गुनाह करेगा तो उस का वबाल उसी पर होगा। कोई दूसरा किसी का बोझ नहीं उठाएगा जो लोग दुनिया में कहते हैं कि तुम हमारे साथ हमारे गुनाहों में शरीक हो जाओ और हमारे ग़ैर इस्लामी रस्म व रिवाज में शरीक हो जाओ इस का वबाल हम पर होगा।

यह इसलिए कह देते हैं कि उन्हें अल्लाह की वओ़दों (चेतावनी) पर यक़ीन नहीं है। क़ियामत के दिन कोई किसी का वबाल अपने सर नहीं लेगा और कोई किसी की तरफ़ से बदला नहीं देगा, फिर फ़रमाया-

ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُم مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ

"फिर तुम को अपने रब की तरफ़ लौट जाना है सो वह तुम्हें जतला देगा जिन चीज़ों में तुम इख़्तिलाफ़ (मतभेद) करते हो।"

वहाँ उन लोगों की निजात हो जाएगी जो अल्लाह के दीन पर थे और सब पर खुल जाएगा कि ह़क़ बात कौन सी और किस की थी।

165 وَهُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلَائِفَ الْأَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَاتٍ لِّيَبْلُوَكُمْ فِي مَا آتَاكُمْ ۗ إِنَّ
رَبَّكَ سَرِيعُ الْعِقَابِ وَإِنَّهُ لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ

अल्लाह तआ़ला का ख़लीफ़ा

सूरः अनूआ़म में बार-बार दीने ह़क़ की दअ़वत दी गई है, तौह़ीद की तरफ़ बुलाया गया है और मुश्रिकीन की बेवकूफ़ी बयान फ़रमा कर उन के शिर्किया रस्म व रिवाज को रद्द किया गया है फिर तौह़ीद पर दलायल क़ायम किये गये हैं।

अब आख़िर में अल्लाह तआ़ला की बाज़ नेअ़मतों का ज़िक्र फ़रमाया गया है, वह यह कि अल्लाह ने तुम्हें ज़मीन में ख़लीफ़ा बनाया पहली उम्मतें चली गईं एक दूसरे के बाद आती रहीं, अब तुम उन के बाद ज़मीन में आये हो।

ज़मीन में तुम्हें सत्ता सौंप दिया और सब को एक ह़ालत में नहीं रखा इस में ग़नी भी हैं, फ़क़ीर भी हैं, मज़बूत और कमज़ोर भी, ह़ाकिम और महकूम भी, यह सत्ता देना और दर्जे रखना इसलिए है कि अल्लाह तआ़ला तुम्हें आज़माए कि जिसको विशेषता किसी माल के एतिबार से या मन्सब व मर्तबः किसी भी हैसियत से दिया है वह उस को इस काम में लगाता है या नहीं, इन्साफ़ करता है या ज़ुल्म, बेकसो पर रह़म खाता है या उन्हें सताता है। अल्लाह का ह़क़ और बन्दों का ह़क़ अदा करता है या नहीं।

यह सब छोटे बड़े क़ियामत के दिन ह़ाज़िर होंगे, ज़ालिम मज़्लूम के दर्मियान इन्साफ़ होगा, ज़ालिमों को सज़ा मिलेगी, बन्दों के ह़ुक़ूक़ की अदायगी नेकियों के ज़रिये होगी, जो अल्लाह के ह़ुक़ूक़ अदा नहीं

किये उन को अल्लाह तआ़ला चाहेगा तो अ़ज़ाब देगा और चाहेगा तो माफ़ फ़रमा देगा वह जल्द ह़िसाब लेने वाला है और बिलाशुब्हा वह माफ़ करने वाला है।

दुनिया में जो अल्लाह तआ़ला ने एक दूसरे में अन्तर रखा है उस का एक फ़ायदा यह है कि जिस किसी के पास कोई नेअ़मत है वह उस नेअ़मत पर शुक्र अदा करे और जो इस से कम हैसियत के लोग हैं उन को देखकर नसीह़त ह़ासिल करे और बार-बार ध्यान करे कि अगर अल्लाह तआ़ला चाहता तो मुझे तंगदस्त, अपाहिज, लूला, लंगड़ा, नाबीना बना देता। अगर इस तरह़ ग़ौर करेगा तो न दूसरों को ह़क़ीर जानेगा और न अल्लाह की नाशुक्री करेगा।

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, “जब तुम में से कोई शख़्स ऐसे शख़्स को देखे जो माल और शक्ल व सूरत में उस से बढ़कर है तो उस को भी देख ले जो उस से कम है।” **(मिश्कातुल् मसाबीह़ भाग 2 पेज नं० 447)**

एक ह़दीस में है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, तुम उस को देखो जो तुम से कम है और उसको न देखो जो तुम से ज़्यादा है। ऐसा करोगे तो तुम पर जो अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतें हैं उन को ह़क़ीर जानोगे। **(रवाहु मुस्लिम भाग 2, पेज नं० 407)**

और एक ह़दीस में यूँ है कि जिस शख़्स में दो बातें होंगी अल्लाह तआ़ला उसे सब्र और शुक्र करने वालों में लिख देगा। दीन में उसे देखे जो उस से बढ़ कर है फिर उस की पैरवी करे और दुनिया में उसे देखे जो उस से कमतर हो, फिर अल्लाह की ह़म्द बयान करे कि अल्लाह ने उसे उस शख़्स पर फ़ज़ीलत दी है। ऐसे शख़्स को अल्लाह शुक्रगुज़ार और सब्र करने वाला लिख देगा और जिस ने अपने दीन में ऐसे शख़्स को देखा जो उस से कम है और दुनिया में उसे देखा जो उस से बढ़ कर है, फिर उसे इस बात पर रंज हुआ कि दुनिया में मुझे इतना-इतना नहीं मिला तो अल्लाह उसे न शुक्रगुज़ार लिखेगा और न सब्र करने वाला लिखेगा। **(मिश्कातुल् मसाबीह़)**

(भाग–7)

सूर–ए–अअ़राफ़

(सूरः नं. 7)

आयत नं० 1 से 18 तक

المٓصٓ ۞ كِتٰبٌ اُنْزِلَ اِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِيْ صَدْرِكَ حَرَجٌ مِّنْهُ لِتُنْذِرَ بِهٖ وَذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۞ اِتَّبِعُوْا مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ
وَلَا تَتَّبِعُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ۞ وَكَمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا فَجَآءَهَا بَاْسُنَا بَيَاتًا اَوْ هُمْ قَآىِٕلُوْنَ ۞ فَمَا كَانَ دَعْوٰىهُمْ
اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَآ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۞ فَلَنَسْـَٔلَنَّ الَّذِيْنَ اُرْسِلَ اِلَيْهِمْ وَلَنَسْـَٔلَنَّ الْمُرْسَلِيْنَ ۞ فَلَنَقُصَّنَّ عَلَيْهِمْ بِعِلْمٍ وَّمَا
كُنَّا غَآىِٕبِيْنَ ۞ وَالْوَزْنُ يَوْمَىِٕذِ ۨالْحَقُّ ۚ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۞ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا
اَنْفُسَهُمْ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَظْلِمُوْنَ ۞ وَلَقَدْ مَكَّنّٰكُمْ فِي الْاَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ۞ وَلَقَدْ خَلَقْنٰكُمْ ثُمَّ
صَوَّرْنٰكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلٰۗىِٕكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ ڰ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ۭ لَمْ يَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ۞ قَالَ مَا مَنَعَكَ اَلَّا تَسْجُدَ اِذْ اَمَرْتُكَ ۭ
قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۚ خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ وَّخَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ ۞ قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُوْنُ لَكَ اَنْ تَتَكَبَّرَ فِيْهَا فَاخْرُجْ اِنَّكَ مِنَ
الصّٰغِرِيْنَ ۞ قَالَ اَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ۞ قَالَ اِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ۞ قَالَ فَبِمَآ اَغْوَيْتَنِيْ لَاَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ
الْمُسْتَقِيْمَ ۞ ثُمَّ لَاٰتِيَنَّهُمْ مِّنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ اَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَاۗىِٕلِهِمْ ۭ وَلَا تَجِدُ اَكْثَرَهُمْ شٰكِرِيْنَ ۞ قَالَ
اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُوْمًا مَّدْحُوْرًا ۭ لَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۞

अनुवाद-

(1) अलिफ़्- लाम्- मीम्- साद्, (2) (ऐ मुहम्मद) किताब जो आप की ओर उतारी गयी, इससे आपके सीने में कोई तंगी न हो, ताकि आप इसके ज़रिये सचेत करें, और यह ईमान वालों के लिए नसीहत है; (3) जो (किताब) आप के रब की ओर से आपकी ओर नाज़िल हुई है, उसकी पैरवी करें और उसे छोड़ कर दूसरे साथियों की पैरवी न करें, (मगर) तुम लोग कम ही नसीहत कुबूल करते हो। (4) और कितनी ही बस्तियाँ थीं, जिन्हें 'हमने' हलाक कर दिया, उन पर 'हमारा' अज़ाब रात को आता था, जबकि वे सो रहे होते, या (दिन को) वे क़ैलूला (दोपहर को आराम) कर रहे होते; (5) तो जिस वक़्त उन पर अज़ाब आता था तो उनके मुहँ से यही निकलता था, ''हक़ीक़त में हम ही ज़ालिम थे'' (6) तो 'हम' उन लोगों से ज़रूर पूछेंगे, जिनके पास रसूल भेजे गये थे, और 'हम' रसूलों से भी ज़रूर पूछेंगे (7) फिर 'हम' पूरे इल्म के साथ उनके सामने सब बयान कर देंगे, कि 'हम' कहीं ग़ायब तो नहीं थे। (8) और उस दिन बिल्कुल पक्का सच्चा वज़न होगा, तो जिनके अ़मल वज़न में भारी होंगे, वही कामियाब होंगे। (9) और वे लोग जिनके अ़मल वज़न में हल्के होंगे, तो वही वे लोग होंगे, जिन्होंने अपने आप को घाटे में डाला, क्योंकि वह 'हमारी' आयतों का इन्कार और अपने ऊपर जुल्म करते रहे। (10) और 'हम' ही ने ज़मीन में तुम्हारा ठिकाना बनाया और उसमें तुम्हारे लिए रोज़ी के सामान पैदा किये, (मगर) तुम बहुत कम शुक्र करते हो। (11) और 'हम' ही ने तुमको पैदा किया, फिर तुम्हारी सूरत व शक्ल बनाई, फिर फ़रिश्तों को हुक्म दिया, "आदम को सज्दः करो'' तो उन्होंने सज्दः किया सिवाय इब्लीस के, वह सज्दः करने वालों में से न हुआ; (12) फ़रमाया, ''तुझे किसने सज्दः करने से रोका, जबकि "मैंने तुझे हुक्म दिया?" 'बोला; ''मैं इससे अच्छा हूँ 'तूने' मुझे आग से पैदा किया और इसे मिट्टी से पैदा किया।'' (13) फ़रमाया, ''उतर जा यहाँ से! तुझे कोई हक़ नहीं है

कि यहाँ घमंड करे, बस निकल जा; बेशक तू ज़लील है।'' (14) (उसने) कहा, ''मुझे उस दिन तक मोहलत दीजिए, जिस दिन लोग उठाए जाएँगे।' (15) फ़रमाया,''तुझे मोहलत है।'' (16) कहा, ''अच्छा, इस वजह से कि 'तूने' मुझे गुमराही में डाला है, मैं भी 'तेरी' सीधी राह पर उनके लिए घात लगा कर ज़रूर बैठूँगा; (17) फिर उनके आगे, और उनके पीछे, और उनके दाएँ, और उनके बाएँ से, उनके पास आऊँगा; और 'तू' उनमें से अक्सर लोगों को शुक्रगुज़ार न पाएगा।'' (18) फ़रमाया, ''निकल जा यहाँ से! ज़लील व ख़्वार होकर, उनमें से जो तेरी पैरवी करेंगे, 'मैं' ज़रूर तुम सबसे जहन्नम को भर दूँगा''।

आयत नं० 1 से 18 तक की व्याख्या

1-5 الٓمّٓصٓ ۝ كِتٰبٌ اُنْزِلَ اِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِيْ صَدْرِكَ حَرَجٌ مِّنْهُ لِتُنْذِرَ بِهٖ وَذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۝ اِتَّبِعُوْا مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلَا تَتَّبِعُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ ۗ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ۝ وَكَمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا فَجَآءَهَا بَاْسُنَا بَيَاتًا اَوْ هُمْ قَآئِلُوْنَ ۝ فَمَا كَانَ دَعْوٰىهُمْ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَآ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝

मोमिनीन के लिए नसीहत

इन आयात में पहले तो यह फ़रमाया कि आप की तरफ़ यह किताब नाज़िल की गई है ताकि आप इस के ज़रिये लोगों को डराएँ, ईमान की दअ़वत दें और जो लोग न मानें उन को बताएँ कि इस किताब पर ईमान न लाने से अ़ज़ाब में मुब्तिला होंगे। साथ ही यह भी फ़रमाया فَلَا يَكُنْ فِيْ صَدْرِكَ حَرَجٌ

कि आपके सीने में ज़रा भी तंगी न हो। आप की दअ़वत को जो झुठला कर मुक़ाबिला करें उसकी आप ज़रा परवाह न करें आप अपना काम करते रहें।

इस के बाद लोगों से फ़रमाया कि जो कुछ तुम्हारी तरफ़ तुम्हारे रब की तरफ़ से नाज़िल हुआ है उस का इत्तिबअ़ करो और अपने रब को छोड़कर दूसरे लोगों को क़रीबी दोस्त न बनाओ। तुम्हारे सामने हिदायत की बातें आती हैं मगर तुम्हारा ह़ाल यह है कि नसीह़त ह़ासिल नहीं करते।

फिर फ़रमाया कि हम ने बहुत सी बस्तियों को हलाक कर दिया जिन पर हमारा अ़ज़ाब रात के वक़्त आया और बाज़ के पास ऐसे वक़्त अ़ज़ाब पहुँचा जब कि वह क़ैलुल्लाह कर रहे थे यानी दोपहर के वक़्त सो रहे थे, जो लोग हिदायत से मुँह मोड़ते हैं और ह़क़ को क़ुबूल नहीं करते उन पर दुनिया में भी अ़ज़ाब आता है और आख़िरत में भी पकड़ होगी और हमेशा-हमेश के अ़ज़ाब में मुब्तिला होंगे, उन लोगों पर जब अ़ज़ाब आया तो बस यही कहने लगे कि हम ज़ालिम थे, अ़ज़ाब आ जाने के बाद अपने ज़ुल्म का एतिराफ़ और इक़रार करने से अ़ज़ाब वापस नहीं होता लिहाज़ा बावजूद इक़रारे ज़ुल्म के वह लोग हलाक हो गये।

6-9 فَلَنَسْئَلَنَّ الَّذِيْنَ اُرْسِلَ اِلَيْهِمْ وَلَنَسْئَلَنَّ الْمُرْسَلِيْنَ ۝ فَلَنَقُصَّنَّ عَلَيْهِمْ بِعِلْمٍ وَّمَا كُنَّا غَآئِبِيْنَ ۝ وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذِ ﹰالْحَقُّ ۚ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ

خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَظْلِمُوْنَ ۝

क़ियामत के दिन सवाल

इन आयात में आख़िरत के सवाल व जवाब और अ़क़ायद व आ़माल के तौले जाने का फिर वज़न के हल्का भारी होने का और उस के मुताबिक़ कामियाब और नाकाम होने का ज़िक्र फ़रमाया। क़ियामत के दिन उम्मतों से सवाल होगा कि तुम्हारे पास रसूल आये थे तो तुम ने उन को क्या जवाब दिया था (सूरतुल् क़सस *आयत नं० 65)* وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ مَاذَآ اَجَبْتُمُ الْمُرْسَلِيْنَ ۝

और ह़ज़रत रसूले अक्रम व अम्बिया-ए-किराम (अ़लै०) से भी सवाल होगा कि क्या आप ह़ज़रात ने हमारा पैग़ाम पहुँचाया था और यह भी सवाल होगा कि उम्मतों ने इस का क्या जवाब दिया।

सह़ीह़ मुस्लिम में है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने ख़ुत्बः दिया (और नसीह़तें फ़रमाईं) और आख़िर में फ़रमाया कि मेरे बारे में तुम से पूछा जाएगा तो क्या जवाब दोगे? ह़ाज़िरीन ने अ़र्ज़ किया कि हम यह गवाही देंगे कि आप (सल्ल०) ने (अल्लाह का पैग़ाम) पहुँचाया और अपनी ज़िम्मेदारी पूरी की और (उम्मत की) ख़ैर ख़्वाही की, आप ने अपने अँगूठे के पास वाली उंगली को आसमान की तरफ़ उठाया और फिर लोगों की तरफ़ झुकाया और तीन बार अल्लाह तआ़ला से अ़र्ज़ किया-

اَللّٰهُمَّ اشْهَدْ اَللّٰهُمَّ اشْهَدْ اَللّٰهُمَّ اشْهَدْ

"ऐ अल्लाह! तू गवाह हो जा। ऐ अल्लाह तू गवाह हो जा।" **(मुस्लिम)**

ह़ज़रत अबू सईद ख़ुद्री (रज़ि०) से रिवायत है कि क़ियामत के रोज़ ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) को लाया जाएगा और उन से सवाल होगा कि तुम ने तब्लीग़ (बात पहुँचाई) की? वह अ़र्ज़ करेंगे कि ऐ रब! मैंने तब्लीग़ की थी, उन की उम्मत से सवाल होगा कि इन्होंने तुम्हें अह़काम पहुँचाए थे? वह कहेंगे नहीं हमारे पास कोई डराने वाला नहीं आया। इस के बाद ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) से पूछा जाएगा तुम्हारे दावे की तस्दीक़ के गवाह कौन हैं? वह जवाब देंगे कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) और उन के उम्मती हैं। यहाँ तक वाक़िआ़ नक़्ल करने के बाद ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने अपनी उम्मत को ख़िताब करके फ़रमाया कि इस के बाद तुम को लाया जाएगा और गवाही दोगे कि बेशक ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) ने अपनी उम्मत को तब्लीग़ की थी इस के बाद रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने यह आयत तिलावत फ़रमाई-

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ اُمَّةً وَّسَطًا لِّتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ عَلَيْكُمْ شَهِيْدًا ؕ (सूरः बक़रः-143)

बुख़ारी भाग 2, पेज नं० 645 और मुस्नद अह़मद की रिवायत में है कि ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) के अ़लावा दूसरे अम्बिया-ए-किराम (अ़लै०) की उम्मतें भी इन्कारी होंगी कहेंगी कि हम को तब्लीग़ नहीं की गई, उन के नबियों से सवाल होगा कि तुम ने तब्लीग़ की थी? वह कहेंगे कि हम ने तब्लीग़ की थी, उन से गवाह तलब किये जाएँगे तो वह ह़ज़रत मुह़म्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) और आप की उम्मत को गवाही में पेश कर देंगे। चुनाँचे यह ह़ज़रात अ़र्ज करेंगे कि हम पैग़म्बरों के दावे की तस्दीक़ करते हैं। उन से

सवाल होगा कि तुम्हें इस मामले में क्या ख़बर? वह जवाब में अ़र्ज़ करेंगे कि हमारे पास ह़ज़रत मुह़म्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) आये और उन्होंने ख़बर दी कि तमाम पैग़म्बरों ने अपनी-अपनी उम्मतों को तब्लीग़ की, लिहाज़ा हम उन की तस्दीक़ (पुष्टि) करते हैं। **(दुर्रे मन्सूर पेज नं० 144, भाग 1)**

फिर फ़रमाया فَلَنَقُصَّنَّ عَلَيْهِمْ بِعِلْمٍ وَمَا كُنَّا غَآئِبِيْنَ "सो हम उन के सामने ज़रूर बयान कर देंगे इल्म के मुताबिक़ और हम ग़ायब न थे।" मुफ़स्सिर इब्ने कसीर भाग 2, पेज 201 की तफ़्सीर करते हुए लिखते हैं يوضع الكتب يوم القيامة فيتكلم بما كانوا يعملون कि आमाल नामे रख दिये जाएँगे वह तमाम आमाल को ज़ाहिर कर देंगे फिर وَمَا كُنَّا غَآئِبِيْنَ की तफ़्सीर करते हुए लिखते हैं।

क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों को उन की बात और आ़माल सब बता देगा छोटे आ़माल हों या बड़े क्योंकि अल्लाह तआ़ला को हर चीज़ का इल्म है।

आ़माल का वज़न–

क़ियामत के दिन इन्सानों के आ़माल तौले जाएँगे। एक और मक़ाम पर अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया, "और क़ियामत के दिन हम (लोगों के आ़माल तौलने के लिए) इन्साफ़ का वज़न क़ायम करेंगे।" **(सूरः अम्बिया, 47)**

अह़ादीस में भी आ़माल के वज़न का बयान है। जैसे नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, "दो कलिमे अल्लाह तआ़ला को बहुत प्यारे हैं, ज़बान पर बहुत हल्के और मीज़ान (आ़माल की तराज़ू) में बहुत भारी हैं।

वह यह हैं (سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ) "अल्लाह पाक है अपनी तअ़रीफ़ों के साथ, अल्लाह पाक है बड़ी अ़ज़्मत वाला।" **(सह़ीह़ बुख़ारी, अल् तौहीद 58 ह़दीस 7563)**

इस का मतलब यह है कि अल्लाह तआ़ला को उन तमाम बातों से पाक समझता हूँ जो उस के शान के मुताबिक़ नहीं हैं मगर उस की तरफ़ मन्सूब की जाती हैं। मैं अल्लाह तआ़ला को उन चीज़ों से बहुत बुलन्द व आ़ला समझता हूँ जो उस की तरफ़ मन्सूब की जाती हैं और मैं उस की ह़म्द और तस्बीह़ बयान करता हूँ।

अल्लाह रब्बुल् आ़लमीन हमेशा से सारी मख़्लूक़ के आ़माल से वाक़िफ़ है, अगर क़ियामत के मैदान में सिर्फ़ अपनी मालूमात की बिना पर आ़माल की जज़ा व सज़ा दे तो उन को इस का भी ह़क़ है, लेकिन मैदाने ह़श्र में ऐसा न किया जाएगा बल्कि बन्दों के सामने उन के आ़माल नामे पेश किये जाएँगे वज़न होगा, गवाहियाँ होंगी और मुजरिमीन में इन्कारी भी होंगे और दलील से जुर्म साबित भी कर लिया जाएगा कि सज़ा भुगतने वाले यूँ न कह सकें कि हम को ज़ुल्मन बिला वजह अ़ज़ाब में डाला गया। इसी को फ़रमाया–

وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذِ إِلْحَقُّ और उस दिन वज़न करना ह़क़ है सो जिन का वज़न भारी होगा वही लोग बामुराद होंगे और जिन का वज़न हल्का होगा सो वही हैं जिन्होंने अपनी जानों का नुक़्सान किया, इस वजह से कि वह हमारी आयतों का इन्कार करते थे वज़न आ़माल का ज़िक्र यहाँ सूरः अअ़राफ़ में भी है और सूरः मोमिनून व सूरः क़ारिअ़ः में भी है। फ़रमायाः–

فَأَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ ۝ فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَّاضِيَةٍ ۝ وَأَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ ۝ فَأُمُّهُ هَاوِيَةٌ ۝

सो जिस के वज़न भारी हुए वह ख़ुशी की ज़िन्दगी में होगा और जिस के वज़न हल्के हुए तो उस का ठिकाना 'हाविया' यानी दोज़ख़ है। ह़ज़रत सल्मान (रज़ि०) से रिवायत है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया कि क़ियामत के रोज़ (आ़माल तौलने की तराज़ू) रख दी जाएगी।

(और वह इतनी लम्बी चौड़ी होगी कि) अगर इस में सारे आसमान व ज़मीन रखकर वज़न किये जाएँ तो सब इस में आ जाएँ। इस को देखकर फ़रिश्ते अल्लाह से अ़र्ज़ करेंगे कि यह किस के आ़माल तौलेगी? अल्लाह तआ़ला फ़रमाएँगे कि मैं अपनी मख़्लूक़ में से जिस के आ़माल चाहूँगा तौल क़ायम होगा। यह सुनकर फ़रिश्ते अ़र्ज़ करेंगे कि ऐ अल्लाह! आप पाक हैं। जैसे अ़िबादत का ह़क़ है हम ने ऐसी अ़िबादत आप की नहीं की। **(अल् ह़ाकिम, सह़ीह़ मुस्लिम)**

ह़ज़रत अनस (रज़ि०) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से रिवायत फ़रमाते हैं कि आप ने इर्शाद फ़रमाया (क़ियामत के रोज़) तराज़ू पर एक फ़रिश्ता मुक़र्रर होगा (आ़माल को वज़न करने के लिए) इन्सान इस तराज़ू के पास लाए जाते रहेंगे, जो आएगा तराज़ू के दोनों पलड़ों के दर्मियान खड़ा कर दिया जाएगा। बस अगर उस के तौल भारी हुए तो वह फ़रिश्ता ऐसी बुलन्द आवाज़ से पुकार कर एलान कर देगा जिसे सारी मख़्लूक़ सुनेगी कि फ़लाँ हमेशा के लिए नेक हो गया, अब इस के बाद बद्नसीब न होगा और अगर उस के तौल हल्के रहे तो वह फ़रिश्ता ऐसी बुलन्द आवाज़ से पुकार कर एलान कर देगा जिसे सारी मख़्लूक़ सुनेगी कि फ़लाँ हमेशा के लिए नाकाम हो गया अब कभी इस के बाद ख़ुशनसीब न होगा।

(बज्ज़ार व बैहक़ी)

बाज़ उ़लमा ने फ़रमाया कि क़ियामत के रोज़ आ़माल को जिस्म देकर ह़ाज़िर किया जाएगा और यह जिस्म तुलेंगे और उन जिस्मों के वज़नों के हल्का भारी होने पर फ़ैसले होंगे। काग़ज़ों का तुल्ना या आ़माल को जिस्म देकर तौला जाना कोई अचम्भे की बात नहीं है और आ़माल को बग़ैर वज़न के तौल देना भी क़ुद्रत से बाहर नहीं है।

आज साइंस का दौर है और ईजादात (Discovries) रोज़ बरोज़ तरक़्क़ी पर हैं आ़माल का तौल में आ जाना बिल्कुल समझ में आ जाता है। यह इन्सान जिन को अल्लाह तआ़ला ने थोड़ी सी समझ दी है थर्मामीटर के ज़रिये जिस्म के ह़रारत की मिक़्दार बता देते हैं और इसी तरह़ के बहुत से आलात हैं जो जिस्म के अ़लावा दूसरी चीज़ों की मिक़्दार मालूम करने के लिए बनाये गये हैं तो उस एक अल्लाह की क़ुद्रत से यह कैसे बाहर माना जाए कि अ़मल तौल में न आ सकेंगे। शायद किसी को यह शुब्हा हो कि आ़माल तो कोई वस्तु (Material existence) नहीं रखते और वजूद में आने के साथ ही फ़ना होते रहते हैं और फिर आख़िरत में कैसे जमा होंगे? इस शुब्हे की मौजूदा दौर में कोई हैसियत नहीं रही क्योंकि अब टेलीविज़न और इण्टरनेट व इन्फ़ारमेशन टेक्नालोजी के उपकरणों ने बता दिया कि ह़रकात और आवाज़ को रिर्काड किया जा सकता है जब अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों को शब्द और ह़रकात को गिरफ़्त में लेकर इकट्ठा करने और रिकार्ड में लाने की ताक़त दी तो वह ख़ुद इस पर क़ादिर है कि

अपनी मख़्लूक़ के आ़माल व अफ़आ़ल का मुकम्मल रिकार्ड बता दे, जिस में से एक ज़र्रा और शोशा भी ग़ायब न हो और ज़ाहिरी तौर पर क़ियामत के रोज़ उन का वज़न सब के सामने ज़ाहिर हो जाए।

सूरः इब्राहीम आयत नं० (51) में है لِيَجْزِيَ اللّٰهُ كُلَّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ

मज़्हरी अ़ल्लामा सियोती (रह़०) से नक़्ल फ़रमाते हैं कि अहले इल्म का इस में इख़्तिलाफ़ है कि मोमिनीन के आ़माल का सिर्फ़ वज़न होगा या काफ़िरों के आ़माल भी तौले जाएँगे? एक जमाअ़त का कहना है कि सिर्फ़ मोमिनीन के आ़माल तौले जाएँगे (क्योंकि) काफ़िरों की नेकियाँ तो बेकार हो जाएँगी। उस जमाअ़त ने इस आयत فَلَا نُقِيْمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا *(सूरः कहफ़-105)* को दलील माना है।

दूसरी जमाअ़त कहती है कि कुफ़्फ़ार के आ़माल भी तौले जाएँगे, लेकिन वह बेवज़न निकलेंगे उन की दलील यह आयत وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فِيْ جَهَنَّمَ خٰلِدُوْنَ *(सूरः मोमिनून-103)* है और जिन की तौल हल्की निकलेगी सो यह वह लोग हैं जो हार बैठे अपनी जान, यह दोज़ख़ में हमेशा रहेंगे। मतलब यह है कि अल्लाह तआ़ला ने इस आयते करीमा में हल्की तौल निकलने वालों के बारे में फ़रमाया कि वह दोज़ख़ में हमेशा रहेंगे। इस से मालूम हुआ कि काफ़िरों के आ़माल भी तौले जाएँगे क्योंकि इस पर सब का इत्तिफ़ाक़ है कि मोमिन कोई भी दोज़ख़ में हमेशा न रहेगा।

इस के बाद साह़िबे तफ़्सीर मज़्हरी, अ़ल्लामा कुर्तुबी (रह़०) का क़ौल नक़्ल फ़रमाते हैं कि हर एक के आ़माल नहीं तौले जाएँगे (बल्कि इस में तफ़्सील है और वह यह कि) जो लोग बिना ह़िसाब जन्नत में जाएँगे या जिन को दोज़ख़ में बिना ह़िसाब मैदाने ह़श्र क़ायम होते ही जाना होगा। इन दोनों जमाअ़तों के आ़माल न तौले जाएँगे और न उन के अ़लावा बाक़ी मोमिनीन व कुफ़्फ़ार के आ़माल का वज़न होगा।

कुफ़्फ़ार की नेकियाँ-

सूरः कहफ़ के आख़िरी रुकूअ़ में इर्शाद है कि-

قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْاَخْسَرِيْنَ اَعْمَالًا ۝ اَلَّذِيْنَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ يُحْسِنُوْنَ صُنْعًا ۝ اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَلِقَاۗىِٕهٖ فَحَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيْمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا

"आप फ़रमा दीजिए क्या हम तुम को ऐसे लोग बताएँ जो आ़माल के एतिबार से बड़े घाटे में हैं (यह) वह लोग हैं जिन की कोशिशें बेकार हो गईं दुनियावी ज़िन्दगी में, और वह समझते रहे कि अच्छे काम कर रहे हैं। (यह) वही हैं जो मुन्किर हुए अपने रब की आयतों के और उस की मुलाक़ात के सिवा बेकार हो गये उन के अ़मल बस हम क़ियामत के दिन उन के लिए तौल क़ायम न करेंगे।

यानी सब से ज़्यादा टूटे और ख़सारा वाले ह़क़ीक़त में वह लोग हैं जिन्होंने एक ज़माना दुनिया में गुज़ारे और मेह़नत व कोशिश करके नफ़ा कमाते रहे और दुनिया जोड़ कर खुश हुए और यह यक़ीन करते रहे कि हम बड़े कामियाब और बामुराद हैं।

ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, "क़ियामत के

दिन ज़रूर ऐसा होगा कि बाज़ भारी-भरकम मोटे बदन वाले आदमी इस ह़ाल में आएँगे कि अल्लाह के नज़्दीक उन का वज़न मच्छर के पर के बराबर भी न होगा, फिर फ़रमाया कि तुम लोग فَلَا نُقِيمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا को पढ़ लो।" **(मिश्कातुल् मसाबीह़, बुख़ारी व मुस्लिम)**

साह़िबे तफ़्सीर मज़्हरी فَلَا نُقِيمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا लिखते हैं कि अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक काफ़िरों के आ़माल का कोई एतिबार या क़द्र व क़ीमत न होगी। फिर रसूलुल्लाह (सल्ल०) का इर्शादे गिरामी व ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से नक़्ल फ़रमाया जो ऊपर ज़िक्र हुआ।

यहूद व नसारा और मुश्रिकीन व कुफ़्फ़ार जो दुनिया की ज़िन्दगी में अपने ख़याल में नेक काम करते हैं जैसे पानी पिलाने का इन्तिज़ाम करते हैं और मजबूर की मदद करते हैं, या अल्लाह के नामों का विर्द (जाप) करते हैं। इस क़िस्म के काम भी आख़िरत में उन को निजात न दिलाएँगे।

साधु और सन्यासी जो बड़ी-बड़ी अ़िबादतें करते हैं और मुजाहिदा करके नफ़्स को मारते हैं और यहूद व नसारा के राहिब और पादरी जो नेकी के ख़याल से शादी नहीं करते उन के इस क़िस्म के तमाम काम बेकार हैं, आख़िरत में कुफ़्र की वजह से कुछ न पाएँगे। काफ़िर की नेकियाँ मुर्दा हैं, वह क़ियामत के रोज़ नेकियों से खाली हाथ होंगे।

फिर साह़बे तफ़्सीर 'मज़्हरी' इस आयत के इन अल्फ़ाज़ की दूसरी तफ़्सीर करते हुए फ़रमाते हैं यह माने कि उन (काफ़िरो) के लिए तराज़ू नसीब ही न होगा और तौलने का मामला उन के साथ होना ही नहीं क्योंकि उन के अ़मल वहाँ बेकार हो जाएँगे और सीधे दोज़ख़ में डाल दिये जाएँगे।

इस आयत के अल्फ़ाज़ के तीसरे माने बयान करते हुए फ़रमाते हैं कि कुफ़्फ़ार अपने जिन आ़माल को नेक समझते हैं क़ियामत के दिन तराज़ू में उन का कुछ वज़न न निकलेगा (क्योंकि वहाँ उसी नेक काम का वज़न होगा जो ईमान की दौलत और इख़्लास के साथ अल्लाह तआ़ला को राज़ी करने के लिए दुनिया में किया गया था।)

10-18 وَلَقَدْ مَكَّنّٰكُمْ فِي الْاَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا مَعَايِشَ ۭ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ۝ وَلَقَدْ خَلَقْنٰكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنٰكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوا لِاٰدَمَ ۖ فَسَجَدُوٓا اِلَّآ اِبْلِيسَ ۭ لَمْ يَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِينَ ۝ قَالَ مَا مَنَعَكَ اَلَّا تَسْجُدَ اِذْ اَمَرْتُكَ ۭ قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۚ خَلَقْتَنِي مِنْ نَّارٍ وَّخَلَقْتَهُ مِنْ طِينٍ ۝ قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُونُ لَكَ اَنْ تَتَكَبَّرَ فِيهَا فَاخْرُجْ اِنَّكَ مِنَ الصّٰغِرِينَ ۝ قَالَ اَنْظِرْنِيٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ۝ قَالَ اِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ ۝ قَالَ فَبِمَآ اَغْوَيْتَنِي لَاَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيمَ ۝ ثُمَّ لَاٰتِيَنَّهُمْ مِّنْ بَيْنِ اَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ اَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَآئِلِهِمْ ۭ وَلَا تَجِدُ اَكْثَرَهُمْ شٰكِرِينَ ۝ قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُومًا مَّدْحُورًا ۭ لَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ اَجْمَعِينَ ۝

अल्लाह तआ़ला के इनूआ़मात

पहली आयत में (जो बाद में आने वाली आयात की भूमिका है) फ़रमाया कि हम ने तुम्हें ज़मीन

में जगह दी और न सिर्फ़ जगह दी बल्कि तुम्हारे लिए खाने-पीने की चीज़ें पैदा फ़रमाईं। पहनने और ओढ़ने बिछाने के लिए कपड़े पैदा किये, ज़मीन को नर्म किया ताकि उस को खोदकर बुनियादें डाल सको, इमारते बनाओ, दरख़्त लगाओ, खेतियाँ पैदा करो, जानवरों को चारा खिलाओ और ख़ुद भी खाओ। तरह़-तरह़ का सामान तुम्हारे लिए पैदा कर दिया इन सब नेअ़मतों को इस्तेमाल करो और ख़ालिक़े क़ायनात का शुक्र अदा करो, लेकिन तुम बहुत कम शुक्र अदा करते हो।



आदम (अ़लै०)
सरान्दीप (सीलोन या श्रीलंका) मक्का मुकर्रमा और जद्दह

इस भूमिका के बाद जिस में यह बता दिया कि पैदा करने वाले का शुक्र करना ज़रूरी है और दो नेअ़मतों का ज़िक्र फ़रमाया कि हम ने तुम्हें {तुम्हारे बाप आदम (अ़लै०) को} पैदा किया फिर तुम्हारी सूरत बनाई। (अव्वल) मिट्टी का वह माद्दह जमा किया जिस से ह़ज़रत आदम (अ़लै०) को पैदा फ़रमाना था। फिर इस माद्दह से उनकी सूरत बनाई जो आदम की सूरत बनी वही सूरत उन के औलादों की भी हुई।

यही वह सूरत है जिस के बारे में सूरः 'तीन' में फ़रमाया-

لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ فِي أَحْسَنِ تَقْوِيمٍ और ह़दीस में फ़रमाया "إِنَّ اللهَ خَلَقَ آدَمَ عَلَىٰ صُورَتِهِ" फिर इस सूरत में रुह़ फूंक दी। वह एक ढ़ांचा की शक्ल थी फिर जैसे ही उस में रुह़ फूंक दी, वह जीती-जागती देखती भालती अ़क़्ल और समझ रखने वाली एक जानदार चीज़ बन गई उस जानदार को चीज़ों के नाम सिखा दिये, फिर फ़रिश्तों पर पेश किया कि तुम उन चीज़ों के नाम बताओ वह न बता सके। इस तरह़ ह़ज़रत आदम (अ़लै०) की इ़ल्मी फ़ज़ीलत ज़ाहिर हो गई।

इस से मुराद रुहों के इन्सान हैं जिन्हें उस वक़्त इस क़िस्म की शक्ल व सूरत अ़ता की गई थी जिन्हें इन्सानों का नुमाइन्दा होने की ह़ैसियत से जमा (बहुवचन) इस्तेमाल किया गया है।

इब्लीस फ़रिश्तों से नहीं बल्कि जिन्नों से था, जबकि आसमान में फ़रिश्तों के साथ अ़िबादत में शामिल रहने की वजह से वह भी इस हुक्म में शामिल था जो फ़रिश्तों को दिया गया।

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया (एक बार) हज़रत आदम (अ़लै०) और हज़रत मूसा (अ़लै०) में मुलाक़ात हुई तो हज़रत मूसा (अ़लै०) हज़रत आदम (अ़लै०) से कहने लगे, तुम ही तो हो जिन्होंने सब लोगों को मुसीबत में डाला और जन्नत से निकलवाया।

हज़रत आदम (अ़लै०) ने जवाब दिया तुम वह मूसा (अ़लै०) हो जिसे अल्लाह ने अपनी रिसालत के लिए चुना और ख़ासकर अपनी ज़ात के लिए अच्छा बनाया और तुम पर तौरात नाज़िल फ़रमाई। हज़रत मूसा (अ़लै०) ने फ़रमाया हाँ, तब आदम ने फ़रमाया क्या तुम ने तौरात में यह नहीं पढ़ा कि अल्लाह तआ़ला ने हर चीज़ को मेरे तक़्दीर में मेरी पैदाईश से भी पहले लिख दिया था? हज़रत मूसा (अ़लै०) ने जवाब दिया हाँ, (यह बात तौरात में मौजूद है।) फिर नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, इस तरह आदम हज़रत मूसा (अ़लै०) पर दलील में ग़ालिब आये। **(बुख़ारी)**

इब्लीस का सज्दः करने से इन्कार–

फिर फ़रिश्तों से फ़रमाया कि इन को सज्दः करो (जैसा कि सूरः बक़रः में गुज़र चुका) सब फ़रिश्तों ने सज्दः कर लिया (यह सज्दः तअ़्ज़ीमी था सज्दः अ़िबादत नहीं था, मगर अब क़ियामत तक किसी को इजाज़त नहीं कि किसी के लिए कोई सज्दः तअ़्ज़ीमी करे) वहीं इब्लीस भी था। यह था तो जिन्नात में से, लेकिन ज़्यादा अ़िबादत करने की वजह से वहीं फ़रिश्तों के साथ आसमान में रहता था, उसको भी हुक्म दिया था कि आदम को सज्दः कर, उस ने सिर्फ़ इतना नहीं किया कि हुक्म की नाफ़रमानी की बल्कि अल्लाह तआ़ला ने जब सवाल फ़रमाया कि मैंने तुझे उन को सज्दः करने का हुक्म दिया तो तूने सज्दः क्यों न किया? इस पर वह कट हुज्जती करने लगा और अल्लाह तआ़ला के हुक्म ही को ग़लत बता दिया वह कहने लगा कि–

اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ (मैं इस से बेहतर हूँ) जो बेहतर है उसे हुक्म देना कि अपने से कमतर को सज्दः करे यह तो हिक्मत के ख़िलाफ़ है। फिर बेहतर होने की यह दलील बयान की कि मुझे आप ने आग से पैदा किया है और इसे मिट्टी से पैदा किया और आग मिट्टी से बेहतर है, लिहाज़ा मैं इस से अफ़्ज़ल हूँ उस ने ग़लत दलील दी क्योंकि आग की तबीअ़त में फ़साद है उस का ज़्यादहतर काम यही है और मिट्टी की तबीअ़त में तअ़्मीर है और बहुत सी ख़ूबी की सिफ़ात हैं।

इब्लीस का निकाला जाना–

इब्लीस को उस की अना (मैं) ले डूबी। अगर वह आदम (अ़लै०) से अफ़्ज़ल होता तब भी अह़कमुल् ह़ाकिमीन का हुक्म बजा लाना ज़रूरी था, लेकिन अल्लाह के हुक्म को ग़लत क़रार दिया और हुज्जत बाज़ी पर उतर आया। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया–

فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُوْنُ لَكَ اَنْ تَتَكَبَّرَ فِيْهَا

तू यहाँ से उतर जा तेरे लिए यह दुरुस्त नहीं था कि तू इस में तकब्बुर करे।

فَاخْرُجْ اِنَّكَ مِنَ الصّٰغِرِيْنَ

(तू निकल जा बेशक तू ज़लीलों में से है) مِنْهَا और فِيْهَا किस तरफ़ इशारा है, इस के बारे में साहिबे रुहुल् मआ़नी (भाग 8 पेज नं० 90) लिखते हैं कि यह जन्नत की तरफ़ इशारा है और इब्लीस पहले से वहाँ था।

फिर हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से नक़्ल किया है कि इस से मुराद दुनिया का एक बाग़ीचा है जो 'अ़द्न' में था। हज़रत आदम (अ़लै०) वहीं पैदा किये गये थे।

इब्लीस को वहीं सज्दः करने का हुक्म हुआ उस ने सज्दः न कर के घमण्ड किया तो वहाँ से उस को निकल जाने का हुक्म दिया गया।

फिर लिखते हैं कि बाज़ हज़रात ने कहा है कि यह आसमान की तरफ़ इशारा है और लिखा है कि यह एक बड़ी तअ़दाद का क़ौल है, लेकिन इस पर यह सवाल पैदा होता है कि इब्लीस के मरदूद और लानती होने के बाद हज़रत आदम (अ़लै०) और उन की बीवी को जन्नत में ठहराया गया और उस के बाद इब्लीस ने वस्वसा डाला और उन को बहकाया।

अगर उन को इस से पहले ही आसमान से उतार दिया गया था तो फिर उस ने कैसे वस्वसा डाला और यह सवाल उस सूरत में भी होता है जबकि सज्दे का वाक़िआ़ अ़द्न वाले बाग़ में माना जाए, सज्दे का इन्कार करने के बाद अ़द्न वाले बाग़ से निकाल देने के बाद उस ने कैसे वस्वसा डाला? सीधी और साफ़ बात जो समझ में आती है वह यही है कि इब्लीस ऊपर ही रहता था और सज्दे का हुक्म भी वहीं हुआ था। जब इब्लीस ने सज्दः न किया तो इब्लीस वहाँ से निकाल दिया गया और आदम व हव्वा (अ़लै०) को जन्नत में ठहरने का हुक्म दिया गया। इब्लीस निकाला तो गया लेकिन अभी ज़मीन पर नहीं आया था कि उस ने दोनों मियाँ-बीवी के दिल में वस्वसा डाला और उन को बहका कर वह दरख़्त जिससे मना किया गया था खिलाने पर आमादा कर दिया, वस्वसा किस तरह़ डाला उस का कोई जवाब यक़ीनी तौर पर नहीं दिया जा सकता।

हज़रत ह़सन बसरी (रह़०) से रिवायत है कि जन्नत के दरवाज़े पर खड़े होकर दूर से आवाज़ दे दी थी। इस बारे में और भी क़ौल (कथन) ज़िक्र किये गये हैं। सह़ीह़ इ़ल्म अल्लाह तआ़ला को है मगर इब्लीस ज़लील, लानती, धुत्कारा, फटकारा और अल्लाह की रह़मत से दूर हुआ।

इब्लीस का मोहलत माँगना-

चूंकि उसे यह पहले से मालूम था कि यह नई मख़्लूक़ ज़मीन में आबाद करने के लिए पैदा की गई है। इसे ख़िलाफ़त सौंपी जाएगी और इसी की वजह से उस पर मल्ऊनियत का दाग़ लगा। इसलिए उस ने पहले तो अल्लाह तआ़ला से यह दरख़्वास्त की कि मुझे मोहलत दी जाए यानी मेरी उ़म्र इतनी लम्बी कर दी जाए कि जिस दिन लोग क़ब्रों से उठेंगे उस वक़्त तक जीता रहूँ। अल्लाह तआ़ला ने यूँ तो नहीं फ़रमाया कि क़ब्रों से उठने के दिन तक तुझे मोहलत है, अल्बत्ता यूँ फ़रमाया-

فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ ۙ إِلَىٰ يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ (सूरः हिज्र-37, 38 और साद में यही अल्फ़ाज़ हैं)

इब्लीस का गुमराह करना-

जब अल्लाह तआ़ला ने लम्बी उम्र देने का वादा फ़रमा लिया तो इब्लीस ने अपने दुश्मनी का इज़्हार किया। बनी आदम से अपनी मल्ऊनियत का बदला लेने का एलान कर दिया और अल्लाह तआ़ला से अ़र्ज़ किया कि मैं आप के इज़्ज़त की क़सम खाकर कहता हूँ कि मैं उन सब को ज़रूर गुमराह करुँगा। (यह अल्फ़ाज़ सूरः साद में हैं) और यहाँ सूरः अअ़राफ़ में उस का क़ौल इस अल्फ़ाज़ में नक़्ल फ़रमाया है فَبِمَا أَغْوَيْتَنِي لَأَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيمَ

कि आप ने मुझे गुमराह किया मैं आप के सीधे रास्ते पर बैठूँगा और उनको सीधी राह से हटाऊँगा फिर कहा-

ثُمَّ لَآتِيَنَّهُمْ مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ أَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَائِلِهِمْ ۖ وَلَا تَجِدُ أَكْثَرَهُمْ شَاكِرِينَ

(उन के पास ज़रूर आऊँगा उन के सामने से और उन के पीछे से और उन के दाहिनी ओर से और उन के बाईं ओर से और आप उन में से अक्सर को शुक्रगुज़ार न पाएँगे।)

इब्लीस ने बनी आदम को बहकाने के लिए चार दिशाओं का ज़िक्र किया क्योंकि इन चार दिशाओं में से कोई किसी के पास आ सकता है। मतलब इस का यह था कि जहाँ तक हो सकेगा मैं उनको बहकाने की कोशिश करुँगा।

बाज़ ह़ज़रात ने फ़रमाया कि ऊपर की जानिब से रह़मत रुकावट बनती है इसलिए इधर से शैतान के आने का रास्ता नहीं और नीचे की जानिब से भी नहीं आ सकता। इसलिए इन दोनों दिशाओं को छोड़ दिया यह इब्लीस की दूसरी ढ़िटाई है कि गुमराही को अब भी उस ने अपनी तरफ़ नहीं की बल्कि उस ने यूँ कहा कि ऐ अल्लाह! आप ने मुझे गुमराह किया मैं उन की राह रोकूँगा।

सूरः ह़िज्र *(आयत नं० 39)* में है कि उस ने इन्सानों को बहकाने के लिए क़सम खाते हुए यूँ कहा- لَأُزَيِّنَنَّ لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَلَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ और सूरः बनी इस्राईल *(आयत नं० 62)* में कहा-

هَٰذَا الَّذِي كَرَّمْتَ عَلَيَّ لَئِنْ أَخَّرْتَنِ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَأَحْتَنِكَنَّ ذُرِّيَّتَهُ إِلَّا قَلِيلًا

{क्या यह है जिसे आप ने मेरे मुक़ाबिले में इ़ज़्ज़त दे दी, अगर आप ने मुझे क़ियामत के दिन तक मोहलत दे दी तो सिवाय थोड़े लोगों के मैं उसकी सारी ज़ुर्रियत (औलाद) को अपने क़ाबू में कर लूँगा।}

इब्लीस तो अपनी क़सम को नहीं भूला अपनी ज़िद और हठधर्मी पर क़ायम है। बनी आदम को बहकाने वरग़लाने और गुमराह करने में उस ने और उस की औलाद ने कोई कसर उठा नहीं रखी। आदम की औलाद को कुफ़्र, शिर्क और अल्लाह की नाफ़रमानी पर आमादा करता ही रहता है, गुमराह ज़्यादा हैं हिदायत वाले कम हैं। नेक लोग बहुत कम हैं उस ने पहले ही यह إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِينَ *(सूरः ह़िज्र-40)* कह कर मुख़्लिसीन (निः स्वार्थ) को अलग कर दिया था जो उस ने وَلَا تَجِدُ أَكْثَرَهُمْ شَاكِرِينَ कहा था उस के क़ौल को बनी आदम ने इत्तिबअ़ करके सच दिखाया।

قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُوْمًا مَّدْحُوْرًا ۔

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि तू यहाँ से निकल जा, ज़लील होकर।

(यह हुक्म दूसरी बार है इस से पहले भी यह हुक्म हो चुका था, लेकिन वह सज्दः न करने और घमण्ड करने की बुनियाद पर था और यह दोबारा उस की इस बात पर है कि उस ने बनी आदम को वरग़लाने की क़सम खाई) अल्लाह तआ़ला ने यह भी फ़रमायाः-

इब्लीस के लिए दोज़ख़-

لَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ اَجْمَعِيْنَ

{बनी आदम में जो तेरी इत्तिबअ़ (अनुसरण) करेंगे तुम सब से दोज़ख़ को भर दूँगा।} इब्लीस ने क़सम खाकर अपनी बात बता दी कि मैं उन सब को ह़क़ की राह से हटाऊँगा और अल्लाह तआ़ला ने एलान फ़रमा दिया कि तुझे और तेरे मानने वालों को दोज़ख़ में डाल दूँगा। इब्लीस की बात और अल्लाह तआ़ला का एलान लोगों के सामने है, लेकिन फिर भी शैतान की पैरवी करते हैं।

आयत नं० 19 से 30 तक

وَيٰٓاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطٰنُ
لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَا وٗرِيَ عَنْهُمَا مِنْ سَوْاٰتِهِمَا وَقَالَ مَا نَهٰىكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هٰذِهِ الشَّجَرَةِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَا مَلَكَيْنِ اَوْ تَكُوْنَا
مِنَ الْخٰلِدِيْنَ ۝ وَقَاسَمَهُمَآ اِنِّيْ لَكُمَا لَمِنَ النّٰصِحِيْنَ ۝ فَدَلّٰىهُمَا بِغُرُوْرٍ فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ بَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا
يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ وَنَادٰىهُمَا رَبُّهُمَآ اَلَمْ اَنْهَكُمَا عَنْ تِلْكُمَا الشَّجَرَةِ وَاَقُلْ لَّكُمَآ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمَا عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝
قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝ قَالَ اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ وَلَكُمْ
فِي الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ۝ قَالَ فِيْهَا تَحْيَوْنَ وَفِيْهَا تَمُوْتُوْنَ وَمِنْهَا تُخْرَجُوْنَ ۝ يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ قَدْ اَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ
لِبَاسًا يُّوَارِيْ سَوْاٰتِكُمْ وَرِيْشًا وَلِبَاسُ التَّقْوٰى ذٰلِكَ خَيْرٌ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ۝ يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ لَا يَفْتِنَنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ
كَمَآ اَخْرَجَ اَبَوَيْكُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا لِيُرِيَهُمَا سَوْاٰتِهِمَا اِنَّهٗ يَرٰىكُمْ هُوَ وَقَبِيْلُهٗ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ اِنَّا جَعَلْنَا
الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَآءَ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَاِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً قَالُوْا وَجَدْنَا عَلَيْهَآ اٰبَآءَنَا وَاللّٰهُ اَمَرَنَا بِهَا قُلْ اِنَّ اللّٰهَ لَا
يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ قُلْ اَمَرَ رَبِّيْ بِالْقِسْطِ وَاَقِيْمُوْا وُجُوْهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّادْعُوْهُ
مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ كَمَا بَدَاَكُمْ تَعُوْدُوْنَ ۝ فَرِيْقًا هَدٰى وَفَرِيْقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلٰلَةُ اِنَّهُمُ اتَّخَذُوا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَآءَ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ۝

अनुवाद-

(19) और ''ऐ आदम! तुम और तुम्हारी बीवी दोनों जन्नत में रहो बसो, फिर जहाँ से चाहो खाओ, और इस पेड़ के पास न जाना' वरना ज़ालिमों में से हो जाओगे।'' (20) तो शैतान ने दोनों को बहकाया, ताकि उनकी शर्मगाहों को, जो उन दोनों से छिपी थीं, उन दोनों के सामने खोल दे; और उस (इब्लीस) ने कहा, ''तुम्हारे 'रब' ने तुम दोनों को जो इस पेड़ से रोका है, तो केवल इसलिए कि कहीं ऐसा न हो कि तुम फ़रिश्ते हो जाओ, या कहीं ऐसा न हो कि तुम हमेशा अमर (जीते) रहो'' (21) और उसने उन दोनों के आगे क़समें खाईं, ''मैं ही तुम दोनों का भला चाहने वाला हूँ;'' (22) इस तरह धोखा देकर उसने उन दोनों को झुका लिया, जब उन्होंने उस पेड़ (के फल) को चखा, तो उनकी शर्मगाहें एक-दूसरे के सामने खुल गयीं और वह अपने ऊपर बाग़ के पत्ते जोड़-जोड़ कर रखने लगे, तब उनके रब ने उनको पुकारा, ''क्या 'मैंने' तुम दोनों को इस पेड़ से रोका न था और तुमसे कहा न था कि शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है?'' (23) दोनों बोले, ''हमारे रब! 'हमने' अपने आप पर ज़ुल्म किया, अब अगर 'तूने' हमें माफ़ न किया और हम पर रह़म न किया, तो फिर हम घाटा उठाने वालों में से होंगे।'' (24) फ़रमाया, ''उतर जाओ! तुम आपस में एक-दूसरे के दुश्मन हो और तुम्हारे लिए एक वक़्त तक ज़मीन पर ठिकाना और (ज़िन्दगी का) सामान है।'' (25) फ़रमाया, ''उसी में तुम्हें जीना और उसी में तुम्हें मरना है और उसी में से तुमको निकाला जाएगा।'' (26) ऐ आदम की औलाद! 'हमने' तुम्हारे लिए पोशाक (वस्त्र) उतारा है कि तुम्हारी शर्मगाहों को छिपाये और हिफ़ाज़त व ज़ीनत का ज़रिया हो; और परहेज़गारी का लिबास, वह सबसे अच्छा है, यह अल्लाह की निशानियों

में से है, ताकि वे ध्यान दें। (27) ऐ आदम की औलाद! (कहीं) शैतान तुम्हें बहकावे में न डाल दे, जिस तरह 'उसने' तुम्हारे माँ-बाप को जन्नत से निकलवा दिया; उनके कपड़े उन पर से उतरवा दिये, ताकि उनकी शर्मगाहें एक-दूसरे के सामने खोल दे, वह और उनका गिरोह वहाँ से तुम्हें देखता है, जहाँ से तुम उनको नहीं देख सकते 'हमने' तो शैतानों को उन लोगों का दोस्त बना दिया है, जो ईमान नहीं रखते। (28) और जब कोई बेहयाई का काम करते हैं तो कहते हैं, 'हमने' अपने बाप-दादा (पूर्वजों) को इसी तरीक़े पर पाया है, और अल्लाह ही ने हमें इसका हुक्म दिया है कह दीजिए, "अल्लाह कभी बेहयाई की बातों का हुक्म नहीं दिया करता; भला तुम अल्लाह के बारे में ऐसी बात क्यों कहते हो, जिसका तुम्हें इल्म नहीं?" (29) कह दीजिए, ''मेरे 'रब' ने तो न्याय का हुक्म दिया है और यह कि इबादत के हर मौक़े (अवसर) पर अपना रुख़ ठीक रखो और केवल 'उसी' के बन्दे एवं फ़रमाँबरदार बनकर 'उसे' पुकारो; जैसे 'उसने' तुम्हें पहली बार पैदा किया था वैसे ही तुम फिर पैदा होगे"। (30) एक गिरोह को 'उसने' राह दिखाई; परन्तु दूसरा गिरोह ऐसा है, जिसके ऊपर गुमराही चिपक कर रह गई; इन लोगों ने अल्लाह को छोड़कर शैतानों को अपना दोस्त बना लिया, और समझते हैं कि सीधी राह पर हैं।

आयत नं० 19 से 30 तक की व्याख्या

19-21 وَيَآدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ
الظّٰلِمِيْنَ ۝ فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطٰنُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَا وٗرِيَ عَنْهُمَا مِنْ سَوْاٰتِهِمَا وَقَالَ مَا نَهٰىكُمَا
رَبُّكُمَا عَنْ هٰذِهِ الشَّجَرَةِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَا مَلَكَيْنِ اَوْ تَكُوْنَا مِنَ الْخٰلِدِيْنَ ۝ وَقَاسَمَهُمَآ اِنِّيْ
لَكُمَا لَمِنَ النّٰصِحِيْنَ ۝

आदम व हव्वा की तफ़्सील सूरः बक़रः में गुज़र चुकी है, चूंकि क़ुर्आन तेईस साल में नाज़िल हुआ और इस मुद्दत में पूरी दुनिया से मुख़्तलिफ़ लोग आते रहे, इसीलिए क़ुर्आन ने एक ही वाक़िये को कई जगह मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ में बयान किया है, ताकि सुनने वाले मौक़े के अनुसार नसीहत हासिल करते रहें।

अल्लाह ने इब्लीस को जन्नत या फ़रिश्तों के साथ रहने से निकाल दिया, हज़रत आदम (अ़लै०) और उन की बीवी हव्वा के लिए जन्नत की तमाम नेअ़मतों और फलों को हलाल बना दिया, सिर्फ़ एक दरख़्त के खाने से उन्हें रोक दिया और तम्बीह कर दी कि देखो अगर उस के क़रीब जाओगे तो अपने आप पर ज़ुल्म करने वाले हो जाओगे। शैतान ने जब उन्हें इस हाल में देखा तो उस के हसद की आग भड़क उठी और उन के साथ चालबाज़ी की सोच ली, ताकि वह जिन नेअ़मतों से फ़ायदा उठा रहे हैं और जो ख़ूबसूरत लिबास पहने हुए हैं उन से छिन जाए, चुनाँचे उस ने अल्लाह के ख़िलाफ़ कहा कि तुम्हारे रब ने तुम्हें उस दरख़्त से इसलिए रोका है कि अगर उसे खा लोगे तो तुम फ़रिश्ते बन जाओगे, फिर खाने-पीने की मोहताजी नहीं रहेगी या तुम्हें मौत नहीं आएगी और जन्नत में हमेशा-हमेश के लिए रहोगे और इब्लीस ने उन्हें अपनी सच्चाई का यक़ीन दिलाने के लिए अल्लाह तआ़ला की क़सम खाकर कहा कि मैं तुम दोनों का बहुत बड़ा हमदर्द हूँ, जभी यह राज़ तुम्हें बता दिया।

हाफ़िज इब्ने कसीर (रह़०) लिखते हैं कि इब्लीस ने अल्लाह की क़सम खाकर ह़ज़रत आदम व ह़व्वा को धोका दिया, इसलिए कि मोमिन अल्लाह के नाम से धोखा खा जाता है।

22-23 فَدَلّٰىهُمَا بِغُرُوْرٍ ۚ فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ بَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ۗ
وَنَادٰىهُمَا رَبُّهُمَآ اَلَمْ اَنْهَكُمَا عَنْ تِلْكُمَا الشَّجَرَةِ وَاَقُلْ لَّكُمَآ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمَا عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝ قَالَا
رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا ٚ وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝

शैतान ने दोनों को धोका देकर बुलन्दी से पस्ती में पहुँचा दिया। इस की तफ़्सीर यह भी की गई है कि उस ने उन दोनों को गुनाह करने की हिम्मत दिलाई, चुनांचे जब उन्होंने उस दरख़्त को शैतान के धोके में आकर खा लिया, तो इस नाफ़रमानी का अन्जाम फ़ौरन ही उन के सामने आ गया कि उन के लिबास उन के जिस्मों से अलग हो गये और उन्हें अपनी शर्मगाहें नज़र आने लगीं, तो जन्नत के दरख़्तों के पत्ते ले लेकर अपने जिस्मों पर चिपकाने लगे ताकि अपनी पर्दापोशी करें। तब अल्लाह ने बतौर सज़ा उन से कहा, क्या मैंने तुम्हें उस दरख़्त के खाने से नहीं रोका था और कहा नहीं था कि शैतान तुम दोनों का खुला दुश्मन है? उस वक़्त उन्होंने अपनी ग़ल्ती का अल्लाह के सामने एतिराफ़ किया और अल्लाह ने उन्हें सिखाया कि अपनी ग़ल्ती की मुआ़फ़ी के लिए यह दुआ़ करें-

رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا ٚ وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ

बाज़ मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि ह़ज़रत आदम (अ़लै०) के अन्दर पाँच ख़ूबियाँ पाईं गईं-

(1) उन्होंने गुनाह का इक़रार किया। (2) उस पर नादिम (शर्मिन्दा) हुए (3) अपने नफ़्स को मलामत की (4) फ़ौरन तौबः की (5) अल्लाह की रह़मत से नाउम्मीद नहीं हुए।

इब्लीस में पाँच बुराइयाँ पाईं गईं-

(1) अपने गुनाह का एतिराफ़ नहीं किया (2) उस पर नादिम (शर्मिन्दा) नहीं हुआ (3) अपने नफ़्स को मलामत नहीं की (4) अपने रब पर एतिराज़ किया तौबः नहीं की (5) अल्लाह की रह़मत से नाउम्मीद हो गया।

24-25 قَالَ اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِى الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ۝ قَالَ فِيْهَا تَحْيَوْنَ
وَفِيْهَا تَمُوْتُوْنَ وَمِنْهَا تُخْرَجُوْنَ ۝

अल्लाह ने ह़ज़रत आदम व हव्वा की तौबः क़ुबूल कर ली, लेकिन उन से कहा कि गुनाह करने के बाद अब जन्नत में तुम्हारे लिए जगह नहीं रही। इब्लीस ने सज्दे से इन्कार किया और तुम दोनों ने मना किये हुए दरख़्त को खाकर अल्लाह की नाफ़रमानी की इसलिए अब तुम्हारी जगह ज़मीन में होगी और रहती दुनिया तक तुम और तुम्हारी ज़ुर्रियत (औलादें) और इब्लीस और उस की ज़ुर्रियत के दर्मियान दुश्मनी चलती रहेगी, तुम सब ज़मीन पर ही रहोगे और दुनिया की वक़्ती नेअ़मतों से मौत आने तक फ़ायदा उठाते रहोगे। वहीं ज़िन्दा होगे और वहीं मरोगे फिर क़ियामत के दिन वहीं से उठाए जाओगे।

26 يٰبَنِىٓ اٰدَمَ قَدْ اَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا يُّوَارِىْ سَوْاٰتِكُمْ وَرِيْشًا ۚ وَلِبَاسُ التَّقْوٰى ۙ ذٰلِكَ خَيْرٌ ۚ ذٰلِكَ مِنْ
اٰيٰتِ اللّٰهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ۝

अल्लाह तआ़ला ने इन्सान को ज़मीन में रहने की जगह और खाने-पीने की बहुत सी चीज़ें दीं और जन्नत का लिबास छिन जाने के बाद लिबास दिया जिस के ज़रिये वह सतरपोशी (शरीर ढ़कने का काम) करता है और ज़ीनत अख़्तियार करता है। इन नेअ़मतों का तक़ाज़ा यह है कि वह अल्लाह पर ईमान लाए, शिर्क व गुनाह से तौबः और तक़्वा की राह अपनाये, इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने इस के बाद फ़रमाया कि आदमी अगर तक़्वा का लिबास पहने, यानी ईमान व अ़मल सालिह़ा की ज़िन्दग़ी अख़्तियार करे और हर ह़ाल में अल्लाह का ख़ौफ़ उस के दिल व दिमाग़ पर तारी रहे तो यह उस के लिए हर तरह़ से बेहतर है।

27 يٰبَنِىٓ اٰدَمَ لَا يَفْتِنَنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ كَمَآ اَخْرَجَ اَبَوَيْكُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا لِيُرِيَهُمَا سَوْاٰتِهِمَا ۗ اِنَّهٗ يَرٰىكُمْ
هُوَ وَقَبِيْلُهٗ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ ۗ اِنَّا جَعَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَآءَ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝

अल्लाह तआ़ला ने दोबारा इन्सान को मुख़ातब किया ताकि उन्हें दोबारा शैतान की बुराई से डराए और उस की साज़िशों में गिरफ़्तार होने से ख़ौफ़ दिलाए। इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने ख़बर दी कि “इब्लीस और उस की फ़ौज तुम्हें देख रही है और तुम उसे नहीं देख रहे हो” और इस से मक़्सूद इन्सानों को मज़ीद तम्बीह करनी है इसीलिए उन्हें ऐसे दुश्मन से पाला पड़ा है जो दिखाई नहीं देता और ऐसा दुश्मन बड़ा ख़त़्रनाक होता है और उस से बचना मुश्किल काम होता है।

आयत के इस ह़िस्से से बाज़ लोगों ने दलील ली है कि शैतान को नहीं देखा जा सकता, लेकिन सह़ीह़ अह़ादीस से साबित है कि इन्सान उसे देख सकता है। इसलिए आयत का मफ़्हूम यह होगा कि कभी-कभी ऐसा होता है कि शैतान इन्सान को देखता है और इन्सान उसे नहीं देख पाता। इस के बाद अल्लाह ने मज़ीद तम्बीह के तौर पर कहा कि अल्लाह तआ़ला शैतानों को काफ़िर इन्सानों पर मुसल्लत कर देता है, जो उन के दिलों से नूरे ईमान छीन लेते हैं और शर व फ़साद उन की फ़ित्रत बन जाती है, उन की आँखो पर पट्टी बँध जाती है, उन्हें नेकियों से दूरी और गुनाह से मुह़ब्बत हो जाती है और वह शैतान के गहरे दोस्त बन जाते हैं।

ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि आप (सल्ल०) का फ़रमान है, “टख़्नों से नीचे जो भी हो वह आग में होगा।” **(बुख़ारी)**

28 وَاِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً قَالُوْا وَجَدْنَا عَلَيْهَآ اٰبَآءَنَا وَاللّٰهُ اَمَرَنَا بِهَا ۗ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ ۗ
اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝

मुशिरकीने अ़रब में शैतानी फ़ित्ने का एक नमूना यह था कि क़ुरैश के अ़लावा तमाम मुशिरकीन (मर्द और औ़रत) बैतुल्लाह का तवाफ़ (चक्कर) नंगा किया करते थे, अल्लाह की अ़िबादत में ग़ैरों को शरीक बनाते थे और दूसरे बड़े-बड़े गुनाह करते थे और कहा करते थे कि हम ने अपने बाप-दादा को ऐसा ही करते देखा है और अल्लाह ने हमें ऐसा ही करने का हुक्म दिया है। अगर अल्लाह को यह आ़माल

पसन्द न होते तो हमारे दिलों से उन की चाहत निकाल देता। मुश्रिकीन की यह दोनों दलीलें सही नहीं थीं, इसलिए कि पहली दलील जाहिलों की पैरवी है और दूसरी दलील अल्लाह तआ़ला पर इल्ज़ाम है, इसीलिए अल्लाह ने उस को रद्द किया और फ़रमाया कि अल्लाह कभी भी गुनाह और बुरी बात का हुक्म नहीं देता, वह तो अच्छे अख़्लाक़ व किरदार का हुक्म देता है।

29-30 قُلْ أَمَرَ رَبِّي بِالْقِسْطِ ۖ وَأَقِيمُوا وُجُوهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۚ كَمَا
بَدَأَكُمْ تَعُودُونَ ﴿٢٩﴾ فَرِيقًا هَدَىٰ وَفَرِيقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلَالَةُ ۗ إِنَّهُمُ اتَّخَذُوا الشَّيَاطِينَ
أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ مُهْتَدُونَ ﴿٣٠﴾

अल्लाह तआ़ला बुरी बातों का हुक्म नहीं देता, जैसा कि मुश्रिकीन कहा करते थे। वह तो ईमान और एक अल्लाह के मानने का हुक्म देता है।

हाफ़िज़ इब्ने कसीर (रह०) के नज़्दीक़ قِسْط का मतलब अम्बिया-ए-किराम की पैरवी और उन की शरीअ़तों की पाबन्दी है और वह इस बात का हुक्म देता है कि आदमी जब और जहाँ भी नमाज़ पढ़े उसी की रज़ा के लिए पढ़े और उस का रुख़ क़िब्ला की तरफ़ हो, अ़िबादत और दुआ़ की तमाम सूरतों को अल्लाह के लिए ख़ास करे, इसलिए कि कोई भी अ़मल अल्लाह के नज़्दीक जब ही क़ाबिले क़ुबूल होता है जब वह शरीअ़ते नबवी के मुताबिक़ हो और शिर्क से पाक साफ़ हो।

हाफ़िज़ इब्ने कसीर (रह०) ने इस كَمَا بَدَأَكُمْ تَعُودُونَ के कई माने किये हैं और आख़िर में इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा की तफ़्सीर को अफ़्ज़ल क़रार दिया है कि अल्लाह तआ़ला ने जिस तरह़ शुरु में इब्ने आदम को मोमिन व काफ़िर पैदा किया, जैसा कि अल्लाह ने दूसरी जगह फ़रमाया है-

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَمِنْكُمْ مُؤْمِنٌ ۚ

"उसी ने तुम्हें पैदा किया बस तुम में से कोई काफ़िर है कोई मोमिन।" (अल् तग़ाबुन-2)

इस तरह़ क़ियामत के दिन अल्लाह इन्सानों को मोमिन या काफ़िर की ह़ालत में उठाएगा। इस के बाद इस तफ़्सीर की ताईद में कई ह़दीसें दलील के तौर पर पेश कीं, चूंकि 'सह़ीहै़न' वग़ैरा में ह़दीसें आई हैं कि हर बच्चा फ़ित्रत पर पैदा होता है, बाद में उस के वालिदैन उसे यहूदी, नस्रानी या मजूसी बना देते हैं। इसलिए दोनों क़िस्मों की आयात व अह़ादीस के दर्मियान यूँ कहा जा सकता है कि अल्लाह तआ़ला ने इन्सान को पैदा ही इस तरह़ किया है कि उस की फ़ित्रत (नेचुरली) में यह बात रची बसी है कि अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं, लेकिन उस के साथ उस ने यह भी मुक़द्दर किया है कि उन में से कोई बद्बख़्त, कोई नेक, कोई काफ़िर और कोई मोमिन होगा। इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने इस के बाद फ़रमाया-

فَرِيقًا هَدَىٰ وَفَرِيقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلَالَةُ

"अल्लाह ने एक जमाअ़त को हिदायत दी और एक दूसरी जमाअ़त पर गुमराही आई।" इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने उस की वजह बयान की और फ़रमाया, ऐसा इसलिए हुआ कि उन्होंने अल्लाह के बजाय शयातीन को अपना मदद्गार बना लिया था और गुमान करते थे कि वह ह़क़ पर हैं।

आयत नं० 31 से 41 तक

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّكُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْا ۚ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿٣١﴾ قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللّٰهِ الَّتِيْٓ
اَخْرَجَ لِعِبَادِهٖ وَالطَّيِّبٰتِ مِنَ الرِّزْقِ ۗ قُلْ هِيَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ
لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٣٢﴾ قُلْ اِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَالْاِثْمَ وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَاَنْ تُشْرِكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ
بِهٖ سُلْطٰنًا وَّاَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٣٤﴾
يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ اِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ ۙ فَمَنِ اتَّقٰى وَاَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَالَّذِيْنَ
كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٣٦﴾ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ
بِاٰيٰتِهٖ ۗ اُولٰٓئِكَ يَنَالُهُمْ نَصِيْبُهُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ ۗ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا يَتَوَفَّوْنَهُمْ ۙ قَالُوْٓا اَيْنَ مَا كُنْتُمْ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۗ
قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا وَشَهِدُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ ﴿٣٧﴾ قَالَ ادْخُلُوْا فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ
فِي النَّارِ ۗ كُلَّمَا دَخَلَتْ اُمَّةٌ لَّعَنَتْ اُخْتَهَا ۗ حَتّٰٓى اِذَا ادَّارَكُوْا فِيْهَا جَمِيْعًا ۙ قَالَتْ اُخْرٰىهُمْ لِاُوْلٰىهُمْ رَبَّنَا هٰٓؤُلَآءِ اَضَلُّوْنَا فَاٰتِهِمْ
عَذَابًا ضِعْفًا مِّنَ النَّارِ ۗ قَالَ لِكُلٍّ ضِعْفٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٨﴾ وَقَالَتْ اُوْلٰىهُمْ لِاُخْرٰىهُمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْنَا
مِنْ فَضْلٍ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿٣٩﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ اَبْوَابُ السَّمَآءِ
وَلَا يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ حَتّٰى يَلِجَ الْجَمَلُ فِيْ سَمِّ الْخِيَاطِ ۗ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٤٠﴾ لَهُمْ مِّنْ جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَّمِنْ فَوْقِهِمْ
غَوَاشٍ ۗ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤١﴾

अनुवाद-

(31) ऐ आदम की औलाद! इबादत के हर मौक़े (अवसर) पर अपनी ज़ीनत (शोभा धारण) करो; और खाओ और पियो, परन्तु हृद से आगे न बढ़ो; 'वह' हृद से आगे बढ़ने वालों को पसंद नहीं करता। (32) कह दीजिए, ''किसने ह़राम कर रखा है अल्लाह की उस ज़ीनत (शोभा) को, जिन्हें उसने अपने बन्दों के लिए पैदा किया और पाक चीज़ों को? कह दीजिए, ''यह दुनिया की ज़िन्दगी में भी ईमान वालों के लिए है; (और) क़ियामत के दिन तो यह केवल उन्हीं के लिए होगी, इसी प्रकार 'हम' आयतों को उन लोगों के लिए विस्तार से बयान करते हैं, जो जानना चाहें।'' (33) कह दीजिए,''मेरे 'रब' ने केवल फ़ुह़्श (बेह़याई के) कामों को ह़राम किया है जो उनमें से ज़ाहिर हों उन्हें भी और जो छिपे हों उन्हें भी- और नाह़क़ ज़्यादती से ह़क़ मारना, और इस बात को कि तुम अल्लाह का साझीदार ठहराओ, जिसके लिए उसने कोई प्रमाण नहीं उतारा और इस बात को भी कि तुम अल्लाह पर थोपकर ऐसी बात कहो जिसका तुम्हें इल्म न हो।'' (34) और हर उम्मत (समुदाय) के लिए एक निश्चित मुद्दत है, फिर जब उनका निश्चित समय आ जाता है, तो एक घड़ी भर न पीछे हट सकते हैं और न आगे बढ़ सकते हैं। (35) ऐ आदम की औलाद! अगर तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल आएँ; तुम्हें 'मेरी' आयतें सुनाएँ, तो जिस व्यक्ति ने डर रखा और सुधार कर लिया, तो ऐसे लोगों के लिए न कोई डर होगा और न वे ग़मगीन होंगे। (36) और जिन्होंने 'हमारी' आयतों को झुठलाया और उनके मुक़ाबले में अकड़ दिखाई; वही आग (जहन्नम) वाले हैं, जिसमें वे हमेशा (जलते) रहेंगे। (37) तो

उससे बढ़कर ज़ालिम कौन है, जिसने अल्लाह पर झूठ गढ़ा (मिथ्यारोपण किया) या उसकी आयतों को झुठलाया? ऐसे लोगों को उनके लिए लिखा हुआ हिस्सा पहुँचता रहेगा, यहाँ तक कि जब 'हमारे' भेजे हुए (फ़रिश्ते) उनकी जान (प्राण) निकालने के लिए उनके पास आएँगे तो कहेंगेः ''कहाँ हैं, वे जिन्हें तुम अल्लाह को छोड़कर पुकारते थे?" वे कहेंगे,"वे तो हमसे ग़ायब हो गये,'' और वे ख़ुद अपने ख़िलाफ़ गवाही देंगे, कि वास्तव में हम इन्कार करने वाले थे। (38) 'वह' कहेगा, ''जिन्नों और इन्सानों के जो गिरोह तुमसे पहले गुज़रे हैं,उन्हीं के साथ तुम भी आग में दाख़िल हो जाओ।'' जब भी कोई गिरोह दाख़िल होगा, तो वह अपनी बहन (अर्थात अपने जैसा दूसरे गिरोह) पर लानत करेगी, यहाँ तक कि जब सब उसमें जमा हो जाएँगे तो उनमें से बाद में आने वाले अपने से पहले वालों के बारे में कहेंगे, ''ऐ हमारे रब! हमें इन्हीं लोगों ने गुमराह किया था; तो 'तू' इन्हें आग का दोगुना अ़ज़ाब दे।'' वह कहेगा, ''हर एक के लिए दोगुना ही है, लेकिन तुम नहीं जानते,'' (39) और उनमें से पहले आने वाले अपने से बाद में आने वालों से कहेंगे, ''फिर हमारे मुक़ाबले में तुम्हें कोई फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) नहीं, तो जो (अ़मल) तुम करते रहे हो, उसके बदले में तुम अ़ज़ाब का मज़ा चखो!'' (40) जिन लोगों ने 'हमारी' आयतों को झुठलाया, और उनके मुक़ाबले में अकड़ दिखाई, उनके लिए आसमान के दरवाज़े नहीं खोले जाएँगे और न वे जन्नत में दाख़िल होंगे, यहां तक कि ऊँट सुई के नाके में से न गुज़र जाए, और हम मुजरिमों को ऐसा ही बदला देते हैं; (41) उनके लिए बिछौना जहन्नम का होगा और ओढ़ना भी उसी का, और ज़ालिमों को 'हम' ऐसा ही बदला देते हैं।

आयत नं० 31 से 41 तक की व्याख्या

31 يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّكُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْا ۚ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ۝

इस आयते करीमा में मुश्रिकीने अ़रब की तर्दीद (खण्डन) की गई है जो बैतुल्लाह का तवाफ़ नंगे हो कर करते थे। मुस्लिम, नसई और इब्ने माजा वग़ैरह ने इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत की है कि मर्द और औ़रत सभी लोग बैतुल्लाह का तवाफ़ नंगे होकर करते थे, मर्द दिन में और औ़रतें रात में, तो अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई। इस आयत और इस की तरह़ अह़ादीस के पेशे नज़र नमाज़ के वक़्त अच्छा लिबास पहनना मुस्तह़ब है, ख़ासतौर पर जुमअ़ और ईद के दिन और ख़ुशबू लगाना, इसलिए कि यह ज़ीनत (सुन्दरता) में दाख़िल है। मिस्वाक करना और सब से अफ़्ज़ल सफ़ेद लिबास पहनना, जैसा कि सह़ीह़ अह़ादीस में आया है।

अल्लाह तआ़ला ने बन्दों को खाने और पीने का हुक्म दिया है, इसलिए कि इस के बिना आदमी ज़िन्दा नहीं रह सकता और उन्हें ह़द से ज़्यादा बढ़ाने से मना किया है। आयत में "इस्राफ़" (फ़ुज़ूलख़र्ची) से ह़राम खाना और खाने-पीने में बद् एह़तियाती सभी मुराद हैं। फ़ुज़ूलख़र्ची अल्लाह के नज़्दीक ग़ज़ब की सिफ़त है और इन्सान को मोह़ताजी तक पहुँचा देती है और खाने-पीने में बद् एह़तियाती तमाम बीमारियों की जड़ है।

नबी करीम (सल्ल०) ने फ़रमाया, "आदमी अपने पेट से ज़्यादा कोई बुरा बर्तन नहीं भरता, इब्ने

आदम के लिए चन्द लुक़्मे काफ़ी हैं जो उस की पीठ को सीधी रखें जिस में एक तिहाई खाने के लिए, एक तिहाई पीने के लिए और एक तिहाई सांस के लिए।" **(मुस्नद अह़मद, नसई, तिर्मिज़ी)**

32 قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللّٰهِ الَّتِيْٓ اَخْرَجَ لِعِبَادِهٖ وَالطَّيِّبٰتِ مِنَ الرِّزْقِ ۭ قُلْ هِيَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا
خَالِصَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝

इस आयते करीमा में उन मुश्रिकीन का जवाब है जो अपनी ख़्वाहिशे नफ़्स के मुताबिक़ खाने-पीने की चीज़ों को ह़लाल व ह़राम बनाते थे। 'इब्ने अबी ह़ातिम' और 'तबरानी' वग़ैरह ने इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत की है कि "क़ुरैश नंगे बैतुल्लाह का तवाफ़ करते, सीटियाँ और तालियाँ बजाते थे तो यह आयत नाज़िल हुई और मुसलमानों को लिबास पहनने का हुक्म दिया गया"। आयत में زِيْنَةَ से मुराद हर वह मुबाह़ चीज़ है जिसे इन्सान ख़ूबसूरती ह़ासिल करने के लिए इस्तेमाल करता है और طَيِّبٰتِ से मुराद खाने और पीने की वह चीज़ है जिसे अल्लाह ने बन्दों के लिए मुबाह़ किया।

'इब्ने जरीर तब्री' लिखते हैं कि जिस ने रुई और कतान का लिबास छोड़कर बाल और ऊन का यानी घटिया लिबास अख़्तियार कर लिया उस ने बहुत बड़ी ग़ल्ती की और जिस ने अच्छा खाना छोड़ कर सब्ज़ियाँ और दाल खाना शुरु कर दिया और जिस ने शहवत के ख़ौफ़ से गोश्त खाना छोड़ दिया उस ने बहुत बड़ी ख़ता की।

इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि यह नेअ़मतें और खाने-पीने की अच्छी चीज़ें ह़क़ीक़त में मोमिनों के लिए हैं, कुफ़्फ़ार उन के ताबेअ़ की ह़ैसियत से उन में शरीक हो जाते हैं और क़ियामत के दिन तो सारी नेअ़मतें सिर्फ़ अहले ईमान के लिए ही होंगी, कुफ़्फ़ार उन के साथ शरीक नहीं होंगे इसलिए कि अल्लाह तआ़ला ने काफ़िरों पर जन्नत ह़राम कर दी है।

33 قُلْ اِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَالْاِثْمَ وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَاَنْ تُشْرِكُوْا
بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّاَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝

इस में अहम गुनाहों का ह़राम होना बयान किया गया है। فَوَاحِشَ से मुराद वह बड़े गुनाह हैं जिन का तअ़ल्लुक़ शर्मगाहों से होता है और **"इस्म"** से मुराद हर गुनाह है और بَغْيَ से मुराद लोगों पर ज़ुल्म व ज़्यादती है और अल्लाह पर गढ़ना यह है कि किसी को उस का बेटा बनाया जाए या ह़लाल व ह़राम के अह़काम को अल्लाह की तरफ़ जोड़ा जाए।

34 وَلِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ۚ فَاِذَا جَاۗءَ اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ۝

अल्लाह तआ़ला ने हर क़ौम और हर ज़माने के रहने वालों की मौत व हलाकत का एक वक़्त मुक़र्रर कर रखा है, जब वह घड़ी आ जाएगी तो उसे कोई टाल नहीं सकेगा। कभी अल्लाह किसी सरकश क़ौम को दुनिया में अ़ज़ाब देकर हलाक कर देता है और कभी किसी को छोड़ देता है, यहाँ तक कि उस के लोग अपनी मौत मर जाते हैं और उन का अ़ज़ाब आख़िरत के लिए रख दिया जाता है। इस आयते

करीमा में इस बात की तरफ़ इशारा है कि दुनिया में नाफ़रमान उम्मतों और क़ौमों की हलाकत उन के गुनाहों की वजह से होती है।

35-36 يَا بَنِي آدَمَ إِمَّا يَأْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ مِنْكُمْ يَقُصُّونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِي فَمَنِ اتَّقَىٰ وَأَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا
هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝

अल्लाह तआ़ला ने शुरु से बनी आदम को ख़बर दी है कि वह अपने अम्बिया व रसूल उन के पास भेजा करेगा जो उस की आयतें उन्हें सुनाया करें, तो जो कोई तक़्वा और सुधार की राह अख़्तियार करेगा क़ियामत के दिन उसे कोई ख़ौफ़ व ग़म नहीं होगा और जो कोई उस की आयतों को झुठलाएगा और घमण्ड से काम लेगा, उस का ठिकाना जहन्नम है।

37 فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ ۚ أُولَٰئِكَ يَنَالُهُمْ نَصِيبُهُمْ مِنَ الْكِتَابِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا
جَاءَتْهُمْ رُسُلُنَا يَتَوَفَّوْنَهُمْ قَالُوا أَيْنَ مَا كُنْتُمْ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۖ قَالُوا ضَلُّوا عَنَّا وَشَهِدُوا عَلَىٰ
أَنْفُسِهِمْ أَنَّهُمْ كَانُوا كَافِرِينَ ۝

इस आयत से और दूसरी कई आयतों और अहादीस से मालूम होता है कि मौत के आने के वक़्त मुजरिमों को अपने अन्जाम का पता चल जाता है। फिर जब क़ब्र में रखे जाएँगे तो फ़रिश्तों के सवालों का जवाब नहीं बन पड़ेगा यहाँ तक कि ख़ुद अपने ख़िलाफ़ गवाही दे देंगे।

ह़ज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "अगर यह ख़ौफ़ न होता कि तुम मुर्दों को दफ़न करना ही छोड़ दोगे तो मैं अल्लाह से दुआ़ करता कि तुम्हें अ़ज़ाबे क़ब्र सुनाई दे।" **(मुस्लिम)**

अल्लाह पर झूठ बाँधने वालों और उस की आयतों को झुठलाने वालों का ह़ाल बयान किया जा रहा है कि उन से बड़ा कोई ज़ालिम नहीं है, लेकिन इस के बावजूद उन के लिए दुनिया में जो उ़म्र, रोज़ी और अच्छे व बुरे आ़माल लिख दिये गये हैं उन्हें वह अल्लाह की तरफ़ से ज़रूर पाएँगे। फिर जब उन की मौत का वक़्त आ जाएगा और फ़रिश्ते उन की रुहों को क़ब्ज़ करके जहन्नम की तरफ़ ले जाएँगे तो बतौर सज़ा उन से कहेंगे कि कहाँ हैं तुम्हारे मअ़बूद जिन की तुम अ़िबादत करते थे? आज वह तुम्हें इस आग के अ़ज़ाब से क्यों नहीं बचा लेते? तो वह जवाब देंगे कि वह तो ग़ायब हो गये, अब तो हमें उन से कोई उम्मीद नहीं है और अपने बारे में एतिराफ़ करेंगे कि ह़क़ीक़त में हम काफ़िर थे।

38-39 قَالَ ادْخُلُوا فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ فِي النَّارِ ۖ كُلَّمَا دَخَلَتْ أُمَّةٌ لَعَنَتْ
أُخْتَهَا ۖ حَتَّىٰ إِذَا ادَّارَكُوا فِيهَا جَمِيعًا قَالَتْ أُخْرَاهُمْ لِأُولَاهُمْ رَبَّنَا هَٰؤُلَاءِ أَضَلُّونَا فَآتِهِمْ عَذَابًا
ضِعْفًا مِنَ النَّارِ ۖ قَالَ لِكُلٍّ ضِعْفٌ وَلَٰكِنْ لَا تَعْلَمُونَ ۝ وَقَالَتْ أُولَاهُمْ لِأُخْرَاهُمْ فَمَا
كَانَ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ۝

यहाँ पिछली क़ौमों के कुफ़्फ़ार मुराद हैं। जब भी कोई क़ौम जहन्नम में दाख़िल होगी तो उन लोगों

पर लअ़नत भेजेगी जो पहले से जहन्नम में होंगे और कहेगी कि हमारी गुमराही का ज़रिया तुम ही तो थे। आयत में **‘ऊला’** से मुराद, वह काफ़िर जिन्न व इन्स हैं जिन की लोग कुफ़्र व शिर्क में पैरवी करते थे और **‘उख़रा’** से मुराद उन के मानने वाले हैं। कुफ़्र व शिर्क के लीडर अपने मानने वालों से कहेंगे कि तुम लोगों ने कुफ़्र व गुमराही को छोड़ा तो नहीं था कि हमारे मुक़ाबिले में तुम्हारा जुर्म हल्का हो जाता, तुम भी वैसे ही गुमराह हुए जैसे हम थे, इसलिए हमारी तरह़ तुम भी अ़ज़ाब के ह़क़्दार हो तो लो अपने किये की सज़ा में जहन्नम का अ़ज़ाब चखो।

40-41 إِنَّ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ أَبْوَابُ السَّمَاءِ وَلَا يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ حَتَّىٰ يَلِجَ الْجَمَلُ فِي سَمِّ الْخِيَاطِ ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُجْرِمِينَ ۝ لَهُمْ مِنْ جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَمِنْ فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ ۝

“काफ़िरों के लिए आसमान के दरवाज़े नहीं खोले जाएँगे।” बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा है कि जब वह मरेंगे तो उन की रुहों के लिए आसमान के दरवाज़े नहीं खोले जाएँगे। किसी ने कहा, उन के आ़माल के लिए और किसी ने कहा उन की दुआ़ओं के लिए, लेकिन अफ़्ज़ल यही है कि सभी मतलब लिए जाएँ। जैसा कि इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत है कि न उन का अ़मल सालेह़ आसमान की तरफ़ जाएगा और न उन की कोई दुआ़ क़ुबूल होगी और जैसा कि सह़ीह़ ह़दीस में आया है कि ख़बीस रुह़ के लिए आसमान का दरवाज़ा नहीं खोला जाएगा। इस के बाद अल्लाह ने फ़रमाया कि जिस तरह़ ऊँट का सुई के सूराख़ के अन्दर जाना असम्भव है उसी तरह़ काफ़िर का जन्नत में दाख़िल होना असम्भव है।

आयत नं० 42 से 53 तक

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ وَنَزَعْنَا مَا فِيْ
صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ هَدٰىنَا لِهٰذَا وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَآ اَنْ هَدٰىنَا اللّٰهُ
لَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ وَنُوْدُوْٓا اَنْ تِلْكُمُ الْجَنَّةُ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ اَصْحٰبَ
النَّارِ اَنْ قَدْ وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدْتُّمْ مَّا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا قَالُوْا نَعَمْ فَاَذَّنَ مُؤَذِّنٌ بَيْنَهُمْ اَنْ لَّعْنَةُ اللّٰهِ
عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ كٰفِرُوْنَ ۝ وَبَيْنَهُمَا حِجَابٌ وَعَلَى
الْاَعْرَافِ رِجَالٌ يَّعْرِفُوْنَ كُلًّا بِسِيْمٰىهُمْ وَنَادَوْا اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ لَمْ يَدْخُلُوْهَا وَهُمْ يَطْمَعُوْنَ ۝ وَاِذَا صُرِفَتْ
اَبْصَارُهُمْ تِلْقَآءَ اَصْحٰبِ النَّارِ قَالُوْا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ الْاَعْرَافِ رِجَالًا يَّعْرِفُوْنَهُمْ بِسِيْمٰىهُمْ
قَالُوْا مَآ اَغْنٰى عَنْكُمْ جَمْعُكُمْ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ ۝ اَهٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللّٰهُ بِرَحْمَةٍ اُدْخُلُوا الْجَنَّةَ
لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمْ وَلَآ اَنْتُمْ تَحْزَنُوْنَ ۝ وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ النَّارِ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ اَفِيْضُوْا عَلَيْنَا مِنَ الْمَآءِ اَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ
قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَهُمَا عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَهْوًا وَّلَعِبًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا فَالْيَوْمَ نَنْسٰىهُمْ كَمَا
نَسُوْا لِقَآءَ يَوْمِهِمْ هٰذَا وَمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ۝ وَلَقَدْ جِئْنٰهُمْ بِكِتٰبٍ فَصَّلْنٰهُ عَلٰى عِلْمٍ هُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝ هَلْ
يَنْظُرُوْنَ اِلَّا تَاْوِيْلَهٗ يَوْمَ يَاْتِيْ تَاْوِيْلُهٗ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ نَسُوْهُ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَآءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ فَهَلْ لَّنَا مِنْ شُفَعَآءَ
فَيَشْفَعُوْا لَنَآ اَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلَ غَيْرَ الَّذِيْ كُنَّا نَعْمَلُ قَدْ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝

अनुवाद–

(42) और (इसके विपरीत) जो लोग ईमान लाए, और उन्होंने अच्छे काम किये– 'हम' किसी पर उसकी ताक़त (सामर्थ्य) से ज़्यादा तकलीफ़ देते ही नहीं, ऐसे ही लोग जन्नत वाले हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे। (43) और उनके सीनों में एक-दूसरे के प्रति जो रंजिश होगी, उसे 'हम' दूर कर देंगे– उनके नीचे नहरें बह रही होंगी और वे कहेंगे, ''सभी तअ़रीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, 'जिसने' इसकी ओर हमें राह दिखाई, और अगर अल्लाह हमें राह न दिखाता तो हम हरगिज़ राह न पा सकते थे, बेशक 'हमारे' रब के रसूल हक़ (सत्य) लेकर आए थे।'' और उन्हें आवाज़ दी जाएगी, ''यह जन्नत है जिसके तुम वारिस बनाए गये उन कामों के बदले में जो तुम (दुनिया में) किया करते थे।'' (44) और जन्नतवाले आग वालों को पुकारेंगे, ''हमसे हमारे रब ने जो वादा किया था, उसे हमने सच पा लिया, तो क्या तुमसे तुम्हारे रब ने जो वादा कर रखा था, तुमने भी उसे सच पाया?'' वे कहेंगे, '' हाँ'' इतने में एक पुकारने वाला उनके बीच पुकारेगा, ''अल्लाह की फिट्कार हो ज़ालिमों पर–'' (45) जो अल्लाह की राह से रोकते और उस में टेढ़ (कमी) निकालना चाहते और आख़िरत का इन्कार करते थे, (46) और इन दोनों (जन्नत व जहन्नम) के बीच एक ओट (दीवार) होगी, और अअ़राफ़ (दीवार) पर कुछ लोग होंगे जो हर एक को उनके मस्तक (लक्षणों) से पहचान लेंगे, और वे जन्नत वालों से पुकार कर कहेंगे, ''तुम पर सलाम हो'' यह लोग (अभी) जन्नत में दाख़िल न हुए होंगे, और वे आस लगाए होंगे; (47) और जब उनकी निगाहें आगवालों की ओर फिरेंगी तो कहेंगे, ''ऐ हमारे रब हमें

ज़ालिम लोगों में शामिल न कीजिए"। (48) और ये अअ़राफ़ (एक दीवार) वाले कुछ ऐसे लोगों से- जिन्हें ये उनके लक्षणों से पहचानते होंगे, कहेंगे, ''तुम्हारे जत्थे तो तुम्हारे कुछ काम न आए और न तुम्हारा अकड़ते रहना ही,'' (49) क्या ये वही लोग हैं, जिनके विषय में तुम क़समें खाते थे कि अल्लाह उन पर अपनी रह़मत न करेगा, ''तुम जन्नत में दाख़िल हो जाओ, तुम्हारे लिए न कोई डर है और न तुम्हें कोई ग़म होगा।'' (50) और आग वाले जन्नत वालों को (रोते हुए) पुकारेंगे कि ''थोड़ा पानी हम पर बहा दो, या उन चीज़ों में से कुछ दे दो जो अल्लाह ने तुम्हें दी है, वे कहेंगे, अल्लाह ने तो यह दोनों चीज़ें इन्कार करने वालों के लिए ह़राम कर दी हैं-"(51) जिन्होंने अपना दीन खेल-तमाशा बना रखा था और जिन्हें दुनिया की ज़िन्दगी ने ध ोखे में डाल रखा था; तो आज 'हम' भी उन्हें भुला देंगे, जिस तरह यह लोग अपने इस दिन की मुलाक़ात को भूले रहे और 'हमारी' आयतों का इन्कार करते रहे; (52) और 'हम' उनके पास एक ऐसी किताब ले आए हैं, जिसको इल्म व हिदायत के साथ खोल-खोल कर बयान किया गया है, वह ईमान वालों के लिए हिदायत और रह़मत है। (53) क्या ये लोग केवल उसी के इन्तिज़ार में हैं कि उसकी ह़क़ीक़त सामने आ जाए? जिस दिन उसकी ह़क़ीक़त सामने आ जाएगी, तो जो लोग उसको पहले से भूले हुए थे, वे बोल उठेंगे, ''बेशक हमारे रब के रसूल ह़क़ लेकर आए थे, तो क्या हमारे कोई सिफ़ारिशी हैं, जो हमारी सिफ़ारिश करें, या हम (दुनिया में) फिर लौटा दिये जाएँ कि जो अ़मल हम करते थे उनके सिवा और (अच्छे) अ़मल करें?'' बेशक उन लोगों ने अपना नुक़सान किया और जो कुछ वे झूठ गढ़ा करते थे, सब उनसे गुम (ग़ायब) हो गये।

आयत नं० 42 से 53 तक की व्याख्या

42 وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۴۲﴾

अल्लाह तआ़ला क़ुर्आन में जहन्नम और जहन्नम वालों के ज़िक्र के बाद जन्नत और जन्नत वालों का ज़िक्र करते हैं और यही ह़ाल इस के बरअ़क्स (विपरीत) भी होता है। यहाँ भी जहन्नमियों के बाद जन्नतियों का ज़िक्र आया है और दर्मियान में यह शब्द इस्तेमाल कर के لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَآ अल्लाह ने इस बात से आगाह किया है कि अल्लाह पर ईमान लाना और ज़िन्दग़ी में नेक अ़मल करना मुश्किल काम नहीं है, इसलिए कि अल्लाह का निज़ाम है कि वह बन्दों को उन की ताक़त से ज़्यादा का मुकल्लफ़ नहीं बनाता।

43 وَنَزَعْنَا مَا فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ هَدٰىنَا لِهٰذَا وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَآ اَنْ هَدٰىنَا اللّٰهُ لَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ وَنُوْدُوْٓا اَنْ تِلْكُمُ الْجَنَّةُ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۴۳﴾

जन्नत की नेअ़मतों में से एक नेअ़मत यह भी होगी कि अल्लाह तआ़ला जन्नतियों के दिलों से कीना व ह़सद और बुग्ज़ (ईर्ष्या व द्वेष) और दुश्मनी को निकाल देगा, इसलिए कि अगर वहाँ भी दुनिया की तरह़ उन के दिल आपस में साफ़ नहीं होंगे तो जन्नत की नेअ़मतें कामिल नहीं होंगी और जन्नती अल्लाह

का शुक्र अदा करेंगे और कहेंगे, ऐ अल्लाह! तूने हम पर एह़सान किया कि हमें ईमान व नेक अ़मल की तौफ़ीक़ दी जिस की वजह से आज हम जन्नत की बहारों से मज़ा उठा रहे हैं।

कलिमा 'मीरास' में इस बात की तरफ़ इशारा है कि जन्नत अच्छे अ़मल के बदले में नहीं मिलेगी, बल्कि वह एक ज़रिया होगा। जिस तरह़ विरासत बग़ैर मेह़नत के मिलती है और नसब इस का ज़रिया होता है। इसीलिए यह आयत सह़ीह़ैन की उस ह़दीस से अलग नहीं है जिस में नबी करीम (सल्ल०) ने फ़रमाया, "किसी आदमी का अ़मल उसे जन्नत में दाख़िल नहीं करेगा"।

आयत के इस ह़िस्से की तफ़्सीर में 'इमाम मुस्लिम' ने ह़ज़रत अबू सईद और ह़ज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जब जन्नत वाले जन्नत में दाख़िल हो जाएँगे तो एक पुकारने वाला पुकारेगा कि बेशक अब तुम लोग ज़िन्दा होगे कभी न मरोगे और बेशक तुम लोग सेह़तमन्द रहोगे कभी भी बीमार नहीं होगे और बेशक तुम लोग जवान रहोगे कभी भी बूढ़े नहीं होगे और बेशक तुम लोग ऐ़श की ज़िन्दग़ी गुज़ारोगे कभी भी परेशान न होगे। इस के बाद आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि यही है अल्लाह का क़ौल "وَنُوْدُوْٓا اَنْ تِلْكُمُ الْجَنَّةُ"।

44-45 وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ اَصْحٰبَ النَّارِ اَنْ قَدْ وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدْتُّمْ مَّا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا ؕ قَالُوْا نَعَمْ ۚ فَاَذَّنَ مُؤَذِّنٌۢ بَيْنَهُمْ اَنْ لَّعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ۙ الَّذِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۚ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ كٰفِرُوْنَ ۘ

जब जन्नती और जहन्नमी सभी अपने-अपने ठिकानों पर पहुँच जाएँगे, तो जन्नती जहन्नमी की ह़सरत बढ़ाने के लिए उन्हें पुकार कर यह बात कहेंगे।

'ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर' (रह़०) लिखते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने मैदाने बद्र में काफ़िर जो क़त्ल किये जा चुके थे पुकार कर यही बात कही थी, कुफ़्र के सरदारों के नाम ले लेकर कहा कि तुम्हारे रब ने तुम से जो वादा किया था क्या वह तुम्हें मिल गया? मुझे तो मिल गया जो मेरे रब ने मुझ से वादा किया था और 'ह़ज़रत उ़मर' (रज़ि०) ने जब इस पर ह़ैरत का इज़्हार किया तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि अल्लाह की क़सम वह तुम से ज़्यादा सुन रहे हैं, लेकिन जवाब देने से बेबस हैं।

इस के बाद उन्हें मज़ीद ज़ेहनी तक्लीफ़ पहुँचाने के लिए अल्लाह की तरफ़ से एक मुनादी पुकार कर कहेगा कि ज़ालिमों पर अल्लाह की लअ़नत हो जो अपने आप को और ग़ैरों को अल्लाह के दीन से रोकते थे और इस में तब्दीली करते थे और आख़िरत के दिन का इन्कार करते थे।

46-47 وَبَيْنَهُمَا حِجَابٌ ۚ وَعَلَى الْاَعْرَافِ رِجَالٌ يَّعْرِفُوْنَ كُلًّاۢ بِسِيْمٰىهُمْ ۚ وَنَادَوْا اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ ۟ لَمْ يَدْخُلُوْهَا وَهُمْ يَطْمَعُوْنَ ۞ وَاِذَا صُرِفَتْ اَبْصَارُهُمْ تِلْقَآءَ اَصْحٰبِ النَّارِ ۙ قَالُوْا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۠

जन्नत और जहन्नम के दर्मियान एक दीवार होगी, जिसे क़ुर्आन करीम ने **"हिजाब"** कहा है, उस के अन्दर की तरफ़ अल्लाह की रह़मत और जन्नत होगी और बाहर की तरफ़ जहन्नम और उस का

अ़ज़ाब। उसी ह़िजाब (परदा) को "अअ़राफ़" कहा गया है जो उ़र्फ़ की जमअ़ (बहुवचन) है, जो हर ऊँची जगह के लिए बोला जाता है, इसलिए अअ़राफ़ से मुराद जन्नत व जहन्नम के दर्मियान की दीवार की ऊँची जगह है।

अस्ह़ाबे अअ़राफ़ के बारे में मुफ़स्सिरीन ने सह़ाबा व ताबिई़न (जिसने सह़ाबा को देखा हो) से कई बातें नक़्ल की हैं, किसी ने कहा कि यह वह लोग होंगे जिन की नेकियाँ और बुराईयाँ बराबर होंगी। 'इब्ने मसऊद', 'ह़ुज़ैफ़ा बिन यमान' और 'इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुम' वग़ैरहुम का यही क़ौल है और बाज़ ह़दीसें इस क़ौल की ताईद करती हैं और किसी ने कहा कि वह मोमिनों में अफ़ज़ल लोग होंगे। किसी ने शहीद किसी ने अम्बिया और किसी ने उन लोगों को बताया जो अल्लाह की राह में सताये गये होंगे। यह लोग अहले जन्नत और अहले जहन्नम सब को उन की निशानियों से पहचान लेंगे और उन लोगों को सलाम करेंगे जिन्हें जन्नत की बशारत दी जा चुकी होगी यह अभी इस में दाख़िल नहीं हुए होंगे, लेकिन उस की ख़्वाहिश उन के दिलों में करवट ले रही होगी और अस्ह़ाबे अअ़राफ़ जब जहन्नम की तरफ़ नज़र उठाकर देखेंगे तो उन जहन्नमियों को पहचान लेंगे जिन्हें दुनिया में उन्होंने कुफ़्र व शिर्क और अल्लाह से बग़ावत व सरकशी करते देखा होगा तो मारे ख़ौफ़ के जहन्नम के अ़ज़ाब से अल्लाह की पनाह माँगते हुए पुकार उठेंगे कि ऐ हमारे रब! हमें ज़ालिमों के साथ जहन्नम में दाख़िल न कीजिए।

48-49 وَنَادَىٰٓ أَصۡحَٰبُ ٱلۡأَعۡرَافِ رِجَالٗا يَعۡرِفُونَهُم بِسِيمَٰهُمۡ قَالُواْ مَآ أَغۡنَىٰ عَنكُمۡ جَمۡعُكُمۡ وَمَا كُنتُمۡ
تَسۡتَكۡبِرُونَ ۝ أَهَٰٓؤُلَآءِ ٱلَّذِينَ أَقۡسَمۡتُمۡ لَا يَنَالُهُمُ ٱللَّهُ بِرَحۡمَةٍۚ ٱدۡخُلُواْ ٱلۡجَنَّةَ لَا خَوۡفٌ عَلَيۡكُمۡ
وَلَآ أَنتُمۡ تَحۡزَنُونَ ۝

अस्ह़ाबे अअ़राफ़ कुफ़्र व शिर्क के सरदारों को पुकार कर कहेंगे (जिन्हें उन की निशानियों से पहचान लेंगे) कि कहाँ गई तुम्हारी जमाअ़त और तुम्हारा ख़ानदान व क़बीला और कहाँ है आज तुम्हारा घमण्ड? फिर जन्नत की तरफ़ देखेंगे तो वहाँ उन कमज़ोर लोगों को देखेंगे जिन्हें कुफ़्फ़ार दुनिया में ज़लील समझते थे और गुमान करते थे कि अल्लाह अपनी रह़मत से उन्हें छोड़कर उन छोटे लोगों को कैसे देगा। उन्हें मुख़ातब कर के कहेंगे कि तुम लोग अब जन्नत में दाख़िल हो जाओ, वहीं हमेशा के लिए रहो अब तुम्हें कोई ग़म व ख़ौफ़ नहीं होगा।

50-51 وَنَادَىٰٓ أَصۡحَٰبُ ٱلنَّارِ أَصۡحَٰبَ ٱلۡجَنَّةِ أَنۡ أَفِيضُواْ عَلَيۡنَا مِنَ ٱلۡمَآءِ أَوۡ مِمَّا رَزَقَكُمُ ٱللَّهُۚ قَالُوٓاْ إِنَّ
ٱللَّهَ حَرَّمَهُمَا عَلَى ٱلۡكَٰفِرِينَ ۝ ٱلَّذِينَ ٱتَّخَذُواْ دِينَهُمۡ لَهۡوٗا وَلَعِبٗا وَغَرَّتۡهُمُ ٱلۡحَيَوٰةُ ٱلدُّنۡيَاۚ
فَٱلۡيَوۡمَ نَنسَىٰهُمۡ كَمَا نَسُواْ لِقَآءَ يَوۡمِهِمۡ هَٰذَا وَمَا كَانُواْ بِـَٔايَٰتِنَا يَجۡحَدُونَ ۝

इस में जहन्नमियों की रुस्वाई बयान की गई है कि दुनिया में तो कमज़ोर मुसलमानों को ज़लील व ह़क़ीर समझते थे और कहते थे कि अल्लाह तआ़ला हमें छोड़कर उन्हें क्यों अपनी रह़मत से नवाज़ेगा, लेकिन अब ह़ाल यह है कि अपनी बेबसी में जन्नतियों को पुकारेंगे और मुकम्मल इन्किसारी के साथ उन से कहेंगे कि हमें उस पानी में से थोड़ा सा दे दो जो अल्लाह ने बतौर रह़मत तुम्हें अ़ता किया है,

ताकि हम आग की लपट और प्यास की शिद्दत से निजात पा जाएँ या तुम्हें जो खाने और पीने की चीज़ें मिली हैं उन में से कुछ दे दो, तो जन्नती कहेंगे कि अल्लाह ने उन दोनों ही चीज़ों को जहन्नमियों पर ह़राम कर दिया है, जिन्होंने अल्लाह के दीन को खेल और मज़ाक़ बना लिया था और दुनिया और उस की ज़ीनतों में फँस कर आख़िरत से ग़ाफ़िल हो गये थे।

फिर अल्लाह तआ़ला कहेंगे कि आज हम भी उन के साथ उस आदमी जैसा मामला करेंगे जो उन्हें भूल गया हो, उन्हें हमेशा के लिए जहन्नम में छोड़ देंगे जिस तरह़ उन्होंने आज के दिन की मुलाक़ात को भुला दिया था और जिस तरह़ वह अल्लाह की आयतों का इन्कार करते थे।

'तिर्मिज़ी' ने ह़ज़रत अबू सईद और ह़ज़रत अबूहुरैरा रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "क़ियामत के दिन एक आदमी को लाया जाएगा, तो अल्लाह उस से पूछेगा कि क्या मैंने तुम्हें कान, आँख, माल और औलाद नहीं दी थी? क्या तुम्हारे लिए चौपायों और खेतों को नहीं दिया था? क्या मैंने तुम्हें चौधराहट नहीं दी थी? क्या तुम समझते नहीं थे कि आज का दिन देखोगे? तो कहेगा कि नहीं, तो अल्लाह कहेगा, मैंने तुम्हें आज उसी तरह़ भुला दिया है जिस तरह़ तुम ने मुझे भुला दिया था।"

52 وَلَقَدْ جِئْنٰهُمْ بِكِتٰبٍ فَصَّلْنٰهُ عَلٰى عِلْمٍ هُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝

अल्लाह तआ़ला उन्हीं जहन्नमियों के बारे में बता रहे हैं कि यह जो कुछ हुआ उन के अपने बुरे करतूतों का नतीजा है, वरना अल्लाह ने तो अम्बिया व रसूल भेज कर और किताबें नाज़िल करके उन्हें एतिक़ाद, अह़काम और तमाम आख़िरत की ख़बरें दी थीं।

53 هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا تَاْوِيْلَهٗ ؕ يَوْمَ يَاْتِيْ تَاْوِيْلُهٗ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ نَسُوْهُ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَآءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۚ
فَهَلْ لَّنَا مِنْ شُفَعَآءَ فَيَشْفَعُوْا لَنَآ اَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلَ غَيْرَ الَّذِيْ كُنَّا نَعْمَلُ ؕ قَدْ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ
عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝

नबी करीम (सल्ल०) का भेजा जाना और कुर्आन करीम के नुज़ूल के बाद भी जब अहले मक्का ईमान नहीं लाए, तो अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि क्या अब यह लोग उस बदले और अन्जाम का इन्तिज़ार कर रहे हैं, जिस के बारे में कुर्आन में ख़बर दी जा चुकी है?

इस के बाद फ़रमाया, जब क़ियामत का दिन आ जाएगा तो जो लोग उसे अपनी दुनियावी ज़िन्दगी में फ़रामोश कर चुके होंगे, अब अपने कुफ़्र का एतिराफ़ कर लेंगे और कहेंगे कि हमारे रब के अम्बिया ने तो तमाम ह़क़ बातों को साफ़-साफ़ बयान कर दिया था।

आयत नं० 54 से 64 तक

إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ يُغْشِي اللَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهُ حَثِيثًا
وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُومَ مُسَخَّرَاتٍ بِأَمْرِهِ ۗ أَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْأَمْرُ ۗ تَبَارَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝ ادْعُوا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً ۚ
إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ۝ وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا وَادْعُوهُ خَوْفًا وَطَمَعًا ۚ إِنَّ رَحْمَتَ اللَّهِ قَرِيبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِينَ ۝
وَهُوَ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيَاحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا أَقَلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا سُقْنَاهُ لِبَلَدٍ مَّيِّتٍ فَأَنزَلْنَا بِهِ الْمَاءَ
فَأَخْرَجْنَا بِهِ مِن كُلِّ الثَّمَرَاتِ ۚ كَذَٰلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتَىٰ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۝ وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهُ بِإِذْنِ رَبِّهِ ۖ وَالَّذِي
خَبُثَ لَا يَخْرُجُ إِلَّا نَكِدًا ۚ كَذَٰلِكَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَشْكُرُونَ ۝ لَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَقَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا
اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝ قَالَ الْمَلَأُ مِن قَوْمِهِ إِنَّا لَنَرَاكَ فِي ضَلَالٍ
مُّبِينٍ ۝ قَالَ يَا قَوْمِ لَيْسَ بِي ضَلَالَةٌ وَلَٰكِنِّي رَسُولٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ۝ أُبَلِّغُكُمْ رِسَالَاتِ رَبِّي وَأَنصَحُ لَكُمْ وَأَعْلَمُ
مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝ أَوَعَجِبْتُمْ أَن جَاءَكُمْ ذِكْرٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ مِّنكُمْ لِيُنذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوا وَلَعَلَّكُمْ
تُرْحَمُونَ ۝ فَكَذَّبُوهُ فَأَنجَيْنَاهُ وَالَّذِينَ مَعَهُ فِي الْفُلْكِ وَأَغْرَقْنَا الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا
عَمِينَ ۝

अनुवाद-

(54) बेशक तुम्हारा रब अल्लाह ही है, जिसने आसमानों और ज़मीन को छः दिन में पैदा किया- फिर अ़र्श पर (राज सिंहासन पर विराजमान हुआ) जा ठहरा, 'वही' रात को दिन पर ढ़ाँपता है, जो तेज़ी से उसका पीछा करती है-और सूरज, चाँद, और तारे भी बनाए, इस तरह कि वे 'उसके' हुक्म से काम में लगे हुए हैं; देखो! सब मख़्लूक भी (सृष्टि) 'उसी' की है, और 'उसी' का हुक्म है; अल्लाह सारे संसार का रब, बड़ी बरकत वाला है। (55) अपने रब को गिड़गिड़ा कर और चुपके-चुपके पुकारो, बेशक 'वह' ह़द से बढ़ने वालों को पसंद नहीं करता; (56) और धरती में 'उसके' सुधार के बाद बिगाड़ न पैदा करो, ख़ौफ़ और उम्मीद के साथ 'उसको' पुकारो, बेशक अल्लाह की रह़मत नेकी करने वालों से क़रीब है। (57) और 'वही' तो है जो अपनी रह़मत से पहले हवाओं को ख़ुशख़बरी बना कर भेजता है, यहाँ तक कि जब वह भारी-भारी बादलों को उठा लाती हैं तो 'हम' उसको एक मरी हुई बस्ती की ओर हाँक देते हैं, फिर उससे पानी बरसाते हैं, फिर उससे हर तरह के फल निकालते हैं; इसी तरह 'हम' मुर्दों को ज़िन्दा करके बाहर निकालेंगे-ताकि तुम्हें ध्यान रहे; (58) और अच्छी ज़मीन में पेड़ पौधे 'उसके' रब के हुक्म से निकलते हैं; और जो ज़मीन ख़राब हो गयी, तो उससे खराब पैदावार के सिवा कुछ नहीं निकलता; इसी तरह 'हम' निशानियों को उन लोगों के लिए तरह-तरह से बयान करते हैं, जो शुक्र गुज़ार हैं। (59) 'हमने' नूह़ को उनकी क़ौम की ओर भेजा, तो उन्होंने कहा, ''ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह की इ़बादत करो, 'उसके' सिवा तुम्हारा कोई मअ़बूद नहीं; मुझे तुम्हारे लिए एक बड़े दिन के अ़ज़ाब का डर है; (60) उनकी क़ौम के सरदारों ने कहा, ''हम तो तुम्हें खुली गुमराही में पड़ा देख रहे हैं।'' (61) उन्होंने कहा, ''ऐ मेरी क़ौम के लोगो! मुझ में किसी तरह की गुमराही नहीं, बल्कि मैं सारी दुनिया के रब का एक रसूल हूँ।'' (62) तुम्हें अपने रब का पैग़ाम पहुँचाता हूँ, और

तुम्हारा भला चाहता हूँ, और मुझको अल्लाह की ओर से ऐसी बातें मालूम हैं, जो तुम नहीं जानते।" (63) क्या तुमको इस बात से तअ़ज्जुब हुआ कि तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक व्यक्ति के ज़रिये, तुम्हारे 'रब' की नसीह़त आई? ताकि 'वह' तुम्हें सचेत कर दे, और ताकि तुम परहेज़गार बनो और तुम पर रह़म किया जाए? (64) मगर उन लोगों ने उनको झुठला दिया, तो 'हमने' नूह़ को और जो उनके साथ कश्ती (नौका) में सवार थे, उनको तो बचा लिया; और जिन लोगों ने 'हमारी' आयतों को झुठलाया था, उन्हें डुबो दिया, बेशक वे अन्धे लोग थे।

आयत नं० 54 से 64 तक की व्याख्या

54 إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ يُغْشِي اللَّيْلَ النَّهَارَ
يَطْلُبُهُ حَثِيثًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُومَ مُسَخَّرَاتٍ بِأَمْرِهِ ۗ أَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْأَمْرُ ۗ تَبَارَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝

इस आयत के अ़लावा क़ुर्आन करीम की दूसरी कई आयतों में अल्लाह तआ़ला ने यह बात बताई है कि उस ने आसमानों और ज़मीन और उन के दर्मियान की तमाम चीज़ों को इत्वार से जुमअ़ तक छः दिनों में पैदा किया है। किसी ने कहा है कि हर दिन दुनिया के दिनों के बराबर था।

'ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा' से रिवायत है कि हर दिन हज़ार साल के बराबर था और अल्लाह तआ़ला तो इस बात पर क़ादिर था कि कलिमा **'कुन'** के ज़रिये उन तमाम चीज़ों को एक लम्हे में पैदा कर देता, लेकिन किसी ह़िक्मत की वजह से जिसे वही जानता है छः दिनों में पैदा किया। बाज़ मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि अल्लाह तआ़ला ने बन्दों को अपने मामलात में नर्मी और ग़ौर व फ़िक्र की तअ़लीम देने के लिए ऐसा किया और बाज़ ने लिखा है कि अल्लाह के नज़्दीक हर काम का एक वक़्त मुक़र्रर है।

اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ का माने व मफ़्हूम बयान करने में लोगों के बहुत से अक़्वाल (कथन) हैं, लेकिन सलफ़ सालिह़ीन का हर दौर में यही मस्लक रहा है कि अल्लाह तआ़ला अ़र्श पर इस तरह़ इस्तवा है जिस तरह़ उस का आ़ला दर्जा (श्रेष्ठ पद) और इ़ज़्ज़त (सम्मान) के लायक़ है, न उस का इन्कार किया जा सकता है, न उसे तश्बीह (संज्ञा) दी जा सकती है और न ही उस की ह़ालत ही बयान की जा सकती है।

सह़ीह़ अह़ादीस में अल्लाह तआ़ला के अ़र्श की सिफ़त यह बयान की गई है कि वह आसमानों, ज़मीन और उस के दर्मियान ऊपर की हर चीज़ को मुह़ीत यानी घेरे हुए है।

'इमाम बुख़ारी' के उस्ताद 'नईम बिन ह़म्माद' का क़ौल है कि जिस ने अल्लाह को उसकी मख़्लूक़ के साथ तश्बीह (संज्ञा) दिया वह काफ़िर हो गया और जिस ने किसी ऐसे गुण का इन्कार किया जो अल्लाह ने अपने लिए बयान किया है वह काफ़िर हो गया और अल्लाह ने अपने लिए जो सिफ़त बयान की है या उस के रसूल ने बयान की है उस में मख़्लूक़ात के साथ मुशाबहत नहीं है, इसलिए जिस ने अल्लाह के लिए इन सिफ़ात को जिन का ज़िक्र क़ुर्आनी आयात और सह़ीह़ ह़दीसों में आया है उसी तरह़ साबित किया जिस तरह़ उस की ज़ात के लायक़ है और उस की ज़ात को तमाम ऐ़बों से पाक समझा तो वह राहे

रास्त पर बाक़ी रहा।

यानी रात का अंधेरा दिन की रोशनी के ज़रिये और दिन की रोशनी रात के अंधेरे के ज़रिये ग़ायब हो जाती है। हर एक दूसरे के पीछे लगा होता है, किसी ह़ाल में भी दोनों की रफ़्तार में देरी नहीं होती।

अल्लाह ने सूरज, चाँद और सितारों को इस तरह़ पैदा किया कि उन में से हर एक अल्लाह की मर्ज़ी और उस के इरादे का पाबन्द है, एक बाल के बराबर भी अपनी मुक़र्रर ह़रकात से हट नहीं सकता। इसी लिए उस के बाद अल्लाह ने फ़रमाया कि बेशक उसी ने तमाम चीज़ों को पैदा किया, वही सब का मालिक है और हर चीज़ पर उसी का हुक्म चलता है।

55 ادْعُوا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ۝

जब अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर पूरी क़ुद्‌रत रखता है, ख़ालिक़े क़ायनात और ह़कीम है तो उस के बन्दों का यह फ़र्ज़ है कि सिर्फ़ उसी की अ़िबादत करें और ज़ाहिर व छुपे हर ह़ाल में सिर्फ़ उसी को पुकारें और उसी के सामने हाथ फैलाएँ।

इस आयते करीमा में दुआ़ की दो शर्तें बयान की गई हैं। एक तो यह कि बन्दे अपने रब के सामने आ़जिज़ी व इन्किसारी का इज़्हार करें। ह़ाफ़िज़ सियूती ने लिखा है कि दुआ़ के लिए हाथ उठाना इन्किसारी है। 'ह़ाफ़िज़ बज़्ज़ार' ने ह़ज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) अ़रफ़ात के मैदान में हाथ उठा कर दुआ़ करते रहे और दूसरी शर्त यह है कि रियाकारी से बचे और बिना आवाज़ बुलन्द किये दुआ़ करें।

'सह़ीह़ैन' में ह़ज़रत अबू मूसा अ़श्अ़री (रज़ि०) से रिवायत है कि लोग ऊँची आवाज़ से दुआ़ करने लगे तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "लोगो! ज़रा नर्मी से काम लो, तुम किसी गूंगे, बहरे और ग़ायब को नहीं पुकार रहे हो, जिस ज़ात को तुम पुकार रहे हो वह बहुत सुनने वाला और क़रीब है।" **(बुख़ारी)**

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया ادْعُوا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً और ज़करिया (अ़लै०) के बारे में फ़रमाया إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ نِدَاءً خَفِيًّا *(सूरः मरयम-3)*

"जब उन्होंने अपने रब को चुपके-चुपके पुकारा।"

इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने आयत के आख़िर में फ़रमाया कि वह ह़द से बढ़ने वालों को पसन्द नहीं करता, यानी उन लोगों को जो अपनी दुआ़ओं में ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ अख़्तियार नहीं करते और ऊँची आवाज़ से दुआ़ करते हैं अल्लाह तआ़ला उन्हें पसन्द नहीं करता।

56 وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا وَادْعُوهُ خَوْفًا وَطَمَعًا ۚ إِنَّ رَحْمَتَ اللَّهِ قَرِيبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِينَ ۝

अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन में फ़साद फैलाने से मना किया है और अगर वह फ़साद ज़मीन के सुधार के बाद हो तो बन्दों के लिए ज़्यादा नुक़्सानदे है। इसलिए अल्लाह ने इस से रोका है और बन्दों को हुक्म दिया है कि वह ज़मीन पर अल्लाह के नेक बन्दे बन कर रहें, उसी की अ़िबादत करें और उस की पकड़ से डरते हुए जन्नत की उम्मीद के साथ उसी को पुकारें।

57 وَهُوَ الَّذِىْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًاۢ بَيْنَ يَدَىْ رَحْمَتِهٖ ؕ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَقَلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا سُقْنٰهُ لِبَلَدٍ مَّيِّتٍ
فَاَنْزَلْنَا بِهِ الْمَآءَ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ؕ كَذٰلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتٰى لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ۝

अल्लाह तआ़ला आसमानों और ज़मीन का ख़ालिक़ है, हर चीज़ उसी के क़ब्ज़े क़ुद्रत में है, हर ह़ाल में उसी का हुक्म चलता है, जब यह सब कुछ बयान किया जा चुका है और बन्दों को नसीह़त की जा चुकी है कि वह उसी अल्लाह तआ़ला को पुकारें तो अब इस आयत में बयान किया जा रहा है कि वही अल्लाह रोज़ी देने वाला है और वह क़ियामत के दिन मुर्दों को उसी तरह़ ज़िन्दा करेगा, जिस तरह़ बारिश के पानी के ज़रिये मुर्दा ज़मीन में ज़िन्दग़ी डालता है और तरह़-तरह़ के फल और पौधे पैदा करता है।

अल्लाह तआ़ला जब बारिश बरसाना चाहता है तो हवा को हुक्म देता है कि वह बादल को ह़रकत में लाए, बारिश होती है और एक दूसरी हवा उसे तक़्सीम करती है। इस बारिश के पानी से अल्लाह तआ़ला मुख़्तलिफ़ मुल्कों में मुख़्तलिफ़ क़िस्म के फल और पौधे पैदा करता है, ह़ालांकि पानी एक होता है, लेकिन हर ज़मीन की ख़ासियत और हर इलाक़े की ज़रूरत के मुताबिक़ फलों और खेतियों की क़िस्में बदलती रहती हैं। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि हम क़ियामत के दिन मुर्दों को भी इसी तरह़ ज़िन्दा करेंगे।

58 وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهٗ بِاِذْنِ رَبِّهٖ ۚ وَالَّذِىْ خَبُثَ لَا يَخْرُجُ اِلَّا نَكِدًا ؕ كَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ
لِقَوْمٍ يَّشْكُرُوْنَ۝

ज़मीन के बाज़ टुकड़े उपजाऊ व शादाब होते हैं और बाज़ बन्जर होते हैं। यही ह़ाल मुख़्तलिफ़ इन्सानों की तबीअ़तों और उन के दिलों का है।

ह़ज़रत अबू मूसा (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि फ़रमाने रसूल (सल्ल०) है, मुझे अल्लाह तआ़ला ने इ़ल्म व हिदायत देकर भेजा है। इस की मिसाल उस मूसलाधार बारिश की है जो ज़मीन पर बरसी। उस के जो ह़िस्से उपजाऊ थे उन्होंने पानी को अपने अन्दर जज़्ब कर के चारा और घास को ख़ूब लगाया।

उस के बाज़ ह़िस्से सख़्त थे जिन्होंने पानी को रोक लिया। (अन्दर जज़्ब न हुआ) तो उस से भी लोगों ने फ़ायदा उठाया, खुद पिया और जानवरों ने भी और खेतों को भी सैराब किया और खेती भी की। ज़मीन का कुछ ह़िस्सा बिल्कुल चट्यल था जिस ने पानी रोका और न कुछ लगाया। **(बुख़ारी)**

जो ज़मीन उपजाऊ होती है उसी में अल्लाह के हुक्म से पौधे अच्छे और नफ़ा बख़्श निकलते हैं और जो ख़राब होती है, जैसे काले पत्थरों वाली या बन्जर ज़मीन उस में अच्छे पौधे नहीं पैदा होते और जो पैदा होते हैं वह नफ़ा बख़्श नहीं होते। 'इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा' कहते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने इस मिसाल के ज़रिये मोमिन व काफ़िर का ह़ाल बयान किया है।

'क़तादा' कहते हैं कि मोमिन क़ुर्आन करीम सुनकर उसे याद करता है और उस के मआ़नी को अपने दिल में जगह देता है और इस से फ़ायदा होता है उस उपजाऊ ज़मीन की तरह़, जिस में बारिश होने के बाद पौधे उगते हैं, लेकिन काफ़िर की ह़ालत उस के उल्टा होती है।

सहीहैन में ह़ज़रत अबू मूसा अ़श्अ़री (रज़ि०) की रिवायत में है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, “अल्लाह तआ़ला ने मुझे जो हिदायत और इ़ल्म देकर भेजा है उस की मिसाल मूसलाधार बारिश की सी है, अच्छी ज़मीन उसे क़ुबूल कर लेती है, फिर उस में पौधे और बहुत सारी सब्ज़ियाँ उगती हैं, और ख़ुश्क और सख़्त ज़मीन पानी को रोक लेती है जिस से लोग फ़ायदा उठाते हैं, पीते हैं, जानवरों को सैराब करते हैं और खेती करते हैं और चट्यल और उथली ज़मीन में न पानी रुकता है और न कोई घास उगती है, यह मिसाल उस आदमी की है जिस ने अल्लाह के दीन की समझ ह़ासिल की और उस चीज़ से फ़ायदा हुआ जो अल्लाह ने मुझे देकर भेजा है, चुनांचे उस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों को तअ़लीम दी और यह मिसाल उस आदमी की है जिस ने कुछ भी फ़ायदा नहीं उठाया और न उस हिदायत को क़ुबूल किया जिसे देकर मैं भेजा गया हूँ।” **(बुख़ारी, मुस्लिम)**

59-64

لَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَقَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ إِنِّي أَخَافُ
عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝ قَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِهِ إِنَّا لَنَرَاكَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ۝ قَالَ يَا قَوْمِ لَيْسَ
بِي ضَلَالَةٌ وَلَٰكِنِّي رَسُولٌ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ أُبَلِّغُكُمْ رِسَالَاتِ رَبِّي وَأَنْصَحُ لَكُمْ وَأَعْلَمُ مِنَ
اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝ أَوَعَجِبْتُمْ أَنْ جَاءَكُمْ ذِكْرٌ مِنْ رَبِّكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ مِنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوا
وَلَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝ فَكَذَّبُوهُ فَأَنْجَيْنَاهُ وَالَّذِينَ مَعَهُ فِي الْفُلْكِ وَأَغْرَقْنَا الَّذِينَ
كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا عَمِينَ ۝

इस सूरः के शुरु में ह़ज़रत आदम (अ़लै०) का क़िस्सा तफ़्सील के साथ गुज़र चुका है। अब यहाँ से दूसरे कुछ छः मशहूर अम्बिया व रसूलों के क़िस्से बयान किये जा रहे हैं और वह ह़ज़रत नूह़, ह़ज़रत हूद, ह़ज़रत सालेह़, ह़ज़रत लूत, ह़ज़रत शुऐब और ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) हैं। इस से मक़्सूद यह है कि कुफ़्फ़ारे क़ुरैश को मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ में अल्लाह की तरफ़ बुलाया जाए, उन्हें बताया जाए कि जिस तरह़ पिछले अम्बिया-ए-किराम आये तो जिन लोगों ने उन की दअ़वत को क़ुबूल किया अल्लाह ने उन्हें निजात दी और काफ़िरों को हलाक कर दिया, अगर तुम भी ईमान लाओगे तो अल्लाह की ओर से इ़ज़्ज़त व इक्राम के ह़क़्दार बनोगे वरना तुम्हें भी हलाक कर दिया जाएगा और अल्लाह तुम्हारी परवाह नहीं करेगा।

इन वाक़िआ़त के बयान करने का एक दूसरा फ़ायदा नबी करीम (सल्ल०) की नुबूव्वत की तस्दीक़ है, वह इस तरह़ कि वह अल्लाह के नबी हैं जब ही तो अल्लाह ने उन्हें वह्य के ज़रिये यह बातें बताई हैं वरना उन्हें कहाँ से इन बातों की ख़बर होती। इन आयतों में ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) का क़िस्सा बयान किया गया है।

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि०) और दूसरे मुफ़स्सिरीन से रिवायत है कि ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) की बेअ़सत से पहले जब कोई नेक आदमी मर जाता तो लोग उस की क़ब्र पर मस्जिद बना देते और उस की तस्वीर उस पर लट्का देते, फिर कुछ ज़माने के बाद लोग उन बुज़ुर्गों की मूर्तियाँ बना कर उन की पूजा करने लगते।

और जब उन का शिर्क ह़द से आगे बढ़ गया तो अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) को भेजा ताकि फिर वह उन्हें एक अल्लाह की अ़िबादत की दअ़वत दें। जब उन्होंने अपनी दअ़वत का एलान किया तो उन की क़ौम के सरदारों ने उन्हें सख़्त गुमराह क़रार दिया।



- दक्षिणी ईराक़ में क़ौम-ए-नूह़ का इलाक़ा जहाँ आज कूफ़ा आबाद है।
- कोह-ए-जूदी (तुर्की)

ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर कहते हैं कि हर दौर में फ़ासिक़ों और फ़ाजिरों का यही ह़ाल रहा है कि वह नेक लोगों को बेवक़ूफ़ और गुमराह समझते हैं।

ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) ने कहा कि मैं गुमराह नहीं बल्कि अल्लाह का रसूल हूँ और तुम्हें इस का पैग़ाम पहुँचा रहा हूँ और मैं तुम्हारे लिए मुख़्लिस (निःस्वार्थी) हूँ और अल्लाह की ओर से मैं वह कुछ जानता हूँ जो तुम नहीं जानते, लेकिन उन की क़ौम उन की मुख़ालिफ़त में बढ़ती गई तो अल्लाह तआ़ला ने उन्हें और उन के मोमिन साथियों को बचा लिया और उन के दुश्मनों को तूफ़ान के ज़रिये हलाक कर दिया।

आयत नं० 65 से 79 तक

وَإِلَىٰ عَادٍ أَخَاهُمْ هُودًا ۗ قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۚ أَفَلَا تَتَّقُونَ ۝ قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن
قَوْمِهِ إِنَّا لَنَرَاكَ فِي سَفَاهَةٍ وَإِنَّا لَنَظُنُّكَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ۝ قَالَ يَا قَوْمِ لَيْسَ بِي سَفَاهَةٌ وَلَٰكِنِّي رَسُولٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ۝
أُبَلِّغُكُمْ رِسَالَاتِ رَبِّي وَأَنَا لَكُمْ نَاصِحٌ أَمِينٌ ۝ أَوَعَجِبْتُمْ أَن جَاءَكُمْ ذِكْرٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ مِّنكُمْ لِيُنذِرَكُمْ ۚ
وَاذْكُرُوا إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاءَ مِن بَعْدِ قَوْمِ نُوحٍ وَزَادَكُمْ فِي الْخَلْقِ بَسْطَةً ۖ فَاذْكُرُوا آلَاءَ اللَّهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝
قَالُوا أَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللَّهَ وَحْدَهُ وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُنَا ۖ فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِن كُنتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۝ قَالَ
قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُم مِّن رَّبِّكُمْ رِجْسٌ وَغَضَبٌ ۖ أَتُجَادِلُونَنِي فِي أَسْمَاءٍ سَمَّيْتُمُوهَا أَنتُمْ وَآبَاؤُكُم مَّا نَزَّلَ اللَّهُ بِهَا
مِن سُلْطَانٍ ۚ فَانتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُم مِّنَ الْمُنتَظِرِينَ ۝ فَأَنجَيْنَاهُ وَالَّذِينَ مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَقَطَعْنَا دَابِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا
بِآيَاتِنَا ۖ وَمَا كَانُوا مُؤْمِنِينَ ۝ وَإِلَىٰ ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا ۗ قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ قَدْ جَاءَتْكُم بَيِّنَةٌ
مِّن رَّبِّكُمْ ۖ هَٰذِهِ نَاقَةُ اللَّهِ لَكُمْ آيَةً ۖ فَذَرُوهَا تَأْكُلْ فِي أَرْضِ اللَّهِ ۖ وَلَا تَمَسُّوهَا بِسُوءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝
وَاذْكُرُوا إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاءَ مِن بَعْدِ عَادٍ وَبَوَّأَكُمْ فِي الْأَرْضِ تَتَّخِذُونَ مِن سُهُولِهَا قُصُورًا وَتَنْحِتُونَ الْجِبَالَ بُيُوتًا ۖ
فَاذْكُرُوا آلَاءَ اللَّهِ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۝ قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِن قَوْمِهِ لِلَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا لِمَنْ
آمَنَ مِنْهُمْ أَتَعْلَمُونَ أَنَّ صَالِحًا مُّرْسَلٌ مِّن رَّبِّهِ ۚ قَالُوا إِنَّا بِمَا أُرْسِلَ بِهِ مُؤْمِنُونَ ۝ قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا بِالَّذِي
آمَنتُم بِهِ كَافِرُونَ ۝ فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَعَتَوْا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ وَقَالُوا يَا صَالِحُ ائْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِن كُنتَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝
فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جَاثِمِينَ ۝ فَتَوَلَّىٰ عَنْهُمْ وَقَالَ يَا قَوْمِ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَةَ رَبِّي وَنَصَحْتُ لَكُمْ وَلَٰكِن
لَّا تُحِبُّونَ النَّاصِحِينَ ۝

अनवाद–

(65) और आ़द (क़ौम) की ओर उनके भाई 'हूद' को भेजा, उन्होंने कहा, 'ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह ही की अ़िबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई मअ़बूद नहीं, तो क्या तुम डरते नहीं?'' (66) तो उनकी क़ौम के सरदार, जो काफ़िर थे कहने लगे, हम तो देखते हैं कि तुम तो बेवकूफ़ हो और हम तो तुम्हें झूठा समझते हैं।'' (67) उन्होंने कहा, ''ऐ मेरी क़ौम मुझ में बेवक़ूफ़ी की कोई बात नहीं है, बल्कि मैं सारे संसार के 'रब' का रसूल हूँ; (68) मैं तुम्हें अपने 'रब' का पैग़ाम पहुँचाता हूँ और तुम्हारा अमानतदार, नसीह़त करने वाला हूँ। (69) क्या तुमको इस बात से तअ़ज्जुब हुआ है, कि तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक व्यक्ति के ज़रिये तुम्हारे रब की नसीह़त आयी, ताकि 'वह' तुम्हें सचेत करे? और याद करो,'' जब 'उसने' नूह़ की क़ौम के बाद तुम्हें उसका नायब बनाया और (जिस्मानी तौर पर भी) तुम्हें बढ़ाया, तो अल्लाह की नेअ़मतों को याद करो, ताकि तुम्हें कामियाबी मिले।'' (70) वे बोले, ''क्या तुम हमारे पास इसलिए आये हो कि अकेले अल्लाह की हम अ़िबादत करें और जिनकी हमारे बाप-दादा अ़िबादत करते चले आए हैं उनको हम छोड़ दें? फिर अगर तुम सच्चे हो तो जिस चीज़ से हमें डराते हो, उसे ले आओ।'' (71) उन्होंने कहा, ''तुम

पर तो तुम्हारे रब की ओर से अ़ज़ाब और ग़ज़ब निश्चित हो चुका है क्या तुम मुझसे ऐसे नामों के बारे में झगड़ते हो जो तुमने और तुम्हारे बाप-दादा ने रख लिए हैं, जिनके लिए अल्लाह ने कोई सनद नाज़िल नहीं की? अच्छा, तो तुम भी इन्तिज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करता हूँ।'' (72) फिर 'हमने' अपनी रह़मत से उन्हें और जो उनके साथ थे बचा लिया, और उन लोगों की जड़ काट दी, जिन्होंने 'हमारी' आयतों को झुठलाया था और वे ईमान लाने वाले ही न थे। (73) और 'समूद' की ओर उनके भाई 'सालेह़' को भेजा, उन्होंने कहा, ''ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह की अ़िबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं, तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से एक खुली दलील आ चुकी है; यह अल्लाह की ऊँटनी तुम्हारे लिए एक निशानी है, तो इसे छोड़ दो कि अल्लाह की धरती पर चरती फिरे, और तुम उसे बुरी नियत से हाथ भी न लगाना, वरना दर्दनाक अ़ज़ाब तुम्हें पकड़ लेगा। (74) और याद करो जब अल्लाह ने आ़द के बाद तुम्हें उसका नायब बनाया, और धरती में तुम्हें ठिकाना दिया, तुम उसके समतल मैदानों में महल बनाते हो, और पहाड़ों को काट-छाँट कर घर बनाते हो, तो अल्लाह की नेअ़मतों को याद करो और ज़मीन में फ़साद न करते फिरो"। (75) तो उनकी क़ौम के सरदार लोग, जो बड़े बने हुए थे उन कमज़ोर लोगों से जो उनमें ईमान लाए थे कहने लगे, ''क्या तुम जानते हो कि 'सालेह़' अपने रब का भेजा हुआ है?'' उन्होंने कहा, ''जिस चीज़ के साथ वह भेजा गया है, हम उस पर ईमान रखते हैं"। (76) उन घमंड करने वालों ने कहा, ''जिस चीज़ पर तुम ईमान लाए हो, हम तो उसको नहीं मानते; (77) फिर उन्होंने उस ऊँटनी की कूँचें- काट दीं, और अपने रब के हुक्म को तोड़ दिया और बोले, "ऐ सालेह़! हमें तू जिस चीज़ की धमकी देता है, उसे हम पर ले आ, अगर तू ह़क़ीक़त में, रसूलों में से है।''(78) तो उनको एक भूँचाल ने आ पकड़ा और वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गये। (79) फिर वह (सालेह़) उनके यहाँ से लौटे और कहा, ''ऐ मेरी क़ौम! मैं तो तुम्हें अपने रब का पैग़ाम (सन्देश) पहुँचा चुका और मैंने तुम्हारा भला चाहा, लेकिन तुम्हें अपने ख़ैर ख़्वाह पसंद ही नहीं आते"!

आयत नं० 65 से 79 तक की व्याख्या

65-72

وَإِلَىٰ عَادٍ أَخَاهُمْ هُودًا ۗ قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۚ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٦٥﴾
قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن قَوْمِهِ إِنَّا لَنَرَاكَ فِي سَفَاهَةٍ وَإِنَّا لَنَظُنُّكَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿٦٦﴾
قَالَ يَا قَوْمِ لَيْسَ بِي سَفَاهَةٌ وَلَٰكِنِّي رَسُولٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٦٧﴾ أُبَلِّغُكُمْ رِسَالَاتِ رَبِّي
وَأَنَا لَكُمْ نَاصِحٌ أَمِينٌ ﴿٦٨﴾ أَوَعَجِبْتُمْ أَن جَاءَكُمْ ذِكْرٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ مِّنكُمْ لِيُنذِرَكُمْ
وَاذْكُرُوا إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاءَ مِن بَعْدِ قَوْمِ نُوحٍ وَزَادَكُمْ فِي الْخَلْقِ بَسْطَةً ۖ فَاذْكُرُوا
آلَاءَ اللَّهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٦٩﴾ قَالُوا أَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللَّهَ وَحْدَهُ وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ
آبَاؤُنَا ۖ فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِن كُنتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٧٠﴾ قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُم مِّن رَّبِّكُمْ
رِجْسٌ وَغَضَبٌ ۖ أَتُجَادِلُونَنِي فِي أَسْمَاءٍ سَمَّيْتُمُوهَا أَنتُمْ وَآبَاؤُكُم مَّا نَزَّلَ اللَّهُ
بِهَا مِن سُلْطَانٍ ۚ فَانتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُم مِّنَ الْمُنتَظِرِينَ ﴿٧١﴾ فَأَنجَيْنَاهُ وَالَّذِينَ مَعَهُ بِرَحْمَةٍ

مِّنَّا وَقَطَعْنَا دَابِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَمَا كَانُوا مُؤْمِنِينَ ۝

आयत नं० (65) से (72) तक ह़ज़रत हूद (अ़लै०) और उन की क़ौम (क़ौमे आ़द) का क़िस्सा बयान किया गया है, यह लोग आ़द बिन एरम बिन औ़स बिन साम बिन नूह़ की औलाद से थे, जो ज़बरदस्त जिस्मानी क़ुव्वत के मालिक थे और बुतों की पूजा करते थे। उन का रहना उ़मान और 'ह़ज़रमूत' के दर्मियान रेगिस्तानी इलाक़ा था। ह़ज़रत हूद (अ़लै०) उसी क़ौम के एक शरीफ़ ख़ानदान से थे जिन्हें अल्लाह उन की हिदायत के लिए नबी बनाकर भेजता था, लेकिन जिस तरह़ वह लोग जिस्मानी तौर पर बड़े सख़्त थे उसी तरह़ उन के दिल भी बहुत सख़्त थे। उन्होंने ह़ज़रत हूद (अ़लै०) को बेवक़ूफ़ क़रार दिया और झूठा बताया और हज़ार कोशिशों के बावजूद राहे रास्त पर न आये तो अल्लाह तआ़ला ने उन्हें हलाक कर दिया। क़ुर्आन करीम में कई जगह यह बताया गया है कि अल्लाह ने उन्हें तूफ़ानी हवा के ज़रिये हलाक किया था जो आठ दिन और सात रात मुसलसल चलती रही।

73-79

وَإِلَىٰ ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا ۗ قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ قَدْ جَاءَتْكُم بَيِّنَةٌ مِّن
رَّبِّكُمْ ۖ هَٰذِهِ نَاقَةُ اللَّهِ لَكُمْ آيَةً ۖ فَذَرُوهَا تَأْكُلْ فِي أَرْضِ اللَّهِ ۖ وَلَا تَمَسُّوهَا بِسُوءٍ فَيَأْخُذَكُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ وَاذْكُرُوا إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاءَ مِن بَعْدِ عَادٍ وَبَوَّأَكُمْ فِي الْأَرْضِ تَتَّخِذُونَ مِن
سُهُولِهَا قُصُورًا وَتَنْحِتُونَ الْجِبَالَ بُيُوتًا ۖ فَاذْكُرُوا آلَاءَ اللَّهِ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۝
قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِن قَوْمِهِ لِلَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا لِمَنْ آمَنَ مِنْهُمْ أَتَعْلَمُونَ أَنَّ صَالِحًا
مُّرْسَلٌ مِّن رَّبِّهِ ۚ قَالُوا إِنَّا بِمَا أُرْسِلَ بِهِ مُؤْمِنُونَ ۝ قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا بِالَّذِي آمَنتُم بِهِ
كَافِرُونَ ۝ فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَعَتَوْا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ وَقَالُوا يَا صَالِحُ ائْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِن كُنتَ
مِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝ فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جَاثِمِينَ ۝ فَتَوَلَّىٰ عَنْهُمْ وَقَالَ يَا قَوْمِ لَقَدْ
أَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَةَ رَبِّي وَنَصَحْتُ لَكُمْ وَلَٰكِن لَّا تُحِبُّونَ النَّاصِحِينَ ۝

आयत नं० (73) से आयत नं० (79) तक ह़ज़रत सालेह़ (अ़लै०) और उन की क़ौम (क़ौमे समूद) का वाक़िआ़ बयान किया गया है। समूद अ़रबों का एक क़बीला था, यह लोग 'समूद बिन आ़मिर बिन एरम बिन साम बिन नूह़' की औलाद में से थे, उन का ज़माना ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) से पहले और क़ौमे आ़द के बाद का था। उन का ठिकाना ह़िजाज और शाम के दर्मियान वादी-ए-क़ुरा और उस के इर्द-गिर्द था और बहुत ही ताक़तवर लोग थे, अपनी जिस्मानी ताक़त और क़ुव्वते बाज़ू के ज़ोर से पहाड़ों को काट-काट कर अपने मकानात बनाया करते थे। नबी करीम (सल्ल०) 9 हिज्री में तबूक जाते हुए उन की बस्तियों से गुज़रे थे जिन्हें मदायन सालेह़ कहा जाता है।

'सह़ीह़ैन' और 'मुस्नद अह़मद' में 'अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर' रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) तबूक जाते हुए क़ौमे समूद के घरों के पास रुके तो लोगों ने उन के कुंओं का पानी पिया और आटा गूंध कर खाना पकाने लगे, लेकिन रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उन्हें हुक्म दिया कि अपनी

हांडियाँ उंडेल दें और गूंधा हुआ आटा ऊँटों को खिला दें, फिर वहाँ से चलकर उस कुआँ के पास आये जिस से ह़ज़रत सालेह़ (अ़लै०) की ऊँटनी पीती थी और नबी करीम (सल्ल०) ने लोगों को क़ौमे समूद के घरों में दाख़िल होने से मना फ़रमाया और कहा कि मुझे डर है कि कहीं तुम्हें वह अ़ज़ाब अपनी गिरफ़्त में न ले ले।

ह़ज़रत सालेह़ (अ़लै०) उसी क़ौम के एक शरीफ़ ख़ानदान से थे, अल्लाह ने उन्हें इस क़ौम की हिदायत के लिए नबी बनाकर भेजा था, उन्होंने अपनी क़ौम को तमाम अम्बिया की तरह़ तौह़ीद (एकेश्वरवाद) की दअ़वत दी, लेकिन बहुत कम और कमज़ोर लोगों ने उन की बात मानी। जब ह़ज़रत सालेह़ (अ़लै०) ने उन्हें मज़ीद डराया और अल्लाह का ख़ौफ़ दिलाया तो उन्होंने एक निशानी का मुताल्बा किया और कहा कि वह निशानी एक ऊँटनी हो, जो पहाड़ से निकल कर सामने आ जाए चुनांचे ऐसा ही हुआ, लेकिन फिर भी बहुत ही कम लोग ईमान लाए और अक्सर ने सरकशी की राह अख़्तियार की और उस ऊँटनी को क़त्ल कर दिया तो ह़ज़रत सालेह़ (अ़लै०) ने कहा कि अब तुम लोग अल्लाह के अ़ज़ाब का इन्तिज़ार करो। अल्लाह ने उन्हें बुध, जुमेरात और जुमअ़ तीन दिन की मोहलत दी, जैसा कि सूरः हूद की आयत नं० (65) में आया है فَقَالَ تَمَتَّعُوْا فِيْ دَارِكُمْ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ

"बस ह़ज़रत सालेह़ ने कहा कि तुम लोग तीन दिन तक अपने घरों में फ़ायदा उठा लो"।

सनीचर के दिन सुबह़ के वक़्त एक अ़ज़ीम फ़रिश्ते ने उन के दर्मियान ऐसी चीख़ मारी कि उन के दिल और उन की रुहें हिल गईं और सब के सब मर गये। इस के बाद ह़ज़रत सालेह़ (अ़लै०) ने लाशों के दर्मियान खड़े होकर कहा कि ऐ मेरी क़ौम! मैंने तुम्हें अल्लाह का पैग़ाम पहुँचा दिया था और तुम्हारी ख़ैर ख़्वाही में कोई कमी नहीं की थी, लेकिन तुम लोगों ने अपने ख़ैर ख़्वाहों को कभी पसन्द नहीं किया, फिर वहाँ से चले गये। नबी करीम (सल्ल०) ने जंगे बद्र के बाद मक़्तूलीन क़ुरैश के सामने जिन की लाशें कुएँ में डाल दी गई थीं ऐसा ही कहा था और ह़ज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि०) के हैरत और तअ़ज्जुब पर कहा था अल्लाह की क़सम वह तुम से ज़्यादा अच्छी तरह़ सुन रहे हैं, लेकिन जवाब नहीं दे सकते।

आयत नं० 80 से 87 तक

وَلُوطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ أَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ۝ إِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ
النِّسَآءِ ۚ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ۝ وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّآ أَنْ قَالُوْٓا أَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ إِنَّهُمْ أُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ۝ فَأَنْجَيْنٰهُ
وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ ۖ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ۝ وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۖ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ۝ وَإِلٰى مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۚ
قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ إِلٰهٍ غَيْرُهُ ۖ قَدْ جَآءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَأَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ
أَشْيَآءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوْا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا ۚ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ وَلَا تَقْعُدُوْا بِكُلِّ صِرَاطٍ
تُوْعِدُوْنَ وَتَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِهٖ وَتَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۚ وَاذْكُرُوْٓا إِذْ كُنْتُمْ قَلِيْلًا فَكَثَّرَكُمْ ۖ وَانْظُرُوْا كَيْفَ
كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ۝ وَإِنْ كَانَ طَآئِفَةٌ مِّنْكُمْ اٰمَنُوْا بِالَّذِيْٓ أُرْسِلْتُ بِهٖ وَطَآئِفَةٌ لَّمْ يُؤْمِنُوْا فَاصْبِرُوْا حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ بَيْنَنَا ۚ
وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ۝

अनुवाद-

(80) और 'हमने' लूत को भेजा! जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा, क्या तुम ऐसे बेहयाई के काम करते हो, जिसे संसार में तुमसे पहले किसी ने नहीं किये? (81) तुम औ़रतों को छोड़कर मर्दो से ख़्वाहिशे- नफ़्स (कामेच्छा) पूरी करते हो, बल्कि तुम लोग ह़द से निकल जाने वाले हो।'' (82) और उनकी क़ौम का जवाब इसके सिवा और कुछ न था, कि वे बोले ''निकालो इन लोगों को अपनी बस्ती से; यह लोग बड़े पाक बनना चाहते हैं!'' (83) फिर 'हमने' उन्हें और उनके घर वालों को छुट्कारा दिया, सिवाय उनकी बीवी के कि वह पीछे रह जाने वालों में से थी। (84) और 'हमने' उन पर एक बरसात (पत्थरों की) बरसाई, तो देख लो! कि गुनहगारों का कैसा अंजाम हुआ? (85) और 'मद्यन' की ओर उनके भाई शुऐ़ब को भेजा, (तो) उन्होंने कहा, ''ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह ही की अ़िबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई मअ़बूद नहीं, तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से निशानी आ चुकी है, तो तुम नाप और तौल पूरी-पूरी किया करो, और लोगों को उनकी चीज़ें कम न दिया करो, और ज़मीन में सुधार के बाद ख़राबी न करो; अगर तुम ईमान वाले हो, तो समझ लो कि यह बात तुम्हारे ह़क़ में बेहतर है। (86) और हर रास्ते पर न बैठो कि धमकियाँ दिया करो और उस व्यक्ति को अल्लाह की राह से रोकने लगो जो उस पर ईमान रखता हो, और न उस रास्ते को टेढ़ा करने में लग जाओ; और याद करो वह वक़्त। जब कि तुम थोड़े थे, फिर 'उसने' तुम्हें ज़्यादा कर दिया! और देखो, बिगाड़ पैदा करने वालों का अंजाम कैसा हुआ! (87) और अगर तुममें एक गिरोह ऐसा हो, जो उस पर ईमान लाया हो, जिसके साथ मैं भेजा गया हूँ और एक गिरोह ईमान न लाया, तो सब्र से काम लो, यहाँ तक कि अल्लाह 'हमारे' बीच फ़ैसला कर दे, और 'वह' सबसे अच्छा फ़ैसला करने वाला है"।

आयत 80 से 87 तक की व्याख्या

80-84 وَلُوطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ أَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ۝ إِنَّكُمْ

لَتَأْتُوْنَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ۭ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ۝ وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا
اَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ۝ فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَهْلَهٗٓ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ڮ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ۝ وَاَمْطَرْنَا
عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۭ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ۝

आयत नं० (80) से (84) तक ह़ज़रत लूत (अ़लै०) और उन की क़ौम का वाक़िआ़ बयान किया गया है। उ़लम-ए-तफ़्सीर ने लिखा है कि ह़ज़रत लूत (अ़लै०) हारान बिन आज़र के बेटे और ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) के भतीजा थे। उन पर ईमान लाने के बाद हिजरत करके उन के साथ शाम चले गये थे, लेकिन बाद में वादी-ए-उर्दुन की बस्ती "सुदूम" में क़याम किया, अल्लाह तआ़ला ने उन्हें इसी बस्ती वालों के लिए नबी बनाकर भेजा था। कहा जाता है कि उन की तअ़दाद चालीस लाख थी और कुफ़्र व शिर्क के अ़लावा लवातत (होमोसेक्स) जैसी ख़बीस तरीन अख़्लाक़ी बीमारी में मुब्तिला थे जो बीमारी उन से पहले दुनिया में नहीं पाई गई थी। 'उ़मर बिन दीनार' कहते हैं कि क़ौमे लूत से पहले दुनिया में किसी मर्द ने मर्द के साथ अपनी ख़्वाहिश पूरी नहीं की थी।



लूत (अ़लै०)
बह़ीरा लूत (बह़ीरा मुर्दार)
सुदूम, आ़मूरह और ज़ूग़र

ह़ज़रत लूत (अ़लै०) ने उन्हें तौह़ीद की दअ़वत दी और इस मर्ज़ से भी निजात दिलाने की कोशिश की, लेकिन उन्होंने उन की एक न सुनी और उन का मज़ाक़ उड़ाया और ह़ज़रत लूत (अ़लै०) को उस बस्ती से निकाल देने की धमकी दी तो अल्लाह तआ़ला का अ़ज़ाब उन पर आ गया।

चुनाँचे अल्लाह तआ़ला ने 'सुदूम' और 'उमरह' बस्तियों पर आग की बारिश कर दी फिर उन्हें उलट दिया जिससे तमाम के तमाम लोग हलाक हो गये उसी जगह को आज 'बह़रे मय्यित' कहा जाता है। सिर्फ़ ह़ज़रत लूत (अ़लै०) और उन के साथ चन्द मोमिन बच गये जो अल्लाह के हुक्म से पहले ही उस बस्ती से निकल गये थे।

लवातत (होमोसेक्स)–

इस्लाम की नज़र में लवातत (होमोसेक्स) एक बहुत ही बड़ा गुनाह है। हाफ़िज़ इब्ने क़य्यिम (रह०) कहते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने क़ुर्आन करीम में गुनाहों में से सिर्फ़ शिर्क ज़िना और लवातत को नजिस और ख़बीस बताया है। एक दूसरी जगह लिखा है कि ज़िना और लवातत की निजासत दूसरी नजासतों से बढ़कर है।

इस बीमारी की दुनियावी सज़ा के बारे में अह़मद, अबूदाऊद, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, ह़ाकिम और बैहक़ी वग़ैरहुम ने इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत किया है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "अगर तुम लोग किसी को लवातत करते पाओ तो फ़ाअ़िल (काम करने वाले) और मफ़अ़ूल (काम कराने वाले) दोनों को क़त्ल कर दो।"

इब्ने क़सीर का क़ौल है, सह़ाब-ए-किराम का इत्तिफ़ाक़ है कि लूती को क़त्ल कर दिया जाएगा, उन के दर्मियान सिर्फ़ क़त्ल के तरीक़े में इख़्तिलाफ़ है।

'इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़०)' कहते हैं कि लूती को पहाड़ से नीचे गिरा दिया जाएगा, उस के बाद उस पर पत्थरों की बारिश की जाएगी यहाँ तक कि मौत के घाट उतर जाए।

'इमाम शाफ़ई' (रह़०) का एक क़ौल है कि उसे रज्म (पत्थर मार-मार कर ख़त्म कर देना) कर दिया जाएगा, चाहे शादीशुदा हो या ग़ैर शादी शुदा। बाज़ दूसरे लोगों ने कहा है कि उस का हुक्म ज़ानी के हुक्म जैसा है, यानी अगर शादी-शुदा होगा तो रज्म कर दिया जाएगा और ग़ैर शादी शुदा को 100 कोड़े लगाए जाएँगे।

औ़रतों के "दुबुर" यानी पीछे के रास्ते से ख़्वाहिश पूरी करना भी लवातत की एक क़िस्म है और ऐसा करना तमाम उ़लमा के नज़्दीक ह़राम है।

85-87

وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۗ قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ قَدْ جَاءَتْكُم بَيِّنَةٌ مِّن
رَّبِّكُمْ ۖ فَأَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا ۚ
ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ۝ وَلَا تَقْعُدُوا بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوعِدُونَ وَتَصُدُّونَ عَن
سَبِيلِ اللَّهِ مَنْ آمَنَ بِهِ وَتَبْغُونَهَا عِوَجًا ۚ وَاذْكُرُوا إِذْ كُنتُمْ قَلِيلًا فَكَثَّرَكُمْ ۖ وَانظُرُوا كَيْفَ
كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ۝ وَإِن كَانَ طَائِفَةٌ مِّنكُمْ آمَنُوا بِالَّذِي أُرْسِلْتُ بِهِ وَطَائِفَةٌ لَّمْ يُؤْمِنُوا
فَاصْبِرُوا حَتَّىٰ يَحْكُمَ اللَّهُ بَيْنَنَا ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ۝

आयत नं० (85) से (93) तक ह़ज़रत शुऐ़ब (अ़लै०) और उन लोगों का वाक़िआ़ ज़िक्र किया गया है जिन की तरफ़ अल्लाह ने उन्हें नबी बनाकर भेजा था। 'मद्यन' क़बीले का नाम था जिस की निस्बत 'मदायन बिन इब्राहीम ख़लील' की तरफ़ थी और ह़ज़रत शुऐ़ब (अ़लै०) उसी क़बीले के एक शख़्स थे। उन के मालिक का नाम 'मदायन बिन यशजर बिन मद्यन' था, उन का शहर ह़िजाज के रास्ते में था।

'इब्ने कसीर (रह़०)' कहते हैं कि उन्हीं को क़ुर्आन ने 'अस्ह़ाब-ए-ऐका' भी कहा है, लेकिन

‘इक्रिमा’ और सुद्दी कहते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत शुऐब (अ़लै०) को दो क़ौमों की तरफ़ भेजा था, अस्ह़ाबे मद्यन की तरफ़ जिन्हें अल्लाह ने तेज़ घन गरज और आवाज़ के ज़रिये हलाक कर दिया और दोबारा ‘अस्ह़ाबे ऐका’ की तरफ़ जिन्हें एक बादल के ज़रिये हलाक किया, जिस में आग के शोले थे।

‘ह़ज़रत शुऐब (अलै०)’ की क़ौम शिर्क के अ़लावा दूसरी समाजी घिनौनी बीमारियों में मुब्तिला थी, यह लोग नाप-तौल में कमी बेशी करते थे, रास्ते में लोगों को डरा धमका कर उन का माल छीन लेते थे, उन से जबरी टैक्स वसूल करते थे और जो लोग ‘ह़ज़रत शुऐब (अ़लै०)’ की बातें जो सुनने के लिए आना चाहते थे उन्हें रास्ते में रोक कर तरह़-तरह़ से बहकाते थे।

ह़ज़रत शुऐब (अ़लै०) ने उन्हें तौह़ीद की तरफ़ बुलाया और शिर्क से डराया, जो दूसरी अख़्लाक़ी और इज्तिमाई बीमारियाँ उन में पाई जाती थीं उन की बुराई बयान करके उन से रुक जाने की तर्ग़ीब दिलाई और उन्हें अल्लाह की यह नेअ़मत याद दिलाई कि उन की तअ़दाद बहुत कम थी तो अल्लाह ने उन की नस्ल में बरकत दी और वह बड़ी तअ़दाद में हो गये।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, “तुम में से हर शख़्स निगराँ (ज़िम्मेदार) है और उस से उस के मातहेत लोगों के बारे में पूछ होगी, इमाम (हुक्मरान) अपनी रिआ़या (प्रजा) पर निगराँ है और उस से उस की रिआ़या के बारे में पूछा जाएगा, आदमी अपने अहल व अ़याल पर निगराँ है और उस से उस की मातह़ती वालों के बारे में पूछ होगी। औ़रत अपने शौहर के घर और उस के बच्चों पर निगराँ है और उस से उस के बारे में पूछा जाएगा, ख़ादिम अपने आक़ा के माल का निगराँ है और उस से उस की रअ़िय्यत (मातहती वालों) के बारे में पूछ होगी।” **(सह़ीह़ बुख़ारी, अल् अह़काम, बाब 1, ह़दीस 7138)**

एक दूसरी ह़दीस में फ़रमाया, “जो कोई दिखावे के लिए कोई काम करता है तो अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन (लोगों के सामने) उस की नियत को ज़ाहिर कर देगा और जो लोगों पर सख़्ती करेगा तो क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला उस पर सख़्ती करेगा।.....” **(सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल् अह़काम बाब 9, ह़दीस 7152)**

एक आदमी ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से अ़र्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! क़ियामत कब क़ायम होगी? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, “तूने उस (क़ियामत के दिन) के लिए कुछ तय्यार कर रखा है? तो वह आदमी शर्मिन्दा और ख़ौफ़ज़दह हो गया और अ़र्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! मैंने उस के लिए बहुत ज़्यादा रोज़े, सद्क़ात और नमाज़ें तो तैयार नहीं की हैं लेकिन मैं अल्लाह और उस के रसूल से मुह़ब्बत करता हूँ। इस पर नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, “तू उसी के साथ होगा जिस से तू मुह़ब्बत करता है।”

(सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल् अह़काम बाब 10, ह़दीस 7153)

ह़ज़रत अबू ज़र (रज़ि०) से रिवायत है कि मैं एक बार नबी (सल्ल०) की ख़िद्मत में ह़ाज़िर हुआ तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, “उस अल्लाह की क़सम, जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है! जिस किसी के पास ऊँट, गाय और बकरियाँ हों और वह ज़कात अदा न करे तो क़ियामत के दिन उन जानवरों को लाया जाएगा जबकि वह पहले से बहुत बड़े और बहुत ज़्यादा तन्दुरुस्त होंगे, वह उसे अपने पैरों (पांव) तले रौंदेंगे और सींगों से मारेंगे और उस पर मुसल्सल चक्कर लगाते रहेंगे और यह सज़ा उस वक़्त तक जारी रहेगी जब तक अल्लाह तआ़ला तमाम इन्सानों के दर्मियान फ़ैसला न कर देगा।”

(सह़ीह़ बुख़ारी, अल् ज़कात बाब 43, ह़दीस 1460)

पारा-9
आयत नं० 88 से 99 तक

*
قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِنْ قَوْمِهِ لَنُخْرِجَنَّكَ يَا شُعَيْبُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَكَ مِنْ قَرْيَتِنَا أَوْ لَتَعُودُنَّ فِي مِلَّتِنَا ۚ قَالَ أَوَ
لَوْ كُنَّا كَارِهِينَ ﴿٨٨﴾ قَدِ افْتَرَيْنَا عَلَى اللَّهِ كَذِبًا إِنْ عُدْنَا فِي مِلَّتِكُمْ بَعْدَ إِذْ نَجَّانَا اللَّهُ مِنْهَا ۚ وَمَا يَكُونُ لَنَا أَنْ نَعُودَ فِيهَا إِلَّا أَنْ
يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّنَا ۚ وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۚ عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا ۚ رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَأَنْتَ خَيْرُ الْفَاتِحِينَ ﴿٨٩﴾
وَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ لَئِنِ اتَّبَعْتُمْ شُعَيْبًا إِنَّكُمْ إِذًا لَخَاسِرُونَ ﴿٩٠﴾ فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جَاثِمِينَ ﴿٩١﴾ الَّذِينَ
كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَأَنْ لَمْ يَغْنَوْا فِيهَا ۚ الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَانُوا هُمُ الْخَاسِرِينَ ﴿٩٢﴾ فَتَوَلَّىٰ عَنْهُمْ وَقَالَ يَا قَوْمِ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَاتِ
رَبِّي وَنَصَحْتُ لَكُمْ ۖ فَكَيْفَ آسَىٰ عَلَىٰ قَوْمٍ كَافِرِينَ ﴿٩٣﴾ وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ مِنْ نَبِيٍّ إِلَّا أَخَذْنَا أَهْلَهَا بِالْبَأْسَاءِ وَالضَّرَّاءِ لَعَلَّهُمْ
يَضَّرَّعُونَ ﴿٩٤﴾ ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتَّىٰ عَفَوْا وَقَالُوا قَدْ مَسَّ آبَاءَنَا الضَّرَّاءُ وَالسَّرَّاءُ فَأَخَذْنَاهُمْ بَغْتَةً وَهُمْ لَا
يَشْعُرُونَ ﴿٩٥﴾ وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْقُرَىٰ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكَاتٍ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ وَلَٰكِنْ كَذَّبُوا فَأَخَذْنَاهُمْ بِمَا كَانُوا
يَكْسِبُونَ ﴿٩٦﴾ أَفَأَمِنَ أَهْلُ الْقُرَىٰ أَنْ يَأْتِيَهُمْ بَأْسُنَا بَيَاتًا وَهُمْ نَائِمُونَ ﴿٩٧﴾ أَوَأَمِنَ أَهْلُ الْقُرَىٰ أَنْ يَأْتِيَهُمْ بَأْسُنَا ضُحًى وَهُمْ يَلْعَبُونَ ﴿٩٨﴾
أَفَأَمِنُوا مَكْرَ اللَّهِ ۚ فَلَا يَأْمَنُ مَكْرَ اللَّهِ إِلَّا الْقَوْمُ الْخَاسِرُونَ ﴿٩٩﴾

अनुवाद-

(88) उनकी क़ौम के सरदार जो घमंड में पड़े हुए थे कहा, ''ऐ शुऐब! हम तुझे और तेरे साथ उन लोगों
को, जो ईमान लाए हैं अपनी बस्ती से निकाल कर रहेंगे, या (फिर) तुम हमारे मज़हब में लौट आओ'' उन्होंने
कहा, हमें नागवार हो तब भी? (89) हम इसके बाद, कि अल्लाह ने हमें इससे छुटकारा दे दिया है, तुम्हारे
मज़हब में लौट आएँ, तो बेशक हम अल्लाह पर झूठ गढ़ने वाले होंगे, यह हमसे तो होने वाला नहीं कि हम
उसमें पलट कर आ जाएँ, मगर अल्लाह ही चाहे तो, जो हमारा 'रब' है, इल्म के हिसाब से हमारा 'रब'
हर चीज़ को अपने घेरे में लिए हुए है; हमारा अल्लाह ही पर भरोसा है, ऐ हमारे रब! हमारे और हमारी
क़ौम के बीच हक़ का फ़ैसला कर दे, और 'तू' सबसे बेहतर फ़ैसला करने वाला है।'' (90) और उनकी
क़ौम के सरदार, जो काफ़िर थे, कहने लगे, ''अगर तुमने 'शुऐब' की पैरवी की, तो बेशक तुम घाटे में पड़
जाओगे।'' (91) तो उनको एक दहला देने वाले भूँचाल ने आ पकड़ा, और फिर वे अपने घरों में औंधे पड़े
रह गये; (92) जिन्होंने शुऐब को झुठलाया था, ऐसे बरबाद हुए मानो वहाँ बसे ही न थे, शुऐब को झुठलाने
वाले ही घाटे में पड़ गये। (93) तो शुऐब उनमें से निकल आए और कहा! ऐ मेरी क़ौम के लोगो! मैंने तुमको
अपने रब का पैग़ाम पहुँचा दिया और मैंने तुम्हारा भला चाहा, तो मैं इन्कार करने वालों पर कैसे अफ़सोस
करूँ!'' (94) और 'हमने' किसी बस्ती में कोई नबी नहीं भेजा, मगर वहाँ के रहने वालों को (जो ईमान न
लाए) दुखों और मुसीबतों में डाल दिया, ताकि वे गिड़गिड़ाएँ। (95) फिर 'हमने' बदहाली को खुशहाली में
बदल दिया, यहाँ तक कि वे खूब फले-फूले और कहने लगे, ''इसी तरह दुःख और सुख हमारे बाप-दादा
को भी पहुँचता रहा।'' तो 'हमने' उनको अचानक पकड़ लिया, और वे बेख़बर थे; (96) और अगर उन
बस्तियों के लोग ईमान ले आते और परहेज़गार हो जाते, तो 'हम' उन पर आसमान और ज़मीन की बरकतें
खोल देते; मगर उन्होंने झुठलाया, तो जो कुछ वे करते थे, उसके बदले में 'हमने' उन्हें पकड़ लिया। (97)

क्या बस्तियों के रहने वाले इससे बेख़ौफ़ हैं कि उनको 'हमारा' अ़ज़ाब रात को आए, जबकि वे सो रहे हों? (98) या क्या बस्तियों के लोग इस ओर से निडर हैं कि उन पर हमारा अज़ाब दिन चढ़े आ जाए, और वे खेल रहे हों? (99) क्या यह लोग अल्लाह के उपाय (चाल) से बेफ़िक्र हो गये थे? तो अल्लाह की उपाय से तो वही बेफ़िक्र होते हैं, जो घाटे में पड़ने वाले हैं।

आयत नं० 88 से 99 तक की व्याख्या

88-93 *

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِن قَوْمِهِ لَنُخْرِجَنَّكَ يَا شُعَيْبُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَكَ مِن قَرْيَتِنَا أَوْ
لَتَعُودُنَّ فِي مِلَّتِنَا ۚ قَالَ أَوَلَوْ كُنَّا كَارِهِينَ ﴿٨٨﴾ قَدِ افْتَرَيْنَا عَلَى اللَّهِ كَذِبًا إِنْ عُدْنَا فِي مِلَّتِكُم
بَعْدَ إِذْ نَجَّانَا اللَّهُ مِنْهَا ۚ وَمَا يَكُونُ لَنَا أَن نَّعُودَ فِيهَا إِلَّا أَن يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّنَا ۚ وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ
شَيْءٍ عِلْمًا ۚ عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا ۚ رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَأَنتَ خَيْرُ الْفَاتِحِينَ ﴿٨٩﴾ وَقَالَ
الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن قَوْمِهِ لَئِنِ اتَّبَعْتُمْ شُعَيْبًا إِنَّكُمْ إِذًا لَّخَاسِرُونَ ﴿٩٠﴾ فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا
فِي دَارِهِمْ جَاثِمِينَ ﴿٩١﴾ الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَأَن لَّمْ يَغْنَوْا فِيهَا ۚ الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَانُوا
هُمُ الْخَاسِرِينَ ﴿٩٢﴾ فَتَوَلَّىٰ عَنْهُمْ وَقَالَ يَا قَوْمِ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَاتِ رَبِّي وَنَصَحْتُ لَكُمْ ۖ فَكَيْفَ آسَىٰ
عَلَىٰ قَوْمٍ كَافِرِينَ ﴿٩٣﴾

हज़रत शुऐब (अ़लै०) की क़ौम ने उन की दअ़वते तौहीद व इस्लाह़ क़ुबूल करने से इन्कार कर दिया और उन्हें और मुसलमानों को जिलावतन (देश निकाला) कर देने की धमकी दी, तो उन्होंने उन की तरफ़ से नाउम्मीद होकर अल्लाह से दुआ की कि ऐ अल्लाह! तू हमारे और उन के दर्मियान अब फ़ैसला कर दे, चुनांचे अल्लाह तआ़ला ने उन्हें हलाक करने के लिए एक ऐसी बारिश भेजी जिस में आग के शोले थे और उस के साथ आसमान से एक चीख़ उठी और उन के क़द्मों तले ज़मीन हिलने लगी और देखते ही देखते उन की रुहें निकल गईं, उन के जिस्म ढ़ेर हो गये और ऐसे हो गये जैसे वहाँ पहले उन का वजूद ही नहीं था, जबकि पहले घमण्ड में आकर उसी ज़मीन से उन्होंने शुऐब और मुसलमानों को निकालने की धमकी दी थी। अ़ज़ाब आ जाने और उन सब के हलाक हो जाने के बाद जब शुऐब (अ़लै०) वहाँ से गुज़रे तो उन की लाशों को मुख़ातब करके कहा ऐ मेरी क़ौम! मैंने तुम्हें अल्लाह का पैग़ाम पहुँचा दिया था और तुम्हारे साथ ख़ैर ख़्वाही का जो तक़ाज़ा था वह पूरा कर दिया था, लेकिन तुम ने कुफ़्र की राह अख़्तियार की, इसलिए अब मुझे तुम्हारा यह अन्जाम देखकर कोई अफ़्सोस नहीं है और ह़ज़रत शुऐब (अ़लै०) का उन मुर्दों से यह ख़िताब वैसा ही था जैसा कि नबी करीम (सल्ल०) ने जंगे बद्र में कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के मक़्तूलीन को ख़िताब कर के कहा था जिन की लाशों को एक कुआँ में डाल दिया गया था और उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि०) से कहा था कि यह लोग तुम से ज़्यादा सुन रहे हैं लेकिन जवाब नहीं दे सकते हैं।

94-95

وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ مِّن نَّبِيٍّ إِلَّا أَخَذْنَا أَهْلَهَا بِالْبَأْسَاءِ وَالضَّرَّاءِ لَعَلَّهُمْ يَضَّرَّعُونَ ﴿٩٤﴾ ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ

السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتّٰى عَفَوْا وَّقَالُوْا قَدْ مَسَّ اٰبَآءَنَا الضَّرَّآءُ وَالسَّرَّآءُ فَاَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ۝

पाँच अम्बिया-ए-किराम और उन की उम्मतों के वाक़िआ़त और अन्जामकार बयान करने के बाद यहाँ अल्लाह तआ़ला ने पिछली क़ौमों का पूरा ह़ाल बयान किया है कि जब भी अल्लाह तआ़ला ने किसी क़ौम की हिदायत के लिए किसी नबी को भेजा और उन्होंने उस को झुठलाया और शिर्क व गुमराही पर जमे रहे, तो अल्लाह तआ़ला ने उन्हें पूरे तौर पर हलाक करने के लिए पहले मोह़ताजी, तंगदस्ती और बीमारी वग़ैरह में मुब्तिला किया कि शायद अल्लाह की तरफ़ तौबः करें, लेकिन जब वह अपने कुफ़्र व शिर्क पर जमे रहे तो अल्लाह ने उन की तंगदस्ती को ख़त्म कर दिया और बीमारी व मुसीबत को आ़फ़ियत व सेह़तमन्दी में बदल दिया, फिर उन का ह़ाल यह हो गया कि नेअ़मत की फ़रावानी ने उन की आँखों पर पट्टी और उन के दिलों पर मुहर लगा दी और कहने लगे कि यह कोई अल्लाह की ओर से आज़माइश नहीं, बल्कि दस्तूर-ए-ज़माना है कि लोगों के ह़ालात एक जैसे नहीं रहते, हमारे बाप-दादों को परेशानी नहीं हुई, लेकिन वह अपने दीन पर क़ायम रहे। अब हमें आसानियाँ हैं, तो हम भी उन्हीं की तरह़ अपने दीन पर क़ायम रहेंगे, चुनाँचे उन का कुफ़्र व घमण्ड और भी बढ़ता गया और नतीजा यह निकला कि अल्लाह तआ़ला ने उन्हें अचानक हलाक कर दिया। ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर लिखते हैं कि इस आयत में काफ़िरों और अल्लाह से ग़ाफ़िल लोगों का ह़ाल बयान किया गया है।

लेकिन मोमिनों का ह़ाल इस के बरअ़क्स (अपोज़िट) होता है, वह नेअ़मतों पर अल्लाह का शुक्र अदा करते हैं और जब कोई मुसीबत आती है तो उस पर सब्र करते हैं। जैसा कि सह़ीह़ मुस्लिम में रिवायत है कि "मोमिन का मामला अ़जीब है, उस की हर बात ख़ेर लिए हुए है और यह मोमिन के सिवा किसी को ह़ासिल नहीं है। अगर उसे ख़ुशी मिलती है तो शुक्र अदा करता है और यह उस के लिए बेहतर है और अगर उसे तक्लीफ़ पहुँचती है तो सब्र करता है और यह उस के लिए बेहतर है।"

96-99 وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْقُرٰۤى اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكٰتٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ وَلٰكِنْ كَذَّبُوْا فَاَخَذْنٰهُمْ
بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ۝ اَفَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰۤى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا بَيَاتًا وَّهُمْ نَآئِمُوْنَ۝ اَوَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰۤى اَنْ
يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا ضُحًى وَّهُمْ يَلْعَبُوْنَ۝ اَفَاَمِنُوْا مَكْرَ اللّٰهِ ۚ فَلَا يَاْمَنُ مَكْرَ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْخٰسِرُوْنَ۝

इन चार आयतों में अल्लाह तआ़ला ने उन हलाक की जाने वाली क़ौमों की ईमानी ख़राबी का ह़ाल बयान किया है कि वह लोग ईमान व तक़्वा से खाली थे, अगर वह अपने ज़माने के अम्बिया पर ईमान लाए होते और ह़राम चीज़ों से रुकते और अच्छे आ़माल करते तो अल्लाह आसमान और ज़मीन से अपनी बरकतों के दरवाज़े उन के लिये खोल देता, लेकिन उन्होंने रसूलों को झुठलाया तो अल्लाह ने उन के कुफ़्र व गुनाह की वजह से उन्हें पकड़ लिया।

इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने इन्सान को अपने हुक्मों की मुख़ालिफ़त पर डराते हुए फ़रमाया कि अल्लाह का अ़ज़ाब तो किसी वक़्त भी आ सकता है, अल्लाह की गिरफ़्त का ख़ौफ़ वही लोग अपने दिलों से निकाल देते हैं जो अ़क़्ल से खाली होते हैं।

ह़सन बसरी (रह़०) का क़ौल है कि मोमिन नेकियाँ करता रहता है और अल्लाह से डरता रहता है और फ़ाजिर इन्सान गुनाह करता रहता है फिर भी अपने आप को अच्छा समझता है।

आयत नं० 100 से 126 तक

أَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِينَ يَرِثُونَ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِ أَهْلِهَا أَنْ لَوْ نَشَاءُ أَصَبْنَاهُمْ بِذُنُوبِهِمْ ۚ وَنَطْبَعُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ۝ تِلْكَ
الْقُرَىٰ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَائِهَا ۚ وَلَقَدْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ ۚ فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا بِمَا كَذَّبُوا مِنْ قَبْلُ ۚ كَذَٰلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ
عَلَىٰ قُلُوبِ الْكَافِرِينَ ۝ وَمَا وَجَدْنَا لِأَكْثَرِهِمْ مِنْ عَهْدٍ ۖ وَإِنْ وَجَدْنَا أَكْثَرَهُمْ لَفَاسِقِينَ ۝ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا إِلَىٰ
فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَظَلَمُوا بِهَا ۖ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ۝ وَقَالَ مُوسَىٰ يَا فِرْعَوْنُ إِنِّي رَسُولٌ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ حَقِيقٌ
عَلَىٰ أَنْ لَا أَقُولَ عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقَّ ۚ قَدْ جِئْتُكُمْ بِبَيِّنَةٍ مِنْ رَبِّكُمْ فَأَرْسِلْ مَعِيَ بَنِي إِسْرَائِيلَ ۝ قَالَ إِنْ كُنْتَ جِئْتَ بِآيَةٍ فَأْتِ بِهَا
إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۝ فَأَلْقَىٰ عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُبِينٌ ۝ وَنَزَعَ يَدَهُ فَإِذَا هِيَ بَيْضَاءُ لِلنَّاظِرِينَ ۝ قَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ
إِنَّ هَٰذَا لَسَاحِرٌ عَلِيمٌ ۝ يُرِيدُ أَنْ يُخْرِجَكُمْ مِنْ أَرْضِكُمْ ۖ فَمَاذَا تَأْمُرُونَ ۝ قَالُوا أَرْجِهْ وَأَخَاهُ وَأَرْسِلْ فِي الْمَدَائِنِ حَاشِرِينَ ۝
يَأْتُوكَ بِكُلِّ سَاحِرٍ عَلِيمٍ ۝ وَجَاءَ السَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوا إِنَّ لَنَا لَأَجْرًا إِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغَالِبِينَ ۝ قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ لَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ ۝ قَالُوا
يَا مُوسَىٰ إِمَّا أَنْ تُلْقِيَ وَإِمَّا أَنْ نَكُونَ نَحْنُ الْمُلْقِينَ ۝ قَالَ أَلْقُوا ۖ فَلَمَّا أَلْقَوْا سَحَرُوا أَعْيُنَ النَّاسِ وَاسْتَرْهَبُوهُمْ وَجَاءُوا بِسِحْرٍ
عَظِيمٍ ۝ وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ أَلْقِ عَصَاكَ ۖ فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ۝ فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ فَغُلِبُوا
هُنَالِكَ وَانْقَلَبُوا صَاغِرِينَ ۝ وَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ سَاجِدِينَ ۝ قَالُوا آمَنَّا بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ رَبِّ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ۝ قَالَ فِرْعَوْنُ
آمَنْتُمْ بِهِ قَبْلَ أَنْ آذَنَ لَكُمْ ۖ إِنَّ هَٰذَا لَمَكْرٌ مَكَرْتُمُوهُ فِي الْمَدِينَةِ لِتُخْرِجُوا مِنْهَا أَهْلَهَا ۖ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝ لَأُقَطِّعَنَّ أَيْدِيَكُمْ
وَأَرْجُلَكُمْ مِنْ خِلَافٍ ثُمَّ لَأُصَلِّبَنَّكُمْ أَجْمَعِينَ ۝ قَالُوا إِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا مُنْقَلِبُونَ ۝ وَمَا تَنْقِمُ مِنَّا إِلَّا أَنْ آمَنَّا بِآيَاتِ رَبِّنَا لَمَّا
جَاءَتْنَا ۚ رَبَّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَتَوَفَّنَا مُسْلِمِينَ ۝

अनुवाद–

(100) क्या जो धरती के, उसके पहले रहने वाले लोगों के (मरने के) बाद वारिस (उत्तराधिकारी) हुए
हैं, उन्हें यह बात हिदायत की वजह नहीं बनी, कि अगर 'हम' चाहें तो उनके गुनाहों की वजह से उन पर
मुसीबत डाल दें? और उनके दिलों पर मुहर लगा दें, तो वे सुन ही न सकें। (101) ये कुछ बस्तियाँ हैं जिनके
कुछ हालात 'हम' आप को सुनाते हैं, और उनके पास उनके रसूल खुली-खुली निशानियाँ लेकर आए, लेकिन
वे ऐसे न हुए कि ईमान लाते, इसकी वजह यह थी कि वे पहले से झुठलाते रहे; काफ़िरों के दिलों पर अल्लाह
इसी तरह मुहर लगा दिया करता है। (102) और 'हमने' तो उनमें से अक्सर लोगों को अहद (प्रतिज्ञा) का
पक्का न पाया, और 'हमने' उनमें से अक्सर लोगों को नाफ़रमान ही पाया। (103) फिर 'हमने' उनके बाद
मूसा को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔन और उसके सरदारों के पास भेजा, तो उन लोगों ने उनके साथ
ज़ुल्म (हक़ अदा न) किया, तो देखो! फ़साद फैलाने वालों का कैसा अंजाम हुआ? (104) और मूसा ने कहा,
''ऐ फ़िरऔन! मैं सारी दुनिया के रब की ओर से रसूल हूँ; (105) मुझ पर यह हक़ है कि मैं कोई बात
अल्लाह पर गढ़ कर न कहूँ, मगर हक़ (बात ही) तुम्हारे 'रब' की ओर से खुली निशानी लेकर आया हूँ,
तो बनी इस्राईल को मेरे साथ जाने (की इजाज़त दे) दो। (106) (फ़िरऔन ने) कहा, ''अगर तुम कोई निशानी
लेकर आए हो तो उसे पेश करो, अगर तुम सच्चे हो;'' (107) फिर उसने अपनी लाठी (अ़सा) डाल दी,

तो वह एक खुला अज़दहा (साँप) बन गया; (108) और उन्होंने अपना हाथ बाहर निकाला, तो वह देखने वालों के सामने चमक रहा था। (109) फ़िरऔ़न की क़ौम के सरदारों ने कहा, ''बेशक, यह तो बड़ा माहिर जादूगर है! (110) यह चाहता है कि तुम्हें तुम्हारी धरती से निकाल दे, तो बताओ क्या कहते हो?'' (111) उन्होंने कहा, ''इसे और इसके भाई को मोहलत दीजिए, और (अपने) कार्यकर्ताओं को शहरों में भेज दीजिए; (112) कि वे (साँप के) तमाम माहिर जादूगरों को ले आएँ।'' (113) और जादूगर आए फ़िरऔ़न के पास कहने लगे, ''अगर हम जीत गये तो ज़रूर हमें बड़ा बदला दिया जाए''। (114) कहा, ''हाँ, और तुम क़रीबी लोगों में हो जाओगे।'' (115) वह (जादूगर) बोले, ''ऐ मूसा ! या तुम डालो और या हम डालते हैं?'' (116) (मूसा ने) कहा, "तुम ही डालो," फिर जब उन्होंने (जादू की चीज़ों को) डाला तो लोगों की आँखों पर जादू कर दिया और उन्हें भयभीत कर दिया, और बहुत बड़ा जादू दिखाया। (117) और 'हमने' मूसा की ओर वह्य (प्रकाशना) की कि ''आप अपनी लाठी डाल दें।'' फिर क्या देखते हैं कि वह उनके गढ़े हुए जादू की चीज़ों को निगलती जा रही है। (118) इस तरह ह़क़ ज़ाहिर हो गया, और जो कुछ वे कर रहे थे, सब बातिल (बेकार) हो गया। (119) तो वे लोग वहीं मग्लूब (हार गये) और ज़लील होकर रह गये; (120) और जादूगर सज्दे में गिर पड़े; (121) बोले, ''हम तो ईमान ले आए सारी दुनिया के रब पर; (122) मूसा और हारून के रब पर।'' (123) फिरऔ़न बोला, ''इससे पहले कि मैं तुम्हें इजाज़त दूँ, तुम उस पर ईमान लाए! बेशक यह तो एक चाल है, जो तुम लोगों ने मिल कर शहर में किया है, ताकि उनमें के रहने वालों को वहाँ से निकाल दो। अच्छा, तो अब तुम्हें जल्द ही मालूम हुआ जाता है; (124) मैं तुम्हारे एक ओर के हाथ और दूसरी ओर के पाँव कटवा दूँगा; फिर तुम सबको सूली पर चढ़वा कर रहूँगा।'' (125) उन्होंने कहा, ''हम तो अपने रब ही की ओर लौटेंगे; (126) और 'उसके' सिवा तुझको हमारी कौन सी बात बुरी लगी है? जब हमारे 'रब' की निशानियाँ हमारे पास आ गयीं, तो हम उन पर ईमान ले आए, ऐ रब! हम पर सब्र के दहाने खोल दे और हमें इस ह़ाल में उठा कि हम मुस्लिम हों"।

आयत 100 से 126 तक की व्याख्या

100 أَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِينَ يَرِثُونَ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِ أَهْلِهَا أَنْ لَوْ نَشَاءُ أَصَبْنَاهُمْ بِذُنُوبِهِمْ ۚ وَنَطْبَعُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ

इस आयते करीमा में इन्सान के लिए बड़ी नसीह़त है कि इस दुनिया में अल्लाह के अ़ज़ाब से हमेशा डरते रहना चाहिए और उन क़ौमों के बुरे अन्जाम से नसीह़त ह़ासिल करना चाहिए जो पहले गुज़र चुकी हैं, कि जिस तरह़ अल्लाह ने उन के गुनाहों की वजह से उन्हें गिरफ़्त में ले लिया, उसी तरह़ मुम्किन है उन लोगों को भी अल्लाह उन के गुनाहों की वजह से पकड़ ले और उन के दिलों पर मुहर लगा दे जो उन हलाक की गई क़ौमों के बाद आये हैं और यह उसी ज़मीन पर उन्हीं की तरह़ गुनाह कर रहे हैं, जिस पर पिछली क़ौमें आबाद थीं।

101-102 تِلْكَ الْقُرَىٰ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَائِهَا ۚ وَلَقَدْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا

بِمَا كَذَّبُوا مِن قَبْلُ كَذَٰلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِ الْكَافِرِينَ ۝ وَمَا وَجَدْنَا لِأَكْثَرِهِم مِّنْ عَهْدٍ ۖ وَإِن وَجَدْنَا أَكْثَرَهُمْ لَفَاسِقِينَ ۝

इन दो आयतों में नबी करीम (सल्ल०) को ख़िताब कर के कहा गया है कि हम ने अभी आप को पाँच अम्बिया-ए-किराम और उन की उम्मतों के वाक़िआ़त और उन के बुरे अन्जाम सुनाये हैं ताकि आप की क़ौम नसीह़त ह़ासिल करे और ईमान ले आये और आप को तसल्ली हो कि मुश्रिकीन की ओर से आप को जो तक्लीफ़ पहुँच रही है वह आप ही के साथ ख़ास नहीं है बल्कि पिछले ज़मानों में दूसरे अम्बिया को भी ऐसी परेशानियों का सामना करना पड़ा।

इस के बाद अल्लाह ने दोबारा उन हलाक शुदा क़ौमों की बाज़ बुराईयों को बयान किया है कि ह़क़ को झुठलाना उन का काम बन गया था। जब ह़क़ आया तो उन्होंने उसे झुठलाया, फिर जब अम्बिया ने इस ह़क़ की तस्दीक़ के लिए दलायल पेश किये तो मुख़ालिफ़त में तेज़ हो गये, इसलिए कि ह़क़ को झुठलाना और अल्लाह से जो अ़हद लिया था उस की ख़िलाफ़वर्ज़ी करना उन की आ़दत बन गई थी और वह अल्लाह के सरकश व नाफ़रमान बन्दे हो गये थे, इसीलिए अल्लाह ने उन्हें हलाक कर दिया।

103 ثُمَّ بَعَثْنَا مِن بَعْدِهِم مُّوسَىٰ بِآيَاتِنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَظَلَمُوا بِهَا ۖ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ۝

इस आयते करीमा में ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) फ़िरऔ़न और बनी इस्राईल के वाक़िआ़त बयान हो रहे हैं। अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत नूह़, ह़ज़रत हूद, ह़ज़रत लूत और ह़ज़रत शुऐब (अ़लै०) के बाद ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) को फ़िरऔ़न और क़ौमे फ़िरऔ़न की हिदायत के लिए निशानियाँ देकर मब्अूस (भेजा) किया, लेकिन उन्होंने उन निशानियों का इन्कार कर दिया और अपने कुफ़्र व घमण्ड पर अड़े रहे, तो अल्लाह तआ़ला ने उन्हें समुद्र में डिबो दिया, इसीलिए अल्लाह ने फ़रमाया कि ऐ मुह़म्मद! आप देख लीजिए कि ज़मीन में कुफ़्र व शिर्क के ज़रिये फ़साद फैलाने वालों का अन्जाम कैसा होता है?

104-108 وَقَالَ مُوسَىٰ يَا فِرْعَوْنُ إِنِّي رَسُولٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ۝ حَقِيقٌ عَلَىٰ أَن لَّا أَقُولَ عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقَّ ۚ قَدْ جِئْتُكُم بِبَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ فَأَرْسِلْ مَعِيَ بَنِي إِسْرَائِيلَ ۝ قَالَ إِن كُنتَ جِئْتَ بِآيَةٍ فَأْتِ بِهَا إِن كُنتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۝ فَأَلْقَىٰ عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِينٌ ۝ وَنَزَعَ يَدَهُ فَإِذَا هِيَ بَيْضَاءُ لِلنَّاظِرِينَ ۝

ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) अपनी दअ़वत लेकर फ़िरऔ़न के पास गये और उस से कहा कि मैं अल्लाह का भेजा हुआ रसूल हूँ और मैं तुम्हें अल्लाह की तरफ़ से ह़क़ बात बताने आया हूँ और अपनी सदाक़त की निशानी लेकर आया हूँ। क़ुर्आन करीम की दूसरी आयात बताती हैं कि इस मौक़े पर ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) और फ़िरऔ़न के दर्मियान बातचीत हुई। फ़िरऔ़न ने कहा ऐ मूसा! तुम दोनों का रब कौन है? और ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) का जवाब सुनने के बाद दोबारा कहा कि 'रब्बुल् आ़लमीन' कौन होता है?... ....। ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने फ़िरऔ़न से यह भी कहा कि बनी इस्राईल को मेरे साथ उन के वतन वापस जाने दो। फ़िरऔ़न ने उन्हें अपना ग़ुलाम बना रखा था और वहाँ से निकलने से रोक रखा था।

फ़िरऔ़न ने कहा कि अगर तुम सच्चे हो तो जिस निशानी का अभी ज़िक्र किया है उसे दिखाओ तो ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने अपनी लाठी ज़मीन पर डाल दी जो एक बहुत भयानक साँप में बदल गई और अपना हाथ अपनी जेब या बग़ल के नीचे से निकाला तो सफ़ेद व चमकता हुआ बन गया और उस से ख़ूबसूरत रौशनी फूट कर निकलने लगी जिसे हर आदमी देखने लगा।

109-114 قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِيْمٌ ۝ يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ ۚ فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ ۝ قَالُوْٓا اَرْجِهْ وَاَخَاهُ وَاَرْسِلْ فِي الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ۝ يَاْتُوْكَ بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيْمٍ ۝ وَجَآءَ السَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوْٓا اِنَّ لَنَا لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ ۝ قَالَ نَعَمْ وَاِنَّكُمْ لَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ۝

जब क़ौमे फ़िरऔ़न के सरदारों ने लाठी को साँप की शक्ल में और हाथ को बग़ैर किसी बीमारी के सफ़ेद चमकता देख लिया, तो कहने लगे कि यह तो कोई बहुत बड़ा माहिर जादूगर है। (जादू इसलिए कहा जाता है कि अ़वाम के दिल व दिमाग़ पर उन मोअ़जिज़ात (चमत्कार) का असर न हो) यह तो तुम्हें मिस्र से अपने जादू के ज़रिये निकाल कर ख़ुद उस पर क़ब्ज़ा करना चाहता है। 'सूरः शुअ़रा' में आया है कि यह बात फ़िरऔ़न ने कही थी। बाज़ मुफ़स्सिरीन की राय है कि यह बात सब ने कही थी, इसलिए कोई फ़र्क़ नहीं है।

इस के बाद फ़िरऔ़न ने सरदारों को मुख़ातब करके कहा कि तुम लोगों की क्या राय है? हमें बताओ? चुनाँचे सब ने मश्वरह करने के बाद फ़िरऔ़न से कहा कि ह़ज़रत मूसा और उस के भाई हारून को बन्द कर दीजिए और लोगों को पूरे मुल्क में भेज कर माहिर जादूगरों को जमा कीजिए। उस ज़माने में सरज़मीने मिस्र में जादू का बहुत ज़्यादा चर्चा था और जादूगरों की बड़ी अहमियत थी, इसीलिए उन लोगों ने समझा कि ह़ज़रत मूसा का कारनामा भी जादू की तरह़ से है और बड़े जादूगर ही उस की काट कर सकते हैं। चुनाँचे मुल्क के तमाम जादूगर जमा हो गये और फ़िरऔ़न से यह शर्त लगाई कि अगर वह ह़ज़रत मूसा पर ग़ालिब आ जाएँगे तो उन्हें मुनासिब इनूआ़म मिलेगा। फ़िरऔ़न ने कहा कि हाँ, अगर वह ग़ालिब आ गये तो वह दरबारियों और इ़ज़्ज़तदार लोगों में (यानी असेम्बली का मेम्बर बना कर) दाख़िल कर लिए जाएँगे।

115-116 قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِمَّآ اَنْ تُلْقِيَ وَاِمَّآ اَنْ نَّكُوْنَ نَحْنُ الْمُلْقِيْنَ ۝ قَالَ اَلْقُوْا ۚ فَلَمَّآ اَلْقَوْا سَحَرُوْٓا اَعْيُنَ النَّاسِ وَاسْتَرْهَبُوْهُمْ وَجَآءُوْ بِسِحْرٍ عَظِيْمٍ ۝

जादूगरों ने ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) को अख़्तियार दिया कि चाहो तो तुम ही पहले अपना काम दिखाओ या हम अपना काम दिखाएँ। यानी जादूगरों को अपने ऊपर पूरा एतिमाद था कि ग़ल्बा उन्हीं को ह़ासिल होगा, चाहे बाद में ही अपना करतब दिखलाएँ तो ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने कहा कि पहले तुम ही लोग अपनी कुव्वत का मुज़ाहिरा करो और इस में ह़िक्मत यह थी कि जब लोग उन के कारनामों को देख लें तो फिर अल्लाह की ओर से मोअ़जिज़ह ज़ाहिर होगा और अपनी पूरी कुव्वत के साथ देखने वालों के

दिल व दिमाग़ पर असर डालेगा।

बाज़ मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि इस में एक क़िस्म की धमकी थी कि हाँ पहले तुम ही अपनी जादूगरी दिखलाओ, फिर देख लोगे कि कैसी ज़िल्लत का तुम्हें सामना करना पड़ता है क्योंकि जादू मोअ़जिज़ह पर कभी ग़ालिब नहीं आ सकता। चुनाँचे उन्होंने लोगों की आँखों को मस्हूर (जादुवी) कर दिया, लोग समझने लगे कि वाक़ई उन के सामने साँप दौड़ रहा है। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने 'सूरः ताहा' आयात नं० 66-69 में फ़रमाया है-

فَإِذَا حِبَالُهُمْ وَعِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ إِلَيْهِ مِن سِحْرِهِمْ أَنَّهَا تَسْعَىٰ ۝ فَأَوْجَسَ فِي نَفْسِهِ خِيفَةً مُّوسَىٰ ۝ قُلْنَا لَا تَخَفْ إِنَّكَ أَنتَ الْأَعْلَىٰ ۝ وَأَلْقِ مَا فِي يَمِينِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوا ۖ إِنَّمَا صَنَعُوا كَيْدُ سَاحِرٍ ۖ وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُ حَيْثُ أَتَىٰ ۝

यानी "मूसा को यह ख़याल गुज़रने लगा कि उन की रस्सियाँ और लकड़ियाँ उन के जादू के ज़ोर से दौड़ भाग रही हैं। चुनाँचे मूसा अपने दिल ही दिल में डरने लगे, हम ने कहा कुछ ख़ौफ़ न कर, यक़ीनन तू ही ग़ालिब (प्रभावी) रहेगा, तेरे दाएँ हाथ में जो लाठी है उसे ज़मीन पर डाल दे ताकि वह उन की तमाम कारीगरी को निगल जाए। उन्होंने जो कुछ बताया है यह जादूगरों के करतब हैं और जादूगर कहीं भी जाए कामियाब नहीं होता"।

117-122 وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ أَلْقِ عَصَاكَ ۖ فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ۝ فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ فَغُلِبُوا هُنَالِكَ وَانقَلَبُوا صَاغِرِينَ ۝ وَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ سَاجِدِينَ ۝ قَالُوا آمَنَّا بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ رَبِّ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ۝

उस वक़्त अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दे और रसूल हज़रत मूसा (अ़लै०) को वह्य के ज़रिये हुक्म दिया कि अब तुम्हारे दाएँ हाथ में जो लाठी है उसे डाल दो, उन्होंने ऐसा ही किया और वह लाठी जादूगरों के तमाम झूठे साँपो को निगलने लगी, यह देखकर फ़िरऔन और उस के क़रीबी और उस क़ौम के लोग ज़लील और रुस्वा होकर अपने घरों को लौटने लगे और जादूगर آمَنَّا بِرَبِّ الْعَالَمِينَ رَبِّ مُوسَىٰ وَهَارُونَ कहते हुए सज्दे में गिर गये।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा कहते हैं कि वह लाठी उन की रस्सियों और लकड़ियों को निगलती चली गई, यह मन्ज़र देखकर जादूगर समझ गये कि यह आसमानी मोअ़जिज़ह है, कोई जादू नहीं। चुनाँचे तमाम जादूगर अल्लाह के लिए सज्दे में गिर गये और पुकार उठे कि हम 'रब्बुल् आ़लमीन' पर ईमान ले आये जो हज़रत मूसा और हारून का रब है। 'उलम-ए-तफ़सीर' लिखते हैं कि उन्होंने "رَبِّ مُوسَىٰ وَهَارُونَ" की क़ैद इसलिए लगाई ताकि फ़िरऔ़न को अपना मअ़बूद समझने वाले यह न गुमान करें कि उन्होंने फ़िरऔ़न के लिए सज्दः किया है।

123 قَالَ فِرْعَوْنُ آمَنتُم بِهِ قَبْلَ أَنْ آذَنَ لَكُمْ ۖ إِنَّ هَٰذَا لَمَكْرٌ مَّكَرْتُمُوهُ فِي الْمَدِينَةِ لِتُخْرِجُوا مِنْهَا أَهْلَهَا ۖ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝

जब हक़ वाज़ेह हो गया और तमाम जादूगर हज़रत मूसा (अ़लै०) पर ईमान ले आये तो फ़िरऔ़न

ने अपनी ज़िल्लत व रुस्वाई पर पर्दा डालने के लिए कहा कि तुम लोग मेरी इजाज़त के बग़ैर हज़रत मूसा पर ईमान ले आये, ऐसा मालूम होता है कि तुम लोग यहाँ आने से पहले हज़रत मूसा के साथ मिल गये थे और एक रची रचाई साज़िश के मुताबिक़ यहाँ आये हो कि पहले तुम लोग हज़रत मूसा के ख़िलाफ़ बज़ाहिर अपनी तेज़ी दिखाओगे और फिर उस के सामने झुक जाओगे, ताकि तुम सब मिलकर क़िब्तियों को यहाँ से निकाल दो और उन की जगह तुम ले लो और हज़रत मूसा तुम्हारा बादशाह बन जाए और तुम लोग उस के साथ रहने लगो तो जल्द ही तुम लोग अपने अन्जाम को पहुँच जाओगे।

हाफ़िज़ इब्ने कसीर लिखते हैं कि यह भी फ़िरऔ़न की साज़िश थी, इसलिए कि हज़रत मूसा (अ़लै०) तो मद्यन से आते ही फ़िरऔ़न के पास पहुँचे और अपनी दअ़वत पेश की और उस के मुताल्बे पर मोअ़जिज़ात पेश किया था, उन्हें जादूगरों से मिलने का कब मौक़ा मिला था? और जादूगर तो मुख़्तलिफ़ इलाक़ों से जमा किये गये थे और उन की भरपूर ख़्वाहिश थी कि वह ग़ालिब आ जाते।

हज़रत मूसा (अ़लै०) उन में से किसी को भी नहीं जानते थे और फ़िरऔ़न यह सब कुछ जानता था, लेकिन उस ने अपनी रिआ़या को बेवक़ूफ़ बनाना चाहा, जैसा कि अल्लाह ने सूरः ज़ुख़रुफ़ की आयत नं० (54) में फ़रमाया है فَاسْتَخَفَّ قَوْمَهٗ فَاَطَاعُوْهُ "फ़िरऔ़न ने अपनी क़ौम को बहलाया और फुसलाया तो उन्होंने उस की बात मान ली" और उस क़ौम से बढ़कर जाहिल और गुमराह कौन हो सकता है जिस से फ़िरऔ़न ने जब कहा, **अना रब्बुकुमुल् आ़ला** "मैं तुम्हारा सब से बड़ा रब हूँ" तो उस की बात मान ली।

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, हर बच्चा फ़ित्रत पर पैदा होता है बस उसके माँ-बाप उस को यहूदी या नसरानी या मजूसी बना देते हैं। जिस तरह़ जानवर का बच्चा सह़ी सालिम पैदा होता है और उसके नाक कान कटे हुए नहीं होते। **(बुख़ारी व मुस्लिम)**

124 لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ ثُمَّ لَاُصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ۝

ऊपर फ़िरऔ़न ने जादूगरों को जो धमकी दी थी, उस की इस में तफ़्सील है।

125 قَالُوْٓا اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ۝

यानी अगर आज तुम हमारे साथ ऐसा मामला करोगे, तो अल्लाह तुम्हें नहीं छोड़ेगा, तुम्हारे करतूत का बदला ज़रूर देगा और हमें उस की राह में जो तक्लीफ़ पहुँचेगी उस के बदले में हम पर एह़सान करेगा। मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि फ़िरऔ़न ने उन्हें दुनिया के अ़ज़ाब की धमकी दी तो हज़रत मूसा (अ़लै०) ने उसे आख़िरत के अ़ज़ाब की धमकी दी।

126 وَمَا تَنْقِمُ مِنَّآ اِلَّآ اَنْ اٰمَنَّا بِاٰيٰتِ رَبِّنَا لَمَّا جَآءَتْنَا ۭ رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّتَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ۝

यानी जो तुम्हारे नज़्दीक हमारा ऐ़ब है, वही हमारी सब से बड़ी ख़ूबी है। इस के बाद जादूगरों ने अपने लिए साबित क़दमी और ख़ात्मा बिल् ख़ैर की दुआ़ की और फ़िरऔ़न से कहा,

فَاقْضِ مَآ اَنْتَ قَاضٍ ۭ اِنَّمَا تَقْضِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ۝ اِنَّآ اٰمَنَّا بِرَبِّنَا لِيَغْفِرَ لَنَا خَطٰيٰنَا وَمَآ اَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ مِنَ السِّحْرِ ۭ وَاللّٰهُ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ۝

यानी "अब तू जो कुछ करने वाला है कर गुज़र, तेरा हुक्म सिर्फ़ इसी दुनियावी ज़िन्दग़ी में ही चलेगा, हम तो इस उम्मीद में अपने परवरदिग़ार पर ईमान लाए हैं कि वह हमारी ख़ताएँ माफ़ कर देगा और जो कुछ तूने हम से ज़बरदस्ती कराया है वह तो जादू है, और अल्लाह ही बेहतर और हमेशा बाक़ी रहने वाला है।" **(सूरः ताहा 72/73)**

हाफ़िज़ इब्ने कसीर लिखते हैं (अल्लाह की हिक्मत देखिये कि) सुबह़ को वह लोग जादूगर थे और शाम को अल्लाह के नेक और शहीद बन्दे बन गये।

आयत नं० 127 से 137 तक

وَقَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ اَتَذَرُ مُوْسٰى وَقَوْمَهٗ لِيُفْسِدُوْا فِى الْاَرْضِ وَيَذَرَكَ وَاٰلِهَتَكَ ؕ قَالَ سَنُقَتِّلُ اَبْنَآءَهُمْ وَنَسْتَحْيٖ نِسَآءَهُمْ ۚ
وَاِنَّا فَوْقَهُمْ قٰهِرُوْنَ ۝ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ اسْتَعِيْنُوْا بِاللّٰهِ وَاصْبِرُوْا ۚ اِنَّ الْاَرْضَ لِلّٰهِ ۙ يُوْرِثُهَا مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ
وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ۝ قَالُوْٓا اُوْذِيْنَا مِنْ قَبْلِ اَنْ تَاْتِيَنَا وَمِنْۢ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا ؕ قَالَ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّهْلِكَ عَدُوَّكُمْ وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِى
الْاَرْضِ فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اَخَذْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ بِالسِّنِيْنَ وَنَقْصٍ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ۝ فَاِذَا جَآءَتْهُمُ
الْحَسَنَةُ قَالُوْا لَنَا هٰذِهٖ ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّطَّيَّرُوْا بِمُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗ ؕ اَلَآ اِنَّمَا طٰٓئِرُهُمْ عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ
لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَقَالُوْا مَهْمَا تَاْتِنَا بِهٖ مِنْ اٰيَةٍ لِّتَسْحَرَنَا بِهَا ۙ فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ۝ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوْفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ
وَالضَّفَادِعَ وَالدَّمَ اٰيٰتٍ مُّفَصَّلٰتٍ ۟ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ۝ وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوْا يٰمُوْسَى ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ
عِنْدَكَ ۚ لَئِنْ كَشَفْتَ عَنَّا الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَلَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۝ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الرِّجْزَ اِلٰٓى اَجَلٍ هُمْ بٰلِغُوْهُ
اِذَا هُمْ يَنْكُثُوْنَ ۝ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَاَغْرَقْنٰهُمْ فِى الْيَمِّ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ ۝ وَاَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِيْنَ كَانُوْا
يُسْتَضْعَفُوْنَ مَشَارِقَ الْاَرْضِ وَمَغَارِبَهَا الَّتِىْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ؕ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنٰى عَلٰى بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ بِمَا صَبَرُوْا ؕ
وَدَمَّرْنَا مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ وَقَوْمُهٗ وَمَا كَانُوْا يَعْرِشُوْنَ ۝

अनुवाद-

(127) और फ़िरऔ़न की क़ौम के सरदार कहने लगे, ''क्या आप मूसा और उसकी क़ौम को ऐसे ही छोड़ देंगे कि वह ज़मीन में बिगाड़ पैदा करें और आप को और आप के मअ़बूदों को छोड़ बैठें?'' उसने कहा, हम उनके बेटों को बुरी तरह क़त्ल करेंगे और उनकी बीवियों को ज़िन्दा रखेंगे, और बेशक हम उन पर पूरा अधिकार रखते हैं।'' (128) मूसा ने अपनी क़ौम से कहा, ''अल्लाह से मदद माँगो और साबित क़दम रहो, ज़मीन तो अल्लाह की है! और 'वह' अपने बन्दों में से जिसे चाहता है, उसका मालिक बनाता है; और आखिरी नतीजा तो डर रखने वालों का ही है।'' (129) उन्होंने कहा, ''तुम्हारे आने से पहले भी हम को तकलीफ़ें पहुँचती रही और आने के बाद भी, मूसा ने कहा, ''क़रीब है तुम्हारा 'रब' कि तुम्हारे दुश्मन को हलाक कर दे, और उसकी जगह तुम्हें ज़मीन में ख़लीफ़ा बनाये, फिर देखे कि तुम कैसे अ़मल करते हो।'' (130) और 'हमने' फिरऔ़नियों को कई साल तक अकाल और पैदावार की कमी में डाले रखा, ताकि नसीह़त हासिल करें। (131) फिर जब उन्हें अच्छी ह़ालत पेश आती है तो कहते है, ''यह तो है ही हमारे लिए,'' और जब उन्हें बुरी ह़ालत पेश आती तो उसे मूसा और उसके साथियों की नहूसत (अपशगुन) बताते, जान लो! कि उनकी नहूसत तो अल्लाह ही के हाथ में है, लेकिन उनमें से अक्सर लोग नहीं जानते। (132) और बोले, "तुम हम पर जादू करने के लिए चाहे जो निशानी ले आओ, मगर हम तुम पर ईमान लाने वाले नहीं।'' (133) तो 'हमने' उन पर तूफान, और टिड्डियाँ और छोटे कीड़े (जुएँ) और मेढ़क, और खून-कितनी ही खुली हुई निशानियाँ भेजीं- मगर वे घमंड ही करते रहे; और वे लोग थे ही मुजरिम। (134) और जब कभी उन पर अ़ज़ाब आता तो कहते, "ऐ मूसा हमारे लिए अपने 'रब' से दुआ़ करो, जैसा उसने तुमसे अह़द कर रखा

है, अगर तुम हमसे अ़ज़ाब को टाल दोगे तो हम तुम पर ईमान ले आएँगे और बनी इस्राईल को भी तुम्हारे साथ जाने देंगे।'' (135) फिर जब 'हम' एक मुद्दत के लिए अ़ज़ाब को दूर कर देते, जिस तक उनको पहुँचना था तो वह अ़हद को तोड़ डालते। (136) तो 'हमने' उनसे बदला ले लिया और उन्हें गहरे पानी में डुबो दिया, क्योंकि उन्होंने हमारी निशानियों को झुठला दिया और उनसे ग़ाफ़िल हो गये। (137) और जो लोग कमज़ोर समझे जाते थे उनको ज़मीन के पूरब और पश्चिम का, जिसमें हमने बरकत दी थी वारिस बना दिया; और बनी इस्राईल के बारे में, उनके सब्र की वजह से, तुम्हारे 'रब' का नेक वादा पूरा हुआ, फ़िरऔ़न और उसकी क़ौम का वह सब कुछ 'हमने' बरबाद कर दिया, जिसे वह बनाते और ऊँचा उठाते थे।

आयत नं० 127 से 137 तक की व्याख्या

127 وَ قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ اَتَذَرُ مُوْسٰى وَ قَوْمَهٗ لِيُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ وَ يَذَرَكَ وَ اٰلِهَتَكَ ؕ قَالَ سَنُقَتِّلُ اَبْنَآءَهُمْ وَ نَسْتَحْيٖ نِسَآءَهُمْ ۚ وَ اِنَّا فَوْقَهُمْ قٰهِرُوْنَ۝

हज़रत मूसा (अ़लै०) की कामियाबी और जादूगरों के ईमान लाने के बाद बनी इस्राईल के कई लाख आदमी हज़रत मूसा (अ़लै०) पर ईमान ले आये, हालात के इस इन्क़िलाब ने फ़िरऔ़न और उस के दरबारियों को हिला दिया, इसीलिए दरबारियों ने फ़िरऔ़न को हज़रत मूसा (अ़लै०) और मुसलमानों के ख़िलाफ़ भड़काया और कहा कि अगर उन्हें इसी तरह आज़ाद छोड़ दिया गया तो यह लोग आप की रिआ़या को ख़राब करेंगे और मुल्क में फ़साद बरपा करेंगे और आप को और आप के मअ़बूद को छोड़ कर हज़रत मूसा के रब की अ़िबादत की दअ़वत देंगे।

'हसन बसरी (रह०)' कहते हैं कि फ़िरऔ़न का एक मअ़बूद था जिस की वह छुप कर अ़िबादत किया करता था। फ़िरऔ़न ने कहा कि हम उन के लड़कों को क़त्ल कर देंगे और उन की औ़रतों को अपनी ख़िद्मत के लिए ज़िन्दा रखेंगे।

बनी इस्राईल को फ़िरऔ़नियों के हाथों दो मर्तबः क़त्ल और मौत का सामना करना पड़ा। पहली बार हज़रत मूसा (अ़लै०) की विलादत के पहले जब फ़िरऔ़न ने हुक्म दिया था कि बनी इस्राईल में पैदा होने वाला हर बच्चा क़त्ल कर दिया जाए ताकि वह आदमी वजूद में न आ सके जिस के हाथों नुजूमियों की ख़बर के मुताबिक़ फ़िरऔ़न की बादशाहत का ख़ात्मा होना था, लेकिन हज़रत मूसा पैदा हुए और अल्लाह ने उन की हिफ़ाज़त की और फ़िरऔ़न की चाल धरी की धरी रह गई और दूसरी बार अब जबकि उसे और उस की बादशाहत को दोबारा वही ख़त्रा मालूम हुआ जो पहले हुआ था, इसलिए उस ने बनी इस्राईल के बच्चों को क़त्ल कर देने का हुक्म आ़म जारी कर दिया, लेकिन इस बार भी अल्लाह ने बनी इस्राईल को इ़ज़्ज़त दी और उसे और उस की फ़ौज को ज़लील करके समुद्र में डुबो दिया।

इस से स्पष्ट हुआ कि फ़िरऔ़न खुद भी मअ़बूद (पूज्य) बन बैठा था, दूसरे मअ़बूद भी बना रखे थे। प्राचीन काल में सामान्य रूप से राजा-प्रजा से अपनी पूजा कराते थे और जहाँ तक फ़िरऔ़न का

सम्बन्ध है वह सूरज देवता के अवतार होने का दावा करता था एवं मिस्री क़ौम स्वयं ग्रहों, नक्षत्रों तथा बुतों की पुजारी क़ौम थी।

"मिस्र में भी इस तरह़ की नक्षत्र पूजा जारी थी। सर्वाधिक बड़ा देवता सूर्य था जिसको वे अपनी भाषा में रअ़ कहते थे, यही सूर्य देवता का मन्दिर था। राजा सूर्य देवता का पुत्र समझा जाता था इसलिए उसका उपनाम 'रअ़मसीस' होता था अर्थात 'सूर्यपुत्र'। यही कारण है कि मिस्र के राजा ख़ुदा होने के दावेदार हुआ करते थे।" **(अर्ज़ुलक़ुर्आन- अल्लामा सैय्यद सुलैमान नदवी Vol II P. 160)**

इंसाइक्लोपीडिया आफ़ रेलीजन ऐंड एथिक्स की निम्न पंक्तियों से भी स्पष्ट होगा कि मिस्र में रअ़ अर्थात सूर्यदेवता की पूजा की जाती थी और राजा अपने को इस हैसियत से पेश करते थे कि वे रअ़ देवता की औलाद है।

"Ra. the sun god, was specially worshipped at Heliopolis-Every king of Egypt afterwords had a Ra-name ra was thus more constantly recognised than any other god." *(Encyclopaedia of Religion & Ethics Vol V P. 248)*

"Thence forward the pharaos regularly designated themselves as sons of Ra." *(Vol VI P. 278)*

इस के अलावा मिस्रवासी गाय को भी पूजते थे। रहा फ़िरऔ़न का दावा कि اَنَا رَبُّكُمُ الْاَعْلٰى

मैं तुम्हारा सब से बड़ा रब हूँ। **(सूरः नाज़िआ़त-24)**

तो यह मात्र मूसा (अ़लै०) को तंग (चुप) करने के लिए था क्योंकि मूसा (अ़लै०) ने कहा था कि मैं उसका रसूल (दूत) हूँ जो सारे जगत का रब है। यह वही बात थी जो नमरुद ने इब्राहीम (अ़लै०) के तौह़ीद की दअ़वत के जवाब में दी थी। जब ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने फ़रमाया رَبِّيَ الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ

"मेरा रब वह है जो जिलाता और मारता है।"

तो उस ने (फ़ौरन) कहा اَنَا اُحْيِي وَاُمِيتُ

"मैं भी जिलाता और मारता हूँ।" **(सूरः अल् बक़रः 258)**

खुली बात है कि यह जवाब ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) को चुप कराने के लिए था वरना वह यह बेतुकी बात कैसे कह सकता था, जब कि वह खुद अपने जीवन और मृत्यु पर सामर्थ्य न रखता था।

फ़िरऔ़न ने मिस्र में देवी देवताओं की पूजा अवैध नहीं ठहराई क्योंकि यह इ़बादत उसके ख़ुदा होने के दावे का रोड़ा थी। लेकिन ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) के ख़ुदा को मान लेने की अवस्था में फ़िरऔ़न समेत तमाम मअ़बूदों का खण्डन होता था और एक अल्लाह की प्रभुता को स्वीकार करना पड़ता था जिसके बाद उसके आदेशों को भी मानना पड़ता। ख़ासतौर से उस के इस हुक्म को कि मूसा के साथ बनी इस्राईल को जाने दो इसलिए न वह स्वयं ह़ज़रत मूसा के ख़ुदा को मानने के लिए तैयार हुआ और न अपनी प्रजा को इसकी अनुमति दी। उसके निकट समय का सब से बड़ा ख़ुदा देश का राजा था जो पूजा का भी अधिकारी था और आज्ञा पालन का भी। उसका यह एलान مَا عَلِمْتُ لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرِيْ

मैं नहीं जानता कि मेरे सिवा तुम्हारा और कोई ख़ुदा है।" **(अल् क़सस-38)** इसी भावार्थ में था। अतः

यह समझना सही नहीं कि फ़िरऔ़न नास्तिक था या यह कि उस ने इसी भावार्थ में ख़ुदा होने का दावा किया था कि वह आसमान और ज़मीन का रचयिता है या उन पर उसका शासन चल रहा है, बल्कि वह इस बात का दावेदार था कि मिस्र पर उसकी सत्ता स्थापित है इसलिए वह यह भी हक़ रखता है कि उसकी पूजा की जाए और यह भी हक़ रखता है कि उसका आज्ञा पालन किया जाए। "और फ़िरऔ़न ने अपनी क़ौम के बीच पुकार कर कहाः-

وَنَادٰى فِرْعَوْنُ فِيْ قَوْمِهٖ قَالَ يٰقَوْمِ اَلَيْسَ لِيْ مُلْكُ مِصْرَ وَهٰذِهِ الْاَنْهٰرُ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِيْ ۚ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ۝

मेरी क़ौम के लोगों! क्या मिस्र पर मेरी प्रभुता नहीं है? और क्या यह नहरें मेरी नहीं बह रही हैं? क्या तुम देखते नहीं? **(अल् ज़ुख़्रुफ़-51)**

बनी इस्राईल की संख्या घटाने के लिए फ़िरऔ़न यह हथकंडा पहले भी इस्तेमाल कर चुका था, मगर उसमें कोई विशेष सफ़लता नहीं हुई थी। अब उसने इसे दोबारा इस्तेमाल करने का इरादा ज़ाहिर किया। बाइबिल में है-

"तब फ़िरऔ़न ने अपनी सारी प्रजा के लोगों को आज्ञा दी कि इब्रियों के जितने बेटे उत्पन्न हों उन सभों को तुम नील में डाल देना और सब बेटियों को जीवित रख छोड़ना।" **(निर्गमन 1: 22)**

128 قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ اسْتَعِيْنُوْا بِاللّٰهِ وَاصْبِرُوْا ۚ اِنَّ الْاَرْضَ لِلّٰهِ ۙ يُوْرِثُهَا مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۚ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ۝

जब फ़िरऔ़न ने बनी इस्राईल के बच्चों को मौत के घाट उतारने का फ़ैसला कर लिया और हज़रत मूसा (अ़लै०) को इस की ख़बर मिली तो उन्होंने अपनी क़ौम को अल्लाह की तरफ़ पलटने, उसी से मदद माँगने और उसी पर भरोसा कर के सब्र करने की नसीहत की, इसलिए कि हर हाल में मोमिन का लगाव अल्लाह से होता है, उस का यक़ीन मुकम्मल होता है कि जिस का मदद्गार अल्लाह होता है, उस का कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता।

इस के बाद हज़रत मूसा (अ़लै०) ने बनी इस्राईल को इशारा के ज़रिये बशारत दी कि ग़ल्बा (प्रभुत्व) तुम्हें ही हासिल होगा और ज़मीन के सरदार आले फ़िरऔ़न नहीं बल्कि तुम हो गये, इसलिए कि ज़मीन का मालिक अल्लाह है, वह जिसे चाहता है उस का वारिस बनाता है।

129 قَالُوْٓا اُوْذِيْنَا مِنْ قَبْلِ اَنْ تَاْتِيَنَا وَمِنْۢ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا ۚ قَالَ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّهْلِكَ عَدُوَّكُمْ وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ۝

बनी इस्राईल ने हज़रत मूसा (अ़लै०) से कहा कि इस सरज़मीन पर हम तो परेशान ही रहे हैं, आप की विलादत से पहले हमारे बच्चों को इसलिए क़त्ल किया गया कि कहीं मूसा न पैदा हो जाए जिस के हाथों फ़िरऔ़न की हुकूमत का ख़ात्मा होना था और अब जब आप नबी बनकर आये हैं, तब भी हमारे बच्चों को क़त्ल किया जा रहा है, ताकि हमारा वजूद ही ख़त्म कर दिया जाए तो हज़रत मूसा (अ़लै०) ने पहले जिस बशारत की तरफ़ इशारा किया था, उस को साफ़ कर दिया कि अल्लाह तआ़ला जल्द ही

तुम्हारे दुश्मनों को हलाक करेगा और तुम्हें ज़मीन की हुकूमत अ़ता करेगा। चुनाँचे अल्लाह तआ़ला ने उन के इस वादे को सच कर दिखाया। दाऊद व सुलेमान मिस्र के बादशाह हुए और यूशअ़ बिन नून की अगुवाई में बैतुल् मुक़द्दस फ़तेह़ हुआ और अल्लाह ने फ़िरऔ़न और उस की क़ौम को समुद्र में डुबो दिया और इस्राईलियों को उन से निजात दिलाई।

130-135

وَلَقَدْ أَخَذْنَا آلَ فِرْعَوْنَ بِالسِّنِينَ وَنَقْصٍ مِنَ الثَّمَرَاتِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ ۝ فَإِذَا جَاءَتْهُمُ الْحَسَنَةُ
قَالُوا لَنَا هَٰذِهِ ۖ وَإِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَطَّيَّرُوا بِمُوسَىٰ وَمَنْ مَعَهُ ۗ أَلَا إِنَّمَا طَائِرُهُمْ عِنْدَ اللَّهِ
وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَقَالُوا مَهْمَا تَأْتِنَا بِهِ مِنْ آيَةٍ لِتَسْحَرَنَا بِهَا فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِينَ ۝
فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ وَالضَّفَادِعَ وَالدَّمَ آيَاتٍ مُفَصَّلَاتٍ فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا
مُجْرِمِينَ ۝ وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوا يَا مُوسَى ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ۖ لَئِنْ كَشَفْتَ عَنَّا
الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَلَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ بَنِي إِسْرَائِيلَ ۝ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الرِّجْزَ إِلَىٰ أَجَلٍ هُمْ بَالِغُوهُ إِذَا
هُمْ يَنْكُثُونَ ۝

जादूगरों के शिकस्त खा जाने और उन के ईमान ले आने के बाद फ़िरऔ़न के लिए यह बात सूरज की तरह़ रौशन हो चुकी थी कि ह़ज़रत मूसा अल्लाह के नबी हैं और दुनिया व आख़िरत की भलाई इसी में थी कि उन पर ईमान ले आते, लेकिन वह ग़ुरूर व झूठी मअ़बूदियत के घमण्ड में कुफ़्र पर जमा रहा तो अल्लाह तआ़ला ने पहले उसे और उस की क़ौम को क़ह़त साली (सूखा) में मुब्तिला किया कि अब भी शायद तौबः की तौफ़ीक़ हो जाए, लेकिन कोई फ़ायदा न हुआ, तो अल्लाह तआ़ला ने उन्हें ख़ुशह़ाली और अम्न व आ़फ़ियत की कड़ी आज़माईश में मुब्तिला किया, जिस का नतीजा यह हुआ कि वह अपने घमण्ड में आगे ही बढ़ते गये। जब क़ह़त साली (सूखा) आई तो कहने लगे कि यह सब ह़ज़रत मूसा और बनी इस्राईल की वजह से हो रहा है और जब ख़ुशह़ाली आई तो कहने लगे कि हम तो इस के ह़क़्दार हैं ही, इसलिए अल्लाह तआ़ला ने उन की तर्दीद (खण्डन) करते हुए कहा कि तमाम कामों का अन्जाम और हर चीज़ का ख़ालिक़ सिर्फ़ अल्लाह है और ख़ुशह़ाली और क़ह़त साली सब उसी के अख़्तियार में है। ह़ज़रत मूसा और बनी इस्राईल के वजूद से बद्शुगूनी लेना तुम्हारे कुफ़्र व हठधर्मी का नतीजा है।

इस तरह़ इन का घमण्ड व ग़ुरूर बढ़ता ही गया यहाँ तक कि ह़ज़रत मूसा से कहा कि चाहे तुम कोई भी निशानी लाओ, हम तुम पर ईमान नहीं लाएँगे, जब उन का कुफ़्र व हठधर्मी यहाँ तक पहुँच गई, तो ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने दोनों हाथ उठा कर अल्लाह से दुआ़ की कि ऐ अल्लाह! फ़िरऔ़न की सरकशी ह़द से आगे बढ़ गई है और फ़िरऔ़नियों ने किसी अ़हद (वादे) का लिहाज़ नहीं रखा है। इसलिए अब तो उन्हें ऐसी सज़ा दे कि यह लोग मेरी क़ौम के लिए और बाद में आने वालों के लिए नसीह़त बन जाएँ चुनाँचे अल्लाह ने उन की दुआ़ क़ुबूल कर ली और सख़्त तूफ़ान आया और क़रीब था कि उस से हलाक हो जाते कि वह लोग दौड़ते हुए ह़ज़रत मूसा के पास आये और उन से दुआ़ की दरख़्वास्त की ताकि

यह अ़ज़ाब टल जाए और वादा किया कि अगर अ़ज़ाब टल गया तो ईमान ले आएँगे और बनी इस्राईल को उन के साथ जाने देंगे, लेकिन जब अ़ज़ाब टल गया और ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने उन्हें उन का वादा याद दिलाया, तो इन्कार कर गये और अपने कुफ़्र पर जमे रहे, तो अल्लाह तआ़ला ने टिड्डी की फ़ौज भेजी जिस ने उन के खेतों, दरख़्तों और फलों को तबाह करना शुरु कर दिया। जब यह ह़ाल देखा तो फिर ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) के पास दौड़ते आये और पहले की तरह ईमान लाने का वादा किया, लेकिन अ़ज़ाब टल जाने के बाद फिर इन्कार कर गये। इसी तरह़ अल्लाह तआ़ला ने उन्हें मुसलसल जुवों, मेंढ़कों और ख़ून के अ़ज़ाब में मुब्तिला किया और हर बार तौबः का वादा करते रहे और अ़ज़ाब टल जाने के बाद ईमान लाने से इन्कार करते रहे और उन का यह तरीक़ा इसलिए रहा कि वह लोग जरायम वाले फ़सादी थे और हर भलाई से मह़रूम थे।

आयत नं० (133) में तूफ़ान से मुराद शदीद मूसलाधार बारिश थी जिस ने खेतियों और फलों को तबाह कर दिया और इन्सानों में मौतें होने लगीं। **'जराद'** से मुराद मशहूर टिड्डी है जिस ने उन की खेतियों को तबाह करना शुरु कर दिया, इस्लाम में उस का खाना जायज़ है, लेकिन रसूलुल्लाह (सल्ल०) उसे नहीं खाते थे, जिस तरह़ सान्डा नहीं खाते थे। **'कुम्मल'** से मुराद घुन है जो गेहूँ और उन के दूसरे दानों में लग गया था। कुछ लोगों ने इस के दूसरे मआ़नी भी बयान किये हैं। **'दफ़ादिअ़ः'** मेंढ़क को कहते हैं। उन के घरों में, खानों में, ग़ल्लों और बिस्तरों में हर जगह मेंढ़क ही मेंढ़क नज़र आने लगे और **'दम'** से मुराद यह है कि उन की नहरों और कुओं का पानी ख़ून में बदल गया, मछलियाँ मर गईं और नहरों का पानी बद्‌बूदार हो गया, कुछ लोगों ने इस से नक्सीर की बीमारी मुराद ली है।

आयात नं० 134/135 में "रिज्ज़" यानी अ़ज़ाब से मुराद ताऊन की बीमारी है। कहा जाता है कि इस बीमारी से सत्तर हज़ार फ़िरऔ़नी हलाक हो गये थे।

136 فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَاَغْرَقْنٰهُمْ فِي الْيَمِّ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ۝

इन तमाम आज़माइशों से गुज़रने के बावजूद जब उन्हें ईमान की तौफ़ीक़ नहीं मिली तो अल्लाह का आख़िरी अ़ज़ाब आ गया, जिस ने उन का वजूद ही ख़त्म कर दिया। कहा जाता है कि जब फ़िरऔ़न ने मुल्क मिस्र पर अल्लाह तआ़ला का एक के बाद दूसरे कई अ़ज़ाब देखा तो ह़ज़रत मूसा और उन की क़ौम बनी इस्राईल को मिस्र से कूच करने की इजाज़त दे दी, चुनांचे बनी इस्राईल रात के वक़्त अचानक निकल पड़े और अपने साथ अपने जानवरों को भी ले लिया, फ़िरऔ़न ने जब सुना कि वह लोग रवाना हो गये, तो अपने फ़ैसले पर नादिम (शर्मिन्दा) हुआ और फ़ौरन अपना लश्कर लेकर मूसा का पीछा किया और उन्हें बह़रे-अह़मर (अहमर नामी समुद्र के किनारे) के साहिल पर पा लिया, बनी इस्राईल डर गये और ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) से अपनी परेशानी का इज़्हार करने लगे, तो ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने कहा कि मत डरो, अल्लाह हमारे साथ है। फिर ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने दुआ़ की और अल्लाह के हुक्म से समुद्र का पानी दो ह़िस्सों में तक़्सीम हो गया और रास्ता बन गया जिस से बनी इस्राईल पार कर गये।

फ़िरऔन ने अपने लश्कर के साथ उन का पीछा किया, जब बीच समुद्र में पहुँचा तो ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने हाथ से इशारा किया और अल्लाह के हुक्म से समुद्र का पानी तेज़ी के साथ दोनों तरफ़ से बढ़ा, फ़िरऔ़न और उस की फ़ौज को डुबा दिया और थोड़ी ही देर के बाद उन की लाशें समुद्र पर तैरने लगीं और किनारे आ गईं और बनी इस्राईल ने यह मन्ज़र अपनी आँखों से देखा।

137 وَأَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِينَ كَانُوا يُسْتَضْعَفُونَ مَشَارِقَ الْأَرْضِ وَمَغَارِبَهَا الَّتِي بَارَكْنَا فِيهَا ۖ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ
الْحُسْنَىٰ عَلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ بِمَا صَبَرُوا ۖ وَدَمَّرْنَا مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ وَقَوْمُهُ وَمَا كَانُوا يَعْرِشُونَ ۝

अल्लाह तआ़ला ने इस के बाद बनी इस्राईल को ज़मीन की सत्ता अ़ता की, मिस्र व शाम के इलाक़े उन की हुकूमत में आ गये, यह वही लोग थे जिन्हें फ़िरऔ़न ने अपना ग़ुलाम बना रखा था और जिन के हज़ारों बच्चों को क़त्ल करवा दिया था, लेकिन जब वह मूसा (अ़लै०) पर ईमान लाए और परेशानियों में सब्र व इस्तिक़ामत से काम लिया तो अल्लाह तआ़ला ने उन्हें ज़मीन का मालिक बना दिया और फ़िरऔ़नियों के मह़लों और बाग़ात को बर्बाद कर दिया। इसी बात को अल्लाह तआ़ला ने सूरः क़सस आयात नं० (5/6) में बयान किया है-

وَنُرِيدُ أَن نَّمُنَّ عَلَى الَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا فِي الْأَرْضِ وَنَجْعَلَهُمْ أَئِمَّةً وَنَجْعَلَهُمُ الْوَارِثِينَ ۝ وَنُمَكِّنَ لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَنُرِيَ فِرْعَوْنَ
وَهَامَانَ وَجُنُودَهُمَا مِنْهُم مَّا كَانُوا يَحْذَرُونَ ۝

यानी "फिर हमारी चाहत हुई कि हम उन पर करम फ़रमाएँ जिन्हें ज़मीन में बहुत कमज़ोर कर दिया गया था और हम ने उन्हें उगुवा बनाया और उन्हें वारिस बनाने का इरादा कर लिया और यह भी कि हम उन्हें ज़मीन में क़ुद्रत व अख़्तियार दें, फ़िरऔ़न, हामान और उन के लश्करों को वह दिखाएँ जिस से वह डर रहे थे"। फ़िरऔ़नियों की हलाकत व बर्बादी और उन के तबाही का ह़ाल सूरः दुख़ान आयात नं० 25/26/27/28 में अल्लाह तआ़ला ने यूँ बयान किया हैः-

كَمْ تَرَكُوا مِن جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۝ وَزُرُوعٍ وَمَقَامٍ كَرِيمٍ ۝ وَنَعْمَةٍ كَانُوا فِيهَا فَاكِهِينَ ۝
كَذَٰلِكَ ۖ وَأَوْرَثْنَاهَا قَوْمًا آخَرِينَ ۝

यानी "वह बहुत से बाग़ात और चश्मे छोड़ गये, खेतियाँ, मकानात और बहुत सी नेअ़मतें, जिन में वह ऐश कर रहे थे सब धरी की धरी रह गईं और हम ने उन सब का वारिस दूसरी क़ौम को बना दिया।"

आयत नं० 138 से 151 तक

وَجٰوَزْنَا بِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتَوْا عَلٰى قَوْمٍ يَّعْكُفُوْنَ عَلٰٓى اَصْنَامٍ لَّهُمْ ۚ قَالُوْا يٰمُوْسَى اجْعَلْ لَّنَآ اِلٰهًا كَمَا لَهُمْ اٰلِهَةٌ ۗ قَالَ
اِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ۝ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ مُتَبَّرٌ مَّا هُمْ فِيْهِ وَ بٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ قَالَ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْكُمْ اِلٰهًا وَّهُوَ فَضَّلَكُمْ
عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَاِذْ اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ۚ يُقَتِّلُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ۚ وَفِيْ
ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ۝ وَوٰعَدْنَا مُوْسٰى ثَلٰثِيْنَ لَيْلَةً وَّاَتْمَمْنٰهَا بِعَشْرٍ فَتَمَّ مِيْقَاتُ رَبِّهٖٓ اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً ۚ وَقَالَ
مُوْسٰى لِاَخِيْهِ هٰرُوْنَ اخْلُفْنِيْ فِيْ قَوْمِيْ وَاَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيْلَ الْمُفْسِدِيْنَ ۝ وَلَمَّا جَآءَ مُوْسٰى لِمِيْقَاتِنَا وَكَلَّمَهٗ رَبُّهٗ ۙ قَالَ
رَبِّ اَرِنِيْٓ اَنْظُرْ اِلَيْكَ ۚ قَالَ لَنْ تَرٰىنِيْ وَلٰكِنِ انْظُرْ اِلَى الْجَبَلِ فَاِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهٗ فَسَوْفَ تَرٰىنِيْ ۚ فَلَمَّا تَجَلّٰى رَبُّهٗ لِلْجَبَلِ
جَعَلَهٗ دَكًّا وَّخَرَّ مُوْسٰى صَعِقًا ۚ فَلَمَّآ اَفَاقَ قَالَ سُبْحٰنَكَ تُبْتُ اِلَيْكَ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ قَالَ يٰمُوْسٰٓى اِنِّي اصْطَفَيْتُكَ عَلَى
النَّاسِ بِرِسٰلٰتِيْ وَبِكَلَامِيْ ۖ فَخُذْ مَآ اٰتَيْتُكَ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ۝ وَكَتَبْنَا لَهٗ فِي الْاَلْوَاحِ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْعِظَةً وَّتَفْصِيْلًا
لِّكُلِّ شَيْءٍ ۚ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَّاْمُرْ قَوْمَكَ يَاْخُذُوْا بِاَحْسَنِهَا ۚ سَاُورِيْكُمْ دَارَ الْفٰسِقِيْنَ ۝ سَاَصْرِفُ عَنْ اٰيٰتِيَ الَّذِيْنَ يَتَكَبَّرُوْنَ فِي
الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۚ وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ۚ وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ۚ وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الْغَيِّ يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ۚ
ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ۚ هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا
كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوْسٰى مِنْۢ بَعْدِهٖ مِنْ حُلِيِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ ۚ اَلَمْ يَرَوْا اَنَّهٗ لَا يُكَلِّمُهُمْ وَلَا يَهْدِيْهِمْ سَبِيْلًا ۘ
اِتَّخَذُوْهُ وَكَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ۝ وَلَمَّا سُقِطَ فِيْٓ اَيْدِيْهِمْ وَرَاَوْا اَنَّهُمْ قَدْ ضَلُّوْا ۙ قَالُوْا لَئِنْ لَّمْ يَرْحَمْنَا رَبُّنَا وَيَغْفِرْ لَنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ
الْخٰسِرِيْنَ ۝ وَلَمَّا رَجَعَ مُوْسٰٓى اِلٰى قَوْمِهٖ غَضْبَانَ اَسِفًا ۙ قَالَ بِئْسَمَا خَلَفْتُمُوْنِيْ مِنْۢ بَعْدِيْ ۚ اَعَجِلْتُمْ اَمْرَ رَبِّكُمْ ۚ وَاَلْقَى الْاَلْوَاحَ
وَاَخَذَ بِرَاْسِ اَخِيْهِ يَجُرُّهٗٓ اِلَيْهِ ۚ قَالَ ابْنَ اُمَّ اِنَّ الْقَوْمَ اسْتَضْعَفُوْنِيْ وَكَادُوْا يَقْتُلُوْنَنِيْ ۖ فَلَا تُشْمِتْ بِيَ الْاَعْدَآءَ وَلَا
تَجْعَلْنِيْ مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَلِاَخِيْ وَاَدْخِلْنَا فِيْ رَحْمَتِكَ ۖ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ۝

अनुवाद-

(138) और ‘हमने’ बनी इस्राईल को समुद्र से पार उतार दिया, फिर वे ऐसे लोगों के पास पहुँचे जो अपनी कुछ मूर्तियों से लगे बैठे थे, कहने लगे ऐ मूसा! हमारे लिए भी कोई मअ़बूद (उपास्य) ठहरा दे; जैसे उनके मअ़बूद हैं, उन्होंने कहा ह़क़ीक़त में तुम बड़े नादान लोग हो। (139) यह लोग जिसमें लगे हुए हैं वह सब कुछ बरबाद होने वाला है, और जो काम यह करते हैं सब बेकार हैं”। (140) कहा, “क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई तुम्हारे लिए और मअ़बूद ढूँढूँ, हालाँकि उसी ने सारी दुनिया वालों पर तुम्हें फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) दी?” (141) और जब ‘हमने’ तुम्हें फ़िरऔन के लोगों से छुट्कारा दिया जो तुम्हें बुरी सज़ाएँ दिया करते थे, तुम्हारे बेटों को मार डालते और तुम्हारी बीवियों को ज़िन्दा रहने देते और यह तुम्हारे रब की ओर से बड़ी आज़माइश (परीक्षा) थी। (142) और ‘हमने’ मूसा से तीस रातों का वादा लिया, फिर ‘हमने’ दस और बढ़ाकर उसे पूरा किया; इस तरह उनके रब की ठहराई हुई अवधि (मीआ़द) चालीस रातों में पूरी हुई, और मूसा ने अपने भाई हारून से कहा, ‘‘मेरे (पहाड़ पर जाने के) बाद तुम मेरी क़ौम में मेरी जानशीनी

(प्रतिनिधित्व) करना, और सुधार करते रहना और फ़साद करने वालों के रास्ते पर न चलना।'' (143) और जब मूसा 'हमारे' मुक़र्रर किये हुए वक़्त पर पहुँचे और उनके 'रब' ने उनसे बातें कीं, तो वह कहने लगे ''ऐ रब! 'तू' मुझे देखने की ताक़त दे ताकि मैं तुझे देख सकूँ।'' फ़रमाया, ''तू मुझे हरगिज़ न देख सकेगा, हाँ, पहाड़ की ओर देखते रहो, अगर यह अपनी जगह क़ायम रहा तो तुम मुझ को देख सकोगे।'' जब उनका 'रब' पहाड़ पर ज़ाहिर हुआ, तो उसको चूर-चूर कर दिया और मूसा बेहोश होकर गिर पड़े, जब होश में आए तो कहने लगे, ''तेरी ज़ात पाक है! और मैं तेरे सामने तौबः करता हूँ और मैं सबसे पहले ईमान लाने वाला हूँ।'' (144) 'फ़रमाया' ''ऐ मूसा! मैंने दूसरे लोगों के मुक़ाबिले में आप को चुनकर अपने पैग़ाम और अपने कलाम (वाणी) से आप को मुम्ताज़ (श्रेष्ठ) किया, तो जो कुछ मैं आप को दूँ उसे ले लीजिए; और शुक्र अदा करने वालों में हो जाइए।'' (145) और 'हमने' तख़्तियों में उनके लिए हर क़िस्म की नसीह़त और हर चीज़ की तफ़्सील लिख दी, तो उनको मज़बूती से पकड़े रहिए और अपनी क़ौम से कह दीजिए कि इन बातों को अपनाएँ, जो बहुत बेहतर है; 'मैं' बहुत जल्द आप को नाफ़रमान लोगों का घर दिखाऊँगा। (146) जो लोग धरती पर नाह़क़ घमंड करते हैं, 'मैं' अपने निशानियों की ओर से उन्हें फेर दूँगा, अगर हर निशानी भी देख लें तब भी वे उस पर ईमान न लाएँगे; अगर वे सीधा रास्ता देख लें तब भी उसे अपना रास्ता नहीं बनाएँगे; और अगर वे भटके हुओं की राह देख लें तो उसे अपनी राह मान लेंगे, यह इसलिए कि उन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और उनसे ग़ाफ़िल रहे। (147) और जिन लोगों ने हमारी आयतों को और आख़िरत के मिलने को झूठा समझा, उनका तो सारा किया-धरा बरबाद हो जाएगा; जो कुछ ये करते हैं, क्या उसके सिवा वे किसी और (चीज़) का बदला पाएँगे? (148) और मूसा की क़ौम ने उनके बाद अपने ज़ेवर का एक बछड़ा बना लिया, जिसमें से बैल की सी आवाज़ निकलती थी, क्या उन्होंने देखा नहीं, कि वह न तो उनसे बातें करता है और न राह दिखाता है? उन्होंने उसे अपना (मअ़बूद बना) लिया और वे बड़े ज़ालिम थे। (149) और जब (चेतावनी से) वे शर्मिन्दा हुए और देखा कि ह़क़ीक़त में वे भटक गये हैं तो कहने लगे, ''अगर हमारे 'रब' ने हम पर रह़म न किया और हमको माफ़ न किया तो हम घाटे में पड़ जाएँगे।'' (150) और जब मूसा अपनी क़ौम में बड़े गुस्से और अफ़्सोस की ह़ालत में वापस हुए तो कहने लगे, ''तुमने मेरे बाद बहुत ही बुरा काम किया है, क्या तुम अपने रब के हुक्म से पहले ही जल्दी कर बैठे?'' फिर उन्होंने तख़्तियाँ डाल दीं और अपने भाई का सर पकड़ कर उसे अपनी ओर खींचने लगे; उन्होंने कहा, ''ऐ मेरी माँ के बेटे! लोगों ने मुझे कमज़ोर समझ लिया और क़रीब था कि मुझे क़त्ल कर देते, तो ऐसा काम न कीजिए कि दुश्मन मुझ पर हँसें और मुझे ज़ालिम लोगों में मत शामिल कीजिए"। (151) उन्होंने कहा, ''मेरे रब! मुझे और मेरे भाई को माफ़ कर दे और मुझे अपनी रह़मत में दाख़िल कर दे, 'तू' सबसे बढ़ कर रह़म करने वाला है"।

आयत 138 से 151 तक की व्याख्या

138-139 وَجٰوَزْنَا بِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتَوْا عَلٰى قَوْمٍ يَّعْكُفُوْنَ عَلٰٓى اَصْنَامٍ لَّهُمْ ۚ قَالُوْا يٰمُوْسَى اجْعَلْ لَّنَآ اِلٰهًا كَمَا لَهُمْ اٰلِهَةٌ ۭ قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ۝ اِنَّ هٰٓؤُلَاۗءِ مُتَبَّرٌ مَّا هُمْ فِيْهِ وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝

पिछली आयत के ख़त्म के साथ ही ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) फ़िरऔ़न और क़िब्तियों के वाक़िआ़त ख़त्म हो गये। अब इस आयते करीमा से ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) और बनी इस्राईल के वाक़िआ़त की शुरुआ़त हो रही है, जो फ़िरऔ़न की ग़ुलामी से आज़ाद होने और ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) के साथ समुद्र पार करने के बाद जज़ीरा नुमा-ए-सीना के जुनूबी (Southern) इलाक़े की तरफ़ रवाना हुए, रास्ते में उन का गुज़र ऐसी क़ौम के पास से हुआ जो बुतों की पूजा करती थी। कुछ मुफ़स्सिरीन का ख़याल है कि वह कन्आ़नी लोग थे, कुछ कहते हैं कि वह लोग गाय की मूर्तियों की पूजा किया करते थे। उन्हें देखकर बनी इस्राईल ने ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) से माँग की कि हमें भी एक ऐसी ही मूर्ति चाहिए जिस के सामने झुकें।

'मुफ़स्सिर बग़वी' लिखते हैं कि 'बनी इस्राईल' को अल्लाह तआ़ला की वह़दानियत (एकेश्वरवाद) में कोई शंका नहीं थी, बल्कि उन का मक़्सद यह था कि उन बुत परस्तों की तरह़ उन के लिए भी कोई ऐसी चीज़ होनी चाहिए जिस की इ़ज़्ज़त करके अल्लाह का क़ुर्ब (निकटता) ह़ासिल करें, अपनी जिहालत की वजह से समझ बैठे थे कि इस से उन के दीन व ईमान को कोई नुक़्सान नहीं पहुँचेगा।

इसीलिए ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने उन से कहा कि तुम लोग अल्लाह तआ़ला की शान व बड़ाई से बिल्कुल नावाक़िफ़ हो, अ़िबादत की तमाम क़िस्में सिर्फ़ अल्लाह के साथ ख़ास हैं, उन बुत परस्तों (मूर्ति पूजकों) का शिर्क उन के लिए ह़लाक करने वाली और उन का अ़मल ग़लत है।

इमाम अह़मद, तिर्मिज़ी और इब्ने जरीर वग़ैरहुम ने अबू वाक़िदुल् लैसी से रिवायत नक़्ल की है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) जब ग़ज़्व-ए-हुनैन के लिए निकले तो एक दरख़्त के पास से गुज़रे जिस पर मुश्रिकीन अपने हथियार लट्काया करते थे, इस लिए उसे "ज़ाते अन्वात" कहा करते थे, तो सह़ाबा में से कुछ लोगों ने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल! हमारे लिए भी एक ऐसा ही "ज़ाते अन्वात" बना दीजिए, तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "सुब्ह़ानल्लाह! यह तो वही क़ौम-ए-मूसा की बात है कि बुत परस्तों के मअ़बूदों की तरह़ हमारे लिए भी एक मअ़बूद बना दीजिए। उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है कि तुम लोग पिछली क़ौमों की राह पर ज़रूर चलोगे।"

यही वजह है कि 'ह़ज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि०)' ने मक़ामे हुदैबिया के उस दरख़्त को कट्वा दिया था जिस के नीचे रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने सह़ाबा-ए-किराम से बैअ़त ली थी, जिसे बैअ़त-ए-रिज़्वान कहा जाता है। इमाम अबू बक्र मालिकी लिखते हैं कि अगर तुम कोई ऐसा दरख़्त देखो जिस की लोग ज़ियारत और तअ़ज़ीम करते हों, उसे शिफ़ायाबी का सबब मानते हों और उस में कीलें ठोकते हों और कपड़ों के टुकड़े लट्काते हों तो उसे काट दो क्योंकि वह "ज़ाते अन्वात" हैं।

140-141 قَالَ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْكُمْ اِلٰهًا وَّهُوَ فَضَّلَكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَاِذْ اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ
يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ۚ يُقَتِّلُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ۗ وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ
مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ۝

हज़रत मूसा (अ़लै०) ने बनी इस्राईल से यह भी कहा कि तुम कैसी बहकी-बहकी बात करते हो, क्या मैं तुम्हारे लिए अल्लाह के अ़लावा कोई और मअ़बूद ला दूँ? और उस ने जो तुम्हारे ऊपर एह़सानात किये हैं और दुनिया वालों पर तुम्हें जो फ़ज़ीलत दी है उन सब को भुला दो? और क्या तुम भूल गये कि अभी कुछ ही दिनों पहले अल्लाह ने तुम्हें फ़िरऔ़नियों के अ़ज़ाब और उन की ग़ुलामी से निजात दिलाया है। अगर आयत नं० 141 में मुख़ातब (Addreses) रसूलुल्लाह (सल्ल०) के ज़माने के यहूदियों को मान लिया जाए तो मतलब यह होगा कि अल्लाह ने तुम्हारे बाप-दादा को फ़िरऔ़नियों से निजात दी थी।

इसी आयत से दलील लेते हुए उ़लम-ए-तफ़्सीर ने लिखा है कि औलाद और अहल व अ़याल की मुसीबत आदमी की ज़ाती (Personal) मुसीबत की तरह़ होती है।

142 وَوٰعَدْنَا مُوْسٰى ثَلٰثِيْنَ لَيْلَةً وَّاَتْمَمْنٰهَا بِعَشْرٍ فَتَمَّ مِيْقَاتُ رَبِّهٖٓ اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً ۚ وَقَالَ مُوْسٰى لِاَخِيْهِ
هٰرُوْنَ اخْلُفْنِيْ فِيْ قَوْمِيْ وَاَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيْلَ الْمُفْسِدِيْنَ ۝

बनी इस्राईल जब तूर-ए-सीना के क़रीब एक जगह आबाद हो गये, तो अल्लाह तआ़ला ने उन के लिए एक शरीअ़त नाज़िल करनी चाही ताकि वह उस के मुताबिक़ अपनी ज़िन्दग़ी अल्लाह की फ़रमाँबरदारी व बन्दग़ी में गुज़ार सकें, इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा (अ़लै०) को हुक्म दिया कि वह तूर की चोटी पर जाकर चालीस दिन तक अ़िबादत व बन्दग़ी में गुज़ारें ताकि वह्य इलाही (अल्लाह का पैग़ाम) की अ़ज़ीम ज़िम्मेदारी उठाने के क़ाबिल बन सकें।

मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि चालीस दिन की मुद्दत 'ज़िल् क़अ़दह' (इस्लामी कैलेन्डर का 11 वां महीना) के तीस दिन और ज़िल्हिज्ज (इस्लामी कैलेन्डर का 12 वां महीना) के दस दिन थे। इब्ने अ़ब्बास वग़ैरह से रिवायत है कि अल्लाह तआ़ला हज़रत मूसा (अ़लै०) से चालीस्वें दिन यानी दस्वीं ज़िल्हिज्ज को कलाम किया था। हज़रत मूसा (अ़लै०) ने कोहेतूर की ओर रवानगी से पहले बनी इस्राईल की तअ़लीम व तर्बियत के लिए अपने भाई हारून (अ़लै०) को अपना ख़लीफ़ा बना दिया और उन्हें उन के साथ हमदर्दी और सुधार व इख़्लास की नसीह़त की और फ़साद व गुनाह करने से मना किया।

मुफ़स्सिर लिखते हैं कि उन्होंने यह बात एह़तियात की वजह से कही थी, वरना 'हारून' (अ़लै०) ख़ुद अल्लाह के नबी थे, उन से फ़साद बरपा करने की उम्मीद कैसे हो सकती थी?

143 وَلَمَّا جَآءَ مُوْسٰى لِمِيْقَاتِنَا وَكَلَّمَهٗ رَبُّهٗ ۙ قَالَ رَبِّ اَرِنِيْٓ اَنْظُرْ اِلَيْكَ ۭ قَالَ لَنْ تَرٰىنِيْ وَلٰكِنِ
انْظُرْ اِلَى الْجَبَلِ فَاِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهٗ فَسَوْفَ تَرٰىنِيْ ۚ فَلَمَّا تَجَلّٰى رَبُّهٗ لِلْجَبَلِ جَعَلَهٗ دَكًّا وَّخَرَّ
مُوْسٰى صَعِقًا ۚ فَلَمَّآ اَفَاقَ قَالَ سُبْحٰنَكَ تُبْتُ اِلَيْكَ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝

जब हज़रत मूसा (अ़लै०) को अल्लाह के साथ कलाम करने का मौक़ा मिला तो शौक़ और मुह़ब्बत में अल्लाह तआ़ला के दीदार (देखने) का सवाल कर दिया, तो अल्लाह तआ़ला ने जवाब दिया कि इस दुनिया में आप मुझे नहीं देख सकते हैं। इस के बाद हज़रत मूसा (अ़लै०) को सन्तुष्ट करने के लिए कहा उस पहाड़ को देखिए, अगर वह मेरी तजल्ली (प्रकाश) को बर्दाश्त कर ले और अपनी जगह बाक़ी

रह जाए तो आप मुझे देख सकेंगे। चुनाँचे अल्लाह की तजल्ली पहाड़ पर ज़ाहिर हुई तो उस के टुकड़े-टुकड़े हो गये और अपनी जगह पर बाक़ी न रह सका और ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) इस मन्ज़र को देखकर बेहोश हो गये, फिर जब होश आया तो अल्लाह की पाकी बयान की और दोबारा ऐसा सवाल करने से तौबः किया।

'मोअ़तज़िला' ने इसी आयत से दलील लेते हुए कहा है कि अल्लाह तआ़ला को दुनिया व आख़िरत कहीं भी नहीं देखा जा सकता। लेकिन यह क़ौल बिल्कुल कमज़ोर है, इसलिए कि नबी करीम (सल्ल०) की सह़ी अह़ादीस से साबित है कि मोमिनीन अल्लाह तआ़ला को क़ियामत के दिन देखेंगे। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने सूरः क़ियामः में फ़रमाया है-

وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَاضِرَةٌ ۝ إِلَىٰ رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ۝

"उस दिन बहुत से चेहरे खिले हुए होंगे और अपने रब को देख रहे होंगे।"

144 قَالَ يَٰمُوسَىٰٓ إِنِّى ٱصْطَفَيْتُكَ عَلَى ٱلنَّاسِ بِرِسَٰلَٰتِى وَبِكَلَٰمِى فَخُذْ مَآ ءَاتَيْتُكَ وَكُن مِّنَ ٱلشَّٰكِرِينَ ۝

अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) के एहतिराम के तौर पर उन्हें ख़ुशख़बरी दी कि मैंने अपना रसूल बनाने और आप से बात करने के लिए आप को दूसरों के मुक़ाबिले में चुन लिया है, इसलिए इस नेअ़मत को क़ुबूल कीजिए और अल्लाह का शुक्र अदा कीजिए।

आयत में कलिमा **'अन्नास'** से मुराद सिर्फ़ ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) के ज़माने के लोग हैं, यानी हम ने मूसा को उन के ज़माने के लोगों पर फ़ज़ीलत दी थी। इसीलिए कि नबी करीम (सल्ल०) को अल्लाह तआ़ला ने तमाम बनी आदम का सरदार बनाया है, वह ख़ातिमुन्नबीय्यीन व मुरसलीन हैं, उन की शरीअ़त क़ियामत तक रहेगी, उन पर ईमान लाने वाले दूसरे अम्बिया के मानने वालों से ज़्यादा होंगे। आप (सल्ल०) के बाद ह़ज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह (अ़लै०) है और ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) हैं।

145 وَكَتَبْنَا لَهُۥ فِى ٱلْأَلْوَاحِ مِن كُلِّ شَىْءٍ مَّوْعِظَةً وَتَفْصِيلًا لِّكُلِّ شَىْءٍ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَأْمُرْ قَوْمَكَ يَأْخُذُوا۟
بِأَحْسَنِهَا سَأُو۟رِيكُمْ دَارَ ٱلْفَٰسِقِينَ ۝

यह तौरात की तख़्तियाँ थीं, जिन में 'बनी इस्राईल' की दीनी और दुनियवी रहनुमाई व भलाई की हर बात दर्ज थी। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने सूरः क़सस आयत नं० 43 में फ़रमायाः-

وَلَقَدْ ءَاتَيْنَا مُوسَى ٱلْكِتَٰبَ مِنۢ بَعْدِ مَآ أَهْلَكْنَا ٱلْقُرُونَ ٱلْأُولَىٰ بَصَآئِرَ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَرَحْمَةً "और हम ने पिछली क़ौमों को हलाक करने के बाद मूसा को किताब "तौरात" दी जो लोगों के लिए नसीह़तों का मजमूआ़ (Collection of idiology) हिदायत का ज़रिया और अल्लाह की रह़मत थी।"

एक दूसरा क़ौल यह है कि यह तख़्तियाँ ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) को तौरात से पहले दी गई थीं। अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) को हुक्म दिया कि इन तख़्तियों को इस इरादे के साथ लें कि इस में मौजूदा हुक्मों पर अ़मल करें और मना की गई बातों से बचें, रुख़्सत (छूट) के बजाय अ़ज़ीमत यानी नवाफ़िल से पहले फ़रायज़ का एहतिमाम करें और दूसरों की तक्लीफ़ों पर सब्र करें और माफ़ करें।

यानी जो लोग मेरे हुक्मों को ठुकराएँगे और मेरी बन्दगी से इन्कार करेंगे, तुम जल्द ही देख लोगे कि हलाकत व बर्बादी उन का अन्जाम होगा। बाज़ मुफ़स्सिरीन का ख़याल है कि دَارَ الْفٰسِقِيْنَ से मुराद शाम व बैतुल् मुक़द्दस की ज़मीन है। वहाँ के रहने वाले 'अ़माल्का' अल्लाह के नाफ़रमान हो गये थे तो अल्लाह तआ़ला ने बनी इस्राईल से वादा किया कि जल्द ही वह लोग इन इलाक़ों पर क़ाबिज़ हो जाएँगे, इस तरह़ ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) की वफ़ात के बाद 'यूशअ़ बिन नून' की क़यादत में बनी इस्राईल ने 'अ़माल्का' से जंग की और इन इलाक़ों पर क़ाबिज़ हो गये। उ़लम-ए-तफ़्सीर लिखते हैं कि आयत के इस ह़िस्से में बनी इस्राईल के लिए एक क़िस्म की तम्बीह है कि अगर वह तौरात में मौजूद अह़काम व शरीअ़त पर अ़मल नहीं करेंगे और उसे पीठ पीछे डाल देंगे तो वह भी फ़ासिक़ (ह़द से बढ़ने वाले) हो जाएँगे, दुनिया में ज़लील होंगे और आख़िरत में उन का ठिकाना जहन्नम होगा और तफ़्सीर के क़ायदे के मुताबिक़ यह हुक्म उन तमाम लोगों के बारे में आ़म है जो किसी भी दौर में अल्लाह के अह़काम व शरीअ़त से मुँह मोड़ेंगे।

146 سَاَصْرِفُ عَنْ اٰيٰتِيَ الَّذِيْنَ يَتَكَبَّرُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۭ وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ۚ وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ۚ وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الْغَيِّ يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ ۝

अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक घमण्ड बहुत बुरी चीज़ है, इसीलिए इस का अन्जाम भी बद्तरीन बताया गया है कि अल्लाह तआ़ला घमण्डी के दिल की रौशनी छीन लेता है, वह तमाम दलायल और निशानी देखने के बावजूद अल्लाह तआ़ला की बड़ाई और उस की अ़ज़्मत पर ईमान नहीं लाता, ह़क़ का रास्ता रोशनी की तरह़ वाज़ेह़ (स्पष्ट) होने के बावजूद उसे अपनाता नहीं और हर गुमराही की तरफ़ तेज़ी के साथ लपकता है।

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमायाः-

"वह शख़्स जन्नत में दाख़िल न होगा जिस के दिल में राई बराबर भी घमण्ड हो"। एक शख़्स ने कहा कि हर शख़्स इस बात को पसन्द करता है कि उसका कपड़ा अच्छा हो उस की जूती अच्छी हो (क्या यह घमण्ड है?)

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि अल्लाह ख़ूबसूरत है और ख़ूबसूरती को पसन्द करता है, घमण्ड तो यह है कि ह़क़ को ठुकरा दे और लोगों को ह़क़ीर (कमतर) जाने। **(मुस्लिम)**

147 وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَاۗءِ الْاٰخِرَةِ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ۭ هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝

घमण्डी इन्सान अल्लाह की आयतों को झुठलाता है, उन में ग़ौर व फ़िक्र नहीं करता और जो कोई अल्लाह की आयतों और क़ियामत के दिन को झुठलाएगा और उसी पर क़ायम रहेगा यहाँ तक कि उस की मौत आ जाएगी, तो क़ियामत के रोज़ उस के कुफ़्र व गुनाह की वजह से उस के सारे आ़माल बर्बाद हो जाएँगे।

148 وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوسَىٰ مِن بَعْدِهِ مِنْ حُلِيِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهُ خُوَارٌ ۚ أَلَمْ يَرَوْا أَنَّهُ لَا يُكَلِّمُهُمْ وَلَا يَهْدِيهِمْ
سَبِيلًا ۘ اتَّخَذُوهُ وَكَانُوا ظَالِمِينَ ۝

जब ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ चालीस दिन के लिए कोहेतूर पर चले गये तो शैतान ने बनी इस्राईल को शिर्क में मुब्तिला (Involve) कर दिया। मालूम होता है कि वह लोग मिस्र में ग़ुलामी के वक़्त ग़ैरुल्लाह की अ़िबादत और शिर्किया आ़माल के ऐसे आदी हो गये थे कि फ़िरऔ़न से निजात पाने के बाद जब भी कोई मौक़ा मिलता शिर्क की तरफ़ लपकने लगते थे, जब ही तो उन्होंने कोहे सीना की तरफ़ आते हुए रास्ते में एक क़ौम को बुत परस्ती करते देखा तो ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) से माँग की कि हमारे लिए कोई मअ़बूद (उपास्य) बना दो।

जब ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) कोहेतूर पर अल्लाह तआ़ला से बात करने गये तो यह लोग शैतान के बहकावे में आ गये और उस बछड़े की पूजा शुरु कर दी जो सामरी (बनी इस्राईल का एक शख़्स) ने क़िब्तियों के ज़ेवरात से उन के लिए बनाया था। यह ज़ेवरात बनी इस्राईल के पास वक़्ती तौर पर आ गये थे, लेकिन क़िब्तियों के हलाक होने के बाद उन के मालिक बन गये थे। चुनाँचे सामरी ने उन्हें धोका दिया और कहा कि यही हमारा वह मअ़बूद है जिस ने हमें फ़िरऔ़न से निजात दिलाई थी, सब ने उस की बात मान ली और ह़ज़रत हारून (अ़लै०) के समझाने के बावजूद उस बछड़े की अ़िबादत करने लगे।

अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) को इस बुत परस्ती की ख़बर कोहेतूर पर ही दे दी थी। जब मुद्दत पूरी होने के बाद वापस आये तो ग़ुस्से में अल्लाह की तरफ़ से दी गई तख़्तियों को ज़मीन पर डाल दिया और हारून (अ़लै०) के सर के बाल पकड़ कर अपनी तरफ़ खींचने लगे और पूछने लगे कि आप के रहते हुए ऐसा क्यों हुआ? तो उन्होंने अपनी मजबूरी बताई कि उन की तमाम कोशिशों के बावजूद बनी इस्राईल के लोग शिर्क पर जमे रहे, बल्कि उन की सरकशी ऐसी हो गई कि क़रीब था कि सब मिलकर मुझे क़त्ल कर देते। इस आयते करीमा से लगातार छः आयतों तक बनी इस्राईल की उस गुमराही को बयान किया गया है।

बनी इस्राईल की आँखों पर जिहालत और गुमराही की पट्टी बँध गई थी जब ही तो उन्हें यह सोचने की तौफ़ीक़ ही नहीं हुई कि यह बछड़ा न उन से बातें करता है और न किसी ख़ैर की तरफ़ उन की रहनुमाई करता है, फिर उस मालिक के बजाय वह उन का मअ़बूद कैसे हो जाएगा?

149 وَلَمَّا سُقِطَ فِي أَيْدِيهِمْ وَرَأَوْا أَنَّهُمْ قَدْ ضَلُّوا قَالُوا لَئِن لَّمْ يَرْحَمْنَا رَبُّنَا وَيَغْفِرْ لَنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝

ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) की कोशिश के बाद जब बनी इस्राईल को अपनी गुमराही का एहसास हो गया और अपनी ग़ल्ती पर शर्मिन्दा हुए तो उन्होंने अल्लाह तआ़ला से रह़म व मग़्फ़िरत की दुआ़ की।

150 وَلَمَّا رَجَعَ مُوسَىٰ إِلَىٰ قَوْمِهِ غَضْبَانَ أَسِفًا قَالَ بِئْسَمَا خَلَفْتُمُونِي مِن بَعْدِي ۖ أَعَجِلْتُمْ أَمْرَ رَبِّكُمْ ۖ وَأَلْقَى
الْأَلْوَاحَ وَأَخَذَ بِرَأْسِ أَخِيهِ يَجُرُّهُ إِلَيْهِ ۚ قَالَ ابْنَ أُمَّ إِنَّ الْقَوْمَ اسْتَضْعَفُونِي وَكَادُوا يَقْتُلُونَنِي فَلَا

تُشْمِتْ بِيَ الْاَعْدَآءَ وَلَا تَجْعَلْنِيْ مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ۝

उन्होंने कोहेतूर से वापसी के बाद देखा कि कुछ के अ़लावा सारे बनी इस्राईल बछड़े के इर्द-गिर्द जमा हैं और उस की अ़िबादत में लगे हुए हैं, तो अपने भाई हारून (अ़लै०) और दूसरे मोमिनों से कहा कि तुम लोगों ने मेरे बाद ठीक नहीं किया है, तुम लोग चालीस दिन भी सही रास्ते पर क़ायम नहीं रह सके और बुत की पूजा शुरु कर दी, अल्लाह और उस के हुक्मों को तोड़ दिया, इसी गुस्से में तख़्तियों को ज़मीन पर पटख दिया। कहते हैं कि वह तख़्तियाँ पत्थर की थीं, टूट गईं। उन्होंने समझा कि हारून (अ़लै०) से ग़ल्ती हुई है, इसीलिए उन के सर के बाल पकड़ कर खींचने लगे लेकिन जब उन्होंने अपना उ़ज़्र पेश किया कि मैंने तो पूरी कोशिश की कि उन्हें राहे रास्त पर रखूँ, लेकिन उन्होंने मेरी एक न सुनी और बछड़े की पूजा करने लगे।

151 قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَلِاَخِيْ وَاَدْخِلْنَا فِيْ رَحْمَتِكَ ۖ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ۝

जब उन्हें हारून (अ़लै०) के बरी होने का यक़ीन हो गया तो अल्लाह से अपनी और अपने भाई के मग़्फ़िरत की दुआ़ की।

आयत नं० 152 से 162 तक

إِنَّ الَّذِينَ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ سَيَنَالُهُمْ غَضَبٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَذِلَّةٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُفْتَرِينَ ۝ وَالَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّئَاتِ
ثُمَّ تَابُوا مِن بَعْدِهَا وَآمَنُوا إِنَّ رَبَّكَ مِن بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ وَلَمَّا سَكَتَ عَن مُّوسَى الْغَضَبُ أَخَذَ الْأَلْوَاحَ ۖ وَفِي نُسْخَتِهَا
هُدًى وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِينَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُونَ ۝ وَاخْتَارَ مُوسَىٰ قَوْمَهُ سَبْعِينَ رَجُلًا لِّمِيقَاتِنَا ۖ فَلَمَّا أَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ
رَبِّ لَوْ شِئْتَ أَهْلَكْتَهُم مِّن قَبْلُ وَإِيَّايَ ۖ أَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ السُّفَهَاءُ مِنَّا ۖ إِنْ هِيَ إِلَّا فِتْنَتُكَ تُضِلُّ بِهَا مَن تَشَاءُ وَتَهْدِي
مَن تَشَاءُ ۖ أَنتَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا ۖ وَأَنتَ خَيْرُ الْغَافِرِينَ ۝ وَاكْتُبْ لَنَا فِي هَٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ إِنَّا هُدْنَا
إِلَيْكَ ۚ قَالَ عَذَابِي أُصِيبُ بِهِ مَنْ أَشَاءُ ۖ وَرَحْمَتِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ۚ فَسَأَكْتُبُهَا لِلَّذِينَ يَتَّقُونَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ
وَالَّذِينَ هُم بِآيَاتِنَا يُؤْمِنُونَ ۝ الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الرَّسُولَ النَّبِيَّ الْأُمِّيَّ الَّذِي يَجِدُونَهُ مَكْتُوبًا عِندَهُمْ فِي التَّوْرَاةِ وَ
الْإِنجِيلِ يَأْمُرُهُم بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَاهُمْ عَنِ الْمُنكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبَاتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبَائِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ إِصْرَهُمْ وَالْأَغْلَالَ الَّتِي
كَانَتْ عَلَيْهِمْ ۚ فَالَّذِينَ آمَنُوا بِهِ وَعَزَّرُوهُ وَنَصَرُوهُ وَاتَّبَعُوا النُّورَ الَّذِي أُنزِلَ مَعَهُ ۙ أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝ قُلْ يَا أَيُّهَا
النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۖ فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ
النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ الَّذِي يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَكَلِمَاتِهِ وَاتَّبِعُوهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۝ وَمِن قَوْمِ مُوسَىٰ أُمَّةٌ يَهْدُونَ بِالْحَقِّ وَبِهِ يَعْدِلُونَ ۝
وَقَطَّعْنَاهُمُ اثْنَتَيْ عَشْرَةَ أَسْبَاطًا أُمَمًا ۚ وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ إِذِ اسْتَسْقَاهُ قَوْمُهُ أَنِ اضْرِب بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ۖ فَانبَجَسَتْ مِنْهُ
اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ۖ قَدْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ۚ وَظَلَّلْنَا عَلَيْهِمُ الْغَمَامَ وَأَنزَلْنَا عَلَيْهِمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوَىٰ ۖ كُلُوا مِن طَيِّبَاتِ
مَا رَزَقْنَاكُمْ ۚ وَمَا ظَلَمُونَا وَلَٰكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۝ وَإِذْ قِيلَ لَهُمُ اسْكُنُوا هَٰذِهِ الْقَرْيَةَ وَكُلُوا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ وَقُولُوا
حِطَّةٌ وَادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطِيئَاتِكُمْ ۚ سَنَزِيدُ الْمُحْسِنِينَ ۝ فَبَدَّلَ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ قَوْلًا غَيْرَ الَّذِي قِيلَ لَهُمْ فَأَرْسَلْنَا
عَلَيْهِمْ رِجْزًا مِّنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَظْلِمُونَ ۝

अनुवाद–

(152) जिन लोगों ने बछड़े को अपना मअ़बूद बनाया, वे अपने रब की ओर से ग़ज़ब और दुनियावी
ज़िन्दगी में ज़िल्लत में फंस कर रहेंगे; और झूठ गढ़ने वालों को 'हम' ऐसा ही बदला दिया करते हैं। (153)
और जिन्होंने बुरे काम किये, फिर उसके बाद तौबः कर ली और ईमान ले आए, तो इसके बाद तुम्हारा 'रब'
तो बड़ा ही माफ़ करने वाला, मेहरबान है। (154) और जब मूसा का गुस्सा दूर हुआ तो तख़्तियाँ उठा लीं,
और जो कुछ उसमें लिखा था वह उन लोगों के लिए, जो अपने रब से डरते हैं, हिदायत और रहमत थी।
(155) और मूसा ने अपनी क़ौम के सत्तर आदमियों को 'हमारे' मुकर्रर वक़्त पर चुना, फिर जब उन लोगों
को एक ज़लज़ले ने आ पकड़ा, तो उन्होंने कहा, ''मेरे रब! अगर 'तू' चाहता तो पहले ही उनको और मुझको
हलाक कर देता, जो कुछ हमारे कमअक़्लों ने किया है, क्या उसकी वजह से 'तू' हमें हलाक़ करेगा? यह
तो बस 'तेरी' ओर से एक आज़माइश (परीक्षा) है, इसके ज़रिये 'तू' जिसको चाहे भटका दे, और जिसे चाहे
राह दिखा दे, 'तू' ही हमारा वली (संरक्षक) है। इस लिए 'तू' हमें माफ़ कर दे और हम पर रहम कर, और
'तू' ही सबसे बढ़कर माफ़ करने वाला है; (156) और हमारे लिए इस दुनिया में भी भलाई लिख दे और

आख़िरत में भी, हम तेरी ओर रूजूअ़ हो चुके'' फ़रमाया, ''अपने अ़ज़ाब में 'मैं' तो उसी को डालता हूँ, जिसे चाहता हूँ, लेकिन मेरी रह़मत हर चीज़ को शामिल है, 'मैं' इसे उन लोगों के लिए लिख दूँगा जो परहेज़गारी करते और ज़कात देते और हमारी आयतों पर ईमान रखते हैं; (157) जो उस रसूल, उम्मी नबी, की पैरवी करते हैं, जिसे वे अपने यहाँ तौरात और इंजील में लिखा पाते हैं, और जो उन्हें भलाई का हुक्म देते और बुराई से रोकते हैं, उनके लिए अच्छी पाक चीज़ों को ह़लाल और बुरी नापाक चीज़ों को ह़राम ठहराते हैं और उन पर से उनके वह बोझ उतारते हैं जो अब तक उन पर लदे हुए थे, और वह उन बन्धनों को खोलता है जिनमें वे जकड़े हुए थे; तो जो लोग उस पर ईमान लाए, उसकी इ़ज़्ज़त की; और उसकी मदद की और जो नूर उनके साथ नाज़िल हुआ उसकी पैरवी की, वही कामियाब होने वाले हैं।'' (158) कह दीजिए, ''ऐ लोगो ! मैं तुम सब की ओर उस अल्लाह का रसूल हूँ, जो आसमानों और ज़मीन का मालिक है, उसके सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं, 'वही' ज़िन्दगी देता है 'वही' मौत देता है; तो अल्लाह और उसके रसूल, उम्मी नबी पर ईमान लाओ जो खुद अल्लाह पर और उसके कलिमे (वाणी) पर ईमान रखता है, उसकी पैरवी करो, ताकि तुम राह पा सको।'' (159) और मूसा की क़ौम में एक गिरोह ऐसे लोगों का भी हुआ जो ह़क़ के अनुसार राह दिखाता और उसी के अनुसार इन्साफ़ करता है। (160) और 'हमने' उन्हें, बारह ख़ानदानों (टुकड़ियों) में बाँट दिया, और 'हमने' मूसा को जबकि उनकी क़ौम ने उनसे पानी माँगा तो 'हमने' मूसा की ओर वह्य की, ''अपना अ़सा (लाठी) पत्थर पर मारो।'' तो उससे बारह चश्में (स्रोत) फूट निकले और सब लोगों ने अपना-अपना घाट मालूम कर लिया, और 'हमने' उन पर बादल की छाया की और उन पर 'मन्न' और 'सलूवा' उतारा, 'हमने' तुम्हें जो अच्छी चीज़ें दी हैं उन्हें खाओ।'' और उन्होंने हम पर कोई ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि ह़क़ीक़त में वह अपने ऊपर ही ज़ुल्म करते रहे। (161) और जब उनसे कहा गया, "इस बस्ती में रहो-बसो और इसमें जहाँ से चाहो खाओ और कहो 'हित्ततुन' (तौबः), और दरवाज़े में सज्दः (झुके) करते हुए दाख़िल हो; और 'हम' तुम्हारी ख़ताओं को माफ़ कर देंगे और 'हम' नेकी करने वालों को और भी ज़्यादा देंगे"। (162) लेकिन उनमें से जो ज़ालिम थे, उन्हें जो कुछ कहा गया था, उसको बदल डाला; तो 'हमने' भी उन पर आसमान से एक आफ़त भेजी, इसलिए कि वे ज़ुल्म कर रहे थे।

आयत 152 से 162 तक की व्याख्या

152 إِنَّ الَّذِينَ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ سَيَنَالُهُمْ غَضَبٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَذِلَّةٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُفْتَرِينَ ۝

अल्लाह तआ़ला ने यह जवाब दिया कि जिन लोगों ने बछड़े की अ़िबादत की, वह अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब से नहीं बच सकेंगे, चुनाँचे अल्लाह ने उन की तौबः यह मुक़र्रर की कि उन के मुवह्हिदीन (एकेश्वरवादी) बछड़े की पूजा करने वालों को क़त्ल करें, जैसा कि सूरः बक़रः में आ चुका है और दुनियावी ज़िन्दग़ी में ज़िल्लत व रुस्वाई कभी उन का साथ नहीं छोड़ेगी।

इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला पर इल्ज़ाम लगाने वाले को हमेशा ऐसा ही बदला मिला करता है। यही वजह है कि बिद्अ़त की ज़िल्लत व रुस्वाई बिद्अ़ती के साथ लगी रहती है, जैसा कि 'ह़सन बसरी' का क़ौल है और 'सुफ़्यान बिन उ़वैना' का क़ौल है कि हर साहिबे बिद्अ़त

ज़लील होता है।

153 وَالَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّئَاتِ ثُمَّ تَابُوا مِنْ بَعْدِهَا وَآمَنُوا ۚ إِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

अल्लाह तआ़ला हर तौबः करने वाले की तौबः क़ुबूल करता है, चाहे उस ने जैसा भी गुनाह किया हो। इसलिए कि वह बड़ा ही मग़्फ़िरत करने वाला मेहरबान है।

154 وَلَمَّا سَكَتَ عَنْ مُوسَى الْغَضَبُ أَخَذَ الْأَلْوَاحَ ۖ وَفِي نُسْخَتِهَا هُدًى وَرَحْمَةٌ لِلَّذِينَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُونَ ۝

ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) का ग़ुस्सा जब ख़त्म हुआ और उन्हें ख़याल आया कि ग़ज़ब की ह़ालत में उन्होंने अल्लाह की तरफ़ से दी गई तख़्तियाँ ज़मीन पर पटख दीं थीं, तो उन्हें फ़ौरन उठा लिया क्योंकि वह अल्लाह से डरने वालों के लिए हिदायत व रह़मत का ज़रिया थीं।

155 وَاخْتَارَ مُوسَى قَوْمَهُ سَبْعِينَ رَجُلًا لِمِيقَاتِنَا ۖ فَلَمَّا أَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ رَبِّ لَوْ شِئْتَ
أَهْلَكْتَهُمْ مِنْ قَبْلُ وَإِيَّايَ ۖ أَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ السُّفَهَاءُ مِنَّا ۖ إِنْ هِيَ إِلَّا فِتْنَتُكَ تُضِلُّ بِهَا مَنْ
تَشَاءُ وَتَهْدِي مَنْ تَشَاءُ ۖ أَنْتَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا ۖ وَأَنْتَ خَيْرُ الْغَافِرِينَ ۝

अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) को हुक्म दिया कि बनी इस्राईल के सत्तर मुन्तख़ब आदमियों को लेकर कोहेतूर पर जाएँ और बनी इस्राईल ने जो बछड़े की पूजा की है उस की माफ़ी के लिए अल्लाह के सामने तौबः व इस्तिग़फ़ार करें। जब वह लोग मुक़र्रर जगह पर पहुँचे तो उन सब पर अचानक सख़्त कपकपी तारी हो गई और सब के सब हलाक हो गये तो ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने रो-रो कर दुआ़ की, ऐ अल्लाह! अगर तू चाहता तो पहले भी हलाक कर सकता था। हमारे नादानों ने जो कुछ किया उस की वजह से हमें हलाक न कर, यह तो तेरी ही तरफ़ से एक आज़माइश थी जिस में तूने उन्हें डाल दिया था। ह़क़ीक़त में गुमराही और हिदायत तो तेरे ही अख़्तियार में है। इस दुआ़ के बाद अल्लाह तआ़ला ने उन्हें दोबारा ज़िन्दा किया।

156 وَاكْتُبْ لَنَا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ إِنَّا هُدْنَا إِلَيْكَ ۚ قَالَ عَذَابِي أُصِيبُ بِهِ مَنْ أَشَاءُ ۖ
وَرَحْمَتِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ۚ فَسَأَكْتُبُهَا لِلَّذِينَ يَتَّقُونَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَالَّذِينَ هُمْ بِآيَاتِنَا يُؤْمِنُونَ ۝

पहले ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने बनी इस्राईल के गुनाहों की माफ़ी माँगी और उस के बाद दुनिया व आख़िरत की हर भलाई माँगी। अल्लाह तआ़ला ने उन की दुआ़ का यह जवाब दिया कि मैं गुनाहगारों में से जिसे चाहता हूँ अ़ज़ाब देता हूँ और उस की ह़िक्मत को मेरे अ़लावा कोई नहीं जानता और इस की बुनियाद अ़द्ल व इन्साफ़ पर होती है और जिसे चाहता हूँ माफ़ कर देता हूँ, लेकिन मेरी रह़मत तो हर नेक व बद् और तमाम मख़्लूक़ात के लिए आ़म है। यानी अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक अस्ल चीज़ अ़ज़ाब व ग़ज़ब नहीं, बल्कि रह़मत है। इसी ह़क़ीक़त को बयान करने के लिए अल्लाह तआ़ला ने अ़र्श के उठाने वाले फ़रिश्तों की ज़बानी फ़रमाया, "ऐ हमारे रब! तेरी रह़मत हर चीज़ को शामिल और तेरा इ़ल्म हर चीज़ को घेरे हुए है।"

अह़मद, मुस्लिम और अबू दाऊद में रिवायत है कि अल्लाह तआ़ला की रह़मत के सौ ह़िस्से हैं, उस में से सिर्फ़ एक ह़िस्सा रह़मत के ज़रिये उस की तमाम मख़्लूक़ आपस में एक दूसरे पर रह़म करती है और वह़शी जानवर अपने बच्चों की देखभाल करते हैं और निन्यान्वे ह़िस्सा रह़मत क़ियामत के दिन के लिए छोड़ दिये गये हैं। **(मुस्लिम, अह़मद)**

ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने अपनी क़ौम के लिए दुनिया व आख़िरत की भलाई तलब की तो अल्लाह तआ़ला ने उसे चन्द शरायत के साथ कर दिया।

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जब अल्लाह तआ़ला ने तख़्लीक़ (ज़मीन व आसमान) मुकम्मल कर ली तो उस ने अपनी किताब में लिखा जो कि उसके पास अ़र्श पर है और मेरी रह़मत मेरे ग़ज़ब पर ग़ालिब है"। **(बुख़ारी)**

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) कहते हैं कि मैंने आप (सल्ल०) को यह कहते हुए सुना, "अल्लाह तआ़ला ने रह़मत के सौ ह़िस्से किये उस में से निन्यान्वें ह़िस्से अपने पास रखे और एक ह़िस्सा दुनिया में उतार दिया तो उसी एक ह़िस्सा से मख़्लूक़ एक दूसरे पर रह़म करती है"। **(बुख़ारी)**

दुनिया में अल्लाह तआ़ला की रह़मत हर चीज़ के लिए आ़म है, इसी रह़मत की वजह से दुनिया में हर जानदार को रोज़ी मिलती है। दुनियावी नेअ़मतों में हर नेक व बद् शरीक हैं, लेकिन आख़िरत की नेअ़मत जिसे ख़ास रह़मत कहा जा सकता है, वह सिर्फ़ अल्लाह के उन बन्दों के लिए ख़ास होगी जो इस दुनियावी ज़िन्दगी में गुनाहों से बचेंगे, ज़कात देंगे और जो अल्लाह की आयतों पर ईमान लाएँगे और उन पर अ़मल करेंगे। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने इसी सूरत की आयत नं० 32 में फ़रमायाः- قُلْ هِيَ لِلَّذِينَ آمَنُوا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ कि दुनिया की ज़ीनत और ह़लाल रोज़ी मोमिनों को दुनिया में मिलेगी और आख़िरत में उन्हीं के लिए ख़ास होगी।

157 الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الرَّسُولَ النَّبِيَّ الْأُمِّيَّ الَّذِي يَجِدُونَهُ مَكْتُوبًا عِندَهُمْ فِي التَّوْرَاةِ وَالْإِنجِيلِ
يَأْمُرُهُم بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَاهُمْ عَنِ الْمُنكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبَاتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبَائِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ إِصْرَهُمْ
وَالْأَغْلَالَ الَّتِي كَانَتْ عَلَيْهِمْ ۚ فَالَّذِينَ آمَنُوا بِهِ وَعَزَّرُوهُ وَنَصَرُوهُ وَاتَّبَعُوا النُّورَ الَّذِي أُنزِلَ مَعَهُ ۙ
أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ

इस आयत में उन बनी इस्राईल को मुख़ातब बनाया गया है जो नबी करीम (सल्ल०) के ज़माने में थे कि क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला की रह़मते ख़ास्सा को पाने के लिए जो शरायत ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) के ज़माने में थीं वही अब भी हैं, लेकिन इन तमाम शरायत में बुनियादी शर्त यह है कि वह नबी करीम (सल्ल०) पर ईमान ले आएँ और उन की पैरवी करें और यह बनी इस्राईल उन्हें ख़ूब अच्छी तरह़ पहचानते हैं, इसलिए कि उन के नाम और उन की सिफ़ात तौरात व इन्जील में बयान कर दी गई हैं।

नबी करीम (सल्ल०) की सिफ़ात तमाम आसमानी किताबों में बयान की गई थी और तमाम अम्बिया-ए-किराम ने अपनी उम्मतों को आप (सल्ल०) की बेअ़सत की ख़ुशख़बरी दी थी और उन्हें आप

(सल्ल०) की पैरवी का हुक्म दिया था। तौरात व इन्जील में ख़ासतौर पर वह सिफ़ात बाक़ी रहीं और उन के आ़लिमों को उन का ख़ूब इल्म था, उन के उ़लमा ने इस बात की तस्दीक़ की कि नबी करीम (सल्ल०) की जो सिफ़ात क़ुर्आन करीम में बयान की गई हैं, वही सिफ़ात तौरात में पाई जाती थीं, जैसा कि तफ़्सीर 'तबूरी' और 'मुस्नद अह़मद' में 'अ़ता बिन यसार' की रिवायत से मालूम होता है। यहाँ नबी करीम (सल्ल०) की एक सिफ़त "उम्मी" बयान की गई है। इसलिए कि आप लिखना पढ़ना नहीं जानते थे और यह आप के लिए एक मोअ़जिज़ह (चमत्कार) और कमाले फ़ख़्र बात थी कि लिखना पढ़ना न जानने के बावजूद क़ुर्आन को अल्लाह की तरफ़ से बज़रिये वह्य ह़ासिल किया और आप (सल्ल०) का सीना उ़लूम (knowledge) व हिक्मत के ख़ज़ानों से भरा होता था।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) की पेशीनगोइयाँ-

पिछली आसमानी किताबों में नबी करीम (सल्ल०) की यह सिफ़त बयान की गई थी कि "आप (सल्ल०) भलाई का हुक्म देंगे, बुराई से रोकेंगे, अच्छी और पाकीज़ा चीज़ों को लोगों के लिए ह़लाल करेंगे जो पहले उन पर ह़राम थीं, जैसे चर्बी और वह जानवर जिन्हें मुश्रिकीन ने अपने ऊपर ह़राम कर रखा था, ख़रीद व फ़रोख़्त और तिजारत की वह तमाम क़िस्में जो ह़रामख़ोरी से ख़ाली हों और ग़न्दगी और नुक़्सानदेह चीज़ों को उन के ऊपर ह़राम करेंगे। जैसे- सुअर का गोश्त, सूद और वह तमाम मुह़र्रमात (ह़राम की हुई) जिन्हें अल्लाह ने ह़राम बनाया है। आप (सल्ल०) की सिफ़त (Quality) यह भी होगी कि उन का दीन आसान होगा, जैसा कि नबी करीम (सल्ल०) ने फ़रमाया, कि "मुझे दअ़वते तौह़ीद (एकेश्वरवाद) और आसान दीन देकर भेजा गया है।" **(मुस्नद अह़मद)**

जब आप (सल्ल०) ने 'ह़ज़रत मआ़ज़' और 'ह़ज़रत अबू मूसा अश्अ़री' रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा को दअ़वते इस्लाम के लिए यमन भेजा तो फ़रमाया कि तुम दोनों लोगों को ख़ुशख़बरी देना, दीन से नफ़रत न दिलाना, उन के लिए आसानी पैदा करना, उन्हें सख़्ती और परेशानी में न डालना। **(बुख़ारी)**

इस तरह़ इस्लाम ने बहुत से मुश्किल और तक्लीफ़देह अह़काम को मन्सूख़ (ख़त्म) कर दिया जो ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) के दीन में थे। जैसे- जान के बदले जान लेना ही सिर्फ़ था दियत या माफ़ी नहीं थी। सनीचर (शनिवार) के दिन काम करना ह़राम था, हर सातवें साल खेती ह़राम थी, अगर कोई अपने वालिदैन को मारता या गाली देता तो उसे क़त्ल कर दिया जाता वग़ैरह।

इसी तरह़ हिन्दू धर्म की मज़हबी किताबों में भी ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का ज़िक्र समझ में आता है जिसके लिए लेखक की दूसरी किताब **"अन्तिम सन्देष्टा कहाँ, कब और कौन"** देखी जा सकती है।

अल्लाह तआ़ला का यह रह़मत भरा वादा है कि जो अहले-किताब रसूलुल्लाह (सल्ल०) पर ईमान लाएँगे, उन की तअ़ज़ीम (सम्मान) करेंगे, उन की मदद करेंगे और क़ुर्आन करीम की पैरवी करेंगे, अल्लाह तआ़ला उन्हें दुनिया व आख़िरत में जगह देगा। यहाँ क़ुर्आन को **'नूर'** इसलिए कहा गया कि इस की रौशनी अल्लाह का मोअ़जिज़ह होने की दलील है और इसलिए भी कि वह रहती दुनिया तक इन्सान के लिए

रौशनी का मनार (चिन्ह) रहेगा और ज़िन्दगी के हर दौर और हर हिस्से में उस की रहनुमाई करता रहेगा।

158 قُلْ يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ إِنِّى رَسُولُ ٱللَّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا ٱلَّذِى لَهُۥ مُلْكُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۖ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ يُحْىِۦ
وَيُمِيتُ ۖ فَـَٔامِنُوا۟ بِٱللَّهِ وَرَسُولِهِ ٱلنَّبِىِّ ٱلْأُمِّىِّ ٱلَّذِى يُؤْمِنُ بِٱللَّهِ وَكَلِمَٰتِهِۦ وَٱتَّبِعُوهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۝

इन आयतों में हज़रत मूसा (अ़लै०) के फ़ज़ायल बड़ी तफ़्सील के साथ बयान किये गये हैं, इसलिए किसी के ज़ेहन में यह बात आ सकती है कि नबियों व रसूलों में सब से बड़ा मक़ाम उन्हीं का है। इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) का ज़िक्र कर दिया ताकि मालूम हो सके कि आप (सल्ल०) नबियों में सब से अफ़्ज़ल हैं और अब रहती दुनिया तक के लिए तमाम (इन्सानों और जिन्नातों) के आप ही हादी (हिदायत का रास्ता बताने वाले) व रहबर रहेंगे और यहूद व नसारा को ख़बर दी गई है कि अब तमाम पिछले दीन मन्सूख़ (ख़त्म) हो गये और जो कोई भी आख़िरत में जहन्नम की आग से निजात चाहता है उसे इस्लाम कुबूल करना होगा और नबी करीम (सल्ल०) की रिसालत पर ईमान लाना होगा।

'इमाम अह़मद' ने इब्ने अ़ब्बास (रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा) से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "मुझे पाँच चीज़ें दी गई हैं जो मुझ से पहले किसी नबी को नहीं दी गईं और मैं यह बात फ़ख़्र के तौर पर नहीं कह रहा हूँ। मुझे सुर्ख़ और स्याह (काले) तमाम इन्सानों के लिए नबी बनाकर भेजा गया है।" **(अह़मद)**

'मुस्लिम' ने हज़रत अबू मूसा अश्अ़री (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "उस ज़ात की क़सम जिस के हाथ में मेरी जान है, उम्मत के जिस किसी को भी मेरी ख़बर होगी, चाहे वह यहूदी हो या नसरानी और मुझ पर ईमान नहीं लाएगा तो वह जहन्नम में दाख़िल होगा।" **(मुस्लिम)**

यहूद व नसारा समेत तमाम इन्सानों को अल्लाह तआ़ला ने हुक्म दिया है कि वह नबी उम्मी पर ईमान लाएँ और उन की इत्तिबअ़ (पैरवी) करें। जैसा कि उन की बशारत पिछली आसमानी किताबों में दी जा चुकी है, यहाँ भी नबी करीम (सल्ल०) की सिफ़त "उम्मी" ख़ासतौर से इसलिए लाई गई है ताकि अहले किताब की तवज्जोह इस तरफ़ कराई जाए कि यह वही नबी हैं जिन की सिफ़त "उम्मी" तौरात में ज़िक्र है।

159 وَمِن قَوْمِ مُوسَىٰٓ أُمَّةٌ يَهْدُونَ بِٱلْحَقِّ وَبِهِۦ يَعْدِلُونَ ۝

जब 'सामरी' और उस के मानने वालों का ज़िक्र आया तो शुब्हा हो सकता था कि क्या उन में कोई भी मोमिन और अच्छा आदमी नहीं था, इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि क्या उन में ऐसे लोग भी थे जो ख़ुद ह़क़ पर क़ायम थे और दूसरों को भी उस की तरफ़ बुलाते थे और लोगों के दर्मियान अ़द्ल व इन्साफ़ के साथ फ़ैसला करते थे।

160 وَقَطَّعْنَٰهُمُ ٱثْنَتَىْ عَشْرَةَ أَسْبَاطًا أُمَمًا ۚ وَأَوْحَيْنَآ إِلَىٰ مُوسَىٰٓ إِذِ ٱسْتَسْقَىٰهُ قَوْمُهُۥٓ أَنِ ٱضْرِب بِّعَصَاكَ ٱلْحَجَرَ ۖ
فَٱنۢبَجَسَتْ مِنْهُ ٱثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ۖ قَدْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ۚ وَظَلَّلْنَا عَلَيْهِمُ ٱلْغَمَٰمَ وَأَنزَلْنَا
عَلَيْهِمُ ٱلْمَنَّ وَٱلسَّلْوَىٰ ۖ كُلُوا۟ مِن طَيِّبَٰتِ مَا رَزَقْنَٰكُمْ ۚ وَمَا ظَلَمُونَا وَلَٰكِن كَانُوٓا۟ أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۝

हज़रत याक़ूब (अ़लै०) के बारह बेटों की औलाद और उन की औलाद की औलाद में अल्लाह तआ़ला ने बड़ी बरकत दी, उन की तअ़दाद बढ़ती गई और उन के मानने वाले भी एक दूसरे से मुख़्तलिफ़ (अलग) हो गये, इसीलिए ज़रूरत महसूस हुई कि उन्हें मुख़्तलिफ़ जमाअ़तों में तक़्सीम (बांट) कर दिया जाए और हर जमाअ़त का एक निगराँ (देख-रेख करने वाला) मुक़र्रर कर दिया जाए ताकि हर जमाअ़त अपने अलग-अलग तरीक़े के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारे और अल्लाह तआ़ला के हुक्मों की पाबन्दी करे। बनी इस्राईल पर अल्लाह तआ़ला का यह एक एहसान था।

यहाँ से आख़िरी आयत तक अल्लाह तआ़ला ने बनी इस्राईल पर अपने एहसानात का ज़िक्र किया है। पहला एहसान यह है कि बारहों क़बीलों के लिए पानी का इन्तिज़ाम किया। दूसरा एहसान यह कि धूप से बचने के लिए उन पर बादल को लाकर ठहरा दिया और तीसरा एहसान यह किया कि उन के खाने के लिए आसमान से "मन्न व सल्वा" भेज दिया, यह सब बातें तफ़्सील के साथ सूरः बक़रः आयत नं० (57) से लेकर आयत नं० (60) तक बयान की जा चुकी हैं।

161-162 وَإِذْ قِيلَ لَهُمُ اسْكُنُوا هَٰذِهِ الْقَرْيَةَ وَكُلُوا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ وَقُولُوا حِطَّةٌ وَادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا نَّغْفِرْ
لَكُمْ خَطِيئَاتِكُمْ ۚ سَنَزِيدُ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٦١﴾ فَبَدَّلَ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ قَوْلًا غَيْرَ الَّذِي قِيلَ لَهُمْ فَأَرْسَلْنَا
عَلَيْهِمْ رِجْزًا مِّنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَظْلِمُونَ ﴿١٦٢﴾

'बनी इस्राईल' की अख़्लाक़ी हालत इतनी गिर चुकी थी कि उन्होंने अल्लाह तआ़ला के इन तमाम एहसानात को फ़रामोश कर दिया (भुला दिया) सरकशी और नाफ़रमानी पर उतर आये, अल्लाह के अहकाम का मज़ाक़ उड़ाना उन की फ़ितरत बन गई, जब भी अल्लाह उन्हें कोई हुक्म देता तो वह उस की नाफ़रमानी करते और उस के साथ हिक़ारत का मामला करते। इन दोनों आयतों में अल्लाह तआ़ला ने उन की एक दूसरी अख़्लाक़ी और दीनी गिरावट को बयान किया है कि अल्लाह तआ़ला ने उन्हें हुक्म दिया कि वह बैतुल् मुक़द्दस में **'हित्तह'** कहते हुए दाख़िल हों। यानी "ऐ अल्लाह! हमारे गुनाह माफ़ कर दे" लेकिन उन्होंने अल्लाह के हुक्म की मुख़ालिफ़त की और अपने सुरीनो (पुट्ठों) की तरफ़ से दाख़िल हुए और **'हित्तह'** के बजाय **'हिन्तह'** कहा जिस की वजह से अल्लाह तआ़ला ने उन्हें ताऊ़न (प्लेग) (महामारी) की बीमारी में मुब्तिला कर दिया और हज़ारों की तअ़दाद में हलाक हो गये। यह सूरः बक़रः आयत नं० (58/59) में भी बयान हो चुका है।

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "बनी इस्राईल को हुक्म दिया गया था कि शहर के दरवाज़े में झुक कर दाख़िल हों और ज़बान से हित्तह कहें"। (यानी गुनाहों की बख़्शिश माँगें) लेकिन वह अपनी सुरीनों के बल घसीटते हुए दाख़िल हुए और हित्तह के बजाय हिब्बता फ़ी शोअ़रह (दाना बाली के अन्दर) कहने लगे। **(बुख़ारी)**

आयत नं० 163 से 174 तक

وَسْـَٔلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِىْ كَانَتْ حَاضِرَةَ الْبَحْرِۘ اِذْ يَعْدُوْنَ فِى السَّبْتِ اِذْ تَاْتِيْهِمْ حِيْتَانُهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا وَّ يَوْمَ
لَا يَسْبِتُوْنَ ۙ لَا تَاْتِيْهِمْ ۛ كَذٰلِكَ ۛ نَبْلُوْهُمْ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ۝ وَاِذْ قَالَتْ اُمَّةٌ مِّنْهُمْ لِمَ تَعِظُوْنَ قَوْمَا ۙ اللّٰهُ مُهْلِكُهُمْ
اَوْ مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ قَالُوْا مَعْذِرَةً اِلٰى رَبِّكُمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ۝ فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖۤ اَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ يَنْهَوْنَ عَنِ
السُّوْٓءِ وَاَخَذْنَا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا بِعَذَابٍۢ بَـِٔيْسٍۢ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ۝ فَلَمَّا عَتَوْا عَنْ مَّا نُهُوْا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُوْنُوْا قِرَدَةً
خٰسِـِٕيْنَ ۝ وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ يَّسُوْمُهُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ؕ اِنَّ رَبَّكَ لَسَرِيْعُ الْعِقَابِ ۖۚ وَاِنَّهٗ
لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَقَطَّعْنٰهُمْ فِى الْاَرْضِ اُمَمًا ۚ مِنْهُمُ الصّٰلِحُوْنَ وَمِنْهُمْ دُوْنَ ذٰلِكَ ۫ وَبَلَوْنٰهُمْ بِالْحَسَنٰتِ وَالسَّيِّاٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝
فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ وَّرِثُوا الْكِتٰبَ يَاْخُذُوْنَ عَرَضَ هٰذَا الْاَدْنٰى وَيَقُوْلُوْنَ سَيُغْفَرُ لَنَا ۚ وَاِنْ يَّاْتِهِمْ عَرَضٌ مِّثْلُهٗ
يَاْخُذُوْهُ ؕ اَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ مِّيْثَاقُ الْكِتٰبِ اَنْ لَّا يَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ وَدَرَسُوْا مَا فِيْهِ ؕ وَالدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ
يَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ يُمَسِّكُوْنَ بِالْكِتٰبِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ؕ اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُصْلِحِيْنَ ۝ وَاِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ
فَوْقَهُمْ كَاَنَّهٗ ظُلَّةٌ وَّظَنُّوْۤا اَنَّهٗ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ۚ خُذُوْا مَاۤ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوْا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۝ وَاِذْ اَخَذَ رَبُّكَ مِنْۢ
بَنِىْۤ اٰدَمَ مِنْ ظُهُوْرِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَاَشْهَدَهُمْ عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ ۚ اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ؕ قَالُوْا بَلٰى ۛۚ شَهِدْنَا ۛۚ اَنْ تَقُوْلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اِنَّا كُنَّا عَنْ
هٰذَا غٰفِلِيْنَ ۝ اَوْ تَقُوْلُوْۤا اِنَّمَاۤ اَشْرَكَ اٰبَآؤُنَا مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِّنْۢ بَعْدِهِمْ ۚ اَفَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ الْمُبْطِلُوْنَ ۝
وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝

अनुवाद-

(163) और आप उनसे उस बस्ती के बारे में पूछिए जो समुद्र के किनारे थी, जबकि वे लोग 'सब्त' (शनिवार) के मामले में ह़द से आगे बढ़ गये थे, जबकि उनके 'सब्त' के दिन उनकी मछलियां खुले तौर पर पानी के ऊपर आ जाती थीं, और जो दिन उनके 'सब्त' का न होता तो वे उनके पास न आतीं इस तरह 'हमने' उनकी आज़माइश की, इसलिए कि वे नाफ़रमानी कर रहे थे। (164) और जब उनके एक गिरोह ने कहा, ''तुम ऐसे लोगों को क्यों नसीह़त किये जा रहे हो, जिन्हें अल्लाह तआ़ला हलाक करने वाला या उन्हें सख्त अज़ाब में गिरफ़्तार करने वाला है?'' वे बोले, ''अपने रब के सामने उज्र (निरापराध) साबित कर सकें और ताकि वे परहेज़गार बन जाएँ।'' (165) फिर जब वे उसे भूल गये, जो नसीह़त उनको की गयी थी, तो 'हमने' उन लोगों को बचा लिया, जो लोग बुराई से रोकते थे; और ज़ालिमों को उनके नाफ़रमानी की वजह से सख़्त अ़ज़ाब में पकड़ लिया। (166) फिर जब वे सरकशी के साथ वही सब करते रहे, जिससे उनको रोका गया था, तो 'हमने' उनसे कहा कि ''ज़लील बन्दर बन जाओ।'' (167) और जब आप के रब ने ख़बर कर दी थी कि वह क़ियामत के दिन तक उनके ख़िलाफ़ ऐसे लोगों को उठाता रहेगा, जो उन्हें बुरा अ़ज़ाब देंगे; बेशक, आप का 'रब' जल्द सज़ा देने वाला है, और 'वह' बड़ा माफ़ करने वाला रह़म वाला है। (168) और 'हमने' उन्हें टुकड़े-टुकड़े करके अनेक गिरोहों में बिखेर दिया, कुछ उनमें से नेक हैं, और कुछ उनमें इससे अलग हैं, और 'हम' उन्हें अच्छी और बुरी ह़ालत में डालकर आज़माते रहे, ताकि वे बाज़

आ जाएँ। (169) फिर उनके बाद ऐसे नालायक़ (अयोग्य) हुए जो किताब के वारिस होकर इसी दुनिया का (लोगों से) सामान समेटते हैं और कहते हैं, ''हमें तो ज़रूर माफ़ कर दिया जाएगा और अगर इस जैसा और सामान भी उनके पास आ जाए तो वे उसे भी ले लेंगे, क्या उनसे किताब में इसका अ़हद नहीं लिया जा चुका है? कि अल्लाह पर कोई बात न गढ़ें सिवाय ह़क़ के, और जो इसमें है उसे वे खुद पढ़ भी चुके हैं, और आख़िरत का घर तो उन लोगों के लिए बेहतर है, "जो डर रखते हैं'' तो क्या तुम अक़्ल से काम नहीं लेते? (170) और जो लोग किताब को मज़बूती से पकड़ते हैं और जिन्होंने नमाज़ क़ायम कर रखी है, 'हम' भले लोगों का अज्र (बदला) बरबाद नहीं करते। (171) और जब हमने पहाड़ को हिलाया, जो उनके ऊपर था मानों वह कोई सायबान (छत्र) हो और वे समझे कि वह उन पर गिरना ही चाहता है-तो जो 'हमने' तुम्हें दिया है ''उसे मज़बूती से पकड़े रहो, और जो कुछ इसमें है उसे याद रखो, ताकि बच सको।'' (172) जब तुम्हारे 'रब' ने आदम की औलाद से (यानी उनकी पीठों से) उनकी औलाद निकाली तो उनसे खुद उनके मुक़ाबिले में इक़रार करा लिया, ''क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ?'' वे कहने लगे, ''क्यों नहीं!! हम गवाह हैं।'' कि क़ियामत के दिन कहीं यह न कहने लगें कि ''हमें तो इसकी ख़बर ही न थी'' (173) या यह कहो कि ''(अल्लाह के साथ) साझी तो पहले हमारे बाप-दादा ने किया, हम तो उनके बाद उनकी औलाद में से हुए हैं, 'तो' क्या तू हमें उस पर हलाक करेगा जो कुछ अहले बातिल (ग़लत लोगों) ने किया है?'' (174) और इसी तरह 'हम' खोल-खोल कर आयतें बयान करतें है, ताकि वे पलट आएँ।

आयत नं० 163 से 174 तक की व्याख्या

163 وَسْـَٔلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِىْ كَانَتْ حَاضِرَةَ الْبَحْرِ ۘ اِذْ يَعْدُوْنَ فِى السَّبْتِ اِذْ تَاْتِيْهِمْ حِيْتَانُهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا وَّ يَوْمَ لَا يَسْبِتُوْنَ ۙ لَا تَاْتِيْهِمْ ۛ كَذٰلِكَ ۛ نَبْلُوْهُمْ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿۱۶۳﴾

यहाँ उन की एक तीसरी नाफ़रमानी और अख़्लाक़ी व दीनी पस्ती को बयान किया गया है, जिस का ज़िक्र सूरः बक़रः की आयत नं० (65) में आ चुका है कि अल्लाह तआ़ला ने बह़रे क़ुल्ज़ुम के क़रीब एक यहूदी बस्ती वालों के लिए सनीचर के दिन मछली का शिकार ह़राम कर दिया था और उन की आज़्माइश के लिए अल्लाह के हुक्म से सनीचर के दिन मछलियाँ ख़ूब आती थीं और सतह़ समुद्र पर तैरने लगती थीं और दूसरे दिनों में मछलियाँ गायब हो जाती थीं। वह लोग अल्लाह तआ़ला की इस आज़्माइश में पूरे नहीं उतरे और ऐसा तरीक़ा अख़्तियार किया कि सनीचर के दिन मछलियाँ पानी की तरफ़ वापस न जा सकें, ताकि इत्वार के दिन उन का शिकार कर लें। अल्लाह तआ़ला ने उन्हें इस आज़्माइश में उन के पिछले गुनाहों की वजह से डाला था, ताकि उन की सरकशी खुल कर सामने आ जाए और अ़ज़ाब का मुस्तह़िक़ बन जाएँ।

164-166 وَاِذْ قَالَتْ اُمَّةٌ مِّنْهُمْ لِمَ تَعِظُوْنَ قَوْمَا ۙ اللّٰهُ مُهْلِكُهُمْ اَوْ مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ۗ قَالُوْا مَعْذِرَةً اِلٰى رَبِّكُمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿۱۶۴﴾ فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖٓ اَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوْٓءِ وَاَخَذْنَا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا بِعَذَابٍۢ بَـِٔيْسٍۢ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿۱۶۵﴾ فَلَمَّا عَتَوْا عَنْ مَّا نُهُوْا عَنْهُ

قُلْنَا لَهُمْ كُونُوا قِرَدَةً خٰسِـِٕيْنَ۝

इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा कहते हैं कि उस बस्ती का नाम 'ईलात' था जो बह़रे कुल्ज़ुम के किनारे पर आबाद थी। आज कल यहाँ पर इस्राईल की बन्दरगाह है। अक्सर मुफ़स्सिरीन का ख़याल है कि इस बस्ती के रहने वाले इस्राईली लोग मछली के शिकार के बारे में तीन जमाअ़तों में बट गये थे।

1- एक जमाअ़त ने (जिन की तअ़दाद 70 हज़ार थी) नाफ़रमानी की और शिकार किया।
2- दूसरी जमाअ़त ने न नाफ़रमानी की और न दूसरों को मना किया।
3- तीसरी जमाअ़त ने शिकार नहीं किया और दूसरों को भी मना किया और शिकार करने वाली जमाअ़त से अलग हो गई।

दूसरी जमाअ़त ने तीसरी जमाअ़त से कहा कि तुम ऐसे लोगों को क्यों नसीह़त कर रहे हो जिन्हें अल्लाह या तो हलाक करने वाला है या अ़ज़ाब देने वाला है? और यह बात उन्होंने गुमान की बुनियाद पर कही थी, इसलिए कि आ़मतौर पर ऐसा ही होता है कि अल्लाह तआ़ला नाफ़रमानों को या तो हलाक कर देता है या उन्हें किसी अ़ज़ाब में मुब्तिला कर देता है।

तीसरी जमाअ़त ने कहा कि हम ऐसा इसलिए कर रहे हैं ताकि अल्लाह के नज़्दीक हमारा उ़ज़्र साबित हो जाए और मुम्किन है कि वह लोग राहे रास्त पर आ जाएँ लेकिन नाफ़रमानों ने उन नेक लोगों की एक नहीं सुनी और अपने गुनाहों पर जमे रहे, तो अल्लाह तआ़ला ने उन नेक लोगों को बचा लिया और ज़ालिम नाफ़रमानों को उन के गुनाहों की वजह से सख़्त अ़ज़ाब में मुब्तिला (डाल) किया और उन के घमण्ड और गुनाह पर जमे रहने की वजह से उन की सूरतें बदल कर बन्दर बना दिया।

क़ुर्आन के अल्फ़ाज़ (शब्द) यही बताते हैं कि अ़ज़ाब से सिर्फ़ वही लोग बच सके जिन्होंने मना किया था और सूरतें उन्हीं की बदली गईं जिन्होंने नाफ़रमानी की थी। दूसरी जमाअ़त यानी जिन लोगों ने न नाफ़रमानी की और न दूसरों को मना किया, उन के बारे में उलमा-ए-तफ़्सीर का इख़्तिलाफ़ है। किसी ने कहा है कि वह भी हलाक कर दिये गये और किसी ने कहा कि वह लोग हलाक नहीं किये गये।

इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) की राय यही थी कि वह लोग हलाक कर दिये गये, लेकिन ह़ज़रत इक्रमा ने जब उन्हें बताया कि उन लोगों ने पहली जमाअ़त के काम को बुरा समझा और उन की मुख़ालिफ़त की, तो उन की राय बदल गई थी।

ह़ज़रत नोअ़मान बिन बशीर (रज़ि०) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमायाः-

अल्लाह के ह़ुदूद की ख़िलाफ़वर्ज़ी करने वालों और ख़िलाफ़वर्ज़ी देखकर ख़ामोश रहने वालों की मिसाल ऐसी है जैसे उन लोगों की, जिन्होंने किसी जहाज़ में बैठने के लिए क़ुरअ़ अन्दाज़ी की। कुछ लोगों के ह़िस्से में निचली मन्ज़िल आई और दूसरे लोगों के ह़िस्से में ऊपर वाली मन्ज़िल। अब निचली मन्ज़िल वाले जब पानी लेकर ऊपर की मन्ज़िल वालों के पास से गुज़रते तो उन्हें तक्लीफ़ पहुँचती। यह देखकर निचली मन्ज़िल वालों में से एक ने कुल्हाड़ी ली और जहाज़ के पेंदे में सुराख़ करने लगा।

ऊपर की मन्ज़िल वाले उसके पास आये और कहा कि तुम्हें क्या हो गया है। उस ने जवाब दिया कि तुम्हें हमारी वजह से तक्लीफ़ पहुँचती है और हमारा पानी के बग़ैर गुज़ारा नहीं। अब अगर ऊपर वालों ने उसका हाथ पकड़ लिया तो उसे भी बचा लिया और ख़ुद भी बच गये और अगर उसे छोड़ दिया तो उसे भी हलाक किया और अपने आपको भी हलाक किया। **(बुख़ारी)**

ह़ज़रत अबू बक्र (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को यह कहते हुए सुना है कि जब लोग ज़ालिम को (ज़ुल्म करते) देखें और उसका हाथ न पकड़ें तो क़रीब है कि अल्लाह की तरफ़ से उन पर अ़ाम अ़ज़ाब नाज़िल हो। **(तिर्मिज़ी)**

हाफ़िज़ इब्ने क़य्यिम (रह़०) ने दीन में हीला (बहाना) के ह़राम होने पर इसी आयत को दलील माना है। लिखते हैं इस्लाम और मुसलमानों के ख़िलाफ़ शैतान की एक फ़रेब कारी, दीन में ह़ीला (बहाना) मक्र और धोका को राह बना दिया है, जिस के ज़रिये अल्लाह तआ़ला की ह़राम की हुई चीज़ों को ह़लाल बनाया जाता है, फ़रायज़ को भुलाया जाता है और अल्लाह के हुक्मों को नज़र अन्दाज़ कर दिया जाता है और यही वह ग़लत राय है, जिस की मज़म्मत की गई। आगे चलकर लिखते हैं कि ह़ीला की एक क़िस्म के ज़रिये वाजिबात को ख़त्म कर दिया जाता है और ह़राम चीज़ों को ह़लाल कर लिया जाता है। इस के बाद सनीचर वाले यहूदियों के बारे में लिखा है कि जब उन्होंने सनीचर के दिन मछली के शिकार की हुरमत को ह़ीला साज़ी से ह़लाल बना लिया तो अल्लाह ने उन की सूरतें मस्ख़ करके बन्दर बना दिया। दीन में ह़ीला साज़ी को राह देने वालों को बुरे अन्जाम से डरते रहना चाहिए।

ह़ज़रत सहल बिन सअ़द (रज़ि०) से रिवायत है, रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जो शख़्स मुझे इस की ज़मानत दे जो दोनों जबड़ों के दर्मियान है (यानी ज़बान की) और उस की जो दोनों टांगों के दर्मियान है (यानी शर्मगाह की) तो मैं उसे जन्नत की ज़मानत देता हूँ।" **(सह़ीह़ बुख़ारी, बाब 23, ह़दीस 6474)**

167 وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ يَّسُوْمُهُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ؕ اِنَّ رَبَّكَ لَسَرِيْعُ الْعِقَابِ ۖۚ وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

सरकशी, अल्लाह के हुक्मों की मुख़ालिफ़त और ह़ीला के ज़रिये ह़राम को ह़लाल बनाने की वजह से अल्लाह तआ़ला ने क़ियामत तक के लिए ज़िल्लत व रुस्वाई इस्राईल की क़िस्मत बना दी और यह फ़ैसला कर दिया कि दुनिया की दूसरी क़ौमें उन्हें हमेशा आज़्माइश और तरह़-तरह़ की मुसीबतों में डाले रखेंगी। कहा जाता है कि सब से पहले ख़ुद ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने सात साल तक उन से टैक्स वसूल किया।

ह़ज़रत सुलेमान (अ़लै०) के बाद बाबुल के बादशाह 'बख़्त नस्र' ने उन के मुल्क को तबाह कर दिया, मर्दों को क़त्ल किया, औ़रतों और बच्चों को गुलाम बना लिया और उन पर जिज़्या लागू कर दिया और उन में से बहुतों को बाबुल की तरफ़ निकाल दिया जहाँ वह सत्तर साल तक भटकते रहे, इस के बाद भी मुख़्तलिफ़ यूनानी और कल्दानी बादशाहों ने उन्हें अपना गुलाम बनाया और ज़िल्लत व रुस्वाई का

यह दौर चलता रहा, यहाँ तक कि ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) की विलादत के इक्हत्तर साल बाद उनके मुल्क पर रोमानियों का क़ब्ज़ा हो गया जिन्होंने उन्हें वहाँ से निकाल दिया और दुनिया के मुख़्तलिफ़ ह़िस्सों में ज़लील व ख़्वार बनकर दर बदर हो गये।

168 وَقَطَّعْنٰهُمْ فِي الْاَرْضِ اُمَمًا ۚ مِنْهُمُ الصّٰلِحُوْنَ وَمِنْهُمْ دُوْنَ ذٰلِكَ ۫ وَبَلَوْنٰهُمْ بِالْحَسَنٰتِ وَالسَّيِّاٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ

जैसा कि ऊपर बताया गया है कि अल्लाह तआ़ला ने यहूदियों को दुनिया में तितर-बितर कर दिया और यूँ ही ज़लील व रुस्वा होकर दर-दर की ठोकरें खाते फिरें।

हर ज़माने में उन में कुछ लोग नेक भी हुए, जो अपने ज़माने के अम्बिया पर ईमान लाए, उन्हीं में वह लोग भी थे जिन्होंने नबी करीम (सल्ल०) का ज़माना पाया और इस्लाम क़ुबूल किया और कुछ लोग ऐसे हुए जिन्होंने अल्लाह तआ़ला के हुक्मों की मुख़ालिफ़त की और ईमान नहीं लाए। उन गुनाहगारों को अल्लाह तआ़ला ने मुख़्तलिफ़ क़िस्म की आज़्माइश में डाला, कभी उन पर ख़ैरात व बरकात का दरवाज़ा खोल दिया, कभी उन्हें तंगदस्ती में मुब्तिला किया और मक़्सद यह था कि शायद वह अपने गुनाहों से तौबः कर लें और ईमान ले आएँ।

169 فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ وَّرِثُوا الْكِتٰبَ يَاْخُذُوْنَ عَرَضَ هٰذَا الْاَدْنٰى وَيَقُوْلُوْنَ سَيُغْفَرُ لَنَا ۚ وَاِنْ
يَّاْتِهِمْ عَرَضٌ مِّثْلُهٗ يَاْخُذُوْهُ ۭ اَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ مِّيْثَاقُ الْكِتٰبِ اَنْ لَّا يَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ
وَدَرَسُوْا مَا فِيْهِ ۭ وَالدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ

बनी इस्राईल का हर दौर में यही ह़ाल रहा, यहाँ तक कि नबी करीम (सल्ल०) का ज़माना आ गया। आप (सल्ल०) के ज़माने में जो यहूदी थे, उन्हीं का ह़ाल बयान किया गया है कि वह नालायक़ लोग थे, हर ख़ूबी उन से रुख़सत हो गई थी और तौरात के अह़काम को बदल कर दुनिया कमाना उन का पेशा हो गया था, रिश्वत लेकर तौरात के ख़िलाफ़ फ़ैसले करते थे और अपने आप को धोका देने के लिए कहते थे कि अल्लाह इन का मुवाख़िज़ा नहीं करेगा उन्हें माफ़ कर देगा ह़ालाँकि वह अपने दिल में इस बात पर जमे रहते थे कि अगर किसी ने दोबारा भी रिश्वत दी तो उसे ले लेंगे और दिल से तौबः नहीं करते थे। उन की दीनी और अख़्लाक़ी पस्ती इन्तिहा को पहुँची हुई थी, अल्लाह तआ़ला के बारे में उन का ह़ाकिमाना अन्दाज़ था कि वह उन्हें माफ़ कर देगा, अल्लाह पर इल्ज़ाम था और उस अ़हद व मीसाक़ के ख़िलाफ़ बात थी जो उन से लिया गया था कि वह अल्लाह के बारे में सच्चाई से काम लेंगे और उन्हें तौरात के पढ़ने से उस अ़हद का इ़ल्म भी था (ऐसा नहीं था कि वह उसे जानते नहीं थे) इस के बाद अल्लाह ने फ़रमाया कि आख़िरत की कामियाबी, दुनियावी ह़क़ीर फ़ायदे से ज़्यादा बेहतर है।

170 وَالَّذِيْنَ يُمَسِّكُوْنَ بِالْكِتٰبِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ۭ اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُصْلِحِيْنَ

बनी इस्राईल के कुछ लोग तौरात का इ़ल्म रखते थे और अल्लाह तआ़ला के हुक्मों से ख़ूब वाक़िफ़ थे, लेकिन उन पर अ़मल नहीं करते थे। ऐसे लोगों का ऊपर ज़िक्र आ चुका है और उन में से कुछ

लोग ऐसे भी थे जो दीनी मामले में तौरात के अह़काम की पाबन्दी करते थे और उन की इस पाबन्दी ने उन्हें नबी करीम (सल्ल०) पर ईमान लाने पर मजबूर किया, यहाँ तक कि वह मुसलमान हो गये। इस आयते करीमा में अल्लाह ने उन्हीं पाबन्द नमाज़ियों को ख़ुशख़बरी दी है कि अल्लाह उन का अज्र ज़ाया नहीं करेगा।

171 وَاِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَاَنَّهٗ ظُلَّةٌ وَّظَنُّوْٓا اَنَّهٗ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ۚ خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوْا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۝

इस वाक़िये का ज़िक्र सूरः बक़रः आयत नं० (63) और आयत नं० (93) और सूरः निसा आयत नं० (154) में गुज़र चुका है, यह कोहेतूर के दामन में उस वक़्त पेश आया था जब ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) बनी इस्राईल को लेकर वहाँ गये थे, ताकि अल्लाह तआ़ला उन से तौरात पर अ़मल करने का अ़हद व पैमान ले और मक़्सूद यह था कि उन के दिलों पर अल्लाह तआ़ला का ख़ौफ़ तारी हो और इस अ़हद व पैमान की अहमियत का एह़सास उन के दिलों में हमेशा बाक़ी रहे।

172-174 وَاِذْ اَخَذَ رَبُّكَ مِنْۢ بَنِيْٓ اٰدَمَ مِنْ ظُهُوْرِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَاَشْهَدَهُمْ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ ۚ اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ۗ قَالُوْا بَلٰى ۛ شَهِدْنَا ۛ اَنْ تَقُوْلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اِنَّا كُنَّا عَنْ هٰذَا غٰفِلِيْنَ ۝ اَوْ تَقُوْلُوْٓا اِنَّمَآ اَشْرَكَ اٰبَاۗؤُنَا مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِّنْۢ بَعْدِهِمْ ۚ اَفَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ الْمُبْطِلُوْنَ ۝ وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝

इस से पहली आयत में यहूद से लिए जाने वाले अ़हद का ज़िक्र है, जबकि इस आयत में उस अ़हद का ज़िक्र है जो आदम के हर शख़्स से लिया गया था। कु़र्आन और ह़दीस से इस की तफ़्सील यूँ मालूम होती है कि ह़ज़रत आदम (अ़लै०) को पैदा करने के बाद अल्लाह तआ़ला ने उन की पुश्त (पीठ) पर हाथ फेरा और उनकी नस्ल से क़ियामत तक पैदा होने वाली औलाद की रुहें अपने सामने ह़ाज़िर कर लीं।

उनकी रुहों को वही शक्ल अ़ता की गई जो उन की पैदाईश के बाद होने वाली थी। फिर उन रुहों से फ़रमाया कि इस भरी क़ायनात को अच्छी तरह़ से देखभाल कर बताओ कि तुम्हें यहाँ मेरे सिवा कोई और रब नज़र आता है? तो उन सब रुहों ने मिलकर यक़ीन के साथ यह शहादत दी कि तू ही हमारा रब है। यह वाक़िआ़ सिर्फ़ तम्सील (काल्पनिक) ही नहीं बल्कि ह़क़ीक़ी है।

ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "हर बच्चा फ़ित्रत पर पैदा होता है। उस के माँ-बाप उसे यहूदी, नस्रानी या मजूसी बना देते हैं जिस तरह़ जानवर का बच्चा सह़ी सालिम पैदा होता है, उस का नाक कटा हुआ नहीं होता।" **(बुख़ारी)**

आदम को पैदा हुए या दुनिया को पैदा हुए कितना ज़माना बीत गया है, इस बारे में कु़र्आन ख़ामोश है। ईसाई बिशप कहते हैं कि 4004 साल पहले मसीह़ के दुनिया बनाई गई। साइंस बतलाती है कि बीसों हज़ार साल पहले भी दुनिया में इन्सान मौजूद था।

आयत का ज़ाहिरी मतलब यह है कि अल्लाह तआ़ला ने बनी आदम की तमाम औलाद को (जो

क़ियामत तक पैदा होगी) अज़ल में (पैदा होने से पहले) उन के आबा की पीठों से निकाला और उन से इस बात की गवाही ली कि वही उन का रब और उन का ख़ालिक़ व मालिक है।

एक दूसरी राय यह है कि अल्लाह ने रुहों को जिस्मों से पहले पैदा किया और शहादत उन्हीं रुहों ने दी।

कुछ मुफ़स्सिरीन ने इस का माने यह बयान किया है कि अल्लाह ने पैदाइश से पहले उन सब को इकट्ठा नहीं किया था बल्कि इब्ने आदम की तख़्लीक़ इस बात की गवाही देती है कि उन का ख़ालिक़ अल्लाह है। आयत में मिसाल के ज़रिये ह़क़ीक़त को बयान किया गया है। इस क़ौल के मुताबिक़ قَالُوْا بَلٰى ۛ شَهِدْنَا इस आयत का मतलब यह होगा कि इन्सान की तख़्लीक़ में अल्लाह तआ़ला की कमाले कारीगरी के जो आसार हैं, उन्हीं के पेशेनज़र गोया इन्सानों ने कहा हाँ, ऐ हमारे अल्लाह! तू ही हमारा रब है, इसलिए कि शहादत कभी ज़बान से अदा होती है और कभी ह़ाल से।

इसी बात को नबी करीम (सल्ल०) ने सह़ीह़ अह़ादीस में इस तरह़ बयान किया है कि अल्लाह तआ़ला ने इन्सानों को पैदा ही ऐसा किया है कि उन की फ़ित्रत में यह बात रख दी है कि वह पुकार-पुकार कर कह रहे हैं ऐ अल्लाह! तू ही हमारा रब है हम इस बात की गवाही देते हैं और क़ियामत के दिन भी वह इस का इन्कार नहीं कर सकेगा।

'ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर' ने इसी राय को माना है और कहा है कि सलफ़ व ख़लफ़ (पहलों) में से एक जमाअ़त का यही कहना है कि बनी आदम की औलाद को गवाह बनाने का मफ़्हूम यह है कि अल्लाह ने उन को अपनी तौह़ीद की फ़ित्रत पर पैदा किया और जो रिवायतें यह बताती हैं कि अल्लाह ने आदम की ज़ुर्रियत को उन की पीठ से निकाला और उन से बात की और उन्होंने जवाब दिया, तो इस तरह़ की रिवायतें सही नहीं हैं और अगर बाज़ सह़ी हैं तो उन के अल्फ़ाज़ (शब्द) आयत के अल्फ़ाज़ से मिलते-जुलते हैं, जिन से यह बात समझ में नहीं आती कि अल्लाह ने वाक़ई आदम की ज़ुर्रियत को उन की पीठ से निकाला था और तीसरी बात यह है कि उन में से अक्सर रिवायतें इब्ने अ़ब्बास पर मौक़ूफ़ हैं यानी नबी करीम (सल्ल०) से साबित नहीं हैं।

प्राणी विज्ञान (Biology) ने मनुष्य के जन्म के सम्बन्ध में इस महत्वपूर्ण ह़क़ीक़त का रहस्योद्घाटन किया है कि मनुष्य के शरीर से एक क्षण में जो प्रजनन पदार्थ खारिज होता है उसमें जीवन प्रदान करने वाले करोड़ों कीटाणु (Spermatozoa) होते हैं। अर्थात थोड़ी सी बूंदों के अन्दर इतनी बड़ी संख्या में इंसान पैदा करने की क्षमता होती है। फिर हर कीटाणु में कोशिका में 23 जोड़ी क्रोमोज़ॉम्स (Chromosoms) होते हैं। ये क्रामोजॉम्स अपने अन्दर पुश्तैनी विशेषताएँ लिए हुए होते हैं। अर्थात बाप की विशेषताएँ बच्चे की तरफ़ उन ही के द्वारा स्थानान्तरित हो जाती हैं। D.N.A. बाप और माँ से बच्चे में उनकी विशेषताएँ और भिन्नताएँ पहुँचती हैं।

अब अगर यह संभव है कि एक बूंद गंदे पानी में एक इन्सानी दुनिया छिपी हुई है तो यह क्यों असंभव है कि पूरी मानव नस्ल को अस्तित्व में लाने वाले कीटाणु आदम के अन्दर समर्पित कर दिये

गये हों और उनमें विवेक के गुण भी बुनियादी तौर पर विद्यमान हों? और इसमें बुद्धि में न समाने वाली बात क्या है कि इन कीटाणुओं (प्राणों) को उन के पैदा करने वाले ने आदम के अन्दर से निकाल कर उन के दबे हुए विवेक (शऊर) को उस समय उभारा हो और उन से प्रतिज्ञा लेने के बाद उन को फिर आदम के अन्दर लौटा दिया हो ताकि इस संचय (ज़ख़ीरा) से मानव वंश का सिल्सिला अपनी बुनियादी विशेषताओं के साथ जारी रहे।

स्पष्ट रहे कि Text (मूल) में आदम की संतान के शब्द इस्तेमाल नहीं हुए हैं बल्कि-
مِنۢ بَنِيٓ ءَادَمَ مِن ظُهُورِهِمۡ ذُرِّيَّتَهُمۡ

(आदम की संतानों से उन की पुश्तों से उन की औलाद को निकाल कर) इस्तेमाल हुए हैं। यह इसलिए कि पुश्त दर पुश्त जो नस्लें पैदा होने वाली थीं उन की तस्वीर सामने आ जाए और चूंकि यहाँ शब्द प्रतिज्ञा लेने के अर्थ में इस्तेमाल हुआ है जो आदमी की तमाम औलाद से लिया गया था इसलिए (आदम की संतान से) के शब्द उचित बैठे। आयत में कुछ शब्द लुप्त है अगर उन को खोल दिया जाए तो तरकीब यूँ होगी।

من بنی آدم میثاقا واخرج من ظهورهم ذریتهم

आदम को उन की औलाद में से जिन प्रमुख हस्तियों के नाम बताये गये थे वे भी मानव जाति के इस सम्मेलन के अवसर ही की बात है जैसा कि सूरः बक़रः में गुज़र चुका।

यह अल्लाह के रब होने की प्रतिज्ञा थी जो मानवीय आत्माओं से उन को शारिरिक अस्तित्व प्रदान करने से पहले ही लिया गया था ताकि उन के विवेक (Conscienous) में यह बात अच्छी तरह़ बैठ जाए कि वे स्वयं पैदा नहीं हुए हैं और न अपने आप में स्वतंत्र एवं स्वाधीन हैं, बल्कि उन का एक पैदा करने वाला परवरदिग़ार, मालिक और हाकिम वह है अल्लाह। इस वास्तविकता को स्वीकार कर लेने का अर्थ अनिवार्य रूप से यह था कि उन्होंने अपनी यह हैसियत मान ली थी कि वे अल्लाह के बन्दे उसी के भक्त, उपासक और उसी के आदेशों का पालन करने वाले हैं।

अब इस प्रतिज्ञा का खण्डन कोई यह कह कर नहीं कर सकता कि यह प्रतिज्ञा कब ली गई थी और कहाँ ली गई थी मुझे कुछ याद नहीं। सच्चाई यह है कि चूंकि वह अपनी दुनिया में इन्सानों की आज़्माइश करना चाहता है इसलिए जहाँ तक इस प्रतिज्ञा के बाह्य पक्षों का सम्बन्ध है अर्थात घटनास्थल, समय आदि तो उसकी याददाश्त से लुप्त कर दी गई है। अगर वह बाक़ी रखी जाती है तो परीक्षा लेने का उद्देश्य ही समाप्त हो जाता है किन्तु इस के आंतरिक पक्षों को मनुष्य की प्रऔति में समो दिया गया। अतः हर व्यक्ति अपने पैदा करने वाले को स्वभावतः पहचानता है, उसकी अन्तरात्मा अपने रचयिता के अकेले पूज्य परवरदिग़ार (इलाह) होने की गवाही देती है और उसका ज़मीर अपने मालिक की नाफ़रमानी (बुराई) पर उसे टोकता और उसकी निन्दा करता है। मतलब यह है कि प्रतिज्ञा फ़ित्रत (प्रऔति) है जो हृदयपट पर अंकित है इसलिए यह कहना सही नहीं है कि इन्सान उस प्रतिज्ञा से बिल्कुल बेख़बर है। क्या कोई व्यक्ति यह बता सकता है कि जब वह बिल्कुल बच्चा था तो उसे बोलना किस ने सिखाया?

ज़ाहिर है यह बात किसी को भी याद नहीं मगर वह इस वास्तविकता से इन्कार नहीं कर सकता कि उसके माँ, बाप, सगे संबंधी या उसकी परवरिश करने वालों में कोई ज़रूर ऐसा रहा है जिसने उसको प्रारम्भ में वस्तुओं के नाम सिखाये, शब्दों को एक-एक कर के अदा करना सिखाया और इसके बाद वह बोलने के क़ाबिल हो सका। उसकी याद्दाश्त से ये सब बातें लुप्त हो चुकी हैं, मगर उसका बोलना अपने आप में स्वयं इस बात की दलील है कि बचपन में किसी न किसी ने उस को बोलना ज़रूर सिखाया है। फिर क्या अपने रचयिता एवं स्वामी के बारे में मानव एवं स्वभाव की आवाज़ चाहे वह कितनी ही दबी क्यों न हो इस बात की दलील है कि उस को मालिक की पहचान का पहला सबक़ उसके दुनिया में आने से पहले पढ़ाया जा चुका है।

इसी ह़क़ीक़त को रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने ह़दीस में इस तरह़ बयान फ़रमाया है-

ما من مولود الا يولد على الفطرة فابواه يهود انه وينصر انه ويشر كانه

(مسلم کتاب القدر)

"हर बच्चा प्रकृति अर्थात तौह़ीद पर पैदा होता है, फिर उसके माता-पिता उसको यहूदी ईसाई या मुश्रिक बना देते हैं।" **(मुस्लिम किताबुल क़द्र)**

इस फ़ित्‌री अ़हद के बाद अब कोई इन्सान क़ियामत के दिन यह नहीं कह सकेगा कि हमें तो पैग़ाम पहुँचा ही नहीं था या यह कि हम तो अपने बाप-दादा के नक़्शे क़दम पर चलते रहे, इसलिए हमारी गिरिफ़्त क्यों हो रही है। जब हर एक की फ़ित्‌रत पुकार-पुकार कर तौह़ीद बारी तआ़ला की गवाही दे रही है और अल्लाह के सामने झुकने का और इस के अ़लावा ग़ैरों के सामने न झुकने को बता रही है तो क़ियामत के दिन किसी मुश्रिक व काफ़िर के पास कौन सा उ़ज़्र बाक़ी रहेगा।

आयत नं० 175 से 187 तक

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ الَّذِيْٓ اٰتَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا فَانْسَلَخَ مِنْهَا فَاَتْبَعَهُ الشَّيْطٰنُ فَكَانَ مِنَ الْغٰوِيْنَ ۝ وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنٰهُ بِهَا وَلٰكِنَّهٗٓ
اَخْلَدَ اِلَى الْاَرْضِ وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ ۚ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ الْكَلْبِ ۚ اِنْ تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ اَوْ تَتْرُكْهُ يَلْهَثْ ۚ ذٰلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ
كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَاقْصُصِ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ۝ سَآءَ مَثَلًا ۨالْقَوْمُ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاَنْفُسَهُمْ كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ۝
مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِيْ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝ وَلَقَدْ ذَرَاْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيْرًا مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ۖ
لَهُمْ قُلُوْبٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ بِهَا ۡ وَلَهُمْ اَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُوْنَ بِهَا ۡ وَلَهُمْ اٰذَانٌ لَّا يَسْمَعُوْنَ بِهَا ۭ اُولٰٓئِكَ كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ ۭ
اُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ۝ وَلِلّٰهِ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا ۠ وَذَرُوا الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اَسْمَآئِهٖ ۭ سَيُجْزَوْنَ مَا
كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ وَمِمَّنْ خَلَقْنَآ اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ
حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَاُمْلِيْ لَهُمْ ۭ اِنَّ كَيْدِيْ مَتِيْنٌ ۝ اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا ۫ مَا بِصَاحِبِهِمْ مِّنْ جِنَّةٍ ۭ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝
اَوَلَمْ يَنْظُرُوْا فِيْ مَلَكُوْتِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ ۙ وَّاَنْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ قَدِ اقْتَرَبَ اَجَلُهُمْ ۚ فَبِاَيِّ حَدِيْثٍۢ
بَعْدَهٗ يُؤْمِنُوْنَ ۝ مَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ ۭ وَيَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ۝ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ
مُرْسٰىهَا ۭ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّيْ ۚ لَا يُجَلِّيْهَا لِوَقْتِهَآ اِلَّا هُوَ ۘ ثَقُلَتْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ لَا تَاْتِيْكُمْ اِلَّا بَغْتَةً ۭ يَسْـَٔلُوْنَكَ
كَاَنَّكَ حَفِيٌّ عَنْهَا ۭ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

अनुवाद-

(175) और उनको उस व्यक्ति का ह़ाल सुनाओ जिसे 'हमने' अपनी आयतें दीं, तो वह उनसे निकल भागा, फिर शैतान उसके पीछे लगा, तो वह गुमराहों में हो गया। (176) और अगर 'हम' चाहते तो इन ख़बरों से उसको बुलन्द कर देते, मगर वह तो पस्ती की ओर मायल हो गया और अपनी इच्छा के पीछे चलने लगा, तो उसकी मिसाल उस कुत्ते जैसी हो गई, कि अगर तुम उस पर सख़्ती करो तो ज़बान लटकाए या उसे छोड़ दो तो भी ज़बान लटकाए ही रहे; यही मिसाल उन लोगों की है, जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया; तो यह क़िस्सा बयान कर दो, ताकि वे सोच-विचार करें; (177) बुरी मिसाल है उन लोगों की जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और वे खुद अपने ही ऊपर ज़ुल्म करते रहे। (178) जिसे अल्लाह सीधी राह दिखाए वही सीधी राह पाने वाला है, और जिसे 'वह' गुमराह करे तो ऐसे ही लोग नुक़सान उठाने वाले हैं। (179) और 'हमने' बहुत-से जिन्नों और इन्सानों को जहन्नम ही के लिए फैला रखा है, उनके पास दिल हैं लेकिन उस से समझते नहीं, और उनकी आँखें हैं मगर उससे देखते नहीं और उनके कान हैं मगर उनसे सुनते नहीं, वे लोग चौपायों की तरह हैं, बल्कि उनसे भी (ज़्यादा) भटके हुए हैं; यही वे लोग हैं जो ग़फ़लत में पड़े हुए हैं। (180) और अल्लाह के सब ही नाम अच्छे हैं, तो उसको 'उसके' नामों से पुकारा करो और जो लोग उसके नामों में टेढ़ (कुटिलता) करते हैं उनको छोड़ दो, जो कुछ वे कर रहे हैं बहुत जल्द उसकी सज़ा पाएँगे। (181) और हमारी मख़्लूक़ (प्राणी) में कुछ लोग ऐसे भी हैं जो ह़क़ का रास्ता दिखाते और उसके साथ इन्साफ़ करते हैं। (182) और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया, हम उन्हें दर्जा-बदर्जा तबाही की ओर ले

जाएँगे, ऐसे तरीक़े से जिसे वे जानते भी नहीं; (183) और 'मैं' उन्हें ढ़ील दिये जा रहा हूँ, मेरी तद्बीर (उपाय) बहुत मज़बूत है।(184) क्या उन लोगों ने ग़ौर नहीं किया? कि उनके साथी को कोई जुनून नहीं है, वह तो बस एक साफ़-साफ़ आगाह (सचेत) करने वाले हैं। (185) क्या उन्होंने आसमान व ज़मीन की बादशाही में, और जो चीज़ें अल्लाह ने पैदा की हैं उन पर नज़र नहीं की; और इस बात पर कि अजब नहीं कि उनका वक़्त क़रीब आ गया हो? फिर आख़िर इसके बाद कौन-सी बात हो सकती है जिस पर वह ईमान लाएँगे? (186) जिस व्यक्ति को अल्लाह गुमराह करे उसको कोई राह दिखाने वाला नहीं और 'वह' उनको छोड़े रखता है कि वे अपनी सरकशी में बहकते रहें। (187) आप से उस घड़ी (क़ियामत) के बारे में पूछते हैं कि "वह कब आएगी?" कह दीजिए "इसका इल्म तो मेरे रब ही के पास है। 'वही' उसे उसके वक़्त पर ज़ाहिर कर देगा; 'वह' आसमानों और ज़मीन में एक भारी बात होगी जो अचानक ही तुम पर आ जाएगी"। यह आप से इस तरह पूछते हैं जैसे आप इसके बारे में अच्छी तरह जानते हैं, कह दीजिए, "इसका इल्म तो बस अल्लाह ही के पास है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते"।

आयत नं० 175 से 187 तक की व्याख्या

175-177

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ الَّذِيْٓ اٰتَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا فَانْسَلَخَ مِنْهَا فَاَتْبَعَهُ الشَّيْطٰنُ فَكَانَ مِنَ
الْغٰوِيْنَ ۝ وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنٰهُ بِهَا وَلٰكِنَّهٗٓ اَخْلَدَ اِلَى الْاَرْضِ وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ ۚ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ
الْكَلْبِ ۚ اِنْ تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ اَوْ تَتْرُكْهُ يَلْهَثْ ۚ ذٰلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا
بِاٰيٰتِنَا ۚ فَاقْصُصِ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ۝ سَآءَ مَثَلًا ۨالْقَوْمُ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا
بِاٰيٰتِنَا وَاَنْفُسَهُمْ كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ۝

इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने एक ऐसे आदमी की ख़बर दी है जिसे अल्लाह ने आसमानी किताब का इ़ल्म दिया था, जिस का तक़ाज़ा यह था कि वह इस में मौजूद दलायल से फ़ायदा उठा कर अल्लाह से अपना रिश्ता मज़बूत करता और तक़्वा की ज़िन्दग़ी अख़्तियार करता, लेकिन मामला उल्टा हुआ उस ने दुनियावी फ़ायदे के लिए अल्लाह का इन्कार कर दिया और इस किताब को पीठ पीछे डाल दिया और दामन झाड़ कर उस से ऐसा अलग हो गया जैसे कोई साँप अपने चमड़े के खोल से निकल कर बाहर चला जाता है और जब वह इस ह़ाल को पहुँच गया तो शैतान ने उसे उचक लिया और उसे अपना दोस्त और साथी बना लिया और उसे ज़लालत व गुमराही के घटाटोप अन्धेरे में पहुँचा दिया। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि अगर हम चाहते तो इस आसमानी किताब की बदौलत उसे आस्मान की बुलन्दी पर पहुँचा देते, लेकिन वह इस का अहल नहीं था, उस ने दुनियावी फ़ायदों को आगे रखा और अपने नफ़्स का गुलाम बना रहा और दुनिया उस का मक़्सूद रही।

एक फ़ायदा ह़ासिल हुआ तो दूसरे के पीछे दौड़ने लगा और इसी हुसूले दुनिया में है़रान व परेशान रहा, उसे कभी सुकून न मिला उस कुत्ते की तरह़ जो हर ह़ाल में ज़बान निकाले हाँपता रहता है, चाहे वह दौड़ रहा हो या बैठा हो तो जो शख़्स आसमानी किताब का इ़ल्म रखते हुए इस से ईमान व नेक

अ़मल का फ़ायदा नहीं उठाता उसे छोड़ देता है और कुफ़्र की राह अख़्तियार करता है, उस की मिसाल हर दौर में उस साँप की सी है जो अपने चमड़े के खोल से निकल कर बाहर चला जाता है और उस कुत्ते की सी है जो हर ह़ाल में ज़बान निकाले हाँपता रहता है।

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) की रिवायत में एक क़ौल यह है कि यह आयत अबू आ़मिर राहिब के बारे में नाज़िल हुई थी जिस ने ज़माने जाहिलियत में रहबानियत (सन्यास) की ज़िन्दगी अख़्तियार कर ली थी, लेकिन इस्लाम आने के बाद 'शाम' चला गया और 'क़ैसर' को रसूलुल्लाह (सल्ल०) के ख़िलाफ़ भड़काता रहा और वहीं मर गया। उसी ने मुनाफ़िक़ीन को मदीना मुनव्वरह में मस्जिद-ए-ज़रार बनाने पर उभारा था।

बहरह़ाल आयत के नुज़ूल का सबब जो भी हो, इस का हुक्म आ़म है और इस में बहुत बड़ी वई़द है उन उलमा के लिए, जो दुनिया की थोड़ी सी लज़्ज़तों के लिए आख़िरत को भुला देते हैं और दुनिया ही के पीछे लग जाते हैं।

178 مَن يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِي ۖ وَمَن يُضْلِلْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿١٧٨﴾

यहाँ यह बताया गया है कि कहना-सुनना और नसीह़त, हिदायत पाने का सिर्फ़ ज़ाहिरी सबब हैं, हिदायत तो दरअस्ल अल्लाह की तरफ़ से मिला करती है, वह जिसे चाहता है हिदायत देता है और जिसे चाहता है गुमराह करता है इसलिए आदमी को चाहिए कि अल्लाह से हर वक़्त तौफ़ीक़ की दुआ़ करता रहे, उस के सामने हाथ फैला कर निहायत इन्किसारी के साथ यह कहे कि ऐ अल्लाह! तू अपने फ़ज़्ल व करम से मुझे अपने दीन पर क़ायम रख, अपनी रज़ा के काम लेता रह और ख़ात्मा बिल् ख़ैर नसीब फ़रमा।

179 وَلَقَدْ ذَرَأْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيرًا مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ ۖ لَهُمْ قُلُوبٌ لَّا يَفْقَهُونَ بِهَا وَلَهُمْ أَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُونَ بِهَا وَلَهُمْ آذَانٌ لَّا يَسْمَعُونَ بِهَا ۚ أُولَٰئِكَ كَالْأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْغَافِلُونَ ﴿١٧٩﴾

हिदायत व गुमराही और अल्लाह की तौफ़ीक़ व बे-तौफ़ीक़ी की जो बात अभी गुज़री है, उसी मुनासिबत से अल्लाह तआ़ला ने यहाँ ख़बर दी है कि उस ने जिन्नों और इन्सानों को इसलिए पैदा किया है कि वह अपनी अ़क़्ल व बसीरत से काम लेकर अपने मअ़बूद ह़क़ीक़ी को पहचानें और उसी की अ़िबादत करें और उसी के हुक्मों के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारें। बहुत से जिन्नों और इन्सानों का ह़ाल यह है कि वह अल्लाह के दीन का इन्कार कर देते हैं, अम्बिया के ख़िलाफ़ जंग करते हैं और अल्लाह की बन्दगी को छोड़कर घमण्ड की राह अपनाते हैं और उन का ह़ाल ऐसा हो जाता है कि उन के दिल, उन की आँखें और उन के कान बेकार हो जाते हैं, कोई भी ख़ैर की बात क़ुबूल करने की सलाह़ियत बाक़ी नहीं रहती, तौह़ीद और बन्दगी अल्लाह ही के लिए ख़ास होने के सारे दलायल उस के सामने पेश कर दिये जाते हैं, लेकिन उन से वह फ़ायदा नहीं होता बल्कि उस का गुरूर बढ़ता ही जाता है उस की ह़ालत जानवरों से बद्तर हो जाती है कि जानवर तो कम से कम अपने नफ़ा और नुक़्सान के दर्मियान फ़र्क़

कर लेता है और वही काम करता है जिस के लिए उसे पैदा किया गया है, लेकिन काफ़िर जिन्न व इन्सान ख़ैर व शर के दर्मियान अन्तर की सलाहियत ही खो देता है तो गोया उस की ह़ालत ऐसी हो जाती है कि जैसे अल्लाह ने उसे जहन्नम के लिए ही पैदा किया है, वह जहन्नम की राह पर आगे बढ़ता जाता है यहाँ तक कि उस की मौत हो जाती है और जहन्नमी बन जाता है और यह बात अल्लाह के इ़ल्म में है कि कौन ह़क़ की दअ़वत को क़ुबूल करेगा और कौन इन्कार कर देगा, किसे ख़ैर की तौफ़ीक़ होगी और किसे नहीं, कौन जन्नत की राह पर लगेगा और कौन जहन्नम की राह पर।

180 وَلِلّٰهِ الْأَسْمَآءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا ۖ وَ ذَرُوا الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اَسْمَآئِهٖ ۗ سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝

यह आयते करीमा दो बातों की तरफ़ इशारा करती है, एक तो यह कि बन्दा हर वक़्त अल्लाह के सामने माफ़ी माँगता रहे, दुनिया व आख़िरत की हर भलाई उसी से माँगता रहे, उसी से लौ लगाए रखे क्योंकि सब का मालिक वही है।

ह़दीस में आया है कि दुआ़ अ़िबादत का मग़्ज़ है और यह भी आया है कि जो बन्दा अल्लाह से नहीं माँगता, अल्लाह उस से नाराज़ हो जाता है और दूसरी बात जो इस आयत से समझ में आती है वह यह कि अल्लाह तआ़ला को उस के अच्छे नामों के साथ पुकारने के बाद जो दुआ़ की जाती है वह क़ुबूल होती है। आयत में अल्लाह तआ़ला ने यह भी हुक्म दिया है कि उस के नामों में इल्ह़ाद से काम न लिया जाए यानी उसे बदला न जाए। जैसा कि मुश्रिकीन ने अल्लाह से 'लात' अ़ज़ीज़ से 'उ़ज़्ज़ा' और मन्नान से 'मनात' बना लिया था और क़ुर्आन व सुन्नत से बग़ैर दलील के अल्लाह के नये-नये नाम रख लिए।

जैसा कि अहले फ़ारस ने 'ख़ुदा', 'यज़्दान' और 'अहरमन' और हिन्दुओं ने भगवान और ईश्वर और अंग्रेज़ों ने गाड वग़ैरह नाम ईजाद कर लिए हैं।

अल्लाह के क़ुर्आन व सुन्नत से साबित शुदा नाम लिए जाएँ। इसी तरह़ अल्लाह तआ़ला के नामों की तावील कर के उन के ज़ाहिरी मआ़ना को बदल देना या उन का कोई माने ही मुराद न लेना या उन्हें मख़्लूक़ के नामों के साथ तश्बीह (संज्ञा) देना, यह सब अल्लाह तआ़ला के नामों में इल्ह़ाद की सूरते हैं।

'सह़ीहैन' में ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह तआ़ला के निन्यान्वे नाम हैं, जो शख़्स इन्हें गिनेगा वह जन्नत में दाख़िल होगा।

इस का मतलब यह है कि जो अल्लाह के निन्यानवे नाम याद करेगा वह जन्नत का ह़क़्दार होगा। इस का मतलब यह नहीं है कि अल्लाह के सिर्फ़ निन्यानवे ही नाम हैं बल्कि अल्लाह के नाम इस से ज़्यादा हैं जिन की तअ़दाद अल्लाह ही जानता है। जैसा कि 'ह़ज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि०)' की इस ह़दीस से मालूम होता है जिसे अह़मद, अबू यअ़ला और 'बज़्ज़ार' ने रिवायत की है, जिस में रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने सह़ाबा को एक अ़ज़ीम दुआ़ सिखाई है, उस में आया हैः-

"أسألک بکل اسم سمّیت به نفسک، أو استأثرت به فی علم الغیب عندک"

कि "मैं तुझ से तेरे हर उस नाम के ज़रिये माँगता हूँ जो तूने अपने लिए रखा है, या जिसे तूने अपने पास इल्म ग़ैब में छिपा रखा है"। "इमाम नव्वी ने उ़लूमा का इत्तिफ़ाक़ नक़्ल किया है कि अल्लाह तआ़ला के एक हज़ार नाम हैं"।

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है, "अल्लाह के निन्यानवें नाम हैं, जो शख़्स इन्हें याद करेगा वह जन्नत में दाख़िल होगा"। **(बुख़ारी)**

अल्लाह के नामों में टेढ़पन अपनाने की कई सूरतें हो सकती हैं। एक सूरत यह है कि अल्लाह के लिए ऐसे नाम या गुण अथवा विशेषता मानना जिनमें त्रुटि तथा ऐ़ब का पहलू हो। जो नाम ख़ुदा को उसकी पैदा की हुई चीज़ों (मख़्लूक़) पर अनुमान कर के रखे जाते हैं उन का शुमार उसी में है। जैसे- ख़ुदा को बाप (Father) कह कर पुकारना।

दूसरी सूरत यह है कि ख़ुदा के गुणों अथवा विशेषताओं को अलग-अलग हस्ती मानकर हर विशेषता को एक देवी या देवता मानना और इसी आधार पर उनके नाम का निर्धारण करना। भारत के बहुदेववादियों ने यहीं ग़ल्ती की है। अतः उन्होंने ख़ुदा के हर गुण को एक देवी या देवता मान लिया है। जैसे ख़ुदा की विशेषता 'ज्ञान' को उन्होंने ज्ञान की देवी ठहरा कर उसका नाम सरस्वती (Sarasvati the goddes of knowledge) रखा है। ("and the one in whom such knowledge is sustained is Sarasvati.") (Regveda Sanhita Vol. I.. 170)

इस तरह उन्होंने अल्लाह की विशेषता "रुबूबिय्यत" (स्वामित्व) के लिए एक देव गढ़ कर उसका नाम विष्णु रखा है और अल्लाह की विशेषता "सज़ा देने वाला (जुन्तिक़ाम) के लिए एक देवता गढ़ के उसका नाम शिव रखा है एवं अल्लाह को रिज़्क़ देने वाला (रज़्ज़ाक़) होने की विशेषता को कई देवताओं में विभाजित कर के धन की देवी गढ़ ली है और उसका नाम लक्ष्मी रखा है।

तीसरी सूरत यह है कि ख़ुदा के अकेले होने (वहदानियत) को स्वीकार करते हुए उसका ऐसा पेचीदा स्पष्टीकरण करना कि कई ख़ुदाओं के लिए गुंजाइश निकल आये। जैसे- एक में तीन की धारणा अर्थात त्रीश्वरवाद (Trinity) या बहुदेववादी दार्शनिकों का यह कहना कि यद्यपि हिन्दू कई देवताओं की पूजा करते हैं किन्तु वास्तव में वे एक ही ख़ुदा की पूजा करते हैं।

"The Hindu it is true, his hand before many a form of the Diety on the account however he is not to be dubbed polytheist, what the Hindu adores is the one God in the many gods."

(Out lines of Hinduism- T: M.P. Mahadeva P. 24)

अल्लाह के नामों या विशेषताओं के बारे में इस प्रकार की फ़ल्सफ़ियाना बहसों में उलझना बेकार है। ख़ुदा का सान्निध्य प्राप्त करने का सही तरीक़ा वही है जो क़ुर्आन ने बतलाया है। अर्थात कट हुज्जती (हठधर्मी) से बचते हुए सीधे सादे तरीक़े पर अल्लाह के गुणों एवं विशेषताओं को मानना। ये गुण एवं विशेषताएँ क़ुर्आन ने स्पष्ट रूप से बयान की हैं और साथ ही यह हिदायत की है कि अल्लाह के नामों के बारे में उन लोगों के साथ न उलझें जिन्होंने विमुखता की राह अपना ली है। दूसरे शब्दों में जिन लोगों ने फ़ल्सफ़ियाना (Philosophical) बहसें खड़ी कर दी उन से उलझने की ज़रुरत नहीं है क्योंकि ख़ुदा

के गुणों एवं विशेषताओं के बारे में फ़ल्सफ़ियाना बहसें गुमराही का दरवाज़ा खोल देती हैं।

181 وَمِمَّنْ خَلَقْنَآ اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَ بِهٖ يَعْدِلُوْنَ ۝

यहाँ اُمَّةٌ से उम्मते मुह़म्मदिया की एक जमाअ़त मुराद है, जिन की सिफ़त यह है कि वह ह़क़ बात बोलते हैं, दूसरों को ह़क़ की दअ़वत देते हैं और ख़ुद उस पर अ़मल करते हैं और लोगों के दर्मियान उसी के मुताबिक़ फ़ैसले करते हैं और यह वही लोग हैं जिन के बारे में रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने सह़ीह़ैन में ह़ज़रत मुआ़विया (रज़ि०) से मरवी एक ह़दीस में ख़बर दी है कि मेरी उम्मत में एक जमाअ़त हमेशा ह़क़ पर क़ायम रहेगी यहाँ तक कि क़ियामत आ जाएगी।

उ़लमा-ए-सलफ़ ने लिखा है कि यह वह लोग हैं जो क़ुर्आन व सुन्नत पर किसी चीज़ को मुक़द्दम (प्राथ्मिकता) नहीं करते, चाहे वह किसी का क़ौल हो या किसी पीर व मुर्शिद की राय या ख़्वाब या कोई ऐसा इज्तिहाद (रिसर्च) जो दोनों के मुवाफ़िक़ न हो या अ़िबादत व तस्बीह़ात और ज़िक्रे इलाही के वह तमाम तरीक़े जिन के जायज़ होने पर क़ुर्आन व सुन्नत से साफ़ दलील नहीं मिलती।

182 وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

नेक लोगों की जमाअ़त के ज़िक्र के बाद इस आयत में अल्लाह की आयतों को झुठलाने वालों का ह़ाल बयान किया जा रहा है कि अल्लाह तआ़ला उन के लिए रोज़ी के तमाम दरवाज़े खोल देता है, यहाँ तक कि वह धोखे में पड़ जाते हैं और समझते हैं कि अल्लाह उन से ख़ुश हैं, फिर वह अल्लाह का शुक्र अदा करना बिल्कुल भूल जाते हैं और मुक़र्रर वक़्त पर अल्लाह का अ़ज़ाब उन्हें आ घेरता है।

183 وَاُمْلِيْ لَهُمْ ۚ اِنَّ كَيْدِيْ مَتِيْنٌ ۝

यहाँ मुराद अबू जेहल और दूसरे कुफ़्फ़ारे मक्का हैं जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने ढील दे दी थी, यहाँ तक कि मैदाने बद्र में सब के सब मारे गये।

184 اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا ۫ مَا بِصَاحِبِهِمْ مِّنْ جِنَّةٍ ۭ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝

कुफ़्फ़ारे क़ुरैश रसूलुल्लाह (सल्ल०) को बचपन से अच्छी तरह़ जानते थे, उन्हें पता था कि आप अ़क़्ली और अख़्लाक़ी एतिबार से उन में सब से बेहतर हैं, लेकिन जब दअ़वते ह़क़ लेकर उन के सामने आये तो कहने लगे कि यह तो मजनून (पागल) है, जभी इस क़िस्म की बातें करता है। अल्लाह तआ़ला ने उन की तर्दीद (खण्डन) की और कहा कि मुह़म्मद न तो मजनून हैं जैसा कि कुफ़्फ़ारे क़ुरैश उन्हें बचपन से जानते हैं और न जो बातें बताते हैं वह किसी पागल की बकवास है, बल्कि वह तो अल्लाह का पैग़ाम पहुँचा रहे हैं।

185 اَوَلَمْ يَنْظُرُوْا فِيْ مَلَكُوْتِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ ۙ وَّاَنْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ قَدِ
اقْتَرَبَ اَجَلُهُمْ ۚ فَبِاَيِّ حَدِيْثٍ بَعْدَهٗ يُؤْمِنُوْنَ ۝

इस में कुफ़्फ़ारे क़ुरैश को दअ़वते फ़िक्र दी जा रही है ताकि अल्लाह की वह़दानियत एकेश्वरवाद

और उस की मालिकियत पर ईमान ले आएँ और इस्लाम कुबूल कर लें। उन्हें कहा जा रहा है कि वह सूरज व चाँद, सितारों और बादल, समुद्र और पहाड़, चौपायों और दूसरी मख़्लूक़ात के बारे में ग़ौर व फ़िक्र क्यों नहीं करते ताकि दुनिया से रुख़सत होने से पहले ईमान ले आएँ और आख़िरत में कामियाब हों। उन्हें क़ुर्आन जैसी इ़ज़्ज़त वाली जामेअ़ किताब के बाद किस मोअ़जिज़ह का इन्तिज़ार है जिसे देखकर ईमान ले आएँगे?

186 مَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ ۚ وَيَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ۝

अल्लाह की मख़्लूक़ात में फ़िक्र व नज़र भी उसी के लिए मुफ़ीद है जिसे अल्लाह तौफ़ीक़ दे और जिसे अल्लाह तौफ़ीक़ नहीं देगा वह सरकशी व गुमराही में भटकता ही रहेगा। जैसा कि अल्लाह तअ़ाला ने सूरः माइदा आयत (41) में फ़रमाया है وَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ فِتْنَتَهٗ فَلَنْ تَمْلِكَ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ۚ कि "जिसे अल्लाह फ़ित्ना में डालना चाहेगा, उसे आप कोई फ़ायदा नहीं पहुँचा सकेंगे।"

187 يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرْسٰىهَا ۚ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّيْ ۚ لَا يُجَلِّيْهَا لِوَقْتِهَآ اِلَّا هُوَ ۘ ثَقُلَتْ فِي
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ لَا تَاْتِيْكُمْ اِلَّا بَغْتَةً ۚ يَسْـَٔلُوْنَكَ كَاَنَّكَ حَفِيٌّ عَنْهَا ۚ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ
النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ۝

बाज़ कुफ़्फ़ारे कुरैश क़ियामत को नहीं मानते थे, क़ुर्आन और रसूलुल्लाह (सल्ल०) को झुठलाते हुए आप (सल्ल०) से पूछा कि क़ियामत कब आएगी? तो यह आयत नाज़िल हुई कि अगर आप से क़ियामत के बारे में पूछा जाए तो कह दीजिए कि उस का इ़ल्म सिर्फ़ अल्लाह को है, आसमान और ज़मीन में रहने वाले इस का इ़ल्म नहीं रखते और क़ियामत बिल्कुल अचानक आएगी।

सहीह़ अहादीस से भी इस की ताईद होती है। दोबारा ताकीद के तौर पर अल्लाह ने फ़रमाया कि यह लोग क़ियामत के बारे में आप से इस तरह़ पूछते हैं कि जैसे आप को इस का इ़ल्म है। आप कह दीजिए कि क़ियामत का इ़ल्म सिर्फ़ अल्लाह को है।

ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "क़ियामत (इस तरह़ अचानक) वाक़ेअ़ होगी कि दो आदमियों ने अपने दर्मियान कपड़ा फैला रखा होगा और वह उस की ख़रीद फ़रोख़्त न कर सकेंगे, न ही उसे लपेट सकेंगे। एक आदमी अपनी ऊँटनी का दूध दुह कर लौट रहा होगा मगर उसे पी न सकेगा और एक आदमी अपना ह़ौज़ दुरुस्त कर रहा होगा मगर वह उस में से अपने जानवर को पानी न पिला सकेगा और एक आदमी अपना निवाला मुँह की तरफ़ उठाएगा मगर वह उसे खा नहीं सकेगा।" (बुख़ारी)

आयत नं० 188 से 206 तक

قُلْ لَّآ اَمْلِكُ لِنَفْسِيْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ وَلَوْ كُنْتُ اَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ ۛۚ وَمَا مَسَّنِيَ السُّوْٓءُ ۛۚ اِنْ اَنَا اِلَّا
نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ اِلَيْهَا ۚ فَلَمَّا تَغَشّٰىهَا حَمَلَتْ
حَمْلًا خَفِيْفًا فَمَرَّتْ بِهٖ ۚ فَلَمَّآ اَثْقَلَتْ دَّعَوَا اللّٰهَ رَبَّهُمَا لَئِنْ اٰتَيْتَنَا صَالِحًا لَّنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ۝ فَلَمَّآ اٰتٰىهُمَا صَالِحًا جَعَلَا
لَهٗ شُرَكَآءَ فِيْمَآ اٰتٰىهُمَا ۚ فَتَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝ اَيُشْرِكُوْنَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ۝ وَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ لَهُمْ نَصْرًا
وَّلَآ اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ۝ وَاِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى لَا يَتَّبِعُوْكُمْ ؕ سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ اَدَعَوْتُمُوْهُمْ اَمْ اَنْتُمْ صَامِتُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ
تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ عِبَادٌ اَمْثَالُكُمْ فَادْعُوْهُمْ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ اَلَهُمْ اَرْجُلٌ يَّمْشُوْنَ بِهَآ ۚ اَمْ لَهُمْ
اَيْدٍ يَّبْطِشُوْنَ بِهَآ ۚ اَمْ لَهُمْ اَعْيُنٌ يُّبْصِرُوْنَ بِهَآ ۚ اَمْ لَهُمْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ؕ قُلِ ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ كِيْدُوْنِ فَلَا تُنْظِرُوْنِ ۝
اِنَّ وَلِيِّ َۧ اللّٰهُ الَّذِيْ نَزَّلَ الْكِتٰبَ ۖ وَهُوَ يَتَوَلَّى الصّٰلِحِيْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَكُمْ وَلَآ
اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ۝ وَاِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى لَا يَسْمَعُوْا ؕ وَتَرٰىهُمْ يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ ۝ خُذِ الْعَفْوَ وَاْمُرْ
بِالْعُرْفِ وَاَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِيْنَ ۝ وَاِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا اِذَا
مَسَّهُمْ طٰٓئِفٌ مِّنَ الشَّيْطٰنِ تَذَكَّرُوْا فَاِذَا هُمْ مُّبْصِرُوْنَ ۝ وَاِخْوَانُهُمْ يَمُدُّوْنَهُمْ فِي الْغَيِّ ثُمَّ لَا يُقْصِرُوْنَ ۝ وَاِذَا لَمْ تَاْتِهِمْ
بِاٰيَةٍ قَالُوْا لَوْلَا اجْتَبَيْتَهَا ؕ قُلْ اِنَّمَآ اَتَّبِعُ مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ مِنْ رَّبِّيْ ۚ هٰذَا بَصَآئِرُ مِنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ
يُّؤْمِنُوْنَ ۝ وَاِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ وَاَنْصِتُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ فِيْ نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَّخِيْفَةً وَّدُوْنَ
الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ وَلَا تَكُنْ مِّنَ الْغٰفِلِيْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ
وَيُسَبِّحُوْنَهٗ وَلَهٗ يَسْجُدُوْنَ ۩ ۝ سجدة

अनुवाद–

(188) कह दीजिए, ''मैं अपने फ़ायदे और नुक़्सान का कुछ भी अख़्तियार नहीं रखता, मगर जो अल्लाह चाहे; और अगर मैं ग़ैब की बातें जानता होता तो बहुत से फ़ायदे जमा कर लेता और मुझको कोई तकलीफ़ न पहुँचती; मैं तो बस सचेत करने वाला और ख़ुशख़बरी देने वाला हूँ, जो ईमान लाए।''
(189) 'वही' है जिसने तुम्हें एक जान (व्यक्ति) से पैदा किया और उसी से उसका जोड़ा बनाया, ताकि उससे राहत ह़ासिल करे, जब वह उसके पास जाता है तो हल्का सा ह़मल रुक जाता है सो वह उसे लिए हुए चलती-फिरती है जब वह बोझल हो जाती, तो दोनों अपने रब अल्लाह को पुकारते हैं कि ''अगर 'तूने' सही़ सालिम (बच्चा) दिया, तो ज़रूर हम तेरे शुक्रगुज़ार होंगे।''
(190) 'उसने' जब उन्हें सही़ सालिम (बच्चा) दिया, तो जो उन्हें दिया उसमें वे दोनों उस (अल्लाह) का साझी ठहराने लगे, तो अल्लाह तो इससे बुलन्द है, जो वे साझी ठहराते हैं;
(191) क्या वे उसको साझी ठहराते हैं, जो कुछ भी पैदा नहीं कर सकते और वे खुद पैदा किये जाते हैं;
(192) और वे न तो उनकी मदद करने की ताक़त रखते हैं, और न खुद अपनी ही मदद कर सकते हैं?
(193) और अगर तुम उन्हें सीधी राह की ओर बुलाओ, तो वे तुम्हारी पैरवी न करेंगे; तुम्हारे लिए बराबर है कि तुम उन्हें पुकारो या खामोश रहो।
(194) तुम अल्लाह को छोड़ कर जिसे पुकारते हो वे तो तुम्हारे

ही जैसे बन्दे हैं; तो पुकार लो उनको, ''अगर तुम सच्चे हो'' तो उन्हें चाहिए कि तुम्हें जवाब भी दें। (195) क्या उनके पैर हैं जिनसे वे चलते हों या उनके हाथ हैं जिनसे वे पकड़ते हों या उनके पास आँखें हैं जिनसे वे देखते हों या उनके कान हैं जिनसे वे सुनते हों? कह दीजिए, ''तुम अपने ठहराए हुए साझीदारों को बुला लो, फिर मेरे ख़िलाफ़ चाल बाज़ी करो, इस तरह कि मुझे मोहलत न दो। (196) मेरा वली (संरक्षक) अल्लाह है, जिसने यह किताब उतारी और 'वह' अच्छे लोगों का वली (संरक्षक) है। (197) और जिनको तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो, वे न तो तुम्हारी मदद करने की ताक़त रखते हैं और न खुद अपनी ही मदद कर सकते हैं। (198) और अगर तुम उन्हें सीधी राह की ओर बुलाओ तो वे न सुनेंगे, वे तुम्हें ऐसे दिखाई देते हैं कि जैसे वे तुम्हारी ओर ताक रहे हों, हालाँकि वे कुछ भी नहीं देखते। (199) माफ़ करने को अपनाइए और भलाई का हुक्म देते रहिए और नादानों से किनारा कर लीजिए। (200) और अगर शैतान की ओर से तुम्हारे दिल में किसी तरह़ का कोई वस्वसा पैदा हो तो अल्लाह की पनाह माँगो। बेशक वह सब कुछ सुनता, जानता है। (201) जो लोग परहेज़गार हैं, जब उनको शैतान की ओर से कोई वस्वसा (ख़याल) पैदा होता है, तो चौंक पड़ते हैं फिर वे (मन में) देखने लगते हैं। (202)और उन (शैतानों) के भाई उन्हें गुमराही में खींचे लिए जाते हैं फिर वे कोई कमी नहीं करते। (203) और जब आप उनके सामने कोई निशानी नहीं लाते तो कहते हैं, ''तुम क्यों नहीं बना लाए?'' कह दीजिए, ''मैं तो केवल उसी की पैरवी करता हूँ जो मेरे रब की ओर से वह्य की जाती है, यह मेरे रब की ओर से दानिश व बसीरत (अन्तर्दृष्टियों का प्रकाश) है, और ईमान लाने वालों के लिए हिदायत और रह़मत है'' (204) और जब कुर्आन पढ़ा जाए तो उसे ध्यान से सुनो और खामोश रहो, ताकि तुम पर रह़म किया जाए; (205) और अपने 'रब' को अपने मन में सुबह़ और शाम आ़जिज़ी (विनम्रता पूर्वक) और ख़ौफ़ से, और हल्की आवाज़ के साथ याद किया करो; और उन में से न होना जो ग़फ़्लत में पड़े हुए हैं। (206) जो लोग आप के रब के पास हैं वे उसकी इबादत के मुक़ाबले में नाशुक्री नहीं करते; और उसकी तस्बीह़ (महिमागान) करते हैं और उसको सज्दः करते रहते हैं।

आयत नं० 188 से 206 तक की व्याख्या

188 قُلْ لَّآ اَمْلِكُ لِنَفْسِيْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ۭ وَلَوْ كُنْتُ اَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ ۚ وَمَا مَسَّنِيَ السُّوْٓءُ ۚ اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ

अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) को हुक्म दिया कि आप अल्लाह के लिए अपनी अ़िबादत का ए़लान कर दें और अपने बारे में लोगों को बता दें कि आप ग़ैबी चीज़ों की कोई ख़बर नहीं रखते, आप को सिर्फ़ वही बातें मालूम हैं जिन की ख़बर अल्लाह ने आप को वह्य के ज़रिये दी है।

सूरः यूनुस आयत नं० 48/49 में भी यही बात कही गई है, मज़ीद ताकीद के तौर पर फ़रमाया कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) को ग़ैब का इ़ल्म नहीं था, आप (सल्ल०) ने कुर्आन की ज़बान में फ़रमाया कि "अगर मुझे ग़ैब का इ़ल्म होता तो पहले से ही अस्बाब जमा करके अपने लिए मुनाफ़ेअ़ ह़ासिल कर लेता। जैसे-क़ह़त साली के ज़माने के लिए ज़रखेज़ी और खुशह़ाली के दिनों में ही उस की तैयारी कर लेता तो मुझे कोई तक्लीफ़ न होती, लेकिन ऐसा नही कर सकता।" यह दलील है इस बात की कि मैं ग़ैब का इ़ल्म

नहीं रखता हूँ, मैं तो अल्लाह की वह्य के मुताबिक़ अल्लाह पर ईमान रखने वालों को सिर्फ़ उस का पैग़ाम पहुँचाने आया हूँ।

189-190 هُوَ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ إِلَيْهَا ۖ فَلَمَّا تَغَشَّاهَا حَمَلَتْ
حَمْلًا خَفِيفًا فَمَرَّتْ بِهِ ۖ فَلَمَّا أَثْقَلَت دَّعَوَا اللَّهَ رَبَّهُمَا لَئِنْ آتَيْتَنَا صَالِحًا لَّنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ ۝
فَلَمَّا آتَاهُمَا صَالِحًا جَعَلَا لَهُ شُرَكَاءَ فِيمَا آتَاهُمَا ۚ فَتَعَالَى اللَّهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝

अल्लाह तआ़ला ने अहले कुफ़्र और अहले शिर्क को उन की जाहिलाना बातों पर तम्बीह की है, कि वह अल्लाह तआ़ला के साथ ग़ैरों को शरीक बनाने की जुर्रत कैसे करते हैं? और उन की अ़क़्ल उसे कैसे क़ुबूल कर लेती है? इसलिए कि उन का ख़ालिक़ अल्लाह है जिस ने उन्हें आदम से पैदा किया और आदम से उन की बीवी ह़व्वा को और फिर हर मर्द के लिए उसी के जिन्स से उस की बीवी को पैदा किया ताकि उस की क़ुर्बत से उसे सुकून ह़ासिल हो। इसलिए कि अगर बीवी उसी जिन्स से न होती तो दोनों एक दूसरे से मुह़ब्बत न ह़ासिल कर सकते, तो जिस अल्लाह ने उन्हें और उन की बीवियों को पैदा किया वही अ़िबादत के लायक़ है।

फिर मुश्रिक की एक और ह़ालत यह है कि जब वह अपनी बीवी से हम बिस्तरी (सम्भोग) करता है और ह़मल (भ्रूण) क़रार पा जाता है और कई मराह़िल से गुज़र कर जब पेट में बच्चा ह़रकत करने लगता है तो दोनों मियाँ-बीवी मिल कर दुआ़ करते हैं कि अगर अल्लाह ने सह़ीह़ सालिम बच्चा दिया तो अल्लाह का ख़ूब शुक्र अदा करेंगे, लेकिन जब सह़ी सालिम बच्चा पैदा हो जाता है तो उस के बाद दोनों कहना शुरु करते हैं कि यह तो हमारे बुतों और मअ़बूदों की देन है, जैसा कि हर ज़माने में मुश्रिकीन करते आये हैं कि औलाद देने वाला और रोज़ी देने वाला अल्लाह के सिवा ग़ैरों को मानते रहे हैं।

रह़म में बच्चा पैदा होने में अल्लाह के क़ुद्रत की बेशुमार निशानियाँ मौजूद हैं। बच्चे के जिस्मानी ख़वास (Qualities) कम से कम 60,000 की तअ़दाद में ऐसे हैं जिन के बारे में ह़मल होते वक़्त तय हो जाता है कि कौन सी ख़ासियत माँ की तरफ़ से हो और कौन सी बाप की तरफ़ से।

जैसे- अगर हम 30,000 खुसूसियात को माँ और 30,000 को बाप की तरफ़ से मान लें तो बाप के 200 मिलियन ख़लिये (sperms) माँ के सिर्फ़ एक तुख़म (ovum) के मुक़ाबिल आते हैं। अगर माँ से सम्बन्धित ख़वास को इन 1, 3, 6, 45, 80, 100, 11804 नम्बरों से ज़ाहिर करें तो बक़िया नम्बरों वाले ख़वास बाप के नुत्फ़े से होंगे, जब कि इस सारे अ़मल को एक घंटे में मुकम्मल होना होता है।

तौह़ीद के उसूल यह हैं-

(1) जो कुछ पैदा नहीं कर सकता वह मअ़बूद नहीं हो सकता।

(2) जो ख़ुद मख़्लूक़ हो वह मअ़बूब नहीं हो सकता।

याद रहे आज तक किसी जिन्न या इन्सान ने कोई जानदार न पैदा किया है और न ही कोई बेजान माद्दह (Matter) पैदा किया है। दुनिया भर के इन्जीनियर और साइंसदान मिलकर एक एटम (Atom)

भी नहीं बना सकते।

मुश्रिकीने मक्का आप (सल्ल०) से कहा करते थे कि हमारे मअ़बूदों की बेअदबी छोड़ दो यह तुम पर कोई आफ़त नाज़िल कर देंगे। जैसे- इन आयतों से वाज़ेह होता है।

"और यह लोग तो आप को ग़ैरुल्लाह से डराते हैं।" **(अल् ज़ुमर-36)**

बहुत से मुफ़स्सिरीन इस आयत की तफ़्सीर में बाज़ रिवायात व आसार की बुनियाद पर इस आयत का मिस्दाक़ आदम व हव्वा को क़रार दिया है, जो सही नहीं है। इब्ने जरीर, हाफ़िज़ इब्ने कसीर वग़ैरहुम ने इस पर सख़्त नकीर की है और आयत की वही तफ़्सीर बयान की है जो अभी ऊपर गुज़री है। ह़सन बसरी से भी यही तफ़्सीर नक़्ल की गई है।

191 أَيُشْرِكُونَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلَقُونَ

यह कैसी अ़जीब बात है कि मुश्रिकीन अल्लाह की मख़्लूक़ को उस का शरीक बताते हैं, जो एक मक्खी भी पैदा नहीं कर सकते। जैसा कि सूरः ह़ज आयत नं० (73) में है।

192 وَلَا يَسْتَطِيعُونَ لَهُمْ نَصْرًا وَلَا أَنفُسَهُمْ يَنصُرُونَ

न वह ख़ुद अपनी मदद कर सकते हैं और न अपने अ़िबादत करने वालों की मदद कर सकते हैं। जैसा कि अल्लाह ने सूरः ह़ज आयत नं० (73) में फ़रमाया कि अगर मक्खी उन से कोई चीज़ छीन ले, तो उसे भी वह वापस नहीं ले सकते।

193 وَإِن تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ لَا يَتَّبِعُوكُمْ ۚ سَوَاءٌ عَلَيْكُمْ أَدَعَوْتُمُوهُمْ أَمْ أَنتُمْ صَامِتُونَ

मुश्रिकीन अगर अपने बुतों को हिदायत की दअ़वत देंगे तो वह उन की पैरवी भी नहीं करेंगे। इसलिए कि बेजान बुतों के लिए हिदायत व गुमराही दोनों बराबर है।

194 إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ عِبَادٌ أَمْثَالُكُمْ ۖ فَادْعُوهُمْ فَلْيَسْتَجِيبُوا لَكُمْ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ

बुतों की यह बड़ी तौहीन है और बुत परस्तों की अ़क़्लों पर मातम कि वह ऐसी चीज़ों की अ़िबादत करते हैं जो पूरे तौर पर उन का जवाब देने से आ़जिज़ हैं।

195 أَلَهُمْ أَرْجُلٌ يَمْشُونَ بِهَا ۖ أَمْ لَهُمْ أَيْدٍ يَبْطِشُونَ بِهَا ۖ أَمْ لَهُمْ أَعْيُنٌ يُبْصِرُونَ بِهَا ۖ أَمْ لَهُمْ آذَانٌ
يَسْمَعُونَ بِهَا ۗ قُلِ ادْعُوا شُرَكَاءَكُمْ ثُمَّ كِيدُونِ فَلَا تُنظِرُونِ

मुश्रिकीन की मज़ीद मज़म्मत और उन की अ़क़्लों पर बार-बार मातम के तौर पर अल्लाह तआ़ला ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को हुक्म दिया कि आप मुश्रिकीन से कहिए कि जिन बुतों को तुम अल्लाह का शरीक ठहराते हो, उन्हें मेरे ख़िलाफ़ अपनी मदद के लिए बुला लो और तुम सब मिलकर मुझे मोहलत भी न दो तो क्या मेरा कुछ बिगाड़ सकोगे? हरगिज़ नहीं, इसलिए कि तुम्हें अपने बुतों के पूरे तौर पर आ़जिज़ होने का पता है।

ये शिर्क (बहुदेववाद) के चिन्ह अर्थात बुत हैं जिनको बहुदेववादियों ने खुदा बना रखा है। इसके

अनौचित्य को स्पष्ट करने के लिए यहाँ कुछ प्रश्न किये गये हैं। मतलब यह है कि ये बुत मानव रूपी तो बनाये गये हैं लेकिन हाथ, पांव, आँखे, कान, सब दिखावे के हैं। इन में न चलने, फिरने की ताक़त है और न पकड़ने की, न सुनने की शक्ति है और न देखने की, फिर यह ख़ुदा कैसे हुए? मगर जो अ़क्ल के अंधे होते हैं उन को न इस बात में कोई संकोच होता है कि अपने ख़ुदाओं को अपने हाथ से बनाएँ और न इस बात में कि जिनके अन्दर ख़ुदा होने के गुण तो दरकिनार, मनुष्यों के गुण भी न पाये जाते हों उन को मुश्किलें आसान करने वाला और ज़रुरतों को पूरा करने वाला समझ कर उनकी उपासना करें और न ही उन्हें इस बेकार की ह़रकत पर तनिक भी शर्म मह़सूस होती है कि अपने ख़ुदाओं को अपने हाथों समुद्र में डुबो दें।

रहा बुत परस्तों का यह कहना कि बुत असल में ईशभक्ति का माध्यम हैं तो यह बात सरासर सत्य के विपरीत हैं, क्योंकि बुत परस्त एक ख़ुदा पर नहीं बल्कि बहुत से ख़ुदाओं पर आस्था रखते हैं दूसरी बात यह कि व्यवहारिक रूप से वे बुतों ही को सब कुछ समझते हैं और उन्हें ख़ुदा का दर्जा देते हैं।

आयत में बुत परस्तों की मूर्खता को जिस तरह़ स्पष्ट किया गया है उस से मिलती जुलती बात ज़बूर (भजन संहिता) में भी मौजूद है।

"उन लोगों की मूर्तियाँ सोने चाँदी ही की तो हैं, वे मनुष्यों के हाथ की बनाई हुई हैं। उन के मुँह तो रहता है परन्तु वह बोल नहीं सकतीं उनकी आँखें तो होती है परन्तु वे देख नहीं सकतीं, उन के कान तो रहते हैं परन्तु वे सुन नहीं सकतीं, उन के नाक तो होती है परन्तु वे सूंघ नहीं सकतीं। उनके हाथ तो होते हैं परन्तु वे स्पर्श नहीं कर सकतीं, उनके पांव तो होते हैं परन्तु वे चल नहीं सकतीं और अपने कण्ठ से कुछ शब्द नहीं निकाल सकतीं। जैसे वह हैं वैसे ही उनके बनाने वाले और उन पर सब भरोसा रखने वाले भी वैसे ही हो जाएँगे। हे इस्राईल! यहोवा पर भरोसा रख! तेरा सहायक और ढ़ाल वही है।
(भजन संहिता 115: 4, 5, 6, 7, 8, 9)

यह बहुदेव वादियों को चैलेंज है उन की उन धमकियों के जवाब में जो वे नबी (सल्ल०) को देते थे कि तुम हमारे बुतों का जो विरोध करते हो तो उसके फ़लस्वरूप तुम पर उन का प्रकोप अवश्य टूट पड़ेगा। उन को चैलेंज किया गया कि अगर तुम्हारे इन उपास्यों में कोई बलबूता है तो उन को बुलाओ, वे मेरे विरुद्ध तुम्हारी सहायता करें और फिर तुम सब मिलकर मेरे विरुद्ध जो कार्रवाई करना चाहो कर गुज़रो। इस चैलेंज के बाद जब वे नबी (सल्ल०) का कुछ बिगाड़ न सके बल्कि मक्का में आप के विजेता के रूप में प्रवेश के बाद आप के हाथों बुतों की जो दुर्गत बनी उसने यह साबित कर दिया कि इन बुतों के ख़ुदा होने का दावा झूठा था और अल्लाह ही वास्तविक ख़ुदा है।

196 إِنَّ وَلِـۧيَ ٱللَّهُ ٱلَّذِي نَزَّلَ ٱلۡكِتَٰبَۖ وَهُوَ يَتَوَلَّى ٱلصَّٰلِحِينَ ۝

मैं तो तुम्हारी और तुम्हारे मअ़बूदों की बिल्कुल परवाह नहीं करता हूँ, क्योंकि मेरा ह़ामी व मदद्गार तो वह अल्लाह है जिस ने मुझ पर क़ुर्आन नाज़िल किया है और वह हमेशा अपने नेक बन्दों का मदद्गार

होता है।

197 وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَكُمْ وَلَآ اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ

तुम्हारे मअ़बूद और तुम्हारे पत्थर के बुत तुम्हारी कुछ भी मदद व ह़िमायत नहीं कर सकते हैं।

198 وَاِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى لَا يَسْمَعُوْا ۭ وَتَرٰىهُمْ يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ

वह तुम्हारी पुकार को नहीं सुनते हैं इसलिए कि उन के कान नहीं हैं, अगरचे तुम ने अपने हाथों से उन के कान बना दिये हैं, लेकिन वह बन्द हैं, तुम्हें देखते नहीं हैं। अगरचे ऐसा मालूम होता है कि वह अपनी पथरीली आँखों से तुम्हें देख रहे हैं। फिर बताओ तो सही कि मैं उन पत्थरों के मअ़बूदों की क्या परवाह करूँ?!

199 خُذِ الْعَفْوَ وَاْمُرْ بِالْعُرْفِ وَاَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِيْنَ

अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) को हुक्म दिया कि गुस्से के बजाय लोगों के साथ माफ़ी व दरगुज़र का मामला करें, इसलिए कि वअ़ज़ व नसीह़त में यही तरीक़ा बेहतर है और लोगों को अच्छे कामों का हुक्म दें। जिन्हें इन्सान आसानी से कर लेता है और नादानों के साथ सख़्ती का मामला न करें और अगर आप के साथ वह बद्‌सुलूकी करें तो नज़र अन्दाज़ कर जाएँ और सब्र से काम लें।

200 وَاِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ۭ اِنَّهٗ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ

अगर शैतान आप को नादानी और बद्‌सुलूकी पर उन के ख़िलाफ़ उभारे और गुस्सा दिलाये और दिल में वस्वसा पैदा करे कि माफ़ी व दरगुज़र और नेकी की राह छोड़ दीजिए तो फ़ौरन मरदूद शैतान से पनाह माँगिए और दुआ़ कीजिए कि अल्लाह उसे आप से दूर कर दे, क्योंकि शैतान के फ़ित्नों से बचने का यही एक रास्ता है कि इन्सान अल्लाह तआ़ला की पनाह में आ जाए।

201 اِنَّ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا اِذَا مَسَّهُمْ طٰۗىِٕفٌ مِّنَ الشَّيْطٰنِ تَذَكَّرُوْا فَاِذَا هُمْ مُّبْصِرُوْنَ

अल्लाह से डरने वालों का ह़ाल यह होता है कि जब उन्हें कोई शैतानी वस्वसा लाह़िक़ होता है तो उन्हें याद आता है कि फ़ौरन **अऊज़ुबिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम** पढ़ना चाहिए और अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए। चुनाँचे ऐसा करने से उन्हें अपनी ग़ल्तियाँ समझ में आती हैं और शैतान की साज़िशों का पता चल जाता है और अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से उन साज़िशों से मह़फ़ूज़ हो जाते हैं।

202 وَاِخْوَانُهُمْ يَمُدُّوْنَهُمْ فِي الْغَيِّ ثُمَّ لَا يُقْصِرُوْنَ

लेकिन जो अल्लाह से नहीं डरते वह शैतान के भाई होते हैं उन्हें शैतान के वस्वसों से पनाह माँगना याद नहीं आता और शयातीन उन के दिल व दिमाग़ में ख़ूब शुब्हात (शक) पैदा करते हैं, गुनाहों को खुशनुमा (सुन्दर) बनाकर पेश करते हैं और उन्हें कर गुज़रने को उन के लिए आसान बना देते हैं। आख़िरकार वह लोग उन गुनाहों को कर बैठते हैं और फिर उसी राह पर चल पड़ते हैं।

203 وَإِذَا لَمْ تَأْتِهِمْ بِآيَةٍ قَالُوا لَوْلَا اجْتَبَيْتَهَا ۚ قُلْ إِنَّمَا أَتَّبِعُ مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ مِنْ رَبِّي ۚ هَٰذَا بَصَائِرُ مِنْ رَبِّكُمْ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝

मुश्रिकीन की बहुत सी गुमराहियों में से एक गुमराही यह भी थी कि वह कभी-कभी रसूलुल्लाह (सल्ल०) से मख़्सूस निशानियों का मुताल्बा (भंग) करते और मक़्सद रसूलुल्लाह (सल्ल०) को परेशान करना और उन का मज़ाक़ उड़ाना होता था, वरना सब से अ़ज़ीम मोअ़जिज़ह क़ुर्आन करीम तो उन के सामने उतरता ही रहता था और उस की आयतें अहले ईमान की आँखे खोलने के लिए काफ़ी थीं। जब मुश्रिकीन किसी निशानी का मुताल्बा करते और रसूलुल्लाह (सल्ल०) उसे उन के सामने पेश करते तो बतौर मज़ाक़ कहते कि तुम उसे अपनी तरफ़ से गढ़ क्यों नहीं लेते? तो अल्लाह तआ़ला ने आप से फ़रमाया, आप कह दीजिए कि मैं अल्लाह का बन्दा और उस का रसूल हूँ, मैं अल्लाह पर झूठ नहीं बाँधता, मुझे तो बज़रिये वह्य जो कुछ बताया जाता है उसी की इत्तिबअ़ करता हूँ और यह क़ुर्आन अ़ज़ीम तो दिल की आँखो को खोलता और उसे समझ अ़ता करके भलाई की तरफ़ रहनुमाई करता है और जहन्नम के अ़ज़ाब से बचने का ज़रिया है।

उ़लम-ए-तफ़्सीर लिखते हैं, यह आयत दलील है कि नबी करीम (सल्ल०) का हर क़ौल व अ़मल वह्य इलाही के मुताबिक़ होता था और जब तक अल्लाह की तरफ़ से हुक्म न मिल जाता आप अपनी तरफ़ से कुछ भी नहीं करते थे।

नबी करीम (सल्ल०) ने अहले मक्का को उन के मुताल्बे पर एक अ़ज़ीम मोअ़जिज़ा दिखाया। जैसे- ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि०) से रिवायत है, "नबी (सल्ल०) से अहले मक्का ने किसी निशानी का मुताल्बा किया तो आप ने उन्हें चाँद के टुकड़े होते हुए दिखाया।" **(सहीह़ बुख़ारी, अल् मनाकिब, बाबः 27 ह़दीस 3637)**

लेकिन इस का उन्हें कोई फ़ायदा नहीं हुआ, इसीलिए अल्लाह तआ़ला कुफ़्फ़ार के कहने पर आ़मतौर पर मोअ़जिज़ा नहीं दिखाता था बल्कि मोअ़जिज़े का ज़ुहूर उसी वक़्त होता था जब अल्लाह की मर्ज़ी होती थी।

204 وَإِذَا قُرِئَ الْقُرْآنُ فَاسْتَمِعُوا لَهُ وَأَنْصِتُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝

क़ुर्आन पढ़ने और सुनने के आदाब

इन आयात में क़ुर्आन मजीद सुनने का हुक्म फ़रमाया है और बाज़ अह़काम व आदाब इर्शाद फ़रमाये हैं। पहले तो यह फ़रमाया कि जब क़ुर्आन मजीद पढ़ा जाए तो उसे ध्यान से सुनो और ख़ामोश रहो तो क़ुर्आन पढ़ने वाले को चाहिए कि क़ुर्आन पढ़ने में इसका ख़याल रखे कि जिन कानों में आवाज़ पहुँच रही है वह लोग कामकाज और नींद में तो मश्गूल नहीं हैं। अगर लोग अपने कामों में मसरूफ़ (व्यस्त) हों या सो रहे हों तो ऊँची आवाज़ से तिलावत न करे क्योंकि काम में लगे हुए लोग क़ुर्आन मजीद की तरफ़ तवज्जोह नहीं कर सकते। पढ़ने वाले पर लाज़िम है कि ऐसी सूरते ह़ाल पैदा न करे कि ह़ाज़िरीन

के कानों में क़ुर्आन मजीद की आवाज़ आ रही हो और कामकाज की मश्ग़ूलियत की वजह से क़ुर्आन मजीद सुनने की तरफ़ तवज्जोह न कर सकें। क़ारी जब यह देखे कि तवज्जोह से सुनने वाले मौजूद हैं तो ज़ोर की आवाज़ से तिलावत करे, जो लोग मश्ग़ूल नहीं हैं उन पर लाज़िम है कि ख़ामोश रहें और ध्यान लगाकर सुनें, भले ही अ़रबी न समझते हों।

क़ुर्आन पढ़ा जा रहा हो और लोग बातें कर रहे हों तो यह क़ुर्आन की बेअदबी है। यह हुक्म कि "जब क़ुर्आन मजीद पढ़ा जाए तो ख़ामोश रहो और ध्यान से सुनो" नमाज़ और नमाज़ से बाहर दोनों का हुक्म यही है जो लोग इमाम के पीछे नमाज़ में खड़े हों उन के लिए तो ग़ाफ़िल होने का मौक़ा ही नहीं है। कारोबार और दुकान छोड़कर आते हैं, मस्जिद में मौजूद हैं और जब तक नमाज़ में हैं दुनिया का कोई काम भी नहीं कर सकते। फिर भी इमाम के क़िरात की तरफ़ मुतवज्जेह न हो तो यह सख़्त महरूमी की बात है।

इमाम के पीछे ख़ामोश रहने का हुक्म-

'ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़०)' के नज़्दीक़ मुक़्तदी को इमाम के पीछे सूरः फ़ातिह़ा या कोई सूरत पढ़ना मना है।

इस आयत में क़ुर्आन मजीद की तिलावत के सुनने और तिलावत के वक़्त ख़ामोश रहने का जो हुक्म फ़रमाया है। यह हुक्म नमाज़ की मश्ग़ूलियत के वक़्त हो या नमाज़ से बाहर हो, सह़ी मुस्लिम पेज नं० 174 भाग 1 में है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया واذا قرأ فانصتوا

(कि जब इमाम पढ़े तो ख़ामोश रहो) इमाम मुस्लिम ने सिर्फ़ इस ह़दीस की तख़रीज की और साफ़-साफ़ यह भी फ़रमाया कि यह ह़दीस सह़ीह़ है, इस के अल्फ़ाज़ भी आ़म हैं। जहरी (आवाज़ वाली नमाज़ें) और सिर्री (बिना क़िरत वाली) दोनों नमाज़ों को शामिल है।

इमाम के पीछे क़िरत पढ़ने की दलील-

ह़ज़राते सह़ाब-ए-किराम रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम अजमई़न के आसार व अक़्वाल से भी इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़०) के मस्लक की ताईद होती है। ह़ज़रत ज़ैद बिन साबित (रज़ि०) से ह़ज़रत अ़ता बिन यसार ताबई़ (रह़०) ने इमाम के साथ क़िरात पढ़ने के बारे में दर्याफ़्त किया तो उन्होंने फ़रमायाः-

لا قراءة مع الإمام في شيء **(सह़ीह़ मुस्लिम पेज नं० 410 भाग 1)** यानी इमाम के साथ नमाज़ में कोई भी क़िरत नहीं।

ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि०) ने फ़रमायाः-

من صلى ركعة لم يقرأ فيها **بأم القرآن** فلم يصل الا ان يكون وراء الامام

(سنن ترمذی باب ما جاء فی ترك قراءة خلف الامام اذا جهر با لقراءة)

यानी जिस शख़्स ने कोई रकअ़त पढ़ी जिस में उम्मुल् क़ुर्आन (सूरः फ़ातिह़ा) न पढ़ी तो उस ने नमाज़ नहीं पढ़ी सिवाय यह कि इमाम के पीछे हो (यानी अगर इमाम के पीछे हो तो सूरः फ़ातिह़ा न पढ़े।)

इमाम तिर्मिज़ी (रह़०) फ़रमाते हैं कि यह ह़दीस ह़सन है सह़ी है और यह भी फ़रमाते हैं कि इमाम अह़मद बिन ह़म्बल ने इस ह़दीस से दलील ली है कि

لاصلوٰۃ لمن لم یقرأ بفاتحۃ الکتاب यह तन्हा नमाज़ पढ़ने वाले के लिए है।

(قال احمد وھذا رجل من اصحاب النبی صلی اللہ علیہ وسلم تأول قول النبی صلی اللہ علیہ وسلم تأول قول النبی صلی اللہ علیہ وسلم لاصلوٰۃ لمن یقرء بفاتحۃ الکتاب ان ذلک اذا کان وحدہ۔

शरह़ मआ़नी अल् आसार में इमाम तह़ावी, (बाबुल् किरः ख़ल्फ़ल् इमाम) में ह़ज़रत अ़ली (रज़ि०) से रिवायत है कि من قرأ خلف الامام فلیس علی الفطرۃ

(जो शख़्स इमाम के पीछे क़िरत पढ़े वह फ़ित्रत पर नहीं है।)

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) ने फ़रमाया-

انصت للقرأۃ فإن فی الصلوٰۃ شغلا فسیکفیک ذلک الامام

(क़िरात के लिए ख़ामोश हो जाओ क्योंकि नमाज़ में मश्ग़ूलियत है और इस बारे में इमाम तुम्हारी तरफ़ से काफ़ी है।)

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) ने फ़रमाया ليت الذی یقرأ خلف الامام ملئی فمہ ترابا (काश उस के मुँह में मिट्टी भर दी जाती जो इमाम के पीछे पढ़ता है।)

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) से ह़ज़रत अबू ह़म्ज़ा ने दर्याफ़्त किया क्या मैं इमाम के पीछे पढ़ता हूँ? तो जवाब में फ़रमाया कि नहीं और ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि०) इमाम के पीछे नहीं पढ़ते थे, जब उन से पूछा गया कि इमाम के पीछे पढ़ा जाये तो फ़रमाया,

اذا صلی احدکم خلف الامام فحسبہ قراءۃ الامام यह सब आसार 'शरह़ मआ़नी अल् आसार' में मरवी हैं।

इमाम मालिक और इमाम अह़मद का मस्लक-

ह़ज़रत इमाम अह़मद बिन ह़म्बल (रह़०) का मज़हब भी यह है कि इमाम के पीछे सूरः फ़ातिह़ा या कोई और सूरः पढ़ना वाजिब नहीं है और ह़ज़रत इमाम शाफ़ई (रह़०) का क़ौल क़दीम यह था कि इमाम के पीछे जहरी में क़िरात वाजिब नहीं है और क़िरात सिर्री (आहिस्ता) में वाजिब है और उन का क़ौल जदीद यह है कि सिर्री नमाज़ हो या जहरी मुक़्तदी पर सूरः फ़ातिह़ा पढ़ना वाजिब है।

ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़०) का मज़हब आयते क़ुर्आनिया और ह़दीसे सह़ीह़ा और आसारे सह़ाबा से यह है और ह़ज़रत इमाम मालिक और इमाम अह़मद बिन हम्बल भी इमाम के पीछे पढ़ने की फ़र्ज़ियत के मुन्किर हैं। (उन के नज़्दीक इमाम के पीछे न सूरः फ़ातिह़ा पढ़ना फ़र्ज़ है और न कोई दूसरी सूरत, अल्बत्ता बाज़ ह़ालतों में उन के नज़्दीक सूरः फ़ातिह़ा पढ़ना मुस्तह़ब है। (کما ذکر فی کتب مذھبہم)

قال ابن قدامۃ الحنبلی فی المغنی والمأموم اذا سمع قراءۃ الامام فلا یقرء بالحمد ولا بغیرھا لقول اللہ تعالی واذا قرئ القرآن فاستمعوا لہ وانصتوا لعلکم ترحمون ط ولما روی ابوھریرۃ رضی اللہ

(बाक़ी अगले पेज पर)

حدث ان النبي صلى الله عليه وسلم قال : مالي أنازع القران قال، فانتهى الناس أن يقرؤا فيما جهر

النبي صلى الله عليه وسلم. وجملة ذلك ان ..... المأموم إذا كان يسمع قراءة الامام لم تجب عليه

قراءة ولا تستحب عند امامنا والزهري والثوري ومالك وابن عيينه وابن المبارك واسحاق و

قولى الشافعي ونحوه عن سعيد ابن المسيب وعروة بن الزبير وأبي سلمة بن عبد الرحمن و

سعيد بن جبير وجماعة من السلف، والقول الآخر للشافعي يقراء فيما جهر فيه الامام و نحوه

لليث والأوزاعي وابن عون ومكحول وأبي ثور لعموم قوله عليه السلام "لاصلوٰة لمن لم يقرأ

بفاتحة الكتاب" متفق عليه ..... ولنا قول الله تعالى: وَإِذَا قُرِئَ الْقُرْآنُ فَاسْتَمِعُوا لَهُ وَأَنْصِتُوا

لعلكم تُرْحَمُوْنَ ط قال احمد فالناس على أن هذا في الصلاة - وعن سعيد بن المسيب والحسن و

ابراهيم ومحمد بن كعب والزهري أنها نزلت في شأن الصلاة - وقال زيد بن أسلم وابو العالية

كانوا يقرؤن خلف الامام فنزلت وإذا قرئ القران فاستمعوا له وأنصتوا لعلكم ترحمون ط

قال احمد في رواية ابي داود أجمع الناس على أن هذه الاية في الصلاة ولأنه عام فيتناول

بعمومه الصلاة وروى ابو هريرة قال: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم إنما جعل الامام ليؤتم

به فإذا كبر فكبروا، وإذا قرأ فانصتوا" رواه مسلم (الى ان قال) قال أحمد ما سمعنا احدا من اهل

الاسلام يقول إن الامام إذا جهر بالقرأة لاتجزئ صلاة من خلفه اذا لم يقرأ وقال هذا النبي صلى الله

عليه وسلم وأصحابه والتابعون وهذا مالك في أهل الحجاز وهذا الثوري في أهل العراق وهذا الاوزاعي

في أهل الشام وهذا الليث في أهل مصر ما قالوا لرجل صلى وقرأ امامه ولم يقرأ هو صلاته باطلة

ولانها قراءة لاتجب على المسبوق فلم تجب على غيره كالسورة، فأما حديث عبادة الصحيح فهو محمول على غير المأموم وكذلك

حديث ابي هريرة قد جاء مصرحا به رواه الخلال بإسناده عن جابر أن النبي صلى الله عليه وسلم

قال كل صلوٰة لا يقرأ فيها بأم القران فهي خداج إلا أن تكون وراء الإمام، وقد روى ايضاً

موقوفاً عن جابر، وقول ابي هريرة إقرأ بها في نفسك من كلامه وقد خالفه جابر وابن الزبير

وغيرهما ثم يحتمل انه اراد اقرأ بها في سكتات الإمام أو في حال اسراره فإنه يروى أن النبي صلى الله

عليه وسلم قال: إذا قرأ الإمام فانصتوا' والحديث الآخر وحديث عبادة الآخر فلم يروه **غير ابن**

اسحاق كذلك قاله الامام أحمد وقد رواه ابوداود عن مكحول عن نافع بن محمود بن الربيع **الانصارى**

وهو أدنى حالا من ابن اسحاق فإنه غير معروف من اهل الحديث وقياسهم يبطل **بالمسبوق** (ثم قال

بعد سطور) الاستحباب ان يقرأ في سكتات الامام وفي مالايجهر فيه (الى ان قال) فان لم **يفعل فصلاة** تامة لان

من كان له امام فقراءة الامام له قراءة، وجملة ذلك ان القراءة غير واجبة **على الما موم** فيما جهر به

الامام ولا فيما اسر به نص عليه احمد في رواية الجماعة وبذلك قال **الزهري** والثوري وابن عيينة

ومالك وابوحنيفة واسحاق اهـ

हज़रत इमाम शाफ़ई का क़ौले जदीद बाज़ जमाअ़तों ने अख़्तियार कर लिया है और वह कहते हैं कि जो शख़्स इमाम के पीछे सूरः फ़ातिहा नहीं पढ़ता उसकी नमाज़ होती ही नहीं। दूसरे इख़्तिलाफ़ी मसायल की तरह इस मसले में भी सहाबा (रज़ि०) के दर्मियान इख़्तिलाफ़ था—दोनों तरफ़ दलायल हैं फिर इस में इतना इस्रार करना कि जो हज़रात इमाम के पीछे सूरः फ़ातिहा पढ़ने की फ़र्ज़ियत के क़ायल न हों (जिन में हज़रत इमाम अहमद बिन हम्बल भी हैं) उन को ख़ताकार बताना और जो इमाम के पीछे सूरः फ़ातिहा न पढ़े उस के बारे में (क़समे खा-खाकर) यह कहना कि उन की नमाज़ होती ही नहीं सरासर ग़ल्ती है।

नोट-

जब क़ुर्आन मजीद पढ़ा जाए नमाज़ के अन्दर हो या नमाज़ से बाहर इस के बारे में हाज़िरीन को हुक्म दिया कि क़ुर्आन को सुनें और ख़ामोश रहें यह क़ुर्आन का अदब और एहतिराम है। जिस तरह सुनने वालों को हुक्म है कि क़ुर्आन सुनें और कान धरें और ख़ामोश रहें, उसी तरह फ़ुक़्हा-ए-किराम ने क़ुर्आन पढ़ने वाले को भी हिदायत दी है जहाँ लोग काम-काज या कारोबार में लगे हुए हों वहाँ ज़ोर से क़ुर्आन मजीद की तिलावत करना बेहतर नहीं, जहाँ लोग सो रहे हों वहाँ भी ज़ोर से तिलावत करना बेहतर नहीं।

आयत के ख़त्म पर जो यह لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ फ़रमाया इस से मालूम हुआ कि जो लोग क़ुर्आन का अदब करेंगे वह अल्लाह तआ़ला की रहमत के हक़्दार होंगे। इस से बात का दूसरा रुख़ भी समझ में आता है कि क़ुर्आन की बेहुरमती अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब और उस की गिरिफ़्त का ज़रिया है।

205-206 وَاذْكُرْ رَّبَّكَ فِيْ نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَّخِيْفَةً وَّدُوْنَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ وَلَا تَكُنْ مِّنَ الْغٰفِلِيْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَيُسَبِّحُوْنَهٗ وَلَهٗ يَسْجُدُوْنَ ۝ सज्दः

ज़िक्रुल्लाह के आदाब

इस से पहली आयात में क़ुर्आन मजीद को हिदायत व रहमत बताया और क़ुर्आन का अदब समझाया कि जब क़ुर्आन पढ़ा जाए तो ध्यान से सुनो और चुप रहो, अब यहाँ ज़िक्र का हुक्म फ़रमाया गया है और उस के बाज़ आदाब बताये हैं। अल्लाह का ज़िक्र बहुत बड़ी चीज़ है, इस की वजह से सारी दुनिया आबाद है। सहीह मुस्लिम पेज नं० 84 भाग 1 में है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि क़ियामत क़ायम न होगी जब तक ज़मीन पर अल्लाह अल्लाह कहा जाता रहेगा नमाज़ भी अल्लाह के ज़िक्र के लिए है كما قال تعالى أَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِيْ

सूरः अ़न्कबूत *(आयत नं० 45)* में फ़रमाया وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ (और अल्लाह का ज़िक्र सब से बड़ी चीज़ है।) सूरः बक़रः *(आयत नं० 152)* में फ़रमाया فَاذْكُرُوْنِيْٓ اَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوْا لِيْ وَلَا تَكْفُرُوْنِ (सो तुम मुझे याद

करो मैं तुम्हें याद करूँगा और मेरा शुक्र करो और मेरी नाशुक्री न करो।)

सहीह़ मुस्लिम पेज नं० 162 भाग 1 में है كان النبي صلى الله عليه وسلم يذكر الله على كل احيانه {कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) हर वक़्त अल्लाह का ज़िक्र करते रहते थे।}

मोमिन बन्दे दिल को भी अल्लाह के ज़िक्र से और ज़बान से भी अल्लाह की याद में मशगूल रहें। तस्बीह़, तम्ह़ीद, तक्बीर, तह़लील यह सब अल्लाह का ज़िक्र हैं उन की फ़ज़ीलतें बहुत सी अह़ादीस में आई हैं। अगर ज़िन्दगी के मुख़्तलिफ़ वक़्तों में मस्नून दुआएँ पढ़ें और उन दुआओं का एहतिमाम करें तो ज़िन्दगी के आ़म ह़ालात में और मुख़्तलिफ़ वक़्तों में अल्लाह की याद होती रहेगी। सोते-जागते, खाते-पीते वक़्त, घर से निकल कर और घर में दाख़िल होकर और कपड़ा पहनते वक़्त सवारी पर सवार होते वक़्त, सफ़र के लिए रवाना होते वक़्त, किसी मन्ज़िल पर उतरने के बाद, जिहाद करते वक़्त, बाज़ार में पहुँच कर और हर मजलिस में वह दुआएँ पढ़ी जाएँ जो ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से साबित हैं और सुबह़ शाम ख़ासतौर से ज़िक्र में मश्गूल रखा जाए। इन वक़्तों की मस्नून दुआएँ भी एहतिमाम से पढ़ी जाएँ। तिलावत भी ज़िक्र है और दुआ़ तस्बीह़, तम्ह़ीद तक्बीर और दुरूद शरीफ़ भी ज़िक्र में शामिल है क्योंकि इस में अल्लाह से सवाल किया जाता है कि अपने रसूल (सल्ल०) पर रह़मत भेजे, इस्तिग़्फ़ार भी ज़िक्र है इन सब चीज़ों में मश्गूल रहना चाहिए।

आहिस्ता ज़िक्र की फ़ज़ीलत-

अल्लाह का ज़िक्र आहिस्ता-आहिस्ता करना अफ़्ज़ल है जैसा कि एक ह़दीस में फ़रमाया गया है, (رواه احمد في مسنده وابن حبان عن سعد بن مالك مرفوعا) خير الذكر الخفي (कि बेहतर ज़िक्र वह है जो पोशीदा हो।)

सिर्फ़ दिल-दिल में बिला ह़रकत ज़बान अल्लाह की ज़ात व सिफ़ात का ध्यान करे और ज़ोर से ज़िक्र करना भी दुरुस्त है, लेकिन ऐसा न चीखे कि जान को थका डाले, बुलन्द आवाज़ में भी हों तो दबी आवाज़ हो। इसी को फ़रमाया وَدُوْنَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ

ह़ज़रत अबू मूसा अश्अ़री (रज़ि०) ने बयान फ़रमाया कि एक मर्तबः सफ़र में हम रसूलुल्लाह (सल्ल०) के साथ थे, लोगों ने ज़ोर-ज़ोर से अल्लाहु अकबर कहना शुरु किया। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि ऐ लोगों, अपनी जानों पर रह़म खाओ तुम ऐसे मअ़बूद को नहीं पुकार रहे हो जो बहरा हो और ग़ायब हो, तुम तो ऐसी ज़ात को पुकार रहे हो जो समीअ़ (ख़ूब सुनने वाला) है, बसीर (ख़ूब जानने वाला) है और वह तुम्हारे साथ है। क़सम उस ज़ात की जिसे तुम पुकार रहे हो वह तुम से इस से भी ज़्यादा क़रीब है जितनी क़रीब तुम्हारी ऊँटनी की गर्दन है।

यह बयान फ़रमा कर ह़ज़रत अबू मूसा ने बयान फ़रमाया कि मैं आप के पीछे था और दिल में لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ पढ़ रहा था। आप ने फ़रमाया कि ऐ अ़ब्दुल्लाह बिन क़ैस!

(यह अबू मसा रज़ि० का नाम है) क्या मैं तुम्हें जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना न बता दूँ? फिर फ़रमाया कि वह ख़ज़ाना لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ है। **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज 401, बुख़ारी व मुस्लिम)**

ज़िक्र जहरी (तेज़ आवाज़ से) करने में यह भी ध्यान रहे कि नमाज़ियों को तश्वीश (Disturb) न हो और सोने वालों की नींद ख़राब न हो। यह सब को मालूम है कि हर नेक काम अल्लाह की रज़ा के लिए होना चाहिए जो भी कोई काम दिखावे के लिए या मख़्लूक़ को अपनी बुज़ुर्गी जमाने के लिए होगा बज़ाहिर नेक ही हो वह हक़ीक़त में नेक नहीं होता और न सिर्फ़ यह कि उस का सवाब नहीं मिलता बल्कि वबाल और अ़ज़ाब का ज़रिया बन जाता है।

अगर कोई शख़्स (अहकाम व आदाब की रिआ़यत करते हुए) ज़ोर से ज़िक्र करे, लेकिन मक़्सूद अल्लाह की रज़ा हो तो उस का सवाब मिलेगा और अगर कोई शख़्स ज़िक्रे ख़फ़ी (चुपके से) करे और फिर तरकीब से लोगों को ज़ाहिर कर दे ताकि लोग उस के मोअ़तक़िद (प्रभावित) हों तो ऐसा ज़िक्रे ख़फ़ी भी मक़्बूल नहीं होगा और इस अ़मल में पकड़ होगी, रियाकारी का तअ़ल्लुक़ अन्दर के जज़्बे से है लोगों के सामने अ़मल करने का काम रिया नहीं है बल्कि लोगों में अ़क़ीदत जमाने के जज़्बे का नाम रिया है। आयत शरीफ़ा में पहले तो यह फ़रमाया कि अपने रब के साथ अपने दिल में डरते हुए याद करे फिर यह फ़रमाया कि ऐसी आवाज़ से याद करे जो तेज़ आवाज़ की निस्बत कम आवाज़ हो।

सुबह़ शाम अल्लाह का ज़िक्र करना-

फिर फ़रमाया بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ कि सुबह़ शाम अपने रब को याद करो। साहि़बे रुहुलू मआ़नी पेज नं० 100 भाग 9 में लिखते हैं कि सुबह़ शाम का ख़ुसूसी ज़िक्र इसलिए किया गया कि यह फ़रागत के वक़्त हैं, इन वक़्तों में दिल की तवज्जोह ज़िक्र की तरफ़ ज़्यादा होती है और बाज़ ह़ज़रात ने फ़रमाया है कि इन वक़्तों में फ़रिश्तों का आना-जाना होता है, एक जमाअ़त आती है तो दूसरी जाती है। इसलिए इन वक़्तों को ख़ासतौर से ज़िक्र फ़रमाया और बाज़ ह़ज़रात ने फ़रमाया कि इस से हर वक़्त का ज़िक्र करना है।

ग़ाफ़िलों में से न हो जाओ-

फिर फ़रमाया وَلَا تَكُنْ مِّنَ الْغٰفِلِيْنَ (ग़फ़्लत वालों में से न हो जाना) यानी अल्लाह तआ़ला की याद में लगे रहना और उसकी याद से ग़ाफ़िल न होना।

फ़रिश्तों की तस्बीह़ और अ़िबादत-

इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने फ़रिश्तों की तस्बीह़ और अ़िबादत का ज़िक्र फ़रमाया और फ़रमाया कि बिलाशुब्हा जो तेरे रब के मुक़र्रब बन्दे हैं वह अपने रब की अ़िबादत से घमण्ड नहीं करते यानी अपनी ज़ात को बड़ा नहीं समझते जिस की वजह से अल्लाह की अ़िबादत से इन्कार करें, वह अपने आप को अल्लाह तआ़ला का बन्दा जानते और मानते और बन्दग़ी के आदाब बजा लाते हैं और अपनी आ़जिज़ी को अच्छी तरह़ समझते हैं। वह अल्लाह की तस्बीह़ बयान करते हैं और उस के लिए सज्दः करते हैं। इसी को सूरः निसा ***(आयत नं० 172)*** में यूँ फ़रमायाः-

لَنْ يَّسْتَنْكِفَ الْمَسِيْحُ اَنْ يَّكُوْنَ عَبْدًا لِّلّٰهِ وَلَا الْمَلٰٓئِكَةُ الْمُقَرَّبُوْنَ ۭ وَمَنْ يَّسْتَنْكِفْ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَيَسْتَكْبِرْ فَسَيَحْشُرُهُمْ اِلَيْهِ جَمِيْعًا ۝

"मसीह़ कभी अपने लिए बुरा नहीं समझते थे कि वे अल्लाह के बन्दे हों और न मुक़र्रब फ़रिश्ते (बुरा समझते हैं) और जो व्यक्ति अल्लाह की बन्दगी को अपने लिए बुरा समझेगा और घमण्ड करेगा, तो अल्लाह उन सबको अपने पास इकट्ठा करके रहेगा।"

सज्द-ए-तिलावत का बयान-

इस आयत पर सूरः अअ़राफ़ ख़त्म हो रही है और यह पहली जगह है जहाँ क़ुर्आन मजीद में सज्द-ए-तिलावत आया है। अल्लाह तआ़ला ने मलायका का ज़िक्र फ़रमाया कि वह अपने अन्दर बड़ाई नहीं करते कि अपने रब की अ़िबादत से मुँह मोड़ें बल्कि वह उसकी तस्बीह़ बयान करते हैं और मोमिन बन्दों के लिए सज्द-ए-तिलावत वाजिब फ़रमाया ताकि वह भी फ़रिश्तों के साथ सज्दः करें, यह सज्द-ए-तिलावत शैतान के लिए बहुत बड़ी मार है।

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जब इब्ने आदम सज्दः की आयत पढ़ता है, फिर सज्दः करता है तो शैतान रोता है और वहाँ से हट जाता है, कहता है कि हाय मेरी बर्बादी इब्ने आदम को सज्दः का हुक्म हुआ तो उस ने सज्दः कर लिया, लिहाज़ा उस के लिए जन्नत है और मुझे सज्दे का हुक्म दिया और मैंने इन्कार किया लिहाज़ा मेरे लिए दोज़ख़ है"।

(रवाहु मुस्लिम कमा फ़िल् मिश्कात पेज नं० 84, भाग 1)

मस्ला- सज्द-ए-तिलावत करने के वक़्त तक्बीरे तह़रीमा की तरह़ हाथ नहीं उठाया जाएगा बल्कि अल्लाहु अकबर कहते हुए सज्दः में चला जाए और एक सज्दः करके तक्बीर कहते हुए सर उठा ले इस में तशह्हुद और सलाम नहीं है।

मस्ला- जैसे आयत सज्दः पढ़ने वाले पर सज्दः वाजिब हो जाता है, ऐसे ही सुनने वाले पर भी वाजिब होता है, अगरचे उस ने इरादा कर के न सुना हो। अल्बत्ता तिलावत करने वाले के लिए बेहतर यह है कि आयते सज्दः ह़ाज़िरीन के सामने ज़ोर से न पढ़े। हाँ, अगर ह़ाज़िरीन सुनने ही के लिए बैठे हैं तो सज्द-ए-तिलावत ज़ोर से पढ़ दे।

सज्द-ए-तिलावत की दुआ़

सज्द-ए-तिलावत में अगर سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيْمِ तीन मर्तबः कहे तो यह भी दुरुस्त है मासूर पढ़ना चाहे तो पढ़ सकता है। दुआ़ मासूर यह है-

سَجَدَ وَجْهِيَ لِلَّذِيْ خَلَقَهٗ وَشَقَّ سَمْعَهٗ وَبَصَرَهٗ بِحَوْلِهٖ وَقُوَّتِهٖ

(رواہ ابو داؤد والترمذی والنسائی کما فی المشکوۃ ۹۴)

मेरे चेहरे ने उस ज़ात के लिए सज्दः किया जिस ने उसे पैदा फ़रमाया और उस में से कान और आँख निकाल दिये अपनी क़ुद्रत से।

(भाग-8)

सूर-ए-अन्फ़ाल

(सूरः नं. 8)

आयत नं० 1 से 14 तक

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ ؕ قُلِ الْاَنْفَالُ لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَصْلِحُوْا ذَاتَ بَيْنِكُمْ ۪ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗۤ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝
اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَاِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ اٰيٰتُهٗ زَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۝
الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ؕ لَهُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ۝
كَمَاۤ اَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْۢ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ ۪ وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ لَكٰرِهُوْنَ ۝ يُجَادِلُوْنَكَ فِي الْحَقِّ بَعْدَمَا تَبَيَّنَ
كَاَنَّمَا يُسَاقُوْنَ اِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ۝ وَاِذْ يَعِدُكُمُ اللّٰهُ اِحْدَى الطَّآئِفَتَيْنِ اَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّوْنَ اَنَّ غَيْرَ ذَاتِ
الشَّوْكَةِ تَكُوْنُ لَكُمْ وَيُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَيَقْطَعَ دَابِرَ الْكٰفِرِيْنَ ۝ لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ
وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ۝ اِذْ تَسْتَغِيْثُوْنَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ اَنِّيْ مُمِدُّكُمْ بِاَلْفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُرْدِفِيْنَ ۝ وَمَا جَعَلَهُ
اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى وَلِتَطْمَئِنَّ بِهٖ قُلُوْبُكُمْ ۚ وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ اِذْ يُغَشِّيْكُمُ النُّعَاسَ
اَمَنَةً مِّنْهُ وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً لِّيُطَهِّرَكُمْ بِهٖ وَيُذْهِبَ عَنْكُمْ رِجْزَ الشَّيْطٰنِ وَلِيَرْبِطَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ
وَيُثَبِّتَ بِهِ الْاَقْدَامَ ۝ اِذْ يُوْحِيْ رَبُّكَ اِلَى الْمَلٰٓئِكَةِ اَنِّيْ مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ سَاُلْقِيْ فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ
كَفَرُوا الرُّعْبَ فَاضْرِبُوْا فَوْقَ الْاَعْنَاقِ وَاضْرِبُوْا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ
يُّشَاقِقِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝ ذٰلِكُمْ فَذُوْقُوْهُ وَاَنَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابَ النَّارِ ۝

अनुवाद-

(1) आप से ग़नीमतों (के माल) के बारे में पूछते हैं। आप कह दीजिए कि ग़नीमतें अल्लाह और रसूल की हैं। इस लिए अल्लाह का डर रखो और आपस के संबन्धों को ठीक रखो। और अल्लाह और उसके रसूल के हुक्म की पैरवी करो, अगर तुम ईमान वाले हो। (2) ईमान वाले तो बस वह होते हैं, कि जब (उनके सामने) अल्लाह का जिक्र किया जाता है। तो उनके दिल दहल जाते हैं, और जब उन्हें उस की आयतें पढ़ कर सुनाई जाती हैं, तो वह उन का ईमान बढ़ा देती हैं और वह अपने रब पर भरोसा रखते हैं। (3)(ये वे लोग हैं) जो नमाज़ क़ायम करते हैं और जो कुछ हमने दिया है उसमें से खर्च करते रहते हैं। (4) यही लोग तो सच्चे ईमान वाले हैं। बड़े-बड़े दर्जे हैं। उनके लिए उनके रब के पास और माफ़ी और इज़्ज़त की रोज़ी। (5) जैसे आप के रब ने आप को हक़ के साथ आप के घर से बाहर निकाला, और ईमान वालों में से एक गिरोह को यह नापसंद था। (6) वे आप से इस हक़ीक़त के बारे में उसके ज़ाहिर (स्पष्ट) हो जाने के बाद झगड़ रहे थे, मानों वे आँखों देखी मौत की ओर हाँके जा रहे हों। (7) और जब अल्लाह तुम से वादा कर रहा था कि दो गिरोहों में से एक तुम्हारे हाथ आएगा; और तुम चाहते थे कि तुम्हें वह हाथ आए जो ग़ैर मुसल्लह (निः शस्त्र) था, हालाँकि अल्लाह चाहता था, कि हक़ का हक़ होना साबित कर दे 'अपने' हुक्म से, और काफिरों की जड़ काट दे; (8) ताकि हक़ को हक़ होना और बातिल (ग़लत) को बातिल होना साबित कर दे, चाहे मुजरिमों को कितना ही नागवार हो। (9) (याद करो) जब तुम अपने रब से फ़रियाद कर रह थे, तो उसने तुम्हारी पुकार सुन ली,। (फ़रमाया) 'मैं' एक हज़ार फरिश्तों से तुम्हारी मद्द करूँगा

जो तुम्हारे साथ होंगे।" (10) और अल्लाह ने यह केवल इस लिए किया कि यह एक बशारत (शुभ-सूचना) हो और ताकि तुम्हारे दिलों में उससे इत्मिनान हो जाए,। और मदद तो बस अल्लाह ही के यहाँ से होती है, बेशक अल्लाह ज़बर्दस्त, हिकमत वाला है। (11) जब कि वह अपनी ओर से राहत दे कर तुम्हें ऊँघ से ढ़ाँक रहा था, और वह आसमान से तुम पर पानी बरसा रहा था ताकि उसके ज़रिये तुम्हें अच्छी तरह पाक कर दे और तुम से शैतानी वस्वसे (ख़याल) को दूर कर दे और ताकि मज़बूत कर दे तुम्हारे दिलों को, और उसकी वजह से (तुम्हारे) क़दमों को जमा दे। (12) जब तुम्हारा 'रब' फ़रिश्तों की ओर वह्य कर रहा था, कि 'मैं' तुम्हारे साथ हूँ, तो तुम ईमान वालों को तसल्ली दो कि जमे रहें; 'मैं' काफ़िरों (इन्कारियों) के दिलों में अभी रोअ़ब डाले देता हूँ। तो तुम उनकी गर्दनें मारो और उनके पोर-पोर पर चोट लगाओ"। (13) यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफ़त की, और जो व्यक्ति अल्लाह और उसके रसूल की मुखालिफ़त (विरोध) करता है तो अल्लाह भी सख़्त अ़ज़ाब देने वाला है; (14) यह तो तुम लोग चखो! और यह (जाने रहो) कि काफ़िरों के लिए दोज़ख़ का अ़ज़ाब है।

आयत नं० 1 से 14 तक की व्याख्या

1 يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ ؕ قُلِ الْاَنْفَالُ لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَصْلِحُوْا ذَاتَ بَيْنِكُمْ ۪ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗۤ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝

अनफ़ाल यानी माले ग़नीमत का बयान

लफ़्ज़ 'अनफ़ाल' नफ़्ल की जमा (बहुवचन) है। 'नफ़्ल' के माने 'ज़ायद चीज़' के हैं, इसीलिए फ़रायज़ के अ़लावा जो नमाज़ें पढ़ी जाएँ और रोज़े रखे जाएँ उन्हें नफ़्ल कहा जाता है क्योंकि नवाफ़िल इस अ़मल से ज़ायद चीज़ है जिस का लाज़मी हुक्म दिया गया है। जिहाद के मौक़े पर जो दुश्मनों का माल हाथ आ जाएँ उन्हें माले ग़नीमत कहा जाता है। यहाँ अनफ़ाल से वह मुराद हैं और अमीर-ए-लश्कर (सेनापति) जो ग़ाज़ी के लिए उस के मुक़र्रर हिस्से से ज़्यादा देने का एलान कर दे उस को भी नफ़्ल कहा जाता है। मुसलमान की जंग अल्लाह तआ़ला की रज़ामन्दी के लिए होती है वह माल के लिए नहीं रीझता, अल्लाह तआ़ला की रज़ा के साथ जो माले ग़नीमत में हिस्सा मिल जाए वह अल्लाह तआ़ला का मज़ीद इनआ़म है इसलिए इस को 'अन्फ़ाल' कहा जाता है।

पिछली उम्मतों में माले ग़नीमत का हुक्म-

पहली उम्मतों में जब काफ़िरों से जंग होती और उनके माल हाथ आते तो उन्हें आपस में बाटने और इस्तेमाल करने की इजाज़त न थी, बल्कि आसमान से आग आती और उसे जला देती थी, जो इस बात की दलील होती थी कि अल्लाह तआ़ला के यहाँ मुजाहिदीन का जिहाद क़ुबूल हो गया। अगर माले ग़नीमत जमा कर के रख दिया जाता और आग नाज़िल न होती तो समझा जाता था कि इस माल में से किसी ने कुछ गड़बड़ किया है यानी छुपा कर कुछ माल ले लिया है।

एक नबी के जिहाद का वाक़िआ-

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि एक नबी (अ़लै०) ने जिहाद फ़रमाया और फ़तेह़ के बाद माले ग़नीमत जमा किये उस के बाद आग आई ताकि उन को खा जाए मगर आग ने उस को न खाया यानी नहीं जलाया। उन्होंने अपनी क़ौम से फ़रमाया कि मालूम होता है तुम में से किसी ने ख़यानत की है, लिहाज़ा हर क़बीले का एक आदमी मुझ से बैअ़त करे, बैअ़त करते-करते एक शख़्स का हाथ उन के हाथ से चिपक कर रह गया। नबी (अ़लै०) ने फ़रमाया कि तुम लोगों में से कोई शख़्स ख़यानत करने वाला है। इस के बाद वह लोग बैल के सर के बराबर सोना लेकर आये और उस को माले ग़नीमत में मिला कर रख दिया तो आग आई और उस ने तमाम माले ग़नीमत को जला दिया। **(रवाहुलु बुख़ारी पेज नं० 440, भाग 1)**

माले ग़नीमत का ह़लाल होना-

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से भी रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि मुझे अम्बिया (अ़लै०) पर छः चीज़ों के ज़रिये फ़ज़ीलत दी गई है।

(1) एक यह कि मुझे 'जामिउलु कलाम' अ़ता किये गये (जो अल्फ़ाज़ मुख़्तसर हों और बहुत से मआ़नी पर दलालत करते हों उन्हें जामिउलु कलाम कहा जाता है।)

(2) दूसरे रोअ़ब के ज़रिये मेरी मदद की गई (कि दूर-दूर तक दुश्मन हैबत खाते हैं और प्रभावित होते हैं।)

(3) तीसरे अमवाले ग़नीमत मेरे लिए ह़लाल कर दिये गये। (जो दूसरी उम्मतों के लिए ह़लाल न थे।)

(4) चौथे पूरी ज़मीन मेरे लिए सज्दः गाह बना दी गई और तहारत की जगह बना दी गई (जहाँ वक़्त हो जाए नमाज़ पढ़ लें मस्जिद की कोई क़ैद नहीं और पानी न मिले तो तयम्मुम कर लें।)

(5) पाँचवें मैं सारी मख़्लूक़ की तरफ़ रसूल बना कर भेजा गया हूँ। (आप से पहले अम्बिया-ए-किराम (अ़लै०) अपनी-अपनी क़ौम की तरफ़ मब्अ़ूस हुए थे।)

(6) छठे मेरे आने पर नबियों की आमद ख़त्म कर दी गई। **(रवाहु मुस्लिम)**

माले ग़नीमत के बारे में अल्लाह तआ़ला का फ़ैसला

तफ़्सीर रुहुलु मआ़नी पेज नं० 160 भाग 9 में हज़रत उ़बादह बिन सामित (रज़ि०) से नक़्ल किया गया है कि बद्र में जो माले ग़नीमत ह़ासिल हुआ था उन के बारे में मुसलमानों में इख़्तिलाफ़ हुआ। उन्होंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से सवाल किया कि इसे किस तरह तक़्सीम की जाए? इन के बारे में मुहाजिरीन का फ़ैसला माना जाएगा या अन्सार का या दोनों का? इस पर यह आयत नाज़िल हुई। उन हज़रात के सवाल के जवाब में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः-

قُلِ الْاَنْفَالُ لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ (आप फ़रमा दीजिए कि माले ग़नीमत अल्लाह और उस के रसूल (सल्ल०) के लिए हैं।) जिस का मतलब यह है कि 'ग़नायम' का फ़ैसला वही है जो अल्लाह तआ़ला और उस के

रसूल (सल्ल०) की तरफ़ से हो यानी अल्लाह तआला के हुक्म के मुताबिक़ रसूलुल्लाह (सल्ल०) तक़्सीम फ़रमाएँगे, इस के बारे में किसी की राय को कोई दख़्ल नहीं। चुनाँचे बाद में उनकी तक़्सीम का तरीक़ा बता दिया जो आयते करीमा وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ में है।

अल्लाह से डरने का हुक्म-

यह इर्शाद फ़रमाया कि "अन्फ़ाल अल्लाह और उस के रसूल ही के लिए हैं"। तीन बातों का हुक्म फ़रमाया पहली बात यह कि अल्लाह से डरो और दूसरे यह कि अपने आपस के तअ़ल्लुक़ात (सम्बन्धों) को दुरुस्त रखो और तीसरे यह कि अल्लाह की और उस के रसूल (सल्ल०) की इताअ़त (पैरवी) करो। यह तीनों नसीहतें ऐसी हैं कि इन पर अ़मल करने से आख़िरत में भी कामियाबी होगी क्योंकि तक़्वा अख़्तियार करने की सूरत में गुनाहों से परहेज़ रहेगा और आपस की इस्लाह़ करने से ह़सद और बुग़्ज़ और झगड़ों से सलामती रहेगी।

अन्फ़ाल के दूसरे माने-

बाज़ मुफ़स्सिरीन की राय है कि यहाँ अन्फ़ाल के दूसरे माने हैं और वह यह कि जब अमीर लश्कर यूँ एलान कर दे कि जो शख़्स किसी काफ़िर को मार दे तो उस काफ़िर का सामान क़ातिल ही को दिया जाएगा या किसी छोटे से फ़ौजी दस्ते को बड़े लश्कर से चुन के किसी ख़ास तरफ़ जिहाद के लिए भेज दे और यह एलान कर दे कि वहाँ से जो माले ग़नीमत मिलेगा वह तुम ही लोगों का होगा उस में से ख़ुमुस यानी 1/5 हिस्सा निकाल के सब तुम ही को दे दिया जाएगा।

बाज़ रिवायात से मालूम होता है कि इस तरह़ के बाज़ वाक़िआत अन्फ़ाल के बारे में पेश आये थे और सहाबा में इख़्तिलाफ़ हो गया था, इस पर यह आयत नाज़िल हुई। **(इब्ने कसीर पेज नं० 283 भाग 2)**

2 إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ وَإِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ آيَاتُهُ زَادَتْهُمْ إِيمَانًا
وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ

अहले ईमान के औसाफ़ (गुण) का बयान

पहली बात यह फ़रमाई कि जब अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है तो उन के दिल ख़ौफ़ज़दा हो जाते हैं, उन के दिलों पर अल्लाह की बड़ाई ऐसी छाई हुई है कि जब अल्लाह का ज़िक्र होता है तो हैबत और ख़ौफ़ की वजह से उन के दिल डर जाते हैं, मोमिन बन्दे को अल्लाह तआला की तरफ़ तवज्जोह रहती है और वह अल्लाह को याद करता रहता है तो अल्लाह की याद से उस के दिल को इत्मिनान होता है और जब उस के सामने अल्लाह का ज़िक्र होता है तो अल्लाह तआला की अ़ज़्मत और जलाल की वजह से उस के दिल में ख़ौफ़ पैदा हो जाता है। यही ख़ौफ़ तो है कि जब वह किसी ज़ुल्म या गुनाह का इरादा करे और उस से कह दिया जाए कि अल्लाह से डरो तो वहीं ठिठक कर रह जाता है और गुनाह करने

की जुर्रत नहीं करता जिन के दिल में ईमान नहीं, अल्लाह की अ़ज़्मत नहीं, हैबत भी नहीं, वह बिना किसी सोचे समझे गुनाह कर लेते हैं।

अहले ईमान का ईमान-

दूसरी सिफ़त यह बयान फ़रमाई कि जब उन पर अल्लाह की आयात पढ़ी जाती हैं यानी उन को सुनाई जाती हैं तो उन के सुनने से उन का ईमान बढ़ जाता है यानी नूरे ईमान में तरक़्क़ी हो जाती है जिससे अच्छे आ़माल की तरफ़ और ज़्यादा तवज्जोह हो जाती है और ईमान व यक़ीन की वजह से अच्छे आ़माल की तरफ़ तबीअ़त ख़ुद-ब-ख़ुद चलने लगती है और गुनाहों से नफ़्रत हो जाती है।

तीसरी सिफ़त यह बयान फ़रमाई कि वह अपने रब पर भरोसा करते हैं, तवक्कुल अहले ईमान की बहुत बड़ी सिफ़त है—अपने सब कामों में अल्लाह पर भरोसा करना और ज़ाहिरी अस्बाब अख़्तियार करते हुए भी अल्लाह तआ़ला ही पर नज़र रखना और यह यक़ीन करना कि अल्लाह तआ़ला ही राज़िक़ है और हम उस के हर फ़ैसले पर और उस के क़ज़ा व क़द्र पर राज़ी हैं, यह अहले ईमान की अ़ज़ीम सिफ़त है। क़ुर्आन मजीद में जगह-जगह तवक्कुल का हुक्म दिया गया है और अस्हाबे तवक्कुल की फ़ज़ीलत बयान फ़रमाई गई है। सूरः आले इमरान *(आयत नं० 159)* में फ़रमाया إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِينَ (बिलाशुब्हा अल्लाह तवक्कुल करने वालों को दोस्त रखता है।) सूरः मुल्क *(आयत नं० 29)* में फ़रमाया قُلْ هُوَ الرَّحْمَٰنُ آمَنَّا بِهِ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا ۖ فَسَتَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ (आप फ़रमा दीजिए कि वह रह़मान है हम उस पर ईमान लाए और हम ने उस पर तवक्कुल किया सो अ़न्क़रीब जान लोगे कि कौन है खुली गुमराही में। सूरः तलाक़ *(आयत नं० 3)* में फ़रमाया وَمَن يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ (और जो शख़्स अल्लाह पर भरोसा करे सो अल्लाह उस के लिए काफ़ी है।)

3 الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ

अल्लाह तआ़ला के दिये हुए माल-

चौथी सिफ़त यह बयान फ़रमाई कि वह नमाज़ क़ायम करते हैं और पाँचवीं सिफ़त यह बयान फ़रमाई कि जो कुछ हम ने दिया है उस में से ख़र्च करते हैं। जिस्मानी अ़िबादात में सब से बड़ी अ़िबादत नमाज़ है। क़ुर्आन मजीद में नमाज़ के साथ माली अ़िबादत का भी बार-बार ज़िक्र फ़रमाया है। 'इक़ामतिस्सलाह' यह है कि नमाज़ को अच्छी तरह़ अदा किया जाए जैसा कि सूरः बक़रः के शुरु में बयान किया गया है और ما رزقنٰهم में सब कुछ दाख़िल है। यह शब्द ज़कात, सद्क़ात और नवाफ़िल सब को शामिल है।

4 أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا ۚ لَّهُمْ دَرَجَاتٌ عِندَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ

सच्चे मोमिन-

आख़िर में फ़रमाया أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا ۚ لَّهُمْ دَرَجَاتٌ عِندَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ (यह लोग सच्चे

मोमिन हैं। उन के लिए उन के रब के पास दर्जात हैं और मग़्फ़िरत है और रिज़्क़ करीम है।) इस में पहली बात तो यह फ़रमाई कि जिन हज़रात का ऊपर ज़िक्र हुआ यह सच्चे मोमिन हैं फिर उन के लिए दर्जात, मग़्फ़िरत और रिज़्क़ करीम की बशारत दी।

कुछ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि यह तीन इनआम उन तीन क़िस्म के औसाफ़ के मुक़ाबिल हैं। अल्लाह पर ईमान और अल्लाह के ज़िक्र के वक़्त हैबत से सहम जाना और उस की आयात सुनकर ईमान का बढ़ जाना और उस की ज़ात पर भरोसा करना। यह चीज़ें दिल से मुतअल्लिक़ हैं, इस का इनआम मिलेगा और इक़ामतिस्सलाह में तमाम बदनी अिबादात आ गईं, उन के मुक़ाबिले में मग़्फ़िरत का इनआम है। (आमतौर से अिबादाते बदनिया के ज़रिये गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जाता है) और ख़ैर में माल ख़र्च करने में रिज़्क़ का वादा फ़रमाया:-

قال صاحب الروح (ج ۹ / ۱۲۹) وربما يقال فى وجه ذكر هذه الاشياء الثلاثة على هذا الوجه
ان الدرجات فى مقابلة الاوصاف الثلاثة اعنى الوجل والاخلاص والتوكل
ويستأنس له بالجمع والمغفرة فى مقابلة اقامة الصلوٰة ويستأنس له بما ورد فى غير
ما خبر ان الصلوٰت مكفرات لما بينها من الخطايا وانها تنقى الشخص من الذنوب كما
ينقى الماء من الدنس والرزق الكريم بمقابلة الانفاق ـ اهـ

जन्नत की वुस्अत-

'हज़रत उबादह बिन सामित (रज़ि०)' से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, "जन्नत में सौ दर्जे हैं और उन दर्जात के दर्मियान आपस में इतना फ़ासला है जितना आसमान व ज़मीन के दर्मियान है, उन में फ़िरदौस सब से आला दर्जा है। उसी से जन्नत की चारों नहरें जारी हैं और उस के ऊपर अल्लाह तआला का अर्श है सो जब तुम अल्लाह से सवाल करो तो फ़िरदौस का सवाल करो।"

(तिर्मिज़ी, मिश्कात पेज नं० 496)

'हज़रत अबू सईद (रज़ि०)' से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, "जन्नत में सौ दर्जात हैं, अगर सारा जहान उन में से एक दर्जे में जमा हो जाए तो इस एक दर्जे में समा जाएँ।"

(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 497)

5-8 كَمَآ اَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْۢ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ ۖ وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ لَكٰرِهُوْنَ ۝ يُجَادِلُوْنَكَ فِى
الْحَقِّ بَعْدَمَا تَبَيَّنَ كَاَنَّمَا يُسَاقُوْنَ اِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ۝ وَاِذْ يَعِدُكُمُ اللّٰهُ اِحْدَى
الطَّآئِفَتَيْنِ اَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّوْنَ اَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشَّوْكَةِ تَكُوْنُ لَكُمْ وَيُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّحِقَّ
الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَيَقْطَعَ دَابِرَ الْكٰفِرِيْنَ ۝ لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ۝

ग़ज़्व-ए-बद्र का ज़िक्र

इन आयात में ग़ज़्व-ए-बद्र का ज़िक्र है और फिर मज़ीद तफ़्सील इस सूरः के पाँचवें और छठे

रुकूअ़ में बयान हुआ है। वहाँ फ़रमाया وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ (सूरः आले इमरान-123)

(और यह बात वाक़ई और ह़क़ीक़ी है कि अल्लाह तआ़ला ने मक़ामे बद्र में तुम्हारी मदद फ़रमाई जब कि तुम कमज़ोर थे।)

कुरैश-ए-मक्का का काफ़िला-

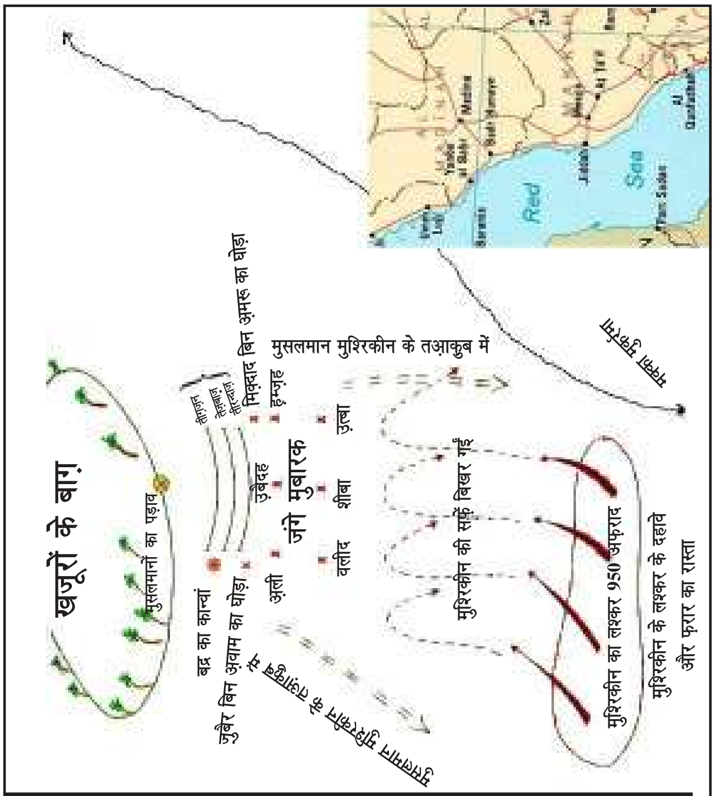
क़ुरैशे मक्का हर साल तिजारत के लिए मुल्के शाम जाया करते थे, मक्का से शाम जाने के वक्त रास्ते में मदीना मुनव्वरह से गुज़रना होता था। शहर मदीना में दाख़िल न हों तो दूर या क़रीब से ज़रूर गुज़रना पड़ता है। अब आगे यह समझें कि क़ुरैशे मक्का का एक क़ाफ़िला तिजारत के लिए शाम गया हुआ था बहुत से लोगों ने इस तिजारत में शिरकत की थी और अपने माल लगाए थे। क़ाफ़िला के सरदार 'अबू सुफ़्यान' थे (जो उस वक़्त तक मुसलमान नहीं हुए थे) जब 'अबू सुफ़्यान' का क़ाफ़िला 'शाम' से वापस हो रहा था जिस में तीस या चालीस लोग थे और एक हज़ार ऊँट थे तो ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को इस क़ाफ़िले के गुज़रने की ख़बर मालूम हुई।

आप (सल्ल०) ने अपने सह़ाबा (रज़ि०) से फ़रमाया कि कुरैश का क़ाफ़िला इधर से गुज़र रहा है—चलो इस क़ाफ़िले को पकड़ें, मगर आप ने ताकीदी हुक्म नहीं फ़रमाया और यह भी नहीं फ़रमाया था कि जंग करने निकल रहे हैं इसलिए बाज़ सह़ाबा आप के साथ रवाना हो गये और बाज़ मदीना मुनव्वरह ही में रह गये, 'अबू सुफ़्यान' को ख़त्रा था कि रास्ते में मुसलमानों से कहीं मुठभेड़ न हो जाए इसलिए वह रास्ते में इस बात का पता लगाता हुआ जा रहा था कि कहीं मुसलमान हमारे क़ाफ़िले के पास तो नहीं आ रहे हैं।

जब ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने अपने सह़ाबा (रज़ि०) के साथ मदीना मुनव्वरह से सफ़र फ़रमाया तो 'अबू सुफ़्यान' को इसकी ख़बर मिल गई उस ने अपना रास्ता बदल दिया और 'ज़मज़म बिन उ़मर' को अहले मक्का तक ख़बर पहुँचाने के लिए जल्दी-जल्दी आगे रवाना कर दिया, उस को इस काम का मेह़नूताना देना भी तय कर दिया। 'ज़मज़म' जल्दी से मक्का पहुँचा और उस ने ख़बर दे दी कि मुह़म्मद (सल्ल०) अपने साथियों को तुम्हारे क़ाफ़िले के पीछे लगा दिये हैं और मदीना मुनव्वरह से रवाना हो चुके हैं। अपने क़ाफ़िले की ह़िफ़ाज़त कर सकते हो तो कर लो, यह ख़बर सुनते ही अहले मक्का में हलचल मच गई और मुक़ाबिले के लिए एक हज़ार आदमी जिन का सरदार 'अबू जेहल' था बड़े घमण्ड और अस्बाब ऐ़श के साथ अकड़ते और इत्राते हुए बद्र की तरफ़ रवाना हुआ।

'बद्र' एक आबादी का नाम है जो मक्का से मदीना मुनव्वरह को जाते हुए रास्ते में पड़ती है। यहाँ से मदीना मुनव्वरह एक सौ मील से कुछ कम रह जाता है, 'बद्र' नामी एक शख़्स था जिस ने इस बस्ती को आबाद किया था उस के नाम पर इस बस्ती का नाम है और एक क़ौल यह है कि मक़ामे बद्र में एक कुआँ था उस का नाम बद्र था। इसी कुएँ के नाम से यह आबादी मशहूर थी, क़ुरैशे मक्का अपने साथ गाने बजाने वाली औ़रतें लेकर निकले थे ताकि वह गाना गाएँ और लड़ाई के लिए उभारें, इस लश्कर

में लगभग तमाम सरदाराने कुरैश शामिल थे, सिर्फ़ अबू लहब न जा सका था उस ने अपनी जगह अबू जेहल के भाई 'आ़स बिन हिशाम' को भेज दिया था, उन लोगों के साथ दूसरे सामाने जंग के अ़लावा बहुत से घोड़े और कई सौ ज़रहें (कवच) थीं। इसी तरह़ सवारी के ऊँटों के अ़लावा बड़ी तअ़दाद में ज़ब्ह़ करने और खाना खिलाने के लिए भी ऊँट साथ लेकर चले थे। सब से पहले 'अबू जेहल' ने मक्का से बाहर आकर दस ऊँट ज़ब्ह़ करके लश्कर को खिलाए फिर मक़ामे 'अ़स्फ़हान' में 'उमय्या बिन ख़लफ़' ने 9 ऊँट ज़ब्ह़ किये, फिर मक़ामे 'कुदैद' में 'सुहेल बिन अ़म्र' ने एक सौ ऊँट ज़ब्ह़ किये। फिर अगली मन्ज़िल में शैबा बिन रबीआ़ ने नौ ऊँट ज़ब्ह़ किये फिर उस से अगली मन्ज़िल में (जो मक़ामे जह़फ़ा में थी) 'उ़त्बा बिन रबीआ़' ने दस ऊँट ज़ब्ह़ किये। इसी तरह़ हर मन्ज़िल में दस-दस ऊँट ज़ब्ह़ करते रहे और खाते खिलाते रहे और 'अबुल् बख़्तरी' ने बद्र पहुँच कर दस ऊँट ज़ब्ह़ किये।



ग़ज़्व-ए-बद्र अल् कुबरा

(यौमुल् फ़ुर्क़ान, यौमुल् तक़ल् जमआ़न)

624 मार्च 13, 2 हि० रमज़ान 17

إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِهِ صَفًّا كَأَنَّهُم بُنْيَانٌ مَّرْصُوصٌ ۝ (सूरः सफ़ः 4)

बेशक अल्लाह उन से मुह़ब्बत करता है जो लोग अल्लाह की राह में क़तार बांध कर लड़ते हैं, मानो वे शीशा पिलाई हुई दीवार हैं।

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ بِبَدْرٍ وَأَنتُمْ أَذِلَّةٌ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝

(सूरःआले इमरानः 123)

और बद्र में अल्लाह ने तुम्हारी मदद की थी, और उस वक्त तुम बहुत कमज़ोर हालत में थे, तो अल्लाह से डरते रहो, ताकि तुम शुक्र करो।

बद्र में आप (सल्ल०) के लश्कर की संख्या-

कुरैशे मक्का इधर मक्का से चले और ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) उधर मदीना मुनव्वरह से रवाना

हुए। यह रमज़ानुल् मुबारक का महीना था। आप (सल्ल०) ने 'अ़ब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम (रज़ि०)' को अपना ख़लीफ़ा बनाया वह आप के तश्रीफ़ ले जाने के बाद लोगों को नमाज़ पढ़ाते थे। आप के साथ रवाना होने वालों में 'ह़ज़रत अबू लुबाबा (रज़ि०)' भी थे, आप ने उन्हें मक़ामे रौह़ा से वापस कर दिया और अमीर मदीना बना कर भेज दिया।

आप के लश्कर की तअ़दाद "तीन सौ तेरह" थी और आप के साथ 'सत्तर ऊँट' थे जिन पर नम्बरवार सवार होते थे, हर तीन लोगों पर एक ऊँट दिया गया था। ख़ुद आप (सल्ल०) भी 'ह़ज़रत अबू लुबाबा (रज़ि०)' और 'ह़ज़रत अ़ली (रज़ि०)' के साथ एक ऊँट पर शरीक थे, बारी के एतिबार से आप भी पैदल चलते थे। मक़ामे 'रौह़ा' तक यही सिल्सिला रहा जब 'रौह़ा' से 'ह़ज़रत अबू लुबाबा (रज़ि०)' को वापस फ़रमा दिया तो आप ह़ज़रत अ़ली (रज़ि०) और 'ह़ज़रत मुरसिद (रज़ि०)' के साथ एक ऊँट में शरीक रहे।

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) ने बयान फ़रमाया कि जब आप के पैदल चलने की बारी आती थी तो 'ह़ज़रत अबू लुबाबा' और 'ह़ज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा' अ़र्ज करते, या रसूलल्लाह! आप बराबर सवार रहें हम आप की तरफ़ से पैदल चलेंगे। आप जवाब में फ़रमाते ما أنتما بأقوى مني ولا أنا بأغنى عن الأجر منكما **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 340)**

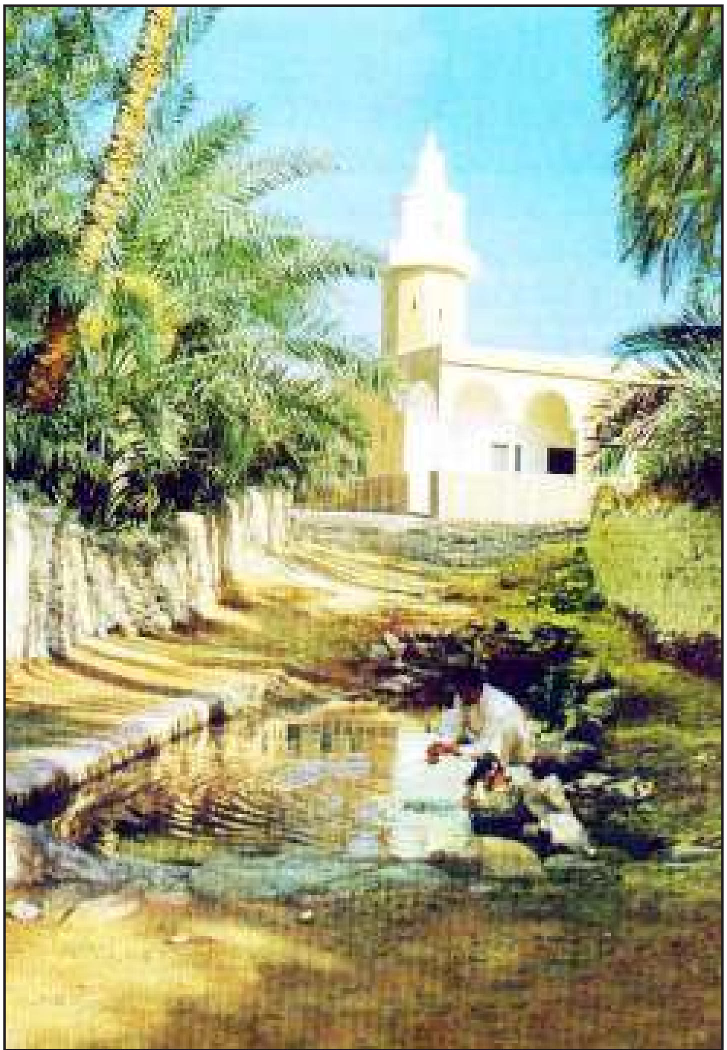
(तुम दोनों मुझ से ज़्यादा क़वी नहीं हो और सवाब के एतिबार से भी बेनियाज़ नहीं हो, यानी जैसे तुम्हें सवाब की ज़रूरत है मुझे भी सवाब की ज़रूरत है।) जब ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) वादी 'दफ़रान' में पहुँचे तो वहाँ क़याम फ़रमाया। अब तक तो 'अबू सुफ़्यान' के क़ाफ़िले से मुक़ाबिला करने की नियत से सफ़र हो रहा था यहाँ पहुँच कर ख़बर मिली कि कुरैश भी अपने क़ाफ़िले की मदद के लिए मक्का से निकल चुके हैं। 'अबू सुफ़्यान' अपना क़ाफ़िला लेकर रास्ता काट कर आगे बढ़ चुका था। अब सूरतेह़ाल यह पैदा हो गई कि कुरैशे मक्का से जंग करने की नौबत आ गई। आप (सल्ल०) ने ह़ज़राते सह़ाबा (रज़ि०) से मश्वरह फ़रमाया कि कुरैश हमारे मुक़ाबिले के लिए निकल चुके हैं, अब क्या किया जाए?

'ह़ज़रत अबू बक्र (रज़ि०)' खड़े हुए और अच्छा जवाब दिया, फिर ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) खड़े हुए उन्होंने भी अच्छा जवाब दिया, फिर ह़ज़रत मिक़्दार (रज़ि०) खड़े हुए उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! आप अपनी राय के मुताबिक़ तश्रीफ़ ले चलें हम आप के साथ हैं। अल्लाह की क़सम ऐसा न होगा जैसे बनी इस्राईल ने ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) से कह दिया था اِذْهَبْ أَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَا إِنَّا هٰهُنَا قَاعِدُوْنَ (तू और तेरा रब चले जाएँ दोनों क़िताल कर लें हम तो यहाँ बैठे हैं) यानी आप तश्रीफ़ ले चलें हम आप के साथ क़िताल करने वाले हैं। क़सम उस ज़ात की जिस ने आप को ह़क़ देकर भेजा है अगर आप हमें बर्कुल् गिमाद[1] तक साथ ले चलेंगे तो हम साथ रहेंगे और जंग से मुँह न मोड़ेंगे।

इस के बाद आप (सल्ल०) ने फ़रमाया اشيروا علیّ ایها الناس (ऐ लोगो! मश्वरह दो।) आप का मक़्सद यह था कि अन्सारी ह़ज़रात अपनी राय पेश करें। आप की बात सुन कर 'ह़ज़रत सअ़द बिन मआ़ज़ (रज़ि०)' ने अ़र्ज़ किया (जो अन्सार में से थे) कि या रसूलल्लाह (सल्ल०)! ऐसा मालूम होता है

1- "बर्कुल ग़िमाद" यह यमन में एक जगह का नाम है और एक क़ौल यह है कि यह जगह मक्का से पैदल पाँच रात की मुसाफ़त पर है। (निहाया, इब्ने कसीर)

कि आप हम से जवाब लेना चाहते हैं? आप ने फ़रमाया हाँ! उन्होंने अ़र्ज़ किया कि हम आप पर ईमान लाए, आप की तस्दीक़ की हम ने गवाही दी कि जो कुछ आप ले कर आये हैं वह हक़ है और हम ने आप से अ़हद (प्रतिज्ञा) किया है कि हम आप की बात मानेंगे और फ़रमाँबरदारी करेंगे।



बद्र का चश्मा और मस्जिदे उ़रैश

आप अपने इरादे के मुताबिक़ अ़मल करें और तशरीफ़ ले चलें हम आप के साथ हैं। क़सम है उस ज़ात की जिस ने आप को हक़ देकर भेजा है अगर राह में समुद्र आ जाए और आप उस में दाख़िल होने लगें तो हम भी आप के साथ दाख़िल हो जाएँगे और हम में से एक शख़्स भी पीछे नहीं रहेगा हम जंग में डट जाने वाले हैं और दुश्मन के मुक़ाबिले में मज़बूती के साथ लड़ने वाले हैं। उम्मीद है कि अल्लाह तआ़ला हमारी तरफ़ से आप को ऐसी बात दिखा दे जिस से आप की आँखें ठंडी हो जाएँगी, आप अल्लाह की बरकत के साथ चलें।

हज़रत सअ़द बिन मआ़ज़ (रज़ि०) की बात सुनकर आप (सल्ल०) को बहुत ख़ुशी हुई और फ़रमाया कि चलो ख़ुशख़बरी क़ुबूल कर लो। अल्लाह तआ़ला ने मुझ से वादा फ़रमाया है कि दो जमाअ़तों में से तुम को एक जमाअ़त पर ग़ल्बा अ़ता फ़रमाएँगे। (एक जमाअ़त अबू सुफ़्यान का क़ाफ़िला और दूसरी जमाअ़त क़ुरैशे मक्का का लश्कर।)

आप (सल्ल०) ने यह भी फ़रमाया कि अल्लाह की क़सम मैं देख रहा हूँ कि जिस जमाअ़त से मुक़ाबिला होगा उन के मक़्तूलीन कहाँ-कहाँ पड़े हैं।

इस के बाद आप (सल्ल०) अपने सहाबा (रज़ि०) के साथ बद्र की तरफ़ रवाना हो गये। रास्ते में एक

गुलाम से मुलाक़ात हुई। ह़ज़रात सह़ाबा (रज़ि०) ने उस से पूछा कि अबू सुफ़्यान का क़ाफ़िला कहाँ है? उस ने कहा उस का तो मुझे कोई पता नहीं यह तो अबू जेहल, उ़त्बा और उमय्या बिन ख़लफ़ आ रहे हैं। बाज़ रिवायात में यूँ है कि जब अबू सुफ़्यान के क़ाफ़िले को रोकने के लिए रवाना हुए तो एक दिन या दो दिन की मुसाफ़त तय करने के बाद आप ने सह़ाबा (रज़ि०) से मश्वरह किया था कि अबू सुफ़्यान को पता चल गया कि हम उस को रोकने के लिए निकले हैं (वह क़ाफ़िला तो निकल चुका है) अब क़ुरैशे मक्का ने आने की ख़बर सुनी कि उन से मुक़ाबिला की बात चल रही है इस बारे में क्या ख़याल है?

इस पर बाज़ सह़ाबा (रज़ि०) ने कहा कि हमें तो क़ुरैश के लश्कर से मुक़ाबिला करने की ताक़त नहीं, आप तो अबू सुफ़्यान के क़ाफ़िले के लिए निकले थे। आप ने फिर वही सवाल किया कि क़ुरैशे मक्का से जंग करने के बारे में क्या राय है, इस पर ह़ज़रत मिक़्दार (रज़ि०) ने जवाब दिया जो ऊपर गुज़र चुका। बाज़ रिवायात में है कि यह सवाल-जवाब मक़ामे रौह़ा में हुआ। बाज़ सह़ाबा (रज़ि०) ने जो यह कहा था कि हमें क़ुरैशे मक्का से जंग की ताक़त नहीं, उन के बारे में यह आयत नाज़िल हुई।

وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ لَكٰرِهُوْنَ ۙ يُجَادِلُوْنَكَ فِى الْحَقِّ بَعْدَمَا تَبَيَّنَ كَاَنَّمَا يُسَاقُوْنَ اِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ۝

(और बिलाशुब्हा मोमिनीन की एक जमाअ़त को गिराँ गुज़र रहा था वह आप से ह़क़ के बारे में झगड़ रहे थे उस के बाद कि ह़क़ ज़ाहिर हो चुका था यानी वह मौत की तरफ़ हांके जा रहे हैं इस ह़ाल में कि वह देख रहे हैं) (जब अबू सुफ़्यान अपने क़ाफ़िले को लेकर मुसलमानों से बच कर निकल गया तो उस ने क़ुरैशे मक्का के पास ख़बर भेजी कि तुम हमारी ह़िफ़ाज़त के लिए निकले थे अब जबकि हम बच कर निकल आये हैं तो हमें आगे बढ़ने की ज़रूरत नहीं, लिहाज़ा वापस चले जाओ। इस पर अबू जेहल ने कहा अल्लाह की क़सम हम वापस नहीं लौटेंगे जब तक कि हम बद्र न पहुँच जाएँ वहाँ तीन दिन क़याम करेंगे, ऊँट ज़ब्ह़ करेंगे, खाना खिलाएँगे, शराब पियेंगे और गाने वालियाँ गाने सुनाएँगी और अ़रब को पता चल जाएगा कि हम मुक़ाबिले के लिए निकले थे। हमारे इस अ़मल से एक धाक बैठ जाएगी और लोग हम से डरते रहेंगे, लिहाज़ा चलो आगे बढ़ो।

अल्लाह का वादा-

अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल (सल्ल०) से वादा फ़रमाया था कि दोनों जमाअ़तों में से एक जमाअ़त पर तुम्हें ग़ल्बा दिया जाएगा। जब आप (सल्ल०) ने ह़ज़राते सह़ाबा से मश्वरह फ़रमाया तो उन में से बाज़ सह़ाबा (रज़ि०) ने यह मश्वरह दिया कि अबू सुफ़्यान के क़ाफ़िले ही का पीछा करना चाहिए क्योंकि वह लोग तिजारत से वापस हो रहे हैं, जंग करने के लिए नहीं निकले, उन में लड़ने की क़ुव्वत और ताक़त नहीं है लिहाज़ा उन पर ग़ल्बा पाना आसान है और क़ुरैश का जो लश्कर मक्का मुकर्रमा से चला है वह लोग तो लड़ने ही के लिए चले हैं और तैयारी करके निकले हैं, लिहाज़ा उन से मुक़ाबिला मुश्किल होगा। उन लोगों की इस बात को इन अल्फ़ाज़ में ज़िक्र फ़रमायाः-

وَتَوَدُّوْنَ اَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشَّوْكَةِ تَكُوْنُ لَكُمْ

(और तुम चाहते थे कि वह जमाअ़त तुम्हारे क़ाबू में आ जाए जो क़ुव्वत व ताक़त वाली नहीं थी।)

क़ुरैशे मक्का ने हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को और आप के साथियों को बहुत तक्लीफ़ें दी थीं और मक्का मुकर्रमा को छोड़ने पर मजबूर कर दिया था। हक़ न ख़ुद क़ुबूल करते थे और न दूसरों को क़ुबूल करने देते थे। अचानक बद्र में पहुँचे और मुक़ाबिले की सूरत बन गई। इस में बाज़ अहले ईमान को कराहत थी, लेकिन अल्लाह तआ़ला की तक़्दीर सब पर ग़ालिब है, जंग हुई और अहले मक्का ने ज़बरदस्त शिकस्त खाई और उन का फ़ख़्र और तमतराक़ सब धरा रह गया। उसी के बारे में अल्लाह तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया وَيُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ

(अल्लाह को यह मन्ज़ूर था कि अपने कलिमात के ज़रिये हक़ को साबित फ़रमा दे।)

وَيَقْطَعَ دَابِرَ الْكٰفِرِيْنَ (और काफ़िरों की बुनियाद को काट दे।)

لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ ताकि अल्लाह तआ़ला हक़ का हक़ होना साबित फ़रमा दे और बातिल का बातिल होना साबित फ़रमा दे।)

وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ (अगरचे मुजरिमों को नागवार हो।)

अल्लाह तआ़ला ने ऐसी तद्बीर फ़रमाई कि मुश्रिकीने मक्का ज़लील हुए, इस्लाम का हक़ होना साबित हुआ और बातिल का बातिल होना भी ज़ाहिर हो गया। दोस्त और दुश्मन सब ने देख लिया इसीलिए बद्र के दिन को यौमुल् फ़ुरक़ान फ़रमाया। जैसा कि इस सूरत के पाँचवे रुकूअ़ में आ रहा है[1]।

नोट- كَمَآ اَخْرَجَكَ رَبُّكَ में जो काफ़ तश्बीह है उस के बारे में मुफ़स्सिरीन की बहुत सी रायें हैं। जैसे-

كما انكم لما اختلفتم فی المغانم انتزعه الله منكم كذلك لما كرهتم الخروج الى الاعداء كان عاقبة كراهتكم ان قدره لكم وجمع به بينكم وبين عدوكم على غير ميعاد رشدا وهدى

और बाज़ हज़रात ने इस तश्बीह को इस तरह बयान किया है

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ مجادلة كما جادلوك يوم بدر فقالوا اخرجتنا للعير ولم تعلمنا قتالا فنستعد له ذكرهما

(इब्ने कसीर भाग 2 पेज नं० 284-285)

साहिबे रुहुल् मआ़नी ने कई वजह नक़्ल की हैं, उन में से एक यह है कि حالهم هذه في كراهة ما وقع في امر الانفال كحال اخراجك من بيتك في كراهتهم له۔ اهـ اراجع ماذكره ابن كثير اولا)

फिर साहिबे रुहुल मआ़नी ने एक क़ौल यह नक़्ल किया है कि تقديره واصلحوا ذات بينكم كما اخرجك فिर लिखा है وقد التفت من خطاب جماعة إلى خطاب واحد

وقيل المراد واطيعوا الله والرسول كما اخرجك اخراجا لا مرية فيه وقيل التقدير انت يتوكلون توكلا كما اخرجك۔ وفيه اقوال اخر (रुहुल मआ़नी पेज नं० 169, भाग 9)

1- पूरी तफ़्सील के लिए अल् बिदाया व अल् निहाया (पेज नं० 254 भाग 3) का मुताअ़ला फ़रमाएँ।

2- यानी यह लोग आप से माले ग़नीमत के बारे में ऐसे सवाल कर रहे हैं जैसा कि उस वक़्त झगड़ रहे थे जब आप को अल्लाह तआ़ला ने ग़ज़्व-ए-बद्र के लिए मक्का से निकाला था। उस वक़्त यह लोग कह रहे थे कि हमें पहले से नहीं बताया था कि जंग करनी होगी। अगर आप पहले से बता देते तो हम उस के लिए तैयारी कर लेते।

नोट– इस बारे में रिवायात अलग-अलग हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने कुरैशे मक्का से मुक़ाबिला करने का मश्वरह कहाँ फ़रमाया। बाज़ रिवायात में है कि मदीना मुनव्वरह से एक दो दिन की दूरी पर पहुँचने के बाद मश्वरह फ़रमाया और बाज़ रिवायात में है कि मक़ामे 'रौहा' में और बाज़ रिवायात में है कि वादी 'ज़फ़रान' में मश्वरह किया। मुम्किन है तीनों जगह मश्वरह फ़रमाया हो और बार-बार अन्सार से उन की राय का इज़्हार मतलूब हो ताकि उन की रज़ा और रग़बत का ख़ूब यक़ीन हो जाए और मुम्किन है कि रावियों से जगह के तय करने में भूल हुई हो, वल्लाहु अ़आलम।

9-10 إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ أَنِّي مُمِدُّكُم بِأَلْفٍ مِّنَ الْمَلَائِكَةِ مُرْدِفِينَ ۝ وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ
إِلَّا بُشْرَىٰ وَلِتَطْمَئِنَّ بِهِ قُلُوبُكُمْ ۚ وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِندِ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝

रसूलुल्लाह (सल्ल०) की दुआ़

कुरैशे मक्का अपना पूरा लश्कर, साज़ो सामान और गाने वाली औ़रतों के साथ बद्र पहुँच गये। यह लोग मक्का मुकर्रमा से आये थे। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) भी मदीना मुनव्वरह से रवाना होकर चन्द दिन में बद्र पहुँच गये। रास्ते में कई जगह क़याम फ़रमाया और सहाबा से मश्वरह किया जिस की तफ़्सील ऊपर गुज़र चुकी है।

साहिबे रुहुल् मआ़नी भाग 9 पेज नं० 172 में बहवाला मुस्लिम व अबू दाऊद व तिर्मिज़ी हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से नक़्ल फ़रमाते हैं कि उन्होंने बयान किया कि मुझे उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि०) ने बताया कि बद्र के दिन नबी अक्रम (सल्ल०) ने अपने सहाबा पर नज़र डाली तो यह हज़रात तीन सौ दस से कुछ ऊपर थे। (इन हज़रात की मशहूर तअ़दाद 313 है जैसा कि सही बुख़ारी पेज नं० 546 में ज़िक्र है और मुश्रिकीन पर नज़र डाली तो वह एक हज़ार से कुछ ज़्यादा थे। आप ने क़िब्ला की तरफ़ रुख़ किया फिर हाथ फैलाकर अपने परवरदिग़ार से ख़ूब दुआ़ करते रहे। दुआ़ के अल्फ़ाज़ यह हैं اَللّٰهُمَّ اَنْجِزْ لِیْ مَا وَعَدْتَنِیْ اَللّٰهُمَّ اِنْ تُهْلِكْ هٰذِهِ الْعِصَابَةَ مِنْ اَهْلِ الْاِسْلَامِ لَا تُعْبَدْ فِی الْاَرْضِ

(ऐ अल्लाह! आप ने जो मुझ से वादा फ़रमाया है पूरा फ़रमाइए, ऐ अल्लाह! अगर मुसलमानों की यह जमाअ़त हलाक हो गई तो ज़मीन में आप की अ़िबादत न की जाएगी।)

मतलब यह था कि यह अहले इस्लाम की मुख़्तसर सी जमाअ़त है अगर यह हलाक हो गये तो जो उन के पीछे मदीना मुनव्वरह में रह गये हैं उन में भी कमज़ोरी आ जाएगी और ईमान व इस्लाम का सिल्सिला ख़त्म हो जाएगा फिर आप की अ़िबादत करने वाला कोई न रहेगा। आप ने यह बात मुहब्बत भरे अन्दाज़ में बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ की, वरना अल्लाह तआ़ला की अ़िबादत अगर कोई भी न करे और कभी भी न करे तो उस बेनियाज़ वहदहु लाशरीक को कोई नुक़्सान नहीं पहुँच सकता (वह किसी की अ़िबादत का मुहताज नहीं) आप क़िब्ला रुख़ होकर हाथ फैलाये हुए बराबर इस दुआ़ में मश्गूल रहे यहाँ तक कि आप की चादर भी आप के काँधों से गिर गई। हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) हाज़िरे ख़िद्मत

हुए और आप की चादर लेकर आप के मोढ़ों पर डाल दी फिर आप से चिमट गये और अ़र्ज़ किया या नबी अल्लाह! बस कीजिए आप ने जो अपने रब से दुआ़ की है यह काफ़ी होगी, बेशक आप का रब अपना वादा पूरा फ़रमाएगा। इस पर यह आयत فَاسْتَجَابَ لَكُمْ नाज़िल हुई।

यानी अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारी दुआ़ क़ुबूल फ़रमाई और एक हज़ार फ़रिश्तों के ज़रिये मदद करने का वादा फ़रमाया जो मुसल्सल आते रहेंगे। लफ़्ज़ 'मुरदफ़ैन' का एक माना तो वही है जो हम ने अभी लिखा (कि मुसल्सल आते रहेंगे) और इस लफ़्ज़ के दूसरे माना भी मुफ़स्सिरीन ने बयान फ़रमाये हैं उन में से एक यह है कि हर फ़रिश्ते के पीछे एक-एक फ़रिश्ता होगा।

ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि "बद्र के दिन जब नबी अक्रम (सल्ल०) ने मुश्रिकीन पर नज़र डाली तो मुश्रिकीन एक हज़ार और मुसलमान 319 थे।" आप ने क़िब्ला की तरफ़ रुख़ होकर दोनों हाथ फैला दिये फिर अपने रब से फ़रियाद करने लगे। आप (सल्ल०) ने इस तरह़ दुआ़ की, ऐ अल्लाह! तूने जो वादा किया है उसे पूरा कर। ऐ अल्लाह! अगर मुसलमानों की इस जमाअ़त को तूने हलाक कर दिया तो फिर ज़मीन पर तेरी अ़िबादत न होगी।

आप काफ़ी देर क़िब्ला रुख़ होकर हाथ फैलाये रहे यहाँ तक कि चादर आप के कंधों से गिर गई। इतने में ह़ज़रत अबू बक्र (रज़ि०) आये उन्होंने चादर उठाकर आप (सल्ल०) के कंधों पर डाली फिर पीछे से आप (सल्ल०) के साथ चिमट गये और कहा ऐ अल्लाह के नबी (सल्ल०)! आप ने अपने रब से दुआ़ की, बेशक अल्लाह आप से अपना वादा पूरा करेगा। फिर अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई। **(मुस्लिम)**

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) कहते हैं कि, "एक मुसलमान एक काफ़िर तअ़क़्क़ुब (घात) लगाए हुए था। ऊपर से एक कोड़े की आवाज़ आई और सवार की भी आवाज़ आई वह सवार कह रहा था चीज़ोम (ग़ालिबन यह उस घोड़े का नाम था) आगे बढ़, इतने में मुसलमान ने देखा कि वह काफ़िर उस के आगे चित पड़ा है उसकी नाक पर निशान था और उस का सर फट गया था। यानी उस ने उसे कोड़ा मारा और फिर उसका जिस्म सब्ज़ हो गया। वह अन्सारी नबी अक्रम (सल्ल०) के पास आया और सारा वाक़िया बयान किया। आप (सल्ल०) ने कहा कि तुम सच कहते हो। यह फ़रिश्ते तीसरे आसमान से मदद के लिए आये थे। **(मुस्लिम)**

फ़रिश्तों का नाज़िल होना

साह़िबे रूहुल् मआ़नी ने बह़वाला इब्ने जरीर ह़ज़रत अ़ली (रज़ि०) से नक़्ल किया है कि जिब्रईल (अ़लै०) एक हज़ार फ़रिश्तों को लेकर नाज़िल हुए जो नबी अक्रम (सल्ल०) के दाहिनीं तरफ़ थे और इसी ओर ह़ज़रत अबू बक्र (रज़ि०) भी थे और मीकाईल (अ़लै०) एक हज़ार फ़रिश्तों को लेकर नाज़िल हुए जो नबी अक्रम (सल्ल०) के बाईं तरफ़ थे और मैं भी उसी तरफ़ था।

सूरः आले इ़मरान में तीन हज़ार और पाँच हज़ार फ़रिश्तों का ज़िक्र है। ह़ज़रत क़तादा ने फ़रमाया

कि पहले तो एक हज़ार फ़रिश्तों के ज़रिये मदद की, फिर तीन हज़ार फ़रिश्ते आये फिर अल्लाह तआ़ला ने पाँच हज़ार की तअ़दाद पूरी फ़रमा दी। फिर फ़रमाया وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى وَلِتَطْمَئِنَّ بِهٖ قُلُوْبُكُمْ (फ़रिश्तों के ज़रिये अल्लाह तआ़ला ने जो मदद फ़रमाई यह केवल इसलिए कि तुम लोगों को बशारत हो और तुम्हारे दिलों को इत्मिनान हो। फ़रिश्तों की मदद की ख़बर एक बहुत बड़ी ख़ुशख़बरी थी जिस से दिलों को सुकून हो गया। फ़ित्री तौर पर इन्सान को अस्बाब के ज़रिये तसल्ली हो जाती है। इसलिए अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से अस्बाब के तौर पर फ़रिश्तों को भेज दिया गया।

وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ

(और मदद सिर्फ़ अल्लाह ही की तरफ़ से है) वह जिस की चाहे मदद फ़रमाए और जैसे चाहे मदद फ़रमाए اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ

(बिलाशुब्हा अल्लाह तआ़ला ग़ल्बे वाला, हिक्मत वाला है।)

वह बग़ैर फ़रिश्तों के भी ग़ल्बा दे सकता है, लेकिन उस की हिक्मत का तक़ाज़ा यह हुआ कि फ़रिश्तों को भेजा जाए। किसी क़ौम की फ़तेह़ व नुस्रत और ग़ल्बा देने के लिए अल्लाह तआ़ला को किसी सबब की ज़रूरत नहीं, लेकिन वह अपनी हिक्मत के मुताबिक़ अस्बाब भी पैदा फ़रमा देता है और फिर अस्बाब के ज़रिये जो नफ़ा पहुँचाना मक़्सूद हो वह नफ़ा पहुँचा देता है। जो फ़रिश्ते आये थे उन्होंने थोड़ा बहुत क़िताल भी किया जिस का बाज़ अहादीस में ज़िक्र है, लेकिन पूरी तरह़ क़िताल में हिस्सा नहीं लिया। उन का अस्ल काम अहले ईमान को जमाना और साबित क़दम रखना था। जैसा कि आइन्दा आयात में فَثَبِّتُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ज़िक्र आ रहा है इस से यह शुब्हा भी ख़त्म हो गया कि हज़ार आदमियों के लिए एक फ़रिश्ता भी काफ़ी था, हज़ारों फ़रिश्तों की क्या ज़रूरत थी?

11 اِذْ يُغَشِّيْكُمُ النُّعَاسَ اَمَنَةً مِّنْهُ وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً لِّيُطَهِّرَكُمْ بِهٖ وَيُذْهِبَ عَنْكُمْ رِجْزَ الشَّيْطٰنِ وَلِيَرْبِطَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْاَقْدَامَ ۝

बद्र में मुसलमानों पर ऊँघ का तारी होना

अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों पर यह भी इनूआ़म फ़रमाया कि परेशानी दूर फ़रमाने के लिए उन पर ऊँघ भेज दी। जैसा कि ग़ज़्व-ए-उ़हद के मौक़े पर भी ऊँघ भेजी थी जिस का ज़िक्र सूरः आले इ़मरान में गुज़र चुका है। उस ऊँघ का नफ़ा यह हुआ कि वह जो तक्लीफ़ मह़सूस कर रहे थे उस का एह़सास ख़त्म हो गया क्योंकि नींद हर चीज़ से ग़ाफ़िल कर देती है ख़ुशी से भी और रंज से भी। उन की परेशानी जाती रही, ह़ज़रत अ़ली (रज़ि०) ने बयान फ़रमाया कि हम सब पर नींद का ग़ल्बा हो गया था मगर रसूलुल्लाह (सल्ल०) सुबह़ तक नमाज़ में मश्ग़ूल रहे।

अल्लाह तआ़ला ने बारिश भी नाज़िल फ़रमाई, उस बारिश के दो फ़ायदे हुए एक तो नहाने धोने और पानी पीने का फ़ायदा हुआ, दूसरे शैतान ने दिलों में जो नापाक वस्वसे डाल दिये थे यह बारिश उन

वस्वसों के ख़त्म करने का सबब बन गई और यह भी फ़ायदा हुआ कि मुसलमान जिस जगह क़याम करते थे वहाँ रेत था, वह पानी पड़ने की वजह से जम गया और जहाँ मुश्रिकीन ठहरे हुए थे वहाँ कीचड़ हो गई।

तफ़्सीर इब्ने कसीर भाग 2 पेज नं० 251 में है कि हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) ने बयान फ़रमाया कि जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) बद्र तशरीफ़ ले गये और वहाँ क़याम फ़रमाया तो वहाँ आप और मुश्रिकीन के दर्मियान बहुत ज़्यादा रेत था। इस रेत में जंग करना भी मुश्किल था और उधर मुसलमानों को पानी की भी ज़रूरत थी, लिहाज़ा शैतान ने उन के दिलों में वस्वसा डाल दिया कि तुम यह ख़याल करते हो कि अल्लाह के दोस्त हो और तुम्हारे साथ अल्लाह का रसूल है और हाल यह है कि पानी पर मुश्रिकीन ने क़ब्ज़ा कर रखा है और तुम हालते जनाबत में नमाज़ पढ़ रहे हो।

इस के बाद अल्लाह तआला ने ख़ूब ज़्यादा बारिश बरसाई, लिहाज़ा मुसलमानों ने पानी पिया और पाकी हासिल की (जिस से ज़ाहिरी नजासत दूर हो गई) और अल्लाह तआला ने शैतान के वस्वसे को दूर फ़रमा दिया (जिस से बातिनी नजासत भी दूर हो गई) और रेत सीमेन्ट की तरह जाम हो गया, जिस पर मुसलमानों का और उन के जानवरों का चलना फिरना और दुश्मनों से जम कर मुक़ाबिला करना आसान हो गया और इस से दिलों को इत्मिनान हो गया क्योंकि अल्लाह तआला की एक मदद का मन्ज़र जंग से पहले ही देख लिया था।

12 إِذْ يُوحِي رَبُّكَ إِلَى الْمَلَٰئِكَةِ أَنِّي مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِينَ آمَنُوا ۚ سَأُلْقِي فِي قُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا
الرُّعْبَ فَاضْرِبُوا فَوْقَ الْأَعْنَاقِ وَاضْرِبُوا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ۝

फ़रिश्तों का क़िताल

इस आयत में अल्लाह तआला ने अपने बाज़ इनआमात का ज़िक्र फ़रमाया है। इर्शाद है कि उस वक़्त को याद करो जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि तुम मोमिनीन के दिलों को जमाओ और उन को जंग में साबित रखो, मैं तुम्हारे साथ हूँ यानी तुम्हारा मददगार हूँ और यह वादा फ़रमाया कि मैं काफ़िरों के दिलों में रोअ़ब डाल दूँगा। अल्लाह तआला ने इस वादे को पूरा फ़रमाया मुसलमान जम कर लड़े और काफ़िर मक्तूल और मग़लूब हुए और क़ैदी बने।

فَاضْرِبُوا فَوْقَ الْأَعْنَاقِ

इस के बारे में बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि यह फ़रिश्तों को हुक्म था कि वह मुश्रिकीन को मारें। बाज़ हदीस से मालूम होता है कि फ़रिश्तों ने जंग की और बाज़ काफ़िरों को मारा, जैसा कि पहले लिखा जा चुका है। फ़रिश्तों का बड़ा काम मुसलमानों को जमाना था उस के साथ उन्होंने कुछ क़िताल में भी हिस्सा लिया। जंग तो अल्लाह तआला ने सहाबा (रज़ि०) ही से करवाई लेकिन फ़रिश्तों को भी मददगार बना दिया। इस में यह बता दिया गया कि हर शख़्स को अपनी मेहनत और मुजाहिदे पर सवाब

मिलता है। अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से जो भी आये यह अल्लाह तआ़ला का इनूआ़म है। मुसलमानों में ख़ुद अपने ही तौर पर लड़ने का और जम कर मुक़ाबिला करने का जज़्बा रहना चाहिए।

ग़ज़्व-ए-बद्र में फ़रिश्तों के क़िताल करने के बारे में बहुत सी ह़दीसें हैं। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि बद्र के दिन फ़रिश्तों की निशानी यह थी कि वह सफ़ेद अ़मामे बाँधे हुए थे जिन के शिमले अपनी कमरों पर डाल रखे थे। अलूबत्ता ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) का अ़मामा ज़र्द रंग का था। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) ने यह भी फ़रमाया कि बद्र के अ़लावा किसी दूसरे मौक़े पर फ़रिश्तों ने क़िताल नहीं किया। **(अलू बिदाया वलू निहाया भाग 2, पेज नं० 281)**

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) ने ग़ज़्व-ए-बद्र का एक वाक़िआ़ भी बयान किया है कि एक मुसलमान एक मुश्रिक के पीछे दौड़ रहा था उस ने अपने सामने कोड़ा लगने की और घोड़े सवार की आवाज़ सुनी जो अपने घोड़ों को यूँ कह रहा था **अक़्दम ख़ैज़ूम** ख़ैज़ूम आगे बढ़ (ख़ैज़ूम उस फ़रिश्ते के घोड़े का नाम था।)

अचानक वह मुसलमान क्या देखता है कि वह मुश्रिक उस के सामने चित पड़ा हुआ है उस पर जो नज़रें डालीं तो देखा कि उसकी नाक पर निशान है और उस का चेहरा कोड़े की ज़र्ब से चीर दिया गया है। यह बात रसूलुल्लाह (सल्ल०) से बयान की तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "तुम ने सच कहा यह उन फ़रिश्तों का काम है जो तीसरे आसमान से मदद के लिए आये हैं।" **(सह़ीह़ मुस्लिम भाग 2, पेज नं० 93)**

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने यह भी बयान फ़रमाया कि फ़रिश्तों ने मक़्तूलीन की गर्दनों के ऊपर मारा था और उन की उंगलियों की पोरों पर ऐसा निशान था जैसे आग ने जला दिया हो।

ह़ज़रत अबूदर्दा (रज़ि०) ने बयान किया है कि मैं बद्र के दिन कटे हुए तीन सर लेकर रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में ह़ाज़िर हुआ, जिन्हें मैंने आपके सामने रख दिये और अ़र्ज़ किया कि उन में से दो शख़्सों को तो हम ने क़त्ल किया है और तीसरे शख़्स को एक लम्बे क़द के आदमी ने क़त्ल किया है, मैं उस मक़्तूल का सर भी ले आया हूँ, आप ने फ़रमाया वह बड़े क़द का फ़लाँ फ़रिश्ता था।

सायब बिन आबी ह़बीश ने बयान किया जो (बद्र के दिन क़ैद कर लिए गये थे फिर बाद में मुसलमान हुए) कि मुझे एक ख़ूब ज़्यादा बालों वाले बड़े क़द वाले आदमी ने पकड़ कर बांध दिया जो सफ़ेद घोड़े पर सवार था, अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ ने मुझे बंधा हुआ देखा तो मुझे रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में ले गये। आप ने फ़रमाया कि तुझे किस ने क़ैद किया? मैंने कहा मैं नहीं जानता यह बात मैंने इसलिए कही कि मैं अस्ल सूरते ह़ाल बताना नहीं चाहता था (कि ऐसे-ऐसे शख़्स ने मुझे क़ैद किया) आप ने फ़रमाया कि तुझे एक फ़रिश्ते ने क़ैद किया है। बाज़ सह़ाबा (रज़ि०) ने यह भी बयान किया कि हम मुश्रिकीन के सर की तरफ़ तलूवार से इशारा करते थे तो उस का सर तलूवार पहुँचने से पहले ही जुदा होकर गिर जाता था। **(अलू बिदाया वलू निहाया)**

فَوْقَ الْأَعْنَاقِ इस से सरों में मारना मुराद है और كُلَّ بَنَانٍ इस से उंगलियों के पोरें मुराद हैं और ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) ने फ़रमाया कि इस से पूरा जिस्म मुराद है। **(रुहुलू मआ़नी)**

فَاضْرِبُوْا यह हुक्म किस के लिए है? बाज़ हज़रात ने फ़रमाया कि यह फ़रिश्तों के लिए है और बाज़ हज़रात ने फ़रमाया कि हज़राते सहाबा (रज़ि०) को भी ख़िताब है। 'अअ़नाक़' और 'बनान' का ज़िक्र फ़रमाने में यह हिक्मत मालूम होती है कि सरों के कट जाने से आदमी ज़रूर मर जाता है और उंगलियों के पोरों पर मारा जाए तो अगरचे मरता नहीं मगर हथियार उठाने के क़ाबिल नहीं होता और जंग करने के क़ाबिल भी नहीं रहता।

13-14 ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ يُّشَاقِقِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝ ذٰلِكُمْ فَذُوْقُوْهُ وَاَنَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابَ النَّارِ ۝

मुश्रिकीन को सज़ा-

मतलब यह है कि काफ़िरों को मारने का यह हुक्म इसलिए है कि उन्होंने अल्लाह और उस के रसूल की मुख़ालिफ़त की। फिर उस को बतौरे क़ायदा (रूल) के इर्शाद फ़रमाया कि जो भी शख़्स अल्लाह और उस के रसूल (सल्ल०) की मुख़ालिफ़त करेगा सज़ा का हक़्दार होगा क्योंकि अल्लाह तआ़ला मुख़ालिफ़त करने वालों को सख़्त अ़ज़ाब देने वाला है।

ذٰلِكُمْ فَذُوْقُوْهُ यह ख़िताब अहले कुफ़्र को है जो बद्र में शरीक हुए। मतलब यह है कि इस अ़ज़ाब को चख लो और मज़ीद फ़रमाया وَاَنَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابَ النَّارِ

(बिलाशुब्हा काफ़िरों के लिए दोज़ख़ का अ़ज़ाब है।)

दुनिया के अ़ज़ाब के बाद आख़िरत के अ़ज़ाब का भी ज़िक्र फ़रमा दिया और यह बता दिया कि अ़ज़ाब यहीं ख़त्म नहीं हो गया।

आयत नं० 15 से 29 तक

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ إِذَا لَقِيتُمُ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ زَحْفًا فَلَا تُوَلُّوهُمُ ٱلْأَدْبَارَ ۝١٥ وَمَن يُوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ دُبُرَهُۥٓ إِلَّا
مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ أَوْ مُتَحَيِّزًا إِلَىٰ فِئَةٍ فَقَدْ بَآءَ بِغَضَبٍ مِّنَ ٱللَّهِ وَمَأْوَىٰهُ جَهَنَّمُ ۖ وَبِئْسَ ٱلْمَصِيرُ ۝١٦ فَلَمْ تَقْتُلُوهُمْ
وَلَٰكِنَّ ٱللَّهَ قَتَلَهُمْ ۚ وَمَا رَمَيْتَ إِذْ رَمَيْتَ وَلَٰكِنَّ ٱللَّهَ رَمَىٰ ۚ وَلِيُبْلِىَ ٱلْمُؤْمِنِينَ مِنْهُ بَلَآءً حَسَنًا ۚ إِنَّ ٱللَّهَ سَمِيعٌ
عَلِيمٌ ۝١٧ ذَٰلِكُمْ وَأَنَّ ٱللَّهَ مُوهِنُ كَيْدِ ٱلْكَٰفِرِينَ ۝١٨ إِن تَسْتَفْتِحُوا۟ فَقَدْ جَآءَكُمُ ٱلْفَتْحُ ۖ وَإِن تَنتَهُوا۟ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۖ
وَإِن تَعُودُوا۟ نَعُدْ وَلَن تُغْنِىَ عَنكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْـًٔا وَلَوْ كَثُرَتْ وَأَنَّ ٱللَّهَ مَعَ ٱلْمُؤْمِنِينَ ۝١٩ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟
أَطِيعُوا۟ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ وَلَا تَوَلَّوْا۟ عَنْهُ وَأَنتُمْ تَسْمَعُونَ ۝٢٠ وَلَا تَكُونُوا۟ كَٱلَّذِينَ قَالُوا۟ سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ۝٢١
إِنَّ شَرَّ ٱلدَّوَآبِّ عِندَ ٱللَّهِ ٱلصُّمُّ ٱلْبُكْمُ ٱلَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ ۝٢٢ وَلَوْ عَلِمَ ٱللَّهُ فِيهِمْ خَيْرًا لَّأَسْمَعَهُمْ ۖ وَلَوْ أَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوا۟ وَّهُم
مُّعْرِضُونَ ۝٢٣ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱسْتَجِيبُوا۟ لِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيكُمْ ۖ وَٱعْلَمُوٓا۟ أَنَّ ٱللَّهَ يَحُولُ بَيْنَ ٱلْمَرْءِ
وَقَلْبِهِۦ وَأَنَّهُۥٓ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ۝٢٤ وَٱتَّقُوا۟ فِتْنَةً لَّا تُصِيبَنَّ ٱلَّذِينَ ظَلَمُوا۟ مِنكُمْ خَآصَّةً ۖ وَٱعْلَمُوٓا۟ أَنَّ ٱللَّهَ شَدِيدُ ٱلْعِقَابِ ۝٢٥
وَٱذْكُرُوٓا۟ إِذْ أَنتُمْ قَلِيلٌ مُّسْتَضْعَفُونَ فِى ٱلْأَرْضِ تَخَافُونَ أَن يَتَخَطَّفَكُمُ ٱلنَّاسُ فَـَٔاوَىٰكُمْ وَأَيَّدَكُم بِنَصْرِهِۦ وَرَزَقَكُم
مِّنَ ٱلطَّيِّبَٰتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝٢٦ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا تَخُونُوا۟ ٱللَّهَ وَٱلرَّسُولَ وَتَخُونُوٓا۟ أَمَٰنَٰتِكُمْ وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ ۝٢٧ وَٱعْلَمُوٓا۟
أَنَّمَآ أَمْوَٰلُكُمْ وَأَوْلَٰدُكُمْ فِتْنَةٌ وَأَنَّ ٱللَّهَ عِندَهُۥٓ أَجْرٌ عَظِيمٌ ۝٢٨ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ إِن تَتَّقُوا۟ ٱللَّهَ يَجْعَل لَّكُمْ فُرْقَانًا
وَيُكَفِّرْ عَنكُمْ سَيِّـَٔاتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ وَٱللَّهُ ذُو ٱلْفَضْلِ ٱلْعَظِيمِ ۝٢٩

अनुवाद-

(15) ऐ ईमान वालो! जब लड़ाई के मैदान में काफ़िरों (इन्कारियों) से तुम्हारा मुक़ाबला हो, तो पीठ न फेरो; (16) और जिस व्यक्ति ने भी उस दिन उनसे अपनी पीठ फेरी-यह और बात है कि लड़ाई की चाल चलने के रूप में या दूसरी टुकड़ी से मिलने के लिए ऐसा करें-तो वह अल्लाह के अ़ज़ाब में गिरफ़्तार हुआ और उसका ठिकाना जहन्नम है, और वह बहुत ही बुरी जगह है। (17) तुम लोगों ने उनको क़त्ल नहीं किया बल्कि अल्लाह ही ने उनको क़त्ल किया, और जब आप ने कंकरियाँ फेंकीं थीं, तो वह आप ने नहीं फेंकीं थीं, बल्कि अल्लाह ने फेंकीं थीं; और ताकि 'वह' अपनी ओर से ईमान वालों को आज़मा ले, बेशक अल्लाह सुनता, जानता हैं; (18) यह तो हुआ, और बेशक अल्लाह काफ़िरों (इन्कारियों) की चाल को कमज़ोर कर देने वाला है। (19) अगर तुम फ़तेह़ (कामियाबी) चाहते हो तो फ़तेह़ तुम्हारे सामने आ चुकी अगर तुम (अपने काम से) रुक जाओ, तो तुम्हारे ह़क़ में बेहतर है अगर तुम ने पलट कर फिर वही हरकत की, तो 'हम' भी पलटेंगे, और तुम्हारा जत्था चाहे कितना ज़्यादह हो, तुम्हारे कुछ काम न आ सकेगा और यह कि अल्लाह मोमिनों के साथ होता है। (20) ऐ ईमान वालो! अल्लाह और उसके रसूल के हुक्म पर चलो और उससे मुँह न फेरो, और तुम सुनते हो; (21) और उन लोगों की तरह न हो जाना जिन्होंने कहा था ''हम ने सुना'' हालाँकि वे सुनते नहीं। (22) बेशक अल्लाह की नज़र में तो तमाम जानदारों से बद्तर वे बहरे गूँगे लोग हैं, जो अक़्ल से काम नहीं लेते। (23) और अगर अल्लाह जानता कि उनमें कुछ भलाई है, तो वह ज़रूर

सुनने की तौफ़ीक़ देता; और अगर 'वह' उन्हें सुना देता, तो भी वे कतराते हुए मुँह फेर लेते। (24) ऐ ईमान वालो! अल्लाह और रसूल की बात मानो जब कि 'वह' तुम्हें उस चीज़ की ओर बुलाएँ जो तुम्हें ज़िन्दगी देने वाली है, और जान लो कि अल्लाह, आदमी और उसके दिल के बीच आड़े आ जाता है, और यह कि 'वही' है जिसकी ओर तुम इकट्ठा किये जाओगे। (25) और उन फ़ित्नों से बचो जो अपनी लपेट में खास तौर से केवल ज़ालिमों को ही नहीं मिलेगा और जान लो कि अल्लाह सख़्त अ़ज़ाब देने वाला है। (26) और जब तुम ज़मीन (मक्का) में थोड़े, और कमज़ोर समझे जाते थे, और डरे सहमे रहते थे कि लोग तुम्हें कहीं उचक न लें जाएँ, तो 'उसने' तुम्हें ठिकाना दिया और अपनी मदद से तुम्हें ताक़त दी और पाकीज़ा चीज़ें खाने को दीं, ताकि तुम शुक्र करो और तुम जानते हो। (27) ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह और उसके रसूल के साथ ख़ियानत न करो और न अपनी अमानतों में ख़ियानत करो और तुम जानते हो। (28) और जान लो कि तुम्हारा माल और औलाद बड़ी आज़माइश हैं और यह कि अल्लाह के पास बड़ा सवाब है। (29) ऐ ईमान वालो। अगर तुम अल्लाह से डरोगे तो वह तुम्हारे लिए फ़र्क़ (अन्तर) पैदा कर देगा, और तुम्हारे गुनाह और तुम्हारी बुराइयाँ दूर कर देगा, और तुम्हें माफ़ कर देगा। और अल्लाह बड़ा फ़ज़्ल वाला है।

आयत नं० 15 से 29 तक की व्याख्या

15-16 يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا لَقِيتُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا زَحْفًا فَلَا تُوَلُّوهُمُ الْأَدْبَارَ ۝ وَمَن
يُوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ دُبُرَهُ إِلَّا مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ أَوْ مُتَحَيِّزًا إِلَىٰ فِئَةٍ فَقَدْ بَاءَ بِغَضَبٍ مِّنَ اللَّهِ
وَمَأْوَاهُ جَهَنَّمُ ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝

इस आयत में अहले ईमान को हुक्म दिया गया है कि जब काफ़िरों से मुक़ाबिला हो तो जम कर लड़ें पीठ फेर कर न भागें क्योंकि यह गुनाहे कबीरा है। सहीह़ बुख़ारी और सहीह़ मुस्लिम में है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, सात हलाक करने वाली चीज़ों से बचो। अ़र्ज़ किया गया या रसूलल्लाह वह क्या हैं? फ़रमायाः-

1. अल्लाह के साथ किसी को शरीक बनाना 2. जादू करना 3. किसी जान को क़त्ल करना जिस का क़त्ल अल्लाह ने ह़राम क़रार दिया यहाँ तक कि ह़क़ के साथ हो 4. सूद खाना 5. यतीम का माल खाना 6. जंग के मौक़े पर पीठ फेर कर चला जाना। मोमिन पाक दामन औ़रत को इल्ज़ाम लगाना है जिन को बुराई का ध्यान तक नहीं है। **(मिश्कातुलू मसाबीह़ पेज नं० 17)**

इस में फ़रमाया कि जो शख़्स जंग के मौक़े पर पीठ फेर कर भागे, वह अल्लाह के ग़ज़ब में आ जाता है और उस का ठिकाना दोज़ख़ है। इसीलिए उ़लमा-ए-किराम ने फ़रमाया कि जिहाद से भागना ह़राम है।

दो सूरतें अलग हैं-

दो सूरतें ऐसी हैं कि उन में पीठ फेर कर चला जाना जायज़ है। एक तो यह कि मक़्सद भागना

न हो बल्कि उसे बतौरे तद्बीर के अख़्तियार कर रहा हो। देखने में जा रहा हो (जिस से दुश्मन यह समझे कि यह शिकस्त खा गया) और ह़क़ीक़त में वापस होकर ह़मला करने की नियत रखता हो, जिस को मुह़ावरे में पैंतरा बदलना कहते हैं। इस को مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ से तअ़बीर (संज्ञा) फ़रमाया कि जिस जगह जंग कर रहा हो उसे छोड़ कर ऐसी जगह चला जाए जो क़िताल के लिए ज़्यादा मुनासिब हो या काफ़िरों की एक जमाअ़त को छोड़ कर दूसरी जमाअ़त की तरफ़ चला जाए। आयत के अल्फ़ाज़ में सब को शामिल हैं। दूसरी सूरत जिस में पीठ फेर कर जाने की इजाज़त है वह यह है कि कोई जंग करने वाला मुसलमान, मुसलमानों की किसी जमाअ़त के पास चला जाए ताकि उन को साथ मिला ले और उन को साथ लेकर जंग करे, इस को مُتَحَيِّزًا اِلٰى فِئَةٍ से तअ़बीर फ़रमाया है।

सह़ाबा (रज़ि०) का वाक़िआ़-

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने बयान फ़रमाया कि काफ़िरों से लड़ने के लिए रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने हमारी एक छोटी सी जमाअ़त बनाकर भेजा। इस मौक़े पर काफ़िरों ने ह़मला किया उसकी वजह से हम लोग महाज़ छोड़ कर मदीना मुनव्वरह आ गये और यह समझ कर कि हम हलाक हो गये, छुप गये। फिर ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की ख़िद्मत में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया कि हम तो राहे फ़रार अख़्तियार करने वालों में से हैं।

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया नहीं, बल्कि तुम लोग जमाअ़त की तरफ़ ठिकाना पकड़ने वाले हो और मैं तुम्हारी जमाअ़त हूँ। आप का मतलब यह था कि क़ुर्आन मजीद में जो दो सूरतों में भागने की इजाज़त दी है उन में से एक यह भी है कि अपनी जमाअ़त की तरफ़ ठिकाना पकड़े, लिहाज़ा तुम उन लोगों में शुमार हो जो अपने लश्कर और जमाअ़त की तरफ़ पनाह लेने के लिए आये, मदीना में आना मेरे पास आना है और मेरे साथ मुसलमानों की जमाअ़त है, तुम अपनी जमाअ़त की तरफ़ आये हो अपने को हलाक न समझो। **(तिर्मिज़ी फ़ी अवाख़िर अबवाबुल् जिहाद)**

वह ह़दीस (जिस में सात बड़े गुनाह बयान किये गये हैं) और इस आयते शरीफ़ा से मालूम हुआ कि दो सूरतों के अ़लावा मैदाने जिहाद से छोड़ कर भाग जाना गुनाह कबीरा है क्योंकि क़ुर्आन मजीद में فَقَدْ بَآءَ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَ مَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ फ़रमाया है। अल्बत्ता दूसरे गुनाह कबीरा की तरह़ तौबः करने से यह गुनाह भी माफ़ हो जाता है जैसा कि ग़ज़्व-ए-हुनैन के लोगों के बारे में फ़रमायाः-

ثُمَّ يَتُوْبُ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ (सूरः तौबः-27)

बारह हज़ार का लश्कर-

फ़ुक़्हा ने लिखा है कि यह मैदान छोड़ कर राहे फ़रार अख़्तियार करने की ह़ुरमत उस सूरत में है जबकि काफ़िरों की तअ़दाद मुसलमानों की तअ़दाद से कम न हो या बराबर या दोगुनी हो या ज़्यादा तो हो लेकिन दोगुनी से कम हो। अगर काफ़िरों की तअ़दाद दोगुनी से ज़्यादा हो तो राहे फ़रार अख़्तियार

करना जायज़ है—इन हज़रात की दलील इसी आयते शरीफ़ा فَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ صَابِرَةٌ يَّغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ से है और साहिबे रुहुल् मआ़नी ने हज़रत इमाम मुहम्मद बिन अल् हसन से यह भी नक़्ल किया गया है कि मुसलमानों का लश्कर बारह हज़ार हो तो मैदान छोड़कर भागना जायज़ नहीं है क्योंकि ह़दीस शरीफ़ में है لن يغلب اثنا عشر الفا من قلة यानी बारह हज़ार का लश्कर कम संख्या की वजह से हरगिज़ मग़्लूब (पराजित) न होगा। **(तिर्मिज़ी)**

जब अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से यह वादा है तो बारह हज़ार मुसलमानों का लश्कर होने की सूरत में मैदान छोड़कर चले जाने की इजाज़त नहीं है चाहे दुश्मनों का लश्कर कितना ही ज़्यादा हो और यह बात आज़माई जा चुकी है। बारह हज़ार का लश्कर कम संख्या की वजह से मग़्लूब (पराजित) न होगा। इख़्लास न होने या अ़जाबे नफ़्स की वजह से मग़्लूबियत हो जाए यह दूसरी बात है।
ग़ज़्व-ए-बद्र में काफ़िरों की तअ़दाद तीन गुनी थी फिर भी फ़रार की इजाज़त न थी क्योंकि उस वक़्त तक आयते करीमा اَلْـٰٔنَ خَفَّفَ اللّٰهُ عَنْكُمْ नाज़िल नहीं हुई थी।

17-18 فَلَمْ تَقْتُلُوْهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ قَتَلَهُمْ ۪ وَمَا رَمَيْتَ اِذْ رَمَيْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى ۚ وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِيْنَ مِنْهُ بَلَآءً حَسَنًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ ذٰلِكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ مُوْهِنُ كَيْدِ الْكٰفِرِيْنَ ۝

अल्लाह तआ़ला की मदद

ग़ज़्व-ए-बद्र में बज़ाहिर मुसलमानों ने जंग की, उन के साथ फ़रिश्तों ने भी शिरकत की। लेकिन चूंकि अल्लाह तआ़ला ही ह़क़ीक़ी मददगार है और सब कुछ उसी की मर्ज़ी और इरादे से होता है इसलिए यह फ़रमाया कि فَلَمْ تَقْتُلُوْهُمْ तुम ने उन्हें क़त्ल وَلٰكِنَّ اللّٰهَ قَتَلَهُمْ شاهت الوجوه लेकिन अल्लाह ने उन्हें क़त्ल किया है। ग़ज़्व-ए-बद्र के मौक़े पर एक यह वाक़िआ़ भी पेश आया कि ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया कि आप मिट्टी की एक मुट्ठी भर कर दुश्मनों की तरफ़ फेंक दीजिए, आप ने ऐसा ही किया और वह मिट्टी मुश्रिकीन में से हर शख़्स की आँखों में और नाक के नथनों और मुँह में पहुँच गई जिस की वजह से वह लोग पीठ फेर कर भाग खड़े हुए, अब मुसलमान उन पर पिल पड़े, उन को क़त्ल भी करते रहे और क़ैद भी करते रहे।

आप ने जब उन की तरफ़ मिट्टी फेंकी तो उन को बद्दुआ़ देते हुए फ़रमाया (दुश्मनों के चेहरे बद्सूरत हो गये) इस पर वह लोग शिकस्त खाकर भागे, इसी को फ़रमाया وَمَا رَمَيْتَ اِذْ رَمَيْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى (और यह जो आप ने मिट्टी फेंकी आप ने नहीं फेंकी बल्कि अल्लाह ने फेंकी) यानी अल्लाह तआ़ला ने उन के चेहरों तक पहुँचा दी और इस को शिकस्त का ज़रिया बना दिया।
(तफ़्सीर इब्ने कसीर पेज नं० 295, भाग 2)

यह मिट्टी फेंकने का वाक़िआ़ ग़ज़्व-ए-हुनैन के मौक़े पर भी पेश आया था। फिर फ़रमाया وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِيْنَ مِنْهُ بَلَآءً حَسَنًا (और ताकि अल्लाह तआ़ला मोमिनीन को अपनी तरफ़ से अच्छा

इनआ़म दे।) लफ़्ज़ بَلَآءً के माने में भी आता है और आज़माइश के माने में भी, मुफ़स्सिरीन ने यहाँ इनआ़म का माने लिया है और मतलब यह बताया है ताकि अल्लाह तआ़ला मोमिनीन को ऐसा अच्छा इनआ़म अ़ता फ़रमाए जिस में तक्लीफ़ें न हों। अल्लाह तआ़ला ने जो काफ़िरों को क़त्ल किया और मुट्ठी भर मिट्टी उन की आँखों में पहुँचाई और उन को शिकस्त दी जिस की वजह से अहले ईमान फ़तेहयाब हुए, यह अल्लाह का इनआ़म अ़ज़ीम है। बाज़ मुफ़स्सिरीन ने इस का दूसरा तर्जुमः भी किया है।

साहिबे रुहुल् मआ़नी लिखते हैं واختار بعضهم تفسيره بالابلاء في الحرب यानी बाज़ हज़रात ने आयत का यह माने लिया है ताकि अल्लाह तआ़ला मोमिनीन को जंग में अच्छी तरह आज़माए।

اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ —(बिलाशुब्हा अल्लाह सुनने वाला है) जिस ने मुसलमानों की दुआ़ सुनी और मदद फ़रमाई عَلِيْمٌ (जानने वाला है) सब की नियतों को और ज़ाहिर को और बातिन को भी जानता है। इस के बाद फ़रमाया ذٰلِكُمْ यानी अल्लाह तआ़ला का एक इनआ़म तो यह है जो अभी ज़िक्र हुआ وَاَنَّ اللّٰهَ مُوْهِنُ كَيْدِ الْكٰفِرِيْنَ (और बिलाशुब्हा अल्लाह काफ़िरों की तद्बीर को कमज़ोर करने वाला है।) यह दूसरा इनआ़म है बद्र के मौक़े पर दुश्मन बहुत ज़्यादा थे उन के पास साज़ो सामान बहुत था। अपने ख़याल में मुसलमानों को शिकस्त देने के लिए आये थे, लेकिन उन की सारी तद्बीर धरी रह गई और भारी तअ़दाद में मक़्तूल हुए और क़ैदी बना लिये गये।

19 اِنْ تَسْتَفْتِحُوْا فَقَدْ جَآءَكُمُ الْفَتْحُ ۚ وَاِنْ تَنْتَهُوْا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَاِنْ تَعُوْدُوْا نَعُدْ ۚ وَلَنْ تُغْنِيَ عَنْكُمْ
فِئَتُكُمْ شَيْـًٔا وَّلَوْ كَثُرَتْ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝

मुश्रिकीन से अल्लाह तआ़ला का ख़िताब

मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि अबू जेहल ने बद्र के दिन लड़ाई से पहले यूँ दुआ़ की थी कि ऐ अल्लाह! यह जो दो जमाअ़तें हैं (एक मोमिनीन दूसरे मुश्रिकीन) उन में से जो भी क़तअ़ रहमी (नाता तोड़ने) में बढ़कर हो और जो ऐसी चीज़ लेकर आया हो जिसे हम नहीं जानते आज की सुबह उसे शिकस्त दे देना। एक रिवायत में यूँ है कि जब मुश्रिकीन बद्र के लिए रवाना होने लगे तो कअ़बः शरीफ़ के पर्दे पकड़ कर अल्लाह तआ़ला से मदद तलब की और यूँ कहा कि ऐ अल्लाह! दोनों लश्करों में से जो लश्कर आप के नज़्दीक बेहतर हो उस की मदद फ़रमाइए। **(इब्ने कसीर भाग 2, पेज नं० 296)**

एक रिवायत में यूँ है कि जब बद्र के दिन दोनों जमाअ़तें मुक़ाबिल हुईं तो अबू जेहल ने कहा ऐ अल्लाह! हमारा दीन क़दीम है और मुहम्मद (सल्ल०) का दीन नया है। दोनों दीनों में जो दीन आप को महबूब हो और आप उस से राज़ी हों उसी दीन की मदद कीजिए। **(रुहुल् मआ़नी भाग 9, पेज नं० 187)**

मुश्रिकीन ने यह दुआ़ की जिन में अबू जेहल पेश-पेश था। अल्लाह तआ़ला ने दुआ़ क़ुबूल फ़रमाई और जो दीन अल्लाह के नज़्दीक महबूब था उसी दीन (यानी इस्लाम) के मानने वालों की मदद फ़रमाई और उन को फ़तेहयाब फ़रमाया। ऊपर की आयत में इसी का ज़िक्र है कि तुम ने जो दुआ़ की थी और

हक़ व बातिल का फ़ैसला चाहा था वह फ़ैसला तुम्हारे सामने आ गया। अहले हक़ की अल्लाह ने मदद फ़रमाई, अब तुम्हें अपनी दुआ के मुताबिक़ भी कुफ़्र पर बाक़ी रहने का कोई मौक़ा नहीं रहा।

وَاِنْ تَنْتَهُوْا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ — (और अगर तुम रसूलुल्लाह (सल्ल०) की दुश्मनी और आप के मुक़ाबिले में जंग करने से बाज़ आ जाओ तो यह तुम्हारे लिए बेहतर है।) यह ख़िताब उन काफ़िरों को है जो क़ैद कर लिए गये थे और जो काफ़िर मक्का ही में रह गये थे, जंग में शिरकत नहीं की थी, उन से फ़रमाया وَاِنْ تَعُوْدُوْا نَعُدْ और अगर तुम फिर वही काम करोगे, जो पहले किया था (यानी अगर तुम ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से जंग करने के मन्सूबे बनाये और जंग करने के लिए निकल खड़े हुए तो फिर वही करेंगे जो इस जंग यानी ग़ज़्व-ए-बद्र के मौक़े पर किया यानी अहले ईमान की मदद करेंगे उन को फ़तेह़याबी देंगे और फिर तुम ज़लील व ख़्वार होगे।

बड़ी तअ़दाद-

وَلَنْ تُغْنِيَ عَنْكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْئًا وَّلَوْ كَثُرَتْ

और यह जो तुम अपनी जमाअ़त को बड़ी देख रहे हो और उस की जमीअ़त पर भरोसा कर रहे हो यह कितनी भी ज़्यादा हो जाए तुम्हें कुछ नफ़ा नहीं पहुँचा सकती وَاَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ (और अल्लाह मोमिनीन के साथ है।)

इस आयत के नाज़िल होने के बाद मुश्रिकीने अ़रब और ख़ासतौर से मुश्रिकीने मक्का के लिए इस बात के सोचने की गुन्जाइश नहीं थी कि वह मुसलमानों के ख़िलाफ़ फिर जंग करने का इरादा करें और हमेशा के लिए मुस्तक़िल एलान फ़रमा दिया कि وَاَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ लेकिन मुश्रिकीन की फिर भी आँखें न खुलीं और ग़ज़्व-ए-अह़ज़ाब में फिर क़बीलों और जमाअ़तों को लेकर मदीना मुनव्वरह पर चढ़ आये।

अल्लाह तआ़ला ने अपना वादा पूरा फ़रमाया और उनकी बहुत बड़ी जमीअ़त तितर-बितर होकर भाग गई। अल्लाह तआ़ला की मदद हमेशा से मुसलमानों के साथ है अगर अल्लाह तआ़ला की मदद न होती तो कुफ़्फ़ार थोड़े से मुसलमानों को जो शुरु में थे, बिल्कुल ही ख़त्म कर दिये जाते और दीने इस्लाम बिल्कुल आगे न बढ़ता, लेकिन काफ़िरों की हज़ारों तद्बीरें फ़ेल हुईं। मैदाने जिहाद में उनकी बड़ी-बड़ी जमाअ़तें मग़्लूब (पराजित) हुईं, उन में से लाखों मक़्तूल हुए और अल्हम्दु लिल्लाह ईमान हमेशा बढ़ता रहा और आज भी काफ़िरों की तद्बीरें फ़ेल हैं उन के दिलों में उन के घरों में उन की मौजूदा नस्लों में इस्लाम दाख़िल हो रहा है। मुख़्तलिफ़ मुल्कों में रोज़ाना इस को देखा जाता है कि ولقد صدق الله وان الله مع المومنين दुनिया में जहाँ कहीं मुसलमानों की शिकस्त है वह उन के फ़िस्क़ (गुनाह) की वजह से है। इस्लाम पर जमे न रहने की वजह से हैं, इसलिए दुश्मनों के घेरे में आ जाते हैं।

20-24

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَوَلَّوْا عَنْهُ وَاَنْتُمْ تَسْمَعُوْنَ ۝ وَلَا تَكُوْنُوْا
كَالَّذِيْنَ قَالُوْا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ۝ اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ ۝
وَلَوْ عَلِمَ اللّٰهُ فِيْهِمْ خَيْرًا لَّاَسْمَعَهُمْ ۭ وَلَوْ اَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَجِيْبُوْا

لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيْكُمْ ۚ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَحُوْلُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهٖ وَاَنَّهٗٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿۲۴﴾

अल्लाह तआ़ला और उस के रसूल (सल्ल०) की फ़रमाँबरदारी

इन आयात में अल्लाह तआ़ला की और उस के रसूल (सल्ल०) की फ़रमाँबरदारी का हुक्म फ़रमाया और फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला और उस के रसूल (सल्ल०) के हुक्म से मुँह न मोड़ो ह़ालाँकि तुम सुनते हो, यानी जब तुम बात सुन रहे हो कुर्आन का हुक्म तुम्हारे सामने है। रसूलुल्लाह (सल्ल०) हुक्म दे रहे हैं तो अ़मल न करने की कोई वजह नहीं और कोई उ़ज़्र जो अ़मल से रोके।

मज़ीद फ़रमाया وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ قَالُوْا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ

(और उन लोगों की तरह़ न हो जाओ जिन्होंने कहा कि हम ने सुन लिया, ह़ालांकि वह नहीं सुनते।)

'उन से' काफ़िर और मुनाफ़िक़ मुराद हैं। उन के कानों में तो बात जाती है लेकिन चूंकि दिल के कानों से नहीं सुनते और पहले ही यह तय कर रखा है कि हमें मानना और समझना नहीं है इसलिए कानों का सुनना न सुनने के बराबर हो जाता है। फिर फ़रमायाः-

اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ

(यानी बेशक ज़मीन पर चलने फिरने वालों में अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक सब से बुरे वह लोग हैं जो गूंगे और बहरे हैं समझ नहीं रखते।)

अ़रबी के एतिबार से हर उस चीज़ को **'दाब्बा'** कहा जाता है जो ज़मीन पर चलती फिरती हो, लोगों में चौपायों को **'दाब्बा'** कहा जाता है। अगर लग़्वी माने के एतिबार से **'दाब्बा'** मुराद लिया जाए तो मतलब यह होगा कि ज़मीन पर चलने वाली मख़्लूक़ में अल्लाह के नज़्दीक सब से ज़्यादा बुरे वह लोग हैं जो न तो ह़क़ सुनते हैं और न ह़क़ बोलते हैं और उनकी इन्तेहाई बुरी ह़ालत यह है कि समझते भी नहीं। बहरा शख़्स कभी-कभी कुछ इशारे से समझ तो लेता है लेकिन जिस में अ़क़्ल ही न हो तो वह किसी तरह़ समझता ही नहीं, यह काफ़िरों की बद्ह़ाली है।

अगर **'दाब्बा'** के माने चौपाया लिया जाए तो मतलब यह होगा कि अहले कुफ़्र चौपायों की तरह़ हैं कि वह न सुनते हैं न बोलते न समझते हैं। सूरः फ़ुर्क़ान में फ़रमायाः-

اَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ ؕ اَفَاَنْتَ تَكُوْنُ عَلَيْهِ وَكِيْلًا ﴿۴۳﴾ اَمْ تَحْسَبُ اَنَّ اَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُوْنَ اَوْ يَعْقِلُوْنَ ؕ
اِنْ هُمْ اِلَّا كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿۴۴﴾

(ऐ पैग़म्बर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! आप ने उस शख़्स की ह़ालत भी देखी जिस ने अपना ख़ुदा अपनी ख़्वाहिशे नफ़्सानी को बना रखा है सो क्या आप उस की निगरानी कर सकते हैं या आप यह ख़याल करते हैं कि उन में अक्सर सुनते या समझते हैं, यह तो केवल चौपायों की तरह़ हैं बल्कि उन से भी ज़्यादा बेराह हैं) फिर फ़रमायाः-

وَلَوْ عَلِمَ اللّٰهُ فِيْهِمْ خَيْرًا لَّاَسْمَعَهُمْ ؕ وَلَوْ اَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿۲۳﴾

(और अगर अल्लाह के इल्म में होता कि उन में कोई ख़ैर है यानी हक़ की तलब है तो उन्हें सुना देता) यानी ऐसे सुनने की तौफ़ीक़ देता जो सुनना एतिक़ाद के साथ हो और यह सुनना उन के लिए फ़ायदेमन्द बन जाता और चूंकि उन को हक़ की तलब नहीं है इसलिए अगर अल्लाह तआ़ला उन को सुनाये तो मुँह फेरेंगे और दूसरी तरफ़ रुख़ कर के चल देंगे।)

बात यह है कि जब तलब नहीं होती तो कान में पड़ने वाली बात असर नहीं करती और सारी सुनी अनुसुनी हो जाती है। फिर फ़रमायाः-

يَآيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيْكُمْ ؕ

(ऐ ईमान वालो! अल्लाह और उस के रसूल के फ़रमान को बजा लाओ जब अल्लाह का रसूल (सल्ल०) तुम्हें उस चीज़ की तरफ़ बुलाये जो तुम्हें ज़िन्दा करती है।)

इस में अल्लाह और उस के रसूल (सल्ल०) का हुक्म मानने और फ़रमाँबरदारी करने का हुक्म देने के साथ-साथ रसूलुल्लाह (सल्ल०) के बारे में यूँ फ़रमाया कि वह तुम्हें एक ऐसी चीज़ की तरफ़ बुलाते हैं जिस में तुम्हारी ज़िन्दगी है, इस से हक़ीक़ी ज़िन्दगी मुराद है और वह आ़माले सालिहा वाली ज़िन्दगी है जिस से दुनियावी ज़िन्दगी भी ज़िन्दगी बन जाती है और आख़िरत में भी हमेशा की ज़िन्दगी नसीब होगी, कुफ़्र के साथ ज़िन्दगी कोई ज़िन्दगी नहीं, ज़िन्दगी अपने ख़ालिक़ व मालिक की वफ़ादारी का नाम है जो अपने रब से गाफिल है वह जिन्दा नहीं है। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमायाः-

مثل الذی یذکر ربہ والذی لا یذکر مثل الحی والمیت **(मिश्कातुलु मसाबीह़ पेज नं० 196 बुख़ारी)**

(उस शख़्स की मिसाल जो अपने रब को याद करता है और जो अपने रब को याद नहीं करता मुर्दा और ज़िन्दा की सी है) जो अल्लाह तआ़ला की याद से ग़ाफ़िल है वह मुर्दा है और जो उसकी याद में लगे हुए हैं वह ज़िन्दा हैं।

हमेशा की ज़िन्दगी के लिए ईमान ज़रुरी है और नेक आ़माल से ईमान में नूरानियत आ जाती है उस में तरक़्क़ी होती है। आख़िरत में..........जो तरह़-तरह़ की हमेशा नेअ़मतें ह़ासिल होंगी उन में आ़माले सालिह़ा को दख़्ल होगा। अहले ईमान की जन्नत वाली ज़िन्दगी के बारे में सूरः अनुक़बूत *(आयत नं० 64)* में फ़रमाया وَاِنَّ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ لَهِيَ الْحَيَوَانُ ۘ (और बेशक दारे आख़िरत ही ज़िन्दगी है।)

अहले कुफ़्र के बारे में फ़रमाया لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى कि वह इस में न ज़िन्दा रहेगा और न मरेगा। ह़क़ीक़त में अ़ज़ाबे अ़ज़ीम के साथ जीना कोई ज़िन्दगी नहीं है। फिर फ़रमायाः-

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَحُوْلُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهٖ

(और जान लो कि बिलाशुब्हा अल्लाह ह़ायल हो जाता है आदमी के और उस के दिल के दर्मियान।)

साहिबे रुहुलु मआ़नी भाग 2, पेज नं० 191 ने इस का एक माने यह बताया है कि इस से क़ुर्ब मुराद है और मतलब यह है कि अल्लाह तआ़ला बन्दे के दिल से भी ज़्यादा क़रीब है। वह फ़रमाते हैं कि आयते शरीफ़ा *(सूरः क़ाफ़-16)* وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِ ۝ और यह आयत दोनों हम माने हैं।

फिर बाज़ ह़ज़रात से नक़्ल किया है कि इस के माने यह हैं कि बन्दों के दिल अल्लाह के क़ब्ज़े

क़ुद्रत में हैं वह जैसे चाहता है तसर्रुफ़ फ़रमाता है। उस के तसर्रुफ़ से दिलों के अ़ज़ायम और मक़ासिद बदल जाते हैं, वह किसी को हिदायत से नवाज़ता है और किसी को सिराते मुस्तक़ीम से हटा देता है। किसी के अम्न को ख़ौफ़ से बदल देता है और जो चीज़ें याद हों उनको भुला देता है। इस बारे में उन्होंने एक ह़दीस भी नक़्ल की है जो ह़ज़रत उम्मे सल्मा (रज़ि०) से मरवी है वह यह कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) अक्सर यह दुआ़ फ़रमाते थे يَامُقَلِّبَ الْقُلُوْبِ ثَبِّتْ قَلْبِىْ عَلٰى دِيْنِكَ

(ऐ दिलों के पलटने वाले! मेरे दिल को अपने दीन पर साबित रख।)

यह सुनकर ह़ज़रत उम्मे सल्मा (रज़ि०) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! आप कस्रत से यह दुआ़ फ़रमाते हैं इस की क्या वजह है? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, ऐ उम्मे सल्मा! कोई शख़्स ऐसा नहीं जिस का दिल अल्लाह के क़ब्ज़े क़ुद्रत में न हो, वह जिसे चाहे हिदायत पर क़ायम रखे और जिसे चाहे हटा दे। साहिबे रुहुल् मआ़नी ने ह़दीस का ह़वाला नहीं दिया।

अल्बत्ता मुफ़स्सिर इब्ने कसीर भाग 2 पेज नं० 298 ने बह़वाला 'मुस्नद अह़मद' यह ह़दीस नक़्ल की है। इस ह़दीस के हम माने, ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (रज़ि०) से भी रिवायत है जिसे साहिबे मिश्कात ने पेज नं० 20 पर सह़ीह़ मुस्लिम से नक़्ल किया है। आख़िर में फ़रमाया وَاَنَّهٗٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ और बिलाशुब्हा तुम उस की तरफ़ जमा किये जाओगे।)— इस में यौमे आख़िरत की याद की तरफ़ मुतवज्जेह फ़रमाया गया है। आख़िरत की याद तमाम दीनी व दुनियवी कामों के दुरुस्त होने का ज़रिया बन जाती है इसलिए कि आख़िरत से ग़फ़्लत ही आमतौर से गुनाहों और ख़राबियों का ज़रिया बनती है।

25 وَاتَّقُوْا فِتْنَةً لَّا تُصِيْبَنَّ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْكُمْ خَآصَّةً ۚ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝

इस आयते करीमा में यह बताया गया है कि गुनाहों में मुब्तिला होने की वजह से जो फ़ित्ना यानी अ़ज़ाब और वबाल आता है वह सिर्फ़ उन्हीं लोगों तक नहीं रहता जिन्होंने गुनाह किये, बल्कि दूसरे लोग भी उस में मुब्तिला हो जाते हैं।

ह़दीस से मालूम होता है कि **'अम्र बिल् मअ़रूफ़'** और **'नहि अनिल् मुन्कर'** छोड़ देने की वजह से सब गुनाहगारों पर अ़ज़ाब आता है तो वह लोग भी इस में मुब्तिला हो जाते हैं जो उन गुनाहों के करने वाले नहीं जिन की वजह से अ़ज़ाब आया, लेकिन चूंकि उन लोगों ने गुनाहों से रोकने का फ़रीज़ा अदा नहीं किया और अपनी नेकियों में लगे रहे और गुनाहगारों को गुनाहों से नहीं रोका इसलिए यह लोग भी अ़ज़ाब में मुब्तिला होते हैं। बहुत सी ह़दीसों में इस का बयान गुज़र चुका है।

'नहि अनिल् मुन्कर'–

ह़ज़रत जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, "किसी भी क़ौम में अगर कोई शख़्स हो जो गुनाहों के काम करता हो और वह लोग रोकने पर क़ुद्रत रखते हुए उसे न रोकते हों तो उन लोगों की मौत से पहले अल्लाह तआ़ला उन पर आ़म अ़ज़ाब भेज देगा।" **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 437)**

हज़रत नोअ़मान बिन बशीर (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने गुनाहों में पड़ने वालों और गुनाह होते हुए देखने वालों की एक मिसाल बयान फ़रमाई और वह यह कि एक कश्ती है उस में दो फ़्लोर हैं, कुरअ़ डाल कर आपस में तय कर लिया कि कौन लोग ऊपर के हिस्से में जगह लेंगे और कौन लोग नीचे वाले हिस्से में बैठेंगे, जब अपने-अपने हिस्सों में बैठ गये तो जो लोग नीचे हैं वह पानी लेने के लिए ऊपर जाते हैं, ऊपर वाले लोग उन के आने से तक्लीफ़ महसूस करते हैं (जब नीचे वालों ने यह देखा कि यह लोग हमारे आने से तक्लीफ़ महसूस करते हैं तो) उन्होंने एक कुल्हाड़ा लिया और कश्ती में नीचे सुराख़ करने लगे। ऊपर वाले आये और उन्होंने कहा कि तुम यह क्या करते हो? उन्होंने जवाब दिया कि हमें पानी की ज़रूरत है और हम ऊपर जाते हैं तो तुम्हें तक्लीफ़ होती है (लिहाज़ा हम यहीं से पानी ले लेंगे) तो अब अगर ऊपर वाले लोग नीचे वालों का हाथ पकड़ लेंगे (ताकि सुराख़ न करें) तो उन को भी बचा लेंगे और अपनी जान को भी बचा लेंगे और अगर उन को इसी हाल में छोड़ दिया तो उन को भी हलाक कर देंगे और अपनी जानो को भी हलाक कर देंगे।

(बुख़ारी पेज नं० 339, भाग 1 पेज नं० 369, भाग 2)

मालूम हुआ कि जहाँ खुद नेकियाँ करने और गुनाहों से बचने की ज़रूरत है वहीं इस की भी ज़रुरत है कि गुनाह करने वालों को गुनाह करने से रोकते रहें। अगर ऐसा न किया तो अ़ज़ाब आने की सूरत में सभी मुब्तिला-ए-अ़ज़ाब होंगे।

हज़रत जाबिर (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने जिब्रईल (अ़लै०) की तरफ़ वह्य भेजी कि फ़लाँ शहर को उस के रहने वालों समेत उलट दो। हज़रत जिब्रईल (अ़लै०) ने अ़र्ज़ किया कि ऐ हमारे रब! बिलाशुब्हा उन लोगों में आपका एक ऐसा बन्दा भी है जिस ने कभी पल झपकने के बराबर भी आप की नाफ़रमानी नहीं की (क्या उस को भी अ़ज़ाब में शामिल कर दिया जाए?) अल्लाह तआ़ला का इर्शाद हुआ कि उस शहर को उस शख़्स समेत पूरी बस्ती को उलट दो, क्योंकि मेरे बारे में उस के चेहरे में कभी तब्दीली नहीं आई। **(मिश्कातुलू मसाबीह़ भाग 2, पेज नं० 438)**

यानी यह शख़्स ज़बान से और हाथ से तो लोगों को गुनाहों से क्या रोकता उस के चेहरे पर गुनाहों को देखकर ज़रा सा भी असर न हुआ।

'अम्र बिलू मअ़रूफ़' और **'नहि अनिलू मुन्कर'** छोड़ देने की वजह से जब अ़ज़ाब आता है तो उस वक़्त दुआ़एँ भी कुबूल नहीं होतीं। हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, "क़सम उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है **'अम्र बिल मअ़रूफ़'** और **'नहि अनिलू मुन्कर'** करते रहो, वरना अन्क़रीब अल्लाह तआ़ला तुम पर अपने पास से अ़ज़ाब भेज देगा फिर उस से दुआ़ माँगोगे तो वह कुबूल न फ़रमाएगा।" **(तिर्मिज़ी)**

बाज़ हज़रात ने इस आयत की तफ़्सीर करते हुए फ़रमाया कि इस में उस फ़ित्ने का ज़िक्र है जो जिहाद को छोड़ने की वजह से अ़वाम व ख़वास सब को अपनी लपेट में ले ले और वजह उसकी यह है कि दीन और शआ़यरे दीन की हिफ़ाज़त और मुसलमानों की हिफ़ाज़त जिहाद क़ायम रखने में है, जो

मुसलमानों पर फ़र्ज़े किफ़ाया है।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, "जो क़ौम जिहाद छोड़ देगी अल्लाह तआला उन पर अ़ज़ाब भेज देगा।" **(मजमउल् ज़वायद भाग 5 तबरानी, पेज नं० 284)**

आख़िर में फ़रमाया وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ (और जान लो कि अल्लाह सख़्त अ़ज़ाब वाला है।)

26 وَاذْكُرُوا إِذْ أَنتُمْ قَلِيلٌ مُّسْتَضْعَفُونَ فِي الْأَرْضِ تَخَافُونَ أَن يَتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ فَآوَاكُمْ وَأَيَّدَكُم
بِنَصْرِهِ وَرَزَقَكُم مِّنَ الطَّيِّبَاتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝

मुसलमानो को एक बड़े इनआ़म की याद दहानी

बद्र में जो अल्लाह तआ़ला ने अहले ईमान की मदद फ़रमाई, यह केवल अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ल था। वाक़िआ बद्र की वजह से मुसलमानों को इ़ज़्ज़त ह़ासिल हो गई और पूरे अ़रब पर धाक बैठ गई और क़ुरैशे मक्का (जो तिजारत के लिए मुल्के शाम आया जाया करते थे) के वास्ते से क़ैसर व किसरा को भी मुसलमानों की इस फ़तेह़याबी का इ़ल्म हुआ और उन्हें भी मुसलमानों की उभरती हुई ताक़त का पता चल गया। ग़ज़्व-ए-बद्र में मुसलमानों को जो कामियाबी हुई और मुश्रिकीन ने जो बुरी तरह़ शिकस्त खाई अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों पर अपने उस इनआ़म का एह़सान जताया और उनकी पिछली कमज़ोरी को याद दिलाया और इर्शाद फ़रमायाः-

कि तुम अपना वह वक़्त याद करो जबकि थोड़े थे कमज़ोर भी थे, मक्का की सरज़मीन में तुम्हारी कुछ भी हैसियत नहीं थी, तुम्हें इस बात का डर लगा रहता था कि लोग तुम्हें उचक लेंगे और कुफ़्फ़ारे मक्का तुम्हें ख़त्म कर देंगे। अल्लाह तआ़ला ने अपना फ़ज़्ल फ़रमाया कि तुम्हें मदीना मुनव्वरह में ठिकाना दिया, जहाँ रहने की जगह मिल गई और दुश्मनों से हिफ़ाज़त भी हो गई। फिर जब मक़ामे बद्र में दुश्मनों से मुठभेड़ हुई तो अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें कुव्वत दी और मदद फ़रमाई और तुम्हें पाकीज़ा चीज़ें नसीब फ़रमाईं।

बाज़ ह़ज़रात का क़ौल है कि इस से तमाम ह़लाल और लज़ीज़ चीज़ें मुराद हैं और बाज़ ह़ज़रात ने फ़रमाया कि जो माल बद्र में 'ग़नीमत' के तौर पर ह़ासिल हुए थे वह मुराद हैं। आख़िर में फ़रमाया لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝ (ताकि तुम शुक्रगुज़ार बन्दे बनो।)

मक्का की ज़िन्दग़ी की तरफ़ इशारा है। जब ख़ुद ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर क़ातिलाना ह़मले की कोशिश की गई, मुसलमानों को बेपनाह तक्लीफ़ों का निशाना बनाया गया।

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) कहते हैं कि एक बार आप (सल्ल०) बैतुल्लाह के पास नमाज़ पढ़ रहे थे। अबू जेहल और उस के साथी वहाँ बैठे हुए थे वह आपस में कहने लगे कि हम में कौन जाता है और फ़लाँ लोगों ने जो ऊँटनी काटी है उस की ओझड़ी लाकर मुह़म्मद (सल्ल०) जब सज्दः करे तो उसकी पीठ पर रख दे? यह सुनकर उनका बद्बख़्त तरीन (उ़क़्बा बिन अबी मुअ़ीत) उठा

और ओझड़ी लाकर आप (सल्ल०) के दोनों कंधों के दर्मियान पीठ पर रख दिया। मैं ख़ुद देख रहा था लेकिन कुछ कर न सकता था। काश (उस दिन) मेरा कुछ ज़ोर होता। काफ़िर हँसते और एक दूसरे पर गिरते, आप सज्दे ही में पड़े रहे, सर नहीं उठा सकते थे, यहाँ तक कि (आप की बेटी) फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा आईं और ओझड़ी को उठाकर फेंका। **(बुख़ारी)**

27 يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا تَخُونُوا۟ ٱللَّهَ وَٱلرَّسُولَ وَتَخُونُوٓا۟ أَمَٰنَٰتِكُمْ وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ ۝

दुर्रे मन्सूर भाग 3, पेज नं० 178 में हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह से नक़्ल किया गया है कि जब अबू सुफ़्यान की मक्का से रवानगी हुई तो हज़रत जिब्रईल (अ़लै०) ने आप को बता दिया कि अबू सुफ़्यान फ़ुलाँ-फ़ुलाँ जगह पर है, लिहाज़ा उसकी तरफ़ निकल खड़े हों और इस बात को छुपाए रखें लेकिन बाज़ मुनाफ़िक़ीन ने अबू सुफ़्यान को बज़रिये ख़त ख़बर दे दी कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) तुम्हारे क़ाफ़िले पर हमला करने के लिए इरादा कर रहे हैं लिहाज़ा तुम अपनी हिफ़ाज़त की फ़िक्र करो। इस पर यह आयत नाज़िल हुई। एक रिवायत में यूँ है जो हज़रत इब्ने शिहाब ज़ुहरी से मरवी है कि बनू क़ुरैज़ा (जो यहूदियों का एक क़बीला था) उन्होंने जब मुआ़हिदा की ख़िलाफ़वर्ज़ी की तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उन का मुहासिरा फ़रमाया उन्होंने कहा कि सअ़द बिन मुआ़ज़ जो फ़ैसला करें वह हमें मन्ज़ूर है।

यहूदियों का क़बीला-

हज़रत सअ़द (रज़ि०) ने यह फ़ैसला दिया कि उन में जो बालिग़ मर्द हैं उन को क़त्ल कर दिया जाए, बच्चों और औ़रतों को क़ैदी बना लिया जाए, उन के इस फ़ैसले का इ़ल्म हज़रत अबू लुबाबा (रज़ि०) को हो गया जो यहूदियों के क़रीबी थे उन्होंने यहूदियों को अपने गले पर हाथ का इशारा करते हुए यह बता दिया कि तुम्हारे बारे में क़त्ल का फ़ैसला है, इस पर यह आयतें नाज़िल हुईं।

हज़रत अबू लुबाबा-

हज़रत अबू लुबाबा (रज़ि०) को जब अपनी ग़ल्ती का एहसास हुआ तो समझ गये कि मैंने अल्लाह और उस के रसूल (सल्ल०) की ख़यानत की है, लिहाज़ा उन्होंने मस्जिदे नबवी (सल्ल०) के एक सुतून से अपने आप को बाँध दिया और कहने लगे कि मैं न कुछ चखूँगा और न पियूँगा यहाँ तक कि मर जाऊँ या अल्लाह तआ़ला मेरी तौबः क़ुबूल फ़रमाए।

जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) को इस बात का इ़ल्म हुआ तो फ़रमाया कि मेरे पास आ जाता तो मैं उस के लिए इस्तिग़फ़ार कर देता अब जो उस ने ख़ुद ऐसा कर लिया है तो मैं उसी वक़्त छोड़ सकता हूँ जब अल्लाह तआ़ला उस की तौबः क़ुबूल फ़रमाए। सात दिन तक उन्होंने कुछ न खाया न पिया, यहाँ तक कि बेहोश होकर गिर गये, फिर जब अल्लाह तआ़ला ने उनकी तौबः क़ुबूल फ़रमाई तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) तशरीफ़ ले गये और उन को खोल दिया। **(रुहुल् मआ़नी भाग 9, पेज नं० 190)**

आयत के नाज़िल होने की वजह जो भी हो इस में अल्लाह और उस के रसूल (सल्ल०) की ख़यानत

करने की मुमानियत फ़रमाई है और यह हर तरह़ की ख़यानत को शामिल है, इसीलिए ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) ने आयत की तफ़्सीर करते हुए फ़रमाया لا تخونوا الله بترك فرائضه والرسول بترك سنته यानी फ़रायज़ को छोड़ कर अल्लाह की ख़यानत न करो और सुन्नतों को छोड़कर रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़यानत न करो। **(दुर्रे मन्सूर भाग 2, पेज नं० 178)**

अल्लाह और उसके रसूल की ख़यानत–

मालूम हुआ कि अल्लाह और उस के रसूल (सल्ल०) की नाफ़रमानी करना अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल (सल्ल०) की ख़यानत है और जिन चीज़ों को छुपाए रखने का हुक्म फ़रमाया हो उन को ज़ाहिर कर देना भी ख़यानत में शुमार है। अल्लाह तआ़ला और उस के रसूल (सल्ल०) की ख़यानत करने की मुमानिअ़त के बाद फ़रमाया وَتَخُونُوٓا اَمٰنٰتِكُمْ और आपस में अपनी अमानतों में ख़यानत न करो, चूंकि अमानत का मतलब बहुत सी चीज़ों को घेरे हुए है और हर तरह़ की अमानत में ख़यानत करने की मुमानिअ़त है इसलिए हर ख़यानत से बहुत एहतिमाम के साथ परहेज़ करना लाज़िम है। माली ख़यानत को तो सभी जानते हैं जैसे कोई शख़्स अमानत रख दे तो उस को खा जाए या इस्तेमाल करे या कम कर दे या दूसरे शरीक आपस में ख़यानत कर लें जो शख़्स क़र्ज़ देकर या किसी भी तरह़ अपना माल देकर भूल जाए उस का ह़क़ रख ले वग़ैरह-वग़ैरह यह सब ख़यानतें हैं और हर शख़्स को मालूम होता है कि मैंने किस का ह़क़ मारा है और किस की ख़यानत की, आख़िरत की फ़िक्र और अल्लाह का डर हो तो इन्सान ख़यानत से बच सकता है वरना दुनियावी नफ़ा को देखकर बड़े-बड़े दीनदार भी इस मस्ले में कच्चे पड़ जाते हैं। हर एक को चाहिए कि अमानत अदा करे।

सफ़र के साथी, पड़ोसी, मियाँ-बीवी, माँ-बाप और औलाद सब एक दूसरे के माल और हुक़ूक़ में अमानतदार हैं। जो भी कोई किसी की ख़यानत करेगा गुनाहगार होगा और मैदाने आख़िरत में पकड़ा जाएगा। मालियात के अ़लावा दूसरी चीज़ों में ख़यानत होती है जिन का ज़िक्र ह़दीस में है। आयत के ख़त्म पर फ़रमाया وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ यानी तुम अमानतों में ख़यानत न करो जबकि तुम ख़यानत का बुरा अन्जाम जानते हो और तुम्हें इस के गुनाह होने का इ़ल्म है।

इसी तरह़ इस्लाम क़ुबूल कर के जो मुआ़हिदा किया है उस से फ़रार की राह सोचना आपस के अ़हद व पैमान या अमानत की ह़िफ़ाज़त न करना सब शामिल है।

ह़ज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जिस ने अ़हद की पासदारी न की उसका कोई दीन नहीं"। **(अह़मद)**

28-29 وَاعْلَمُوٓا اَنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوٓا اِنْ تَتَّقُوا اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّكُمْ فُرْقَانًا وَّيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝

माल और औलाद फ़ित्ना

यह दो आयतें हैं। पहली आयत में इर्शाद फ़रमाया कि तुम्हारे माल और औलाद फ़ित्ना हैं। फ़ित्ना

इम्तिहान की चीज़ को कहा जाता है। माल और औलाद का फ़ित्ना होना कई वजह से है। माल और औलाद की मश्गूलियत और महबूबियत सही तरीक़े पर काम नहीं करने देती, जिहाद की शिरकत से बाज़ रखती है, नमाज़ भी सही तरीक़े पर पढ़ने नहीं देती, पूरी ज़कात अदा करने से भी नफ़्स इन्कार करता है, हज फ़र्ज़ हो जाता है तो बरसों टालते रहते हैं बल्कि बाज़ लोग हज फ़र्ज़ होते हुए हज किये बग़ैर मर जाते हैं और दूसरे फ़रायज़ व वाजिबात में भी दुनियावी मश्गूलियतें रुकावटें डालती हैं।

अल्लाह तआला ने तम्बीह फ़रमाई कि तुम्हारे माल और औलाद फ़ित्ना हैं यह आज़माइश की चीज़ें हैं, आज़्माइश में पूरे उतरो, माल और औलाद तुम्हें इम्तिहान में फ़ेल होने का ज़रिया न बन जाएँ। आयत में लफ़्ज़ अमवाल को औलाद से पहले लाया गया है। बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि इस में इस तरफ़ इशारा है कि माल का फ़ित्ना औलाद के फ़ित्ने से बढ़ कर है। हज़रत कअ़ब बिन अ़याज़ ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) का इर्शाद नक़्ल किया है कि ان لکل امۃ فتنۃ" وفتنۃ امتی المال (बिलाशुब्हा हर उम्मत के लिए एक फ़ित्ना है और मेरी उम्मत का फ़ित्ना माल है। **(मिश्कातुलू मसाबीह़ पेज नं० 442 तिर्मिज़ी)**

अव्वल तो माल कमाने में यह ध्यान करने की ज़रूरत है कि माल ह़लाल हो, ह़लाल कमाई के ज़रिये ह़ासिल किया हो और उस के कमाने में फ़रायज़ व वाजिबात को ज़ाया न किया हो— कमाने के बाद उस के ख़र्च करने का मस्ला है। ख़र्च करने के बारे में भी शरीअ़त के अह़काम हैं और ख़िलाफ़े शरीअ़त ख़र्च करने पर पकड़ है।

पाँच बातों का सवाल-

ह़ज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, "क़ियामत के दिन बन्दे के क़दम (ह़िसाब की जगह से) नहीं हट सकेंगे जब तक उस से पाँच चीज़ों के बारे में सवाल न हो जाए।"

1- उ़म्र कहाँ ख़र्च की
2- जवानी कहाँ गवाईं
3- माल कहाँ से कमाया
4- और कहाँ ख़र्च किया
5- इ़ल्म पर क्या अ़मल किया।

(मिश्कातुलू मसाबीह़ पेज नं० 443 तिर्मिज़ी)

मालूम हुआ कि माल के बारे में दूसरा सवाल होगा, दुनिया में देखते हैं कि पहले तो कमाने ही में ह़लाल ह़राम का ख़याल नहीं होता और फिर ख़र्च करने में भी शरीअ़त के अह़काम की पाबन्दी नहीं की जाती, औलाद की मुह़ब्बत में और बीवियों की फ़रमाइश पूरी करने के लिए बहुत से ह़लाल पैसे ह़राम रास्ते में ख़र्च कर देते हैं और फिर ज़्यादा माल की तलब तो और भी ज़्यादा बर्बाद कर देती है।

सूद जुए और सट्टेबाज़ी के ज़रिये रिश्वतें देकर और रिश्वतें लेकर और ह़राम चीज़ों का कारोबार करके और अपने तिजारत के पार्टनर की ख़यानत करके मज़दूरों का ह़क़ मार कर नमाज़ें बर्बाद करके, अस्ह़ाबे हुक़ूक़ के हुक़ूक़ को रोक कर माल जमा किया जाता है, हर शख़्स को यह समझना चाहिए कि मुझे तो दुनिया से चले जाना है यह माल तो दूसरों के क़ब्ज़े में आएगा मैं दूसरों के लिए अपनी आख़िरत क्यों ख़राब करूँ? लेकिन बैंक बैलेंस की फ़िक्र, नोटो की गड्डियों की मुह़ब्बत, इस चीज़ को

सोचने नहीं देती।

औलाद भी फ़ित्ना है, औलाद की फ़रमाइशें पूरी करने और उन पर अच्छा माल ख़र्च करने और उनकी शादियों में माल लगाने और मौत के बाद उनके लिए माल छोड़ने और उन के लिए घर बनाने में बहुत से गुनाह होते हैं और ख़िलाफ़े शरीअ़त बहुत से काम किये जाते हैं।

जो चीज़ इम्तिहान के लिए दी गई थी उसकी मश्गूलियत और मह़बूबियत में बहुत से गुनाह कर बैठते हैं। मोमिन बन्दों को हमेशा फ़िक्रमन्द रहना चाहिए कि कहीं माल व औलाद की मुह़ब्बत में पड़कर इम्तिह़ान में फ़ेल न हो जाएँ। फ़ेल होने पर जहाँ अ़ज़ाब की वई़दें हैं वही इम्तिह़ान में कामियाब होने पर अज्र अ़ज़ीम का वादा भी है। आयत के आख़िर में इसी को फ़रमाया وَأَنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ أَجْرٌ عَظِيْمٌ (और बिलाशुब्हा अल्लाह के नज़्दीक बड़ा अज्र है।)

तक़्वे पर ईमान–

दूसरी आयत में फ़रमाया कि ऐ ईमान वालो! अगर तुम अल्लाह से डरोगे तो अल्लाह तआ़ला तुम्हें फ़ैसला करने वाली चीज़ अ़ता फ़रमा देगा और गुनाहों का कफ़्फ़ार और तुम्हारी बख़्शिश फ़रमा देगा।

“फ़ैसला वाली चीज़” से क्या मुराद है। इस के बारे में मुफ़स्सिरीन ने बहुत सी बातें लिखी हैं। बाज़ ह़ज़रात ने फ़रमाया कि इस से हिदायत और दिलों का वह नूर मुराद है जिस के ज़रिये ह़क़ और बातिल के दर्मियान फ़र्क़ कर सकेंगे और बाज़ ह़ज़रात ने फ़रमाया कि इस से अल्लाह तआ़ला की मदद मुराद है और मतलब यह है कि अल्लाह तआ़ला मोमिनीन की ऐसी मदद फ़रमाएगा जिस की वजह से मोमिनीन को इ़ज़्ज़त दे और काफ़िरों को ज़लील करे और बाज़ ह़ज़रात ने यूँ फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला तुम्हें ऐसा ग़ल्बा अ़ता फ़रमाएगा जिस से तुम्हारे दीन की शोहरत होगी और दुनिया में तुम्हारी कामियाबी के ज़िक्र होंगे। **(रुहुल् मआ़नी भाग 9, पेज नं० 196)**

फिर कफ़्फ़ारा का वादा फ़रमाया और अख़ीर में फ़रमाया وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ (और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है।)

आयत नं० 30 से 40 तक

وَاِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِيُثْبِتُوْكَ اَوْ يَقْتُلُوْكَ اَوْ يُخْرِجُوْكَ ۭ وَيَمْكُرُوْنَ وَيَمْكُرُ اللّٰهُ ۭ وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ۝ وَاِذَا تُتْلٰى
عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا قَالُوْا قَدْ سَمِعْنَا لَوْ نَشَاۗءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هٰذَآ ۙ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ وَاِذْ قَالُوا اللّٰهُمَّ اِنْ كَانَ هٰذَا
هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَاَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِّنَ السَّمَاۗءِ اَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيْهِمْ ۭ وَمَا
كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ۝ وَمَا لَهُمْ اَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللّٰهُ وَهُمْ يَصُدُّوْنَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَا كَانُوْٓا اَوْلِيَاۗءَهٗ ۭ
اِنْ اَوْلِيَاۗؤُهٗٓ اِلَّا الْمُتَّقُوْنَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ اِلَّا مُكَاۗءً وَّتَصْدِيَةً ۭ فَذُوْقُوا
الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ فَسَيُنْفِقُوْنَهَا ثُمَّ
تَكُوْنُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُوْنَ ڛ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى جَهَنَّمَ يُحْشَرُوْنَ ۝ لِيَمِيْزَ اللّٰهُ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَيَجْعَلَ الْخَبِيْثَ
بَعْضَهٗ عَلٰي بَعْضٍ فَيَرْكُمَهٗ جَمِيْعًا فَيَجْعَلَهٗ فِيْ جَهَنَّمَ ۭ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝ قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ يَّنْتَهُوْا يُغْفَرْ لَهُمْ مَّا
قَدْ سَلَفَ ۚ وَاِنْ يَّعُوْدُوْا فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ وَقَاتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ كُلُّهٗ لِلّٰهِ ۚ فَاِنِ انْتَهَوْا
فَاِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَوْلٰىكُمْ ۭ نِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ۝

अनुवाद-

(30) और जब काफ़िर तुम्हारे साथ चालें चल रहे थे, ताकि तुम्हें क़ैद रखें या तुम्हें क़त्ल कर दें या तुम्हें निकाल बाहर करें वे अपनी चालें चल रहे थे और अल्लाह भी अपनी तद्बीर (उपाय) कर रहा था और अल्लाह सबसे अच्छी चाल चलने वाला है। (31) और जब उनके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं, तो कहते हैं, ''हम सुन चुके अगर हम चाहें तो ऐसी बातें हम भी बना लें; यह तो बस पहले के लोगों की कहानियाँ हैं।''(32) और जब उन्होंने कहा कि, ''ऐ अल्लाह! अगर यही तेरे यहाँ से हक़ है तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा दे, या कोई और तकलीफ़ देने वाला अ़ज़ाब भेज दे।''(33) और अल्लाह ऐसा नहीं कि तुम उनके बीच मौजूद हो और वह उन्हें अ़ज़ाब देता और न अल्लाह ऐसा था कि वे माफ़ी माँगें और 'वह' उन्हें अ़ज़ाब दे। (34) और उनके लिए कौन सी वजह है कि अल्लाह उन्हें अ़ज़ाब न दे, जबकि वे "मस्जिदे ह़राम" (कअ़बः) से रोकते हैं, हालाँकि वे उसके कोई मुतवल्ली (व्यवस्थापक) भी नहीं, उसके मुतवल्ली तो केवल परहेज़गार ही हैं, लेकिन उनमें के अक्सर लोग जानते नहीं। (35) और उन लोगों की नमाज़ उस घर (कअ़बः) के पास, सीटियाँ बजाने और तालियाँ पीटने के सिवा कुछ भी न थीं, तो अब अ़ज़ाब का मजा़ चखो, उस इन्कार के बदले में जो तुम करते थे। (36) जो लोग काफ़िर अपना माल खर्च करते हैं, कि (लोगों को) अल्लाह के रास्ते से रोकें, वे तो खर्च करते रहेंगे, मगर आख़िर में उनके लिए अफ़सोस होगा, और वे मग़लूब (पराजित) हो जाएँगे, और काफ़िर दोज़ख की ओर समेट लिए जाएँगे, (37) ताकि अल्लाह नापाक को पाक से छाँट कर अलग करे, और नापाकों को आपस में एक दूसरे पर रख कर ढ़ेर बना दे, फिर उसे जहन्नम में डाल दे, यही लोग घाटे में पड़ने वाले हैं। (38) उन काफ़िरों से कह दीजिए, अगर वे अपने (बुरे) कामों से बाज़ आ जाएँ, तो जो कुछ हो चुका, उसे माफ़ कर दिया जायेगा; और अगर वे फिर वही करेंगे, तो गुज़रे हुए लोगों के बारे में (जो) तरीक़ा जारी हो चुका है (वही उनके हक़ में होगा।) (39) और उन लोगों से लड़ते

रहें, यहाँ तक कि फ़ितना (ज़ुल्म) बाक़ी न रहे और दीन पूरा का पूरा अल्लाह ही के लिए हो जाए। फिर अगर वे बाज़ आ जाएँ, तो अल्लाह उनके कामों को देख रहा है। (40) और अगर वे मुँह मोड़ें तो जान लो कि अल्लाह तुम्हारा मौला (संरक्षक) है। क्या ही अच्छा हिमायती है 'वह' और क्या ही अच्छा मददगार।

आयत नं० 30 से 40 तक की व्याख्या

30 وَاِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِيُثْبِتُوْكَ اَوْ يَقْتُلُوْكَ اَوْ يُخْرِجُوْكَ ۭ وَيَمْكُرُوْنَ وَيَمْكُرُ اللّٰهُ ۭ وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ۝

मुशिरकीने मक्का के मश्वरे

इस आयत में हिजरत के सफ़र से पहले का वाक़िया बयान किया गया है। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से नक़्ल किया गया है कि जब मदीना मुनव्वरह में हज़रात अन्सार ने इस्लाम क़ुबूल कर लिया तो क़ुरैशे मक्का डर गये, मश्वरे के लिए दारुल्-नदवा (मश्वरह गाह यानी पंचायत घर) में जमा हुए ताकि रसूलुल्लाह (सल्ल०) के बारे में ग़ौर करें कि अब आप के साथ क्या मामला किया जाए। इस मौक़े पर इब्लीस मल्ऊन भी एक बड़े मियाँ की सूरत में ज़ाहिर हो गया। उन लोगों ने पूछा कि तू कौन है, कहने लगा कि मैं नज्द को शेख हूँ। मुझे आप लोगों के जमा होने का पता चला तो मैंने चाहा कि तुम्हारे पास हाज़िर हो जाऊँ और अपनी ख़ैर ख़्वाहाना राय से तुम लोगों को महरूम न करूँ, उन लोगों ने उसे अपने मश्वरे में शरीक कर लिया।

मक्का वालों में से जो लोग हाज़िर थे उन में से एक शख़्स 'अबू अल् बख़्तरी इब्ने हिशाम' भी था उस ने अपनी राय ज़ाहिर की और कहने लगा कि मेरी राय यह है कि मुहम्मद (सल्ल०) को किसी घर में छोड़ करके दरवाज़ा बन्द कर दो सिर्फ़ थोड़ा सा रौशनदान खुला रहे जिस में से दाना पानी डालते रहो और उसकी मौत का इन्तिज़ार करो, जैसे इस से पहले दूसरे शोअ़रा हलाक हो गये यह भी हलाक हो जाएगा। यह सुनते ही शेख़ नज्दी इब्लीस चीख उठा और उस ने कहा यह तो बुरी राय है। अगर इस पर अ़मल करोगे तो उस के मानने वाले मैदान में आ जाएँगे और तुम से जंग करके तुम्हारे हाथों से छुड़ा लेंगे। यह सुनकर सब कहने लगे 'शेख़ नज्दी' ने सही कहा यह राय मस्लहत के ख़िलाफ़ है। इस के बाद हिशाम बिन अ़म्र ने राय दी और कहने लगा कि मेरी समझ में तो यह आता है कि उस शख़्स को किसी ऊँट पर बिठा कर अपने दर्मियान से निकाल दो।

आगे कहाँ जाए क्या बने तुम्हें कोई नुक़्सान न होगा। जब तुम्हारे यहाँ से चला गया तो तुम्हें आराम मिल ही जाएगा, यह सुनकर इब्लीस मल्ऊन बोला कि यह राय भी सही नहीं तुम उस शख़्स को जानते हो, तुम्हें पता है कि उस शख़्स की बातचीत कितनी मीठी है और ज़बान में कितनी मिठास है। यह भी जानते हो कि उसकी बातें सुनकर लोग प्रभावित हो जाते हैं। अल्लाह की क़सम अगर तुम ने इस राय पर अ़मल किया तो बाहर जाकर बहुत से लोगों को अपनी तरफ़ मायल करके हमला कर देगा और तुम्हें वतन से निकाल देगा। यह सुनकर लोग कहने लगे कि शेख़ नज्दी ने ठीक कहा।

अबू जेहल का मश्वरह-

इस के बाद अबू जेहल बोला और कहने लगा कि अल्लाह की क़सम मैं तुम्हें एक ऐसी राय दूँगा कि इस के अ़लावा कोई राय है ही नहीं। मेरी समझ में तो यूँ आता है कि क़ुरैश के जितने क़बीले हैं हर क़बीले में से एक-एक नौजवान लिया जाए और हर एक को तलवार दे दी जाए फिर यह नौजवानों की जमाअ़त अचानक मिलकर हमला करके क़त्ल कर दें। ऐसा करने से तमाम क़बीलों पर उन के ख़ून की ज़िम्मेदारी आ जाएगी और मेरे ख़याल में बनी हाशिम क़िसास लेने के लिए मुक़ाबिला न कर सकेंगे, लिहाज़ा दियत क़ुबूल कर लेंगे और सारे क़ुरैश मिलकर दियत अदा कर देंगे। यह सुनकर इब्लीस बोला इस जवान आदमी ने सही राय दी है और यह शख़्स तुम में सब से अच्छी राय रखने वाला है। उस ने जो राय दी है मेरे ख़याल में भी इस के अ़लावा कोई दूसरी राय नहीं हो सकती। सब ने इसी पर इत्तिफ़ाक़ कर लिया और मजलिस से उठ कर चले गये।

आप (सल्ल०) की हिजरत-

इधर यह लोग अलग हुए और उधर हज़रत जिब्रईल (अ़लै०) हाज़िरे ख़िदमत हो गये और रसूलुल्लाह (सल्ल०) को उन लोगों के मश्वरे की ख़बर दे दी और अ़र्ज़ किया कि आप जिस घर में रात गुज़ारा करते हैं उस में आज रात को न रहें साथ ही उन्होंने मुश्रिकीन के मश्वरों से आपको बाख़बर कर दिया। आप ने हज़रत अ़ली बिन अबी तालिब (रज़ि०) को अपनी जगह रात गुज़ारने का हुक्म दिया और यह फ़रमाया कि तुम्हें कोई तक्लीफ़ नहीं पहुँचेगी। इस के बाद आप सफ़रे हिजरत के लिए रवाना हो गये और एक मुट्ठी में मिट्टी भर कर दुश्मनों की तरफ़ फेंक दी जो उन के सरों में भर गई और आप यह आयत إِنَّا جَعَلْنَا فِي أَعْنَاقِهِمْ أَغْلَالًا فَهِيَ إِلَى الْأَذْقَانِ فَهُمْ مُقْمَحُونَ *(सूरः यासीन-8)* पढ़ते हुए रवाना हो गये।

आप (सल्ल०) के साथ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) भी थे, दोनों हज़रात रातो रात ग़ारे सौर में पहुँच गये {आप ने हज़रत अ़ली (रज़ि०) को अपनी जगह छोड़ दिया था ताकि वह अमानतें अदा कर दें जो आप के पास रखी रहती थीं।} (सच्चाई और अमानतदारी ऐसी ही चीज़ है जो सच्चे और अमानतदार शख़्स को लोहा ख़ुद मनवा लेती है, अहले मक्का आप से दुश्मनी भी करते थे, लेकिन साथ ही अपनी अमानतें रखने के लिए आप ही को मुन्तख़ब कर रखा था।

मुश्रिकीन की नाकामी-

जब आप हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) के साथ मक्का से तशरीफ़ ले गये, तो मुश्रिकीने मक्का इस ख़याल से कि सुबह उठकर बाहर तशरीफ़ लाएँगे, सुबह हुई तो हज़रत अ़ली (रज़ि०) को देखकर हैरान रह गये। हज़रत अ़ली (रज़ि०) से पूछा कि तुम्हारे दोस्त कहाँ हैं? उन्होंने जवाब दिया कि मुझे पता नहीं। लिहाज़ा क़दमों के निशानों पर चलते रहे यहाँ तक कि ग़ारे सौर तक पहुँच गये वहाँ देखा कि ग़ार के दरवाज़े पर मकड़ी ने जाला बुन रखा है यह देखकर ठिठक कर रह गये और कहने लगे कि अगर इस

के अन्दर गये होते तो मकड़ी का जाला ग़ार के दरवाज़े पर कैसे होता? आप इस ग़ार में तीन दिन तक तशरीफ़ फ़रमा रहे उस के बाद मदीना मुनव्वरह के लिए रवाना हो गये।

इस आयत में जो وَاِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا फ़रमाया है उस में इसी वाक़िये का बयान है। दुश्मन अपनी तद्बीर में फ़ेल हुए और अल्लाह की तद्बीर ग़ालिब आई। **(अल् बिदाया व अन्निहाया पेज नं० 175 व 181)**

31-33 وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا قَالُوْا قَدْ سَمِعْنَا لَوْ نَشَآءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هٰذَآ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ وَاِذْ قَالُوا اللّٰهُمَّ اِنْ كَانَ هٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَاَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِّنَ السَّمَآءِ اَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيْهِمْ وَمَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ۝

मुश्रिकीन का झूठा दावा

क़बीला बनी अब्दुद्दार में से एक शख़्स नज़र बिन अल् हारिस था, यह भी रसूलुल्लाह (सल्ल०) से बहुत ज़्यादा दुश्मनी रखता था। मुश्रिकीने मक्का क़ुर्आन मजीद सुनते थे और इस के मुक़ाबिले में एक आयत लाने से भी बेबस थे। जब उन को चैलेंज दिया गया कि उस के मुक़ाबिले में एक सूरत बना कर लाओ तो नहीं ला सके, लेकिन नज़र बिन अल् हारिस ने “खिसयानी बिल्ली खम्भा नोचे” के तरीक़े पर झेंप मिटाने के लिए यूँ कहा कि لَوْ نَشَآءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هٰذَآ

(अगर हम चाहें तो ऐसा कलाम कह दें) मतलब यह था कि यह बात नहीं कि हम नहीं कह सकते हैं कह तो सकते हैं, लेकिन कहते नहीं, हमें कोई मजबूरी नहीं कि मुक़ाबिले के लिए हम इस जैसा कलाम बना कर लाएँ और उस ने यह भी कहा اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ (कि यह जो मुहम्मद (सल्ल०) सुनाते हैं पहले लोगों की बातें हैं जो उन की लिखी हुई मिलती हैं।)

उस के कहने का मक़्सद यह था कि यह कोई अल्लाह तआला की तरफ़ से नाज़िल शुदा कलाम नहीं है, पहले लोगों की बातें हैं जो मुहम्मद (सल्ल०) ने याद कर ली हैं, उन्हीं को सुनाते रहते हैं। नज़र बिन अल् हारिस के अलावा बाज़ दूसरे लोगों ने भी ऐसी बात कही थी जैसा कि सूरः अन्आम में फ़रमाया حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْكَ يُجَادِلُوْنَكَ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ उन लोगों की यह बात शरारत और हठधर्मी की वजह से थी, यह जानते थे कि मुहम्मद (सल्ल०) उम्मी (अन्पढ़) हैं न पढ़ना जानते हैं और न पहले लोगों की किताबें उन तक पहुँची हैं, फिर भी ईमान से दूर और कुफ़्र पर जमे रहते थे और यूँ कहते थे कि यह पुराने लोगों की बातें हैं।

नज़र बिन हारिस की दुआ-

नज़र बिन हारिस ने जब यूँ कहा कि यह पुराने लोगों की बातें सुनाते हैं तो ‘हज़रत उस्मान बिन मज्ऊन (रज़ि०)’ ने उस से कहा तू अल्लाह से डर! मुहम्मद (सल्ल०) हक़ फ़रमाते हैं। इस पर उस ने कहा कि मैं भी हक़ कहता हूँ। हज़रत उस्मान ने फ़रमाया कि मुहम्मद (सल्ल०) तो **“लाइलाहा इल्लल्लाहु”** कहते हैं) वह कहने लगा मैं भी **लाइलाहा इल्लल्लाहु** कहता हूँ, लेकिन यह बुत अल्लाह की

बेटियाँ हैं (अल् अ़याज़ु बिल्लाह) इस का मतलब यह था कि चूंकि हम उन्हें अल्लाह की बेटियाँ मानते हैं इसलिए हम भी **'लाइलाहा इल्लल्लाहु'** कहते हैं। वह **'लाइलाहा इल्लल्लाह'** का मतलब ही नहीं समझा, फिर उस ने अल्लाह से यूँ दुआ़ की, "ऐ अल्लाह! अगर यह दीन जिस की दअ़वत मुह़म्मद (सल्ल०) देते हैं, तेरी तरफ़ से है तो तू उसे कुबूल न करने की सज़ा में हम पर आसमान से पत्थर बरसा दे या और कोई दर्दनाक अ़ज़ाब भेज दे।"

अपने ख़याल में उस ने यह बात ज़ाहिर करने के लिए कही थी कि अगर दीने मुह़म्मद ह़क़ होता तो फिर हम पर पत्थर बरस जाते और अ़ज़ाब नाज़िल हो जाता।

जब यह बात नहीं हुई तो हम ह़क़ पर हैं इस तरह़ की बात यहूद ने भी कही थी। सूरः मुजादुला *(आयत नं० 8)* में उन का क़ौल नक़्ल फ़रमाया है لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللّٰهُ بِمَا نَقُوْلُ

(जो बातें हम करते हैं उनकी वजह से अल्लाह हमें अ़ज़ाब क्यों नहीं देता।)

इस ज़माने में भी बहुत से फ़ित्नागर ऐसी बातें करते हैं और अहले ह़क़ के मुक़ाबिले में आ जाते हैं और कहते हैं कि अगर हम झूठे हैं तो हम पर अ़ज़ाब क्यों नहीं आ जाता। अ़ज़ाब आना, न आना, ह़क़ और नाह़क़ होने की कोई दलील नहीं है। कुर्आनी दलीलों और अ़क़्ल से ह़क़ वाज़ेह़ होता है और उन्हीं में ग़ौर-फ़िक्र करने का हुक्म फ़रमाया है।

फिर अल्लाह तआ़ला किसी का पाबन्द नहीं कि जो अ़ज़ाब भेज कर फ़ैसला फ़रमाएगा। कभी ऐसा भी हो जाता है कि अल्लाह तआ़ला अ़ज़ाब मांगने वालों की दुआ़ कुबूल फ़रमा लेता है। कभी जल्दी और कभी देर से अ़ज़ाब नाज़िल हो जाता है। बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया है कि आयते करीमा-

سَاَلَ سَآئِلٌ بِعَذَابٍ وَّاقِعٍ ۙ لِّلْكٰفِرِيْنَ *(सूरः मआ़रिज-1,2)*

नज़र बिन ह़ारिस के सवाल पर नाज़िल हुई। ह़ज़रत अ़ता ने फ़रमाया कि नज़र बिन अल् ह़ारिस की दुआ़ अल्लाह तआ़ला ने कुबूल फ़रमाई और ग़ज़्व-ए-बद्र में उसे क़त्ल कर दिया गया।

(तफ़्सीरुल् जलालैन व ह़ाशिया पेज नं० 473)

ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि०) ने फ़रमाया कि इस आयत اَللّٰهُمَّ اِنْ كَانَ هٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ में जो अ़ज़ाब आने का सवाल है यह सवाल अबू जेहल ने किया था।

(चूंकि यह सवाल अ़ज़ाब का था इसीलिए उ़मूमी अ़ज़ाब नहीं आया।) अल्लाह तआ़ला ने इस के जवाब में अगली आयत وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيْهِمْ ؕ وَمَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ नाज़िल फ़रमाई।

(सह़ी बुख़ारी भाग 2, पेज नं० 670)

इस का मतलब यह है कि उन के अन्दर आप के होते हुए अल्लाह तआ़ला उन पर अ़ज़ाब नाज़िल नहीं फ़रमाएगा क्योंकि अल्लाह तआ़ला का क़ानून है कि जिस बस्ती में अल्लाह का कोई नबी मौजूद हो उस पर उस वक़्त तक अ़ज़ाब नाज़िल नहीं फ़रमाया जब तक मुजरिमों के दर्मियान से अपने नबी को न निकाल ले। ह़ज़रत हूद, ह़ज़रत सालेह़, ह़ज़रत लूत (अ़लै०) की क़ौमों पर उस वक़्त अ़ज़ाब आया जबकि यह ह़ज़रात बस्तियों से बाहर जा चुके थे। ख़ातिमुन्नबीय्यीन जो रह़मतुल् लिलूआ़लमीन (सल्ल०)

थे, आप कभी किसी बस्ती में मौजूद हों और वहाँ अ़ज़ाब आ जाए यह नहीं हो सकता था, मक्का मुकर्रमा में आप का मौजूद होना अ़ज़ाब आने से रोकने का ज़रिया था। जब आप मक्का मुकर्रमा से हिजरत फ़रमाकर मदीना मुनव्वरह तशरीफ़ लाए तो उस के दूसरे साल ग़ज़्व-ए-बद्र में सत्तर मुश्रिकीन मारे गये जिन में अबू जेहल भी था और नज़र बिन अल् ह़ारिस भी।

इस्तिग़्फ़ार-

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास ने फ़रमाया कि अहले मक्का के लिए दो चीज़ें अमान की थीं। एक नबी अक्रम (सल्ल०) की ज़ाते गिरामी और दूसरे इस्तिग़्फ़ार। जब आप मक्का मुकर्रमा से तशरीफ़ ले आये तो उन के पास अमान की सिर्फ़ एक चीज़ रह गई यानी इस्तिग़्फ़ार, लिहाज़ा अहले मक्का पर उ़मूमी अ़ज़ाब न आया और फ़तेह़ मक्का के दिन कुछ लोग क़त्ल कर दिये गये। जो बहुत ज़्यादा बदमाश थे और चन्द लोगों के अ़लावा सब ने इस्लाम क़ुबूल कर लिया और आइन्दा के लिए अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ हो गये।

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) ने यह भी फ़रमाया कि बिलाशुब्हा अल्लाह तआ़ला ने इस उम्मत के लिए दो अमान रखी हैं, जब तक यह दोनों उन के दर्मियान में रहेंगे (दोनों या एक) तो अ़ज़ाब नहीं आएगा। एक अमान तो अल्लाह तआ़ला ने उठा ली यानी रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ज़ाते गिरामी और दूसरी अमान उन के अन्दर मौजूद है यानी इस्तिग़्फ़ार करते रहना।

ह़ज़रत फ़ुज़ाला बिन उ़बैद (रज़ि०) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्ल०) ने फ़रमाया कि बन्दा जब तक अल्लाह तआ़ला से इस्तिग़्फ़ार करता रहे अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ रहेगा। मालूम हुआ कि मुख़्तलिफ़ इलाक़ों में जो अ़ज़ाब आते रहते हैं, उस में इस्तिग़्फ़ार न करने को भी दख़्ल है।

(तफ़्सीर इब्ने कसीर भाग 2, पेज नं० 303 ता 305)

ह़ज़रत अबू मूसा (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआ़ला ने मेरी उम्मत के लिए दो एह़सान की चीज़ें उतारी हैं।" फिर यह आयत पढ़ी, फिर फ़रमाया "जब मैं (दुनिया से) चला जाऊँगा तो तुम्हारे लिए अम्न की चीज़ 'इस्तिग़्फ़ार' को क़ियामत तक के लिए छोड़ जाऊँगा।" **(तिर्मिज़ी)**

34-35 وَمَا لَهُمْ أَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللَّهُ وَهُمْ يَصُدُّونَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَا كَانُوا أَوْلِيَاءَهُ ۚ إِنْ أَوْلِيَاؤُهُ
إِلَّا الْمُتَّقُونَ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ إِلَّا مُكَاءً وَتَصْدِيَةً ۚ
فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ۝

मुश्रिकीन की अ़िबादत

पिछली आयात में यह बताया था कि नबी करीम (सल्ल०) के तशरीफ़ फ़रमा होते हुए और अहले मक्का के इस्तिग़्फ़ार करते हुए अल्लाह तआ़ला उन को अ़ज़ाब नहीं देगा और इस आयत में यह फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला उन को अ़ज़ाब क्यों न दे ह़ालांकि उन की ह़रकतें ऐसी हैं जो सज़ा के लायक़ हैं। उन में से एक यह है कि यह लोग मस्जिदे ह़राम से रोकते हैं। नबी अक्रम (सल्ल०) को और आपके

साथियों को मक्का मुकर्रमा से हिजूरत करने पर मजबूर कर दिया और वहाँ अ़िबादत व तवाफ़ करने से रोक दिया— फिर जब ६ हिज्री में आप अपने सह़ाबा के साथ उ़मरह करने के लिए तशरीफ़ ले गये तो मस्जिदे ह़राम तक न पहुँचने दिया और न उ़मरह करने दिया, उनकी यह ह़रकत इस क़ाबिल है कि उन पर अ़ज़ाब नाज़िल किया जाए.......कुफ़्र और काफ़िराना ह़रकतों की वजह से यह लोग अ़ज़ाब के ह़क़्दार हैं, मक्का में तो उ़मूमी अ़ज़ाब न आया, लेकिन बद्र में सरदाराने क़ुरैश क़त्ल किये गये।

अ़ल्लामा बग़वी (रह०) ने मुआ़लिमुल तन्ज़ील भाग 2, पेज नं० 246 में बाज़ ह़ज़रात का क़ौल नक़्ल किया है कि وَمَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ इस से उ़मूमी अ़ज़ाब मुराद है। जिस का मतलब यह है कि यह लोग सब ही एक-एक कर के हलाक न किये जाएँगे और وَمَا لَهُمْ اَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللّٰهُ इस में तलूवार का अ़ज़ाब मुराद है यानी उनकी ह़रकतों की वजह से वह अहले ईमान की तलूवार की ज़द में आएँगे और मक़्तूल होंगे और एक यह क़ौल नक़्ल किया है कि पहली आयत में दुनियवी अ़ज़ाब का ज़िक्र है और दूसरी आयत में आख़िरत के अ़ज़ाब का ज़िक्र है, दूसरे क़ौल के मुताबिक़ तफ़्सीर करने से यह अ़ज़ाब فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ज़्यादा स्पष्ट हो जाता है।

इस के बाद फ़रमाया وَمَا كَانُوْٓا اَوْلِيَآءَهٗ कि यह लोग मस्जिदे ह़राम के औलिया यानी इस के मुतवल्ली नहीं है। कअ़्बः शरीफ़ ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) का बनाया हुआ है कअ़्बः और मस्जिदे ह़राम पर अहले शिर्क को तसल्लुत रखने का कोई ह़क़ नहीं है। फिर फ़रमाया اِنْ اَوْلِيَآؤُهٗٓ اِلَّا الْمُتَّقُوْنَ कि मस्जिदे ह़राम के मुतवल्ली वही हैं जो अहले तक़्वा परहेज़गार हैं (जो कुफ़्र और शिर्क से बचते हैं।) मतलब यह है कि उस की तौलियत का ह़क़ अहले ईमान को है जो बाद में फ़तेह़ मक्का के दिन मुतवल्ली हो गये। इस दिन काफ़िरों का तसल्लुत ख़त्म हुआ और मुश्रिकीन कुछ मारे गये और बहुत से मुसलमान हो गये وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ (और लेकिन उन में से अक्सर यह बात नहीं जानते) कि उन्हें मस्जिदे ह़राम के मुतवल्ली (प्रबन्धक) होने का ह़क़ नहीं है और बाज़ लोग जो इस बात को जानते हैं वह हठधर्मी पर तुले हुए हैं। **(कमा फ़िलू रुह़ पेज नं० 203, भाग 9)**

इस के बाद अहले मक्का की अ़िबादत का ज़िक्र फ़रमाया जिस को वह इस्लाम क़ुबूल करने से पहले अख़्तियार किये हुए थे। अपने ख़याल में मस्जिद के मुतवल्ली भी थे और यह भी समझते थे कि हम अ़िबादत करके तौलियत का ह़क़ अदा कर रहे हैं और उनकी अ़िबादत यह थी कि मस्जिदे ह़राम में सीटियाँ बजाते थे और तालियाँ पीटते थे। (जितने भी शैतानी धंधे होते है उन में सीटियाँ, तालियाँ, ढ़ोल, बाजे ज़रूर होते हैं।)

उन की इन ह़रकतों की वजह से अ़ज़ाब के ह़क़्दार हुए, आख़िरत में तो हर काफ़िर को अ़ज़ाब होना ही है, दुनिया में भी अ़ज़ाब में मुब्तिला होते रहते हैं।

अहले मक्का भी इस्लाम क़ुबूल न करने से अ़ज़ाब में मुब्तिला हुए जिन में एक वाक़िआ़ बद्र की शिकस्त (पराजय) भी है। अहले मक्का को यह ख़याल था कि हम मस्जिदे ह़राम के मुतवल्ली हैं और हमें मस्जिदे ह़राम से रोकने का अख़्तियार है। इस ख़याल की तर्दीद फ़रमाई कि अहले कुफ़्र मस्जिदे ह़राम

के मुतवल्ली नहीं हो सकते। वह यूँ समझते थे कि हम मस्जिदे ह़राम को आबाद रखते हैं उस में अ़िबादत करते हैं अगर मुसलमानों को इसमें अ़िबादत करने से रोक दिया तो क्या हुआ? हम ख़ुद अ़िबादतगुज़ार हैं। उनकी इस बात की भी तर्दीद फ़रमाई कि तुम्हारी अ़िबादत शैतानी धंधा है, तालियाँ पीटना, सीटियाँ बजाना यह कहाँ की अ़िबादत है? इस से तो मस्जिदे ह़राम की बेहुरमती होती है।

36-37 إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يُنفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ ۚ فَسَيُنفِقُونَهَا ثُمَّ تَكُونُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُونَ ۗ وَالَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ جَهَنَّمَ يُحْشَرُونَ ۝ لِيَمِيزَ اللَّهُ الْخَبِيثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَيَجْعَلَ الْخَبِيثَ بَعْضَهُ عَلَىٰ بَعْضٍ فَيَرْكُمَهُ جَمِيعًا فَيَجْعَلَهُ فِي جَهَنَّمَ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ۝

अल्लाह की राह से रोकने वाले

मुफ़स्सिर इब्ने कसीर भाग 2, पेज नं० 307 में फ़रमाते हैं कि जब क़ुरैश को बद्र में शिकस्त हुई और जो ज़िन्दा रह गये वह मक्का मुकर्रमा वापस पहुँचे तो अबू सुफ़्यान के गले पड़ गये कि हम लोग तेरे क़ाफ़िले की हिफ़ाज़त के लिए निकले थे तुम लोग तो सही सालिम आ गये और हमारी औलाद और हमारे भाई बद्र में मक़्तूल हो गये, लिहाज़ा तुम लोग माल से हमारी मदद करो ताकि हम दोबारा जंग करें और मुह़म्मद (सल्ल०) से अपना बदला ले लें। चुनांचे उन लोगों ने इस सिल्सिले में चन्दे दिये और माल ख़र्च किये। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) ने फ़रमाया कि उनके इसी माल के ख़र्च करने के सिल्सिले में यह आयत नाज़िल हुई।

'मुआ़लिमुत्तन्ज़ील' भाग 2 पेज नं० 247 में लिखा है कि यह आयत उन मुश्रिकों के बारे में नाज़िल हुई जो बद्र में जाते हुए अपनी जमाअ़त पर जगह-जगह ख़र्च करते रहे और ऊँट ज़ब्ह़ करके खिलाते रहे। फिर 'ह़कम बिन ओवैना' का क़ौल नक़्ल किया है कि यह आयत अबू सुफ़्यान के बारे में नाज़िल हुई जिस ने उ़हद में मुश्रिकीन पर चालीस औक़िया चाँदी ख़र्च की थी। (एक औ़क़िया चालीस दिरहम का होता था।)

मुफ़स्सिर 'इब्ने कसीर' लिखते हैं कि नाज़िल होने की वजह अगरचे ख़ास है मगर मज़मून आ़म है। जब कभी भी अहले कुफ़्र ह़क़ से रोकने के लिए अपना माल ख़र्च करेंगे दुनिया व आख़िरत में नाकाम और ज़लील होंगे, अल्लाह तआ़ला का दीन पूरा होगा। काफ़िर उस के मिटाने के लिए माल ख़र्च करेंगे फिर नादिम होंगे उन को अफ़्सोस होगा कि हम ने अपना माल ख़र्च किया लेकिन मक़्सूद ह़ासिल न हुआ। यह लोग दुनिया में मग़्लूब होंगे और मरने के बाद दोज़ख़ में दाख़िल होंगे।

لِيَمِيزَ اللَّهُ الْخَبِيثَ مِنَ الطَّيِّبِ यह يُحْشَرُونَ से मुतअ़ल्लिक़ है। मतलब यह है कि दोज़ख़ में अहले कुफ़्र का दाख़िला इसलिए होगा कि पाक और नापाक यानी मोमिन और काफ़िर में अल्लाह तआ़ला अन्तर फ़रमा दें। अहले ईमान अपने ईमान की वजह से जन्नत में और अहले कुफ़्र अपने कुफ़्र की वजह से दोज़ख़ में जाएँगे।

وَيَجْعَلَ الْخَبِيثَ بَعْضَهُ عَلَىٰ بَعْضٍ فَيَرْكُمَهُ جَمِيعًا فَيَجْعَلَهُ فِي جَهَنَّمَ

(ताकि अल्लाह तआ़ला ख़बीस को बाज़ को बाज़ के साथ मिला दे और उस को इकट्ठा करके दोज़ख़ में दाख़िल फ़रमा दे।) दुनिया में तमाम अहले कुफ़्र आपस में एक दूसरे के मददगार थे, इस्लाम के ख़िलाफ़ माल ख़र्च करने में एक दूसरे की मदद करते थे आख़िरत में भी सब एक जगह जमा हो जाएँगे। दुनिया में जो इस्लाम की दुश्मनी के लिए सोचते और ख़र्च करते हैं उसकी वजह से अ़ज़ाब में इकट्ठे होकर इसकी सज़ा भुगतेंगे।

38 قُلْ لِلَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ يَنْتَهُوا يُغْفَرْ لَهُمْ مَا قَدْ سَلَفَ وَإِنْ يَعُودُوا فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ الْأَوَّلِينَ

इस्लाम लाने से गुनाह की माफ़ी

इस आयत में उम्मीद भी है और डराना भी। अल्लाह तआ़ला ने नबी अक्रम (सल्ल०) को हुक्म दिया कि आप काफ़िरों से फ़रमा दें कि अब तक जो तुम कुफ़्र पर जमे रहे और इस्लाम की दअ़वत को रोकने के लिए तद्बीरें करते रहे और इस बारे में जंग करते रहे इन सब से अगर तौबः कर लो यानी इस्लाम कुबूल कर लो तो वह सब कुछ माफ़ कर दिया जाएगा जो अब तक गुज़र चुका है।

हज़रत अम्र बिन आ़स (रज़ि०) भी इस्लाम के बड़े दुश्मनों में से थे। उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैं इस शर्त के साथ आप के हाथ पर बैअ़त करता हूँ कि मेरी मग़्फ़िरत कर दी जाए। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया ऐ अ़म्र! क्या तुम्हें मालूम नहीं कि इस्लाम उन सब चीज़ों को ख़त्म कर देता है जो इस से पहले थीं और बिलाशुब्हा हिज्रत उन सब गुनाहों को ख़त्म कर देती है जो उस से पहले किये थे और बिलाशुब्हा हज उन गुनाहों को ख़त्म कर देता है जो उस से पहले किये थे।

(मुस्लिम भाग 1, पेज नं० 76)

हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि०) से रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जिस ने इस्लाम कुबूल कर के नेकी का रास्ता अपना लिया उस से उसके उन गुनाहों के बारे में पूछ न होगी जो उस ने जाहिलियत में किये होंगे जिस ने इस्लाम लाकर भी बुराई न छोड़ी, उस के अगले पिछले सब आ़माल की गिरफ़्त होगी"। **(बुख़ारी व मुस्लिम)**

हदीस की तशरीह में लोगों ने लिखा है कि हिज्रत और हज से छोटे गुनाह माफ़ होते हैं और बन्दे के हुकूक़ माफ़ नहीं होते, यह बात दूसरी दलीलों से साबित है। यह अल्लाह तआ़ला का बहुत बड़ा करम है कि कोई शख़्स कैसा ही दुश्मने इस्लाम हो जब भी इस्लाम कुबूल करे उसके पिछले सब गुनाह माफ़ हो जाते हैं।

फिर फ़रमाया وَإِنْ يَعُودُوا فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ الْأَوَّلِينَ और अगर काफ़िर अपने कुफ़्र पर जमे रहें तो उन को समझ लेना चाहिए कि पहले लोगों के इन्कार और हठधर्मी की वजह से जो सज़ाएँ मिली हैं जो मक़्तूल और मग़्लूब (पराजित) हुए हैं वही सज़ाएँ उन को भी मिलेंगी और आख़िरत का अ़ज़ाब हमेशा के लिए तो हर काफ़िर के लिए है ही।

साहिबे मुअ़ालिमुत्तन्ज़ील लिखते हैं:-

فقد مضت سنة الاولين فى نصر الله انبيائه واوليائه واهلاك اعدائه यानी अल्लाह तआ़ला का यह क़ानून चला आ रहा है कि अपने अम्बिया की मदद फ़रमाई और अपने दुश्मनों को हलाक फ़रमाया। अगर तुम कुफ़्र से बाज़ न आये तो इसी क़ानून के मुताबिक़ तुम्हारा भी अन्जाम होगा।

39-40 وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّىٰ لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ الدِّينُ كُلُّهُ لِلَّهِ ۚ فَإِنِ انتَهَوْا فَإِنَّ اللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ وَإِن تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَوْلَاكُمْ ۚ نِعْمَ الْمَوْلَىٰ وَنِعْمَ النَّصِيرُ ۝

दीन अल्लाह ही के लिए

पहली आयत में फ़रमाया कि काफ़िरों से यहाँ तक लड़ो कि फ़ित्ना यानी कुफ़्र व शिर्क बाक़ी न रहे और सारा दीन अल्लाह ही के लिए हो जाए। बाज़ व्याख्याकारों ने फ़रमाया है कि इस से अ़रब (के उस वक़्त के काफ़िर) मुराद हैं चूंकि जिज़्या क़ुबूल नहीं किया जाता है, इसलिए यह हुक्म दिया गया कि अ़रब के काफ़िरों से यहाँ तक जंग करो कि अ़रब में कुफ़्र न रहे। पूरा अ़रब इस्लाम का मर्कज़ हो जाए और बाज़ हज़रात ने फ़रमाया है कि आयत के यह माने हैं कि इस्लाम को ग़ालिब (प्रभावी) करने की कोशिश क़ियामत तक करते रहो यहाँ तक कि तमाम लोग अपने मालिक को पहचान लें और जन्नत के हक़्दार बन जाएँ।

आयत के ख़त्म पर फ़रमाया فَإِنِ انتَهَوْا فَإِنَّ اللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ بَصِيرٌ (अगर काफ़िर लोग अपने कुफ़्र से बाज़ आ जाएँ तो अल्लाह उन कामों को देखता है जो वह करते हैं।)

दिलों का देखने वाला–

तुम्हें शक में पड़ने की ज़रूरत नहीं यह ख़याल कर के कि मुम्किन है उन्होंने धोका देने के लिए इस्लाम क़ुबूल किया हो, ऐसा न करना तुम ज़ाहिर के देखने वाले हो दिलों का हाल अल्लाह तआ़ला जानता है। अगर वह धोका देंगे तो अल्लाह तआ़ला उन से तुम्हारी हिफ़ाज़त फ़रमाएगा। हज़रत उसामा बिन ज़ैद (रज़ि०) को रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने क़बीला बनी जुहैनिया की तरफ़ एक फ़ौज का अमीर बनाकर भेजा था। जंग के मौक़े पर जब हज़रत उसामा (रज़ि०) काफ़िरों में से एक आदमी को क़त्ल करने लगे तो उस ने **'लाइलाहा इल्लल्लाहु'** कह दिया, इस के बावजूद उन्होंने उसे क़त्ल कर दिया। जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में ह़ाज़िर हुए तो वाक़िआ़ अ़र्ज़ कर दिया, आप ने फ़रमाया-

اقتلته وقد شهد ان لا اله الا الله क्या तूने इस के बावजूद उसे क़त्ल कर दिया कि उस ने **'लाइलाहा इल्लल्लाह'** कह दिया था। हज़रत उसामा (रज़ि०) ने अ़र्ज़ किया انما فعل ذلك تعوذاً कि उस ने जान बचाने के लिए ऐसा किया। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया فهلا شققت عن قلبه : तूने उस के दिल को चीर कर क्यों न देखा।

आप का मतलब यह था कि जब किसी ने कलिमा पढ़ लिया तो हमें उसे मुसलमान मान लेना

चाहिए। हम दिलों का हाल नहीं जानते दिलों को चीर कर नहीं देख सकते फिर किसी को कैसे कह सकते हैं कि उस ने सच्चे दिल से कलिमा नहीं पढ़ा। हमारा काम ज़ाहिर का देखना है, दिलों का हाल तो अल्लाह जानता है। अगर काफ़िर लोग धोका देकर कोई शर या नुक़्सान पहुँचाना चाहेंगे तो उन से अल्लाह हमारी हिफ़ाज़त फ़रमाएगा। वह तो ज़ाहिर और बातिन सब ही को जानता है।

(قال ابن کثیر ص۳۰۹ ج۲ قوله فان انتهوا بقتالكم عما هم فيه من الكفر فكفوا عنهم فان لم تعلموا بواطنهم فان الله بما يعملون بصير، ثم ذكر قصة اسامة بن زيد الذى ذكرناها فى هذه الصفحة وهى مروية فى الصحيحين وغيرهما)

दूसरी आयत में फ़रमाया وَاِنۡ تَوَلَّوۡا فَاعۡلَمُوۡۤا اَنَّ اللّٰهَ مَوۡلٰىكُمۡ कि काफ़िर अगर मुँह फेरें इस्लाम कुबूल न करें और तुम्हारी मुख़ालिफ़त में जंग पर ही कमर बाँधे रहें तो उन से लड़ते रहो और बुज़ुदिल न बनो। अल्लाह तआला तुम्हारा मौला है तुम्हारी मदद फ़रमाएगा। نِعۡمَ الۡمَوۡلٰى وَنِعۡمَ النَّصِيۡرُ۝ वह अच्छा मौला और अच्छा मददगार है। जब उस की मदद शामिले हाल होगी तो तुम्हारे लिए बुज़ुदिल बनने और जिहाद छोड़ कर बैठ रहने का कोई मौका नहीं।

जिहाद की आयतों पर आपत्ति

जिहाद और युद्ध व लड़ाई से सम्बन्धित कुर्आन मजीद की किसी आयत पर किसी को अगर वास्तव में कोई आपत्ति हो तो उसे चाहिए कि जिस आयत पर आपत्ति हो, उससे पूर्व की कुछ आयतों को और उसके बाद की कुछ आयतों के एक साथ मिलाकर पढ़ें।

इस तरह आमतौर पर आपत्ति खुद ही ख़त्म हो जाएगी और यह बात स्पष्ट हो जाएगी कि कुर्आन ने जहाँ भी युद्ध करने या किसी को मृत्युदंड देने का आदेश दिया है, वे या तो युद्ध सम्बन्धी आदेश हैं या फिर न्याय और धरती पर शान्ति स्थापना करने की अनिवार्य अपेक्षाओं की हैसियत से निर्देश दिये गये हैं और यह बात किसी भी समाज या देश में आपत्तिजनक नहीं समझी जाती, बल्कि देश में सुरक्षा, शान्ति और न्याय की स्थापना के लिए अनिवार्य ठहराई जाती है।

दंगे फ़साद–

दंगे-फ़साद का अवसर हो या चुनाव के समय बूथ (Booth) पर क़ब्ज़ा करने का, आतंकवादियों का मामला हो या किसी देश का किसी देश पर फ़ौजी हमले का, हर समाज और हर देश में ऐसे उपद्रवजनक तत्वों को देखते ही मारने (Shoot at Sight) के आदेश दिये जाते हैं। कोई भी इस कार्यवाही को अत्याचार या हिंसा नहीं कहता। स्वयं हमारे देश में भी ऐसा ही होता है और इस से सम्बन्धित अधिकारियों को वैधानिक तौर पर ऐसा करने का अधिकार प्राप्त होता है।

कुर्आन मजीद में जहाँ कहीं भी इस तरह के निर्देश दिये गये हैं, वहाँ अगर उनके सन्दर्भ को देखा जाए तो मालूम होगा कि ये निर्देश उपयुर्क्त परिस्थितियों में ही दिये गये हैं। उदाहरणस्वरूप यहाँ केवल कुछ नमूने प्रस्तुत किये जाते हैं।

पवित्र क़ुर्आन में युद्ध का आदेश

وَمَا لَكُمْ لَا تُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَآءِ وَالْوِلْدَانِ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ
اَخْرِجْنَا مِنْ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ اَهْلُهَا ۚ وَاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا ۚ وَّاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ نَصِيْرًا ۝

"और तुम्हें क्या हुआ है कि अल्लाह की राह में उन कमज़ोर मर्दों, औ़रतों और बच्चों के लिए जंग नहीं करते, जो दुआ़एँ किया करते हैं, ''ऐ हमारे रब! 'तू' हमें इस बस्ती से निकाल, जिसके रहने वाले ज़ालिम हैं और हमारे लिए अपनी कु़द्‌रत से कोई दोस्त (समर्थक) पैदा कर दे और हमारे लिए अपनी ओर से 'तू' कोई मदद्‌गार खड़ा कर दे।"
(सूर निसा-75)

एक और स्थान पर फ़रमाया-

पवित्र क़ुर्आन की जिस आयत में सबसे पहले युद्ध की अनुमति मिली वह यह है।

اُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقٰتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ ظُلِمُوْا ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ عَلٰي نَصْرِهِمْ لَقَدِيْرُ ۝ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ
بِغَيْرِ حَقٍّ اِلَّآ اَنْ يَّقُوْلُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ۭ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ صَوَامِعُ وَبِيَعٌ
وَّصَلَوٰتٌ وَّمَسٰجِدُ يُذْكَرُ فِيْهَا اسْمُ اللّٰهِ كَثِيْرًا ۭ وَلَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ
عَزِيْزٌ ۝ اَلَّذِيْنَ اِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِي الْاَرْضِ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ وَاَمَرُوْا بِالْمَعْرُوْفِ
وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ۭ وَلِلّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ۝ **(सूरः हज आयत 39-41)**

"(उन लोगों को) इजाज़त (अनुमति) दी जाती है जिनके विरुद्ध युद्ध किया जा रहा है, क्योंकि उन पर जुल्म हो रहा है, और अल्लाह उनकी मदद करने पर क़ादिर (सामर्थ्य) है; (यह वे लोग हैं) जो अपने घरों से नाहक़ निकाले गये, केवल इस बात पर कि वे कहते हैं, ''हमारा 'रब' अल्लाह है,'' अगर अल्लाह लोगों को एक-दूसरे से न हटाता रहता, तो खानक़ाहें (मठ) और गिरजा और यहूदी प्रार्थना भवन और मस्जिदें जिनमें अल्लाह का खूब नाम लिया जाता है, सब ढा दिये जाते और अल्लाह उसकी ज़रूर मदद करेगा जो 'उसकी' मदद करेगा; बेशक अल्लाह बड़ा ज़बर्दस्त, ताक़त वाला है; तो यह वे लोग हैं कि अगर धरती पर 'हम' इन्हें सत्ता दें, तो वे नमाज़ क़ायम करेंगे और ज़कात देंगे और भली बात का हुक्म करेंगे और बुराइयों से रोकेंगे; और सब मामलों का अंजाम तो अल्लाह ही के हाथ में है।" **(सूरः हज आयत नं० 39-41)**

व्याख्या-

इन आयतों में मुसलमानों को इजाज़त दी गई है कि वह जुल्म के ख़िलाफ़ हथियार उठा सकते हैं।" यह पहली आयत है जो अनुमति क़िताल (जंग की इजाज़त) के बारे में नाज़िल (उतरी) हुई है।

इससे पहले क़ुरैशे मक्का (मक्का की प्रसिद्ध जाति) का यह ज़ुल्म बयान कर दिया था कि उन्होंने मुसलमानों पर ह़ज करना बन्द कर दिया था जिसका उन्हें कोई ह़क़ नहीं। अब यहाँ साफ़-साफ़ लफ़्ज़ों (शब्दों) में जंग की इजाज़त दी जा रही है, जिसकी वजह यह है कि بِاَنَّهُمْ ظُلِمُوْا۔ इसलिए कि यह मज़लूम हैं और मज़लूम का ह़क़ है कि ज़ालिम के मुक़ाबले में अपना बचाव करें।

मज़लूम का ह़क़

यह मज़लूम तेरह वर्ष तक क़ुरैशे मक्का के ज़ुल्म का निशाना बनते रहे, यहाँ तक कि वतन छोड़ने पर मजबूर हुए, लेकिन विदेश में भी चैन से न बैठने दिया गया। उनके ख़िलाफ़ जंग का एलान कर दिया गया, आख़िर इन का क़ुसूर क्या था सिर्फ़ यह कि वह कहते थे 'रब्बुनल्लाह' हम अपने यक़ीन के मुताबिक़ अपने परवरदिग़ार को याद करना चाहते हैं, हम दूसरों को मजबूर नहीं करते कि हमारा धर्म स्वीकार कर लें, लेकिन दूसरे हमें क्यों मजबूर करते हैं कि अपने विश्वास को छोड़ दें।

इसके बाद कहा गया है कि यह मज़लूमों का क़ुद्रती ह़क़ है अगर वह इस ह़क़ से मह़रूम (वंचित) कर दिये जाएँ तो दुनिया में इन्सानी ज़ुल्म के रोकने का कोई सामान बाक़ी न रहेगा। जो ताक़तवर होगा वह दूसरों की आज़ादी हमेशा के लिए ख़त्म कर देगा।

यहाँ अल्लाह ने एक जमाअ़त के ज़ुल्म को रोकने का क़ानून बना रखा है। अगर यह सिल्सिला न होता तो दुनिया में ख़ुदा परस्ती का ख़ात्मा हो जाता। किसी गिरोह की इ़बादतगाह इन्सानी ज़ुल्मों के हाथों मह़फ़ूज़ न रहती।

क़ुर्आन में जिहाद के बाद सत्ता व हुकूमत का अस्ली मक़्सद क्या होगा, फ़रमाया-

"यह नमाज़ क़ायम करें, ज़कात अदा करें, नेकी का हुक्म दें, बुराईयों से रोकें और ज़ुल्म और बुरे काम की जगह इन्साफ़ व नेकी की हुकूमत क़ायम करे।" (यानी न्याय और पुण्य का राज स्थापित हो करें।)

यहाँ यह ह़क़ीक़त भी स्पष्ट कर दी कि क़ुर्आन ने जंग का हुक्म इसलिए नहीं दिया है कि मुसलमान किसी पर चढ़ दौड़ें या बम से उड़ा दें बल्कि इसलिए कि मज़लूमों और बेकसों (अत्याचार पीड़ितों और निःसहाय लोगों) की ह़िमायत करें और उन्हें ज़ालिमों के पंजे से मुक्ति दिलाएँ। इसलिए वह बार-बार कहता है कि अल्लाह की राह में लड़ो, यानी अपनी इच्छाओं के लिए नहीं बल्कि अल्लाह के अ़द्ल व इन्साफ़ को क़ायम करने के लिये लड़ो।" **(तर्जुमानुल् क़ुर्आन प्रथम भाग पृ० 371)**

ऊपर क़ुर्आन की जो आयतें प्रस्तुत की हैं उस आयत के बाद की कुछ आयतें भी यहाँ प्रस्तुत हैं ताकि बात स्पष्ट हो जाए।

जिहाद कब और किससे

وَقَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ۝ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوْهُمْ

وَاَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ حَيْثُ اَخْرَجُوْكُمْ وَالْفِتْنَةُ اَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ ۚ وَلَا تُقٰتِلُوْهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتّٰى يُقٰتِلُوْكُمْ فِيْهِ ۚ
فَاِنْ قٰتَلُوْكُمْ فَاقْتُلُوْهُمْ ۗ كَذٰلِكَ جَزَآءُ الْكٰفِرِيْنَ ۝ فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَقٰتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ
فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ لِلّٰهِ ۗ فَاِنِ انْتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ اِلَّا عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ۝ (सूरः बकरः-190-194)

"और तुम अल्लाह की राह में लड़ो उन लोगों से जो तुम से लड़ते हैं, मगर ज़्यादती (अत्याचार) न करना कि अल्लाह ज़्यादती करने वालों को पसंद नहीं करता; और (ऐसे काफ़िरों को जो ज़ुल्म कर रहे हैं) उनको जहाँ कहीं पाओ क़त्ल करो और उनको निकाल दो, जहाँ से उन्होंने तुम्हें निकाला; और (इसलिए कि) फ़ित्ना (उत्पीड़न) पैदा करना क़त्ल से भी बढ़कर है और उनसे मस्जिदे ह़राम (कअ़बः) के पास न लड़ना, जब तक कि वे उस जगह तुमसे न लड़ें; फिर अगर वे खुद ही तुम से लड़ें, तो उन्हें क़त्ल करो, यही काफ़िरों (सच्चाई का इन्कार करने वालों) की सज़ा है; (मगर जो न लड़ें उन्हें केवल काफ़िर होने की वजह से मारा या परेशान न किया जाए) फिर अगर वह (ज़ुल्म से) रुक जाएँ, तो अल्लाह माफ़ करने वाला, मेहरबान है; और उनसे लड़ो (जिन काफ़िरों ने ज़ुल्म किया) यहाँ तक कि फ़ित्ना (ज़ुल्म) बाक़ी न रहे और दीन अल्लाह के लिए हो जाए, फिर अगर वे (ज़ुल्म से) बाज़ आ जाएँ तो ज़ालिमों के सिवा किसी पर ज़्यादती न करो। बड़ाई वाला (प्रतिष्ठित) महीना बराबर है, बड़ाई वाले महीने के और सम्मान रखने में बदला है; फिर अगर जिसने तुम पर ज़्यादती की, तो (केवल उसी को) तुम भी उसके ज़्यादती की सज़ा दो, जैसा उसने तुम पर ज़्यादती की है; और अल्लाह से डरते रहो और जान लो! कि अल्लाह डरने वालों (परहेज़गारों) के साथ है।

व्याख्या-

यह आदेश मुसलमानों को उस समय दिया गया जब ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने मदीना आने के बाद मक्का के लोगों से एक सन्धि की जिसे 'सुल्हे-हुदैबिया' के नाम से जाना जाता है उसी सन्धि की शर्त के अनुसार रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने सहाब-ए-किराम (साथियों) के साथ इस उमरा की क़ज़ा पूरी करने का इरादा किया, "जिसे एक वर्ष पूर्व कुरैशे मक्का ने यह कह कर रोक दिया था कि आप अगले वर्ष उमरा कर सकते हैं। परन्तु ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के साथियों को यह ख़याल आया कि काफ़िर अत्याचारियों की सन्धि का कोई भरोसा नहीं यदि वह उस वर्ष भी रोकने लगें तो हमें क्या करना चाहिए इस पर यह अनुमति अल्लाह की ओर से दी गयी कि यदि वह युद्ध करने लगें तो तुम्हें भी अनुमति है कि जहाँ पाओ उन को क़त्ल करो और जिस प्रकार उन्होंने मुसलमानों को मक्का से निकाला, तुम भी उनको मक्का से निकाल दो। **(कुर्तुबी)**

इस्लाम पर आपत्ति करने वालों ने कुर्आन मजीद की उपर्युक्त आयतों को पूर्ण रूप से पेश करने के बजाए अपने घृणित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किसी आयत के बीच में से वाक्य निकाल कर नक़्ल किये हैं कि जैसे-

काफ़िरों का क़त्ल

कोई भी न्यायप्रिय व्यक्ति क़ुर्आन की इन सम्पूर्ण आयतों को एक साथ मिलाकर पढ़ेगा और उन हालात को अपने सामने रखेगा जिनमें यह बात कही जा रही है तो वह कदापि यह निष्कर्ष नहीं निकाल सकता, जो आपत्ति करने वाले हमारे इन नादान भाईयों ने निकाला है और कहते हैं कि क़ुर्आन मुसलमानों को यह आदेश देता है कि ग़ैर-मुस्लिमों को जहाँ पाओ क़त्ल कर दो।

अत्याचार की एक झलक

मक्का के काफ़िर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) और उनके अनुयाइयों पर तरह-तरह के अत्याचार करते थे, यहाँ तक कि दहकते अँगारों पर उन्हें नंगी पीठ लिटाकर भारी पत्थर रख देते थे, तपती हुई रेत में नंगा करके उन्हें घसीटते थे, लोहे की गर्म छड़ों से उनके शरीर को दाग़ देते थे, उनकी औरतों के साथ अत्यन्त घिनौना और अपमानजनक व्यवहार करते थे।

इन दुष्टों का गुस्सा यहाँ तक बढ़ गया था कि ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की हत्या कर डालने की असफ़ल साज़िश तक इन्होंने कर डाली। इन दुष्टों का ईशदूत और उसके अनुयायियों को उनके अपने घरों से निकल जाने पर विवश कर दिया था और उस पर आर्थिक सितम यह कर रहे थे कि ईमानवालों ने इन दुष्टों के अत्याचार से बचने के लिए जिन जगहों और देशों में पनाह ले रखी थी ये दुष्ट वहाँ भी बार-बार उन पर हमला करते थे।

यह लोग ईमानवालों का बिल्कुल सफ़ाया कर देने पर तत्पर थे तथा अन्य क़बीलों, गिरोहों और क़ौमों से भी अपने इन घृणित और दुष्टतापूर्ण उद्देश्यों की पूर्ति में सहायता लेते थे।

आप (सल्ल०) के जान के दुश्मन-

मक्का के विधर्मी महाईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का अपमान करते थे, कअ़बः में नमाज़ नहीं पढ़ने देते थे, मिथ्या विचार करके आपके विरुद्ध लोगों को बहकाते और भड़काते थे और मुसलमानों पर भयंकर अत्याचार करते थे। आपका और आपके परिवार का बहिष्कार किया जो तीन वर्ष तक जारी रहा, इसका बहिष्कार भी ऐसी निर्दयतापूर्ण था कि बहिष्कृत परिवार तक मुट्ठी भर खाद्य सामग्री नहीं पहुँच पाती थी बच्चे भूखों मरते थे, रोते बिलखते थे, जीवन रक्षा के लिए वृक्षों के पत्ते और सूखे चमड़े भिगोकर और घास तक खानी पड़ी थी। कितने हृदय हीन थे विरोधी! उद्देश्य यह था कि महाईशदूत सत्य धर्म का प्रचार त्याग करने पर बाध्य हो जाएँ, शत्रु इस प्रकार एक दो वर्ष नहीं 13 वर्ष तक विरोध तथा अत्याचार करते रहे अंत में उन्होंने महाईशदूत की हत्या करने की योजना बनाई, रात्रि में आपका घर घेर लिया कि आप बाहर निकलें तो आप की हत्या कर दें।

आप ईशदूत थे, ईश्वर आपका रक्षक था आप शत्रुओं के बीच से निकले और मदीना पहुँच गये जहाँ के निवासी मुसलमान हो चुके थे और उनके सरदारों में यह तय हो चुका था कि आप मक्का त्याग

करके मदीना चले आएँ।

अत्याचारी इतने पर ही संतुष्ट एवं शान्त न हुए उन्होंने मदीने पर चढ़ाई कर दी। इन आयतों में ऐसे ही विधर्मी शत्रुओं से युद्ध करने की आज्ञा दी गई है, क्या यह आज्ञा अनुचित है?

ऐसे शत्रुओं से भी युद्ध की आज्ञा देते हुए मुसलमानों को चेतावनी दी गई है कि तुमको युद्ध की अवस्था में भी ज़्यादती करना! अर्थात तुम्हारा कोई काम अत्याचार पूर्ण न हो, याद रखो ईश्वर ज़्यादती करने वालों को पसंद नहीं करता।

ज़्यादती क्या है-

इस ज़्यादती का तात्पर्य भी समझ लेना चाहिए। ज़्यादती की मनाही के अन्तर्गत हर वह कार्य और व्यवहार आ जाता है जो अनुचित, अनैतिक तथा न्याय विरुद्ध हो। मुसलमानों को आदेश दिया गया है कि उन लोगों से युद्ध निषिद्ध है जो तुम्हारे धर्म में विध्न बाधा नहीं डालते। स्त्रियों, बालकों, बूढ़ों तथा आहतों पर हाथ न उठाना, खेतियों और पशुओं को निरर्थक हानि न पहुँचाना, अपनी शारीरिक शक्ति का वहीं प्रयोग करना जहाँ वह अनिवार्य हो और उसी सीमा तक करना जितने की आवश्यकता हो इससे अधिक नहीं। इस आदेश का उद्देश्य यह था कि इस्लाम से पहले अ़रब निवासी यह सब अमानुषिक कार्य करते थे।

जब शत्रु का शान्ति का विचार ही न हो, वह लड़ने ही पर कटिबद्ध हो तो ऐसी अवस्था में लड़ने के सिवा मार्ग ही कौन सा रह जाता है! इसलिये कहा गया है कि जहाँ भी उससे सामना हो जाए और जहाँ से भी उसने तुमको निकाला है तुम उसे निकाल दो।

रक्तपात-

रक्तपात कोई प्रिय कार्य नहीं है परन्तु जब शत्रु कर्म धर्म में विध्न बाधा डाले, विद्या, ज्ञान, उक्ति और प्रमाण द्वारा अपने विचार सत्य सिद्ध करने के स्थान पर बलपूर्वक लोगों को सत्य मार्ग से रोकें और उन पर अपना विचार तथा अपना विश्वास अनाधिकार लादना चाहें तो यह ह़त्या से भी अधिक अमानुषिक कार्य है। ऐसे अत्यचारी शत्रुओं से युद्ध करना ही कल्याणकारी है।

कअ़बः की मर्यादा-

कअ़बः के क्षेत्र में युद्ध निषिद्व है परन्तु मक्का के विधर्मी अपनी शक्ति के घमण्ड में कअ़बः की मर्यादा का भी विचार नहीं रखते थे। इसलिए मुसलमानों से कहा गया है कि तुम स्वयं को कअ़बः के क्षेत्र के अन्तर्गत युद्ध में पहल न करो, परन्तु शत्रु न माने लड़े तो फिर तुम भी उनसे लड़ो।

युद्ध का परित्याग-

ऐसे विधर्मी अत्याचारी तथा दुष्ट शत्रुओं के सम्बन्ध में भी मुसलमानों से कहा गया है कि यदि वह

युद्ध का परित्याग कर दे तो अल्लाह बड़ा क्षमाशील तथा दयावान है। इस पवित्र शैली में मुसलमानों को नैतिकता की उच्चकोटि की बात बताई गई है। इसका तात्पर्य यह है कि क्षमा शीलता और दयालुता अल्लाह का महान गुण है इसलिए मुसलमानों में भी यह गुण विद्यमान होना चाहिए। यदि शत्रु युद्ध का परित्याग कर दें तो फिर प्रतिकार की भावना से तुम्हारा लड़ना उचित नहीं। तुम्हारा उद्देश्य धर्म मार्ग की बाधा का दूर कर देना है, अतः शत्रु धर्म के मार्ग से हट जाएँ तो तुम भी अपना हाथ रोक लो।

बाधा को दूर करने के लिए-

अन्त में फिर कहा गया है कि तुम्हारी लड़ाई तो धर्म के मार्ग से बाधा को हटाने के लिए है। अतः तुमको उसी समय तक लड़ना है, जब तक बाधा हट न जाए और जब बाधा हट जाए और धर्म अल्लाह के लिए हो जाए अर्थात उसकी भक्ति, उपासना उसकी आज्ञा पालन में कोई बाधा न रह जाए, शत्रु युद्ध से रुक जाए तो तुम भी हाथ रोक लो लड़ाई का विधान तो अत्यचारियों ही के लिए है।

विचारणीय प्रश्न-

ग़ैर मुस्लिम भाई विचार करें कि युद्ध सम्बन्धी ऐसा नियम किस धर्म, किस विधान अथवा किस शास्त्र में है? विरोधियों ने ऐसी पवित्र शिक्षा को भ्रष्ट प्रचार करके क्या से क्या बना दिया?

यह तथ्य ईशदूत के हालात और कुर्आन की उन आयतों की पृष्ठभूमि और सन्दर्भ से बिल्कुल स्पष्ट है जिनमें युद्ध और लड़ाई की बात की गई है।

ये सारे अत्याचार ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) और उनके अनुयायियों पर केवल इसलिए करते थे कि ये लोग अल्लाह को एक मानते और हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को ईशदूत स्वीकार करते थे। वह अल्लाह के आदेशानुसार जीवन व्यतीत करते, शराब, जुआ, अश्लीलता, लड़कियों पर अत्याचार करने, लड़ाई-झगड़ा और अन्य सामाजिक और नैतिक बुराईयों से दूर रहते थे।

ईमानदारी से विचार करें कि क्या ऐसे दुष्टों और अत्याचारियों पर फूलों की बारिश करने का निर्देश देना चाहिए?

मृत्यु दण्ड-

कुर्आन मजीद में स्वयं अत्यन्त स्पष्ट रूप से बार-बार यह बात बताई गई है कि किसी व्यक्ति को भी इस्लाम स्वीकार कराने के लिए विवश नहीं किया जा सकता और न ही किसी व्यक्ति को इस्लाम स्वीकार न करने के कारण मृत्यु-दण्ड अथवा कोई सज़ा दी जा सकती है।

अगर कोई व्यक्ति ज़ोर-ज़बरदस्ती से इस्लाम स्वीकार कर भी लें तो उसकी यह स्वीकृति और उसका यह ईमान स्वीकार न होगा।

मुसलमान बनने के लिए दिल से राज़ी होना ज़रूरी है

परमेश्वर के निकट तो सिरे से ऐसा ईमान मान्य ही नहीं है, क्योंकि ईमान के लिए अनिवार्य शर्त

दिल की आमादगी और इच्छा है। तलवार से या बलपूर्वक यह कार्य नहीं किया जा सकता। कुर्आन ने अपनी शिक्षा और सन्देश को प्रमाणों सहित अत्यन्त स्पष्ट रूप में पेश करने के बाद इन्सान को उसे स्वीकार या अस्वीकार करने की पूर्ण स्वतंत्रता दी है।

एक आवश्यक स्पष्टीकरण–

यहाँ यह बात भी स्पष्ट रूप से समझ लेनी चाहिए कि युद्ध या दण्ड सम्बन्धी यह आदेश कुर्आन ने अपने अनुयायियों को व्यक्तिगत रूप से अलग-अलग नहीं दिये हैं, बल्कि ये निर्देश इस्लामी राज्य और सत्ताधारी वर्ग को दिये गये हैं तथा इनको व्यावहारिक रूप देने के लिए एक न्यायिक और प्रशासनिक प्रणाली भी दी गई है।

कितने अफ़्सोस की बात है कि आपत्ति और आक्षेप करने वाले अपनी बात को इस ढंग से पेश करते हैं, मानो प्रत्येक मुसलमान को व्यक्तिगत रूप में किसी को मृत्युदण्ड देने या किसी उपद्रवी की हत्या करने का अधिकार और आदेश कुर्आन ने दिया है। आक्षेपकर्ताओं की यह नीति सत्य और न्याय की अपेक्षाओं के विरुद्ध और उन्हें मुँह चिढ़ाने वाली है।

जिहाद का आदेश शत्रुओं के साथ

क्या कोई धर्म कहता है कि घातक शत्रुओं को आज़ाद छोड़ दिया जाए कि वह जब अवसर पाएँ आघात पहुँचाते रहें?

इस्लाम केवल धर्म भेद की वजह से न किसी सम्प्रदाय से लड़ने की अनुमति देता है और न किसी की हत्या करने की।

अल्लाह ने ऐसे विधर्मी मक्का निवासियों से लड़ने की आज्ञा देकर कौन सी संकीर्णतापूर्ण तथा अनुदार शिक्षा दी है जो अस्त्र-शस्त्र द्वारा इस्लाम तथा मुसलमानों का उन्मूलन कर देना चाहते थे?

यदि वह युद्ध का परित्याग कर दें तो तुम भी युद्ध का परित्याग कर दो ज़्यादती मत करो। अल्लाह ज़्यादती करने वालों को पसन्द नहीं करता, उन्होंने जो अत्याचार किये हैं अल्लाह उन्हें भी क्षमा करेगा वह अति दयावान है।

यह है इस्लाम और मुसलमानों के शत्रुओं का 'फ़ित्ना', परन्तु विधर्मियों के समर्थक तथा इस्लाम के विरोधी लोगों ने 'फ़ित्ना' की व्याख्या इस प्रकार की है।

"फ़ित्ना शब्द का अर्थ तो होता है उपद्रव परन्तु उपद्रव या झगड़ा था किस बात पर? मूर्ति पूजा पर, कुरैश मूर्ति पूजक थे हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) मूर्ति पूजा को ग़लत कहते थे, अतः कुरैश उनका विराध करते थे"।

ऊपर की पंक्ति कितनी मिथ्यापूर्ण और अन्याय संगत वकालत है मक्के के मूर्ति पूजकों की। मानो बात इतनी ही थी "हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) मूर्ति पूजा को बुरा कहते थे, अतः कुरैश उनका विरोध करते थे।"

इसकी वास्तविकता हज़म कर गये कि महाईशदूत शान्ति पूर्ण भाव से इस्लाम का प्रचार कर रहे थे और मक्का के कुरैश अपनी बहु संख्या, शक्ति तथा युद्ध के द्वारा मुसलमानों को उनके धर्माचरण में विघ्न (बाधा) ही नहीं डाल रहे थे बल्कि इस्लाम को समाप्त भी कर देना चाहते थे।

यह था फ़ित्ना मक्का के मूर्तिपूजकों का, परन्तु लोगों ने उनकी वकालत उन वकीलों की तरह की है जो हत्यारों को भी निर्दोष सिद्ध करते हैं। अतः आयत का अन्तिम भाग छोड़ दिया जिससे मक्का निवासियों का अपराध स्पष्ट हो जाता है आयत का अन्तिम भाग यह है-

"फिर यदि वह अपनी ज़्यादती से बाज़ आ जाएँ तो अल्लाह उनके कर्मो को देखता है वह उनके नेक कर्मो का फल अवश्य देगा।"

युद्ध की परिस्थितियाँ

कुर्आन की इस आयत में युद्ध से सम्बन्धित ऐसे क़ीमती, उपयोगी और कल्याणकारी सिद्धान्त बयान किये हैं, जिनका इन्कार नहीं किया जा सकता। ऐसे सिद्धान्त केवल वास्तविक परमेश्वर की ओर से ही हो सकते हैं।

ईश्वरीय मार्ग के लिए युद्ध-

इस्लामी राज्य को इस नियम का पाबन्द बनाया गया है कि युद्ध केवल ईश्वरीय मार्ग ही में किया जा सकता है अर्थात युद्ध न तो अपने आर्थिक उद्देश्यों और हितों की पूर्ति के लिए हो, न अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिए। ईश्वरीय मार्ग का मतलब है सत्य व न्याय का मार्ग, अमन व शान्ति की स्थापना, अपने वास्तविक रब की इच्छा और उसकी बताई हुई बातों पर अ़मल के लिए।

युद्ध सम्बन्धी सीमाओं का पालन करना अनिवार्य

अगर युद्ध की नौबत आ जाए तब भी युद्ध की कुछ सीमाएँ और मर्यादाएँ कुर्आन ने निश्चित की हैं जिनको ध्यान में रखना ज़रूरी होता है और उनका उल्लंघन करने वाले लोगों को सावधान किया गया है कि परमेश्वर ऐसे लोगों को पसन्द नहीं करता।

जैसे- "दुश्मनों की औ़रतों, बच्चों, बूढ़ों तथा ज़ख़्मियों पर हाथ न उठाया जाए। जो लोग पूजा-पाठ और उपासना में व्यस्त हैं उन्हें किसी प्रकार की हानि न पहुँचाई जाए। फ़सलों और पेड़ों को नष्ट न किया जाए और जानवरों को न मारा जाए। दुश्मनों की लाशों के अंग न काटे जाएँ आदि।"

युद्ध के समय की सीमाओं और निर्देशों की पाबन्दी न करने पर परमेश्वर ने यह चेतावनी दी है कि तुम्हारी सारी मेहनत और सारी कुर्बानियाँ निरर्थक सिद्ध होंगी, बल्कि उल्टे तुम अपराधी और ईश्वरीय प्रकोप के भागी होगे।

यह बात तो भली भाँति सिद्ध हो गई है कि इस्लाम में ज़बरदस्ती मुसलमान बनाने की अनुमति कही नहीं है फिर भी जो भ्रम और सन्देह एक युग से जड़ पकड़े हुए हैं उसके कारण कुछ लोगों के मन में

यह सवाल पैदा हो सकता है कि कुर्आन में जो युद्ध की आज्ञाएँ हैं उनका उद्देश्य क्या है?

जब यह बात सिद्ध हो गई कि इस्लाम ज़बरदस्ती मुसलमान बनाने की इजाज़त नहीं देता तो सिरे से यह भ्रम और सन्देह ही अनुचित है कि कुर्आन में युद्ध का आदेश है और इस्लाम के पैग़म्बर और उनके सहाबा के काल में लड़ाईयाँ हुई हैं तो वह लोगों को ज़बरदस्ती मुसलमान ही बनाने के लिए हुई होंगी। हर विवेकशील व्यक्ति स्वयं सोच सकता है कि इस्लामी लड़ाईयों का उद्देश्य ही कुछ और होगा और यही तथ्य भी है।

वास्तव में जिहाद का उद्देश्य तो दुनिया में न्याय और सत्य की स्थापना करना, इन्सान को वास्तविक शान्ति और सफ़लता उपलब्ध कराना और उसे एक अच्छा इन्सान और आदर्श नागरिक बनाना है।

एक ही घटना के दो मतलब

एक ही घटना में एक व्यक्ति उस घटना की पृष्ठभूमि ज्ञात न होने के कारण एक निष्कर्ष निकालता है और पृष्ठभूमि और उद्देश्य मालूम हो जाने के बाद उसके विपरीत बिल्कुल दूसरा निष्कर्ष निकालता है।

आतंकवाद और इस्लाम

आजकल इस्लामी जिहाद और आतंकवाद के अन्तर को स्पष्ट किये बिना हर प्रकार की ख़ूँरेज़ी को इस्लाम से जोड़ दिया जाता है और संचार माध्यमों के द्वारा 'आतंकवाद' शब्द का बहुत प्रयोग हो रहा है और कुछ राजनीतिक तत्व यह सिद्ध करने की चेष्टा भी कर रहे हैं कि इसका सम्बन्ध इस्लाम से है। हालाँकि सामान्यतः न तो आतंकवाद का अर्थ लोगों को ठीक-ठीक मालूम हैं और न यह आसानी से सिद्ध किया जा सकता है कि इसका कोई सम्बन्ध इस्लाम से भी हो सकता है।

आतंकवाद का अर्थ

वस्तुतः उर्दू में शब्द "दहशत पसन्दी" अंग्रेज़ी शब्द Terrorism का अनुवाद है। "टेरर" का अर्थ है बहुत अधिक भय, ख़त्रा और आतंक। इस अर्थ की अभिव्यक्ति के लिए फ़ारसी शब्द "दहशत"(आतंक) का प्रयोग किया गया और अंग्रेज़ी के "इज़्म" का अनुवाद "पसन्दी" (वाद)।

इस प्रकार इसका पूरा अर्थ यह हुआ कि लोगों में भय एवं आतंक पैदा करने के मत का नाम दहशत पसन्दी (आतंकवाद) है। दूसरे शब्दों में जो लोग दूसरों की हत्या और विध्वंस आदि जैसे अवैधानिक, अनैतिक एवं अमानवीय कृत्यों के द्वारा डरा धमका कर अपने अवांछनीय उद्देश्यों की पूर्ति करना चाहते हैं, उनका यह कुकृत्य आतंकवाद है।

आतंकवाद और इस्लाम

आतंकवाद और इस्लाम बिल्कुल विपरीतार्थक शब्द हैं और ये दोनों एक जगह एकत्रित नहीं हो सकते, यहाँ तक कि इस्लाम का नाम लेकर कभी और कहीं कुछ मुसलमान भी आतंकवाद को बढ़ावा दें

तो इस्लाम से उसका कोई सम्बन्ध हरगिज़ नहीं होगा। बल्कि यह इस्लाम धर्म की एक अवहेलना और शरीअ़त-ए-मुहम्मदी में एक परिवर्तन होगा, जिसे दीन व शरीअ़त के बद्तरीन शोषण की संज्ञा दी जाएगी।

इस्लाम में भ्रष्टाचार की अनुमति नहीं

इस्लाम में यातनाएँ देने और भ्रष्टाचार फैलाने की अनुमति नहीं देता। यही बात दूसरे उन धर्मों के विषय में भी कही जा सकती है जिनकी वास्तविकता वह्य-ए-इलाही (ईश्वरीय प्रकाशना) पर आधारित है, चाहे उनके अनुयायियों ने अपने संदेष्टाओं की शिक्षाओं को कितना ही विकृत कर दिया हो, यहाँ तक कि उनके स्वार्थी धर्मनेता अपने धर्म का प्रयोग कितने ही ग़लत उद्देश्यों की पूर्ति के लिए कर रहे हों, इसलिए कि दीन (धर्म) पूरे विश्व के पालनहार की निर्धारित की हुई वह जीवन-पद्धति और जीवन-व्यवस्था है जो बिना भेद-भाव के पूरी मानवता की सुख-समृद्धि के लिए है।

धर्म परमेश्वर का बनाया हुआ विधान है और फ़ित्रत (प्रकृति) के अनुकूल है। प्रकृति अपनी वास्तविकता की दृष्टि से आतंकवादी नहीं, वरना इस धरती को इन्सान के लिए उपयोगी नहीं बनाया जाता, न ही आसमान कवियों की कल्पना के विपरीत मेहरबान होता। दुनिया की जलवायु आदमी के लिए इसीलिए अनुकूल है कि वह विशेषकर उसी के लिए बनाई गई है। कुछ आयतों की ओर इशारा करेंगे जिन का उल्लेख पिछले पेजों में करते आये हैं।

आतंकवाद की गुंजाइश नहीं-

आतंकवाद एक बर्बरतापूर्ण कार्य है और इस्लाम की सभ्य व्यवस्था में इसकी कोई गुंजाइश नहीं। इस्लाम इन्सान को केवल ईश्वर का भय दिलाता है, अतः वह किसी इन्सान को इसकी अनुमति नहीं दे सकता कि वह लोगों को अपना भय दिलाये और उन्हें भयभीत करके अपने उद्देश्यों की पूर्ति करे। समाज में तनाव और संघर्ष इस्लाम को गवारा नहीं, वह हर प्रकार के संघर्ष और ईर्ष्या-द्वेष समाप्त करके एक शांतिपूर्ण वातावरण में व्यक्तियों के बीच प्रेम, सौहार्द, भाईचारा और सामूहिक कल्याण के कामों में सहयोग के अवसर पैदा करना चाहता है, ताकि ईश्वर के बन्दे एकाग्रता के साथ अपनी और जगत् की सृष्टि के उद्देश्यों की पूर्ति में बेरोक-टोक क्रियाशील रहें। दुनिया में सत्यनिष्ठा और ईश-परायणता के साथ सद्व्यवहार करके आख़िरत की सफ़लता का प्रबन्ध करें।

दूसरे धर्मों और उनके मानने वालों की सुरक्षा के विषय में यह बात भी याद रहे कि अपने अक़ीदे के मुताबिक़ इस्लाम ही केवल अल्लाह के नज़्दीक दीन है, मगर इसके बावजूद वह दूसरे धर्मों की सुरक्षा की ज़िम्मेदारी लेता है। हाँ, जो अपनी ज़िद और हठ की वजह से इस्लाम के प्रति अपना विद्वेष ख़त्म करना नहीं चाहते और न उसके साथ किसी प्रकार के शान्तिपूर्ण समझौते पर तैयार होते हैं, यही वह लोग हैं जो हर सच्चाई की राह में चट्टान बन कर खड़े होते रहे हैं और उनके भौतिक साधन और सारी पूंजी हमेशा सत्य को नीचा दिखाने की कोशिशों में काम आती रही है।

सिर्फ़ उन्हीं के ख़िलाफ़ इस्लाम लड़ने की इजाज़त देता है और केवल उस समय जब कि स्थिति में सुधार लाने के सारे रास्ते बन्द हो गये हों, उस में भी किसी को व्यक्तिगत रूप से नहीं बल्कि मुसलमानों के अमीर के हुक्म के बाद और उस में भी अपने इन दुश्मनों के ख़िलाफ़ लड़ाई का एलान करने से पहले इस्लाम उन्हें विधिवत अल्टीमेटम देता है, ताकि संभव हो तो ख़ून खराबे की नौबत न आये। यह अल्टीमेटम इस्लाम की ओर से सुलह की आख़िरी कोशिश होती है, क्योंकि वह मार काट नहीं चाहता बल्कि संसार को सुख शान्ति से परिपूर्ण देखना चाहता है।

क़ुर्आन में अल्लाह तआ़ला का इर्शाद हैः-

"और ऐ नबी, अगर दुश्मन सुलह और सलामती की ओर झुकें तो तुम भी इसके लिए तैयार हो जाओ और अल्लाह पर भरोसा रखो"।

जिहाद का आदेश, न्याय की शर्त के साथ

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता हैः-

"और तुम अल्लाह के मार्ग में उन लोगों से लड़ो, जो तुमसे लड़ते हैं, परन्तु ज़्यादती न करो कि अल्लाह ज़्यादती करने वालों को पसंद नहीं करता"। **(सूरः बकरः 190)**

इस आदेश में न्याय की शर्त और उसकी नसीह़त के अलावा दो मौलिक बातें ये हैं कि लड़ना उन लोगों से है जो लड़ाई की शुरुआ़त कर रहे हैं और लड़ना भी केवल ईश्वरीय मार्ग में है, किसी देश की सत्ता हथियाने की लोलुपता, युद्ध में प्राप्त संपत्ति के लोभ और निजी प्रतिरोध की भावना से नहीं। इसलिए इसी परिप्रेक्ष्य में आगे की आयतें स्पष्ट करती हैं कि-

(1) अल्लाह और रसूल से अनुचित अगर अपनी युद्ध-प्रवृत्ति से "बाज़ आ जाएँ तो अल्लाह क्षमा करने और दया करने वाला है।"

(2) लड़ाई केवल उस समय तक जारी रखी जाए जब तक फ़ित्ना (अत्याचार) बाक़ी है और ख़ुदा और रसूल की अवज्ञा करने वाले ये अत्याचारी इस सीमा तक हतोत्साहित न हो जाएँ कि सत्य का बोलबाला हो जाए।"

(3) और "ज़ालिमों (अत्याचारियों) के अतिरिक्त किसी पर हाथ उठाना उचित नहीं।"

एक दूसरे अवसर पर सूरः अन्निसा की आयतें 75 और 76 में बताया गया है कि जब किसी स्थान पर "कमज़ोर मर्द, औ़रतें और बच्चे" अत्याचारों के विरुद्ध फ़रियाद करें तो उनकी मदद भी करनी चाहिए, मगर ईश्वर के आज्ञाकारी बन्दों का युद्ध "शैतान की राह" में होता है।

इसी प्रकार सूरः निसा ही की 88 से 91 तक की आयतों में दुष्टों और धोखेबाज़ों से युद्ध का निर्देश देते हुए व्याख्या की गई है।

अनुवाद-

"अगर वे तुम से दूर हो जाएँ और लड़ाई से रुक जाएँ और तुम्हारी तरफ़ शान्ति एवं

मित्रता का हाथ बढ़ाएँ तो अल्लाह ने तुम्हारे लिए उन पर हाथ उठाने की कोई राह नहीं रखी है"।

दुष्टों एवं दंगाइयों को शिक्षाप्रद पराजय देने के लिए हर प्रकार की आवश्यक 'शक्ति' और साधनों को उपलब्ध करने का निर्देश देते हुए क़ुर्आन शान्ति की इच्छा का जवाब शांति की चेष्टा से ही देने की ताकीद करता है।

अनुवाद–

"और हे नबी, अगर दुश्मन सुलह और सलामती की ओर तैयार हों तो तुम भी इसके लिए तैयार हो जाओ और अल्लाह पर भरोसा करो, निश्चय ही वही सब कुछ सुनने वाला और जानने वाला है"। **(सूरः अनूफ़ाल, 61)**

इन व्याख्याओं से यह सत्य बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है कि इस्लाम का मौलिक और स्थायी उद्देश्य शांति है, जबकि युद्ध एक अस्थायी और क्षणिक घटना है, एक सामयिक संकट है, जिसको दूर करने के लिए कुछ उचित शर्तों के साथ और निश्चित सीमाओं के अन्दर शक्ति का प्रयोग न केवल वैध बल्कि आवश्यक है।

तलूवार का प्रयोग इस्लाम धर्म में

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने दुनिया को तलूवार का सही प्रयोग बताया। इस लिए कि अत्याचार को रोकने के लिए कभी-कभी हथियार उठाना एक ज़रूरत ही नहीं बल्कि अनिवार्य हो जाता है। जैसे- कोई स्वतंत्रता छीनने का प्रयास करे या अ़िबादतगाहें ख़तूरें में पड़ जाएँ या मानवता नष्ट होने लगे और इन्सानों (मुस्लिम या काफ़िर) की जान माल की कोई क़ीमत न रहे तो क्या ऐसे संकट के समय में केवल तमाशाई बन कर खड़ा देखता रहे या केवल अपनी अ़िबादत में लगा रहे? ऐसा नहीं बल्कि उस समय मानव को अत्याचार से निकाल कर अम्न व सुकून की राह की ओर लाना दायित्व बन जाता है, परन्तु बदूक़िस्मती से तलूवार का प्रयोग अधिकतर लोगों ने ग़लत ढंग से किया है, इसलिए वह ग़लत समझ में आने लगी है।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने मुनष्यों के स्वभाव को सामने रख कर जंग की जो अनुमति दी है आपको आगे की पंक्तियों से स्पष्ट हो जाएगा कि किस परिस्थिति में युद्ध करें और किस से करें, पूरे उपदेश हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने बताये हैं।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का आदेश

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) जिन जंगों या युद्धों में स्वयं होते उनमें मुजाहिदीन को आदेश होता कि जब तक शत्रुओं की फ़ौज क़रीब न आ जाए कोई आगे न बढ़े और एक बार 10 हिज्री में हज़रत अ़ली (रज़ि०) को तीन सौ सवारों के साथ यमन भेजा तो रसूल (सल्ल०) ने उनसे फ़रमाया, "जब, तुम वहाँ पहुँचो तो जब तक तुम पर कोई हमला न करे तुम न लड़ना।" **(सीरतुन्नबी भाग 1,605)**

इसी प्रकार हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की मिसाल (उपमा) तो ऐसी है कि जिस प्रकार एक डाक्टर आपरेशन थियेटर में मरीज़ के फोड़े को सही करने के लिए ब्लेड का प्रयोग करता है ताकि पूरा शरीर स्वस्थ हो जाए ठीक उसी प्रकार रसूल (सन्देष्टा) का तलवार उठाना उसी डाक्टर के समान हैं (कि मानवता को क़ायम करने के लिए जो फोड़ा फुन्सी हो उसे ख़त्म करता है और एक अच्छे समाज को क़ायम करता है।)

इस प्रकार हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने युद्ध की आज्ञा देते हुए मुसलमानों को चेतावनी दी है कि तुमको युद्ध की अवस्था में भी ज़्यादती नहीं करनी है अर्थात हर वह कार्य और व्यवहार जो अनुचित, अनैतिक तथा न्याय के विरुद्ध हो।

जंग की नसीहतें

'अबूदाऊद' में हज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) जिहाद में जाने वालों को नसीहत करते कि तुम अल्लाह के नाम पर और रसूलुल्लाह की मिल्लत पर जिहाद के लिए जाओ लेकिन किसी बूढ़े, कमज़ोर, छोटे बच्चों या औरतों को क़त्ल (हत्या) न करना। **(अबूदाऊद)**

इसी प्रकार मुसलमानों को आदेश दिया जाता कि उन लोगों से युद्ध निषिद्व है जो तुम्हारे धर्म में विध्न (बाधा) न डालें, स्त्रियों, बालकों, बूढ़ों, आहतों पर हाथ न उठाना, खेतियों और पशुओं को निरर्थक हानि न पहुँचाना, अपनी शारीरिक शक्ति का वहीं प्रयोग करना जहाँ वह अनिवार्य हो और उस सीमा तक करना जितने की आवश्यकता हो। **(सीरतुन्नबी भाग-2)**

मुहम्मद (सल्ल०) द्वारा सेना के उपदेश

अल्लाह से डरो, अपनी इच्छाओं का दमन करो, ईश्वर का नाम लेकर जाओ और उसी के आज्ञानुसार जाओ और उसी अल्लाह से सहायता मांगो और ईश्वरीय सेना बन कर युद्ध करो, किसी प्रकार का धोखा न दो, विरोधी के माल की चोरी न करो, मृतक की लाश को नष्ट न करो, बूढ़ों बच्चों और स्त्रियों पर हाथ न उठाओ, न उन पर जो युद्ध में सम्मिलित न हों, वृक्षों को अनावश्यक न काटो, पूजा स्थलों को न गिराओ।

तुम्हारा सरदार जिस स्थान पर तुम्हें नियुक्त कर दे वहाँ स्थिर रहो, जो श्रण माँगे उसे श्रण दो, आक्रमण करते हुए ईश्वर को याद रखो, बिना ज़रूरत मवेशियों को न मारो, न उन्हें ज़ख़्मी करो, आग न लगाओ, खजूर या दूसरे फलदार वृक्षों को न काटो, फ़सलों को हानि न पहुँचाओ, न उन्हें जलाओ।

इससे पता चलता है कि जब इस्लाम में युद्ध के नियम इतने मानवतापूर्ण, न्याय जनक और शांतिदायक हैं तो उसके साधारण नियम कितने शान्तिपूर्ण होंगे। इस प्रकार आपका संपूर्ण जीवन उदारता, समता, सत्य और न्याय एवं पड़ोसियों के साथ सुव्यवहार से भरा पड़ा है। आपने कभी दास, बालक व पशु तक को नहीं मारा, न किसी को अपशब्द कहा यहाँ तक कि युद्ध के बन्दियों का भी सम्मान करते

अन्य जातियों के सरदारों तथा अन्य धर्मो के विद्धानों, प्रतिष्ठित जनों से सम्मान पूर्वक मिलते जहाँ अपने प्रिय अनुयाइयों के लिए दिन रात ईश्वर से प्रार्थना करते वहीं विरोधियों और शत्रुओं के लिए भी प्रार्थना करते। आप का आदेश था कि “सृष्टि के प्राणियों पर दया करो ईश्वर से डरो”।

महामान्य ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के कुछ उपदेशों को आपने देखा जो आप के दयालुता और आचरण का स्पष्ट नमूना है कि शुद्धि बुद्धि इसके बाद निर्णय ले सकती है कि क्या वह लोहे की तलवार थी? नहीं, वह मुह़म्मद (सल्ल०) की अमूल्य सच्चरित्रता, क्षमा, भाव, शुद्ध आचार विचार उनके महान गुण और क़ियामत तक न मिटने वाली आदर्श शिक्षाओं की चमकती हुई तलवार थी जिसने असत्य और अत्याचार की गर्दन उड़ा दी और स्वस्थ समाज की स्थापना की।

खण्ड-10
आयत नं० 41 से 49 तक

*

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَاَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ اِنْ كُنْتُمْ
اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا يَوْمَ الْفُرْقَانِ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٤١ اِذْ اَنْتُمْ بِالْعُدْوَةِ الدُّنْيَا
وَهُمْ بِالْعُدْوَةِ الْقُصْوٰى وَالرَّكْبُ اَسْفَلَ مِنْكُمْ ۭ وَلَوْ تَوَاعَدْتُّمْ لَاخْتَلَفْتُمْ فِي الْمِيْعٰدِ ۙ وَلٰكِنْ لِّيَقْضِيَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا ڏ
لِّيَهْلِكَ مَنْ هَلَكَ عَنْۢ بَيِّنَةٍ وَّيَحْيٰى مَنْ حَيَّ عَنْۢ بَيِّنَةٍ ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَسَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝٤٢ اِذْ يُرِيْكَهُمُ اللّٰهُ فِيْ مَنَامِكَ قَلِيْلًا ۭ وَلَوْ
اَرٰىكَهُمْ كَثِيْرًا لَّفَشِلْتُمْ وَلَتَنَازَعْتُمْ فِي الْاَمْرِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ سَلَّمَ ۭ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝٤٣ وَاِذْ يُرِيْكُمُوْهُمْ اِذِ الْتَقَيْتُمْ
فِيْٓ اَعْيُنِكُمْ قَلِيْلًا وَّيُقَلِّلُكُمْ فِيْٓ اَعْيُنِهِمْ لِيَقْضِيَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا ۭ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝٤٤ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا لَقِيْتُمْ
فِئَةً فَاثْبُتُوْا وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝٤٥ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَنَازَعُوْا فَتَفْشَلُوْا وَتَذْهَبَ رِيْحُكُمْ وَاصْبِرُوْا ۭ
اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ۝٤٦ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بَطَرًا وَّرِئَاۗءَ النَّاسِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ
بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ۝٤٧ وَاِذْ زَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمُ الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَاِنِّيْ جَارٌ لَّكُمْ ۚ فَلَمَّا تَرَاۗءَتِ
الْفِئَتٰنِ نَكَصَ عَلٰى عَقِبَيْهِ وَقَالَ اِنِّيْ بَرِيْۗءٌ مِّنْكُمْ اِنِّيْٓ اَرٰى مَا لَا تَرَوْنَ اِنِّيْٓ اَخَافُ اللّٰهَ ۭ وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝٤٨ اِذْ يَقُوْلُ
الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ غَرَّ هٰٓؤُلَاۗءِ دِيْنُهُمْ ۭ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝٤٩

अनुवाद–

(41) और जान लो कि जो कुछ तुम्हें ग़नीमत के रूप में माल मिले, उसका पाँचवा भाग अल्लाह का, और उसके रसूल का, और नातेदारों का, और यतीमों का, मुहताजों और मुसाफिरों का है। अगर तुम अल्लाह पर और उस चीज़ पर ईमान रखते हो, जो 'हमने' अपने बन्दे पर फैसले के दिन उतारी, जिस दिन दोनों सेनाओं में मुठभेड़ हुई, और अल्लाह को हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत (सामर्थ्य) है। (42) (याद करो) जब तुम घाटी के क़रीब किनारे पर थे; और वे घाटी से दूर किनारे पर थे, और क़ाफ़िला तुम से नीचे की ओर था। अगर तुम वक्त मुक़र्रर (निश्चित) करते तो ज़रूर तुम वक़्त मुकर्रर पर न पहुँचते; लेकिन जो कुछ हुआ वह इस लिए कि अल्लाह उस बात का फ़ैसला कर दे, जिसका पूरा होना यक़ीनी था, ताकि जिसे मरना हो वह खुले प्रमाण देख कर(हक़ पहचान कर) ही मरे और जिसे ज़िन्दा रहना हो, वह खुले प्रमाण देख कर ज़िन्दा रहे। बेशक अल्लाह खूब जानता, सुनता है। (43) जब अल्लाह उनको, तुम्हारे सपने में थोड़ा करके तुम्हें दिखा रहा था; और अगर 'वह' उन्हें ज़्यादह करके तुम्हें दिखा देता, तो ज़रुर तुम लोग हिम्मत हार जाते, और अस्ल मामले में झगड़ने लग जाते; लेकिन अल्लाह ने (तुम को) इससे बचा लिया। बेशक 'वह' तो जो कुछ दिलों में होता है उसे भी जानता है। (44) और जब तुम्हारी आपस में मुठभेड़ हुई, तो वह तुम्हारी निगाहों में उन्हें कम करके, और तुम्हें उनकी निगाहों में कम करके दिखा रहा था, ताकि अल्लाह उस बात का फ़ैसला कर दे जिसका होना तय था और सारे मामले अल्लाह ही की ओर पलटते हैं। (45) ऐ ईमान वालो! जब

तुम्हारा किसी गिरोह से मुक़ाबला हो जाए तो जमे रहो और अल्लाह को खूब याद करो, ताकि तुम्हें कामियाबी मिल जाये। (46) और अल्लाह और उसके रसूल के हुक्म पर चलो और आपस में झगड़ा न करो, वरना हिम्मत हार बैठोगे और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी; और सब्र से काम लो, बेशक अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है; (47) और उन लोगों की तरह न हो जाना जो अपने घरों से इतराते, और लोगों को दिखाते हुऐ निकले थे, और लोगों को अल्लाह की राह से रोकते हैं, हालाँकि जो कुछ ये करते हैं, अल्लाह उसे अपने घेरे में लिए हुए है। (48) और जब शैतान ने उनके आमाल उनके लिए सुन्दर बना कर दिखाये और कहा, ''आज के दिन लोगों में से कोई तुम पर ग़ालिब (प्रभावी) नहीं हो सकता, और मैं तुम्हारे साथ हूँ।'' लेकिन जब दोनों गिरोह आमने-सामने हुए तो वह उल्टे पाँव फिर गया और कहने लगा, "मेरा तुम से कोई सम्बन्ध नहीं, मैं तो ऐसी चीज़ें देख रहा हूँ, जो तुम नहीं देख सकते, मैं तो अल्लाह से डरता हूँ, और अल्लाह सख़्त अज़ाब देने वाला है"। (49) जब मुनाफ़िक़ (कष्टाचारी) और वे लोग जिनके दिलों में रोग है कह रहे थे, ''उन लोगों को तो उनके धर्म ने धोखे में डाल रखा है।'' और जो व्यक्ति अल्लाह पर भरोसा रखता है, तो बेशक अल्लाह ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) हिक्मत वाला है।

आयत नं० 41 से 49 तक की व्याख्या

41 وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَاَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ
اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا يَوْمَ الْفُرْقَانِ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

माले ग़नीमत के हक़्दार

काफ़िरों से जब जिहाद किया जाता है तो उनके माल भी क़ब्ज़े में आ जाते हैं उस माल को इस्लाम में माले ग़नीमत कहा जाता है। पिछली उम्मतों के मुसलमान जब काफ़िरों से जिहाद करते और उन के माल क़ाबू में आ जाते तो उस माल को आपस में तक़्सीम कर लेने का शरई क़ानून नहीं था बल्कि आसमान से आग नाज़िल होती थी जो ग़नीमत के माल को जलाकर राख कर देती थी। अल्लाह तआला ने उम्मते मुहम्मदिया पर रहम फ़रमाया कि उन्हें माले ग़नीमत आपस में तक़्सीम करने की इजाज़त दे दी।

قال النبي صلى الله تعالى عليه وسلم فلم يحل الغنائم لاحد من قبلنا ذلك بان الله رأى ضعفنا وعجزنا فطيبها لنا ۔

(मुस्लिम भाग 2, पेज नं० 84)

काफ़िरों से जो माल जंग में हासिल कर लिया जाए, उस की तक़्सीम के बारे में शरीअ़ते इस्लामिया में जो हुक्म हैं उन में से एक हुक्म इस आयत में बयान फ़रमाया गया है और वह यह कि कुल माले ग़नीमत में से पहले तो पाँचवा हिस्सा अ़लैहिदा कर लिया जाए और उस के बाद बाक़ी चार हिस्से मुजाहिदों में तक़्सीम कर दिये जाएँ। यह पाँचवा हिस्सा किस पर ख़र्च होगा इस के बारे में फ़रमाया-

فَاَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ

मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि इस ख़ुमुस के मुस्तहक़ीन वह लोग हैं जो बाद में ज़िक्र किये गये हैं।

अल्लाह तआ़ला किसी चीज़ का मुह़ताज नहीं लेकिन चूंकि उस ने क़ानून के मुताबिक़ तक़्सीम करने का हुक्म दिया है इसलिए इस فَاَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ से शुरु फ़रमाया। इस के बाद उस पाँचवें ह़िस्से के मुस्तह़क़ीन बयान फ़रमाये।

पाँचवें ह़िस्से की तक़्सीम-

وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِی الْقُرْبٰی وَالْیَتٰمٰی وَالْمَسٰکِیْنِ وَابْنِ السَّبِیْلِ

यानी माले ग़नीमत के इस पाँचवें ह़िस्से में (1) रसूलुल्लाह (सल्ल०) (2) आप के रिश्तेदार (3) यतीम (4) मिस्कीन (5) मुसाफ़िर हैं। रसूलुल्लाह (सल्ल०) के तशरीफ़ ले जाने के बाद आप (सल्ल०) का ह़िस्सा ख़त्म हो गया। अब रहे आप के 'ज़विल क़ुरबा' यानी ख़ूनी रिश्तेदार तो उन का ह़िस्सा भी सिर्फ़ आप ही की मौजूदगी तक था।

अब आपके रिश्तेदारी के नाम से उन ह़ज़रात का ह़िस्सा नहीं रहा, इसलिए आप की रिश्तेदारी के नाम से उन ह़ज़रात को कुछ नहीं मिलेगा। अलबत्ता बाद में जो तीन चीज़ें ज़िक्र की गई हैं यानी 'यतामा', 'मसाकीन' और 'इब्ने सबील' में उन ह़ज़रात को मिल जाएगा बल्कि उन को दूसरे यतामा और मसाकीन पर तरजीह दी जाएगी।

ख़ुलासा यह है कि अब माले ग़नीमत से जो ख़ुमुस निकाला जाएगा वह अमीरुल् मोमिनीन सूरतेह़ाल के मुताबिक़ यतामा,मसाकीन, मुसाफ़िरों पर ख़र्च करेगा, मालदार रिश्तेदारों को नहीं दिया जाएगा। इस का मतलब यह नहीं है कि हर यतीम और हर मिस्कीन और सभी मुसाफ़िरों को मीरास की तरह़ ह़िस्सा पहुँचाया जाए बल्कि अमीरुल् मोमिनीन अपनी मर्ज़ी से इन मसारिफ़ में ख़र्च करे। 'ज़विल क़ुरबा' के बारे में यहाँ जो मस्ला लिखा गया यह ह़न्फ़िया मस्लक की तह़क़ीक़ के मुताबिक़ है।

ख़ुमुस के मसारिफ़ बयान फ़रमाने के बाद फ़रमायाः-

اِنْ کُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلٰی عَبْدِنَا یَوْمَ الْفُرْقَانِ یَوْمَ الْتَقَی الْجَمْعٰنِ

यानी अगर तुम्हारा अल्लाह पर ईमान है और इस पर भी ईमान है कि फ़ैसले के दिन जो तुम्हारी जीत हुई वह हमारी ग़ैबी मदद की वजह से हुई तो बिला सन्देह माले ग़नीमत के पाँचवें ह़िस्से को ख़र्च करो। तुम्हें इस पाँचवें ह़िस्से का निकालना नागवार न होना चाहिए। यह सारी ग़नीमत अल्लाह की ग़ैबी मदद से ह़ासिल हुई, लिहाज़ा ख़ुशदिली से अल्लाह तआ़ला के हुक्म पर अ़मल करो। यह ख़ुमुस निकालना नफ़्सों पर बोझ न होना चाहिए।

यौमुल् फ़ुर्क़ान-

यौमे बद्र को यौमे फ़ुर्क़ान यानी फ़ैसले का दिन फ़रमाया और यह इसलिए कि बद्र में अहले ईमान और अहले कुफ़्र का मुक़ाबिला हुआ तो मोमिनीन की तअ़दाद काफ़िरों के मुक़ाबिले में बहुत कम होने के बावजूद काफ़िरों की खुली शिकस्त हुई और खुल कर यह बात सामने आ गई कि दीने इस्लाम ह़क़

है और कुफ़्र बातिल है और यह साबित हो गया कि अल्लाह तआ़ला की मदद ईमान वालों के साथ है।

बहुत से अ़रब क़बीले इस से पहले इस्लाम के बारे में शुकूक व शुब्हात में मुब्तिला थे और यह मश्वरे किया करते थे कि देखो मक्का वालों के साथ अहले इस्लाम का क्या मामला होता है और अन्जामकार किस की तरफ़ होगा अहले इस्लाम ग़ालिब होते हैं या मुश्रिकीने मक्का ग़ालिब रहते हैं। ग़ज़्व-ए-बद्र की फ़तेह़याबी देखकर, ऐसे लोगों की भी आँखें खुल गईं और उन की समझ में आ गया कि वाक़ई मुश्रिकीन की सरकशी और कुफ़्र व शिर्क पर जमाना बातिल चीज़ है।

आयत के ख़त्म पर फ़रमाया وَاللّٰهُ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ जिस में यह बता दिया कि तुम्हें जो कुछ फ़तेह़ ह़ासिल हुई और माले ग़नीमत ह़ासिल हुआ यह सब अल्लाह तआ़ला की क़ुद्रत से हुआ अगर तुम्हें कुछ भी न दिया जाता तब भी राज़ी रहना था अब जबकि तुम्हें दे दिया 4/5 ह़िस्से तुम्हें मिल गये और 1/5 दूसरे कामों में ख़र्च करने का हुक्म दिया तब तो और भी ज़्यादा नफ़्सों की ख़ुशी के साथ राज़ी होना चाहिए। फिर यह ख़र्च किसके लिए हैं अपने ही अन्दर के लोग हैं। यतामा, मसाकीन और मुसाफ़िरीन तुम्हारी अपनी जमाअ़त के हैं। यह माल और कहीं नहीं गया तुम्हारे अपनों ही में ख़र्च हुआ, इस एतिबार से भी यह माल तुम ही को मिल गया।

42-44 اِذْ اَنْتُمْ بِالْعُدْوَةِ الدُّنْیَا وَهُمْ بِالْعُدْوَةِ الْقُصْوٰی وَالرَّكْبُ اَسْفَلَ مِنْكُمْ ؕ وَلَوْ تَوَاعَدْتُّمْ لَاخْتَلَفْتُمْ
فِی الْمِیْعٰدِ ۙ وَلٰكِنْ لِّیَقْضِیَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا ۙ۬ لِّیَهْلِكَ مَنْ هَلَكَ عَنْۢ بَیِّنَةٍ وَّ یَحْیٰی مَنْ حَیَّ
عَنْۢ بَیِّنَةٍ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَسَمِیْعٌ عَلِیْمٌ ۝ اِذْ یُرِیْكَهُمُ اللّٰهُ فِیْ مَنَامِكَ قَلِیْلًا ؕ وَلَوْ اَرٰىكَهُمْ كَثِیْرًا لَّفَشِلْتُمْ
وَلَتَنَازَعْتُمْ فِی الْاَمْرِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ سَلَّمَ ؕ اِنَّهٗ عَلِیْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝ وَاِذْ یُرِیْكُمُوْهُمْ اِذِ الْتَقَیْتُمْ
فِیْۤ اَعْیُنِكُمْ قَلِیْلًا وَّ یُقَلِّلُكُمْ فِیْۤ اَعْیُنِهِمْ لِیَقْضِیَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا ؕ وَاِلَی اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝

इन आयात में पहले तो ग़ज़्व-ए-बद्र के जंग का नक़्शा बताया गया है। फिर अपने इन्आ़मात ज़िक्र फ़रमाए हैं, जो ग़ज़्व-ए-बद्र के दिन मुसलमानों के फ़तेह़याब होने का ज़रिया बने।

मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि मुश्रिकीने मक्का ने मक़ामे बद्र में पहुँच कर ऐसी जगह पर क़याम किया था जो मदीना से दूर है और वह लोग ऐसी जगह ले चुके थे जो बज़ाहिर जंग के लिए ज़्यादा मुनासिब थी। जब मुसलमान पहुँचे तो उन को नीचे वाली जगह मिली यह जगह रेतीली और मदीना से क़रीब थी और तीसरी जमाअ़त यानी अबू सुफ़्यान का तिजारती क़ाफ़िला वह उस जगह से नीचे की तरफ़ था क्योंकि यह लोग साह़िल समुद्र की तरफ़ चल रहे थे जो मक़ामे बद्र से तीन मील दूर था। पहले से मुसलमानों और मुश्रिकों के दर्मियान आपस में जंग करने का न ख़याल था और न कोई उस का वक़्त मुक़र्रर था।

बद्र में अल्लाह तआ़ला की मदद

मुसलमान अबू सुफ़्यान के क़ाफ़िले का पीछा करने के लिए निकले और धीरे-धीरे बद्र तक पहुँच गये थे। अल्लाह तआ़ला का पहले से फ़ैसला था कि ईमान और अहले ईमान बुलन्द हों और फ़तेह़याब

हों और कुफ़्र और काफ़िर ज़लील और शिकस्त खाएँ। इसलिए अल्लाह तआ़ला ने ऐसी तद्बीर फ़रमाई कि दोनों जमाअ़तें बातचीत किये बग़ैर जमा हो गईं और अभी लड़ाई शुरु नहीं हुई थी कि सरवरे दो आ़लम (सल्ल०) ने देखा कि मुश्रिकीन की तअ़दाद कम है। जब यह बात ह़ज़राते सह़ाबा (रज़ि०) के सामने आई तो उन का ह़ौसला बुलन्द हो गया और जंग करने के लिए दिल से आमादा हो गये।

अगर उनकी तअ़दाद ज़्यादा दिखाई जाती तो मुसलमानों में बुज़ूदिली आ जाती और आपस में इख़्तिलाफ़ करते कि जंग के लिए आगे बढ़ें या पीछे हटें, अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों के ह़ौसले बुलन्द फ़रमा दिये, बुज़ूदिली और कम हिम्मती से बचा लिया और आपसी इख़्तिलाफ़ से मह़फ़ूज़ रखा।

इसी को फ़रमाया وَلَوْ اَرٰىكَهُمْ كَثِيْرًا لَّفَشِلْتُمْ وَلَتَنَازَعْتُمْ فِي الْاَمْرِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ سَلَّمَ और साथ ही यह भी फ़रमाया اِنَّهٗ عَلِيْمٌ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ जिस का मतलब यह है कि अल्लाह तआ़ला को सब के दिलों का ह़ाल मालूम है। किस को अल्लाह से मुह़ब्बत है और किस का रुख़ आख़िरत की तरफ़ है और कौन दुनिया का तालिब है और कौन बुज़ूदिल है और कौन दिलावर है।

फिर अल्लाह तआ़ला ने करम फ़रमाया कि जब मुक़ाबिले का वक़्त आया और मुठभेड़ हो गई तो मुसलमानों की आँखों में काफ़िरों को और काफ़िरों की आँखों में मुसलमानों को कम तअ़दाद में दिखाया, जिस का नतीजा यह हुआ कि मुसलमान बहादुरी से लड़े और काफ़िर भी यह समझ कर लड़े कि यह थोड़े से लोग हैं इन को ख़त्म करना आसान है। फिर अन्जाम यह हुआ कि काफ़िर हार गये और मुसलमान ग़ालिब हुए और फ़तेह़ पाई और अल्लाह तआ़ला का जो फ़ैसला मुक़र्रर और मुक़द्दर था उसी के मुताबिक़ हुआ।

'मुआ़लिमुल् तन्ज़ील' भाग 2 पेज नं० 253 में ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) का बयान नक़्ल किया है कि बद्र के दिन मुश्रिकीन की तअ़दाद हमारी आँखों में इस क़दर कम हो गई थी कि मैंने एक साथी से पूछा जो मेरे पहलू में था कि तुम्हारा क्या ख़याल है कि यह लोग सत्तर तो होंगे? उस ने जवाब दिया कि मेरे ख़याल में सौ हैं। उस के बाद हम ने मुश्रिकीन में से एक शख़्स को क़ैद कर लिया और उस से पूछा तुम्हारी कितनी तअ़दाद है तो उस ने कहा कि एक हज़ार है।

यह जो फ़रमाया لِيَهْلِكَ مَنْ هَلَكَ عَنْ بَيِّنَةٍ وَّيَحْيٰى مَنْ حَيَّ عَنْ بَيِّنَةٍ

इस में यह बयान है कि वाक़िये बद्र में दीने इस्लाम को खुली और स्पष्ट मदद ज़ाहिर हो गई और कुफ़्र व शिर्क के बातिल होने का स्पष्ट तरीक़े पर लोगों को इ़ल्म हो गया, अब भी जो शख़्स हलाक होगा यानी कुफ़्र पर जमा रहेगा वह हुज्जत तमाम होने के बाद इस को अख़्तियार करेगा और जो शख़्स ईमान पर मज़बूती के साथ जमा रहेगा वह भी हुज्जत के साथ दीने ह़क़ पर रहेगा। हलाकत से कुफ़्र पर बाक़ी रहना और इस्लाम पर जमे रहना और इस्लाम क़ुबूल करना मुराद है। ह़क़ स्पष्ट हो जाने के बाद हर तरह़ की ग़लतफ़हमी ख़त्म हो गई, अब काफ़िर दहकती आग में जाएगा और ख़ुद अपनी हलाकत के रास्ते को अख़्तियार करेगा और जो शख़्स इस्लाम पर जमेगा और उसी तरह़ जो काफ़िर इस्लाम क़ुबूल करेगा वह भी दलील व हुज्जत के साथ दीने ह़क़ पर क़ायम होगा।

45-46 يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا لَقِيتُمْ فِئَةً فَاثْبُتُوا وَاذْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝ وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَنَازَعُوا فَتَفْشَلُوا وَتَذْهَبَ رِيحُكُمْ وَاصْبِرُوا إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ ۝

इन आयात में अहले ईमान को यह हुक्म दिया गया है कि जब कभी किसी जमाअ़त से तुम्हारी मुठभेड़ हो जाए यानी जंग और लड़ाई की नौबत आ जाए तो साबित क़दमी के साथ जम कर मुक़ाबिला करो।

दुश्मनों से मुक़ाबिला

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन औफ़ा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, "दुश्मन से मुठभेड़ होने की तमन्ना न करो और अल्लाह से राह़त का सवाल करो, फिर जब मुठभेड़ हो जाए तो जम कर लड़ो"। **(इतना मज़मून सही बुख़ारी भाग 2, पेज नं० 424 में है)**

'मुस्नद दारमी' पेज नं० 135 भाग (2) में यह ह़दीस ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (रज़ि०) से रिवायत की है इस में यूँ है कि दुश्मन से मुक़ाबिला होने की तमन्ना न करो और अल्लाह से आ़फ़ियत का सवाल करो, सो जब तुम्हारी मुठभेड़ हो जाए तो साबित क़दम रहो और अल्लाह का ज़िक्र कसरत से करो, सो अगर दुश्मन चीखे चिल्लाये तो तुम ख़ामोशी अख़्तियार करो।

ह़दीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि सवाल तो आ़फ़ियत व राह़त ही का करते रहें और जब दुश्मनाने दीन से लड़ने का मौक़ा आ जाए तो कमज़ोरी न दिखाएँ साबित क़दम रहें जम कर लड़ें, अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र भी करें और क़िताल के आदाब में से भी इर्शाद फ़रमाया कि ख़ामोशी से लड़ें, शोर से बचें।

ह़ज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि तीन मौक़े में अल्लाह तआ़ला को ख़ामोशी मह़बूब है।

(1) तिलावते क़ुर्आन के वक़्त

(2) क़िताल के वक़्त

(3) जिस वक़्त जनाज़ा ह़ाज़िर हो। **(ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर फ़ी तफ़्सीर भाग 2 पेज नं० 316)**

ख़ूब मज़बूती और जमाओ के साथ जंग करने का हुक्म देने के बाद फ़रमाया-

अल्लाह की याद-

وَاذْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا

और अल्लाह को ख़ूब याद करो।

यूँ तो अल्लाह का ज़िक्र हर वक़्त होना चाहिए, लेकिन ख़ासकर जंग के मौक़े में इस की अहमियत और ज़्यादा हो जाती है। अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करना, मदद माँगना, तस्बीह़ में मश्ग़ूल रहना यह सब अल्लाह का ज़िक्र है। मोमिन बन्दा लड़ता ही अल्लाह के लिए है उस का मरना और जीना अल्लाह के लिए है। फिर जंग के वक़्त अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल होने का तो कोई मौक़ा ही नहीं। इस मौक़े पर ज़िक्र का सवाब बहुत ज़्यादा है। बज़ाहिर जंग की तरफ़ पूरी मश्ग़ूलियत हो और अन्दर से अल्लाह तआ़ला

के ज़िक्र में मश्गूल हो और ज़बान पर अल्लाह का ज़िक्र जारी हो यह मोमिन की ख़ास शान है।

हज़रत सहल बिन मुआज़ (रज़ि०) अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, "बिलाशुब्हा नमाज़ रोज़े और ज़िक्र इन सब का सवाब फ़ी सबीलिल्लाह माल ख़र्च करने की बनिस्बत सात सौ गुना तक बढ़ा दिया जाता है।" **(अबूदाऊद भाग 1, पेज नं० 238)**

और ख़ुद फ़ी सबीलिल्लाह माल ख़र्च करने की यह फ़ज़ीलत है कि उस का सवाब (कम से कम) सात सौ गुना मिलता है। **(तर्ग़ीब पेज नं० 253 भाग 2)**

ज़िक्र का सवाब इस से भी सात सौ गुना ज़्यादा है। हज़रत सहल बिन मुआज़ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि जिस ने फ़ी सबीलिल्लाह एक हज़ार आयात पढ़ लीं अल्लाह तआला उसे अम्बिया और सिद्दीक़ीन, शोहदा और सालिहीन के साथ लिख देगा। **(ह़ाकिम, मुस्तदरक तर्ग़ीब भाग 2, पेज नं० 267)**

फिर फ़रमाया لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ जम कर लड़ेंगे साबित क़दम रहेंगे। अल्लाह से ज़िक्र करेंगे तो कामियाब होंगे, दुनिया व आख़िरत में कामियाबी नसीब होगी।

सय्यदना सालिम (रज़ि०) बिन अबू अल् नज़्र से रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "दुश्मन से मुक़ाबिले की तमन्ना मत करो। अगर मुठभेड़ हो जाए तो पूरे साबित क़दमी से मुक़ाबिला करो और जान लो कि जन्नत तल्वारों के साये में है।" **(बुख़ारी)**

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि०) से रिवायत हैं कि आप (सल्ल०) ने यौमे बद्र में यह फ़रमाया यह जिब्रईल हैं जो अपने घोड़े की लगाम थामे हैं और जंग के लिए हथियार के साथ हैं। **(बुख़ारी)**

आपस में झगड़ने से हवा उखड़ जाती है-

फिर फ़रमाया وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ और इताअ़त करो अल्लाह की और उस के रसूल की।)

وَلَا تَنَازَعُوْا فَتَفْشَلُوْا وَتَذْهَبَ رِيْحُكُمْ (और आपस में झगड़ा न करो वरना बुज़्दिल हो जाओगे और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी।)

आपस में झगड़ने की वजह से रोअ़ब ख़त्म हो जाता है और मुसलमानों के आपसी इख़्तिलाफ़ और इन्तिशार को देखकर दुश्मन बेख़ौफ़ हो जाते हैं और उन के दिलों से मुसलमानों का ख़ौफ़ जाता रहता है। काफ़िरों को शिकस्त देने के बहुत से तरीक़े हैं। जैसे- जंगी ट्रेनिंग और अस्लहे आदि। इन सब से बढ़कर आपसी मेलजोल और एतिमाद की ज़रुरत है। साबित क़दमी भी जब ही ह़ासिल होती है जब आपस में फूट न हो।

आख़िर में फ़रमाया وَاصْبِرُوْا اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ (और सब्र करो बिलाशुब्हा अल्लाह साबिरों के साथ है।)

अहले ईमान के लिए सब्र बहुत बड़ी चीज़ है। इस से बढ़कर क्या फ़ज़ीलत होगी कि उन्हें अल्लाह तआ़ला का साथ ह़ासिल हो निजी ज़िन्दगी हो या इज्तिमाअ़ी (सामूहिक) या दूसरे मामलात हर ह़ाल में सब्र की ज़रूरत होती है और इस से बड़े-बड़े मसायल ह़ल हो जाते हैं। अल्लाह तआ़ला की रज़ा के

लिए नागवार चीज़ों को बर्दाश्त कर लेना पड़े अज्र व सवाब का और दुनियावी हालात में और अपनों और परायों के मामलात में कामियाबी के साथ गुज़रते हुए चले जाने का बहुत बड़ा ज़रिया है, आपस के झगड़े से बचने का हुक्म देने के बाद साथ ही सब्र का हुक्म देने में इस बात की तरफ़ रहनुमाई है कि आपस का इत्तिहाद सब्र अख़्तियार करने से बाक़ी रह सकता है।

जब कुछ लोग आपस में मिल कर रहते हैं चाहे एक ही घर के लोग हों, आपस में कुछ न कुछ एक दूसरे की ओर से नागवारी पेश आ जाती है..........एक जमाअ़त जिहाद के लिए निकले या निकलने का इरादा करे तो आपसी मश्वरों में इख़्तिलाफ़े राय होने का इम्कान रहता है बल्कि इख़्तिलाफ़ हो जाता है। जब तक बर्दाश्त न हो इत्तिहाद क़ायम नहीं रह सकता, इस से यह भी मालूम हुआ कि मश्वरह करने बैठे तो अपनी-अपनी राय देकर फ़ारिग़ हो जाए।

कोई शख़्स अपनी राय पर इस्रार न करे, अगर इस्रार करने लगें तो वहीं लड़ाई हो जाएगी और मश्वरे का मक़्सद ख़त्म हो जाएगा। एक की राय दूसरे के ख़िलाफ़ हो तो सब्र करे और फिर जो अमीर किसी की राय या अपनी राय को तरजीह़ (वरीयता) दे दे तो अपनी राय के मुख़ालिफ़ होने की वजह से नाराज़ न हो बल्कि सब्र करे।

यहाँ तक कि अगर किसी की राय के ख़िलाफ़ अख़्तियार कर लेने से कोई नुक़्सान पहुँच जाए तब भी अमीर को तअ़ना न दे कि देखा हम ने क्या कहा था? इत्तिहाद के लिए बड़े सब्र और साबित क़दमी की ज़रूरत होती है नागवारी को बर्दाश्त किया जाता है।

ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) ने ह़ज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि०) को उनके ओ़हदे से मअ़ज़ूल (निष्काषित) कर दिया तो उन्होंने ख़ुशी से कुबूल कर लिया और कोई मुख़ालिफ़त नहीं की और मुसलमानों का इत्तिहाद क़ायम रहा, अगर वह चाहते तो मुद्दा बना लेते लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया और पहले की तरह़ जिहाद के कामों में मश्ग़ूल रहे।

ह़क़ीक़त में इताअ़त तो वही है जो मन की नागवारी के साथ हो। अगर हर शख़्स यूँ चाहे कि हमेशा मेरी चले तो कभी भी इत्तिहाद नहीं हो सकता, इन्तिशार ही रहेगा और उस से हवा उखड़ जाएगी।

47 وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ خَرَجُوا مِن دِيَارِهِم بَطَرًا وَرِئَاءَ النَّاسِ وَيَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ﴿٤٧﴾

(यानी तुम उन लोगों की तरह़ न हो जाओ जो अपने घरों से इत्राते हुए लोगों को दिखाने के लिए निकले।) जो लोग दुनिया ही को सब कुछ समझते हैं उन में अकड़ इत्राने और फ़ख़्र करने का मर्ज़ होता है, फिर वह उसकी वजह से दूसरे को नीचा देखते हैं।

अ़ल्लामा बग़वी (रह़०) 'मुआ़लिमुत्तन्ज़ील' भाग 2, पेज नं० 254 में लिखते हैं कि यह आयत मुश्रिकीने मक्का के बारे में नाज़िल हुई जब वह बद्र के लिए रवाना हुए तो फ़ख़्र और तकब्बुर के अन्दाज़ में चले। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने अल्लाह तआ़ला से दुआ़ की कि ऐ अल्लाह! यह लोग अपने तकब्बुर

और फ़ख़्र के साथ आये हैं, आप से मुक़ाबिला करना चाहते हैं और आप के रसूल (सल्ल०) को झुठलाते हैं। आप ने जो मदद का वादा फ़रमाया है उस के मुताबिक़ मदद फ़रमाइए। अबू सुफ़्यान तो अपना क़ाफ़िला लेकर बच निकला जिस की वजह से बाज़ लोगों ने क़ुरैश को राय दी कि अब आगे बढ़ने की ज़रूरत नहीं, वापस होना चाहिए।

इस पर 'अबू जेहल' ने कहा अल्लाह की क़सम हम जब तक बद्र न पहुँच जाएँ वापस न होंगे वहाँ तीन दिन क़याम करेंगे ऊँट ज़ब्ह करेंगे खाना खिलाएँगे, शराबें पिलाएँगे और गाने वालियाँ हमारे पास गाने गाएँगी और अ़रब में हमारी शोहरत हो जाएगी फिर वह हमेशा हमसे डरते रहेंगे। बात तो कहीं थी, लेकिन क़ुरैश के तकब्बुर और फ़ख़्र का नतीजा यह हुआ कि शराबों की जगह मौत के प्याले पिये और गाने वाली औ़रतों के बजाय रोने वाली औ़रतों ने उन पर नौहा किया, अल्लाह तआ़ला ने अपने मोमिन बन्दों को मना फ़रमाया कि तुम उन लोगों की तरह़ न हो जाना और मोमिनीन को हुक्म दिया कि नियत ख़ालिस अल्लाह की रज़ा रखें और दीन की मदद और नबी अक्रम (सल्ल०) की ताईद में लगे रहें।

अगर लश्कर ज़्यादा हो जब भी इतराना और शोहरत के लिए जंग करना और अपनी ताक़त पर घमण्ड करना ले बैठता है और शिकस्त का मुँह देखना पड़ता है। ग़ज़्व-ए-हुनैन में ऐसा ही हुआ कि मुसलमानों को पहले शिकस्त हो गई क्योंकि उन्हें अपनी संख्या पर घमण्ड हो गया था। जैसा अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया وَيَوْمَ حُنَيْنٍ إِذْ أَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْئًا **(सूरः तौबः-25)** नमाज़ हो या जिहाद माल या कोई भी नेक अ़मल हो उस का सवाब उसी वक़्त मिलता है जबकि अल्लाह की रज़ा के लिए किया जाए।

ह़ज़रत अबू मूसा अश्अ़री (रज़ि०) से रिवायत है कि एक शख़्स नबी अक्रम (सल्ल०) की ख़िद्मत में ह़ाज़िर हुआ और उस ने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह! एक शख़्स इसलिए लड़ता है कि माले ग़नीमत मिले और एक शख़्स इसलिए लड़ता है कि उसकी शोहरत हो और एक शख़्स इसलिए जंग करता है कि उसकी बहादुरी का चर्चा हो तो बताइए इन में अल्लाह की राह में कौन है। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जो शख़्स इसलिए जंग करता है कि अल्लाह का कलिमा बुलन्द हो तो वह अल्लाह की राह में है"।
(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 331, बुख़ारी, मुस्लिम)

अपनी ज़ात और जमाअ़त पर भरोसा यह सब अहले ईमान की शान के ख़िलाफ़ है। इस से इख़्लास जाता रहता है जो लोग अल्लाह की रज़ा चाहते हैं उन में अल्लाह पर भरोसा होता है अल्लाह ही के लिए लड़ते हैं और उसी के लिए मरते हैं ठीक क़िताल के मौक़े पर काफ़िरों को अपनी ताक़त दिखाने के लिए ज़ाहिरी तौर पर अकड़ दिखाना भी अल्लाह को मह़बूब है। दिल में अल्लाह पर भरोसा और ज़ाहिर में काफ़िरों को दिखाने के लिए इतराते हुए काफ़िरों के मुक़ाबिले में आना यह मह़बूब है।

فأما الخيلاء التي يحب الله فاختيال الرجل عند القتال واختياله عند الصدقة (كما في المشكوة ص۳۳۱)

मुश्रिकीन का ज़िक्र फ़रमाते हुए यह भी फ़रमाया وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللهِ कि वह अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं। क़ुरैशे मक्का ख़ुद भी इस्लाम क़ुबूल नहीं करते थे और दूसरों को भी इस से रोकते थे। अगर

इस्लाम क़ुबूल कर लेते तो जंग का मौक़ा ही न आता, लेकिन उन के नफ़्स की शरारत ने इन को यहाँ तक पहुँचाया कि बद्र में आकर मक़्तूल हुए।

وَاللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ (और अल्लाह उनके तमाम आ़माल से बाख़बर है) लिहाज़ा वह उन को उनकी सज़ा देगा।

48 وَاِذْ زَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمُ الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَاِنِّيْ جَارٌ لَّكُمْ ۚ فَلَمَّا تَرَآءَتِ الْفِئَتٰنِ نَكَصَ عَلٰى عَقِبَيْهِ وَقَالَ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّنْكُمْ اِنِّيْٓ اَرٰى مَا لَا تَرَوْنَ اِنِّيْٓ اَخَافُ اللّٰهَ ۭ وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝

शैतान का बद्र के मैदान से भाग जाना

शैतान हमेशा से इन्सान का दुश्मन है वह चाहता है कि काफ़िर कुफ़्र पर जमे रहें और अहले इस्लाम से जंग करते रहें, उसकी ख़्वाहिश है कि कुफ़्र फैले और इस्लाम न बढ़े। जैसे- वह क़ुरैशे मक्का के उस मश्वरे में शेख़ नजदी की सूरत बनाकर शरीक हो गया था जिस में रसूलुल्लाह (सल्ल०) के क़त्ल करने या शहर से निकालने के मश्वरे कर रहे थे। इसी तरह से वह ग़ज़्व-ए-बद्र के मौक़े पर भी आ गया।

पहले तो वह मक्का ही में उस वक़्त मुशिरकीन के पास पहुँचा जब वह बद्र के लिए रवाना होने का मश्वरह कर रहे थे और साथ ही उन्हें बनी बक्र की दुश्मनी का भी ख़याल हो रहा था कि मुम्किन है वह ह़मला कर दें, इसलिए रवाना होने में कुछ झिझक रहे थे।

ह़ज़रत राफ़ेअ़ (रज़ि०) से रिवायत है कि जिब्रईल (अ़लै०) आप (सल्ल०) की मजलिस में आये और पूछा आप मुजाहिदीने बद्र को, मुसलमानों में कैसा जानते हैं? आप ने फ़रमाया बेहतरीन मुसलमान जिब्रईल (अ़लै०) ने फ़रमाया, यही मक़ाम फ़रिश्तों में उन फ़रिश्तों का है जिन्होंने बद्र में शिरकत की। **(बुख़ारी)**

इस मौक़े पर इब्लीस 'सुराक़ा बिन मालिक बिन जुअ़शम' की सूरत में पहुँच गया (यह सुराक़ा बनी कनान के सरदारों में से थे जो बाद में मुसलमान हो गये थे।) इब्लीस ने क़ुरैशे मक्का से कहा कि तुम लोग हरग़िज़ अपने इरादे से बाज़ न आओ बल्कि चले चलो मैं तुम्हारा मदद्गार हूँ। आज तुम पर कोई ग़ल्बा पाने वाला नहीं है, यह तो मक्का में हुआ फिर वह बद्र में भी आ गया। जब मुसलमानों और काफ़िरों की सफ़ें मुक़ाबिले के लिए खड़ी कर दी गईं तो यहाँ भी वह मुशिरकीन की सफ़ में उसी सुराक़ा वाली सूरत में मौजूद था और ह़ारिस बिन हिशाम का हाथ पकड़े हुए था। जब उस ने देखा कि ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) घोड़े की लगाम पकड़े हुए रसूलुल्लाह (सल्ल०) के सामने मौजूद हैं तो वह हाथ छुड़ा कर भागने लगा 'ह़ारिस' ने कहा कि तू तो जंग से पहले भाग रहा है। इस पर उस ने ह़ारिस के सीने पर धम से मारा और उल्टे पांव चला गया और उस ने यूँ कहा कि मैं तुम से बेज़ार हूँ मेरा तुम्हारा कोई तअ़ल्लुक़ नहीं मैं वह कुछ देख रहा हूँ जो तुम नहीं देखते। यह तो उस वक़्त की बात हुई फिर जब क़ुरैश शिकस्त खाकर मक्का पहुँचे तो यूँ कहना शुरु किया कि हमें सुराक़ा ने शिकस्त दी। सुराक़ा को यह ख़बर पहुँची

तो उस ने कहा कि तुम लोग मेरे बारे में ऐसा कहते हो अल्लाह की क़सम मुझे तो तुम्हारे जाने ही की ख़बर नहीं हुई, मुझे तो तुम्हारे शिकस्त की ख़बर पहुँची है। उन लोगों ने कहा क्या तू फ़ुलाँ दिन हमारे पास नहीं आया था? उस ने क़सम खाकर कहा मुझे तो इसकी बिल्कुल ख़बर नहीं, फिर सुराक़ा और दूसरे लोग मुसलमान हो गये तो पता चला कि यह शैतान की ह़रकत थी।

(मुआ़लिमुत्तन्ज़ील भाग 2, पेज नं० 255 रुहुल् मआ़नी भाग 10, पेज नं० 15)

शैतान ने यह जो कहा कि اِنِّیْٓ اَخَافُ اللّٰهَ (मैं अल्लाह से डरता हूँ)— इस का मतलब ह़ज़रत अ़ता ने यह बताया कि मैं डरता हूँ कि अल्लाह तआ़ला दूसरे हलाक होने वालों के साथ मुझे हलाक न कर दे और बाज़ ह़ज़रात ने फ़रमाया कि इस का यह मतलब है कि मुझे तुम्हारे बारे में डर है कि अल्लाह तआ़ला हलाक न फ़रमा दे। साथ ही उस ने यह भी कहा कि अल्लाह सख़्त बदला लेने वाला है। तुम लोगों पर तो अ़ज़ाब आने ही वाला है। मैं क्यों तुम्हारे साथ शरीक हूँ। बाज़ ह़ज़रात ने फ़रमाया कि इब्लीस का कलाम اِنِّیْٓ اَخَافُ اللّٰهَ इस पर ख़त्म हो गया और وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ जिस का मतलब यह है कि काफ़िरों के लिए यहाँ भी सख़्त अ़ज़ाब है और आख़िरत में भी। इब्लीस इस मौक़े पर जो भाग गया तो वह और उस के साथी यह न समझें कि अ़ज़ाब से बच गये आख़िरत का अ़ज़ाब तो लाज़मी ही है जो शदीद है।

قال الله تبارك وتعالى لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ اَجْمَعِيْنَ

49

اِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ غَرَّ هٰٓؤُلَآءِ دِيْنُهُمْ ۗ
وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿۴۹﴾

मुनाफ़िक़ीन की बद् ज़बानी

मुनाफ़िक़ीन आस्तीन का ख़न्जर थे मुसलमानों में भी अपने को शुमार कराते थे और काफ़िर तो थे ही। उन का काम यह था कि इस्लाम को नुक़्सान पहुचाएँ और मुसलमानों पर तन्ज़ (कमेन्ट) करें। उन की इन्हीं बातों में से एक यह भी है कि जब सह़ाबा (रज़ि०) थोड़ी तअ़दाद में होते हुए अपने से तीन गुना तअ़दाद से जंग करने के लिए तैयार हो गये तो उन लोगों ने कहा कि उन्हें अपने दीन पर बड़ा ग़ुरूर है, यह समझते हैं कि हम चूंकि ह़क़ पर हैं इसलिए ग़ालिब होकर रहेंगे। यह अपने इस घमंड की वजह से यह भी नहीं देखते कि हम किस से भिड़ रहे हैं और किस से मुक़ाबिला हो रहा है। अल्लाह तआ़ला ने उन के जवाब में फ़रमाया कि जो शख़्स अल्लाह पर भरोसा करे तो बिलाशुब्हा अल्लाह ग़ालिब है वह भरोसा करने वालों को ज़रूर ग़ल्बा देगा जो उस से मदद तलब करेगा चाहे उसकी तअ़दाद थोड़ी हो वह उसकी मदद फ़रमाएगा, वह ह़कीम भी है वह अपनी ह़िक्मत के मुताबिक़ मदद और नुस्रत फ़रमाता है।

وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ (जिन के दिलों में मर्ज़ है) इस से कौन लोग मुराद हैं? बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया है कि इस से भी मुनाफ़िक़ीन मुराद हैं और बाज़ ह़ज़रात ने फ़रमाया कि इन से वह लोग मुराद

हैं जो कुरैशे मक्का के साथ आ गये थे उन के दिल में इस्लाम के बारे में सन्देह था, इसी सन्देह को मर्ज़ फ़रमाया गया है।

ग़ज़्व-ए-बद्र का ख़ुलासा (संक्षेप)

कुर्आन मजीद में ग़ज़्व-ए-बद्र का जो ज़िक्र है उस का बयान आयात की तफ़्सीर में कर दिया गया है। अलूबत्ता बद्र के कैदियों के बारे में जो कुछ मामला किया गया उस का ज़िक्र बाक़ी है, वह दो रुकूअ़ के बाद आ रहा है। बाज़ चीज़ें जो रह गईं जिन का ह़दीस और सीरत की किताबों में ज़िक्र है उन का ज़िक्र किया जा रहा है।

1- सत्रह रमज़ान 2 हिज्री में ग़ज़्व-ए-बद्र हुआ।

2- मुसलमानों की तअ़दाद 313 थी जिन में मुहाजिरीन की तअ़दाद 76 थी और बाक़ी अन्सार में से थे, अवस में से भी और ख़ज़्रज में से भी। **(अलू बिदाया वलू निहाया भाग 3, पेज नं० 269 में ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा से इसी तरह़ नक़्ल किया गया है।)**

3- कुरैशे मक्का जो बद्र में पहुँचे थे उन की तअ़दाद 900 से लेकर 1000 तक के दर्मियान थी। एक क़ौल यह है कि 950 आदमी थे और बाज़ ह़ज़रात ने फ़रमाया कि एक हज़ार से भी ज़्यादा थे।

4- जंग शुरु होने से पहले रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने बता दिया था कि मुश्रिकीन में से फ़ुलाँ शख़्स यहाँ क़त्ल होकर गिरेगा और फ़ुलाँ शख़्स यहाँ क़त्ल होकर गिरेगा, फिर ऐसा ही हुआ।

5- इस मौक़े पर सत्तर मुश्रिकीन क़त्ल हुए और सत्तर लोग क़ैद कर लिये गये जिन को मदीना मुनव्वरह ले जाया गया।

6- उन्हीं मक़्तूल होने वालों में अबू जेहल भी था जो मुश्रिकीने मक्का को आमादा कर के लाया था और जिस ने फ़ख़्र करते हुए बड़ी-बड़ी बाते कहीं थी, उसे अन्सार के दो लड़कों ने क़त्ल कर दिया, थोड़ी सी जान बाक़ी रह गई थी वह ह़ज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि०) के सर काट देने से ख़त्म हो गई। उस का कटा हुआ सर लेकर ह़ज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि०) रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में ह़ाज़िर हुए। आप ने 'अल्ह़म्दुलिल्लाह' फ़रमाया। उन्हीं मक़्तूलीन में उमय्या बिन ख़लफ़ भी था, यह वही शख़्स था जो ह़ज़रत बिलाल को इस्लाम कुबूल करने पर मारा पीटा करता था। ह़ज़रत बिलाल (रज़ि०) ने इस मौक़े पर अन्सार को आवाज़ दी और कहा कि यह कुफ़्र का सरग़ना बच कर न निकल जाए चुनांचे ह़ज़राते अन्सार ने उस को घेर लिया और क़त्ल कर दिया।

7- जो मुश्रिकीन बद्र में क़त्ल हुए थे उनकी लाशों को वहीं एक कुएँ में डाल दिया गया। अलूबत्ता उमय्या बिन ख़लफ़ की लाश फूल गई थी जब उसे ज़रह में से निकालने लगे तो उस के गोश्त के टुकड़े हो गये, लिहाज़ा उसे वहीं छोड़ दिया गया और ऊपर से मिट्टी और पत्थर डाल दिया गया।

8- जब उन लोगों को कुएँ में डाल दिया तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) उन के पास तशरीफ़ ले गये और एक-एक का नाम लेकर फ़रमाया, क्या तुम्हें इस बात की ख़ुशी न होती कि अल्लाह और उस के

रसूल (सल्ल०) की इताअ़त कर लेते? हम ने तो उसे हक़ पाया जो हमारे रब ने हम से वादा फ़रमाया था। क्या तुम ने भी वह वादा हक़ पा लिया जो तुम्हारे रब ने तुम से किया था? हज़रत उ़मर (रज़ि०) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! आप ऐसे जिस्मों (शरीरों) से बात कर रहे हैं जिन में रुह़ नहीं है आप ने फ़रमाया, "क़सम है उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है जो बात मैं कह रहा हूँ, उन से बढ़ कर तुम ज़्यादा सुनने वाले नहीं हो।" (यानी जैसे तुम सुन रहे हो ऐसे ही वह भी सुन रहे हैं) हज़रत क़तादा (ताबई) ने फ़रमाया कि अल्लाह ने उन को ज़िन्दा फ़रमा दिया था कि आप की बात उन को सुनाए और उन को ह़स्रत और नदामत हो।

9- बद्र के दिन जो मुसलमान शहीद हुए उन में से छः मुहाजिरीन और आठ अन्सार में से थे।

10- फ़तेह़ के बाद रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने तीन दिन बद्र में क़याम फ़रमाया और पहले हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा और हज़रत ज़ैद बिन हारसा रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा को फ़तेह़याबी की ख़ुशख़बरी देने के लिए मदीना मुनव्वरह भेज दिया था। हज़रत उसामा बिन ज़ैद (रज़ि०) ने बयान फ़रमाया कि हमें ऐसे वक़्त में फ़तेह़याबी की ख़बर पहुँची जब हम रसूलुल्लाह (सल्ल०) की साह़बज़ादी (रुक़य्या रज़ियल्लाहु अ़न्हा) के दफ़न से फ़ारिग़ हो रहे थे। यह हज़रत उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान (रज़ि०) की अहलिया थीं। हज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने उन को मरीज़ों की तीमारदारी के लिए मदीना मुनव्वरह में छोड़ दिया था।

11- ग़ज़्व-ए-बद्र में एक यह वाक़िआ़ पेश आया कि हज़रत क़तादा बिन नोअ़मान की आँख निकल कर उन के चेहरे पर आ पड़ी, लोगों ने चाहा कि इसे काट दें। हज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से अ़र्ज़ किया गया तो आप ने फ़रमाया, मत काटो। फिर आप ने उन को बुला कर अपने दस्ते मुबारक से आँख के ह़ल्क़े में रख कर दबा दिया उन की यह आँख ठीक तरह़ लग गई और उस की रौशनी दूसरी आँख से ज़्यादा अच्छी हो गई।

कुछ और सहाबा के साथ भी ऐसा ही वाक़िआ़ पेश आया तीर आकर लगा तो उन की आँख जाती रही, रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उन की आँख पर अपना लुआ़ब मुबारक डाल दिया वह बिल्कुल दुरुस्त हो गई। **{इन के ह़वाले के लिए सह़ी बुख़ारी (किताबुल मग़ाज़ी) और अल् बिदाया वल् निहाया देखें।}**

12- जो हज़रात बद्र में शरीक हुए थे, अल्लाह तआ़ला ने उन को बड़ी फ़ज़ीलत अ़ता फ़रमाई। हज़रत जाबिर (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, "दोज़ख़ में हरगिज़ ऐसा शख़्स दाख़िल न होगा जो बद्र में या हुदैबिया में ह़ाज़िर हुआ हो"। **(बिदाया वन्निहाया पेज नं० 29, भाग 3)**

(تفرد به احمد وهو على شرط مسلم)—सह़ीह़ बुख़ारी भाग 1 पेज नं० 568 में है कि ह़ारिसा (बिन सुराक़ा) ग़ज़्व-ए-बद्र में शहीद हो गये थे। उन की वालिदा नबी अकरम (सल्ल०) की ख़िद्मत में आईं और उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! ह़ारिसा से जो मुझे ख़ास तअ़ल्लुक़ था वह आप को मालूम है। सो अगर वह जन्नत में चला गया तो मैं सब्र करती हूँ और सवाब की उम्मीद रखती हूँ और अगर दूसरी कोई बात है (यानी दोज़ख़ में चला गया तो आप देखेंगे मैं क्या करती हूँ, यानी रो, रोकर

परेशान हो जाऊँगी।)

आप ने जवाब में फ़रमाया अफ़्सोस की बात है तुम क्या कह रही हो, वह कोई एक जन्नत थोड़ी है, वह बहुत सी जन्नते हैं और तेरा बेटा फ़िरदौस आ़ला में है। **(सह़ीह़ बुख़ारी भाग 2, पेज नं० 567)**

ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर (रह़०) अल् बिदाया भाग 3 पेज नं० 329 में लिखते हैं कि यह ह़ारिसा जंग से दूर थे और निगरानी करने वालों से दूर थे। हौज़ से पानी पी रहे थे कि अचानक एक तीर आया जो उन की मौत का सबब बन गया। जब उस शख़्स को इतना बड़ा दर्जा मिला कि फ़िरदौस में दाख़िल कर दिया गया (जो जन्नत का सब से बुलन्द दर्जा है) तो जिन लोगों ने क़िताल में ह़िस्सा लिया, दुश्मन से मुक़ाबिला किया उन के दर्जात का क्या आ़लम होगा।

13- जिस तरह़ मुहाजिरीन और अन्सार में से ग़ज़्व-ए-बद्र में शरीक होने वालों को बड़ी फ़ज़ीलत मिली उसी तरह़ से जो फ़रिश्ते इस ग़ज़्वे में शरीक हुए थे, दूसरे फ़रिश्तों पर उनको भी फ़ज़ीलत दी गई है।

सह़ी बुख़ारी में है कि ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की ख़िद्मत में ह़ाज़िर हुए और दर्याफ़्त किया कि अहले बद्र को आप ह़ज़रात किस दर्जे में शुमार फ़रमाते हैं। आप ने फ़रमाया कि हमारे नज़्दीक वह अफ़ज़लुल् मुस्लिमीन में से हैं।

ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) ने कहा इसी तरह़ से हम भी बद्र में शरीक होने वाले फ़रिश्तों को दूसरे फ़रिश्तों से अफ़ज़ल जानते हैं। **(सह़ी बुख़ारी, भाग 2 पेज नं० 569)**

आयत नं० 50 से 64 तक

وَلَوْ تَرَىٰٓ إِذْ يَتَوَفَّى الَّذِينَ كَفَرُوا ۙ الْمَلٰٓئِكَةُ يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ وَأَدْبَارَهُمْ ۚ وَذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ۝ ذٰلِكَ بِمَا
قَدَّمَتْ أَيْدِيكُمْ وَأَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ ۝ كَدَأْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَفَرُوا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَأَخَذَهُمُ اللّٰهُ
بِذُنُوبِهِمْ ۗ إِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝ ذٰلِكَ بِأَنَّ اللّٰهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِّعْمَةً أَنْعَمَهَا عَلَىٰ قَوْمٍ حَتَّىٰ يُغَيِّرُوا مَا بِأَنفُسِهِمْ ۙ
وَأَنَّ اللّٰهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ كَدَأْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَذَّبُوا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ فَأَهْلَكْنٰهُم بِذُنُوبِهِمْ
وَأَغْرَقْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ ۚ وَكُلٌّ كَانُوا ظٰلِمِينَ ۝ إِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِندَ اللّٰهِ الَّذِينَ كَفَرُوا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ الَّذِينَ عٰهَدتَّ
مِنْهُمْ ثُمَّ يَنقُضُونَ عَهْدَهُمْ فِي كُلِّ مَرَّةٍ وَهُمْ لَا يَتَّقُونَ ۝ فَإِمَّا تَثْقَفَنَّهُمْ فِي الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِهِم مَّنْ خَلْفَهُمْ لَعَلَّهُمْ
يَذَّكَّرُونَ ۝ وَإِمَّا تَخَافَنَّ مِن قَوْمٍ خِيَانَةً فَانۢبِذْ إِلَيْهِمْ عَلَىٰ سَوَآءٍ ۚ إِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْخَآئِنِينَ ۝ وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ
كَفَرُوا سَبَقُوٓا ۚ إِنَّهُمْ لَا يُعْجِزُونَ ۝ وَأَعِدُّوا لَهُم مَّا اسْتَطَعْتُم مِّن قُوَّةٍ وَمِن رِّبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُونَ بِهِ عَدُوَّ اللّٰهِ وَعَدُوَّكُمْ
وَاٰخَرِينَ مِن دُونِهِمْ ۚ لَا تَعْلَمُونَهُمُ ۚ اللّٰهُ يَعْلَمُهُمْ ۚ وَمَا تُنفِقُوا مِن شَيْءٍ فِي سَبِيلِ اللّٰهِ يُوَفَّ إِلَيْكُمْ وَأَنتُمْ لَا تُظْلَمُونَ ۝
وَإِن جَنَحُوا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۚ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ وَإِن يُرِيدُوٓا أَن يَخْدَعُوكَ فَإِنَّ حَسْبَكَ اللّٰهُ ۚ
هُوَ الَّذِيٓ أَيَّدَكَ بِنَصْرِهِ وَبِالْمُؤْمِنِينَ ۝ وَأَلَّفَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ ۚ لَوْ أَنفَقْتَ مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا مَّآ أَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ
وَلٰكِنَّ اللّٰهَ أَلَّفَ بَيْنَهُمْ ۚ إِنَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝ يٰٓأَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللّٰهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝

अनुवाद-

(50) और काश तुम उस वक़्त देखो, जबकि फ़रिश्ते काफ़िरों की जाने निकालते हैं, उनके चेहरों और उनकी पीठों पर मारते जाते हैं, कि ''लो आग के अज़ाब का मज़ा चखो;'' (51) यह उसी का बदला है जो तुम्हारे हाथों ने आगे भेजा, और यह कि अल्लाह अपने बन्दों पर थोड़ा सा भी ज़ुल्म नहीं करता; (52) (उनके साथ वैसा ही मामला पेश आया) जैसा फ़िरऔन के लोगों और उनसे पहले के लोगों के साथ पेश आया; उन्होंने अल्लाह की आयतों का इन्कार किया, तो अल्लाह ने उनके गुनाहों की वजह से उन्हें पकड़ लिया। बेशक अल्लाह ज़बर्दस्त, (शक्तिशाली), सख़्त अज़ाब देने वाला है। (53) यह इस लिए कि जो नेअ़मत अल्लाह किसी क़ौम को दिया करता है, जब तक वे खुद अपने (दिलों की) हालत न बदल डालें, अल्लाह उसे नहीं बदला करता, और यह इस लिए कि अल्लाह सब कुछ सुनता जानता है। (54) जैसे फ़िरऔनियों और उनसे पहले के लोगों का हाल हुआ, उन्होंने अपने रब की आयतों को झुठलाया, तो 'हमने' उन्हें उनके गुनाहों के बदले में तबाह कर दिया। और फ़िरऔनियों को डुबो दिया, और यह सभी ज़ालिम थे। (55) सबसे बुरे जानदारों में अल्लाह के नज़दीक, वे लोग हैं जिन्होंने इन्कार किया, फिर वे ईमान नहीं लाते। (56) जिन लोगों से तुमने अ़हद (सन्धि) लिया, वे फिर हर बार अपने अ़हद को तोड़ देते हैं और डरते नहीं; (57) अगर तुम उनको लड़ाई में पाओ, तो उन्हें ऐसी सज़ा दो कि जो लोग उनके पीछे हों, वे उनको देख कर भाग जाएँ, ताकि उनको सबक़ मिले। (58) और अगर तुम को किसी क़ौम से ख़ियानत (विश्वासघात) करने का डर हो, तो तुम भी उसी तरह (ऐसे लोगों के साथ किये हुए अ़हद को खुल्लम-खुल्ला) उन्हीं के आगे फेंक दो। बेशक अल्लाह

ख़ियानत करने वालों को पसंद नहीं करता। (59) और काफ़िर यह न समझें कि वे भाग निकले हैं, वे आजिज़ करके बाहर नहीं जा सकते, (60) और जहाँ तक हो सके उनके लिए कूव्वत (बल) और बँधे घोड़े (लड़ाई के लिए) तैयार रखो, ताकि उसके ज़रिए अल्लाह के दुश्मनों, और अपने दुश्मनों, और इनके सिवा, उन दूसरे लोगों को भी भयभीत कर दो जिन्हें तुम नहीं जानते, अल्लाह उनको जानता है; और अल्लाह की राह में जो कुछ तुम खर्च करोगे, वह पूरा चुका दिया जायेगा, और तुम्हारे साथ हरगिज़ नाइन्साफ़ी न होगी। (61) और अगर यह लोग सुलह की ओर मायल हों, तो तुम भी उनकी ओर मायल हो जाओ और अल्लाह पर भरोसा रखो। बेशक 'वह' सब कुछ सुनता, जानता है। (62) और अगर यह चाहें कि तुम्हें धोखा दें, तो तुम्हारे लिए अल्लाह काफ़ी है, 'वही' तो है 'जिसने' तुम्हें अपनी मदद से और मोमिनो के ज़रिए ताक़त पहुँचाई; (63) और उनके दिल आपस में एक-दूसरे के साथ जोड़ दिये; अगर तुम धरती में जो कुछ है सब खर्च कर डालते तो भी उनके दिलों को आपस में जोड़ न सकते, लेकिन अल्लाह ही ने उन्हें आपस में जोड़ दिया; बेशक 'वह' ज़बर्दस्त (प्रभुत्वशाली), हिक्मत वाला है। (64) ऐ नबी! अल्लाह आप के लिए और ईमान वालों के लिए, जो आपके अनुयायी काफी हैं।

आयत नं० 50 से 64 तक की व्याख्या

50-55

وَلَوْ تَرٰىٓ اِذْ يَتَوَفَّى الَّذِيْنَ كَفَرُوا ۙ الْمَلٰٓئِكَةُ يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ وَ اَدْبَارَهُمْ ۚ وَذُوْقُوْا
عَذَابَ الْحَرِيْقِ ۞ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۞ كَدَاْبِ اٰلِ
فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ۚ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ شَدِيْدُ
الْعِقَابِ ۞ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِّعْمَةً اَنْعَمَهَا عَلٰى قَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ۙ
وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۞ كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ
فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَاَغْرَقْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ ۚ وَكُلٌّ كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ۞ اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ
اللّٰهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۞

मौत के वक़्त काफ़िरों की ह़ालत

इन आयात में पहले तो काफ़िरों के अ़ज़ाब का ज़िक्र फ़रमाया जो उन्हें मौत के वक़्त होता है। बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि बद्र में जो कुफ़्फ़ारे कुरैश मुसलमानों के मुक़ाबिले में आये थे और फिर जंग में मारे गये जब वह मक़्तूल हो रहे थे तो फ़रिश्ते उन को उन के मोंढ़ों पर और पीठों पर मार रहे थे और मौत के बाद जहन्नम के अ़ज़ाब में मुब्तिला होने की ख़बर उन्हें दे रहे थे।

मुफ़स्सिर इब्ने कसीर ने ह़ज़रत मुजाहिद (रह०) से यही नक़्ल किया है और दूसरे मुफ़स्सिरीन ने इस मज़्मून को आ़म बताया है। जिस का मतलब यह है कि मौत के वक़्त फ़रिश्तों का काफ़िरों के चेहरों और पुश्तों पर मारना मक़्तूलीने बद्र के साथ मख़्सूस नहीं बल्कि तमाम काफ़िरों के साथ ऐसा ही होता है जैसा कि सूरः मुहम्मद की आयत नं० (27) में इर्शाद है।

فَكَيْفَ إِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلَٰٓئِكَةُ يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ وَأَدْبَارَهُمْ (सो क्या ह़ाल होगा जब फ़रिश्ते उन की रुह़ क़ब्ज़ कर रहे होंगे और उन के चेहरों और पीठों पर मार रहे होंगे।) दूसरा क़ौल राजेह़ मालूम होता है इस के उ़मूम में मक़्तूलीने बद्र भी आ जाते हैं।

इस के बाद फ़रमाया ذَٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيكُمْ कि यह जो कुछ मौत के वक़्त और मौत के बाद सज़ा है तुम्हारे अपने किये हुए कामों का बदला है जो तुम दुनिया में करते रहे और उन्हें आगे भेजते रहे। وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ (और बिलाशुब्हा अल्लाह बन्दों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं है) क्योंकि जो सज़ा अल्लाह की तरफ़ से किसी को दी जाती है वह बन्दों के आ़माल का बदला होता है।

इस के बाद फ़रमाया كَدَأْبِ آلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ उन मुजरिमों पर जिन पर अल्लाह की तरफ़ से अ़ज़ाब आया यह कोई नई चीज़ नहीं है अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों की हिदायत के लिए अपनी आयात भेजता है, जो अल्लाह की किताबों और सहीफ़ों में मौजूद होती हैं। बन्दे अगर ग़ौर व फ़िक्र से काम लें और अल्लाह तआ़ला को पहचानें और उस के नबियों और किताबों पर ईमान लाएँ और अल्लाह के हुक्मों को बजा लाएँ तो ईमान क़ुबूल करने की तरफ़ ज़ेहन चले, मुजरिमीन का यह तरीक़ा रहा है कि अल्लाह की आयात के मुन्किर हुए उस के नबियों को झुठलाया और तौह़ीद से इन्कार किया, शिर्क में मुब्तिला हुए लिहाज़ा दुनिया में भी अपने गुनाहों की वजह से सज़ायाब हुए और आख़िरत में भी काफ़िरों के लिए सख़्त अ़ज़ाब है।

पिछली उम्मतों का ह़ाल–

फिर बतौरे मिसाल के फ़रमाया كَدَأْبِ آلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ (जैसा कि आले फ़िरऔ़न और उन लोगों की ह़ालत थी जो उन से पहले थे।) इस में यह बताया गया है कि जैसे आले फ़िरऔ़न और उन से पहले लोगों के साथ मामला हुआ उसी तरह़ इस ज़माने के मुजरिमीन के साथ मामला किया जाएगा। अल्लाह के दीन पर न आएँगे अल्लाह के नबियों और उस की किताबों को झुठलाएँगे तो यह भी अ़ज़ाब के ह़क़्दार होंगे। फिर इर्शाद फ़रमायाः–

ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِّعْمَةً أَنْعَمَهَا عَلَىٰ قَوْمٍ حَتَّىٰ يُغَيِّرُوا مَا بِأَنفُسِهِمْ ۙ

(किसी क़ौम को अल्लाह ने जो नेअ़मत अ़ता फ़रमाई उस नेअ़मत को अल्लाह तआ़ला नहीं बदलता जब तक कि वही लोग अपने ज़ाती आ़माल को न बदलें।) जब लोग ख़ुद बदल जाते हैं, कुफ़्र व शिर्क अख़्तियार करते हैं, नाफ़रमानियों पर तुल जाते हैं तो फिर अल्लाह तआ़ला अपनी नेअ़मत छीन लेता है। जब लोग ईमान को छोड़ दें अच्छे आ़माल को तर्क कर दें बुरे आ़माल में लग जाएँ तो अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से नेअ़मत में भी तब्दीली आ जाती है, यह नेअ़मत छीन ली जाती है और बन्दे अ़ज़ाब में गिरफ़्तार हो जाते हैं।

फिर फ़रमाया وَأَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ (और बिलाशुब्हा अल्लाह सुनने जानने वाला है) सब की बात को सुनता है सब के ह़ालात को जानता है, वह सब से बाख़बर है।

इस के बाद आले फ़िरऔन और उन से पहले लोगों का ज़िक्र फ़रमाया और इर्शाद फ़रमाया कि उन्होंने अपने रब की आयात को झुठलाया लिहाज़ा हम ने उन के गुनाहों की वजह से उन्हें हलाक कर दिया।

पहले كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ फ़रमाया और दूसरी जगह كَذَّبُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ फ़रमाया। इस में इस बात की तरफ़ इशारा है कि अल्लाह तआ़ला की शाने रुबूबियत का भी उन्होंने ख़याल न किया जिस ने पैदा फ़रमाया, परवरिश फ़रमाई, परवरिश के सामान पैदा फ़रमाए, ह़ाजात पूरी कीं, उसकी आयात को झुठलाना सरासर नाशुक्री और बेअ़क्ली है लिहाज़ा उन को उन के गुनाहों की वजह से हलाक कर दिया गया। फिर आले फ़िरऔन के ग़र्क़ किये जाने की वजह फरमाई— وَأَغْرَقْنَا آلَ فِرْعَوْنَ (और हम ने फ़िरऔन वालों को हलाक कर दिया।)

आख़िर में फ़रमाया وَكُلٌّ كَانُوا ظَالِمِينَ और (आले फ़िरऔन और उस से पहले जो झुठलाने वाली उम्मते थीं। जैसे- ह़ज़रत नूह़ अ़लै० की क़ौम, आ़द और समूद) यह सब ज़ालिम थे उन्होंने अपने नफ़्सों पर ज़ुल्म किया कुफ़्र अख़्तियार किया और गुनाह में बढ़ते चले गये, उन की ह़रकतें उन की बर्बादी का ज़रिया बनीं।

सब से ज़्यादा बद्तर

फिर फ़रमाया إِنَّ شَرَّ الدَّوَابِّ عِندَ اللَّهِ الَّذِينَ كَفَرُوا (बेशक अल्लाह के नज़्दीक ज़मीन पर चलने फिरने वालों में सब से ज़्यादा बुरे वह लोग हैं जिन्होंने कुफ़्र किया।) **अद्दवाब** इसमें हर वह चीज़ जो ज़मीन पर चले फिरे यह शब्द सब को शामिल है, लेकिन मुहावरात में **दाब्बह** चौपाओं के लिए बोला जाता है।

साह़िबे रूहुल् मआ़नी लिखते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने **शरुन्नास** नहीं फ़रमाया बल्कि **शर्रुद्दवाब** फ़रमाया। इस में इस तरफ़ इशारा है कि यानी यह लोग दवाब में से हैं और उस के बद्तरीन लोगों में से हैं فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ (सो यह लोग ईमान न लाएँगे) उन की सरकशी बहुत आगे बढ़ गई और कुफ़्र में मज़बूत हो चुकी हैं लिहाज़ा यह ईमान लाने वाले नहीं हैं।

बाज़ ह़ज़रात ने फ़रमाया इस में रसूलुल्लाह (सल्ल०) को तसल्ली दी गई है कि आप उन के पीछे अपनी जान हलाक न करें, आप के करने का जो काम था (यानी दअ़वते ह़क़ और तब्लीग़) वह आप कर चुके।

56-58 الَّذِينَ عَاهَدتَّ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنقُضُونَ عَهْدَهُمْ فِي كُلِّ مَرَّةٍ وَهُمْ لَا يَتَّقُونَ ۝ فَإِمَّا تَثْقَفَنَّهُمْ
فِي الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِهِم مَّنْ خَلْفَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ ۝ وَإِمَّا تَخَافَنَّ مِن قَوْمٍ خِيَانَةً فَانبِذْ إِلَيْهِمْ
عَلَىٰ سَوَاءٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْخَائِنِينَ ۝

मुश्रिकीन से मुआ़हिदा (प्रतिज्ञा)

साह़िबे रूहुल् मआ़नी लिखते हैं कि पहली आयत الَّذِينَ عَاهَدتَّ مِنْهُمْ में यहूद बनी क़ुरैज़ा का ज़िक्र

है, उन लोगों ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से मुआहिदा किया था कि आपके मुक़ाबिले में किसी की मदद न करेंगे, फिर उन्होंने हथियार देकर मुश्रिकीन की मदद की। जब उन से सवाल किया गया तो कहने लगे कि हम भूल गये थे। इस के बाद फिर मुआहिदा किया तो उसे भी तोड़ दिया और ग़ज़्व-ए-ख़न्दक़ में रसूलुल्लाह (सल्ल०) के दुश्मनों के मददगार बन गये। उन का सरदार (कअ़ब बिन अशरफ़) मक्का गया और उस ने मुश्रिकीने मक्का से मुआहिदा किया कि हम तुम्हारे साथ मिलकर रसूलुल्लाह (सल्ल०) से जंग करेंगे।

इसी को फ़रमाया ثُمَّ يَنْقُضُونَ عَهْدَهُمْ فِي كُلِّ مَرَّةٍ (फिर वह हर दर्जा अपने अ़हद को तोड़ डालते हैं) وَهُمْ لَا يَتَّقُونَ और वह अल्लाह से नहीं डरते और अ़हद शिकनी की बद्नामी से भी नहीं बचते।

फिर फ़रमाया فَإِمَّا تَثْقَفَنَّهُمْ فِي الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِهِمْ مَنْ خَلْفَهُمْ

(सो अगर आप उन्हें जंग में पा लें तो उन के ज़रिये उन लोगों को अलग कर दें जो उन के पीछे हैं।)

यानी लड़ाई के मौक़े पर आप ऐसा ह़मला करें कि यह नाकाम हो जाएँ। उन की नाकामी और आप की कामियाबी का जब शोहरा होगा तो उन के पीछे यानी उन के अ़लावा जो बहुत से क़बायल हैं वह भी अलग हो जाएँगे और आप पर ह़मला करने की हिम्मत न करेंगे لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ ۝ ताकि उन को नसीह़त ह़ासिल हो और वह जान लें कि अ़हद न करने वालों का और कुफ़्र से चिमटने वालों का क्या अन्जाम हुआ।

सूरः बक़रः और सूरः अअ़राफ़ में अल्लाह तआ़ला ने यहूद की बद् अ़हदियाँ ज़िक्र की हैं। इस मामले में वह इतने हठधर्म वाक़ेअ़ हुए थे कि जितनी मर्तबः पुख़्ता से पुख़्ता अ़हद (सन्धि) भी उन से लिया गया उन्होंने उसे तोड़ फेंका। अपनी इसी आ़दत के तह़त ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से भी उन्होंने यही रवय्या अख़्तियार किया।

यहूदियों से मुआ़हिदे-

आप (सल्ल०) जब मदीना तशरीफ़ ले गये तो आप (सल्ल०) ने अलग-अलग यहूदी क़बीलों से मुआ़हिदे किये जो इस तरह़ थे।

(1) मुसलमान और यहूद आपस में सुलह़ और अम्न से रहेंगे, कोई एक दूसरे पर ज़ुल्म व ज़्यादती नहीं करेगा।

(2) अगर मदीना पर बाहरी कोई ह़मला हुआ तो मुसलमान और यहूद मिलकर उसका दिफ़ाअ़ (मुक़ाबिला) करेंगे और मिलकर ख़र्च बर्दाश्त करेंगे।

(3) यहूद अपने फ़ैसले ख़ुद करेंगे, आप (सल्ल०) के पास मुक़द्मा लाया जाएगा तो आप (सल्ल०) का फ़ैसला मान्य होगा।

(4) कोई बिला वजह मुजरिम न ठहरेगा।

(5) क़ुरैश और उन के मददगारों को पनाह नहीं दी जाएगी।

(6) अगर मुआहिदे के लोगों के दर्मियान झगड़ा हुआ तो फ़ैसला आप (सल्ल०) करेंगे।

यहूद ने इस मुआहिदे की पूरी ख़िलाफ़वर्ज़ी की। आप (सल्ल०) पर क़ातिलाना हमले किये गये। 'अवस' और 'ख़ज़रज' के दर्मियान दुश्मनी के बीज बोने की कोशिश की। एक मुसलमान ख़ातून को शरारत से नंगा कर दिया वग़ैरह।

इस से मालूम हुआ कि सिर्फ़ ख़तरे की बिना पर अपने मुआहिदे को नज़र अन्दाज़ न करे, बल्कि दूसरी क़ौम को बाक़ायदा मुआहिदे के तोड़ने के बारे में ख़बर करे।

अहले ईमान को इजाज़त नहीं-

अहले ईमान को कभी अ़हद को ख़त्म करने की ज़रूरत पेश आ जाती है और यह जब होता है जब दुश्मन से ख़तरा हो कि वह अपना अ़हद तोड़ने वाला है। अगर हम ने अपने अ़हद को पूरा किया और उन्होंने अपना अ़हद तोड़ दिया और अचानक ग़फ़लत में उन्होंने हमला कर दिया तो हमें तक्लीफ़ पहुँचेगी। ऐसे मौक़े पर तरीक़ा यह है कि ख़ुद उन पर ग़फ़लत में हमला न करें........हाँ, ऐसा करे कि पहले एलान कर दे और उन को बता दे कि हमारा तुम्हारा जो मुआहिदा था हम उसे ख़त्म कर रहे हैं। इसी को फ़रमाया وَإِمَّا تَخَافَنَّ مِن قَوْمٍ خِيَانَةً فَانبِذْ إِلَيْهِمْ عَلَىٰ سَوَاءٍ

अगर आप को किसी क़ौम से ख़यानत का अन्देशा हो तो जो अ़हद आप ने उन से किया है वह उनकी तरफ़ लौटा दीजिए ताकि आप और वह इस बात के जानने में बराबर हो जाएँ कि अब मुआहिदा बाक़ी नहीं रहा। अगर मुआहिदा किया और उन का मुआहिदा वापस नहीं किया और मुआहिदा ख़त्म करने की इत्तिलअ़ के बग़ैर उन पर हमला कर दिया तो यह ग़ुद्र होगा और ख़यानत होगी जिस की इस्लाम में इजाज़त नहीं है। इसी को फ़रमाया إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْخَائِنِينَ

(बिलाशुब्हा अल्लाह तआला ख़यानत करने वालों को दोस्त नहीं रखता।)

हो सकता था कि बाज़ मुसलमानों के ज़ेहन में यह बात आ जाती कि चूंकि दुश्मन, दुश्मन है, कुछ भरोसा नहीं कि अपना अ़हद तोड़ दे। इसलिए हम अपनी हिफ़ाज़त के लिए पहले हमला कर दें तो हमारी हिफ़ाज़त हो जाएगी।

मुआहिदा के बाद ख़िलाफ़वर्ज़ी-

इस ख़याल को दूर करने के लिए यह नसीहत फ़रमाई कि काफ़िर तुम्हारे दुश्मन हैं, लेकिन जब मुआहिदा हो गया तो अब तुम्हारे लिए मुआहिदे की ख़िलाफ़वर्ज़ी जायज़ नहीं। अगर उन से अ़हद की ख़िलाफ़वर्ज़ी का डर है तो तुम पहले उन्हें बता दो कि हमारा मुआहिदा ख़त्म है उस के बाद तुम्हें हमला करना जायज़ होगा।

अ़हद की पासदारी का शरीअ़ते इस्लामिया में कितना एहतिमाम है, इसी को रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि जिस में चार चीज़ें होंगी वह ख़ालिस मुनाफ़िक़ होगा और इन चार में से जिस में एक ख़स्लत होगी तो उस में निफ़ाक़ का एक हिस्सा माना जाएगा, जब तक उसे छोड़ न दे।

1- जब उस के पास अमानत रखी जाए तो ख़यानत करे।

2- और जब बात करे तो झूठ बोले।

3- और जब मुआ़हिदा करे तो धोका दे।

4- और जब झगड़ा करे तो गालियाँ बके। **(बुख़ारी पेज नं० 451 भाग 1)**

हर मुसलमान को मुआ़हिदे का लिहाज़ रखना लाज़िम है, हुकूमत से मुआ़हिदा हो या किसी जमाअ़त से या किसी शख़्स से उस की ख़िलाफ़वर्ज़ी ह़राम है।

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, “अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन तीन शख़्सों पर मैं दावा करने वाला हूँ एक वह शख़्स जिस ने मेरा नाम लेकर अ़हद लिया फिर उस ने धोका दिया और दूसरा वह शख़्स जिस ने किसी आज़ाद को बेच दिया और उसकी क़ीमत खा गया और वह शख़्स जिस ने किसी मज़दूर को काम पर लगाया और उस से काम पूरा ले लिया मगर उसकी मज़दूरी न दी।” **(बुख़ारी पेज नं० 302, भाग 1)**

रसूलुल्लाह (सल्ल०) का इर्शाद है من قتل معاهدا لم يرح رائحة الجنة (जिस ने किसी अ़हद वाले को क़त्ल कर दिया जन्नत की ख़ुशबू (भी) न सूंघेंगा। **(सही बुख़ारी भाग 1 पेज नं० 448)**

अगर दूसरा फ़रीक़ मुआ़हिदे की ख़िलाफ़वर्ज़ी कर दे और पता चल जाए कि उन्होंने ख़यानत की है जैसे वह मुसलमान पर ह़मला कर दें या कोई ऐसी ख़िलाफ़वर्ज़ी कर दें जिस से मुआ़हिदा टूट जाता हो तो फिर अपनी तरफ़ से अ़हद तोड़ने की इत्तिलअ़ करने की ज़रूरत नहीं और जब अपनी तरफ़ से अ़हद तोड़ना हो और उन को इसकी इत्तिलअ़ देनी हो तो उन के हर शख़्स को इत्तिलअ़ देना ज़रूरी नहीं जब उन के साह़िबे इक़्तिदार (सरदार) को अ़हद के तोड़ने की इत्तिलअ़ दे दी और इतनी मुद्दत गुज़र गई कि वह उतने वक़्त में अपने लोगों में ख़बर पहुँचा सकता था तो यह काफ़ी है। **(हिदाया....)**

59-60

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَبَقُوا ۚ إِنَّهُمْ لَا يُعْجِزُونَ ۝ وَأَعِدُّوا لَهُم مَّا اسْتَطَعْتُم مِّن قُوَّةٍ وَمِن
رِّبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُونَ بِهِ عَدُوَّ اللَّهِ وَعَدُوَّكُمْ وَآخَرِينَ مِن دُونِهِمْ لَا تَعْلَمُونَهُمُ ۚ اللَّهُ
يَعْلَمُهُمْ ۚ وَمَا تُنفِقُوا مِن شَيْءٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ يُوَفَّ إِلَيْكُمْ وَأَنتُمْ لَا تُظْلَمُونَ ۝

इन आयात में पहले तो काफ़िरों को तम्बीह फ़रमाई कि यह कुफ़्फ़ार जो जंग के मौक़े पर बच कर निकल गये मक़्तूल भी न हुए और क़ैद में भी न आये यह लोग यह न समझें कि हम हमेशा के लिए मह़फ़ूज़ हो गये और बच निकले तो कामियाब हो गये और इसकी वजह यह है कि यह वक़्ती तौर पर बच जाना मुस्तक़िल बचाव नहीं है। यह लोग अल्लाह तआ़ला की गिरफ़्त से बाहर नहीं हैं वह उसे आ़जिज़ नहीं कर सकते, वह चाहेगा तो दुनिया में भी उन्हें मुसीबत में मुब्तिला फ़रमाएगा और आख़िरत में तो बहरह़ाल हर काफ़िर के लिए सख़्त सज़ा है जिस का बयान क़ुर्आन मजीद में बार-बार किया गया है।

दुश्मनों से मुक़ाबिले के लिए सामान

इस में मुसलमानों को हुक्म दिया कि तुम से जो कुछ भी हो सके दुश्मनों से लड़ने और उन से बचाव करने के लिए हर तरह़ की कुव्वत तैयार रखो। लफ़्ज़ مَا اسْتَطَعْتُمْ बहुत आ़म है हर ज़माने की ज़रूरत के मुताबिक़ तैयारी करने को शामिल है और مِنْ قُوَّةٍ भी नक्रह (ग्रामर के एतिबार से) है यह भी आ़म है और हर क़िस्म की कुव्वत जमा करने को इस का उ़मूम शामिल है, जिस तरह़ के हथियारों की जिस ज़माने में ज़रूरत हो उन सब का बनाना इकट्ठा करना और दूसरी हर तरह़ की कुव्वते इत्तिह़ाद व इत्तिफ़ाक़ और आपसी मश्वरे यह सब लफ़्ज़ مِنْ قُوَّةٍ में दाख़िल हैं। وَمِنْ رِّبَاطِ الْخَيْلِ फ़रमा कर पले हुए घोड़े तैयार रखने का भी हुक्म फ़रमाया। इस आयत में जो مِنْ قُوَّةٍ फ़रमाया कि जहाँ तक मुम्किन हो हर तरह़ की कुव्वत तैयार करो इसकी तफ़्सीर फ़रमाते हुए रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया-

اَلَا اِنَّ الْقُوَّةَ الرَّمْیُ اَلَا اِنَّ الْقُوَّةَ الرَّمْیُ .اَلَا اِنَّ الْقُوَّةَ الرَّمْیُ यानी कुव्वह तीर फेंकना है, तीन बार ऐसा ही फ़रमाया। **(मुस्लिम भाग 1, पेज नं० 143)**

तीर फेंकने को कुव्वत इसलिए फ़रमाया कि इस में दूर से दुश्मन पर ह़मला किया जा सकता है। अगर सामने आ जाएँ तो तलवार ही से लड़ना पड़ेगा और दूर से मुक़ाबिला हो तो दूर ही से तीरन्दाज़ी करके दुश्मन को पस्पा किया जा सकता है। इसीलिए ग़ज़्व-ए-बद्र के मौक़े पर रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने ह़ज़राते सह़ाबा से फ़रमाया कि जब दुश्मन तुम्हारे क़रीब आ जाए तो तीर मारना और अपने तीरों को ह़िफ़ाज़त से रखना। **(बुख़ारी पेज नं० 567)**

मतलब यह है कि जब दुश्मन दूर हो तो अपने तीरों को फेंक कर ज़ाया न करो क्योंकि वह ज़मीन में गिर जाएँगे। जब दुश्मन इतना क़रीब आ जाए कि उन को तीर लग सके तो उन पर तीरों की बौछार कर दो। रहा मस्ला तलवार से क़िताल करने का तो जब बिल्कुल सामने आ जाएँ तो फिर जम कर तलवार के ज़रिये जंग की जाए।

आज की ताक़त-

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने जो الا ان القوة الرمی फ़रमाया और लफ़्ज़ रमी का मफ़ऊल ज़िक्र नहीं किया इस में इस तरफ़ इशारा है कि फेंकने की जब कभी कोई चीज़ ईजाद हो जाए वह सब कुव्वत के मफ़्हूम में दाख़िल होगी और मुसलमानों को इस के ह़ासिल करने का एह़तिमाम करना भी लाज़िम होगा। नये हथियार मीज़ाईल बम सब इसी उ़मूम में दाख़िल हैं। मुसलमानों पर लाज़िम है कि इस हुक्म के तह़त وَاَعِدُّوْا لَهُمْ مَا اسْتَطَعْتُمْ हर तरह़ के नये हथियार तैयार कर लें और ख़ुद बनाएँ, ज़रुरत पड़े तो दूसरों से भी ख़रीद सकते हैं, लेकिन सिर्फ़ ख़रीदार ही बनकर न रहें।

आजकल तो नये अस्लह़े बनाने वाले अहले कुफ़्र ही हैं और कुफ़्र मिल्लतुन वाह़िदा (एक गिरोह) हैं। वह काफ़िरों को अस्लहे पहले देंगे और ज़्यादा देंगे और मुसलमानो को अगर चाहेंगे तो थोड़े हथियार देंगे और क़ीमत बहुत ज़्यादा लेंगे। मुसलमानों की यह कितनी बड़ी ग़फ़्लत है कि— अहले कुफ़्र से

हथियार ख़रीदते हैं और ख़ुद कोशिश नहीं करते और अहले कुफ़्र को अपने ऊपर मुसल्लत कर रखा है, वह मजबूर करते हैं कि तुम क्या बना रहे हो हमें दिखाओ। इस का माने यह है कि अपनी हैसियत कुछ भी नहीं, यह बहुत बड़ी भूल है।

यानी इस आयत से मालूम हुआ कि मुसलमान जंगी साज़ो सामान से अलग होकर नहीं रह सकते। अगर मुसलमानों के पास कम अस्लहा होगा तो वह अल्लाह के यहाँ जवाबदेह होंगे।

इस्लाम ने काफ़िरों के सामने झुकने और उन्हें अपना राज़दार बनाने की इजाज़त नहीं दी। अपनी कुव्वत तैयार रखने का हुक्म देने के बाद फ़रमाया تُرْهِبُوْنَ بِهٖ عَدُوَّ اللّٰهِ وَعَدُوَّكُمْ

(इस के ज़रिये तुम अल्लाह के दुश्मनों को और अपने दुश्मनों को डराते हो) जब ताक़त होगी और दुश्मनों को इस की ख़बर होगी तो वह तुम से डरते रहेंगे और हमलाआवर होने की हिम्मत न करेंगे।

وَاٰخَرِيْنَ مِنْ دُوْنِهِمْ के बारे में हज़रत मुजाहिद और हज़रत क़तादा ने फ़रमाया कि इस से यहूद का क़बीला बनू कुरैज़ा मुराद है और हज़रत हसन ने फ़रमाया कि इस से मुनाफ़िक़ीन मुराद हैं जो मुसलमानों में मिलजुल कर रहते हैं और अन्दर से दुश्मन हैं उनको तुम्हारी ताक़त का पता होगा तो ख़ुद भी डरेंगे और दूसरों को हमला करने की दअ्वत न देंगे और बाज़ हज़रात ने फ़रमाया कि इस से फ़ारस और रोम के काफ़िर मुराद हैं, जिन से नुज़ूले कुर्आन के वक़्त तक मुक़ाबिला नहीं हुआ था। बाद में हज़रात सहाबा (रज़ि०) ने उन को शिकस्त दी और उन के मुल्क फ़तेह किये।

इस आयत لَا تَعْلَمُوْنَهُمْ ۚ اَللّٰهُ يَعْلَمُهُمْ ۚ में इस तरफ़ इशारा है, फिर अल्लाह की राह में माल ख़र्च करने की तर्ग़ीब देते हुए इर्शाद फ़रमायाः-

وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَيْءٍ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ يُوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ۝

"और जो कुछ भी तुम अल्लाह की राह में ख़र्च करो तुम्हें उस का पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा और तुम पर ज़ुल्म न होगा"।

यानी ऐसा न होगा कि सवाब ज़ाया कर दिया जाए चूंकि हथियार तैयार करने में माल ख़र्च होता है और घोड़े पालने में भी ख़र्चा करना पड़ता है और जिहाद में शरीक होने के लिए भी माल की ज़रूरत होती है इसलिए हथियारों की तैयारी का हुक्म देने के साथ ही यह भी इर्शाद फ़रमाया कि जो भी कुछ अल्लाह की राह में ख़र्च करोगे उस सब का पूरा-पूरा अज्र पाओगे।

61 وَاِنْ جَنَحُوْا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝

दुश्मन से सुलह़

इन आयात में पहले तो यह फ़रमाया कि दुश्मन अगर सुलह़ की तरफ़ झुकें तो आप भी झुक जाएँ। यह बात वाजिब नहीं है मौक़ा मस्लह़त के मुतअ़ल्लिक़ है। अगर इस में 'दारुल् इस्लाम' और 'अहले इस्लाम' की मस्लह़त हो तो सुलह़ की जा सकती है। जंग करना मक़ासिद में से नहीं है, अगर सुलह़

से काम चलता है तो सुलह़ कर लें। इस में यह भी दाख़िल है कि उन से जिज़्या लेना क़ुबूल कर लें। सुलह़ का यह भी फ़ायदा होगा कि वह लोग इस की बुनियाद पर मिले जुलेंगे तो आपस में एक दूसरे के मुल्क में आना जाना होगा। इस से अहले कुफ़्र मुसलमानों के अख़्लाक़ व आमाल से अज़ान और नमाज़ से मुतास्सिर होंगे और इस्लाम की तरफ़ आएँगे।

बाज़ लोगों ने जो यह माना लिया है कि अपनी तरफ़ से सुलह़ की पेशकश न हो, इसकी ताईद सूरः मुह़म्मद की आयत فَلَا تَهِنُوْا وَتَدْعُوْٓا اِلَى السَّلْمِ से भी होती है। हाँ, अगर कोई बहुत ही मजबूरी हो जाए कि मुसलमान किसी जगह फँस जाएँ और सुलह़ के बग़ैर कोई सूरत छुट्कारे की न हो तो अपनी तरफ़ से भी सुलह़ के पेशकश की गुन्जाइश है। रही यह बात कि हो सकता है काफ़िर सुलह़ कर के बद् अ़हदी कर दें और ह़मलाआवर हो जाएँ। इस के लिए फ़रमायाः-

وَ تَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝

(और आप अल्लाह पर भरोसा करें बिलाशुब्हा वह सुनने वाला जानने वाला है।) अगर सुलह़ में मस्लह़त देखें तो आप सुलह़ करें, ऐसे में सुलह़ की पेशकश को न ठुकराएँ।

62 وَاِنْ يُّرِيْدُوْٓا اَنْ يَّخْدَعُوْكَ فَاِنَّ حَسْبَكَ اللّٰهُ ۭ هُوَ الَّذِيْٓ اَيَّدَكَ بِنَصْرِهٖ وَبِالْمُؤْمِنِيْنَ ۝

अगर वह आप को धोका देने का ज़रिया बनाएँ तो अल्लाह आप की मदद के लिए काफ़ी है, उन का मक्र व फ़रेब और चालबाज़ी सब ख़ाक में मिल जाएगी, अल्लाह तआ़ला आप को ग़ल्बा नसीब फ़रमाएगा।

फिर फ़रमाया هُوَ الَّذِيْٓ اَيَّدَكَ بِنَصْرِهٖ وَبِالْمُؤْمِنِيْنَ अल्लाह वही है जिस ने अपनी मदद के ज़रिये आप को क़ुव्वत अ़ता फ़रमाई (जिस में फ़रिश्तों के ज़रिये ग़ैबी मदद करना भी शामिल है) और उस ने मुसलमानों के ज़रिये भी आप को क़ुव्वत दी और मुसलमानों का लश्कर आप के साथ रहा, जिन्होंने साबित क़दमी के साथ जंग की।

63 وَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ ۭ لَوْ اَنْفَقْتَ مَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا مَّآ اَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ
اَلَّفَ بَيْنَهُمْ ۭ اِنَّهٗ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝

फिर फ़रमाया وَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ (और अल्लाह ने मोमिनीन के दिलों में मुह़ब्बत पैदा फ़रमाई।) यह आपस की मुह़ब्बत ऐसी चीज़ है जो दुश्मनों के मुक़ाबिले में जमने का ज़रिया बन गई। जो लोग ज़माने कुफ़्र में आपस में लड़ते रहते थे अल्लाह तआ़ला ने उन को ईमान की तौफ़ीक़ दी फिर उन के दिलों में उल्फ़त व मुह़ब्बत पैदा कर दी, जिस को आले इमरान आयत नं० (103) में फ़रमायाः-

وَاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ كُنْتُمْ اَعْدَاۗءً فَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِكُمْ

(और याद करो अल्लाह के उस इनआ़म को जो उस ने तुम पर फ़रमाया जबकि तुम दुश्मन थे तो अल्लाह ने तुम्हारे दिलों में उल्फ़त पैदा कर दी। यह उल्फ़त पैदा फ़रमाना अल्लाह तआ़ला का ख़ास

फ़ज़्ल है और अल्लाह तआ़ला ही की कुद्रत और मर्ज़ी से यह मुहब्बत पैदा हुई। इसी को फ़रमायाः-

لَوْ اَنْفَقْتَ مَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا مَّآ اَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ اَلَّفَ بَيْنَهُمْ ۔

(अगर आप वह सब कुछ ख़र्च कर देते जो ज़मीन में है तब भी उन के दर्मियान उल्फ़त पैदा नहीं कर सकते थे, लेकिन अल्लाह ने उनके दर्मियान उल्फ़त पैदा फ़रमाई।) फिर फ़रमाया اِنَّهٗ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ (बिलाशुब्हा अल्लाह ग़ल्बे वाला हिक्मत वाला है।)

64 يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللّٰهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝

इस के बाद फ़रमाया (ऐ नबी! आप के लिए अल्लाह काफ़ी है और मोमिनीन काफ़ी हैं जिन्होंने आप का इत्तिबअ़ किया।)

अस्ल मदद तो अल्लाह ही की है, जो हक़ीक़ी मदद है और ज़ाहिरी अस्बाब के तौर पर मुसलमानों की जमाअ़त भी आप के साथ है। यह हज़रात आप का इत्तिबअ़ करने वाले हैं जहाँ दूसरे मसायल माल वग़ैरह में आप का हुक्म बजा लाते हैं वहाँ जिहाद भी वह दिल और जान व माल से आप का इत्तिबअ़ करने वाले हैं, अहले ईमान की जमाअ़त मुख़्लिस हो, रसूल (सल्ल०) की पैरवी करने वाली हो तो फिर दुश्मन उन पर ग़ालिब नहीं आ सकता।

'साहिबे रुहुलू मआ़नी' भाग 10 पेज नं० 30 ने हज़रत इब्ने मुसय्यिब (रह०) से नक़्ल किया है कि यह आयत उस दिन नाज़िल हुई जबकि हज़रत उ़मर (रज़ि०) इस्लाम लाए थे। उन के इस्लाम क़ुबूल करने पर मुसलमानों की तअ़दाद चालीस हो गई थी। (इस के बाद बराबर तअ़दाद भी बढ़ती रही और क़ुव्वत व शौकत में भी रोज़ बरोज़ बढ़ौतरी होती रही।

आयत नं० 65 से 75 तक

يٰاَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلَى الْقِتَالِ ؕ اِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ عِشْرُوْنَ صٰبِرُوْنَ يَغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ
يَّغْلِبُوْٓا اَلْفًا مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ۝ اَلْـٰٔنَ خَفَّفَ اللّٰهُ عَنْكُمْ وَعَلِمَ اَنَّ فِيْكُمْ ضَعْفًا ؕ فَاِنْ يَّكُنْ
مِّنْكُمْ مِّائَةٌ صَابِرَةٌ يَّغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ اَلْفٌ يَّغْلِبُوْٓا اَلْفَيْنِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ۝ مَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ
يَّكُوْنَ لَهٗٓ اَسْرٰى حَتّٰى يُثْخِنَ فِى الْاَرْضِ ؕ تُرِيْدُوْنَ عَرَضَ الدُّنْيَا ۖ وَاللّٰهُ يُرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ لَوْلَا كِتٰبٌ
مِّنَ اللّٰهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيْمَآ اَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝ فَكُلُوْا مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا
النَّبِيُّ قُلْ لِّمَنْ فِيْٓ اَيْدِيْكُمْ مِّنَ الْاَسْرٰٓى ۙ اِنْ يَّعْلَمِ اللّٰهُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ خَيْرًا يُّؤْتِكُمْ خَيْرًا مِّمَّآ اُخِذَ مِنْكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَاِنْ يُّرِيْدُوْا خِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا اللّٰهَ مِنْ قَبْلُ فَاَمْكَنَ مِنْهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّنَصَرُوْٓا اُولٰٓئِكَ بَعْضُهُمْ
اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يُهَاجِرُوْا مَا لَكُمْ مِّنْ وَّلَايَتِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ حَتّٰى يُهَاجِرُوْا ۚ وَاِنِ اسْتَنْصَرُوْكُمْ
فِى الدِّيْنِ فَعَلَيْكُمُ النَّصْرُ اِلَّا عَلٰى قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْضُهُمْ
اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ؕ اِلَّا تَفْعَلُوْهُ تَكُنْ فِتْنَةٌ فِى الْاَرْضِ وَفَسَادٌ كَبِيْرٌ ۝ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّنَصَرُوْٓا اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ۝ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا
مَعَكُمْ فَاُولٰٓئِكَ مِنْكُمْ ؕ وَاُولُوا الْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى بِبَعْضٍ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝

अनुवाद-

(65) ऐ नबी ! मोमिनों को क़िताल (युद्ध) पर उभारिए । अगर आप में के बीस आदमी भी जमे रहें, तो वे दो सौ पर ग़ालिब (प्रभावी) होंगे; और अगर आप में से ऐसे सौ होंगे, तो वे एक हज़ार काफ़िरों पर ग़ालिब (प्रभावी) होंगे, क्योंकि यह ऐसे लोग हैं जो कुछ भी नहीं समझते। (66) अब अल्लाह ने तुम्हारे बोझ को हल्का कर दिया और 'उसे' मालूम हुआ कि तुममें कुछ कमज़ोरी है, तो अगर तुम्हारे सौ आदमी जमे रहने वाले होंगे, तो वे दो सौ पर ग़ालिब (प्रभावी) रहेंगे; और अगर तुममें ऐसे हज़ार होंगे, तो अल्लाह के हुक्म से वे दो हज़ार पर ग़ालिब (प्रभावी) रहेंगे, और अल्लाह तो उन्हीं के साथ है जो सब्र करते हैं। (67) किसी नबी के लिए यह उचित नहीं कि उनके पास क़ैदी हों, यहाँ तक कि वह धरती में खून खराबा करे; तुम लोग दुनिया का सामान चाहते हो, जबकि अल्लाह आख़िरत चाहता है, और अल्लाह बड़ा ज़बरदस्त (प्रभुत्वशाली), हिकमत वाला है। (68) अगर अल्लाह का लिखा पहले से मौजूद न होता, तो जो कुछ नीति तुमने अपनाई है उस पर तुम्हें कोई बड़ा अ़ज़ाब आ जाता। (69) तो जो कुछ ग़नीमत का माल तुमने हासिल किया है, उसे हलाल पाक समझकर खाओ और अल्लाह से डरते रहो; बेशक अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रहम वाला है। (70) ऐ नबी! कह दीजिए, उन क़ैदियों से जो आप के हाथ में हैं, ''कि अगर अल्लाह ने यह जान लिया कि तुम्हारे दिलों में कुछ भलाई है, तो 'वह' उससे कहीं बेहतर तुम्हें देगा, जो तुम से छिन गया है, और तुम्हें माफ़ कर देगा, और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रहम वाला है''। (71) और अगर

यह आप से ख़ियानत (विश्वासघात) करना चाहेंगे, तो इससे पहले भी वे अल्लाह के साथ ख़ियानत कर चुके हैं तो उसने तुम्हें उन पर अधिकार दे दिया, अल्लाह जानने वाला, बड़ा हिकमत वाला है। (72) जो लोग ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की, और अल्लाह की राह में अपने मालों और अपनी जानों के साथ जिहाद किया, वे और जिन लोगों ने उन्हें पनाह दी, और मदद की, वही लोग आपस में एक-दूसरे के वली (संरक्षक) हो रहे हैं; और जो लोग ईमान तो लाए, लेकिन उन्होंने हिजरत नहीं की, तुम्हारी उनसे कोई दोस्ती (संरक्षण) नहीं, जब तक कि वे हिजरत न करें और अगर वह तुम से मदद माँगे दीन के काम में तो तुम पर वाजिब है कि मदद करो, सिवाए इसके, कि (यह मदद) किसी ऐसी क़ौम के मुक़ाबले में हो जिससे तुम्हारे दर्मियान मुआहिदा (संधि) हो और अल्लाह खूब देख रहा है जो कुछ तुम करते हो। (73) और जो लोग काफ़िर हैं, वह आपस में एक दूसरे के दोस्त हैं; अगर तुम ऐसा न करोगे तो धरती में फ़ित्ना और बड़ा फ़साद फैल जाएगा। (74) और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की और अल्लाह की राह में जिहाद किया, और जिन लोगों ने उन्हें पनाह दी और मदद की, वही सच्चे मोमिन हैं। उनके लिए माफ़ी और इज़्ज़त वाली रोज़ी है। (75) और जो लोग बाद में ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की और तुम्हारे साथ मिलकर जिहाद किया तो ऐसे लोग भी तुममें ही से हैं। और क़रीबी रिश्तेदार एक दूसरे के ज़्यादह हक़दार हैं अल्लाह की किताब में, बेशक अल्लाह हर चीज़ का इल्म रखने वाला है।

आयत नं० 65 से 75 तक की व्याख्या

65 يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّبِىُّ حَرِّضِ ٱلْمُؤْمِنِينَ عَلَى ٱلْقِتَالِ ۚ إِن يَكُن مِّنكُمْ عِشْرُونَ صَٰبِرُونَ يَغْلِبُوا۟ مِا۟ئَتَيْنِ ۚ وَإِن يَكُن مِّنكُم مِّا۟ئَةٌ يَغْلِبُوٓا۟ أَلْفًا مِّنَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُونَ ﴿٦٥﴾

दुश्मन की तअ़दाद

इन आयात में पहले तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) को हुक्म फ़रमाया कि आप मोमिनीन को जिहाद की तर्ग़ीब दें। आप जिहाद की तर्ग़ीब देते थे और उस के मुनाफ़े बताते थे जिस में सब से बड़ी चीज़ अल्लाह तआ़ला की रज़ामन्दी है आप की तर्ग़ीब पर हज़राते सहाबा (रज़ि०) ख़ूब साबित क़दमी के साथ लड़ते और जानें देते थे।

इस के बाद फ़रमाया कि मुसलमानों में से अगर बीस आदमियों की तअ़दाद होगी और वह साबित क़दमी के साथ जम कर लड़ेगी तो अपने मुक़ाबिल काफ़िरों के दो सौ लोगों पर ग़ालिब आएँगे और अगर सौ मुसलमान होंगे तो वह एक हज़ार काफ़िरों पर ग़ालिब होंगे। यह अल्लाह तआ़ला का वादा भी है और इसी वादे में यह हुक्म भी छुपा है कि मुसलमान अपने से दस गुना तअ़दाद के मुक़ाबिले में फ़रार का रास्ता अख़्तियार न करें और जम कर लड़ें। जब अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से दस गुना तअ़दाद के मुक़ाबिले में ग़ल्बा पाने का वादा हो गया तो अब राहे फ़रार अख़्तियार करने का कोई मौक़ा न रहा।

'साहिबे रुहुल् मआ़नी' भाग 10 पेज नं० 31 में लिखते हैं:-

بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ इस में यह बताया है कि काफ़िर इस वजह से मग़्लूब होंगे कि वह समझ नहीं रखते, अल्लाह को और आख़िरत के दिन को नहीं जानते, वह सवाब के लिए और अल्लाह तआ़ला का हुक्म मानने के लिए और अल्लाह का कलिमा बुलन्द करने के लिए और अल्लाह की रज़ा ह़ासिल करने के लिए नहीं लड़ते, उन का लड़ना शैतान की पैरवी की वजह से है। बख़िलाफ़ अहले ईमान के कि वह अल्लाह की रज़ा के लिए और उस का बोल-बाला करने के लिए लड़ते हैं, इसलिए वह ग़ालिब होंगे और काफ़िर मग़्लूब होंगे। **(रुहुल् मआ़नी)**

66 اَلْـٰٔنَ خَفَّفَ اللّٰهُ عَنْكُمْ وَعَلِمَ اَنَّ فِيْكُمْ ضَعْفًا ۭ فَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ صَابِرَةٌ يَّغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ اَلْفٌ يَّغْلِبُوْٓا اَلْفَيْنِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ۝

इस का सबबे नुज़ूल बताते हुए ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़०) ने भाग 2 पेज नं० 677 ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से नक़्ल किया है कि जब पहली आयत اِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ عِشْرُوْنَ صٰبِرُوْنَ नाज़िल हुई तो मुसलमानों को यह बात भारी मालूम हुई कि दुश्मन के लोग दस गुने हों तब भी उन के मुक़ाबिले से राहे फ़रार करने की इजाज़त नहीं, इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने कम फ़रमा दिया और दस गुना से मुक़ाबिला करने का जो हुक्म दिया था उसके बजाय यह हुक्म दे दिया कि सौ लोग, दो सौ के मुक़ाबिले में राहे फ़रार अख़्तियार न करें यानी दो गुनी जमाअ़त के मुक़ाबिले से राहे फ़रार अख़्तियार करना मना हो गया।

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) ने यह भी फ़रमाया कि जब अल्लाह तआ़ला ने कम कर दिया और दस गुना लोगों के मुक़ाबिले में लड़ने का जो हुक्म था उस के बजाय अपने से दो गुनी जमाअ़त से लड़ने का हुक्म दे दिया और फ़रार की राह अख़्तियार करने से मना फ़रमा दिया तो इतनी ही उन के सब्र में कमी फ़रमा दी।

बाज़ ह़ज़रात ने عَلِمَ اَنَّ فِيْكُمْ ضَعْفًا का यह मतलब बताया है कि शुरु में ह़ज़राते सहा़बा (रज़ि०) अगरचे संख्या में थोड़े थे, लेकिन तवक्कुल अ़लल्लाह उन में बहुत ज़्यादा था, लिहाज़ा दस गुनी जमाअ़त से भी साबित क़दमी से लड़ सकते थे बाद में मुसलमानों की कस्रत हो गई तो, इन बाद के आने वाले मुसलमानों में सब्र व इस्तिक़ामत की वह शान नहीं थी जो उन से पहले वालों में थी और कुछ संख्या पर भी एतिमाद हो गया, लिहाज़ा कमज़ोरी की शान पैदा हो गई।

अल्लाह तआ़ला ने दस गुना लोगों के मुक़ाबिले के बजाय दो गुना लोगों से मुक़ाबिले का हुक्म दे दिया और उन के मुक़ाबिले से फ़रार की राह अख़्तियार करने की मुमानिअ़त फ़रमा दी। यह कमी अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से इनआ़म है, इसी सूरत के दूसरे रुकूअ़ *(आयत नं० 16)* में اِلَّا مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ اَوْ مُتَحَيِّزًا اِلٰى فِئَةٍ जो गुज़रा है, उस की तफ़्सीर दोबारा देख ली जाए, क़ानून तो यह बना दिया कि दोगुनी तअ़दाद के मुक़ाबिले में फ़रार की राह अख़्तियार न करें, लेकिन अल्लाह तआ़ला ने हमेशा मुसलमानों की मदद फ़रमाई। फ़ारस और रोम के जिहादों में भारी तअ़दाद में दुश्मन सामने आये और मुसलमानों की तअ़दाद

कम होने के बावजूद उन को शिकस्त हुई जिस के वाक़िआत तारीख़ में मौजूद हैं।

आयत के ख़त्म पर फ़रमाया وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ—इस में यह बता दिया कि ताअ़त पर जमने वालों और गुनाह छोड़ने वालों का अल्लाह साथी है यानी वह उन की मदद फ़रमाएगा, लिहाज़ा मोमिन बन्दों को ताअ़त की पाबन्दी और गुनाह से हमेशा बचना लाज़िम है ताकि अल्लाह तआ़ला की मदद शामिले ह़ाल हो और मैदाने जंग में भी साबित क़दमी की ज़रुरत है। यह चीज़ें अल्लाह तआ़ला की मदद उतरवाने का ज़रिया हैं। साबित क़दमी का आयत में दो जगह ज़िक्र फ़रमाया है عِشْرُوْن के साथ صابرون फ़रमाया और مائة के साथ صابرة फ़रमाया।

67 مَاكَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗٓ اَسْرٰى حَتّٰى يُثْخِنَ فِى الْاَرْضِ ۭ تُرِيْدُوْنَ عَرَضَ الدُّنْيَا ڰ وَاللّٰهُ
يُرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ۭ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝

बद्र के क़ैदियों के साथ नर्मी

पहले ज़िक्र हो चुका है कि ग़ज़्व-ए-बद्र में सत्तर काफ़िर मारे गये और सत्तर काफ़िरों को क़ैद करके मदीना मुनव्वरह लाया गया। अब यह सवाल पैदा हुआ कि उन क़ैदियों के साथ क्या मामला किया जाए। मश्वरे में जब बात आई तो ह़ज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) ने अपनी राय पेश करते हुए अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह! यह आप की क़ौम के लोग हैं और रिश्तेदार भी हैं इन को ज़िन्दा रहने दीजिए। उम्मीद है कि अल्लाह तआ़ला इन को इस्लाम क़ुबूल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा दे और इस वक़्त इन से फ़िद्या ले लिया जाए यानी इन की जानों के बदले में माल लेकर इन को छोड़ दिया जाए और ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) ने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह! इन लोगों ने आप को झुठलाया, शहर मक्का से निकलने पर मजबूर किया, इजाज़त दीजिए कि हम इनकी गर्दनें मार दें।

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा (रज़ि०) ने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह! कोई ऐसी जगह देखिए जहाँ ख़ूब ज़्यादा लकड़ियाँ हों उन्हें उस में दाख़िल करके आगे में जला दिया जाए।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने ख़ामोशी अख़्तियार फ़रमाई, फिर ह़ज़रत अबू बक्र (रज़ि०) की राय को अख़्तियार फ़रमा लिया। इस पर अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से गिरिफ़्त नाज़िल हुई, जो ऊपर पहली दो आयतों में है।

ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) ने फ़रमाया कि अगले दिन जब मैं ह़ाज़िर हुआ तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) और ह़ज़रत अबू बक्र (रज़ि०) बैठे हुए रो रहे थे। मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मुझे बताइये कि आप और आप के साथी क्यों रो रहे हैं? मुझे रोने का सबब मालूम हो जाए तो मैं भी रोने लगूँ और अगर रोना न आये तो रोने की सूरत ही बना कर आप की इत्तिबअ़ कर लूँ। आप ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं इस वजह से रो रहा हूँ कि फ़िद्या लेने की लोगों ने जो राय दी थी उस राय के अख़्तियार करने पर मुझे इस क़रीब वाले दरख़्त के पीछे से अ़ज़ाब आता हुआ मालूम हो रहा है। (मुआ़लिमुत्तन्ज़ील)

इन क़ैदियों को माल लेकर छोड़ने का जो फ़ैसला कर लिया गया था अल्लाह तआ़ला को यह बात नापसन्द थी, इसलिए यह आयत नाज़िल हुई। फिर अ़ज़ाब को रोक लिया और उस माल को लेने और खाने की इजाज़त दे दी—पहले तो यह फ़रमाया कि यह नबी की शान के लायक़ नहीं है कि उस के पास क़ैदी हों और उन्हें छोड़ दिया जाए बल्कि ख़ूनरेज़ी करनी चाहिए ताकि कुफ़्फ़ार की शौकत बिल्कुल टूट जाए और मुसलमानों पर हमला आवर होने की सकत उन में बाक़ी न रहे।

जिन हज़रात ने माल लेने की राय दी थी उन के सामने एक मसलहत यह थी कि उम्मीद है यह लोग मुसलमान हो जाएँ और दूसरी मसलहत यह थी कि इस वक़्त मुसलमानों को हाजत और ज़रूरत है, माल मिल जाएगा तो मुसलमानों को काफ़िरों के मुक़ाबिले में कुव्वत पहुँच जाएगी। इस माल लेने के जज़्बे का ज़िक्र फ़रमाते हुए यूँ इर्शाद फ़रमाया–

تُرِيدُونَ عَرَضَ الدُّنْيَا ۖ وَاللَّهُ يُرِيدُ الْآخِرَةَ कि तुम दुनिया को चाहते हो और अल्लाह तआ़ला चाहता है कि तुम आख़िरत के तालिब बनो, तुम्हें आख़िरत में बदला मिलें। काफ़िर क़ैदियों को क़त्ल करने में कुफ़्र की मग़लूबियत थी जो और ज़्यादा इस्लाम के फैलने का ज़रिया है। जैसे-जैसे मुसलमानों के हाथों इस्लाम फैलेगा मुसलमानों की आख़िरत अच्छी बनेगी और दर्जात बुलन्द होंगे।

وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ (और अल्लाह ज़बरदस्त हिक्मत वाला है) उस ने तुम को काफ़िरों पर ग़ल्बा दिया, उस के बाद भी ग़ल्बा देगा और अपनी हिक्मत के मुवाफ़िक़ जब चाहेगा तुम्हें मालामाल फ़रमाएगा। इस वक़्त ज़रा सी देर महसूस कर के जो फ़िद्या लेने पर उतर आये यह नापसन्दीदा है।

68 لَوْلَا كِتَابٌ مِّنَ اللَّهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيمَا أَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝

इस के बाद फ़रमाया (अगर अल्लाह को यह लेख पहले से मुक़द्दर न हो चुका होता तो जो कुछ तुम ने लिया है उस के बारे में तुम को बड़ा अ़ज़ाब पहुँच जाता) इस लेख से क्या मुराद है? इस के बारे में हज़राते मुफ़स्सिरीन ने हज़राते सहाबा (रज़ि०) और ताबिअ़ीन (रह०) के मुख़्तलिफ़ क़ौल नक़्ल किये हैं।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) ने फ़रमाया कि इस से यह मुराद है कि अल्लाह तआ़ला ने उम्मुल् किताब में चूंकि यह लिख दिया था कि माले ग़नीमत उम्मते मुस्लिमा के लिए हलाल होंगे (जिस में क़ैदियों से फ़िद्या लेना भी शामिल है) इसलिए अल्लाह तआ़ला ने अ़ज़ाब को रोक लिया।

मुफ़स्सिर 'इब्ने कसीर' ने हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) और हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) और हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि०) और हज़रत सईद बिन जुबैर (रह०) और हज़रत अ़ता (रह०) और हज़रत हसन बसरी (रह०) और हज़रत क़तादा (रह०) हज़रत आमश (रह०) से यह बात नक़्ल की है और लिखा है कि मुफ़स्सिर इब्ने जरीह ने भी इसी को अख़्तियार किया है।

साहिबे रुहुल् मआ़नी ने भाग 2 पेज नं० 34 में एक यह क़ौल भी नक़्ल किया है कि अगर अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से यह बात लिखी हुई न होती कि जब तक किसी क़ौम के लिए बतौरे अम्र व नहि

वाज़ेह़ तौर पर हुक्म बयान न हो जाए उस वक़्त तक अ़मल न करने की वजह से उन पर अ़ज़ाब न होगा तो अ़ज़ाब आ जाता। चूंकि वाज़ेह़ तौर पर फ़िद्या लेने की मुमानिअ़त बयान नहीं हुई थी, इसलिए अ़ज़ाब रोक दिया गया।

साह़िबे रूहुल् मआ़नी ने इस क़ौल को भी ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) की तरफ़ मन्सूब किया है, फिर एक क़ौल यह नक़्ल किया है कि अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से यह बात मुक़र्रर और मुक़द्दर है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) की मौजूदगी में अ़ज़ाब नहीं आएगा। (जैसा कि इसी सूरत के रुकूअ़ 4 में गुज़र चुका है) इसलिए अ़ज़ाब नहीं आया और एक क़ौल यह नक़्ल किया है कि अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से अपने रसूल (सल्ल०) की ज़बानी यह एलान हो चुका था कि जो लोग बद्र में शरीक हुए थे उनकी मग़्फ़िरत कर दी गई (और राय देने वालों में मश्वरह देने वाले भी थे) इसलिए अ़ज़ाब नहीं आया। फिर साह़िबे रूहुल् मआ़नी ने एक क़ौल नक़्ल किया है कि अल्लाह की तरफ़ से चूंकि यह मुक़र्रर था कि जो फ़िद्या तुम ने लिया है वह तुम्हारे लिए ह़लाल कर दिया जाएगा इसलिए अ़ज़ाब नहीं भेजा फिर इस पर कुछ सवाल व जवाब भी किया है।

इस के बाद साह़िबे रूहुल् मआ़नी लिखते हैं कि मेरे नज़्दीक अगर यह तमाम चीज़ें मुराद हों जो मुख़्तलिफ़ अक़्वाल की सूरत में बयान हुईं तो इस में भी कोई ह़र्ज नहीं है।

क़ैदियों के बारे में हुक्म–

अगर काफ़िर क़ैद में आ जाएँ तो अमीरुल् मोमिनीन को उन के बारे में किन बातों का अख़्तियार है, उस में चार चीज़ों का ज़िक्र आता है। यहाँ सूरः अन्फ़ाल में क़त्ल करने और फ़िद्या लेने का ज़िक्र है और सूरः मुह़म्मद में मज़ीद दो बातों का ज़िक्र है فَإِمَّا مَنًّا بَعْدُ وَإِمَّا فِدَآءً एह़सान करके छोड़ देना या अपने क़ैदियों से तबादला कर लेना यानी अपने क़ैदी लेकर उन के क़ैदी छोड़ देना। इन चार चीज़ों में से अब किस-किस चीज़ को अख़्तियार करने की इजाज़त है इस में ह़ज़रात फ़ुक़्हा-ए-किराम ने कुछ तफ़्सील लिखी है।

'साह़िबे हिदाया' लिखते हैं कि अमीरुल् मोमिनीन को अख़्तियार है चाहे काफ़िर क़ैदियों को क़त्ल कर दे और चाहे तो उन्हें ज़िम्मी बनाकर दारुल इस्लाम में रख ले। अल्बत्ता मुश्रिकीन में जो अहले अ़रब हों और जो मुरतद हों उन को ज़िम्मी बनाकर नहीं रखा जा सकता।

अब रही यह बात कि आया मुसलमान क़ैदियों को छुड़ाने के लिए बतौर तबादला के काफ़िर क़ैदियों को छोड़ दिया जाए?—

तो ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़०) ने इस को जायज़ क़रार नहीं दिया और ह़ज़राते साह़िबैन और ह़ज़रत इमाम शाफ़ई (रह़०) ने फ़रमाया कि ऐसा करना दुरुस्त है और काफ़िर क़ैदियों को माल लेकर छोड़ देना जायज़ है या नहीं इस के बारे में अबू ह़नीफ़ा का मशहूर क़ौल यह है कि यह जायज़ नहीं है।

अल्बत्ता इमाम मुह़म्मद (रह़०) ने 'सियर कबीर' में लिखा है कि अगर मुसलमानों को माल की ह़ाजत हो तो ऐसा कर सकते हैं और बिल्कुल ही बतौर एह़सान के छोड़ देना न क़ैदियों का मुबादिला

हो और न माल लिया जाए और न ज़िम्मी बनाया जाए। हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह०) के नज़्दीक जायज़ नहीं। हज़रत इमाम शाफ़ई (रह०) इस को भी जायज़ कहते हैं।

69 فَكُلُوا مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ ۚ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ

(सो खाओ उस में से जो तुम्हें बतौर ग़नीमत मिल गया हलाल पाकीज़ा होने की हालत में) बद्र के क़ैदियों से फ़िद्या लेकर जो उन को छोड़ देने का फ़ैसला कर दिया गया था उस पर अज़ाब तो हुआ, लेकिन अल्लाह तआला ने अपनी मेहरबानी से उस माल को हलाल और तय्यिब क़रार देकर खाने की इजाज़त मरहमत फ़रमा दी और साथ ही यह भी फ़रमाया (कि अल्लाह से डरो) अल्लाह के हुक्मों की मुख़ालिफ़त से बचो, बिलाशुब्हा अल्लाह बख़्शने वाला है उस ने तुम्हारे गुनाह माफ़ फ़रमाए। رَّحِيْمٌ (रहम फ़रमाने वाला है) जो कुछ तुम ने काफ़िरों से लिया उस के बारे में तुम पर रहम फ़रमा दिया और तुम्हारे लिए हलाल क़रार दिया।

मुफ़स्सिर इब्ने कसीर भाग 2 पेज नं० 326 पर लिखा है जिस का मतलब यह है कि माल लेने के फ़ैसले पर गिरिफ़्त हुई थी फिर जब माल लेने की इजाज़त दे दी गई तो क़ैदियों से माल वसूल कर लिया गया।

'मुआलिमुत्तन्ज़ील' में यूँ है कि जब पहली आयत नाज़िल हुई तो जो कुछ बतौरे फ़िद्या माल ले चुके थे उस से परहेज़ करते रहे, जब आयत فَكُلُوا مِمَّا غَنِمْتُمْ नाज़िल हुई तो उस माल को इस्तेमाल कर लिया, हो सकता है कि कुछ लोगों से पहले माल ले लिया गया हो और बाक़ी लोगों से बाद में लिया गया हो क्योंकि सब के पास उस वक़्त माल मौजूद नहीं था। क़ैदियों में रसूलुल्लाह (सल्ल०) के दामाद अबुल् आस बिन अल् रबीअ और आप के चचा अब्बास बिन अब्दुल् मुत्तलिब भी थे।

आप ने सहाबा से इजाज़त लेकर 'अबुल् आस' को फ़िद्या लिए बग़ैर छोड़ दिया और उन से फ़रमाया कि तुम मक्का मुअज़्ज़माँ पहुँच कर ज़ैनब को भेज देना। {ज़ैनब हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की सब से बड़ी बेटी थीं} आप ने जब हिजरत फ़रमाई तो वह वहीं रह गई थीं। इसलिए उन से फ़रमाया कि ज़ैनब को भेज देना, उन्होंने वादा पूरा किया और हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा को भेज दिया और बाद में ख़ुद भी इस्लाम क़ुबूल कर लिया। (كما ذكره الحافظ ابن حجر في الاصابه في حرف العين.)

हज़रत अब्बास मुश्रिकीन के लश्कर में से आये थे और बीस औक़िया सोना लेकर चले थे ताकि आप साथियों को खिलाते पिलाते रहें। (एक औक़िया चालीस दिरहम का होता था) अब उन के पास बीस औक़िये रह गये थे वह बीस औक़िये सहाबा (रज़ि०) ने उन से मक़ामे बद्र में ले लिए। जब क़ैद करके लाये गये और उन से सवाल हुआ कि फ़िद्या दो, तो उन्होंने कहा कि वह जो बीस औक़िये ले लिए हैं उन्हीं को मेरी जान के फ़िद्ये में लगा लें, हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जो चीज़ तुम हमारे मुक़ाबिले में ख़र्च करने के लिए लेकर आये थे वह तुम्हारे हिसाब में नहीं लग सकती।

हज़रत अब्बास ने यूँ भी कहा या रसूलल्लाह मैं तो मुसलमान था। आप ने फ़रमाया, अगर तुम

मुसलमान थे तो अल्लाह तआ़ला को इस का इ़ल्म है। अगर तुम सच्चे हो तो अल्लाह तआ़ला इस का बदला दे देगा। हमारे नज़्दीक बज़ाहिर तुम मुक़ाबिला करने के लिए जंग में शरीक हुए थे, लिहाज़ा तुम अपनी जान का भी फ़िद्या दो और अपने दोनों भतीजों नौफ़ल बिन ह़ारिस और अ़क़ील बिन अबी तालिब और अपने उ़त्बा बिन अ़म्र का भी फ़िद्या दो। ह़ज़रत अ़ब्बास ने कहा कि ऐ मुह़म्मद (सल्ल०)! तुम मुझे इस ह़ाल में छोड़ना चाहते हो कि ज़िन्दगी भर क़ुरैश से भीख माँगा करूँ। मेरे पास इतना माल नहीं है कि इस क़दर फ़िद्या दे सकूँ। आप ने फ़रमाया वह माल कहाँ है जो तुम ने और तुम्हारी बीवी उम्मुल् फ़ज़्ल ने मिलकर दफ़्न किया है। तुम ने अपनी बीवी से कहा था कि अगर मैं इस सफ़र में मक़्तूल हो गया तो यह माल मेरे बेटो अ़ब्दुल्लाह, उ़बैदुल्लाह, फ़ज़्ल और क़ासिम के काम आएगा।

ह़ज़रत अ़ब्बास ने कहा अल्लाह की क़सम, या रसूलल्लाह! इस बात का इ़ल्म मेरे और उम्मुल् फ़ज़्ल के अ़लावा और किसी को नहीं है। आप को किस ने बताया? आप ने फ़रमाया कि मुझे मेरे रब ने बताया।

इस पर ह़ज़रत अ़ब्बास कहने लगे कि मैं गवाही देता हूँ कि आप सच्चे हैं और वह बात फिर दोहराई कि चौबीस औ़क़िया मैदाने जंग में मुझ से ले लिया गया है। वह मेरे फ़िद्ये के ह़िसाब में लगाए जाएँ। आप ने फ़रमाया नहीं, वह ह़िसाब में नहीं लग सकता। वह तो अल्लाह तआ़ला ने हमें (बतौर माले ग़नीमत) के अ़ता फ़रमाया है, लिहाज़ा ह़ज़रत अ़ब्बास ने अपना फ़िद्या और अपने दोनों भतीजों का और अपने ह़लीफ़ का भी दिया। **(मुआ़लिमुत्तन्ज़ील भाग 2, पेज नं० 263 व इब्ने कसीर, भाग 2 पेज नं० 327)**

ह़ज़रत अ़ब्बास ने अपना इस्लाम तो फ़िद्या के दिन ही ज़ाहिर कर दिया था, लेकिन उस वक़्त मक्का मुअ़ज़्ज़माँ चले आये थे। फिर मक्का मुअ़ज़्ज़माँ फ़तेह़ होने से कुछ पहले हिजरत करके मदीना मुनव्वरह तशरीफ़ ले आये। **(असाबा)**

नोट- मुआ़लिमुत्तन्ज़ील में लिखा है कि हर क़ैदी का फ़िद्या चालीस औक़िया था और हर औ़क़िया चालीस दिरहम का होता था इस तरह़ से हर क़ैदी का फ़िद्या सोलह दिरहम हुआ।) और रुहुल मआ़नी में लिखा है कि हर एक क़ैदी का फ़िद्या सौ औक़िया था और इस के अ़लावा और भी बाज़ अक़्वाल हैं।

नोट- चूंकि सह़ाबा के मश्वरे से यह तय हो गया था कि फ़िद्या लेकर छोड़ दिया जाए और जो माल उन से ले लिया गया उस में सह़ाबा का भी ह़िस्सा हो गया। इसलिए रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इस में किसी अपने पराये की रिआ़यत नहीं फ़रमाई अपने चचा अ़ब्बास से भी फ़िद्या लिया और अपने दो चचाज़ाद भाइयों का फ़िद्या भी चचा से वसूल फ़रमाया। उन्होंने जो यह कहा कि मैं मुसलमान था ज़बरदस्ती जंग में शरीक कर लिया गया तो इस के जवाब में आप (सल्ल०) ने साफ़ तौर पर फ़रमा दिया कि दिलों का ह़ाल अल्लाह जानता है, हम तो ज़ाहिर पर क़ानून नाफ़िज़ करने वाले हैं। तुम मुख़ालिफ़ीन के साथ लड़ने वालों में शामिल होकर आये थे, क़ैदी हो गये हम तो फ़िद्या लेकर ही छोड़ेंगे, लिहाज़ा उन से फ़िद्या लिया। 'सह़ीह़ बुख़ारी' भाग 1 पेज नं० 428 में है कि अन्सार में से बाज़ सह़ाबा ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! आप इजाज़त दीजिए कि हम अ़ब्बास की जान का बदला छोड़ दें।

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया नहीं एक दिरहम भी न छोड़ो—और अपने दामाद अबुल् आ़स इब्ने

अल् रबीअ़ का जो फ़िद्या छोड़ा वह भी ह़ज़राते सह़ाबा (रज़ि०) से इजाज़त लेकर छोड़ा था। यह क़ानून में बराबरी अख़्तियार करने का एक नमूना है लोग बराबरी का नाम तो लेते हैं लेकिन जब अपने पराये का सवाल आता है तो क़ानून भूल जाते हैं—क़ानून ग़ैरों के लिए होता है और अपनी जान और अपने लोग क़ानून से बालातर होते हैं, जो इस्लामी तरीक़े के ख़िलाफ़ हैं।

70 يَآأَيُّهَا النَّبِيُّ قُل لِّمَن فِي أَيْدِيكُم مِّنَ الْأَسْرَىٰ إِن يَعْلَمِ اللَّهُ فِي قُلُوبِكُمْ خَيْرًا يُؤْتِكُمْ خَيْرًا مِّمَّا أُخِذَ مِنكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

बद्र के क़ैदियों से अल्लाह तआ़ला का वादा

मुफ़स्सिर इब्ने कसीर ने लिखा है कि जब अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब ने यह कहा कि मैं तो मुसलमान था और मेरा माल जो ग़ज़्व-ए-बद्र में ले लिया गया है उसी को मेरी जान के फ़िद्ये में लगा लिया जाए। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इस से इन्कार फ़रमा दिया जिस पर उन्होंने अपना और बाक़ी तीन आदमियों का फ़िद्या दिया तो अल्लाह तआ़ला ने आयत يَآأَيُّهَا النَّبِيُّ قُل لِّمَن فِي أَيْدِيكُم مِّنَ الْأَسْرَىٰ नाज़िल फ़रमाई, जिस में यह फ़रमाया कि ऐ नबी! जो क़ैदी आप के क़ब्ज़े में हैं उन को फ़रमा दें अगर तुम्हारे दिल में ईमान है जिस का इ़ल्म अल्लाह को है तो अल्लाह तुम को इस से बेहतर अ़ता फ़रमा देगा जो तुम से लिया गया और अल्लाह तुम्हें बख़्श देगा।

ह़ज़रत अ़ब्बास (रज़ि०) जब पूरी तरह़ इस्लाम में दाख़िल हो गये तो उन्होंने इस वादे को सच्चा पाया। वह फ़रमाते थे कि अल्लाह तआ़ला ने मुझे बीस औक़िया की जगह बीस गुलाम अ़ता फ़रमाए हैं जो माल कमा कर लाते हैं, और अल्लाह तआ़ला से मग़्फ़िरत की उम्मीद भी रखता हूँ क्योंकि आयते शरीफ़ा में इस का भी वादा है।

एक रिवायत में है कि उन्होंने कहा कि जो माल मुझ से लिया गया था उस के बदले में अल्लाह तआ़ला ने चालीस गुलाम अ़िनायत फ़रमाए और एक रिवायत में है कि अल्लाह तआ़ला ने मुझे सौ गुना माल अ़ता फ़रमा दिया। साह़िबे रुहुल् मआ़नी फ़रमाते हैं कि सबबे नुज़ूल चाहे ह़ज़रत अ़ब्बास (रज़ि०) ही का वाक़िआ़ हो, लेकिन अल्फ़ाज़ आयत का तमाम क़ैदियों को शामिल है।

ह़ज़रत बरा (रज़ि०) बिन आ़ज़िब से रिवायत है कि आप के साथियों ने बद्र में कुफ़्फ़ार के 140 फ़ौजियों को नुक़सान पहुँचाया, 70 तो क़ैदी बनाये गये और सत्तर ही क़त्ल किये गये। **(बुख़ारी)**

71 وَإِن يُرِيدُوا خِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا اللَّهَ مِن قَبْلُ فَأَمْكَنَ مِنْهُمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝

फिर फ़रमाया कि यह क़ैदी अगर आप की ख़यानत का इरादा करें, वापस जाकर जंग करने की नियत से लौट आएँ या आप के मुक़ाबिले में मुश्रिकीन की मदद करने लगें तो आप फ़िक्रमन्द न हों, इस से पहले अल्लाह तआ़ला से ख़यानत कर चुके हैं। अल्लाह ने जो हर एक से तौह़ीद के बारे में अ़हद लिया था उसे तोड़ा और कुफ़्र अख़्तियार किया। फिर अल्लाह तआ़ला ने आप को उन पर क़ुद्रत दे दी

और उन्हें बद्र में मक़्तूल करवा दिया और क़ैदी बनाकर मदीना में हाज़िर कर दिया। अगर फिर उन्होंने ऐसा किया तो अल्लाह तआला फिर आप की मदद फ़रमाएगा और अल्लाह को सब कुछ मालूम है वह सब की नियतों का ह़ाल जानता है। वह ह़कीम भी है अपनी ह़िक्मत के मुताबिक़ अपनी मख़्लूक़ में जो चाहे करता है जिस को जब चाहे सज़ा देता है और जिस को जब चाहे इन्आम देता है।

72-73 إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آوَوا وَّنَصَرُوا أُولَٰئِكَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يُهَاجِرُوا مَا لَكُم مِّن وَلَايَتِهِم مِّن شَيْءٍ حَتَّىٰ يُهَاجِرُوا ۚ وَإِنِ اسْتَنصَرُوكُمْ فِي الدِّينِ فَعَلَيْكُمُ النَّصْرُ إِلَّا عَلَىٰ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُم مِّيثَاقٌ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ إِلَّا تَفْعَلُوهُ تَكُن فِتْنَةٌ فِي الْأَرْضِ وَفَسَادٌ كَبِيرٌ ۝

मुजाहिदीन, मुहाजिरीन और अन्सार

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा की तफ़्सीर के मुताबिक़ इन आयात में मीरास के अह़काम बताये हैं। उन के नज़्दीक أُولَٰئِكَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ से एक दूसरे का वारिस होना मुराद है और وَلَايَتِهِم से भी मीरास पाना ही मुराद है। 'साह़िबे रुहुल् मआ़नी' ने ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से यही तफ़्सीर नक़्ल की है। इस एतिबार से पहली आयत का मतलब यह है कि जो लोग ईमान लाए और अपने वतनों को छोड़कर हिजरत करके मदीना मुनव्वरह आ गये और अल्लाह की राह में अपने मालों और जानों से जिहाद किया और वह लोग जिन्होंने मुहाजिरीन को ठिकाना न दिया और उन की मदद की यानी अन्सारी ह़ज़रात, यह सब आपस में एक दूसरे के वारिस हैं।

साह़िबे रुहुल् मआ़नी ने ह़ज़रत ह़सन, ह़ज़रत मुजाहिद, ह़ज़रत क़तादा से नक़्ल किया है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने मुहाजिरीन और अन्सार के दर्मियान वरासत का सिल्सिला जारी फ़रमाया यानी हिजरत न करने की वजह से एक मुहाजिर, ग़ैर मुहाजिर का वारिस नहीं हो पाता था, चाहे आपस में रिश्तेदारी हो। यह सिल्सिला फ़तेह़ मक्का तक जारी रहा, उस के बाद मीरास नस्बी रिश्तेदारी की बुनियाद पर मिलने लगी, चाहे एक शख़्स मुहाजिर हो और दूसरा मुहाजिर न हो बशर्ते कि दोनों मुसलमान हों।

रिश्तेदारी के उसूल पर जो मीरास के अह़काम हैं सूरः निसा के दूसरे रुकूअ़ में बयान हो चुके हैं।

इस के बाद उन लोगों का हुक्म बताया जिन्होंने ईमान तो कुबूल किया, लेकिन हिजरत करके मदीना मुनव्वरह नहीं आये।

74 وَالَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آوَوا وَّنَصَرُوا أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا ۚ لَّهُم مَّغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ۝

और फ़रमाया कि जो लोग ईमान लाए और हिजरत नहीं की तुम्हारा उन की मीरास से कोई

तअ़ल्लुक़ नहीं जब तक कि वह हिजरत न कर लें। चूंकि वरासत के सिलसिले के लिए ईमान और हिजरत दोनों को ज़रूरी क़रार दिया था, इसलिए वाज़ेह़ तौर पर फ़रमा दिया गया कि जिन्होंने हिजरत नहीं की चाहे इस्लाम क़ुबूल कर लिया उन के और मुहाजिरीन के दर्मियान वरासत का सिलसिला जारी नहीं होगा बाद में यह हुक्म मन्सूख़ (ख़त्म) हो गया। जैसा कि ऊपर ज़िक्र हुआ और क़राबतदारी के उसूल पर मीरास के अह़काम बता दिये गये।

फिर फ़रमाया وَإِنِ اسْتَنْصَرُوكُمْ فِي الدِّينِ فَعَلَيْكُمُ النَّصْرُ यानी जिन लोगों ने ईमान तो क़ुबूल कर लिया और अभी हिजरत नहीं की और मुश्रिकीन के दर्मियान फँसे हैं, अगर वह तुम से मदद चाहें तो दुश्मनों के मुक़ाबिले में उन की मदद करो।

आपस में मीरास का जारी होना न होना और बात है और काफ़िरों के मुक़ाबिले में मदद करना यह दूसरी चीज़ है। इस ज़रूरी काम को हाथ से न जाने दो, मोमिन भाइयों की मदद करो चाहे उन्होंने हिजरत न की हो। हाँ, इतनी बात का ध्यान रहे कि जिस क़ौम से तुम्हारा कोई मुआ़हिदा हुआ है और आपस में यह तय है कि जैसे इतने दिनों तक आपस में जंग नहीं करेंगे तो फिर उन के दर्मियान रहने वाले अहले ईमान की मदद तलब करने के बावजूद उन पर ह़मला न किया जाए ताकि मुआ़हिदे की ख़िलाफ़वर्ज़ी न हो।

मुआ़हिदे की पाबन्दी का एहतिमाम इस्लाम में किस दर्जे में है इस से वाज़ेह़ तौर पर मालूम हो गया। अगर ग़ैर मुहाजिर मुसलमान मुहाजिर मुसलमान से किसी ऐसी क़ौम के मुक़ाबिले में मदद तलब करें जिस से तर्के जंग का मुआ़हिदा कर रखा है तो फिर अपने मुसलमान भाईयों की मदद के लिए भी उन काफ़िरों पर ह़मला करना जायज़ नहीं जिस से मुआ़हिदा है।

75 وَالَّذِينَ آمَنُوا مِن بَعْدُ وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا مَعَكُمْ فَأُولَٰئِكَ مِنكُمْ ۚ وَأُولُو الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٧٥﴾

काफ़िर मोमिन की या मोमिन काफ़िर की मीरास–

इस के बाद फ़रमाया कि जो लोग काफ़िर हैं वह आपस में एक दूसरे के वली हैं, वह एक दूसरे की मदद भी करते हैं और एक दूसरे के वारिस भी होते हैं। काफ़िरों के दर्मियान आपस में मीरास जारी होगी, कोई मोमिन किसी काफ़िर का और कोई काफ़िर किसी मोमिन का वारिस नहीं हो सकता। पहला हुक्म यानी यह कि मुहाजिर ग़ैर मुहाजिर का वारिस न हो, ख़त्म कर दिया गया और हिजरत के बजाय रिश्तेदारी के उसूल पर मीरास के अह़काम नाज़िल किये गये।

लेकिन यह दूसरा हुक्म कि मोमिन और काफ़िर के दर्मियान वरासत नहीं जो क़ियामत तक के लिए क़ानून है। हाँ, काफ़िर आपस में एक दूसरे के वारिस होंगे। अगर वह लोग मुसलमानों की अ़मलदारी में रहते होंगे तो क़ाज़ी इस्लाम उन के दर्मियान मीरास तक़्सीम कर देगा। अगर कोई मुसलमान किसी काफ़िर का बेटा हो या कोई काफ़िर किसी मुसलमान का बेटा हो तो उन के दर्मियान मीरास जारी न होगी,

अगरचे दारुल इस्लाम में रहते हों।

फिर फ़रमाया اِلَّا تَفْعَلُوْهُ تَكُنْ فِتْنَةٌ فِي الْاَرْضِ وَفَسَادٌ كَبِيْرٌ कि जो अह़काम ऊपर बयान किये गये अगर उन पर अ़मल न करोगे और उन की ख़िलाफ़वर्ज़ी करोगे तो ज़मीन में बड़ा फ़ित्ना और फ़साद होगा। अगर अपने दीनी भाइयों की मदद के जोश में मुआ़हिदा की ख़िलाफ़वर्ज़ी कर बैठे या काफ़िरों को अपना वली या वारिस समझ लिया तो इस के नतायज बहुत ख़तरनाक होंगे और ज़मीन में बड़ा फ़ित्ना व फ़साद फैल जाएगा।

फिर फ़रमाया وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا जो लोग ईमान लाए और हिजरत की और अल्लाह की राह में जिहाद किया और जिन लोगों ने मुहाजिरीन को ठिकाना दिया और उनकी मदद की यह दोनों जमाअ़तें यानी मुहाजिरीन और अन्सार सच्चे पक्के मुसलमान हैं, अल्लाह की तरफ़ से उन के लिए बड़ी मग़्फ़िरत का वादा है और उनके लिए इ़ज़्ज़त वाली रोज़ी मुक़र्रर है जो जन्नत में उन को नसीब होगी। इस आयत में जहाँ मुहाजिरीन की मदह है, वहीं ह़ज़रात अन्सार की भी तअ़रीफ़ है और दोनों जमाअ़तों को मग़्फ़िरत की बशारत दी गई है।

आख़िरी आयत में तीन मज़मून बयान फ़रमाएः-

पहली बात तो यह फ़रमाया وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا مَعَكُمْ فَاُولٰٓئِكَ مِنْكُمْ कि जो लोग बाद के ज़माने में ईमान लाए और हिजरत की और तुम्हारे साथ मिल कर जिहाद किया तो यह लोग तुम ही में से हैं और तुम्हीं में शुमार हैं, यानी तुम को अव्वलियत की फ़ज़ीलत ह़ासिल है और उन को यानी यह फ़ज़ीलत ह़ासिल नहीं लेकिन जब ईमान के तक़ाज़े पूरे कर दिये तो वह तुम्हीं में शुमार हैं। ईमान की फ़ज़ीलत सब को ह़ासिल है अल्बत्ता मुरव्वत है और अह़कामे मीरास में तो सब बराबर हैं क्योंकि इस का तअ़ल्लुक़ नस्बी रिश्तों से है अफ़्ज़ल और ग़ैर अफ़्ज़ल होने से नहीं है।

दूसरी बात यूँ फ़रमाई وَاُولُوا الْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى بِبَعْضٍ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ और जो लोग आपस में रिश्तेदार हैं अल्लाह की किताब में से एक दूसरे के क़रीबतर हैं लिहाज़ा रिश्तेदारियों की बुनियाद पर आपस में एक दूसरे के वारिस होंगे जिस की तफ़्सीर सूरः निसा के दूसरे रुकूअ़ में गुज़र चुकी है इस से मीरास का वह हुक्म मन्सूख़ (ख़त्म) कर दिया गया जो शुरु हिजरत में मुहाजिरीन और अन्सार के दर्मियान मुवाख़ात (भाईचारे) के बाद जारी कर दिया गया था। यह हुक्म 'ज़विल फुरूज़' और अ़स्बात (यानी ख़ूनी रिश्तेदारों) सब को शामिल है, बल्कि उ़लमा फ़रायज़ के इस्तिलाह़ में जिन को 'ज़विल अरहा़म' कहा जाता है उन को भी शामिल है अल्बत्ता इन सब के दर्मियान तर्तीब है जो मीरास की किताबों में मौजूद है।

ثَالِثًا फ़रमायाः اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ (बिलाशुब्हा अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है।)

तीसरी तम्बीह है कि अह़काम की ख़िलाफ़वर्ज़ी करने वाले यह न समझें कि अल्लाह तआ़ला को उन के आ़माल की ख़बर नहीं, अल्लाह तआ़ला को हर शख़्स के आ़माल का इ़ल्म है वह सब के ज़ाहिर व बातिन से बाख़बर है, ख़िलाफ़वर्ज़ी करने वालों को सज़ा देगा और फ़रमाँबरदारी करने वालों को जज़ा-ए-ख़ैर अ़ता फ़रमाएगा।

(भाग-9)

सूर-ए-तौबः

(सूरः नं. 9)

सूरः तौबः

इस का दूसरा नाम सूरः बराअत भी है। इस में काफ़िरों से बरी (अलग) होने का एलान है, इसलिए इस को सूरः बराअत कहा जाता है और ग़ज़्व-ए-तबूक के मौक़े पर जो सहाबी पीछे रह गये थे, उनकी तौबः का भी इसमें ज़िक्र है इसलिए दूसरा नाम भी मशहूर हो गया। यह सूरत 'मुस्हफ़े उ़स्मानी' {हज़रत उस्मान (रज़ि०) के ज़माने में जो क्रम दिया गया उस} की तर्तीब में सूरः अनफ़ाल और सूरः यूनुस के दर्मियान है।

सूरः तौबः से पहले बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम न लिखने की वजह-

तमाम सूरतों के शुरु में 'बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम' लिखी है, लेकिन सूरः बराअत के शुरु में नहीं लिखी जाती। हज़रत उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान (रज़ि०) से हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने सवाल किया कि यह क्या बात है आप ने सूरः अनफ़ाल को जो 'मसानी' में से है (यानी जिस की आयात सौ से कम हैं।) सूरः बराअत से पहले रख दिया।

ह़ालांकि बराअत उन सूरतों में से है जिन की आयात सौ से ज़्यादा हैं और आप ने इन दोनों को मिला भी दिया और यह किया कि उन के दर्मियान "बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम" नहीं लिखी। इन दोनों को मिलाकर 'सबअ़ तिवाल' (यानी लम्बी सात सूरतों) में शामिल कर दिया, ऐसा करने का क्या मतलब है?

हज़रत उ़स्मान (रज़ि०) ने जवाब दिया कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) का यह तरीक़ा था कि जब कोई आयत नाज़िल होती थी तो आप किसी सहाबी को बुलाकर फ़रमाते थे कि इस आयत को इस सूरत में शामिल कर दो जिस में फ़लाँ-फ़लाँ मज़्मून हैं और सूरः अनफ़ाल उन सूरतों में से है जो मदीना मुनव्वरह आने के बाद शुरु में नाज़िल हुईं और सूरः बराअत उन सूरतों में से है जो आख़िर में नाज़िल हुईं।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) की वफ़ात हो गई और आप ने यह बयान नहीं फ़रमाया कि सूरः बराअत सूरः अनफ़ाल का हिस्सा है और चूंकि दोनों का मज़मून (विषय) एक दूसरे के मज़मून (विषय) से मिलता जुलता था, इसलिए मैंने दोनों को मिला दिया और उन के दर्मियान 'बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम' नहीं लिखी (क्योंकि न इस बात का इ़ल्म था कि दोनों सूरतें मुस्तिक़ल हैं और न यह बात स्पष्ट थी कि दोनों एक ही हैं) और मैंने इन को मिलाकर 'सबअ़ तिवाल' (यानी सात लम्बी सूरतों) में शामिल कर दिया। (मतलब यह है कि सूरः फ़ातिह़ा के बाद छः सूरतें आयतों की तअ़दाद के एतिबार से ख़ूब लम्बी-लम्बी हैं और इन दोनों का मजमूआ़ मिलकर सात लम्बी सूरतें हो गईं जिन को 'सबअ़ तिवाल' कहा जाता है।) **(तिर्मिज़ी)**

हज़रत उ़स्मान (रज़ि०) के बयान से मालूम हो गया कि सूरः अनफ़ाल और सूरः बराअत को इसलिए मिलाया गया है कि दोनों का विषय आपस में मिलता-जुलता है और दर्मियान में "बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम" इसलिए नहीं लिखी कि स्पष्ट तौर पर उन के पास रसूलुल्लाह (सल्ल०) का इर्शाद या कोई ऐसी चीज़ नहीं थी जिस से दोनों का अलग-अलग सूरत होना मालूम होता।

क़ुर्आन मजीद की तर्तीब यूँ है कि सूरः फ़ातिहा के बाद पहले 'सबअ़ तिवाल' यानी सूरः बक़रः और सूरः आले इमरान और सूरः निसा और सूरः माइदा और सूरः अनआम और सूरः अअ़राफ़ और सूरः अनफ़ाल और सूरः तौबः है (इन को सात लम्बी सूरतें कहा जाता है।) इन के बाद वह सूरतें हैं जिन्हें 'मेअ़यन' कहा जाता है और यह वह सूरते हैं जिन की आयात सौ से कुछ ज़्यादा हैं। फिर वह सूरतें हैं जिन्हें 'मसानी' कहा जाता है। यह सूरतें सूरः यूनुस से शुरु हैं और सूरः हुजरात से लेकर ख़त्म क़ुर्आन तक जो सूरतें हैं उन्हें 'मुफ़स्सल' कहा जाता है। फिर इन में भी तफ़्सील है सूरः हुजरात से सूरः बुरूज तक और सूरः तारिक़ से सूरः बय्यिन तक 'तिवाले मुफ़स्सल' और सूरः ज़िलज़ाल से लेकर सूरः नास तक 'क़सूरिल मुफ़स्सल' हैं[1]।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम-

इस तफ़्सील से यह भी मालूम हो गया कि जब कोई तिलावत करने वाला सूरः अनफ़ाल पढ़े और उसे ख़त्म करके सूरः बराअत शुरु करे तो "बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम" न पढ़े क्योंकि सूरः बराअत का मुस्तक़िल सूरः होना यक़ीनी नहीं है।

अगर सूरः बराअत ही से तिलावत शुरु करना हो तो 'अऊज़ुबिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम' पढ़े 'बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम' पढ़ें या न पढ़ें। इस में दो क़ौल हैं बेहतर यही है कि इस सूरत में बिस्मिल्लाह न पढ़े।

1- अ़ल्लामा सियोती ने अल् इत्क़ान पेज नं० 65 में क़ुर्आन करीम की सूरतों की तर्तीब इस तरह लिखी है कि पहले 'सबअ़ तिवाल' यानी सात लम्बी सूरतें हैं जो सूरः अनफ़ाल और सूरः तौबः को मिलाकर (यानी दोनों को एक क़रार देकर) सूरः तौबः पर ख़त्म हो रही हैं (इन दोनों को अलग-अलग सूरत माना जाए तो 'सबअ़ तिवाल' में नहीं आती हैं) 'सबअ़ तिवाल' के बाद वह सूरतें हैं जिन्हें 'मेअयन' कहा जाता है (यह मेयता की जमअ़ है) यह वह सूरते हैं जिन की आयात सौ के क़रीब या सौ से ज़्यादा हैं। फिर इन के बाद वह सूरतें हैं जिन्हें 'मुफ़स्सल' कहा जाता है। मुफ़स्सल की शुरुआ़त कहाँ से है इस में बहुत से क़ौल हैं। उन में से एक क़ौल यह है कि सूरः हुजरात से शुरु होकर आख़िर क़ुर्आन तक जो सूरतें हैं उन सब का मजमूआ़ 'मुफ़स्सल' है यही क़ौल हम ने ऊपर तफ़्सीर में लिख दिया है। 'मसानी' की इन्तिहा तो 'मुफ़स्सल' की शुरुआ़त से मालूम हो गई, लेकिन मसानी की शुरुआ़त कहाँ से है इस के बारे में उ़लमा के अक़्वाल में कोई तफ़्सील नहीं देखी।

सूरतों को देखने से मालूम हुआ कि 'मसानी' की इब्तिदा बज़ाहिर सूरः क़सस से होनी चाहिए क्योंकि इस से पहली सूरत में 'तिरान्वे' आयात और इस में 'अट्ठासी' आयात हैं। (इस से पहले सूरः हज में अठ्हत्तर और सूरः नूर में पैंसठ आयात गुज़र चुकी हैं।) सूरः क़सस के बाद वह सूरते हैं जिन की आयात मेअयन वाली सूरतों की आयात से कम ही हैं। अलबत्ता दर्मियान में सूरः शुअ़रा में दो सौ सताईस और सूरः साफ़्फ़ात में 120 आयात हैं।

ऐसा मालूम होता है कि तर्तीब में आयात की तअ़दाद के बजाय तूल (बड़ी) और क़सर (छोटी) का लिहाज़ रखा गया। आयात की तअ़दाद का लिहाज़ नहीं रखा गया है यानी यह बात नहीं देखी गई कि हर अगली सूरत पिछली सूरत की आयत के एतिबार से छोटी हो। फिर यह बड़ी और छोटी भी को पेशेनज़र रखा जाए तो उन ह़ज़रात की बात सही मालूम होती है जिन्होंने फ़रमाया कि सूरतों की तर्तीब भी तौफ़ीक़ी है। यह जो हम ने अ़र्ज़ किया कि तर्तीब सूरत में आयात की तअ़दाद के बजाय बड़ी और छोटी का लिहाज़ रखा गया है। इसकी एक दलील यह है कि बाज़ मर्तबः छोटी सूरत में आयात ज़्यादा होती हैं और बड़ी सूरत में आयात की तअ़दाद कम होती है। **(कमा फ़ी सूरतुल् अह़ज़ाब)**

इब्ने अल् जज़्री (रह़०) अल् नश्र में लिखते हैं:-

لاخلاف فی حذف البسملة بین الانفال وبرأة عن کل من بسمل بین السورتین وکذا فی الابتدا ببراءة علی الصحیح عند أهل الاداء -

इस के बाद बराअत से तिलावत शुरु करने की सूरत में बाज़ क़ारियों से 'बिस्मिल्लाह' पढ़ने का जायज़ होना नक़्ल किया गया है, लेकिन इस को तस्लीम नहीं किया और आख़िर में लिखा है-

والصحیح عند الائمة اولی بالاتباع و نعوذ باللہ من شر الابتداء. ह़ज़रत इमाम शातबी (रह़०) ने जो यह फ़रमाया-

لِتَنْزِيلِهَا بِالسَّيْفِ لَسْتَ مُبَسْمِلاً यह ह़ज़रत अ़ली (रज़ि०) से मन्कूल है, अ़ल्लामा इब्नुल् क़ासेह़ सिराजुल क़ारी शरह़ शातृबिया में लिखते हैं-

قال ابن عباس سالت علیاً رضی اللہ عنہ لما لم تکتب فی براۃ بسم اللہ الرحیم فقال لأن بسم اللہ

أمان وبرأة لیس فیها امان نزلت بالسیف اھ

अब एक बात और रह गई है और वह यह कि सूरः बराअत के दर्मियान में किसी जगह से तिलावत की इब्तिदा करे तो जिस तरह़ दूसरी सूरतों के दर्मियान से तिलावत की सूरत में 'बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम' का पढ़ना और न पढ़ना दोनों दुरुस्त हैं, इसी तरह़ सूरः बराअत के दर्मियान से शुरु करने की सूरत में 'बिस्मिल्लाह' पढ़ने और न पढ़ने का अख़्तियार है या नहीं?

इब्ने अल् जज़्री "अल् नश्र" में फ़रमाते हैं कि मैंने इस के बारे में पिछले लोगों की कोई तहरीर (लेख) नहीं देखी और बहुत से लोगों ने सूरतों के दर्मियान से तिलावत शुरु करने की सूरत में जो दोनों बातों का अख़्तियार दिया है, इस से मालूम होता है कि सूरः बराअत के दर्मियान से शुरु करने की सूरत में भी दोनों सूरतें जायज़ हैं।

फिर लिखा है कि 'अबुल ह़सन साख़्वी' ने अपनी किताब 'जमालुल् क़ुर्आन' में सूरः बराअत के दर्मियान से तिलावत की शुरुअ़ात करने की सूरत में 'बिस्मिल्लाह' पढ़ने का जायज़ होना लिखा है और 'अबुल इस्ह़ाक़ जअ़बरी' का रुझान न पढ़ने की तरफ़ है। फिर आख़िर में इब्नुल् जज़्री ने दोनों बातों की ताईद की है और कोई फ़ैसला नहीं दिया। इस तरह़ वह भी इस के क़ायल हैं यानी पढ़ना न पढ़ना दोनों की गुन्जाइश है।

नोट– यह जो बाज़ मुसाह़िफ़ (क़ुर्आन) हैं सूरः तौबः के शुरु में ह़ाशिया पर "अऊज़ूबिल्लाह मिनन्नार वमन ग़ज़बुल् जब्बार व मन शराफ़ुल कुफ़्फ़ार" लिखा हुआ है और बहुत से ह़ाफ़िज़ इस के पढ़ने को मुस्तह़ब या सुन्नत समझते हैं, इस का कोई सुबूत नहीं है। (फ़तावा अल् रशीद)

आयत नं० 1 से 11 तक

بَرَآءَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ فَسِيْحُوْا فِي الْاَرْضِ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ
مُعْجِزِي اللّٰهِ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ مُخْزِي الْكٰفِرِيْنَ ۝ وَاَذَانٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْاَكْبَرِ اَنَّ اللّٰهَ بَرِيْٓءٌ مِّنَ
الْمُشْرِكِيْنَ ۙ وَرَسُوْلُهٗ ۭ فَاِنْ تُبْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللّٰهِ ۭ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝ اِلَّا الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ثُمَّ لَمْ يَنْقُصُوْكُمْ شَيْـًٔا وَّلَمْ يُظَاهِرُوْا عَلَيْكُمْ اَحَدًا فَاَتِمُّوْٓا اِلَيْهِمْ
عَهْدَهُمْ اِلٰى مُدَّتِهِمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ۝ فَاِذَا انْسَلَخَ الْاَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ
وَخُذُوْهُمْ وَاحْصُرُوْهُمْ وَاقْعُدُوْا لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ ۚ فَاِنْ تَابُوْا وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَخَلُّوْا سَبِيْلَهُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَاِنْ اَحَدٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ اسْتَجَارَكَ فَاَجِرْهُ حَتّٰى يَسْمَعَ كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ اَبْلِغْهُ مَاْمَنَهٗ ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا
يَعْلَمُوْنَ ۝ كَيْفَ يَكُوْنُ لِلْمُشْرِكِيْنَ عَهْدٌ عِنْدَ اللّٰهِ وَعِنْدَ رَسُوْلِهٖٓ اِلَّا الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ فَمَا
اسْتَقَامُوْا لَكُمْ فَاسْتَقِيْمُوْا لَهُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ۝ كَيْفَ وَاِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوْا فِيْكُمْ اِلًّا وَّلَا ذِمَّةً ۭ
يُرْضُوْنَكُمْ بِاَفْوَاهِهِمْ وَتَاْبٰى قُلُوْبُهُمْ ۚ وَاَكْثَرُهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝ اِشْتَرَوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِهٖ ۭ
اِنَّهُمْ سَاۗءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ لَا يَرْقُبُوْنَ فِيْ مُؤْمِنٍ اِلًّا وَّلَا ذِمَّةً ۭ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُعْتَدُوْنَ ۝ فَاِنْ تَابُوْا وَاَقَامُوا
الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَاِخْوَانُكُمْ فِي الدِّيْنِ ۭ وَنُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝

अनुवाद-

(1) बरी (विरक्ति) होने का एलान है अल्लाह और उसके रसूल की ओर से, जिन मुश्रिकों (बहुदेववादियों) से तुमने अ़हद (समझौते) किये थे; (2) "अब तुम ज़मीन में चार महीने चल फिर लो, और जान लो! कि तुम अल्लाह को आजिज़ न कर सकोगे, और यह भी कि अल्लाह काफ़िरों को अपमानित करने वाला है"। (3) और आम एलान किया जाता है, अल्लाह और उसके रसूल की ओर से लोगों के लिए बड़े हज के दिन, ''अल्लाह (ज़िम्मेदारी से) बरी है मुश्रिकों से और उसका रसूल भी; अगर अब भी तुम तौबः कर लो, तो यह तुम्हारे लिए अच्छा है; और अगर तुम मुँह मोड़ते हो तो तुम अल्लाह के क़ाबू से बाहर नहीं जा सकते;'' और शुभ सूचना (ख़बर) सुना दीजिए! काफ़िरों को दुख देने वाले अ़ज़ाब की; (4) सिवाय उन मुश्रिकों के जिनसे तुमने अ़हद (सन्धि) किया, फिर उन्होंने उसको निभाने में कोई कमी नहीं की, और न तुम्हारे ख़िलाफ़ किसी की मदद की, तो ऐसे समझौते को उनके निर्धारित समय तक पूरा करो, (कि) अल्लाह मुत्तिक़यों (परहेज़गारों) को पसंद करता है। (5) फिर जब ह़राम (आदर वाले) महीने गुज़र जाएँ तो (इन लड़ने वाले) मुश्रिकों को जहाँ कहीं पाओ (अर्थात कअ़बः के पास ही क्यों न हों) क़त्ल करो, उन्हें पकड़ो, और घेरो और हर घात की जगह उनकी ताक़ में बैठो, फिर अगर वे तौबः कर लें और नमाज़ क़ायम करें, और ज़कात दें, तो उनका रास्ता छोड़ दो; बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला, रह़म वाला है। (6) और अगर मुश्रिकों में से कोई तुम से पनाह माँगे तो तुम उसे पनाह (शरण) दे दो, यहाँ तक कि अल्लाह का कलाम (वाणी) सुन लें, फिर उन्हें उनके सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दो, यह इसलिए कि ये लोग जानते नहीं; (7) इन मुश्रिकों का

कोई अ़हद (सन्धि) अल्लाह और उसके रसूल के नज़दीक़ किस तरह क़ायम रह सकता है- सिवाय उन लोगों के जिन लोगों से तुमसे मस्जिदे ह़राम (कअ़बः) के पास मुआ़हिदा हुआ था (सन्धि), अगर वे क़ायम रहें, तो तुम भी अपने वचन पर क़ायम रहो, बेशक अल्लाह तक़्वा (परहेज़गारी) अपनाने वालों को पसंद करता है। (8) (उनसे अ़हद) किस तरह बाक़ी रह सकता है, (जबकि उनका ह़ाल यह है,) कि अगर वे तुम पर क़ाबू पा लें, तो तुम्हारे बारे में न नाते का ख़याल रखें और न अ़हद (वचन) का; यह मुँह से तो तुम्हें ख़ुश कर देते हैं मगर उनके दिल क़ुबूल नहीं करते, और उनमें अक्सर फ़ासिक़ (नाफ़रमान) हैं। (9) यह आयतों के बदले मामूली क़ीमत ह़ासिल करते और लोगों को अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं, बेशक बहुत बुरा है जो कुछ यह कर रहे हैं। (10) यह लोग किसी मोमिन के बारे में न तो नाते-रिश्ते का ख़याल रखते हैं, और न अ़हद (वचन) का, और यही लोग हैं जो ह़द (सीमा) से आगे बढ़ जाने वाले हैं। (11) फिर अगर यह तौबः कर लें, और नमाज़ क़ायम करें, और ज़कात दें; तो वे तुम्हारे दीनी भाई हैं, और 'हम' अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो जानना चाहें।

आयत नं० 1 से 11 तक की व्याख्या

1-2 بَرَآءَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ فَسِيْحُوْا فِى الْاَرْضِ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِى اللّٰهِ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ مُخْزِى الْكٰفِرِيْنَ ۝

अल्लाह तआ़ला और उस का रसूल

इस आयत की तफ़्सीर समझने के लिए समझ लिया जाए कि जिस वक़्त सूरः बराअत नाज़िल हुई उस वक़्त कुफ़्फ़ार की चार क़िस्में थीं।

पहली क़िस्म के तो वह लोग थे जिन से मक़ामे हुदैबिया में सन् 6 हि० में मुआ़हिदा हुआ था, जबकि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) अपने सह़ाबा (रज़ि०) के साथ उ़मरह के लिए तशरीफ़ ले गये थे। इस मौक़े पर मुश्रिकीन ने आप को मक्का में दाख़िल न होने दिया और बड़ी कोशिश करने पर दस साल के लिए सुलह़ करने पर आमादा हो गये।

इस सुलह़ में यह था कि एक गिरोह दूसरे गिरोह पर ह़मला नहीं करेगा और न कोई गिरोह किसी गिरोह के क़रीबी पर ह़मलाआवर होगा। फिर यह वाक़िआ़ पेश आया कि क़बीला बनी बक्र ने (जो क़ुरैश का हिमायती था) रात के वक़्त क़बीला बनी ख़ुज़ाआ़ पर ह़मला कर दिया और क़ुरैशे मक्का ने बनी बक्र को हथियार दिये और अपने जवान उनकी मदद के लिए भेजे। इस तरह़ से क़ुरैश ने अ़हद (सन्धि) की ख़िलाफ़वर्ज़ी की, क्योंकि बनी ख़ुज़ाआ़ पर ह़मला करने वालों के मददगार बन गये जो मुसलमानों के दुश्मन थे।

यानी क़ुरैशे मक्का जिन्होंने हुदैबिया के मुआ़हिदा (सन्धि) को तोड़ दिया था वह तो किसी रिआ़यत और मोहलत के ह़क़दार न थे उन को तो बिना मोहलत ही जज़ीर-ए-अ़रब से निकाल देना या क़त्ल कर

देना दुरुस्त था, लेकिन फिर भी अश्हरुल् हुरूम का ज़माना होने की वजह से उन के साथ यह रिआ़यत की गई कि अश्हरुल् हुरूम (जंग बंदी के महीने) में उन से न लड़ा जाए और अश्हरूल् हुरूम गुज़र जाने के बाद उन के क़त्ल का हुक्म दिया गया और साथ ही यह भी फ़रमाया कि अगर यह सफ़र से रुक जाएँ और इस्लाम के काम करने लगें तो न उन्हें क़त्ल करें न क़ैद करें।

दूसरा गिरोह वह था जिन से किसी ख़ास वक़्त के लिए सुलह़ का मुआ़हिदा किया गया था वह इस पर क़ायम रहे अ़हद (सन्धि) न तोड़ा तो उन के बारे में यह हुक्म दिया فَأَتِمُّوا إِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ कि उन के मुआ़हिदे को उसकी मुद्दत तक पूरा करो क्योंकि अ़हद (वादे) की ख़िलाफ़वर्ज़ी अहले ईमान का तरीक़ा नहीं है।

जब दूसरा गिरोह अपना अ़हद (वादे) पूरा कर रहा है तो अहले ईमान तो और ज़्यादा अ़हद पूरा करने का एहतिमाम करें। यह हुक्म क़बीला 'बनी ज़मुरह' और 'बनी मुद्लज' के बारे में था। अगर अहले ईमान अ़हद (वादे) की ख़िलाफ़वर्ज़ी करेंगे तो तक़्वा के ख़िलाफ़ होगा। मोमिन का काम है कि तक़्वा अख़्तियार करे इसीलिए आख़िर में फ़रमाया إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ (बिलाशुब्हा अल्लाह तक़्वा वालों को पसन्द फ़रमाता है।)

तीसरा गिरोह (जिन से किसी मुद्दत के तय किये बग़ैर मुआ़हिदा हुआ था) और चौथा गिरोह (जिन से किसी क़िस्म का मुआ़हिदा न था) उन के बारे में सूरः बराअत के शुरु से लेकर وَبَشِّرِ الَّذِينَ كَفَرُوا بِعَذَابٍ أَلِيمٍ यहाँ तक तीन आयात में एलान फ़रमाया और उन को चार महीने की मुद्दत दी गई और काफ़िरों से फ़रमाया कि तुम अल्लाह को बेबस नहीं कर सकते। अ़रब की ज़मीन पर चार महीने चलो फिरो और चार माह के बाद यह न समझना कि जज़ीरतुल् अ़रब से चले गये तो अल्लाह तआ़ला की गिरफ़्त से आज़ाद हो जाओगे तुम अल्लाह तआ़ला को बेबस नहीं कर सकते, वह काफ़िरों को ज़रूर ज़लील करेगा। यह इशारा उन लोगों की तरफ़ है जिन से कोई अ़हद (सन्धि) था और उसकी मीआ़द (समय) मुक़र्रर न थी, लेकिन इस में वह लोग भी दाख़िल हो गये जिन से कुछ भी मुआ़हिदा न था।

ह़ज़रत बरा (रज़ि०) बिन आ़ज़िब से रिवायत है कि आख़िरी सूरत जो मुकम्मल नाज़िल हुई वह सूरः बराअत है और आख़िरी आयात सूरः निसा की नाज़िल हुईं। **(बुख़ारी)**

3-4 وَأَذَانٌ مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْأَكْبَرِ أَنَّ اللَّهَ بَرِيءٌ مِّنَ الْمُشْرِكِينَ ۙ وَرَسُولُهُ
فَإِن تُبْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۖ وَإِن تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللَّهِ ۗ وَبَشِّرِ الَّذِينَ كَفَرُوا
بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۝ إِلَّا الَّذِينَ عَاهَدتُّم مِّنَ الْمُشْرِكِينَ ثُمَّ لَمْ يَنقُصُوكُمْ شَيْئًا وَلَمْ يُظَاهِرُوا
عَلَيْكُمْ أَحَدًا فَأَتِمُّوا إِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ إِلَىٰ مُدَّتِهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ۝

मुश्रिकीन से बराअत का एलान

बराअत के मतलब को दोबारा وَأَذَانٌ مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ फ़रमा कर दोहरा दिया और 9 हिज्री में जो ह़ज हुआ (वह ह़ज फ़तेह़ मक्का के बाद पहला ह़ज था।) उस में ह़ज़रत अबू बक्र और ह़ज़रत अ़ली

रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा के ज़रिये ह़ज में एलान करवा दिया कि अल्लाह और उस का रसूल मुश्रिकीन से बरी है और इस के अ़लावा भी बाज़ चीज़ों का एलान करवाया गया था। ह़ज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) ने ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) को एलान करने पर लगाया।

ह़ज़रत अ़ली (रज़ि०) कहते हैं मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से ह़ज अक्बर के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि क़ुर्बानी का दिन ह़ज अक्बर (यौमुल् फ़ख़्र) है। **(तिर्मिज़ी)**

ह़ज अस्ग़र यानी उ़मरह। कुछ लोगों को ग़लतफ़हमी है कि ह़ज अक्बर उसे कहते हैं जो जुमअ़ के दिन आये, यह बात ग़लत है।

मुश्रिक ह़ज न करें-

सह़ीह़ बुख़ारी भाग 2, पेज नं० 271 में ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से नक़्ल किया गया है कि उन्होंने बयान फ़रमाया कि जिस ह़ज में रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने ह़ज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) को अमीर बनाकर भेजा था उस में उन्होंने यौमुन्न नह़र (ज़िल्ह़िज्जा की दस्वीं तारीख़ को) जिन लोगों को एलान करने के लिए भेजा था उन में मैं भी था, ताकि यह लोग मिना में एलान कर दें।

الا لا يحج بعد العام مشرک ولا يطوف بالبيت عُريان - (ख़बरदार इस साल के बाद कोई मुश्रिक ह़ज न करे और कोई शख़्स नंगे होने की ह़ालत में बैतुल्लाह का तवाफ़ न करे।)

मुश्रिकीन नंगे होकर बैतुल्लाह का तवाफ़ किया करते थे, इसलिए यह एलान करवाया। ह़ज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) को रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने अमीरे ह़ज बनाकर भेज दिया था, फिर पीछे से ह़ज़रत अ़ली (रज़ि०) को भी भेजा ताकि उन के ज़रिये एलान करवाया जाए और वजह उसकी यह थी कि आप की ख़िद्मत में यह राय पेश की गई थी कि अहले अ़रब का यह तरीक़ा है कि अ़हद (सन्धि) रखने और अ़हद तोड़ने के बारे में उसी शख़्स के एलान को मोअ़तबर समझते थे जो ख़ास उसी क़बीले (बिरादरी) का हो जिस से मुआ़हिदा था।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) का मुआ़हिदा क़बीले की हैसियत से तो न था मुसलमानों की जमाअ़त का इमाम होने की हैसियत और दीने इस्लाम की तरफ़ से था, लेकिन शक था कि लोग उसे बनी हाशिम का मुआ़हिदा समझें इसलिए ह़ज़रत अ़ली (रज़ि०) को भेजना मुनासिब समझा जो बनी हाशिम में ही के थे। ह़ज़रत अ़ली सूरः बराअत के मुताबिक़ एलान करते थे और मुश्रिकीन को पूरी तरह एलान सुनाते थे चूंकि इतने बड़े इज्तिमाअ़ में एक शख़्स काफ़ी न था, इसलिए ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) और दूसरे ह़ज़रात को भी ह़ज़रत अबू बक्र (रज़ि०) ने इस काम पर लगाया।

'मुआ़लिमुत्तन्ज़ील' भाग 2 पेज नं० 267 में ज़ैद बिन रबीअ़ से नक़्ल किया गया है कि उन्होंने ह़ज़रत अ़ली (रज़ि०) से सवाल किया कि आप को इस ह़ज में क्या पैग़ाम देकर भेजा गया था (जिस में आप एलान करने पर लगाए गये थे) उन्होंने फ़रमाया कि मुझे चार चीज़ों का एलान करने का हुक्म हुआ था। एक यह कि आइन्दा बैतुल्लाह का तवाफ़ कोई शख़्स नंगा होने की ह़ालत में न करे।

दूसरे यह कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) का जिस क़बीले से कोई मुआ़हिदा हो तो वह मुआ़हिदा (सन्धि) सिर्फ़ अपनी मुद्दत तक है और जिस से कोई मुआ़हिदा नहीं उस को चार माह की मोहलत दी जा रही है। (चार माह तक ज़मीन में चलें फिरें मुसलमान उन से कोई मुक़ाबिला न करेंगे, इस मुद्दत के ख़त्म हो जाने के बाद उन के ख़ून के हि़फ़ाज़त की कोई ज़िम्मेदारी न होगी।

तीसरे यह कि जन्नत में मोमिन के सिवा कोई शख़्स दाख़िल न होगा।

चौथे यह कि इस साल के बाद मुश्रिकीन और मुस्लिम (ह़ज में) जमा न होंगे यानी किसी मुश्रिक को इस साल के बाद ह़ज करने की इजाज़त न होगी।

'साहि़बे मुआ़लिमुत्तन्ज़ील' भाग 2 पेज नं० 266 में लिखते हैं कि यह चार माह की जो मुद्दत मुक़र्रर की गई है कि उस के बाद अमान न होगी उसकी शुरुआ़त ह़ज के दिन से है जिस में बरी होने का ए़लान किया गया था और यह मुद्दत दस ज़िल्ह़िज्ज से लेकर दस रबीउल् आख़िर तक थी। इस तरह़ मुद्दत का शुमार ए़लान के बाद ही मोअ़तबर हो सकता है।

ह़ज़रत ज़ैद (रज़ि०) कहते हैं कि-

हम ने सय्यदना अ़ली (रज़ि०) से पूछा कि ह़ज में आप को क्या पैग़ाम देकर भेजा गया था? उन्होंने जवाब दिया कि चार बातें। एक यह कि नंगा होकर बैतुल्लाह का तवाफ़ न करें। दूसरे जिस काफ़िर के साथ नबी (सल्ल०) का मुआ़हिदा सुलह़ हुआ है, वह मुआ़हिदा मुद्दत मुक़र्ररह तक बह़ाल रहेगा और तीसरे जिन के साथ कोई मुआ़हिदा नहीं उन के लिए चार माह की मुद्दत है कि अगर वह इस्लाम क़ुबूल कर ले तो जन्नत में दाख़िल होंगे या फिर यहाँ से चले जाएँ चौथे यह कि इस साल के बाद मुश्रिक और मुसलमान ह़ज में जमा न होंगे। **(तिर्मिज़ी)**

5 فَإِذَا انْسَلَخَ الْأَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِينَ حَيْثُ وَجَدْتُمُوهُمْ وَخُذُوهُمْ وَاحْصُرُوهُمْ وَاقْعُدُوا لَهُمْ
كُلَّ مَرْصَدٍ ۚ فَإِنْ تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَآتَوُا الزَّكٰوةَ فَخَلُّوا سَبِيلَهُمْ ۚ إِنَّ اللّٰهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

'ह़ज़रत मुजाहिद' और 'इब्ने इस्ह़ाक़' ने फ़रमाया कि इस आयत में जिन महीनों का ज़िक्र हुआ है इन से वही महीने मुराद हैं जिन का शुरु सूरत में ज़िक्र आया है। जिन लोगों के साथ कोई मुआ़हिदा अनिश्चित समय का था और जिन से कोई अ़हद (सन्धि) न था उन को चार माह की मोहलत दी गई और जिन्होंने अ़हद की ख़िलाफ़वर्ज़ी किया यानी क़ुरैशे मक्का उन को चार माह की मुद्दत में से बीस दिन ज़िल् ह़िज्ज के और पूरा महीना मुह़र्रम का गुज़र जाने तक की मोहलत दी। 'साहि़बे' मुआ़लिमुत्तन्ज़ील ने यह भी बात लिखी है।

साहि़बे 'रूहुल् मआ़नी' ने भी यूँ ही लिखा है कि अशहरुल् हुरूम से वह महीने मुराद नहीं हैं जो अ़रब में मशहूर थे (यानी ज़ीक़अ़दह, ज़िल्ह़िज्ज, मुह़र्रम और रजब।)

(अहले अ़रब इन महीनों में क़िताल नहीं करते थे और इस्लाम के शुरु दौर में भी उन में क़िताल करना मना था।)

यह इसलिए फ़रमाया कि जिस वक़्त बराअत का ए़लान हुआ था............................ ...उन में से सिर्फ़ बीस दिन ज़िल्ह़िज्ज के और एक महीना मुह़र्रम का बाक़ी रह गया था और रजब

तक पहुँचने के लिए बीच में पाँच महीने का फ़ासला था अगर उन पाँच महीनों को भी हिसाब में लगा दिया जाए तो वक़्त लम्बा हो जाता हालांकि चार महीनों से ज़्यादा किसी को मोहलत नहीं दी गई। आयते करीमा में यह फ़रमाया कि जब अश्हरुल् हुरूम निकल जाएँ तो मुश्रिकीन को क़त्ल करो जहाँ पाओ उनको पकड़ो और उन्हें रोक लो।

रोकने की तफ़्सीर करते हुए हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) ने फ़रमाया कि उन को क़िला बन्द कर दो, बाहर निकलने से रोक दो और उन के लिए हर घात की जगह में बैठ जाओ यानी मक्का के रास्तों में बैठो, मुश्रिकीन को वहाँ दाख़िल न होने दो فَإِنْ تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَآتَوُا الزَّكٰوةَ فَخَلُّوا سَبِيلَهُمْ (इस की तफ़्सीर के लिए सूरः अनफ़ाल की आयत नं० 40 को देखें कि जहाँ पाओ क़त्ल करो का मतलब यह नहीं है कि पूरी दुनिया के काफ़िरों को जहाँ पाओ क़त्ल करो बल्कि यह एक ख़ास वक़्त और ख़ास जगह यानी हरम मक्का के बारे में है।) यानी अगर वह शिर्क से तौबः कर लें और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात अदा करें तो उन का रास्ता छोड़ दो। उन पर चलने फिरने और मक्का में दाख़िल होने पर कोई पाबन्दी नहीं।

إِنَّ اللّٰهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ۝ (बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।) जब इस्लाम कुबूल कर लिया तो ज़माने कुफ़्र में जो कुछ किया था सब ख़त्म हो गया उस पर कोई गिरिफ़्त नहीं।

وَاحْصُرُوهُمْ से दुश्मनों का मुहासिरा करना जायज़ मालूम हुआ और وَاقْعُدُوا لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ से मालूम हुआ कि दुश्मनों से हिफ़ाज़त के लिए उन से चौकन्ना रहने के लिए अपने मुल्कों और शहरों में चौकियाँ मुक़र्रर करने की ज़रुरत है।

अ़ल्लामा अबू बक्र जिसास एहकामुल् क़ुर्आन भाग 3 पेज नं० 83 में लिखते हैं कि-

فَإِنْ تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَآتَوُا الزَّكٰوةَ فَخَلُّوا سَبِيلَهُمْ से मालूम हुआ कि जब कोई शख़्स शिर्क व कुफ़्र से तौबः कर ले तो उसे क़त्ल न किया जाए। अल्बत्ता हुक्म बाक़ी रहेगा। जो शख़्स जानबूझ कर नमाज़ छोड़े और उस पर इस्रार करे और ज़कात न दे चाहे नस्ली मुसलमान ही क्यों न हो, इमाम मुस्लिमीन के लिए जायज़ है कि उसे क़ैद रखे। उस का छोड़ देना उस वक़्त तक वाजिब नहीं जब तक कि वह नमाज़ न पढ़े और ज़कात न दे।

6 وَإِنْ أَحَدٌ مِّنَ الْمُشْرِكِينَ اسْتَجَارَكَ فَأَجِرْهُ حَتّٰى يَسْمَعَ كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ أَبْلِغْهُ مَأْمَنَهُ ۚ ذٰلِكَ
بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْلَمُونَ۝

وَإِنْ أَحَدٌ مِّنَ الْمُشْرِكِينَ اسْتَجَارَكَ فَأَجِرْهُ حَتّٰى يَسْمَعَ كَلٰمَ اللّٰهِ (अगर कोई मुश्रिक आप से पनाह मांगे तो उसे पनाह दीजिए, यहाँ तक कि वह अल्लाह का कलाम सुने।)

काफ़िरों को पनाह-

अ़ल्लामा अबू बक्र जिसास (रह०) फ़रमाते हैं कि इस आयत से मालूम हुआ कि जब कोई काफ़िर हर्बी (दुश्मन मुल्क के काफ़िर) अमान तलब करे तो उसे अमान देना जायज़ है। वह अमान तलब कर

के मुसलमानों के पास आये अल्लाह का कलाम सुने, तौहीद को समझे नबी अक्रम (सल्ल०) की नुबूव्वत के दलायल मालूम करे तो उस के लिए मौक़ा दिया जाए।

काफ़िर को समझाये बिना मारना जायज़ नहीं-

इस से यह भी मालूम हुआ कि जब कोई काफ़िर हम से तौहीद और रिसालत की माँग करे ताकि वह समझने के बाद दोनों बातों को मान ले तो हमारे ज़िम्मे वाजिब होगा कि पूरी तरह़ हुज्जत क़ायम करें और तौहीद व रिसालत को साफ़ तौर से बयान करें और जब कोई शख़्स हम से तौहीद और रिसालत की दलीलें माँगे तो दलायल बयान करने और समझाने बुझाने से पहले उस को क़त्ल करना जायज़ नहीं। फिर लिखते हैं कि ثُمَّ اَبْلِغْهُ مَاْمَنَهٗ से मालूम हुआ कि इमामुल् मुस्लिमीन पर वाजिब है कि जो काफ़िर ह़र्बी अमान लेकर आये उसकी ह़िफ़ाज़त करे ताकि कोई शख़्स उसे क़त्ल न कर दे और किसी तरह़ की तक्लीफ़ न पहुँचाए। इस से यह भी मालूम हुआ कि जो लोग अहले ज़िम्मा हैं, इमाम मुस्लिमीन के ज़िम्मे उनकी ह़िफ़ाज़त वाजिब है ताकि कोई मुसलमान उन पर ज़ुल्म व ज़्यादती न करे।

काफ़िर ह़र्बी (दुश्मन मुल्क का काफ़िर) को वापस उन के अमन की जगह पहुँचाने का जो हुक्म है उस से यह भी मालूम हुआ कि काफ़िर ह़र्बी को दारुल् इस्लाम में मुस्तक़िल तौर पर क़याम न करने दिया जाए। इस में ह़न्फ़िया का मज़हब यह है कि अगर एक साल दारुल् इस्लाम में रह गया तो ज़िम्मी हो जाएगा और अहले ज़िम्मा के अह़काम उस पर लागू होंगे जिज़्या भी मुक़र्रर कर दिया जाएगा।

(अह़कामुल् क़ुर्आन भाग 3 पेज नं० 83-84)

फिर फ़रमाया ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْلَمُوْنَ यह हुक्म इस वजह से है कि वह ऐसे लोग हैं जो नहीं जानते (कि इस्लाम क्या है और दअ़वते इस्लाम की क्या ह़क़ीक़त है और इस्लाम क़ुबूल करने की क्या ज़रुरत है?) فلا بد من اعطائهم الامان حتى يسمعوا أو يفهموا الحق (भाग 2 पेज नं० 117)

नोट- يوم الحج الاكبر से अय्यामे ह़ज मुराद हैं। ख़ासतौर से वह दिन जिन में मिना में क़याम होता है। लफ़्ज़ यौम को बतौरे जिन्स लाया गया है और अल् ह़ज़्ज़िल् अक्बर से क्या मुराद है? ह़ज़रत जुहरी शाअ़बी और अ़ता ने फ़रमाया कि इस से ह़ज मुराद है क्योंकि उ़मरह ह़ज अस्ग़र है और ह़ज, ह़ज्जे अकबर है। ह़ज्जे अकबर का वह माने जो मशहूर है कि यौमे अ़रफ़ा जुमअ़ के दिन हो यहाँ वह माने मुराद नहीं। अब रही यह बात कि जुमअ़ के दिन ह़ज हो तो उसकी फ़ज़ीलत दूसरे ह़जों से ज़्यादा है या नहीं? बाज़ रिवायात से इसकी फ़ज़ीलत आ़म ह़जों से सत्तर गुना ज़्यादा मालूम होती है। मुल्ला अ़ली क़ारी (रह़०) ने इस बारे में "الحظ الاوفر في الحج الاكبر" के नाम से एक रिसाला लिखा है, उस को देखा जा सकता है।

7-10 كَيْفَ يَكُوْنُ لِلْمُشْرِكِيْنَ عَهْدٌ عِنْدَ اللّٰهِ وَعِنْدَ رَسُوْلِهٖٓ اِلَّا الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ
الْحَرَامِ ۚ فَمَا اسْتَقَامُوْا لَكُمْ فَاسْتَقِيْمُوْا لَهُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ۝ كَيْفَ وَاِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ
لَا يَرْقُبُوْا فِيْكُمْ اِلًّا وَّلَا ذِمَّةً ۗ يُرْضُوْنَكُمْ بِاَفْوَاهِهِمْ وَتَاْبٰى قُلُوْبُهُمْ ۚ وَاَكْثَرُهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝

اِشْتَرَوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ لَا
يَرْقُبُوْنَ فِيْ مُؤْمِنٍ اِلًّا وَّلَا ذِمَّةً ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُعْتَدُوْنَ ۝

इन आयात में पहले तो मुश्रिकीन की वादा ख़िलाफ़ी के मिज़ाज का ज़िक्र फ़रमाया और फ़रमाया कि उन का अ़हद अल्लाह और उस के रसूल के नज़्दीक कोई हैसियत नहीं रखता। उन्होंने पहले भी अ़हद तोड़ा है और आइन्दा भी तोड़ते रहेंगे। उन का हाल यह है कि ज़ाहिर में ज़बानों से अ़हद है और दिलों में बुग़्ज़ की आग है अगर मुसलमानों पर ग़ल्बा पा जाएँ तो न किसी रिश्तेदारी का लिहाज़ करें और न किसी मुआ़हिदा की ज़िम्मेदारी का, बस यह मुसलमानों को अपनी ज़बानी बातों से राज़ी रखना चाहते हैं। (अ़हद को पूरा करने और इताअ़त का ज़बानी वादा करते हैं) और उन के दिल उन की अपनी ज़बानी बातों से राज़ी नहीं हैं, उन में अक्सर फ़ासिक़ हैं, यानी शरारत से भरे हुए हैं कि किसी भी अ़हद (सन्धि) की पाबन्दी करने को तैयार नहीं। कहीं कोई शख़्स अ़हद की पासदारी करना चाहे तो उसकी बात चलने वाली नहीं है। यह लोग अल्लाह के हुक्मों को क़ुबूल नहीं करते क्योंकि इन के सामने कमतर दुनिया है। इन्होंने दुनिया को ले लिया और अल्लाह के हुक्मों को छोड़ दिया।

थोड़ी सी दुनिया के जाने का जो वहम (शंका) था उसकी वजह से इन्होंने ईमान क़ुबूल न किया क्योंकि जो शख़्स दुनिया ही को सामने रखेगा वह अल्लाह के रास्ते पर नहीं चल सकता। ऐसे लोग ख़ुद भी ईमान क़ुबूल नहीं करते और दूसरों को भी ईमान क़ुबूल नहीं करने देते, जिन कामों में यह लगे हुए हैं उन के यह काम बुरे हैं।

لَا يَرْقُبُوْا فِيْكُمْ اِلًّا وَّلَا ذِمَّةً ؕ (किसी मोमिन के बारे में उन के पास न क़राबतदारी की रिआ़यत है, न मुआ़हिदा की पासदारी है) وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُعْتَدُوْنَ ۝ और यह वह लोग हैं जो ज़ुल्म व ज़्यादती करने वाले हैं كَيْفَ يَكُوْنُ لِلْمُشْرِكِيْنَ عَهْدٌ عِنْدَ اللّٰهِ وَ عِنْدَ رَسُوْلِهٖٓ फ़रमाने के बाद फिर यूँ फ़रमायाः-

اِلَّا الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ इस में उन लोगों का ज़िक्र है जिन से मस्जिदे ह़राम के क़रीब अ़हद (सन्धि) हुआ था और जो अपने अ़हद पर क़ायम रहे और उनकी मुद्दत मुआ़हिदा बाक़ी थी जिसे बनी कनाना और बनी जमुरह जैसे लोगों के बारे में हुक्म दिया कि उनके अ़हद की रिआ़यत करो। فَمَا اسْتَقَامُوْا لَكُمْ जब तक वह तुम्हारे साथ सीधे रहें यानी मुद्दते मुआ़हिदा में अ़हद न तोड़ें।) فَاسْتَقِيْمُوْا لَهُمْ (तुम भी उन के साथ सीधे रहो) यानी अ़हद पूरा करो और अ़हद की ख़िलाफ़वर्ज़ी न करो क्योंकि यह तक़्वा के ख़िलाफ़ है और अल्लाह तआ़ला अहले तक़्वा को दोस्त रखता है।

इस में اَتِمُّوْٓا اِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ के मज़मून को दोहराया है और इतनी बात ज़ायद है कि जब तक वह क़ायम रहें तुम भी क़ायम रहो अगर वह अ़हद तोड़ दें तो तुम पर अ़हद पूरा करने की पाबन्दी नहीं। साह़िबे रूहुल् मआ़नी ने भी यही बात कही है फ़रमाते हैंः-

وَاَيْضًا ما كان لحكم الامر بالاستقامة ينتهى بانتهاء مدة العهد فيرجع هذا الى الامر بالاتمام المار اه (ص ۲۴۹)

11 فَاِنْ تَابُوْا وَ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَاِخْوَانُكُمْ فِى الدِّيْنِ ؕ وَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝

आख़िर में फ़रमाया कि यह लोग अगर कुफ़्र से तौबः कर लें और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात अदा करें तो फिर तुम्हारे दीनी भाई होंगे। (उन से लड़ने का कोई मौक़ा नहीं) وَنُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ (और हम उन लोगों के लिए जो जानते हैं और समझते हैं अपनी आयात तफ़्सील से बयान करते हैं) ताकि अक़्ल से काम लें और हर बात समझें और ख़ुदा के हुक्मों के पाबन्द रहें।

आयत नं० 12 से 22 तक

وَاِنْ نَّكَثُوْٓا اَيْمَانَهُمْ مِّنْ بَعْدِ عَهْدِهِمْ وَطَعَنُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ فَقَاتِلُوْٓا اَئِمَّةَ الْكُفْرِ ۙ اِنَّهُمْ لَآ اَيْمَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَنْتَهُوْنَ ۝
اَلَا تُقَاتِلُوْنَ قَوْمًا نَّكَثُوْٓا اَيْمَانَهُمْ وَهَمُّوْا بِاِخْرَاجِ الرَّسُوْلِ وَهُمْ بَدَءُوْكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ ۭ اَتَخْشَوْنَهُمْ ۚ فَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ
تَخْشَوْهُ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ قَاتِلُوْهُمْ يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ بِاَيْدِيْكُمْ وَيُخْزِهِمْ وَيَنْصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ وَيَشْفِ صُدُوْرَ قَوْمٍ
مُّؤْمِنِيْنَ ۝ وَيُذْهِبْ غَيْظَ قُلُوْبِهِمْ ۭ وَيَتُوْبُ اللّٰهُ عَلٰي مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝ اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تُتْرَكُوْا
وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلَا رَسُوْلِهٖ وَلَا الْمُؤْمِنِيْنَ وَلِيْجَةً ۭ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ ۝ مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِيْنَ اَنْ يَّعْمُرُوْا مَسٰجِدَ اللّٰهِ شٰهِدِيْنَ عَلٰٓي اَنْفُسِهِمْ بِالْكُفْرِ ۭ اُولٰۗىِٕكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ښ وَفِي النَّارِ
هُمْ خٰلِدُوْنَ ۝ اِنَّمَا يَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ وَلَمْ يَخْشَ اِلَّا اللّٰهَ فَعَسٰٓى
اُولٰۗىِٕكَ اَنْ يَّكُوْنُوْا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ۝ اَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَاۗجِّ وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ
وَجٰهَدَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ لَا يَسْتَوٗنَ عِنْدَ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۙ اَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللّٰهِ ۭ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْفَاۗىِٕزُوْنَ ۝ يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ
وَرِضْوَانٍ وَّجَنّٰتٍ لَّهُمْ فِيْهَا نَعِيْمٌ مُّقِيْمٌ ۝ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۭ اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝

अनुवाद-

(12) और अगर अ़हद (वचन) करने के बाद अपनी क़समों को तोड़ डालें; और तुम्हारे दीन में ताने (तिरस्कार) करने लगें, तो फिर काफ़िरों (इन्कारियों) के सरदारों से युद्ध करो, इनकी क़समों का कोई भरोसा नहीं, यहाँ तक कि वे बाज़ (रुक) आ जाएँ। (13) क्या तुम ऐसे लोगों से क़िताल (जंग) नहीं करोगे, जिन्होंने अपनी क़समें तोड़ डालीं और रसूल को (उसके वतन से) निकालने का पक्का इरादा किया, और तुम्हारे विरुद्ध जंग करने में पहल की? क्या तुम ऐसे लोगों से डरते हो? तो (जान लो कि) अल्लाह इसका ज़्यादा हक़दार है कि तुम उससे डरो, अगर तुम ईमान वाले हो; (14) उनसे क़िताल (जंग) करो, अल्लाह तुम्हारे हाथों से उनको अ़ज़ाब में डालेगा, और अपमानित करेगा, और तुम को उन पर ग़ालिब (विजयी) करेगा; और ईमान रखने वालों के दिलों को ठंडा करेगा; (15) और उनके दिलों का क्रोध मिटाएगा, और अल्लाह जिसको चाहेगा, तौबः की तौफ़ीक़ देगा और अल्लाह बड़ा इल्म वाला, ह़िकमत वाला है। (16) क्या तुम लोगों ने यह समझ रखा है कि यूँ ही छोड़ दिये जाओगे; हालाँकि अल्लाह ने अभी उन लोगों को अलग ही नहीं किया, जिन्होंने तुममें से जिहाद किये, और अल्लाह और उसके रसूल और मोमिनों के सिवा किसी को दिली दोस्त नहीं बनाया? और अल्लाह उसकी ख़बर रखता है जो कुछ तुम करते हो। (17) यह मुश्रिकों का काम नहीं है कि वे अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करें, जबकि वे खुद अपने ख़िलाफ़ कुफ़्र की गवाही दे रहे हैं, यही वे लोग हैं कि इनके आ़माल अकारथ हो चुके, और यह आग में ही हमेशा पड़े रहेंगे। (18) अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करना तो उन लोगों का काम है, जो ईमान रखते हों अल्लाह और अन्तिम दिन पर, और पाबन्दी करते हों नमाज़ की और ज़कात देते रहते हों और अल्लाह के सिवा किसी से न डरते हों,

तो ऐसे ही लोगों के लिए उम्मीद है कि हिदायत (सीधा मार्ग) पाने वाले हैं। (19) क्या तुमने हाजियों को पानी पिलाने के काम, और मस्जिदे हराम (कअ़बः) के इन्तिज़ाम को, उस व्यक्ति के काम के बराबर ठहरा लिया है जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान लाया, और उसने अल्लाह की राह में जिहाद (संघर्ष) किया? यह अल्लाह के नज़दीक़ दोनों बराबर नहीं, और अल्लाह ज़ालिम लोगों को राह नहीं दिखाता। (20) जो लोग ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की, और अल्लाह की राह में अपने मालों और जानों से जिहाद किया, उनका दर्जा अल्लाह के नज़दीक बहुत बड़ा है, और वही कामियाब होने वाले हैं; (21) उनका 'रब' उन्हें ख़ुशख़बरी देता है, (अपनी) दया और प्रसन्नता की, और ऐसे बाग़ों की जहाँ उनके लिए हमेशा-हमेश की नेअ़मतें हैं; (22) उनमें वे हमेशा-हमेश रहेंगे, बेशक अल्लाह के पास बहुत बड़ा अज्र (बदला) है।

आयत नं० 12 से 22 तक की व्याख्या

12 وَاِنْ نَّكَثُوْٓا اَيْمَانَهُمْ مِّنْ بَعْدِ عَهْدِهِمْ وَطَعَنُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ فَقَاتِلُوْٓا اَئِمَّةَ الْكُفْرِ ۙ اِنَّهُمْ لَآ اَيْمَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَنْتَهُوْنَ ۝

इन आयात में क़ुरैशे मक्का की बद्अ़हदी (सन्धि के तोड़ने) का ज़िक्र है और उन से जंग करने की तर्ग़ीब है। इसलिए कि उन लोगों से 6 हि० में हुदैबिया के मक़ाम पर मुआ़हिदा हुआ था। जिस की दस शर्तों में से एक यह शर्त भी थी कि दस साल तक एक फ़रीक़ दूसरे फ़रीक़ पर ह़मला आवर न होगा और न कोई फ़रीक़ किसी फ़रीक़ के क़रीबी पर ह़मला करेगा और न किसी ह़मला आवर की मदद करेगा, लेकिन क़ुरैशे मक्का ने मुआ़हिदा तोड़ दिया और क़बीला बनू ख़ुज़ाआ {जो रसूलुल्लाह (सल्ल०) का हामी था} के ख़िलाफ़ क़ुरैशे मक्का ने क़बीला बनू बक्र पर हथियारों से और जवानों से मदद की। अब जबकि उन्होंने अपना अ़हद तोड़ डाला और न सिर्फ़ यह कि अ़हद तोड़ा बल्कि तुम्हारे दीन को बद्नाम किया तो उन से जंग करो।

فَقَاتِلُوْهُمْ के बजाय فَقَاتِلُوْٓا اَئِمَّةَ الْكُفْرِ फ़रमाया। इस से तमाम मुश्रिकीन क़ुरैश मुराद हैं जो पूरे अ़रब के मुश्रिकों के सरग़ना (सरदार) बने हुए थे, न ईमान क़ुबूल करते थे और न दूसरों को क़ुबूल करने देते थे और क़बायले अ़रब ने उन्हें अपना अगुवा बना रखा था जो इस इन्तिज़ार में थे कि यह लोग मुसलमान होंगे तो हम भी मुसलमान हो जाएँगे اَئِمَّةَ الْكُفْرِ से क़ुरैश के सरदार मुराद हैं, जैसे- अबू जेहल और सुहेल बिन अ़म्र और इक्रमा बिन अबी जेहल और अबू सुफ़्यान बिन ह़र्ब वग़ैरहुम।

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने इसी को अपनाया है। वह फ़रमाते थे कि यह आयत क़ुरैशे मक्का के सरदारों के बारे में नाज़िल हुई जिन्होंने अ़हद तोड़ा भी और रसूलुल्लाह (सल्ल०) को मक्का से जिलावतन (देश निकाला) करने का मश्वरह दारुन्नदवा में हुआ था। اِنَّهُمْ لَآ اَيْمَانَ لَهُمْ (उनकी क़समों की कोई ह़क़ीक़त नहीं) لَعَلَّهُمْ يَنْتَهُوْنَ (तुम उन से जंग करो ताकि यह तुम्हारे दीन में कमेन्ट करने और मुक़ाबिला में जंग के लिए खड़े होने से बाज़ आ जाएँ) और बाज़ ह़ज़रात ने फ़रमाया कि इस का मतलब यह है कि कुफ़्र से बाज़ आ जाएँ। **(मुआ़लिमुत्तन्ज़ील पेज नं० 272)**

क़ुरैशे मक्का तो अ़हद (सन्धि) तोड़ चुके थे फिर शर्त के साथ उनके अ़हद को तोड़ने को क्यों ज़िक्र फ़रमाया? 'साहिबे रुहुल् मआ़नी' लिखते हैं इस का मतलब यह है कि वह अ़हद तोड़ने पर क़ायम रहें और ईमान न लाए तो उन से क़िताल करो। मतलब यह है कि क़ुरैशे मक्का तो अ़हद तोड़ ही चुके हैं उन के अ़लावा आइन्दा भी काफ़िरों की जो जमाअ़त अ़हद तोड़े और तुम्हारे दीन पर कमेन्ट करे उन से जंग करना और कुफ़्र के सरग़नों को क़त्ल करना, इसलिए कि उन लोगों की क़समों का कोई एतिबार नहीं।

13 أَلَا تُقَاتِلُونَ قَوْمًا نَّكَثُوٓا أَيْمَانَهُمْ وَهَمُّوا بِإِخْرَاجِ الرَّسُولِ وَهُم بَدَءُوكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ
أَتَخْشَوْنَهُمْ ۚ فَاللَّهُ أَحَقُّ أَن تَخْشَوْهُ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ۝

(क्या तुम उन लोगों से क़िताल नहीं करते जिन्होंने अपनी क़समों को तोड़ दिया और रसूलुल्लाह (सल्ल०) को मक्का से निकाल देने का इरादा किया और फिर ख़ुद ही क़िताल की शुरुआ़त की?) यानी जब बनी ख़ुज़ाआ़ के मुक़ाबिले में (जो तुम्हारे दुश्मन थे) बनी बक्र की मदद की।

أَتَخْشَوْنَهُمْ ۚ فَاللَّهُ أَحَقُّ أَن تَخْشَوْهُ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ (क्या तुम उन से डरते हो और क़िताल नहीं करते और अल्लाह तआ़ला इस का ज़्यादा ह़क़्दार है कि तुम उस से डरो (उस का हुक्म मानो और क़िताल मत छोड़ो) अगर तुम मोमिन हो।

14 قَاتِلُوهُمْ يُعَذِّبْهُمُ اللَّهُ بِأَيْدِيكُمْ وَيُخْزِهِمْ وَيَنصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ وَيَشْفِ صُدُورَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِينَ ۝

इस आयत में क़िताल का हुक्म भी है और मदद का वादा भी फ़रमाया कि तुम उन से जंग करो अल्लाह तआ़ला उन को तुम्हारे हाथों अ़ज़ाब देगा और ज़लील करेगा और उन के मुक़ाबिले में तुम्हारी मदद फ़रमाएगा और यह भी फ़रमाया कि काफ़िरों की तरफ़ से जो वादा ख़िलाफ़ी हुई और जो उन्होंने इस्लाम को मिटाने के लिए ह़रकतें कीं उस से जो मुसलमानों के दिलों में रंज व ग़म है इस जंग के ज़रिये अल्लाह तआ़ला उस को भी दूर फ़रमाएगा। अहले ईमान के दिलों को अल्लाह तआ़ला शिफ़ा देगा उन के दिल ठंडे हो जाएँगे क्योंकि जंग के नतीजे में काफ़िर मक़्तूल और ज़लील होंगे और मुसलमान अपनी आँखों से काफ़िरों का बुरा अन्जाम देख लेंगे। (यह आयतें उस वक़्त के काफ़िरों के लिए हैं लेकिन इसी तरह़ बाद के लोग भी उन्हीं की तरह़ ह़रकत करेंगे तो उनके लिए भी यही हुक्म होगा।)

15-16 وَيُذْهِبْ غَيْظَ قُلُوبِهِمْ ۗ وَيَتُوبُ اللَّهُ عَلَىٰ مَن يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ أَمْ حَسِبْتُمْ
أَن تُتْرَكُوا وَلَمَّا يَعْلَمِ اللَّهُ الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوا مِن دُونِ اللَّهِ وَلَا رَسُولِهِ وَلَا
الْمُؤْمِنِينَ وَلِيجَةً ۚ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

وَيُذْهِبْ غَيْظَ قُلُوبِهِمْ और अल्लाह उन के दिलों की जलन (ईर्ष्या) को दूर फ़रमाएगा और अल्लाह तआ़ला जिस को चाहे तौबः नसीब फ़रमाये, तुम्हें जो हुक्म हुआ है वह करो। तुम्हारा काम क़िताल है और अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से जो तक़्दीर में है वह भी होगा। जिन लोगों को अल्लाह तआ़ला इस्लाम की तौफ़ीक़ देगा और कुफ़्र छोड़ने पर जो उन की तौबः क़ुबूल फ़रमाएगा यह अल्लाह तआ़ला का अपने

बन्दों पर फ़ज़्ल है, वह जिस पर चाहे अपना फ़ज़्ल फ़रमा दे। जिसे इस्लाम की नेअ़मत से नवाज़ना होगा वह तुम्हारे मुक़ाबिले आकर भी निकल जाएगा और इस्लाम क़ुबूल कर लेगा।

जैसा कि अबू सुफ़्यान और इक्रमा बिन जेहल और सुहेल बिन अ़म्र जो मुश्रिकीन के सरदार थे बाद में मुसलमान हो गये। وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ और अल्लाह जानने वाला है उसे मालूम है कि कौन इस्लाम क़ुबूल करेगा और कौन कुफ़्र पर मरेगा और वह हकीम भी है। वह अपनी हिक्मत के अनुसार जिस को चाहे नवाज़ दे, किसी का इस में दख़्ल नहीं है।

नोट– यहाँ यह सवाल होता है कि मक्का तो 8 हि० में फ़तेह़ हो चुका था और सूरः तौबः 9 हि० में नाज़िल हुई। फिर इन आयात में कौन से जिहाद की तर्ग़ीब दी गई है? इस सवाल का जवाब देते हुए 'साहिबे रूहुल् मआ़नी' भाग 10 पेज नं० 62 में लिखते हैं कि सूरः तौबः के शुरु की आयतें फ़तेह़ मक्का के बाद नाज़िल हुई थीं और यह आयात इस से पहले नाज़िल हो चुकी थीं। 1 हि० में और यह भी कहा जा सकता है कि क़ियामत तक आने वाले मुसलमानों को अल्लाह तआ़ाला ने अपनी मदद और नुस्रत की ख़ुशख़बरी दी है और यह बताया है कि अहले कुफ़्र से जो तुम्हें तक्लीफ़ पहुँचेगी और उनकी शरारतों की वजह से जो तुम्हारे दिल में ग़ुस्सा होगा अल्लाह तआ़ला उस को दूर कर देगा, तुम्हारी मदद फ़रमाएगा, काफ़िरों को ज़लील करेगा और तुम्हारे दिलों को काफ़िरों की ज़िल्लत दिखा कर शिफ़ा अ़ता फ़रमाएगा।

जिस तरह़ अहले मक्का में क़िताल के लिए बाज़ चीज़ें जमा हो गई थीं कि उन्होंने अपना वादा तोड़ा और तुम्हारे दीन में कमेन्ट किया और रसूलुल्लाह (सल्ल०) को जिला वतन (देश निकाला) करने का मश्वरह किया और मुसलमानों पर ह़मला करने की पहल की। इस तरह़ की बहुत सी बातें आइन्दा भी काफ़िरों से पेश आ सकती हैं।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) तो तुम्हारे दर्मियान न होंगे क्योंकि वह दुनिया से तशरीफ़ ले जा चुके होंगे और उन के बाद कोई नबी और रसूल भी नहीं आएगा, लेकिन इस तरह़ के वाक़िआत पेश आ सकते हैं। अगर ऐसा हो तो उन से लड़ो ताकि वह ज़लील हों और तुम्हारे दिल ठंडे हों। ख़िताब का रुख़ ह़ज़रात सह़ाबा (रज़ि०) को है, लेकिन उ़मूमी ख़िताब में सब मुसलमान दाख़िल हैं।

इस के बाद जिहाद की तर्ग़ीब देते हुए फ़रमाया اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تُتْرَكُوْا

क्या तुम्हारा यह ख़याल है कि तुम यूँ ही छोड़ दिये जाओगे और तुम्हारा इम्तिह़ान न होगा? ऐसा ख़याल न करो, इम्तिह़ान ज़रूर होगा और अल्लाह तआ़ला उन लोगों को जान लेगा जिन्होंने जिहाद किया और अल्लाह और उस के रसूल (सल्ल०) और मोमिनीन के सिवा किसी को राज़दार और दोस्त न बनाओ।

जिहाद करने वाले और दिल से अल्लाह तआ़ला और उस के रसूल (सल्ल०) और मोमिनीन से सच्ची मुह़ब्बत करने वाले अ़मली तौर पर उन लोगों से अलग होकर श्रेष्ठ हो जाएँगे जिन्होंने जिहाद से जान चुराई और जिन्होंने काफ़िरों और मुश्रिकों को राज़दार बनाया— यह इम्तिह़ान वाला मज़मून दूसरी आयात में भी है। जो सूरः निसा में गुज़र चुका है।

مَا كَانَ اللّٰهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلٰى مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتّٰى يَمِيْزَ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ ۭ

(अल्लाह तआ़ला मोमिनों को इस ह़ालत पर रखना नहीं चाहता जिस पर तुम अब हो जब तक कि पाक को नापाक से अलग न फ़रमा दे।)

और सूरः अ़न्कबूत *(आयत नं० 2)* में फ़रमाया हैः-

اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ يُّتْرَكُوْٓا اَنْ يَّقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُوْنَ ۝

(क्या लोगों ने गुमान किया है कि सिर्फ़ यूँ कहने से छोड़ दिये जाएँगे कि ईमान लाए और उन की जांच न की जाएगी।) आख़िर में फ़रमायाः-

وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝ (और अल्लाह तआ़ला तुम्हारे कामों से बाख़बर है) वह अपने इ़ल्म के मुताबिक़ जज़ा देगा।

17 مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِيْنَ اَنْ يَّعْمُرُوْا مَسٰجِدَ اللّٰهِ شٰهِدِيْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ بِالْكُفْرِ ۭ اُولٰۗىِٕكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ښ وَفِي النَّارِ هُمْ خٰلِدُوْنَ ۝

मुश्रिकीन इस के अहल नहीं

'मुआ़लिमुत्तन्ज़ील' भाग 2 पेज नं० 273 में ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) से नक़्ल किया गया है कि जब ग़ज़्व-ए-बद्र के मौक़े पर ह़ज़रत अ़ब्बास को क़ैद कर लिया गया तो मुसलमानों ने ह़ज़रत अ़ब्बास को कमेन्ट का निशान बनाया कि तुम कुफ़्र अख़्तियार किये हुए हो और तुम्हारे अन्दर रिश्ता तोड़ना भी है (क्योंकि रसूलुल्लाह (सल्ल०) को मुश्रिकीन ने मक्का से हिजरत करने पर मजबूर कर दिया था) और इस बारे में ह़ज़रत अ़ली (रज़ि०) ने सख़्त बातें कह दीं तो उस के जवाब में ह़ज़रत अ़ब्बास ने कहा कि आप लोग हमारी बुराईयाँ तो ज़िक्र करते हैं, क्या बात है कि हमारी ख़ूबियाँ ज़िक्र नहीं करते? ह़ज़रत अ़ली (रज़ि०) ने फ़रमाया, क्या तुम्हारे पास ख़ूबियाँ भी हैं?

ह़ज़रत अ़ब्बास (रज़ि०) ने कहा कि हाँ! हम मस्जिदे ह़राम को आबाद करते हैं, कअ़बः की दरबानी करते हैं और हुज्जाज को पानी पिलाते हैं। इस पर अल्लाह तआ़ला ने यह आयते करीमा مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِيْنَ اَنْ يَّعْمُرُوْا مَسٰجِدَ اللّٰهِ (आख़िर तक) नाज़िल फ़रमाई और यह बता दिया कि मुश्रिकों का यह काम नहीं कि मस्जिदों को आबाद करें, मुश्रिक होते हुए मस्जिद की आबादी का कोई अर्थ नहीं।

कअ़बः शरीफ़ को तो शिर्क के दुश्मन ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने बनाया था। कअ़बः और कअ़बः की मस्जिद की बुनियाद तौह़ीद (एकेश्वरवाद) पर है जो लोग अपने इक़रार व आ़माल से यह गवाही दे रहे हैं कि हम काफ़िर हैं यानी अल्लाह के भेजे हुए दीन को नहीं मानते, उन का मस्जिद को आबाद करना कोई माने नहीं रखता क्योंकि वहाँ यह लोग शिर्क करते हैं अगर ज़ाहिरी कोई आबादी कर दी यानी उस के मुतवल्ली (संरक्षक) बनकर कुछ देखभाल कर ली तो कुफ़्र और शिर्क जैसी बग़ावत के सामने यह बेह़क़ीक़त है फिर मस्जिदे ह़राम में जाते थे तो सीटियाँ और तालियाँ बजाते थे। (जैसा कि सूरः अनफ़ाल

के चौथे रुकूअ़ में गुज़र चुका है।) ऐसा आबाद करना अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक आबाद करने में शुमार नहीं है। 'साहिबे मुआ़लिमुत्तन्ज़ील' भाग 2 पेज नं० 273 में लिखते हैं:-

: أی ما ینبغی للمشرکین أن یعمروا مساجد اللہ اوجب علی المسلمین منعہم من ذلک لأن المساجد
إنما تعمر لعبادۃ اللہ وحدہ فمن کان کافرا باللہ فلیس من شانہ ان یعمرہا

फिर फ़रमाया أُولَٰئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ कि उन के सब आमाल बेकार चले गये (क्योंकि कुफ़्र के साथ कोई भी अ़मल अगरचे बज़ाहिर अ़िबादत हो आख़िरत में कोई नफ़ा देने वाला नहीं।)

18 إِنَّمَا يَعْمُرُ مَسَاجِدَ اللَّهِ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَآتَى الزَّكَاةَ وَلَمْ يَخْشَ
إِلَّا اللَّهَ ۖ فَعَسَىٰ أُولَٰئِكَ أَن يَكُونُوا مِنَ الْمُهْتَدِينَ ۞

मसाजिद को आबाद करना ईमान वालों का काम

अल्लाह की मस्जिदों को वही लोग आबाद करते हैं जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान लाए और जिन्होंने नमाज़ क़ायम की और ज़कात अदा की और अल्लाह के सिवा किसी से न डरे।

इसमें बताया गया है कि मस्जिदों को आबाद करना अहले ईमान का काम है। जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं और अल्लाह के मुक़र्रर किये हुए फ़रायज़ को अन्जाम देते हैं (इसमें दो चीज़ों का ख़ुसूसी ज़िक्र फ़रमाया यानी नमाज़ क़ायम करना, ज़कात देना) और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते यानी अल्लाह तआ़ला ने जो हुक्म भेजे हैं उन पर अ़मल करने में क़ौम या क़बीला और अहले वतन के एतिराज़ को नहीं देखते कि कोई क्या कहेगा—अल्लाह के दीन पर किसी का ख़याल किये बिना अ़मल करते हैं और किसी मलामत करने वाले की मलामत से नहीं डरते। फिर उन लोगों के आख़िरत का अन्जाम बताते हुए इर्शाद फ़रमाया:-

فَعَسَىٰ أُولَٰئِكَ أَن يَكُونُوا مِنَ الْمُهْتَدِينَ यानी अल्लाह तआ़ला उन लोगों को जन्नत तक पहुँचने का रास्ता बता देगा। दुनिया में अल्लाह की अ़िबादत में लगना नसीब होगा और फिर यह अ़िबादत जन्नत में दाख़िल होने का ज़रिया बन जाएगी। मस्जिद बनाना और उस का इन्तिज़ाम संभालना, मरम्मत करना, नमाज़ियों की ज़रूरतें पूरी करना यह सब मस्जिद की आबादकारी में दाख़िल है, लेकिन मस्जिद की आबादकारी की जो शान है वह इस से बढ़कर है और वह यह है कि मसाजिद को नमाज़ों से, ज़िक्र से तिलावत से, तअ़लीमी ह़ल्क़ो से, दर्स क़ुर्आन से आबाद रखा जाए।

ह़ज़रत अबू सईद ख़ुद्री (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, "जब तुम किसी शख़्स को देखो कि मस्जिद का ख़याल रखता है तो उस के ईमान की गवाही दो, क्योंकि अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है إِنَّمَا يَعْمُرُ مَسَاجِدَ اللَّهِ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ (अल्लाह की मस्जिदों को वही शख़्स आबाद रखता है जो अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान लाया"।

(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 69 तिर्मिज़ी व इब्ने माजा, दारमी)

मसाजिद में कौन-कौन से काम मना हैं-

जहाँ नेक आमाल, नमाज़, ज़िक्र, तिलावत वग़ैरह से मस्जिद को आबाद रखने की फ़ज़ीलत है वहीं उन चीज़ों से भी परहेज़ करने की सख़्त ज़रूरत है जो मस्जिद में करना मना हैं क्योंकि इन चीज़ों का करना मस्जिद की आबादी के ख़िलाफ़ है। मसाजिद में ऐसे अश्आर पढ़ना जो दीनी एतिबार से अच्छे न हों, इसी तरह ख़रीद व फ़रोख़्त करना और बद्बूदार चीज़ें खा पीकर मस्जिद में जाना (जिस में बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकू और पान की बद्बू भी शामिल है।) और मस्जिद में दुनिया की बातें करना, मस्जिदों में थूक, बलग़म डालना, गुमशुदा चीज़ तलाश करना, मख़्लूक़ से सवाल करना, यह सब चीज़ें मस्जिद में मना हैं और मस्जिद की शान के ख़िलाफ़ हैं।

खोई हुई चीज़ का एलान मना है-

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि जब कोई शख़्स मस्जिद में किसी खोई हुई चीज़ की तलाश करने वाले की आवाज़ सुने तो यूँ कह दे لاردهاالله عليك (कि अल्लाह तुझे यह चीज़ें वापस न दे) क्योंकि मस्जिदें इस काम के लिए नहीं बनाई गईं।

(रवाहु मुस्लिम भाग 1, पेज नं० 210 अबूदाऊद भाग 1, पेज नं० 68)

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, "जब तुम किसी को देखो कि मस्जिद में बेचता या ख़रीदता है तो कह दो कि अल्लाह तेरी तिजारत में नफ़ा न दे"।

(मिश्कात पेज नं० 70)

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने यह भी इर्शाद फ़रमाया, "लोगों पर एक ऐसा ज़माना आएगा कि मस्जिदों में उन की बातें दुनियावी कामों के बारे में होंगी सो तुम उन के पास मत बैठना क्योंकि अल्लाह को उनकी ज़रुरत नहीं है"। **(मिश्कातुलू मसाबीह़ पेज नं० 71 बैहकी फ़ी शुअ़बुल ईमान)**

मतलब यह है कि अल्लाह तआ़ला को उन का यह अ़मल नापसन्द है। हज़रत ह़कीम बिन ह़िज़ाम (रज़ि०) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने मसाजिद में हुदूद क़िसास जारी करने से और (ग़ैर दीनी) अश्आ़र पढ़ने से मना फ़रमाया। **(रवाहु अबूदाऊद भाग 2, पेज नं० 261)**

एक नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ के इन्तिज़ार में बैठे रहना, मस्जिदों में एतिकाफ़ करना और नमाज़ों के इन्तिज़ार में बैठे रहना यह भी मस्जिद की आबाद्कारी है। ह़ज़रत उ़स्मान बिन मज़ऊन (रज़ि०) ने बयान किया कि हम ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! हमें ख़स्सी होने की यानी क़ुव्वते मर्दाना ज़ायल करने की इजाज़त दे दीजिए। आप ने फ़रमाया वह हम में से नहीं है जो किसी को ख़स्सी करे या ख़ुद ख़स्सी हो जाए बेशक मेरी उम्मत का ख़स्सी होना यह है कि रोज़े रखा करे। (इस से शहवत दब जाएगी) फिर अ़र्ज़ किया कि हमें तफ़रीह़ की इजाज़त दीजिए। आप ने फ़रमाया, मेरी उम्मत की तफ़रीह़ जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह है। फिर अ़र्ज़ किया कि हमें रहबानियत अख़्तियार करने की इजाज़त दीजिए (जैसा कि नसूरानी लोग दुनिया को छोड़कर अलग ग़ारों में और जंगलों में बैठ गये थे।) आप (सल्ल०) ने फ़रमाया

मेरी उम्मत की रहबानियत यह है कि नमाज़ों के इन्तिज़ार में मस्जिदों में बैठा करें।

(मिश्कातुलू मसाबीह़ पेज नं० 69)

सय्यदना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान (रज़ि०) कहते हैं कि मैंने आप (सल्ल०) को यह कहते हुए सुना कि जो मस्जिद बनाएगा अल्लाह उसके लिए जन्नत में घर बनाएगा। **(बुख़ारी)**

सय्यदना अबू सईद (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, अगर तुम किसी आदमी को मस्जिद में आता जाता देखो तो उसके ईमान की गवाही दो क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि अल्लाह की मस्जिदें सिर्फ़ वही आबाद करते हैं जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान लाते हैं। **(तिर्मिज़ी)**

मस्जिदों के आबाद करने में उन की तअ़मीर, सफ़ाई, नमाज़ों वग़ैरह के इन्तिज़ामात सभी कुछ शामिल है। यानी मुसलमानों को कहा गया है कि अब बैतुल्लाह की तौलियत मुश्रिकों के हाथों में न रहे।

मस्जिद की सफ़ाई का सवाब-

ह़ज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है, "रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि मुझ पर मेरी उम्मत के सवाब के काम पेश किये गये यहाँ तक कि कोई शख़्स अगर मस्जिद से ऐसी चीज़ निकाल दे जो देखने में नागवार हो (अगरचे मामूली सा कूड़ा कचरा तिन्का हो) तो वह भी मुझे उम्मत के सवाब के कामों में दिखाया गया और मुझ पर मेरी उम्मत के गुनाह पेश किये तो इस से बढ़ कर मैंने कोई गुनाह नहीं देखा कि किसी शख़्स को कुर्आन मजीद कोई सूरत या आयत अ़ता की गई फिर वह उसे भूल गया"।

(अबूदाऊद भाग 1 पेज नं० 66)

आजकल मस्जिदों की ज़ाहिरी आबादी ही रह गई है। ख़ूबसूरत क़ालीन, झाड़, फ़ानूस, दीवार पर फूलदार नक़्शे, चमक्दार फ़र्श वग़ैरह-वग़ैरह। इन चीज़ों में बढ़-चढ़ कर मुक़ाबिले में ह़िस्सा लिया जाता है और नमाज़ों में ह़ाज़िरी तिलावत और नमाज़ों के इन्तिज़ार में बैठे रहने की तरफ़ तवज्जोह नहीं दी जाती और यह ज़ाहिरी ज़ीनत की चीज़ें शरीअ़त में पसन्दीदा भी नहीं हैं क्योंकि इन से नमाज़ों के ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ में फ़र्क़ आता है। ह़ज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, "क़ियामत की निशानियों में से यह भी है कि लोग मस्जिदें बना-बना कर आपस में फ़ख़्र करेंगे।"

(रवाहु अबूदाऊद भाग 1 पेज नं० 65)

एक ह़दीस में मस्जिदों की ज़ेब व ज़ीनत पर तवज्जोह देने वालों के बारे में फ़रमाया किः- مساجدهم عامرة وهي خراب من الهدى (उन की मस्जिदें आबाद होंगी मगर हिदायत के एतिबार से वीरान होंगी।) **(मिश्कातुलू मसाबीह़ पेज नं० 38)**

19 أَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَاجِّ وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَجَاهَدَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ لَا يَسْتَوُونَ عِنْدَ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿١٩﴾

हुज्जाज को पानी पिलाना

इस आयत के बारे में दो सबबे नुज़ूल नक़्ल किये गये हैं। उन में एक तो वही है जो पहले ज़िक्र

हुआ कि जब बद्र में मुश्रिकीन को कै़द किया जिन में ह़ज़रत अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब भी थे और ह़ज़रत अ़ब्बास को कुफ़्र अख़्तियार करने पर आ़र (कमेन्ट) दिलाई गई तो उन्होंने कहा कि अगर तुम हम से इस्लाम में और हिजरत में जिहाद में आगे बढ़ गये तो हम भी मस्जिदे ह़राम को आबाद करते हैं और हुज्जाज को पानी पिलाते हैं, इस पर यह आयतें नाज़िल हुईं। **(मुआ़लिमुत्तन्ज़ील भाग 2 पेज नं० 275)**

सय्यदना अबूहुरैरा (रज़ि०) कहते हैं कि एक आदमी रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास आया और कहने लगा मुझे ऐसा अ़मल बताएँ जो जिहाद के बराबर हो? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया मैं कोई ऐसा अ़मल (उसके बराबर) नहीं पाता। **(बुख़ारी)**

मतलब यह है कि क्या ह़ाजियों को पानी पिलाने और मस्जिदे ह़राम के दरो दीवार की देखभाल करने को तुम ने उस शख़्स के अ़मल के बराबर कर दिया जो अल्लाह पर और आख़िरत पर ईमान लाया और जिस ने अल्लाह की राह में जिहाद किया? यह दोनों बराबर नहीं हो सकते यानी ईमान और जिहाद वालों के मुक़ाबिले में हुज्जाज को पानी पिलाना और मस्जिदे ह़राम की देखभाल करना, जबकि ईमान न हो उसकी कोई हैसियत नहीं। कुफ़्र व शिर्क के साथ कोई भी नेक अ़मल मक़्बूल नहीं।

दूसरा सबबे नुज़ूल यह लिखा है कि ह़ज़रत नोअ़मान बिन बशीर (रज़ि०) ने बयान किया कि मैं रसूलुल्लाह (सल्ल०) के मेम्बर के पास था। एक शख़्स ने कहा कि अगर मैं हुज्जाज को पानी पिलाऊँ उस के बाद दूसरा कोई नेक अ़मल न करूँ तो मुझे कोई परवाह नहीं। दूसरे ने कहा कि अगर मैं मस्जिदे ह़राम को आबाद करने के अ़लावा कोई नेक अ़मल न करूँ तो मुझे दूसरे आ़माल के छूट जाने की कोई परवाह नहीं।

तीसरे शख़्स ने कहा कि तुम ने जो अपने आ़माल के बारे में कहा उन आ़माल से बढ़ कर जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह है, उन लोगों को ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) ने झिड़क दिया और फ़रमाया कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) के मेम्बर के क़रीब आवाज़ें बुलन्द न करो।

यह जुमअ़ का दिन था ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) ने फ़रमाया कि मैं नमाज़ से फ़ारिग़ होकर रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में ह़ाज़िर होकर इस बारे में दर्याफ़्त करुँगा जिस में तुम इख़्तिलाफ़ कर रहे हो, चुनाँचे उन्होंने ख़िद्मत में ह़ाज़िर होकर सवाल किया इस पर यह आयतें नाज़िल हुईं।

(मुआ़लिमुत्तन्ज़ील भाग 2, पेज नं० 275)

इस से मालूम हुआ कि ईमान तो तमाम आ़माल से अफ़्ज़ल है ही, जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह भी हुज्जाज को पानी पिलाने और मस्जिदे ह़राम की देखभाल से अफ़्ज़ल है।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया لَا يَسْتَوٗنَ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ यह लोग अल्लाह के नज़्दीक बराबर नहीं हैं।

وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ और अल्लाह ज़ालिमों को हिदायत नहीं देता। (ज़ालिमों से मुश्रिक मुराद हैं वह शिर्क पर क़ायम होते हुए ह़क़ और सह़ी बात को नहीं मानते।)

20 اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ هَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَ اَنْفُسِهِمْ ۙ اَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ
اللّٰهِ ؕ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ۝

मोमिन मुहाजिरीन और मुजाहिदीन को बशारत

इस के बाद ईमान, हिजरत और जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह की फ़ज़ीलत बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाया (जो लोग ईमान लाए और हिजरत की और अपने मालों और जानों से अल्लाह की राह में जिहाद किया दर्जे के एतिबार से अल्लाह के नज़्दीक यह लोग बहुत बड़े हैं और यह लोग ही पूरे कामियाब हैं।)

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जो अल्लाह और उस के रसूल (सल्ल०) पर ईमान लाए, नमाज़ क़ायम करे, रमज़ान के रोज़े रखे तो अल्लाह तआ़ला ने अपने ऊपर लाज़िम कर लिया है कि वह उसे जन्नत में दाख़िल कर दे, चाहे उस ने अल्लाह की राह में जिहाद किया हो या उसी जगह बैठा रहा हो जहाँ पैदा हुआ।" लोगों ने अ़र्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! क्या हम यह ख़ुशख़बरी लोगों को न सुना दें? इर्शाद फ़रमाया, "जन्नत के सौ दर्जे हैं जो अल्लाह ने हक़ की राह में जिहाद करने वालों के लिए तैयार कर रखे हैं, हर दो दर्जों के दर्मियान इतना फ़ास्ला है जितना ज़मीन और आसमान के दर्मियान है। चुनाँचे जब तुम अल्लाह से जन्नत माँगों तो फ़िरदौस का सवाल किया करो क्योंकि यह जन्नत का दर्मियानी ह़िस्सा और आ़ला तरीन दर्जा है।"

रावी का ख़याल है कि आप ने यह भी फ़रमाया, "उस (फ़िरदौस) के ऊपर रह़मान का अ़र्श है और जन्नत की नहरें उसी से निकलती हैं।" **(सह़ीह़ बुख़ारी, अलू जिहाद वलू यस्र, बाबः 4 ह़दीसः 2790)**

शहादत की तमन्ना करना भी एक मोमिन की ख़ास सिफ़त है। सय्यदना अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "क़सम है उस ज़ात की जिस के हाथ में मेरी जान है अगर कुछ ईमान वालों को यह बात नागवार न होती कि वह मेरे पीछे रह जाएँ और मेरे पास सवारियाँ भी नहीं हैं कि जिन पर मैं उन्हें सवार करा दूँ तो मैं किसी सरिये (मुजाहिदीन के दस्ते) से जो अल्लाह की राह में जिहाद के लिए निकलता है, पीछे न रहता। क़सम है उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है! मेरी तो यह तमन्ना है कि मैं अल्लाह की राह में मारा जाऊँ फिर ज़िन्दा किया जाऊँ, फिर क़त्ल किया जाऊँ फिर ज़िन्दा किया जाऊँ, फिर क़त्ल किया जाऊँ फिर ज़िन्दा किया जाऊँ, फिर क़त्ल कर दिया जाऊँ"। **(सह़ीह़ बुख़ारी, अलू जिहाद वलू यस्र, बाब 7, ह़दीस 2797)**

21-22 يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ وَّجَنّٰتٍ لَّهُمْ فِيْهَا نَعِيْمٌ مُّقِيْمٌ ۝ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ
اَبَدًا ۭ اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝

(उन का रब उन्हें बशारत देता है अपने रह़मत की और रज़ामन्दी की और बाग़ों की जिन में उन के लिए हमेशा के लिए नेअ़मतें होंगी। خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا (वह उस में हमेशा रहेंगे।)

اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝ (बेशक अल्लाह के पास बड़ा अज्र है।)

आयत नं० 23 से 31 तक

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْۤا اٰبَآءَكُمْ وَ اِخْوَانَكُمْ اَوْلِيَآءَ اِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ عَلَى الْاِيْمَانِ ؕ وَ مَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاُولٰٓىِٕكَ
هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ قُلْ اِنْ كَانَ اٰبَآؤُكُمْ وَ اَبْنَآؤُكُمْ وَ اِخْوَانُكُمْ وَ اَزْوَاجُكُمْ وَ عَشِيْرَتُكُمْ وَ اَمْوَالُ ۟اقْتَرَفْتُمُوْهَا وَ تِجَارَةٌ
تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَ مَسٰكِنُ تَرْضَوْنَهَاۤ اَحَبَّ اِلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ وَ جِهَادٍ فِيْ سَبِيْلِهٖ فَتَرَبَّصُوْا حَتّٰى يَاْتِيَ اللّٰهُ
بِاَمْرِهٖ ؕ وَ اللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝ لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ فِيْ مَوَاطِنَ كَثِيْرَةٍ ۙ وَّ يَوْمَ حُنَيْنٍ ۙ اِذْ اَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ
تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْـًٔا وَّ ضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّيْتُمْ مُّدْبِرِيْنَ ۝ ثُمَّ اَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَ عَلَى
الْمُؤْمِنِيْنَ وَ اَنْزَلَ جُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا وَ عَذَّبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ وَ ذٰلِكَ جَزَآءُ الْكٰفِرِيْنَ ۝ ثُمَّ يَتُوْبُ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ
عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْمُشْرِكُوْنَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هٰذَا ۚ
وَ اِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً فَسَوْفَ يُغْنِيْكُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖۤ اِنْ شَآءَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝ قَاتِلُوا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ لَا
بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَ لَا يُحَرِّمُوْنَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗ وَ لَا يَدِيْنُوْنَ دِيْنَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ حَتّٰى يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ
يَّدٍ وَّ هُمْ صٰغِرُوْنَ ۝ وَ قَالَتِ الْيَهُوْدُ عُزَيْرُ اِبْنُ اللّٰهِ وَ قَالَتِ النَّصٰرَى الْمَسِيْحُ ابْنُ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ قَوْلُهُمْ بِاَفْوَاهِهِمْ ۚ يُضَاهِـُٔوْنَ
قَوْلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ ؕ قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ ۚ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ۝ اِتَّخَذُوْۤا اَحْبَارَهُمْ وَ رُهْبَانَهُمْ اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَ الْمَسِيْحَ
ابْنَ مَرْيَمَ ۚ وَ مَاۤ اُمِرُوْۤا اِلَّا لِيَعْبُدُوْۤا اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ سُبْحٰنَهٗ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝

अनुवाद-

(23) ऐ ईमान वालो! अगर तुम्हारे (माँ) बाप और (बहन) भाई ईमान के मुक़ाबले में कुफ़्र को पसंद करें, तो उनसे दोस्ती (राज़दार) न रखो, और तुममें से जो उन से दोस्ती रखेगा तो ऐसे ही लोग ज़ालिम हैं। (24) कह दीजिएः अगर तुम्हारे बाप, तुम्हारे बेटे, तुम्हारे भाई, और तुम्हारी पत्नियाँ, और तुम्हारे रिश्तेदार, और माल जो तुमने कमाए हैं, और तिजारत जिसके बन्द होने का ख़ौफ़ है, और घर जिन्हें तुम पसंद करते हो, तुम्हें अल्लाह और उसके रसूल और उसकी राह में जिहाद करने से ज़्यादा प्यारी हैं, तो इन्तिज़ार करो! यहाँ तक कि अल्लाह अपना फ़ैसला ले आए, और अल्लाह नाफ़रमानों को राह नहीं दिखाता"। (25) अल्लाह बहुत से मौक़ों पर तुम्हारी मदद कर चुका है और 'हुनैन' (की लड़ाई) के दिन जबकि तुम्हें अपनी अधिकता पर गर्व था; तो वह तुम्हारे कुछ काम न आया, और धरती अपनी विशालता के बावजूद तुम पर तंग हो गई, फिर तुम पीठ फेरकर भाग खड़े हुए; (26) फिर अल्लाह ने अपने रसूल पर और मोमिनों पर अपनी सकीनत (प्रशान्ति) उतारी, और ऐसी सेनाएँ उतारीं जिनको तुमने नहीं देखा, और काफ़िरों को सज़ा दी! और यही बदला है काफ़िरों का। (27) फिर इसके बाद अल्लाह जिसको चाहता है उसे तौबः की तौफ़ीक़ देता है, और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रहम वाला है। (28) ऐ ईमान वालो! मुशिरक तो नजिस (अपवित्र) ही हैं, अतः इस वर्ष के बाद वे 'मस्जिदे हराम' के पास न जाने पाएँ और अगर तुम्हें ग़रीबी का डर हो, तो अल्लाह चाहेगा तो तुम को अपने फ़ज़्ल (अनुग्रह) से सम्पन्न कर देगा, बेशक अल्लाह सब कुछ जानने वाला, हिकमत वाला है। (29) वे किताब वाले जो न अल्लाह पर ईमान रखते हैं, और न आख़िरत के दिन पर, और न अल्लाह और उसके रसूल ने जिन चीज़ों को हराम ठहराया है उसे हराम ठहराते हैं, और न दीने हक़ को क़ुबूल

करते हैं- उनसे जंग करो, यहाँ तक कि ज़लील हो कर अपने हाथ से जिज़्या (कर) दें। (30) और यहूदी कहते हैं ''उज़ैर अल्लाह का बेटा है"। और ईसाई कहते हैं, "मसीह़ अल्लाह का बेटा है", यह उनके अपने मुँह की बातें हैं, यह भी उन्हीं की सी बातें कर रहे हैं जो इससे पहले इन्कार कर चुके हैं, अल्लाह इनको हलाक (नाश) करे! यह कहाँ से औंधे हुए जा रहे हैं! (31) इन्होंने अल्लाह को छोड़कर अपने धर्म ज्ञाताओं (उलमा) और सन्तों (बुज़ुर्गो) को रब बना लिया है और मसीह इब्ने मरयम को भी- हालाँकि उन्हें इसके सिवा कोई हुक्म नहीं दिया गया था कि वह 'केवल एक मअ़बूद' (उपास्य) की इबादत करें (जिसके) सिवा कोई उपास्य नहीं, पाक है 'वह' उस शिर्क से जो यह करते हैं।

आयत 23 से 31 तक की व्याख्या

23-24 يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا تَتَّخِذُوٓا۟ ءَابَآءَكُمْ وَإِخْوَٰنَكُمْ أَوْلِيَآءَ إِنِ ٱسْتَحَبُّوا۟ ٱلْكُفْرَ عَلَى ٱلْإِيمَٰنِ ۚ وَمَن يَتَوَلَّهُم مِّنكُمْ فَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلظَّٰلِمُونَ ﴿٢٣﴾ قُلْ إِن كَانَ ءَابَآؤُكُمْ وَأَبْنَآؤُكُمْ وَإِخْوَٰنُكُمْ وَأَزْوَٰجُكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ وَأَمْوَٰلٌ ٱقْتَرَفْتُمُوهَا وَتِجَٰرَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسَٰكِنُ تَرْضَوْنَهَآ أَحَبَّ إِلَيْكُم مِّنَ ٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ وَجِهَادٍ فِى سَبِيلِهِۦ فَتَرَبَّصُوا۟ حَتَّىٰ يَأْتِىَ ٱللَّهُ بِأَمْرِهِۦ ۗ وَٱللَّهُ لَا يَهْدِى ٱلْقَوْمَ ٱلْفَٰسِقِينَ ﴿٢٤﴾

पिछली आयात में जिहाद और हिजरत की फ़ज़ीलत बयान फ़रमाई। जब हिजरत का हुक्म हुआ था उस वक़्त ऐसे लोग भी थे जिन्होंने इस्लाम तो कुबूल कर लिया लेकिन हिजरत करने में पसोपेश करते थे और हिजरत की हिम्मत नहीं कर पा रहे थे, यह आयात उन लोगों के बारे में नाज़िल हुईं। 'मुआ़लिमुत्तन्ज़ील' भाग 2 पेज नं० 267 में ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से नक़्ल किया गया है कि जब नबी अक्रम (सल्ल०) ने मदीना मुनव्वरह को हिजरत करने का हुक्म फ़रमाया (और यह वह वक़्त था जबकि मदीना मुनव्वरह ही दारुल् इस्लाम था और मदीना मुनव्वरह को हिजरत करना फ़र्ज़ था) कुछ लोगों ने हिजरत करने का इरादा किया तो घरवालों ने उन को हिजरत करने से रोका और उन्होंने कहा कि आप हमें ज़ाया न करें। उनकी यह बात सुनकर उन पर तरस आ गया और हिजरत का इरादा छोड़ दिया..इस पर अल्लाह तआ़ला ने यह आयत يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا تَتَّخِذُوٓا۟ नाज़िल फ़रमाई।

अल्लाह तआ़ला की मुह़ब्बत

इस आयत में मुसलमानों को हुक्म दिया गया है कि तुम्हारे बाप और भाई अगर कुफ़्र को ईमान पर तरजीह़ (प्राथ्मिकता) देते हैं और ईमान के मुक़ाबिले में उन्हें कुफ़्र मह़बूब है तो उन्हें दोस्त न बनाओ क्योंकि वह मुह़ब्बत और दोस्ती के लायक़ नहीं हैं, उन पर लाज़िम है कि वह भी ईमान कुबूल कर लेते और तुम्हारे साथ हिजरत करते अब वह काफ़िर हैं और तुम मोमिन हो, तुम्हारा दीन तो कुबूल करते नहीं और यूँ कहते हैं कि तुम हिजरत करके जाओगे तो हम ज़ाया हो जाएँगे, जो लोग अल्लाह के

फ़रमाँबरदार नहीं बनते, हक़ को क़ुबूल नहीं करते वह इस क़ाबिल नहीं हैं कि उन से दोस्ती की जाए।

वह तो ईमान क़ुबूल करने को तैयार नहीं और तुम उन पर इतने मेहरबान हो रहे हो कि उनकी वजह से हिजरत (जो फ़र्ज़ है और ईमान का जुज़्व है) नहीं करते वह तो ईमान पर नहीं आते और तुम उन के लिए अपना ईमान ज़ाया कर रहे हो! यह तो तुम्हारा अपनी जानों पर ज़ुल्म हुआ। इस आख़िरी बात को यूँ बयान फ़रमाया وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ مِنْكُمْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ और तुम में से जो लोग उनसे दोस्ती रखें वह लोग ही ज़ुल्म करने वाले हैं) यानी उन से दोस्ती रखना जबकि उन को कुफ़्र महबूब हो ज़ुल्म की बात है और यह अपनी जानों पर ज़ुल्म है। जब ईमान ले आए अल्लाह के हो गये तो अल्लाह के हुक्मों के सामने कोई तअ़ल्लुक़ और कोई रिश्तेदारी लायक़ तवज्जोह नहीं, जो अल्लाह के हुक्मों पर अ़मल करने से रोके। मोमिन का अपना वही है जो अल्लाह का फ़रमाँबरदार हो जाए और जो अल्लाह का नहीं है वह हमारा भी नहीं है।

जब यह आयत يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْٓا नाज़िल हुई तो बाज़ वह लोग जिन्होंने इस्लाम क़ुबूल कर लिया और हिजरत नहीं की थी कहने लगे कि अगर हम हिजरत करते हैं तो हमारे माल ज़ाया हो जाएँगे और तिजारतें ख़त्म हो जाएँगी और घर वीरान हो जाएँगे और रिश्तेदारियाँ कट जाएँगी। इस पर दूसरी आयत قُلْ اِنْ كَانَ اٰبَآؤُكُمْ नाज़िल हुई। **(मुआ़लिमुत्तन्ज़ील भाग 2, पेज नं० 277)**

जिस में साफ़-साफ़ अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी (सल्ल०) की ज़बानी यह एलान करवा दिया कि अगर तुम्हारे बाप और बेटे और भाई और बीवियाँ और कुन्बे और तुम्हारे माल जो तुम ने कमा रखे हैं और वह तिजारत जिस में तुम लगे हो और हिजरत करने की वजह से उस के नाकाम होने का तुम्हें डर है और रहने के घर जिन्हें तुम पसन्द करते हो, अगर यह चीज़ें तुम्हें अल्लाह तआ़ला और उस के रसूल (सल्ल०) और उस की राह में जिहाद करने से ज़्यादा महबूब हैं तो तुम अल्लाह के हुक्म का इन्तिज़ार करो। यह दुनियावी चीज़ें तुम्हें हिजरत से रोक रही हैं यह तुम्हारे लिए अ़ज़ाब का ज़रिया हैं अ़ज़ाब दुनिया में भी आ सकता है और आख़िरत में तो बहरहाल हिजरत न करने पर अ़ज़ाब है ही। अगर इसी हालत में मर गये और हिजरत न की जबकि इसके बग़ैर ईमान मक़्बूल नहीं।

قال صاحب الروح أى بعقوبته سبحانه لكم عاجلا او آجلا على ما روى عن الحسن **(पेज नं० 71 भाग 1)**

दुनिया से मुहब्बत-

सूरः निसा (आयत नं० 97) में हिजरत पर क़ुदरत होते हुए हिजरत न करने वालों के लिए فَاُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۭ وَسَاۗءَتْ مَصِيْرًا फ़रमाया है। अल्लाह की तम्बीह पर नज़र न रखना और रिश्तेदारियों और तिजारतों और घरों का ध्यान रखना और उन की मुहब्बत में जिहाद और हिजरत को छोड़ देना यह ईमान से भी दूर है और अ़क़्ल से भी।

आख़िर में फ़रमाया وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ और जो लोग फ़ासिक़ हैं अल्लाह की फ़रमाँबरदारी नहीं करते काफ़िरों से मिले रहते हैं अल्लाह तआ़ला उन को हिदायत नहीं देगा कि वह अपनी अ़क़्ल से

काम लें और अपने नफ़ा और नुक़्सान को समझें। दुनिया को अल्लाह की रज़ा के मुक़ाबिले में जो तरजीह (प्राथ्मिकता) दी उस की सज़ा में उन का यह ह़ाल हुआ।

सय्यदना अबी हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है तुम में से कोई मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उस के नज़्दीक उसके माँ-बाप से ज़्यादा मह़बूब न हो जाऊँ। **(बुख़ारी)**

सय्यदना अनस (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, जिस में तीन चीज़ें होंगी, वह ईमान की मिठास पा लेगा। अल्लाह और उसका रसूल (सल्ल०) की मुह़ब्बत हर चीज़ से ज़्यादा हो। किसी से मुह़ब्बत करे तो सिर्फ़ अल्लाह के लिए। कुफ़्र में लौट जाना उसे ऐसे नापसन्द हो जैसे कि आग में झोंक दिया जाता। **(बुख़ारी)**

नोट- ईमान क़ुबूल करने के बाद ईमान के तक़ाज़े इन्सान को शरई हुक्मों पर अ़मल करने की दअ़वत देते हैं। शरई हुक्मों में बहुत सी ऐसी चीज़ें आ जाती हैं जो नफ़्स पर भारी होती हैं उन में से हिज्रत, जिहाद और ह़राम माल का छोड़ना भी है। शरीअ़त के मुताबिक़ अपनों से क़तअ़ तअ़ल्लुक़ करना भी है और बहुत सी बातें हैं जो नफ़्स को नागवार हैं। जो लोग यह जानते हैं और मानते हैं कि अल्लाह तआ़ला हमारा ख़ालिक़ व मालिक है और उस का ह़क़ सब से ज़्यादा है और माल भी उस ने दिया है और रिश्तेदारियाँ भी उसी ने पैदा फ़रमाई हैं उन्हें इस्लामी हुक्मों पर अ़मल करने में कुछ भी दुश्वारी नहीं होती, वह अल्लाह और उस के रसूल की मुह़ब्बत को हर चीज़ पर तरजीह़ (वरीयता) देते हैं।

ह़ज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि जिस शख़्स के अन्दर तीन चीज़ें होंगी उन की वजह से वह ईमान की मिठास पा लेगा।

1. पहला वह शख़्स जिसे अल्लाह और उस के रसूल (सल्ल०) दूसरी तमाम चीज़ों से ज़्यादा मह़बूब हों।
2. दूसरा वह शख़्स जो किसी बन्दे से सिर्फ़ अल्लाह ही के लिए मुह़ब्बत करे।
3. तीसरा वह शख़्स जिसे अल्लाह ने कुफ़्र से बचा दिया वह वापस कुफ़्र में जाने को ऐसा ही बुरा समझे जैसे आग में डाले जाने को बुरा समझता है। **(रवाहुल् बुख़ारी भाग 1, पेज नं० 7)**

ह़ज़रत अनस (रज़ि०) से भी रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि तुम में से कोई शख़्स उस वक़्त तक मोमिन न होगा जब तक कि मैं उसके नज़्दीक उस के बाप उस की औलाद और तमाम लोगों से ज़्यादा मह़बूब न हो जाऊँ। **(रवाहुल् बुख़ारी भाग 1, पेज नं० 7)**

ईमान की मिठास से यह मुराद है कि ताआ़त और अ़िबादात में लज़्ज़त मह़सूस होने लगे, अल्लाह और उस के रसूल (सल्ल०) की रज़ामन्दी ह़ासिल करने के लिए हर तरह़ की तक्लीफ़ें बर्दाश्त करना आसान हो जाए।

नोट- मुह़ब्बत दो तरह़ की होती है। एक मुह़ब्बत तबअ़ी (अन्दुरुनी) जिस में अख़्तियार नहीं होता और

दूसरी मुहब्बत अख़्तियारी, यह मुहब्बत अक़्ली होती है। ऊपर जिस मुहब्बत का ज़िक्र हुआ उस से मुहब्बत अख़्तियारी मुराद है चूंकि ग़ैर अख़्तियारी चीज़ों का अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों को मुकल्लफ़ नहीं बनाया (और तबअ़ी मुहब्बत अख़्तियारी नहीं है) इसलिए शरीअ़त में मुहब्बते अ़क़्ली और अख़्तियारी ही मुराद है। अगर किसी शख़्स के दिल में तबअ़ी (प्राकृतिक) तौर पर आल औलाद और रिश्तेदारों की और माल की मुहब्बत हो तो उस पर पकड़ नहीं है बशर्ते कि यह तबअ़ी (प्राकृतिक) मुहब्बत अ़क़्ली और अख़्तियारी मुहब्बत पर ग़ालिब आ जाए यानी तबअ़ी (प्राकृतिक) मुहब्बत अल्लाह और उस के रसूल (सल्ल०) के हुक्मों की ख़िलाफ़वर्ज़ी पर आमादा न कर दे। ईमानी तक़ाज़ों को पूरा करना बाज़ मर्तबः आल औलाद, माल और दुकानदारी की मुहब्बत की वजह से दुश्वार हो जाता है और ग़ैरुल्लाह की मुहब्बत में अल्लाह तआ़ला की नाफ़रमानी पर लग जाते हैं।

बच्चों को खुश करने के लिए तस्वीरें ख़रीद दें या घर में टी० वी० या उस जैसी कोई ऐसी चीज़ जिसमें शरीअ़त के ख़िलाफ़ चीज़ें दिखाई जाती हों ले आएँ या उन्हें ग़ैर शरअ़ी लिबास पहना दे उन की रिवाजी ज़रूरतें पूरी करने के लिए रिश्वत ले ले उन के लिए ज़्यादा माल इकट्ठा करने के लिए सूद ले लें, ह़राम कामों में नौकरी कर ले या और किसी तरह़ के गुनाहो में फंस जाए।

दोस्तों को खुश करने के लिए दाढ़ी मूंढ ले, नसरानी लिबास पहने, ह़राम कमाई वाले की दअ़वत खा ले यह होता रहता है और ऐसे मौक़े पर अ़क़्ली ईमानी मुहब्बत और तबअ़ी मुहब्बत में मुक़ाबिला की सूरत बन जाती है। उ़मूमन लोग तबअ़ी मुहब्बत से मग़्लूब हो जाते हैं और ईमानी तक़ाज़ों को छोड़ बैठते हैं।

اَحَبَّ اِلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَجِهَادٍ فِيْ سَبِيْلِهٖ इस आयत में इस तरह़ की सब बातें आ जाती हैं। बहुत से नेक बन्दों को ईमानियात की मेह़नतें करते हुए और जन्नत का यक़ीन रखते हुए नेक आ़माल अन्जाम देते हुए यह मक़ाम ह़ासिल हो जाता है कि तबअ़ी मुहब्बत भी अल्लाह और उस के रसूल (सल्ल०) ही से ज़्यादा हो जाती है। यह मक़ाम बहुत मुबारक है जिसे ह़ासिल हो जाए।

25-26 لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ فِيْ مَوَاطِنَ كَثِيْرَةٍ ۙ وَّيَوْمَ حُنَيْنٍ ۙ اِذْ اَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ
شَيْـًٔا وَّضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّيْتُمْ مُّدْبِرِيْنَ ۚ ثُمَّ اَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى
رَسُوْلِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَنْزَلَ جُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا وَعَذَّبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۗ وَذٰلِكَ جَزَاۤءُ
الْكٰفِرِيْنَ

ग़ज़्व-ए-हुनैन में मुसलमान

इन आयात में तो अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों को ख़िताब करके यह फ़रमाया कि अल्लाह ने बहुत से मौक़े में तुम्हारी मदद फ़रमाई। फिर ख़ुसूसियत के साथ ग़ज़्व-ए-हुनैन में मदद फ़रमाने का वाक़िआ़ याद दिलाया। हुनैन मक्का और तायफ़ के दर्मियान एक जगह है। मक्का फ़तेह़ होने के बाद रसूलुल्लाह

(सल्ल०) बनी हवाज़िन की तरफ़ तशरीफ़ ले गये।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) के साथ बहुत बड़ी जमाअ़त थी, बाज़ सहाबा के मुँह से यह निकल गया कि आज हम कमी की वजह से मग़लूब (पराजित) नहीं हो सकते। अल्लाह का करना ऐसा हुआ कि मुसलमानों को पहले तो शिकस्त हुई और बहुत ज़्यादा परेशानी हुई और चन्द लोगों के अ़लावा सब लोग भाग खड़े हुए बाद में अल्लाह तआ़ला ने फ़तेह़ नसीब फ़रमाई।

"ह़ज़रत अ़ब्बास (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि हुनैन की जंग में मैं रसूलुल्लाह (सल्ल०) के साथ था। मैं और अबू सुफ़्यान (रज़ि०) बिन ह़ारिस बिन अ़ब्दुल् मुत्तलिब, दोनों रसूलुल्लाह (सल्ल०) के साथ रहे, हम ने आप (सल्ल०) को नहीं छोड़ा। आप (सल्ल०) अपने सफ़ेद ख़च्चर पर सवार थे जो आप (सल्ल०) को 'फ़रवह बिन सकाफ़ा जुज़ामी' ने अ़ता किया था"।

जब कुफ़्फ़ार और मुसलमान का मुक़ाबिला हुआ तो मुसलमान पीठ फेर कर भागे मगर रसूलुल्लाह (सल्ल०) अपने ख़च्चर को कुफ़्फ़ार की ओर ले जाने के लिए ऐड़ा लगाने लगे। मैं रसूलुल्लाह (सल्ल०) के ख़च्चर की लगाम इस इरादे से पकड़े हुए था कि कहीं वह तेज़ी से दुश्मन की तरफ़ न चला जाए और ह़ज़रत अबू सुफ़्यान (रज़ि०) रसूलुल्लाह (सल्ल०) की रिकाब पकड़े हुए थे। आप (सल्ल०) ने मुझे फ़रमाया अ़ब्बास, अस्ह़ाबे शजर को आवाज़ दे (क्योंकि मैं बुलन्द आवाज़ वाला था।) मैंने बुलन्द आवाज़ से पुकारा अस्ह़ाबे शज्रह कहाँ हैं? आवाज़ सुनते ही वह ऐसे लौट आये जैसे- गाय अपने बच्चों की तरफ़ आती है। वह कह रहे थे कि हम ह़ाज़िर हैं हम ह़ाज़िर हैं। अन्सार को यूँ बुलाया गया, या मअ़शरल् अन्सार! या मअ़शरल् अन्सार! फिर बनू ह़ारिस बिन ख़ज़्रज पर बुलाना ख़त्म हुआ। **(मुस्लिम)**

ग़ज़्व-ए-हुनैन का वाक़िआ़-

इस वाक़िये की तफ़्सीर इस तरह से है कि जब क़बीला ह़वाज़िन को यह मालूम हुआ कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने मक्का फ़तेह़ कर लिया है तो मालिक बिन औ़फ़ नस्र ने जो उन का सरदार था बनी हवाज़िन को जमा किया उन के साथ बनू सक़ीफ़, बनू नस्र, बनू जश्म, बनू सअ़द बिन बक्र और कुछ बनी हिलाल में से जमा हो गये उन लोगों का इरादा था कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) से क़िताल करें, उनके इरादों की ख़बर मिलने पर जब आप ने उन की तरफ़ तशरीफ़ ले जाने का इरादा किया तो मालिक बिन औ़फ़ ने अपनी जमीअ़त, अपने अम्वाल और औ़रतों और बच्चों को मक़ामें हुनैन में जमा कर दिया। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने अ़ब्दुल्लाह बिन अबी हुदूद अस्लमी (रज़ि०) को उन की ख़बर लेने के लिए भेजा और फ़रमाया कि तुम उनके अन्दर जाकर रहो और सही ह़ाल मालूम कर के उन की ख़बर ले आओ।

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अबी हुदूद (रज़ि०) तशरीफ़ ले गये और उन में दाख़िल होकर उन की ख़बरें ली और ह़ालात मालूम किया। फिर रसूलुल्लाह (सल्ल०) को ह़ालात से बाख़बर किया और बताया कि उन लोगों का इरादा जंग करने का है। आप ने मक्का से जब उन के मुक़ाबिले के लिए सफ़र शुरु फ़रमाया तो आप के साथ दस हज़ार लोग थे जो फ़तेह़ मक्का के लिए मदीना मुनव्वरह से साथ आये थे और

दो हज़ार आदमी मज़ीद अहले मक्का में से साथ हो गये।

ह़ज़रत सहल (रज़ि०) ने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (सल्ल०) के साथ चल रहे थे कि नमाज़ ज़ुह्र का वक़्त आ गया उस वक़्त एक घोड़ा सवार आदमी आया उस ने कहा या रसूलल्लाह! मैं आप के आगे चला गया था फ़लाँ-फ़लाँ पहाड़ पर चढ़ गया तो मैंने देखा कि बनी हवाज़िन सब के सब अपनी औ़रतों और अपने माल और अपनी बकरियों को लेकर हुनैन में जमा हो गये हैं। आप ने मुस्कुरा कर फ़रमाया, इन्शाअल्लाह कल को यह सब मुसलमानों के लिए माले ग़नीमत होंगे। आने वाली रात में ह़ज़रत अनस (रज़ि०) चौकीदारी करते रहे और इधर-उधर मुख़्तलिफ़ घाटियों में घोड़े पर सवार होकर फिरते रहे ताकि दुश्मन की ख़बर रखें।

जब सुबह़ हुई तो मुसलमानों के लश्कर और बनी हवाज़िन की जमीअ़त का मुक़ाबिला शुरु हुआ। यह पहले लिखा जा चुका है कि बाज़ मुसलमानों की ज़बान से यह बात निकल गई थी कि इस वक़्त हमारी तअ़दाद बहुत है, तअ़दाद की कमी की वजह से आज शिकस्त नहीं खाएँगे। 'बनी हवाज़िन' के लोग तीरन्दाज़ी में बहुत माहिर थे, उन्होंने तीरन्दाज़ी शुरु की तो मुसलमान पीठ फेर कर भाग लिये। दुश्मन के मुक़ाबिले में सिर्फ़ रसूलुल्लाह (सल्ल०) और आप के साथ चन्द लोग रह गये थे जिन में ह़ज़रत अबू बक्र, ह़ज़रत उ़मर, ह़ज़रत अ़ली, ह़ज़रत अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुम भी थे, आप बराबर पुकारते रहे।

اَيُّهَا النَّاسُ هَلُمُّوْا اِلَىَّ اَنَا رَسُوْلُ اللّٰهِ اَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللّٰهِ

ऐ लोगों! मेरी तरफ़ आ जाओ। मैं रसूल हूँ, मैं मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह हूँ। इस मौक़े पर रसूलुल्लाह (सल्ल०) सफ़ेद खच्चर पर सवार थे और यह पढ़ रहे थे।

اَنَا النَّبِيُّ لَا كَذِبْ ٭ اَنَا ابْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبْ

इस मौक़े पर आप (सल्ल०) ने अल्लाह तआ़ला से दुआ़ माँगी और अ़र्ज़ किया اَللّٰهُمَّ نَزِّلْ نَصْرَكَ ऐ अल्लाह! अपनी मदद नाज़िल फ़रमा।) आप ने ह़ज़रत अ़ब्बास (रज़ि०) से फ़रमाया कि लोगों को पुकारो कि ऐ अन्सार की जमाअ़त! इधर आओ, ऐ अस्ह़ाबे शजरा! (जिन्होंने हुदैबिया में दरख़्त के नीचे बैअ़त की थी) इधर आओ।

यह ह़ज़रात आवाज़ सुनकर लब्बैक-लब्बैक कहते रहे और रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में ह़ाज़िर होते रहे यहाँ तक कि सौ आदमी जमा हो गये और दोबारा जंग शुरु हो गई। रसलुल्लाह (सल्ल०) ने कंकरियों की एक मुट्ठी भर कर मुश्रिकीन की तरफ़ फेंक दी और फ़रमाया **شاهت الوجوه** अल्लाह का करना ऐसा हुआ कि यह कंकरियाँ दुश्मनों की आँखों में पड़ गईं और उन में से ऐसा कोई भी बाक़ी न रहा जिस की आँख में मिट्टी न पड़ी हो।

सल्मा बिन अक्वअ़ (रज़ि०) कहते हैं- "जब दुश्मनों ने आप (सल्ल०) को घेर लिया तो आप (सल्ल०) खच्चर से उतरे और ज़मीन से एक मुट्ठी ख़ाक़ उठाई और कुफ़्फ़ार की तरफ़ फेंकी। फिर आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, दुश्मन के चेहरे बिगड़ जाएँ फिर कुफ़्फ़ार में से कोई ऐसा न बचा जिस की आँखों

में उस मुट्ठी की वजह से मिट्टी न गई हो। **(मुस्लिम)**

थोड़ी ही देर गुज़री थी कि 'बनी हवाज़िन' और उन के साथी जमा होने वाले क़बायल को शिकस्त हो गई। इन में बहुत से क़त्ल किये गये और बड़ी तअ़दाद में क़ैद करके ख़िद्मते आ़ली में ह़ाज़िर किये गये जिन की मश्कें बँधी हुई थीं। उन लोगों के माल और औ़रतें और आल औलाद सब मुसलमानों को बतौरे ग़नीमत मिल गये। (जैसा कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया था कि उन के अमवाल इन्शाअल्लाह कल को मुसलमानों के लिए माले ग़नीमत होंगे।)

जिन लोगों ने फ़तेह़ मक्का के बाद इस्लाम क़ुबूल नहीं किया था—यूँ ही साथ चले आये थे उन्होंने जब अल्लाह की मदद देखी तो इस मौक़े पर इस्लाम क़ुबूल कर लिया।

जब अल्लाह तआ़ला ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को फ़तेह़याबी नसीब फ़रमाई तो आप ने माले ग़नीमत को (जिस में ऊँट, बकरियाँ और ग़ुलाम बांदियाँ सभी थे।) मक़ामे जीराना पर ले जाने का हुक्म फ़रमाया और फ़रमाया कि वहाँ ले जाकर सब जमा कर दिये जाएँ। फिर ह़ज़रत मस ऊद बिन ज़ुमर और अन्सार (रज़ि०) को इन मालों को ले जाने का ज़िम्मेदार बनाया।

मक़ामे 'अवतास' पर मुश्रिकीन से मुक़ाबिला-

इस के बाद मैदान से भागने वाले दुश्मनों की एक जमाअ़त ने मक़ामे 'अवतास' पर पड़ाव डाला, अन्दाज़ा था कि यह लोग जंग करेंगे।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उनके मुक़ाबिले के लिए ह़ज़रत 'अबू आ़मिर' (रज़ि०) को भेजा, उन से जंग हुई तो उन पर ग़ल्बा पा लिया, लेकिन ह़ज़रत अबू आ़मिर (रज़ि०) वहीं शहीद हो गये उन के बाद उन के चचाज़ाद भाई 'ह़ज़रत अबू मूसा' (रज़ि०) ने झंडा संभाला और क़िताल किया अल्लाह तआ़ला ने फ़तेह़याबी नसीब फ़रमाई और उन्हीं के हाथों वह शख़्स मक़्तूल हुआ जिस ने 'ह़ज़रत अबू आ़मिर' (रज़ि०) को शहीद किया था। जंगे 'अवतास' के मौक़े पर भी माले ग़नीमत मिला जिन में मुश्रिकीन की बहुत सी औ़रतें भी थीं।

'तायफ़' का मुहा़सिरा-

'ग़ज़्व-ए-हुनैन' के बाद रसूलुल्लाह (सल्ल०) 'तायफ़' की तरफ़ रवाना हुए वहाँ 'मालिक बिन औ़फ़' 'बनी हवाज़िन' का सरदार, उस के साथी और दूसरे लोग क़िलाबन्द हो गये थे।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने "चौबीस दिन" और एक रिवायत के मुताबिक़ "सत्रह दिन" उन का मुहासिरा (घेराव) किया, क़िला के अन्दर रहते हुए वह लोग तीर फेंकते रहे और बाहर न निकले, मुसलमानों में बहुत से लोग ज़ख़्मी हो गये। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने मिन्जनीक (पत्थर फेंकने का आला) इस्तेमाल फ़रमाई और उस के ज़रिये क़िले के अन्दर पत्थर फेंके। यह उस ज़माने में पत्थर फेंकने का एक आला (यन्त्र) था, दौरे ह़ाज़िर में मीज़ाइल को कह सकते हैं। ह़ज़रत सल्मान फ़ारसी (रज़ि०) ने अपने हाथ से 'मिन्जनीक' बनाई थी और इस्तेमाल करने का मश्वरह दिया था।

जब फ़तेह़याबी की कोई सूरत न बनी तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि हम कल को वापस हो जाएँगे, चुनांचे आप (सल्ल०) अगले दिन वहाँ से वापस हो गये और चलते वक़्त यह दुआ़ की।

(ऐ अल्लाह! इन को हिदायत दे और हमारे लिए तू ही काफ़ी हो जा (ताकि तुम्हें उन से निपटना न पड़े।) अल्लाह तआ़ला ने आप की दुआ़ क़ुबूल फ़रमाई और 'बनी सक़ीफ़' का गिरोह (जो तायफ़ के रहने वाले थे) आइन्दा साल रमज़ानुल् मुबारक में मदीना मुनव्वरह ह़ाज़िर हुआ और इस्लाम क़ुबूल करके पूरा क़बीला मुसलमान हो गया। {याद रहे कि तायफ़ वाले वही थे जिन्होंने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को ज़ख़्मी किया था फिर भी आप उन्हें हिदायत की दुआ़ देकर तशरीफ़ ले आये।}

माले ग़नीमत–

आप 'तायफ़' से वापस हुए तो मक़ामे 'जीअ़राना' में पहुँचे जहाँ आप के साथ मुसलमानों का बड़ा लश्कर था। वहाँ पहले से ग़नीमत का माल भेज दिया था, जिन में बनी हवाज़िन के क़ैदी भी थे। उन क़ैदियों की तअ़दाद छः हज़ार थी जिन में बच्चे और औ़रतें थीं और बहुत बड़ी तअ़दाद में ऊँट और बकरियाँ भी थीं, आप ने उन को अपने लश्कर में तक़्सीम फ़रमा दिया फिर उन की दरख़्वास्त पर उन के क़ैदी वापस कर दिये क्योंकि 'बनी हवाज़िन' ने इस्लाम क़ुबूल कर के इस की दरख़्वास्त की थी।

जैसा कि पहले अ़र्ज़ किया गया 'मालिक बिन औ़फ़' जो 'बनी हवाज़िन' का सरदार था वह 'तायफ़' में क़िला बन्द हो गया था। आप ने उस को ख़बर भेजी कि अगर इस्लाम क़ुबूल कर के मेरे पास आ जाए तो उस के कुन्बे के लोग और उस का माल वापस कर दूँगा और उस के सौ ऊँट भी दे दूँगा। जब 'मालिक बिन औ़फ़' को यह बात पहुँची तो उन्होंने इस्लाम क़ुबूल कर लिया और ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने अपने वादे के मुताबिक़ उन के अहल-व-अ़याल वापस कर दिये और सौ ऊँट भी दिये। इस के बाद रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने ज़ीअ़राना से उ़मरह का एह़राम बाँधा और मक्का पहुँच कर उ़मरह अदा किया फिर मदीना मुनव्वरह आ़फ़ियत और सलामती के साथ तशरीफ़ ले आये।

(बिदाया वन्निहाया, ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर पेज नं० 322 ता 324)

ह़ुनैन में फ़रिश्तों का नुज़ूल–

मुसलमानों को पहले तो शिकस्त (पराजय) हुई और ऐसी शिकस्त हुई कि ज़मीन उन के लिए तंग हो गई और वजह इस की वही थी कि बाज़ मुसलमानों ने यह कह दिया कि आज तो हम तअ़दाद में बहुत हैं शिकस्त का कोई सवाल ही नहीं। फिर अल्लाह तआ़ला ने मदद फ़रमाई और रसूलुल्लाह (सल्ल०) पर सकीना (इत्मिनान व सुकून) नाज़िल फ़रमाई, जिस की वजह से आप ख़ूब ज़्यादा इत्मिनान और सुकूने क़ल्ब के साथ बिलाख़ौफ़ अपने ख़च्चर पर सवार रहे और सह़ाबा (रज़ि०) को अपनी तरफ़ बुलाते रहे। अल्लाह तआ़ला ने आप पर और सह़ाबा पर भी सकीनत नाज़िल फ़रमाई यानी सुकून व इत्मिनान के साथ दोबारा जंग करने लगे जिस से दुश्मनों ने शिकस्त खाई।

क़ुर्आन मजीद में ग़ज़्व-ए-ह़ुनैन का ज़िक्र करते हुए وَاَنْزَلَ جُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا भी फ़रमाया (और

अल्लाह ने लश्कर उतारे जिन्हें तुमने नहीं देखा।) 'साहिबे मुआलिमुत्तन्ज़ील' भाग 2 पेज नं० 281 में फ़रमाते हैं यानी الملائكة قيل لا للقتال ولكن لتجبين الكفار وتشجيع المسلمين لأنه يُروى أن الملائكة لم يقاتلوا الا يوم بدر लश्करों से फ़रिश्ते मुराद हैं। इस बारे में कहा जाता है कि फ़रिश्ते जंग करने के लिए नहीं बल्कि काफ़िरों को बुज़्दिल और मुसलमानों को दिलेर बनाने के लिए नाज़िल किये गये थे क्योंकि यह रिवायत की जाती है कि फ़रिश्तों ने बद्र के मौक़े के अलावा और किसी मौक़े पर भी क़िताल में हिस्सा नहीं लिया। 'साहिबे रुहुल् मआनी' भाग 10 पेज नं० 75 ने भी جُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا की तफ़्सीर फ़रिश्तों से की है और लिखा है कि जम्हूर ने इसी को अख़्तियार किया है कि फ़रिश्तों ने बद्र के अलावा किसी और मौक़े पर क़िताल नहीं किया वह मोमिनीन के दिलों को मज़बूती के लिए और मुश्रिकीन के दिलों में रोअ़ब डालने के लिए आये थे।

फ़रिश्तों के उतारने का ज़िक्र फ़रमाने के बाद फ़रमाया وَعَذَّبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا कि अल्लाह ने काफ़िरों को अ़ज़ाब दिया (जो मक़्तूल हुए और क़ैदी बने) وَذٰلِكَ جَزَآءُ الْكٰفِرِيْنَ और यह काफ़िरों की सज़ा है। (जो दुनिया में है) और आख़िरत में जो सज़ा है वह दुनियावी सज़ा के अ़लावा है। जो कुफ़्र पर मरेगा वहाँ हमेशा के अ़ज़ाब में मुब्तिला होगा।

27 ثُمَّ يَتُوْبُ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

फिर इस के बाद अल्लाह जिस की चाहे तौबः क़ुबूल फ़रमाए और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।)

जो काफ़िर मक़्तूल हो जाएँ वह तो दुनिया का अ़ज़ाब यहीं चख लेते हैं और आख़िरत में हमेशा के अ़ज़ाब की तरफ़ चले जाते हैं, लेकिन जो लोग क़त्ल से बच जाएँ अल्लाह तआ़ला उन में से जिस को चाहे तौबः की तौफ़ीक़ दे देता है तो वह कुफ़्र छोड़कर इस्लाम में दाख़िल हो जाता है। उन्हीं में से 'मालिक बिन औ़फ़' भी था जो बहुत बड़ी जमीअ़त (लश्कर) को लेकर मुक़ाबिले के लिए 'हुनैन' में आया था। जब शिकस्त हुई तो 'तायफ़' जाकर क़िला बन्द हो गया, लेकिन ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का पैग़ाम पहुँचने पर वापस आया और मुसलमान हो गया और भी बहुत से 'बनी हवाज़िन' के लोग मुसलमान हुए जो जंग में क़त्ल होने से बच गये थे। 'तायफ़' में जाकर आप ने घेराव किया, फिर घेराव के बाद वापस तशरीफ़ ले आये बाद में वह लोग भी मुसलमान हो गये। इस्लाम के बड़े-बड़े दुश्मनों ने इस्लाम क़ुबूल किया और जन्नत के ह़क़्दार हुए। कुफ़्र के ज़माने में जो किया था अल्लाह तआ़ला ने सब माफ़ फ़रमा दिया।

28 يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْمُشْرِكُوْنَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هٰذَا ۚ وَاِنْ
خِفْتُمْ عَيْلَةً فَسَوْفَ يُغْنِيْكُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖۤ اِنْ شَآءَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝

मुश्रिकीन मस्जिदे ह़राम के पास न जाएँ

यह आयत भी सूरः तौबः के शुरु की उन चालीस आयात में से हैं जिन का एलान 9 हिज्री में ह़ज़रत

अ़ली (रज़ि०) के ज़रिये ह़ज के मौके़ पर कराया गया था जिस में 'ह़ज़रत अबू बक्र' (रज़ि०) अमीर थे। जिन चीज़ों का एलान किया था उन में यह भी था कि इस साल के बाद कोई मुश्रिक ह़ज न करे और कोई शख़्स नंगा होने की ह़ालत में तवाफ़ न करे (जैसा कि मुश्रिकीन किया करते थे।) इस आयत में जो यह फ़रमाया कि "मुश्रिकीन नजिस (अपवित्र) हैं सो वह इस साल के बाद मस्जिदे ह़राम के पास न आएँ।" इस में ह़ज़रत इमाम 'अबू ह़नीफ़ा' (रह़०) के नज़्दीक यह हुक्म है कि आइन्दा मुश्किरीन को ह़ज न करने दिया जाए मस्जिदे ह़राम में न आने देने का यही मतलब है। अगर किसी काफ़िर को मस्जिदे ह़राम या किसी भी मस्जिद में दाख़िल होने की इजाज़त दी जाए तो ह़ज़रत इमाम साह़ब के नज़्दीक यह जायज़ है और नजिस होने से मुराद उन की अन्दुरूनी नापाकी यानी अक़ायदे शरअ़िया और कुफ़्रिया मुराद हैं। हाँ, अगर उन में कोई मर्द व औ़रत जनाबत वाला हो या कोई औ़रत हैज़ वाली हो या जिस्म पर कोई ज़ाहिरी नजासत लगी हुई हो तो उन नजासतों की वजह से दाख़िल न होने दिया जाएगा और इस में मोमिन और काफ़िर का हुक्म एक ही है।

दूसरे आइम्मा का मज़हब इस से अलग है। 'साह़िबे रूहुल् मआ़नी' ने ह़ज़रत 'इमाम शाफ़ई' और 'ह़ज़रत इमाम मालिक' और 'ह़ज़रत इमाम अह़मद बिन ह़म्बल' रह़मतुल्लाहि अ़लैहि का यह मस्लक नक़्ल किया है कि किसी काफ़िर को चाहे ज़िम्मी हो या वीज़ा लेकर आया हो किसी भी सूरत में मस्जिदे ह़राम में दाख़िल करने की इजाज़त नहीं है। अगर काफ़िरों की तरफ़ से कोई क़ासिद (दूत) आये तो इमामुल् मुस्लिमीन मस्जिद से बाहर निकल कर उस से बातचीत करे।

मस्जिद में काफ़िर का दाख़िला-

यह तो उन ह़ज़रात का मस्लक मस्जिदे ह़राम के दाख़िले के बारे में है। रहा दूसरी मसाजिद का मसला तो 'ह़ज़रत इमाम शाफ़ई' (रह़०) दूसरी मस्जिदों में काफ़िर के दाख़िले की इजाज़त देते हैं और 'इमाम मालिक' (रह़०) से एक रिवायत यह है कि तमाम मस्जिदों का हुक्म बराबर है किसी भी मस्जिद में काफ़िर का दाख़िला जायज़ नहीं।

'ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा' (रह़०) ने आयत का यह मतलब बताया है कि काफ़िरों को ह़ज और उ़मरह करने से रोका जाए और बाज़ ह़ालात में काफ़िरों के मस्जिदे ह़राम में दाख़िल होने की इजाज़त है। इस की दलील में ह़ज़रत जाबिर (रज़ि०) का यह इर्शाद पेश किया है, जिसे 'दुर्रे मन्सूर' भाग 2, पेज नं० 226 में 'मुसन्नफ़ अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़' वग़ैरह से नक़्ल किया गया है।

فلا يقربوا المسجد الحرام بعد عامهم هذا الآ أ ن اً أو أحد من أهل الذمة.

(कि मुश्किरीन इस साल के बाद मस्जिदे ह़राम के क़रीब न जाएँगे मगर यह कि कोई ग़ुलाम हो या कोई शख़्स ज़िम्मी हो।) इससे मालूम हुआ कि काफ़िर मुश्रिक होने में ग़ुलाम बांदी, ज़िम्मी और दूसरे मुश्रिकीन सब बराबर हैं। जब ग़ुलाम और ज़िम्मी को इजाज़त दे दी गई तो मालूम हुआ कि हर काफ़िर के दाख़िले की इजाज़त है। अलबत्ता इस बात की मुमानिअ़त है कि उनको ह़ज या उ़मरह करने की

इजाज़त दी जाए। यह ह़दीस दुर्रे मन्सूर में मौक़ूफ़न नक़्ल की है।

लेकिन अ़ल्लामा 'अबू बक्र ह़िसास' ने अह़कामुल् क़ुर्आन भाग 3, पेज नं० 89 में मरफ़ूअ़न और मौक़ूफ़न दोनों तरह़ नक़्ल की है फिर लिखा है कि हो सकता है दोनों तरह़ सह़ी हो।

'अबूदाऊद' में है कि 'बनू सक़ीफ़' का वफ़्द जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में आया तो आप (सल्ल०) ने उन के लिए मस्जिद के आख़िरी ह़िस्से में एक स्टेज लगवा दिया ताकि वह मुसलमानों की नमाज़ें और उन का रुकूअ़ सज्दः देखें। अ़र्ज किया गया या रसूलल्लाह! आप उन्हें मस्जिद में ठहराते हैं ह़ालांकि वह मुश्रिक हैं। आप ने फ़रमाया, बिलाशुब्हा ज़मीन नापाक नहीं होती इब्ने आदम नापाक होता है।

'इमाम तह़ावी' ने इस वाक़िये को 'शरह़ मआ़नी अल् आसार' के सब से पहले बाब में नक़्ल किया है। इनकी रिवायात के अल्फ़ाज़ यह हैं-

فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم انه ليس على الارض من انجاس الناس شئ انما انجاس الناس على انفسهم

(लोगों की नजासतों में से ज़मीन पर कुछ भी नहीं उनकी नजासतें उनकी अपनी जानों पर हैं।)

'समामा बिन आसाल' का वाक़िआ भी इस पर दलालत करता है कि काफ़िर को मस्जिद में दाख़िल किया जा सकता है। 'समामा' एक शख़्स थे जिन्हें सह़ाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम गिरफ़्तार कर के लाये थे और उन को मस्जिदे नबवी के एक सुतून से बाँध दिया था, लेकिन बाद में उन्होंने इस्लाम क़ुबूल कर लिया था। **(सह़ी बुख़ारी भाग 1, पेज नं० 66)**

فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ (मुश्रिकीन मस्जिदे ह़राम के क़रीब न जाएँ) इसकी तस्रीह़ फ़रमाने के बाद इर्शाद फ़रमाया وَإِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً فَسَوْفَ يُغْنِيكُمُ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ إِن شَاءَ

अगर तुम फ़क्र से डरते हो तो जल्द ही अल्लाह तुम्हें अपने फ़ज़्ल से ग़नी कर देगा अगर चाहे।)

इस का सबबे नुज़ूल बताते हुए 'दुर्रेमन्सूर' में ह़ज़रत 'इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा' से यूँ नक़्ल किया गया है कि मुश्रिकीन जब ह़ज के लिए आते तो अपने साथ ग़ल्ला (गेहूँ, जौ वग़ैरह) भी ले आते थे और उस को फ़रोख़्त भी करते थे। जब ह़ज के लिए उन का आना रोक दिया गया तो मुसलमानों ने कहा कि अब हमें कुफ़्फ़ार की चीज़ें कहाँ से मिलेंगी।

इस पर अल्लाह तआ़ला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई और उन से वादा फ़रमाया कि अल्लाह अगर चाहे तो अपने फ़ज़्ल से ग़नी कर देगा। 'ह़ज़रत सई़द बिन ज़ुबैर' और 'ह़ज़रत मुजाहिद' से भी यह बात नक़्ल की गई है। अल्लाह तआ़ला का करना ऐसा हुआ कि मुसलमान काफ़िरों से और तिजारत माल से बेनियाज़ हो गये और अल्लाह तआ़ला ने उन के लिए रिज़्क़ के दूसरे दरवाज़े खोल दिये और उन्हें जो मआ़शी मुश्किलात का अन्देशा था, उन्हें दूर फ़रमा दिया।

29 قَاتِلُوا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَلَا يُحَرِّمُونَ مَا حَرَّمَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَلَا يَدِينُونَ
دِينَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ حَتَّىٰ يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَن يَدٍ وَهُمْ صَاغِرُونَ ۝

अहले किताब से क़िताल कब किया जाए

इस आयत में अहले किताब से क़िताल करने का हुक्म है। इस्लाम का क़ानून है कि काफ़िरों से जब जिहाद किया जाए तो पहले उन को हक़ क़ुबूल करने की दअ़वत दी जाए अगर उन्होंने हक़ क़ुबूल कर लिया तो आगे कोई जंग नहीं। अब तो उन्हें दीन सिखाएँगे, इस्लाम के अह़काम बताएँगे और नये पुराने मुसलमान सब इत्तिह़ाद व इत्तिफ़ाक़ के साथ अल्लाह की रस्सी को मज़बूत पकड़ कर चलेंगे। अगर काफ़िर कुफ़्र पर क़ायम रहें तो उनसे कहा जाएगा कि तुम जिज़्या दो यानी तुम इस मुल्क में रहो और तुम्हारी जानों की हम ह़िफ़ाज़त करेंगे, इस ह़िफ़ाज़त के बदले तुम्हें माल देना होगा। अगर मुल्क पर कोई ह़मलाआवर होगा तो तुम्हें साथ मिलकर लड़ना होगा। अगर वह इस को क़ुबूल कर लें तो भी उनसे कोई लड़ाई नहीं की जाएगी यह जो जानों की ह़िफ़ाज़त का बदला होगा उस को 'जिज़्या' कहा जाता है। यह हर शख़्स से नहीं लिया जाता और सब से बराबर नहीं लिया जाता। जैसे-

अगर काफ़िर 'जिज़्या' देने से भी इन्कारी हों और इस्लाम की मुख़ालिफ़त पर तुले हों तो फिर क़िताल यानी जंग की सूरत अख़्तियार की जाएगी, जिसे यहाँ इस आयत में बताया गया है कि अहले किताब यानी यहूद व नसारा से जंग करो जो अल्लाह पर और आख़िरत पर ईमान नहीं रखते यहाँ तक कि ज़िल्लत के साथ जिज़्या अदा करें। यह अहले किताब के साथ ख़ास नहीं है बल्कि दूसरे काफ़िरों का भी यही हुक्म है क्योंकि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने 'हजर' के मुशिरकों से 'जिज़्या' वसूल किया था।

इस आयत में क़िताल और 'जिज़्या' का ज़िक्र है, दअ़वते इस्लाम पेश करने का ज़िक्र नहीं। इसलिए कि जिन लोगों को पहले से दअ़वते इस्लाम पहुँच चुका हो तो उन्हें क़िताल से पहले दअ़वत देना ज़रुरी नहीं। अहले किताब यहूद व नसारा इस्लाम से पूरी तरह़ वाक़िफ़ थे, रसूलुल्लाह (सल्ल०) को पूरी तरह़ पहचान गये थे कि आप वाक़ई अल्लाह तआ़ला के रसूल हैं। इस सब के बावजूद इन्कार करते थे। रिसालत के तो मुन्किर थे ही, अल्लाह तआ़ला की तौह़ीद को भी छोड़ चुके थे और आख़िरत पर भी ईमान नहीं रखते थे।

अगर किसी दर्जे में आख़िरत का तसव्वुर था तो वह आख़िरत को न मानने के दर्जे में था क्योंकि जानते बूझते कुफ़्र अख़्तियार करना और आख़िरत में जो कुफ़्र की सज़ा है यानी हमेशा का अ़ज़ाब, उसे भुगतने के लिए तैयार रहना यह आख़िरत को न मानने ही के दर्जे में है। वह दोबारा ज़िन्दा होने और ह़िसाब-किताब के क़ायल नहीं थे, जन्नत और दोज़ख़ के बारे में उन का अ़क़ीदा था कि यह कुछ नहीं, रुह़ की ख़ुशी का नाम जन्नत और ग़म का नाम जहन्नम है।

इसीलिए قَاتِلُوا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْآخِرِ फ़रमायाः-

قال صاحب الروح دایمانهم الذی یزعمونه لیس علی ما ینبغی فهو کلا ایمان (ص ج ۱۰)

अहले किताब का फ़साद- अहले किताब का ह़ाल बयान करते हुए यह भी फ़रमाया

وَلَا يُحَرِّمُوْنَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ कि अल्लाह ने और उस के रसूल (सल्ल०) ने जिन चीज़ों को ह़राम क़रार दिया है उन को ह़राम नहीं समझते। जब दीने इस्लाम को क़ुबूल नहीं करते तो ह़राम व ह़लाल की तफ़्सीलात को भी नहीं मानते। 'साह़िबे रुहुल् मआ़नी' ने इसकी तफ़्सीर में बाज़ उ़लमा का यह क़ौल भी नक़्ल किया है कि उन का जिस रसूल पर ईमान लाने का दावा है उस ने जिन चीज़ों को ह़राम क़रार दिया—ख़्वाहिशाते नफ़्स की पैरवी की वजह से उन को ह़राम क़रार नहीं देते, उन की शरीअ़त को भी बदल दिया और अ़मल से भी दूर हो गये। जैसे- रिश्वत और सूद का लेना उन के यहाँ आ़म था, जिन की हुरमत उनकी किताबों में थी।

अहले किताब का मज़ीद ह़ाल बयान करते हुए फ़रमाया وَلَا يَدِيْنُوْنَ دِيْنَ الْحَقِّ कि वह दीने ह़क़ यानी इस्लाम को क़ुबूल नहीं करते। उन की यह सिफ़ात और उन के यह ह़ालात इस बात के गवाह हैं कि उन से जंग की जाए। अगर ह़क़ क़ुबूल कर लें तो बेहतर है वरना 'जिज़्या' देने पर आमादा हो जाएँ इस सूरत में उन से क़िताल रोक दिया जाएगा और जंग नहीं की जाएगी।

फिर फ़रमाया حَتّٰى يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَّدٍ इस में लफ़्ज़ عَنْ يَّدٍ से क्या मुराद है? इस के बारे में बहुत सी राय हैं। बाज़ ह़ज़रात ने फ़रमाया कि इस का यह मतलब है कि जिस शख़्स पर 'जिज़्या' देना मुक़र्रर कर दिया गया हो वह ख़ुद आकर अदा करे किसी दूसरे के ज़रिये न भेजे क्योंकि जिज़्या लेने से उन की कमज़ोरी भी मक़्सूद है। ख़ुद घर में बैठे रहे और किसी को वकील बनाकर 'जिज़्या' भेज दिया तो इस में उन का एज़ाज़ (बड़ापन) है, इसलिए वकील के वास्ते से भेजना मन्ज़ूर न किया जाए बल्कि उन को मजबूर किया जाए कि वह ख़ुद आकर अदा करें और बाज़ ह़ज़रात ने इस का यह मतलब बताया है कि वह फ़रमाँबरदार और ताबेअ़ होकर जिज़्या अदा करें बाज़ ने इस क़ौल के मुताबिक़ यूँ तर्जुमः किया है कि मातह़ेत होकर रअ़ियत (प्रजा) बनकर जिज़्या देना मन्ज़ूर करें और बाज़ ह़ज़रात ने इस का यह मतलब लिया है कि नक़्द हाथ पर जिज़्या देना मन्ज़ूर करें।

फिर आख़िर में फ़रमाया وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ कि इस ह़ालत में जिज़्या दें कि वह ज़लील हों। बाज़ ह़ज़रात ने इस का यह मतलब बताया है कि वह खड़े होकर अदा करें और जो मुसलमान लेने वाला हो वह बैठकर वसूल करे।

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) से मन्क़ूल है कि ज़िम्मी का गला पकड़ कर यूँ कहा जाएगा कि (ऐ ज़िम्मी! जिज़्या दे) और बाज़ ह़ज़रात ने फ़रमाया है कि वसूलयाबी करने वाला यूँ कहे اَدِّ حَقَّ اللّٰهِ تَعَالٰى يَا عَدُوَّ اللّٰهِ (ऐ अल्लाह के दुश्मन! अल्लाह का ह़क़ अदा कर) और 'ह़ज़रत इमाम शाफ़ई' (रह़०) ने फ़रमाया है कि ज़िम्मयों के ज़लील होने का मतलब यह है कि उन्हें जो एह़काम दिये जाएँगे उन पर अ़मल करेंगे और मुसलमानों की मातह़ती (Under) में रहेंगे। यह 'साह़िबे रुहुल् मआ़नी' ने भाग 10 पेज नं० 79 नक़्ल किये हैं।

फिर आख़िर में लिखा है कि आजकल मुसलमानों का इन में से किसी क़ौल पर भी अ़मल नहीं। वह अपने नायब के ज़रिये ही जिज़्या भेज देते हैं और उन से ले लिया जाता है। सही तरीक़ा यह है

कि उन को मजबूर किया जाए कि ख़ुद लेकर पैदल आएँ सवारी पर सवार होकर न आएँ।

फ़ुक़्हा ने लिखा है कि ज़िम्मी काफ़िरों को दारुल् इस्लाम में कोई नया अिबादत ख़ाना बनाने की इजाज़त नहीं दी जाएगी। इस्लाम के ग़ल्बा होने से पहले जो उन का कोई अिबादत ख़ाना हो और वह गिर जाए तो उसे दोबारा बना सकते हैं और यह भी लिखा है कि उन के लिबास में और सवारियों में और टोपियों में और मुसलमानों के लिबास और सवारियों में अन्तर रखा जाए।

जिज़्या की मिक़्दार–

जिज़्या की मिक़्दार क्या है? इस के बारे में फ़ुक़्हा ने लिखा है कि एक जिज़्या तो वह है जो आपस की रज़ामन्दी और सुलह़ से मुक़र्रर कर लिया जाए, जितनी मिक़्दार पर इत्तिफ़ाक़ हो जाए उसी क़दर ले लिया जाए। इस में हर शख़्स से वसूल करने की ज़रुरत नहीं, उन के जो ज़िम्मेदार हों वह जिस तरह़ चाहें आपस में वसूलयाबी करके अमीरुल् मोमिनीन को पहुँचा दें।

सालाना या माहाना जितने-जितने दिनों के बाद लेना देना तय हो उसी के मुताबिक़ अ़मल करते रहें। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने नसारा 'नजूरान' से यूँ मामला फ़रमाया था कि पूरी जमाअ़त सालाना दो हज़ार ह़िल्ले अदा किया करे। ह़िल्ला दो चादरों को कहते हैं यानी एक लूँगी और एक चादर और हर ह़िल्ले की क़ीमत का अन्दाज़ा भी तय कर दिया गया था कि एक "औक़िया" (चाँदी) की क़ीमत के बराबर हो यानी एक औक़िया चालीस दिरहम का होता था और एक दिरहम का वज़न 3 माशा एक रत्ती और 1/5 रत्ती होता था।

दूसरी सूरत यह है कि अमीरुल् मोमिनीन उन के मुल्क पर क़ाबिज़ होकर उन्हें उन की मिल्कियत पर बाक़ी रखे और उन पर कुछ रक़म मुक़र्रर कर दे। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) ने मालदार आदमी पर सालाना अड़तालिस दिरहम मुक़र्रर किये थे जिन में से हर माह चार दिरहम अदा करना ज़रुरी था और जो शख़्स दर्मियानी दर्जे का मालदार हो उस पर "चौबीस दिरहम" मुक़र्रर किये थे। हर माह उस से दो दिरहम लिए जाते थे और जो शख़्स मालदार न हो मज़दूरी कर के खाता कमाता हो उस पर 'बारह दिरहम' की अदाएगी ज़रूरी थी जिस में हर माह एक दिरहम वसूल किया जाता था।

कमज़ोरों पर कोई जिज़्या नहीं–

औ़रत, बच्चा, अपाहिज और वह नादार जो मेह़नत कर के कमाने के लायक़ नहीं और वह लोग जो अपने अ़िबादत ख़ानों में रहते हों, लोगों से उन का मेल मिलाप न हो तो ऐसे लोगों पर कोई जिज़्या नहीं।

30 وَقَالَتِ الْيَهُودُ عُزَيْرٌ ابْنُ اللَّهِ وَقَالَتِ النَّصَارَى الْمَسِيحُ ابْنُ اللَّهِ ذَٰلِكَ قَوْلُهُمْ بِأَفْوَاهِهِمْ
يُضَاهِئُونَ قَوْلَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَبْلُ قَاتَلَهُمُ اللَّهُ أَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ۝

यहूद व नसारा की तर्दीद

ऊपर की आयत में अहले किताब से क़िताल करने का हुक्म दिया और इर्शाद फ़रमाया कि उन से

यहाँ तक क़िताल करो कि वह ज़लील होकर अपने हाथ से जिज़्या अदा करें। इस के बाद यहूद व नसारा का शिर्किया अ़क़ीदा बयान फ़रमाया। जिस से मालूम हुआ कि जैसे दूसरे मुश्रिक अपने शिर्क में लगे हुए हैं उसी तरह़ यहूद व नसारा भी मुश्रिक हैं।

जिन अम्बिया-ए-किराम (अ़लै०) से अपना तअ़ल्लुक़ जोड़ते हैं उन्होंने तौह़ीद की दअ़वत दी थी और इसी दअ़वत को लेकर अल्लाह पाक की तरफ़ से भेजे गये थे बाद में उनके मानने वालों ने (जो मानने का झूठा दावा करते हैं) तौह़ीद को छोड़ दिया और शिर्क अख़्तियार कर लिया। यहूदियों ने तो यूँ कहा कि उ़ज़ैर (अ़लै०) अल्लाह के बेटे हैं और नसारा ने यूँ कहा कि मसीह़ यानी ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) अल्लाह के बेटे हैं। अल्लाह तआ़ला ने उन का क़ौल ज़िक्र करने के बाद फ़रमाया ذَٰلِكَ قَوْلُهُم بِأَفْوَاهِهِمْ ۖ कि यह उन की बातें हैं जो उन के मुँहों से निकल रही हैं यह अपनी बातों में झूठे हैं। उन की बातों का ह़क़ीक़त से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं और उन के बातों की कोई दलील और कोई सनद नहीं।

फिर फ़रमाया يُضَاهِئُونَ قَوْلَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن قَبْلُ

उन से पहले जिन लोगों ने कुफ़्र अख़्तियार किया उन की बातें उन पहलों की बातों के समान हैं।

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) ने फ़रमाया कि الَّذِينَ كَفَرُوا مِن قَبْلُ

(जिन्होंने इन से पहले कुफ़्र अख़्तियार किया) से मुश्रिकीन मुराद हैं। जिन्होंने फ़रिश्तों को अल्लाह की बेटियाँ बताया और इस अ़क़ीदे के जो लोग हैं यानी यहूद व नसारा वह अपने पुराने लोगों की बात पर जमे हुए हैं। **(रुहुलु मआ़नी भाग 1 पेज नं० 83)**

फिर फ़रमाया قَاتَلَهُمُ اللَّهُ इस के लफ़्ज़ी माने तो यह हैं कि अल्लाह तआ़ला उन्हें हलाक करे और ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि०) ने इस के मिजाज़ी माने लिए हैं और फ़रमाया है कि इस से लअ़नत करना मुराद है। أَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ (वह कहाँ उल्टे फिरे जा रहे हैं) उन को तौह़ीद की दअ़वत दी गई लेकिन उसे छोड़कर शिर्क अख़्तियार किये हुए हैं और ह़क़ को छोड़कर बातिल में लगे हुए हैं।

31 اتَّخَذُوا أَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ أَرْبَابًا مِّن دُونِ اللَّهِ وَالْمَسِيحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَمَا أُمِرُوا إِلَّا
لِيَعْبُدُوا إِلَٰهًا وَاحِدًا ۖ لَّا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ سُبْحَانَهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝

उन लोगों ने अल्लाह को छोड़कर अपने अह़बार (यानी उ़लम-ए-यहूद) को और राहिबों (यानी नसारा के पादरियों को) अपना रब बना लिया और 'मसीह़ इब्ने मरयम' को (भी) रब बना लिया। नसारा के राहिब (पादरी) दुनिया से कटकर अपने उन घरों को जंगलों में बना लेते थे, इसलिए रहबान (सन्यासी) का तर्जुमः दरवेश किया गया।

ह़राम व ह़लाल का अख़्तियार

'ह़ज़रत अ़दी बिन ह़ातिम' (रज़ि०) जो पहले 'नसरानी' थे (बाद में मुसलमान हुए) उन्होंने बयान किया कि मैं रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास आया उस वक़्त मेरी गर्दन में सोने की सलीब थी। आप

(सल्ल०) ने फ़रमाया, ऐ 'अ़दी' अपनी गर्दन से इस बुत को निकाल कर फेंक दो मैंने उस को फेंक दिया, वापस आया तो आप اِتَّخَذُوْٓا اَحْبَارَهُمْ وَ رُهْبَانَهُمْ اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ पढ़ रहे थे। मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! हम अपने आ़लिमों और पादरियों की अ़िबादत तो नहीं करते फिर यह क्यों फ़रमाया कि आ़लिमों और पादरियों को रब बना लिया। आप ने फ़रमाया क्या यह बात नहीं कि यह लोग जो चीज़ तुम्हारे लिए ह़राम कर दें तुम उसे ह़राम कर लेते हो और जो चीज़ ह़लाल कर दें तुम उसे ह़लाल कर लेते हो। मैंने कहा हाँ, यह बात तो है आप ने फ़रमाया यही उन की अ़िबादत है।

(मुआ़लिमुत्तन्ज़ील भाग 2 पेज नं० 285)

'सुनन तिर्मिज़ी' वग़ैरह में इस तरह़ है कि 'अ़दी बिन ह़ातिम' ने बयान किया कि मैं रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ख़िद्मत में ह़ाज़िर हुआ आप सूरः तौबः की आयत اِتَّخَذُوْٓا اَحْبَارَهُمْ وَ رُهْبَانَهُمْ اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ पढ़ रहे थे। आप ने फ़रमाया कि यह लोग उन की अ़िबादत नहीं करते थे, लेकिन जिन चीज़ों को वह ह़लाल कहते थे उन्हें ह़लाल समझते थे और जिन चीज़ों को वह ह़राम कर देते थे उनको ह़राम मान लेते थे। **(दुर्रे मन्सूर भाग 3 पेज नं० 230)**

ह़लाल व ह़राम में ग़ैरुल्लाह की फ़रमाँबरदारी-

ह़लाल व ह़राम अल्लाह तआ़ला तमाम चीज़ों का ख़ालिक़ और मालिक है जिन चीज़ों से नफ़ा ह़ासिल करते हैं वह भी उसी ने पैदा कीं और जो लोग उन्हें इस्तेमाल करते हैं उन को भी उसी ने पैदा फ़रमाया तो उसे अख़्तियार है कि जिस चीज़ को जिस के लिए चाहे ह़लाल क़रार दे और जिस के लिए चाहे ह़राम क़रार दे उस ने पिछली उम्मतों के लिए बाज़ चीज़ें ह़राम क़रार दीं और इस उम्मत के लिए ह़लाल कर दीं। अल्लाह तआ़ला के सिवा किसी को यह ह़क़ नहीं पहुँचता कि अपने पास से ह़लाल और ह़राम के क़ानून बनाए।

जो शख़्स अपने तौर पर कुछ चीज़ों को ह़लाल और कुछ चीज़ों को ह़राम क़रार दे चाहे अपने लिए चाहे दूसरों के लिए यह खुदाई अख़्तियारात को अपने हाथ में लेने जैसा है। सूरः यूनुस *(आयत नं० 59)* में फ़रमायाः-

قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ لَكُمْ مِّنْ رِّزْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِّنْهُ حَرَامًا وَّحَلٰلًا ۭ قُلْ آٰللّٰهُ اَذِنَ لَكُمْ اَمْ عَلَى اللّٰهِ تَفْتَرُوْنَ ۝

(आप फ़रमा दीजिए कि यह तो बताओ जो कुछ अल्लाह ने तुम्हारे लिए रिज़्क़ नाज़िल फ़रमाया।) सो उस में से तुम ने ह़राम और ह़लाल कर लिया। क्या अल्लाह ने तुम्हें इसकी इजाज़त दी है या तुम अल्लाह पर तोहमत बाँधते हो?)

ह़राम व ह़लाल का अख़्तियार-

जब ह़लाल व ह़राम का अख़्तियार सिर्फ़ अल्लाह को है जो ख़ालिक़ और मालिक है तो उस के सिवा जो शख़्स ह़लाल व ह़राम के लिए क़ानून बनाए और अपने पास से ह़लाल व ह़राम क़रार दे उस की बात मानना और फ़रमाँबरदारी करना अल्लाह तआ़ला के अख़्तियारात में शरीक बनाना हुआ। जैसे-

अल्लाह तआ़ला की फ़रमाँबरदारी करना उस की अ़िबादत है, उसी तरह़ इन चीज़ों में ग़ैरुल्लाह की फ़रमाँबरदारी करना जो अल्लाह तआ़ला की शरीअ़त के ख़िलाफ़ हैं यह उन की अ़िबादत है चाहे उन को सज्दः न करें—चूंकि इन जारी किये हुए हुक्मों के साथ फ़रमाँबरदारी का वही मामला है जो अल्लाह तआ़ला के हुक्मों के साथ होना चाहिए।

इसलिए उनके इत्तिबअ़ और फ़रमाँबरदारी को अ़िबादत क़रार दिया।

फिर फ़रमाया وَمَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا لِيَعْبُدُوْٓا اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ

(और उन्हें यही हुक्म हुआ था कि सिर्फ़ एक ही मअ़बूद की अ़िबादत करें।) यानी सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की अ़िबादत में मश्ग़ूल हों لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ (कोई मअ़बूद नहीं उस के सिवा) वही मअ़बूदे ह़क़ीक़ी है उसकी अ़िबादत के अ़लावा किसी की अ़िबादत करना शिर्क है। سُبْحٰنَهٗ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ (अल्लाह तआ़ला उन के शिर्क से पाक है।)

नोट– आजकल आज़ाद ख़याल लोग इस्लामी हुक्मों पर चलने में दुश्वारी मह़सूस करते हैं और दुश्मनाने इस्लाम से मुतास्सिर हैं, कहते हैं कि ह़ज़रात उ़लमा-ए-किराम जमा होकर मीटिंग करें और इस्लामी हुक्मों के बारे में ग़ौर व फ़िक्र करें और फ़लाँ-फ़लाँ अह़काम को बदल दें या हल्का कर दें और फ़लाँ-फ़लाँ चीज़ों को ह़लाल क़रार दे दें, यह उन लोगो की जिहालत की बात है। अगर उ़लमा ऐसा करने बैठेंगे तो काफ़िर हो जाएँगे और अगर किसी ह़राम चीज़ को ह़लाल क़रार देंगे तो उन के ह़लाल कहने से ह़लाल न होगी। बाज़ जो नाम के आ़लिम कहलाते हैं उन्होंने बाज़ मुह़र्रिमात को ह़लाल कह दिया है उन के कहने और लिखने से वह चीज़ें ह़लाल नहीं होंगी, जिसे क़ुर्आन ने ह़राम क़रार दिया हो।

❖

आयत नं० 32 से 40 तक

يُرِيدُونَ أَن يُطْفِـُٔوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ وَيَأْبَى اللَّهُ إِلَّا أَن يُتِمَّ نُورَهُ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ۝ هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ
بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ كَثِيرًا مِّنَ الْأَحْبَارِ وَالرُّهْبَانِ
لَيَأْكُلُونَ أَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَيَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ يَكْنِزُونَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنفِقُونَهَا فِي سَبِيلِ
اللَّهِ فَبَشِّرْهُم بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۝ يَوْمَ يُحْمَىٰ عَلَيْهَا فِي نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوَىٰ بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوبُهُمْ وَظُهُورُهُمْ هَٰذَا مَا
كَنَزْتُمْ لِأَنفُسِكُمْ فَذُوقُوا مَا كُنتُمْ تَكْنِزُونَ ۝ إِنَّ عِدَّةَ الشُّهُورِ عِندَ اللَّهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِي كِتَابِ اللَّهِ يَوْمَ خَلَقَ
السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ مِنْهَا أَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ذَٰلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ فَلَا تَظْلِمُوا فِيهِنَّ أَنفُسَكُمْ وَقَاتِلُوا الْمُشْرِكِينَ كَافَّةً
كَمَا يُقَاتِلُونَكُمْ كَافَّةً وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ۝ إِنَّمَا النَّسِيءُ زِيَادَةٌ فِي الْكُفْرِ يُضَلُّ بِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا يُحِلُّونَهُ عَامًا
وَيُحَرِّمُونَهُ عَامًا لِّيُوَاطِئُوا عِدَّةَ مَا حَرَّمَ اللَّهُ فَيُحِلُّوا مَا حَرَّمَ اللَّهُ زُيِّنَ لَهُمْ سُوءُ أَعْمَالِهِمْ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ۝
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَا لَكُمْ إِذَا قِيلَ لَكُمُ انفِرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ اثَّاقَلْتُمْ إِلَى الْأَرْضِ أَرَضِيتُم بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا مِنَ
الْآخِرَةِ فَمَا مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فِي الْآخِرَةِ إِلَّا قَلِيلٌ ۝ إِلَّا تَنفِرُوا يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا وَيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوهُ
شَيْئًا وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ إِلَّا تَنصُرُوهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللَّهُ إِذْ أَخْرَجَهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ثَانِيَ اثْنَيْنِ إِذْ هُمَا فِي الْغَارِ إِذْ
يَقُولُ لِصَاحِبِهِ لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللَّهَ مَعَنَا فَأَنزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَيْهِ وَأَيَّدَهُ بِجُنُودٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِينَ
كَفَرُوا السُّفْلَىٰ وَكَلِمَةُ اللَّهِ هِيَ الْعُلْيَا وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝

अनुवाद-

(32) 'यह' लोग अल्लाह के नूर (प्रकाश) को अपने मुँह से बुझा देना चाहते हैं, हालाँकि अल्लाह अपने (प्रकाश) को पूरा किये बिना नहीं रहेगा, चाहे काफ़िरों को नागवार (अप्रिय) ही लगे। (33) 'वही' है जिसने अपने रसूल को हिदायत (मार्गदर्शन) और सच्चे दीन के साथ भेजा ताकि उसे तमाम दीन (धर्म) पर ग़ालिब (प्रभावी) कर दे चाहे मुशिरकों को (कितना ही) बुरा ही लगे। (34) ऐ ईमान वालो! (अह्ले किताब के) बहुत से धर्म ज्ञाता (उलमा) और सन्त, लोगों के माल नाहक़ खाते हैं, और (उनको) अल्लाह की राह से रोकते हैं; और जो लोग सोना और चाँदी इकट्ठा कर के रखते हैं, और उन्हें अल्लाह की राह में खर्च नहीं करते, आप उन्हें एक दर्दनाक अ़ज़ाब की ख़बर सुना दीजिए; (35) जिस दिन उस (माल) को जहन्नम की आग में तपाया जाएगा, फिर उससे उनकी पेशानियों (मस्तक) को और उनके पहलुओं, और उनकी पीठों को दाग़ा जाएगा (और कहा जाएगा) ''यही है, वह (ख़ज़ाना) जिसे तुमने अपने लिए जमा किया था, तो अब अपने जमा करने का मज़ा चखो!'' (36) महीनों की संख्या-अल्लाह के नज़दीक उस दिन से (जब) कि 'उसने' आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, अल्लाह की किताब में बारह महीने (लिखे) हैं जिनमें चार महीने (ज़ीक़अ़दा, ज़िलहिज्ज, मुहर्रम, रजब) हुरमत वाले (प्रतिष्ठित) हैं, यही सीधा दीन है, अतः तुम इन महीनों में अपने ऊपर ज़ुल्म न करो; और मुशिरकों से तुम सब के सब मिल कर लड़ो, जिस तरह वे सब मिल कर तुम से लड़ते हैं, और जान लो! कि अल्लाह मुत्तक़ियों (परहेज़गारों) के साथ है। (37) (अम्न के किसी महीने) का हटा देना कुफ़्र में ज़्यादती करना है, इससे इन्कार करने वाले गुमराही में पड़ते हैं, वह किसी साल ह़राम महीनों

को हलाल कर लेते हैं और किसी साल उसे हराम समझते हैं ताकि उन (महीनों) को जिन्हें अल्लाह ने हराम कर दिया है गिनती पूरी कर लें; फिर अल्लाह के हराम किये हुए महीने को हलाल कर लेते हैं, उनके बुरे करतूत उन्हें अच्छे मालूम होते हैं और अल्लाह इन्कार करने वालों को सीधी राह नहीं दिखाता। (38) ऐ ईमान वालो! तुम्हें क्या हो गया है, कि जब तुमसे कहा जाता है कि "अल्लाह की राह में निकलो," तो तुम ज़मीन से चिमट जाते हो? क्या तुमने दुनिया की ज़िन्दगी को आख़िरत के मुक़ाबले में पसंद कर लिया है? दुनिया की ज़िन्दगी का सामान आख़िरत के मुक़ाबले में बहुत थोड़ा है! (39) अगर तुम न निकलोगे तो अल्लाह तुम्हें एक दर्दनाक अ़ज़ाब देगा, और तुम्हारे बदले एक दूसरी कौ़म पैदा कर देगा, और तुम उसे कुछ भी नुक़्सान न पहुँचा सकोगे, और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत रखता है। (40) अगर तुम (रसूल की) मदद न करोगे, तो उनकी मदद (ख़ुद) अल्लाह कर चुका है, जबकि उनको काफ़िरों ने (वतन से) निकाल दिया था (ऐसी स्थिति में) जबकि वह केवल दो में के दूसरे (अर्थात अबूबक्र और रसूल) थे। जब वे दोनों गुफ़ा में थे; उस वक्त वह अपने साथी से कह रहे थे, "ग़म (शोक) न करो, अल्लाह हमारे साथ है; फिर अल्लाह ने उन पर अपनी ओर से सकीनत (प्रशान्ति) उतारी, और उनकी मदद ऐसी सेनाओं से की जिन्हें तुम देख न सके; और उन्होंने काफ़िरों की बात नीची कर दी, और अल्लाह ही की बात ऊँची रही, और अल्लाह ज़बरदस्त (प्रभुत्वशाली) हिक्मत वाला है।

आयत नं० 32 से 40 तक की व्याख्या

32-33 يُرِيدُونَ أَن يُطْفِـُٔوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ وَيَأْبَى اللَّهُ إِلَّا أَن يُتِمَّ نُورَهُ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ﴿٣٢﴾
هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَى وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ ﴿٣٣﴾

फूँको से नूर बुझाया न जाएगा

इन दोनों आयात में दुश्मने इस्लाम के अ़ज़ायम का ज़िक्र है। पहली आयत में फ़रमाया कि यह लोग अल्लाह के नूर को अपने मुँहों से बुझा देना चाहते हैं यानी इस्लाम पर एतिराज़ कर के लोगों को इस्लाम से दूर रखना चाहते हैं और ख़ुद भी दूर रहते हैं। उन की बातों से इस्लाम का नूर बुझने वाला नहीं है और उनकी शरारतों से इस्लाम को ठेस लगने वाली नहीं है। अल्लाह तआ़ला ने यह फ़ैसला फ़रमा दिया है कि उस का नूर पूरा होकर रहेगा चाहे काफ़िरों को नागवार हो और बुरा लगे।

ऊपर दूसरी आयत में फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल (सल्ल०) को हिदायत और दीने हक़ के साथ भेजा ताकि इस दीन को दूसरे तमाम दीनों पर ग़ालिब कर दे चाहे मुश्रिकीन को नागवार हो। पहली आयत के ख़त्म पर وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ फ़रमाया और दूसरी आयत के ख़त्म पर وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ ﴿٣٣﴾ फ़रमाया जो लोग शिर्क की वजह से मुश्रिक हैं और जो लोग मुश्रिक नहीं किसी दूसरी वजह से काफ़िर हैं। जैसे-अल्लाह तआ़ला के वजूद को नहीं मानते या उस की ज़ात पर एतिराज़ करते हैं या उस की किताबों और उस के नबियों को झुठलाते हैं। इन दोनों क़िस्म के दुश्मनों की नागवारी का ज़िक्र फ़रमा

दिया कि काफ़िर और मुश्रिक यह जो चाहते हैं कि अल्लाह का दीन न फैले और उस का ग़ल्बा न हो उन के इरादों से कुछ नहीं होगा अल्लाह तआ़ला अपने दीन को ज़रूर ग़ालिब फ़रमाएगा। यह जलते और ह़सद करते हैं, उन की नियतों और इरादों पर ख़ाक पड़ेगी और दीने इस्लाम बुलन्द और ग़ालिब होकर रहेगा।

इस्लाम के ग़ालिब होने की शक्लें-

ग़ालिब होने की तीन सूरतों में से एक सूरत यह है कि दलील और हुज्जत के साथ ग़ल्बा हो और यह ग़ल्बा हमेशा से है और हमेशा रहेगा। कोई भी शख़्स चाहे दीने इस्लाम का मुद्दई हो, चाहे बुत परस्त हो, चाहे आतिश परस्त हो, चाहे अल्लाह तआ़ला के वजूद का मुन्किर हो, वह अपने दावे और अपने दीन को लेकर दलील के साथ मुसलमानों के सामने नहीं आ सकता और अपने दावे को सही़ साबित नहीं कर सकता। इस्लाम के दलायल से यहूद व नसारा और मुश्रिकीन और मुल्ह़िदीन (कम्यूनिस्ट) सब पर हुज्जत क़ायम है। इस एतिबार से दीने इस्लाम हमेशा से ग़ालिब है और अल्लाह तआ़ला ने उसे पूरा भी फ़रमा दिया और क़ुर्आन मजीद में एलान फ़रमा दिया।

اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِىْ *(सूरः माइदा-3)*

(आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन कामिल कर दिया और तुम पर अपनी नेअ़मत पूरी कर दी।)

इस्लाम दीने कामिल है इन्सानी ज़िन्दगी के तमाम शोबों पर ह़ावी है। दूसरे तमाम दीनों के मानने वाले सिर्फ़ चन्द चीज़ों और खुद से बनाये हुए अ़क़ीदे को लिए बैठे हैं।

अ़िबादात, मामलात, शादी, तिजारत, सियासत और हुकूमत, अख़्लाक़ और आदाब का कोई मज़हबी निज़ाम उन के पास नहीं है, खुद से कानून बना लेते हैं फिर उन्हें तोड़ देते हैं। (बल्कि यूँ कहते ही नहीं कि यह क़ानून अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से है) खुद बनाये हुए क़ानून को अल्लाह तआ़ला की तरफ़ कैसे मन्सूब करें....... इस्लाम ने इन्सानों को ज़िन्दगी के शोबे के अह़काम दिये हैं और अच्छे अख़्लाक़ की तअ़लीम दी है जिन की तफ़्सीलात क़ुर्आन मजीद में और ह़दीसों में मौजूद हैं।

दूसरी सूरत इस्लाम के ग़ालिब होने की यह है कि दुनिया में बसने वाले कुफ़्र व शिर्क छोड़ कर इस्लाम क़ुबूल कर लें और दुनिया में इस्लाम ही इस्लाम हो और उसी का राज हो। ऐसा क़ियामत से पहले पहले ज़रूर होगा। ह़ज़रत ईसा और ह़ज़रत मेहदी (अ़लै०) के ज़माने में इस्लाम ख़ूब अच्छी तरह़ फैल जाएगा और ज़मीन अ़द्ल व इन्साफ़ से भर जाएगी जैसा कि ह़दीस शरीफ में इस की व्याख्या आई है।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) की पेशीनगोई-

'ह़ज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा' ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से सुना कि रात और दिन ख़त्म होने से पहले ऐसा ज़रूर होगा कि लात (उपास्य) और उ़ज़्ज़ा (उपास्य) की परस्तिश (पूजा) की जाएगी। (यह ज़माने जाहिलियत में दो बुत थे) मैंने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह! मैं तो यह समझती थी कि जब अल्लाह तआ़ला ने आयते शरीफ़ा هُوَ الَّذِىْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۙ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ

नाज़िल फ़रमाई तो यह वादा पूरा होकर रहेगा। (यानी दीने हक़ तमाम दीनों पर ग़ालिब होगा) आप ने फ़रमाया, कि जब तक अल्लाह चाहेगा ऐसा होगा (जो आयते शरीफ़ा में है) फिर अल्लाह तआ़ला एक पाकीज़ा हवा भेज देगा जिस की वजह से हर उस शख़्स को मौत हो जाएगी जिस के दिल में राई के दाने के बराबर भी ईमान होगा। इस के बाद सिर्फ़ वही लोग बाक़ी रह जाएँगे जिन के दिल में कोई ख़ैर न होगी, लिहाज़ा वह अपने बाप दादों के दीन की तरफ़ लौट जाएँगे। **(मुस्लिम भाग 2 पेज नं० 394)**

ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने ह़ज़रत ई़सा (अ़लै०) की दुनिया में दोबारह तशरीफ़ लाने का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया ويبطل الملل حتى يهلك الله في زمانه الملل كلها غير الاسلام यानी ह़ज़रत ई़सा (अ़लै०) तमाम धर्मों को बातिल (कन्डम) कर देंगे यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला उन के ज़माने में इस्लाम के अ़लावा सारे धर्मों को ख़त्म फ़रमा देंगे।

(मुस्नद अह़मद भाग 2, पेज नं० 437)

तीसरी सूरत इस्लाम के ग़ालिब होने की यह है कि मुसलमान इक़्तिदार (सत्ता) के एतिबार से दूसरी क़ौमों पर ग़ालिब हो जाएँ।

'ह़ज़रत मिक़्दाद' (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, "ज़मीन पर मिट्टी से बना कोई घर या बेलों से तैयार किया हुआ कोई ख़ेमा ऐसा बाक़ी न रहेगा जिस में अल्लाह तआ़ला इस्लाम का कलिमा दाख़िल न फ़रमा दे। इ़ज़्ज़त वाले की इ़ज़्ज़त के साथ और ज़िल्लत वाले की ज़िल्लत के साथ।" ह़दीस की रिवायत करने के बाद ह़ज़रत मिक़्दाद (रज़ि०) ने फ़रमाया कि बस तो सारा दीन अल्लाह ही के लिए होगा। **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 16 मुस्नद अह़मद)**

जिन को अल्लाह तआ़ला इ़ज़्ज़त देगा उन्हें इस्लाम का क़ुबूल करने वाला बना देगा और जिन को अल्लाह ज़लील करेगा वह मक़्तूल होगा या मजबूर होकर जिज़्या अदा करेगा।

34-35 يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ إِنَّ كَثِيرًا مِّنَ ٱلْأَحْبَارِ وَٱلرُّهْبَانِ لَيَأْكُلُونَ أَمْوَٰلَ ٱلنَّاسِ بِٱلْبَٰطِلِ وَيَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ ٱللَّهِ ۗ وَٱلَّذِينَ يَكْنِزُونَ ٱلذَّهَبَ وَٱلْفِضَّةَ وَلَا يُنفِقُونَهَا فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ فَبَشِّرْهُم بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۝ يَوْمَ يُحْمَىٰ عَلَيْهَا فِى نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوَىٰ بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوبُهُمْ وَظُهُورُهُمْ ۖ هَٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِأَنفُسِكُمْ فَذُوقُواْ مَا كُنتُمْ تَكْنِزُونَ ۝

इस आयत में पहले तो अहले किताब के उ़लमा का ह़ाल बयान फ़रमाया कि यह लोग बातिल तरीक़ों पर लोगों का माल खाते हैं। उन में बाज़ लोग परहेज़ भी करते होंगे, इसलिए लफ़्ज़ कसीरा का इज़ाफ़ा फ़रमा दिया। उन का बातिल तरीक़े पर माल खाना इस तरह़ से था कि 'तौरेत शरीफ़' में तह़रीफ़ (संशोधन) करते और अपने पास से हुक्म बना देते, फिर इस पर अपने अ़वाम से पैसे लेकर खा जाते थे।

अहले किताब के उ़लमा का ह़ाल–

अहले ईमान को ख़िताब फ़रमा कर अहले किताब के उ़लमा की ह़रामख़ोरी का ज़िक्र फ़रमाया। जिस में इस तरफ़ इशारा है कि तुम्हारे अन्दर भी इस तरह़ के उ़लमा और मशायख़ हो सकते हैं, उन से परहेज़

करना। जो गद्दियाँ संभाले बैठे हैं उन का यही ह़ाल है, न अल्लाह का ख़ौफ़ और न शरीअ़त लोगों से माल वसूल करने के लिए तरह़-तरह़ के ढंग बना रहे हैं।

'ह़ज़रत इमाम ग़ज़ाली' (रह़०) ने लिखा है, जो कुछ किसी शख़्स को उस के दीनदार और सालेह़ होने के ख़याल से दिया जाए उस का लेना उस शख़्स के लिए ह़लाल नहीं जो अन्दर से फ़ासिक़ हो, अगर देने वाले को उस का अन्दुरुनी ह़ाल मालूम होता तो हरगिज़ न देता।

दूसरी बुरी बात-

अहले किताब के उ़लमा और मशायख़ की दूसरी सिफ़त यह बयान फ़रमाई कि वह अल्लाह की राह से रोकते हैं। उन लोगों ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को पहचान लिया कि आप वाक़ई अल्लाह के रसूल (सल्ल०) हैं, जिन के तश्रीफ़ लाने का इन्तिज़ार था, लेकिन उन लोगों ने आप की सिफ़ात को बदल दिया और अपने मानने वालों को यह बताया कि वह नबी नहीं हैं हम जिन के इन्तिज़ार में थे।

दुश्मनों की कोशिशें-

शुरु से जो दुश्मनाने इस्लाम की कोशिशें रही हैं और अब तक हो रही हैं उन को देखा जाए तो इस्लाम की दअ़वत मक्का मुकर्रमा के एक घर से भी आगे न बढ़ती, लेकिन अल्लाह तआ़ला ने अपने दीन को आगे बढ़ाया और करोड़ों लोग उस वक़्त से आज तक इस्लाम में दाख़िल हो चुके हैं और बराबर दाख़िल हो रहे हैं। दुश्मनों की कोशिशें फेल हैं, इस्लाम बराबर आगे बढ़ रहा है। योरोप, अमरीका, इण्डिया, कनाडा, अफ़्रीका, आस्ट्रेलिया और एशिया के बहुत से मुमालिक के ग़ैर मुस्लिम इस्लाम की तरफ़ मुतवज्जेह हो रहे हैं, इस्लाम क़ुबूल कर रहे हैं और अब यह सैलाब इन्शाअल्लाह रुकने वाला नहीं है। दलील व हुज्जत से इस्लाम हमेशा ग़ालिब है और अपने फैलाव के एतिबार से भी अब पूरी दुनिया में घर-घर दाख़िल हो रहा है।

दुश्मनाने इस्लाम हमेशा से यह देख रहे हैं कि अल्लाह तआ़ला की मदद अहले इस्लाम के साथ है और यह भी समझते और देखते हैं कि हमारी कोशिशें इस्लाम के ख़िलाफ़ कामियाब नहीं हैं, फिर भी अपनी नासमझी से इस्लाम की दुश्मनी पर तुले हुए हैं।

इस के बाद उन लोगों के लिए वई़द ज़िक्र फ़रमाई जो सोना चाँदी जमा करते हैं और अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते। इस में यहूद व नसारा के उ़लमा और मशायख़ (पादरी) भी दाख़िल हैं जो माल जमा करने की वजह से 'तौरेत शरीफ़' के हुक्मों में तह़रीफ़ (तब्दीली) करते थे और इस उम्मत के वह लोग भी मुराद हैं जो सोना चाँदी जमा करें और उस में से शरीअ़त के मुक़र्रर किये हुए फ़रायज़ वाजिबात में ख़र्च न करें। इर्शाद फ़रमायाः-

وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ

(और जो लोग सोना चाँदी जमा करते हैं और उसे अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते उन्हें दर्दनाक

अ़ज़ाब की ख़ुशख़बरी सुना दीजिए) बशारत ख़ुश करने वाली चीज़ की होती है लेकिन अ़ज़ाब की ख़बर को बशारत फ़रमाया। इस में यह कहना है कि वह माल जमा करने को अपने लिए अच्छा समझते थे. ....उन के गुमान के ख़िलाफ़ इर्शाद फ़रमाया कि तुम्हें इसकी वजह से अ़ज़ाब होगा। अ़ज़ाब को अच्छा समझते हो तो ख़ुश हो जाओ।

يَّوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوْبُهُمْ وَظُهُوْرُهُمْ ۭ هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ

(जिस रोज़ उन को दोज़ख़ की आग में तपाया जाएगा फिर उन की पेशानियों और उन के पहलुओं और उन की पुश्तों को दाग़ा जाएगा कि यह वह है जिस को तुम ने अपने लिए जमा किया था सो अब तुम चख लो जिसे जमा करते थे।)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि जो शख़्स चाँदी सोने का मालिक था और उस का हक़ अदा नहीं करता था (यानी ज़कात नहीं देता था) तो जब क़ियामत का दिन होगा उस के लिए आग की तख़्तियाँ बनाई जाएँगी, फिर उन तख़्तियों को दोज़ख़ की आग में गर्म किया जाएगा और उन के ज़रिये उस के पहलू और उसकी पेशानी और उसकी कमर को दाग़ दिया जाएगा। जब वह ठंडी हो जाएगी तो उन को (फिर से गर्म कर के) वापस लौटा दिया जाएगा यह उस दिन होता रहेगा, जो पचास हज़ार साल का होगा। फिर नतीजे में वह अपना रास्ता जन्नत की तरफ़ या दोज़ख़ की तरफ़ देख लेगा। (इस के बाद) उन लोगों की वओ़द का ज़िक्र फ़रमाया जो मवेशियों को ज़कात नहीं देते। **(मुस्लिम भाग 1 पेज नं० 318)**

पहले तो आग की तख़्तियाँ हों फिर उन को दोज़ख़ की आग में गर्म किया जाए, फिर उन से पहलुओं पेशानियों और पुश्तों को दागा जाए और जब ठंडी हो जाए तो दोबारा गर्म कर ली जाए और पचास हज़ार साल तक यही अ़ज़ाब का सिलसिला जारी रहे, फिर भी दोनों चीज़ें हैं कि जन्नत में जाए या दोज़ख़ में। इस का हर वह शख़्स तसव्वुर करे जो माल जमा करता है और ज़कात नहीं देता। पेशानियों और पहलुओं और पुश्तों को दाग़ देने में उ़लमा ने यह हिक्मत बताई है कि जब ऐसे लोगों के पास कोई सायल (माल ज़कात का तलबगार) सामने से आता है तो उसे देखकर पेशानी पर बल पड़ जाते हैं, फिर उस से नज़र बचाने के लिए दाएँ या बाएँ मुड़ते हैं और सवाल करने वाला इस तरह से भी पीछा न छोड़े तो फिर उस की तरफ़ पुश्त कर लेते हैं। इसलिए पेशानी, पहलू और पुश्त को अ़ज़ाब के लिए मख़्सूस किया गया।

फ़ायदा– इस्लाम में जिस क़िस्म का माल हो उसे सोना चाँदी से जोड़ा जाता है, जब से दुनिया में नोट आये हैं तो चूंकि उन के ज़रिये चाँदी सोना ख़रीदा जा सकता है इसलिए वह चाँदी सोने ही के हुक्म में हैं और माल तिजारत भी सोने चाँदी के हुक्म में है। सोना चाँदी हो या माले तिजारत या नक़्द कैश इन सब पर ज़कात फ़र्ज़ होती है। जितनी भी ज़कात शरीअ़त के मुताबिक़ फ़र्ज़ हो वह हिसाब से अदा की जाती रहे तो बाक़ी माल को 'कन्ज़' (जमा करना) नहीं कहा जाएगा जिस पर हदीस में वओ़द आई है।

इसीलिए बाज़ अहादीस में फ़रमाया है مابلغ أن تؤدی زکوته فنزکی فليس بكنز
यानी जो माल इस मिक़्दार को पहुँच जाए जिस पर ज़कात फ़र्ज़ होती है और उस की ज़कात अदा कर दी जाए तो वह कन्ज़ नहीं है। **(अबूदा ऊद भाग 1, पेज नं० 218)**

ज़कात एक अिबादत है जो अल्लाह तआला ने मोमिनीन पर फ़र्ज़ फ़रमाई है और क़ुर्आन मजीद में दसियों जगह ज़कात को नमाज़ के साथ ज़िक्र फ़रमाया है। सूरः हामीम सज्दः में फ़रमाया हैः-

وَ وَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ لَا يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ

(सो ख़राबी है मुशिरकीन के लिए जो ज़कात अदा नहीं करते और वह आख़िरत के मुन्किर हैं।)

इस में इस तरफ़ इशारा है कि ज़कात न देना मुशिरकों और उन लोगों का काम है जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते। ज़कात के अ़लावा शरीअ़त के मुताबिक़ दूसरे इख़राजात भी वाजिब हैं। क़ुर्बानी करना, सद्क़-ए-फ़ित्र अदा करना.......माँ-बाप और दूसरे रिश्तेदारों पर ख़र्च करना यह सब हुक़ूक़ हैं जो माल से मुतअ़ल्लिक़ हैं और हुक़ूक़ वाजिबा के अ़लावा जो शख़्स जितना भी अल्लाह की रज़ा के लिए ख़र्च करेगा उस का सवाब पाएगा जिस को नफ़्ली सद्क़ात कहा जाता है, लेकिन फ़रायज़ और वाजिबात में ख़र्च करने का ख़ास ध्यान रखे ताकि आख़िरत में पकड़ न हो।

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जिसे अल्लाह ने माल दिया और वह अपने माल की ज़कात अदा नहीं करता तो क़ियामत के दिन उस के माल को गंजे ज़हरीले साँप की शक्ल दी जाएगी। उस की आँखों पर दो काले निशान होंगे, यह साँप उस के गले को दबाएगा और उस की गालों को डसेगा और कहेगा मैं तुम्हारा माल हूँ, मैं तुम्हारा माल हूँ।" **(बुख़ारी)**

चाँदी सोने का क्या निसाब है? इस की तफ़्सील के लिए दो रुकूअ़ के बाद आयत اِنَّمَا الصَّدَقٰتُ لِلْفُقَرَآءِ की तफ़्सीर देखिए।

36-37

اِنَّ عِدَّةَ الشُّهُوْرِ عِنْدَ اللّٰهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ مِنْهَآ
اَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ؕ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ۙ۬ فَلَا تَظْلِمُوْا فِيْهِنَّ اَنْفُسَكُمْ وَقَاتِلُوا الْمُشْرِكِيْنَ كَآفَّةً
كَمَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ كَآفَّةً ؕ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ۝ اِنَّمَا النَّسِيْٓءُ زِيَادَةٌ فِي الْكُفْرِ يُضَلُّ
بِهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُحِلُّوْنَهٗ عَامًا وَّيُحَرِّمُوْنَهٗ عَامًا لِّيُوَاطِـُٔوْا عِدَّةَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ فَيُحِلُّوْا مَا حَرَّمَ اللّٰهُ ؕ
زُيِّنَ لَهُمْ سُوْٓءُ اَعْمَالِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ۝

अहले किताब के कुछ हालात बयान किये जाने के बाद दोबारा मुशिरकीने अ़रब के कुछ दूसरे जरायम बयान किये जा रहे हैं।

एक साल में बारह महीने-

अल्लाह तआ़ला ने जब से आसमान व ज़मीन को पैदा किया महीनों की तअ़दाद 'बारह' मुक़र्रर कर दी और उन के नाम भी रख दिये और उन महीनों से मुतअ़ल्लिक़ हुक्म भी बयान कर दिये जिन

का ज़िक्र तमाम आसमानी किताबों में आया है। इन में से एक ख़ास हुक्म यह है कि अल्लाह ने साल के चार महीनों (रजब, ज़ीक़अ़दह, ज़िल् हिज्ज और मुहर्रम) को ख़ास अहमियत दी है, उन का एह़तिराम लाज़िम क़रार दिया है और उन में जंग को ह़राम कर दिया है, लेकिन ज़माने जाहिलियत में बाज़ अ़रबों ने इस हुक्म का लिहाज़ नहीं किया और अपनी ख़्वाहिश के मुताबिक़ महीनों को आगे पीछे करना शुरु कर दिया, कभी ह़ज्ज ज़िल्लूहि़ज्ज में रखते और कभी बाद में कर लेते।

इसी तरह़ अगर कभी किसी क़बीले को दूसरे क़बीले पर 'मुहर्रम' के मह़ीने में ह़मला करना होता तो उसे ह़लाल कर लेते और उस के बदले सफ़र के महीने को ह़राम बना लेते। इसीलिए बहुत से क़बायल लूट के माल पर ही ज़िन्दगी गुज़ारते थे और लगातार तीन महीने ह़राम होने की वजह से उन्हें फ़ाक़ा (भुखमरी) की नौबत आ जाती थी, इसीलिए इन महीनों में से किसी को ह़लाल बना लेते और इस के बदले दूसरे को ह़राम बना देते। इस का नतीजा यह हुआ कि महीने आपस में मिल गये, चुनांचे रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने ह़ज्जतुल् विदाअ़ में एलान किया कि तमाम महीने अपनी जगहों पर लौट गये और आप (सल्ल०) का ह़ज्ज ज़िल्लूहि़ज्जा में हुआ।

अल्लाह तआ़ला ने इन दोनों आयतों में मुश्रिकीने अ़रब की इसी बात को बयान किया है और उन को रद्द किया है कि साल के मश्हूर 'बारह' महीने और उन में चार ह़राम के महीने और उन से मुतअ़ल्लिक़ अह़काम अल्लाह की ओर से मुक़र्रर किये हुए हैं, किसी के बदलने से यह हुक्म बदल नहीं जाएँगे। इसलिए ऐ मुश्रिकीने अ़रब! उन ह़राम महीनों की हुरमत (एह़तिराम) को पामाल (तोड़) कर के अपने आप पर ज़ुल्म न करो, इसलिए कि ऐसा करना अल्लाह के ह़राम को ह़लाल और ह़लाल को ह़राम बनाना है जो तुम्हारे कुफ़्र में इज़ाफ़ा है।

आयत का यह ह़िस्सा दलील है कि मुश्रिकों से क़िताल करना वाजिब है और अगर मुसलमानों का एक गिरोह इस वजूब की अदायगी में सुस्ती करेगा तो उम्मत के हर शख़्स पर वाजिब हो जाएगा।

उ़लमा ने अश्हुरुल् हुरूम (हुरूम के चार महीने) में क़िताल की हुरमत के बारे में इख़्तिलाफ़ किया है। मश्हूर यही है कि यह हुक्म मन्सूख़ (निरस्त) है, इसलिए कि अल्लाह ने अशहुरुलूहुरुम का ज़िक्र करने के बाद ही मुश्रिकों से क़िताल का आ़म हुक्म दिया है, अगर इन महीनों में क़िताल करना मना होता तो उसे ज़रूर बयान किया जाता और रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने अहले 'तायफ़' का मुह़ासिरा 'ज़िल् क़अ़दह' के महीने में किया था जैसा कि सह़ीह़ैन की ह़दीस से साबित है और दूसरा क़ौल यह है कि यह हुक्म मन्सूख़ नहीं है और 'अश्हरुलूहुरुम' में क़िताल ह़राम है, इसलिए कि अल्लाह ने फ़रमाया हैः-

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحِلُّوْا شَعَآئِرَ اللّٰهِ وَلَا الشَّهْرَ الْحَرَامَ *(अलू माइदः 2)* और इसी सूरत की आयत नं० (5) में फ़रमाया है فَاِذَا انْسَلَخَ الْاَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِيْنَ इन दोनों आयतों से यही साबित होता है कि अश्हुरुलूहुरुम में हुरमत (एह़तिराम) बाक़ी है मन्सूख़ (ख़त्म) नहीं हुई है और इसलिए कि शहर ह़राम में मुश्रिकीन से क़िताल को उस वक़्त जायज़ क़रार दिया गया है जब इस की शुरुआ़त मुश्रिकों की तरफ़ से हो। अल्लाह ने फ़रमाया وَلَا تُقٰتِلُوْهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتّٰى يُقٰتِلُوْكُمْ فِيْهِ ۚ فَاِنْ قٰتَلُوْكُمْ فَاقْتُلُوْهُمْ ؕ यानी मुसलमानों

के लिए यह जायज़ नहीं कि 'अश्हुरुलूहुरुम' में अपनी तरफ़ से क़िताल की शुरुआत करें और रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने 'अहले तायफ़' का मुहासिरा 'ज़िल् काअ़दा' में नहीं बल्कि शव्वाल में किया था, जो बाक़ी रहा यहाँ तक कि 'ज़िल् क़अ़दह' का महीना आ गया।

सय्यदना अबूबक्र (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने (हज्जतुल् विदाअ़ में) फ़रमाया, देखो ज़माना घूम फिर कर फिर उसी नक़्शे पर आ गया है जिस दिन अल्लाह ने ज़मीन व आसमान पैदा किये थे। साल 'बारह' माह का होता है उन में चार महीने हुरमत (एहतिराम) वाले हैं, तीन तो लगातार हैं।

'ज़ीक़ाअ़दह', 'ज़िलूहिज्जः' और 'मुहर्रम' जबकि चौथा माह 'रजब' है जो 'जमादिल् उख़रा' और 'शाबान' के दर्मियान आता है। **(बुख़ारी)**

नोट– इस्लाम में शरई हुक्मों का तअ़ल्लुक़ अ़रबी महीनों से है, जो क़मरी (चाँद वाले) महीने हैं और जिस की तस्दीक़ इस आयत से होती है। इस्लाम से पहले महीने और साल के लिए आ़मुल फ़ील का एतिबार होता था और शुरु में साल की इब्तिदा 'रबीउलव्वल' से होती थी। उस के बाद हज़रत 'उ़मर बिन ख़त्ताब' (रज़ि०) ने क़मरी महीनों की शुरुआ़त 'मुहर्रम' के महीने से की, जिस पर उम्मत का इत्तिफ़ाक़ हो गया।

38-40
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَا لَكُمْ إِذَا قِيلَ لَكُمُ انْفِرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ اثَّاقَلْتُمْ إِلَى الْأَرْضِ ۚ
أَرَضِيتُمْ بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا مِنَ الْآخِرَةِ ۚ فَمَا مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فِي الْآخِرَةِ إِلَّا قَلِيلٌ ۝ إِلَّا تَنْفِرُوا
يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا وَيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوهُ شَيْئًا ۗ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝
إِلَّا تَنْصُرُوهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللَّهُ إِذْ أَخْرَجَهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ثَانِيَ اثْنَيْنِ إِذْ هُمَا فِي الْغَارِ إِذْ يَقُولُ
لِصَاحِبِهِ لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللَّهَ مَعَنَا ۖ فَأَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَيْهِ وَأَيَّدَهُ بِجُنُودٍ لَمْ تَرَوْهَا
وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِينَ كَفَرُوا السُّفْلَىٰ ۗ وَكَلِمَةُ اللَّهِ هِيَ الْعُلْيَا ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝

यह आयते करीमा ग़ज़्व-ए-तबूक के मौक़े पर नाज़िल हुई थीं और इन में उन मुनाफ़िक़ीन और कमज़ोर ईमान वाले मुसलमानों को डाँट पड़ी जो इस जंग में शरीक नहीं हुए थे।

जंगे तबूक–

फ़तेह मक्का के एक साल बाद रसूलुल्लाह (सल्ल०) को ख़बर मिली कि हिरक्ल (बादशाह) शाहे रोम मुसलमानों से जंग की तैयारी कर रहा है। चुनांचे आप (सल्ल०) ने 'शव्वाल' 9 हिज्री में मुसलमानों को जंगी तैयारी का हुक्म दे दिया। ज़माना सख़्त गर्मी का था, फलों के पकने का वक़्त था, मुसलमान आ़म तंगदस्ती में थे, लेकिन फिर भी मुख़्लिस मुसलमानों ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) की आवाज़ पर लब्बैक कहा, लश्कर की तैयारी में हिस्सा लिया और जंग के लिए रवाना हो गये। 'हिरक्ल' को जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) के आने की ख़बर मिली तो पीछे हट गया और आप (सल्ल०) लश्करे इस्लाम के साथ तबूक के मक़ाम पर बीस दिन तक क़याम करने के बाद वापस हुए, इसी को 'ग़ज़्व-ए-तबूक' कहा जाता है। अगरचे जंग नहीं हुई लेकिन जैसा कि सूरः के शुरु में बताया गया है कि इस के नतायज बहुत ही दूर रस निकले,

इस ग़ज़्वे में कुछ कमज़ोर ईमान वाले मुसलमान और बहुत से मुनाफ़िक़ीन गर्मी की शिद्दत की वजह से शरीक नहीं हुए। यह आयतें इसी पसे मन्ज़र में नाज़िल हुई थीं।

आयत नं० (38) में दुनियावी माल के मुक़ाबिले में आख़िरत के ज़िन्दग़ी की अहमियत को बयान किया गया है।

'इमाम अह़मद' और 'मुस्लिम' ने रिवायत की है कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, "दुनिया की हैसियत आख़िरत के मुक़ाबिले में ऐसी ही है जैसे कोई अपनी उंगली समुद्र में डाल कर निकाल ले।" **(मुस्लिम)**

आयत नं० (39) में उन लोगों के लिए सख़्त तम्बीह है जो ग़ज़्वे में शरीक नहीं हुए और आ़मतौर से उन तमाम लोगों के लिए जो अल्लाह की राह में जिहाद करने से पीछे रह जाते हैं।

अल्लाह की राह में जिहाद करना, बड़ा फ़ज़ीलत वाला अ़मल है, यहाँ तक कि शहीद दुनिया में दोबारा आने की आरज़ू करेगा ताकि फिर शहादत के दर्जे को ह़ासिल करे। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "कोई शख़्स ऐसा नहीं जिसे मरने के बाद अल्लाह के यहाँ अच्छा अज्र व सवाब मिले और फिर भी वह दुनिया में वापस आना पसन्द करे अगरचे उस को सारी दुनिया और जो कुछ उस में है सब कुछ दे दिया जाए सिवाय शहीद के। वह शहादत की फ़ज़ीलत देखकर चाहेगा कि वह दुनिया में वापस आये और दोबारा (अल्लाह की राह में) मारा जाए।" **(सहीह़ बुख़ारी, अल् जिहाद वल् यस्र, बाब 6, ह़दीसः 2795)**

आयत नं० (40) में नबी करीम (सल्ल०) को इत्मिनान व यक़ीन दिलाया गया है कि ज़ाहिरी अस्बाब के ज़रिये आप की मदद तो आप के इत्मिनान के लिए है, वरना अल्लाह किसी ज़ाहिरी सबब का मुह़ताज नहीं है, अगर लोग आप की मदद नहीं करते हैं तो न करें वह तो हर ह़ाल में अपने नबी की मदद करता रहेगा और कभी भी उसे तन्हा नहीं छोड़ेगा और उस की मिसाल हिजरत के वक़्त के ह़ालात हैं जब अहले मक्का ने आप (सल्ल०) को क़त्ल कर देना चाहा और आप (सल्ल०) ह़ज़रत अबू बक्र (रज़ि०) के साथ मक्का से छुप कर निकले और तीन दिन तक ग़ारे सौर में छिपे रहे, दुश्मनों ने उन का पीछा किया और उन्हें पा लेने की हर इन्सानी तद्बीर (प्रयास) कर डाली, लेकिन अल्लाह ने अपने नबी की ह़िफ़ाज़त की और ब-ह़िफ़ाज़त मदीना मुनव्वरह पहुँचे।

ثَانِيَ اثْنَيْنِ से मुराद रसूलुल्लाह (सल्ल०) और ह़ज़रत अबू बक्र (रज़ि०) हैं। 'इमाम अह़मद' और 'बुख़ारी व मुस्लिम' ने 'ह़ज़रत अबू बक्र' (रज़ि०) से रिवायत की है कि जब हम ग़ार में थे तो मेरी नज़र मुश्रिकीन के क़द्मों पर पड़ी, जबकि वह हमारे सरों पर खड़े थे। मैंने कहा ऐ अल्लाह के रसूल! अगर दुश्मनों में से कोई अपने क़दम पर नज़र डालेगा तो हमें देख लेगा, आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "ऐ अबू बक्र! आप का उन दो के बारे में क्या ख़याल है, जिन के साथ तीसरा अल्लाह हो।" चुनाँचे अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी पर सुकून व इत्मिनान नाज़िल किया और फ़रिश्तों के ज़रिये उन की मदद की जो ग़ार में आप की ह़िफ़ाज़त करते रहे और कुफ़्र व शिर्क मग़्लूब (ख़त्म) हुआ और तौह़ीद व इस्लाम को ग़ल्बा ह़ासिल हुआ।

आयत नं० 41 से 52 तक

انْفِرُوا خِفَافًا وَّثِقَالًا وَّجَاهِدُوا بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ لَوْ كَانَ عَرَضًا
قَرِيبًا وَّسَفَرًا قَاصِدًا لَّاتَّبَعُوكَ وَلَٰكِنْ بَعُدَتْ عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ ۚ وَسَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ ۚ يُهْلِكُونَ
أَنْفُسَهُمْ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۝ عَفَا اللَّهُ عَنْكَ ۚ لِمَ أَذِنْتَ لَهُمْ حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَكَ الَّذِينَ صَدَقُوا وَتَعْلَمَ
الْكَاذِبِينَ ۝ لَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ أَنْ يُّجَاهِدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالْمُتَّقِينَ ۝
إِنَّمَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوبُهُمْ فَهُمْ فِي رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُونَ ۝ وَلَوْ أَرَادُوا
الْخُرُوجَ لَأَعَدُّوا لَهُ عُدَّةً وَّلَٰكِنْ كَرِهَ اللَّهُ انْبِعَاثَهُمْ فَثَبَّطَهُمْ وَقِيلَ اقْعُدُوا مَعَ الْقَاعِدِينَ ۝ لَوْ خَرَجُوا فِيكُمْ مَّا
زَادُوكُمْ إِلَّا خَبَالًا وَّلَأَوْضَعُوا خِلَالَكُمْ يَبْغُونَكُمُ الْفِتْنَةَ ۚ وَفِيكُمْ سَمَّاعُونَ لَهُمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ۝ لَقَدِ ابْتَغَوُا
الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَقَلَّبُوا لَكَ الْأُمُورَ حَتَّىٰ جَاءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ أَمْرُ اللَّهِ وَهُمْ كَارِهُونَ ۝ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُولُ ائْذَنْ لِّي وَلَا
تَفْتِنِّي ۚ أَلَا فِي الْفِتْنَةِ سَقَطُوا ۗ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيطَةٌ بِالْكَافِرِينَ ۝ إِنْ تُصِبْكَ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۖ وَإِنْ تُصِبْكَ مُصِيبَةٌ يَّقُولُوا
قَدْ أَخَذْنَا أَمْرَنَا مِنْ قَبْلُ وَيَتَوَلَّوْا وَّهُمْ فَرِحُونَ ۝ قُلْ لَّنْ يُّصِيبَنَا إِلَّا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَنَا ۚ هُوَ مَوْلَانَا ۚ وَعَلَى اللَّهِ
فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝ قُلْ هَلْ تَرَبَّصُونَ بِنَا إِلَّا إِحْدَى الْحُسْنَيَيْنِ ۖ وَنَحْنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمْ أَنْ يُّصِيبَكُمُ اللَّهُ بِعَذَابٍ مِّنْ
عِنْدِهِ أَوْ بِأَيْدِينَا ۖ فَتَرَبَّصُوا إِنَّا مَعَكُمْ مُّتَرَبِّصُونَ ۝

अनुवाद-

(41) निकल पड़ो-हल्के हो या बोझल- और जिहाद करो अपने माल से और अपनी जान से अल्लाह की राह में, यही बेहतर है तुम्हारे लिए, अगर तुम (कुछ) इल्म रखते हो। (42) अगर कुछ माल लगे हाथ मिल जाने वाला होता, और सफ़र भी हल्का होता तो यह लोग ज़रूर आप के साथ हो लेते; और सफ़र की दूरी उन्हें कठिन मालूम हुई, अब वे अल्लाह की क़समें खाएँगे कि ''अगर हम से हो सकता तो हम ज़रूर तुम्हारे साथ चलते,'' ये लोग अपने आपको तबाही में डाल रहे हैं, और अल्लाह जानता है कि ये झूठे हैं। (43) अल्लाह ने आप को माफ़ कर दिया! (लेकिन) आपने उनको इजाज़त क्यों दे दी यहाँ तक कि आप पर जो लोग सच्चे हैं ज़ाहिर हो जाते, और आप झूठों को भी जान लेते? (44) जो लोग अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं, वे आपसे इजाज़त नहीं माँगते (चाहते हैं) कि अपने माल और जान से जिहाद करें,और अल्लाह परहेज़गारों को भली-भाँति जानता है। (45) इजाज़त तो वही लोग माँगते हैं, जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं रखते, और जिनके दिल सन्देह में पड़े हुए हैं, तो वे अपने सन्देह के तरद्दुद (डाँवाडोल) में हैं। (46) और अगर वे निकलने का इरादा करते, तो उसके लिए सामान जुटाते, किन्तु अल्लाह ने उनके उठने को नापसंद किया तो 'उसने' उन्हें रोक दिया, और उनसे कह दिया गया, ''बैठने वालों के साथ बैठे रहो;''(47) अगर तुम्हारे साथ निकलते भी तो, तुम्हारे अन्दर ख़राबी के सिवा किसी और चीज़ को बढ़ावा न देते; और वे तुम्हारे बीच फ़ित्ना (उपद्रव) मचाने के लिए दौड़ धूप करते, और तुम्हारे बीच उनके जासूस भी मौजूद हैं, और अल्लाह ज़ालिमों को भली-भाँति जानता है; (48) इन्होंने तो इससे पहले

भी फ़ित्‌ना (उपद्रव) माचाना चाहा था और वे तुम्हारे ख़िलाफ़ घटनाओं और मामलों के उलटने-पलटने में लगे रहे, यहाँ तक कि हक़ आ गया और अल्लाह का हुक्म ग़ालिब हो कर रहा, और उन्हें नागवार (अप्रिय) ही लगता रहा। (49) और उनमें कोई ऐसा भी है, जो कहता है, ''मुझे तो इजाज़त दे ही दीजिए, और मुझे फ़ित्‌ना में न डालिए।'' जान लो कि ये फ़ित्‌ने में तो पड़ ही चुके हैं, और जहन्नम इन्कार करने वालों को घेर रही है। (50) अगर आप को कोई अच्छी हालत पेश आती है, तो उन्हें बुरा लगता है; और अगर आप पर कोई मुसीबत आ जाती है तो कहते हैं, "हमने तो अपना काम पहले ही संभाल लिया था"। और खुश होते हुए लौटते हैं। (51) कह दीजिए, ''हम पर कोई मुसीबत नहीं आ सकती मगर वही जो अल्लाह ने हमारे लिए लिख दिया; 'वह' हमारा मालिक है, और ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए"। (52) कह दीजिए, ''तुम हमारे लिए दो भलाइयों (शहादत या विजय) में से एक के इन्तिज़ार में हो और 'हम' तुम्हारे लिए इस बात के इन्तिज़ार में हैं कि अल्लाह अपनी ओर से तुम्हें कोई अज़ाब (यातना) दे या हमारे हाथों दिलाए; अच्छा तो तुम भी इन्तिज़ार करो, हम भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार कर रहे हैं"।

आयत नं० 41 से 52 तक की व्याख्या

41 انْفِرُوا خِفَافًا وَّثِقَالًا وَّجَاهِدُوا بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝

इस आयते करीमा में अल्लाह की राह में जिहाद के लिए निकलने का साफ़ हुक्म है कि मुसलमान जिस हाल में भी हों, जिहाद के एलान के बाद ताक़तवर हों या कमज़ोर, मालदार हों या फ़क़ीर, जवान हों या बूढ़े, सवार हों या पैदल जिहाद के लिए निकल खड़े हों। बहुत से सहाबा-ए-किराम इसी आयत के पेशेनज़र किसी भी ग़ज़्वे से ग़ैर हाज़िर नहीं रहे, लेकिन जिहाद के इस हुक्म आम में कमज़ोर और मरीज़ शामिल नहीं हैं। जैसा कि अल्लाह तआला ने इसी सूरत की आयत नं० (91) में फ़रमाया है لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَاۗءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضٰى और न अन्धे और लंगड़े शामिल हैं। जैसा कि सूरः नूर आयत नं० (61) में फ़रमाया है لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْاَعْرَجِ حَرَجٌ

इस के बाद अल्लाह की राह में जान व माल के ज़रिये जिहाद की तर्ग़ीब दी गई है, ताकि फ़ुक़रा अपनी जानों के ज़रिये और मालदार अपनी जानों और माल व दौलत के ज़रिये जिहाद करें, इसलिए कि जिहाद इस्लाम का एक अज़ीम तरीन फ़रीज़ा है और आम हालात में यह "फ़र्ज़ किफ़ाया" है, लेकिन अगर हालात ऐसे पैदा हो जाएँ कि दुश्मन के मुक़ाबिले के लिए तमाम मुसलमानों का निकल खड़ा होना ज़रूरी हो जाए तो फ़र्ज़े ऐन हो जाता है।

42 لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيْبًا وَّسَفَرًا قَاصِدًا لَّاتَّبَعُوْكَ وَلٰكِنْۢ بَعُدَتْ عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ ۭ وَسَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ ۚ يُهْلِكُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝

जो मुनाफ़िक़ीन ग़ज़्व-ए-तबूक में शरीक नहीं हुए उन्हीं की दीनी और अख़्लाक़ी गिरावट बयान की गई है कि आख़िरत उन की निगाहों से ओझल है। अगर तबूक का नहीं किसी क़रीब की जगह का सफ़र

होता और कोई दुनियावी फ़ायदा नज़र आता तो ज़रूर आप के पीछे हो लेते, लेकिन रास्ता लम्बा, गर्मी का ज़माना और कोई ज़ाहिरी दुनियावी फ़ायदा सामने नहीं, इसीलिए उन्होंने झूठी क़समें खाईं, बहाने किये और जिहाद में जाने से पीछे रह गये, अल्लाह की नाराज़गी और अपनी हलाकत व बर्बादी का सामान किया।

43-44 عَفَا اللَّهُ عَنكَ لِمَ أَذِنتَ لَهُمْ حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَكَ الَّذِينَ صَدَقُوا وَتَعْلَمَ الْكَاذِبِينَ ۞ لَا يَسْتَأْذِنُكَ
الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ أَن يُجَاهِدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالْمُتَّقِينَ ۞

नबी करीम (सल्ल०) को मुहब्बत भरे अन्दाज़ में कहा जा रहा है कि अल्लाह तआ़ला आप को माफ़ करे, आप ने अगर उन्हें इजाज़त न दी होती तो इस का फ़ायदा यह होता कि झूठों का पोल खुल जाता और सच्चों का पता चल जाता, इसलिए कि मुजाहिद के क़ौल के मुताबिक़ यह आयत ऐसे ही लोगों के बारे में नाज़िल हुई थी जिन्होंने कहा था कि हम मुहम्मद से इजाज़त माँगेंगे, अगर मिल गई तो बेहतर है वरना फिर भी नहीं जाएँगे। इसीलिए आयत नं० (44) में अल्लाह तआ़ला ने ख़बर दी कि सच्चे मोमिनों ने आप से इजाज़त नहीं माँगी थी।

पिछली आयात में मुनाफ़िक़ीन का ज़िक्र हुआ, अब मुसलमानों का ज़िक्र हो रहा है।

ग़ज़्व-ए-तबूक (तबूक की जंग) के सफ़र में जाने वालों की क़िस्में-

(1) वह जो इन्तेहाई शौक़ और जज़्बे से जिहाद के लिए निकले। उन का ज़िक्र आयत नम्बर (44) में हुआ।

(2) वह मोमिनीन सादिक़ीन जो कि सच्चे दिल के साथ आप के साथ निकलना चाहते थे, मगर सवारी न मिलने की वजह से या किसी और मजबूरी की वजह से पसोपेश में थे उनका ज़िक्र आयत नम्बर (91-92) में है।

(3) वह मुसलमान जो कि शुरु में आगे पीछे हो रहे थे मगर जल्दी ही संभल गये और आप (सल्ल०) के साथ निकल खड़े हुए।

(4) वह मुसलमान जिन्हें कोई उ़ज़्र न था, केवल सुस्ती और आराम की वजह से रह गये थे और एहसास होने पर जुर्म का इक़रार कर लिया और खुद को सज़ा के लिए पेश कर दिया उनका ज़िक्र आयत नम्बर (118) में है।

45 إِنَّمَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوبُهُمْ فَهُمْ فِي رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُونَ ۞

इस में ख़बर दी गई है कि आप से इजाज़त सिर्फ़ मुनाफ़िक़ीन ने मांगी थी, जिन के दिलों में निफ़ाक़ रच बस गया है।

यहाँ नबी करीम (सल्ल०) से दरगुज़र करने का ज़िक्र है ताकि मालूम हो जाए कि मुनाफ़िक़ीन को इजाज़त दे देना मुनासिब नहीं था, लेकिन अल्लाह ने उसे दरगुज़र फ़रमा दिया।

क़तादा कहते हैं कि इस आयत के बाद सूरः नूर की आयत नं० (62) فَإِذَا اسْتَأْذَنُوكَ لِبَعْضِ شَأْنِهِمْ فَأْذَن لِّمَن شِئْتَ مِنْهُمْ नाज़िल हुई और रसूलुल्लाह (सल्ल०) को ख़बर दी गई कि वह जिसे चाहें किसी बात या काम की इजाज़त दे सकते हैं।

46-47 وَلَوْ أَرَادُوا الْخُرُوجَ لَأَعَدُّوا لَهُ عُدَّةً وَلَٰكِن كَرِهَ اللَّهُ انبِعَاثَهُمْ فَثَبَّطَهُمْ وَقِيلَ اقْعُدُوا
مَعَ الْقَاعِدِينَ ۝ لَوْ خَرَجُوا فِيكُم مَّا زَادُوكُمْ إِلَّا خَبَالًا وَلَأَوْضَعُوا خِلَالَكُمْ يَبْغُونَكُمُ الْفِتْنَةَ ۚ
وَفِيكُمْ سَمَّاعُونَ لَهُمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ۝

मुनाफ़िक़ीन अपना उ़ज़्र बयान करने में झूठे हैं, अगर उन का इरादा आप के साथ निकलने का होता तो हथियार, सफ़र का सामान और सवारी की तैयारी करते, लेकिन उन का ऐसा इरादा ही नहीं था, इसलिए अगर उन्हें इजाज़त मिल जाती तो भी आप के साथ न जाते। अल्लाह ने भी नहीं चाहा कि वह आप के साथ जाएँ, इसीलिए अगर वह जाते तो उन्हीं जैसे कुछ दूसरे लोग जो आप के साथ गये थे, उन्हें ख़राब करते (जिन्हें क़ुर्आन ने سَمّٰعُوْنَ बताया है। इसीलिए अल्लाह ने उन के दिल में यह बात बिठा दी कि वह आप के साथ न जाएँ) और मुसलमानों में फ़साद बरपा करने की कोशिश करते।

मुह़म्मद बिन इस्ह़ाक़ कहते हैं कि वह पीछे रह जाने वालों में 'अ़ब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलोल' जैसे लोग थे, अगर यह लोग फ़ौज में होते तो उन तमाम लोगों के ज़ेहनों को ख़राब करते जिन से उन का तअ़ल्लुक़ था और जो उन के दुनियावी मक़ाम की वजह से उन की बात मानते थे।

48 لَقَدِ ابْتَغَوُا الْفِتْنَةَ مِن قَبْلُ وَقَلَّبُوا لَكَ الْأُمُورَ حَتَّىٰ جَاءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ أَمْرُ اللَّهِ وَهُمْ كَارِهُونَ ۝

मुनाफ़िक़ों का नबी करीम (सल्ल०) के साथ शुरु से यही रवैया रहा, हमेशा बुराई फैलाने और सह़ाबा-ए-किराम को आप से अलग करने की कोशिश की, जैसा कि 'अ़ब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलोल' ने जंगे उ़हद के मौक़े से किया कि रास्ते से ही अपने साथियों को लेकर वापस हो गया, जिन की तअ़दाद एक तिहाई के क़रीब थी और मुनाफ़िक़ीन पूरी मदनी ज़िन्दगी में इस्लाम और रसूल (सल्ल०) के ख़िलाफ़ साज़िश ही करते रहे, जिस की तफ़्सील से सीरत की किताबें भरी पड़ी हैं। इसीलिए अगर ग़ज़्व-ए-तबूक के मौक़े पर भी उन्होंने साज़िश की और रसूलुल्लाह (सल्ल०) के साथ नहीं गये और दूसरों की भी हिम्मत पस्त की तो कोई तअ़ज्जुब की बात नहीं, लेकिन उन की तमाम कोशिशों के बावजूद अल्लाह का दीन ग़ालिब होकर रहा।

'ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर' लिखते हैं कि जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) मदीना आ गये तो सारे अ़रब ने उन के ख़िलाफ़ महाज़ खोल दिया और मदीना में रहने लगे यहूद और मुनाफ़िक़ीन ने भी पूरी क़ुव्वत के साथ मुख़ालिफ़त शुरु कर दी। जब अल्लाह ने आप को मैदाने बद्र में फ़तेह़ व नुस्रत अ़ता फ़रमाई और इस्लाम ग़ालिब हुआ तो अ़ब्दुल्लाह बिन उबई और उस के साथियों ने कहा कि अब यह दीन आगे चल निकला, इसलिए वह लोग दिखावटी तौर से इस्लाम में दाख़िल हो गये, लेकिन अल्लाह ने जब भी इस्लाम और मुसलमानों को इ़ज़्ज़त दी तो इन मुनाफ़िक़ीन पर भारी पड़ता रहा।

49 وَمِنْهُم مَّن يَقُولُ ائْذَن لِّي وَلَا تَفْتِنِّي ۚ أَلَا فِي الْفِتْنَةِ سَقَطُوا ۗ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيطَةٌ بِالْكَافِرِينَ ۝

मुह़म्मद बिन इस्ह़ाक़ ने ज़ुहरी, मुजाहिद और इब्ने अ़ब्बास से रिवायत किया है कि यह आयत ज़ैद

बिन क़ैस के बारे में नाज़िल हुई थी जो बनू सल्मा का सरदार था। रसूलुल्लाह (सल्ल०) जब ग़ज़्व-ए-तबूक की तैयारी कर रहे थे तो एक दिन उस से कहा कि तुम अहले रोम की दूध देने वाली ऊँटनियों में से चाहत रखते हो? तो उस ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल! आप मुझे मदीना में रहने की इजाज़त दे दीजिए और फ़ित्ना में न डालिए, मुझे डर है कि अगर मैंने उन की औ़रतों को देख लिया तो मुझ से सब्र न हो सकेगा, तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उस की तरफ़ से मुँह फेर लिया और कहा कि मैंने तुझे इजाज़त दे दी।

50 إِنْ تُصِبْكَ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۖ وَإِنْ تُصِبْكَ مُصِيبَةٌ يَقُولُوا قَدْ أَخَذْنَا أَمْرَنَا مِنْ قَبْلُ وَيَتَوَلَّوْا وَهُمْ فَرِحُونَ ۝

मुनाफ़िक़ीन की रसूलुल्लाह (सल्ल०) और मुसलमानों से दुश्मनी कोई ढकी छुपी बात नहीं थी। मुसलमानों की हर ख़ुशी से उन्हें तक्लीफ़ होती थी और उन की हर तक्लीफ़ पर ख़ुश होते थे और कहते थे कि हम ने तो पहले से ही एहतियात कर लिया था और जंग के लिए नहीं निकले थे, इसीलिए तो आज दूसरों की तरह क़त्ल नहीं किये गये हैं और उन्होंने हमारी बात नहीं मानी तो यह दिन देखना पड़ा।

51 قُلْ لَنْ يُصِيبَنَا إِلَّا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَنَا هُوَ مَوْلَانَا ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝

इस में अल्लाह तआ़ला ने मुनाफ़िक़ीन की बक्वास का जवाब दिया है कि ऐ मेरे रसूल! आप उन से कहिए कि हमें दुनिया में अगर कोई ख़ुशी मिलती है तो अल्लाह का इन्आ़म होता है और अगर कोई तक्लीफ़ पहुँचती है तो अल्लाह की हिक्मत होती है, हमें जो भी तक्लीफ़ पहुँचती है उसे अल्लाह ने हमारी तक़्दीर में लिख रखा है, तुम्हें अपने क़त्ल न होने पर ख़ुश न होना चाहिए, जब तुम्हारी बारी आ जाएगी तो कोई तद्बीर (योजना) तुम्हें नहीं बचा सकेगी और हम तो मुसलमान हैं, हमारा रब अल्लाह है, हम तो हर ह़ाल में अल्लाह पर ही भरोसा करते हैं।

52 قُلْ هَلْ تَرَبَّصُونَ بِنَا إِلَّا إِحْدَى الْحُسْنَيَيْنِ ۖ وَنَحْنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمْ أَنْ يُصِيبَكُمُ اللَّهُ بِعَذَابٍ
مِنْ عِنْدِهِ أَوْ بِأَيْدِينَا ۖ فَتَرَبَّصُوا إِنَّا مَعَكُمْ مُتَرَبِّصُونَ ۝

इस में मुनाफ़िक़ीन के तक्लीफ़ पहुँचाने पर अल्लाह ने कहा कि ऐ रसूल! आप उन से कहिए कि तुम हमारे बारे में अल्लाह की ओर से दो अ़ज़ीम भलाइयों में से एक के सिवा और सोच ही क्या सकते हो, या तो हमें दुश्मनों पर फ़तेह़ मिलेगी या अल्लाह की राह में शहादत और हम तुम्हारे बारे में इन्तिज़ार कर रहे हैं कि कब अल्लाह तुम पर कोई अ़ज़ाब भेज दे या हमारे हाथों तुम्हें सफ़ाया करवा दे। इसलिए तुम भी इन्तिज़ार कर लो, हम भी इन्तिज़ार कर लेते हैं, जल्द ही तुम हमारी ख़ुशियों को देख लोगे और हम तुम्हारे ग़म के क़िस्से ग़ैरों से सुन लेंगे।

❖

आयत नं० 53 से 66 तक

قُلْ اَنْفِقُوْا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا لَّنْ يُّتَقَبَّلَ مِنْكُمْ ؕ اِنَّكُمْ كُنْتُمْ قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ۝ وَمَا مَنَعَهُمْ اَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقٰتُهُمْ اِلَّاۤ اَنَّهُمْ
كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَبِرَسُوْلِهٖ وَلَا يَاْتُوْنَ الصَّلٰوةَ اِلَّا وَهُمْ كُسَالٰى وَلَا يُنْفِقُوْنَ اِلَّا وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ۝ فَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَلَاۤ
اَوْلَادُهُمْ ؕ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ۝ وَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ اِنَّهُمْ لَمِنْكُمْ ؕ
وَمَا هُمْ مِّنْكُمْ وَلٰكِنَّهُمْ قَوْمٌ يَّفْرَقُوْنَ ۝ لَوْ يَجِدُوْنَ مَلْجَاً اَوْ مَغٰرٰتٍ اَوْ مُدَّخَلًا لَّوَلَّوْا اِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَحُوْنَ ۝ وَمِنْهُمْ مَّنْ
يَّلْمِزُكَ فِى الصَّدَقٰتِ ۚ فَاِنْ اُعْطُوْا مِنْهَا رَضُوْا وَاِنْ لَّمْ يُعْطَوْا مِنْهَاۤ اِذَا هُمْ يَسْخَطُوْنَ ۝ وَلَوْ اَنَّهُمْ رَضُوْا مَاۤ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ
وَرَسُوْلُهٗ ۙ وَقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ سَيُؤْتِيْنَا اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ وَرَسُوْلُهٗۤ ۙ اِنَّاۤ اِلَى اللّٰهِ رٰغِبُوْنَ ۝ اِنَّمَا الصَّدَقٰتُ لِلْفُقَرَآءِ
وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْعٰمِلِيْنَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوْبُهُمْ وَفِى الرِّقَابِ وَالْغٰرِمِيْنَ وَفِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ؕ فَرِيْضَةً
مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝ وَمِنْهُمُ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ النَّبِىَّ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ اُذُنٌ ؕ قُلْ اُذُنُ خَيْرٍ لَّكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ
وَيُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ؕ وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ رَسُوْلَ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ يَحْلِفُوْنَ
بِاللّٰهِ لَكُمْ لِيُرْضُوْكُمْ ۚ وَاللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗۤ اَحَقُّ اَنْ يُّرْضُوْهُ اِنْ كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ۝ اَلَمْ يَعْلَمُوْۤا اَنَّهٗ مَنْ يُّحَادِدِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ
فَاَنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيْهَا ؕ ذٰلِكَ الْخِزْىُ الْعَظِيْمُ ۝ يَحْذَرُ الْمُنٰفِقُوْنَ اَنْ تُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ سُوْرَةٌ تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِىْ
قُلُوْبِهِمْ ؕ قُلِ اسْتَهْزِءُوْا ۚ اِنَّ اللّٰهَ مُخْرِجٌ مَّا تَحْذَرُوْنَ ۝ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ لَيَقُوْلُنَّ اِنَّمَا كُنَّا نَخُوْضُ وَنَلْعَبُ ؕ قُلْ اَبِاللّٰهِ
وَاٰيٰتِهٖ وَرَسُوْلِهٖ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِءُوْنَ ۝ لَا تَعْتَذِرُوْا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ ؕ اِنْ نَّعْفُ عَنْ طَآئِفَةٍ مِّنْكُمْ نُعَذِّبْ
طَآئِفَةًۢ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ۝

अनुवाद-

(53) कह दीजिए, ''तुम खुशी से खर्च करो या नाखुशी से, तुमसे कुछ भी कुबूल न किया जाएगा।'' क्योंकि
तुम नाफ़रमान (अवज्ञाकारी) लोग हो"। (54) और उनके खर्च के कुबूल होने में इसके अ़लावा और कोई
चीज़ रुकावट नहीं कि उन्होंने अल्लाह और 'उसके' रसूल के साथ कुफ़्र किया, और नमाज़ को आते हैं तो
बस सुस्ती के साथ और ख़र्च करते हैं तो नागवारी (अनिच्छापूर्वक) से; (55) तो तुम को उनके माल और
उनकी औलाद हैरत में न डालें, अल्लाह तो बस यह चाहता है कि उनके ही (नेअ़मतों के) ज़रिये से उन्हें
दुनिया की ज़िन्दगी में अ़ज़ाब देता रहे, और उनकी जानें ऐसी हालत में निकाली जाएँ कि वे इन्कार करने
वाले (काफ़िर) ही रहें; (56) और अल्लाह की क़समें खाते हैं कि 'वे' तुम में से हैं; हालाँकि वे तुम में से
नहीं हैं, बल्कि वे ऐसे लोग हैं जो डरपोक हैं; (57) अगर यह कोई पनाह की जगह पाते, या कोई गुफ़ा
या कोई जगह घुस बैठने की, तो यह ज़रूर मुँह उठा कर उधर चल पड़ते; (58) और उनमें से कुछ ऐसे
भी हैं, जो आप को सदक़े के बारे में ताना देते हैं, तो अगर उन्हें उसमें से मिल जाए तो राज़ी हो जाते हैं,
और अगर उन्हें उनमें से नहीं मिलता तो बस नाराज़ हो जाते हैं; (59) और अगर अल्लाह और उसके
रसूल ने जो कुछ उन्हें दिया था, उस पर वे राज़ी रहते और कहते ''हमारे लिए अल्लाह काफ़ी है, और अल्लाह
हमें जल्द ही अपने फ़ज़्ल से देगा और उसका रसूल भी, हम तो अल्लाह ही की ओर लौ लगाते हैं"। (60)
सदक़े तो बस गरीबों, मोहताजों और उन लोगों के लिए हैं, जो इस काम पर नियुक्त हों, और उन लोगों

के लिए जिनके दिलों में (इस्लाम का) लगाव पैदा करना हो, और गर्दनों को छुड़ाने, और क़र्ज़दारों और तावान (जुर्माना)भरने वालों की मदद करने में, और अल्लाह की राह में मुसाफ़िरों की मदद करने के लिए हैं; यह अल्लाह की ओर से ठहराया हुआ हुक्म है, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (61) और इनमें कुछ लोग ऐसे भी हैं जो नबी को दुःख देते हैं और कहते हैं, 'यह व्यक्ति तो केवल कान हैं'' (अर्थात कान का कच्चा) कह दीजिए, ''वह तुम्हारे लिए कान का भला है, वह अल्लाह पर ईमान रखता है, और मोमिनों (की बात) पर यक़ीन करता है, और जो लोग तुम में से ईमान रखते हैं, उनके लिए सरापा रह़मत है; और जो लोग अल्लाह के रसूल को दुःख देते हैं, उनके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है"। (62) यह लोग तुम्हारे सामने अल्लाह की क़समें खाते हैं, ताकि तुम को खुश कर लें, हालाँकि अल्लाह और उसका रसूल ज़्यादा ह़क़दार हैं, कि उनको राज़ी करें अगर ये ईमान वाले होते। (63) क्या इन लोगों को मालूम नहीं! कि जो व्यक्ति अल्लाह और उसके रसूल का विरोध करता है, तो उसके लिए जहन्नम की आग है जिसमें वह हमेशा रहेगा, यह बड़ी रूसवाई की बात है। (64) मुनाफिक़ (कप्टाचारी) डरते रहते हैं कि कहीं उनके बारे में कोई ऐसी सूरः नाज़िल न हो जाए जो वह सब कुछ उन पर खोल दे, जो उन (मुनाफ़िक़ों) के दिलों में है, कह दीजिए, ''मज़ाक़ उड़ा लो, अल्लाह तो उसे ज़ाहिर (प्रकट) कर के रहेगा, जिसका तुम्हें डर है।'' (65) और अगर तुम उनसे पूछो तो कह देंगे ''हम तो केवल बातें और हँसी-खेल कर रहे थे"। कह दीजिए, ''क्या अल्लाह और उसकी आयतों और उसके रसूल के साथ तुम हँसी-मज़ाक़ करते थे? (66) बहाने न बनाओ, तुमने अपने ईमान लाने के बाद इन्कार किया, अगर हम तुम्हारे एक गिरोह को माफ़ भी कर दें तो भी एक गिरोह को तो सज़ा देकर ही रहेंगे, इस लिए कि वे मुजरिम हैं"।

आयत नं० 53 से 66 तक की व्याख्या

53-54 قُلْ اَنْفِقُوْا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا لَّنْ يُّتَقَبَّلَ مِنْكُمْ ؕ اِنَّكُمْ كُنْتُمْ قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ۝ وَمَا مَنَعَهُمْ اَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقٰتُهُمْ اِلَّاۤ اَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَبِرَسُوْلِهٖ وَلَا يَاْتُوْنَ الصَّلٰوةَ اِلَّا وَهُمْ كُسَالٰى وَلَا يُنْفِقُوْنَ اِلَّا وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ۝

मुनाफ़िक़ीन चाहे अपनी ख़ुशी से ख़र्च करें या क़त्ल के ख़ौफ़ से, अल्लाह तआ़ला उसे क़ुबूल नहीं करेगा, इसलिए कि वह अल्लाह के नाफ़रमान बन्दे हैं। इस को आयत नं० (54) में देखा जा सकता है कि अल्लाह की राह में उन का ख़र्च इसलिए क़ाबिले क़ुबूल नहीं कि वह अल्लाह और उस के रसूल के इन्कार करने वाले हैं, नमाज़ को बहुत बड़ा बोझ समझते हैं और अल्लाह की राह में ख़र्च करने को जुर्माना समझते हैं।

'नसई' ने 'अबू उमामा'(रज़ि०) से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया है, "अल्लाह उसी अ़मल को क़ुबूल करता है जो अल्लाह के लिए ख़ालिस हो और उसी की रज़ा ह़ासिल करने के लिए किया गया हो।" सूरः माइदा आयत नं० (27) में अल्लाह ने फ़रमाया है اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ۝ कि "अल्लाह सिर्फ़ तक़्वा वालों का अ़मल क़ुबूल करता है"।

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "मुनाफ़िक़ों के लिए फ़ज्र और अ़िशा से ज़्यादा कोई नमाज़ उन पर भारी नहीं। अगर यह इन नमाज़ों को उन के वक़्त पर अदाएगी के अज्र को जान लें तो वह ज़रूर मस्जिदों में हाज़िर हों चाहे उन्हें घुट्नों के बल ही आना पड़े"। **(बुख़ारी)**

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "नमाज़ फ़ज्र और अ़िशा से बढ़कर मुनाफ़िक़ों पर और कोई नमाज़ भारी नहीं, लेकिन अगर उन्हें मालूम हो जाए कि इन दोनों में कितना अज्र व सवाब है तो (मस्जिदों में) ज़रूर आएँ चाहे उन्हें सुरीन (कूल्हे) के बल आना पड़े।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "बिलाशुब्हा मैंने इरादा किया कि मुअज़्ज़िन को इक़ामत कहने का हुक्म दूँ फिर वह इक़ामत कहे और मैं किसी आदमी को हुक्म दूँ कि वह नमाज़ में लोगों की इमामत कराये फिर मैं आग के शोले लेकर उन लोगों को जो नमाज़ के लिए (अपने घरों से) न निकले हों (उन्हें उन के घरों समेत) जला डालूँ"। **(सहीह़ बुख़ारी, अल् अज़ान, बाब 34, ह़दीस नं० 657)**

55 فَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ ۭ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ۝

रसूलुल्लाह (सल्ल०) को कहा जा रहा है कि मुनाफ़िक़ीन के माल व दौलत, औलाद और उन की दुनियावी चमक-दमक की वजह से आप धोखे में न आ जाएँ, यह तो उन्हें ढ़ील दी गई है, ताकि अपनी जान ख़त्रे में डाल कर माल व दौलत ह़ासिल करें, उस की हिफ़ाज़त के लिए दिन का चैन और रात का सुकून खो बैठें और अल्लाह की तरफ़ से इस सिल्सिले में तक्लीफ़ को बर्दाश्त करे और आख़िर में उन की मौत कुफ़्र पर हो जाए।

56 وَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ اِنَّهُمْ لَمِنْكُمْ ۭ وَمَا هُمْ مِّنْكُمْ وَلٰكِنَّهُمْ قَوْمٌ يَّفْرَقُوْنَ۝

मुनाफ़िक़ीन को किसी भी ह़ालत में चैन नहीं। एक तरफ़ तो मैदाने जिहाद में क़त्ल का ख़ौफ़ और दूसरी तरफ़ यह ख़ौफ़ कि कहीं उन का निफ़ाक़ (कपट) मुसलमानों पर खुल न जाए, इसीलिए क़समें खा-खा कर मुसलमानों को यक़ीन दिलाते हैं कि वह भी मुख़्लिस मुसलमान हैं, ह़ालांकि अल्लाह तआ़ला उन के बारे में गवाही देता है कि वह मुसलमान नहीं हैं, वह तो क़सम सिर्फ़ इस डर से खाते हैं कि कहीं क़त्ल न कर दिये जाएँ।

57 لَوْ يَجِدُوْنَ مَلْجَاً اَوْ مَغٰرٰتٍ اَوْ مُدَّخَلًا لَّوَلَّوْا اِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَحُوْنَ۝

मुसलमानों से उन के ख़ौफ़ और नफ़्रत का ह़ाल यह है कि अगर उन्हें कोई पनाहगाह या कोई ग़ार या और कोई दाख़िल होने की जगह मिल जाती तो वहाँ चले जाते, ताकि मुसलमानों से दूर होते और इस्लाम और मुसलमानों की कामियाबी और उन के फ़तेह़ व ग़ल्बा की बातें सुन-सुन कर उन के दिल पर जो ज़ख़्म लगते हैं उन से निजात मिल जाती।

58-59 وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّلْمِزُكَ فِي الصَّدَقٰتِ ۚ فَاِنْ اُعْطُوْا مِنْهَا رَضُوْا وَاِنْ لَّمْ يُعْطَوْا مِنْهَآ اِذَا هُمْ يَسْخَطُوْنَ۝

وَلَوْ أَنَّهُمْ رَضُوا مَا آتَاهُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَقَالُوا حَسْبُنَا اللَّهُ سَيُؤْتِينَا اللَّهُ مِن فَضْلِهِ
وَرَسُولُهُ إِنَّا إِلَى اللَّهِ رَاغِبُونَ

बाज़ मुनाफ़िक़ीन नबी करीम (सल्ल०) पर सद्क़ात की तक़्सीम के बारे में नुक्ता-चीनी करते थे और कहते थे कि मुहम्मद अ़द्ल व इन्साफ़ से काम नहीं लेते, अपने चहेतों को ज़्यादा देते हैं और हमें कम। अल्लाह ने फ़रमाया कि ऐसा सोचना उन की दुनिया परस्ती और निफ़ाक़ का नतीजा था, अगर वह मुख़्लिस मुसलमान होते तो अल्लाह और रसूल की तक़्सीम पर राज़ी रहते और कहते कि हमारे लिए अल्लाह काफ़ी है और अल्लाह आइन्दा अपने फ़ज़्ल व करम से मज़ीद देगा और हमारा मक़्सूदे ज़िन्दगी तो यह है कि अल्लाह हम से राज़ी हो जाए।

हज़रत अबू सईद ख़ुद्री (रज़ि०) से रिवायत है कि हम लोग रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास थे और आप (सल्ल०) माले ग़नीमत तक़्सीम कर रहे थे कि 'बनी तमीम' के एक शख़्स ने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल! इन्साफ़ से काम लीजिए तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि तुम्हारी बर्बादी हो, अगर मैं इन्साफ़ नहीं करुँगा तो कौन करेगा?

हज़रत उ़मर (रज़ि०) ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल! आप मुझे इजाज़त दीजिए कि इस की गर्दन उड़ा दूँ, तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि इस के पीछे ऐसे साथी हैं जिन की नमाज़ और रोज़े के मुक़ाबिले में तुम लोग अपनी नमाज़ और रोज़े को कमतर जानोगे, वह लोग क़ुर्आन पढ़ते हैं, लेकिन उन की गर्दनों से आगे नहीं बढ़ता, वह लोग दीन से ऐसे निकल जाएँगे जैसे तीर कमान से निकल जाता है। रावी कहते हैं कि इस के बाद यह आयत नाज़िल हुई। **(बुख़ारी व मुस्लिम)**

60 إِنَّمَا الصَّدَقَاتُ لِلْفُقَرَاءِ وَالْمَسَاكِينِ وَالْعَامِلِينَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوبُهُمْ وَفِي الرِّقَابِ
وَالْغَارِمِينَ وَفِي سَبِيلِ اللَّهِ وَابْنِ السَّبِيلِ فَرِيضَةً مِّنَ اللَّهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ

ज़कात के मसारिफ़

सद्क़ात से यहाँ फ़र्ज़ ज़कात मुराद है और इस का जमअ़ (बहुवचन) इसलिए लाया गया है कि ज़कात मुख़्तलिफ़ माल पर वाजिब होती है। चाँदी, सोना, माले तिजारत, ऊँट, गाय, बकरियाँ, इन सब पर ज़कात फ़र्ज़ है, बशर्ते कि निसाब पूरा हो। आयते शरीफ़ा में ज़कात के हक़्दारों के आठ मसारिफ़ (खर्चे) बयान फ़रमाये हैं और लफ़्ज़ **'इन्नमा'** से आयत को शुरु फ़रमाया है, जिस का अर्थ यह हैं कि मुस्तहिक़् ज़कात उन लोगों के अ़लावा और कोई नहीं जिन का ज़िक्र इस आयत में फ़रमाया। एक शख़्स ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से ज़कात के माल में से अ़ता फ़रमाने का सवाल किया, आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने ज़कात के मालों के बारे में नबी या ग़ैर नबी का फ़ैसला भी मन्ज़ूर नहीं फ़रमाया, बल्कि ख़ुद ही फ़ैसला फ़रमाया और आठ क़िस्म के मसारिफ़ (ख़र्चे) मुतअ़य्यन (तय) फ़रमा दिये। अगर तू उन आठ मसारिफ़ में से है तो मैं दे सकता हूँ। **(मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 161)**

(1–2) फ़ुक़रा और मसाकीन-

पहले में फ़ुक़रा को ज़कात का हक़्दार बताया और उस के बाद मसाकीन को हक़्दार होना बयान फ़रमाया। फ़ुक़रा, फ़क़ीर की जमअ़ (बहुवचन) है और मसाकीन मिस्कीन की जमअ़ (बहुवचन) है। उ़लमा ने लिखा है कि फ़क़ीर वह है जिस के पास कुछ मौजूद हो, मगर निसाबे ज़कात से कम हो और मिस्कीन वह है जिस के पास कुछ भी न हो। माले ज़कात का हक़्दार होने के एतिबार से दोनों में कोई फ़र्क़ नहीं। फ़क़ीर और मिस्कीन दोनों ही माले ज़कात के हक़्दार हैं, अलूबत्ता कुछ दूसरे मसायल में फ़र्क़ का एतिबार किया गया है। जैसे- किसी ने वसीयत की कि मेरा इतना माल मिस्कीनों को दे दिया जाए तो यह माल मिस्कीनों को मिलेगा फ़ुक़रा को नहीं मिलेगा।

एक फ़र्क़ और भी है और वह यह कि फ़क़ीर को सवाल करने की इजाज़त नहीं जबकि उस के पास खाने को एक दिन की ख़ुराक मौजूद हो और तन ढकने को कपड़ा भी हो और मिस्कीन को सवाल करने की इजाज़त है। बाज़ रिवायत में है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) से सवाल किया गया कि माल की वह कितनी मिक़्दार है जिस के होते हुए सवाल करना जायज़ नहीं है? आप ने फ़रमाया कि जिस के पास एक दिन के सुबह़ व शाम के खाने की ज़रूरत पूरा करने के लिए कुछ मौजूद हो उस को सवाल करना दुरुस्त नहीं है। **(अबूदा ऊद भाग 1, पेज नं० 230)**

यह दोनों क़रीब-क़रीब एक ही मतलब रखते हैं यानी ह़ाजतमन्द। ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, मिस्कीन वह नहीं जो लोगों से लुक़्में या दो लुक़्मे का सवाल करता है, एक या दो खजूरें माँगता है बल्कि मिस्कीन वह है जो अपनी ह़ाजत भर माल न पाता हो, न अपनी ज़रुरत ज़ाहिर होने देता हो कि लोग उसे दें और न ही सवाल करता हो। **(बुख़ारी)**

मिस्कीन भी ज़रूरत पूरी करने के लिए वक़्ती तौर पर सवाल कर ले उस को आ़दत न बनाये जब माँगने की आ़दत पड़ जाती है तो मिस्कीन, मिस्कीन नहीं रहता वह बहुत से मालदारों से भी माल में आगे बढ़ जाता है और फ़क्र व मस्कनत की ह़ुदूद से निकल कर भी ज़कात और दूसरे सद्क़ात लेता रहता है।

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, कि सद्क़ः पैसे वाले के लिए और कुव्वत वाले तन्दुरुस्त आदमी के लिए ह़लाल नहीं है।

एक ह़दीस में है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, "सद्क़ात में मालदार का और तन्दुरुस्त का जो कमाई कर सकता हो कोई ह़िस्सा नहीं है"। **(मिश्कातुलू मसाबीह़ पेज नं० 161)**

(3) आमिलीन-

जो लोग ज़कात के हक़्दार हैं उन में तीसरे नम्बर पर وَالْعٰمِلِيْنَ عَلَيْهَا का ज़िक्र फ़रमाया। आ़मिलीन से वह लोग मुराद हैं जिन्हें अमीरुलू मोमिनीन सद्क़ात और उ़श्र वसूल करने पर मुक़र्रर कर दे। उन लोगों को इन की मश्ग़ूलियत की वजह से सद्क़ात में से इतना माल दे दे जो उन की मेह़नत

और अ़मल की हैसियत के मुताबिक़ हो। जो लोग उन के मातह़ेत काम करने वाले हों उनकी तन्ख़्वाहें भी उन की मेह़नत के ह़िसाब से दी जाएँ। अलबत्ता फ़ुक़्हा ने यह फ़रमाया है कि जो माल वसूल हो उस के आधे तक आ़मिलीन और उन के मुआ़विनीन (सहायकों) की तन्ख़्वाहें दी जा सकती हैं। आधे से ज़्यादा माल न दिया जाए।

(4) मुवल्लफ़तुल् क़ुलूब–

مُؤَلَّفَةُ الْقُلُوبِ वह लोग थे जिन्हें नबी करीम (सल्ल०) तालीफ़े क़ल्ब (दिल को नर्म करने) के लिए ज़कात के माल में से अ़ता फ़रमाया करते थे, यह लोग अपने क़बीलों के सरदार और ज़िम्मेदार होते थे। उन के इस्लाम कुबूल करने से उन के क़बीलों के इस्लाम क़ुबूल करने की उम्मीद रहती थी और उन में एक क़िस्म वह थी जिन्हें शर (फ़ित्ना) के ख़त्म करने के लिए माले ग़नीमत में से देते थे और कुछ लोग ऐसे भी थे जिन्होंने इस्लाम क़ुबूल कर लिया था, लेकिन उन में पुख़्तग़ी नहीं थी। ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) उन्हें सद्क़े के माल में से इनायत फ़रमा देते थे ताकि वह दीने इस्लाम पर जमे रहें और पुख़्ता हो जाएँ।

अ़ल्लामा 'इब्ने हुमाम' ने 'फ़त्हुल् क़दीर' में 'मुवल्लफ़तुल् क़ुलूब' की तीन क़िस्में लिखी हैं और बाज़ उ़लमा ने फ़रमाया है कि किसी ग़ैर मुस्लिम को ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने तालीफ़े क़ल्ब के लिए माले ज़कात से कुछ नहीं दिया।

ह़ज़रत 'इमाम अबू ह़नीफ़ा' (रह़०) के नज़्दीक 'मुवल्लफ़तुल् क़ुलूब' की तीनों क़िस्मों को अब ज़कात के माल में से न दिया जाए, उन का ह़िस्सा ख़त्म हो गया। साह़िबे हिदाया इस बारे में फ़रमाते हैं–

وقد سقط منها المؤلفة قلوبهم لأن الله تعالى اعز الاسلام واغنى عنهم

कि 'मुवल्लफ़तुल् क़ुलूब' का ह़िस्सा ख़त्म हो गया, इसलिए कि अल्लाह तआ़ला ने इस्लाम को ग़ल्बा (प्रभुत्व) दे दिया। जैसा कि अभी अ़र्ज़ किया गया कि यह ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़०) का मस्लक है। कुछ आइम्मा के नज़्दीक बाज़ शरायत से अब भी उन को माले ज़कात में से दिया जा सकता है, अमीरुल् मोमिनीन मुनासिब समझे तो अब भी उन को ज़कात के माल में से दे सकता है।

(5) रिक़ाब–

मसारिफ़े ज़कात बताते हुए पाँचवे नम्बर पर وَفِي الرِّقَابِ फ़रमाया। रिक़ाब, रक़्बा की जमअ़ (बहुवचन) है। यह लफ़्ज़ मम्लूक के लिए बोला जाता है। जिस शख़्स की मिल्कियत में कोई ग़ुलाम हो और वह उस ग़ुलाम को मकातिब बना दे यानी यूँ कह दे कि तू इतना माल दे दे तो आज़ाद है उसे मकातिब कहते हैं। जब किसी मालिक ने अपने ग़ुलाम को मकातिब बना दिया और अब उसे अपनी आज़ादी के लिए माल की ज़रुरत है ताकि वह अपने आक़ा को माल देकर आज़ाद हो जाए तो इस मकातिब को ज़कात के माल से देना जायज़ है।

(6) ग़ारिमीन-

छठे नम्बर पर الْغٰرِمِيْنَ फ़रमाया, यह ग़ारम की जमअ़ (बहुवचन) है। इस से वह लोग मुराद हैं जिन के ज़िम्मे क़र्ज़ हो और अदाएगी का इन्तिज़ाम न हो। चाहे ख़ुद लोगों पर उन के क़र्ज़े हों लेकिन उन को वसूल न कर पाते हों, ऐसे लोगों को ज़कात का माल दिया जा सकता है।

'फ़तावा आ़लमगीरी' भाग 1, पेज नं० 188 में लिखा है कि क़र्ज़दार को ज़कात देना ताकि उस का क़र्ज़ा अदा हो जाए आ़म फ़क़ीरों को देने से अफ़्ज़ल है। 'अल्बह़रूर्रायक़' में लिखा है कि जिस आदमी पर क़र्ज़ा हो उसकी मिल्कियत में इतना माल न हो जिस से क़र्ज़ा अदा करने के बाद निसाब के बराबर माल बच जाए उस को ज़कात देना जायज़ है।

बहुत से लोगों पर क़र्ज़े होते हैं लेकिन माल भी पास होता है। उस माल से क़र्ज़े अदा कर दें तो क़र्ज़े अदा होकर भी बक़द्रे निसाब बल्कि उस से भी ज़्यादा माल बच सकता है, ऐसे लोगों को ज़कात देना जायज़ नहीं है। लोगों को यह बताकर कि हम कर्ज़दार हैं ज़कात लेते रहते हैं ऐसे लोगों को ज़कात का माल लेना ह़लाल नहीं है और न उन को देना जायज़ है।

(7) फ़ी-सबीलिल्लाहि-

सातवें नम्बर पर وَفِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ फ़रमाया। फ़ी-सबील्लािह से क्या मुराद है? इस के बारे में इमाम अबू यूसुफ़ ने फ़रमाया कि इस से वह ह़ज़रात मुराद हैं जो जिहाद करने के लिए निकले थे, अपने साथियों से बिछड़ गये और उन के पास ख़र्चा नहीं है, खाना-पीना भी नहीं है और वतन भी पहुँचना है, उन को ज़कात का माल दे सकते हैं।

इमाम 'मुह़म्मद' ने फ़रमाया कि फ़ी सबीलिल्लाह से हुज्जाज मुराद हैं जो क़ाफ़िले से बिछड़ गये और उन के पास माल नहीं है और उन्हें ख़र्च करने के लिए और घर पहुँचने के लिए पैसे की ज़रुरत है और बाज़ उ़ल्मा ने फ़रमाया कि इस से तालिबे इ़ल्म मुराद हैं जो दीनी उ़लूम के ह़ासिल करने में लगे हुए हैं और साह़िबे हिदाया ने फ़रमाया कि इस से वह सब लोग मुराद हैं जो किसी भी सूरत में अल्लाह की इताअ़त और नेक कामों में लगे हुए हैं, बशर्ते कि वह मुह़ताज हों। **(अल् बह़्रुर्रायक़ भाग 2, पेज नं० 260)**

(8) वब्निस्सबील-

आठवें नम्बर पर وَابْنِ السَّبِيْلِ फ़रमाया। 'इब्ने अस्सबील' अ़रबी ज़बान में मुसाफ़िर को कहते हैं......जो मुसाफ़िर ज़रुरतमन्द हो और उस के पास सफ़र में माल मौजूद न हो उसे ज़कात का माल दिया जा सकता है। अगरचे उस के घर में कितना ही माल हो। जो लोग ग़ाज़ियों की जमाअ़त से बिछड़ गये या हुज्जाज के क़ाफ़िले से अलग हो गये, ज़रूरतमन्द होने की वजह से उन को भी ज़कात देना जायज़ है, उन की ज़रूरत को देखा जाएगा उन के घरों में अगरचे ख़ूब माल हो, अल्बत्ता यह लोग वक़्ती ज़रूरत से ज़्यादा न लें।

सअ़दात (सय्यद) को ज़कात देने का मस्ला-

बनी हाशिम को ज़कात देना जायज़ नहीं अगरचे वह फ़ुक़रा और मसाकीन हों। बनी हाशिम से ह़ज़रत अ़ली, ह़ज़रत अ़ब्बास, ह़ज़रत जाफ़र, ह़ज़रत अ़क़ील और ह़ज़रत ह़ारिस बिन अ़ब्दुल् मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अ़न्हुम की औलाद और उनकी औलादें मुराद है[1]।

अगर बनी हाशिम तंगदस्त ह़ाजतमन्द हों तो ज़कात और सद्क़ात वाजिबा के अ़लावा दूसरे माल से उन की मदद कर दी जाए।

मस्ला- जो शख़्स माले ज़कात में से किसी निसाब का मालिक हो उस को ज़कात देना जायज़ नहीं और यह शख़्स शरीअ़त की इस्तिलाह़ में ग़नी (मालदार) है और यह भी समझना चाहिए कि ग़नी को ज़कात का माल देना जायज़ नहीं। ज़रूरी नहीं कि ज़कात के माल ही में से कोई चीज़ बक़द्रे निसाब उसकी मिल्कियत में हो, बल्कि अगर किसी के पास चाँदी के निसाब की क़ीमत के बक़द्र ज़रूरी ह़ाजात से ज़ायद सामान पड़ा हुआ है तो उस शख़्स को भी ज़कात देना जायज़ नहीं और ऐसे शख़्स पर अगरचे ज़कात फ़र्ज़ नहीं, लेकिन सद्क़-ए-फ़ित्र और क़ुर्बानी लाज़िम है।

निसाबे ज़कात-

सोने चाँदी पर और उन की क़ीमत पर और माले तिजारत पर और मवेशियों पर ज़कात फ़र्ज़ है। जब किसी शख़्स की मिल्कियत में 595 ग्राम चाँदी हो या 85 ग्राम सोना हो या इन दोनों में से किसी एक की क़ीमत हो तो जब से मालिक हुआ है उस वक़्त से लेकर चाँद के ह़िसाब से एक साल गुज़र जाएँ तो उस में से 1/40 मुस्तह़क़ीन को देना फ़र्ज़ है।

फिर अगर कुछ माले तिजारत हो और कुछ सोना या चाँदी हो या कुछ सोना और साथ में कुछ चाँदी हो तो इन सब सूरतों में ज़कात फ़र्ज़ है, बशर्ते कि पूरे माल की क़ीमत 595 ग्राम चाँदी को पहुँच जाए। इस सूरत में भी चाँदी के निसाब का एतिबार होगा। याद रहे कि नोट भी चाँदी के हुक्म में है किसी भी मुल्क के नोट अगर किसी की मिल्कियत में हों जिन के बदले 595 ग्राम चाँदी ख़रीदी जा सकती हो तो उस पर ज़कात फ़र्ज़ है। अगर किसी की मिल्कियत में न चाँदी हो और न नक़्द रक़म हो—(एक दो रुपये भी मिल्कियत में न हो) तो साढ़े सात तोला सोना यानी 85 ग्राम सोना मिल्कियत में होने से ज़कात फ़र्ज़ होगी। अह़ादीस शरीफ़ा में दो सौ दिरहम चाँदी और बीस मिस्क़ाल सोने को निसाबे ज़कात

---

1. ولا يدفع إلى بنى هاشم وهم آل على وآل عباس وآل جعفر وآل عقيل وآل الحارث بن عبد المطلب كذافى الهدايه وفى المشكوٰة ص ١٦١ عن عبد المطلب بن ربيعة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ان هذه الصدقات انما هى اوساخ الناس وانها لا تحل لمحمد ولا لآل محمد (رواه مسلم) وفى حاشية المشكوٰة انما سماها اوساخا لانها تطهر اموالهم ونفوسهم قال تعالى خذ من اموالهم صدقة تطهرهم بها فهى كغسالة الاوساخ ففى الكلام تشبيه بليغ (من المرقاة).

बताया है। उ़लमा-ए-हिन्द ने डेढ़ सौ साल पहले अपने मुल्क के सिक्के के एतिबार से ह़िसाब किया था तो दो सौ दिरहम चाँदी के साढ़े बावन तोला और बीस मिस्क़ाल सोने के साढ़े सात तोले बनते थे। अब नये वज़न से ह़िसाब किया जाए तो चाँदी का निसाब 595 ग्राम और सोने का निसाब 85 ग्राम होगा।

तम्बीह– यह जो लोग समझते हैं कि साढ़े सात तोला सोने से ज़्यादा सोना हो तो इस ज़्यादती पर ज़कात फ़र्ज़ होगी यह ग़लत है। जब निसाब पूरा हो जाए या इस से ज़्यादा हो जाए तो पूरे माल पर ज़कात फ़र्ज़ होती है। (चाँदी हो या सोना हो या माले तिजारत हो या उन का मजमूअ़ा हो।)

ज़कात के ज़रुरी मसायल–

सोने चाँदी की हर चीज़ पर ज़कात है चाहे उन से बनी ईटें हों, चाहे ज़ेवर हों, इस्तेमाली हों या ग़ैर इस्तेमाली, चाहे बर्तन हों, हर सूरत में उन पर ज़कात फ़र्ज़ है।

मस्ला– ज़मीन की पैदावार, बाग़ की पैदावार और मवेशियों में भी ज़कात है जिस की तफ़्सीलात लेखक की किताब ज़कात और मसारिफ़े ज़कात देखी जा सकती है और पैदावार की ज़कात के बारे में ज़रूरी मसायल सूरः बक़रः की *(आयत नं० 267)* يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَنفِقُوا مِن طَيِّبَاتِ مَا كَسَبْتُمْ وَمِمَّا أَخْرَجْنَا لَكُم مِّنَ الْأَرْضِ की तफ़्सीर में बयान कर दिये गये हैं।

मस्ला– ज़कात की रक़म किसी काफ़िर को नहीं दी जा सकती।

मस्ला– मदरसों में अगर ज़कात दी जाए और उस में से मुस्तह़िक़ तलबा को वज़ीफ़ा दे दिया जाए या उन को मालिक बना दिया जाए तो ज़कात अदा हो जाएगी। इसी तरह़ माले ज़कात से मदारिस के क़ुतुबख़ानों में माले ज़कात से किताबें जमा कर देना तलबा के लिए लिह़ाफ़, बिस्तर और चारपाईयाँ जमा कर देना और उन को अ़ारियतन (वक़्ती तौर पर) दे देना और जाते वक़्त वापस ले लेना, इस से ज़कात अदा न होगी क्योंकि तम्लीक नहीं हुई। इन चीज़ों के लिए ज़कात और सद्क़ात वाजिबा के अ़लावा माल में से मुस्तक़िल लिया जाए।

मस्ला– किसी मरीज़ के इलाज की फ़ीस या एक्सरे वग़ैरह की उजरत माले ज़कात से अदाएगी कर दी जाए और मरीज़ को क़ब्ज़ा न कराया जाए तो इस से ज़कात अदा न होगी क्योंकि तम्लीक नहीं हुई।

मस्ला– अगर माले ज़कात से दवाएँ ख़रीद कर अस्पताल में रख दी जाएँ और मुस्तह़क़ीने ज़कात को दे दी जाएँ तो ज़कात अदा हो जाएगी, मगर यह ख़याल रखा जाए कि यह दवाएँ साह़िबे निसाब और बनी हाशिम को और काफ़िर को न दी जाएँ।

मस्ला– अगर किसी को सवाब के तौर पर माल दे दिया और अदाएगी ज़कात की नियत न की तो उस से ज़कात अदा न होगी। ज़कात की अदाएगी के लिए शर्त है कि मुस्तह़िक़ को देते वक़्त ज़कात के अदाएगी की नियत करे और एक तरीक़ा यह है कि ज़कात का माल अदाएगी ज़कात की नियत से दूसरे माल से अलग करके रख ले और यह नियत करे कि फ़ुक़रा आते रहेंगे तो इस में से

देता रहूँगा। इस सूरत में फ़ुक़रा को देते वक़्त नियत न हो तो ज़कात अदा हो जाएगी, माल अ़लैहिदा करते वक़्त जो नियत की थी वही काफ़ी होगी।

मस्ला– जिस शख़्स को ज़कात दी जाए किसी अ़मल के बदले में न हो, लिहाज़ा इमाम मुअज़्ज़िन, उस्ताज़ और किसी भी मुलाज़िम की तन्ख़्वाह में ज़कात नहीं दी जा सकती। अल्बत्ता اَلْعٰمِلِيْنَ عَلَيْهَا। इस से अलग हैं क्योंकि क़ुर्आन मजीद में इसकी तस्रीह़ मौजूद है।

मस्ला– जिन्हें अमीरुल् मोमिनीन ने ज़कात का माल वसूल करने पर लगा रखा हो उसे दी जा सकती है। इनके अ़लावा जितने भी मसारिफ़ हैं उन सब में उस शख़्स का ग़ैर साहिबे निसाब होना ज़रूरी है जिस को ज़कात दी जाए।

فی البحر الرائق ص ٢٥٩/ج٢ وانما حلت للغنی (العامل) مع حرمة الصدقة علیه لأنه فرغ نفسه لهذا العمل فیحتاج الی الكفایة وفیه ایضاً بعد صفحة ولا یخفی أن قید الفقیر لا بد منه علی الوجوه كلها

तम्बीह– लफ़्ज़ وَفِيْ سَبِيْلِ اللهِ तर्जुमः के एतिबार से तो बहुत आ़म है, लेकिन उ़लमा-ए-तफ़्सीर और फ़ुक़्हा-ए-किराम ने इस को आ़म नहीं लिया, इसीलिए बाज़ ह़ज़रात ने इस से वह मुजाहिदीन मुराद लिए हैं जो अपने साथियों से रह जाएँ और पैसा पास में न हो और बाज़ ह़ज़रात ने वह लोग मुराद लिए हैं जो सफ़रे ह़ज में अपने साथियों से बिछड़ जाएँ। बाज़ अहले इ़ल्म ने यह सवाल किया है कि अगर उनकी मिल्कियत में माल न हो तो फ़ुक़रा में शुमार होंगे और अगर वतन में माल हो और यहाँ मौजूद न हों तो इब्निस्सबील में दाख़िल हो गये, लिहाज़ा कुल क़िस्में सात हैं। फिर इस का जवाब यूँ दिया है कि वाक़ई यह लोग फ़क़ीर की तअ़रीफ़ में दाख़िल हैं लेकिन अ़लैहिदा उन को इसलिए बयान फ़रमाया कि ख़ालिस फ़क़ीर की बनिस्बत उन की अहमियत ज़्यादा है क्योंकि मुजाहिद अल्लाह तआ़ला के दीन की ह़िफ़ाज़त के लिए निकला हुआ है और ह़ज बैतुल्लाह के ज़ायरीन में से है, उन की तरफ़ ज़्यादा ध्यान देना चाहिए।

बहुत से लोग कहते हैं कि फ़ी-सबीलिल्लाह में मस्जिदें, मदरसे शिफ़ाख़ाने, मुसाफ़िर ख़ाने, कुएँ, सड़कें और पुल बनाना और रिफ़ाही इदारों के मुलाज़िमीन की तन्ख़्वाहें देना।

दफ़्तरों के मसारिफ़ में ख़र्च करना मय्यित को क़ब्रस्तान पहुँचाने के लिए एम्बुलेन्स का इन्तिज़ाम करना और ग़रीब मय्यित के कफ़न-दफ़न में ख़र्च करना यह सब जायज़ है, यह उन लोगों की अपनी एक राय हैं। मुफ़स्सिरीन व मुह़द्दिसीन और फ़ुक़्हा ने जो कुछ क़ुर्आन मजीद को सामने रखकर मसायल बयान किये हैं उन को छोड़कर ऐसे लोगों के क़ौल की कोई ह़ैसियत नहीं। यह लोग कहते हैं, ज़कात का माल जहाँ चाहो ख़र्च कर दो। तम्लीक (मिल्कियत में देना) फ़क़ीर की कोई ज़रूरत नहीं। यह बात चारो मस्लक के ख़िलाफ़ है। अगर हर काम में ज़कात का माल ख़र्च करने की इजाज़त होती तो क़ुर्आन मजीद में आठ क़िस्में बताने की ज़रूरत ही क्या थी? ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने ह़ज़रत मुआ़ज़ बिन जबल

(रज़ि०) को जब यमन का हाकिम बनाकर भेजा तो उन से फ़रमाया थाः-

ان الله قد فرض عليهم صدقة تؤخذ من اغنيائهم فترد على فقراء هم۔

कि अल्लाह तआला ने उन पर ज़कात फ़र्ज़ की है जो उन के मालदारों से लेकर उन के फ़क़ीरों को दे दी जाए। **(बुख़ारी व मुस्लिम कमा फ़िल मिश्कात पेज नं० 155)**

इस से साफ़ ज़ाहिर हुआ कि ज़कात उस सूरत में अदा होगी जब फ़ुक़रा को दे दी जाए।

मस्ला– चाँदी, सोना, नक़्दी और माले तिजारत में जो ज़कात फ़र्ज़ है उसकी अदाएगी का यह तरीक़ा है कि हर साल चाँद के हिसाब से जब साल गुज़र जाए पूरे माल से चालीस्वाँ हिस्सा दे दे। अगर अस्ल माल न दे और उसकी क़ीमत दे दे तो इस से भी ज़कात अदा हो जाएगी। 1/40 से कम न हो। सौ रुपये में 2½ (ढ़ाई) रुपये और एक हज़ार में 25 रुपये और एक लाख में 2½ (ढ़ाई) हज़ार रुपये के हिसाब से लगाया जाए जिस शहर में रहते हुए ज़कात फ़र्ज़ होती है वहाँ की ज़कात वहीं के फ़ुक़रा पर ख़र्च की जाए। हाँ, अगर दूसरी जगह के लोग ज़्यादा मुहताज हों या जंग हो रही हो तो उन के लिए भेज देना मुनासिब है।

मस्ला– बहुत से लोग लड़कियों की शादियों के लिए ज़कात की रक़म दे देते हैं पहली बात तो यह है कि लड़कों और लड़कियों की शादी सादगी से करनी चाहिए। रसूलुल्लाह (सल्ल०) का तरीक़ा अख़्तियार करें और इसी पर दोनों फ़रीक़ राज़ी रहें।

मस्ला– अगर किसी सायल को ज़कात दें तो पहले यक़ीन कर लें कि यह मुस्तहिक़ ज़कात है या नहीं। 'सही बुख़ारी' भाग 1 पेज नं० 200 में है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, "मिस्कीन वह नहीं जो लोगों के पास घूमता फिरता है उसे एक लुक़्मा या दो लुक़्मे या एक खजूर या दो खजूरें दी जाती हैं, लेकिन मिस्कीन वह है जो इतना माल नहीं पाता जिन से उसकी ज़रूरत पूरी हो और उस के हाजतमन्द होने का पता नहीं चलता ताकि उस को सद्क़ः दे दिया जाए। वह खड़े होकर लोगों से सवाल भी नहीं करता।" इस हदीस से मालूम हुआ कि वाक़ई ज़रूरतमन्द को तलाश कर के ज़कात का माल दिया जाए। बहुत से लोग ज़्यादा ज़रूरतमन्द होते हैं इ़ज़्ज़त की वजह से सवाल नहीं करते और नंगे भूखे घरों में अपनी ज़िन्दगियाँ गुज़ारते हैं। ऐसे लोगों का ख़ास ख़याल किया जाए—यह मालूम होना चाहिए कि ज़कात भी नमाज़ की तरह़ फ़र्ज़ है जिस तरह़ नमाज़ के हुक्मों और मस्लों का जानना और नमाज़ को शरई क़ानून के मुताबिक़ पढ़ना, तहारत के लिए पाक पानी का देखना, इस्तिन्जा ठीक करना, कपड़ों का पाक रखना, क़िब्ला की तरफ़ मुँह कर के नमाज़ पढ़ना और जो चीज़ नमाज़ में पढ़ी जाती हैं सही तरीक़े पर उन को याद करना लाज़िम है, उसी तरह़ से ज़कात के मसायल और हुक्मों को जानना भी ज़रुरी है।

ज़कात का माल जिस को चाहा दे दिया जिस हुक्मों में चाहा ख़र्च कर दिया जहाँ चाहा जमा

कर दिया, ज़कात अदा हो या न हो। यह फ़र्ज़ की अदाएगी का तरीक़ा नहीं। माल हलाल कमाये, हलाल जगह में ख़र्च करे, ज़कात फ़र्ज़ हो जाए तो ठीक हिसाब से अदा करे और जिस को दे उस के बारे में पहले यक़ीन कर ले कि यह ज़कात का हक़्दार है या नहीं।

61 وَمِنْهُمُ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ النَّبِيَّ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ اُذُنٌ ۭ قُلْ اُذُنُ خَيْرٍ لَّكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَيُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۭ وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ رَسُوْلَ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝

अल्लाह तआला ने ख़बर दी है कि जो मुनाफ़िक़ीन मुसलमानों के पास आकर क़समें खाते हैं कि वह भी मुख़्लिस मुसलमान हैं, उन में से बाज़ उन मुनाफ़िक़ों से भी बद्तर हैं जिन का ज़िक्र ऊपर गुज़र चुका।

कहते हैं कि 'मुहम्मद' बहुत ही सीधा आदमी है कि वह हर शख़्स की बात मान लेता है, हम भी जब उस के सामने क़सम खा लेते हैं तो हमारी बात भी मान लेता है, तो अल्लाह तआला ने उन की बात को रद्द किया कि हाँ, नबी करीम (सल्ल०) सुनते तो हैं, लेकिन वही बातें जो मुसलमानों के लिए फ़ायदेमन्द और उन के लिए बेहतर होती हैं, इसलिए कि वह नर्म मिजाज हैं, अल्लाह पर ईमान रखते हैं और सच्चे मुसलमानों के ख़ैर से मुतअ़ल्लिक़ बातों को मान लेते हैं।

इस के बाद अल्लाह ने फ़रमाया कि जो लोग ऐसी बातों के ज़रिये नबी करीम (सल्ल०) को तक्लीफ़ पहुँचाते हैं उन्हें दर्दनाक अ़ज़ाब दिया जाएगा।

62 يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ لِيُرْضُوْكُمْ ۚ وَاللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ اَحَقُّ اَنْ يُّرْضُوْهُ اِنْ كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ۝

मुनाफ़िक़ीन जब अपने लोगों में होते तो मुसलमान और नबी करीम (सल्ल०) पर तअ़ना (कमेन्ट) करते और जब इस की ख़बर रसूलुल्लाह (सल्ल०) और सहाबा-ए-किराम को होती और उन से पूछा जाता तो क़समें खाकर कहते कि उन्होंने ऐसा नहीं किया था, ताकि रसूलुल्लाह (सल्ल०) और दूसरे मुसलमान उन से ख़ुश रहें। उन के इसी इत्तिफ़ाक़ (सहमति) और अख़्लाक़ी गिरावट पर क़ुर्आन करीम ने मातम करते हुए कहा है कि अल्लाह और उस के रसूल ज़्यादा हक़्दार थे कि वह लोग उन्हें राज़ी करते और निफ़ाक़ से तौबः करते।

63 اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّهٗ مَنْ يُّحَادِدِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاَنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيْهَا ۭ ذٰلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيْمُ ۝

इस आयत में उन के निफ़ाक़ का बुरा अन्जाम बताया गया है कि क्या उन्हें पता नहीं कि जो अल्लाह और उस के रसूल की मुख़ालिफ़त करता है उस का बदला जहन्नम की आग है, जिस में वह हमेशा रहेगा।

64 يَحْذَرُ الْمُنٰفِقُوْنَ اَنْ تُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ سُوْرَةٌ تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ ۭ قُلِ اسْتَهْزِءُوْا ۚ اِنَّ اللّٰهَ مُخْرِجٌ مَّا تَحْذَرُوْنَ ۝

इब्ने अबी शैबा और इब्ने अल् मुन्ज़िर वग़ैरह ने मुजाहिद से रिवायत की है कि मुनाफ़िक़ीन आपस में रसूलुल्लाह (सल्ल०) और मुसलमानों के ख़िलाफ़ जब कोई बात करते तो डरते कि कहीं ऐसा न हो

अल्लाह हमारी बात मुहम्मद (सल्ल०) को बता दे। एक और रिवायत है कि एक मुनाफ़िक़ ने कहा कि काश हमें सौ कोड़े लगाए जाते और हमारे बारे में क़ुर्आन न नाज़िल होता जो हमारा पर्दा-फ़ाश कर देता तो यह आयत नाज़िल हुई और अल्लाह ने उन्हें धमकी दी कि ख़ूब इस्लाम और मुसलमानों का मज़ाक़ उड़ा लो, लेकिन यह जान लो कि अल्लाह तुम्हारी तमाम ख़बासतों और ह़रकतों को ख़त्म कर के रहेगा।

65 وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ لَيَقُولُنَّ إِنَّمَا كُنَّا نَخُوضُ وَنَلْعَبُ ۚ قُلْ أَبِاللَّهِ وَآيَاتِهِ وَرَسُولِهِ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِئُونَ ﴿٦٥﴾

इब्ने जरीर, इब्ने अबी ह़ातिम और इब्ने मरदूविया वग़ैरहुम ने अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से इस आयत के शाने नुज़ूल के बारे में जो रिवायत नक़्ल की है उस का ख़ुलासा यह है कि एक आदमी (और वह शायद अ़ब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलोल था) ने ग़ज़्व-ए-तबूक के मौक़े से एक मजलिस में कहा कि हम ने उन कारियों से ज़्यादा झूठा और बुज़ूदिल नहीं देखा। रसूलुल्लाह (सल्ल०) को इस की ख़बर हो गई और क़ुर्आन नाज़िल हुआ तो वह आदमी रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ऊँटनी की लगाम पकड़ कर दौड़ रहा था और लोग उसे पत्थर से मार रहे थे और कहता था कि या रसूलल्लाह! हम यूँ हीं गपशप कर रहे थे और नबी करीम (सल्ल०) कहते जा रहे थे कि क्या तुम लोग अल्लाह, उस की आयतों और उस के रसूल का मज़ाक़ उड़ा रहे थे?

66 لَا تَعْتَذِرُوا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ ۚ إِنْ نَعْفُ عَنْ طَائِفَةٍ مِنْكُمْ نُعَذِّبْ طَائِفَةً بِأَنَّهُمْ كَانُوا مُجْرِمِينَ ﴿٦٦﴾

इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने उन मुनाफ़िक़ीन को मुख़ातब कर के कहा कि अब कोई उ़ज़्र क़ाबिले क़ुबूल नहीं, तुम्हारा कुफ़्र ज़ाहिर हो चुका। अल्बत्ता जो लोग तौबः कर लेंगे और अपना सुधार कर लेंगे तो हम उन्हें माफ़ कर देंगे, लेकिन जो लोग अपने निफ़ाक़ (कपट) पर जमे रहेंगे और इसी तरह़ क़ुर्आन और इस्लाम का मज़ाक़ उड़ाते रहेंगे और नबी करीम (सल्ल०) को तक्लीफ़ पहुँचाते रहेंगे तो इन जरायम की वजह से हम उन्हें ज़रूर सज़ा देंगे।

इस आयत से मालूम होता है कि दीन की बातों को मज़ाक़ का मौज़ूअ़ बनाना बहुत ख़तरनाक है। आ़मतौर से लोग अन्जाने में जन्नत, जहन्नम, क़ुर्आन करीम की बाज़ आयात या आप (सल्ल०) की बाज़ सुन्नतों को मज़ाक़ का ज़रिया बना लेते हैं, यह सीधे कुफ़्र तक पहुँचाने वाला अ़मल है।

यहाँ मुनाफ़िक़ की क़िस्में बयान की जाती हैं। मुनाफ़िक़त दो तरह़ की होती है, एक एतिक़ादी और दूसरी अ़मली।

एतिक़ादी मुनाफ़िक़त की सात क़िस्में हैं-

(अ) रसूलुल्लाह (सल्ल०) को झुठलाना।

(ब) रसूलुल्लाह (सल्ल०) की दी हुई किसी ख़बर को झुठलाना।

(ज) रसूलुल्लाह (सल्ल०) से बुग्ज़ रखना।

(द) रसूलुल्लाह (सल्ल०) की दी हुई किसी चीज़ से बुग्ज़ रखना।

(र) रसूलुल्लाह (सल्ल०) के दीन की तौहीन पर ख़ुश होना।

(स) दीन की मदद को नापसन्द करना।

अ़मली मुनाफ़िक़त की पाँच क़िस्में हैं-

(अ) जब बोले तो झूठ बोले।

(ब) जब वादा करे तो न निभाए।

(ज) जब अमानत रखी जाए तो ख़यानत करे।

(द) जब झगड़ा हो तो फ़ुहश कलामी पर उतर आये।

(र) जब मुआ़हिदा करे तो तोड़ डाले।

आयत नं० 67 से 74 तक

اَلْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ بَعْضُهُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمُنْكَرِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوْفِ وَيَقْبِضُوْنَ اَيْدِيَهُمْ ۗ نَسُوا اللّٰهَ
فَنَسِيَهُمْ ۗ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝ وَعَدَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْكُفَّارَ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۗ هِيَ
حَسْبُهُمْ ۚ وَلَعَنَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ۝ كَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ كَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْكُمْ قُوَّةً وَّاَكْثَرَ اَمْوَالًا وَّاَوْلَادًا ۗ فَاسْتَمْتَعُوْا
بِخَلَاقِهِمْ فَاسْتَمْتَعْتُمْ بِخَلَاقِكُمْ كَمَا اسْتَمْتَعَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ بِخَلَاقِهِمْ وَخُضْتُمْ كَالَّذِيْ خَاضُوْا ۗ اُولٰٓئِكَ
حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝ اَلَمْ يَاْتِهِمْ نَبَاُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ
وَّثَمُوْدَ ۙ وَقَوْمِ اِبْرٰهِيْمَ وَاَصْحٰبِ مَدْيَنَ وَالْمُؤْتَفِكٰتِ ۗ اَتَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا
اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝ وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ
وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَيُطِيْعُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۗ اُولٰٓئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللّٰهُ ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ وَعَدَ اللّٰهُ
الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ۗ
وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ اَكْبَرُ ۗ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ۗ وَمَاْوٰىهُمْ
جَهَنَّمُ ۗ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝ يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ مَا قَالُوْا ۗ وَلَقَدْ قَالُوْا كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَكَفَرُوْا بَعْدَ اِسْلَامِهِمْ وَهَمُّوْا بِمَا لَمْ
يَنَالُوْا ۚ وَمَا نَقَمُوْٓا اِلَّآ اَنْ اَغْنٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَاِنْ يَّتُوْبُوْا يَكُ خَيْرًا لَّهُمْ ۚ وَاِنْ يَّتَوَلَّوْا يُعَذِّبْهُمُ
اللّٰهُ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَمَا لَهُمْ فِي الْاَرْضِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝

अनुवाद-

(67) मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औ़रतें सब एक ही तरह के (हमजिन्स) हैं: बुरी बात का हुक्म देते रहते हैं, और अच्छी बात से रोकते रहते हैं, और अपने हाथों को बन्द रखते हैं, उन्होंने अल्लाह को भुला दिया तो 'उसने' उन्हें भुला दिया, बेशक मुनाफ़िक़ीन बड़े नाफ़रमान हैं; (68) और अल्लाह ने मुनाफिक़ मर्दों और मुनाफिक़ औ़रतों और काफ़िरों से जहन्नम की आग का वादा कर रखा है, जिसमें वे हमेशा रहेंगे, वही उनके लिए काफ़ी है और अल्लाह ने उन पर लानत कर दी, और उनके लिए हमेशा का अ़ज़ाब है। (69) तुम्हारा हा़ल भी वही हुआ जैसा तुम्हारे पूर्वजों का हुआ था, वह तुमसे कहीं ज़्यादा शक्तिशाली थे और माल और औलाद में भी बढ़-चढ़ कर थे, फिर उन्होंने अपने हिस्से का लाभ उठा लिया, और तुमने भी अपने हिस्से का लाभ उठा लिया, जिस तरह तुम से पहले लोगों ने उठाया था; और तुम भी उसी तरह उलझते रहे, जिस तरह वे उलझते रहे, यही वे लोग हैं जिनके आ़माल दुनिया और आख़िरत में बरबाद हो गये, और यही लोग घाटा उठाने वाले हैं। (70) क्या इन्हें उन लोगों की ख़बर नहीं पहुँची जो इनसे पहले गुज़र चुके हैं- (जैसे) क़ौमे 'नूह' और 'आ़द' और 'समूद' की, और क़ौमे इब्राहीम व मद्यन वालों की, और उल्टी हुई बस्तियों की- उनके पास उनके रसूल खुली हुई निशानियाँ ले कर आए थे, फिर अल्लाह ऐसा न था कि उन पर ज़ुल्म करता, और वे खुद ही अपने आप पर ज़ुल्म करते थे। (71) और ईमान वाले मर्द, और ईमान वाली औरतें एक-दूसरे के रफ़ीक़ (साथी) हैं: भली बातों का हुक्म देते हैं, और बुरी बातों से रोकते रहते

हैं, और नमाज़ क़ायम करते हैं, और ज़कात देते रहते हैं और अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमाँबरदारी (आज्ञा पालन) करते हैं, यही लोग हैं कि अल्लाह उन पर ज़रूर रह़म करेगा, बेशक अल्लाह जबर्दस्त (प्रभुत्वशाली), ह़िकमत वाला है। (72) अल्लाह ने ईमान वालों और ईमान वाली औ़रतों से वादा कर रखा हैं जन्नत का, कि उनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जिसमें वे हमेशा रहेंगे, और उस हमेशा रहने वाली जन्नत में पाकीज़ा मकान होंगे, और उन्हें अल्लाह की रज़ामन्दी हासिल होगी, जो सबसे बढ़ कर है, यही सबसे बड़ी कामियाबी है। (73) ऐ नबी! काफ़िरों (इन्कार करने वालों) और मुनाफ़िक़ों से जिहाद कीजिए और उनके साथ सख़्ती के साथ पेश आइए, और उनका ठिकाना जहन्नम है और वह बहुत बुरी जगह है! (74) यह लोग अल्लाह की क़सम खा जाते हैं कि उन्होंने (फलाँ बात) नहीं कही, हालाँकि उन्होंने अवश्य ही कुफ़्र की बात कही थी, और अपने इस्लाम कुबूल करने के बाद इन्कार किया और ऐसी बात का इरादा किया जो हासिल न हो सकी; और उन्होंने बदला केवल इस बात का दिया कि अल्लाह और उसके रसूल ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से मालदार कर दिया; अब अगर ये लोग तौबः कर लें तो उनके ह़क़ में बेहतर है और अगर उन्होंने मुँह मोड़ा तो अल्लाह उन्हें दर्दनाक सज़ा दुनिया और आख़िरत में देगा और उनका ज़मीन में न कोई दोस्त होगा और न मदद्गार।

आयत नं० 67 से 74 तक की व्याख्या

67 اَلْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ بَعْضُهُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمُنْكَرِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوْفِ وَيَقْبِضُوْنَ
اَيْدِيَهُمْ ۭ نَسُوا اللّٰهَ فَنَسِيَهُمْ ۭ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ

आयत नं० (56) में गुज़र चुका है कि मुनाफ़िक़ीन क़समें खाकर मुसलमानों से कहते थे कि वह भी उन्हीं की तरह़ सच्चे मुसलमान हैं। इस आयत में उन्हीं मुनाफ़िक़ीन के बारे में कहा जा रहा है कि मुनाफ़िक़ीन चाहे मर्द हों या औ़रतें, बुराई का हुक्म देते हैं और भलाई से रोकते हैं। सिला रह़मी (रिश्तेदारों के साथ अच्छा बर्ताव) जिहाद और किसी भी ख़ैर के काम में ख़र्च नहीं करते और अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल होते हैं, इसलिए आख़िरकार अल्लाह ने भी उन्हें भुला दिया और अपनी रह़मत से मह़रूम कर दिया और इसलिए भी कि मुनाफ़िक़ीन अपने कुफ़्र व सरकशी में आख़िरी सीमा को पहुँचे हुए हैं।

68 وَعَدَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْكُفَّارَ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ هِىَ حَسْبُهُمْ ۚ وَلَعَنَهُمُ اللّٰهُ ۚ
وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ

इस आयत में उन की आख़िरत का अन्जाम बताया गया है कि जहन्नम उन का ठिकाना होगा और यह सज़ा उन के लिए काफ़ी होगी, उन पर अल्लाह की लअ़नत बरस रही होगी और जिस अ़ज़ाब में वह मुब्तिला होंगे वह हमेशा के लिए होगा, कभी ख़त्म न होगा।

69 كَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ كَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْكُمْ قُوَّةً وَّاَكْثَرَ اَمْوَالًا وَّاَوْلَادًا ۭ فَاسْتَمْتَعُوْا بِخَلَاقِهِمْ
فَاسْتَمْتَعْتُمْ بِخَلَاقِكُمْ كَمَا اسْتَمْتَعَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ بِخَلَاقِهِمْ وَخُضْتُمْ كَالَّذِيْ

خَاضُوْا ۭ اُولٰۗىِٕكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝

इस आयत में ख़िताब मुनाफ़िक़ीन को है कि तुम्हारा हाल उन क़ौमों जैसा है जो तुम से पहले गुज़र चुकी हैं, उन पर भी अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारी ही तरह़ इनआ़म किया, वह जिस्मानी क़ुव्वत, माल व दौलत और औलाद में तुम से ज़्यादा अच्छी ह़ालत में थे और उन्होंने इस दुनियावी नेअ़मतों से ख़ूब फ़ायदा उठाया, ख़ूब मज़े किये और बड़ाई व गुरूर में मुब्तिला होकर तुम्हारी ही तरह़ अल्लाह के दीन और उस के रसूल के ख़िलाफ़ साज़िशें कीं और उन का मज़ाक़ उड़ाया तो अल्लाह तआ़ला की पकड़ में आ गये, दुनिया में ज़लील और रुस्वा हुए और आख़िरत तो उन की बर्बाद ही है तो ऐ मुनाफ़िक़ो! तुम भी ख़ूब मज़े उड़ा रहे हो और आख़िरत से ग़ाफ़िल रसूलुल्लाह (सल्ल०) और मुसलमानों को तक्लीफ़ें दे रहे हो, इसलिए तुम्हारा भी अन्जाम उन्हीं लोगों जैसा होगा।

सय्यदना अबी सई़द (रज़ि०) से रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "तुम अपने से पहले लोगों के तरीक़े की ज़रूर पैरवी करोगे। बालिश्त-बालिश्त। ज़िराअ़-ज़िराअ़ (हाथ-हाथ) यहाँ तक कि अगर वह किसी गोह के बिल में घुसे हैं तो तुम भी ज़रूर घुसोगे। हम ने पूछा क्या इस से आपकी मुराद यहूद व नसारा हैं? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया और कौन?" **(बुख़ारी)**

70 اَلَمْ يَاْتِهِمْ نَبَاُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ ڏ وَقَوْمِ اِبْرٰهِيْمَ وَاَصْحٰبِ مَدْيَنَ
وَالْمُؤْتَفِكٰتِ ۭ اَتَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝

यहाँ पिछली क़ौमों में से छः के ह़ालात नाम लेकर बयान किये जा रहे हैं और मुनाफ़िक़ीन से कहा जा रहा है कि क्या उन्होंने उन क़ौमों के बारे में नहीं सुना कि जब उन्होंने अल्लाह से सरकशी की तो उन का अन्जाम क्या हुआ? क़ौमे नूह़ को तूफ़ान के ज़रिये हलाक कर दिया गया, क़ौमे आ़द को तेज़ हवा के ज़रिये, क़ौमे समूद को ज़ल्ज़ले और चीख़ के ज़रिये, क़ौमे इब्राहीम के बादशाह नमरूद को मच्छर के ज़रिये जो उस की नाक के ज़रिये दिमाग़ तक पहुँच गया और उस की हलाकत का ज़रिया बना। क़ौमे मद्यन यानी क़ौमे शुऐ़ब को ज़ल्ज़ला और आग की बारिश के ज़रिये और क़ौमे लूत की बस्तियों को उलटने के ज़रिये फिर उन पर पत्थरों की बारिश की गई। इन क़ौमों के साथ जो कुछ हुआ वह अल्लाह की तरफ़ से उन पर ज़ुल्म नहीं था, बल्कि उन के कुफ़्र और अम्बिया को झुठलाने और अल्लाह तआ़ला की नाशुक्री की वजह से हुआ।

71-72 وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَاۗءُ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ
الْمُنْكَرِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَيُطِيْعُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۭ اُولٰۗىِٕكَ
سَيَرْحَمُهُمُ اللّٰهُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ وَعَدَ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ۭ
وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ اَكْبَرُ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝

यहाँ मोमिनीन और मोमिनात की सिफ़ात का ज़िक्र हो रहा है कि वह एक दूसरे से दिल से मुह़ब्बत

करते हैं, इसलिए कि अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान का यही तक़ाज़ा है, लोगों को भलाई का हुक्म देते हैं, जिस में सब से पहले अल्लाह तआ़ला और सिर्फ़ उसी के अ़िबादत की है और बुराई से रोकते हैं और ज़िक्र इलाही में मश्गूल रहने के लिए नमाज़ों की हिफ़ाज़त करते हैं और मुनाफ़िक़ों की तरह अपने हाथों को समेटे नहीं रहते, बल्कि अगर अल्लाह माल देता है तो उस की ज़कात अदा करते हैं और सरकशी की राह नहीं अख़्तियार करते, बल्कि अल्लाह और उस के रसूल की इताअ़त करते हैं और इन ख़ूबियों की वजह से दुनिया में उन पर अल्लाह की रहमत नाज़िल होती है।

सय्यदना नोअ़मान बिन बशीर (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "आपस में हमदर्दी, मुहब्बत और शफ़क़त में तुम मुसलमानों को देखोगे कि वह एक जिस्म की तरह हैं। अगर जिस्म के एक अ़ज़्व(अंग) को तक्लीफ़ पहुँचती है तो बक़िया सारे अअ़ज़ा (अंग) बुख़ार और बेचैनी महसूस करते हैं। **(मुस्लिम)**

इस आयत में बताया गया है कि आख़िरत में उन्हें ऐसी जन्नतें मिलेंगी जिन के नीचे नहरें जारी होंगी और जन्नत में अच्छे मकानात मिलेंगे और इन सब से बढ़कर अल्लाह तआ़ला उन से हमेशा के लिए ख़ुश हो जाएगा।

'इमाम मालिक' और 'बुख़ारी' व 'मुस्लिम' ने हज़रत अबू सईद ख़ुद्री (रज़ि०) से रिवायत की है कि "अल्लाह तआ़ला जन्नतियों से पूछेगा क्या तुम लोग ख़ुश हो गये? तो वह कहेंगे कि ऐ हमारे रब! हम क्यों न ख़ुश हों, तूने तो हमें वह कुछ दे दिया जो अपनी मख़्लूक़ में से किसी को नहीं दिया तो अल्लाह कहेगा कि क्या मैं तुझे इस से भी अफ़्ज़ल चीज़ न दूँ? तो वह पूछेंगे, या अल्लाह! इस से अफ़्ज़ल क्या चीज़ हो सकती है? तो अल्लाह कहेगा कि मैं तुम से ख़ुश हो गया, अब कभी भी तुम से नाराज़ नहीं हूँगा।" **(बुख़ारी)**

सय्यदना अबू सईद ख़ुद्री (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआ़ला जन्नत वालों से फ़रमाएगा ऐ जन्नत वालों! क्या तुम ख़ुश हो गये। वह अ़र्ज़ करेंगे ऐ रब! हम ख़ुश क्यों न हों तूने हमें वह कुछ अ़िनायत फ़रमाया है जो कि अपनी मख़्लूक़ में किसी को नहीं दिया। अल्लाह फ़रमाएँगे क्या तुम्हें इन तमाम नेअ़मतों से बढ़कर एक नेअ़मत न दूँ? वह कहेंगे कि अब इस से बढ़कर और कौन सी नेअ़मत हो सकती है? अल्लाह फ़रमाएँगे मैं तुम्हें अपनी रज़ा से नवाज़ता हूँ अब कभी तुम से नाराज़ न हूँगा। **(बुख़ारी)**

अ़ब्दुल्लाह बिन क़ैस से रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "दो जन्नतें ऐसी हैं जिन में बर्तन और दूसरी चीज़ें चाँदी से तैयार हुई हैं। इस के अ़लावा दो और जन्नतें हैं जिन में बर्तन और दूसरी तमाम चीज़ें सोने से तैयार हुई हैं। अहले जन्नत को दीदारे इलाही से कुछ रुकावट न होगी सिवाय जलाल (रोअ़ब) के पर्दे के।" **(बुख़ारी)**

73 يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّبِيُّ جَٰهِدِ ٱلۡكُفَّارَ وَٱلۡمُنَٰفِقِينَ وَٱغۡلُظۡ عَلَيۡهِمۡۚ وَمَأۡوَىٰهُمۡ جَهَنَّمُۖ وَبِئۡسَ ٱلۡمَصِيرُ ۝

अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी (सल्ल०) को हुक्म दिया है कि वह काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों के ख़िलाफ़ जिहाद करें (जैसे हा़लात पिछली आयतों में गुज़रे हैं) और आप (सल्ल०) के बाद क़ियामत तक यह हुक्म रहेगा कि उन से जिहाद किया जाए यहाँ तक कि ह़क़ पर आ जाएँ। अगर इस्लाम नहीं लाते तो (जब्र नहीं किया जाएगा मगर) रुसवाई के साथ जिज़्या दें, जैसा कि इसी सूरत की आयत नं० (29) में गुज़र चुका है और मुनाफ़िक़ीन से जिहाद की एक सूरत यह बताई है कि दलीलों के ज़रिये उन के ख़िलाफ़ हुज्जत क़ायम की जाए, यहाँ तक कि तौबः करके इस्लाम में दाख़िल हो जाएँ। इस के बाद अल्लाह ने फ़रमाया कि कुफ़्फ़ार व मुनाफ़िक़ीन के साथ कुफ़्र व शिर्क में कोई समझौता नहीं किया जा सकता बल्कि कुफ़्र शिर्क में सख़्ती से पेश आया जाएगा।

74 يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ مَا قَالُوْا ۭ وَلَقَدْ قَالُوْا كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَكَفَرُوْا بَعْدَ اِسْلَامِهِمْ وَهَمُّوْا بِمَا لَمْ
يَنَالُوْا ۚ وَمَا نَقَمُوْٓا اِلَّآ اَنْ اَغْنٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَاِنْ يَّتُوْبُوْا يَكُ خَيْرًا لَّهُمْ ۚ
وَاِنْ يَّتَوَلَّوْا يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَمَا لَهُمْ فِي الْاَرْضِ مِنْ
وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝

उ़लूम-ए-तफ़्सीर ने इस आयत का शाने नुज़ूल बयान करने के लिए जो वाक़िआ़त बयान किये हैं, उन से अन्दाज़ा होता है कि ग़ज़्व-ए-तबूक की तैयारी के दौरान, इस ग़ज़्वे के सफ़र में मक़ामे तबूक में क़ियाम के दौरान और वापसी के बाद मुनाफ़िक़ीन की ज़बानों से बहुत से कुफ़्रिया कलिमात निकले और जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) को इन की ख़बर हो जाती और उन से पूछा जाता तो झूठ बोल देते और क़समें खाकर कहते थे कि वह तो मुख़्लिस मुसलमान हैं।

इसलिए इस सूरत में ग़ज़्व-ए-तबूक के मौक़े से मुनाफ़िक़ीन के हा़लात बयान करते हुए कई बार इस बात का ज़िक्र आया है कि मुनाफ़िक़ीन क़समे खाकर अपने झूठ पर पर्दा डालना चाहते थे उन में से दो वाक़िआ़त ज़्यादा मश्हूर हैं। एक अ़ब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलोल का है जिस ने अन्सार को ग़ैर अन्सार के ख़िलाफ़ उभारना चाहा था और कहा था कि यह तो ऐसा ही है कि कुत्ते को खिलाकर मोटा करो ताकि तुम्हें खा जाए और कहा था कि मदीना वापस के बाद बाइ़ज़्ज़त आदमी ज़लील आदमी को निकाल बाहर करेगा।

इस तरह़ बाइ़ज़्ज़त से अपने आप को और ज़लील से रसूलुल्लाह (सल्ल०) को मुराद लिया था और जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) को ख़बर हुई और उस से पूछा तो क़सम खा गया कि उस ने यह बात नहीं कही है।

दूसरा वाक़िआ़ 'जल्लास बिन सवीद' का है, जिस ने मुनाफ़िक़ीन से कसरते नुज़ूल क़ुर्आन से तंग आकर कहा था कि अगर यह आदमी (रसूलुल्लाह) सच्चा है तो हम लोग गधों से भी ज़्यादा बुरे हैं।

फिर जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उस से दर्याफ़्त किया तो क़सम खा गया कि उस ने यह बात नहीं कही थी कहते हैं कि बाद में जल्लास ने तौबः कर ली थी।

इमाम मुस्लिम ने **'अल् सहीह़'** में और बैहक़ी में 'दलायल अल् नुबूव्वत' में हुज़ैफ़ा बिन यमान (रज़ि०) से रिवायत की है जिस का ख़ुलासा यह है कि मक़ामे तबूक में क़ियाम के दौरान बारह आदमियों ने रात के वक़्त मुँह पर नक़ाब डाल कर रसूलुल्लाह (सल्ल०) को क़त्ल करना चाहा था। आयत के इस ह़िस्से में इसी तरफ़ इशारा है।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) की बेअ़सत से पहले अहले मदीना बड़ी तंगी में ज़िन्दगी गुज़ारते थे। आप (सल्ल०) के मदीना तशरीफ़ लाने के बाद उन की माली ह़ालत अच्छी हो गई। जब भी माले ग़नीमत हाथ आता रसूलुल्लाह (सल्ल०) उन के दर्मियान तक़्सीम करते और दूसरे माल के ज़रिये भी उन की ज़रूरतें पूरी करते रहते और 'जल्लास' का एक गुलाम क़त्ल कर दिया गया तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उसे उस की दियत (बदला) दे दी जिस की वजह से वह मालदार हो गया।

यानी अल्लाह ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) की वजह से उन के ज़रिये उन्हें ख़ूब नवाज़ा। इस एह़सान का बदला यह होना चाहिए था कि वह आप (सल्ल०) का शुक्रिया अदा करते, लेकिन उस के विपरीत मुनाफ़िक़ीन ने आप (सल्ल०) को क़त्ल कर देना चाहा।

आयत के आख़िर में अल्लाह तआ़ला ने तौबः की दअ़वत दी है कि अगर वह तौबः कर लें तो उन के लिए बेहतर है और अगर मुँह फेर लेंगे तो अल्लाह उन्हें दुनिया व आख़िरत दोनों जगह सख़्त अ़ज़ाब देगा।

आयत नं० 75 से 85 तक

وَمِنْهُمْ مَّنْ عٰهَدَ اللّٰهَ لَئِنْ اٰتٰىنَا مِنْ فَضْلِهٖ لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُوْنَنَّ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ فَلَمَّآ اٰتٰىهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ
بَخِلُوْا بِهٖ وَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝ فَاَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِيْ قُلُوْبِهِمْ اِلٰى يَوْمِ يَلْقَوْنَهٗ بِمَآ اَخْلَفُوا اللّٰهَ مَا وَعَدُوْهُ
وَبِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ ۝ اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوٰىهُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ۝ اَلَّذِيْنَ يَلْمِزُوْنَ
الْمُطَّوِّعِيْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ فِي الصَّدَقٰتِ وَالَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ اِلَّا جُهْدَهُمْ فَيَسْخَرُوْنَ مِنْهُمْ ۭ سَخِرَ اللّٰهُ مِنْهُمْ ۡ وَلَهُمْ
عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ اِسْتَغْفِرْ لَهُمْ اَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ۭ اِنْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِيْنَ مَرَّةً فَلَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ
كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۭ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝ فَرِحَ الْمُخَلَّفُوْنَ بِمَقْعَدِهِمْ خِلٰفَ رَسُوْلِ اللّٰهِ وَكَرِهُوْٓا اَنْ
يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَقَالُوْا لَا تَنْفِرُوْا فِي الْحَرِّ ۭ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ اَشَدُّ حَرًّا ۭ لَوْ كَانُوْا يَفْقَهُوْنَ ۝ فَلْيَضْحَكُوْا
قَلِيْلًا وَّلْيَبْكُوْا كَثِيْرًا ۚ جَزَاۗءًۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝ فَاِنْ رَّجَعَكَ اللّٰهُ اِلٰى طَاۗىِٕفَةٍ مِّنْهُمْ فَاسْتَاْذَنُوْكَ لِلْخُرُوْجِ فَقُلْ
لَّنْ تَخْرُجُوْا مَعِيَ اَبَدًا وَّلَنْ تُقَاتِلُوْا مَعِيَ عَدُوًّا ۭ اِنَّكُمْ رَضِيْتُمْ بِالْقُعُوْدِ اَوَّلَ مَرَّةٍ فَاقْعُدُوْا مَعَ الْخٰلِفِيْنَ ۝ وَلَا تُصَلِّ
عَلٰٓي اَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّاتَ اَبَدًا وَّلَا تَقُمْ عَلٰي قَبْرِهٖ ۭ اِنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَمَاتُوْا وَهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝ وَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ
وَاَوْلَادُهُمْ ۭ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ۝

अनुवाद-

(75) और उनमें से कुछ लोग ऐसे भी हैं जिन्होंने अल्लाह को वचन दिया था कि ''अगर उसने हमें अपने फ़ज़्ल से दिया, तो हम ज़रूर दान करेंगे और नेक लोगों में हो कर रहेंगे;'' (76) फिर जब अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से (माल) दिया तो वे उसमें कंजूसी करने लगे और मुँह फेर गये; (77) फिर अंजाम यह हुआ कि 'उसने' उनके दिलों में उस दिन तक के लिए निफ़ाक़ (कप्टाचार) डाल दिया, जब वे उससे मिलेंगे; इसलिए कि उन्होंने अल्लाह से जो वादा किया था तोड़ दिया और इसलिए भी कि वे झूठ बोलते रहे। (78) क्या उन्हें ख़बर नहीं कि अल्लाह उनके भेदों और उनकी कानाफूसियों को अच्छी तरह जानता है और यह कि अल्लाह छिपी बातों को खूब जानता है? (79) जो (मुनाफ़िक़) खुशी-खुशी खर्च करने वाले मोमिनों पर सद्क़ात के बारे में एतिराज़ किया करते हैं और उन लोगों का मज़ाक़ उड़ाते हैं जो अपनी मेहनत मज़दूरी के सिवा ख़र्च के लिए कुछ नहीं पाते; अल्लाह उनका मज़ाक़ उन्हीं पर उलट रहा है और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है। (80) आप उनके लिए इस्तिग़फ़ार (क्षमा की प्रार्थना) करें, या उनके लिए इस्तिग़फ़ार न करें, अगर आप उनके लिए सत्तर बार इस्तिग़फ़ार करेंगे तो भी अल्लाह माफ़ नहीं करेगा, यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल के साथ कुफ्र किया, और अल्लाह फ़ासिक़ (अवज्ञाकारी) लोगों को सीधी राह नहीं दिखाता। (81) यह पीछे रह जाने वाले, अल्लाह के रसूल के पीछे, अपने बैठे रहने पर प्रसन्न हुए, उन्हें यह नापसंद हुआ कि अल्लाह की राह में अपने मालों और जानों के साथ (तबूक में) जिहाद करें और उन्होंने कहा,''इस गर्मी में न निकलो।'' कह दीजिए, ''जहन्नम की आग इससे कहीं ज़्यादा गर्म है'' अगर यह समझते होते; (82) तो हँस लें थोड़ा और फिर रोते रहें बहुत, उन कामों के बदले में जो कुछ वे करते रहे। (83) फिर अगर अल्लाह आप को वापस लाए उनके किसी गिरोह की ओर, और यह लोग आप के साथ चलने

की इजाज़त माँगें तो कह दीजिए, ''तुम कभी भी मेरे साथ न चल सकोगे, और न मेरे साथ होकर किसी दुश्मन से लड़ सकते हो, तुम पहली बार बैठे रहने पर राज़ी हुए, तो अब भी पीछे रहने वालों के साथ बैठे रहो;'' (84) और इनमें से जो कोई मर जाए उस पर कभी भी नमाज़ (जनाज़ा) न पढ़िए और न उसकी क़ब्र पर खड़े होइए, (क्योंकि) उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल के साथ कुफ़्र किया, और मरे भी तो फ़ासिक़ (नाफ़रमान)। (85) और उनके माल और उनकी औलाद आप को आश्चर्य में न डाले, अल्लाह तो बस यह चाहता है कि उन्हीं के ज़रिये से दुनिया में भी अ़ज़ाब देता रहे, और उनकी जान इस हाल में निकले कि वे काफ़िर हों।

आयत नं० 75 से 86 तक की व्याख्या

75-78 وَمِنْهُم مَّنْ عٰهَدَ اللّٰهَ لَئِنْ اٰتٰىنَا مِنْ فَضْلِهٖ لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُوْنَنَّ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٧٥﴾
فَلَمَّآ اٰتٰىهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ بَخِلُوْا بِهٖ وَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٧٦﴾ فَاَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِيْ قُلُوْبِهِمْ
اِلٰى يَوْمِ يَلْقَوْنَهٗ بِمَآ اَخْلَفُوا اللّٰهَ مَا وَعَدُوْهُ وَبِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ ﴿٧٧﴾ اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ
اللّٰهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوٰىهُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿٧٨﴾

एक आदमी ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से कहा, या रसूलल्लाह! आप मेरे लिए रोज़ी में बरकत की दुआ़ कर दीजिए, अगर अल्लाह मुझे रोज़ी देगा तो उस के हुक़ूक़ अदा करता रहूँगा, लेकिन जब अल्लाह ने उस की रोज़ी में ख़ूब बरकत दी तो उस की नियत बदल गई और सद्क़ः व ख़ैरात करने और ज़कात देने से इन्कार कर दिया।

'सअ़्लूबा' वाली रिवायत में आता है कि जब यह आयत नाज़िल हुई और उसे ख़बर हुई तो वह अपनी ज़कात लेकर रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास आया, लेकिन आप ने लेने से इन्कार कर दिया, आप के बाद 'ह़ज़रत अबू बक्र', 'ह़ज़रत उ़मर' और 'ह़ज़रत उ़स्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हुम' ने भी उस की ज़कात नहीं ली और उ़स्मान (रज़ि०) के दौर में वह मर गया।

'ह़ज़रत ज़ैद बिन अरक़म' (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि मैंने एक लड़ाई (ग़ज़्व-ए-तबूक) में 'अ़ब्दुल्लाह बिन उबई' को यह कहते सुना। ऐ अन्सार नबी के पास जो लोग (मुहाजिरीन) हैं, उन को ख़र्च के लिए कुछ न दो। वह खुद ही नबी को छोड़कर तितर-बितर हो जाएँगे और अगर हम इस लड़ाई से लौट कर मदीना पहुँचे तो इ़ज़्ज़त वाला (यानी ख़ुद) ज़िल्लत वाले को निकाल बाहर करेगा।

मैंने 'अ़ब्दुल्लाह बिन उबई' का यह कलाम अपने चचा (सअ़द बिन उ़बादा) या उ़मर (रज़ि०) से बयान किया और उन्होंने आप (सल्ल०) को यह बात बतला दी। आप (सल्ल०) ने 'अ़ब्दुल्लाह बिन उबई' मुनाफ़िक़ और उस के साथियों को बुलवाया तो वह क़समें खाने लगे कि हम ने ऐसा नहीं कहा, चुनाँचे रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने मुझे झूठा समझा और उसे सच्चा समझा। मुझे इस बात का इतना ग़म हुआ जितना किसी और बात का न हुआ था, मैं घर में बैठा रहा मुझे मेरे चचा ने कहा और तूने यह क्या कहा।

आख़िर रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने मुझे झूठा समझा और नाराज़ हुए। उस वक़्त अल्लाह ने यह आयत إِذَا جَآءَكَ الْمُنٰفِقُوْنَ नाज़िल फ़रमाई। चुनांचे आप (सल्ल०) ने मुझे बुला भेजा, सूरः मुनाफ़िक़ून पढ़ कर सुनाई और फ़रमाया 'ह़ज़रत ज़ैद' (रज़ि०) तुझे अल्लाह ने सच्चा किया। **(बुख़ारी)**

ज़िह़ाक़ का क़ौल है कि यह आयत एक नहीं कई मश्हूर मुनाफ़िक़ीन के बारे में नाज़िल हुई थी जिन का ह़ाल वही हुआ था जो आयत में बयान किया गया है। आयात नं० (76-77-78) में उन्हीं मुनाफ़िक़ों के ह़ालात बयान किये गये हैं कि जब उन्होंने अल्लाह की नेअ़मतों की नाशुक्री की तो अल्लाह ने उनके निफ़ाक़ को और बढ़ा दिया।

79 اَلَّذِيْنَ يَلْمِزُوْنَ الْمُطَّوِّعِيْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ فِى الصَّدَقٰتِ وَالَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ اِلَّا جُهْدَهُمْ فَيَسْخَرُوْنَ مِنْهُمْ ۭ سَخِرَ اللّٰهُ مِنْهُمْ ۡ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝

मुनाफ़िक़ीन हर ह़ाल में मुसलमानों में ऐ़ब लगाते थे, अगर कोई ज़्यादा माल अल्लाह की राह में देता तो कहते कि यह रियाकार है और अगर कोई मज़दूर अपनी मज़दूरी लाकर सद्क़ा के माल में जमा कर देता तो कहते कि अल्लाह को इतने थोड़े माल की क्या ज़रूरत थी।

'मुह़म्मद बिन इस्ह़ाक़' कहते हैं जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने सद्क़ः की तर्ग़ीब दिलाई तो 'अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़' ने चार हज़ार सद्क़ः किया और 'आ़सिम बिन अ़दी' ने एक सौ खजूर सद्क़ः किया, तो मुनाफ़िक़ीन ने तन्ज़ किया कि यह केवल रियाकारी है और 'अबू अ़क़ील' ने अपनी मज़दूरी एक साअ़ खजूर लाकर सद्क़ः के खजूरों में डाल दिया तो मुनाफ़िक़ीन ने उन की ख़ूब हंसी उड़ाई और कहा कि अल्लाह 'अबू अ़क़ील' के एक साअ़ खजूर का मोह़ताज नहीं है।

आप (सल्ल०) के मदीना आने से पहले मदीना की कोई अहमियत न थी। ज़रिये मआ़श (रोज़ी) का भी बुरा ह़ाल था जो कुछ था उस पर भी यहूद क़ब्ज़ा किये हुए थे। वह सूदख़ोर क़ौम भी शराब का कारोबार करते जंगी सामान बनाते और बेचते। आप (सल्ल०) के आने से मई़शत (Economy) मुसलमानों के कन्ट्रोल में आ गई, मदीना तिजारती एतिबार से तरक़्क़ी कर गया। ग़नीमत की कसरत से मज़ीद माली ख़ुशह़ाली उन्हें भी हुई।

ह़ज़रत अबू मसऊद अन्सारी (रज़ि०) कहते हैं कि "जब हमें सद्क़ः का हुक्म दिया गया तो हम उस वक़्त मज़दूरी पर बोझा उठाये थे। 'अबू अ़क़ील' (रज़ि०) (इसी मज़दूरी) से आधा साअ़ खजूर लेकर आये तो मुनाफ़िक़ कहने लगे, 'अबू अ़क़ील' (रज़ि०) की ख़ैरात की भला अल्लाह को क्या परवाह थी। एक और आदमी (अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ रज़ि०) बहुत सा माल लाए तो मुनाफ़िक़ कहने लगे कि उस ने रियाकारी के लिए इतना माल ख़ैरात किया है, उस वक़्त यह आयत नाज़िल हुई। **(बुख़ारी)**

अल्लाह तआ़ला ने ऐसे मुनाफ़िक़ीन का यह अन्जाम बताया है कि वह अपने मोमिन बन्दों के मज़ाक़ उड़ाने का इन्तिक़ाम ज़रूर लेगा, मुनाफ़िक़ीन को रुसवा करेगा और अपने मोमिन बन्दों को ऊँचा दिखाएगा और आख़िरत में उन मुनाफ़िक़ीन को दर्दनाक अ़ज़ाब मिलेगा।

80 اِسْتَغْفِرْ لَهُمْ اَوْلَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ۗ اِنْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِيْنَ مَرَّةً فَلَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ۗ ذٰلِكَ
بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۗ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝

मुनाफ़िक़ीन अल्लाह की रह़मत के ह़क़्दार नहीं–

'मुस्नद अह़मद' और 'सह़ीह़ैन' की रिवायत है, 'इब्ने अ़ब्बास' (रज़ि०) कहते हैं, मैंने 'उ़मर बिन ख़त्ताब' (रज़ि०) से सुना है कि 'अ़ब्दुल्लाह बिन उबई' मर गया तो उस के जनाज़े की नमाज़ पढ़ने के लिए आप (सल्ल०) से कहा गया, आप जब नमाज़ के लिए खड़े हुए तो मैंने कहा कि क्या आप अल्लाह के दुश्मन 'अ़ब्दुल्लाह बिन उबई' पर नमाज़ पढ़ेंगे, जिस ने ऐसा और ऐसा कहा था और मैं वाक़िआ़त गिनाता रहा और रसूलुल्लाह (सल्ल०) मुस्कुराते रहे। जब मैंने ज़्यादा इस्रार किया तो आप ने फ़रमाया ऐ उ़मर! अलग हट जाओ, मुझे अख़्तियार दिया गया है اِسْتَغْفِرْ لَهُمْ اَوْلَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ अगर मुझे मालूम हो जाए कि सत्तर बार से ज़्यादा दुआ़ करने से उसे माफ़ कर दिया जाएगा तो मैं ऐसा करूँगा फिर आप ने उस के जनाज़े की नमाज़ पढ़ी और उस की क़ब्र के पास गये, थोड़ी ही देर के बाद यह दो आयतें नाज़िल हुईं।

وَلَا تُصَلِّ عَلٰۤى اَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّاتَ اَبَدًا وَّلَا تَقُمْ عَلٰى قَبْرِهٖ कि "आप मुनाफ़िक़ीन में से किसी की नमाज़ जनाज़ा कभी न पढ़िए और उस की क़ब्र के पास न जाइए" फिर इस के बाद रसूलुल्लाह (सल्ल०) जब तक ज़िन्दा रहे किसी मुनाफ़िक़ के जनाज़े की नमाज़ नहीं पढ़ी।

'अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़' ने 'क़तादा' से रिवायत की है कि जब यह आयत नाज़िल हुई तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि मैं सत्तर से ज़्यादा बार मग़्फ़िरत करूँगा तो अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः–
سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ اَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ اَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ لَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ *(सूरः मुनाफ़िक़ून-6)* कि "आप चाहे उन के लिए मग़्फ़िरत की दुआ़ करें या न करें, अल्लाह उन्हें हरगिज़ माफ़ नहीं करेगा"।

'ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर' ने "फ़त्ह़ुल् बारी" में कहा है कि मुम्किन है दोनों आयतें एक साथ नाज़िल हुई हों और आप (सल्ल०) को मुनाफ़िक़ीन की नमाज़े जनाज़ा से रोक दिया गया हो और यह ख़बर भी दे दी गई हो कि मुनाफ़िक़ीन के लिए आप (सल्ल०) की दुआ़-ए-मग़्फ़िरत हरगिज़ काम न आएगी।

81 فَرِحَ الْمُخَلَّفُوْنَ بِمَقْعَدِهِمْ خِلٰفَ رَسُوْلِ اللّٰهِ وَكَرِهُوْۤا اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
وَقَالُوْا لَا تَنْفِرُوْا فِى الْحَرِّ ۗ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ اَشَدُّ حَرًّا ۗ لَوْ كَانُوْا يَفْقَهُوْنَ ۝

जो मुनाफ़िक़ीन ग़ज़्व-ए-तबूक में शरीक नहीं हुए और रसूलुल्लाह (सल्ल०) की 'ग़ज़्वा' के लिए रवानगी के बाद ख़ुश हुए कि उन्हें जाना न पड़ा और दूसरों को भी रोका कि गर्मी में कहाँ जाओगे, उन्हीं का ह़ाल और आख़िरत में उन का बुरा अन्जाम बयान किया जा रहा है।

82 فَلْيَضْحَكُوْا قَلِيْلًا وَّلْيَبْكُوْا كَثِيْرًا ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝

इस आयत में उन्हें धमकी दी जा रही है कि आज वह थोड़ा सा हँस लें, आख़िरत में अपने इस

बुरे काम की वजह से उन्हें बहुत रोना पड़ेगा।

83 فَاِنْ رَّجَعَكَ اللّٰهُ اِلٰى طَآىِٕفَةٍ مِّنْهُمْ فَاسْتَاْذَنُوْكَ لِلْخُرُوْجِ فَقُلْ لَّنْ تَخْرُجُوْا مَعِیَ اَبَدًا وَّ لَنْ تُقَاتِلُوْا مَعِیَ عَدُوًّا ؕ اِنَّكُمْ رَضِیْتُمْ بِالْقُعُوْدِ اَوَّلَ مَرَّةٍ فَاقْعُدُوْا مَعَ الْخٰلِفِیْنَ۝

अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) को हुक्म दिया कि जब आप को अल्लाह तआ़ला मदीना वापस पहुँचा दे और ग़ज़्व-ए-तबूक में शरीक न होने वाले मुनाफ़िक़ीन में से एक जमाअ़त आप के पास आये और कहे कि हमें आइन्दा ग़ज़्वात में शरीक होने की इजाज़त दे दीजिए, ताकि हमारी जो रुसूवाई हुई है उसे दूर कर सकें तो आप उन्हें इजाज़त न दीजिए और कहिए कि तुम्हें आइन्दा हमारे साथ निकलने और दुश्मन से जंग करने की हरगिज़ इजाज़त नहीं है। जब तुम ग़ज़्व-ए-तबूक के मौक़े से बैठे रह गये तो अल्लाह तआ़ला की नज़र से गिर गये, इसलिए अब तुम हमेशा के लिए औ़रतों और बच्चों के साथ बैठे रहो।

'क़तादा' कहते हैं कि उन की तअ़दाद बारह थी। आयत में طَآىِٕفَةٍ का लफ़्ज़ दलील है कि जो लोग जंग में शरीक नहीं हुए थे वह सभी मुनाफ़िक़ नहीं थे, मिसाल के तौर पर 'कअ़ब बिन मालिक' 'हिलाल बिन उमय्या' और 'मुरारा बिन अल् रबीअ़ अल् आ़मरी' मुख़्लिस सच्चे मुसलमान थे।

84 وَلَا تُصَلِّ عَلٰۤى اَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّاتَ اَبَدًا وَّلَا تَقُمْ عَلٰى قَبْرِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ وَ مَاتُوْا وَهُمْ فٰسِقُوْنَ۝

आयत नं० (80) की तफ़्सीर में गुज़र चुका है कि यह आयत उस वक़्त नाज़िल हुई थी जब नबी करीम (सल्ल०) ने अ़ब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलोल की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी थी और उस की क़ब्र के पास गये थे। इस का हुक्म हर उस शख़्स के बारे में आ़म है जिस का निफ़ाक़ ज़ाहिर हो चुका हो।

'मुस्नद अह़मद' में अबू क़तादा (रज़ि०) से मरवी है कि जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) किसी की नमाज़ जनाज़ा पढ़ने के लिए बुलाये जाते तो मरने वाले के बारे में पूछते थे। अगर ख़ैर के साथ उस का ज़िक्र किया जाता तो उस की नमाज़ पढ़ते वरना उस के रिश्तेदारों से कह देते कि तुम लोग जैसा चाहो कर लो और उस की नमाज़े जनाज़ा नहीं पढ़ते थे।

इसी आयत से इस्तिद्लाल करते हुए 'ह़ाफ़िज़ सियोती' ने लिखा है कि काफ़िर की नमाज़े जनाज़ा पढ़ना और उस की क़ब्र के पास खड़ा होना ह़राम है।

85 وَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَاَوْلَادُهُمْ ؕ اِنَّمَا یُرِیْدُ اللّٰهُ اَنْ یُّعَذِّبَهُمْ بِهَا فِی الدُّنْیَا وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ۝

यह आयत अल्फ़ाज़ में थोड़े से इख़्तिलाफ़ के साथ ऊपर गुज़र चुकी है। तफ़्सील के लिए देखिए इसी सूरत की आयत नं० (55) में।

आयत नं० 86 से 93 तक

وَاِذَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ اَنْ اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَجَاهِدُوْا مَعَ رَسُوْلِهِ اسْتَاْذَنَكَ اُولُوا الطَّوْلِ مِنْهُمْ وَقَالُوْا ذَرْنَا نَكُنْ مَّعَ الْقٰعِدِيْنَ ۝ رَضُوْا
بِاَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ۝ لٰكِنِ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ جٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ؕ
وَاُولٰٓئِكَ لَهُمُ الْخَيْرٰتُ ؗ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ ذٰلِكَ
الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝ وَجَآءَ الْمُعَذِّرُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِيْنَ كَذَبُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَآءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضٰى وَلَا عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ مَا يُنْفِقُوْنَ حَرَجٌ اِذَا نَصَحُوْا لِلّٰهِ وَ
رَسُوْلِهٖ ؕ مَا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ مِنْ سَبِيْلٍ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَّلَا عَلَى الَّذِيْنَ اِذَا مَآ اَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَآ اَجِدُ
مَآ اَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ ۪ تَوَلَّوْا وَّاَعْيُنُهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا اَلَّا يَجِدُوْا مَا يُنْفِقُوْنَ ۝ اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ
يَسْتَاْذِنُوْنَكَ وَهُمْ اَغْنِيَآءُ ۚ رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ ۙ وَطَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

अनुवाद-

(86) और जब कोई सूरः उतरती है कि ''अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके रसूल के साथ मिल कर जिहाद करो,'' तो जो लोग इनमें कुदरत (सामर्थ्य) वाले हैं वही आप से इजाज़त माँगने लगते हैं, और कहते हैं "हमें छोड़ दीजिए कि हम लोग बैठने वालों के साथ रहें;'' (87) ये इस पर राज़ी हो गये कि पीछे रह जाने वालों के साथ रह जाएँ और उनके दिलों पर मुहर लगा दी गयी, इसलिए ये कुछ नहीं समझते। (88) लेकिन रसूल, और जो लोग उनके साथ ईमान ला चुके हैं, उन्होंने अपने माल और जान से जिहाद किया, यही लोग हैं जिनके लिए भलाइयाँ हैं, और यही लोग कामियाब होने वाले हैं; (89) अल्लाह ने उनके लिए ऐसे बाग़ तैयार कर रखे हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, वे उनमें हमेशा रहेंगे, यही बड़ी कामियाबी है। (90) और बहाना करने वाले बद्दू भी आए कि उन्हें (बैठने रहने की) इजाज़त मिल जाए, और जो अल्लाह और उसके रसूल से झूठ बोले वे भी बैठे रहे, उनमें से जिन्होंने इन्कार किया उन्हें जल्द ही अ़ज़ाब पहुँच कर रहेगा, (91) न तो कमज़ोरों के लिए कोई गुनाह की बात है, और न बीमारों के लिए और न उन लोगों के लिए जिन्हें खर्च करने के लिए (माल) प्राप्त नहीं, जबकि वे अल्लाह और उसके रसूल के प्रति वफ़ादार हों, नेक लोगों पर कोई इल्ज़ाम नहीं, और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रह़म वाला है; (92) और न उन लोगों पर कोई आरोप है जो आप के पास आए, कि आप उनके लिए सवारी का इन्तिज़ाम कर दें और जब आप ने कहा, "मैं तुम्हारे लिए सवारी का इन्तिज़ाम नहीं कर सकता" तो वह इस ह़ाल में वापस होते हैं, कि उनकी आँखों से आँसू जारी होता है इस ग़म से कि वे अपने पास खर्च करने को कुछ नहीं पाते। (93) आरोप तो बस उन लोगों पर है जो दौलतमंद होते हुए भी आप से इजाज़त माँगते हैं, वे इस पर राज़ी हुए कि पीछे लोगों के साथ रह जाएँ और अल्लाह ने उनके दिलों पर मुहर लगा दी है तो वे कुछ नहीं जानते।

आयत नं० 86 से 93 तक की व्याख्या

86-87 وَاِذَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ اَنْ اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَجَاهِدُوْا مَعَ رَسُوْلِهِ اسْتَاْذَنَكَ اُولُوا الطَّوْلِ مِنْهُمْ وَقَالُوْا

ذَرْنَا نَكُنْ مَّعَ الْقٰعِدِيْنَ ۝ رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ۝

जिहाद से पीछे रह जाने वाले मुनाफ़िक़ीन के हालात पर रौशनी डाली जा रही है कि जब भी क़ुर्आन करीम में कोई सूरत नाज़िल की जाती है जिस में यह हुक्म दिया जाता है कि अल्लाह पर ईमान लाओ और रसूल के साथ जिहाद करो, तो मालदार मुनाफ़िक़ीन रसूलुल्लाह (सल्ल०) से इजाज़त माँगने लगते हैं और झूठे उ़ज़्र पेश करके औ़रतों के साथ बैठे रहना पसन्द करते हैं। उन के इस निफ़ाक़ की वजह से उन के दिलों पर मुहर लगा दी गई है और उन की अ़क़्ल पर पर्दे पड़ गये हैं।

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमायाः-

“बन्दा जब कोई गुनाह करता है तो उसके दिल पर एक काला नुक़्ता पड़ जाता है, फिर अगर वह गुनाह छोड़ दे और इस्तिग़फ़ार करे और तौबः करे तो उस का दिल साफ़ कर दिया जाता है और दोबारा गुनाह करे तो नुक़्ता बढ़ जाता है यहाँ तक कि दिल पर छा जाता है। **(तिर्मिज़ी)**

88-89 لٰكِنِ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ جٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ؕ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمُ الْخَيْرٰتُ ؗ
وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ
ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝

इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने यह बताया है कि अगर मुनाफ़िक़ीन जिहाद में शरीक नहीं हुए तो क्या हुआ, इस ज़िम्मेदारी को तो मुसलमानों ने ख़ूब अच्छी तरह किया है जो उन से हर एतिबार से बेहतर हैं और जिन की नियतें ख़ालिस हैं।

जान व माल के ज़रिये जिहाद का ज़िक्र ऊपर गुज़र चुका है और जिहाद के ज़रिये दुनिया व आख़िरत के बहुत से फ़ायदे हासिल होते हैं और आख़िरत में अल्लाह तआ़ला मुजाहिद को जन्नत देगा जो उस की सब से बड़ी कामियाबी होगी।

90 وَجَآءَ الْمُعَذِّرُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِيْنَ كَذَبُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ سَيُصِيْبُ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝

मुनाफ़िक़ीने मदीना में से कुछ लोगों ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास आकर ग़ज़्व-ए-तबूक के लिए जाने से उ़ज़्र पेश किया था जिस में कुछ तो झूठे थे और उन का उ़ज़्र ग़लत था और कुछ ने ऐसा उ़ज़्र पेश किया था कि मुम्किन है वह सच्चे रहे हों और उन में कुछ खुले मुनाफ़िक़ थे वह अपने ख़ेमों में बैठे रह गये और सच या झूठ कोई उ़ज़्र पेश नहीं किया। इन तमाम लोगों में जो मुनाफ़िक़ थे उन पर अल्लाह ने कुफ़्र का हुक्म लगाया और उन्हें दर्दनाक अ़ज़ाब की धमकी दी।

91 لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَآءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضٰى وَلَا عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ مَا يُنْفِقُوْنَ حَرَجٌ اِذَا نَصَحُوْا لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ؕ
مَا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ مِنْ سَبِيْلٍ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

इस आयत में वह बातें बयान की गई हैं जिन की मौजूदगी में मुसलमान जिहाद में शिरकत न करने की वजह से अल्लाह के नज़्दीक मअ़ज़ूर समझा जाएगा। जैसे-

1- वह कमज़ोर लोग जो दौड़ने और मशक़्क़त बर्दाश्त करने की ताक़त न रखते हों। जैसे- बूढ़ा, बच्चा, औऱत और कमज़ोर।
2- वह मअ़ज़ूर (शरअ़ी कारणवश) जो किसी बीमारी की वजह से जिहाद न कर सकता हो। जैसे- अंधा, लंगड़ा और अपाहिज।
3- वह सेहतमन्द मुसलमान जिस के पास न सफ़र का सामान हो और न हथियार ख़रीदने के लिए पैसे हों, लेकिन अल्लाह तआ़ला ने इन सब के लिए यह शर्त लगाई है कि वह अल्लाह और रसूल के लिए मुख़्लिस हों, मुसलमानों में ख़ौफ़ और दहशत न फैलाएँ, मुजाहिदीन को ग़िज़ाई (खाने की) चीज़ें पहुँचाए, उन की ग़ैर मौजूदगी में उन के घर वालों की देखभाल करें और उन की ज़रुरतें पूरी करें।

मज़ीद ताकीद के तौर पर अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि ऐसे मुख़्लिस व मअ़ज़ूर मुसलमानों के लिए कोई ह़र्ज की बात नहीं।

ह़ज़रत 'जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह' (रज़ि०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से नमाज़ अदा करने, ज़कात देने और हर मुसलमान की ख़ैर ख़्वाही करने पर बैअ़त की। **(बुख़ारी)**

नबी करीम (सल्ल०) ने फ़रमाया, "दीन ख़ैर ख़्वाही (इख़्लास और सदाक़त) का नाम है, अल्लाह के लिए उस के रसूल के लिए, ऊलुल् अम्र (अमीर या अगुवा) के लिए और आ़म मुसलमानों के लिए"। **(सह़ीह़ मुस्लिम, अल् ईमान, ह़दीस 55)**

अल्लाह के लिए ख़ैर ख़्वाही (भलाई) यह है कि उस के आगे झुका जाए, उस के हुक्मों की पैरवी की जाए, उस के कलिमे की बुलन्दी के लिए जिहाद किया जाए, उस से मुह़ब्बत की जाए और उस से डरा जाए। अल्लाह के रसूल के साथ ख़ैर ख़्वाही (भलाई) यह है कि उन की मदद की जाए और उन के सुन्नत की पैरवी की जाए, मुसलमान हुक्मरानों की पैरवी की जाए।

मुसलमान हुक्मरानों की ख़ैर ख़्वाही (भलाई) यह है कि उन के साथ सहयोग किया जाए इस बात में कि वह मुसलमानों की सही़ रहनुमाई करें।

आ़म मुसलमानों के साथ ख़ैर ख़्वाही (भलाई) का मतलब यह है कि उन्हें मअ़रूफ़ (अच्छाई) का हुक्म दिया जाए और मुन्कर (बुराई) से रोका जाए, उन के साथ नर्मी और मुह़ब्बत का बर्ताव किया जाए।

ह़ज़रत 'जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह' (रज़ि०) रिवायत करते हैं "मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से इन बातों पर बैअ़त की-

(1) नमाज़ क़ायम करना (2) ज़कात देना। (3) मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही करना {उन्हें मअ़रूफ़ (अच्छाई) का हुक्म देना, मुन्कर (बुराई) से रोकना, उन की मदद करना और उन के साथ नर्मी और मुह़ब्बत का बर्ताव करना।} **(सह़ीह़ बुख़ारी, अल् ईमान, बाब 42, ह़दीस 57)**

92 وَّلَا عَلَى الَّذِيْنَ اِذَا مَآ اَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَآ اَجِدُ مَآ اَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ تَوَلَّوْا وَّ اَعْيُنُهُمْ
تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا اَلَّا يَجِدُوْا مَا يُنْفِقُوْنَ ۝

'हाफ़िज़ इब्ने मरदूविया' और 'औफ़ी' (रज़ि०) ने इब्ने अ़ब्बास (रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा) से रिवायत की है कि जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने सहाबा-ए-किराम को ग़ज़्व-ए-तबूक के लिए रवानगी का हुक्म दिया तो कुछ सहाबा आये जिन में ख़ासतौर से 'अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल' मुज़्नी थे, उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! हमें सवारी दीजिए, आप ने कहा कि अल्लाह की क़सम मेरे पास तुम लोगों के लिए सवारियाँ नहीं हैं, तो वह लोग रोते हुए वापस चले गये। जब अल्लाह ने उन का यह इख़्लास देखा तो उन का उ़ज़्र क़ुर्आन में बयान कर दिया।

इसी लिए 'सह़ीहैन' में 'ह़ज़रत अनस बिन मालिक' (रज़ि०) से मरवी है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "मदीना में ऐसे लोग रह गये हैं जो हर जगह तुम्हारे साथ रहेंगे"। उन्होंने कहा, ह़ालाँकि वह मदीना में हैं? तो आप ने फ़रमाया, "हाँ, किसी मजबूरी ने उन्हें आने से रोक दिया है"।

जिन के पास सवारी वग़ैरह न हो क्योंकि मुजाहिद को अपनी सवारी वग़ैरह का ख़ुद इन्तिज़ाम करना होता था। इस रुख़्सत के साथ शर्त यह है कि अल्लाह और रसूल (सल्ल०) के साथ इख़्लास हो वरना बीमारी वग़ैरह के बावजूद यह रुख़्सत लागू न होगी।

ह़ज़रत जाबिर (रज़ि०) कहते हैं कि, आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "मदीना में कुछ लोग ऐसे हैं, जब तुम कोई सफ़र करते हो या कोई वादी पार करते हो तो वह तुम्हारे साथ होते हैं। सह़ाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने पूछा, इस के बावजूद कि वह मदीना में हैं? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया इस के बावजूद कि वह मदीना में हैं, उन्हें उ़ज़्र ने रोका है"। **(बुख़ारी)**

93 إِنَّمَا السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ وَهُمْ أَغْنِيَاءُ ۚ رَضُوا بِأَن يَكُونُوا مَعَ الْخَوَالِفِ
وَطَبَعَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٩٣﴾

पकड़ उन के लिए है जिन्होंने मालदार होते हुए झूठा उ़ज़्र पेश करके रसूलुल्लाह (सल्ल०) से इजाज़त ले ली और औरतों और बच्चों के साथ रहना बेहतर समझा, जिस का नतीजा यह हुआ कि अल्लाह ने उन के दिलों पर मुहर लगा दी और नफ़ा व नुक़्सान में तमीज़ करने की सलाहि़यत उन से छीन ली।

खण्ड-11
आयत नं० 94 से 106 तक

*

يَعْتَذِرُونَ إِلَيْكُمْ إِذَا رَجَعْتُمْ إِلَيْهِمْ ۚ قُل لَّا تَعْتَذِرُوا لَن نُّؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ نَبَّأَنَا اللَّهُ مِنْ أَخْبَارِكُمْ ۚ وَسَيَرَى اللَّهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ
ثُمَّ تُرَدُّونَ إِلَىٰ عَالِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ سَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ لَكُمْ إِذَا انقَلَبْتُمْ إِلَيْهِمْ لِتُعْرِضُوا
عَنْهُمْ ۖ فَأَعْرِضُوا عَنْهُمْ ۖ إِنَّهُمْ رِجْسٌ ۖ وَمَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝ يَحْلِفُونَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ ۖ فَإِن تَرْضَوْا عَنْهُمْ
فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَرْضَىٰ عَنِ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ۝ الْأَعْرَابُ أَشَدُّ كُفْرًا وَنِفَاقًا وَأَجْدَرُ أَلَّا يَعْلَمُوا حُدُودَ مَا أَنزَلَ اللَّهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ ۗ وَاللَّهُ
عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَن يَتَّخِذُ مَا يُنفِقُ مَغْرَمًا وَيَتَرَبَّصُ بِكُمُ الدَّوَائِرَ ۚ عَلَيْهِمْ دَائِرَةُ السَّوْءِ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝
وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَن يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا يُنفِقُ قُرُبَاتٍ عِندَ اللَّهِ وَصَلَوَاتِ الرَّسُولِ ۚ أَلَا إِنَّهَا قُرْبَةٌ لَّهُمْ ۚ
سَيُدْخِلُهُمُ اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ وَالسَّابِقُونَ الْأَوَّلُونَ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنصَارِ وَالَّذِينَ اتَّبَعُوهُم
بِإِحْسَانٍ رَّضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي تَحْتَهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝
وَمِمَّنْ حَوْلَكُم مِّنَ الْأَعْرَابِ مُنَافِقُونَ ۖ وَمِنْ أَهْلِ الْمَدِينَةِ ۖ مَرَدُوا عَلَى النِّفَاقِ لَا تَعْلَمُهُمْ ۖ نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ ۚ سَنُعَذِّبُهُم مَّرَّتَيْنِ ثُمَّ
يُرَدُّونَ إِلَىٰ عَذَابٍ عَظِيمٍ ۝ وَآخَرُونَ اعْتَرَفُوا بِذُنُوبِهِمْ خَلَطُوا عَمَلًا صَالِحًا وَآخَرَ سَيِّئًا عَسَى اللَّهُ أَن يَتُوبَ عَلَيْهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ
غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ خُذْ مِنْ أَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيهِم بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ ۖ إِنَّ صَلَاتَكَ سَكَنٌ لَّهُمْ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ أَلَمْ
يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ وَيَأْخُذُ الصَّدَقَاتِ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ۝ وَقُلِ اعْمَلُوا فَسَيَرَى اللَّهُ عَمَلَكُمْ
وَرَسُولُهُ وَالْمُؤْمِنُونَ ۖ وَسَتُرَدُّونَ إِلَىٰ عَالِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ وَآخَرُونَ مُرْجَوْنَ لِأَمْرِ اللَّهِ
إِمَّا يُعَذِّبُهُمْ وَإِمَّا يَتُوبُ عَلَيْهِمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝

अनुवाद-

(94) यह लोग तुम्हारे सामने बहाने करेंगे जब तुम उनके पास वापस जाओगे, कह दीजिए, ''बहाने न बनाओ, हम हरगिज़ तुम्हरी बात न मानेंगे, अल्लाह ने हमको तुम्हारी बातों की ख़बर दे दी है; अभी अल्लाह और उसका रसूल तुम्हारे काम को देखेगा, फिर तुम उसकी ओर लौटोगे, जो छिपे और खुले का इल्म रखता है; तो जो कुछ तुम करते रहे हो 'वह' सब तुम्हें बता देगा।'' (95) जब तुम पलटकर उनके पास जाओगे तो वे तुम्हारे सामने अल्लाह की क़समें खाएँगे, ताकि तुम उन्हें उनकी हालत पर छोड़ दो, तो तुम उन्हें छोड़ ही दो, यह गन्दे हैं और इनका ठिकाना जहन्नम है, जो कुछ ये करते रहे हैं यह तो उसी का बदला है; (96) यह तुम्हारे सामने क़समें खाएँगे ताकि तुम उनसे राज़ी हो जाओ, अगर तुम उनसे राज़ी भी हो जाओगे तो (भी) अल्लाह हरगिज़ राज़ी न होगा, फ़ासिक़ो (अवज्ञाकारी) से। (97) यह बद्दू लोग इन्कार और निफ़ाक़ (कप्टाचार) में बहुत बढ़े हुए हैं; और यह इसी लायक़ हैं कि उसकी सीमाओं से नावाक़िफ़ (अनभिज्ञ) रहें, जिसे अल्लाह ने अपने रसूल पर नाज़िल किया है, और अल्लाह बड़ा इल्म वाला, हिक्मत वाला है; (98) और कुछ बद्दू ऐसे हैं कि जो कुछ खर्च करते हैं, उसे तावान (जुर्माना) समझते हैं और तुम्हारे हक़ में मुसीबतों

(बुरे दिन) का इन्तिज़ार करते रहते हैं; बुरी मुसीबतों में तो वही हैं, अल्लाह सब कुछ सुनता, जानता है।
(99) और बद्दुओं में कुछ ऐसे भी हैं जो अल्लाह और आख़िरत (परलोक) को मानते हैं और जो कुछ खर्च
करते हैं उसे अल्लाह की क़ुर्बत (निकटता) और रसूल की दुआओं का ज़रिया समझते है। हाँ! बेशक वह
उनके हक़ में निकटता है, अल्लाह उन्हें जल्द ही अपनी रहमत में दाख़िल करेगा, बेशक अल्लाह बड़ा माफ़
(क्षमाशील) करने वाला, रहम वाला है। (100) सबसे पहले आगे बढ़ने वाले मुहाजिर और अन्सार, और
जिन्होंने भली प्रकार उनकी पैरवी की, अल्लाह उनसे राज़ी हुआ, और वे उससे राज़ी हुए और 'उसने' उनके
लिए ऐसे बाग़ तैयार कर रखे हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, उनमें हमेशा-हमेश रहेंगे, यही बड़ी कामियाबी
है। (101) और तुम्हारे आस-पास के बद्दुओं में और मदीना वालों में कुछ ऐसे मुनाफ़िक़ (कप्टाचारी) हैं
जो निफ़ाक़ (कपटा नीती) पर जमे हुए हैं, उनको तुम नहीं जानते, 'हम' उन्हें भली-भाँति जानते हैं जल्द ही
'हम' उन्हें दोहरी सज़ा देंगे, फिर वे एक बड़े अ़ज़ाब की ओर लौटाए जाएँगे। (102) और दूसरे कुछ ऐसे
लोग हैं जिन्होंने अपने गुनाहों का इक़रार किया, उन्होंने मिले-जुले काम किये- कुछ अच्छे और कुछ बुरे-
उम्मीद है कि अल्लाह की मेहरबानी (कृपा दृष्टि) उन पर हो, बेशक अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, रहम
वाला है। (103) आप उनके मालों में से सदकः (दान) लेकर उन्हें पाक-साफ़ (शुद्ध) करें, और उसके ज़रिये
उन (की आत्मा) को विकसित करें, और उनके लिए दुआ करें। कि आपकी दुआ उनके लिए तस्कीन (परितोष)
है, और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (104) क्या यह लोग नहीं जानते कि अल्लाह ही अपने बन्दों
की तौबः कुबूल करता, और सद्क़ात लेता है? और बेशक अल्लाह ही तौबः कुबूल करने वाला बड़ा रहम
वाला है। (105) और उनसे कह दीजिए, "अ़मल (कर्म) किये जाओ, अल्लाह और उसका रसूल और ईमान
वाले तुम्हारे अ़मल को देखेंगे, और तुम उसकी ओर पलटोगे, जो छिपे और खुले को जानता है, और जो
कुछ तुम करते रहे हो 'वह' सब तुम्हें बता देगा"। (106) और कुछ दूसरे लोग भी हैं, जिनका मामला अल्लाह
के हुक्म आने तक रूका हुआ है चाहे वह उन्हें सज़ा दे या उनकी तौबः कुबूल करे, और अल्लाह बड़ा इल्म
वाला, हिक्मत वाला है।

आयत नं० 94 से 106 तक की व्याख्या

पारा नं० 11

94 *يَعْتَذِرُونَ إِلَيْكُمْ إِذَا رَجَعْتُمْ إِلَيْهِمْ ۚ قُل لَّا تَعْتَذِرُوا لَن نُّؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ نَبَّأَنَا اللَّهُ مِنْ أَخْبَارِكُمْ ۚ وَسَيَرَى اللَّهُ
عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ ثُمَّ تُرَدُّونَ إِلَىٰ عَالِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٩٤﴾

जो मालदार मुनाफ़िक़ीन बिना किसी सही उ़ज़्र के तबूक में शरीक नहीं हुए, उन्हीं के बारे में ख़बर दी जा रही है कि जब आप जंग से वापस होंगे तो आप के पास आकर झूठे उ़ज़्र पेश करेंगे। आप कह दीजिए कि तुम लोग बहाने न करो, हम तुम्हारी कोई बात नहीं मानेंगे, इसलिए कि अल्लाह ने हमें तुम्हारे बारे में सब कुछ बता दिया है और आइन्दा अल्लाह और उस का रसूल तुम्हारा अ़मल देखेंगे, इसलिए कि अ़मल ही इन्सान की कसौटी है, सिर्फ़ बातों से काम नहीं चलता है। फिर मरने के बाद तुम अल्लाह के सामने हाज़िर होगे जो ग़ायब व हाज़िर का जानने वाला है, वह तुम्हारे आ़माल की तुम्हें ख़बर देगा, यानी बदला देगा।

95 سَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ اِذَا انْقَلَبْتُمْ اِلَيْهِمْ لِتُعْرِضُوْا عَنْهُمْ ۭ فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمْ ۭ اِنَّهُمْ رِجْسٌ ۡ
وَّمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۚ جَزَاۗءًۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ

अल्लाह ने ख़बर दी है कि यह मुनाफ़िक़ीन आप के पास आकर क़समें खाएँगे ताकि आप उन्हें कुछ न कहें, तो आप उन पर नाराज़ न हों और न उन्हें कोई सज़ा दें, यह तो नापाक और ख़बीस लोग हैं, यह इस क़ाबिल भी नहीं हैं कि इन की परवाह की जाए, इन के लिए जहन्नम का ठिकाना काफ़ी है।

96 يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ ۚ فَاِنْ تَرْضَوْا عَنْهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَرْضٰى عَنِ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ

इस आयत में बताया गया है कि इन के क़समें खाने का सिर्फ़ यही मक़्सद नहीं है कि आप इन्हें कुछ न कहें, बल्कि यह चाहते हैं कि आप इन से ख़ुश रहें जैसा कि इन्होंने कुछ किया ही नहीं है। लेकिन मुसलमानो! यह मुनासिब नहीं है कि जिन से अल्लाह राज़ी नहीं, उन से तुम राज़ी न हो जाओ, बल्कि किसी से तुम्हारी ख़ुशी और नाराज़गी, अल्लाह की ख़ुशी और नाराज़गी पर होनी चाहिए।

97 اَلْاَعْرَابُ اَشَدُّ كُفْرًا وَّنِفَاقًا وَّاَجْدَرُ اَلَّا يَعْلَمُوْا حُدُوْدَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰي رَسُوْلِهٖ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ

यहाँ देहात के मुनाफ़िक़ीन के बारे में बताया जा रहा है कि उन का कुफ़्र व निफ़ाक़ दूसरों से ज़्यादा सख़्त होता है, इसलिए कि उन के मिज़ाज में सख़्ती होती है और उ़लमा की मजालिस से दूर होने की वजह से क़ुर्आन व सुन्नत की तअ़लीमात से दूर होते हैं। 'इमाम अह़मद', 'अबूदाऊद' और 'तिर्मिज़ी' वग़ैरहुम ने 'इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा' से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जो समाज से कट कर रहने वाला हो जाता है उस में सख़्ती आ जाती है।

98 وَمِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ يَّتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ مَغْرَمًا وَّيَتَرَبَّصُ بِكُمُ الدَّوَاۗىِٕرَ ۭ عَلَيْهِمْ دَاۗىِٕرَةُ السَّوْءِ ۭ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ

इन मुनाफ़िक़ीन का हाल यह है कि अल्लाह की राह में जो कुछ ख़र्च करते हैं सिर्फ़ रियाकारी के लिए करते हैं, इसलिए उसे जुर्माना ही समझते हैं और इस इन्तिज़ार में रहते हैं कि कब ह़ालात बदलें और मुसलमानों पर कोई मुसीबत आये ताकि उन से निजात मिले और अपना माल उन्हें न देना पड़े। अल्लाह तआ़ला ने ख़बर दी है कि मुसीबत उन्हीं पर आएगी और ह़ालात उन्हीं के ह़क़ में बद् से बद्तर होते जाएँगे।

99 وَمِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ قُرُبٰتٍ عِنْدَ اللّٰهِ وَصَلَوٰتِ الرَّسُوْلِ ۭ اَلَآ اِنَّهَا
قُرْبَةٌ لَّهُمْ ۭ سَيُدْخِلُهُمُ اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ

सभी देहाती एक जैसे नहीं होते, उन में कुछ मुख़्लिस भी होते हैं जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं और अल्लाह की रज़ा के लिए ख़र्च करते हैं और इस उम्मीद में ख़र्च करते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) उन के लिए दुआ़-ए-ख़ैर करेंगे। अल्लाह तआ़ला ने इसी सूरत की आयत नं० (103) में फ़रमाया है وَصَلِّ عَلَيْهِمْ ۭ اِنَّ صَلٰوتَكَ سَكَنٌ لَّهُمْ कि "आप मोमिनों के लिए दुआ़ कीजिए, आप की दुआ़ उन के लिए बाइसे सुकून व इत्मिनान है"। चुनाँचे जब कोई सह़ाबी सद्क़ः करते तो नबी करीम

(सल्ल०) उन के लिए दुआ़ करते थे।

'सही़हैन' की रिवायत में है कि जब 'अबू औफ़ा' (रज़ि०) ने सद्क़ः किया तो आप (सल्ल०) ने उन के अहल व अ़याल के लिए ख़ैर व बरकत की दुआ़ की और उन के लिए अल्लाह से मग़्फ़िरत तलब की।

अल्लाह तआ़ला ने बतौर ताकीद ख़बर दी है कि मुख़्लिस देहाती मुसलमानों का सद्क़ः अल्लाह के नज़्दीक मक़्बूल है और वह कुर्बत का ज़रिया है, मगर उन मुनाफ़िक़ीन जैसा नहीं जिन्होंने सद्क़ः व ज़कात को जुर्माना समझा। इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने "कुर्बत" को बताते हुए फ़रमाया कि अल्लाह उन्हें अपनी जन्नत में दाख़िल करेगा।

100 وَالسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ وَالَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ ۙ رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا
عَنْهُ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ تَحْتَهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۗ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝

अब उन लोगों का ज़िक्र हो रहा है जो अल्लाह के नज़्दीक उन देहातियों से कई गुना अफ़्ज़ल व आ़ला हैं। "साबिक़ीन और अव्वलीन" की तफ़्सीर में उ़लमा के कई क़ौल हैं, किसी ने कहा है कि इस से मुराद वह लोग हैं जिन्होंने दोनों क़िब्लों की तरफ़ रुख़ करके नमाज़ पढ़ी। किसी ने कहा जिन्होंने ग़ज़्व-ए-बद्र में शिरकत की, किसी ने कहा जो लोग हिजरत से पहले इस्लाम लाए थे और "जो लोग उन के बाद आये।" इस से मुराद वह सात नसारा मुसलमान हैं, जिन्होंने उक़्ब-ए-ऊला के पास रसूलुल्लाह (सल्ल०) के हाथ पर बैअ़त की थी और फिर वह सत्तर मुसलमान जिन्होंने दूसरे साल रसूलुल्लाह (सल्ल०) के हाथ पर बैअ़त की थी और वह तमाम अन्सार जिन्होंने 'मुसअ़ब बिन उ़मैर' की तब्लीग़ से मुतास्सिर होकर हिजरत से पहले इस्लाम कुबूल किया था।

लेकिन ह़क़ीक़त यह है कि "साबिक़ीन अव्वलीन" में वह तमाम मुहाजिरीन दाख़िल हैं जिन्होंने हिजरत करने में पहल करके रसूलुल्लाह (सल्ल०) का दिल मज़बूत किया और दूसरों के लिए नमूना बने और वह तमाम अन्सार जिन्होंने हिजरत से पहले इस्लाम कुबूल कर लिया था और जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) मदीना तशरीफ़ लाए तो आप का साथ दिया।

'अबू मन्सूर बग़दादी' का क़ौल है कि हमारे अस्ह़ाब का इस पर इज्माअ़ है कि सब से अफ़्ज़ल (श्रेष्ठ) ख़ुल्फ़ा-ए-अरबअ़ (चारों ख़लीफ़ा) हैं, फिर ग़ज़्व-ए-बद्र में शरीक होने वाले, फिर उ़हद में शरीक होने वाले, फिर मक़ामे हुदैबिया में रसूलुल्लाह (सल्ल०) के हाथ पर बैअ़त करने वाले जिसे "बैअ़तुल् रिज़वान" कहा जाता है और "जो लोग उन के बाद आये" से मुराद बाद के सह़ाबा, ताबिअ़ीन और वह तमाम लोग हैं जो क़ियामत तक उन के नक़्शे क़दम पर चलते रहेंगे।

अल्लाह ने उन की नेकियों को कुबूल फ़रमा लिया, उन के गुनाहों को माफ़ कर दिया और अब उन से नाराज़ नहीं होगा और वह भी अल्लाह से ख़ुश हो गये कि उस ने उन्हें अपने फ़ज़्ल व करम से नवाज़ दिया और उन के लिए ऐसी जन्नतें तैयार कर रखी हैं जिन के नीचे नहरें जारी होंगी, जिन में वह हमेशा के लिए रहेंगे। 'मुह़म्मद बिन कअ़ब कुर्ज़ी' ने इसी आयत से इस्तिद्लाल (Explain) करते हुए कहा है

कि अल्लाह तआ़ला ने तमाम सहा़बा-ए-किराम को माफ़ कर दिया और सब के लिए जन्नत वाजिब कर दी और उन लोगों के लिए भी जो क़ियामत तक उन के बाद उन के नक़्शे क़दम पर चलते रहेंगे और उन के दिल उन से मुह़ब्बत करेंगे।

101 وَمِمَّنْ حَوْلَكُم مِّنَ الْأَعْرَابِ مُنَافِقُونَ ۖ وَمِنْ أَهْلِ الْمَدِينَةِ ۖ مَرَدُوا عَلَى النِّفَاقِ لَا تَعْلَمُهُمْ ۖ نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ ۚ سَنُعَذِّبُهُم مَّرَّتَيْنِ ثُمَّ يُرَدُّونَ إِلَىٰ عَذَابٍ عَظِيمٍ ﴿١٠١﴾

मुनाफ़िक़ीन के ह़ालात पर मज़ीद रौशनी डाली जा रही है। अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) को ख़बर दी कि मदीना के आस-पास जो खाना बदोश (फ़क़ीर क़िस्म के) हैं, उन में और अहले मदीना में भी मुनाफ़िक़ीन पाये जाते हैं और अपने निफ़ाक़ पर पर्दा डालने में ऐसे लगे हैं कि आप अपनी हज़ार ज़िहानत के बावजूद उन्हें नहीं जानते हैं, वह अपना कुफ़्र छिपाने में इतने माहिर हैं कि सिर्फ़ अल्लाह ही उन की ख़बर रखता है। अल्लाह तआ़ला उन्हें पहले इसी दुनिया में दोबारा सज़ा देगा, ज़िल्लत व रुस्वाई होगी, इस्लाम और मुसलमानों की कामियाबियों पर उन के दिलों में आग लगी रहेगी और आख़िरत का अ़ज़ाब तो उन का इन्तिज़ार कर ही रहा है।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) बाज़ मुनाफ़िक़ीन को उन के नामों से जानते थे और यह साबित है कि आप (सल्ल०) ने 'ह़ज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान' (रज़ि०) को चौदह या पन्द्रह मुनाफ़िक़ीन के नाम बताये थे, लेकिन तमाम मुनाफ़िक़ीन को नहीं जानते थे। 'इमाम अह़मद' ने 'जुबैर बिन मुतअ़िम' (रज़ि०) से रिवायत की है कि उन्होंने कहा, या रसूलल्लाह! कुछ लोगों का ख़याल है कि हम ने मक्का में जो अ़मल किया था उस का हमें अज्र नहीं मिलेगा तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि तुम्हारा अज्र तुम्हें मिल कर रहेगा चाहे लोमड़ी के बिल में रहो। फिर आप ने अपना सर मेरे कान के क़रीब लाकर कहा कि मेरे सहा़बा में मुनाफ़िक़ीन मिले हुए हैं जो झूठी बातें फैलाते हैं।

102 وَآخَرُونَ اعْتَرَفُوا بِذُنُوبِهِمْ خَلَطُوا عَمَلًا صَالِحًا وَآخَرَ سَيِّئًا عَسَى اللَّهُ أَن يَتُوبَ عَلَيْهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٠٢﴾

इस आयते करीमा में उन लोगों का ज़िक्र है जो मुख़्लिस मुसलमान थे मुनाफ़िक़ नहीं थे, लेकिन सुस्ती की वजह से ग़ज़्व-ए-तबूक में शरीक नहीं हुए और जब ग़ज़्वे में शरीक न होने वाले मुनाफ़िक़ीन के बारे में यह आयतें नाज़िल हुईं, तो उन्हें अपनी ग़ल्ती का एह़सास हुआ और फ़िक्र हुई कि अब क्या किया जाए? और इस की तलाफ़ी (भरपाई) कैसे हो? 'इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु' अ़न्हुमा की रिवायत के मुताबिक़ उन की तअ़दाद (संख्या) दस थी। उन में से सात ने तय किया कि वह अपने आप को मस्जिदे नबवी के सुतूनों से बाँध देंगे और इसी ह़ाल में रहेंगे, यहाँ तक कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) उन्हें माफ़ कर दें और अपने हाथ से उन्हें खोल दे चुनांचे उन्होंने ऐसा ही किया।

जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उन्हें देखा और उन के बारे में दर्याफ़्त किया तो इसकी वजह बताई गई। आप ने फ़रमाया कि उन्हें इसी ह़ाल में रहने दो यहाँ तक कि मुझे अल्लाह की तरफ़ से उन्हें खोल देने का हुक्म मिले।

जब यह आयत नाज़िल हुई तो आप (सल्ल०) ने उन्हें खोल दिया और बाक़ी तीन लोगों का जिस में 'कअ़ब बिन मालिक', 'मुरारह बिन अल् रबीअ़' और 'हिलाल बिन उमय्या' का क़िस्सा मशहूर है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उन का समाजी बाईकाट कर दिया, उन की बीवियों को उन से अलग कर दिया, यहाँ तक कि सूरः तौबः की आयत नं० (118) وَّعَلَى الثَّلٰثَةِ الَّذِيْنَ خُلِّفُوْا नाज़िल हुई और अल्लाह ने भी उन की तौबः क़ुबूल कर ली।

उन्हीं लोगों के बारे में अल्लाह तआ़ला ने इस आयत में फ़रमाया है कि उन्होंने जिहाद में शिरकत न कर के अपने पिछले अच्छे अ़ामाल के साथ गुनाह को मिला दिया था, लेकिन जब उन्होंने सच्चे दिल से तौबः किया तो अल्लाह ने उन की तौबः क़ुबूल कर ली।

103 خُذْ مِنْ اَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيْهِمْ بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ ۭ اِنَّ صَلٰوتَكَ سَكَنٌ لَّهُمْ ۭ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝

इब्ने जरीर, इब्ने अबी हा़तिम, इब्ने मरदूविया और बैहक़ी वग़ैरहुम ने रिवायत की है कि जिन सात सहा़बा ने अपने आप को मस्जिदे नबवी के सुतूनों से बाँध दिया था जब उन की तौबः क़ुबूल हो गई तो वह अपना मामला लेकर रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास आये और कहा या रसूलल्लाह! इसी माल की वजह से हम पीछे रह गये थे, इसलिए यह अल्लाह की राह में सद्क़ः है तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि मुझे उसे लेने का हुक्म नहीं दिया गया है तो यह आयत नाज़िल हुई, जिस में अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) को हुक्म दिया कि उन से सद्क़ः लीजिए जो उन की तहारत (पाकी) और दिल की सफ़ाई का ज़रिया बनेगा और उन के लिए दुआ़-ए-ख़ैर व बरकत कीजिए, इसलिए कि आप की दुआ़ मुसलमानों के लिए सुकून व इत्मिनान का ज़रिया है। चुनांचे नबी करीम (सल्ल०) ने उन के माल का एक तिहाई हि़स्सा बतौरे सद्क़ः ले लिया और बाक़ी वापस कर दिया।

उ़लमा ने लिखा है कि यह आयत उन सहा़बा के बारे में नाज़िल हुई थी, लेकिन ज़कात के बारे में इस का हुक्म अ़ाम है। मुसलमान हुक्मरानो का फ़र्ज़ है कि तमाम मुसलमानों से ज़कात वसूल करें और अल्लाह के बताये हुए हुक्म के मुताबिक़ मुसलमानों में तक़्सीम करें।

104 اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَاْخُذُ الصَّدَقٰتِ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ۝

इस आयते करीमा में तौबः और सद्क़ः की तर्ग़ीब दिलाई गई है इसलिए कि उन के ज़रिये बन्दों के गुनाह मिटते हैं और इस बात की ख़बर दी गई है कि जो बन्दा तौबः करता है अल्लाह उस की तौबः क़ुबूल करता है और जो ह़लाल माल का सद्क़ः करता है अल्लाह तआ़ला उसे क़ुबूल करता है और फिर अपने बन्दे के लिए उसे कई गुना बढ़ाता है, यहाँ तक कि एक खजूर उ़हद पहाड़ के बराबर हो जाता है।

105 وَقُلِ اعْمَلُوْا فَسَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۭ وَسَتُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ
فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝

यह अल्लाह की ओर से एक क़िस्म की धमकी और ख़ौफ़ दिलाने वाला तरीक़ा है, कि ऐ लोगो! तुम्हारा कोई अ़मल अल्लाह, उस के रसूल और मुसलमानों से छुपा नहीं है, इसलिए ख़ैर (भलाई) का काम करो और सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा के लिए करो और इस में अच्छा अ़मल करने की तर्ग़ीब भी है, इसलिए कि आदमी को जब यक़ीन होगा कि उस का हर अ़मल अल्लाह के नज़्दीक लिखा जा रहा है तो बुरे काम से बचेगा और ख़ैर के काम करेगा। इस के बाद फ़रमाया कि देखो! तुम सब उस अल्लाह के सामने खड़े होगे जो ग़ायब व हाज़िर सब को जानता है, फिर वह बुरे को बुरा और अच्छे को अच्छा बदला देगा।

106 وَاٰخَرُوْنَ مُرْجَوْنَ لِاَمْرِ اللّٰهِ اِمَّا يُعَذِّبُهُمْ وَاِمَّا يَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝

इस से मुराद वह तीन मुख़्लिस मुसलमान हैं जो सुस्ती की वजह से ग़ज़्वा में शरीक नहीं हुए और रसूलुल्लाह (सल्ल०) के सामने मुनाफ़िक़ीन की तरह़ झूठा उ़ज़्र पेश करके माफ़ी भी नहीं माँगी, उन का मामला मुअ़ल्लक़ (फंसा) रहा और रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने मुसलमानों से उन का समाजी बाईकाट कर दिया और ज़मीन उन पर तंग हो गई, उन्हीं के बारे में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि वह उन्हें अ़ज़ाब देगा या उन की तौबः क़ुबूल कर लेगा। चुनाँचे अल्लाह की रह़मत उस के ग़ज़ब पर ग़ालिब आ गई और उन की तौबः क़ुबूल हुई जिस का ज़िक्र इसी सूरत की आयत नं० (118) में आएगा।

आयत नं० 107 से 116 तक

وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَكُفْرًا وَتَفْرِيقًا بَيْنَ الْمُؤْمِنِينَ وَإِرْصَادًا لِّمَنْ حَارَبَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ مِن قَبْلُ ۚ وَلَيَحْلِفُنَّ إِنْ
أَرَدْنَا إِلَّا الْحُسْنَىٰ ۖ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۝ لَا تَقُمْ فِيهِ أَبَدًا ۚ لَّمَسْجِدٌ أُسِّسَ عَلَى التَّقْوَىٰ مِنْ أَوَّلِ يَوْمٍ أَحَقُّ أَن تَقُومَ
فِيهِ ۚ فِيهِ رِجَالٌ يُحِبُّونَ أَن يَتَطَهَّرُوا ۚ وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِينَ ۝ أَفَمَنْ أَسَّسَ بُنْيَانَهُ عَلَىٰ تَقْوَىٰ مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ أَم مَّنْ
أَسَّسَ بُنْيَانَهُ عَلَىٰ شَفَا جُرُفٍ هَارٍ فَانْهَارَ بِهِ فِي نَارِ جَهَنَّمَ ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝ لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِي بَنَوْا رِيبَةً
فِي قُلُوبِهِمْ إِلَّا أَن تَقَطَّعَ قُلُوبُهُمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَىٰ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُم بِأَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ ۚ
يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيَقْتُلُونَ وَيُقْتَلُونَ ۖ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِي التَّوْرَاةِ وَالْإِنجِيلِ وَالْقُرْآنِ ۚ وَمَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ مِنَ اللَّهِ ۚ فَاسْتَبْشِرُوا
بِبَيْعِكُمُ الَّذِي بَايَعْتُم بِهِ ۚ وَذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ التَّائِبُونَ الْعَابِدُونَ الْحَامِدُونَ السَّائِحُونَ الرَّاكِعُونَ السَّاجِدُونَ
الْآمِرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَالنَّاهُونَ عَنِ الْمُنكَرِ وَالْحَافِظُونَ لِحُدُودِ اللَّهِ ۗ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ۝ مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَن
يَسْتَغْفِرُوا لِلْمُشْرِكِينَ وَلَوْ كَانُوا أُولِي قُرْبَىٰ مِن بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُمْ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ۝ وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ إِلَّا
عَن مَّوْعِدَةٍ وَعَدَهَا إِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ أَنَّهُ عَدُوٌّ لِّلَّهِ تَبَرَّأَ مِنْهُ ۚ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَأَوَّاهٌ حَلِيمٌ ۝ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِلَّ قَوْمًا بَعْدَ
إِذْ هَدَاهُمْ حَتَّىٰ يُبَيِّنَ لَهُم مَّا يَتَّقُونَ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ إِنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۚ وَمَا لَكُم مِّن
دُونِ اللَّهِ مِن وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝

अनुवाद-

(107) और जिन्होंने इसलिए मस्जिद बनाई है कि नुक़सान पहुँचाएं और कुफ़्र करें और ईमान वालों में फूट डालेंऔर जो लोग अल्लाह और उसके रसूल से पहले जंग कर चुके हैं उन के लिए घात की जगह बनाएँ और वे कसमें खाएंगे कि ''हमने तो बस अच्छा ही चाहा था,'' मगर अल्लाह गवाही देता है कि वे बिल्कुल झूठे हैं; (108) आप उसमें कभी भी खड़े न होइएगा; वह मस्जिद जिसकी बुनियाद तक़्वा (परहेज़गारी) पर पहले दिन ही से पड़ी है, वह इसकी ज्यादा हक़दार है कि आप उसमें खड़े हों, उसमें ऐसे लोग पाये जाते हैं, जो अच्छी तरह पाक रहते हैं, और अल्लाह पाक-साफ़ रहने वालों को पसंद करता है। (109) फिर क्या वह व्यक्ति अच्छा है! जिसने अपनी इमारत की बुनियाद (आधारशिला) अल्लाह के डर और उसकी खुशी पर रखी है या वह, जिसने अपनी इमारत की बुनियाद किसी खाईं के खोखले कगार पर रखी- जो गिरने को है फिर वह (इमारत) उसको लेकर जहन्नम की आग में गिर पड़ी? और अल्लाह ज़ालिम लोगों को (सीधी) राह नहीं दिखाता; (110) हमेशा उनकी यह इमारत जो उन्होंने बनाई हैं, उनके दिलों में खटकती रहेगी सिवाय इसके कि उनके दिल ही टुकड़े-टुकड़े हो जाएँ और अल्लाह तो बड़ा इल्म वाला, हिक्मत वाला है। (111) अल्लाह ने ईमान वालों से उनके जान (प्राण) और उनके माल, इसके बदले में ख़रीद लिया है कि उनके लिए जन्नत है; यह लोग अल्लाह की राह में लड़ते हैं, तो मारते भी हैं और मारे भी जाते हैं इसी पर सच्चा वादा है तौरेत और इंजील और क़ुर्आन में; और अल्लाह से बढ़कर अपने वादे को कौन पूरा कर सकता है? अतः अपने इस सौदे पर खुशियाँ मनाओ, जो सौदा तुमने 'उससे' किया है और यही बड़ी कामियाबी है; (112) वे (मुजाहिद) तौबः करने वाले, इबादत करने वाले, हम्द (स्तुति) करने वाले, रोज़ः रखने वाले, रुकूअ़ करने वाले,

सज्दः करने वाले, भलाई का हुक्म करने वाले, और बुराई से रोकने वाले, और अल्लाह की सीमाओं का ख़याल रखने वाले हैं, और ईमान वालों को (जन्नत की) खुशख़बरी सुना दीजिए। (113) नबी और ईमान वालों के लिए उचित नहीं कि वे मुश्रिकों के लिए माफ़ी की दुआ़ करें चाहे वे उनके नातेदार ही क्यों न हों, जबकि उन पर यह बात खुल चुकी है कि वे भड़कती हुई आग वाले हैं। (114) और इब्राहीम ने अपने बाप के लिए जो माफ़ी की दुआ़ की थी, वह तो केवल एक वादे की वजह से थी, जो वादा वह उससे कर चुके थे, फिर जब उन पर यह बात खुल गई कि वह अल्लाह का दुश्मन है तो वह उससे अलग हो गये; बेशक इब्राहीम बड़े ही नर्म दिल, सहनशील थे। (115) और अल्लाह ऐसा नहीं कि क़ौम को गुमराह (पथभ्रष्ट) कर दे जबकि वह उनको राह पर ला चुका हो, जब तक कि उन्हें साफ़-साफ़ वे बातें न बता दे जिनसे उन्हें बचना है; बेशक अल्लाह हर चीज़ को भली-भाँति जानता है। (116) बेशक अल्लाह ही तो है 'जिसका' राज्य आसमानों और ज़मीन में है, 'वही' जिलाता और मारता है, और अल्लाह के सिवा तुम्हारा न कोई मित्र है और न मदद्गार।

आयत नं० 107 से 116 तक की व्याख्या

107 وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَكُفْرًا وَتَفْرِيقًا بَيْنَ الْمُؤْمِنِينَ وَإِرْصَادًا لِّمَنْ حَارَبَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ
مِن قَبْلُ ۚ وَلَيَحْلِفُنَّ إِنْ أَرَدْنَا إِلَّا الْحُسْنَىٰ ۖ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۝

आयत नं० (107) से (110) तक का तअ़ल्लुक़ उन मुनाफ़िक़ीन से है जिन्होंने 'मस्जिदे क़ुबा' के क़रीब मस्जिद के नाम से एक इमारत बनाई थी, जिस का मक़्सद इस्लाम के ख़िलाफ़ साज़िश और मुसलमानों के दर्मियान तफ़रीक़ (फूट) पैदा करना था। 'हाफ़िज़ इब्ने कसीर' (रह०) ने 'इब्ने इस्हाक़' और 'इब्ने मरदूविया' वग़ैरहुम से इन आयतों के शाने नुज़ूल के सिल्सिले में जो रिवायतें नक़्ल की हैं, उन का ख़ुलासा यह है कि मदीना में क़बीले 'ख़ज़्रज' का 'अबू आ़मिर अल् राहिब' नामी एक शख़्स था, जो ज़माने जाहिलियत में नस्रानी हो गया था, उस का 'ख़ज़्रज' वालों में बड़ा दर्जा था।

जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) हिज्रत कर के मदीना तश्रीफ़ लाए तो उसे इस्लाम की दअ़वत दी, लेकिन उस ने इन्कार कर दिया और ग़ज़्व-ए-बद्र के बाद मक्का जाकर कुफ़्फ़ारे क़ुरैश को रसूलुल्लाह (सल्ल०) के ख़िलाफ़ उभारा और ग़ज़्व-ए-उहद में काफ़िरों की सफ़ में आगे आकर अन्सार को मुख़ातब करके अपनी हिमायत की दअ़वत दी जिस पर अन्सार ने उसे बहुत ज़्यादा बुरा कहा। इस के बाद उसने रोम जाकर वहाँ के बादशाह 'हिरक्ल' को मुसलमानों के ख़िलाफ़ उक्साया और वहीं से अपने मदीना में मुनाफ़िक़ दोस्तों को ख़त लिखा कि वह एक मस्जिद बनाएँ जिस का मक़्सद मुसलमानों में तफ़रीक़ (फूट) पैदा करना हो और जब वह मदीना वापस आएगा तो उसे अपने लिए क़याम गाह (Commandiny Office) के तौर पर इस्तेमाल करेगा, जब मुनाफ़िक़ीन ने वह इमारत बना ली तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास आये और कहा कि हम ने कमज़ोरों, बीमारों और बारिश और सर्दी के लिए एक मस्जिद बनाई है, हम चाहते हैं कि आप वहाँ तश्रीफ़ ले चलें और उस में नमाज़ पढ़ें।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) उस वक़्त ग़ज़्व-ए-तबूक के लिए रवाना हो रहे थे। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि वापसी के बाद आऊँगा वापसी में जब आप मदीना से कुछ फ़ासले पर थे तो वह्य नाज़िल हुई तो उस इमारत की हक़ीक़त मालूम हुई चुनांचे आप (सल्ल०) ने दो सहाबा को भेजा जिन्होंने उस मकान को जला दिया, जिसे अल्लाह ने "मस्जिदे ज़रार" का नाम दिया यानी वह मस्जिद कुबा वालों को नुक़सान पहुँचाने के लिए बनाई गई थी।

108 لَا تَقُمْ فِيهِ أَبَدًا ۚ لَّمَسْجِدٌ أُسِّسَ عَلَى التَّقْوَىٰ مِنْ أَوَّلِ يَوْمٍ أَحَقُّ أَن تَقُومَ فِيهِ ۚ فِيهِ رِجَالٌ يُحِبُّونَ أَن يَتَطَهَّرُوا ۚ وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِينَ ۝

इस से मुराद मस्जिदे 'कुबा' है। हदीस में इस मस्जिद की बड़ी फ़ज़ीलत आई है। सहीहैन की रिवायत में है कि नबी करीम (सल्ल०) कभी पैदल और कभी सवारी पर उस मस्जिद की ज़ियारत के लिए जाते थे और उस में दो रकअ़त नमाज़ पढ़ते थे। बहुत से सहाबा-ए-किराम की राय है कि इस से मुराद 'मस्जिदे नबवी' है और हज़रत अबू सईद खुद्री (रज़ि०) की एक सही हदीस से इस की तस्दीक़ भी होती है कि दो शख़्स के दर्मियान में इख़्तिलाफ़ हुआ कि वह कौन सी मस्जिद है जिस की बुनियाद पहले दिन से तक़्वा पर रखी गई है, तो नबी करीम (सल्ल०) ने फ़रमाया कि वह मेरी मस्जिद है। इस हदीस को 'मुस्लिम' 'नसई' और 'तिर्मिज़ी' ने रिवायत की है।

एक और हदीस में है जिसे 'अबूदाऊद' और 'तबरानी' ने 'अव्वाम बिन साअ़दह अन्सारी' (रज़ि०) से रिवायत की है कि नबी करीम (सल्ल०) मस्जिदे कुबा में तशरीफ़ लाए और कहा कि अल्लाह तआ़ला ने तुम लोगों की मस्जिद के वाक़िये में तुम्हारे तहारत की तअ़रीफ़ की है तो तुम लोग किस तरह़ तहारत हासिल करते हो? लोगों ने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल! हम अपनी शर्मगाह और नजासत की जगह को पानी से धोते हैं। इस हदीस से मालूम होता है कि वह 'मस्जिदे' कुबा है।

इसीलिए 'हाफ़िज़ इब्ने कसीर' (रह०) ने कहा है कि 'मस्जिदे कुबा' वह मस्जिद है जिस की बुनियाद तहारत पर रखी गई है, तो मस्जिदे नबवी खुद-ब-खुद वह मस्जिद है।

हज़रत 'अबू सईद खुदरी' (रज़ि०) कहते हैं, "वह कौन सी मस्जिद है जिस की पहले दिन से तक़्वा पर बुनियाद रखी गई थी। एक ने कहा कि वह मस्जिदे कुबा है, दूसरे ने कहा कि वह रसूलुल्लाह (सल्ल०) की मस्जिद है, तब आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि वह यही मेरी मस्जिद है।" **(तिर्मिज़ी)**

यह मस्जिद कौन सी है? सहाबा (रज़ि०) की एक जमाअ़त 'मस्जिदे नबवी' की क़ायल है और दूसरी 'मस्जिदे कुबा' की। दोनों मसाजिद इस आयत में बयान होने वाली सिफ़त रखती है। वल्लाहु अ़ालम

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "यह आयत 'अहले कुबा' के सिलसिले में नाज़िल हुई है। वह लोग पानी के साथ ढ़ेले भी तहारत के लिए इस्तेमाल करते हैं।"
(अबूदाऊद)

109 أَفَمَنْ أَسَّسَ بُنْيَانَهُ عَلَىٰ تَقْوَىٰ مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ أَم مَّنْ أَسَّسَ بُنْيَانَهُ عَلَىٰ شَفَا جُرُفٍ هَارٍ فَانْهَارَ بِهِ فِي نَارِ جَهَنَّمَ ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝

इस आयते करीमा में मोमिन और मुनाफ़िक़ की नियत और अ़मल में जो बुनियादी फ़र्क़ है उसे बयान किया गया है। मोमिन जब भी कोई काम करता है तो उस की नियत में अल्लाह की रज़ा और जन्नत ह़ासिल करना होता है, इस के विपरीत मुनाफ़िक़ की नियत में खोट होता है। इसलिए इस की मिसाल उस आदमी की होती है जो मिट्टी के किसी ऐसे ढ़ेर पर मकान बनाये जो अन्दर से खोखला हो और रहने वाले को लेकर गिरता हुआ जहन्नम में पहुँच जाए।

110 لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِي بَنَوْا رِيبَةً فِي قُلُوبِهِمْ إِلَّا أَنْ تَقَطَّعَ قُلُوبُهُمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ

मुनाफ़िक़ीन ने जो मस्जिद बनाई इस से उन का निफ़ाक़ और बढ़ गया और इससे उन के दिलों में मज़ीद मज़्बूती आ गई और जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) के हुक्म से उसे जला दिया गया तो उन का निफ़ाक़ और बढ़ गया और इस्लाम के ख़िलाफ़ उन की दुश्मनी बढ़ गई। इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने ख़बर दी कि उन की यही ह़ालत रहेगी यहाँ तक कि उन्हें मौत आ जाएगी।

'ह़ाफ़िज़ इब्ने अल् क़य्यिम' (रह़०) ने "ज़ादुल् मआ़द" में ग़ज़्व-ए-तबूक के फ़ायदे का ज़िक्र करते हुए लिखा है कि जिन जगहों में अल्लाह और उस के रसूल की नाफ़रमानी की जा रही हो उस जगह को जला दिया जाएगा या गिराकर बराबर कर दिया जाएगा। जैसा कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने 'मस्जिद ज़रार' को जला देने और उसे गिराने का हुक्म दिया।

आगे लिखते हैं कि वह 'वक़्फ़ जगहें' जिस से मक़्सूद अल्लाह की रज़ा और क़ुर्बत ह़ासिल करनी न हो सह़ी नहीं होंगी, जिस तरह़ 'मस्जिदे ज़रार' का वक़्फ़ रसूलुल्लाह (सल्ल०) की नज़र में सह़ी नहीं था।

111 إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَىٰ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنْفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ بِأَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ ۚ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيَقْتُلُونَ
وَيُقْتَلُونَ ۖ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِي التَّوْرَاةِ وَالْإِنْجِيلِ وَالْقُرْآنِ ۚ وَمَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ مِنَ اللَّهِ ۚ فَاسْتَبْشِرُوا بِبَيْعِكُمُ
الَّذِي بَايَعْتُمْ بِهِ ۚ وَذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ

'जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह' से पीछे रह जाने वालों के ह़ालात जब बयान किये जा चुके तो जिहाद की फ़ज़ीलत बयान कर के मोमिनों को इस की तर्ग़ीब दिलाई जा रही है और उन से कहा जा रहा है कि अल्लाह ने तुम से तुम्हारी जान और माल का सौदा कर लिया है ताकि उनके बदले तुम्हें जन्नत दे। सस्ती चीज़ लेकर बहुत क़ीमती चीज़ दी है फिर चाहे तुम दुश्मनों को क़त्ल करो या क़त्ल कर दिये जाओ, अल्लाह का वादा हर ह़ाल में साबित है। जैसा कि 'इमाम बुख़ारी' ने 'अ़ब्दुल्लाह बिन औफ़ा' रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत की है कि "जन्नत तलूवारो के साये में है" और अल्लाह का यह पुख़्ता वादा तौरेत और इन्जील में भी मौजूद है।

112 التَّائِبُونَ الْعَابِدُونَ الْحَامِدُونَ السَّائِحُونَ الرَّاكِعُونَ السَّاجِدُونَ الْآمِرُونَ بِالْمَعْرُوفِ
وَالنَّاهُونَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَالْحَافِظُونَ لِحُدُودِ اللَّهِ ۗ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ

उन्हीं मोमिनीन की कुछ दूसरी सिफ़ात बयान की जा रही हैं जिन से अल्लाह ने जन्नत के बदले

उन की जान व माल का सौदा कर लिया है। **"साअिहूना"** से मुराद अक्सर मुफ़स्सिरीन के नज़्दीक रोज़ेदार हैं। बाज़ ने इस से मुराद "मुहाजिरीन" लिया है और बाज़ ने तालिबे इ़ल्म मुराद लिया है। 'हाफ़िज़ इब्ने कसीर (रह०)' कहते हैं कि यह ह़दीस दलालत करती है कि आयत में "सियाह़त" से मुराद जिहाद है। 'अबूदाऊद' ने 'अबू उमामा' से रिवायत की है कि एक आदमी ने कहा, या रसूलल्लाह! मुझे सियाह़त की इजाज़त दीजिए तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "मेरी उम्मत की सियाह़त जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह है।" सियाह़त से मुराद यह नहीं है कि आदमी दुनिया से किनाराकश (दूर) होकर अ़िबादत की नियत से पहाड़ों, ग़ारों और जंगलों में चला जाए। इसलिए यह रहबानियत (सन्यास) है, जिस की अल्लाह के रसूल ने मनाही फ़रमाई है। हाँ, अगर ज़मीन फ़ित्नों से भर जाए और आदमी के लिए अपने दीन पर चलना मुश्किल हो रहा हो तो ऐसी सूरत में जायज़ है कि शहर और बस्ती छोड़कर पहाड़ों पर चला जाए, जैसा कि सही बुख़ारी में 'अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा' रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से मरवी एक ह़दीस से साबित है कि फ़ित्नों के ज़माने में अपनी बकरियाँ लेकर पहाड़ों पर चला जाना बेहतर है।

"रुकूअ़ और सज्दः करने वालों" से मुराद नमाज़ पढ़ने वाले हैं, इसलिए कि नमाज़ में यह दोनो ज़्यादा अहम हैं।

इस के बाद अल्लाह ने नबी करीम (सल्ल०) से फ़रमाया कि जो लोग मोमिन कामिल व सादिक़ हैं उन्हें आप अल्लाह की ओर से दुनिया में फ़तेह़ व कामियाबी और आख़िरत में जन्नत की ख़ुशख़बरी दे दीजिए।

113-114 مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَنْ يَسْتَغْفِرُوا لِلْمُشْرِكِينَ وَلَوْ كَانُوا أُولِي قُرْبَىٰ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُمْ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ۝ وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ إِلَّا عَنْ مَوْعِدَةٍ وَعَدَهَا إِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ أَنَّهُ عَدُوٌّ لِلَّهِ تَبَرَّأَ مِنْهُ ۚ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَأَوَّاهٌ حَلِيمٌ ۝

इस सूरत के शुरु में और इस के बाद वाली आयतों में अल्लाह तआ़ला ने मुश्रिकीन और मुनाफ़िक़ीन से किनाराकशी और उन से दूरी अख़्तियार करने को दीनी ज़रूरत क़रार दिया है। इस आयत में इसी की और ताकीद की गई है कि मुश्रिकीन का शिर्क-कुफ़्र जब ज़ाहिर हो जाए तो उन से दूरी अख़्तियार करना ईमान का तक़ाज़ा है, चाहे वह रिश्तेदार ही क्यों न हों। इसीलिए आयत नं० (११४) में अल्लाह तआ़ला ने बयान किया है कि ह़ज़रत इब्राहीम ने अपने काफ़िर बाप 'आज़र' के लिए इसलिए मग़्फ़िरत माँगा था कि उन्होंने अपनी दअ़्वत के शुरु में उन से वादा किया था कि वह अल्लाह से उन के लिए मग़्फ़िरत माँगेगें, लेकिन बाद में जब उन्हें यक़ीन हो गया कि 'आज़र' अल्लाह का दुश्मन है तो उस से पूरे तौर पर बरी होने और अलग होने का एलान कर दिया। इसलिए किसी के लिए जायज़ नहीं कि 'इब्राहीम' के इस अ़मल को दलील बनाकर मुश्रिकीन के लिए मग़्फ़िरत की दुआ़ करे।

बाप, दादा, वालिदा सब की वफ़ात के बाद आप (सल्ल०) के चचा अबू तालिब ने आप की परवरिश इन्तेहाई प्यार से की, हर मुश्किल वक़्त में आप (सल्ल०) के लिए ढाल बन गये। नुबूव्वत के आठवें साल उन की वफ़ात हो गई, जिस का आप (सल्ल०) को बहुत दुख हुआ। 'मुसय्यब बिन ह़रन' कहते हैं, "जब

'अबू तालिब' की वफ़ात का वक़्त आया तो आप (सल्ल०) उन के पास गये वहाँ 'अबू जेहल' और 'अ़ब्दुल्लाह बिन उमय्या' पहले ही बैठे थे। आप (सल्ल०) ने कहा, चचा 'लाइलाहा इल्लल्लाह' कह दीजिए तो मैं अल्लाह के यहाँ आप के हक़ में दलील पेश करुँगा। उस वक़्त 'अबूजेहल' और 'अ़ब्दुल्लाह बिन उमय्या' कहने लगे, क्या तुम 'अ़ब्दुल मुत्तलिब' के दीन से फिर जाओगे? दोनों बराबर यही समझाते रहे। 'अबू तालिब' ने आख़िरी बात जो कही, वह यह थी कि मैं 'अ़ब्दुल मुत्तलिब' के दीन पर मरता हूँ। फिर आप (सल्ल०) ने फ़रमाया मैं तुम्हारे लिए बख़्शिश माँगता हूँ यहाँ तक कि मुझे इस से मना कर दिया जाए, उस वक़्त यह आयत नाज़िल हुई। **(बुख़ारी)**

'हज़रत अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब' (रज़ि०) से रिवायत है कि उन्होंने पूछा, "ऐ रसूलुल्लाह (सल्ल०)! क्या आप ने अबू तालिब को कुछ फ़ायदा पहुँचाया, वह आप की हिमायत (समर्थन) किया करते थे, आप (सल्ल०) ने फ़रमाया हाँ, वह जहन्नम की ऊपर वाली सतह़ में है अगर मैं न होता तो वह निचली सतह़ (दरकुल अस्फ़ल) में होते।" **(बुख़ारी)**

इस के अ़लावा यह आयत नाज़िल हुई। "ऐ नबी (सल्ल०) आप जिसे चाहें हिदायत नहीं दे सकते अल्लाह ही जिसे चाहे हिदायत देता है और वह हिदायत पाने वालों को ख़ूब जानता है। **(सूरः अल् क़सस-५६)**

'बुख़ारी' व 'मुस्लिम' की रिवायत है कि जब 'अबू तालिब' की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) उन के पास गये वहाँ पहले से 'अबू जेहल' और 'अ़ब्दुल्लाह बिन उमय्या' मौजूद थे। आप (सल्ल०) ने कहा, चचा! आप "लाइलाहा इल्लल्लाह" कह दीजिए ताकि आप के लिए मैं अल्लाह के यहाँ सिफ़ारिश कर सकूँ तो 'अबू जेहल' और 'इब्ने अबी उमय्या' ने कहा, अबू तालिब! क्या तुम अ़ब्दुल् मुत्तलिब के दीन से अलग हो जाओगे? रसूलुल्लाह (सल्ल०) बार-बार उन के सामने अपनी बात दोहराते रहे, लेकिन 'अबू तालिब' ने आख़िर में यह कहा कि मैं 'अ़ब्दुल मुत्तलिब' के दीन पर हूँ और "लाइलाह इल्लल्लाह" कहने से इन्कार कर दिया तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि अल्लाह की क़सम, मैं जब तक अल्लाह की तरफ़ से रोक न दिया जाऊँ आप के लिए मग़्फ़िरत की दुआ़ करता रहूँगा तो यह आयत नाज़िल हुई। **(मुस्लिम)**

115 وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِلَّ قَوْمًا بَعْدَ إِذْ هَدَاهُمْ حَتَّىٰ يُبَيِّنَ لَهُم مَّا يَتَّقُونَ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ

अल्लाह ने जब मुश्रिकीन के लिए मग़्फ़िरत के दुआ़ माँगने की मुमानिअ़त कर दी तो जिन लोगों ने अपने मुश्रिकीन रिश्तेदारों के लिए आप से पहले मग़्फ़िरत की दुआ़ के लिए कहा था, उन्हें अल्लाह के अ़ज़ाब का ख़ौफ़ हुआ तो यह आयत नाज़िल हुई कि जो मुसलमान पहले से राहे रास्त पर हैं इस ग़ल्ती पर उन की पकड़ नहीं होगी, इसलिए कि अल्लाह की तरफ़ से पकड़ उस की होती है जो हक़ मालूम होने के बाद भी ग़ल्ती पर जमा रहे।

116 إِنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَمَا لَكُم مِّن دُونِ اللَّهِ مِن وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ

जब अल्लाह तआ़ला आसमानों और ज़मीन का बादशाह है, ज़िन्दगी और मौत उसी के अख़्तियार में है, तो फिर उस के अ़लावा किसी की न परवाह करनी है, न किसी से डरना है और दुनिया का बड़े से बड़ा इन्सान भी अगर अल्लाह का दुश्मन है, तो उस से दूरी अख़्तियार करना वाजिब है इस ईमान व यक़ीन के साथ, कि मोमिन का अल्लाह के सिवा न कोई दोस्त है और न मदद्गार और अल्लाह की मर्ज़ी के बग़ैर कोई कुछ नहीं कर सकता।

❖

आयत नं० 117 से 129 तक

لَقَدْ تَّابَ اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ فِيْ سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنْ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيْغُ قُلُوْبُ فَرِيْقٍ مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ
عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّهٗ بِهِمْ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَّعَلَى الثَّلٰثَةِ الَّذِيْنَ خُلِّفُوْا ؕ حَتّٰۤى اِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ
اَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوْۤا اَنْ لَّا مَلْجَاَ مِنَ اللّٰهِ اِلَّاۤ اِلَيْهِ ؕ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوْبُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ
وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ ۝ مَا كَانَ لِاَهْلِ الْمَدِيْنَةِ وَمَنْ حَوْلَهُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ اَنْ يَّتَخَلَّفُوْا عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ وَلَا يَرْغَبُوْا بِاَنْفُسِهِمْ
عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ لَا يُصِيْبُهُمْ ظَمَاٌ وَّلَا نَصَبٌ وَّلَا مَخْمَصَةٌ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَطَـُٔوْنَ مَوْطِئًا يَّغِيْظُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُوْنَ مِنْ
عَدُوٍّ نَّيْلًا اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ بِهٖ عَمَلٌ صَالِحٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ وَلَا يُنْفِقُوْنَ نَفَقَةً صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً وَّلَا
يَقْطَعُوْنَ وَادِيًا اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُوْنَ لِيَنْفِرُوْا كَآفَّةً ؕ فَلَوْلَا نَفَرَ مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ
طَآئِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوْا فِي الدِّيْنِ وَلِيُنْذِرُوْا قَوْمَهُمْ اِذَا رَجَعُوْۤا اِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُوْنَ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَاتِلُوا الَّذِيْنَ
يَلُوْنَكُمْ مِّنَ الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوْا فِيْكُمْ غِلْظَةً ؕ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ۝ وَاِذَا مَاۤ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ اَيُّكُمْ زَادَتْهُ هٰذِهٖۤ
اِيْمَانًا ۚ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَزَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّهُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ۝ وَاَمَّا الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا اِلٰى رِجْسِهِمْ
وَمَاتُوْا وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ۝ اَوَلَا يَرَوْنَ اَنَّهُمْ يُفْتَنُوْنَ فِيْ كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً اَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوْبُوْنَ وَلَا هُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ۝ وَاِذَا مَاۤ اُنْزِلَتْ
سُوْرَةٌ نَّظَرَ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ ؕ هَلْ يَرٰىكُمْ مِّنْ اَحَدٍ ثُمَّ انْصَرَفُوْا ؕ صَرَفَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ۝ لَقَدْ جَآءَكُمْ
رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ ۖ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ
عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ۝

अनुवाद-

(117) बेशक अल्लाह नबी पर मेहरबान हो गया और मुहाजिरों और अन्सार पर भी, जिन्होंने तंगी की घड़ी में उसका साथ दिया, उसके बाद कि उनमें से एक गिरोह के दिल फिर जाने को थे (अर्थात कुटिलता की ओर झुक गये थे) फिर उसने उन पर रह़मत की नज़र डाली। बेशक वह (उनके ह़क़ में) बड़ा शफ़ीक़, (करुणामय), रह़म वाला है। (118) और उन तीनों पर भी, जो पीछे छोड़ दिये गये थे, यहाँ तक कि जब धरती विशाल होते हुए भी, उन पर तंग हो गई और उनकी जान उन पर भारी हो गई और उन्होंने समझा कि अल्लाह से बचने के लिए कोई पनाह (शरण) नहीं मिल सकती- मिल सकती है तो उसी के यहाँ, फिर 'उसने' उन पर रह़म किया ताकि वे पलट आएँ, बेशक अल्लाह ही तौबः क़ुबूल करने वाला, रह़म वाला है। (119) ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरते रहो और सच्चों के साथ रहो। (120) मदीना वालों और उनके आस-पास के बद्‌दुओं को ऐसा नहीं चाहिए था कि अल्लाह के रसूल को छोड़कर पीछे रह जाएँ, और न यह कि उसकी जान के मुक़ाबले में उन्हें अपनी जान ज़्यादा प्रिय हो-क्योंकि वह अल्लाह की राह में प्यास, या थकान, या भूख की कोई भी तकलीफ़ उठाएँ; या वे ऐसी जगह क़दम रखें, जिससे काफ़िरों का क्रोध भड़के; या जो चाल भी वे दुश्मन के लिए चलें, उस पर उनके ह़क़ में (एक-एक) नेक अ़मल लिख लिया जाता है, बेशक अल्लाह नेकों का अज्र अकारथ नहीं करता; (121) और जो कुछ छोटा या बड़ा (थोड़ा बहुत) खर्च

उन्होंने किया, और जो घाटी उन्होंने तय की, यह सब उनके नाम लिख लिया जाता है ताकि अल्लाह उन्हें उनके कामों का अच्छे से अच्छा बदला दे। (122) और यह तो हो नहीं सकता कि ईमान वाले सब के सब निकल खड़े हों, फिर ऐसा क्यों नहीं हुआ कि उनके हर गिरोह में से कुछ लोग निकलते, ताकि वे धर्म में समझ हासिल करते और (फिर) वे अपनी क़ौम को सचेत करते, जब वे उनकी ओर लौटते, ताकि वे (बुरे कामों से) बचें। (123) ऐ ईमान वालो! उन काफ़िरों (इन्कार करने वालों) से जंग करो जो तुम्हारे आस-पास हैं, और चाहिए कि वे तुम में सख़्ती पाएँ, और जान लो कि अल्लाह परहेज़गारों के साथ है। (124) और जब भी कोई सूरः उतरती है तो उनमें से कुछ लोग कहते हैं, ''इसने तुममें से किसके ईमान को बढ़ाया?'' तो जो लोग ईमान वाले हैं उसने उनके ईमान को बढ़ा दिया, और वे खुश होते हैं; (125) और जिन लोगों के दिलों में रोग है, उनकी गन्दगी पर उसने एक और गन्दगी को बढ़ा दिया, और वे इस हालत में मरे कि काफ़िर थे। (126) क्या यह देखते नहीं, कि हर साल यह एक या दो बार आज़माइश में डाले जाते हैं? फिर भी यह न तो तौबः करते हैं और न नसीहत हासिल करते हैं? (127) और जब कोई सूरः नाज़िल होती है तो एक-दूसरे की ओर देखने लगते हैं कि ''तुम्हें कोई देख तो नहीं रहा है,'' फिर पलट जाते हैं; अल्लाह ने उनका दिल ही फेर दिया है, इस वजह से कि यह समझ से काम न लेने वाले लोग हैं। (128) तुम्हारे पास एक रसूल तुम्हीं में से आ गये हैं; तुम्हारा दुखों में पड़ना उनके लिए नागवार गुज़रता है, वह तुम्हारे लिए (भलाई के) लालायित हैं, वह ईमान वालों के प्रति बड़े शफ़ीक़ (करुणामय), मेहरबान हैं। (129) फिर अगर यह लोग मुँह मोड़ें तो कह दीजिए, ''मेरे लिए अल्लाह काफ़ी है, 'उसके' सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं! उसी पर मैंने भरोसा किया और 'वही' अर्शेअ़ज़ीम (महान राज सिंहासन) का मालिक है''।

आयत नं० 117 से 129 तक की व्याख्या

117-119 لَقَدْ تَّابَ اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ فِيْ سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنْۢ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيْغُ قُلُوْبُ فَرِيْقٍ مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّهٗ بِهِمْ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَّعَلَى الثَّلٰثَةِ الَّذِيْنَ خُلِّفُوْا ؕ حَتّٰۤى اِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ اَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوْۤا اَنْ لَّا مَلْجَاَ مِنَ اللّٰهِ اِلَّاۤ اِلَيْهِ ؕ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوْبُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ ۝

ऊपर बताया जा चुका है कि ग़ज़्व-ए-तबूक से कुछ ऐसे लोग भी पीछे रह गये थे जो सच्चे मुसलमान थे, लेकिन सुस्ती की वजह से नबी करीम (सल्ल०) के साथ न जा सके थे। जब मुनाफ़िक़ीन के बारे में क़ुर्आन करीम की आयतें नाज़िल होने लगीं तो उन्हें अपनी ग़ल्ती का एहसास हुआ, इसीलिए उन में से कुछ ने अपने आप को मस्जिदे नबवी के सुतूनों से बाँध लिया यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला ने उन्हें माफ़ कर दिया।

वह तीनों 'कअ़ब बिन मालिक' 'हिलाल बिन उमय्या' और 'मुरारह बिन अल् रबीअ़' थे। इन तीनों हज़रात को रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने कहा कि तुम्हारा फ़ैसला अल्लाह करेगा और तमाम मदीना के मुसलमानों को उन से बात करने से रोक दिया। फिर जब चालीस दिन गुज़र गये तो उन्हें रसूलुल्लाह

(सल्ल०) का पैग़ाम मिला कि वह अपनी बीवियों से अलग हो जाएँ।

यहाँ तक कि पचास दिनों के बाद अल्लाह तआ़ला ने उन की तौबः क़ुबूल की, इस पचास दिन की मुद्दत में वह तीनों जिन ज़ेहनी परेशानियों से गुज़रे और ज़मीन अपनी हज़ार वुस्अ़त के बावजूद जिस तरह़ उन पर तंग हो गई, उन्हीं ह़ालात की तरफ़ आयत नं० (118) में इशारा किया गया है और उन्हीं को 'इमाम अह़मद' और 'बुख़ारी व मुस्लिम' ने पूरी तफ़्सील के साथ 'कअ़ब बिन मालिक' की ज़बानी रिवायत की है।

यह वह तीन लोग हैं जिन का ज़िक्र आयत नम्बर (106) में गुज़र चुका है जो कि ग़ज़्व-ए-तबूक में सिर्फ़ सुस्ती की वजह से शामिल होने से रह गये थे। उन में ह़ज़रत 'कअ़ब बिन मालिक' (रज़ि०) 'हिलाल बिन उमय्या' (रज़ि०) और 'मुरारह बिन अल् रबीअ़' (रज़ि०) थे।

यह लोग ग़ज़्व-ए-तबूक से पहले कई मर्तबः अपने इख़्लास का सुबूत दे चुके थे, इन्होंने दूसरे लोगों के बरअ़क्स कोई बहाना नहीं तलाश किया बल्कि आकर अपनी ग़ल्ती मान ली। आप (सल्ल०) ने सह़ाबा-ए-किराम को उन से क़तअ़ तअ़ल्लुक़ (रिश्ता तोड़ना) का हुक्म दे दिया।

इस तरह़ चालीस दिनों के बाद बीवियों को भी अ़लैह़िदगी का हुक्म दे दिया गया। पचास दिन गुज़रने के बाद अल्लाह तआ़ला ने उन की तौबः क़ुबूल फ़रमा ली और न सिर्फ़ तौबः क़ुबूल फ़रमा ली बल्कि मुह़ब्बत भरे अन्दाज़ में उन की सच्चाई और परहेज़गारी की तअ़रीफ़ फ़रमा दी। बहुत सी अह़ादीस में उन का वाक़िआ़ ख़ुद उन्हीं से मरवी है।

"ह़ज़रत कअ़ब (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि जिन दिनों मेरे साथ सह़ाबा (रज़ि०) की बातचीत बन्द थी, उन्हीं दिनों शाम के क़िब्तियों में से एक शख़्स मुझे मिला। उस ने मुल्क ग़स्सान का ह़रीर में लिपटा हुआ ख़त मुझे दिया उस ख़त में लिखा था कि हम ने सुना है कि तुम्हारे साह़ब ने तुम पर ज़ुल्म किया, तुम ऐसे कमतर आदमी नहीं हो जिसे ज़ाया किया जाए। अगर तुम हमारे पास आ जाओ तो हम तुम्हारी क़द्र करेंगे। मैं यह ख़त पढ़ कर समझ गया कि यह एक और आज़्माइश मुझ पर नाज़िल हुई है, चुनांचे मैंने फ़ौरन उस ख़त को चूल्हे में झोंक दिया।" **(बुख़ारी)**

"ह़ज़रत कअ़ब बिन मालिक (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से कहा मैं तौबः की क़ुबूलियत के सिल्सिले में चाहता हूँ कि अपना तमाम माल अल्लाह और उस के रसूल के लिए सद्क़ः करूँ। नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया! अपना कुछ माल अपने पास रखो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है।" **(बुख़ारी)**

इन ह़ज़रात के क़बूले तौबः के ज़िक्र से पहले नबी करीम (सल्ल०) और मुहाजिरीन अन्सार के क़ुबूले तौबः का ज़िक्र उन्हें यह यक़ीन दिलाने के लिए किया गया था कि उन की तौबः क़ुबूल कर ली गई, जिस तरह़ नबी करीम (सल्ल०) और उन बड़े सह़ाबा-ए-किराम की तौबः क़ुबूल कर ली गई और वह लोग भी अल्लाह के मक़्बूल बन्दों में शामिल कर लिये गये और यह कि अल्लाह का हर बन्दा चाहे वह नबी हो या वली, हर दम और हर ह़ाल में तौबः व इस्तिग़्फ़ार का मुह़ताज है और यह कि तौबः करते रहना अम्बिया व नेक लोगों का तरीक़ा है।

आयत नं० (117) में سَاعَةِ الْعُسْرَةِ से मुराद ग़ज़्व-ए-तबूक का सफ़र है। 'इब्ने अ़रफ़ा' कहते हैं कि ग़ज़्व-ए-तबूक के जैश को 'जैशुलू उ़स्रह' (लश्कर तंगह़ाली) कहा गया, इसलिए कि नबी करीम (सल्ल०) ने इस फ़ौज को उस वक़्त सफ़र का हुक्म दिया था जब सह़ाबा शदीद तंगह़ाली के दौर से गुज़र रहे थे न सवारी थी न ज़ादे सफ़र और न पानी, सख़्त गर्मी और क़ह़त साली (सूखा) का ज़माना था।

इस वाक़िये से मुसलमानों को बहुत सी नसीह़तें ह़ासिल होती हैं, सब से बड़ी नसीह़त यह मिलती है कि सच्चाई में ख़ैर है और झूठ दुनिया व आख़िरत की तमाम नाकामियों की बुनियाद है, जिन मुनाफ़िक़ीन ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) के सामने झूठ से काम लिया, अल्लाह तआ़ला ने उन का पर्दा फ़ाश किया और आख़िरत में उन का ठिकाना जहन्नम बताया और इन तीनों ह़ज़रात ने जुराअत-ए-ईमानी से काम लेते हुए सच्चाई को अपनाया और अपनी ग़ल्ती का एतिराफ़ कर लिया, तो अल्लाह तआ़ला ने उनकी तौबः क़ुबूल कर ली और इस का एलान रहती दुनिया तक के लिए क़ुर्आन करीम में कर दिया। आयत नं० (119) में इसी तरफ़ इशारा किया गया है।

'अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद' (रज़ि०) ने इस आयत की तिलावत की और कहा कि झूठ बोलने की इजाज़त किसी के लिए किसी भी ह़ाल में नहीं है। सह़ीह़ैन में 'अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद' (रज़ि०) ने इस आयत की तिलावत की और कहा कि झूठ बोलने की इजाज़त किसी के लिए भी किसी ह़ाल में नहीं है। सह़ीह़ैन में अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जो आदमी हमेशा झूठ बोलता रहता है, वह अल्लाह के नज़्दीक झूठा लिख दिया जाता है"।

ह़ज़रत कअ़ब (रज़ि०) फ़रमाते हैं, "अल्लाह की क़सम! मैं नहीं जानता अल्लाह ने किसी को सच कहने की तौफ़ीक़ देकर उस पर इतना एह़सान किया हो जैसा मुझ पर किया।" मैंने उस वक़्त से लेकर आज तक जानबूझकर कभी झूठ नहीं बोला, अल्लाह ने इसी बारे में यह आयत उतारी। **(बुख़ारी)**

120 مَا كَانَ لِأَهْلِ الْمَدِينَةِ وَمَنْ حَوْلَهُمْ مِنَ الْأَعْرَابِ أَنْ يَتَخَلَّفُوا عَنْ رَسُولِ اللَّهِ وَلَا يَرْغَبُوا بِأَنْفُسِهِمْ عَنْ
نَفْسِهِ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ لَا يُصِيبُهُمْ ظَمَأٌ وَلَا نَصَبٌ وَلَا مَخْمَصَةٌ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا يَطَئُونَ مَوْطِئًا يَغِيظُ
الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُونَ مِنْ عَدُوٍّ نَيْلًا إِلَّا كُتِبَ لَهُمْ بِهِ عَمَلٌ صَالِحٌ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ۝

नबी करीम (सल्ल०) के साथ ग़ज़्वा में निकलने की मज़ीद ताकीद की गई है और उन लोगों को नसीह़त की गई है जो ग़ज़्व-ए-तबूक में शरीक नहीं थे। मदीना के इर्द-गिर्द रहने वाले बद्दू से मुराद मुज़ैना, जुहैनिया, अश्जअ़, अस्लम और ग़फ़्फ़ार वग़ैरह क़बीले हैं। इन क़बायल को ख़ुसूसी तौर पर इसलिए डाँटा गया है कि उन्हें ग़ज़्वा के लिए रसूलुल्लाह (सल्ल०) का हुक्म पहुँच चुका था और इसलिए भी कि ईमान सादिक़ और क़ुर्ब व ज्वार का तक़ाज़ा था कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) का साथ देने के लिए हर वक़्त तैयार रहते और अपनी जान देकर उन के जान की ह़िफ़ाज़त करते और हर क़दम पर और हर तक्लीफ़ पर जो उन्हें इस राह में पहुँचती और अल्लाह की राह में हर ख़र्च के बदले अज्र व सवाब ह़ासिल करते।

121 وَلَا يُنفِقُونَ نَفَقَةً صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً وَلَا يَقْطَعُونَ وَادِيًا إِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢١﴾

'मुस्नद अह़मद' में 'अ़ब्दुल्लाह बिन इमाम अह़मद' ने अ़ब्दुर्रह़मान सल्मी से रिवायत की है कि 'उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान' (रज़ि०) ने ग़ज़्व-ए-तबूक के फ़ौजी तैयारी के लिए एक हज़ार दीनार और तीन सौ ऊँट पूरे साज़ो सामान के साथ सद्क़ः किया था।

وَلَا يَقْطَعُونَ وَادِيًا की तफ़्सीर करते हुए 'क़तादा' कहते हैं कि अल्लाह की राह में जिहाद करने वाला, अपने अहलो अ़याल से जितना दूर हो जाता है, उतना ही अल्लाह से क़रीब होता जाता है।

122 وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُونَ لِيَنفِرُوا كَافَّةً ۚ فَلَوْلَا نَفَرَ مِن كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَائِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوا فِي الدِّينِ وَلِيُنذِرُوا قَوْمَهُمْ إِذَا رَجَعُوا إِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُونَ ﴿١٢٢﴾

जब इसी सूरत की आयत नं० (41) انفِرُوا خِفَافًا وَثِقَالًا नाज़िल हुई जिस में तमाम मुसलमानों को जिहाद में निकलने की तर्ग़ीब दिलाई गई और वह आयतें नाज़िल हुईं जिन में ग़ज़्व-ए-तबूक में शरीक न होने वालों को डाँटा गया तो आ़म सहाबा ने समझा कि जिहाद के लिए तमाम लोगों को निकलना है और किसी ह़ाल में पीछे नहीं रहना है तो यह आयत नाज़िल हुई, कि जिहाद के लिए निकलने का हुक्म मदनी ज़िन्दगी के शुरु में था जब मुसलमानों की तअ़दाद कम थी और जब मुसलमानों की तअ़दाद काफ़ी हो गई तो मस्लह़त का तक़ाज़ा यह है कि मदीना और दीगर मुसलमान बस्तियों को ख़ाली करके सभी लोग न चले जाएँ, बल्कि हर बड़ी जमाअ़त से एक गिरोह जिहाद के लिए निकले, जिन से जिहाद की ज़रूरत पूरी हो और कुछ लोग अपने शहर और बस्ती में भी रहें ताकि मुजाहिदीन के घर वालों की देखभाल करें, उन की ज़रूरतें पूरी करें और शहर व बस्ती की भी निगरानी करते रहें और जो लोग रसूलुल्लाह (सल्ल०) के साथ जिहाद के लिए जाएँ वह जिहाद की कार्रवाईयों के साथ-साथ उन से इ़ल्मी फ़ायदा उठाएँ, क़ुर्आन व सुन्नत का इ़ल्म ह़ासिल करते रहें और जब अपनी-अपनी बस्तियों और शहरों में वापस पहुँचे तो जो कुछ इस सफ़र में रसूलुल्लाह (सल्ल०) से सीखा है, लोगों को सिखाएँ।

123 يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قَاتِلُوا الَّذِينَ يَلُونَكُم مِّنَ الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوا فِيكُمْ غِلْظَةً ۚ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ﴿١٢٣﴾

अल्लाह तआ़ला ने जिहाद के सिल्सिले में यह हुक्म दिया कि पहले उन काफ़िरों से जंग की जाए जो मदीना के क़रीब रहते हैं और जब वह इस्लाम क़ुबूल कर लें तो आगे बढ़ा जाए और उन के बाद रहने वाले काफ़िरों से जंग की जाए। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इसी उसूल को अपनाया, चुनांचे आप की जिहादी कोशिशों के नतीजे के तौर पर आप (सल्ल०) की ज़िन्दगी के आख़िरी दिनों में पूरा अ़रब मुश्रिकीन से पाक हो गया, अहले किताब तक दअ़वते इस्लाम पहुँचाने के लिए तबूक तक गये और वहाँ बीस दिन रहने के बाद वापस हुए और इस ग़ज़्वे से इस्लाम को अ़ज़ीम फ़ायदे ह़ासिल हुए जिन की कुछ तफ़्सील ऊपर गुज़र चुकी है।

नबी करीम (सल्ल०) की वफ़ात के बाद ख़ुलफ़-ए-राशिदीन ने अपने-अपने दौर में जिहाद की

तह़रीक को जारी रखा यहाँ तक कि उर्दुन, शाम, इराक़ और फ़ारस के इलाक़े में इस्लाम फैल गया और इस्लाम का झंडा हर तरफ़ लहराने लगा।

आयत के आख़िर में अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों को हुक्म दिया कि काफ़िरों के साथ जिहाद करते हुए किसी क़िस्म की नर्मी का मुज़ाहिरा न करें, वरना उस के ख़तरनाक नतायज निकल सकते हैं। मुसलमान अपने मुसलमान भाई के लिए नर्म और काफ़िरों के लिए सख़्त होता है, अल्लाह तआ़ला ने क़ुर्आन करीम की बहुत सी आयात में इस की ताकीद फ़रमाई है।

124-125 وَإِذَا مَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ فَمِنْهُم مَّن يَقُولُ أَيُّكُمْ زَادَتْهُ هَٰذِهِ إِيمَانًا ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا فَزَادَتْهُمْ
إِيمَانًا وَهُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿﴾ وَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا إِلَىٰ رِجْسِهِمْ
وَمَاتُوا وَهُمْ كَافِرُونَ ﴿﴾

जैसा कि ऊपर की आयतों के पढ़ने से मालूम हुआ कि इस सूरत में मुनाफ़िक़ीन की ज़ाहिरी और अन्दरूनी ख़बासतों के बहुत से ह़ालात बयान किये गये हैं। इसीलिए इस सूरत का एक नाम "फ़ाज़िह़ा" भी है यानी ऐसी सूरत जो मुनाफ़िक़ीन के ऐ़बों को बयान करती है। नीचे की चार आयतें इसी सिल्सिले की आख़िरी कड़ी है।

क़ुर्आन करीम की जब कोई नई सूरत मुनाफ़िक़ीन की ग़ैर मौजूदगी में नाज़िल होती और उन्हें ख़बर होती तो आपस में बैठकर मज़ाक़ उड़ाते और कहते कि भई, इस सूरत के नुज़ूल के बाद तुम में से किस के ईमान में इज़ाफ़ा हुआ है?!

आयत का एक माने यह भी हो सकता है कि मुनाफ़िक़ीन बाज़ मुसलमानों से कहा करते थे कि यह जो नई सूरत नाज़िल हुई है, तो कौन सा तुम्हारे ईमान में इज़ाफ़ा हो गया है, इसमें उन का मक़्सद इस्लाम से दूर करना होता था यानी यह कोई ऐसा दीन नहीं है जिस के लिए आदमी दिन का चैन और रात का सुकून खोये और अपनी जान जोखिम में डाले।

अल्लाह तआ़ला ने उन के इस मज़ाक़ का यह जवाब दिया कि हाँ, क़ुर्आन की यह आयतें और यह सूरतें अहले ईमान का ईमान बढ़ा देती हैं, इस लिए कि हर सूरत और हर आयत में कोई ऐसी मुफ़ीद बात और नसीह़त होती है जो उन्हें पहले से मालूम नहीं होती और वह अपने ईमान व इख़्लास की वजह से उन दुनियावी और दीनी फ़ायदे को पाकर दिल से ख़ुश होते हैं। जम्हूर (अक्सर) मुह़द्दिसीन की राय यही है कि मोमिन के ईमान में ज़्यादती होती है। अगर यह कहा जाए कि अ़मल सालेह़ ईमान में दाख़िल है, तो यह बात वाज़ेह़ है कि आदमी जितना ज़्यादा अ़मल करता जाता है उस का ईमान बढ़ता जाता है और अगर मान लिया जाए कि ईमान सिर्फ़ दिल से यक़ीन करने का नाम है तो भी बात साफ़ है, इसलिए कि अम्बिया-ए-किराम और सह़ाबा व रसूलों का ईमान आ़म मुसलमानों के ईमान से यक़ीनन ज़्यादा होता है।

लेकिन मुनाफ़िक़ीन का ह़ाल मोमिनों से बिल्कुल अलग होता है। जब-जब क़ुर्आन की कोई सूरत

नाज़िल होती है, उन का निफ़ाक़ बढ़ता जाता है। इस से बढ़कर उन की बद्बख़्ती और क्या हो सकती है कि जो चीज़ अहले ईमान के दिलों को ज़िन्दग़ी देती है, वही उन के दिलों को और मुर्दा बना देती है और बिल्आख़िर उन की मौत कुफ़्र पर होती है।

126 أَوَلَا يَرَوْنَ أَنَّهُمْ يُفْتَنُونَ فِي كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً أَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوبُونَ وَلَا هُمْ يَذَّكَّرُونَ ۝

अल्लाह तआ़ला की ओर से मोमिनों के लिए दअ़वते देते हैं कि ज़रा उन मुनाफ़िक़ीन की कम अ़क़्ली को तो देखो कि हर साल एक या दो बार उन के निफ़ाक़ का पर्दाफ़ाश होता रहता है, हर साल एक या दो बार रसूलुल्लाह (सल्ल०) और मोमिनीन जिहाद करते हैं और उन्हें फ़तेह़ व कामियाबी ह़ासिल होती है फिर भी वह कोई नसीह़त ह़ासिल नहीं करते कि तौबः करके सच्चे दिल से इस्लाम क़ुबूल कर लें।

127 وَإِذَا مَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ نَّظَرَ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ هَلْ يَرَاكُم مِّنْ أَحَدٍ ثُمَّ انصَرَفُوا ۚ صَرَفَ اللَّهُ قُلُوبَهُم بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُونَ ۝

जब कोई सूरत मुनाफ़िक़ीन की मौजूदगी में नाज़िल होती है तो बतौर मज़ाक़ के और वह्य आसमानी का इन्कार करते हुए आँखों के इशारों से बातें करते हैं और कहते हैं कि अब हम से बर्दाश्त नहीं हो रहा है, हंसी रोक कर के थक गये, डर है कि हमें कोई हँसता न देख ले, इसलिए देखो तो सही, अगर हमें कोई मुसलमान न देख रहा हो तो जल्दी से यहाँ से निकल चलें। चुनांचे वह वहाँ से कुफ़्र व निफ़ाक़ की मज़ीद ग़न्दग़ी के साथ अपने घरों को चले जाते हैं। इस ज़ालिमाना और ग़ैर मुन्सिफ़ाना रवैये का अन्जामे बद् उन्हें यह देखना पड़ा कि दिलों के मालिक अल्लाह तआ़ला ने उन के दिलों को क़ुबूले ह़क़ से मह़रूम कर दिया।

128 لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ أَنفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُم بِالْمُؤْمِنِينَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ۝

नबी करीम (सल्ल०) का होना उम्मते इस्लामिया पर अल्लाह तआ़ला का एह़साने अ़ज़ीम (बड़ा एह़सान) है। इस सूरत को इसी नेअ़मत के ज़िक्र ख़ैर पर किया गया है। अल्लाह तआ़ला ने तमाम क़बायले अ़रब को मुख़ातब करके फ़रमाया कि उस ने अपने पैग़ाम के लिए तुम पर मेहरबानी करते हुए एक ऐसे इन्सान को चुना है जो तुम में से हैं और तुम्हारी ज़बान बोलते हैं। 'इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा' कहते हैं कि नबी करीम (सल्ल०) का हर अ़रब के क़बीले से ख़ानदानी तअ़ल्लुक़ था।

'सह़ीह़ मुस्लिम' और 'सुनन तिर्मिज़ी' की रिवायत है कि नबी करीम (सल्ल०) ने फ़रमाया, "अल्लाह तआ़ला ने कनाना को इस्माईल की औलाद से चुन लिया और क़ुरैश को 'कनाना' की औलाद से और 'बनी हाशिम' को क़ुरैश से।"

'तिर्मिज़ी' ने अपनी किताब "अल् मुह़दसिल् फ़ासिल" में 'अ़ली बिन तालिब' (रज़ि०) से रिवायत की है कि नबी करीम (सल्ल०) ने फ़रमाया, "मैं निकाह़ के ज़रिये पैदा हुआ हूँ। आदम से लेकर मेरे बाप माँ तक मेरी पैदाइश में ज़िना दाख़िल नहीं हुआ।" 'इब्ने जरीर' 'तबरी' ने अपनी तफ़्सीर में इसे

ह़सन कहा है।

● नबी करीम (सल्ल०) की दूसरी सिफ़त यह बताई गई कि आप पर हर वह बात भारी पड़ती है जिस से उम्मते मुस्लिमा को तक्लीफ़ पहुँचती हो।

● आप की तीसरी सिफ़त यह है कि आप दिल से तमन्ना करते हैं कि आप की उम्मत जहन्नम में न डाली जाए और यह भी तमन्ना करते कि दुनिया व आख़िरत की हर भलाई की तरफ़ अपनी उम्मत की रहनुमाई कर दें।

129 فَإِن تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۖ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ

इस आयत में नबी करीम (सल्ल०) को मुख़ातब करके अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि आप की उन तमाम ख़ूबियों के बावजूद अगर अ़रब के लोग आप की दअ़वत को क़ुबूल न करें, तो आप कह दीजिए कि मैं तुम्हारे कामों से बरी हूँ और अपना और तुम्हारा मामला अल्लाह के ह़वाले करता हूँ, जो हर ह़ाल में मेरे लिए काफ़ी है।

'सुनन अबी दाऊद' में सह़ीह़ अबूदाऊद (रज़ि०) से (मौक़ूफ़न) रिवायत है कि जो आदमी हर दिन सुबह़ व शाम حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۖ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ सात बार पढ़ लिया करेगा, अल्लाह तआ़ला उस की तमाम मुश्किलात को आसान कर देगा और उस की ह़ाजतों को पूरी करेगा।

(भाग-10)

सूर-ए-यूनुस

(सूरः नं.10)

आयत नं० 1 से 14 तक

الٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ۝ اَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا اَنْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى رَجُلٍ مِّنْهُمْ اَنْ اَنْذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنَّ لَهُمْ
قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ قَالَ الْكٰفِرُوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ مُّبِيْنٌ ۝ اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ
ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ ؕ مَا مِنْ شَفِيْعٍ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ اِذْنِهٖ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝ اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ
جَمِيْعًا ؕ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ؕ اِنَّهٗ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ بِالْقِسْطِ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ
وَّعَذَابٌ اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ۝ هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ الشَّمْسَ ضِيَآءً وَّالْقَمَرَ نُوْرًا وَّقَدَّرَهٗ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ وَالْحِسَابَ ؕ
مَا خَلَقَ اللّٰهُ ذٰلِكَ اِلَّا بِالْحَقِّ ۚ يُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝ اِنَّ فِي اخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَّقُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا وَرَضُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَاطْمَاَنُّوْا بِهَا وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنْ اٰيٰتِنَا غٰفِلُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمُ
اُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ يَهْدِيْهِمْ رَبُّهُمْ بِاِيْمَانِهِمْ ۚ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ فِيْ
جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝ دَعْوٰىهُمْ فِيْهَا سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ ۚ وَاٰخِرُ دَعْوٰىهُمْ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَلَوْ يُعَجِّلُ اللّٰهُ
لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ بِالْخَيْرِ لَقُضِيَ اِلَيْهِمْ اَجَلُهُمْ ؕ فَنَذَرُ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ۝ وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ
الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنْۢبِهٖٓ اَوْ قَاعِدًا اَوْ قَآئِمًا ۚ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهٗ مَرَّ كَاَنْ لَّمْ يَدْعُنَآ اِلٰى ضُرٍّ مَّسَّهٗ ؕ كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِيْنَ مَا كَانُوْا
يَعْمَلُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا ۙ وَجَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ وَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ
الْمُجْرِمِيْنَ ۝ ثُمَّ جَعَلْنٰكُمْ خَلٰٓئِفَ فِي الْاَرْضِ مِنْۢ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ۝

अनुवाद-

(1) अलिफ़्- लाम्- रा, यह हिक्मत भरी (ज्ञान से परिपूर्ण) किताब की आयातें हैं। (2) क्या लोगों को इस बात पर आश्चर्य है कि 'हमने' उन्हीं में से एक आदमी के पास वह्य (ईशवाणी) भेजी कि लोगों को सचेत कर दें और ईमान वालों को खुशख़बरी दे दें कि उनके लिए उनके रब के पास सच्चा दर्जा है, काफ़िर कहते हैं, ''यह तो खुला हुआ जादूगर है"। (3) तुम्हारा रब 'वही' अल्लाह है, जिसने आसमानों और ज़मीन को छः दिन में पैदा किया, फिर अर्श (राज सिंहासन) पर विराजमान होकर व्यवस्था चला रहा है, उसकी इजाज़त के बिना कोई सिफ़ारिश करने वाला नहीं है, 'यही' अल्लाह तुम्हारा रब है तो उसी की इबादत करो, क्या तुम फिर भी नहीं समझते? (4) 'उसी' की ओर तुम सब को लौटना है, यह अल्लाह का सच्चा वादा है; 'वही' तो ख़ल्क़त (सृष्टि) को पहली बार पैदा करता है; फिर वही उसको दोबारा पैदा करेगा, ताकि जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म (आ़माल) किये उन्हें इन्साफ़ के साथ बदला दे; और जिन्होंने इन्कार किया उनके लिए खौलता हुआ पानी और दर्दनाक अ़ज़ाब है, उस इन्कार के बदले में जो वे करते थे। (5) 'वही' तो है जिसने सूरज को चमकता हुआ बनाया और चाँद को रोशन बनाया, और उसकी (घटने बढ़ने की) मंज़िलें तय कर दीं, ताकि तुम वर्षो की गिनती और हिसाब मालूम कर सको; अल्लाह ने यह सब कुछ बिना किसी उद्‌देश्य के नहीं पैदा किया, 'वह' अपनी निशानियों को उनके के लिए खोल-खोल कर बयान करता है, जो (कुछ) इल्म रखते हैं, (6) रात और दिन के उलट-फेर में, और जो कुछ अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन

में पैदा किया है उसमें डर रखने वालों के लिए निशानियाँ हैं। (7) जिन लोगों को ‘हम’ से मुलाक़ात की उम्मीद ही नहीं, और वह दुनिया की ज़िन्दगी पर राज़ी और उसी पर संतुष्ट हो गये, और जो ‘हमारी’ निशानियों से ग़ाफ़िल हैं; (8) यही लोग हैं जिनका ठिकाना आग है, उसके बदले में जो वे करते हैं। (9) जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये, उनका रब उनके ईमान की वजह से उनको कामियाबी की मंज़िलों तक पहुँचाएगा, उनके नीचे नहरें बह रही होंगी नेअ़मत के बाग़ों में, (10) वहाँ उनकी पुकार यह होगी कि पाक है ‘तू’ ऐ अल्लाह’’ और वहाँ उनकी आपसी दुआ़ का शब्द ‘सलाम’ होगा, और उनकी पुकार का अन्त इस पर होगा कि ‘‘प्रशन्सा अल्लाह ही के लिए है जो सारे संसार का रब है’’। (11) और अगर अल्लाह लोगों को अ़ज़ाब देने में जल्दी करता, जिस तरह भलाई के मामले में ‘वह’ जल्दी करता है, तो उनकी अवधि पूरी हो चुकी होती, ‘हम’ उन लोगों को, जो ‘हम’ से मिलने की उम्मीद नहीं रखते, छोड़ देते हैं कि अपनी सरकशी में भटकते रहें। (12) और जब इन्सान को कोई तक्लीफ़ पहुँचती है तो ‘हम’ को पुकारता है लेटे भी, और बैठे भी और खड़े भी; फिर जब ‘हम’ उससे उसकी तकलीफ़ को दूर कर देते हैं तो वह ऐसा हो जाता है कि जैसे जो तकलीफ़ उसको पहुँची थी उसके लिए हमें पुकारा ही न था; इसी तरह हद से गुज़रने वालों को उनके आमाल सजा कर (शोभामान) दिखाए गये हैं। (13) और तुमसे पहले हम कितनी ही नस्लों को हलाक कर चुके हैं, जबकि उन्होंने ज़ुल्म किया, और उनके रसूल उनके पास खुली निशानियाँ लेकर आए थे, और वे ऐसे थे ही नहीं कि ईमान ले आते, ‘हम’ इसी तरह बदला दिया करते हैं मुजरिमों को। (14) फिर ‘हमने’ उनके बाद तुम्हें ज़मीन में ख़लीफा (उत्तराधिकारी) बनाया, ताकि ‘हम’ देखें कि तुम कैसे अ़मल करते हो?

आयत नं० 1 से 14 तक की व्याख्या

1-4

الٓرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ۝ اَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا اَنْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى رَجُلٍ مِّنْهُمْ اَنْ اَنْذِرِ النَّاسَ
وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنَّ لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؔ قَالَ الْكٰفِرُوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ مُّبِيْنٌ ۝
اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ ؕ
مَا مِنْ شَفِيْعٍ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ اِذْنِهٖ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝ اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا ؕ
وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ؕ اِنَّهٗ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ بِالْقِسْطِ ؕ وَالَّذِيْنَ
كَفَرُوْا لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ۝

तौहीद व रिसालत

यह सूरः यूनुस के शुरु की आयते हैं। इस की शुरुआ़त अलिफ़, लाम, रा, से है। जो ‘हुरूफ़ मुक़त्तआ़त’ में से है। यह बह़स सूरः बक़रः के शुरु में गुज़र चुकी है। इस के बाद फ़रमाया-

تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ (यह किताब ह़कीम की आयतें हैं) मुफ़स्सिरीन-ए-किराम ने ह़कीम के दो अर्थ लिखे हैं- पहली ह़िक्मत वाली किताब दूसरी मुह़कम।

‘साह़िबे मुआ़लिमुत्तन्ज़ील’ पेज नं० 342 भाग 2 ने लिखा है कि ‘ह़कीम’ ह़ाकिम के माने में है यानी

यह उस किताब की आयात है जो फ़ैसला देने वाली हैं। इस के बाद लोगों के तअ़ज्जुब का ज़िक्र फ़रमाया اَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا क्या लोगों के लिए यह तअ़ज्जुब की बात है कि हम ने एक आदमी की तरफ़ वह्य भेजी जो उन्हीं में से है?

यहाँ 'अन्नास' से कुफ़्फ़ारे अ़रब और ख़ासतौर से अहले मक्का मुराद हैं, उन्होंने पहले तो इस बात पर तअ़ज्जुब किया कि इन्सान को रसूल बनाया गया और दूसरे उन्हें इस पर तअ़ज्जुब हुआ कि 'अबू तालिब' के यतीम भतीजे को रसूल बना दिया गया, उन के तअ़ज्जुब को यहाँ रद्द फ़रमाया कि इस में कोई तअ़ज्जुब की बात नहीं है क्योंकि इन्सानों की तरफ़ उन्हीं में से किसी इन्सान को भेजा जाना अ़क़्ल और समझ के मुताबिक़ है, ताकि लोग अ़मली तौर पर अह़काम सीखें और अ़मल करें।

दूसरा जो तअ़ज्जुब था वह भी बेवक़ूफ़ी थी। यह लोग समझते थे कि कोई बड़ा मालदार रईस और चौधरी को नबी होना चाहिए था, चूंकि दुनिया वालों को दुनिया वालों ही में बड़ाई नज़र आती है और दुनिया वालों ही को आगे बढ़ाना चाहते हैं इसलिए उन्होंने ऐसी जाहिलाना बात की। माल व दौलत को अल्लाह का मह़बूब बन्दा होने में कोई दख़ल नहीं और नुबूव्वत जो अल्लाह तआ़ला का ख़ास फ़ज़्ल और ख़ास देन है इस में यह देखना कि जिसे नुबूव्वत मिली है उस के पास दुनियावी माल व मताअ़ है या नहीं जिहालत है।

नबी में अच्छे अख़्लाक़ का होना ज़रूरी है जिस की दअ़वत में ज़रूरत होती है। अहले दुनिया अच्छे अख़्लाक़ से ख़ाली होते हैं उन को कैसे नुबूव्वत दी जाए? फिर जिस को अल्लाह ने नवाज़ दिया उस से कौन आगे बढ़ने वाला है। अल्लाह ने जिस को चाहा नुबूव्वत व रिसालत से नवाज़ दिया, इस में किसी को कोई एतिराज़ करने का कोई ह़क़ नहीं।

इस यतीम 'अबू तालिब' की दअ़वत पूरी दुनिया में फैली, उस की उम्मत के क़ब्ज़े में बड़े मुल्क आए अ़रब और अ़जम ने उस का दीन क़ुबूल किया, क़ैसर व क़िस्रा के ख़ज़ाने उम्मत के क़द्मों में ह़ाज़िर हो गए, पुरानी तमाम आसमानी किताबों को इस किताब ने मन्सूख़ (निरस्त) कर दिया जो अबू तालिब के यतीमी पर नाज़िल हुई और तमाम पिछले दीन रद्द हो गये।

नबी अक्रम (सल्ल०) को ऐसा काम बताया जो बहैसियत नबी और रसूल होने के आप के सुपुर्द किया गया था और फ़रमायाः-

اَنْ اَنْذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنَّ لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ कि जिस शख़्स की रिसालत और नुबूव्वत पर तअ़ज्जुब कर रहे हैं उसे हम ने इस बात का हुक्म दिया है कि लोगों को डराएँ (कि जो नाफ़रमान होंगे वह अ़ज़ाब में मुब्तिला होंगे) और यह कि जो लोग ईमान क़ुबूल करें उन्हें इस बात की बशारत दें कि उन के रब के पास उन के लिए बड़ा दर्जा है।

शब्द क़दम तो पैर के लिए बोला जाता है चूंकि इन्सान की कोशिश में क़दम (पैर) को इस्तेमाल किया जाता है इसलिए बुलन्द दर्जा बताने के लिए शब्द सिद्क़ इस्तेमाल फ़रमाया, सिद्क़ सच्चाई को कहते हैं। 'क़दमे सिद्क़' से सच्चाई का क़दम यानी वह मर्तबः मुराद है जिस के मिलने में कोई शक नहीं। (सूरः

क़मर आयत नं० 54, 55) में इर्शाद फ़रमायाः-

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّٰتٍ وَنَهَرٍ ۝ فِي مَقْعَدِ صِدْقٍ عِندَ مَلِيكٍ مُّقْتَدِرٍ ۝

(कि बिलाशुब्हा मुत्तक़ी लोग बाग़ीचों और नहरों में होंगे सच्चाई के मक़ाम में क़ुद्रत वाले बादशाह के पास होंगे।)

वहाँ अहले तक़्वा के मक़ाम को मक़्अदे सिद्क़ फ़रमाया है। सच्चे ईमान और सच्चे अक़्वाल वालों के लिए क़दमे सिद्क़ और मक़्अदे सिद्क़ ही होना चाहिए।

फिर फ़रमाया قَالَ الْكَٰفِرُونَ إِنَّ هَٰذَا لَسَٰحِرٌ مُّبِينٌ

(जिस नबी को अन्ज़ार और तब्शीर का काम सुपुर्द किया उस के बारे में मुन्करीन ने कह दिया कि यह खुला हुआ जादूगर है।)

यह बात उन लोगों ने क़ुर्आन करीम से प्रभावित होकर कही। जब क़ुर्आन की अहमियत सामने आई तो इस जैसा बनाकर तो न ला सके लेकिन इस को जादू बता दिया और रसूलुल्लाह (सल्ल०) को जादूगर कहने लगे।

हज़रात अम्बिया-ए-किराम (अ़लै०) के साथ उनकी क़ौमों का यही मामला रहा है। सूरः ज़ारियात (आयत नं० 52) में फ़रमाया كَذَٰلِكَ مَا أَتَى الَّذِينَ مِن قَبْلِهِم مِّن رَّسُولٍ إِلَّا قَالُوا سَاحِرٌ أَوْ مَجْنُونٌ

(इसी तरह की बात इन से पहले जो भी रसूल आए तो लोगों ने उनके बारे में यह ज़रूर कहा कि यह जादूगर या दीवाना है।) इस के बाद अल्लाह तआ़ला का अहम गुण ख़ालिक़ियत (पैदाइश) का ज़िक्र फ़रमाया कि बिलाशुब्हा अल्लाह तआ़ला ने आसमानों और ज़मीनों को छः दिन में पैदा फ़रमाया।

सूरः फ़ुर्क़ान रुकूअ़ 4 में और सूरः अलिफ़ लाम० मीम० सज्दः रुकूअ़ नं० 1 में और सूरः क़ाफ़ रुकूअ़ नं० 3 में लफ़्ज़ **وما بينهما** ज़्यादा भी है यानी अल्लाह तआ़ला ने आसमानों को और ज़मीन को और जो कुछ उनके दर्मियान है छः दिन में पैदा फ़रमाया। अल्लाह तआ़ला को ज़रा सी देर में पलक झपकने से कम मुद्दत में सारे आसमानों और ज़मीनों और उनके दर्मियान की चीज़ों को पैदा करने की क़ुद्रत है, लेकिन फिर भी छः दिन में पैदा फ़रमाया। मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि इस में लोगों को बताया गया है कि वह अपने हालात में जल्दी से काम न लें, बल्कि सोच समझकर काम करें।

قال صاحب الروح جلد ۲۴ صفحه ۲۴ وفى خلقها مع القدرة التامة على ابداعها فى طرفة عين اعتبار للنظار وحث لهم على التأنى فى الاحوال والاطوار.

ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ (फिर अ़र्श पर मुस्तवा हुआ) **استواء على العرش** के बारे में सूरः अअ़राफ़ की आयत إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي (रुकूअ़ 7) में विस्तारपूर्वक देखा जा सकता है।

फिर फ़रमाया يُدَبِّرُ الْأَمْرَ (अल्लाह तआ़ला तमाम हुक्मों की तद्बीर फ़रमाता है।)

सूरः अलिफ़ लाम० मीम० सज्दः में फ़रमाया يُدَبِّرُ الْأَمْرَ مِنَ السَّمَاءِ إِلَى الْأَرْضِ

(वह आसमान से लेकर ज़मीन तक हर हुक्म की तद्बीर करता है) यानी तमाम हुक्म उस की तद्बीर के मुताबिक़ और हिक्मत के अनुसार और उसी की क़ज़ा व क़द्र के मुताबिक़ वजूद में आते हैं।

قال صاحب الروح والمراد به هاهنا التقدير الجارى علىٰ وفق الحكمة والرجه الاتم الاكمل، اخراج ابوالشيخ وغيره عن مجاهدان المعنىٰ يقضى الامر والمرادبالامر امرالكائنات علويها وسفليها حتّٰى العرش الىٰ آخر قال جلد ١١ صفحه ٦٥)

مَا مِنْ شَفِيْعٍ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ اِذْنِهٖ ؕ

(उस की इजाज़त के बग़ैर कोई भी सिफ़ारिश करने वाला नहीं है।)

उस के यहाँ किसी को सिफ़ारिश करने की हिम्मत नहीं। हाँ, वह जिसे चाहे इजाज़त दे दे वही सिफ़ारिश कर सकेगा और यह सिफ़ारिश केवल अहले ईमान के लिए होगी।

सूरः मोमिन (**आयत नं० 18**) में फ़रमाया مَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ حَمِيْمٍ وَّلَا شَفِيْعٍ يُّطَاعُ ۞

(ज़ालिमों के लिए न कोई दोस्त होगा और न कोई सिफ़ारिश करने वाला, जिस की बात मानी जाए।)

फिर फ़रमाया ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؕ वह अल्लाह तुम्हारा रब है सो तुम उसकी इ़बादत करो।

اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ (क्या तुम नसीह़त ह़ासिल नहीं करते?)

اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا ؕ (उसी की तरफ़ तुम सब को लौट कर जाना है।)

وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ؕ (अल्लाह ने वादा फ़रमाया है उस का वादा ह़क़ है।)

उस के इ़ल्म में क़ियामत का जो वक़्त मुक़र्रर है वह वक़्त आ जाएगा तो सब ज़िन्दा हो जाएँगे। फिर पेशियाँ होंगी, ह़िसाब देना होगा। क़ियामत के आने में जो देर लग रही है उस देर की वजह से कोई यह न समझे कि वह नहीं आएगी, अल्लाह का वादा सच्चा है जो पूरा होकर रहेगा। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमायाः-

ان الآخرة وعد صادق يحكم فيها ملك عادل قادر

(बेशक आख़िरत का वादा सच्चा वादा है इस में वह बादशाह फ़ैसला फ़रमाएगा जो न्यायी भी है और पूरी क़ुद्‌रत (सामर्थ्य) वाला भी है। (**मिश्कातुल् मसाबीह़ पेज नं० 445**)

اِنَّهٗ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ यानी बिलाशुब्हा वह मख़्लूक़ को पैदा करता है फिर (मौत देकर) दोबारा ज़िन्दा फ़रमा देगा। इस में क़ियामत के इन्कार करने वालों के उस सवाल का जवाब है कि क़ब्रो में जाकर चूरा-चूरा हो जाने के बाद कैसे ज़िन्दा होंगे। उन लोगों को बता दिया कि जिस ने पहले पैदा फ़रमाया, वही दोबारा ज़िन्दग़ी अ़ता फ़रमाएगा।

सूरः रूम में फ़रमाया وَهُوَ الَّذِىْ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَهُوَ اَهْوَنُ عَلَيْهِ ؕ

और वही पहली बार पैदा फ़रमाता है फिर दोबारा ज़िन्दग़ी देगा और यह उस के लिए ज़्यादा आसान है।

यह एतिराज़ करने वालों की समझ के एतिबार से फ़रमाया कि जिस ने पहली बार पैदा फ़रमाया है उसे तो तुम्हारी समझ के मुताबिक़ दोबारा पैदा करना आसान होना चाहिए। ह़ालाँकि उस के लिए शुरु में और बाद में उठाना दोनों बराबर हैं।

इस के बाद ईमान और कुफ़्र वालों का ज़िक्र फ़रमाया لِيَجْزِىَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ بِالْقِسْطِ

(ताकि अल्लाह उन लोगों को इन्साफ़ के साथ बदला दे जो ईमान लाए और नेक अ़मल किये।)

وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ

(और जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन्हें खौलता हुआ गर्म पानी पीने के लिए मिलेगा और उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है इस वजह से कि वह कुफ़्र करते थे।)

सूरः मुहम्मद (**आयत नं० 15**) में उस खौलते हुए गर्म पानी के बारे में फ़रमायाः-

وَسُقُوا مَاءً حَمِيمًا فَقَطَّعَ أَمْعَاءَهُمْ (और उन को गर्म पानी पिलाया जाएगा जो उन की आँतो को काट डालेगा।)

5-6 هُوَ الَّذِي جَعَلَ الشَّمْسَ ضِيَاءً وَالْقَمَرَ نُورًا وَقَدَّرَهُ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوا عَدَدَ السِّنِينَ وَالْحِسَابَ ۚ
مَا خَلَقَ اللَّهُ ذَٰلِكَ إِلَّا بِالْحَقِّ ۚ يُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝ إِنَّ فِي اخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا
خَلَقَ اللَّهُ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَّقُونَ ۝

सूरज और चाँद के ज़रिये गिनती और ह़िसाब

इन आयात में अल्लाह तआ़ला की कु़द्रत का ज़िक्र हुआ है कि सूरज की रौशनी, फिर चाँद की रौशनी को अल्लाह तआ़ला ने रौशनी बनाया। इन की रौशनी का ज़िक्र फ़रमाते हुए सूरज के लिए शब्द 'ज़ियाआ' और चाँद के लिए शब्द 'नूरा' इस्तेमाल किया। 'ज़िया' बड़ी और तेज़ रोशनी को कहते हैं और 'नूर' तेज़ और कमज़ोर हर रौशनी के लिए इस्तेमाल होता है, लिहाज़ा सूरज के लिए शब्द ज़िया इस्तेमाल किया गया, जिसे अल्लाह तआ़ला ने ज़्यादा तेज़ रोशनी दी। जब वह तुलूअ़ (उदय) होता है तो रात चली जाती है और दिन आ जाता है चूंकि चलने-फिरने और कारोबार करने की ज़रूरत होती है इसलिए दिन को बहुत ज़्यादा रौशन और रात को सुकून व आराम के लिए बनाया है। जैसा कि सूरः क़सस (आयत नं० 73) में फ़रमाया-

وَمِن رَّحْمَتِهِ جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا مِن فَضْلِهِ

"और उस की एक यह रह़मत है कि उस ने दिन बनाया और रात बनाई ताकि उस में आराम करो और ताकि तुम अल्लाह के रिज़्क़ को तलाश करो"।

चूंकि आराम व सुकून के लिए धीमी रौशनी की ज़रुरत होती है इसलिए चाँद को कमज़ोर रौशनी अ़ता फ़रमाई, जिस के लिए शब्द नूर प्रयोग फ़रमाया।

फिर फ़रमाया وَقَدَّرَهُ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوا عَدَدَ السِّنِينَ وَالْحِسَابَ ۚ

"और उस के लिए मन्ज़िलें मुक़र्रर कर दीं ताकि तुम कई वर्षों की गिनती मालूम कर लो"।

अल्लाह तआ़ला ने सूरज व चाँद दोनों की रफ़्तार के लिए मन्ज़िलें मुक़र्रर फ़रमाई, उन्हीं मन्ज़िलों को वह तय करते हैं और उन के लिए जो ह़द (सीमा) मुक़र्रर फ़रमाई हैं उन से आगे नहीं निकल सकते। चाँद अपनी मन्ज़िलें उन्तीस या तीस दिन में पूरी करता है और जब पश्चिम की ओर से निकलता है तो महीना शुरु होता है। सूरज की भी मन्ज़िलें मुक़र्रर हैं वह मुक़र्रर हुदूद (सीमाओं) के अन्दर ही सफ़र

कर सकता है। सूरः यासीन आयत नं० 38 से 40 नं० तक में फ़रमायाः-

وَالشَّمْسُ تَجْرِي لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ۚ ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ۝ وَالْقَمَرَ قَدَّرْنَاهُ مَنَازِلَ حَتَّىٰ عَادَ كَالْعُرْجُونِ الْقَدِيمِ ۝
لَا الشَّمْسُ يَنبَغِي لَهَا أَن تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا اللَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ۚ وَكُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ۝

{और सूरज अपने ठिकाने की तरफ़ चलता रहता है यह मुक़र्रर कर देना है उस का जो ज़बरदस्त, इल्म वाला है और हम ने चाँद के लिए मन्ज़िलें मुक़र्रर कीं यहाँ तक कि वह ऐसा हो जाता है जैसे-खजूर की पुरानी टहनी, न सूरज की हिम्मत है कि चाँद को जा पकड़े और न रात-दिन से पहले आ सकती है और दोनों एक दायरे (धुरी) में तैर रहे हैं।}

अल्लाह तआ़ला ने सूरज व चाँद को पैदा फ़रमाया, उन को रोशनी दी, उन के लिए मन्ज़िलें मुक़र्रर फ़रमाईं। यह अल्लाह तआ़ला की क़ुद्रत के दलायल में से है, फिर जो मन्ज़िलें मुक़र्रर फ़रमाईं इस से बन्दों को यह फ़ायदा भी है कि वह इन के ज़रिये मालूम कर लेते हैं कि फ़लाँ मामले या मुआ़हिदे को कितने साल गुज़र गये और मीआ़द (निर्धारित समय) पूरी होने में कितने साल बाक़ी हैं। चाँद के निकलने और डूबने और घटने-बढ़ने से आ़मतौर पर तारीख़ का पता चल जाता है, पढ़ा लिखा शहरी देहाती हर शख़्स आसानी से महीने के शुरु और आख़ीर को समझ लेता है और शरीअ़त में चाँद के महीनों ही का एतिबार किया जाता है।

ज़कात की अदाएगी भी चाँद के एतिबार से बारह महीने गुज़रने पर फ़र्ज़ होती है और रमज़ान का महीना भी चाँद ही के हिसाब से पहचाना जाता है, जो चाँद के साल (हिज्री) का नवाँ महीना है और ह़ज भी चाँद ही के हिसाब से ज़िलूहिज्ज की नवीं तारीख़ को होता है।

इ़द्दत के महीनों में भी चाँद का एतिबार होता है। इसीलिए फ़ुक़्हा (मुफ़्ती ह़ज़रात) ने लिखा है कि चाँद का हिसाब बाक़ी रखना फ़र्ज़ किफ़ाया है। दुनियावी मामलात में सूरज वाले साल (ईस्वीं) से हिसाब रखा जाए तो यह भी जायज़ है।

फिर फ़रमाया مَا خَلَقَ اللَّهُ ذَٰلِكَ إِلَّا بِالْحَقِّ (अल्लाह तआ़ला ने यह चीज़ें यूँ ही बेफ़ायदा नहीं पैदा फ़रमाई हैं) उन की पैदाइश में बड़ी हिक्मतें हैं।

يُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ

(अल्लाह तआ़ला दानिशमन्दों के लिए ख़ूब स्पष्ट तरीक़े पर दलायल बयान फ़रमाता है) क्योंकि जो बेइ़ल्म हैं या बे इ़ल्मों का तरीक़ा अपनाए हुए हैं वह इन दलीलों से फ़ायदा नहीं उठाते।

फिर फ़रमाया إِنَّ فِي اخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ اللَّهُ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَّقُونَ

(बिलाशुब्हा रात दिन के आगे पीछे आने में और उन सब चीज़ों में जो अल्लाह ने आसमानों और ज़मीनों में पैदा फ़रमाई हैं उन लोगों के लिए दलीलें हैं जो डरते हैं।)

रात के बाद दिन का आना, दिन के बाद रात का आना इस में अल्लाह तआ़ला के क़ुद्रत की स्पष्ट दलीलें मौजूद है। उन का उलट फेर अल्लाह तआ़ला की क़ुद्रत और उस के अख़्तियार से है वह चाहे

तो हमेशा दिन ही दिन रहे और वह चाहे तो हमेशा रात ही रात रहे।

लेकिन उस ने बन्दों की मस्लिहत के लिए ऐसा नहीं किया, आसमानों में और ज़मीन में जो कुछ पैदा फ़रमाया है उस का एक-एक ज़र्रह अपने पैदा करने वाले की तरफ़ मोड़ता है और उसकी वहदानियत (अद्वैतवाद) की गवाही देता है। उन चीज़ों को देखकर वह लोग नसीहत हासिल करते हैं जो अपने पैदा करने वाले मालिक से डरते हैं और जो इन्कारी हैं, न उन में तक़्वा है, न ईमान व यक़ीन है यह लोग दलीलों से फ़ायदा नहीं उठाते।

7-10 إِنَّ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا وَرَضُوا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَاطْمَأَنُّوا بِهَا وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ اٰيٰتِنَا غٰفِلُونَ ۝ أُولٰٓئِكَ
مَأْوٰىهُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ اٰمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ يَهْدِيهِمْ رَبُّهُمْ بِإِيمَانِهِمْ ۚ تَجْرِي
مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهٰرُ فِي جَنّٰتِ النَّعِيمِ ۝ دَعْوٰىهُمْ فِيهَا سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلٰمٌ ۚ وَاٰخِرُ
دَعْوٰىهُمْ أَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِينَ ۝

इन्कार करने वालों को सज़ा और मानने वालों को बदला

इन आयात में पहले तो उन लोगों के लिए वअ़ीद (चेतावनी) फ़रमाई जिन्हें क़ियामत का दिन और वहाँ की पेशी का यक़ीन नहीं। वह दुनिया ही को सब कुछ समझते हैं और पूरी तरह दुनिया ही में जी लगा रखा है—और इस दुनिया वाली ज़िन्दगी से खुश हैं। ऐसे लोग और वह लोग जो अल्लाह की आयात से ग़ाफ़िल हैं उन के बारे में फ़रमाया कि अपने अ़ामाल की वजह से यह लोग दोज़ख़ में दाख़िल होंगे, दोज़ख़ उन का ठिकाना है, इन्होंने अ़ामाल ही ऐसे किये जो इन्हें दोज़ख़ में ले जाएँ। फिर ईमान वालों को बशारत दी गई है और फ़रमाया गया है कि जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल किये, अल्लाह तआ़ला उन के ईमान की वजह से उन्हें जन्नत की राह बताएगा यानी जिस तरह इन्हें दुनिया में हिदायत दी, ईमान की दौलत से मालामाल फ़रमाया उसी तरह आख़िरत में उन को जन्नत में जाने का रास्ता बता देगा, वह अपनी-अपनी राह पर चलकर अपने ठिकाने पर पहुँच जाएँगे।

हदीस शरीफ़ में है कि जन्नती वहाँ अपने-अपने घरों का रास्ता उस से ज़्यादा पहचानने वाले होंगे जैसा कि दुनिया में अपने घरों का रास्ता पहचानते थे।

मुलाक़ात का तरीक़ा-

यह हज़रात बाग़ों में होंगे जो चैन और आराम के बाग़ होंगे, उन की मुलाक़ात का तरीक़ा सलाम होगा और आख़िरी बात اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِينَ होगी। मुलाक़ात के वक़्त जो दुआ़ईया कलिमात अदा किये जाते हैं उन्हें 'तहि़य्या' कहा जाता है, बैठे हुए बाते करते रहेंगे और अल्लाह की पाकी बयान करेंगे यानी سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ कहते रहेंगे और आख़िर में एक दूसरे से रुख़्सत होंगे तो यूँ कहेंगेः-

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِينَ **(सब तअ़रीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो सारी सृष्टि का परवरदिग़ार है।)**

जन्नत वाले अल्लाह तआ़ला की तस्बीह और तम्हीद में हमेशा और हर वक़्त मशग़ूल रहेंगे और

वहाँ की ज़िन्दगी का ज़रिया तस्बीह़ और तम्ह़ीद ही होगा।

'सह़ीह़ मुस्लिम' में है **يلهمون التسبيح والتحميد كما تلهمون النفس** उनकी तस्बीह़ और तम्ह़ीद ऐसे जारी होगी जैसा (दुनिया में) तुम्हारी सांस जारी रहती है यानी तस्बीह़ व तम्ह़ीद से न थकेंगे न उकताएँगे, न नेअ़मतों की मशग़ूलियत उन्हें तस्बीह़ और तम्ह़ीद से ग़ाफ़िल करेगी। जैसे- फ़रिश्ते तस्बीह़ व तम्ह़ीद में लगे हुए तमाम काम अन्जाम देते हैं जिन का उन्हें हुक्म होता है। इसी तरह़ अहले जन्नत हर वक़्त अल्लाह की तस्बीह़ और तम्ह़ीद में मशग़ूल होंगे और उन के मुँह से 'सुब्ह़ानल्लाह' निकलेगा।

'तफ़्सीर इब्ने कसीर' में ह़ज़रत इब्ने जुरैज से नक़्ल किया गया है कि जब कोई परिन्दा गुज़र रहा होगा और अहले जन्नत को उस के खाने की ख़्वाहिश होगी तो वह سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ कह देंगे उन की इच्छा के मुताबिक़ फ़रिश्ता उसे ह़ाज़िर कर देगा और जब फ़रिश्ता आएगा तो सलाम के शब्द कहेगा जिस का वह ह़ज़रात जवाब देंगे, जब वह अपनी ख़्वाहिश की चीज़ खा लेंगे तो अख़ीर में اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ कहेंगे।

शब्द 'दअ़वा' का तर्जुमः कलाम (बातचीत) भी किया गया है और बाज़ मुफ़स्सिरीन ने किसी चीज़ के तलब करने के माने भी लिये हैं और बाज़ ह़ज़रात ने दुआ़ का तर्जुमः भी किया है, जिस का मतलब यह है कि जब अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करेंगे तो अल्लाह की तस्बीह़ बयान करेंगे और दुआ़ के ख़त्म पर اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ कहेंगे।

यह तीनों माने अ़रबी के एतिबार से दुरुस्त हैं, अगर दुआ़ के माने में लिया जाए तो मतलब यह होगा कि उनके लिए किसी चीज़ की कमी तो न होगी जो अपनी ज़रुरत के लिए दुआ़ मांगे, लेकिन यह आदाबे बन्दगी बजा लाने के लिए दुआ़ माँगा करेंगे।

यह जो फ़रमाया وَتَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ

इस में हर तरह़ का सलाम आ गया अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से भी उन पर सलाम आएगा। जैसा कि सूरः यासीन (आयत नं० 58) में फ़रमाया سَلٰمٌ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ और फ़रिश्ते भी उन पर सलाम करते हुए दाख़िल होंगे जैसा कि सूरः रअ़द (आयत नं० 23, 24) में फ़रमायाः-

وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَدْخُلُوْنَ عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ

और आपस में भी एक दूसरे को सलाम करेंगे। जन्नत 'दारुस्सलाम' है वहाँ सलाम ही सलाम है। सूरः वाक़िआ़ (आयत नं० 25-26) में फ़रमायाः-

لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا تَأْثِيْمًا إِلَّا قِيْلًا سَلٰمًا سَلٰمًا ۝

वह इस में कोई बक्वास बात न सुनेंगे, वह सलाम ही सलाम सुनेंगे।

जब जन्नत में दाख़िल होंगे तो यूँ कहेंगे——

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْٓ اَذْهَبَ عَنَّا الْحَزَنَ ۭ اِنَّ رَبَّنَا لَغَفُوْرٌ شَكُوْرُۨ ۝ الَّذِيْٓ اَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ لَا يَمَسُّنَا فِيْهَا نَصَبٌ وَّلَا يَمَسُّنَا فِيْهَا لُغُوْبٌ

(सब तअ़रीफ़ अल्लाह ही के लिए है जिस ने ग़म को हम से दूर फ़रमा दिया। बेशक! हमारा रब मग़्फ़िरत फ़रमाने वाला क़द्रदान है जिसने हमें रहने की जगह में उतारा हमें उस में न कोई तक्लीफ़ होगी

और न थकान। **(सूरः फ़ातिर आयत नं० 34-35)**

हज़रत जाबिर (रज़ि०) से रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने फ़रमायाः-

“अहले जन्नत की ज़बानों पर तस्बीह़ व तम्ह़ीद इस तरह़ इल्हाम (अन्तः करण) होगा। जैसे-सांस।”

(मुस्लिम)

11-14 وَلَوْ يُعَجِّلُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ بِالْخَيْرِ لَقُضِيَ إِلَيْهِمْ أَجَلُهُمْ ۖ فَنَذَرُ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا
فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ۝ وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنْبِهِ أَوْ قَاعِدًا أَوْ قَائِمًا ۚ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ
ضُرَّهُ مَرَّ كَأَنْ لَمْ يَدْعُنَا إِلَىٰ ضُرٍّ مَسَّهُ ۚ كَذَٰلِكَ زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِينَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا الْقُرُونَ
مِنْ قَبْلِكُمْ لَمَّا ظَلَمُوا ۙ وَجَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ وَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا ۚ كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ
الْمُجْرِمِينَ ۝ ثُمَّ جَعَلْنَاكُمْ خَلَائِفَ فِي الْأَرْضِ مِنْ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُونَ ۝

इन्सान जल्दबाज़ है

इन्सान के मिज़ाज में जल्दबाज़ी है। सूरः अम्बिया (आयत नं० 37) में फ़रमाया خُلِقَ الْإِنْسَانُ مِنْ عَجَلٍ ۚ (इन्सान जल्दबाज़ पैदा किया गया है) उस की जल्दबाज़ी का मिज़ाज हर जगह काम करता है।

जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इन्कार करने वालों को अ़ज़ाब की चेतावनी सुनाईं तो बजाए ईमान कुबूल करने के यूँ कहा कि अ़ज़ाब आ क्यों नहीं जाता? सूरः रअ़द (आयत नं० 6) में फ़रमायाः-

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ وَقَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمُ الْمَثُلَاتُ ۚ

और यह लोग आ़फ़ियत से पहले आप से मुसीबत माँगते हैं ह़ालाँकि उन से पहले वाक़िआ़त गुज़र चुके हैं।

उन लोगों का अ़ज़ाब आने के लिए जल्दी करना झुठलाने और मज़ाक़ उड़ाने के तौर पर था, अ़ज़ाब को सच्चा नहीं समझते थे इसलिए ऐसी बातें करते थे। अल्लाह तआ़ला ह़कीम है वह अपनी ह़िक्मत के अनुसार जब चाहे अ़ज़ाब भेजे, लोगों के जल्दी मचाने से वह अ़ज़ाब जल्दी नहीं भेजता। इर्शाद फ़रमायाः-

وَلَوْ يُعَجِّلُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ بِالْخَيْرِ لَقُضِيَ إِلَيْهِمْ أَجَلُهُمْ ۖ

और अगर उन लोगों पर उन के जल्दी मचाने के मुताबिक़ अल्लाह तआ़ला जल्दी अ़ज़ाब भेज देता जैसा कि वह ख़ैर के लिए जल्दी मचाते हैं और उन के जल्दी मचाने के मुवाफ़िक़ अल्लाह तआ़ला ख़ैर भेज देता तो अ़ज़ाब का वादा कभी का पूरा हो चुका होता, लेकिन अल्लाह तआ़ला उन के जल्दी करने पर उसी वक़्त अ़ज़ाब नहीं भेजता। उसी वक़्त अ़ज़ाब न भेजने में एक ह़िक्मत यह है कि सरकशों को अल्लाह तआ़ला उन के ह़ाल पर छोड़ देता है, ताकि वह अपने सरकशी में भटकते रहें और सरकशी में बढ़ते हुए और ज़्यादा अ़ज़ाब के ह़क़दार हो जाएँ।

इस में स्पष्ट तौर पर बता दिया कि अ़ज़ाब में देरी होना और अ़ज़ाब की जल्दी मचाने के बावजूद जल्दी न आना इस बात की दलील नहीं है कि अ़ज़ाब का वादा सच्चा नहीं बल्कि यह वादा सच्चा है, लेकिन अ़ज़ाब उस वक़्त वाक़ेअ़ होगा जब अल्लाह तआ़ला की ह़िक्मत होगी। सूरः अ़न्कबूत (आयत नं० 53)

में फ़रमायाः-

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ ۚ وَلَوْلَا أَجَلٌ مُّسَمًّى لَّجَاءَهُمُ الْعَذَابُ ۚ وَلَيَأْتِيَنَّهُم بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝

(और वह आप से जल्द अ़ज़ाब आने का तक़ाज़ा करते हैं और अगर वक़्त तय न होता तो उन पर अ़ज़ाब आ चुका होता और वह उन पर अचानक आ जाएगा और उन को ख़बर न होगी।)

सूरः साद आयत नं० (16) में फ़रमायाः-

وَقَالُوا رَبَّنَا عَجِّل لَّنَا قِطَّنَا قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ ۝ (और उन्होंने कहा कि ऐ हमारे रब! हिसाब के दिन से पहले हमारा हिस्सा हम को दे दे।) उन लोगों का मतलब यह था कि अगर क़ियामत आनी ही है तो उस के आने के इन्तिज़ार की ज़रूरत नहीं उस वक़्त जो अ़ज़ाब दिया जाएगा वह हमें अभी चाहिए जिन्हें ईमान लाना नहीं होता वह ऐसी ही जाहिलाना बातें करते हैं।

इस के बाद इन्सान की एक और बे-राही बयान फ़रमाई जो उसकी तबीअ़त बनी हुई है। इर्शाद फ़रमाया وَإِذَا مَسَّ الْإِنسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنبِهِ أَوْ قَاعِدًا أَوْ قَائِمًا ۚ

और जब इन्सान को तक्लीफ़ पहुँचती है तो हमें लेटे बैठे और खड़े हुए पुकारता है فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهُ مَرَّ كَأَن لَّمْ يَدْعُنَا إِلَىٰ ضُرٍّ مَّسَّهُ ۚ फिर जब हम उस की तक्लीफ़ दूर कर देते हैं तो ऐसे गुज़र जाता है जैसे कि उस ने तक्लीफ़ पहुँच जाने पर हमें पुकारा ही न था। यह मज़मून कुर्आन मजीद की दूसरी आयात में भी आया है। सूरः ज़ुमर (आयत नं० 8) में फ़रमायाः-

وَإِذَا مَسَّ الْإِنسَانَ ضُرٌّ دَعَا رَبَّهُ مُنِيبًا إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا خَوَّلَهُ نِعْمَةً مِّنْهُ نَسِيَ مَا كَانَ يَدْعُو إِلَيْهِ
مِن قَبْلُ وَجَعَلَ لِلَّهِ أَندَادًا لِّيُضِلَّ عَن سَبِيلِهِ ۚ

(और जब इन्सान को कोई तक्लीफ़ पहुँच जाती है तो अपने रब को पुकारने लगता है उसकी तरफ़ मायल होते हुए। फिर जब वह उसे अपने पास से नेअ़मत अ़ता फ़रमा देता है तो इस से पहले जिस के लिए पुकार रहा था उसे भूल जाता है और अल्लाह के लिए साझीदार बनाने लगता है ताकि उस की राह से दूसरों को गुमराह करे।)

इन्सान का यह भी मिज़ाज है कि हुदूद से आगे बढ़ता चला जाता है गुनाह के काम करता है और गुनाह के कामों को अच्छा भी समझता है। जैसा कि फ़रमायाः-

كَذَٰلِكَ زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِينَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ {इसी तरह ह़द से आगे बढ़ जाने वालों के लिए वह काम मुज़य्यन (सुन्दर) कर दिये गये जो वह करते हैं।}

इस से मालूम हुआ इन्सान बुराई की भी दुआ़ करता है और भलाई की भी दुआ़ करता है और दोनों की कुबूलियत के लिए जल्दी मचाता है, अल्लाह तआ़ला अपनी हिक्मत के मुताबिक़ दुआ़एँ कुबूल फ़रमाता है, बुराई की दुआ़ जल्द कुबूलियत नहीं पातीं और भलाई की दुआ़ आ़मतौर पर जल्दी कुबूल फ़रमा लेता है। मोमिन बन्दों को चाहिए कि बुराई यानी नुक़्सान मर्ज़ व तक्लीफ़ की दुआ़ न करें।

हज़रत जाबिर (रज़ि०) से रिवायत कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, तुम अपनी जानों

के लिए और अपनी औलाद के लिए और अपने मालों के लिए बद्दुआ़ न किया करो। ऐसा न हो कि यह बद्दुआ़ क़ुबूलियत की घड़ी में कर बैठो और तुम्हारी यह बद्दुआ़ क़ुबूल हो जाए। **(मुस्लिम)**

दुआ़ हमेशा ख़ैर की करे और जल्दी न मचाए।

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, "बन्दा की दुआ़ क़ुबूल होती है बशर्ते कि गुनाह की या क़तअ़ रह़मी (नाता तोड़ने) की दुआ़ न करे और जल्दी न मचाए। अ़र्ज़ किया गया या रसूलल्लाह! जल्दी मचाना क्या है? फ़रमाया जल्दी मचाना यह है कि यूँ कहने लगे कि मैंने तो दुआ़ की, फिर दुआ़ की, मुझे तो क़ुबूल होती नज़र नहीं आती, उस के बाद दुआ़ से तंग दिल हो जाए और दुआ़ करना छोड़ दे।" **(मुस्लिम पेज नं० 352, भाग 2)**

मतलब यह है कि दुआ़-ए-ख़ैर में बराबर लगा रहे, तंग दिल होकर दुआ़ न छोड़े। आयते शरीफ़ा से दूसरी बात यह मालूम हुई कि दुःख, तक्लीफ़ में मुब्तिला हो या कोई मुसीबत आई हो या आराम राह़त और ख़ैर व ख़ूबी से मालामाल हो, हर ह़ाल में दुआ़ करते रहना चाहिए। जो बन्दों का तरीक़ा है कि मुसीबत के वक़्त बड़ी-बड़ी दुआएँ करते हैं, वज़ीफ़े पढ़ते हैं, तस्बीह़ घिस देते हैं और जब मुसीबत टल जाती है तो दुआ़ओं को एक तरफ़ रख देते हैं और बिलकुल ही भूल जाते हैं यानी ऐसे हो जाते हैं कि इस से पहले अल्लाह तआ़ला से कुछ माँगा ही न था।

मुसीबत आई तो अल्लाह के सामने गिड़गिड़ाए और जब अल्लाह तआ़ला ने मुसीबत दूर फ़रमा दी तो अब सारा भरोसा अपनी ह़िक्मत पर कर लिया और सारी ख़ैर व ख़ूबी को अपनी हुनरमन्दी और समझदारी की तरफ़ कर दिया यह सब आदाब बन्दग़ी के ख़िलाफ़ हैं। सूरः ज़ुमर (आयत नं० 49) में फ़रमायाः-

فَإِذَا مَسَّ الْإِنسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ثُمَّ إِذَا خَوَّلْنَاهُ نِعْمَةً مِّنَّا قَالَ إِنَّمَا أُوتِيتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ ۚ بَلْ هِيَ فِتْنَةٌ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝

(फिर जिस वक़्त इन्सान को कोई तक्लीफ़ पहुँचती है तो हम को पुकारता है फिर जब हम उस को अपनी तरफ़ से कोई नेअ़मत अ़ता फ़रमा देते हैं तो कहता है कि यह मुझ को मेरी तद्बीर से मिली है बल्कि यह एक आज़माइश है, लेकिन अक्सर लोग समझते नहीं।)

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया, "जिसे इस बात की ख़ुशी हो कि अल्लाह तआ़ला सख़्तियों में उस की दुआ़ क़ुबूल फ़रमाए उसे चाहिए कि राह़त के ज़माने में ज़्यादा दुआ़ किया करे"। **(तिर्मिज़ी)**

ह़ज़रत जाबिर (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "अपने लिए अपनी औलाद के लिए और अपने मालों (ग़ुलामों और जानवरों) के लिए बद्दुआ़ न किया करो। ऐसा न हो कि तुम किसी ऐसे वक़्त बद्दुआ़ करो जिस में अल्लाह तआ़ला उसे क़ुबूल कर ले और तुम तबाह हो जाओ"। **(अबूदाऊद)**

इस के बाद फ़रमाया وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا الْقُرُونَ مِن قَبْلِكُمْ

यानी हम ने तुम से पहले बहुत सी जमाअ़तों को हलाक किया जबकि उन्होंने ज़ुल्म किया और उन लोगों के पास उन के रसूल खुले हुए दलायल लेकर आए वह ईमान लाने वाले न थे, लिहाज़ा वह ईमान न लाए।

(जब वह ईमान न लाए तो उन्हें हलाक कर दिया मुजरिमों को हम इसी तरह़ बदला दिया करते हैं।

इस आयत में इन्कार करने वालों को तम्बीह है कि हमारे ढ़ील देने से यह न समझ लो कि अ़ज़ाब न आएगा। पिछली क़ौमों की तारीख़ और उनकी सरकशी और नाफ़रमानी और फिर उन पर अ़ज़ाब आने के वाक़िआत से नसीहत ह़ासिल कर लो, अ़ज़ाबे इलाही से बेफ़िक्र हो जाना बहुत बड़ी नासमझी है।

फिर फ़रमाया ثُمَّ جَعَلْنٰكُمْ خَلٰٓئِفَ فِى الْاَرْضِ مِنْۢ بَعْدِهِمْ

"फिर हम ने तुम्हें उन लोगों के बाद ज़मीन में ख़लीफ़ा बनाया"।

पिछली क़ौमें हलाक हो गईं उन लोगों की हुकूमतें सल्तनते ख़ाक में मिल गईं, बिल्डिंगे बर्बाद हुईं, मन्सूबे ख़ाक में मिले जो दुनियावी तरक़्क़ियाँ थीं वह सब ख़त्म हो गईं, उन की जगह अब मौजूदा क़ौम दुनिया में आबाद हैं, हुकूमतें हैं, दौलतें हैं, यह लोग पुरानी क़ौमों की जगह हैं यानी उन के बाद ज़मीन में बसे और ज़मीन में उन्हें सत्ता मिली यह ख़िलाफ़त इसलिए नहीं है कि दुनिया ही को सब कुछ समझें और दुनिया ही के लिए मरें और जियें और दुनिया में फ़साद करें, यह ख़िलाफ़त आज़्माइश के लिए दी गई है। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः-

لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ताकि हम देखें कि तुम कैसे काम करते हो। अगर पिछली उम्मतों की तरह़ फ़साद किया, अल्लाह की किताब और अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को झुठलाया, कुफ़्र में और बद् आ़मालियों में लगे रहे तो आज़्माइश में फ़ेल होंगे और अ़ज़ाब के ह़क़्दार होंगे।

ह़ज़रत अबू सईद ख़ुद्री (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि दुनिया मीठी, हरी भरी है और बिलाशुब्हा इस में तुम्हें पहले लोगों के बाद बसाने वाला है सो वह देखेगा कि तुम (दुनिया में) क्या करते हो? सो तुम दुनिया से बचो और औ़रतों (के फ़ित्ने) से बचो क्योंकि बनी इस्राईल में सब से पहला फ़ित्ना जो ज़ाहिर हुआ वह औ़रतों का फ़ित्ना था। **(मुस्लिम)**

आयत नं० 15 से 24 तक

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيَاتُنَا بَيِّنٰتٍ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا ائْتِ بِقُرْاٰنٍ غَيْرِ هٰذَآ اَوْ بَدِّلْهُ ؕ قُلْ مَا يَكُوْنُ لِيْۤ اَنْ اُبَدِّلَهٗ مِنْ
تِلْقَآئِ نَفْسِيْ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰۤى اِلَيَّ ۚ اِنِّيْۤ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿۱۵﴾ قُلْ لَّوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا تَلَوْتُهٗ عَلَيْكُمْ
وَلَاۤ اَدْرٰىكُمْ بِهٖ ۖ فَقَدْ لَبِثْتُ فِيْكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهٖ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۶﴾ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ
اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿۱۷﴾ وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ هٰۤؤُلَآءِ شُفَعَآؤُنَا عِنْدَ اللّٰهِ ؕ
قُلْ اَتُنَبِّـُٔوْنَ اللّٰهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿۱۸﴾ وَمَا كَانَ النَّاسُ اِلَّاۤ اُمَّةً وَّاحِدَةً فَاخْتَلَفُوْا ؕ
وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ فِيْمَا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿۱۹﴾ وَيَقُوْلُوْنَ لَوْلَاۤ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۚ فَقُلْ اِنَّمَا
الْغَيْبُ لِلّٰهِ فَانْتَظِرُوْا ۚ اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿۲۰﴾ وَاِذَاۤ اَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِّنْۢ بَعْدِ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُمْ اِذَا لَهُمْ مَّكْرٌ فِيْۤ اٰيَاتِنَا ؕ
قُلِ اللّٰهُ اَسْرَعُ مَكْرًا ؕ اِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُوْنَ مَا تَمْكُرُوْنَ ﴿۲۱﴾ هُوَ الَّذِيْ يُسَيِّرُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ حَتّٰۤى اِذَا كُنْتُمْ فِي
الْفُلْكِ ۚ وَجَرَيْنَ بِهِمْ بِرِيْحٍ طَيِّبَةٍ وَّفَرِحُوْا بِهَا جَآءَتْهَا رِيْحٌ عَاصِفٌ وَّجَآءَهُمُ الْمَوْجُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّظَنُّوْۤا اَنَّهُمْ اُحِيْطَ بِهِمْ ۙ
دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ لَئِنْ اَنْجَيْتَنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿۲۲﴾ فَلَمَّاۤ اَنْجٰىهُمْ اِذَا هُمْ يَبْغُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ
يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلٰۤى اَنْفُسِكُمْ ۙ مَّتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۫ ثُمَّ اِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۲۳﴾ اِنَّمَا مَثَلُ
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ مِمَّا يَاْكُلُ النَّاسُ وَالْاَنْعَامُ ؕ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَخَذَتِ الْاَرْضُ
زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ اَهْلُهَاۤ اَنَّهُمْ قٰدِرُوْنَ عَلَيْهَاۤ ۙ اَتٰىهَاۤ اَمْرُنَا لَيْلًا اَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنٰهَا حَصِيْدًا كَاَنْ لَّمْ تَغْنَ بِالْاَمْسِ ؕ
كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿۲۴﴾

अनुवाद-

(15) और जब उनके सामने हमारी स्पष्ट आयतें पढ़ कर सुनाई जाती हैं, तो वे लोग जो 'हम से' मिलने की उम्मीद नहीं रखते वे कहते हैं, ''इसके सिवा कोई और कुर्आन ले आओ या इसमें कुछ परिवर्तन करो'' कह दीजिए, ''मुझसे यह नहीं हो सकता कि मैं अपनी ओर से इसमें कोई परिवर्तन करूँ, मैं तो बस उसका अनुयायी हूँ, जो वह्य (अर्थात अल्लाह का आदेश) मेरी ओर उतारी जाती है, अगर मैं अपने रब की नाफ़रमानी करूँ तो मुझे एक बड़े दिन के अज़ाब का डर है"। (16) कह दीजिए, ''अगर अल्लाह चाहता तो मैं तुम्हें यह पढ़ कर न सुनाता, और न 'वह' तुम्हें इसके बारे में बताता फिर मैं तो तुम्हारे बीच इसके पहले भी एक उम्र गुज़ार चुका हूँ, क्या तुम अक़्ल से काम नहीं लेते?''(17) फिर उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा! जो अल्लाह पर झूठ गढ़े या उसकी आयतों को झुठलाए? बेशक मुजरिम कभी कामियाब नहीं होंगे; (18) और यह अल्लाह के सिवा (ऐसी चीज़ों की) इबादत करते हैं जो उनको न कुछ नुक़सान पहुँचा सकें और न उनका कुछ भला कर सकें और वे कहते हैं ''यह अल्लाह के यहाँ हमारे सिफ़ारिशी हैं।'' कह दीजिए, "क्या तुम अल्लाह को ऐसी चीज़ों की ख़बर देते हो, जिसे वह नहीं जानता न आसमानों में और न ज़मीन में?'' पाक और बुलन्द है 'वह' इस शिर्क से, जो यह करते हैं। (19) और इन्सान तो एक ही उम्मत (तरीक़े पर) थे, फिर उन्होंने मतभेद किया; और अगर तुम्हारे रब की ओर से पहले ही एक बात तय न हो गयी

होती, तो उनके बीच उस चीज़ का फ़ैसला कर दिया जाता, जिसमें वे मतभेद कर रहे हैं, (20) और कहते हैं, ''इस पर उनके रब की ओर से कोई निशानी क्यों नहीं उतरी, तो कह दीजिए, ''ग़ैब (परोक्ष की ख़बर) तो बस अल्लाह ही को है, तो इन्तिज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करता हूँ।'' (21) और जब 'हम' लोगों को तकलीफ़ के बाद रह़मत (दयालुता) का मज़ा चखाते हैं तो वे हमारी निशानियों के बारे में चाल बाज़ियाँ करने लगते हैं; कह दीजिए, ''अल्लाह अपनी चाल (तद्बीर या उपाय) में ज़्यादा तेज़ है'' हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) उनको लिख रहे हैं, जो चालबाज़ियाँ तुम कर रहे हो। (22) 'वही' तो है जो तुम्हें जल और थल में चलाता है, यहाँ तक कि जब तुम नौका में (सवार) होते हो, और वह लोगों को अच्छी अनुकूल हवा के सहारे लेकर चलती हैं और वे उससे खुश होते हैं तो अचानक! तेज़ हवा का झोंका आता है, और हर ओर से मौजें उठती हैं और वे समझ लेते हैं कि लहरों में घिर गये, तो उस वक़्त वे अल्लाह ही पर केवल आस्था रख कर पुकारने लगते हैं, ''अगर 'तू' ने इस (मुसीबत) से हमें बचा लिया, तो हम ज़रूर तेरे शुक्रगुज़ार (आभारी) होंगे'' (23) फिर जब वह उनको बचा लेता है, तो क्या देखते हैं कि वे नाह़क़ ज़मीन में सरकशी करने लगते हैं; लोगो! तुम्हारी सरकशी तुम्हारे अपने ही ख़िलाफ़ है, तुम दुनिया की ज़िन्दगी का फ़ायदा उठा लो; फिर तुमको 'हमारी' ही ओर वापस आना है, तो तुम्हें 'हम' बता देंगे, जो कुछ तुम किया करते थे। (24) दुनिया की ज़िन्दगी की मिसाल तो बस ऐसी है, जैसे 'हमने' आसमान से पानी बरसाया, तो उससे ज़मीन पर उगने वाली चीज़ें, (वनस्पति आदि) जिनको इन्सान और चौपाए खाते हैं- मिल कर निकाला यहाँ तक कि जब ज़मीन ने अपना श्रृंगार कर लिया और बन संवर गयी, और उसके मालिक समझने लगे कि उन्हें उस पर पूरा कब्ज़ा हो गया है; तो अचानक रात या दिन के समय 'हमारा' हुक्म आ गया, फिर 'हमने' उसे कटी फ़सल की तरह कर दिया, जैसे कल वहाँ कुछ था ही नहीं; इसी तरह 'हम' अपनी निशानियाँ खोल-खोल कर बयान करते हैं (उन लोगों के लिए) जो सोच-विचार से काम लेने वाले हैं।

आयत नं० 15 से 24 तक की व्याख्या

15 وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ ۙ قَالَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا ائْتِ بِقُرْآنٍ غَيْرِ هَٰذَا أَوْ بَدِّلْهُ ۚ قُلْ مَا يَكُونُ لِي
أَنْ أُبَدِّلَهُ مِنْ تِلْقَاءِ نَفْسِي ۖ إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ ۖ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٥﴾

नबी करीम (सल्ल०) जब मुशिरकीन के सामने कुर्आन करीम की आयतों की तिलावत फ़रमाते जिन में तौह़ीद (अद्वैतवाद) होता और शिर्क की मनाही होती तो क़ियामत और बदला का इन्कार करने वाले मुशिरकीन बतौर चैलेंज या बतौर मज़ाक़ आप (सल्ल०) से कहते कि इस कुर्आन के अ़लावा कोई और कुर्आन लाओ जिस में हमारे बुतों (उपास्यों) को ग़लत न कहा गया हो, या उन आयतों के बदले जिन से हमें तक्लीफ़ पहुँचती है दूसरी आयतें ले आओ जिन्हें सुनकर तक्लीफ़ न पहुँचे। तो अल्लाह तआ़ला ने आप को उन के जवाब में यह कहने का हुक्म दिया कि मैं उस में अपनी तरफ़ से एक शब्द की तब्दीली नहीं कर सकता, मैं तो अल्लाह का हुक्म बजा लाने वाला एक बन्दा हूँ मैं तो सिर्फ़ अल्लाह की ओर से नाज़िल वह्य की पैरवी करता हूँ। अगर मैंने अल्लाह की नाफ़रमानी की तो मैं क़ियामत के दिन के अ़ज़ाब से डरता हूँ।

16 قُلْ لَّوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا تَلَوْتُهٗ عَلَيْكُمْ وَلَآ اَدْرٰىكُمْ بِهٖ ۖ فَقَدْ لَبِثْتُ فِيْكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهٖ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝

इस में फ़रमाया कि तुम्हारे सामने कुर्आन करीम की तिलावत अल्लाह के इरादे के मुताबिक़ करता हूँ। अगर अल्लाह चाहता कि न करूँ तो मैं नहीं कर सकता और इस का इ़ल्म तुम्हें ह़ासिल न होता और पैदाइश से लेकर बेअ़सत तक पूरे चालीस साल से मैं तुम्हारे दर्मियान रहता हूँ। मेरी सच्चाई व अमानत के चर्चे तुम में से हर एक की ज़बान पर हैं और मुझे पढ़ना लिखना भी नहीं आता, लेकिन जब अल्लाह ने मुझे अपना रसूल बना कर भेजा तो उस का नाज़िल किया हुआ कुर्आन तुम्हें सुनाने लगा हूँ। क्या इन तमाम दलीलों से तुम इस नतीजे पर नहीं पहुँचे कि यह कुर्आन अल्लाह की ओर से भेजी हुई उसकी ईशवाणी है, मेरी या किसी और की मनगढ़त बात नहीं है?

17 فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْمُجْرِمُوْنَ ۝

यह भी मुशिरकीन की बात का जवाब है कि उस आदमी से बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो नुबूव्वत का दावा करे। जैसे कि मुसैल्मा कज़्ज़ाब, शुज्जाह़ और अस्वद उ़न्सी आदि ने किया था या जब अल्लाह के सच्चे रसूल (सल्ल०) के ज़रिये उस की आयतें उस तक पहुँचीं तो उन को झुठला दिया।

18 وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ هٰٓؤُلَآءِ شُفَعَآؤُنَا عِنْدَ اللّٰهِ ؕ
قُلْ اَتُنَبِّئُوْنَ اللّٰهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِى السَّمٰوٰتِ وَلَا فِى الْاَرْضِ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝

इस में मुशिरकीने अ़रब की कम अ़क़्ली का मातम किया गया है कि वह अल्लाह के बजाय उन बुतों (मूर्तियों) की पूजा करते हैं जो न उन्हें नुक़्सान पहुँचा सकते हैं न नफ़ा और उन के बारे में समझते हैं कि वह अल्लाह के यहाँ सिफ़ारिशी बनेंगे, ताकि वह उन्हें अ़ज़ाब न दे या यह कि उन की सिफ़ारिश की वजह से अल्लाह तआ़ला उन मुशिरकीन की दुनियावी ह़ालत ठीक कर दे। अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) को उन का जवाब इस तरह़ देने को कहा कि क्या तुम इस बात की ख़बर दे रहे हो कि अल्लाह की इजाज़त के बग़ैर तुम्हारे कुछ सिफ़ारशी हैं? ह़ालाँकि अल्लाह को इस की ख़बर है कि आसमानों और ज़मीन में रहने वाली उस की मख़्लूक़ात में से कोई उस का साझीदार (Partner) या उस की इजाज़त के बग़ैर किसी को उस के सामने सिफ़ारिश करने की ह़िम्मत नहीं।

19 وَمَا كَانَ النَّاسُ اِلَّآ اُمَّةً وَّاحِدَةً فَاخْتَلَفُوْا ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِىَ بَيْنَهُمْ فِيْمَا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۝

अल्लाह तआ़ला ने इन्सान की फ़ित्रत में एक अल्लाह के मानने का जज़्बा रखा, मगर कुछ लोगों ने दीन-ए-फ़ित्रत को छोड़ कर अपने इच्छाओं की पैरवी शुरु कर दी और मूर्तियों की पूजा करने लगे और बहुत सी जमाअ़तों में बट गये तो अल्लाह तआ़ला ने उन पर रह़म करते हुए अम्बिया भेजे, जिन्होंने उन्हें तौह़ीद की दअ़वत दी। उस के बाद अल्लाह ने फ़रमाया कि अल्लाह का पहले से यह फ़ैसला है कि वह किसी को बिना हुज्जत पूरी किये हुए अ़ज़ाब नहीं देता और यह कि अल्लाह ने बदले को क़ियामत के दिन के लिए कर दिया है अगर ऐसा न होता तो इस दुनिया में ही काफ़िरों को हलाक कर देता।

20 وَيَقُولُونَ لَوْلَآ أُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۚ فَقُلْ اِنَّمَا الْغَيْبُ لِلّٰهِ فَانْتَظِرُوْا ۚ اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ۟

मुशिरकीने मक्का ने नबी करीम (सल्ल०) से घमण्ड में आकर कहा कि क़ुर्आन और दूसरे मोअ़जिज़ात (चमत्कार) के बजाए कोई ऐसी निशानी लाओ जिस की हम माँग करते हैं। मिसाल के तौर पर मुर्दा को ज़िन्दा करो या पहाड़ को सोना बना दो या आसमान से तुम्हारे लिए कोई सजा सजाया घर उतार दिया जाए ताकि हम तुम्हारे नुबूव्वत की तस्दीक़ (पुष्टि) कर सकें, तो अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) से कहा कि आप उन के जवाब में कहिए कि किसी निशानी का नाज़िल होना अल्लाह की ओर से है, जिस का इल्म सिर्फ़ अल्लाह को है, मुझे या तुम्हें या किसी और मख़्लूक़ को इस का इल्म नहीं है, तो मैं तुम्हारी मर्ज़ी के मुताबिक़ कैसे कोई निशानी ला सकता हूँ? हाँ, तुम भी इन्तिज़ार करो और मैं भी इन्तिज़ार करता हूँ कि अल्लाह किस के ह़क़ में फ़ैसला करता है।

मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि उन का यह सवाल सिर्फ़ घमण्ड की बुनियाद पर था। अगर अल्लाह के इल्म में होता कि वह अपने सवाल में सच्चे हैं तो उन की माँग के मुताबिक़ निशानी ज़रूर भेज देता।

21 وَاِذَآ اَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِّنْۢ بَعْدِ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُمْ اِذَا لَهُمْ مَّكْرٌ فِيْٓ اٰيَاتِنَا ۚ قُلِ اللّٰهُ اَسْرَعُ مَكْرًا ۚ
اِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُوْنَ مَا تَمْكُرُوْنَ ۝

जो मुशिरकीने मक्का कुफ़्र की वजह से अपनी मनमानी निशानी का मुताल्बा करते हैं, उन की ख़बासत और अल्लाह के साथ उन की बद्सुलूकी का ह़ाल यह है कि जब क़ह़त साली (सूखा) के बाद अल्लाह तआ़ला उन पर रह़म करते हुए आसमान से बारिश भेजता है और उन की रोज़ी बढ़ा देता है तो अल्लाह का शुक्र अदा करने के बजाए अपने बुतों (मूर्तियों) के सामने सर झुका देते हैं और अल्लाह की आयतों के बारे में तरह़-तरह़ की बातें बनाने लगते हैं। अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) से कहा, आप कह दीजिए कि अल्लाह का अ़ज़ाब तुम्हारे मक्र व फ़रेब से ज़्यादा तेज़ है, फ़रिश्ते तुम्हारी साज़िशों को लिख रहे हैं, कोई चीज़ उन से छुपी नहीं है और जब उन से छुपी नहीं तो अल्लाह से तुम्हारी साज़िशें कैसे छुपी रह सकती हैं, तुम्हें उन की सज़ा मिल कर रहेगी।

22-23 هُوَ الَّذِيْ يُسَيِّرُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۭ حَتّٰٓى اِذَا كُنْتُمْ فِي الْفُلْكِ ۚ وَجَرَيْنَ بِهِمْ بِرِيْحٍ طَيِّبَةٍ وَّفَرِحُوْا
بِهَا جَآءَتْهَا رِيْحٌ عَاصِفٌ وَّجَآءَهُمُ الْمَوْجُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ اُحِيْطَ بِهِمْ ۙ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ
لَهُ الدِّيْنَ ۚ لَئِنْ اَنْجَيْتَنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ۝ فَلَمَّآ اَنْجٰىهُمْ اِذَا هُمْ يَبْغُوْنَ فِي الْاَرْضِ
بِغَيْرِ الْحَقِّ ۭ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلٰٓي اَنْفُسِكُمْ ۙ مَّتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۡ ثُمَّ اِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُمْ
بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝

अल्लाह तआ़ला के साथ मुशिरकीन के वादा ख़िलाफ़ी की एक दूसरी शक्ल यह है कि वह नावों में सवार होकर अपने मुवाफ़िक़ हवाओं के सहारे अपनी मन्ज़िल की तरफ़ चलते हैं और ख़ुश होते हैं कि अचानक तूफ़ान के घेरे में आ जाते हैं और मौज उन्हें हर तरफ़ से घेरे में ले लेती है तो दिल से अल्लाह

को पुकारने लगते हैं और दिल में अल्लाह से वादा करते हैं कि अगर उन्हें मौत से छुट्कारा मिल गया तो अल्लाह के शुक्रगुज़ार बन्दे बन जाएँगे, लेकिन जब उन्हें इस भंवर से निजात मिल जाती है तो फिर घमण्ड करने लगते हैं। अल्लाह तआ़ला ने उन से कहा कि तुम्हारी सरकशी तुम्हारे अ़लावा किसी और को नुक़्सान नहीं पहुँचाएगी और यह दुनिया की ज़िन्दगी थोड़े दिनों की है, फिर तुम्हें अल्लाह के पास ही लौट कर जाना है जहाँ अल्लाह तुम्हें तुम्हारे करतूतों का पूरा-पूरा बदला देगा।

24 إِنَّمَا مَثَلُ الْحَيَوٰةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ أَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْأَرْضِ مِمَّا يَأْكُلُ النَّاسُ
وَالْأَنْعَامُ حَتّٰىٓ إِذَآ أَخَذَتِ الْأَرْضُ زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ أَهْلُهَآ أَنَّهُمْ قٰدِرُوْنَ عَلَيْهَآ أَتٰىهَآ أَمْرُنَا
لَيْلًا أَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنٰهَا حَصِيْدًا كَأَنْ لَّمْ تَغْنَ بِالْأَمْسِ ۚ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْأٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢٤﴾

दुनिया को एक मिसाल के ज़रिये समझाया जा रहा है कि जिस तरह़ लहलहाते पौधे कुछ ही दिनों के बाद मुरझा जाते हैं और फिर सूख कर अपनी ताज़गी और ख़ूबसूरती खो बैठते हैं, वही ह़ाल दुनिया का है कि यह अपनी वक़्ती रौनक़ से लोगों को धोके में डाल देती है, लेकिन देखते ही देखते ज़िन्दग़ी के दिन ख़त्म हो जाते हैं और मौत आ दबोचती है सब ठाठ पड़ा रह जाता है और आदमी दुनिया से रुख़सत हो जाता है।

आयत नं० 25 से 36 तक

وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلٰى دَارِ السَّلٰمِ ؕ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَزِيَادَةٌ ؕ وَلَا يَرْهَقُ وُجُوْهَهُمْ قَتَرٌ وَّلَا ذِلَّةٌ ؕ
اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ كَسَبُوا السَّيِّاٰتِ جَزَآءُ سَيِّئَةٍۢ بِمِثْلِهَا ۙ وَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ مَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ
عَاصِمٍ ۚ كَاَنَّمَآ اُغْشِيَتْ وُجُوْهُهُمْ قِطَعًا مِّنَ الَّيْلِ مُظْلِمًا ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ
لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا مَكَانَكُمْ اَنْتُمْ وَشُرَكَآؤُكُمْ ۚ فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ وَقَالَ شُرَكَآؤُهُمْ مَّا كُنْتُمْ اِيَّانَا تَعْبُدُوْنَ ۝ فَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًاۢ بَيْنَنَا
وَبَيْنَكُمْ اِنْ كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغٰفِلِيْنَ ۝ هُنَالِكَ تَبْلُوْا كُلُّ نَفْسٍ مَّآ اَسْلَفَتْ وَرُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ وَضَلَّ عَنْهُمْ
مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝ قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اَمَّنْ يَّمْلِكُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَمَنْ يُّخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ
وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُّدَبِّرُ الْاَمْرَ ؕ فَسَيَقُوْلُوْنَ اللّٰهُ ۚ فَقُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ۝ فَذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ ۚ فَمَاذَا بَعْدَ الْحَقِّ اِلَّا
الضَّلٰلُ ۚۖ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ۝ كَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ فَسَقُوْٓا اَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ
ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ؕ قُلِ اللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ۝ قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ ؕ قُلِ اللّٰهُ يَهْدِيْ لِلْحَقِّ ؕ
اَفَمَنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ اَحَقُّ اَنْ يُّتَّبَعَ اَمَّنْ لَّا يَهِدِّيْٓ اِلَّآ اَنْ يُّهْدٰى ۚ فَمَا لَكُمْ ۫ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ۝ وَمَا يَتَّبِعُ اَكْثَرُهُمْ اِلَّا ظَنًّا ؕ اِنَّ الظَّنَّ
لَا يُغْنِيْ مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ۝

अनुवाद-

(25) और अल्लाह सलामती के घर की ओर बुलाता है, और जिसको चाहता है सीधी राह पर चलाता है; (26) जो लोग नेकी करते रहे उनके लिए अच्छा बदला है, और उसके अलावा और भी। और उनके चेहरों पर न तो कलौंस (स्याही) छाएगी और न ज़िल्लत, यही जन्नत वाले हैं कि वे उसमें हमेशा रहेंगे। (27) और जिन लोगों ने बुराइयाँ कमाईं, तो बुराई का बदला वैसा ही मिलेगा, जैसी बुराई की होगी, और उन पर रुसवाई छाई हुई होगी, उनको अल्लाह से बचाने वाला कोई न होगा उनके चेहरों पर ऐसा अन्धकार छाया होगा, जैसे अंधेरी रात के टुकड़ों से उन्हें ढाँक दिया गया हो; यही आग वाले हैं, कि उसमें उन्हें हमेशा रहना है। (28) और जिस दिन 'हम' उन सब को इकट्ठा करेंगे, फिर उन लोगों से, जिन्होंने शिर्क किया होगा, कहेंगे, ''अपनी जगह ठहरे रहो, तुम भी और तुम्हारे साझीदार भी''। फिर 'हम' उनके बीच अलगाव पैदा कर देंगे, और उनके ज़रिए ठहराए गये साझीदार कहेंगे, ''तुम हमारी तो इबादत करते नहीं थे''। (29) अल्लाह हमारे और तुम्हारे बीच गवाही के लिए काफ़ी है, कि हम तुम्हारी इबादत से बिल्कुल बेख़बर थे। (30) वहाँ हर व्यक्ति अपने पहले के किये हुए कर्मों को जाँच लेगा, और वे अपने सच्चे मालिक के सामने लौटाए जाएँगे, और जो कुछ उन्होंने गढ़ रखा था, सब गुम हो जाएगा। (31) कह दीजिए, ''तुम्हें आसमान और ज़मीन से रोज़ी कौन देता है? या यह कान और आखें किसके अधिकार में हैं और कौन जानदार को निकालता है बेजान से, और बेजान को निकालता है जानदार से, और कौन यह सारा इन्तिज़ाम चला रहा है?'' इस पर वे बोल पड़ेंगे ''अल्लाह!'' तो कहिए फिर तुम क्यों नहीं डरते?'' (32) तो 'यही' अल्लाह तो है तुम्हारा ह़क़ीक़ी (वास्तविक) रब, फिर सच्चाई के खुल जाने के बाद (दूसरी राह चलना) गुमराही के सिवा

और क्या रह जाता है? तो तुम किधर (बहके) फिरे जाते हो। (33) इसी तरह आप के रब की बात सरकशी करने वालों के ह़क़ में पूरी हो चुकी है कि यह ईमान न लाएँगे। (34) कह दीजिए ''क्या तुम्हारे ठहराए हुए साझीदारों में कोई ऐसा भी है जो पहली बार मख़्लूक़ (सृष्टि) को पैदा करेगा, फिर वह दोबारा भी पैदा करे?'' कह दीजिए, ''अल्लाह ही पहली बार पैदा करता है, फिर 'वही' दोबारा भी पैदा करेगा; तो तुम कहाँ भटके चले जा रहे हो?" (35) कह दीजिए, ''क्या तुम्हारे ठहराए हुए साझीदारों में कोई ऐसा है जो सच्ची राह दिखा सके?" कह दीजिए, "अल्लाह ही ह़क़ का रास्ता दिखाता है तो फिर जो ह़क़ का रास्ता दिखाए, वह इस लायक़ है कि उसकी पैरवी (अनुसरण) की जाए या वह जो खुद ही राह नहीं पा सकता जब तक दूसरा उसको राह न दिखलाए? तो तुम को क्या हो गया है तुम कैसे फ़ैसला कर रहे हो?" (36) और उनमें से अक्सर तो बस अटकल पर चलते हैं, बेशक ह़क़ के सामने कुछ भी काम नहीं आ सकता, बेशक वे जो कुछ कर रहे हैं अल्लाह उसको भली-भाँति जानता है।

आयत नं० 25 से 36 तक की व्याख्या

25 وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلٰى دَارِ السَّلٰمِ ؕ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝

इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने उस जन्नत को ह़ासिल करने की तर्ग़ीब (लालसा) दिलाई है जो अम्न सलामती का घर है, जहाँ अहले जन्नत को कोई परेशानी और कोई मुसीबत न होगी।

26-27 لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَزِيَادَةٌ ؕ وَلَا يَرْهَقُ وُجُوْهَهُمْ قَتَرٌ وَّلَا ذِلَّةٌ ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ كَسَبُوا السَّيِّاٰتِ جَزَآءُ سَيِّئَةٍۢ بِمِثْلِهَا ۙ وَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ مَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ كَاَنَّمَآ اُغْشِيَتْ وُجُوْهُهُمْ قِطَعًا مِّنَ الَّيْلِ مُظْلِمًا ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝

रसूलुल्लाह (सल्ल०) की दअ़वत के बाद लोग दो भाग में बट गये। एक जमाअ़त ने इस दअ़वत को क़ुबूल किया, दुनिया की रंगीनियों और इच्छा परस्ती से हट कर अल्लाह की मर्ज़ी को अपना मक़्सद बनाया और उस की इस तरह़ इ़बादत की कि जैसे वह अल्लाह को देख रहे हों। ऐसे मोमिनीन मुख़्लिसीन को अल्लाह तआ़ला ने जन्नत की ख़ुशख़बरी दी है और इस से भी बड़ी नेअ़मत अल्लाह के दीदार का वादा है।

'इमाम अह़मद' और 'इमाम मुस्लिम' ने सुहैब रूमी (रज़ि०) से रिवायत की है कि आप (सल्ल०) ने इस आयत की तिलावत फ़रमाई और कहा कि जब जन्नती जन्नत में और जहन्नमी जहन्नम में दाख़िल हो जाएँगे, तो एक आवाज़ लगाने वाला आवाज़ लगाएगा कि ऐ अहले जन्नत! अल्लाह ने तुम से एक वादा किया था, जिसे अब पूरा करना चाहता है। वह लोग कहेंगे कि क्या अल्लाह ने हमारे तराज़ुओं को भारी नहीं बना दिया? क्या हमारे चेहरों को चमकदार नहीं कर दिया और हमें जहन्नम से हटा कर जन्नत में दाख़िल नहीं कर दिया? अब और क्या चीज़ बाक़ी है? तो अल्लाह तआ़ला पर्दा हटाएगा और जन्नती उसे देखने लगेंगे। अल्लाह की क़सम, उस नेअ़मते दीदार से बढ़कर कोई नेअ़मत नहीं होगी और उस

से बढ़कर आँखों को ठंडक पहुँचाने वाली कोई चीज़ नहीं होगी।

दूसरे लोगों ने इस बात को झूठा समझकर ठुकराया, दुनिया की रंगीनियों में खो गये और शिर्क व गुनाहों के काम किये। ऐसे लोगों को अल्लाह ने जहन्नम की चेतावनी दी है, जिस से बढ़कर कोई ज़िल्लत व रुस्वाई नहीं होगी और अल्लाह के इस अ़ज़ाब से कोई उन्हें बचा नहीं सकेगा। **(मुस्लिम)**

28-29 وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا مَكَانَكُمْ أَنتُمْ وَشُرَكَاؤُكُمْ ۚ فَزَيَّلْنَا
بَيْنَهُمْ ۖ وَقَالَ شُرَكَاؤُهُم مَّا كُنتُمْ إِيَّانَا تَعْبُدُونَ ﴿٢٨﴾ فَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ إِن
كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغَافِلِينَ ﴿٢٩﴾

जिन लोगों ने दअ़वते इस्लाम को ठुकरा दिया और अल्लाह के साथ शिर्क की राह को अपनाया, जब मैदाने ह़श्र में अपने उन लोगों के साथ इकट्ठा किये जाएँगे जिन को यह शरीक ठहराते थे तो अल्लाह तआ़ला उन से कहेगा कि तुम सब अपनी-अपनी जगह ठहरे रहो, यहाँ तक कि तुम्हें अपने शिर्क का अन्जाम मालूम हो जाएगा। इस के बाद मुश्रिकीन और जिन को यह शरीक ठहराते थे उनके तमाम सम्बन्ध ख़त्म कर दिये जाएँगे, शिर्क करने वालों को अपने उपास्यों से किसी शफ़ाअ़त की उम्मीद बाक़ी नहीं रहेगी और जिस के साथ शिर्क करते थे अपना दामन झटक कर कह पड़ेंगे कि तुम हमारी नहीं बल्कि शैतान की अ़िबादत करते थे और अल्लाह गवाह है कि न हम ने तुम्हें अपनी अ़िबादत का हुक्म दिया था और न हम ने ऐसा चाहा था और न हमें इस का कुछ इल्म है। उस वक़्त मुश्रिकीन की बेबसी का क्या ह़ाल होगा उस की कल्पना इस दुनिया में नहीं की जा सकती। उन शुरका में इन्सान, जिन्न, फ़रिश्ते और पत्थर की बनी मूर्तियाँ सभी होंगे।

फ़रिश्ते, अम्बिया और नेक लोग तो अपनी ज़बानों से बरी होने का एलान कर देंगे और वह दुनिया में भी उन शिर्किया आ़माल से राज़ी नहीं थे और जो पत्थर के बुत बने होंगे उन्हें भी अल्लाह तआ़ला उस दिन बोलने की ताक़त देगा ताकि मुश्रिकों से बरी होने का एलान कर दें। बाज़ मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि बोलने की ताक़त नहीं होगी वह बुत (मूर्तियाँ) अपनी ज़बाने ह़ाल से बरी होने का एलान कर रहे होंगे।

30 هُنَالِكَ تَبْلُوا كُلُّ نَفْسٍ مَّا أَسْلَفَتْ ۚ وَرُدُّوا إِلَى اللَّهِ مَوْلَاهُمُ الْحَقِّ ۖ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٣٠﴾

क़ियामत के मैदान में जब हर शख़्स परेशान ह़ाल होगा और हर आदमी पर ख़ौफ़ व दहशत तारी होगी तो हर शख़्स अपने अच्छे और बुरे आ़माल को अपनी आँखों से देख रहा होगा। कुछ लोगों के आ़माल रद्द किये जा रहे होंगे तो कुछ के क़ुबूल किये जा रहे होंगे। कुछ के नेक आ़माल बहुत ही अच्छी शक्ल में उन के सामने आएँगे और कुछ के बुरे आ़माल बहुत बुरी शक्ल में होंगे और हर आदमी अपने दुनियावी आ़माल का मज़ा अपने दिल व दिमाग़ में मह़सूस कर रहा होगा। उस वक़्त तमाम झूठे मअ़बूद (उपास्य) ग़ायब हो चुके होंगे और तमाम इन्सान अपने मौला के सामने होंगे जो उन्हें उन के आ़माल का बदला देगा।

31 قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اَمَّنْ يَّمْلِكُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَمَنْ يُّخْرِجُ الْحَيَّ
مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُّدَبِّرُ الْاَمْرَ ؕ فَسَيَقُوْلُوْنَ اللّٰهُ ۚ فَقُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ۝

क़ियामत के मैदान में मुश्रिकीन का ह़ाल बयान करने के बाद उन के शिर्क के ख़िलाफ़ दलायल पेश किये जा रहे हैं और उन्हें दअ़वत दी जा रही है कि जब तुम एतिराफ़ करते हो कि वही अल्लाह रोज़ी देने वाला है, उसी ने सुनने और देखने की ताक़त दी है, वही ज़िन्दा को मुर्दा और मुर्दा को ज़िन्दा से निकालता है यानी फल को गुठली और गुठली को फल से, मोमिन को काफ़िर और काफ़िर को मोमिन से, अण्डे को मुर्गी से और मुर्गी को अण्डे से निकालता है और वही सारे जहाँ का पालनहार है तो फिर तुम्हें कैसे डर नहीं लगता कि उसे छोड़ कर ग़ैरों की अ़िबादत करते हो?

32 فَذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ ۚ فَمَاذَا بَعْدَ الْحَقِّ اِلَّا الضَّلٰلُ ۚۖ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ۝

इस में बताया गया है कि जो अल्लाह सारे जहाँ का पालने वाला है और जिन का ऊपर ज़िक्र हुआ वही तुम्हारा मअ़बूद (उपास्य) ह़क़ीक़ी है और ह़क़ व बातिल के दर्मियान कोई तीसरी राह नहीं है, इसलिए उस के अ़लावा कोई भी मअ़बूद (उपास्य) नहीं है। तो ऐ मुश्रिकीन! तुम अल्लाह तआ़ला की राह छोड़कर क्यों शिर्क की राह पर चले जा रहे हो?

33 كَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ فَسَقُوْۤا اَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝

मुश्रिकीन ने अल्लाह तआ़ला को मालिक मानने का एतिराफ़ करने के बावजूद जब शिर्क पर इस्रार किया और अल्लाह के बजाए दूसरों की अ़िबादत करने लगे, तो अल्लाह तआ़ला का उन के बारे में फ़ैसला हो गया कि वह लोग बद्‌बख़्त जहन्नमी हैं, यह कभी भी ईमान नहीं लाएँगे।

34 قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ؕ قُلِ اللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ۝

मुश्रिकीन के ख़िलाफ़ यहाँ फिर हुज्जत क़ायम की जा रही है कि ऐ मेरे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! ज़रा इन मुश्रिकीन से पूछिए कि क्या तुम जिस के साथ शरीक ठहराते हो उस में से कोई है जो इन्सान को नुत्फ़ा (वीर्य) से पैदा करे? फिर एक निर्धारित समय के बाद उस को मौत दे दे और फिर क़ियामत के दिन दोबारा ज़िन्दा करे? आप कह दीजिए कि यक़ीनन जवाब यही मिलेगा कि कोई नहीं। वह तो सिर्फ़ अल्लाह है जो इस पर क़ादिर है, तो फिर तुम कैसे उस के सिवा दूसरों की अ़िबादत करते हो?

35 قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّهْدِيْۤ اِلَى الْحَقِّ ؕ قُلِ اللّٰهُ يَهْدِيْ لِلْحَقِّ ؕ اَفَمَنْ يَّهْدِيْۤ اِلَى الْحَقِّ اَحَقُّ
اَنْ يُّتَّبَعَ اَمَّنْ لَّا يَهِدِّيْۤ اِلَّاۤ اَنْ يُّهْدٰى ۚ فَمَا لَكُمْ ۫ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ۝

उन मुश्रिकीन के ख़िलाफ़ एक और हुज्जत क़ायम की जा रही है कि ऐ मेरे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! ज़रा उन मुश्रिकीन से पूछिए कि क्या तुम्हारे मअ़बूदों (उपास्यों) में कोई है जो भटकते हुए इन्सानों की रहनुमाई करे? आप कह दीजिए कि यक़ीनन कोई नहीं है, वह सिर्फ़ अल्लाह है जो इस पर

कुद्रत रखता है, तो फिर अ़िबादत सिर्फ़ उसी की होनी चाहिए न कि उन मूर्तियों की जो एक जगह से दूसरी जगह जाने में भी दूसरों की मुह़ताज हैं। यह कैसी तुम्हारी कम अ़क़्ली है और कैसा फ़ैसला है?

36 وَمَا يَتَّبِعُ أَكْثَرُهُمْ إِلَّا ظَنًّا ۚ إِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ ﴿٣٦﴾

यह मुश्रिकीन जो बुतों को अपना मअ़बूद समझते हैं तो इन के पास ख़यालात और कल्पना के अ़लावा इस की कोई दलील नहीं है और मालूम है कि कल्पना से ह़क़ीक़त नहीं बदल जाती, इसलिए यह शिर्क करने वाले जान लें कि अल्लाह उन के तमाम शिर्क वाले आ़माल को रिकार्ड कर रहा है, जिन का बदला क़ियामत के दिन उन्हें ज़रूर देगा।

आयत नं० 37 से 53 तक

وَمَا كَانَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ اَنْ يُّفْتَرٰى مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيْلَ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ
الْعٰلَمِيْنَ ۝ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۭ قُلْ فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّثْلِهٖ وَادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ بَلْ كَذَّبُوْا بِمَا
لَمْ يُحِيْطُوْا بِعِلْمِهٖ وَلَمَّا يَاْتِهِمْ تَاْوِيْلُهٗ ۭ كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَمِنْهُمْ مَّنْ
يُّؤْمِنُ بِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهٖ ۭ وَرَبُّكَ اَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِيْنَ ۝ وَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ لِّيْ عَمَلِيْ وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ ۚ اَنْتُمْ بَرِيْۗـــُٔوْنَ مِمَّآ
اَعْمَلُ وَاَنَا بَرِيْۗءٌ مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُوْنَ اِلَيْكَ ۭ اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ وَلَوْ كَانُوْا لَا يَعْقِلُوْنَ ۝ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْظُرُ اِلَيْكَ ۭ
اَفَاَنْتَ تَهْدِي الْعُمْيَ وَلَوْ كَانُوْا لَا يُبْصِرُوْنَ ۝ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ شَيْـــًٔا وَّلٰكِنَّ النَّاسَ اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ
كَاَنْ لَّمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا سَاعَةً مِّنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُوْنَ بَيْنَهُمْ ۭ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِلِقَاۗءِ اللّٰهِ وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ۝ وَاِمَّا نُرِيَنَّكَ
بَعْضَ الَّذِيْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ اللّٰهُ شَهِيْدٌ عَلٰي مَا يَفْعَلُوْنَ ۝ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلٌ ۚ فَاِذَا جَاۗءَ رَسُوْلُهُمْ
قُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ قُلْ لَّآ اَمْلِكُ لِنَفْسِيْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا اِلَّا
مَا شَاۗءَ اللّٰهُ ۭ لِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ۭ اِذَا جَاۗءَ اَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ۝ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُهٗ بَيَاتًا اَوْ نَهَارًا
مَّاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْمُجْرِمُوْنَ ۝ اَثُمَّ اِذَا مَا وَقَعَ اٰمَنْتُمْ بِهٖ ۭ اٰۗلْــٰٔنَ وَقَدْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ ۝ ثُمَّ قِيْلَ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا
عَذَابَ الْخُلْدِ ۚ هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ۝ وَيَسْتَنْۢبِـــُٔـوْنَكَ اَحَقٌّ هُوَ ڼ قُلْ اِيْ وَرَبِّيْٓ اِنَّهٗ لَحَقٌّ ڼ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ۝

अनुवाद-

(37) और यह कुर्आन ऐसा नहीं है कि अल्लाह के सिवा और कोई अपनी ओर से बना लाए, बल्कि यह तो तस्दीक़ करने वाला है उस (कलाम) की जो इसके पहले से है और उन्हीं किताबों का विस्तार है, जिसमें कोई सन्देह नहीं, यह सारे संसार के 'रब' की ओर से है। (38) क्या ये लोग कहते हैं ''उस (रसूल) ने इसको अपनी ओर से गढ़ लिया है?'' कह दीजिए, "अगर सच्चे हो तो, तुम एक ही सूरः ऐसी बना लाओ और अल्लाह के सिवा बुला लो, जिसे बुला सकते हो। अगर तुम सच्चे हो"। (39) बल्कि बात यह है कि उस चीज़ को झुठलाने लगे जिसके इल्म पर ये हावी न हो सके, और अभी इन पर सच्चाई खुलने का मौक़ा ही नहीं आया; इसी तरह उन लोगों ने भी झुठलाया था, जो इनसे पहले थे, फिर देख लो! उन ज़ालिमों का कैसा अंजाम हुआ। (40) और इनमें से कुछ तो ऐसे हैं कि इस (किताब) पर ईमान ले आते हैं, और इनमें कुछ ऐसे भी हैं, कि ईमान नहीं लाते, और आप का 'रब' फ़सादियों को खूब जानता है। (41) और अगर यह आप को झुठलाएँ, तो कह दीजिए, ''मेरा किया मेरे लिए और तुम्हारा किया तुम्हारे लिए; तुम मेरे काम के ज़िम्मेदार नहीं और मैं तुम्हारे काम का ज़िम्मेदार नहीं हूँ"। (42) और इनमें कुछ ऐसे हैं जो आप की ओर कान लगाते हैं, तो क्या आप बहरों को सुना देंगे, जबकि वह कुछ न समझते हों? (43) और उनमें से कुछ ऐसे हैं, जो आप की ओर देख रहे हैं, तो क्या आप अन्धों को रास्ता दिखा सकेंगे, चाहे वे कुछ भी न देखते हों? (44) अल्लाह तो लोगों पर ज़रा भी जुल्म नहीं करता, लेकिन लोग खुद ही अपने आप पर जुल्म करते हैं। (45) और जिस दिन 'वह' उनको इकट्ठा करेगा तो ऐसा लगेगा जैसे वे (दुनिया में) दिन

की एक घड़ी से ज़्यादा भर ठहरे ही नहीं थे, आपस में एक-दूसरे को पहचानेंगे, वे लोग घाटे में पड़ गये, जिन्होंने अल्लाह से मिलने को झुठलाया और रास्ता न पा सके। (46) और अगर 'हम' आप को कुछ दिखा भी दें जिसका 'हम' उनसे वादा कर रहे हैं, या हम आप को वफ़ात (मौत) दे दें, उन्हें तो हमारी ही ओर लौटकर आना है, फिर जो कुछ वे कर रहे हैं उस पर अल्लाह गवाह है। (47) और हर उम्मत (समुदाय) के लिए एक रसूल (भेजा) है, फिर जब उनके पास उनका रसूल आ जाता है तो उनके बीच इन्साफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया जाता है, और उन पर कुछ ज़ुल्म नहीं किया जाता। (48) और ये कहते हैं, "अगर तुम सच्चे हो तो यह वादा (अ़ज़ाब का) कब पूरा होगा?" (49) कह दीजिए, ''मेरा अपना फ़ायदा व नुक़सान भी मेरे हाथ में नहीं सिवाय इसके कि जो अल्लाह चाहता है, हर उम्मत (समुदाय) के लिए एक समय (निर्धारित) है जब उनका समय आ जाता है तो वे एक घड़ी भी देर नहीं कर सकते और न जल्दी कर सकते हैं। (50) कह दीजिए, ''यह तो बताओ कि अगर तुम पर अल्लाह का अ़ज़ाब रात को या दिन को आ जाए, तो फिर मुजरिम किस बात की जल्दी करेंगे; (51) क्या फिर जब वह आ पड़ेगी, तब ही उसका यक़ीन करोगे? क्या अब! इसी के लिए तो जल्दी मचाया करते थे। (52) फिर जिन लोगों ने ज़ुल्म किया, उनसे कहा जाएगा, ''हमेशा-हमेश के लिए अ़ज़ाब का मज़ा चखो जो कुछ तुम किया करते थे तुम उन्हीं (आमाल) का बदला पाओगे। (53) और आपसे पूछते हैं, ''क्या यह (अ़ज़ाब) सच है?'' कह दीजिए, ''मेरे रब की क़सम! वह बिल्कुल सच है और तुम क़ाबू से बाहर निकल जाने वाले नहीं"।

आयत नं० 37 से 53 तक की व्याख्या

37 وَمَا كَانَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ اَنْ يُّفْتَرٰى مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِىْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيْلَ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝

इन आयतों में रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सदाक़त और वह़्य इलाही की ह़क़्क़ानियत की बात की जा रही है। यहाँ अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है कि यह क़ुर्आन करीम ऐसा है जिसमें इन्सान की दुनियावी और मरने के बाद की भलाई के लिए तमाम चीज़ें मौजूद हैं, यह किसी इन्सान का गढ़ा हुआ क़ुर्आन नहीं हो सकता। यह तो वह कलाम (वाणी) है जो तमाम पिछली आसमानी किताबों की तस्दीक़ व ताईद (पुष्टि) करता है और उन में जो तह़रीफ़ात (संशोधन) किया गया उन्हें खोल कर बयान करता है। ह़लाल व ह़राम और तमाम अह़काम जिन का सम्बन्ध इन्सानी ज़िन्दगी से है उन्हें इस तरह़ बयान करता है कि किसी साह़िबे अ़क़्ल के दिल में शंका बाक़ी नहीं रह सकती कि यह अल्लाह का कलाम नहीं है।

38 اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۭ قُلْ فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّثْلِهٖ وَادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝

अल्लाह तआ़ला ने मुश्रिकीने अ़रब को इस क़ुर्आन के सिल्सिले में तीन तरह़ से चैलेंज किया है। पहले तो पूरा क़ुर्आन जैसा लाने का चैलेंज किया, जिसे सूरः बनी इस्राईल आयत नं० (88) में फ़रमायाः-

قُلْ لَّىِٕنِ اجْتَمَعَتِ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلٰٓى اَنْ يَّاْتُوْا بِمِثْلِ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لَا يَاْتُوْنَ بِمِثْلِهٖ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيْرًا

और जब अहले अ़रब अपने तमाम दावों के बावजूद ऐसा करने से आ़जिज़ (असमर्थ्य) रहे तो

अल्लाह तआ़ला ने क़ुर्आन जैसी दस ही सूरतें लाने का चैलेंज किया। जैसा कि सूरः हूद आयत नं० (13) में फ़रमायाः-

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۖ قُلْ فَأْتُوا بِعَشْرِ سُوَرٍ مِّثْلِهِ مُفْتَرَيَاتٍ وَادْعُوا مَنِ اسْتَطَعْتُم مِّن دُونِ اللَّهِ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ

और जब इस पर भी ख़ामोश रहे तो क़ुर्आन करीम ने उन के ग़ुरूर को तोड़ दिया और कहा कि अगर तुम यह समझते हो कि यह क़ुर्आन मुह़म्मद का बनाया हुआ है तो तुम भी उन्हीं जैसे एक इन्सान हो, क़ुर्आन जैसी एक सूरः लाकर दिखा दो और अपनी मदद के लिए जिसे चाहे बुला लो। इस चैलेंज के लिए अल्लाह तआ़ला ने इस सूरः की यह आयत नाज़िल फ़रमाई।

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۖ قُلْ فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِّثْلِهِ وَادْعُوا مَنِ اسْتَطَعْتُم مِّن دُونِ اللَّهِ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ लेकिन इतिहास गवाह है कि इस चैलेंज का जवाब आज तक कोई न दे सका और न क़ियामत तक कोई दे सकेगा। इसलिए यह क़ुर्आन अल्लाह का मोअ़जिज़ह (चमत्कार) है, कोई इन्सान इस जैसा कलाम नहीं ला सकता।

39 بَلْ كَذَّبُوا بِمَا لَمْ يُحِيطُوا بِعِلْمِهِ وَلَمَّا يَأْتِهِمْ تَأْوِيلُهُ ۚ كَذَٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ
فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ ۝

जब कुफ़्फ़ारे अ़रब की ओर से इस चैलेंज का कोई जवाब नहीं मिला और न ही मिलना था और उन के पास क़ुर्आन और नबी करीम (सल्ल०) की नुबूव्वत के इन्कार का कोई जवाब न रहा तो अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि इन काफ़िरों ने क़ुर्आन को कभी समझने की कोशिश ही नहीं की। चूंकि इन की इच्छाओं के मुताबिक़ नहीं था इसलिए बिना सोचे समझे इन्कार कर दिया और यह सह़ी रास्ते और ह़क़ से मह़रूम (वंचित) रहे।

40 وَمِنْهُم مَّن يُؤْمِنُ بِهِ وَمِنْهُم مَّن لَّا يُؤْمِنُ بِهِ ۚ وَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِينَ ۝

इसमें अल्लाह तआ़ला ने नबी (सल्ल०) को ख़बर दी है कि यह क़ुर्आन तो अल्लाह का इन्सानों के लिए बड़ा इनूआ़म है। अल्लाह तआ़ला जिन पर रह़म करेगा वही इस पर ईमान ले आएँगे और इस से फ़ायदा उठाएँगे और जो शक्क़ी मिज़ाज के होंगे, वह आप की तमाम कोशिशों के बावजूद नहीं मानेंगे और अल्लाह को मालूम है कि कौन सह़ी रास्ते का ह़क़्दार है और कौन ग़लत रास्ते का।

41-43 وَإِن كَذَّبُوكَ فَقُل لِّي عَمَلِي وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ ۖ أَنتُم بَرِيئُونَ مِمَّا أَعْمَلُ وَأَنَا بَرِيءٌ مِّمَّا تَعْمَلُونَ ۝
وَمِنْهُم مَّن يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ ۚ أَفَأَنتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ وَلَوْ كَانُوا لَا يَعْقِلُونَ ۝ وَمِنْهُم مَّن يَنظُرُ إِلَيْكَ ۚ
أَفَأَنتَ تَهْدِي الْعُمْيَ وَلَوْ كَانُوا لَا يُبْصِرُونَ ۝

अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) को हुक्म दिया कि अगर मुश्रिकीने अ़रब आप को झुठलाएँ तो उन से अलग हो जाइए इसलिए कि उन के दिलों पर मुहर लग चुकी है, उन से ईमान की उम्मीद नहीं की जा सकती। जब आप क़ुर्आन की तिलावत करते हैं तो वह बज़ाहिर सुनते तो हैं, लेकिन इस से कोई फ़ायदा नहीं उठाते इसलिए कि वह बहरे हैं और अ़क़्ल से भी दूर हैं और आप की तरफ़ वह देखते भी हैं, लेकिन इस से उन्हें कोई फ़ायदा नहीं पहुँचता इसलिए कि वह अन्धे हैं।

44 إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ شَيْئًا وَلَٰكِنَّ النَّاسَ أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٤٤﴾

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि कु़र्आन पर उन का ईमान न लाना उन के बुरे आ़माल का नतीजा है। जब उन्होंने घमण्ड में आकर ह़क़ का इन्कार कर दिया और बुराई पर जमे रहे तो अल्लाह तआ़ला ने उन से ईमान व अ़मल की तौफ़ीक़ छीन ली, अल्लाह तआ़ला किसी पर ज़ुल्म नहीं करता।

'इमाम मुस्लिम' ने ह़ज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी (रज़ि०) से ह़दीसे कु़द्सी रिवायत की है कि ऐ मेरे बन्दों! मैंने अपने ऊपर ज़ुल्म को ह़राम कर लिया है और तुम्हारे आपस में ज़ुल्म करने को भी ह़राम कर दिया है इसलिए एक दूसरे पर ज़ुल्म न करो। इस के बाद फ़रमाया, ऐ मेरे बन्दो! तुम्हारे आ़माल को मैं गिन रहा हूँ फिर मैं तुम्हें पूरा-पूरा लौटा दूँगा तो जो कोई अच्छा नतीजा पाए वह अल्लाह का शुक्र अदा करे और जो बुरा नतीजा पाए वह अपने आप पर अफ़्सोस करे।

45 وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ كَأَن لَّمْ يَلْبَثُوا إِلَّا سَاعَةً مِّنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُونَ بَيْنَهُمْ ۚ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِلِقَاءِ
اللَّهِ وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ﴿٤٥﴾

इस में कि़यामत की घबराहट को बयान किया गया है कि जब लोग अपनी क़ब्रों से निकल कर मैदाने मह़शर में जमा होंगे तो दहशत की वजह से दुनिया की लज़्ज़तों को भूल जाएँगे और कहेंगे कि हम तो बहुत थोड़ी देर दुनिया में थे और दुनिया में जितने लोग एक दूसरे को जानते पहचानते थे वह सभी, वहाँ भी एक दूसरे को पहचान लेंगे, लेकिन कुछ ही देर बाद उन में से हर एक अपने आप में फंस जाएँगे और किसी दूसरे की ओर कोई ध्यान नहीं होगा। इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि जो लोग आख़िरत के दिन को झुठलाते हैं, उन का नुक़्सान बड़ा नुक़्सान है और वह कभी भी सीधी राह पर नहीं आ सकते हैं। इसलिए कि मौत के बाद उठाया जाना और आख़िरत पर ईमान रखना सीधी राह पर चलने का सब से बड़ा ज़रिया है।

46 وَإِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ اللَّهُ شَهِيدٌ عَلَىٰ مَا يَفْعَلُونَ ﴿٤٦﴾

रसूलुल्लाह (सल्ल०) को ख़िताब (सम्बोधित) कर के अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि हम ने उन काफ़िरों से जो कह रखा है कि आप का दीन ग़ालिब होकर रहेगा और मुसलमान उन्हें या तो क़त्ल करेंगे या जंज़ीर में जकड़ेंगे तो मुम्किन है कि आप यह सब कुछ अपनी ज़िन्दगी में अपनी आँखों से देख लेंगे और अगर इस के पहले ही अल्लाह ने आप को उठा लिया तो वह लोग हम से बच कर कहाँ जाएँगे, आख़िर उन्हें मरने के बाद तो हमारे पास ही लौट कर आना है और हम उन के करतूतों को देख रहे हैं और उनके ख़िलाफ़ अपनी शहादतें जमा कर रहे हैं तो वहाँ आख़िरत में हम उन्हें ज़रूर अ़ज़ाब देंगे और आप अपनी आँखों से उन के ह़ालात देख लेंगे। चुनाँचे मैदाने बद्र और दूसरी जंगों में उन में से बहुत से मारे गये और बहुत से कै़दी बनाये गये और उन का घमण्ड चूर-चूर हो गया और रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने अपनी आँखों से उन्हें ज़लील व रुस्वा होते हुए देख लिया और अल्लाह तआ़ला ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से किया हुआ अपना वादा सच कर दिखाया।

47 وَلِكُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولٌ ۖ فَإِذَا جَاءَ رَسُولُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُم بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝

हर ज़माने में अल्लाह तआ़ला क़ौम की रहनुमाई के लिए रसूल भेजता रहा है और रसूल के आ जाने के बाद जिस क़ौम ने भी उसे झुठलाया तो अल्लाह तआ़ला ने इन्साफ़ के साथ उन के दर्मियान फ़ैसला कर दिया कि रसूल और उन के मानने वालों को निजात दे दी और उन के झुठलाने वालों को अ़ज़ाब में मुब्तिला कर दिया।

इस आयत का एक मतलब यह भी बयान किया गया है कि जब हर क़ौम का नबी मैदाने मह़शर में अपनी क़ौम के सामने आ जाएगा तो अल्लाह तआ़ला उन का फ़ैसला इन्साफ़ के साथ कर देगा।

48-49 وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۝ قُل لَّا أَمْلِكُ لِنَفْسِي ضَرًّا وَلَا نَفْعًا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۗ
لِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ ۚ إِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً ۖ وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ ۝

रसूलुल्लाह (सल्ल०) जब भी कुफ़्फ़ारे कुरैश को अ़ज़ाब की धमकी देते तो वह लोग आप का मज़ाक़ उड़ाते और कहते कि अगर तुम अपने को रसूल कहने में सच्चे हो तो कहाँ है तुम्हारा वादा? क्यों नहीं हम पर अ़ज़ाब उतर आता? तो अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) को जवाब देने के लिए कहा कि मैं तो ख़ुद अपनी ज़ात के लिए किसी चीज़ के नफ़ा या नुक़्सान का अख़्तियार नहीं रखता सिवाय इस के कि जो मुझे उस की मर्ज़ी से ह़ासिल होता है तो फिर मैं तुम्हारी मर्ज़ी के मुताबिक़ तुम पर अल्लाह का अ़ज़ाब कैसे ला सकता हूँ? बस इतनी बात जानता हूँ कि हर उम्मत का एक वक़्त मुक़र्रर (निर्धारित) है जब वह वक़्त आ जाएगा तो एक सेकण्ड न पीछे होगा न आगे।

यह आयत दलील है कि किसी मुसीबत के वक़्त रसूलुल्लाह (सल्ल०) को पुकारना और उन से मदद माँगना शिर्क अक्बर (बहुत भारी गुनाह) है। इसलिए कि अल्लाह तआ़ला के अ़लावा कोई दूसरी ज़ात इस पर क़ादिर नहीं है। जो लोग इस दुनिया से जा चुके हैं उन से कुछ नहीं माँगा जाएगा चाहे वह कोई नबी हो या वली या अल्लाह का कोई नेक बन्दा।

50-52 قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُهُ بَيَاتًا أَوْ نَهَارًا مَّاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْمُجْرِمُونَ ۝ أَثُمَّ إِذَا مَا وَقَعَ
آمَنتُم بِهِ ۚ آلْآنَ وَقَدْ كُنتُم بِهِ تَسْتَعْجِلُونَ ۝ ثُمَّ قِيلَ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُوقُوا عَذَابَ الْخُلْدِ هَلْ
تُجْزَوْنَ إِلَّا بِمَا كُنتُمْ تَكْسِبُونَ ۝

जो मक्का के इन्कारी नबी करीम (सल्ल०) से बतौर मज़ाक़ अ़ज़ाब को लाने की माँग करते थे, उन्हीं को नबी करीम (सल्ल०) की ज़बानी दूसरा जवाब दिया जा रहा है कि ज़रा तुम लोग बताओ कि अगर अल्लाह का अ़ज़ाब रात को सोने की ह़ालत में या दिन को काम काज के वक़्त आ जाए तो क्या तुम लोग इसे बर्दाश्त करने की ताक़त रखते हो? जब ऐसी बात नहीं है तो ऐ मुजरिमों! तुम अ़ज़ाब की जल्दी क्यों मचाते हो? यह कोई ऐसी चीज़ तो नहीं है जिस के लिए जल्दी की जाए। क्या तुम लोग अपने कुफ़्र व हठधर्मी पर अड़े रहना चाहते हो यहाँ तक कि जब अ़ज़ाब आ जाए तो ईमान ले आओ। याद रखो!

ऐसा ईमान तुम्हारे काम नहीं आएगा उस वक़्त अल्लाह तुम से कहेगा कि अब ईमान ले आओ, ह़ालांकि इस के पहले तो तुम बतौर मज़ाक़ व इन्कार अ़ज़ाब के जल्दी मचाए हुए थे।

आयत नं० (52) में बताया गया है कि क़ियामत के दिन उन ज़ालिमों को जहन्नम में डाल दिया जाएगा और उन से कहा जाएगा कि अब हमेशा के लिए अपने करतूतों के बदले अ़ज़ाब का मज़ा चखते रहो।

53 وَيَسْتَنْبِئُونَكَ أَحَقٌّ هُوَ ۖ قُلْ إِي وَرَبِّي إِنَّهُ لَحَقٌّ ۖ وَمَا أَنتُم بِمُعْجِزِينَ ۝

मक्का के लोग अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाब का बार-बार और मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ में मज़ाक़ उड़ाते थे जैसा कि अभी ऊपर गुज़र चुका है। इसी क़िस्म का उनका यह सवाल भी था जो इस आयत में बयान किया गया कि ऐ मुह़म्मद! तुम जो अ़ज़ाब की बात करते हो तो क्या वाक़ई सच्चे हो? अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) को उन्हें जवाब देने को कहा कि हाँ, मेरे रब की क़सम! यह बात बिलकुल सही है और तुम अल्लाह को इस से रोक नहीं सकोगे।

ह़ाफ़िज़ इब्ने कसीर (रह़०) लिखते हैं कि नबी करीम (सल्ल०) ने अल्लाह के हुक्म से उस के नाम की क़ुर्आन में तीन जगह क़सम खाई है। एक इस आयत में काफ़िरों को अ़ज़ाबे इलाही की यक़ीन दहानी कराने के लिए दूसरी सूरः सबा आयत नं० (3) وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَأْتِينَا السَّاعَةُ ۖ قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتَأْتِيَنَّكُمْ में क़ियामत की और तीसरी सूरः तग़ाबुन आयत नं० (7) की زَعَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَن لَّن يُبْعَثُوا ۚ قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ ۚ وَذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۝ में मौत के बाद की ज़िन्दगी के लिए कि अल्लाह के लिए यह बहुत आसान है।

आयत नं० 54 से 70 तक

وَلَوْ أَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِي الْأَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهِ ۗ وَأَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَأَوُا الْعَذَابَ ۖ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ ۚ وَهُمْ لَا
يُظْلَمُونَ ۝ أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ أَلَا إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝ هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ
وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝ يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَتْكُمْ مَوْعِظَةٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَشِفَاءٌ لِمَا فِي الصُّدُورِ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِلْمُؤْمِنِينَ ۝
قُلْ بِفَضْلِ اللَّهِ وَبِرَحْمَتِهِ فَبِذَٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوا هُوَ خَيْرٌ مِمَّا يَجْمَعُونَ ۝ قُلْ أَرَأَيْتُمْ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ لَكُمْ مِنْ رِزْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِنْهُ
حَرَامًا وَحَلَالًا قُلْ آللَّهُ أَذِنَ لَكُمْ ۖ أَمْ عَلَى اللَّهِ تَفْتَرُونَ ۝ وَمَا ظَنُّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ
إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ۝ وَمَا تَكُونُ فِي شَأْنٍ وَمَا تَتْلُو مِنْهُ مِنْ قُرْآنٍ وَلَا
تَعْمَلُونَ مِنْ عَمَلٍ إِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُودًا إِذْ تُفِيضُونَ فِيهِ ۚ وَمَا يَعْزُبُ عَنْ رَبِّكَ مِنْ مِثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي الْأَرْضِ
وَلَا فِي السَّمَاءِ وَلَا أَصْغَرَ مِنْ ذَٰلِكَ وَلَا أَكْبَرَ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ۝ أَلَا إِنَّ أَوْلِيَاءَ اللَّهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ
يَحْزَنُونَ ۝ الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ۝ لَهُمُ الْبُشْرَىٰ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ ۚ لَا تَبْدِيلَ لِكَلِمَاتِ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ
هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ وَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ إِنَّ الْعِزَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا ۚ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَمَنْ
فِي الْأَرْضِ ۗ وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ شُرَكَاءَ ۚ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ۝ هُوَ
الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَسْمَعُونَ ۝ قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ۗ سُبْحَانَهُ ۖ
هُوَ الْغَنِيُّ ۖ لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ إِنْ عِنْدَكُمْ مِنْ سُلْطَانٍ بِهَٰذَا ۚ أَتَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝ قُلْ إِنَّ
الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُونَ ۝ مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ نُذِيقُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِيدَ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ۝

अनुवाद–

(54) और अगर हर (नाफ़रमान) व्यक्ति के पास वह सब कुछ हो, जो धरती में है, तो वह फ़िदया (अर्थदण्ड) के रूप में उसे दे डाले, (लेकिन उससे छुटकारा नहीं) जब वे अ़ज़ाब को देखेंगे नदामत को छिपाएँगे, और उनके बीच इन्साफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया जाएगा और उन पर कोई जुल्म न होगा। (55) याद रखो जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, सब अल्लाह ही का है, और याद रखो कि अल्लाह का वादा सच्चा है लेकिन अकसर लोग नहीं जानते; (56) 'वही' जिलाता और मारता है और 'उसी' की ओर तुम 'सब' को लौट कर जाना है। (57) ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे 'रब' की ओर से नसीहत (उपदेश), और दिलों के बीमारियों की शिफ़ा और ईमान वालों के लिए हिदायत और रह़मत आ चुकी है। (58) कह दीजिए, ''यह (कुर्आन) अल्लाह की मेहरबानी और उसकी रह़मत से नाज़िल हुआ है, और लोगों को चाहिए कि इसको पाकर खुश हों, यह उस से कहीं बेहतर है जिसको यह जमा करने में लगे हैं,'' (59) कह दीजिए '' क्या तुम लोगों ने यह भी देखा है कि जो रोज़ी अल्लाह ने तुम्हारे लिए उतारी है उसमें से तुमने खुद ही (कुछ को) ह़राम और (कुछ को) ह़लाल ठहरा लिया है?'' कह दीजिए, "क्या अल्लाह ने तुम्हें इसकी इजाज़त दी है या तुम अल्लाह पर झूठ गढ़ कर थोप रहे हो?'' (60) और जो लोग झूठ गढ़ कर उसे अल्लाह पर थोपते हैं वे

क़ियामत के दिन के विषय में क्या समझ रखे हैं? बेशक अल्लाह तो लोगों पर बड़ा फ़ज़्ल करने वाला है लेकिन उनमें अक्सर लोग नाशुक्रे हैं। (61) और तुम जिस हाल में भी होते हो, और क़ुर्आन में से जो कुछ भी पढ़ते हो, और तुम लोग जो काम भी करते हो, 'हम' तुम्हें देख रहे होते हैं, जब तुम उसमें लगे रहते हो, और तुम्हारे रब से ज़र्रा (कण) भर भी कोई चीज़ छिपी नहीं है, न धरती में, और न आसमान में; और न उससे छोटी और न बड़ी कोई चीज़ ऐसी है, जो एक स्पष्ट किताब में मौजूद न हो। (62) सुनो, अल्लाह के दोस्तों को न तो कोई डर होगा और न वे ग़मगीन होंगे; (63) जो लोग ईमान लाए और परहेज़गारी अपनाते रहे। (64) उनके लिए दुनिया की ज़िन्दगी में ख़ुशख़बरी है, और आख़िरत में भी, अल्लाह की बातें बदला नहीं करतीं- यही बड़ी कामियाबी है। (65) और उन लोगों (काफ़िरों) की बातें आप को दुखी न करें, इज़्ज़त (प्रभुत्व) सब अल्लाह ही के लिए है, 'वह' सुनता, जानता है। (66) जान लो! कि जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, सब अल्लाह ही का है और जो अल्लाह को छोड़ कर दूसरे साझीदारों को पुकारते हैं, वे किसी के पीछे नहीं चलते वे तो केवल ज़न्न (अटकल) पर चलते हैं और केवल अटकलें दौड़ाते हैं। (67) 'वही' तो है जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई ताकि तुम उसमें आराम करो, और दिन को प्रकाशमान बनाया? बेशक इनमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो सुनते हैं। (68) कहते हैं, ''अल्लाह ने बेटा बना रखा है'' उसकी ज़ात पाक और बेनियाज़ (निस्पृह) है, जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, सब 'उसी' का है तुम्हारे पास इसकी कोई दलील नहीं, क्या तुम अल्लाह के बारे में ऐसी बातें कहते हो, जिसकी तुम्हें जानकारी नहीं? (69) कह दीजिए, ''जो लोग अल्लाह पर झूठी बातें गढ़ते हैं वे कामियाब नहीं होते।'' (70) यह तो दुनिया का सुख है फिर 'हमारी' ही ओर उन्हें लौट कर आना है, फिर जो इन्कार वे किया करते थे उसके बदले में 'हम' उन्हें सख़्त अ़ज़ाब का मज़ा चखाएँगे।

आयत नं० 54 से 70 तक की व्याख्या

54 وَلَوْ أَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِي الْأَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهِ ۗ وَأَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَأَوُا الْعَذَابَ ۖ وَقُضِيَ
بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ ۚ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٥٤﴾

इस आयत में क़ियामत के दिन का मन्ज़र खींचा गया है कि उस दिन ज़ालिम लोग चाहेंगे कि काश! वह पूरी दुनिया देकर अल्लाह के अ़ज़ाब से अपनी जान का छुट्कारा करा लेते, वह अपने किये पर दिल में अफ़्सोस करेंगे और उन के हक़ में अल्लाह का फ़ैसला पूरे इन्साफ़ के साथ होगा।

55-56 أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ أَلَا إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥٥﴾
هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٥٦﴾

आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है उस का मालिक सिर्फ़ अल्लाह है। वह जिस तरह़ चाहता है करता है, इसलिए जिसे चाहता है अ़ज़ाब देता है और जिस पर चाहता है रह़म करता है, उस पर कोई एतिराज़ नहीं कर सकता और जान लो! कि अल्लाह ने काफ़िरों के बारे में जो वादा कर रखा है वह

बिल्कुल हक़ है, लेकिन अक्सर लोग इस का यक़ीन नहीं रखते हैं इसीलिए कुफ़्र की राह अख़्तियार करते हैं और वही ज़िन्दा करता है और मारता है। इसलिए काफ़िरों को भी मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा करेगा और उन के किये का बदला देगा।

57 يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَتْكُمْ مَوْعِظَةٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَشِفَاءٌ لِمَا فِي الصُّدُورِ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِلْمُؤْمِنِينَ ۝

नबी करीम (सल्ल०) की सच्चाई और मौत के बाद की ज़िन्दगी को साबित करने के बाद अल्लाह तआ़ला ने अ़रब व अ़जम के तमाम इन्सानों को क़ुर्आन करीम के एह्तिमराम (सम्मान) का एह्सास दिलाया है और उस की ख़ूबियों को बयान कर के उन्हें दअ़वत दी है कि जब क़ुर्आन अनगिनत ख़ूबियों वाली किताब है तो उस पर ईमान लाकर अपनी दुनिया व आख़िरत क्यों नहीं सुधार लेते? क़ुर्आन में इन्सानों के लिए हर क़िस्म की नसीहत है, इस के ज़रिये शक व शुब्हा और कुफ़्र व निफ़ाक़ की बीमारियों से निजात मिलती है और यह मोमिनों के लिए हिदायत और रह्मत का ज़रिया है।

58 قُلْ بِفَضْلِ اللَّهِ وَبِرَحْمَتِهِ فَبِذَٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوا هُوَ خَيْرٌ مِمَّا يَجْمَعُونَ ۝

इस में क़ुर्आन को अल्लाह का फ़ज़्ल और इस्लाम को उस की रह्मत कहा गया है और इन दोनों को दुनिया में जो कुछ है सब से बेहतर बताया गया है और कहा गया है कि मोमिनों को इन दोनों नेअ़्मतों के हुसूल पर ख़ुशी मनानी चाहिए न कि दुनिया की मिटने वाली चीज़ों पर। इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से यही तफ़्सीर नक़्ल की गई है।

59 قُلْ أَرَأَيْتُمْ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ لَكُمْ مِنْ رِزْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِنْهُ حَرَامًا وَحَلَالًا قُلْ آللَّهُ أَذِنَ
لَكُمْ أَمْ عَلَى اللَّهِ تَفْتَرُونَ ۝

नबी करीम (सल्ल०) के नुबूव्वत की तस्दीक़ के लिए कहा जा रहा है कि ऐ मक्का के इन्कारियों! तुम जो, कुछ चीज़ों को ह़लाल और कुछ को ह़राम कहते हो, अगर यह फ़ैसले तुम्हारी इच्छाओं के हैं तो किसी भी अ़क़्लमन्द आदमी के लिए क़ाबिले क़ुबूल नहीं हैं और अगर यह समझते हो कि यह अल्लाह का फ़ैसला है तो भी ग़लत है क्योंकि अल्लाह के हुक्मों का इ़ल्म तो सिर्फ़ नबियों के ज़रिये ही हो सकता है और तुम्हारे ज़माने के नबी मुह़म्मद (सल्ल०) हैं। इस लिए अल्लाह के नज़्दीक ह़लाल व ह़राम चीज़ों का इ़ल्म उन्हीं के ज़रिये हो सकता है।

60 وَمَا ظَنُّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ
وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ۝

इस में उन लोगों के लिए ज़बरदस्त धमकी है जो अल्लाह पर इल्ज़ाम रखते हुए कुछ चीज़ों को ह़लाल और कुछ को ह़राम ठहराते हैं और उन से कहा जा रहा है कि क़ियामत के दिन उन के साथ क्या किया जाएगा? इस बारे में उन का क्या ख़याल है? इस के बाद अल्लाह ने फ़रमाया कि उस का लोगों पर बड़ा फ़ज़्ल व एह्सान है कि उन की दीनी और दुनियवी भलाई करते हुए क़ुर्आन नाज़िल किया और ह़लाल

व ह़राम को बयान किया।

61 وَمَا تَكُونُ فِي شَأْنٍ وَمَا تَتْلُوا مِنْهُ مِنْ قُرْآنٍ وَلَا تَعْمَلُونَ مِنْ عَمَلٍ إِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُودًا
إِذْ تُفِيضُونَ فِيهِ ۚ وَمَا يَعْزُبُ عَنْ رَبِّكَ مِنْ مِثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَلَا
أَصْغَرَ مِنْ ذَٰلِكَ وَلَا أَكْبَرَ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ۝

इस में रसूलुल्लाह (सल्ल०) को ख़बर दी गई है कि अल्लाह तआ़ला के इ़ल्म से कोई चीज़ छुपी हुई नहीं है। वह अल्लाह तआ़ला आप (सल्ल०) और आप की उम्मत और तमाम मख़्लूक़ात के ह़ालात से एक ही वक़्त में बाख़बर रहता है, इसलिए सिर्फ़ वही अ़िबादत के लायक़ है। बाज़ मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि इस में उन लोगों को जवाब दिया गया है जो यह गुमान करते थे कि अल्लाह तआ़ला छोटी-छोटी चीज़ों की ख़बर नहीं रखता है।

62-63 أَلَا إِنَّ أَوْلِيَاءَ اللَّهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ۝

अब इन आयतों में उस के दोस्तों का ज़िक्र किया गया है। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन उस के दोस्तों को न पिछले ज़माने का ग़म होगा और न भविष्य का कोई डर।

64 لَهُمُ الْبُشْرَىٰ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ ۚ لَا تَبْدِيلَ لِكَلِمَاتِ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝

इस में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि उन्हें दुनिया और आख़िरत दोनों जगह अपनी रह़मत, रज़ामन्दी और जन्नत की ख़ुशख़बरी दे दो।

‘इमाम अह़मद’ ‘तिर्मिज़ी’ और ‘इब्ने माजा’ ने ह़ज़रत अबू दर्दा और ह़ज़रत उ़बादह बिन सामित (रज़ि०) से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, “दुनियावी ज़िन्दगी में बशारत से मुराद अच्छे ख़्वाब हैं, जो मुसलमान आदमी देखता है”।

और क़ुर्आन व सुन्नत से यह भी साबित है कि फ़रिश्ते मौत से पहले अल्लाह के नेक बन्दों को जन्नत की ख़ुशख़बरी देते हैं।

आयत में **‘औलिया’** से मुराद वह मुख़्लिस अहले ईमान हैं जो अल्लाह की बन्दग़ी और गुनाहों से बचने की वजह से उस से क़रीब हो जाते हैं। यहाँ उन की सिफ़त (गुण) यह बताई गई है कि वह अहले ईमान होते हैं और गुनाहों से परहेज़ करते हैं।

‘वली’ का अर्थ होता है ‘क़रीब’ यानी मोमिन जब ईमान और नेक अ़मल करता है, शिर्क और दूसरे गुनाहों से दूर रहता है तो अल्लाह से क़रीब हो जाता है। उ़लमा ने लिखा है कि विलायत की एक निशानी यह है कि वली मुस्तजाबुद्‌ दुआत (जिनकी दुआएँ क़ुबूल हों) होता है यानी उस की दुआ़ अल्लाह तआ़ला क़ुबूल फ़रमाता है।

‘मुस्नद अह़मद’ ‘बज़ार’ में इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत है कि एक शख़्स ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल! अल्लाह के औलिया कौन हैं? तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, “जिन्हें देखकर अल्लाह

याद आए”।

आयत के आख़िर में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि उस का वादा कभी नहीं बदल सकता है यानी वह अपने नेक बन्दों को जन्नत में ज़रुर दाख़िल करेगा और इस से बढ़कर कौन सी कामियाबी हो सकती है।

65 وَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ إِنَّ الْعِزَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا ۚ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

रसूलुल्लाह (सल्ल०) को काफ़िरों के मज़ाक़ उड़ाने से कभी दिल को तक्लीफ़ पहुँच जाती तो अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि आप काफ़िरों की झूठी बातों की परवाह न करें और ग़म न करे, इसलिए कि आसमान व ज़मीन की बादशाहत मेरी है और मैं हर चीज़ पर हर हा़ल में ग़ालिब (प्रभावी) हूँ। इसलिए यह कुफ़्फ़ार आप पर कभी भी ग़ालिब नहीं आ सकेंगे, इ़ज़्ज़त व कामियाबी आप ही को मिलेगी।

66 أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ ۗ وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ
شُرَكَاءَ ۚ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ۝

आसमानों व ज़मीन की बादशाहत अल्लाह के लिए है, लेकिन इस के बावजूद मुश्रिकीन उन बुतों की पूजा करते हैं जिन के अख़्तियार में कुछ भी नहीं है और मुश्रिकीन के पास बुतों की अ़िबादत के जायज़ होने में सिवाय ख़यालात व वहम के कोई दलील भी नहीं है।

67 هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَسْمَعُونَ ۝

इस में अल्लाह तआ़ला ने अपने क़ादिर होने की एक दलील पेश की है कि रात को सुकून के लिए और दिन की रोशनी काम करने के लिए उसी ने बनाई है तो फिर इस के अ़लावा कौन अ़िबादत का हक़्दार हो सकता है? बेशक वही हर तरह़ की बन्दग़ी का ह़क़्दार है।

68 قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ۗ سُبْحَانَهُ ۖ هُوَ الْغَنِيُّ ۖ لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ إِنْ عِنْدَكُمْ مِنْ
سُلْطَانٍ بِهَٰذَا ۚ أَتَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝

मुश्रिकों की एक दिल दुखाने वाली बात यह थी कि वह अल्लाह तआ़ला के लिए औलाद साबित करते थे और कहते थे कि यह फ़रिश्ते अल्लाह की बेटियाँ हैं। इसी तरह़ यहूद कहते थे कि उ़ज़ैर अल्लाह के बेटे हैं और नसारा कहते थे कि ईसा अल्लाह के बेटे हैं। अल्लाह तआ़ला ने उन की इस ग़लत बात को रद्द किया और कहा है कि वह इस इल्ज़ाम से पाक हैं, इसलिए कि वह किसी चीज़ का मुह़ताज नहीं है।

औलाद तो उस के होती है जो मुह़ताज होता है और वह तो हमेशा से है और हमेशा रहेगा और औलाद तो उसे चाहिए जिसे ख़त्म हो जाना है ताकि लड़का उस की जगह ले सके, इसलिए कि आसमान और ज़मीन की हर चीज़ को उसी ने पैदा किया है और उसी की मिल्कियत है तो फिर यह कैसे मुम्किन है कि आक़ा अपने ग़ुलाम को अपना बेटा बना ले और इसलिए भी कि मुश्रिकों के पास उस ग़लत दावा की कोई दलील नहीं है, केवल कम अ़क़्ली और जिहालत की बुनियाद पर ऐसी बातें करते हैं।

69-70 قُلْ إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُونَ ۝ مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ نُذِيقُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِيدَ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ۝

इस के बाद आयात में अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (सल्ल०) से फ़रमाया कि आप मुश्रिकीन से कह दीजिए कि यह अल्लाह पर इल्ज़ाम है और झूठा कभी भी कामियाब नहीं हो सकता और अगर वक़्ती तौर पर उन का कोई मक़्सद ह़ासिल हो भी जाए तो वह दुनियावी थोड़ा सा फ़ायदा होगा, फिर तो उन्हें मरने के बाद अल्लाह के पास जाना ही है, जहाँ वह उन के इन्कार और इल्ज़ामात की सख़्त सज़ा देगा।

आयत नं० 71 से 87 तक

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ نُوْحٍ ۘ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ مَّقَامِىْ وَتَذْكِيْرِىْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَعَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ فَاَجْمِعُوْۤا
اَمْرَكُمْ وَشُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ اَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوْۤا اِلَىَّ وَلَا تُنْظِرُوْنِ ۝ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ ؕ اِنْ
اَجْرِىَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ ۙ وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝ فَكَذَّبُوْهُ فَنَجَّيْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ فِى الْفُلْكِ وَجَعَلْنٰهُمْ خَلٰٓئِفَ وَاَغْرَقْنَا
الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ۝ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ رُسُلًا اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا كَانُوْا
لِيُؤْمِنُوْا بِمَا كَذَّبُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ؕ كَذٰلِكَ نَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِ الْمُعْتَدِيْنَ ۝ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى وَهٰرُوْنَ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ
بِاٰيٰتِنَا فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ۝ فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْۤا اِنَّ هٰذَا لَسِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ قَالَ مُوْسٰۤى
اَتَقُوْلُوْنَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَكُمْ ؕ اَسِحْرٌ هٰذَا ؕ وَلَا يُفْلِحُ السّٰحِرُوْنَ ۝ قَالُوْۤا اَجِئْتَنَا لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا وَتَكُوْنَ لَكُمَا الْكِبْرِيَآءُ
فِى الْاَرْضِ ؕ وَمَا نَحْنُ لَكُمَا بِمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَقَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُوْنِىْ بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيْمٍ ۝ فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰۤى اَلْقُوْا مَاۤ
اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ۝ فَلَمَّاۤ اَلْقَوْا قَالَ مُوْسٰى مَا جِئْتُمْ بِهِ ۙ السِّحْرُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَيُبْطِلُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِيْنَ ۝
وَيُحِقُّ اللّٰهُ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ۝ فَمَاۤ اٰمَنَ لِمُوْسٰۤى اِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّنْ قَوْمِهٖ عَلٰى خَوْفٍ مِّنْ فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهِمْ اَنْ يَّفْتِنَهُمْ ؕ
وَاِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِى الْاَرْضِ ۚ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الْمُسْرِفِيْنَ ۝ وَقَالَ مُوْسٰى يٰقَوْمِ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوْۤا اِنْ كُنْتُمْ مُّسْلِمِيْنَ ۝
فَقَالُوْا عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ۚ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝ وَاَوْحَيْنَاۤ اِلٰى مُوْسٰى
وَاَخِيْهِ اَنْ تَبَوَّاٰ لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بُيُوْتًا وَّاجْعَلُوْا بُيُوْتَكُمْ قِبْلَةً وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝

अनुवाद-

(71) और उनको 'नूह' का हाल पढ़ कर सुनाइए, जबकि उन्होंने अपनी क़ौम से कहा था, ऐ मेरी क़ौम! अगर तुमको मेरा रहना और अल्लाह की आयतें पढ़कर समझाना नागवार गुज़रता हो तो मेरा भरोसा तो अल्लाह पर है; तुम अपने साझीदारों के साथ मिलकर एक काम तय कर लो और वह तुम्हारी तमाम जमाअ़त से भी छिपा न रहे फिर मेरे साथ जो कुछ करना है कर डालो और मुझे मोहलत न दो"। (72) तो अगर तुम मुँह फेरोगे, तो मैंने तुमसे कोई बदला नहीं मांगा, मेरा बदला तो बस अल्लाह ही के ज़िम्मे है, और मुझे हुक्म हुआ है, कि मैं मुस्लिम (फरमाँबरदार) रहूँ। (73) तो उन लोगों ने उसे झुठला दिया, फिर 'हमने' उन्हें और उन लोगों को, जो उनके साथ नौका में थे, सब को बचा लिया और उन्हें ख़लीफ़ा (उत्तराधिकारी) बनाया; और उन लोगों को डुबो दिया जिन्होंने 'हमारी' आयतों को झुठलाया था, तो (देख लो!) जिन्हें सचेत किया गया था उनका क्या अंजाम हुआ? (74) फिर उसके बाद कितने ही रसूल उनकी क़ौम की ओर भेजे, और वे उनके पास स्पष्ट निशानियाँ लेकर आए; मगर वे लोग ऐसे न थे कि जिसको पहले झुठला चुके हों उसे मानते, इसी तरह 'हम' ज़्यादती करने वालों के दिलों पर मुहर लगा देते हैं। (75) फिर उनके बाद 'हमने' मूसा और हारून को अपनी निशानियाँ दे कर फिरऔ़न और उसके सरदारों की ओर भेजा तो उन्होंने घमंड किया और वे थे ही मुजरिम लोग, (76) फिर जब उनके पास हमारी ओर से सच बात पहुँची, तो वह कहने लगे

कि यह तो खुला जादू है। (77) मूसा ने कहा, ''क्या तुम ह़क़ के बारे में ऐसा कहते हो जबकि यह तुम्हारे सामने आ गया है, क्या यह कोई जादू है? और जादूगर तो कामियाब नहीं हुआ करते"। (78) उन्होंने कहा, ''क्या 'तू' हमारे पास इसलिए आया है कि हमें उस चीज़ से हटा दे, जिस पर हमने अपने बाप-दादा को पाया है, और धरती में तुम दोनों की बड़ाई स्थापित हो जाए, और हम तो तुम पर ईमान लाने वाले नहीं।'' (79) और फ़िरऔन ने कहा, ''लाओ मेरे पास हर माहिर जादूगर को"। (80) तो जब जादूगर आ गये, तो मूसा ने कहा, ''जो कुछ तुम्हें डालना है डालो"। (81) जब उन्होंने (रस्सियाँ) डाल दिया, तो मूसा बोले, ''तुम जो कुछ लाए हो जादू है,अल्लाह अभी उसे मलया मेट किये देता है, अल्लाह बिगाड़ पैदा करने वालों के काम को नहीं बनाता; (82) और अल्लाह अपने हुक्म से सच को सच ही कर देगा, और चाहे गुनहगार बुरा ही मानें"। (83) तो 'मूसा' की बात उसकी क़ौम के लोगों में से बस कुछ ही लोगों ने मानी 'फिरऔ़न' और उनके अपने सरदारों के भय से कि कहीं उन्हें किसी फ़ित्नों में न डाल दे; और फ़िरऔ़न था भी धरती पर बहुत सर उठाए हुए, और वह ह़द से आगे बढ़ गया था। (84) और मूसा ने कहा, ''ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अगर तुम अल्लाह पर ईमान लाए हो, तो 'उस' पर भरोसा करो अगर तुम फ़रमाँबरदार हो"। (85) तो बोले, 'हमने अल्लाह पर भरोसा किया, हमारे रब 'तू' हमें ज़ालिमों के हाथों आज़माइश में न डाल; (86) और अपनी रह़मत से हमें काफ़िरों की क़ौम से छुटकारा दिला"। (87) और 'हमने' मूसा और उसके भाई की ओर वह़्य की कि ''तुम दोनों अपने लोगों के लिए मिस्र में घर बनाओ, और अपने घरों को क़िब्ला ठहराओ, और नमाज़ क़ायम करो, और ईमान वालों को ख़ुशख़बरी दे दो"।

आयत नं० 71 से 87 तक की व्याख्या

71-73

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ نُوْحٍ ۘ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ مَّقَامِيْ وَتَذْكِيْرِيْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ
فَعَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ فَاَجْمِعُوْٓا اَمْرَكُمْ وَشُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ اَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوْٓا اِلَيَّ
وَلَا تُنْظِرُوْنِ ۞ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ ۭ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ ۙ وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ
مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۞ فَكَذَّبُوْهُ فَنَجَّيْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ فِي الْفُلْكِ وَجَعَلْنٰهُمْ خَلٰۗىِٕفَ وَاَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا
بِاٰيٰتِنَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ۞

चूंकि अ़रब के लोगों का ह़ाल ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) की क़ौम जैसा था, इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को हुक्म दिया कि उन्हें क़ौमे नूह़ का क़िस्सा सुना दीजिए। जब उन लोगों ने अपने कुफ़्र व शिर्क पर इस्रार किया और ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) की हज़ार कोशिशों के बावजूद नहीं माना तो अल्लाह ने उन्हें तूफ़ान के ह़वाले कर दिया, तो ऐ इन्कार करने वालों! कहीं कुफ़्र व सरकशी और शिर्क पर तुम्हारे इस्रार की वजह से तुम्हारा अन्जाम भी उन्हीं जैसा न हो।

ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) ने अपनी क़ौम से कहा कि अगर तुम्हारे साथ मेरा रहना, दअ़वत का काम करना, तुम पर बहुत ज़्यादा भारी हो गया है तो मैंने भी अब अपनी तरफ़ से अल्लाह पर भरोसा कर लिया है, तुम और जिनको साझीदार मानते हो, मुझे हलाक करने की जैसी चाहो कोशिश कर लो, कोई

कसर न उठा रखो और मुझे एक सेकेण्ड की मोहलत न दो। मैंने आज तक तुम्हें सही़ रास्ते पर लाने की जितनी कोशिश की उस का मक़्सद कोई दुनियवी फ़ायदा हा़सिल करना नहीं था और न मैंने तुम से इस काम की कोई उजरत माँगी है कि तुम लोग मुझ पर इल्ज़ाम लगाते हो।

मेरा अज्र व सवाब तो मुझे मेरा अल्लाह देगा चाहे तुम ईमान लाओ या इन्कार कर दो और मुझे यह हुक्म दिया गया है कि मैं हर हा़ल में अल्लाह का फ़रमाँबरदार (आज्ञाकारी) रहूँ। जब इन तमाम कोशिशों और नसीह़तों के बावजूद उन की क़ौम ने उन्हें झुठला दिया तो अल्लाह ने उन्हें और उन के मानने वालों को नाव में सवार कर के तूफ़ान से बचा लिया, जिन की औलाद के ज़रिए फिर से दुनिया आबाद हुई और अल्लाह की आयतों को झुठलाने वाले सभी लोग डूब गये।

74

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهٖ رُسُلًا اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا كَذَّبُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ؕ
كَذٰلِكَ نَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِ الْمُعْتَدِيْنَ ۝

अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) के बाद ह़ज़रत हूद, ह़ज़रत सालेह़, ह़ज़रत इब्राहीम, ह़ज़रत लूत और ह़ज़रत शुऐब (अ़लै०) को उन की क़ौमों की तरफ़ मोअ़जिज़े और शरीअ़तें देकर भेजा, लेकिन चूंकि कुफ़्फ़ार की फ़ित्रत में टेढ़ापन था और ह़क़ व सच्चाई को झुठलाना उन की पुरानी आ़दत थी, इसीलिए जब अल्लाह ने ख़ास तौर से उन में से हर एक के लिए नबी भेजा तो उन्होंने उस को झुठला दिया।

इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि हम अल्लाह के हुदूद (सीमा) से बढ़ने वालों के दिलों पर इसी तरह़ मुहर लगा देते हैं, यानी बन्दा जब गुनाह करता जाता है और तौबः नहीं करता तो गुनाह उस की तबीअ़त बन जाती है और उस के दिल पर मुहर लग जाती है, फिर उसे ईमान व अच्छे अ़मल की तौफ़ीक़ नहीं होती और उस के दिल में अच्छाई और बुराई का अन्तर बाक़ी नहीं रहता।

75-78

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى وَهٰرُوْنَ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ىٕهٖ بِاٰيٰتِنَا فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ۝
فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْۤا اِنَّ هٰذَا لَسِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ قَالَ مُوْسٰۤى اَتَقُوْلُوْنَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَكُمْ ؕ
اَسِحْرٌ هٰذَا ؕ وَلَا يُفْلِحُ السّٰحِرُوْنَ ۝ قَالُوْۤا اَجِئْتَنَا لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا وَتَكُوْنَ لَكُمَا الْكِبْرِيَآءُ
فِى الْاَرْضِ ؕ وَمَا نَحْنُ لَكُمَا بِمُؤْمِنِيْنَ ۝

ह़ज़रत मूसा और ह़ज़रत हारून (अ़लै०) का ज़िक्र यहाँ ख़ास तौर पर किया गया है कि जब ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) और ह़ज़रत हारून (अ़लै०) तौह़ीद की दअ़वत लेकर फ़िरऔ़न और उस की क़ौम के सरदारों के पास गए तो उन्होंने घमण्ड से काम लिया और उसे कुबूल करने से इन्कार कर दिया, इसलिए कि उन के पिछले जुर्मों की वजह से उन के दिलों पर मुहर लग चुकी थी और जब आसमानी मोअ़जिज़ों के आगे अपने आप को बेबस पाया तो कहने लगे कि यह तो खुला जादू है तो ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) ने उन्हें जवाब दिया कि क्या तुम अल्लाह की ओर से भेजे हुए ह़क़ को जादू कहते हो? यह जादू कैसे हो सकता है? अगर जादू होता तो तुम्हारे माहिर जादूगरों में कैसे ग़ालिब आ जाता और उन के जादू को मैं कैसे नाकाम बना देता, जादूगर कभी कामियाब नहीं हो सकता। जब फ़िरऔ़न ने इस दलील के

सामने अपने आप को बिल्कुल बेबस पाया तो कहने लगा कि क्या तुम हमें हमारे बाप-दादा के दीन से हटाना चाहते हो? और क्या तुम चाहते हो कि हम तुम्हें अपना बादशाह मान लें? ऐसा नहीं हो सकता, हम तुम पर ईमान लाने वाले नहीं है।

इसी दुनियावी बड़ाई और कुर्सी की मुहब्बत ने हर दौर में कितनों को क़ुबूले हक़ से रोक दिया और अपने आप को बातिल पर समझते हुए उस पर इस्रार किया। इसी बीमारी की वजह से बहुत से लोग इन्कार पर, बहुत से लोग हठधर्मी पर जमे रहे।

79-82 وَقَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُونِي بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيْمٍ ۝ فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰٓى اَلْقُوْا مَآ اَنْتُمْ
مُّلْقُوْنَ ۝ فَلَمَّآ اَلْقَوْا قَالَ مُوْسٰى مَا جِئْتُمْ بِهِ السِّحْرُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَيُبْطِلُهٗ ۭ اِنَّ اللّٰهَ
لَا يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِيْنَ ۝ وَيُحِقُّ اللّٰهُ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ۝

जब फ़िरऔन ने हज़रत मूसा (अ़लै०) की लाठी को अस्दहा (साँप) बन कर ज़मीन पर ह़रकत करते और उन के हाथ से नूर को फूटते देखा तो समझा कि यह भी कोई जादू है, इसलिए उस ने अपने लोगों से कहा कि देश के तमाम बड़े जादूगरों को इकट्ठा करो। हज़रत मूसा (अ़लै०) ने उन जादूगरों से कहा कि पहले तुम लोग अपनी ताक़त (कर्तब) दिखाओ, चुनाँचे उन्होंने कहा कि फ़िरऔ़न के इ़ज़्ज़त की क़सम, बेशक हम ही लोग ग़ालिब आने वाले हैं और अपनी रस्सियों और लाठियों को ज़मीन पर डाल दिया।

हज़रत मूसा (अ़लै०) ने कहा कि जादू है अल्लाह का मोअ़जिज़ह नहीं है, अल्लाह अभी मोअ़जिज़े की कुव्वत के ज़रिये इसे ख़त्म कर देगा। अल्लाह तआ़ला ज़मीन पर फ़साद फैलाने वालों के अ़मल को कामियाब नहीं बनाता। हज़रत मूसा (अ़लै०) ने अपनी लाठी ज़मीन पर डाल दी वह अस्दहा बनकर उन के जादू के साँपों को निगल गई और फ़िरऔ़न के न चाहने के बावजूद हक़ ग़ालिब होकर रहा।

हज़रत मूसा (अ़लै०) का यह वाक़िआ़ इस सूरः के अ़लावा सूरः अअ़राफ़ आयत नं० (116) सूरः ताहा आयात नं० (71/72) और सूरः शुअ़रा आयत नं० (49) में भी मौजूद है।

83-86 فَمَآ اٰمَنَ لِمُوْسٰٓى اِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّنْ قَوْمِهٖ عَلٰى خَوْفٍ مِّنْ فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ىِٕهِمْ اَنْ يَّفْتِنَهُمْ ۭ وَاِنَّ فِرْعَوْنَ
لَعَالٍ فِي الْاَرْضِ ۚ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الْمُسْرِفِيْنَ ۝ وَقَالَ مُوْسٰى يٰقَوْمِ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوْٓا
اِنْ كُنْتُمْ مُّسْلِمِيْنَ ۝ فَقَالُوْا عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ۚ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَنَجِّنَا
بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝

हज़रत मूसा (अ़लै०) की इस कामियाबी और फ़िरऔ़नियों की रुस्वाई के बाद बनी इस्राईल के नौजवान फ़िरऔ़नियों से डर और ख़ौफ़ के बावजूद हज़रत मूसा (अ़लै०) पर ईमान ले आए और फ़िरऔ़न से उन के डरने की वजह यह थी कि वह बहुत ज़ालिम शख़्स था।

आयात नं० (84/85/86) में है कि जब बनी इस्राईल पर ख़ौफ़ के आसार ज़ाहिर हुए तो हज़रत मूसा (अ़लै०) ने उन मानने वालों से कहा कि अगर तुम लोग अल्लाह पर ईमान ले आए हो तो फिर

ईमान का मतलब यह है कि उसी पर भरोसा करो, तो उन्होंने जवाब दिया कि हम ने अल्लाह पर भरोसा कर लिया और दुआ़ की कि ऐ हमारे रब! ज़ालिम फ़िरऔ़नियों को हम पर मुसल्लत न कर, कहीं ऐसा न हो कि वह हमें अ़ज़ाब देकर आज़्माइश में डाल दें और अपने रह़म व करम से हमें इन काफ़िरों से निजात दे।

87 وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰى وَاَخِيْهِ اَنْ تَبَوَّاٰ لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بُيُوْتًا وَّاجْعَلُوْا بُيُوْتَكُمْ قِبْلَةً وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ۭ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝

अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत मूसा और ह़ज़रत हारून (अ़लै०) को हुक्म दिया कि वह बनी इस्राईल के लिए मिस्र में ही अलग बस्ती बसाएँ क्योंकि फ़िरऔ़नियों की हार और बनी इस्राईल के ईमान लाने के बाद मुसलमानों से फ़िरऔ़नियों की दुश्मनी और सख़्त हो गई थी और उन के साथ ज़िन्दग़ी गुज़ारना मुश्किल हो गया था।

फ़िरऔ़न के लोग मूर्तियों के पुजारी थे और बनी इस्राईल अल्लाह की इ़बादत करने वाले थे, इसी लिए अल्लाह तआ़ला ने उन से कहा कि तुम लोग अपने घरों को मसाजिद के तौर पर इस्तेमाल करो और अन्दर ही नमाज़ पढ़ लिया करो ताकि फ़िरऔ़न के लोग तुम्हें बाहर मस्जिदों में नमाज़ पढ़ते देखकर तक्लीफ़ न पहुचाएँ और अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) को यह भी हुक्म दिया कि वह मुसलमानों को ख़ुशख़बरी दे दें कि अल्लाह उन्हें दुनिया में इ़ज़्ज़त व ग़ल्बा देगा और आख़िरत में जन्नत अ़ता करेगा।

आयत नं० 88 से 97 तक

وَقَالَ مُوسَىٰ رَبَّنَا إِنَّكَ آتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَمَلَأَهُ زِينَةً وَأَمْوَالًا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا رَبَّنَا لِيُضِلُّوا عَن سَبِيلِكَ ۖ رَبَّنَا اطْمِسْ
عَلَىٰ أَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوا حَتَّىٰ يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ۝ قَالَ قَدْ أُجِيبَت دَّعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِيمَا وَلَا
تَتَّبِعَانِّ سَبِيلَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَجَاوَزْنَا بِبَنِي إِسْرَائِيلَ الْبَحْرَ فَأَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَجُنُودُهُ بَغْيًا وَعَدْوًا ۖ حَتَّىٰ إِذَا
أَدْرَكَهُ الْغَرَقُ قَالَ آمَنتُ أَنَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا الَّذِي آمَنَتْ بِهِ بَنُو إِسْرَائِيلَ وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝ آلْآنَ وَقَدْ عَصَيْتَ
قَبْلُ وَكُنتَ مِنَ الْمُفْسِدِينَ ۝ فَالْيَوْمَ نُنَجِّيكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُونَ لِمَنْ خَلْفَكَ آيَةً ۚ وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ آيَاتِنَا
لَغَافِلُونَ ۝ وَلَقَدْ بَوَّأْنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ مُبَوَّأَ صِدْقٍ وَرَزَقْنَاهُم مِّنَ الطَّيِّبَاتِ فَمَا اخْتَلَفُوا حَتَّىٰ جَاءَهُمُ الْعِلْمُ ۚ إِنَّ رَبَّكَ
يَقْضِي بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝ فَإِن كُنتَ فِي شَكٍّ مِّمَّا أَنزَلْنَا إِلَيْكَ فَاسْأَلِ الَّذِينَ يَقْرَءُونَ الْكِتَابَ
مِن قَبْلِكَ ۚ لَقَدْ جَاءَكَ الْحَقُّ مِن رَّبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ۝ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ فَتَكُونَ
مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ وَلَوْ جَاءَتْهُمْ كُلُّ آيَةٍ حَتَّىٰ يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ۝

अनुवाद-

(88) और मूसा ने कहा, ''हमारे रब 'तूने' फ़िरऔन और उसके सरदारों को दुनिया की ज़िन्दगी में साज़ व सामान (वैभव प्रतिष्ठा) एवं धन-दौलत प्रदान किया, ऐ हमारे रब! यह इसलिए कि तेरी राह से भटकाएँ, ऐ हमारे रब! इनके माल को नष्ट कर दे और इनके दिलों को कठोर कर कि वे ईमान न लाएँ, यहां तक कि दर्दनाक अ़ज़ाब देख लें।'' (89) फ़रमाया, ''तुम दोनों की दुआ़ कुबूल हो गयी, तो तुम दोनों जमे रहना और उन की राह पर हरगिज़ न चलना, जो बे अक़्ल है।'' (90) और 'हमने' बनी इस्राईल को समुद्र पार करा दिया, तो फ़िरऔ़न और उसकी सेनाओं ने सरकशी और ज़्यादती के साथ उनका पीछा किया, यहाँ तक कि जब वह डूबने लगा तो पुकार उठा, ''मैं ईमान लाता हूँ, कि उसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं'' जिस पर बनी इस्राईल ईमान ले आए हैं और मैं मुस्लिमों (आज्ञाकारियों) में हूँ। (91) ''क्या अब? हालाँकि इससे पहले तू तो सरकशी ही करता रहा और फ़सादियों में शामिल रहा, (92) तो आज हम तेरे शरीर को बचा लेंगे, ताकि तू बाद वालों के लिए निशानी हो जाए, और बहुत से लोग तो 'हमारी' निशानियों से ग़ाफ़िल हैं।'' (93) और 'हमने' बनी इस्राईल को बहुत अच्छा ठिकाना दिया और पाक चीज़ों का रिज़्क़ अ़ता किया, फिर उन्होंने मतभेद किया यहाँ तक कि उनके पास इल्म आ चुका; बेशक आप का रब क़ियामत के दिन उनके बीच, उस चीज़ का फ़ैसला कर देगा जिसमें वे मतभेद करते रहे। (94) तो अगर तुम्हें उस चीज़ के बारे में कोई सन्देह हो, जो 'हमने' तुम्हारी ओर नाज़िल की हैं, तो उनसे पूछ लो, जो तुमसे पहले से किताबें पढ़ते हैं, तुम्हारे पास तो तुम्हारे रब की ओर से हक़ (सत्य) आ चुका है, तो तुम हरगिज़ सन्देह करने वालों में न होना। (95) और न उन लोगों में शामिल होना जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया, वरना तुम घाटे में पड़ कर रहोगे। (96) जिन लोगों के बारे में तुम्हारे रब की बात सच्ची होकर रही, वे ईमान नहीं लाएँगे; (97) और चाहे सारी निशानियाँ उनके पास आ जाएँ (ईमान न लाएँगे); यहाँ तक कि वे दर्दनाक अ़ज़ाब देख लें।

आयत नं० 88 से 97 तक की व्याख्या

88 وَقَالَ مُوسٰى رَبَّنَآ اِنَّكَ اٰتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَمَلَاَهٗ زِيْنَةً وَّاَمْوَالًا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ رَبَّنَا لِيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِكَ ۚ رَبَّنَا اطْمِسْ عَلٰٓى اَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْا حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ۝

हज़रत मूसा (अ़लै०) ने देखा कि उन की तमाम कोशिश के बावजूद फ़िरऔ़न और उस के सरदारों के घमण्ड में कमी नहीं आई और उन का कुफ़्र बढ़ता जा रहा है और उन के ईमान लाने की कोई उम्मीद बाक़ी नहीं है तो उन्होंने उन के लिए बद्दुआ़ की और कहा कि ऐ हमारे रब! तूने फ़िरऔ़न और उस के सरदारों को इसलिए माल व दौलत नहीं दिया था कि वह लोगों को तेरी राह से रोकें। ऐ अल्लाह! तू उन की दौलत को ख़त्म कर दे और उन के दिलों को सख़्त कर दे, यहाँ तक कि तेरा सख़्त अ़ज़ाब उन्हें आ दबोचे।

हाफ़िज़ इब्ने कसीर लिखते हैं कि हज़रत मूसा (अ़लै०) की यह बद्दुआ़ अल्लाह और उस के दीन की वजह से इस यक़ीन के बाद थी कि अब फ़िरऔ़नियों में कोई भला आदमी नहीं है।

89 قَالَ قَدْ اُجِيْبَتْ دَّعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِيْمَا وَلَا تَتَّبِعٰٓنِّ سَبِيْلَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा (अ़लै०) से कहा कि मैंने तुम्हारी दुआ़ क़ुबूल कर ली। तुम दोनों हक़ पर क़ायम रहो और जल्दी न करो, जब अल्लाह का मुक़र्रर वक़्त आ जाएगा तो अ़ज़ाब आकर रहेगा, जल्दी मचाना और अल्लाह के वादों का यक़ीन न करना नासमझों का काम है। यहाँ दुआ़ की निस्बत हज़रत मूसा और हज़रत हारून (अ़लै०) दोनों की तरफ़ की गई है, इसलिए कि हो सकता है दुआ़ दोनों ने की हो, लेकिन ऊपर वाली आयत में इस की निस्बत सिर्फ़ हज़रत मूसा (अ़लै०) की तरफ़ इसलिए की गई है कि साहिबे रिसालत हक़ीक़त में वही थे, हज़रत हारून (अ़लै०) उन के ताबेअ़ (अधीन) थे और यह भी मुम्किन है कि हज़रत हारून ने हज़रत मूसा की दुआ़ पर आमीन कहा हो, तो दूसरी आयत में उन्हें भी दुआ़ करने वाला मान लिया गया हो।

90-92 وَجٰوَزْنَا بِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَجُنُوْدُهٗ بَغْيًا وَّعَدْوًا ۭ حَتّٰىٓ اِذَآ اَدْرَكَهُ الْغَرَقُ ۙ قَالَ اٰمَنْتُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِيْٓ اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْٓا اِسْرَآءِيْلَ وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝ آٰلْئٰنَ وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ ۝ فَالْيَوْمَ نُنَجِّيْكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُوْنَ لِمَنْ خَلْفَكَ اٰيَةً ۭ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ اٰيٰتِنَا لَغٰفِلُوْنَ ۝

हज़रत मूसा (अ़लै०) मुसलमानों के साथ जब समुद्र के पास पहुँचे तो देखा कि फ़िरऔ़न अपने लश्कर के साथ उन का पीछा करता हुआ उन के क़रीब आ गया और क़रीब था कि उन्हें पकड़ ले तो अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा (अ़लै०) को हुक्म दिया कि वह अपनी लाठी पानी पर मारें, उन्होंने जूँ ही ऐसा किया समुद्र का पानी दो हिस्सों में बँट कर पहाड़ की तरह खड़ा हो गया, ज़मीन सूख गई और

हज़रत मूसा (अ़लै०) बनी इस्राईल के साथ समुद्र पार कर गये। फ़िरऔ़न ने अपने लश्कर के साथ (जिन की संख्या कुर्तुबी के क़ौल के मुताबिक़ पचास लाख से ज़्यादा थी) हज़रत मूसा और बनी इस्राईल का पीछा किया और जब बीच समुद्र में पहुँचा तो अल्लाह ने समुद्र का पानी उन पर बराबर कर दिया और सब के सब डूब कर मर गये।

फ़िरऔ़न ने जब अपनी मौत को अपनी आँखों के सामने देखा तो कहने लगा कि मैं ईमान लाता हूँ कि उस अल्लाह के अ़लावा कोई उपास्य नहीं जिस पर बनी इस्राईल के लोग ईमान लाए हैं और मैं अब मुसलमान होता हूँ तो अल्लाह तआ़ला ने उस के ईमान को रद्द कर दिया और कहा कि अब ईमान लाने का कोई फ़ायदा नहीं है, जबकि इस से पहले तक तुम नाफ़रमानी करते रहे और ज़मीन में फ़साद फैलाते रहे और अब जान ले कि तू एक मामूली बन्दा था, इस के सिवा कुछ नहीं।

नोट- {हज़रत मूसा (अ़लै०) जिस फ़िरऔ़न के ज़माने में पैदा हुए वह राअ़मीस दोम (Romesesil) था और जो फ़िरऔ़न आप का पीछा करते हुए डूबा था उस का नाम आज (Merneftha) है। आज भी उस की ममी क़ाहिरा के अ़जायब घर में मौजूद है, चुनाँचे यह क़ुर्आन के मोअ़जिज़ों में से एक मोअ़जिज़ा है। याद रहे कि यह 1898 ई० में मिली थी हालाँकि नुज़ूल क़ुर्आन के वक़्त किसी को भी इस फ़िरऔ़न की ममी के बारे में कुछ इल्म न था।}

93 وَلَقَدْ بَوَّأْنَا بَنِيٓ إِسْرَآءِيلَ مُبَوَّأَ صِدْقٍ وَرَزَقْنَٰهُم مِّنَ ٱلطَّيِّبَٰتِ فَمَا ٱخْتَلَفُوا۟ حَتَّىٰ جَآءَهُمُ
ٱلْعِلْمُ ۚ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِى بَيْنَهُمْ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ فِيمَا كَانُوا۟ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝

फ़िरऔ़न से निजात दिलाने के बाद अल्लाह तआ़ला ने बनी इस्राईल पर बड़े एहसानात किये, लेकिन उन्होंने उन नेअ़मतों का शुक्र अदा नहीं किया। फ़िरऔ़न के मरने के बाद पूरे मिस्र पर बनी इस्राईल की हुकूमत हो गई, लेकिन उन की हमेशा यह इच्छा रही कि 'बैतुल् मुक़द्दस' लौट कर जाते जिस पर उन दिनों 'अ़मालूक़ा' क़ाबिज़ थे।

हज़रत मूसा (अ़लै०) ने उन्हें अ़मालूक़ा से जिहाद करने को कहा, लेकिन इन लोगों ने जिहाद करने से इन्कार कर दिया जिस की वजह से अल्लाह ने उन्हें चालीस साल तक 'मैदाने तीह' में भटकता छोड़ दिया। पहले हज़रत हारून (अ़लै०) और फिर हज़रत मूसा (अ़लै०) उसी 'मैदाने तीह' में अल्लाह को प्यारे हो गये, फिर हज़रत यूशअ़ बिन नून (अ़लै०) की क़यादत में उन्होंने अ़मालूक़ा से जिहाद किया और फ़िलिस्तीन में दाख़िल हो गये। फिर कुछ दिनों के लिए उस पर 'बख़्त नस्र' क़ाबिज़ हो गया लेकिन दोबारा 'बनी इस्राईल' ग़ालिब आ गये, इस के बाद एक लम्बी मुद्दत तक यूनानी बादशाहों के क़ब्ज़े में रहा।

उन्हीं के ज़माने में हज़रत ईसा (अ़लै०) मब्अ़ूस हुए जिन के साथ यहूदियों ने साज़िश करके हज़रत ईसा और हज़रत शुऐ़ब (अ़लै०) को फाँसी दिलवाई। हज़रत ईसा (अ़लै०) के आसमान पर उठाए जाने के लगभग तीन सौ साल बाद एक यूनानी बादशाह बहाने से उस में दाख़िल हो गया और उस के बाद नसरानियों का मुल्क शाम, जज़ीरा और रोम पर क़ब्ज़ा रहा, यहाँ तक कि अमीरुल् मोमिनीन हज़रत उ़मर

बिन ख़त्ताब के ज़माने में सहाबा-ए-किराम ने उन के हाथों से बैतुल् मुक़द्दस को आज़ाद कराया।

इस आयत में बनी इस्राईल पर अल्लाह के बेशुमार एहसानात का ज़िक्र करते हुए कहा गया है कि उन्होंने अपने रब की नाशुक्री की और उन के पास तौरेत का इल्म होने के बावजूद बहुत सी जमाअ़तों में बट गये। इस की एक दूसरी तफ़्सीर यह भी की गई है कि नबी करीम (सल्ल०) के आने से पहले यहूद आप (सल्ल०) का इन्तिज़ार करते थे, लेकिन आप जब आ गये और हिजरत करके मदीना पहुँचे तो अक्सर यहूद ने उन पर और क़ुर्आन पर ईमान लाने का इन्कार कर दिया सिर्फ़ गिने चुने चन्द लोग ही इस्लाम में दाख़िल हुए।

94-95 فَإِنْ كُنْتَ فِي شَكٍّ مِمَّا أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ فَسْئَلِ الَّذِينَ يَقْرَءُونَ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَقَدْ جَاءَكَ
الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ﴿٩٤﴾ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ
فَتَكُونَ مِنَ الْخٰسِرِينَ ﴿٩٥﴾

यहाँ रसूलुल्लाह (सल्ल०) से कहा जा रहा है, लेकिन इस का मतलब यह नहीं है कि आप (सल्ल०) को वह्य के सच्चा होने में कोई शक था बल्कि यह क़ुर्आन का एक तरीक़ा है जिस से आप के यक़ीन और दिल के इत्मिनान में इज़ाफ़ा होगा, जैसा कि ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने कहा था मैं चाहता हूँ कि मेरे दिल की सन्तुष्टि में बढ़ौतरी हो।

'ह़ज़रत अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़' और 'इब्ने जरीर' ने रिवायत की है कि जब यह आयत नाज़िल हुई तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "मुझे न ज़र्रह बराबर शक है और न ही मैं किसी से पूछूँगा"। 'जो लोग किताब पढ़ते हैं' से मुराद यहूद व नसारा हैं।

आयत के आख़िर में अल्लाह तआ़ला ने ख़ुद गवाही दी है कि यह क़ुर्आन अल्लाह की ओर से भेजी हुई किताब है, जिसे अल्लाह ने नाज़िल किया है। इसलिए मेरे नबी! आप को, आप की उम्मत को और तमाम लोगों को इस के ईश-ग्रन्थ होने में ज़र्रह बराबर भी शुब्हा नहीं होना चाहिए और न उन लोगों के बारे में शक होना चाहिए जो अल्लाह की आयतों को झुठलाते हैं, इसलिए कि उन का अन्जाम दुनिया और आख़िरत में घाटे के सिवा कुछ नहीं होगा।

96-97 إِنَّ الَّذِينَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٩٦﴾ وَلَوْ جَاءَتْهُمْ كُلُّ اٰيَةٍ حَتّٰى
يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٩٧﴾

अल्लाह तआ़ला अपने इल्म के मुताबिक़ हर इन्सान के बारे में जानता है कि वह अपने अख़्तियार व इरादा से काफ़िर होगा या मोमिन, भलाई का रास्ता अपनाएगा या बुराई का और इसलिए वह जानता है कि कौन ईमान लाएगा और कौन कुफ़्र की राह अख़्तियार करेगा। अल्लाह तआ़ला के इसी इल्म को इस आयते करीमा में बयान किया गया है कि अल्लाह तआ़ला ने जिन की क़िस्मत में लिख दिया है कि वह ईमान नहीं लाएँगे, वह किसी ह़ाल में भी ईमान नहीं लाएँगे।

आयत नं० (97) में इसी बात की मज़ीद ताकीद आई है कि जिन के बारे में यह तय है कि वह

जहन्नमी होंगे, उन के सामने अल्लाह की तमाम निशानियाँ भी आ जाएँगी तो भी वह ईमान नहीं लाएँगे। अलूबत्ता जब वह अल्लाह का अ़ज़ाब अपनी आँखों से देख लेंगे तब ईमान लाएँगे, जैसा कि फ़िरऔ़न ने जब अपने आप को डूबता हुआ देखा तो कहा कि ह़ज़रत मूसा व ह़ज़रत हारून के रब पर ईमान ले आया तो मुश्रिकीने मक्का भी जब तक अल्लाह का अ़ज़ाब देख नहीं लेंगे तब तक ईमान नहीं लाएँगे, लेकिन उस वक़्त का ईमान लाना इस के किसी काम नहीं आएगा।

आयत नं० 98 से 109 तक

فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ اٰمَنَتْ فَنَفَعَهَآ اِيْمَانُهَآ اِلَّا قَوْمَ يُوْنُسَ ۚ لَمَّآ اٰمَنُوْا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنٰهُمْ
اِلٰى حِيْنٍ ۝ وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَاٰمَنَ مَنْ فِي الْاَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِيْعًا ۚ اَفَاَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتّٰى يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ۝ وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ
اَنْ تُؤْمِنَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَيَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ ۝ قُلِ انْظُرُوْا مَاذَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَمَا تُغْنِي
الْاٰيٰتُ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ۝ فَهَلْ يَنْتَظِرُوْنَ اِلَّا مِثْلَ اَيَّامِ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ قُلْ فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ
مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ۝ ثُمَّ نُنَجِّيْ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كَذٰلِكَ ۚ حَقًّا عَلَيْنَا نُنْجِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْ دِيْنِيْ
فَلَآ اَعْبُدُ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ اَعْبُدُ اللّٰهَ الَّذِيْ يَتَوَفّٰىكُمْ ۖ وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَاَنْ اَقِمْ
وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ۚ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ وَلَا تَدْعُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ ۚ فَاِنْ فَعَلْتَ فَاِنَّكَ
اِذًا مِّنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗٓ اِلَّا هُوَ ۚ وَاِنْ يُّرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَآدَّ لِفَضْلِهٖ ۚ يُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ
مِنْ عِبَادِهٖ ۚ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝ قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ
ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ۝ وَاتَّبِعْ مَا يُوْحٰٓى اِلَيْكَ وَاصْبِرْ حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ۝

अनुवाद-

(98) तो ऐसी कोई बस्ती क्यों न हुई, कि ईमान लाती तो उसका ईमान लाना उसके लिए फ़ायदा
पहुँचाता? सिवाय यूनुस की क़ौम के; जब ईमान लाई तो 'हमने' उन पर से रुसवाई के अ़ज़ाब को दुनियावी
ज़िन्दगी में दूर कर दिया, और एक मुद्दत (अवधि) तक फ़ायदा उठाने का मौक़ा दिया। (99) और अगर
तुम्हारा रब चाहता तो धरती के ऊपर जितने लोग हैं सब के सब ईमान ले आते, तो क्या तुम लोगों पर
ज़बर्दस्ती करना चाहते हो कि वे ईमान वाले हो जाएँ? (100) और किसी व्यक्ति के लिए यह सम्भव नहीं,
कि अल्लाह की इजाज़त के बिना ईमान ले आए, और उन लोगों पर गन्दगी डाल देता है जो अक़्ल से काम
नहीं लेते। (101) कह दीजिए, '' देखो! क्या-क्या चीज़ें आसमानों और ज़मीन में हैं? और निशानियाँ, और
चेतावनियाँ उनके कुछ काम नहीं आतीं, जो ईमान न लाना चाहें। (102) तो क्या वैसे ही दिनों के इन्तिज़ार
में हैं, जैसे कि इनसे पहले के लोगों पर आ चुके हैं, कह दीजिए, ''तुम भी इन्तिज़ार करो मैं भी तुम्हारे साथ
इन्तिज़ार करता हूँ।'' (103) फिर 'हम' अपने रसूलों को बचा लेते हैं, और जो ईमान ले आए; इसी तरह
'हम पर यह हक़ है कि ईमान वालों को बचा लें। (104) कह दीजिए, ''ऐ लोगो, ''अगर तुम मेरे धर्म के
सम्बन्ध में किसी सन्देह में हो तो (जान लो कि) मैं उनकी इ़बादत नहीं करता जिनकी तुम अल्लाह के सिवा
इबादत करते हो, बल्कि मैं अल्लाह की इबादत करता हूँ, जो तुम्हें मौत देता है, और मुझे हुक्म दिया गया
है कि मैं ईमान लाने वालों में से हो जाऊँ; (105) और यह कि हर ओर से यकसू (एकाग्र) हो कर, अपना
रुख़ इस धर्म की ओर कर लो, और हरगिज़ मुश्रिकों में न होना; (106) और अल्लाह के सिवा किसी और
को न पुकारना जो न तुम्हें फायदा पहुँचा सकते हैं और न नुक़सान, अगर तुम ऐसा करोगे तो ज़ालिमों में
से हो जाओगे; (107) और अगर अल्लाह तुम्हें किसी मुसीबत में डाल दे, तो उसके सिवा कोई उसे दूर

करने वाला नहीं, और अगर 'वह' तुम्हारे लिए किसी भलाई का इरादा कर ले तो कोई 'उसके' फ़ज़्ल को रोकने वाला नहीं, वह अपने बन्दों में से जिसे चाहता है (फ़ायदा) पहुँचाता है, और 'वह' माफ़ करने वाला, रह़म वाला है"। (108) कह दीजिए, "ऐ लोगो! तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारे पास ह़क़ आ गया है, तो अब जो कोई राह पर आएगा, तो वह अपने लिए ही आएगा, और जो कोई गुमराह (पथभ्रष्ट) होगा तो वह अपने ही लिए गुमराह होगा, और मैं तुम्हारा वकील (ज़िम्मेदार) नहीं हूँ"। (109) और जो कुछ तुम पर वह्य (सन्देश) की जा रही है उसकी पैरवी करो और सब्र से काम लो! यहाँ तक कि अल्लाह फ़ैसला कर दे और 'वह' सबसे बेहतर फ़ैसला करने वाला है।

आयत नं० 98 से 109 तक की व्याख्या

98-99 فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ اٰمَنَتْ فَنَفَعَهَآ اِيْمَانُهَآ اِلَّا قَوْمَ يُوْنُسَ ۭ لَمَّآ اٰمَنُوْا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى حِيْنٍ ۝ وَلَوْ شَاۗءَ رَبُّكَ لَاٰمَنَ مَنْ فِي الْاَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِيْعًا ۭ اَفَاَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتّٰى يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ۝

मक्का के काफ़िरों को अ़ज़ाब आने से पहले ईमान लाने की बात बताई जा रही है और वह इस तरह़ कि उन के सामने उन बस्तियों की मिसाल पेश की जा रही है जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने इसलिए हलाक कर दिया कि उन के रहने वालों ने अ़ज़ाब आने से पहले ईमान का एलान नहीं किया। जैसा कि फ़िरऔ़नियों के साथ हुआ कि जब उन्होंने अपने आप को डूबते देखा तो कहा कि हम ईमान ले आए अगर उन्होंने अ़ज़ाब आने से पहले ईमान का एलान किया होता तो उन का ईमान उन के काम आता।

अल्लाह तआ़ला ने इस हुक्म से ह़ज़रत यूनुस (अ़लै०) की क़ौम को अलग कर दिया, इसलिए कि उन्होंने अ़ज़ाब आने से पहले उस के आसार देखते ही तुरन्त तौबः कर ली थी तो अल्लाह ने उन की तौबः क़ुबूल कर ली और अ़ज़ाब को टाल दिया। बाज़ उल्मा-ए-तफ़्सीर ने लिखा है कि इस में उन से कहा गया है कि ह़ज़रत यूनुस (अ़लै०) की क़ौम के अ़लावा हलाक होने वाली बस्तियों में से कोई बस्ती भी ईमान नहीं लाई।

मुफ़स्सिरीन ने अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद, क़तादा और सअ़ीद बिन जुबैर वग़ैरह से ह़ज़रत यूनुस (अ़लै०) और उन की क़ौम के बारे में जो रिवायतें नक़्ल की हैं, उन का ख़ुलासा यह है कि वह 'मूसल' शहर के रहने वाले थे, अल्लाह ने उन्हें 'नैनवा' शहर वालों के लिए नबी बना कर भेजा था, जिसे 'अश्वर बिन नमरूद' ने बसाया था, जो ह़ज़रत नूह़ (अ़लै०) के बेटों की औलाद में से था। यह शहर दुनिया के पुराने शहरों में शुमार होता है उस वक़्त इस की आबादी कई लाख थी। उस ज़माने में अश्वरियों की ताक़त इतनी बढ़ गयी थी कि एशिया के अक्सर इलाक़े उन के अधीन थे, इस वजह से वह घमण्ड में मुब्तिला हो गये थे और अल्लाह से सरकशी करने लगे थे उन्हीं को सीधे रास्ते पर लाने के लिए अल्लाह ने ह़ज़रत यूनुस (अ़लै०) को भेजा, लेकिन जब वह अपनी ह़रकतों से बाज़ न आए तो ह़ज़रत यूनुस (अ़लै०)

ने उन से कहा कि अब तुम लोग अल्लाह के अ़ज़ाब का इन्तिज़ार करो जो चालीस दिन के बाद तुम्हें आएगा, ख़ुद वहाँ से निकल कर मैदानी इलाक़ा की तरफ़ चले गये। जब अश्वरियों के अमीर (हेड) को पता चला तो डर गया और पूरी क़ौम के साथ अल्लाह के सामने तौबः करने लगा। जब अल्लाह ने देखा कि वह लोग अपनी तौबः में सच्चे हैं तो अ़ज़ाब को टाल दिया।

100 وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تُؤْمِنَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَيَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ۝

अगर अल्लाह चाहता तो तमाम लोग ईमान ले आते, लेकिन उस हिक्मत की वजह से कि आज़्माईश हो अल्लाह ने ऐसा नहीं चाहा। इसलिए रसूलुल्लाह (सल्ल०) की यह ज़िम्मेदारी नहीं है कि वह लोगों को ईमान लाने पर मजबूर करें। इस में आप (सल्ल०) को तसल्ली दी गई है कि अगर यह लोग ईमान नहीं लाते हैं तो आप परेशान न हों।

अल्लाह तआ़ला ने सूरः बक़रः आयत नं० (272) में फ़रमाया हैः-

لَيْسَ عَلَيْكَ هُدٰىهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ यानी "उन्हें हिदायत देना आप की ज़िम्मेदारी नहीं है अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत देता है।"

इसीलिए आयत नं० (100) में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि कोई भी आदमी केवल अल्लाह की तौफ़ीक़ से ही ईमान लाता है, इसलिए आप दअ़वत का काम किये जाइए लेकिन किसी के ईमान न लाने पर परेशान न हुआ कीजिए, रुस्वाई और ज़िल्लत तो उन लोगों के लिए लिख दी गई है जो अल्लाह की भेजी हुई दलीलों में ग़ौर व फ़िक्र नहीं करते हैं।

101-103 قُلِ انْظُرُوْا مَاذَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَا تُغْنِي الْاٰيٰتُ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ۝ فَهَلْ يَنْتَظِرُوْنَ اِلَّا مِثْلَ اَيَّامِ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ قُلْ فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ۝ ثُمَّ نُنَجِّيْ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كَذٰلِكَ ۚ حَقًّا عَلَيْنَا نُنْجِ الْمُؤْمِنِيْنَ۝

इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को हुक्म दिया है कि आप मुश्रिकीने मक्का को आसमानों और ज़मीन की मख़्लूक़ात में ग़ौर व फ़िक्र करने की दअ़वत दीजिए ताकि वह अल्लाह तआ़ला पर ईमान ले आएँ और उन्हें यक़ीन हो जाए कि उस के अ़लावा कोई बन्दग़ी के लायक़ नहीं है।

इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि जिन की क़िस्मत में लिख दिया गया है कि वह ईमान नहीं लाएँगे उन्हें निशानियों और अम्बिया की नसीहतों से कोई फ़ायदा नहीं होगा।

आयत नं० (102) में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि क्या मुश्रिकीन चाहते हैं कि उन पर पिछली क़ौमों की तरह अल्लाह का अ़ज़ाब आ जाए? तो आप उन से कह दीजिए कि फिर तुम लोग इन्तिज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ उस अ़ज़ाब का इन्तिज़ार करता हूँ जिस के ज़रिये अल्लाह सिर्फ़ ज़ालिमों और मुश्रिकों को हलाक कर देता है। इसीलिए आयत नं० (103) में फ़रमाया कि जब अल्लाह के बाग़ियों पर हमारा अ़ज़ाब आता है तो हम अपने रसूलों और ईमान वालों को उस से बचा लेते हैं, इसलिए कि हम ने अपने ऊपर इस बात को वाजिब कर लिया है कि अहले ईमान को अ़ज़ाब से बचा लेंगे।

104-107

قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْ دِيْنِيْ فَلَآ اَعْبُدُ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
وَلٰكِنْ اَعْبُدُ اللّٰهَ الَّذِيْ يَتَوَفّٰىكُمْ ښ وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَاَنْ اَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ
حَنِيْفًا ۚ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ وَلَا تَدْعُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ ۚ
فَاِنْ فَعَلْتَ فَاِنَّكَ اِذًا مِّنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗٓ اِلَّا هُوَ ۚ
وَاِنْ يُّرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَاۗدَّ لِفَضْلِهٖ ۭ يُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَاۗءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۭ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝

रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ज़बानी तमाम इन्सानों से कहा जा रहा है कि अगर तुम दीने इस्लाम की सच्चाई में शक करते हो तो तुम्हारे शक करने की वजह से मैं अल्लाह को छोड़कर तुम्हारे मअ़बूदों (उपास्यों) की अ़िबादत नहीं करूँगा, मैं तो उस की अ़िबादत करूँगा जिस के अधिकार में ज़िन्दगी और मौत है और मुझे तो हुक्म दिया गया है कि मैं मोमिन बन कर रहूँ और अपनी पेशानी (मस्तक) केवल उसी के सामने झुकाँऊ और किसी हाल में भी उस का समकक्ष किसी को न ठहराऊँ और उस के अ़लावा किसी को भी न पुकारूँ जो न नफ़ा पहुँचा सकता है न नुक़्सान। इसलिए कि ऐसा करने से ज़ालिमों में हो जाऊँगा। अगर अल्लाह मुझे किसी तक्लीफ़ में मुब्तिला कर दे तो उस के अ़लावा कोई दूर नहीं कर सकता और अगर वह मुझे कोई भलाई पहुँचाना चाहे तो कोई उसे रोक नहीं सकता है, इसलिए कि वह अपने फ़ज़्ल को अपने बन्दों में से जिसे चाहता है अ़ता करता है।

108-109

قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاۗءَكُمُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ
وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ۝ وَاتَّبِعْ مَا يُوْحٰٓى اِلَيْكَ
وَاصْبِرْ حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ ښ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ۝

यहाँ भी नबी करीम (सल्ल०) की ज़बानी तमाम इन्सानों को बताया जा रहा है कि लोगो! तुम्हारे रब की ओर से क़ुर्आन नाज़िल हो चुका है, जो दीने इस्लाम की मुकम्मल तर्जुमानी कर रहा है। अब अगर कोई इस हिदायत को क़ुबूल करता है तो उस का फ़ायदा उसी को पहुँचेगा और अगर कोई इस के बाद भी गुमराह हो जाता है तो उस की सज़ा उसी को भुगतनी पड़ेगी और मैं तुम्हारी हिदायत का ज़िम्मेदार नहीं हूँ मेरा काम तो केवल पैग़ाम पहुँचा देना है।

इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने इस सूरः की आख़िरी आयत में आप (सल्ल०) को ताकीद की कि आप पर जो वह्य नाज़िल होती है उसी की पैरवी कीजिए यानी किसी दूसरी बात की पैरवी न कीजिए और दअ़वत की राह कठिन होती है, इसलिए इस राह में इन्कार करने वालों और शिर्क करने वालों की ओर से आप को जो तक्लीफ़ पहुँचे उस पर सब्र कीजिए जब तक कि शिर्क करने वालों के बारे में अल्लाह का कोई फ़ैसला आ जाए। चुनाँचे इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने आप (सल्ल०) को जिहाद का हुक्म दिया यहाँ तक कि पूरा अ़रब इस्लाम को मानने लगा।

❑❑❑

(भाग-11)

सूर-ए-हूद

(सूरः नं.11)

तफ़्सीर सूरः हूद

नाम– चूंकि इस सूरः में हज़रत हूद (अ़लै०) और उन की क़ौम का वाक़िआ़ (क़िस्सा) बयान किया गया है, इसीलिए इस का नाम 'सूरः हूद' रखा गया है। अगरचे इस में दूसरे अम्बिया (अ़लै०) के वाक़िआ़त भी बयान हुए हैं।

यह मक्का में सूरः यूनुस के बाद नाज़िल हुई, इस की केवल तीन आयतें (12,17,114) मदीना में नाज़िल हुई थीं, जो इस के साथ मिला दी गई हैं।

इस सूरः की अहमियत का अन्दाज़ा रसूलुल्लाह (सल्ल०) की उस ह़दीस से होता है जिसे 'तिर्मिज़ी' 'ह़ाकिम' और 'अबू यअ़ला' आदि ने ह़ज़रत अबू बक्र (रज़ि०) से रिवायत की है। उन्होंने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल! आप बूढ़े हो गये तो आप ने फ़रमाया कि मुझे 'हूद' 'मुर्सलात' 'अ़म्मयतसाअलून' और 'इज़श्शम्सु कुव्विरत' ने बूढ़ा कर दिया है।

इसलिए कि इस में पिछली क़ौमों के वाक़िआ़त, उन पर दुनिया में अ़ज़ाबे इलाही, नुज़ूल और आख़िरत में अ़ज़ाब की वअ़ीद के विषय बयान किये गये हैं और मुश्रिकीने मक्का को उन से नसीह़त ह़ासिल करने की दअ़वत दी गई है।

अन्दाज़े बयान में आ़म मक्की सूरतों से ज़्यादा सख़्त धमकी है। इसलिए रसूलुल्लाह (सल्ल०) जब इस की तिलावत फ़रमाते तो आप के दिल व दिमाग़ पर इस का बहुत ज़्यादा असर पड़ता और मक्की ज़िन्दगी में मक्का वालों की सरकशी, अल्लाह से बग़ावत और कुर्आन व दीने इस्लाम का मज़ाक़ उड़ाना देख-देख कर उन्हें ख़ौफ़ होता था कि कहीं अल्लाह का अ़ज़ाब अहले मक्का पर नाज़िल न हो जाए।

आयत नं० 1 से 5 तक

الٓرٰ كِتٰبٌ اُحْكِمَتْ اٰيٰتُهٗ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ خَبِيْرٍ ۙ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ؕ اِنَّنِيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ ۙ وَّاَنِ
اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُمَتِّعْكُمْ مَّتَاعًا حَسَنًا اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّيُؤْتِ كُلَّ ذِيْ فَضْلٍ فَضْلَهٗ ؕ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنِّيْٓ
اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ كَبِيْرٍ ۝ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ اَلَآ اِنَّهُمْ يَثْنُوْنَ صُدُوْرَهُمْ لِيَسْتَخْفُوْا مِنْهُ ؕ
اَلَا حِيْنَ يَسْتَغْشُوْنَ ثِيَابَهُمْ ۙ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۚ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝

अनुवाद-

(1) अलिफ़्- लाम्- रा, यह वह किताब है जिसकी आयतें सुदृढ़ (पक्की) हैं, फिर विस्तार पूर्वक बयान हुई हैं, ह़कीम व ख़बीर अल्लाह की ओर से, (2) यह कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो, मैं तो उसकी ओर से तुम्हें सचेत करने वाला और खुश-ख़बरी देने वाला हूँ। (3) और यह कि ''अपने रब से तौबः करो और 'उसकी' ओर पलट आओ, 'वह' तुम को एक निश्चित अवधि तक अच्छी जीवन सामग्री देगा, और बढ़-चढ़ कर अ़मल करने वालों पर अपना अधिक फ़ज़्ल करेगा; हाँ अगर तुम मुँह फेरते हो, तो मुझे तुम्हारे बारे में एक बड़े दिन के अ़ज़ाब का डर है। (4) तुम्हें अल्लाह ही की ओर पलटना है, और 'उसे' हर चीज़ पर क़ुद्रत (सामर्थ्य) है''। (5) सुनो! ये अपने सीनों को दोहरा करते हैं, ताकि उससे छिपें, याद रखो! जब यह अपने कपड़े से स्वयं को ढ़ाँप लेते हैं, 'वह' जानता है, वह भी जो वे छिपाते हैं और उसको भी जो वे ज़ाहिर करते हैं, बेशक 'वह' तो सीनों के भेदों को भी खूब जानता है।

आयत नं० 1 से 5 तक की व्याख्या

1 الٓرٰ كِتٰبٌ اُحْكِمَتْ اٰيٰتُهٗ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ خَبِيْرٍ ۙ

الٓرٰ। जैसा कि पहले गुज़र चुका है कि इन 'हुरूफ़ मुक़त्तआ़त' के बारे में मुफ़स्सिरीन की बेहतरीन राय यही है कि उन का मक़्सद अल्लाह के अ़लावा कोई नहीं जानता।

'किताब' का मतलब क़ुर्आन मजीद है। जिस के यहाँ दो गुण बयान हुए हैं। पहले गुण का सम्बन्ध क़ुर्आन मजीद की भाषा और उस का साहित्य है यानी क़ुर्आन करीम की आयतों की तर्तीब इतनी अ़ज़ीमुश्शान और ऐसी लाजवाब है जो इन्सानी क़ुद्रत से बाहर है।

दूसरे गुण का सम्बन्ध क़ुर्आन के दलायल तौह़ीद, अह़काम व वाजिबात हैं कि उन की मिसाल उन मोतियों की सी है जिन्हें हार में पिरोया जाता है और उन के दर्मियान जगह-जगह कुछ दूसरे रंग के मोतियों के ज़रिये ख़ूबसूरती पैदा की जाती है। क़ुर्आन करीम की हर आयत और हर सूरः अपने अन्दर इन्सानों के लिए कोई न कोई भलाई लिए हुए है और ऐसा क्यों न हो यह किताब उस अल्लाह की ओर से नाज़िल की हुई है जिस का हर काम ह़िक्मत पर होता है और जो हर बात की ख़बर रखता है।

2 اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ؕ اِنَّنِيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ ۙ

'जुमख़शरी' ने कहा है कि "فُصِّلَتْ" ﴿اَلَّا تَعْبُدُوْٓا﴾ का माने यह होगा कि क़ुर्आन मजीद में मौजूद हुक्मों और दूसरे कामों को तफ़्सील के साथ इसलिए बयान कर दिया गया है ताकि तुम अल्लाह के अ़लावा किसी और की अ़िबादत न करो। एक क़ौल (कथन) यह भी है कि यह पहली आयत से अलग नबी करीम (सल्ल०) की ज़बानी एक मुस्तक़िल कलाम है। ऐसी सूरत में माने यह होंगे कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने कुफ़्फ़ारे क़ुरैश से कहा कि अल्लाह के अ़लावा किसी की अ़िबादत न करो और यह कि मैं अल्लाह की ओर से तुम्हें आग के अ़ज़ाब से डराने वाला और जन्नत की ख़ुशख़बरी देने वाला हूँ।

3 وَّاَنِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُمَتِّعْكُمْ مَّتَاعًا حَسَنًا اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّيُؤْتِ كُلَّ ذِيْ فَضْلٍ
فَضْلَهٗ ۭ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنِّىْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ كَبِيْرٍ ۝

यह भी रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ज़बानी एक कलाम (वाक्य) का हिस्सा है। यहाँ मग़्फ़िरत और तौबः का ज़िक्र आया है और दोनों लगभग एक ही माने में इस्तेमाल हैं, इसलिए मक़्सद तौबः करना और उस में इख़्लास पैदा करना है और ऐसे इस्तिग़फ़ार व तौबः पर अल्लाह ने दो चीज़ों का वादा किया है।

पहली चीज़ यह है कि अल्लाह तआ़ला अपने उन मुख़्लिस बन्दों को दुनिया की नेअ़मतों से एक लम्बी मुद्दत तक फ़ायदा उठाने का मौक़ा देगा, उन की रोज़ी में बरकत अ़ता फ़रमाएगा और दूसरी नेअ़मतों से भी ख़ूब नवाज़ेगा। अल्लाह तआ़ला ने अपने इसी वादे को सूरः नह़ल की आयत नं० (97) में बयान करते हुए फ़रमाया है:-

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً ۚ

कि जो मोमिन (मर्द या औ़रत) अच्छे अ़मल करेगा, हम उसे अच्छी ज़िन्दगी अ़ता करेंगे और दूसरी चीज़ यह है कि अल्लाह तआ़ला उन की नेक नियती और नेक अ़मल के बदले के तौर पर आख़िरत में जन्नत देगा। इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ही ज़बानी उन लोगों को धमकी दी जो तौबः व इस्तिग़फ़ार और अ़िबादत में इख़्लास से मुँह मोड़ते हैं कि उन्हें क़ियामत के दिन के अ़ज़ाब से डरते रहना चाहिए।

4 اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ ۚ وَهُوَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝

पिछली आयत में आख़िरत के दिन के अ़ज़ाब की जो बात आई है उस की इस में ताकीद है।

5 اَلَآ اِنَّهُمْ يَثْنُوْنَ صُدُوْرَهُمْ لِيَسْتَخْفُوْا مِنْهُ ۭ اَلَا حِيْنَ يَسْتَغْشُوْنَ ثِيَابَهُمْ ۙ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ
وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۚ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝

मक्का के इन्कारियों के बारे में यहाँ ख़बर दी जा रही है कि कोई भी धमकी और दुनिया व आख़िरत की भलाईयों की कोई भी नसीहत उन के हालात को न बदल सकी बल्कि सरकशी बढ़ती ही गई। आयत के माने यह हैं कि बाज़ मक्का के इन्कारी रसूलुल्लाह (सल्ल०) की बात सुनने से मुँह फेरते थे और कोशिश करते थे कि उन के इस इन्कार का इ़ल्म अल्लाह या उस के रसूल (सल्ल०) को न हो।

اَلَا حِيْنَ يَسْتَغْشُوْنَ ثِيَابَهُمْ ۙ इस में पिछले माने की ताकीद है। मक्का के इन्कारी कहा करते थे कि

जब हम अपने दरवाज़े बन्द कर लेंगे और कपड़ों से अपने आप को ढ़ांक लेंगे और अपने सीनों में मुहम्मद की दुश्मनी को छिपाए रखेंगे तो किसे ख़बर होगी? बाज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा है कि मक्का के इन्कारी ह़क़ीक़त में ऐसा करते थे कि जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) उन के पास से गुज़रते तो अपना मुँह फेर लेते और आप (सल्ल०) की तरफ़ पीठ कर लेते और कपड़े से अपना मुँह ढ़ांक लेते ताकि आपकी कोई बात उन के कान में न पड़े يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ

इस में उन्हीं इन्कारियों को बताया जा रहा है कि तुम अल्लाह और उस के रसूल से अपनी ह़क़ीक़त छिपाने की हज़ार कोशिश करो कोई फ़ायदा नहीं होगा, इसलिए कि अल्लाह तो सब कुछ जानता है, वह तो सीनों के तमाम राज़ों को जानता है।

'इमाम बुख़ारी' (रह़०) ने इस आयत की तफ़्सीर में इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत की है कि सह़ाबा-ए-किराम में कुछ लोग लैट्रीन या बीवी से हम बिस्तरी (सम्भोग) करते वक़्त अपनी शर्मगाह खोलते हुए शर्माते थे कि अल्लाह उन्हें देख रहा है तो यह आयत नाज़िल हुई। **(बुख़ारी)**

एक दूसरी रिवायत में है कि यह अख़्नस बिन शरीक़ के बारे में नाज़िल हुई थी, वह रसूलुल्लाह (सल्ल०) से जब मिलता तो चिकनी चुपड़ी बातें करता और दिल में आप की दुश्मनी छिपाए रखता। अक्सर मुफ़स्सिरीन ने आयत की पहली तफ़्सीर को ही फ़ज़ीलत दी है।

आयत नं० 6 से 17 तक

*

وَمَا مِن دَآبَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا ۚ كُلٌّ فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ۝ وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَكَانَ عَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ۗ وَلَئِن قُلْتَ إِنَّكُم مَّبْعُوثُونَ مِن بَعْدِ الْمَوْتِ
لَيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ۝ وَلَئِنْ أَخَّرْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ إِلَىٰ أُمَّةٍ مَّعْدُودَةٍ لَّيَقُولُنَّ مَا يَحْبِسُهُ ۗ أَلَا
يَوْمَ يَأْتِيهِمْ لَيْسَ مَصْرُوفًا عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِم مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝ وَلَئِنْ أَذَقْنَا الْإِنسَانَ مِنَّا رَحْمَةً ثُمَّ نَزَعْنَاهَا مِنْهُ ۚ إِنَّهُ لَيَئُوسٌ
كَفُورٌ ۝ وَلَئِنْ أَذَقْنَاهُ نَعْمَاءَ بَعْدَ ضَرَّاءَ مَسَّتْهُ لَيَقُولَنَّ ذَهَبَ السَّيِّئَاتُ عَنِّي ۚ إِنَّهُ لَفَرِحٌ فَخُورٌ ۝ إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَمِلُوا
الصَّالِحَاتِ ۚ أُولَٰئِكَ لَهُم مَّغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ۝ فَلَعَلَّكَ تَارِكٌ بَعْضَ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ وَضَائِقٌ بِهِ صَدْرُكَ أَن يَقُولُوا لَوْلَا أُنزِلَ
عَلَيْهِ كَنزٌ أَوْ جَاءَ مَعَهُ مَلَكٌ ۚ إِنَّمَا أَنتَ نَذِيرٌ ۚ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ۝ أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۖ قُلْ فَأْتُوا بِعَشْرِ سُوَرٍ مِّثْلِهِ
وَادْعُوا مَنِ اسْتَطَعْتُم مِّن دُونِ اللَّهِ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۝ فَإِلَّمْ يَسْتَجِيبُوا لَكُمْ فَاعْلَمُوا أَنَّمَا أُنزِلَ بِعِلْمِ اللَّهِ وَأَن لَّا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ
فَهَلْ أَنتُم مُّسْلِمُونَ ۝ مَن كَانَ يُرِيدُ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزِينَتَهَا نُوَفِّ إِلَيْهِمْ أَعْمَالَهُمْ فِيهَا وَهُمْ فِيهَا لَا يُبْخَسُونَ ۝ أُولَٰئِكَ
الَّذِينَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ إِلَّا النَّارُ ۖ وَحَبِطَ مَا صَنَعُوا فِيهَا وَبَاطِلٌ مَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ أَفَمَن كَانَ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّهِ
وَيَتْلُوهُ شَاهِدٌ مِّنْهُ وَمِن قَبْلِهِ كِتَابُ مُوسَىٰ إِمَامًا وَرَحْمَةً ۚ أُولَٰئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۚ وَمَن يَكْفُرْ بِهِ مِنَ الْأَحْزَابِ فَالنَّارُ مَوْعِدُهُ ۚ فَلَا تَكُ
فِي مِرْيَةٍ مِّنْهُ ۚ إِنَّهُ الْحَقُّ مِن رَّبِّكَ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

अनुवाद–

(6) और ज़मीन पर कोई चलने-फिरने वाला (जानदार) ऐसा नहीं, जिसकी रोज़ी अल्लाह के ज़िम्मे न हो, 'वह' उसके ठहरने की जगह को भी जानता है और उस जगह को भी जहाँ वह सौंप दिया जाता है, यह सब कुछ एक स्पष्ट किताब में (लिखा) है। (7) और 'वही' तो है, जिसने आसमानों और ज़मीन को छः दिनों में पैदा किया, और उसका अर्श (सिंहासन) पानी पर था; ताकि तुम्हें आज़माए; कि कौन कर्म में बेहतर है? और अगर तुम कहते हो कि ''मरने के बाद तुम लोग उठाए जाओगे,'' तो काफ़िर बोल उठते हैं, ''यह तो खुली जादूगरी है।'' (8) और अगर 'हम' एक निश्चित अवधि तक अ़ज़ाब को पीछे कर देते हैं, तो वे कहने लगते हैं, ''आख़िर क्या चीज़ है जो इसे रोक रही है?'' सुन लो! जिस दिन वह उन पर आ पड़ेगा तो फिर टाला न जा सकेगा, और जिस अ़ज़ाब का वे मज़ाक़ उड़ा रहे हैं वही उनको आ घेरेगा। (9) और अगर 'हम' इन्सान को अपनी रहमत का मज़ा चखा कर फिर उससे उसको छीन लेते हैं, तो वह निराश, नाशुक्रा हो जाता है। (10) और अगर 'हम' इसके बाद कि उसे तकलीफ़ पहुँची हो, उसे राहत का मज़ा चखाते हैं; तो कहता है, "मेरे सब दुःख दूर हो गये,'' बेशक वह फूला नहीं समाता डींगे मारने लगता है। (11) मगर जिन्होंने सब्र से काम लिया, और अच्छे अ़मल किये 'वही' हैं; जिनके लिए मग्फ़िरत (क्षमा) है और बहुत बड़ा बदला। (12) तो शायद तुम उसमें से कुछ छोड़ बैठोगे! जो तुम्हारी ओर वह्य के रूप में भेजी जा रही है, और तुम इस बात पर तंग दिल हो रहे हो कि वे कहते हैं, ''उस पर कोई ख़ज़ाना क्यों नहीं उतरा, या उसके साथ कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं आया?'' आप तो केवल सचेत करने वाले हैं, और हर चीज़ अल्लाह ही के

ह़वाले है। (13) क्या यह कहते हैं, उन्होंने इसको खुद गढ़ लिया है? कह दीजिए, ''अच्छा, अगर तुम सच्चे हो तो इस (क़ुर्आन) जैसी गढ़ी हुई दस सूरतें ले आओ और अल्लाह के अ़लावा जिस किसी को बुला सकते हो बुला लो"। (14) तो अगर वे तुम्हारी बात न मानें, तो जान लो! यह अल्लाह के इल्म ही के साथ उतारा गया है और यह कि 'उसके' सिवा कोई मअ़बूद नहीं, तो क्या अब तुम मुस्लिम (आज्ञाकारी) होते हो? (15) जो (व्यक्ति) दुनिया की ज़िन्दगी और उसकी शोभा का इच्छुक हो, तो उनके अ़मलों (कर्मों) का पूरा-पूरा बदला 'हम' यहीं दे देते हैं, और इसमें उनका कोई ह़क़ नहीं मारा जाता; (16) यही वे लोग हैं जिनके लिए आग के सिवा और कुछ भी नहीं, उनका किया कराया सब बेकार हो जाएगा और जो कुछ अ़मल वे करते रहे सब बातिल (व्यर्थ) ठहरेंगे। (17) क्या वह व्यक्ति जो अपने रब की ओर से रौशन दलील रखता हो और फिर एक गवाह भी उसकी ओर से हो-और इससे पहले मूसा की किताब भी एक मार्ग-दर्शक और रह़मत के रूप में मौजूद हो-ऐसे ही लोग तो उस पर ईमान लाते हैं और जो कोई और गिरोहों में से इसका इन्कार करेगा, तो उसका ठिकाना आग है; अतः तुम्हें इसके बारे में सन्देह न हो, यह तुम्हारे रब की ओर से ह़क़ है मगर अक्सर लोग ईमान नहीं लाते।

आयत नं० 6 से 17 तक की व्याख्या

6 وَمَا مِن دَآبَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا ۚ كُلٌّ فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ۝

ऊपर गुज़र चुका है कि अल्लाह तआ़ला दिलों की बातों तक को जानता है। इसी की ताईद (समर्थन) के तौर पर अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि ज़मीन पर चलने वाले जितने जानदार हैं वह उन सब को उन की बनावट और ज़रूरत के मुताबिक़ रोज़ी पहुँचाता है, यह उस का अटल वादा है जो पूरा करता रहता है। जब वह एक जानदार को रोज़ी पहुँचाता है, दुनिया में उन की जगहों को और मौत के बाद उन के ठिकानों को जानता है तो फिर यह कैसे हो सकता है कि वह उन की ह़रकतों और कामों से बेख़बर रहे? उसे सब कुछ की ख़बर है और लौहे़ मह़फ़ूज़ में हर बात लिखी हुई है।

7 وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَكَانَ عَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ۗ
وَلَئِن قُلْتَ إِنَّكُم مَّبْعُوثُونَ مِن بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ۝

इस आयत में भी पिछली बात की ताकीद है कि अल्लाह तआ़ला अ़ज़ीम क़ुद्रत का मालिक है और इस की दलील आसमान व ज़मीन की तख़्लीक़ (पैदाइश) है। अल्लाह तआ़ला ने आसमान व ज़मीन को (इतवार से जुमअ़) छः दिनों में पैदा किया है। यह विषय सूरः अअ़राफ़ आयत नं० (54) और सूरः यूनुस आयत नं० (3) में गुज़र चुका है और सूरः अल् ह़दीद आयत नं० (4) सूरः अल् फ़ुर्क़ान आयत नं० (59) सूरः अल् सज्दः आयत नं० (4) और आयत नं० (38) में भी आएगा। यह दिन या तो दुनिया के दिनों की तरह़ होंगे या एक दिन एक हज़ार साल के बराबर होगा जैसा कि सूरतुल् ह़ज्ज आयत नं० (47) में आया है وَإِنَّ يَوْمًا عِندَ رَبِّكَ كَأَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّونَ ۝

"तुम्हारे रब का एक दिन तुम्हारे एक हज़ार साल के बराबर है।"

आसमान व ज़मीन की पैदाइश से पहले अल्लाह तआ़ला का अ़र्श (सिंहासन) पानी पर था। यह दलील है कि अल्लाह तआ़ला ने सब से पहले पानी को पैदा किया, उस के बाद अ़र्श को पैदा किया और इन दोनों के बाद आसमान व ज़मीन को पैदा किया।

'इमाम अह़मद' और 'तिर्मिज़ी' ने 'अबू रज़ैन अल् अ़क़ीली' सहाबी से रिवायत की है कि मैंने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल! मख़्लूक़ात (सृष्टि) को पैदा करने से पहले हमारा रब कहाँ था? तो आप ने फ़रमाया, "ऐसी जगह जिस के नीचे भी हवा थी और ऊपर भी हवा थी।" उस के बाद अल्लाह ने अ़र्श को पैदा किया। अल्लाह तआ़ला ने आसमानों और ज़मीन को इसलिए पैदा किया ताकि उस के बन्दे ज़मीन पर रहें, उस की नेअ़मतों से फ़ायदा उठाएँ और एक अल्लाह की अ़िबादत करें। नेकी और ख़ैर के कामों में एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करें और क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला हर शख़्स को उस के आ़माल के मुताबिक़ बदला दे।

आयत के इस ह़िस्से में अल्लाह तआ़ला ने أَحْسَنُ عَمَلًا कहा है أَكْثَرُ عَمَلًا नहीं कहा। इस का मतलब यह है कि अल्लाह के नज़्दीक अच्छे अ़मल का एतिबार है ज़्यादा अ़मल का नहीं और कोई भी अ़मल अल्लाह की निगाह में अच्छा उसी वक़्त होगा जब वह अल्लाह को ख़ुश करने के लिए किया गया हो, रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सुन्नत और शरीअ़त (क़ानून) के मुताबिक़ हो यानी अगर दोनों शर्तों में से एक न होगी तो वह अ़मल अल्लाह के नज़्दीक क़ुबूल करने योग्य नहीं होगा।

चूंकि ऊपर अच्छे और बुरे अ़मल के साथ क़ियामत के दिन उन का बदला और सज़ा का ज़िक्र आया है, इसी सन्दर्भ में यहाँ मौत के बाद दोबारा उठाए जाने की बात आई है।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि ऐ मेरे नबी! अगर आप कुफ़्फ़ारे मक्का से कहेंगे कि तुम लोग मौत के बाद दोबारा ज़िन्दा किये जाओगे और हर शख़्स को उस के अच्छे या बुरे कामों का बदला दिया जाएगा तो वह कहेंगे कि ऐ मुह़म्मद! तुम जो कुछ कह रहे हो जादू की तरह़ बेबुनियाद और ग़लत है जिस पर यक़ीन नहीं किया जा सकता।

8 وَلَئِنْ أَخَّرْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ إِلَىٰ أُمَّةٍ مَّعْدُودَةٍ لَّيَقُولُنَّ مَا يَحْبِسُهُ ۗ أَلَا يَوْمَ يَأْتِيهِمْ لَيْسَ مَصْرُوفًا
عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِم مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝

इन काफ़िरों की फ़ित्रत में ही टेढ़ापन है। क़ुर्आन करीम और अल्लाह के रसूल को झुठलाना और अल्लाह की ओर से भेजी गई हर चीज़ में शक करना उन की आ़दत है। अल्लाह तआ़ला अगर उन से कुछ दिन के लिए अ़ज़ाब को उन से टाल देता है तो वह रसूलुल्लाह (सल्ल०) को तुरन्त झुठलाने लगते हैं और कहते हैं कि ऐ मुह़म्मद! तुम जिस अ़ज़ाब की बात करते थे उसे किस चीज़ ने देर कर दिया है? अल्लाह तआ़ला ने उन को जवाब दिया कि जल्दी न करो, जब वह तुम पर नाज़िल हो जाएगा तो कोई ताक़त उसे टाल नहीं सकेगी।

9-11 وَلَئِنْ أَذَقْنَا الْإِنسَانَ مِنَّا رَحْمَةً ثُمَّ نَزَعْنَاهَا مِنْهُ إِنَّهُ لَيَئُوسٌ كَفُورٌ ۝ وَلَئِنْ أَذَقْنَاهُ نَعْمَاءَ بَعْدَ

ضَرَّآءَ مَسَّتْهُ لَيَقُوْلَنَّ ذَهَبَ السَّيِّاٰتُ عَنِّيْ ۭ اِنَّهٗ لَفَرِحٌ فَخُوْرٌ ۝ اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۭ
اُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ۝

इस आयत में है कि अल्लाह तआ़ला जब किसी इन्सान को नेअ़मत देता है, फिर किसी वजह से उस को छीन लेता है तो वह उस की रह़मत से नाउम्मीद हो जाता है और नाशुक्री और अल्लाह की बुराई बयान करने पर उतर आता है और अगर उसे बीमारी और तक्लीफ़ के बाद सेह़त और मोह़ताजी के बाद ख़ुशह़ाली दे देता है तो कहने लगता है कि अब क्या है, अब तो आराम व राह़त है और ऐ़श व ख़ुशह़ाली है और इस ख़ुशह़ाली में ऐसा मग्न हो जाता है कि उस नेअ़मत पर अपने पैदा करने वाले मालिक का शुक्रिया अदा करने का ख़याल भी उस के दिल व दिमाग़ में नहीं गुज़रता, लेकिन जो ईमान वाले तक्लीफ़ की ह़ालत में सब्र करते हैं, आराम की ह़ालत में अपने रब के शुक्रगुज़ार होते हैं और हर ह़ाल में नेक काम करना उन का मक़्सद बन जाता है वह न तो मुसीबत के वक़्त मायूस होते हैं और न ही ऐ़श व आराम की ह़ालत में इस तरह़ फूलते हैं कि अल्लाह को ही भूल जाएँ। अल्लाह तआ़ला ने अपने इन नेक बन्दों से मग़्फ़िरत और बड़े बदले का वादा किया है।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया है, "उस ज़ात की क़सम जिस के हाथ में मेरी जान है कि अगर मोमिन को कोई रंज व मलाल पहुँचता है या कोई तक्लीफ़ पहुँचती है, यहाँ तक कि अगर उसे कोई कांटा भी चुभता है तो अल्लाह तआ़ला उस की वजह से उस के गुनाह मिटा देता है।" **(मुस्नद अह़मद)**

'सह़ीह़ैन' में एक दूसरी ह़दीस है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, "उस ज़ात की क़सम जिस के हाथ में मेरी जान है अल्लाह तआ़ला का अपने बन्दे मोमिन के बारे में हर फ़ैसला उस के ह़क़ में ख़ैर लिए होता है। अगर उसे कोई ख़ुशी मिलती है और वह उस पर अल्लाह का शुक्र अदा करता है तो यह उस के लिए बेहतर होता है और अगर उसे कोई तक्लीफ़ पहुँचती है और उस पर सब्र करता है तो यह भी उस के लिए बेहतर होता है और यह इ़ज़्ज़त मोमिन के अ़लावा किसी को ह़ासिल नहीं है।"

12 فَلَعَلَّكَ تَارِكٌۢ بَعْضَ مَا يُوْحٰٓى اِلَيْكَ وَضَاۗىِٕقٌۢ بِهٖ صَدْرُكَ اَنْ يَّقُوْلُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ كَنْزٌ اَوْ جَاۗءَ
مَعَهٗ مَلَكٌ ۭ اِنَّمَآ اَنْتَ نَذِيْرٌ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ۝

कुफ़्फ़ारे मक्का रसूलुल्लाह (सल्ल०) से बार-बार कहते थे कि तुम्हारे सच्चाई की गवाही देने के लिए आसमान से कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं उतर आता या अल्लाह तुम्हारे लिए कोई ख़ज़ाना क्यों नहीं भेज देता या कोई बाग़ ही क्यों नहीं उगा देता? यह और इसी तरह़ के दूसरे सवालों से रसूलुल्लाह (सल्ल०) कभी-कभी दिल में तक्लीफ़ मह़सूस करते थे तो अल्लाह ने उन्हें तसल्ली दी और कहा कि ऐसा पिछले नबियों के साथ भी होता रहा है, उन की क़ौमों ने भी उन्हें झुठलाया तो उन्होंने सब्र किया इसलिए आप भी सब्र से काम लीजिए और दिल में तक्लीफ़ मह़सूस न कीजिए और काफ़िरों का दिल रखने के लिए क़ुर्आन की तब्लीग़ से मत रुकिए जिन्हें इन्कारी लोग सुनना नहीं चाहते। आप का काम तो अल्लाह का पैग़ाम पहुँचा देना है, आसमान से निशानियों का नाज़िल करना तो केवल अल्लाह ही के अख़्तियार में है।

13 أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۖ قُلْ فَأْتُوا بِعَشْرِ سُوَرٍ مِّثْلِهِ مُفْتَرَيَاتٍ وَادْعُوا مَنِ اسْتَطَعْتُم مِّن دُونِ اللَّهِ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۝

जब मक्का के काफ़िरों ने वह्य का इन्कार कर दिया और रसूलुल्लाह (सल्ल०) पर इल्ज़ाम (आरोप) लगाया कि क़ुर्आन उन का बनाया हुआ है अल्लाह का नहीं, तो अल्लाह ने चैलेंज कर दिया कि अगर यह अल्लाह का कलाम (वाणी) नहीं है मुहम्मद का कलाम (लेख) है तो फिर तुम इस जैसी दस सूरतें ही लाकर दिखाओ।

सूरः यूनुस आयत नं० (39) की तफ़्सीर में गुज़र चुका है कि अल्लाह तआला ने अ़रबों को क़ुर्आने करीम जैसा कलाम लाने का चैलेंज कई बार किया था। पहले कहा कि अगर तुम यह कहते हो कि यह क़ुर्आन मुहम्मद का कलाम (लेख) है तो इस जैसा तुम भी पेश करो, जब ऐसा नहीं कर सके तो इस आयत में कहा गया कि अगर पूरा क़ुर्आन नहीं तो इस जैसी कम से कम दस सूरतें ही पेश कर दो, जब इस से भी बेबस रहे तो सूरः यूनुस वाली आयत में कहा गया कि कम से कम एक ही सूरः इस जैसी ले आओ और सूरः तूर आयत नं० (34) में तो अल्लाह तआला ने उन के दावे में आख़िरी कील ठोक दी। जब कहा गया कि अगर तुम सच्चे हो तो क़ुर्आन जैसी एक आयत (वाक्य) ही ला दो और इस के लिए अ़रबों के तमाम साहित्यकार व कवि सब को इकट्ठा कर लो, मगर आज तक कोई इस चैलेंज का जवाब न दे सका।

14 فَإِلَّمْ يَسْتَجِيبُوا لَكُمْ فَاعْلَمُوا أَنَّمَا أُنزِلَ بِعِلْمِ اللَّهِ وَأَن لَّا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ فَهَلْ أَنتُم مُّسْلِمُونَ ۝

इसी लिए अल्लाह तआला ने आयत नं० (14) में फ़रमाया कि मुसलमानों! अगर अ़रब के इन्कारी तुम्हारे इस चैलेंज का जवाब न दे सकें तो तुम्हारे इ़ल्म व यक़ीन में बढ़ौत्तरी और मज़बूती आ जानी चाहिए कि वह ऐसा नहीं कर सकते हैं, इसलिए कि इस क़ुर्आन की तर्तीब (क्रम) किसी इन्सान के बस की बात नहीं है और इस में जिन बातों की ख़बर दी गई है उन्हें अल्लाह के सिवा कोई नहीं जान सकता और तुम्हें इस बात का भी पक्का यक़ीन होना चाहिए कि यह उस अल्लाह का कलाम (वाणी) है जिस के सिवा कोई अ़िबादत के लायक़ नहीं और यह कि ग़ैरों को इस का साझीदार बनाना ज़ुल्म है।

15-16 مَن كَانَ يُرِيدُ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزِينَتَهَا نُوَفِّ إِلَيْهِمْ أَعْمَالَهُمْ فِيهَا وَهُمْ فِيهَا لَا يُبْخَسُونَ ۝ أُولَٰئِكَ
الَّذِينَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ إِلَّا النَّارُ ۖ وَحَبِطَ مَا صَنَعُوا فِيهَا وَبَاطِلٌ مَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

चूंकि कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के सरकशी की सब से बड़ी वजह दुनियावी ज़िन्दगी का ऐ़श व आराम और सत्ता की ख़्वाहिश थी, इसीलिए अल्लाह तआला ने इन आयतों में दुनियावी फ़ायदों की कमतरी और उन लोगों का अन्जाम बयान किया है जो केवल उन्हीं के इच्छुक होते हैं। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि अच्छे आ़माल के बदले में जिस की नज़र केवल दुनिया की ज़िन्दगी और उस का ऐ़श व आराम और ठाठ-बाठ होता है तो अल्लाह उसे इन आ़माल का बदला उस की नियत के मुताबिक़ देता है, उस में कोई कमी नहीं होती लेकिन आख़िरत में उन्हें इन अच्छे कामों का कोई अच्छा बदला नहीं मिलेगा, बल्कि रियाकारी की वजह से जहन्नम में डाल दिये जाएँगे।

क़ुर्आन करीम ने इस विषय को सूरः बनी इस्राईल आयात नं० (18,19,20) और सूरः शूरा आयत नं० (20) में भी बयान किया है कि जो आदमी नेक कामों के ज़रिये दुनियावी फ़ायदों की इच्छा रखने वाला होता है अल्लाह उसे उस की नियत के मुताबिक़ उस का बदला दुनिया में चुका देता है, लेकिन आख़िरत में उस का ठिकाना जहन्नम होगा और जो आदमी आख़िरत का इच्छुक होगा अल्लाह तआ़ला उसे जन्नत अ़ता करेगा।

कभी-कभी ऐसा होता है कि हज़ार कोशिश के बावजूद आदमी की दुनियावी ख़्वाहिश पूरी नहीं होती है। इसी को 'क़ुर्तुबी' ने लिखा है कि अक्सर उ़ल्मा की राय यह है कि यह आयत और सूरः शूरा की आयत नं० (20) और सूरः आले इमरान की आयत नं० (45) जिन की तफ़्सीर सूरः बनी इस्राईल की आयत नं० (18) से होती है जिस में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया हैः-

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهٗ فِيْهَا مَا نَشَاۤءُ لِمَنْ نُّرِيْدُ

कि "जो आदमी दुनिया का वक़्ती फ़ायदा चाहता है तो हम जिसे चाहते हैं और जितना चाहते हैं देते रहते हैं"।

यानी अल्लाह किसी को नहीं भी देता है।

यह आयते करीमा मुसलमानों के लिए ख़त्ररा की घंटी भी है कि आदमी नेक अ़मल करता है, लेकिन अगर उस में अल्लाह के लिए इख़्लास नहीं है तो वह क़ियामत के दिन उस के लिए वबाले जान बन जाएगा और जहन्नम उस का ठिकाना होगा।

इमाम मुस्लिम ने हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत की है कि क़ियामत के दिन जब हिसाब शुरु होगा तो अल्लाह तआ़ला सब से पहले एक ऐसे आदमी को बुलाएगा जो बज़ाहिर अल्लाह की राह में जिहाद करते हुए क़त्ल हुआ था उस से पूछा जाएगा कि तूने क्या अ़मल किया था? तो वह कहेगा कि ऐ अल्लाह! मैंने तेरी राह में जिहाद किया यहाँ तक कि क़त्ल कर दिया गया तो अल्लाह तआ़ला कहेगा तूने जिहाद इसलिए किया था कि लोग तुझे मुजाहिद कहें सो यह बदला तुझे दुनिया में मिल गया, फिर उसे जहन्नम में डाल दिया जाएगा। इसी तरह़ रियाकार (दिखावे वाले) आ़लिम, रियाकार क़ारी और रियाकार मालदार को बुलाया जाएगा और सब को घसीट कर जहन्नम में फेंक दिया जाएगा। **(मुस्लिम)**

17 أَفَمَنْ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ وَيَتْلُوْهُ شَاهِدٌ مِّنْهُ وَمِنْ قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰٓى إِمَامًا وَّرَحْمَةً ۚ أُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ
بِهٖ ۚ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ مِنَ الْأَحْزَابِ فَالنَّارُ مَوْعِدُهٗ ۚ فَلَا تَكُ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ ۚ إِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ وَلٰكِنَّ
أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝

यहाँ आख़िरत के इच्छुक का ह़ाल बयान किया जा रहा है। आयत का एक माने यह हैं कि जो शख़्स अल्लाह तआ़ला की तौफ़ीक़ से उस पर ईमान लाएगा और नबी करीम (सल्ल०) की पैरवी करेगा वह उस की निगाह में उस आदमी की तरह़ हरगिज़ नहीं हो सकता जिस का मक़्सद दुनिया का ऐ़श व आराम हो। एक दूसरी तफ़्सीर यह बयान की गई है कि नबी करीम (सल्ल०) जिन्हें अल्लाह ने क़ुर्आन जैसा

मोअ़जिज़ह (चमत्कार) दिया है और जिन के लिए जिब्रईल (अ़लै०) को बतौर गवाह बनाया हो और जिन की ख़ुशख़बरी ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) पर नाज़िल की गई किताब 'तौरेत' में ज़िक्र हो, जो उस ज़माने के लोगों के लिए रहनुमा और रह़मत थी, क्या वह अल्लाह की निगाह में उस आदमी की तरह़ हो जाएँगे जिस का मक़्सद दुनिया का ऐ़श व आराम है?

اُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ में इशारा उन सच्चे मोमिनों की ओर है जो अल्लाह के नाज़िल किये हुए दीन इस्लाम पर क़ायम हों। उन के बारे में ख़बर दी गई है कि वह लोग नबी करीम (सल्ल०) की तस्दीक़ करते हैं या क़ुर्आन करीम पर ईमान लाते हैं। इस के बाद अल्लाह तआ़ला ने अहले मक्का और दूसरे तमाम इन्कार करने वालों के बारे में फ़रमाया कि जो कोई नबी करीम (सल्ल०) या क़ुर्आन पर ईमान नहीं लाएगा उस का ठिकाना जहन्नम होगा।

'सह़ीह़ मुस्लिम' में है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, "उस ज़ात की क़सम जिस के हाथ में मेरी जान है, इस उम्मत का कोई भी शख़्स जिसे मेरी ख़बर हो जाएगी चाहे वह यहूदी हो या नसरानी मुझ पर ईमान नहीं लाएगा तो उस का ठिकाना जहन्नम होगा।"

सह़ाबा-ए-किराम और दूसरे मुसलमानों को नसीह़त की जा रही है कि वह क़ुर्आन के कलामे इलाही (ईश-ज्ञान) होने में ज़रा सा भी शुब्हा न करें।

Writer at a glance

Mufti Muhammad Sarwar Farooqui Nadwi (*Aacharya*)

Name	:	**Muhammad Sarwar Muhammad Sarwar Farooqui S/o. Mohd Haneef Farooqui S/o. Abdul Qayyum Farooqui S/o. Mahmood Ali Farooqui S/o. Ramzan Ali Farooqui S/o. Imam Baksh Farooqui S/o. Khairat Ali Farooqui S/o. Nisar Ahmad S/o. Muhammad Ali S/o. Athar Ali S/o. Abdul Hafeez S/o. Jalaluddin S/o. Mohd Suleman S/o. Allauddin S/o. Mohd Ishaq S/o. Nabiullah S/o. Khwaja Bakarullah S/o. Abdullah Yamni S/o. Abdul Aziz Yamni S/o. Salim S/o. Abdullah S/o. Sayyedna Umar Farooque Raziallahu Anhu.**

Educational Background.

Basic	:	Intermediate,
Higher Education	:	**M.A.**
Arabic	:	**Almiat, Fazeelat & Iftah,** (Darul-Uloom- Nadwatul Ulama Lucknow (U.P.) India.
Islamic Tadreebi Course	:	**Jamia Islamiya** **Madina Munawarah** (Saudi Arabia).
Urdu	:	**Adeeb Kamil & Mua'llim**
Sanskrit	:	**Shastri, Acharya**
Computer skill	:	**P.G.D.C.A**
Major Research	:	Qur'an and Fiqah, Darul-Uloom Nadwatul-Ulama, Lucknow, U.P. (India)

Present Posts

President	:	***Jamiat Payam-e-Amn,*** (Educational Society) lucknow, U.P. (India)
Rafiq Ilmi	:	***Majlis Tahqeeqat (Islamic Research) Darul Uloom Nadwatul Ulama,*** **Lucknow,** U.P. (India)
Director	:	***Markaz- ul-Tawheed Al-Islami*** lucknow, U.P. (India)
Managing Director	:	**Jamia Dar-e-Arqam,** Fatehpur, Haswa, U.P. (India)
Manager	:	**Jamia Dar-e-Arqam** (Educational Society) Allahabad (India)
Chairman	:	**Arqum Model School,** Lucknow, U.P. (India) .
General Secretary	:	***All India, Jamiat Darul-Aml*** lucknow, U.P. (India)
Manager	:	***Universal Peace Foundation*** lucknow, U.P. (India)

नाम	मूल्य
34. बीवी-शौहर की ज़िम्मेदारियाँ (शरीअ़त की रोशनी में)	40 रू.
35. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और मीडिया लेखन	160 रू.
36. सूर-ए- फ़ातिहा की तफ़्सीर	30 रू.
37. तौहीद की ह़क़ीक़त (क़ुर्आन व सुन्नत की रोश्नी में)	40 रू.
38. पवित्र क़ुर्आन का सन्देश इन्सानी दुनिया के नाम	30 रू.
39. इस्लाम धर्म तलवार से फैला या सदाचार से	60 रू.
40. ग़ैर मुस्लिमों के साथ व्यवहार (ऐतिहासिक दृष्टि से)	60 रू.
41. ग़ैर मुस्लिमों से सम्बन्ध और धार्मिक आज़ादी	60 रू.
42. इस्लामी विरासत की तक़्सीम एक नज़र में	20 रू.
43. मीरास की तक़्सीम	30 रू.
44. लाइलाहा इल्लल्लाहु की गवाही	40 रू.
45. मोबाईल से सम्बन्धित मसायल (शरीअ़त की रोशनी में)	20 रू.
46. अल्लाह के प्यारे नबी (सल्ल०) एक नज़र में	20 रू.
47. सृष्टि का सृष्टा कौन?	30 रू.
48. प्राकृतिक नियम, ईशदूतों का धर्म और परलोक विश्वास	40 रू.
49. इस्लाम?	10 रू.

(मुफ़स्सिरे क़ुर्आन) मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी साह़ब नदवी द्वारा लिखित उर्दू पुस्तकें

50. मआ़नी क़ुर्आनुल् करीम (लफ़्ज़ी तर्तीब के एतिबार से रवाँ उर्दू तर्जुमः)	500 रू.
51. आख़िरी रसूल कहाँ, कब और कौन?	140 रू.
52. ग़ैर मुस्लिमों से तअ़ल्लुक़ात और मज़हबी आज़ादी	40 रू.
53. इस्लाम में जिज़्या, ख़िराज और ज़िम्मियों के अख़्तियारात	40 रू.
54. क़ुर्आन के मिसाली नमूने और लाज़वाल मोअ़जिज़ा	40 रू.
55. क़ुर्आन में इन्सान का मक़ाम और उस का अअ़ला मक़्सद	40 रू.
56. आ़माल को बातिल करने वाली चीज़ें और नियत की अहमियत	40 रू.
57. इस्लामी क़ानूने विरासत और मीरास की तक़्सीम	40 रू.
58. उम्मते मुह़म्मदिया की इ़ज़्ज़त का मेअ़यार और बनी इस्राईल	40 रू.
59. कायनात के अ़जायबात और इन्सान का अल्लाह से तअ़ल्लुक़	40 रू.
60 ग़ैर मुस्लिमों से दोस्ती या दुश्मनी (एतिराज़ के तनाज़ुर में)	50 रू.
61. इस्लाम के ख़िलाफ़ इल्ज़ामात और उस की दअ़वत का असर	50 रू.
62. इस्लाम में ग़ैर मुस्लिमों के ह़ुक़ूक़	50 रू.
63. हिन्दू धर्म, फ़िर्क़े तन्ज़ीमें और इदारों का तआ़रूफ़	90 रू.
64. ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का ज़िक्र और मूर्तिपूजा की मुमानियत वेदों की दुनिया में।	40 रू.
65. बौद्ध धर्म और इस्लाम	40 रू.

नाम	मूल्य
66. कलिमा-ए-तय्यबः की ह्क़ीक़त और उस के तक़ाज़े	80 रू.
67. ग़ैर मुस्लिमों में तरीक-ए-दअ़वत उस्लूबे अंबिया की रोशनी में	70 रू.
68. अल्लाह तअ़ाला का तअ़ारुफ़ और कलिम-ए-शहादत के फ़ज़ायल	70 रू.
69. क़ियामत तक के फ़ित्नें (रसूलुल्लाह (सल्ल०) की पेशीनगोई की रोशनी में)	70 रू.
70. तलाक़ का इस्लामी तरीक़ा (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	40 रू.
71. अल्लाह की तरफ़ से रिज़्क़ की तक़्सीम और कमज़ोर तब्क़े की किफ़ालत	50 रू.
72. क़ुर्आन के मुताबिक़ दौलत का इस्तेमाल	70 रू.
73. ज़कात और मसारिफ़े ज़कात (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	40 रू.
74. रसलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत (मुस्तनद कुतुबे सीरत की रोश्नी में)	40 रू.
75. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत के अनमोल मोती (सवाल व जवाब की रोशनी में)	30 रू.
76. रसूलुल्लाह (सल्ल०) का हुलिया मुबारक और आप (सल्ल०) की सुन्नतें	100 रू.
77. जन्नत के ह़ालात और जन्नत की नेअ़मतों का ज़िक्र	80 रू.
78. कुफ़्र व शिर्क की ह्क़ीक़त (क़ुर्आन व सुन्नत की रोश्नी में)	80 रू.
79. कुफ़्र शिर्क और फ़िस्क़ का ज़िक्र और सहाबा से मुतअ़ल्लिक़ अ़क़ीदा	80 रू.
80. क़ुर्आन के मुताबिक़ दअ़वत और इस्लामी जिहाद (क़ुर्आन व ह़दीस की रोश्नी में)	60 रू.
81. ज़बरदस्ती इस्लाम क़ुबूल करवाने की मुमानिअ़त	60 रू.
82. दाढ़ी की अहमियत (शरीअ़त की रोशनी में)	40 रू.
83. मदारिसे इस्लामिया के निसाब का तारीख़ी जायज़ा	40 रू.
84. रोज़ः, तरावीह़, सद्क़ः और एतिकाफ़ के एह़काम व मसायल	40 रू.
85. ह़ज और उ़मरा का मुकम्मल तरीक़ा (शरीअ़त की रोशनी में)	40 रू.
86. मुसाफ़िर और सफ़र के मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
87. काग़ज़ी नोट और बैअ़ की ह्क़ीक़त	40 रू.
88. इस्लामी क्विज़ (सवाल व जवाब की रोशनी में)	50 रू.
89. तफ़्सीर का बुनियादी मअ़ख़ज़	30 रू.
90. हिन्दुस्तान में क़ुर्आन के तर्जुमे की शुरुअ़ात और चन्द तफ़ासीर का तअ़ारुफ़	30 रू.
91. इस्लाम में तिजारत का तरीक़ा (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	120 रू.
92. इस्लामी मअ़ाशियात का तक़ाबुली जायज़ा	30 रू.
93. इस्लाम का ज़रई निज़ाम	40 रू.
94. दौलत की पैदाईश और अतियाते क़ुदरत	40 रू.
95. मुसलमानों के फ़िर्क़े और उनके अ़क़ायद	80 रू.
96. इस्लाम में औ़रत का मक़ाम	50 रू.
97. तअ़द्दुदे इज़्दिवाज और इस्लाम (मज़ाहिब आ़लिम की रौशनी में)	60 रू.
98. ह़राम, ह़लाल और मुबाह चीज़ें	30 रू.
99. ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की सिफ़ात (अह़ादीस की रौशनी में)	30 रू.
100. जहन्नम के ह़ालात और जहन्नमी (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	60 रू.
101. मुस्तनद मस्नून दुआ़एँ	20 रू.

नाम	मूल्य
102. इस्लाम की दअ़वत का असर इन्सानी दुनिया पर	50 रू.
103. क़ुर्आनी आयात और इस्लामी मुआ़शरा	30 रू.
104. आ़माल सालिहा़ (भाग-1)	100 रू.
105. आ़माल सालिहा़ (भाग-2)	100 रू.
106. अल्लाह तआ़ला का तआ़र्रुफ़ और कलिम-ए-शहादत के फ़ज़ायल	100 रू.
107. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की करीमाना अख़्लाक़ और आप (सल्ल०) की सीरत	100 रू.
108. आख़िरत का अ़क़ीदा (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	50 रू.
109. इख़्लास की फ़ज़ीलत (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	50 रू.
110. दअ़वत की ज़िम्मेदारी (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	50 रू.
111. ईदैन व क़ुर्बानी के मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	90 रू.
112. ख़ातिमुन्नबीईन (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	150 रू.
113. जिन्नात और शैतान का ज़िक्र (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	80 रू.
114. नबियों की जीवनी (क़ुर्आन व ह़दीस की रौशनी में)	100 रू.
115. ईमानियात, अ़क़ायद और नज़र से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	60 रू.
116. इ़ल्म से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
117. तहारत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
118. हि़फ़ाज़ते क़ुर्आन से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
119. नमाज़ व जमाअ़त से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	60 रू.
120. ई़दैन व जुमअ़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	50 रू.
121. तरावीह़ व एतिकाफ़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	50 रू.
122. सफ़र और सद्क़-ए-फ़ित्र से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	60 रू.
123. क़ुर्बानी से मुतअल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	60 रू.
124. तलाक़ व इद्दत और नफ़्क़ा से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	80 रू.
125. निकाह से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	60 रू.
126. हि़बा व जहेज़ से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
127. वक़्फ़ से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
128. मस्जिद से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	80 रू.
129. तिजारत की मुख़्तलिफ़ क़िस्मों से मुतअ़ल्लिक मसायल(क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
130. वसीयत व मीरास से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
131. अज़ान व इक़ामत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
132. तर्बियत, रज़ाअ़त व अ़क़ीक़ा से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	80 रू.
133. ज़कात से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	80 रू.
134. ह़ज से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
135. इमामत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
136. क़िरत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
137. सज्द-ए-तिलावत से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.

नाम	मूल्य
138. इस्लामी पर्दा (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	80 रू.
139. मीरास से मुतअ़ल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	40 रू.
140. मुह़र्रम की ह़क़ीक़त और आ़शूरा के वाक़िआ़त	25 रू.
141. ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) और जज़ीरे अ़रब	50 रू.
142. ग़ैर अ़रबी रस्मुलख़त (फ़ॉन्ट) में क़ुर्आन की इशाअ़त	12 रू.

(मुफ़स्सिरे क़ुर्आन) मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी साह़ब नदवी की अ़रबी पुस्तकें

143. मन्ज़तुल मराह फ़ी ज़ौइल इस्लाम वल्अद्यान वलूहज़ारात अलूमुख़्तलह	60 रू.
144. अलू इन्सान फ़ी ज़ौइल क़ुर्आन वलू सुन्नह	40 रू.
145. ग़ज़्व-ए-हुनैन व तायफ़ फ़ी ज़ौविलू क़ुर्आन वलू सुन्नह	120 रू.
146. अस्बाब तह़बतुलू अअ़माल वलू हमियतुलू निया फ़ी ज़ौइल क़ुर्आन वलू सुन्नह	120 रू.
147. अलू फ़ितन अलू वाक़िअ़ः इला क़ियामः अलू साअ़ह फ़ी ज़ौइल अह़ादीस अलू शरीफ़ा	100 रू.
148. अलू नबी अलू ख़ातिम मन, मता, वआईन फ़ी ज़ौइल कुतुब अलू हिन्दूसिया वसी वलू दियानात	150 रू.
149. अल्हिन्दूसिया मुबादिओहा व अक़ाइदोहा, मुनज्ज़िमातुहा व अहदाफ़ुहा	140 रू.
150. अहमयतुलू दअ़वह वलू तब्लीग़ फ़ी ज़ौइल क़ुर्आन वलू सुन्नह	100 रू.
151. ज़िक्र मुह़म्मदिन (सल्ल०) फ़िलू वेद	80 रू.
152. नब्ज़ह अ़न सिफ़ातु रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम	80 रू.

(मुफ़स्सिरे क़ुर्आन) मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी साह़ब नदवी की अंग्रेज़ी पुस्तकें

153. मुह़म्मद दी लास्ट प्रोफ़ेट अन्डर दी शेड ऑफ़ वेद, उपनिषद ऐण्ड पुराण	40 रू.
154. मुह़म्मद (सल्ल०) एण्ड स्टेटस आफ़ वरशिप	30 रू.
155. बेसिक टीचिंग आफ़ इस्लाम	80 रू.
156. दी स्वॉड आफ़ इस्लाम	40 रू.
157. अज़ान, ए कालिंग फ़ार हियूमेनिटी	40 रू.
158. इस्लाम?	10 रू.

(मुफ़स्सिरे क़ुर्आन) मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी साह़ब नदवी की अनुवाद की हुई पुस्तकें

159. मुन्तख़ब अह़ादीस (लेखक- ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद यूसुफ़ कान्धलवी रह०)	60 रू.
160. क़ादियानियत नुबूवते मुह़म्मदी के ख़िलाफ बग़ावत (लेखक- इमामे ह़रम अब्दुल्लाह बिन अस्सुबय्यिल)	40 रू.
161. दारे अरक़म का एह़सान इन्सानी दुनिया पर (लेखक-ह़ज़रत मौलाना सैय्यद अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी नदवी रह़०)	30 रू.
162. मानवता आज भी उसी चौखट की मुहताज़ है (लेखक- मौलाना मुह़म्मद ह़सनी रह़०)	30 रू.
163. रमज़ान का तोह़फ़ा (लेखक- मौलाना मुह़म्मद राबेअ़ ह़सनी नदवी)	20 रू.
164. यक्साँ सिविल कोड और महिलाओं के अधिकार (लेखक- मौलाना मुह़म्मद राबेअ़ ह़सनी नदवी)	20 रू.
165. मालिक व मख़्लूक़ श्रेष्ठ कौन? (विचारक- मुहम्मद मुस्तफ़ा क़ादरी) (तस्ह़ीह़ व तर्तीब- मु० मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी)	30 रू.
166. यतीमों की किफ़ालत (लेखक-मुहम्मद आमिर सिद्दीक़ी नदवी)	30 रू.

नाम	भाषा	मूल्य
(मुफ़स्सिरे क़ुर्आन) मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साहब द्वारा लिखित मसायल की पुस्तकें		
167. दो मआशरती मसॉयल	उर्दू	**80 रू.**
168. तफ़्सीर फ़ारुक़ी (जिल्द शशुम)	हिन्दी	**500 रू.**
169. तफ़्सीर फ़ारुक़ी (जिल्द हफ़्तुम)	// //	**500 रू.**
170. तफ़्सीर फ़ारुक़ी (जिल्द हश्तुम)	// //	**500 रू.**
171. तारीख़ुल् इस्लाम	उर्दू	**500 रू.**
172. क़ससुल् अम्बिया	// //	**500 रू.**
173. मजमुआ अहादीस (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**200 रू.**
174. दुआ के आदाब (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**20 रू.**
175. इस्लाम के अदालती फ़ैसले (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**40 रू.**
176. सीरत सहाबा	// //	**200 रू.**
177. क़ुर्बानी से मुतअल्लिक़ मसॉयल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**500 रू.**
178. तहारत से मुतअल्लिक़ मसॉयल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**50 रू.**
179. इल्म से मुतअल्लिक मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**50 रू.**
180. ईमानियात, अक़ायद और नज़र से मुतअल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**50 रू.**
181. ईदैन व जुमअः से मुतअल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**40 रू.**
182. मदारिस से मुतअल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**30 रू.**
183. हिबा व जहेज़ से मुतअल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**30 रू.**
184. सूद से मुतअल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**30 रू.**
185. सफ़र और सद्क़ः फ़ित्र से मुतअल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**30 रू.**
186. तलाक़ व इद्दत और नफ़्क़ा से मुतअल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**40 रू.**
187. नमाज़ व जमाअत से मुतअल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**50 रू.**
188. निकाह से मुतअल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**40 रू.**
189. ज़कात से मुतअल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**50 रू.**
190. हज से मुतअल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**40 रू.**
191. इमामत से मुतअल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**50 रू.**
192. क़िराअत से मुतअल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**40 रू.**
193. तिजारत की मुख़्तलिफ़ क़िस्मों से मुतअल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**50 रू.**
194. वसीयत व मीरास से मुतअल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**40 रू.**
195. अज़ान व इक़ामत से मुतअल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**50 रू.**
196. तर्बियत, रज़ाअत व अक़ीक़ा से मुतअल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**40 रू.**
197. अलामात क़ियामत (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**80 रू.**
198. सज्दः से मुतअल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**40 रू.**
199. वक़्फ़ से मुतअल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**40 रू.**
200. मस्जिद से मुतअल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	**40 रू.**

नाम	भाषा	मूल्य
201. इल्म व उ़ल्मा से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	उर्दू	40 रू.
202. तक़्लीद व इज्तिहादी की शरई ह़ैसियत (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	50 रू.
203. सज्दः सहू से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	50 रू.
204. बिद्अ़त की नहूसत से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	50 रू.
205. किरायेदारी से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	50 रू.
206. कारोबार में शिर्कत से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	40 रू.
207. मीरास से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	40 रू.
208. सुन्नत व नवाफ़िल से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	40 रू.
209. इस्लाह़ मुआ़शरह से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	40 रू.
210. औ़रतों के मख़्सूस मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	40 रू.
211. इन्सानी अअ़ज़ा से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	40 रू.
212. मय्यत से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	40 रू.
213. रमज़ान,रोज़ः और तरावीह़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	60 रू.
214. एतिकाफ़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	30 रू.
215. ज़मीन से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	50 रू.
216. रवय्यतुल हिलाल से मुतअ़ल्लिक़ मसायल (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)	// //	30 रू.

महत्वपूर्ण लेख

महत्वपूर्ण लेख